



॥ श्री ॥

॥ एह श्रीरणवीरसिंहकारितज्योतिर्महानिवन्ध ग्रन्थका प्रथम भाग जातक खण्ड विद्या विलास नामक मुद्रा यंत्रालय मे वखशी कृष्णादिआल जी के अधिकार से छपा सं० १९६८ चै–प्र–७

एह ग्रंथ जम्बू वासी ज्योतिर्वित्पण्डित महेशजी का वनाया है हुकम श्रीसरकारवाला

उंस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीरणवीरज्योतिर्महानिबन्धसूचीपत्रम्

॥ श्री ॥

॥ ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अब जन्मपत्र बनावने केअर्थ ग्रंथके आदमें नमस्कारात्मक मंगल ग्रंथकर्ता कहताहै हम जन्मपत्रकों लिखते हैं क्याकर्के आकाशमेंस्थित जो आदिदेव सूर्यनारायण तिनकों प्रणाम कर्के कैसे हैं सूर्यनारायण स्वर्ग मर्त्य पाताल में स्थित जो लोक तिनों कर प्रणामकों प्राप्तहै फेर नक्षत्र राशी ग्रह इन केकुलमें प्रधान जोचंद्रमा है तिसकों प्रणाम कर्के और पूर्व जन्मके कर्मों काजो वीज तिसकों प्रणाम कर्के जन्मपत्रकों वना वता हों किसवास्ते अज्ञान कर अंधजो मनुष्य तिसके अंध कार दूर करणे वास्ते ॥ १ ॥ औरकहतेहैं ॥ महात्मा जनोंका गतिस्थान जो हरि-

॥ स्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ नत्वाव्योमासनस्थंत्रिभुवननमितंदेवमाद्यंदिनेशंतारानक्षत्रराशिग्रहकुलतिलकंशर्वरीशंचनत्वा नत्वाकर्मस्वभावं प्रतिपदगहनंप्राकृतंकर्मवीजमज्ञानांधस्यजंतोस्तमपटहरणंलिख्यतेजन्मपत्रम् ॥ १ ॥ अचिंत्यमव्यक्तमनंतमव्ययंविभुंप्रभुंभावितभूतभावनम् त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकंहरिंप्रपन्नोस्मिगतिंमहात्मनाम् ॥ २ ॥ प्रोक्तानिहोरागणितानिपूर्वैर्वशिष्टगर्गात्रिपराशराद्यैः वराहलल्लप्रमुखैश्चतेपुफलक्रमोनैवकृतोहियस्मात् ॥ ३ ॥ सारावलीजातकशास्त्रतोपिहोराप्रदीपादपिजन्मदीपात् आदायसारंयवनादिशास्त्रात्फलक्रमार्थंखलुजन्मपत्र्याः ॥ ४ ॥ अथदैवज्ञलक्षणम् ॥ होराशास्त्रसमुद्रपारगमनेनूनंसमर्थोमहान्पाट्यारूयेगणितेचवीजगणितेयोदर्भगर्भाग्रधीः

नारायण हैं तिनकी शरण कों मैं प्राप्त होता हों जोहरि चिंतन में नहि आवते प्रकट नांहि हैं और अवनाशी हैं प्रभु हैं और जगत्कों उत्पन्न कर्के विचार कों कर रहे हैं ॥ २ ॥ अवइसग्रंथकेवनावनेकाप्रयोजन ॥ कहते हैं वशिष्ट गर्ग अत्रि पराशरसें आद ले कर जो ऋपिहैं और वराह लल्लसें आद लेकर जो आचार्य तिनके ग्रंथों में क्रम पूर्वक जन्म पत्र लिखनेका क्रम नांहि कियाहै ॥ ३ ॥ इस वास्ते सारा वली सें आद लेकर ग्रंथों सें औरयवना चार्य के शास्त्रसें सार २ लेकर क्रम पूर्वक जन्म पत्रके वनावने की रीती इस ग्रंथ में कहता हो येह प्रथम श्लोक काअनुषंग जानणा ॥ ४ ॥ ॥ अवज्योतिषीकेलक्षण कहते हैं ॥ होराशास्त्रका जो समुद्र तिसके पार तरणे में निश्चय कर समर्थ वाला होवे और लीलावती के गणित में और वीजगणित मेंकुशाके अग्रकी न्याईं सूक्ष्म वुद्धि वालाहो

॥ समाप्तश्चायंजातकखंडः

और सिद्धांतके कहने में चतुर होवे और अनेक भेदों करयुक्त जो भूगोल खगोल तिस में चतुर होवे अयसा जो ज्योतिषीहे सो फला देश शुभा शुभ कहने के योग्य होताहे ॥ ५ ॥ और कहते हैं जैसें घृतके विना श्रेष्ट रस वाला भोजन नाहिं शोभता है और जैसें राजा कर हीन राज शोभा नाहिं देताहे और जैसें श्रेष्ट जनों की सभा वक्ता के विना शोभा नाहिं देतीहे तैसेहिं गोलके जानने विना ज्योतिषी कहा है ॥ ६ ॥ फेर कैसा ज्योतिषी होवे त्रिस्कंध जो होरा सिद्धात संहिता तिसके जानने वाला होवे और देहकर सुंदर होवे और शांत चित्त होवे और श्रौत स्मार्त्त की उपासना में लगा है मन जिसका और दंभ सें रहित होवे और सत्य कहने वाला होवे और प्रसन्न मूर्ति होवे सो दैवज्ञ कहा है ॥ ७ ॥ और जो अपने कर्म काड में युक्त और होरा गणित कों जानता है अयसे कों जोराजा पूजता है सोराजा वृद्धि कों प्राप्त होता हे ॥ ८ ॥

सिद्धातस्फुटवासनाप्रकथनेभेदैरनेकैर्युते गोलेस्यात्कुशलःसएवगणकोयोग्यः फलादेशके ॥ ५ ॥ भोज्यंयद्वत्सद्रसंवैविनाज्यंराज्यंयद्वद्राजहीनंनभाति नोभात्येवंसत्सभावक्तृहीनातद्वद्दैवज्ञस्तुगोलानभिज्ञः ॥ ६ ॥ त्रिस्कंधज्ञोदर्शनीयःप्रशांतःश्रौतस्मार्त्तोपासनेनिष्ठचित्तः ॥ निर्दंभोयःसत्यवादीप्रसन्नोदैवज्ञोवैसस्मृतोनेतरश्च ॥ ७ ॥ कृत्स्नांगोपांगकुशलंहोरागणितनैष्ठिकम् ॥ योभिपूजयतेराजासवृद्धिमुपगच्छति ॥ ८ ॥ वनंसमाश्रितायेपिनिर्ममानिःपरिग्रहाः ॥ अपितेपरिपृच्छंतिज्योतिषांगतिकोविदम् ॥ ९ ॥ नासांवत्सरिके देशेवस्तव्यंभूतिमिच्छता चक्षुर्भूतोहियत्रैवपापंतत्रनविद्यते ॥ १० ॥ ग्रंथतश्चार्थतश्चैवकृत्स्नंजानात्यसौद्विजः ॥ अग्रभुक्सभवेच्छ्राद्धेपूजितःपंक्तिपावनः ॥ ११ ॥ म्लेच्छाहियवनास्तेपुसम्यक्शास्त्रमिदंस्थितं ॥ ऋषिवत्तेपिपूज्यंतेकिंपुनर्दैवविद्द्विजाः ॥ १२ ॥

और कहते हैं जो मनुष्य गृहसुखोंकों त्यागकर निर्मम और निष्परिग्रह होयकर वनमें वासकर्ते हे निश्चयकर सो मनुष्य वी ग्रह नक्षत्रादि गति कों पूछतेहे ॥ ९ ॥ और कहते हैं जिस देशमे समय फलके कहने वाला ज्योतिषी न होवे तिस देशमें ऐश्वर्य की इछा वाले मनुष्यने नाहिं वासकरणे योग्य और जिस देशमे नेत्ररूप ज्योतिषी होवे तहापापग्नहि प्रकट होताहे ॥ १० ॥ ग्रथो सें अर्थ सें सपूर्ण ता कर्के जो ब्राह्मण ज्योतिष शास्त्रकों जानता है सोब्राह्मण पूजया हूया पंक्तिकों पवित्र कर्ताहे और श्राद्धमें ब्राह्मणोंके प्रथम पूजने योग्य है ॥ ११ ॥ और कहते हैं यवनम्लेछ हें निश्चय कर्के परतु तिनमें भलो प्रकार शास्त्र स्थित होनेसें ऋषियोंकी न्याई मानेजाते हैं और ब्राह्मण होयकर जो इसशास्त्रकों जानते है तिनकी क्यावात कहनी है ॥ १२ ॥

जैसेंदीपक विना रात्रि है और जैसें सूर्यके विनाआकाश है तैसें हिं ज्योतिषीकेविना राजा है जैसें मार्ग मेंअंध भ्रमता है तिसकी न्याईहे ॥ १३ ॥ जितनावलहजार हाथीका और चारहजार घोडे का नहिं है तितनावल एक देशकाल के चिंतनकरणेवाले ज्योतिषीका होताहै ॥ १४ ॥ तिसकारणसें राजयोंकों विद्वानों में ज्योतिषी कों मुख्य जानने योग्यहे जिसराजा कों जयकी यशकी कल्याणकेसमूह की भोगोंकी इच्छा होवे तिसने ॥ १५ ॥ औरकहतेहैं जो भली प्रकार होरागणित और संहिताकों जानता होवे सो राजानें पूजने योग्यहे और जयकी इछावाले ने अपना वनायलेणा योग्यहे ॥ १६ ॥ अथज्योतिःशास्त्रकाप्रशंसाकहतेहैं श्रीभागवतमें गर्गाचार्यकेप्रति नंदराजकहते भये यो आपने ज्ञान कहाहैं सो साक्षात् ग्रहनक्षत्रादियोंका स्थानहै और अतींद्रिय मनवाणीके विषयमें नहिंहे जिसके जानने करके पुरुष ब्रह्मादियोंकों और मरीच्यादियोंकों जानताहै ॥ १७ ॥ और सूर्यारुणकेसंवादमेंकहतेहे काल यो है सो साक्षात् विष्णुहै अनंतहे परमेश्वर कह्या है

अप्रदीपायथारात्रिरनादित्यंयथानभः ॥ तथासांवत्सरोराजाभ्रमत्यंधइवाध्वनि ॥ १३ ॥ नतत्सहस्रंकरिणांवाजिनांचचतुर्गुणम् ॥ करोतिदेशकालज्ञोयद्देकोदैवचिंतकः ॥ १४ ॥ तस्माद्राज्ञाभिमतव्योविद्वान्सांवत्सरोग्रणीः ॥ जयंयशःश्रियंभोगान्श्रेयसश्चयमभीप्सिता ॥ १५ ॥ यस्तुसम्यग्विजानातिहोरागणितसंहिताः अभ्यर्च्यःसनरेन्द्रेणस्वीकर्तव्योजयैषिणा ॥ १६ ॥ अथज्योतिःशास्त्रप्रशंसा ॥ श्रीमद्भागवते ॥ ज्योतिषामयनंसाक्षाद्यत्तद्ज्ञानमतींद्रियम् प्रणीतंभवतायेनपुमान्वेदपरावरम् १७॥ सूर्यारुणसंवादे कालोयोभगवान्विष्णुरनंतः परमेश्वरः तद्वेत्तापूज्यतेसद्भिःपूज्यःकोन्यतमोयतः १८॥ सचलग्नाश्रयःकालस्तस्माल्लग्नंचयद्भवेत् प्रश्नेवाजन्मकालेवातस्माद्ज्ञेयंशुभाशुभम् १९ अप्रत्यक्ष्याणिशास्त्राणिविवादस्तेषुकेवलंप्रत्यक्षंज्योतिषंशास्त्रंचंद्रार्कौयत्रसाक्षिणौ २० मूलसूत्रे यथाशिखामयूराणांनागानामणयोयथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणांज्योतिषंमूर्द्धन्यवास्थितम् २१

तिसकालके जानने वाला यो मनुष्य है सो श्रेष्ट जनोंने पूजनेयोग्यहैं अरु लेकर तिसके विना पूजनेयोग्य कोनहे ॥ १८ ॥ सो काल लग्नों का आश्रय है जिसकालसें लग्न सिद्ध होता है प्रश्न में अथवा जन्म काल में जिसलग्नसें शुभाशुभफलका ज्ञान होताहै ॥ १९ ॥ और कहते हैं संपूर्णशास्त्रोंमें फल प्रकट नहिंहे तिनोंमें केवल विवादसिद्धहै और ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षहे जिसमें चंद्रमासूर्य साक्षीहैं ॥ २० ॥ और मूलसूत्रमें कहते हैं जैसें मोरोंके शिरमें शिखाहै और जैसें सर्पोंके शिरमणीहोतीहै तिसकीन्याई वेदांगशास्त्रोंके ज्योतिष शिरोमणीहै ॥ २१ ॥

औरकहतेहैं ज्योति शास्त्रमे सूर्यचद्रमा का ग्रहण सारहै और गारुडीविद्याके जानने वाल्यों मे विषका भक्षण करणा सारहै और शैवोंमें घटवती नाम करके प्रसिद्ध दीक्षा सारहै और कौलों में शाप वर देना सारहै ॥ २२ ॥ और गर्ग्यकहताहै यो मनुष्य विनाशास्त्रकेजाने ज्योतिषी कहावता है सो पंक्तिके बाहिर नकालने योग्यहै तिसका नाम नक्षत्रसूचक कहाहै ॥ २३ ॥ और कहतेहैं नक्षत्रसूची करके दिखाये व्रतकों जो मनुष्य करतेहैं सो तिस नक्षत्रसूचीके सहित अंधतामिश्र नरककों जाते हैं ॥ २४ ॥ और सिद्धांतशिरोमणीमें कहतेहैं तिस कारणसें ब्राह्मणोंने ज्योतिःशास्त्र अवश्यमेव पठनेयोग्यहै पवित्रहै परमरहस्यहै और तत्वरूपहै जो मनुष्यज्योतिः शास्त्र को जानता है सो भली प्रकार धर्म अर्थ काम मोक्ष और यश कों प्राप्त होता है ॥ २५ ॥ अवइसशास्त्रकाप्रयोजनकहतेहैं जो ब्रह्माने मनुष्यके मस्तकमें प्रारब्धकर्म

१ ज्योतिषेग्रहणंसारंगारुडेविषभक्षणम् शैवेघटवतीदीक्षाकौलकेग्रहनिग्रहौ २२ ॥ गर्ग्यः ॥ अविदित्वैवय शास्त्रंदैवज्ञत्वंप्रपद्यते सपंक्तिदूषकःश्राद्धेज्ञेयोनक्षत्र सूचकः ॥ २३ ॥ नक्षत्रसूचकोद्दिष्टमुपवासंकरोतियः सव्रजत्यंधतामिश्रंसार्धं मृक्षविडंविना ॥ २४ ॥सिद्धांतशिरोमणौ तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेवपुण्यंरहस्यं परंसंज्ञतत्वम् योज्योतिषंवेत्तिनरःससम्यग्धर्मार्थमोक्षान्लभतेयशश्च ॥ २५ ॥ अथास्यशास्त्रस्यप्रयोजनम् याब्रह्मणाविलिखितानरभालपट्टेप्रारब्धकर्मसदसत्फ लपाकपंक्तिः ॥ होराप्रकाशयतितामिहवर्णपंक्तिंदीपोयथानिशिघटादिकमंधकारे २६ ॥ जनुषःसमयेधृतंनयंत्रनमयाप्यत्रनिवेशिताचनाडी अपरैरुपदिष्टजन्म कालाज्जनिपत्रीहिविलिख्यतेमयैषा ॥ २७ ॥ प्रथमंआशीर्वादात्मकाःश्लोकाले
२ ख्या ॥ अथाशीर्वादव्याजेनश्रीरामकृष्णजन्मसमयद्वाराआशीर्वादश्लोकौ ॥ श्रीरामश्चैत्रमासेदिनदलसमयेपुष्पभेकार्किलग्नेजीवेन्द्वो कर्कराशौमृगभगतकुजेज्ञे वृषेभेषगेर्के मंदजूकेंगनायांतमसिशफरगेभार्गवेयोनवम्यांपंचोच्चस्थैर्वती र्णोवतुसतमियमुत्पत्तिपत्रीचयस्य ॥ २८ ॥

रूप शुभाशुभफलकी पंक्ति लिखीहै तिनों अक्षरोंकी पंक्तिकों होराशास्त्र प्रकाश करताहै जैसे अंधकारयुक्तरात्रीमें घटादिकवस्तूका ज्ञान दीप कर्ताहै ॥ २६ ॥ और जन्मपत्रीके लिखनेवालाकहताहै जन्मकालमे यंत्रघटी मैंने नहि धरी औरोंकरके कहाजो इष्टकाल तिससेंइहजन्म पत्री लिखता हो ॥ २७ ॥ अवजन्मपत्रीकेआदमें श्रीरामकृष्णजीकेजन्मकथा पूर्वकआशीवादके दोश्लोककहतेहै श्रीरामचंद्रजी चैत्रमासमे नवमीतिथिमें औरमध्यान्हसमयमें औरपुष्य नक्षत्रमें औरकर्कटलग्नमें उत्पन्नहोतेभये और लग्नमें चंद्रमाबृहस्पति दोनो कर्क राशिमें स्थित होनेभये और मकरराशीमें मंगल, औरवृषमें बुध, और मेषमें सूर्य और तुलामें शनि, और कन्यामें राहु और मीनमें शुक्र होताभया और पांचग्रहउच्चमें स्थितहोया यो श्रीरामचंद्र अवतारकों धारतेभये सो रामचंद्र जिनको इहजन्मपत्रीहै तिसकोरक्षाकर ॥ २८ ॥

श्रीकृष्णजी रोहिणी नक्षत्रमें और वृषलग्नमें और वृषकेचद्रमामें और भाद्रपदमासमें कृष्ण पक्षमें और अष्टमीतिथिमें और अर्द्धरात्रकेसमयमें और सिंहकेसूर्यबुधमें और कर्कके बृहस्पति में और मकरकेमंगलमें और तुलाके शुक्रमें और लग्नमें शनि के स्थितहोय। और बुधवारमें और कन्या के राहु में यो हरि अपने अंशों कर आपसाक्षात् पृथ्वीपरहोतेभये सो कृष्ण जिसकी इहेजन्मपत्रीहै तिसकोरक्षाकरैं ॥ २९ ॥ अबपूर्वजन्मकेकर्मोंकाप्रशंसा कहतेहै ॥ योपूर्वलेजन्मके शुभाशुभ कर्महै तिन कोंनिश्चयकर दैवकहतेहैं सोदेवससाररूपरथका एकचक्रहै और दूसराचक्र प्रयत्नहै जिसकों उद्यमकहतेहैं-दोनोचक्रोंकर रथका गमनहोताहै अयस श्रीयाज्ञवल्क्यमुनि अपनि स्मृतिमकहतेहै ॥ ३० ॥ और कहतेहैं पूर्वकर्मकेअनुसारफलसिद्धहोताहै इसमेंदृष्टान्तदेतेहै जैसे इसलोकमें कोई अंधापुरुषहै पै आंक युक्तहै परतु दूसरेके हाथविनाचल नाहिंसकताहै इसकारणसे चतुरमनुष्य शास्त्रोक्तआचारकोंकर्ताहै जैसेंब्राह्म-

श्रीकृष्णोरोहिणीभेवृषतनुशशिनो श्रावणस्यासितेभूदष्टम्यांमध्यरात्रेहरिग
रविविदोष्कार्किणीज्येमृगारे जूकस्थेभार्गवेचजननगरविजेचांद्रिवारेंगनास्थेराहो
यज्जन्मपत्रीतमवतुहरिरंशावतीर्णं स्वयंय ॥ २९ ॥ अथप्राक्तनकर्मप्रशंसा
यत्पूर्वकर्मतदिदखलुदैवमाहुस्ससारलक्षणरथस्यतदेवचक्रम् यत्नोऽपरंतदुभ
येनगतिस्तुवेयाश्रीयाज्ञवल्क्यमुनिराहनिजस्मृतौच ॥ ३० ॥ प्राक्कर्मसंचित
फलप्रभवानुरूपोयत्नोपिसयमुनयद्वदिहांधपुंस स्यादन्यहस्तगतिराश्रियुजो
पितस्माच्छास्त्रोक्तमाचरणमाचरतीहमुख्य ३१ ॥ संहितादीपके नदेशकालव्य
वसायवर्ज्यंभवेत्फलाप्ति सतिचापिदैवे तथाफलेसत्यपिजातकस्यभवेत्फलाप्ति
स्तिथिभोदयाद्यैः ॥ ३२ ॥ अथकल्पयुगशकेसंवत्सरमासादितिथ्यादिलग्नां
शहोरादिभिर्जन्मसमयोलेख्य जन्मसमयोनाम जन्मनिकालावयवः कालो
नामकितदुच्यते तथाचगार्गि काल सृजतिभूतानिकाल सहरतेप्रजा काल सुप्ते
पुजागर्तिकालोहिदुरतिक्रम ॥ ३३ ॥

ण विद्याभ्यासकरैं क्षत्री शस्त्रविद्याभ्यासकरैं इत्यादि ॥ ३१ ॥ औरसंहितादीपकमेंकहतेहै दैवकेहोयांवी-देशकालउद्यमकेविना फलकोंप्राप्ति नाहिंहोतीहै और तैसेंहि जन्मके फलमेंहोय। तिथिनक्षत्रलग्नकेंबलसें फलप्राप्तिहोतीहै इसमकहतेहैं कि जिसमनुष्यकों जन्मसबंधिफलखोटाहै औरयात्राविवाहादिकर्म शुभ-महूर्तमेंकर्ताहै तिसकोंफलप्राप्ति तिसीकेन्याईहै ॥ ३२ ॥ आशीर्वाद लिखनेके उपरत कल्प युग-सवत्सर शक मास तिथ्यादि लग्नाशहोरादि जन्मसमय कों लिखे जन्मसमय किसकों कहतेहैं-जन्मकालमे क्षणादिकालके अगहै काल किसका नामहै ॥ सो कहतेहै भगवान्गार्गि ॥ काल-यो है सो प्रजाकों उत्पन्न कर्ताहै और काल हि प्रजाका सहार कर्ताहै और सोए रहेजो मनुष्यादि-तिनमें कालहि जागताहै सो काल अति सूक्ष्मसेंसूक्ष्महै जानया नहिं जाताहै ॥ ३३ ॥

॥ अबसंज्ञाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमेंप्रथमसूर्यादिग्रहनक्षत्रोंकीउत्पत्तिकहतेहैं जिसकालमेंइहवि श्वचराचरकरकेयुक्तअंधकारकेसमूहकरकेंव्याप्ततथा उसकालमेंपरमात्मानेंसहितराशिऔरनक्षत्र चनावतेंकेंतेप्रथमसूर्यउत्पन्नभयाहे ॥ १ ॥ अबसूर्यसें कालकी उत्पत्तिकहतेहे जिस कालमें सूर्यनारायण प्रकटभये तिससें शुभाशुभ फलके जनानें वालाअहोरात्र नामकरकें कालहोताभया जिसकोंहीं॥होराकहतेहें सो पूर्वापरवर्णलोपसें अहोरात्र करकें उत्पन्न हे ॥ २ ॥ अबकालके अंगोंकाविभागकहतेहैं ॥ मेपराशि शिर वृष मुख मिथुन बाहु कर्क हृदय सिंह उदर कन्या कटि तुला बस्ति वृश्चिक गुदा धनु पट्ट मकर जानू कुंभ जंघा मीन पाद इहेकालपुरुषके अंगोंमें मेषादि राशियां कहिहैं ॥ ३ ॥ अबमेषादिराशियांकहतेहैं मेष ॥१ वृष ॥ २ मिथुन ॥ ३ ॥ कर्क ॥ ४ ॥ सिंह ॥ ५ ॥ कन्या ॥ ६ ॥ तुला ॥ ७ ॥ वृश्चिक॥८॥ धन ॥ ९ ॥ मकर ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ मीन ॥ १२ इहे बारांराशि हैं ॥ ४ ॥ अबराशियों

अथसंज्ञाध्यायोव्याख्यायतेतत्रादौग्रहोत्पत्तिः ॥तमस्तोमावृत्तेविश्वेजगदेतच्चराचरम् राशिग्रहोडुसंघातंसृजन्सूर्योभवत्तदा ॥१॥ अथकालोत्पत्तिः ततःप्रभृति जंतूनांसदसत्फलसूचकः॥होराख्योवर्त्ततेकालोह्यहोरात्रेणलोपतः २ अथकालस्यांगविभागः शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसंज्ञानिऊरूजानूजंघेचरणाविति राशयोजायाः ३ ॥ अथराशिकथनम् मेषवृषमिथुनककर्टसिंहाः कन्यातुलाथवृश्चिकभम् धनुरथमकरकुंभोमीन इतिराशयःकथिताः॥ ४॥ अथराशिस्वरूपम् सप्तविंशतिभिर्ज्योतिश्चक्रं तिमितवायुगम् तदंकांशोभवेद्राशिर्नवर्क्षचरणांकितः ५ ॥ अथराशिनक्षत्रविभागः अश्विनीमघमूलादौमेयासिंहहयादयः ॥विषमर्क्षान्निवर्त्ततेपादवृद्धायथोत्तरम् ६ अथराशीनामधिष्ठातृरूपम् ॥ मत्स्यौघटीनृमिथुनसगदंसवीणंचापीनरोश्वजघनोमकरोमृगास्यः ॥

केस्वरूपकहतेहैं अश्विनीसेलेकरकेंसताईजोनक्षत्रहैं तिन्हका द्वादशांशएकराशिहोताहै नक्षत्रोंकेनवपादों करकें अंकितहे ॥ ५ ॥ अबराशिकेनक्षत्रोंकाविभागकहतेहैं अश्विनी और मघा और मूला नक्षत्रसें लेकरकें चार चार राशियोंकी प्रवृत्ति है और तीसरे तीसरे नक्षत्रकों यथोत्तर पादवृद्धिकरके निवृत्त होताहे ॥ ६ ॥ अबराशियोंकेअधिष्ठातृरूपकहते हैं मीनराशि दो मत्स्य जैसे परस्परमुखमें पुच्छग्रहणकरकें वृत्तक्षेत्रकीन्याई स्थितहोवे और कुंभराशि जैसें घटी पुरुष जलके वास्ते जाताहै तिसकी न्याई और मिथुनराशि स्त्रीपुरुष दोनों मिलेहुये पुरुषके हाथ में गदा स्त्रीके हाथमें वीणा अयसा रूपहे और धनराशि घोडेकी न्याईजया ॥ ४ ॥ जिसकिया और धनुषधारी पुरुषकी न्याई हे और मकरराशि हरणकी न्याई मुख जिसका अयसा मत्स्यरूपहे

॥ औरसूर्यारुणमेंकहतेहैं ॥ यो इहे तीनलोकका स्वामी कालात्मासूर्यनारायणहै तिसकी इछा करके सपूर्ण कर्म होते हें और ग्रह बी तिसकालात्माको छायाकी न्याई हें ॥ ३४॥ यो यो स पूर्ण दृश्य वस्तू है सो सो सं पूर्ण काल के अधीन है सो काल क्षणादि है और दृष्टि में आवता है वर्ष मासादि करके यो व्यतीत होता है तिसकालकी कलना ज्योतिःशास्त्र है ॥ ३५ ॥ औ. ग्रहोंको फलकर्तृत्व १ और नहिं फलकर्तृत्व २ इहे स शय दोनो है और कईक तिनग्रहों कों कहतें है यो पूर्व जन्म के कर्म हैं तिनकों सूचन कर्ते हैं ३६ ॥ तैसेंहिंकहतेहैं ॥ जब पूर्वजन्मकों प्रकट कर्ते है ग्रह तब इन में भक्ति कैसें करते हे, पूर्व कर्मोंका जो भोग तिस के दूर करणे वास्ते इस जन्म के भोगों कों कहते हैं और कोई मुनि असें कहते हैं जगदीश जोविष्णु तिनकी जो भक्तिकरणी सो पापोंकों पूर्व जन्म के दोषोंकों दूरकर्ती है और कोई असें

सूर्यारुणे कालात्माकालरूपोयंयोयंत्रिजगदीश्वरःतस्येच्छानुचरंकर्मच्छायाप्रकृतिवत्खगाः॥ ३४॥ कालायत्तमिदंसर्वंतत्कालोदृष्टिगोचरः तत्कालकलनाच्छास्त्रंवक्ष्येज्योतिषमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ ग्रहाणांफलकर्तृत्वमस्तिनोवेतिसंशयः केचिद्वदंतितेपांतुकर्मसूचकतामिति ॥ ३६ ॥ तथाच प्राक्कर्मसूचकखगाःकथमेषुभाक्तिःप्राक्कर्मभोगशमनायहिभोगमूचुः केचित्तथादुरितहृज्जगदीशभक्तिःकिन्नोग्रहाभिगतएवसएवविष्णुः ३७ ॥ तथाचशार्ङ्गधरः देवताग्रहरूपेणमनुष्याणांशुभाशुभम् फलंप्रागर्जितंयच्चतद्ददातिस्वकीयकम् ॥ ३८ ॥ सूर्यारुणे यात्रासमयेष्टदेग्रहणेचैवाथखेटवैषम्ये गोभूहिरण्यवस्त्रैःसंपूज्यःश्रद्धयात्रदैवज्ञः ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्राजाधिराजमहाराजरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेशास्त्रोपनयाध्यायःप्रथमः १

कल्पना कर्ते हैं जोविष्णु सूर्यादि ग्रहों में स्थित नहिं है क्या इसवास्ते ग्रह पूजने यो ग्यहै ॥ ३७ ॥ ॥ तैसेंशार्ङ्गधरकहताहै ॥ जिस जिस देवताकी मनुष्य भक्ति कर्ता है सो सो देवता ग्रहरूप होय कर मनुष्याकों शुभाशुभफलकों देता है जो पूर्व जन्म मे कर्म किये हैं सो सो फल जन्म समय में लग्नादिस्थानों में स्थित होय कर ग्रह अपने फल को देता है ३८ ॥ औरसूर्यारुणमें कहते हैं यात्राके समयमें और जन्मदिनमे और विवाहादि शुभदिनोंमें और ग्रहण सिद्धकरणे मे और जब खोटे स्थान में ग्रह आवे और जब खोटिदशा आवे तिस समय में गौओं करके भूमि, करके स्वर्ण करके वस्त्रों करके वडीश्रद्धा कर दैवज्ञ यो ज्योतिसी तिसका पूजनकरे ॥ ३९ ॥ ॥ इतिइहेजातकखंडमेंशास्त्रकोविचारकाप्रथम अध्यायभयाहै ॥ १

॥ अवसंज्ञाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमेंप्रथमसूर्यादिग्रहनक्षत्रोंकीउत्पत्तिकहतेहैं, जिसकालमेंइहवि श्वचराचरकर्केयुक्तअंधकारकेसमूहककेव्याप्ततथा उसकालमेंपरमात्मानेंसहितराशिऔरनक्षत्र,चनाकर्के केप्रथमसूर्यउत्पन्नभयाहै ॥ १ ॥ अवसूर्यसें कालकी उत्पत्तिकहतेहैं जिस कालमें सूर्यना रायण प्रकटभये तिससें शुभाशुभ फलके जनानें वालाअहोरात्र नामकर्के कालहोताभया जि सकोंहैं॥होराकहतेहैं सो पूर्वापरवर्णलोपसें अहोरात्र कर्के उत्पन्न है ॥ २ ॥ अवकाल के अंगोंकाविभागकहतेहैं ॥ मेषराशि शिर वृष मुख मिथुन बाहु कर्क हृदय, सिंह उ दर कन्या कटि तुला वस्ति वृश्चिक गुदा धनु पट्ठ मकर जानू कुंभ जंघा मीन पाद इहेकालपुरुषके अंगोंमें मेषादि राशियां कहिहैं ॥ ३ ॥ अवमेषादिराशियांकहतेहैं मेष ॥१ वृष ॥ २ मिथुन ॥ ३ ॥ कर्क ॥ ४ ॥ सिंह ॥ ५ ॥ कन्या ॥ ६ ॥ तुला ॥ ७ ॥ वृश्चिक॥ ८ ॥ धन ॥ ९ ॥ मकर ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ मीन ॥ १२ इहे वारांराशि हैं ॥ ४ ॥ अवराशियों

अथसंज्ञाध्यायोव्याख्यायतेतत्रखाद्युत्पत्तिः ॥तमस्तोमावृत्तेविश्वेजगदेतच्चरा चरम् राशिग्रहोडुसंघातंसृजन्सूर्योभवत्तदा ॥ १ ॥ अथकालोत्पत्तिः ततःप्रभृति जंतूनांसदसत्फलसूचकः॥होराख्योवर्त्ततेकालोह्यहोरात्रेणलोपतः २ अथका लस्यांगविभागः शीर्षमुखवाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसंज्ञानिऊरूजानूजं घेचरणावितिराशयोजाद्याः ३ ॥ अथराशिकथनम् मेषवृषमिथुनकर्कटसिंहाः कन्यातुलाथवृश्चिकभम् धनुरथमकरःकुंभोमीन इतिराशयःकथिताः ॥ ४ ॥ अथराशिस्वरूपम् सप्तविंशतिभिर्ज्योतिश्चक्रं तिमितवायुगम् तदर्कांशोभवेद्रा शिर्नवर्क्षचरणांकितः ५ ॥ अथराशिनक्षत्रविभागः अश्विनीमघमूलादौमेषासिं हहयादयः ॥विषमर्क्षान्निवर्त्ततेपादवृद्ध्यायथोत्तरम् ६ अथराशीनामधिष्ठातृरू पम् ॥ मत्स्योघटीनृमिथुनसगदंसवीणंचापीनरोश्वजघनोमकरोमृगास्यः ॥

केस्वरूपकहतेहैं अश्विनीसेंलेकर्केसताईजोनक्षत्रहैं तिन्हका द्वादशांशएकराशिहोताहै नक्षत्रोंकेन वपादों कर्के अंकितहै ॥ ५ ॥ अवराशिकेनक्षत्रोंकाविभागकहतेहैं अश्विनी ओर मघा ओर मूला नक्षत्रसें लेकर्के चार चार राशियोंकी प्रवृत्ति है ओर तीसरे तीसरे नक्षत्रको य थोत्तर पादवृद्धिकर्के निवृत्त होताहै ॥ ६ ॥ अवराशियोंकेअधिष्ठातृरूपकहते हैं मीनरा शि दो मत्स्य जैसें परस्परमुखमें पुच्छग्रहणकर्के वृत्तक्षेत्रकीन्याई स्थितहोवे ओर कुंभराशि जै सें घटी पुरुष जलके वास्ते जाताहै तिसकी न्याई ओर मिथुनराशि स्त्रीपुरुष दोनों मि लेहुये पुरुषके हाथ में गदा स्त्रीके हाथमें वीणा अयसा रूपहै ओर धनराशि घोडेकी न्याईजंघा ॥ ४ ॥ जिसकियां ओर धनुषधारी पुरुषकी न्याई है ओर मकराशि हरणकी न्याई मुख जिसका अयसा मत्स्यरूपहै

और तुलराशि जैसें तुलाकों हाथलियें पुरुष होताहे और कन्याराशि जैसें किस्तीमें स्थितकन्या एकहाथनें धान्यमंजरी और एकहाथमेंदीपक वलता लिया होवे तिसकी न्यांई है और मेष भिड्डुकी न्याई और वृष बैलको न्यांई और कर्ककमठकी न्यांई जोजलमें रहताहे वाउली खूहे में और सिंह शेरकी न्याई और वृश्चिक विच्छुकी न्याई इहे संपूर्ण आकाशमें विचरतीहैं ७ ॥ अबराशियोंकीद्विपदचतुष्पदादिसंज्ञाऔर मेषादिराशियांकेस्थानकहतेहैं मिथनऔर तुला औरकन्या औरधनराशिका पूर्वभाग द्विपद राशिहैं और मकरकापूर्वार्द्ध और धनका उत्तरार्द्ध और वृष और मेष और सिंह इहे चतुष्पद राशिहैं ॥ ८ ॥ और वृश्चिकराशि मुनियोंने सरीसृपसंज्ञा कहिहै ॥ ९ ॥ रात्रिमें मिथुन तुला कन्या धन कुंभ राशिया ग्रामचारीहैं और वृष और मेष और मकर का पूर्वार्ध और सिंह और वृष और मेष राशिवनचारीहै ॥ १० ॥ औरकर्कटऔरमीनऔरमकरका पश्चिमार्द्धऔरशिवकेमतमेंकुंभइहेजलचरराशिहैं इहेराशियोंके स्वरूप मार्कंडेयादि योंऋपि चिर-

तौलीससस्यदहनाप्लवगाचकन्याशेषास्स्वनामसदृशाःखचराश्चसर्वे ॥ ७ ॥ अथराशीनांद्विपदचतुष्पदादि तथामेषादीनांस्थानकथनम् ॥ मिथुनतुलाधर कन्याद्विपदाख्याश्चापपूर्वभागश्च मृगधनुराद्यांत्यर्धंवृषाजसिंहाश्चतुश्चरणाः ८ वृश्चिकराशिर्मुनिभिस्सरीसृपत्वेननिर्दिष्टः ॥ ९ ॥ ग्राम्यामिथुनतुलास्त्रीचापा लिघटानिशासुवृषमेषौ मकरादिमार्द्धसिंहौवन्यौदिवसेजवृषभौच ॥ १० ॥ जलजौकर्कटमीनौमकरांत्यर्द्धंचशिवमतेकुंभः राशिस्वरूपमेतन्मार्कंडेयादिभिः कथितम् ११॥ अथमेषादीनांवर्णकथनम् अरुणसितहरितपाटलपांडुविचित्राःसितेतरापिशंगौ पिंगलकर्बुरबभ्रुकमलिनारुचयोयथासंख्यम् १२॥ अथराशीनां क्रूरसौम्यादिविवेकः क्रूरोथसौम्यःपुरुषोंगनाचओजोथयुग्मंविषमःसमश्च चर स्थिरद्व्यात्मकनामधेयामेषादयोमीक्रमशःप्रदिष्टाः१३अथसामान्यतोराशिसंज्ञा राशिनामानिचक्षेत्रंभमृक्षंगृहनामच मेषादीनांचपर्यायैलोकादेवाविचिंतयेत् ॥ १४

जीवी तिन्होंनें कहेहैं ॥ ११ ॥ ॥ अबमेषादिराशियोंकेवर्णकहते है ॥ मेषराशि रक्तवर्ण वृष श्वेत मिथुन सब्ज कर्क गुलाबीसिंहपांडुवर्ण श्वेतपीत मिलाहया होता हैऔर कन्या विचित्र वर्ण और तुला कृष्णवर्ण और वृश्चिक पिशंगवर्ण और धन पिंगल वर्ण और मकरकर्बुरवर्ण और कुंभ बभ्रुक नकुलवर्णकी न्यांई है और मीनराशिमलिन वर्ण है इहे मेषादिराशियों के वर्ण कहे हैं ॥ १५ ॥ अब मेषादिराशियोंका क्रूर सौम्यादिविचारकहते हैं मेष क्रूर वृष सौम्य इत्यादि और मेष पुरुष वृषस्त्री इत्यादि और मेष ओजवृषयुग्म इत्यादि और मेष विषम और वृष सम इत्यादि और मेष चर वृष स्थिर मिथुन द्विस्वभावइत्यादि इहे मेषादिराशियां क्रमसें कहिहैं ॥ १३ ॥ अब सामान्यता सेंराशियोंकीसंज्ञाकहते हैं राशियोंके नाम क्षेत्र और भ ऋक्ष और गृह और मेषादिराशियोंके पर्यायनाम और ग्रथोंसें चिंतन करे ॥ १४ ॥

अवाराशियोंकी विशेषसंज्ञा कहते हैं ॥ क्रिय मेष और तावुरि वृष और जितुम मिथुन और कुलीरा कर्कट और लेय सिंह और पाथोन कन्या और जूक तुला और कौर्प्य वृश्चक और तौक्षिक धन और आकोकेरो मकर और हृद्रोग कुंभ और अंत्यभ मीन इहे मेषादि द्वादशराशियोंकी विशेष संज्ञा कहि है १५ अबवेशिस्थानादि संज्ञा कहते हैं सूर्यकी राशिसें दूसरी राशिकी वेशि संज्ञा है और स्वामीकर्के दूजयो राशिहै तिसकोध्रुवसंज्ञा कहि है और राशियोंके उदयकों लग्न कहते है और राशिके अर्धभागकों और लग्नकों होरापद कर्के कहते हैं १६ अब पुण्यादिसंज्ञाकहतेहैं नवमभावसेंयो तीन राशिहै ९ १० ११ तिसको पुण्यसंज्ञाहै और पुष्कलसं ज्ञा और निधानसंज्ञा कहि है तिसका स्वामी योगकर्के विशेष फलकों देताहै १७ अबराशियोंकेस्वामीकहतेहैं मेषका स्वामी भोम वृषका शुक्र मिथुनका वुध कर्कका चंद्रमा सिंहका सूर्य कन्याका वुध तुलाका शुक्र वृश्चिककाभौम धनका गुरु

अथराशिविशेषसंज्ञा क्रिय १ तावुरि ॥ २ ॥ जितुम ३ कुलीर ॥ ४ ॥ लेय ५ पाथोन ६ जूक ७ कौर्प्याख्याः ८ तौक्षिक ९ आकोकेरो १० ॥ हृद्रोग ११ ॥ श्चांत्यभं १२ चेत्थम् ॥ १५ ॥ अथवेशिस्थानादिकथनम् ॥ वेशिः सूर्याद्वितीयर्क्षस्वामिदृक्संज्ञितःध्रुवः राशीनामुदयोलग्नंहोराराश्यर्द्धलग्नयोः १६ अथपुण्यादिसंज्ञा ॥ पुण्योभवेत्पुष्कलनामधेयस्ततोभवेत्तत्रनिधानसंज्ञः ॥ तस्याधिपोयोगकृतप्रयत्नस्सएवजन्मफलमाददाति १७ ॥ अथराश्याधिपकथनम् ॥ कुजशुक्रवुधेंद्वर्कसौम्यशुक्रावनीभुवाम् ॥ जीवार्किभानुजेज्यानांक्षेत्राणि स्युरजादयः ॥ १८ ॥ अथोच्चनीचकथनम् ॥ सूर्यागुच्चान्क्रियवृषमृगस्त्रीकुलीरांत्यजूके ॥ दिग्वन्हींद्रद्वयातिथिशरान्सप्तविंशांश्चविंशान् ॥ अंशानेतान्वदति यवनश्चातितुंगान्सुतुंगान् ॥ तानेवांशान्मदनभवनेष्वाहनीचान्सुनीचान् ॥ १९ ॥ अथमूलत्रिकोणकथनम् सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुंभधराः सूर्यादीनांमूलत्रिकोणभवनान्यनुक्रमशः ॥ २० ॥

मकरका और कुंभका शनि : मीनका गुरुः इहे क्रमसें मेषादिराशियोंके स्वामी कहे हैं ॥ १८ ॥ ॥ अवग्रहोंकीउच्चनीचराशिकहते हैं ॥ सूर्यादिग्रहोंके उच्चस्थान क्रमसें कहे हैं मेषमें सूर्य और वृषमें चंद्रमा और मकरमें मंगल और कन्यामें वुध और कर्कमें वृहस्पति और मीनमें शुक्र और तुलामें शनि उच्च होता है और पूर्वोक्तराशियोंमें यथाक्रमकर्के दश ॥ १० ॥ तीन ॥ ३ ॥ अठाई ॥ २८ ॥ पंद्रा ॥ १५ ॥ पांच ॥ ५ ॥ सताई ॥ २७ ॥ वीस ॥ २० ॥ अंशोंपर्यंत परमोच्चमें होते हे और उच्चराशिसें सप्तमस्थानमें सूर्यादिग्रहनीचहोते हैं और पूर्वोक्तअंशोंमे परमनीच होते हैं १९ ॥ अब ग्रहोंकियां मूलत्रिकोणराशियां कहतेहैं ॥ सूर्यकी सिंहराशि और चंद्रमाकी वृष और मंगलकी मेष और वुधकी कन्या और गुरुकी धन और शुक्रकी तुला औरशनिकी कुंभ इहे यथाक्रमसेंसूर्यादिग्रहोंकेमूलत्रिकोण भवनहैं ॥ २० ॥

अव स्वक्षेत्रादिभ्रम दूरकरणे वास्ते मूलत्रिकोणके अंशोंको व्यवस्था कहतेहैं ॥ सूर्य सिंहके वीस अंशों कर्के मूलत्रिकोणमें स्थितहोताहै और उपरंत स्वक्षेत्री कहाहै औरवृषके तीन अंशसें उपरत और तेरांअंश पर्यंत मूलत्रिकोणमें चंद्रमा होताहै और मंगल मेपके वारा अंश मूलत्रिकोण और उपरत स्वक्षेत्री होताहै और बुध कन्याके पंद्रा अंशकेउपरत और पच्ची अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें होताहै उपरंत स्वक्षेत्री होताहै और गुरु धनके दश अंश मूलत्रिकोणमें उपरत स्वक्षेत्रीहोताहै औरशुक्र मीनके पंद्रा अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें उपरंत उच्चहोताहै और शनि कुंभके वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणमें उपरंत स्वक्षेत्री होताहै ॥ २१ ॥ अवनवांशकहतेहैं ॥ नक्षत्रके पादका एक नवांश कहाहै सो नवांश चरराशियोंमें अपनी राशिसें लेकर्के नवराशि पर्यंत होताहै और स्थिर द्विस्वभाव राशियोंमें नवम और पंचम स्थानमें जो चरराशिहै तिससें लेकर्के नवांशहोताहै अर्थात्संपूर्ण राशियोंमें चरराशिसें लेकर्के नवांश कहाहै और अपनी राशिके न

अथ मूलत्रिकोणांशव्यवस्था ॥ रविभौमजीवभार्गवशनैश्वराणांत्रिकोणभागाःस्युः नखरविदिक्तिथिनखभागाज्ञेंद्वोर्दिग्भांशकाःस्वोच्चात् २१ ॥ अथ नवांशकथनम् चरणांशत्रिकोणानांतच्चराद्यानवांशकाः राशीनांस्वनवांशोयःसवर्गोत्तमसंज्ञिकः ॥ २२ ॥ अथहोराद्रेष्काणद्वादशांशव्यवस्था ॥ होरेविषमेर्केंद्वोः समराशौचंद्रतीक्ष्णांश्वोः स्वगृहाद्वादशभागाद्रेष्काणाःप्रथमपंचनवपानाम् ।२३। अथजलदहनमिश्रद्रेष्काणव्यवस्था ॥ सदसद्ग्रहद्रेष्काणाजलदहनाख्याः प्रकीर्तिताःक्रमशः पापयुता सलिलाख्यामिश्रादहनाश्चसौम्ययुताः॥ २४ ॥ अथसौम्यरूपद्रेष्काणव्यवस्थाः ॥ नृयुग्ममीनयोराद्यौमध्येकर्कटचापयोः कन्यांतःसौम्यरूपाख्याःद्रेष्काणाःपंचकीर्तिताः २५ ॥ अथ फलपुष्पयुतरत्नभांडान्वितद्रेष्काणव्यवस्था ॥ द्रेष्काणःकर्कटाद्यस्तु फलपुष्पयुतःस्मृतः रत्नभांडान्वितौज्ञेयौ धनुर्मध्यतुलादिमौ ॥ २६ ॥

वांशको वर्गोत्तमकहतेहैं ॥ २२ ॥ अवहोरा और द्रेष्काण और द्वादशांश कहतेहैं ॥ विषम राशियोंमें प्रथम ॥ १५ ॥ अंश सूर्यकी होरा उपरंत चद्रमा की होतीहै और समराशियोंमें प्रथम १५ अंश चद्रमा की उपरत सूर्यकी होरा होतीहै और द्वादशांश अपनी राशिसें ढाई ॥ २ ॥ अंश प्रमाण कर्के होताहै और द्रेष्काण प्रथम और पंचम और नवम राशिके स्वामियों के दश अंश होतेहै २३ अव जलदहनमिश्रसंज्ञक द्रेष्काण कहतेहैं ॥ शुभग्रहोंके द्रेष्काण जलसंज्ञक होतेहैं और पापग्रहोंके द्रेष्काण दहनसंज्ञक होतेहैं और पापग्रहोंकर्के युक्त जलद्रेष्काण और शुभग्रहों कर्के युक्त दहनद्रेष्काणमिश्रसंज्ञक होतेहैं २४ अव सौम्यरूपद्रेष्काण कहतेहै मिथुन और मीन राशिके प्रथम द्रेष्काण और कर्क और धनराशिके मध्यद्रेष्काण और कन्या राशिका अंत्यद्रेष्काण इहे पांच सौम्यरूपद्रेष्काण कहेहैं २५ अव फल पुष्पयुत और रत्नभांडयुतद्रेष्काण कहतेहैं कर्कट राशिका पूर्व द्रेष्काण फलपुष्पयुक्तसंज्ञक होताहै और तुलाका पूर्वद्रेष्काण और धनराशिकामध्यद्रेष्काण दोनों रत्नभांडयुक्त कहेहैं

अबरौद्रसंज्ञक द्रेष्काणकहतेहैं मेषराशिके और मकरराशिके और वृश्चिकराशिके मध्यद्रेष्काणऔर अंत्यके द्रेष्काण और कुंभराशिके तीनहि द्रेष्काण औरमिथुन तुला राशिके अंत्यके द्रेष्काणऔरमीनराशिके मध्यका द्रेष्काण और सिंहराशिका पूर्व औरमध्यके द्रेष्काण इहे सोला द्रेष्काण रौद्रसंज्ञककहेहैं ॥ २७ अब उद्यतायुध संज्ञक द्रेष्काण कहतेहैं कन्या ॥ और मिथुन और मेष और मकर औरकुंभ राशियोंकेतीनहि द्रेष्काण और धन राशिका पूर्व और अंत्यका द्रेष्काण औरतुलाराशिका अंत्यका द्रेष्काण और मध्यका द्रेष्कण और सिंहराशिका अंत्यका द्रेष्काण इहे वीस द्रेष्काणकी उद्यतायुधसंज्ञा कहि है ॥ २८ ॥ अवसर्पनिगडसंज्ञकद्रेष्काणकहतेहैं मीन और कर्क राशिके अंत्यके द्रेष्काण और वृश्चिक राशिके प्रथम और मध्य द्रेष्काण इहे चार द्रेष्काण सर्पनिगडसंज्ञक कहेहैं २९ ॥ अब

अथ रौद्रद्रेष्काणव्यवस्था रौद्रामेषमृगालीनांमध्यांताःकुंभजास्त्रयः नृयुक्तुलान्तिमौमीनमध्यःसिंहादिमध्यमौ ॥२७॥ अथोद्यतायुधद्रेष्काणव्यवस्था उद्यतास्त्रीनृयुङ्मेष मृगकुंभभवास्त्रयः चापाद्यंतौतुलांत्यश्चमध्यौसिंहांत्यसंभवौ २८ ॥ अथसर्पनिगडद्रेष्काणव्यवस्था मीनकर्कटयोरंत्यौ वृश्चिकस्यादिमध्यमौ सर्पाश्चत्वारएवैतेद्रेष्काणानिगडाश्चते २९ अथ व्याडद्रेष्काणव्यवस्था व्याडाःकुंभालिमध्याद्याःकर्किमीनांत्यसंभवौ सिंहाद्यंतौमृगाद्यश्चतुलामध्यांतसंभवौ ३० अथपाशधरपक्षिद्रेष्काणव्यवस्था वृषाद्योमकराद्यंतौ द्रेष्काणाःपाशधारिणः तुलामध्यांतसिंहाद्यंकुंभाद्याःपक्षिणःस्मृताः ३१ ॥ अथत्रिंशांशविवेकः कुजयमजीवज्ञसिताःपंचेंद्रियवसुमुनींद्रियांशानाम् विषमेपुसमेषूत्क्रमतस्त्रिंशांशकाःकल्प्याः ॥ ३२ ॥

॥ अथत्रिंशांशचक्रम् ॥

ग्रहाः	विषमराशौ	समराशौ
मं	५	५
श	५	७
बृ	८	८
बु	७	५
शु	५	५

व्यालद्रेष्काण कहतेहैं ॥ कुंभ और वृश्चिक राशिके पूर्व और मध्य द्रेष्काण और कर्क और मीन राशिके अंत्यके द्रेष्काण और सिंह राशिके आद्य और अंत्यके द्रेष्काण और मकर राशिका पूर्व द्रेष्काण और तुलाराशिके मध्य और अंत्यके द्रेष्काण इहे एकादश द्रेष्काण व्याडसंज्ञक कहेहैं ॥ ३० ॥ ॥ अब पाशधरपक्षिसंज्ञकद्रेष्काणकहतेहैं वृषका पूर्व द्रेष्काण और मकरके आद्यंत्यके पाशधरक हेहैं और तुलाके मध्य और अंत्यके द्रेष्काण और सिंहके आदका द्रेष्काण और कुंभका पूर्वद्रेष्काण इहे पक्षिसंज्ञक कहेहैं ॥ ॥ अबत्रिंशांश कहतेहैं विषम राशियोंमे क्रमसे पांच अंश भौमके और आगे पांच शनिके आगे आठ गुरुके आगे सात बुधके आगे पांच शुक्रके होतेहैं और समराशियोंमें उलटे क्रमसे अंशहोतेहैं सो चक्रमेंस्पष्टहैं ॥ ३२ ॥

अब सप्तांश कहतेहैं विषमराशियोंमेंराशिके स्वामीसें और समराशिमें वर्त्तमानलग्नराशिसें सप्तमराशिके स्वामी सें सप्तांशहोताहै जैसें मेषराशिमें मेषसें लेकर्के तुलापर्यंत राशिहोतीहै और वृषलग्नमें वृश्चिक सें लेकर्के वृषपर्यंत होतीहै सप्तांशस्वरूपम् ४ । १७ । ८ इतिसप्तवर्गः अथदशमांशषोडशांश कहतेहैं दशमांश विषमराशियोंमें अपनीराशिके स्वामिसें चलताहै और समराशियोंमें अपनेसेंनवमराशिसें चलताहै और षोडशांश विषमराशियोंमें अपनी राशिसें लेकर्के बारा राशियोंके अगे ब्रह्माविष्णुशिवसूर्य

॥ अथ सप्तांशविवेकः ॥ सप्तांशपास्त्वोजगृहेतदीशाद्युग्मेगृहेसप्तराशिपात्तु ॥ इतिसप्तवर्गः ॥ अथ दशमांशषोडशांशयोर्विवेकः दशांशकानामधिपास्तदीशादोजेसमेतन्नवमेश्वाराद्याः ओजेकलानामधिपास्तदीशाच्चतुर्मखो विष्णुहरौदिनेशः युग्मेक्रमाद्व्यत्ययेमवराशाविति ॥ ३४ ॥ अथ षष्ट्यंशविवेकः ॥ षष्ट्यंशकानामधिपास्त्वयुग्मे घोरांशको राक्षस देवभागौ कुबेर रक्षोगण किन्नरांशाः ॥ ३५ ॥ भ्रष्टः कुलघ्नो गरला ग्निसंज्ञा वाऽऽपांशकः प्रेतपुरीपभागः अपांपति देवगणेशभागः कालाऽ हिभागा वमृतांश चंद्रौ ३६ मृद्वंशकः कोमल पद्मभागौ लक्ष्मीश वागीश दिगंबरांशाः देवार्द्र भागौ कलिनाशभागः क्षितीश्वरांशः कमलाकरांशः ॥ ३७ ॥ क्रमेणमंदात्मजमृत्यु काल दवाग्नि घोराऽ धम कंटकाश्च सुधामृतांशः परिपूर्ण चंद्रविष प्रदग्धौ कुलनाश मुख्यौ ॥ ३८ ॥ वंशक्षयो त्पातकरालरूपाः सौम्य श्चमृद्वंश सुशीतलांशो दंष्ट्राकरालें दुमुख प्रवीण कालाग्नि दण्डा युधनिर्मलांशाः ३९

चार देवताकेअंश होतेहै और समराशियोंमें ब्रह्मासें लेकर अपनी राशिपर्यंत विलोमकर्के होतेहै २४ षोडशांशस्वरूपम् ॥ १ । ५७ । ३० अब एक राशिमें साठ अंशोंके स्वामी कहतेहैं तिसका स्वरूप ॥ ० । ३० । ०० ॥ त्रिंशत्कलात्मक साठ अंशोंकेस्वामी घोरांशसेंलेकर्के विषमराशियोंमें पाठक्रमसें जानने योग्यहैं और समराशियोंमें उलटे क्रमसें इंदु रेखादि घोरांश पर्यंत जानने योग्यहैं

॥ अवषष्ट्यंशकेफलका विचार कहतेहैं ॥ साठ ॥ ६० ॥ अंशोंके स्वामी यो है तिन्हमें छवी ॥ २६ ॥ क्रूर हैं और एक ॥ १ ॥ मध्यम है और तेतरी ॥ ३३ ॥ देवांश शुभ है तिन्हमें वक्ष्यमाण षड्विधवलकर्के युक्त वी संपूर्ण शुभाशुभ ग्रह स्थित होवें और अपने उच्चादि स्थानों में वी स्थित होवें तववी छवी ॥ २६ ॥ कहे यो घोराशादि क्रूरांश तिन्हमें स्थित होनेसें अशुभ फल हि देतेंहें इसमें इहे अभिप्राय कहाहे उच्चादिस्थानोंमें गतशुभग्रहोंका अत्यंत शुभफलकी प्राप्ति नाहिं होतीहे क्रूर षष्ट्यंशमें स्थितहोने कर्के और क्रूरग्रहोंका यो स्वोच्चादिस्थानों में स्थितहोनेका यत्किंचित् अशुभ नाहिं होताहे और इसीप्रकार कर्के तेत्री ॥ ३३ ॥ यो देवभग है तिन्हमें स्थित होनेसें क्रूरग्रहोंके शुभफलकी हानि होतीहे और देवभागोंमें शुभग्रहस्थितहोवें तव अत्यंत शुभफलकों देतेहैं तिसकर्के दशवर्गसिद्धिमें षष्ट्यंशकों मुख्यता प्रतिपादन करीहे ४० ॥ और कहते हैं क्रूर षष्ट्यंशमें संपूर्ण ग्रह जव वलकर्केवी युक्तहोवें और अपने उच्चराशियोंमें और मित्रक्षेत्रमें और मूल-

५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

शुभा ऽ शुभांशावतिशीतलांशः सुधापयोधिभ्रमणेंदुरेखाः ज्ञेयाः क्रमाद्व्यत्ययमेवयुग्मे शुभाश्रितांशोयदिशोभनाप्तिः ४० क्रूरषष्ट्यंशगाः सर्वे नाशयंतिखचारिणः यदिपूर्णवलैर्युक्ताः स्वोच्चमित्रत्रिकोणगाः ४१ अथोत्तमांशादि भेदाः मूलत्रिकोणकोणोच्चस्वर्क्षकेंद्रोत्तमांशकाः सप्तवर्गोद्भवाश्चान्येस्वाधिमित्रांशकान्विताः ४२ वर्गास्तुयेदशप्रोक्ताः पूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः भवंतिवर्गसंयोगे पारिजातादिसंज्ञकाः ४३ दुःस्थारिनीचमूढस्थाग्रहावलविवर्जिताः मरणावस्थगाश्चैतुपारिजातादिनाशकाः ४४ उत्तमंतुत्रिवर्गैक्यंचतुर्वर्गेतुगोपुरम् वर्गपंचकसंयोगेसिंहासनमिहोच्यते ४५ वर्गद्वयंपारिजातंषण्णांपारावतांशकम् सप्तमेदेवलोकस्यादष्टमंचामरंभवेत् ४६ ऐरावतंतुनवमंफलंनामानुसारतः

त्रिकोणमें वी स्थितहोवें तव शुभफल नाहिंकर्ते हे और जिस भावमें युक्तदृष्टहोवें तिसका नाशकर्ते हैं ४१ ॥ अव उत्तमांशादि भेद कहते हैं यो ग्रह सप्तवर्गमें मूलत्रिकोणमें और उच्चमें और स्वक्षेत्रमें और केंद्रकोणमें और मित्राधिमित्रराशिमें स्थित होता है तिसकी उत्तमांशसंज्ञा होतीहे ४२ और कहते है यो ग्रह छठे और अष्टम और द्वादश स्थानमें स्थित होते हे और नीचराशिमें और योग्रह अस्तहोते हैं और वलहीन यो ग्रहहोते हैं और योग्रहमरणाऽवस्थामें स्थित होते हैं सो पारिजातादि शुभयोगोंकानाशकर्ते है ४४ ॥ और कहते है दशवर्गमें स्वोच्चमित्रादि तीनवर्गमें यो ग्रहस्थित होवे तिसकी उत्तमांशसंज्ञा हे और चारवर्गमें यो स्थितहोवे तिसकी गोपुरसंज्ञाहे और पांचवर्गके संयोगमें सिंहासनसंज्ञा होतीहे ४५ ॥ और दोवर्गके संयोगकर्के पारिजातसंज्ञा होतीहे और छेवर्गके योगकों पाराव-तांश कहते हैं और सातवर्गकों देवलोक और आठवर्गैक्यकों चामरांश कहते है ॥ ४६ ॥ और नववर्गैक्यकी ऐरावतसंज्ञा है और इन्होंके नामतुल्य फलहोता है

॥ अवग्रहोंकियां वालादि पांच अवस्था कहतेहैं ॥ विषम राशियोंमें क्रमसें छे छे अंशप्रमाणकर्के प्रथम वाल दूसरी कुमार तीसरी युवा चउथी वृद्धा पाचमी मृत्यु इहे पाच अवस्था होतीहैं और समराशियोंमें विपरीत प्रथम छे अंश मृत्यु फेर वृद्ध । फेर युवा फेर कुमार फेर वाल इसक्रमसें होतीहै ४७ अवमेषादिराशियोंकियांदिशाकहतेहैं ॥ मेषसें लेकर्के तीनआवृत्तिभ्रमणसें पूर्वादिदिशाके पति कहेहैं जैसें पूर्वका स्वामी मेष सिंह धन इत्यादि ॥ ४८ ॥ अवराशियोंकीपृष्ठोदयादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ वृष और मेष और धन और कर्क और मिथुन और मकर इहे छैराशि पृष्ठोदयकहिहैं और रात्रिमें वलीहोतीहैं और मिथुनपृष्ठोदय नहिंहै केवल रात्रिमें वलीहै शेषराशि योहैं सिंह और कन्या और तुला और वृश्चिक और कुंभ इहे दिनमें वलीहैं और शीर्षोदय हैं इन्हमें मिथुन वी शीर्षोदय है और मीनराशि उभयोदय कहिहै ॥ ४९ ॥ अवस्वामीऔरशुभग्रहादियोगसेंराशियोंकावलावलकहतेहैं ॥ स्वमी और मित्र

॥ अथवालाद्यवस्था ॥ वालाद्यवस्थाक्रमशोग्रहाणामोजेसमेतद्विपरीतमाहुः ॥ वालाकुमारोथयुवाचवृद्धामृत्युर्लवानामृतुभिःक्रमेण ॥ ४७ ॥ अथराशीनांदिग्विवेकः -प्रागादिककुभांनाथायथासंख्यंप्रदक्षिणम् ॥ मेषाद्याराशयोज्ञेयास्त्रिरावृत्तिपरिभ्रमात् ४८ ॥ अथपृष्ठोदयादिविवेकः ॥ गोजाश्वकर्किमिथुनाःसमृगाःनिशाख्याःपृष्ठोदयाविमिथुनाःकथितास्तएव ॥ शीर्षोदयादिनवलाश्चभवंतिशेषालग्नंसमेत्युभयतःपृथुरोमयुग्मम् ॥ ४९ ॥ अथपत्यादियोगादिनाराशिवलावलम् ॥ पतिप्रियसौम्योच्चस्थैर्युतवीक्षितोवलीराशिः ॥ स्वल्पवलोन्यैर्मिश्रैर्मध्यःसर्वायुतवीक्षितस्त्ववलः ॥ ५० ॥ अथराशीनांस्थानवलम् ॥ केंद्रस्थान्प्रवलान्राशीन्मध्यान्पणफराश्रितान् ॥ आपोक्लिमगतान्गर्गःसर्वान्हीनवलान्वदेत् ॥ ५१ ॥ अथराशीनांदिग्वलम् नरास्तुवलिनोलग्नेचतुर्थेजलराशयः ॥ सप्तमेवृश्चिकश्चैवदशमेपशवस्तथा ॥ ५२ ॥

और शुभग्रह और उच्चादि स्थनमें स्थितग्रहकर्के युक्तदृष्टराशि वली होतीहै और पापग्रहों कर्के औ शुभग्रहों कर्के दोनोंसें युक्तदृष्टहोवे तवथोडे वलवाली होतीहै और किसी ग्रहकर्के युक्तदृष्ट नहिंहोवे तव निर्वल होतीहै ॥ ५० ॥ अवमेषादिराशियोंका स्थानवलकहतेहैं योराशियांकेंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० । स्थानमें स्थित होतीयाहे सो वली होतीयाहैं और योराशिपणफर । २ । ५ । ८ । ११ स्थानमें स्थित होतीहै सो मध्यवली होतीहैं और यो राशि आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमे स्थित होतीहैं सो हीनवल होतीहै अयसें गर्गऋषि कहता है ॥ ५१ ॥ अव राशियोंका दिग्वल कहते हैं मनुष्यराशिया लग्नमें वलीहोतीया है और जलचरराशिया चतुर्थस्थानमें वली-होतीयांहै और सप्तमभावमें वृश्चिकराशि वली होतीहै और दशमस्थानमें चतुष्पदराशि वली होतीहैं ५२ ॥

॥ अवराशियोंकाकालबलकहतेहैं ॥ मनुष्यराशिया दिनमें और चतुष्पदराशियां रात्रिमें शे पजलचर और कीटराशि संध्याकालोंमें बली होतीहैं ॥ ५३ ॥ अवबलाबलकाविभागकहतेहैं और यो राशि बली होती है तिसीके बलसें नवांश तिसका बली होताहै और राशिके निर्बल होनेसें अश बी निर्बल होताहै और राशिके मध्यबलसें मध्यबली होताहै ॥ ५४ ॥ अवराशियोंके वश्यावश्यकहतेहैं ॥ द्विपद राशियोंके सिंहराशि विना सपूर्ण चतुष्पद वश्यहै और जलचर भक्ष्यहैं और सरीसृप राशिया वश्यहैं ५५ और वृश्चकराशिकों छोडकर्के सिंहराशिके संपूर्ण राशिया वश्यहैं और नहि कहा यो राशियोंका व्यवहार सोलोकव्यवहारसें जाननेयोग्य है ५६ अवलग्नादिभावोंकाविवेक कर्तेहैं लग्नभावकोंसामर्थ्य और तनु और उदयनाम कर्के कहतेहैं और धनभावकों वित्त और कुटुंबकर्के कहते हैंऔर भ्रातृभावकोंसहज और विक्रम और तृतीय औरयुद्धकहतेहैं और चतुर्थभावकोबंधु और वाह्य औरसुख

॥ अथराशीनांकालबलम् दिवाभागेमनुष्यास्तुनिशायांतुचतुष्पदाः॥संध्याद्वयेऽवशेषास्तुबलिनःपरिकीर्तिताः ५३ ॥ अथांशबलाबलविभागः ॥ यस्तुयस्यांशकोराशेस्तद्बलादंशकोबली अबलस्तस्यदौर्बल्येमध्यमेमध्यमःस्मृतः ५४ अथ राशीनांवश्यावश्यविवेकः द्विपदवशगाःसर्वेसिंहंविहायचतुष्पदाः सलिलनिलयाः भक्ष्यावश्याःसरीसृपजातयः ५५ मृगपतिवशेतिष्ठेयुरेतोविहायसरीसृपान् अकथितगृहेपूह्यंवश्यंजनव्यवहारतः ॥ ५६ ॥ अथतन्वादिभावविवेकः सामर्थ्यंतनुकल्प्यतेसमुदयेवित्तंकुटुंबंततोविक्रांतंसहजंतृतीयभवनेयोधंचसंचिंतयेत् बंधुवाह्यसुखालयानिचततोधीमंत्रपुत्रांस्ततःषष्ठेथक्षतिविद्विपोमदगृहेकामंस्त्रियंवर्त्मच ॥ ५७ ॥ रंध्रायुर्मृतयोष्टमेगुरुतपोभाग्यानिचित्तंततोमानाज्ञास्पदकर्मणांदशमभेकुर्यात्ततश्चिंतनम् ॥ प्राप्त्यायावथचिंतयेद्भवगृहेरिष्फेथमैत्र्यव्यथे सौम्यस्वामियुतेक्षणैरुपचयस्तेपांक्षतिस्त्वन्यथा ॥ ५८ ॥ अथारात्यादिभावापवादः॥ अरातिव्रणयोःषष्ठेचाष्टमेमृत्युरंध्रयोः व्ययस्यद्वादशस्थानेवैपरीत्ये ॥ नाचिंतनम् ॥ ५९ ॥

औरगृहकर्के कहतेहैं और पंचमभावकों बुद्धि और मंत्र और पुत्रकर्के कहतेहैं और छठेभावकों क्षति और शत्रुकर्के कहतेहैं और सप्तमभावकों काम और स्त्री और मार्गकर्के कहतेहैं ॥ ५७ ॥ और अष्टमकों छिद्र और आयु और मृत्यु कहतेहैं और नवमकों गुरु और तप और भाग्य और चित्त कहतेहै और दशमकों मान और आज्ञा और अस्पद और कर्म कहतेहैं और एकादशकों प्राप्ति और आयकर्के कहतेहै और द्वादशभावकों रिष्फ और मैत्री और पीडा कहतेहै और यो भाव शुभग्रह और स्वामी कर्के युक्तदृष्ट होताहै तिसकीवृद्धि होतीहै और अन्यथा हानि होतीहै ॥ ५८ ॥ ॥ अवअरात्यादिभावकहतेहैं ॥ छठे भावकों अराति और व्रण कहतेहैं और अष्टमकों मृत्यु और रंध्रकहतेहैं और द्वादशकों व्यय कहतेहैं इन्हका विचार विपरीत कहाहै स्वामी और शुभग्रहकर्के दृष्टयुक्तहोवें तब शुभनाहिं होतेहैं ॥ ५९ ॥

॥ अवउपचयादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ तीसरे और छठे और दशमे और ग्यारहमे स्थानोंकी उपचयसंज्ञा कहिहे जब पापग्रहोंकरके और स्वामिकरके और शत्रुग्रहोंकरके दृष्ट नहिं होवें तववृद्धिको करतेहैं स्वामी उपचयस्थानोंका द्वादशाष्टमस्थानमें और पापग्रहोंकरके पीडित नहोवे तव उपचय फल करतेहैं ६० अवकेन्द्रादिसंज्ञाकहतेहैं ॥ लग्न और चतुर्थ और सप्तम और दशम स्थानोंकी केन्द्र और चतुष्टय और कंटकसंज्ञा कहिहे और केन्द्रोंके आगेके स्थानोंकी पणफरसंज्ञाहे और पणफरोंके आगेके स्थानोंकी आपोक्लिमसंज्ञा कहिहे ॥ ६१ अवत्रिकोणादिसंज्ञाकहतेहैं नवम और पंचमस्थानोंका त्रिकोण कहतेहैं और चतुर्थ और अष्टमस्थानोंको चतुरस्रकहतेहे अवदशमादिस्थानविशेषोंकीसंज्ञा कहतेहे ख और मेपूरण और आस्पद दशमभावको कहतेहें और मदन और यामित्र और अस्त और द्युन और द्यून सप्तमभावको कहतेहे और सुहृद और गृह और हिवुक और पाताल और जल चतुर्थ भावको

॥ अथोपचयादिविवेकः ॥ अथोपचयसंज्ञास्यात्त्रि लाभरिपुकर्मणाम् नचेद्भवंतितेदुष्टाः पापैः स्वपतिशत्रुभिः ॥ ६० ॥ अथकेंद्रादिविभागः ॥ केंद्रचतुष्टयकंटकलग्नास्तदशमचतुर्थानाम् ॥ संज्ञापरत पणफरमापोक्लिमसंज्ञकंचतत्परतः ॥ ६१ ॥ अथत्रिकोणादिविवेकः ॥ पंचमंनवमंचैवत्रिकोणसमुदाहृतम् चतुर्थमष्टमंचैवचतुरस्रंविदुर्बुधाः ॥ ६२ ॥ अथदशमादिस्थानविशेषाणांसंज्ञा ॥ खंमेपूरणमास्पदेमदनभेयामित्रमस्तद्युनंद्यूनंचाथसुहृद्गृहंतुहिवुकंपातालमंभोपिच ॥ दुश्चिक्यंसहजंवदंतिमुनयोरिष्फंतथाद्वादशे ॥ षट्कोणरिपुमंदिरेनवमभेत्र्याद्यंत्रिकोणंपुनः ॥ ६३ अथ कालनरस्यात्मादिव्यवस्था ग्रहाणांनृपादिव्यवस्थाच ॥ कालात्मादिनकृन्मनस्तुहिमगुः सत्त्वंकुजोज्ञोवचोजीवोज्ञानसुखेसितश्चमदनोदुःखंदिनेशात्मजः राजानौरविशीतगूक्षितिसुतोनेताकुमारोवुधः सूरिर्दानवपूजितश्चसचिवौप्रेष्यः सहस्रांशुजः ॥ ६४ ॥ नथात्मादिग्रहाणांवलावलवशात्पुरुषस्यात्मादीनांवलावलनिर्णय वलावलाद्ग्रहाणांस्यादात्मादीनांवलावलम् नृपाद्याः प्रवलाः कुर्युः स्वरूपंशनिरन्यथा ॥ ६५ ॥

कहतेहे दुश्चिक्य और सहज तीसरे भावको कहतेहैं और रिष्फ द्वादशभावको कहतेहे और षट्कोण छठे भावका कहतेहे और त्रिकोण और त्र्याद्य नवमभावका कहतेहैं ६३ अव कालपुरुषकी आत्मादि व्यवस्था और ग्रहोंकी नृपादि व्यवस्था कहतेहैं सूर्य का पुरुषका आत्माहै और चद्रमा मनहै और मंगल पराक्रमहै और बुध वाणीहै और बृहस्पति विद्याहै और सुखहै और शुक्र कामदेवहै और शनि दुःखहै और सूर्य चद्रमा राजाहे और मंगल सेनापति है और बुध कुमारहे और बृहस्पति और शुक्र मत्रीहै और शनि दूतहे ६४ अव आत्मादि ग्रहोंके वलावलसे पुरुषके आत्मादिकोंका वलावलकहतेहैं सूर्यादि ग्रहोंके वलावलसे आत्मादिकोंका वलावल होताहे, और नृपादि, ग्रह वली होवें तव अपने रूपको प्रगटकरतेहे और शनि अन्यथा, विपरीत, करताहै निर्वलहोनसे भृत्यादि, गुणकरताहै ॥ ६५ ॥

॥ अवग्रहोंकेरंगकहतेहैं सूर्य रक्त श्याम हैं और चद्रमा गौर वर्णहै और भौम अ यंत-ऊंचा नहिहै और रक्तवर्णहै और बुध दूर्वाश्यामवर्णहै और बृहस्पति गौर वर्णहै और शुक्र श्याव शुक्लवर्णहै और शनि कृष्ण वर्णहै ॥ ६६ ॥ अवग्रहोंकीसंज्ञाकहतेहैं हेलिसंज्ञा सूर्यकी है और शीतरश्मी चद्रमाकी और हेम्ना कहतेहैं और बुधको वित् और ज्ञ और बोधन और चद्रमाका पुत्र कहतेहैं और मंगलको आर और वक्र और क्रूरदृक् और महीसुत कहतेहैं और शनिका कोण और मंद और सूर्यका पुत्र और कृष्ण कहतेहैं ६७ और बृहस्पतिको जीव और आंगिरस और सुरगुरु और वागीश और इज्य कहतेहै और शुक्रका भृगु और भृगुसुत और सित और आस्फुजित् कहतेहैं और राहुको तम और अगु और असुर कहतेहैं और केतुको शिखी और केतु कहतेहैं और इन्होंके अनेक नाम पर्याय अन्यशास्त्रसें विचारकर्के कहे ॥ ६७ अवसौम्यपापग्रहोंकाविचारकहतेहैं अर्द्धसें

अथग्रहाणांवर्णकथनम् रक्तश्यामोभास्करोगौरइंदुर्नात्युच्चांगोरक्तवर्णश्चभौमः दूर्वाश्यामोज्ञोगुरुर्गौरगात्र श्यामःशुक्रोभास्करिःकृष्णदेहः ॥ ६६ ॥ अथग्रहाणांसंज्ञा हेलिःसूर्यश्चंद्रमाःशीतरश्मिर्हेम्नाविद्ज्ञोबोधनश्चेंद्रपुत्रः आरोवक्रःक्रूरदृक्चावनेयः कोणोमन्दःसूर्यपुत्रोऽसितश्च ॥ ६७ ॥ जीवांगिराःसुरगुरुर्वचसांपतीज्योशुक्रोभृगुर्भृगुसुतःसितआस्फुजिच्च राहुस्तमोगुरसुरश्चाशिखाचकेतुः पर्यायमन्यदुपलभ्यवदेच्चलोकात् ॥ ६७ ॥ अथसौम्यपापविवेकः अर्द्धोनेंदुर्कसौरारा पापाज्ञस्तद्युतोपरे शुभाःपापौतमःकेतूविष्णुधर्मोत्तरोदितौ ॥ ६८ ॥ अथदिक्पतिविवेकः सूर्यःशुक्रःक्षोणिपुत्रः सैंहकेयःशनि शशी सौम्यस्त्रिदशमंत्रीचप्राच्यादिदिगधीश्वराः ६९ ॥ अथजात्यधिपकथनम् ब्राह्मणौशुक्रवागीशौक्षत्रियौभौमभास्करौ चंद्रोवैश्योबुध शूद्रःपतिर्मंदोन्त्यजेजने ॥ ७० ॥ अथवेदाधिपकथनम् ॥ ऋग्वेदाधिपतिर्जीवोयजुर्वेदपति सितः सामवेदाधिपोभौमःशशिजोऽथर्ववेदराट् ॥ ७१ ॥

ऊनचंद्रमा और सूर्य और मंगल इन्होंकी पापसंज्ञाहै और बुध शुभग्रहयुक्त शुक्र शुभहोताहै और पापीकरयुक्त पापी होताहै और अर्द्धसें अधिकचद्रमा और पापरहितबुध और बृहस्पति और शुक्र इहे शुभग्रह कहेहै और राहुकेतू विष्णुधर्मोत्तरमें पापी कहेहै ॥ ६८ अवदिक्पतिग्रहकहतेहै पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य और अग्निकोणका स्वामी शुक्र और दक्षिणका स्वामी भौम और नैऋत्यका स्वामी राहुऔर पश्चिमका स्वामी शनिऔर वायुकोणका स्वामी चद्रमा और उत्तरका स्वामी बुध और ईशानका स्वामी बृहस्पतिहै ६९ अवजातियोंकेस्वामीग्रहकहतेहैं शुक्र और बृहस्पति ब्राह्मणोंके स्वामीहै और मंगल और सूर्य क्षत्रयजातीकेस्वामीहैं और चद्रमा वैश्यजातिका स्वामीहै और बुध शूद्रजातिका स्वामीहै और शनि चांडालजातिका स्वामी कहाहै ७० अववेदोंकेस्वामीकहतेहै ऋग्वेदका स्वामी बृहस्पतिहै और यजुर्वेदका स्वामी शुक्रहै और सामवेदका स्वामी मंगलहै और अथर्वणवेदका स्वामीबुधहै ७१ ॥

॥ अथपुरुषादियोंकेस्वामीकहतेहैं ॥ सूर्य और मंगल और बृहस्पति पुरुषोंके स्वामीहैं और चंद्रमा और शुक्र स्त्रीयोंके स्वामीहैं और बुध और शनि नपुं-कोंके स्वामीहैं ॥ ७२ ॥ देवलोकका स्वामी बृहस्पति मनुष्यलोकके स्वामी चंद्र शुक्र पितृलोकके स्वामी सूर्य भौम और नरकके स्वामी बुध शनी कहेहैं ॥ ७२ ॥ अथअप्रकाशग्रहकहतेहैं ॥ चारराशि और त्रयोदश अंश सूर्यमें धूमनाम करकें ग्रह रहिताहै और धूमकों बारां ॥ १२ ॥ राशिमें घटायदेवें तव व्यतीपातनाम करकें ग्रह होताहे और व्यतीपातमें छैराशि मिलायदेवें तव परधि नाम करकें ग्रह होताहै औरपरधि कों बाराराशिमें घटायदेवें तव चापनाम करकें ग्रह होताहे और धनुग्रहमें सतारां १७ अंशमिलाय देवें तव शिखीनाम करकें ग्रह होताहै इहे पाच अप्रकाश ग्रह कहेहैं इन्होंके उदयकालमें जातकमें और प्रश्नमें फल कहाहै ॥ ७३ ॥ अत्रोदाहरणम् ॥ सूर्यः । ६ । १७ । १६ । ४६ । एत्तत् । ४ १३ । ० । ० । युतः- जातोधूमः । ११ । ०० । १६ । २६ अर्यमंडल ॥ १२ शुद्धः ॥ पातोजातः

॥ अथपुरुषाद्यधिपकथनम् ॥ पुंसांसूर्यारवागीशायोषितांचंद्रभार्गवौ क्लीवानांबु धमंदौचपतयःपरिकीर्त्तिताः ॥ ७२ अथस्वर्गाद्यधिपकथनम् ॥ सुरपूज्यःशशिशु क्रौदिनकरभौमौबुधार्कजौनाथाः विबुधमनुष्यपितॄणांतिर्यक्नाकादिवासिनांक्र मशः ७२ अथाप्रकाशग्रहाःकेरलशास्त्रे धूमोर्कोविश्वभागश्रुतिभवनयुतोमंड लाच्छोधितोसौपातःषड्राशियुक्तःपरधिरथभसंशोधितश्चापनामा शैलक्ष्मा भागयुक्तंधनुरथचशिखीपंचतेत्वप्रकाशाःप्रादुर्भावेचतेषांफलमिहकथितंजात कप्रश्नयोःस्यात् ॥ ७३ ॥ अथाप्रकाशग्रहाणांफलविचारः ॥ अप्रकाशग्रहा स्त्वेतेदोषाःपापग्रहाःस्मृताः भान्विदुलग्नगेष्वेषुवंशायुर्ज्ञाननाशनम् ॥ ७४ ॥ एषांवन्हर्कदोषाणां स्थितिःपद्मासनोदिता ॥ अत्रजन्मकालीनसूर्यचंद्रलग्नानां पृथक्परिवेषादिपापत्रययोगेत्रयाणांनाशः द्वयोर्द्वयस्यएकेनैकस्यनाशनंफलम् ॥ एषामुच्चनीचादिकमपितत्रैवोक्तम् नृयुग्मंपरिवेषस्यसिंहोधूमस्यवृश्चिकः राहोश्चापस्यचापश्चकुंभोगोरुच्चमुच्यते ॥ ७५ ॥

॥ ०० । २९ । ४३ । १४ । अपसषड्भः । ६ । २९ । ४३ । १४ ॥ परिधिः परिवेषोभ १२ । सशुद्धः इंद्रधनुः । ५ । ०० । १६ । ४६ । अयंशैलक्ष्मा १७ भागयुतः । ५ । १७ । १६ । ४६ । जातःकेतुः एकराशियुतेपूर्वसमसूर्योजातः । ६ । १७ । १६ । ४६ । अवइन्हकेफलकाविचारकहतेहैं ॥ इहे पाच अप्रकाश ग्रह पापी कहेहैं इहे सूर्यके दोषहैं जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्यके संगमिलके स्थितहोवें तिसके वंशका नाश करदेतेहै और चद्रमाकेसाथ स्थितहोवें तव आयुषा नष्टकर्त्तेहैं और जन्मलग्नमें स्थितहोवें तव विद्याका नाशकर्त्तेहैं इहे कमलासनऋषिनें बहुत सूर्यकेदोषोंमें पाच विचारकर्कें ग्रहरूपमानेहैं जन्मसमयमें सूर्य और चद्रमा और लग्न इन्हमें भिन्न भिन्नपरिवेषादि तीनपा पियोंका योगहोवे तव तीनोंहि वंशआयुज्ञान नष्टहोतहैं और दोकेयोगसें दोका नष्टहोताहे और एकपा पीकेयोगसें एकका नाशहोताहै और इन्हकीयाउच्चनीचराशियाबिकहियांहैं नृयुग्मपरिवेषस्यइत्यादि ७५

अथलग्नादिक दशभावोंके स्थिरकारककहतेहैं लग्नका कारक सूर्यहै और धन भावका कारक बृहस्पतिहै और भ्रातृ भावका कारक मंगलहै और मातृभावके कारक चंद्रमा बुध दोनों हैं और पुत्र भावका कारक बृहस्पति है और शत्रु भावके कारक शनि भौम दोनों है और स्त्री भावका कारक शुक्र है और मृत्यु भावका कारक शनि है और धर्म भावके कारक सूर्य बृहस्पति दोनों हैं और कर्म भावके कारक बृहस्पति सूर्य बुध शनि चार ग्रह हैं और लाभ भावका कारक बृहस्पति है और व्यय भावका कारक शनि है ७६ ॥ अथसूर्यादिग्रहोंकों कारकत्वनिरूपणकर्त्ते हैं सूर्य सें आत्माका और पिताका और स्वभावका और नीरोगताका और देहकी शक्तिका और लक्ष्मीका चिंतनकरे १ और चंद्रमासें चित्तका और बुद्धिका और राजप्रसादका और माताका और संपदाका चिंतनकरे २ और मंगलसें पराक्रमका और रोगका और गुणोंका और भ्राताका और पृथ्वीका और पुत्रोंका और ज्ञातीका चिंतनकरे ३ और बुधसें विद्याका और संबंधियोंका और विवेकका और मातुलका

अथतन्वादिभावेषुस्थिरकारकानाह ॥ द्युमणिरमरमंत्री भूसुतःसोमसौम्यौगुरुरिनतनयारौभार्गवोभानुपुत्रः ॥ दिनकरदिविजेड्यौजीवभानुज्ञमंदाःसुरगुरुरिनसूनुःकारकाःस्युर्विलग्नात् ७६ ॥ अथसूर्यादिग्रहाणांकारकत्वनिरूपणम् ॥ सूर्यादात्मपितृस्वभावनिरुजः शक्तिश्रियौचिंतयेच्चेतोबुद्धिनृपप्रसादजननीसंपत्करश्चंद्रमाः ॥ सत्त्वरोगगुणानुजावनिसुतान्ज्ञातिंधरासूनुना विद्याबंधुविवेकमातुलसुहृद्वाक्कर्मकृद्बोधनः ॥ ७७ ॥ प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानिवागीश्वरात् पत्नीवाहनभूषणानिमदनव्यापारसौख्यंभृगोः ॥ आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाताशनिःसर्पेणैवपितामहंतुशिखिनामातामहंचिंतयेत् ॥ ७८ ॥ अथस्थानविशेषेणग्रहाणांविफलत्वमाह ॥ सभानुरिंदुःशशिजश्चतुर्थेगुरुःसुते भूमिसुतःकुटुंबे ॥ भृगुःसपत्नेरविजःकलत्रेविलग्नतस्तेविफलाभवंति ॥ ७९ ॥

और मित्रोंका और वाणीका चिंतनकरे ४ । ७७ और बृहस्पतिसें विशेषबुद्धिका और धनका और देहकीपुष्टिका और पुत्रोंका और विद्याका चिंतनकरे ॥ ५ ॥ और शुक्रसें स्त्रीका और वाहनोंका और भूषणोंका और कामचेष्टाका और व्यापारका और सुखका चिंतनकरे ॥ ६ ॥ और शनिसें आयुषाका और जीवनका और मृत्युके कारणका और विपदाका और संपदाका चिंतनकरे ॥ ७ ॥ और राहुसें पितामह दादेका सुखदुःख चिंतनकरे ॥ ८ ॥ और केतुसें मातामह नानेका सुखदुःख चिंतनकरे ९ ७८ ॥ अथस्थानविशेषताकरकेंग्रहोंकोनिष्फलताकहतेहैं सूर्यकरकेंयुक्तचंद्रमा निष्फलहोताहै और चतुर्थस्थानमें बुध निष्फल होताहै और पंचमस्थानमें बृहस्पतिनिष्फल होताहै और दूसरेस्थानमें मंगल निष्फल होताहै और छठेस्थानमें शुक्र निष्फल होताहै और सप्तमस्थानमें शनिनिष्फल होताहै जन्मलग्नसें लेकरकें पूर्वोक्तस्थानोंमें निष्फल ग्रह कहेहैं ॥ ७९ ॥

अथग्रहोंकेरिष्टकोहरणेवालेग्रहकहतेहैं जिसकेजन्मकालमें राहुकारिष्टहोवे और बुधकेंद्रत्रिकोणमें स्वोच्चादिराशीमें स्थितहोवे तब राहुके दोषको दूरकर्ताहै और राहुबुध दोनोंरिष्टकारक होवें शनि ३।६।११ स्थानमें स्वोच्चादिराशियोंमें होवें तब राहु और बुधके दोषोंको दूरकर्ताहै और इसी प्रकारकरके राहु बुध शनि तीनोंके दोषको मंगल दूरकर्ताहै और ॥ राहु बुध ॥ शनि ॥ मंगल इन्हों चार-

अथग्रहाणांरिष्टहरत्वमाह राहुदोषंबुधोहन्यादुभयोस्तुशनैश्चरः ॥ त्रयाणांभूमिजोहंतिचतुर्णांदानवार्चितः ॥ ८० ॥ पंचानांदेवमंत्रीचषण्णांदोषंतुचंद्रमाः सप्तदोषंरविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे ॥ ८१ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिबंधे जातकखंडसंज्ञाध्यायोद्वितीयः २

ग्रहोंके दोषको शुक्र दूरकर्ता है ॥ ८० ॥ और राहु बुध । शनि । मंगल । शुक्र इन्हों पांचग्रहों के दोषोंको बृहस्पति दूरकर्ताहै और राहु । बुध शनि । मंगल । शुक्र बृहस्पति । इन्हों छैग्रहोंके दोषको चंद्रमा दूरकर्ताहै और सातग्रहोंके दोषको विशेषकरके उत्तरायणमें सूर्य दूरकर्ताहै ॥ ८१ ॥ इति •

॥ अथप्रथमसंवत्सरादिपंचांगफलयवनजातकमेंकहतेहैं प्रभवनामसंवत्सरसें लेकर ६० संवत्हैं तिनमेंप्रथम प्रभवकाफलकहतेहैं जो मनुष्य प्रभवसंवत्सरमें जन्मताहै तिसकोंसंपूर्णपदार्थवहुतमिलतेहैं और पुत्रसंपदा होतीहैं और वडीआयुषाकर्के भोगोंको भोगताहै १ ॥ और जो मनुष्य विभवसंवत्सरमें जन्मताहै सोप्राप्तभये जो भोग तिनको भोगताहै और लालीकरसंयुक्तकालेनेत्रोंवाला होताहै और पंडितहोताहै और राजाकर्के मानकों प्राप्तहोताहै २ ॥ और जो मनुष्य शुक्लसंवत्सरमें जन्मताहै सोश्रेष्ठभागोंवाला होताहै और शांतस्वभाव वाला होताहै और भोगोंकोंभोगताहै और स्त्रीपुत्रोंकर्के युक्तहोताहै और विद्यावान्संपूर्णगुणोंकरयुक्त होताहै ॥ ३ और जो प्रमोदसंवत्में जन्मताहै सो सर्वदाकाल संपूर्णोंकों आनंदकताहै और सत्यकहताहै और चतुरहोताहै और सुवर्णकीन्याई तिसकी आभाहोतीहै और सुखी वडेमानवाला होताहै ॥ ४ ॥ और जो प्रजापतिसंवत्में जन्मताहै

अथप्रथमंपंचांगफलानि यवनजातके तत्रादौसंवत्सरफलानि॥ प्रभूतसर्ववस्तूनांपुत्रसंपत्तिरेवच ॥ दीर्घायुर्भोगसंपन्नःप्रभवेजायतेनरः ॥ १ ॥ उत्पन्नभोगभोगी स्यात्कृष्णश्चारुणलोचनः पंडितोराजपूज्यश्चविभवेब्देनरोभवेत् ॥ २ ॥ सुभगःशोतिमान्भोगीपुत्रदारसमन्वितः विद्वान्सर्वगुणोपेतःशुक्लसंवत्सरेभवेत् ॥ ३ ॥ सदानंदयितासत्यवादेवैपश्चितोनरः स्वर्णकांतिःसुखीमानीप्रमोदेजायतेनरः ॥ ४ ॥ प्रजानांपालकोधर्मीकृपासत्यसमन्वितः गुणवान्देवभक्तश्चप्रजापतिसमुद्भवः ॥ ५ ॥ कामीसुखीचमानीचभोगवान्प्रियवल्लभः दीर्घायुर्वहुपुत्रश्चअंगिरोवत्सरेभवेत् ॥ ६ ॥ श्रीमांश्चसुमतिःशांतःसोपरागःशुभप्रियः ॥ दीर्घायुर्वहुपुत्रश्चश्रीमुखेब्देभवेन्नरः ॥ ७ ॥ यशस्वीदाननिरतःसर्वलक्षणसंयुतः ॥ भावसंवत्सरेजातोनरोभवतिसौख्यभाक् ॥ ८ ॥ कीर्तिसर्वगुणोपेतोदीर्घायुर्दानतत्परः ॥ शांतःशुभमतिःशौचीयुवाब्देपुरुषोभवेत् ॥ ९ ॥ दीर्घायुःशुभगोदक्षोवेदाध्ययनतत्परः ॥ सुरूपोजायतेमर्त्योधातृसंवत्सरेयदि ॥ १० ॥

सो प्रजाकोंपालताहै और धर्मवालाहोताहै और दयासत्यकर्के युक्तहोताहै और गुणवान् होताहै, और देवताकाभक्तहोताहै ५ और जो अंगिरासंवत्में जन्मताहै सो कामी और सुखी और मानी और भोगी और मित्रको प्यारा और वडीआयुषावाला और वहुतपुत्रोंवाला होताहै ६ जो मनुष्य श्रीमुखसंवत्में जन्मताहै सो श्रीमान् और श्रेष्ठबुद्धिवाला और शांतस्वभाववाला और प्रीतिवाला और शुभमेंप्रीतिवाला और वडीआयुषावाला और वहुतपुत्रोंवाला होताहै ७ और जो भावसंवत्में जन्मताहै सो यशस्वी और दानकरणेवाला और संपूर्णलक्षणोंवाला और सुखके भोगनेवाला होताहै ८ और जो युवसंवत्में जन्मताहै तिसका यशसंपूर्णगुणों करयुक्त होताहै और वडीआयुषावाला और दानकरणेवाला और शांत शुभबुद्धिवाला पवित्रताकरयुक्तहोताहै ९ जो धातृवर्षमें जन्मताहै सो वडीआयुषावाला शुभ चतुर वेदकेपठनेवाला और सुंदररूपवाला होताहै १०

जोईश्वरवर्षमें जन्मताहे सोसंपूर्णकार्योंको जाननेवालाऔरगुरोंकाभक्त और अतिसुंदर औरअक्रोधकरकेयुक्त होताहे ११ और जो बहुधान्यवर्षमें जन्मताहे सोबाउलीयांखूहे तलाओंआदइे करधर्मकेकरणेवाला और दाताहोताहे १२ और जो प्रमाथीवर्षमें जन्मताहे सो सेनाका स्वामी और राजाका मंत्री होताहे और शिवजीसेवरको प्राप्तहोताहे और शास्त्रकेजाननेवाला और धनके संग्रहकरणेवाला होताहे १३ और जो विक्रमवर्षमें जन्मताहे सो वडेउग्रप्रतापवाला और क्रूरस्वभाववाला होताहे और पापकर्मं को कर्ताहे औरशूरवीर होताहे १४ और जो वृषवर्षमें जन्मताहे सो मंदबुद्धि और आलसी और महामूर्ख केवल भारके उठानेवाला और पापधर्ममें युक्तहोताहे १५ और जो चित्रभानुवर्षमें जन्मताहे सो विद्याका समुद्र होताहे और नीतिवाला धैर्यवाला लक्ष्मीवाला और स्वामीकाभक्त

सर्वज्ञःसर्वकार्येषुगुरुभक्तोतिसुंदरः ईश्वरेजायतेमर्त्यःसदाक्रोधपरोभवेत् ॥ ११
वापीकूपतडागादिक्रतुधर्मसमन्वितः दाताधनसमृद्धश्चबहुधान्येप्रजायते ॥ १२
सेनानीर्नृपमंत्रीचवरलब्धपिनाकधृक् ॥ शास्त्रज्ञःसंग्रहीचैवप्रमाथिवत्सरेभवेत्
१३ ॥ उग्रप्रतापशीलश्चपरराजविमर्शकः पापकर्मरतःशूरोविक्रमाब्देभवेन्नरः
॥ १४ मंदोलसोमहामूर्खोभारवाहीचकेवलम् पापकार्यरतोजातवृषाब्देजायते
नरः १५ चित्रभानुसमुद्भूतोनरोविद्यानिधिर्भवेत् नीतिमान्धृतिमान्श्रीमान्स्वा
मिभक्त प्रियंवदः १६ पिंगदृक्पिंगकेशश्चगौरवर्णोविभुर्नयी सुभानुवत्सरेजातः
कांतिमानतिदुर्जनः १७ चंचलश्चपलोधृष्टस्तारणाब्देनरोभवेत् धूर्तःपापरतः
शूरोदरिद्रोनिष्ठुरःसदा १८ मृदुभाषीराजमान्योराजसःशुभलक्षणः कांतिर्धन
समृद्धश्चपार्थिववत्सरेनरः १९ द्यूतमद्यरतस्त्रीणांव्यसनैर्धनवर्जितः व्ययसं
वत्सरेजातश्चौरःपापमतिर्भवेत् २०

और मीठाबोलनेवाला होताहे १६ और सुभानुवर्षमें जो जन्मताहे तिसके पिंगलवर्णके नेत्रहोतेहे और पिंगल केशहोतेहें और गौर वर्ण होताहे और स्वामी होताहे और न्यायकरणेवाला होताहे और देहकी शोभावाला होताहे और अत्यंतदुष्टताकरनेवाला होताहे १७ और जो तारणवर्षमें जन्मताहे सो चंचल चपल ढीठ धूर्त पापमेंरत होताहे और शूरवीर और दरिद्री और कठोर होताहे १८ और जो पार्थिव वर्षमें जन्मताहे तिसकी कोमलवाणी होतीहे और राजमान्य रजोगुणस्वभाववाला और शुभलक्षणोंवाला और कांतिवाला और धनकीसमृद्धिवाला होताहे १९ और जो व्यय वर्षमें जन्मताहे सो जूयेमें और मद्यमें और परस्त्रीके व्यसनमें धनको नाशकर्ता है और चोर होता है और पापमें तिसकी बुद्धिहोतीहै २०

ओर जो सर्वजित् वर्षमें जन्मताहे सो अपने कर्ममेंरत होताहे ओर शास्त्रके पढ़नेवाला ओर रोगोंके जाननेमें चतुरहोताहे ह्रस्व वामनहोताहे ओर मोटेदेहवाला ओर श्यामतनु वृद्ध वी युवाके चिन्हकोंधार ताहे २१ ओर सर्वधारिणिवर्षमें जो जन्मताहे सोवहुत चाकरोंवाला ओरधनवाला ओर कामी ओर भोगी ओर मिष्टान्नकेभोजनकरणेवाला होताहे ओरसंपूर्णकी रक्षाकरणेवाला होताहे २२ ओर जो विरोधीवर्षे में जन्मताहे सोकुटुंबमें कलहके करणेवाला ओर परस्त्रीमेंरत ओर संपूर्णलोकोंसें विरोधकरणेवाला होताहे २३ ओर जो विकृतवर्षमें जन्मताहे तिसका कालारग होताहे ओर युवाहोताहे ओर कला भ्यासमें चंचलहोताहे ओर निर्गुणहोताहे ओर देहतिसकारूखाहोताहे २४ ओरजो खरवर्षमें जन्मताहे सो धूड़कर धूड़ेअंगोंवाला ओर वड़ी आयुषावाला ओर दूसरके सत्यके करणेवाला ओर वड़ाकामीओर नि

स्वकर्मनिरतःशास्त्रपाठीरोगविचक्षणः ह्रस्वःस्थूलतनुःश्यामःसर्वजित्युद्भवोभवेत् २१ वहुभृत्योधनीकामीभोगीमिष्टान्नभुक्प्रभुः सर्वधारिणिनाजातःसर्वाधार परोभवेत् २२ कुटुंबकलहकर्त्तापरदाररतःसदा सर्वलोकविरोधीचविरोधिव र्षसंभवः २३ कृष्णवर्णतनुःश्यामःकलालोलस्तुनिर्गुणः विकृष्टपर्वारूक्षश्चन रोविकृतवर्षजः २४ धूलिधूसरसर्वांगोदीर्घायुःपरसत्यकृत् कामेश्वरश्चानिर्लज्जः खरसंवत्सरेनरः २५ सदानंदेनसंतुष्टःप्रपाकूपतड़ागकृत् अभिन्नदीनशीलश्चन रोनंदनवर्षजः २६ शूरःसमरदुर्धर्षःस्यातःकीर्तियशोन्वितः पृथ्वीपतिर्जयीभो गीविजयाब्देनरोभवेत् ॥ २७ ॥ विद्वान्मानीलोकमानीसर्वशास्त्रविशारदः प्रजांप्राप्नोतिसर्वत्रजयवर्षेप्रजायते॥ २८ ॥ उत्पन्नभोगभोक्ताचकामीचाप्रियवा दनः सुखाभरणशोभाढ्योमन्मथवत्सरेभवेत् ॥ २९ ॥ शठःक्रूरमतिर्दुष्टोहिंस्रोग्रोवृषलीपतिः वक्रास्यवाहुचरणोदुर्मुखाब्देभवेन्नरः ॥ ३० ॥

र्लज्जहोताहे २५ ओर जो नंदनवर्षमेंजन्मताहे सो सदा आनंदकर प्रसन्नरहिताहे ओर वाउलीया खूह ते लायकेवनावनेवालाहोताहे ओरदरिद्रीयोंका दरिद्र दूरकर्ताहे २६ ओर जो विजयवर्षमें जन्मताहे सो शूर वीर रणमे वड़ेतेजवाला ओर प्रसिद्ध यशवाला होताहे ओर पृथ्वीकास्वामी जयवाला भोगोंकोंभोगनेवाला होताहे २७ ओर जो जयवर्षमें जन्मताहे सो विद्यावान् ओर मानी ओर लोकमें मानकों प्राप्त ओर संपूर्णशास्त्रोंमें चतुरहोताहे ओर प्रजाकों प्राप्तहोताहे २८ ओर जो मन्मथवर्षमें जन्मताहे सो प्राप्तभ या जोभोग तिसकों भोगताहे ओर कामी ओर मीठा वोलताहे ओरसुखकर्के भूषणोंकर्के शोभायमा नहोताहे ॥ २९ ॥ ओर जो दुर्मुखवर्षमें जन्मताहे सो शठ ओर क्रूर बुद्धिवाला ओर दुष्ट हिंसाके करणेवाला वड़ाउग्र वृषलीपति होताहे ओर टेढेमुख भुजापेर तिसके होतेहें। ॥ ३० ॥

और जो हेमलंबवर्षमें उत्पन्न होताहै सो सुवर्ण धन और अन्नसें आदले कर और पशु वस्त्र इनकीसमृद्धि वालाहोताहै और स्त्रीपुत्रोंके सुखकर्के युक्तहोताहै ३१ और जो विलंबवर्षमें जन्मताहै सो मंदभागी वालाहोताहै लोभी और आलसी और दुःखी और श्लेष्मरोगवाला और ठग होताहै और अपनेकार्यमें रतहोताहै और पापी होताहै ॥ ३२ ॥ और जो विकारीवर्षमें जन्मताहै सो विवेककर्के हीन और बडेगर्ववाला और विवादमें चतुरहोताहै औरदुष्टहोताहै और दूसरेकों ठगनेवाला होताहै ३३ और जो शर्वरी वर्षमें जन्मताहै सो व्यापारमें शूरहोताहै और सबंधियोंसें द्वेषकर्त्ताहै और लंबेदेहवाला और कृशहोताहै और निद्राकर्के तिसकेनेत्रघूर्णितरहतेहैं ॥ ३४ ॥ और जो प्लववर्षमें जन्मताहै सो चंचल चपल बडाकामी पराईसेवा करणेवाला होताहै और हलकर्म कर्त्ताहै और छोटेदेहवाला होताहै ॥ ३५ ॥ और जो शुभकृत्वर्षमें जन्मताहै सो शुभकर्म कर्त्ताहै और कामी होताहै और विद्याधर्ममें तत्परहोताहै और बडीआयुषावाला और धनकर्के पुत्रोंकर्केयुक्त होताहै ॥ ३६ ॥ और जो शोभनवर्षमें जन्मताहै सो सर्वत्रजयको प्राप्तहोताहै और कामी होताहै और सुंदररूपकर्के युक्तहोताहै और गुणयुक्तहोताहै और दयाकरणेवाला होताहै ३७ ॥ और जो क्रोधीवर्षमें जन्मताहै सो पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला और राजाकेकोपकोप्राप्त और मंदबुद्धि और कामी स्त्रीलंपट और दूसरेका कार्यहतकरणेवाला होताहै ॥ ३८ ॥ और जो विश्वावसुवर्षमें जन्मताहै सो शांतस्वभाव और संपूर्णगुणोंकरयुक्त और दाता और मिष्टान्नभोगी और पवित्र और संतानवाला और सुखी होताहै ३९ ॥ और जोपराभववर्षमें जन्मताहै सो परस्त्रीरत शठ और अपनेसें वैर दूसरेका सबंधि होताहै और धनधान्यकेवधावनेवाला होताहै ॥ ४० ॥

सुवर्णधनधान्यादिपशुवस्त्रसमृद्धिमान् ॥ कांतापत्यसुखाढ्यश्चहेमलंबसमुद्भवः ॥ ३१ ॥ मंदोलुब्धोलसोदुःखीश्लेष्मलश्चापिवंचकः ॥ स्वकार्याभिरतःपापी विलंबवत्सरेशिशुः ॥ ३२ ॥ अविवेकीमहागर्वीविवादकुशलःखलः ॥ विकारिवत्सरेजातःप्राणीभवतिवंचकः ३३ ॥ वणिक्शूरःसुहृद्द्वेषीदीर्घःकृशतनुस्तथा निद्राघूर्णितनेत्रश्चशार्वर्य्यब्दसमुद्भवः ॥ ३४ ॥ चंचलश्चपलःकामीपरसेवारतःसदा हलव्रातात्ह्रस्वतनुर्जातोवर्षेप्लवाभिधे ॥ ३५ ॥ शुभगःशुभकामीचविद्याधर्मपरायणः दीर्घायुर्धनपुत्राढ्यःशुभकृद्वर्षसंभवः ॥ ३६ ॥ सर्वत्रविजयीकामीचारुरूपोगुणान्वितः कृपालुः शोभकृद्वर्षेजातोभवतिमानवः ३७ पिंगाक्षोराजकोपश्चमंदः कामीस्त्रीलोलुपःपरकार्यनिहंताचक्रोधिसंवत्सरेनरः ॥ ३८ ॥ शांतःसर्वगुणोपेतोदातामिष्टान्नभुक्शुचिः विश्वावसुसमुद्भूतःप्रजावांश्चसुखीभवेत् ३९ परदाररतश्चैवशठःस्वापरबांधवःपराभवेसमुद्भूतोधनधान्यविवर्जितः ४०

ठोर ध्रुवंगवर्षमें जो जन्मताहे सो दुष्ट पापमें रतहोताहे और अपने आचारको हतकर्ताहे और अप वित्रहोताहे और पापी होताहे.॥ ४१ ॥ और जो कीलकवर्षमें जन्मताहे मध्यमरूपको धारताहै और कामी होताहै और क्षुधातृषाकरकेपीड़ित होताहे और तिसका हृदयस्थूल होताहे और गुप्तकामी होताहे ४२ ॥ और जो,सौम्यवर्षमें जन्मताहे सो पडितहोताहे और धनके भोगनेवाला होता. है और ब्राह्मणोंको अभ्यागतोंको पूजनेवाला होताहे और तपस्या करताहे और देहको दुकावताहै ॥ ४३ ॥ और जो साधारणवर्षमें जन्मताहे सो नीचवृत्तिको करताहे और पवित्ररहिताहे कामकर हीन होताहे और परदेशमें रहिताहे और देवताकेदेखनेमें क्रोधको धारताहै ॥ ४४.॥ और जो विरोधकृत् वर्षमें जन्मताहे सो संपूर्णलोकोंसे विरोध करताहे और पितरोंकीभक्तिसे हीनहोताहे और अपनीजातिवाल्योंकी सेवामें तत्परहोताहे ॥ ४५ ॥ और जो परिधावीवर्षमें जन्मताहे सो विद्यावान्

खलः पापरतोदुष्टः स्वाचारहतकोशुचिः ध्रुवंगवत्सरेजातोनरोभवतिकिल्विषी ॥ ४१ ॥ मध्यरूपधरः कामीक्षुत्पिपासार्दितोनरः कीलकेजनितोवर्षेस्थूलहृत्कूटमन्मथः ॥ ४२ ॥ पंडितोधनभोक्ताचभूदेवातिथिपूजकः तापसःकृशकृद्देहोनर. सौम्येप्रजायते ॥ ४३ ॥ नीचवृत्तिः शुचिः कामरहितः परदेशगः देवावलोकनेक्रोधीसाधारणसमुद्भवः ॥ ४४ ॥ विरोधीसर्वलोकानांपितृभक्तिविवर्जितः विरोधकृज्जातनरोजातिसेवाकरोभवेत् ॥ ४५ ॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञोव्यापारकुशलः सुधीः राजमानीदानशीलः परिधाविसमुद्भवः ॥ ४६ ॥ कुटुंबघातकोलुब्धः परकर्मरतः सदा प्रमादिवत्सरेजातोनरोबंधुविरोधकृत् ॥ ४७ ॥ बहुभार्योतिचतुरः सर्वानंदकरः क्षमी आनंदवत्सरे जातः पुत्रमित्र समन्वितः ॥ ४८ ॥ सर्वभक्षीकृतघ्नश्चधर्माधर्मविवर्जित हिंस्रकः परसंतापी राक्षसेब्देभवेन्नरः ॥ ४९ ॥ वैश्यवृत्तिर्धनीचैवकुटुंबबहुलः शुचिःजलाशयकरो ॥ जातोनलसंवत्सरेनरः ॥ ५० ॥

संपूर्णकलोंके जाननेवाला होताहे और व्यापारमें श्रेष्ठहोताहे और श्रेष्ठबुद्धिवाला होताहे और राजाके मानवाला होताहे और दानकरणेमें तिसका स्वभाव होताहे ॥ ४६ ॥ और जो प्रमादीवर्षमें जन्मताहे सो कुटुंबके मारणेवाला लोभी होताहे सर्वदा परकार्यके करणेवाला होताहे और बंधुयोंसें विरोध कर्ताहे ॥ ४७ ॥ और जो आनंदवर्षमें जन्मताहे सो बहुतस्त्रीयोंवाला और बड़ाचतुर और संपूर्णआनंदके करणेवाला और क्षमाकरणे वाला और पुत्रमित्रोंकरयुक्त होताहे ॥ ४८ ॥ और जो-राक्षसवर्षमें जन्मताहे सो सर्वभक्षी होताहे और कृतघ्न और धर्माधर्मसे रहित होताहे और हिंसाके करणेवाला और दूसरेको संतापकरणे वाला होताहे ॥ ४९ ॥ और जो नलवर्षमें जन्मताहे सो वैश्यवृत्ति होताहे और धनीहोताहे और बड़ेकुटुंबवाला होताहे और पवित्रहोताहे और जलाशय खूहे बाउलीयां तलाके लगाटणेवाला होताहे ॥ ५० ॥

श्रौर जो पिंगलवर्षमेंजन्मताहै सो टेढीदृष्टिवाला श्रौर थोड़ेरोमोंवाला श्रौर बड़ेउद्यममें तत्परहोताहै श्रौर कार्यसिद्धकर्के कार्यके फलकात्यागकरणेवाला होताहै ॥ ५१ श्रौर जो कालयुक्तवर्षमें जन्मताहै सो लोकोंके उपकारकरणेवालाहोताहै श्रौर भक्षाभक्षकाविचार समयमें नहिंकर्त्ताहै श्रौररोगकेकरणे वालाहोताहै ॥ ५२ श्रौर जो सिद्धार्थीवर्षमें जन्मताहै सो नित्यंप्रतिऋद्धिसिद्धिकोंप्राप्तहोताहै श्रौर भोगों कों भोगताहै श्रौर रागरंगमें चतुरहोताहै श्रौर मंत्रीहोताहै श्रौर यशवाला होताहै श्रौर उदासीनवृत्तिवाला होताहै ५३ श्रौर जो रौद्रवर्षमें जन्मताहै सो भयानक स्त्रीवाला श्रौर पापी श्रौर चुगल श्रौर घातकरणेवाला श्रौर थोड़ीश्रायुषावाला होताहै ॥ ५४ ॥ श्रौर जो दुर्मति वर्षमें जन्मताहै सो मूर्ख क्रूरताकर्केयुक्त कामी होताहै श्रौर श्रपनेवाक्यका प्याराहोताहै श्रौर धनवान होताहै श्रौर दाननहि कर्ताहै ॥ ५५ ॥ श्रौर जो दुंदुभिवर्षमें जन्मताहै सो नित्यप्रति उत्साहकरयुक्त होताहै श्रौर पृथ्वीका

क्रेकदृक्कृशरोमांचोमहोद्यमपरोभवेत् फलकालफलत्यागीपिंगलेब्देभवेन्नरः॥५१
लोकोपकारकःकालेभक्ष्याभक्ष्यंनसंत्यजेत् कालयुक्तसमुद्भूतोनरोभवतिरोगकृत्
५२ ऋद्धिसिद्धियुतोनित्यंभोगीगीतविशारदः मंत्रीकीर्तिपरोदासीसिद्धार्थवर्षसं
भवः५३ भयंकरवधूःपापीपिशुनोघातकृद्भवेत् रौद्रसंवत्सरेजातोनरः स्वल्पायुषो
भवेत् ॥ ५४ ॥ मूर्खःक्रूरयुतःकामीस्वकीयवचनप्रियः अदाताधनवांश्चैवदुर्म
तौवत्सरेभवेत् ॥ ५५॥ नित्योत्साहीक्षितिपतिर्गजाश्ववहुधान्यकः वादित्रधन
सौख्याढ्योदुंदुभिवर्षसंभवः ॥ ५६ कामलोभीमहादोषीशस्त्रपीडाविपीडितः
दुःकर्माकुनखीजातोरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ५७ ॥ नेत्ररोगीसदामंददृष्टिर्मदपरः
सदा दुर्जनःकामवहुलोरक्ताक्षिवर्षजोनरः॥ ५८॥ तापसोनिर्गुणःक्रूरोधातुवादी
भयंकरः क्रोधनाब्देनरोजातोवंचकःपापवुद्धिमान्॥ ५९ उत्पन्नरोगरूपश्चपर
सेवारतःखलः क्षयसंवत्सरेजातोनरोधर्मविवर्जितः॥६० इतिसंवत्सरोत्पन्नफलम्

स्वामी श्रौर हाथी घोडे धनधान्य करयुक्त होताहै वाजेयोंके सुख श्रौर धनके सुखकर्के युक्तहोताहै ॥ ५६ ॥ श्रौर जो रुधिरोद्गारी वर्षमें जन्मताहै सो कामी श्रौर लोभी श्रौर बड़ेदोषवाला श्रौर शस्त्रोंको पीड़ाकर्के पीड़ितहोताहै श्रौर खोटेकर्मकरणेवाला श्रौर कुनखीहोताहै ॥ ५७ ॥ श्रौर जो रक्ताक्षीवर्षमें जन्मताहै सो नेत्ररोगी सदामंददृष्टिवाला होताहै श्रौर गर्वकर्के युक्तहोताहै श्रौर दुर्जन होताहै श्रौर बड़ाकामीहोताहै ॥ ५८ ॥ श्रौर जो क्रोधनवर्षमें जन्मताहै सो ठगहोताहै श्रौर पापबुद्धिवाला होताहै श्रौर निर्गुण तपस्वी होताहै श्रौर क्रूरहोताहै श्रौर धातुवादी होताहै श्रौर भयकेकरणेवाला होताहै ॥ ५९ श्रौर जो क्षयवर्षमें जन्मताहै जन्मता हि रोगरूपहोताहै श्रौर परसेवाके करणेवाला श्रौर दुष्टहोताहै श्रौरधर्मकर्के रहितहोताहै ६० इति॰ येहसाठसंवत्सरोंकेफलकहेहैं शिवम्

अव उत्तरायण और दक्षिणायनमेंजन्मनेकाफलकहतेहैं जोमनुष्य उत्तरायणसूर्यमें जन्मताहै सो स्त्रीकके युक्तहोताहै और सुखकर्के गुणाकर्के युक्तहोताहै और वडीआयुषवाला और आचार वुद्धिवाला और चतुरहोताहै और देवता ब्राह्मण आचार्य्य इनकेचरणोंकी सेवाकरणेवाला और यशवाला होताहै ॥ १ ॥ और जो मनुष्य दक्षिणायनसूर्यमें जन्मताहै सो क्रूर और शठ और रोगोंकरयुक्त तिसका देहहोताहै। और पापी और क्रूरवुद्धिवाला और चोरीमें रत और देहसंक्लेश और परस्त्रीमें सक्त होताहै और वडीनिद्रावाला होताहै ॥ २ ॥ अवछैऋतुमेंजन्मने, काफलकहतेहैं जो मनुष्य शिशिरऋतुमें जन्मताहै सो वलवान् और सुखी और चिरकालआयुषवाला होताहै और मिष्टान्नभोजनकरणेवाला और शुभआचारवाला और दतमें रोगवाला होताहै ॥ १ और

॥ अथायनजफलम् ॥ श्रियायुतःसौख्यगुणान्वितश्चदीर्घायुराचारमतिःप्रवीणःदेवद्विजाचार्य्यपदानुरक्तःसौम्यायनेजातनरोयशस्वी ॥ १ क्रूरःशठोरोगयुतप्रदेहःपापात्मकश्चौर्यरतःकृशश्च पौंश्चल्यकृत्क्रूरमतिःशिशुश्चस्याद्दक्षिणाख्यायनजोतिनिद्रः ॥ २ ॥ अथऋतुफलम् ॥ शिशिरेजायतेमर्त्योबलसौख्यचिरायुषः मिष्टान्नाशीशुभाचारोदंतरोगीप्रजायते ॥ १ ॥ सुखीभोगीगुणीकांतःसत्यव्यसनकृद्भवेत् वसंतर्तौनरोजातोदानकीर्तिपरोभवेत् २ वापीकूपतडागादिदेवतालयकृद्भवेत् ॥ शास्त्रविद्ज्ञानदाताचग्रीष्मर्तौजायतेनरः ॥ ३ ॥ देशग्रामपुराध्यक्षःकृपिकर्ताभवेत्सदा शास्त्रसंग्रहणेदक्षोवर्षाजातोनरोभवेत् ४ व्यापारकुशलोमंत्रीज्वररोगविवर्जितः ॥ पंडितोगुणवान्धीरःशरदीहनरोभवेत् ॥ ५ ॥ सौधागारनिवासीचधर्मिष्ठःसत्यवाक्शुचिः ॥ भुंजेतमिष्टमाहारंनरोहेमंतसंभवः ॥ ६

जो मनुष्य वसंतऋतुमें जन्मताहै सो सुखी और भोगी और गुणी और स्वामी और सत्यव्यसनी सत्यवोलनेवाला और दानमें और यशमें तत्परहोताहै ॥ २ ॥ और जो मनुष्य ग्रीष्म ऋतुमें जन्मताहै सो वाउली खूहे तलायसे आदलेकर्के और देवताके मंदिरवनावनेवालाहोताहै और शास्त्रके जाननेवाला और ज्ञानकेउपदेशकरणेवाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो मनुष्य वर्षाऋतुमें जन्मताहै सो देशोंका ग्रामोंका और पुरोंका स्वामी होताहै और सर्वदा काल खेतीके कर्मको कर्ताहै और शास्त्रके संग्रहकरणेमें चतुरहोताहै ॥ ४ ॥ और जो शरदऋतुमें-जन्मताहै सो व्यापारमें चतुरहोताहै और मंत्रीहोताहै और ज्वररोगसें रहितहोताहै और पंडित गुणवान धैर्यवाला होताहै ॥ ५ ॥ और जो हेमंतऋतुमें जन्मताहै सो महलोंमें निवासकरणेवाला और-धर्मात्मा और सत्यकहने वालाहोताहै और पवित्रहोताहै औरमिष्टान्नभोजन कर्ताहै ॥ ६ ॥

अथमासोत्पन्नकाफलकहतेहैं जो मनुष्य चैत्रकेमहीनेमें जन्मताहै सो नित्यप्रति ब्रह्मचर्यमें रहिताहै और वेदकेपढ़नेमें तत्परहोताहै और गुरु देवता ब्राह्मण इनोंको भक्तिकरणेवाला होताहै ॥ १ और जो मनुष्य वैशाखमहीनेमें जन्मताहै सो सपूर्णलक्षणोंकर युक्तहोताहै और दीर्घदृष्टिवाला और कलाके जाननेमें समुद्रहोताहै और सात्विकस्वभाववाला और चिरकालजीवनेवाला होताहै ॥ २ ॥ और जो ज्येठमासमें जन्मताहै सो चतुर संपूर्णकार्योंमें होताहै और बुद्धिवाला और परीक्षाकरणेवाला होताहै और नित्यप्रति वस्तुक खरीदने और वेचनेवाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो आषाढमासमें जन्मताहै सो निर्द्धन और वहुतभोजनकरनेवाला और कुष्ठी और हलकर्ममें सर्वदायुक्तहोनेवाला और व्याधियुक्त और मूर्खबुद्धिहोताहै ॥ ४ ॥ और जो श्रावणमासमें जन्मताहै सो वेदकर्ममें चतुरहोताहै

॥अथमासोत्पन्नजफलम् ब्रह्मचर्यरतोनित्यंवेदाध्ययनतत्परः, गुरुदेवद्विजातीनां भक्तश्चैत्रसमुद्भवः १ . सर्वलक्षणसंयुक्तोदीर्घदर्शिकलानिधिः सात्विकश्चिरजीवीचवैशाखेजायतेनरः ॥ २ ॥ निपुणःसर्वकार्येषुमतिमांश्चपरीक्षकः ॥ क्रयविक्रयकृन्नित्यंभवेज्ज्येष्ठेचमानवः ॥ ३ ॥ निर्द्धनोवहुभुक्कुष्ठीहलकर्मरतःसदा ॥ व्याधितोमूर्खबुद्धिश्चभवेदाषाढजोनरः ॥ ४ ॥ श्रावणेजायतेमर्त्योवेदकर्मसुकौशलः पुत्रदारधनैर्युक्तःसर्वलोकेप्रपूजकः ॥ ५ ॥ भोगीदाताकृशोदीर्घोगौरः कामीवहुस्त्रिकः॥ पुत्रवान्धनवान्श्रीमान्नरोभाद्रपदेभवेत् ६ ॥ आश्विनेचनरोजातोविभुर्भूपप्रियोभवेत् वहुभृत्यःस्त्रियायुक्तोवव्हपत्योल्पजीवितः ॥ ७ वाचालोवक्रबुद्धिश्चकुंचिताग्रकचोलसः ॥ कार्तिकेजायतेनित्यंब्रह्मचर्यरतोभवेत् ॥ ८ तीर्थयात्रापरोनित्यंमंत्रदीक्षापरायणः मार्गमासेभवेन्मर्त्यःसदाशास्त्रार्थसंचकः ९

और पुत्रस्त्रीधनककेयुक्त और सपूर्णलोकोंकरपूज्य होताहै ॥ ५ ॥ और जो भाद्रपदमासमें जन्मताहै सो भोगी और दाता और देहसकृश और लंवाहोताहै और गौर वर्णका होताहै और कामी और वहुतस्त्रीयोंवाला होताहै और पुत्रोंवाला और धनवाला और शोभावाला होताहै ॥ ६ ॥ और जो आश्विनमासमें जन्मताहै सो ऐश्वर्यवाला और राजाका प्यारा होताहै और वहुतचाकर और स्त्रीयोंकर्के युक्तहोताहै और वहुतसतानोंवाला और अल्पजीवी होताहै ॥ ७ ॥ और जो कार्तिकमासमें जन्मताहै सो वाचाल और उलटीवुद्धिवाला और कुंचितकेशोंवाला और आलसी और ब्रह्मचर्यमेंरतहोताहै ॥ ८ ॥ और जो मार्गशीर्षमें जन्मताहै सो नित्यप्रतितीर्थयात्रामें तत्परहोताहै और मंत्रदीक्षामें तत्परहोताहै और सर्वशास्त्रार्थका सचयकर्ताहै ९ ॥

और जो पौषमासमें जन्मताहै सो दुःखदेनेवाला होताहै और नित्यप्रति संपूर्णरोगोंकर्के युक्तहोताहै और पापमार्गमें युक्तहोताहै १० और जो माघमासमें जन्मताहै सो तपस्वी और वेदवेदांगोंके जाननेवाला होताहै और शांतचित्त और दयाकर्के युक्त और चतुरहोताहै ११ और जो फाल्गुणमासमें जन्मताहै सो सुकुमारस्वरूप होताहै और सर्वदाकालभोगोंको भोगताहै और कामी और स्त्रीयोंका प्यारा और सुखीहोताहै हाथीघोड़े और श्रेष्ठभूषणोंवाला होताहै १२ अवपक्षकाफलकहतेहैं जो मनुष्य शुक्लपक्षमें जन्मताहै सो बड़ीआयुपावाला और पुत्रोंवाला और बहुतजीवोंके पालनेवाला और दाता और मित्रोंका मानकरणेवाला और स्त्रीकर्के वश्यहोताहै १ और जो कृष्णपक्षमें जन्मताहै सो आलसी और मलीन और द्वेषी और निंदक और ग्वार वातोंके करणेवाला और संपूर्णधर्मोंसें निकालया हुवा होताहै ॥ २ ॥ अवप्रतिपदादितिथ्युत्पन्नकाफलकहतेहैं और जो प्रतिपदातिथिमें जन्मताहै सो

पुष्यमासेसमुत्पन्नोनरोदुःखप्रदोभवेत् सर्वरोगयुतोनित्यंपापमार्गरतःसदा ॥ १० योगीश्वरस्तपोनिष्ठोवेदवेदांगपारगः शांतोदयान्वितोदक्षोनरोमाघेप्रजायते ॥ ११ ॥ सुकुमारःसदाभोगीकामीस्त्रीवल्लभःसुखी फाल्गुनेजायतेवालोगजाश्ववरभूषणः ॥ १२ ॥ अथपक्षोत्पन्नफलम् ॥ शुक्लपक्षेनरोजातोदीर्घायुःपुत्रवान्भवेत् ॥ बहूनांपालकोदातासुहृन्मानीप्रियाजितः ॥ १ ॥ अलसोमलिनोद्वेषीनिंदकग्राम्यभाषणः कृष्णपक्षेभवन्मर्त्यस्सर्वधर्मवहिष्कृतः ॥ २ अथतिथ्युत्पन्नफलम् प्रतिपद्दिवसेजातस्त्रिदिनेचत्रिमासकम् जीवितःसन्महातेजावर्षाशीतिचिरायुषः ॥ १ ॥ द्वितीयादिवसेजातोनरःसत्यवचोभवेत् ॥ जनानंदकरःश्लाघ्यः स्वकर्मनिरतःसदा ॥ २ ॥ तृतीयायांनरोजातः स्त्रीलोलःकृपणश्चलः व्रतोपवासनिरतोमूर्खोवादीवलान्वितः ॥ ३ ॥ चतुर्थ्यातुनरोजातोलुब्धःपिशुनवाग्भवेत् चंडःसाहसिकः शूरश्चलचित्तः सुखान्वितः ॥ ४ पंचम्यांचनरोजातोमानीदीर्घायुषोभवेत् ॥ महामतिः स्थिरः शूरःसत्यवादीजितेंद्रियः ५

तीनदिन अथवातीनमास जीवतारहे तब बड़ेतेजवाला अशीति ८० वर्षपर्यंतआयुपावाला होताहै १ और जो द्वितीयामें जन्मताहै सो सत्यबोलनेवाला होताहै और लोकोंको आनंदकेकरणेवाला होताहै और स्तुतिकरणेयोग्य होताहै और आपनेकर्ममें रतहोताहै ॥ २ ॥ और जो तृतीयातिथिमें जन्मताहै सो स्त्रीलंपट होताहै और दीन और चलचित्तहोताहै और व्रतोपवासोंके करणेवाला और मूर्ख वादकरणेवाला और वलीहोताहै ॥ ३ ॥ और चतुर्थीमें जन्मता जोहै सो लोभी और चुगलीकरणे वालाहोताहै और प्रचंडतेजवाला और हठकरणेवाला और शूरवीर और चलचित्त और सुखकर्के युक्तहोताहै ४ और जो पंचमीमेंजन्मताहै सो मानकरणेवाला और बड़ीआयुपावाला होताहै और बड़ीबुद्धिवाला और स्थिरस्वभाववाला और शूरवीर और सत्यबोलनेवाला और इंद्रियोंकोजीतनेवालाहोताहै ५

॥ श्रौर जो षष्ठी मे जन्मताहै तिसका देहफोड़यों कर चिन्हत श्रौर स्थिरहोताहै श्रौर स्त्रीलंपट श्रौर श्रेष्ठभागोवाला श्रौर विद्यामे यशमे तत्परहोताहै ॥ ६ ॥ श्रौर जो सतमीमें जन्मताहै सो धनवानगुणवान श्रौर गुरुदेवताके पूजनेवाला श्रौर सदाचारमें दृढव्रतहोताहै ॥ ७ ॥ श्रौर जो श्रष्टमीमें जन्मताहै सो श्रपनीस्त्रीमें तर होताहै श्रौर बहुभाषी श्रौर श्रतिचपल चलचित्तश्रौर कठोरहोताहै ॥ ८ ॥ उौर जो नवमीमेंजन्मताहै सो कामकालोभी उौर वड़ाशूरवीर उौर गीतनृत्यमें रत उौर शत्रुयोंकानाशकरणेवाला उौर वड़ाक्रोधीहोताहै ॥ ९ ॥ उौर जो दशमीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै उौर शस्त्रोंकर श्रौर फोड़योंकर तिसका देहचिन्हत होताहै उौर पवित्रहोताहै उौर वडेभागों वालाहोताहै उौर चलचित्तहोताहै ॥ १० ॥ उौर जो एका

षष्ठ्यांचैवनरोजातोव्रणांकिततनुःस्थिरः ॥ स्त्रीलोलुपोतिसुभगोविद्याकीर्तिपरोभवेत् ॥ ६ सप्तम्यांजायतेमर्त्योधनवान्गुणवान्भवेत् ॥ गुरुदेवार्चनपरः सदाचारदृढव्रतः ॥ ७ ॥ अष्टम्यांतुनरोजातः स्वदारनिरतोभवेत् ॥ बहुभाषीतिचपलश्चलचित्तोतिनिष्ठुरः ॥ ८ ॥ कामलुब्धोमहाशूरोगीतनृत्यरतस्तथा शत्रुघ्नश्चमहाक्रोधीनवम्यांजायतेनरः ॥ ९ ॥ दशम्यांतुनरोजातः स्त्रीजितोस्त्रव्रणांकितः शुचिरत्यंतशुभगश्चलचित्तोमहामतिः ॥ १० ॥ एकादश्यांचजनितोलोकव्यापारकोविदः कलाशास्त्रेषुकुशलःसत्यवादीदृढव्रतः ॥ ११ द्वादश्यांतुनरोजातःसदाचारोतिदुःसहः सुभगोरतिलोलश्चवस्त्रभोजनतत्परः ॥ १२ त्रयोदश्यांनरोजातःस्त्रीजितोज्ञानवान्भवेत् व्रतोपवासनिरतोमतिमान्गुणवान्भवेत् ॥ १३ ॥ चतुर्दश्यांनरोजातःसशुद्धःसर्वकर्मसु बुद्धिमान्व्याधिनिर्मुक्तः सदाबंधुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णिमायांनरोजातः पूर्णांगः सुस्थिरोभवेत् सदाहृष्टमनाःकामीसुभगोतिरणोभवेत् ॥ १५

दशीको जन्मताहै सो लोकव्यवहारमें चतुरहोताहै उौर कलाशास्त्रोंमें कुशलहोताहै उौर सत्यवादी उौर दृढव्रतहोताहै ॥ ११ ॥ उौर जो द्वादशीको जन्मताहै सो सर्वदा श्राचारीहोताहै श्रौर वडेक्रोधवाला होताहै उौरश्रेष्ठभागों वाला उोर रतिमेंचंचल उौर वस्त्रभोजनमे तत्परहोताहै ॥ १२ ॥ उौर जो त्रयोदशीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै श्रौर ज्ञानीहोताहै उौर व्रतोपवासोंमें रतहोताहै उौर बुद्धिमान्गुणवान्होताहै ॥ १३ ॥ उौर जो चतुर्दशीको जन्मताहै सो संपूर्णकर्मोंमेंशुद्धचितहोताहै उौर बुद्धिमानहोताहै उौर व्याधिकर्के रहितहोताहै उौर सदासंबंधियोंकर्के युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ उौर जो पूर्णमासीकाजन्मताहै सो पूर्णअंगवाला उौर स्थिरस्वभाववाला होताहै उौर सर्वदाप्रसन्नमन उौरकामी उौर श्रेष्ठभागोवालाहोताहै ॥ १५ ॥

उोर जो अमावस्यामें जन्मताहै सो इंद्रियोंकरकेदुःखीहोताहै उोर सुखकरकेरहितहोताहै और मंद भागों वालाहोताहै उोर वलकरकेहीनहोताहै उोर चित्तमें वहुतव्याकुलहोताहै १६ अववारोत्पन्नका फलकहतेहै जो मनुष्यआदित्यवारमेंजन्मताहै सो स्थिरस्वभाववाला उोर वड़ेतेजवाला उोर रक्तश्या मदेहवाला उोर पवित्रहोताहै उोर तिसकेदेहमें पित्तअधिकहोताहै उोर अतिचतुरहोताहै १ उोर जो सोमवारमेंजन्मताहै सो सत्वगुणवाला उोर देहकरके वधनेघटनेवाला उोर मदरा उोरगौर वर्ण वाला उोर वड़ीछातीवाला उोर वुद्धिमानहोताहै २ उोर जो मंगलवारमेंजन्मताहै सो शस्त्रधारीयोंकी वृत्तीकर्ताहै लालरंगकेविशालनेत्रोंवाला होताहै उोर वाणीकोंरोकनेवाला उोर मीठेस्वभाववाला और क्षमाकरणेवालाहोताहै ३ उोर जो वुधवारमेंजन्मताहै सोचतुरगोलशिर वाला उोर गोलपैरोंवाला

अमायांतुनरोजातः इंद्रियार्त्तिगतो सुखी दुर्भगोवलहीनश्चचित्तेवहुसमाकुलः ॥ १६ ॥ अथवारोत्पन्नफलानि स्थिरःप्रचंडः शूरस्तुरक्तश्यामतनुःशुचिः ॥ पित्ताधिकोतिचतुरोजायतेसूर्यवासरे १ ॥ सोमवारेनरोजातःसात्विकःक्षयवृद्धि मान् ह्रस्वकायेतिगौरश्चपृथुवक्षाःसुवुद्धिमान् २॥ क्षात्रवृत्तिसमायुक्तोजनयेद्भौ मवासरे रक्तायतलोचनश्चवाग्यतोमधुरोक्षमी ३॥ निपुणोतिवृत्ताशिरःपादश्चैव तथाकविः रूपवान्मतिचापल्योजनितोवुधवासरे ४॥सुधीःसद्बहुलोकज्ञःकाल शास्त्रविदःशुचिः प्रगल्भःकुशलोधीरःसंभवेद्गुरुवासरे ५ ॥ प्रच्छन्नकार्य्यःसुम तिर्जातःशुक्रस्यवासरे ॥ सुधीःसद्बहुलोकज्ञःकलाशास्त्रविदःशुचिः ॥ ६ ॥ रूक्षोदुर्वलदेहश्चमलिनोतिचलःखलः ॥ रौद्रःक्रोधपरोनित्यंजनितःशनिवास रे ७ ॥ अथनक्षत्रफलानिहोराप्रदीपे ॥ विभूषणेप्सुर्मतिमान्शशांकेदक्षःसु रूपःसुभगोश्विनीपु दक्षःशुचिःसत्यवचोभरण्यांभवेदरोगःकृतनिश्चयश्च ॥ १ ॥

उोर कविताकरणेवाला रूपवाला उोर चंपलवुद्धीवालाहोताहै ४ उोर जो वृहस्पतिवारमें जन्मताहै सो श्रेष्ठवुद्धिवाला वहुतलोकोंमें प्रसिद्ध कालशास्त्रमें चतुर उोर पवित्र प्रगल्भ उोर धीर्यवालाहोता है ५ उोर जो शुक्रवारमें जन्मताहै सो गुप्तकार्यकरणेवाला श्रेष्ठवुद्धिवाला श्रेष्ठमुखवाला उोर लो कोंमेंप्रसिद्ध उोर कलाशास्त्रके जाननेवाला उोर पवित्रहोताहै ६ और जो शनिवारमें जन्मताहै सो रूक्ष और दुर्वलदेहवाला और मलीन और अत्यंतचलचित्त और दुष्टहोताहै और वड़ाभयानक और नित्यहि क्रोधकरके युक्तहोताहै ७ अथनक्षत्रमेंजन्मनेकाफलहोराप्रदीपग्रंथमेंकहतेहैं जो मनुष्य अश्विनीनक्षत्रमें जन्मताहै सो भूषणोंकी इच्छावाला और वुद्धिमान् और श्रेष्ठरूपवाला और चतुर श्रेष्ठभागों वालाहोताहै ॥ १ ॥ और भरणीमें जो जन्मताहै सो चतुरपवित्र सत्यवोलने वाला और रोगरहित और निश्चयवालाहोताहै २ ॥

॥ और जो षष्ठी में जन्मताहै तिसका देहफोड़ियों कर चिन्हत और स्थिरहोताहै और स्त्रीलंपट और श्रेष्ठभागोंवाला और विद्यामें यशमें तत्परहोताहै ॥ ६ ॥ और जो सप्तमीमें जन्मताहै सो धनवानगुणवान और गुरुदेवताके पूजनेवाला और सदाचारमें दृढव्रतहोताहै ॥ ७ ॥ और जो अष्टमीमें जन्मताहै सो अपनीस्त्रीमें तर होताहै और बहुभाषी और अतिचपल चलचित्तऔर कठोरहोताहै ॥ ८ ॥ और जो नवमीमेंजन्मताहै सो कामकालोभी और बड़ाशूरवीर और गीतनृत्यमें रत और शत्रुओंकानाशकरणेवाला और बड़ाक्रोधीहोताहै ॥ ९ ॥ और जो दशमीमें जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै और शस्त्रोंकर और फोड़ियोंकर तिसका देहचिन्हत होताहै और पवित्रहोताहै और बड़ेभागों वालाहोताहै और चलचित्तहोताहै ॥ १० ॥ और जो एका

षष्ठ्यांचैवनरोजातोव्रणांकिततनुःस्थिरः ॥ स्त्रीलोलुपोतिसुभगोविद्याकीर्तिपरोभवेत् ॥ ६ सप्तम्यांजायतेमर्त्योधनवान्गुणवान्भवेत् ॥ गुरुदेवार्चनपरः सदाचारदृढव्रतः ॥ ७ ॥ अष्टम्यांतुनरोजातः स्वदारनिरतोभवेत् ॥ बहुभाषीतिचपलश्चलचित्तोतिनिष्ठुरः ॥ ८ ॥ कामलुब्धोमहाशूरोगीतनृत्यरतस्तथा शत्रुघ्नश्चमहाक्रोधीनवम्यांजायतेनरः ॥ ९ ॥ दशम्यांतुनरोजातः स्त्रीजितोस्त्रव्रणांकितः शुचिरत्यंतशुभगश्चलचित्तोमहामतिः ॥ १० ॥ एकादश्यांचजनितोलोकव्यापारकोविदः कलाशास्त्रेपुकुशलःसत्यवादीदृढव्रतः ॥ ११ ॥ द्वादश्यांतुनरोजातःसदाचारोतिदुःसहःसुभगोरतिलोलश्चवस्त्रभोजनतत्परः ॥ १२ त्रयोदश्यांनरोजातःस्त्रीजितोज्ञानवान्भवेत् व्रतोपवासनिरतोमतिमान्गुणवान्भवेत् ॥ १३ ॥ चतुर्दश्यांनरोजातःसशुद्धःसर्वकर्मसु बुद्धिमान्व्याधिनिर्मुक्तः सदाबंधुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णिमायांनरोजातः पूर्णांगः सुस्थिरोभवेत् सदाहृष्टमनाःकामीसुभगोतिरणोभवेत् ॥ १५

दशीकों जन्मताहै सो लोकव्यवहारमें चतुरहोताहै और कलाशास्त्रोंमें कुशलहोताहै और सत्यवादी और दृढव्रतहोताहै ॥ ११ ॥ और जो द्वादशीकों जन्मताहै सो सर्वदा आचारीहोताहै और बड़ेक्रोधवाला होताहै औरश्रेष्ठभागों वाला और रतिमेंचंचल और वस्त्रभोजनमे तत्परहोताहै ॥ १२ ॥ और जो त्रयोदशीमे जन्मताहै सो स्त्रीजितहोताहै और ज्ञानीहोताहै और व्रतोपवासोंमें रतहोताहै और बुद्धिमान्गुणवान्होताहै ॥ १३ ॥ और जो चतुर्दशीकों जन्मताहै सो संपूर्णकर्मोंमेंशुद्धचितहोताहै और बुद्धिमानहोताहै और व्याधिककें रहितहोताहै और सदासंबंधियोंककें युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ और जो पूर्णमासीकोंजन्मताहै सो पूर्णअंगवाला और स्थिरस्वभाववाला होताहै और सर्वदाप्रसन्नमन औरकामी और श्रेष्ठभागोंवालाहोताहै ॥ १५ ॥

ओर जो मूलानक्षत्रमें जन्मताहै सोसुखीनहिंहोताहै और हिंसाके करणेवाला होताहै और धन मान भोगकर्केयुक्त और स्थिरस्वभाववाला होताहै १९ और जो पूर्वापाढामें जन्मताहे सोविशेषकर्के आनंद और स्त्री और मानवाला और दृढमित्रोंवाला होताहे २० और जोउत्तरापाढामें जन्मताहे सो श्रेष्ठ बहुतमित्रोंकर और धर्मकरयुक्त होताहै और कृतज्ञ और श्रेष्ठभागोंवाला होताहै २१ और जो श्रवणमें जन्मताहै सो बड़ाउदार होताहै और श्रुतज्ञ होताहै और धनीहोताहै और प्रसिद्ध लक्ष्मीवाला होताहै २२ और जो धनिष्ठामेंजन्मताहै सो धनकादाता होताहै और शूर वीर होताहै और धनीहोताहै और रोगोंकर्के रहितहोताहै और रतिका प्याराहोताहै २३ और जो शतभिषामें जन्मताहे सो स्पष्टवाणीवाला और रसिक और दुर्ग्राह्य और व्यसनी और शत्रुयोंके जीतनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और पूर्वाभाद्रपदामें जो जन्मताहै सो उदासचित्तवाला और धनी और चतुर

सुखीनहिंस्त्रोधनमानभोगयुतःस्थिरोमूलगतेशशांके व्यभीप्सितानंदकलत्रमानोनरोंबुदैवेदृढसौहृदश्च १० वैश्वेविनीतोवहुमित्रधर्मयुतःकृतज्ञःसुभगःशशांके उदारसारःश्रुतवान्धनीचश्रीमान् प्रसिद्धःश्रवणेनरःस्यात् ११ शूरोर्थदाता धनवांस्त्वरोगीरतिप्रियोवासवभेप्रजातः ॥ स्यात्स्पष्टवाक्स्वारसिकोंबुपर्क्षे दुर्ग्राह्यइन्दौव्यसनीजितारिः १२ ॥ उद्विग्नचित्तोधनवान्पटुश्च अजांघ्रिभेस्त्रीविजितस्त्वदाता वक्ताप्रजावान्सुसुखोमृगांकोहिर्वुध्न्यभेधर्मरतोजितारिः १३ ॥ संपूर्णदेहःशुभगोतिशूरःशुचिर्द्धनीपौष्णगतेशशांके विज्ञेयमेतन्निरुपद्रवेभेफलंवलिधरजनपितोंच १४ अथचरणफलम् अश्विन्याःप्रथमेपादेजातोभवतितस्करः द्वितीयेचाल्पकर्माचतृतीयेसुभगोभवेत् ॥ १ ॥ पादेचतुर्थकेभोगीदीर्घायुजीवतेनरः त्यागीयाम्याद्यपादेस्याद्द्वितीयेधनवान्सुखी ॥ २ ॥

और सोजित और दाननहिंकरणे वालाहोताहै ॥ २५ ॥ और जो उत्तराभाद्रपदामें जन्मताहै सो वक्ता और पुत्रोंवाला और श्रेष्ठसुखवाला और धर्ममेंरत और शत्रुयोंको जीतनेवाला होताहै ॥ २६ और जो रेवतीमें जन्मताहै सो सपूर्ण अंगोंवाला और श्रेष्ठभागोंवाला और शूरवीर पवित्रहोताहै २७ इहेजन्मनक्षत्रोंका फलहोताहै परंतु जैसेनक्षत्रहोवें उपद्रवकर्के ग्रहणग्रहयुद्धभूकंपादिदोषोंकर रहितहोवें और चंद्रमाबलीहोवे तब यथोक्तफल होताहै १४ अबनक्षत्रोंकिचरणोंकाफलकहतेहैं अश्विनीके प्रथमचरणमेंजन्मे तो चोर होताहै और दूसरेचरणमें थोड़ेकर्मकरणे वालाहोता है और तीसरेमें श्रेष्ठभागों वाला होताहै और चउथेमें भोगी और बड़ी आयुवाला होताहै १ और भरणीके प्रथमपादमें त्यागी और दूसरेमें धनवान् सुखी

और जो कृतिकामें जन्मताहै सोपरस्त्रीगामी और बहुतरोगों वाला और जगतमें प्रसिद्धतेजवाला होताहै ३ और जो रोहिणीमें जन्मताहै सो मीठाबोलनेवाला और सुंदररूपवाला और स्थिरचित्त वाला पवित्र और सत्यबोलनेवाला होताहै ४ और जो मृगशिरामें जन्मताहै सो उत्साहवालाऔर भोगभोगनेवाला और धनकर्केयुक्त और डरनेवाला और चतुरऔर चलचित्तहोताहै ५ और जोआर्द्रामे जन्मताहै सो शठऔर दुष्ट पापी कृतघ्न हिंसाके करणेवाला और अभिमानी होताहै ६ और जो पुनर्वसुमे जन्मताहै सो इंद्रियोंके रोकनेवाला श्रेष्ठस्वभाव बुद्धिवाला और तृषाकीइच्छावालाऔर रोगयुक्तवी सुखी रहिताहै ७ और जोपुष्यमेजन्मताहै सो पंडित शांतचित्तवाला औरसौभाग्यकर्के युक्त और धर्मार्थकर्केयुक्तहोताहै ८ और जो श्लेषानक्षत्रमें जन्मताहै सो धूर्त और शठ और पापमें रत और कृतघ्न औरसर्वभक्षी होताहै ९ और जो मघानक्षत्रमें जन्मताहै सो उद्यमी और भोग और चाकर और धनकर्के युक्त और पितरोंका देवताका भक्त होताहै १० और जो पूर्वाफाल्गुणीमें जन्मताहै सो मीठाबोलने

स्यात्कृत्तिकास्वन्यकलत्रगामीप्रभूतरुक्ख्यातियुतःसुतेजाः ॥ प्रजापतेभेंप्रियवाक्सुरूप.स्थिरःशुचिःसत्यवचाःशशांके ॥ २ ॥ उत्साहभोगार्थयुतोमृगांकेभीरुःपटुःस्याच्चतुरश्चलश्च ॥ शठःखलःपापरतःकृतघ्नोहिंस्त्रोतिगर्वीशिवभेशशांके ३ ॥ दांतःसुशीलःसुमतिःपिपासुःसरुक्सुखीचादितिभेल्पतुष्टः स्यात्पण्डित.शांतमनाःशशांकेसौभाग्यधर्मार्थयुतश्चपुष्ये ॥ ४ ॥ धूर्त्तःशठःपापरतःकृतघ्नःस्यात्सर्वभक्ष्योभुजगर्क्षसंस्थे ॥ चंद्रेमघासूद्यमभोगभृत्यधनान्वितः स्यात्पितृदेवभक्तः ५ प्रियंवदोभूपतिसेवकश्चदातानरःकांतियुतोभगर्क्षे विद्यार्थयुक्तःसुखभोगभोगीसौभाग्ययुक्तोर्यमभेशशांके ६ चौरोघृणीपापरतोतिधूर्तःउत्साहवान्शीतकरेकरस्थे ॥ चित्रासुचित्रांबरमाल्यधारीसुलोचनांगःपुरुषश्चजातः ७ ॥ दाताकृपालुःप्रियवाक्धनीचधर्माश्रितःशीतकरेनिलर्क्षे ॥ ईर्ष्युर्नरःकांतियुतोतिलुब्धोद्विदैवतेवाक्चतुरःकुलेप्सु. ८ ॥ विदेशवासीधनवान्क्षुधालुश्चंद्रेनुराधाप्रभवोनरःस्यात् ज्येष्ठासुसंतोषरतोतिकोपोनभूरिमित्रोनिरतश्चधर्मे ॥ ९

वाला और राजाका सेवक और दाता और शोभाकर्के युक्तहोताहै ११ और जो उत्तराफाल्गुणीमे जन्मताहै सो विद्याकर्के धनकर्के युक्तहोताहै और सुखकेभोगोंकोभोगनेवाला होताहै और सौभाग्यताकर्के युक्तहोताहै १२ और जो हस्तमें जन्मताहै सो चोर और निर्लज्ज और पापमेंरत और धूर्त उत्साही होताहै १३ और जो चित्रामे जन्मताहै सो विचित्रवस्त्र और पुष्पमाला धारताहै और श्रेष्ठनेत्र और अंगोंवाला होताहै १४ और जो स्वातीमें जन्मताहै सो दाता और दयावान् और मीठाबोलनेवाला और धनी और धर्ममे स्थितहोताहै १५ और जो विशाखामें जन्मताहै सो ईर्षावाला और शोभावाला और लोभी और वाणी कर्के चतुरहोताहै १६ और जो अनुराधामें जन्मताहै सो विदेशरहणे वाला और धनी और क्षुधायुक्त होताहै १७ और जो ज्येष्ठामें जन्मताहै सो संतोषमे रतहोताहै और बड़ेक्रोधवाला होताहै बहुतमित्रों वाला नहिंहोताहै और धर्ममें रतहोताहै १८

और हस्तके प्रथमपादमें जन्मे तो शूरवीर होताहै और दूसरेमें वादकरणेवाला और रोगी होताहै और तीसरेमें धनधान्यकर्के युक्तहोताहै और चउथेमें लक्ष्मीवाला शोभाकर्के युक्तहोताहै ॥ १४ ॥ और चित्राके प्रथमपादमें चोर दूसरेमें चित्रकार तीसरेमें परस्त्रीगामी चउथेमें पंडित होताहै ॥ १५ और स्वातीके प्रथमपादमें चोर और दूसरेमें थोड़ी आयुषावाला और तीसरेमें धर्मी चउथेमें राजा-होताहै ॥ १६ ॥ और विशाखाके प्रथमपादमें नीतीके जाननेवाला दूसरेमें शास्त्रके जाननेवाला ती-सरेमें वादकरणेवाला चउथेमें वड़ी आयुषावाला होताहै ॥ १७ ॥ और अनुराधाके प्रथमपादमें वड़े तेजवाला दूसरेमें धर्मी तीसरेमें चिरकाल जीणेवाला चउथेमें व्यभिचारी होताहै ॥ १८ ॥ और जो ज्येष्टाके प्रथमपादमें जन्मताहै सो क्रूरहोताहै और दूसरेमेंभोगीहोताहै और तीसरेमें विद्यावान् हो-

हस्तेजातोयदाबालःशूरोवादीचरोगवान् धनधान्ययुतःश्रीमान्फलंस्यात्प्रथमादितः ॥ १४ ॥ चित्रायांप्रथमात्पादात्फलंजातस्यकथ्यते । चोरश्चित्रकरःसस्यात्परदारीचपंडितः १५॥स्वात्याद्यपादतःपुत्रसंभवस्यफलंक्रमात् तस्करोल्पायुषोधर्मीनृपतिःस्यान्नसंशयः ॥ १६ ॥ विशाखाजातपुत्रस्यफलंपादचतुष्टये नीतिज्ञःशास्त्रवेत्ताचवादीदीर्घायुषोभवेत् ॥ १७ ॥ तीव्रोधर्मपरोदीर्घजीवी पुंश्चल्यसंयुतः अनुराधादिपादादिजातस्यचक्रमादिदम् ॥ १८ ॥ क्रूरोभोगी चविद्वांश्चपुत्रवान्जायतेनरः ज्येष्ठापादचतुष्टस्यजा तस्यचफलंक्रमात् ॥ १९ मूलपादादिजातस्यनरस्यचफलंक्रमात् भोगीत्यागीसुमित्रश्चनृपतिर्जायतेनरः २० ॥ पूर्वापाढ़ाद्यपादादिजातस्यचयथाक्रमम् श्रेष्ठोराजप्रियोवादीधनीभवतिनिश्चितम् २१ वैश्वपादादिजातस्यफलंज्ञेयंचतुष्टये नृपोमित्रविरोधीचमानीधर्मरतो भवेत् २२ शुभमानीशुभगुणोविद्वांश्चधार्मिकोभवेत् श्रवणस्यचतुः पादजातस्यचफलंक्रमात् ॥ २३ ॥ दीर्घायुःपीड़ितोभीरुर्महानारीवरोभवेत् धनिष्ठाप्रथमात्पादादुत्पन्नस्ययथाक्रमम् ॥ २४ ॥

ताहै और चउथेमें पुत्रोंवाला होताहै ॥ १९ ॥ और मूलाकेप्रथमपादमें भोगी दूसरेमें त्यागी तीसरेमें श्रेष्ठमित्रोंवाला चउथेमें राजा होताहै २० ॥ औरपूर्वापाड़ाके प्रथमपादमें श्रेष्ठहोताहै दूसरेमें राजाका प्याराहोताहै तीसरेमें वादकरणेवाला होताहै चउथेमें धनी होताहै ॥ २१ और उत्तरापाड़ाके प्रथमचरणमें राजा और दूसरेमें मित्रकेसाथ विरोधकरणेवाला और तीसरेमें मानकरणेवाला और चउथेमें धर्ममें रतहोताहै ॥ २२ ॥ और श्रवणके प्रथमपादमें श्रेष्ठमानी दूसरेमेंश्रेष्ठगुणोंवाला तीसरेमें विद्यावान् चउथेमें धर्मीहोताहै ॥ २३ ॥ और धनिष्टाके प्रथमपादमें वड़ी आयुषवाला दूसरेमें पीड़ाकर्केयुक्त तीसरेमें डरणेवाला चउथेमें श्रेष्ठस्त्रीवाला होताहै ॥ २४ ॥

और तीसरेमेंक्रूरकर्मकरणेवाला और चउथेमें दरिद्रीहोताहै ॥ ३ ॥ और कृतिकाके प्रथमचरणमें तेजस्वी और दूसरेमें शास्त्रके ज्ञानवाला और तीसरेमें ऐश्वर्यवाला और चउथेमें वडी आयुषा और वहुतपुत्रों वालाहोताहै ३ और रोहिणीके प्रथमचरणमें जन्मे तो सौभाग्यवाला और दूसरे चरणमें पीडावाला और तीसरेमें डरनेवाला और चउथेमें सत्यवोलने वालाहोताहै ॥ ४ ॥ और मृगशिराके प्रथमचरणमें जन्मे तो राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें भोगी चउथेमें धनधान्यकर्के युक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और आर्द्राके प्रथमचरणमें जन्मे तो व्ययी वहुतखर्चकरने वाला और दूसरेमेंदरिद्री और तीसरेमें थोडीआयुषावाला और चउथेमें चोर होताहै ६ ॥ ७ ॥ और पुनर्वसुके प्रथमपादमें जन्मे तो सुखी दूसरेमें विद्यावान् तीसरेमें रोगकर्के युक्त चउथेमें कोमल

तृतीयेक्रूरकर्माचचतुर्थेथोदरिद्रभाक् वन्ह्यर्क्षप्रभवोवालस्तेजस्वीप्रथमांशके ३ द्वितीयेशास्त्रविज्ञानीतृतीयेसौख्यभाग्भवेत् दीर्घायुर्वहुपुत्रश्चचतुर्थेचरणेभवेत् ४ सौभाग्यंचतथापीडाभीरुत्वंसत्यवादनम् रोहिणीसंभवस्यैवफलंपादचतुष्टये ५ नृपतिस्तस्करोभोगीधनधान्यसमन्वितः क्रमेणमृगशीर्षस्यफलंपादचतुष्टये ६ रौद्रर्क्षप्रभवोवालोभवेत्पादचतुष्टये व्ययीदरिद्रीस्वल्पायुस्तस्करस्तुयथाक्रमम् ७ पुनर्वसुभवोवालःसुखीविद्वान्रुजान्वितः मृदुभाषीभवेन्नित्यंक्रमात्पादचतुष्टये ॥ ८ ॥ दीर्घायुस्तस्करोभोगीवुद्धिमान्जायतेनरः क्रमात्पादचतुर्णांतुपुष्यभस्य प्रकीर्तितम् ॥ ९ ॥ अप्रजाःपरकार्यश्चरोगीचसुभगोभवेत् सार्पर्क्षांघ्रिचतुर्जातो गंडांतेस्वल्पजीवनः ॥ १० ॥ मघापादचतुर्जातश्चापुत्रःपुत्रवान्भवेत् तीव्ररोगीपंडितश्चजायतेनात्रसंशयः ११ ॥ समर्थोधार्मिकोराजारोगीक्रूरोल्पजीवितः पूर्वाफाल्गुणीजातस्यफलंपादचतुष्टये १२ ॥ उत्तराफाल्गुणीपादचतुर्णांतद्भवस्यच पंडितःपृथिवीपालोविजयीधार्मिकोभवेत् ॥ १३ ॥

वाणीवाला होताहै ॥ ८ ॥ और पुष्यके प्रथमपादमें वडीआयुषावाला दूसरेमें चोर तीसरेमें भोगी चउथेमें वुद्धिमान् होताहै ॥ ९ ॥ और श्लेषाके प्रथमपादमें संतानकर्केरहित दूसरेमें परकार्यके करणेवाला तीसरेमें रोगी चउथेमें,श्रेष्ठभागोंवाला होताहै ॥ १० ॥ और श्लेषाके गंडांतोंमें जन्मनेवाला थोडाचिर जीवताहै और मघाके प्रथमपादमें संतानकर्केरहित और दूसरेमें पुत्रोंवाला और तीसरेमें कठनरोगवाला और चउथेमें पंडितहोताहै ॥ ११ ॥ और पूर्वाफाल्गुणीके प्रथमपादमें समर्थवाला और दूसरेमें धर्मी और तीसरेमें राजा और चउथेमें रोगी और क्रूर और थोडाकाल जीवनेवाला होताहै ॥ १२ ॥ और उत्तराफाल्गुणीके प्रथमपादमें पंडित दूसरेमें राजा तीसरेमें जयवाला चउथेमें धर्मी होताहै ॥ १३ ॥

श्रौर जो श्रायुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला श्रौर स्थिरचित्त वाला श्रौर बहुत दान करणे वाला श्रौर संपूर्ण कृत्यमें तत्पर श्रौर संपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३ श्रौर जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्पारा श्रौर श्रत्यंत भाग्यों वाला श्रौर बहुत कहने वाला श्रौर श्रेष्ठ धनवाला श्रौर गुणोंकररहित और शुभवाणी वाला श्रौर श्रेष्ठबुद्धि वालाहोताहै ४ श्रौर शोभन योगमें जो जन्मताहै सो बुद्धि वाला श्रौर गुणोंकर्के युक्त श्रौर श्रकस्मात् शोककर्के युक्त श्रौर मलरहित पवित्र चित्तवाला होताहै ५ श्रौर जो श्रतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी श्रौर शूरवीर होताहै श्रौर सत्य कर्के युक्त श्रौर धर्मके जानने वाला होताहै श्रौर परस्त्रीमें रत होताहै श्रौर कामी होता है ६ श्रौर जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्योंमें चतुर श्रौर धन धान्य कर्के युक्त श्रौर व्यापारमें चतुर होताहै ७ श्रौर जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्पारा श्रौर धनी श्रौर वादमेंर

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चवहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेवालःसर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ वहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्ये जनितोनरः ॥ ४ ॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातो धौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररतःकामीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वितःव्यापारकुशलो नित्यंसुकर्माणिनरोभवेत् ॥ ७ ॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलसः परदाररतो नित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयोगेनरोजातःशूलवान्जायतेध्रुवम् ९ वाचालोपिमहासत्त्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठःसुशुभवान्गंडेनरोजातःसमाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्यवादीजितेंद्रियःवृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशाः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढशक्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शनः ध्रुवयोगेचयोजातःसर्वदाकर्मतत्परः ॥ १२ ॥

त श्रौर श्रालसी श्रौर परस्त्रीमें रत होताहै ८ श्रौर जो शूलयोगमें जन्मताहै सो पराक्रम कर्के युक्त श्रौर श्रेष्ठ कर्मोंके करणे वाला गुणवान् होताहै श्रौर निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ श्रौर जो गंडयोगमें जन्मताहै सो वाचाल श्रौर बड़े पराक्रम वाला श्रौर गंभीर श्रौर गर्वी श्रौर श्रेष्ठ श्रौर शुभलक्षणों वाला होताहै १० श्रौर जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो बड़ी बुद्धिवाला श्रौर स्थिर श्रौर शूरवीर श्रौर सत्यबोलने वाला श्रौर इंद्रियोंके रोकने वाला श्रौर दृढवाक्य वाला श्रौर बड़े यशवाला होताहै ११ श्रौर जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै श्रौर दृढ पराक्रमवाला होताहै श्रौर बड़ी श्रायुषवाला होताहै श्रौर सुंदररूपवाला होताहै श्रौर संपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

और शतभिषाके प्रथमपादमें सुंदरवाणीवाला दूसरेमें लक्ष्मीवाला तीसरेमेंसुखी चउथेमें पुत्रवान्होताहै २५ और पूर्वाभाद्रपदाके प्रथमपादमें शूर दूसरेमें चोर तीसरेमें श्रेष्ठबुद्धिवाला चउथेमें पुरका स्वामी और भोगी होताहै ॥ २६ ॥ उत्तराभाद्रपदाके प्रथमपादमें राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें पुत्रवान् चउथेमें सुखी होताहै ॥ २७ ॥ और रेवतीके प्रथमपादमें ज्ञानी दूसरेमें चोर तीसरेमें युद्धमें क्षयहोनेवाला चउथेमें क्लेशवाला होताहै इहे नक्षत्रोंके प्रत्येकपादका फलकहाहै २८ ॥ अवनक्षत्रोंकेप्रत्येकपादकाइकहाफलकहतेहै जो मनुष्य पहले अंशमें जन्मताहै सो चतुर होताहै और धर्मवालाहोताहै और सत्यबोलने वाला और इंद्रियोंके जीतनेवाला होताहै और विद्यावान् होताहै १ और जो दूसरे अंशमें जन्मताहै सो धनवान् और भोगके भोगनेवाला और संग्राम युद्धमेंनाहिंहारणेवाला और नीति

शतभिषक्प्रथमांघ्रौवाग्मीश्रीमान्द्वितीयके सुखीतृतीयकेपादेचतुर्थेपुत्रवान्भवेत् ॥ २५ ॥ शूरश्चौरोमहाबुद्धिः पौरोभोगीभवेन्नरः पूर्वाभाद्रपदापादचतुष्केक्रमशःफलम् ॥ २६ ॥ अहिर्बुध्न्येक्रमात्पादचतुष्कसंभवात्फलम् राजाचतस्करश्चैवपुत्रवांश्चसुखीभवेत् ॥ २७ ॥ ज्ञानीचतस्करोयुद्धेक्षयीचक्लेशवान्भवेत् क्रमात्पादचतुष्कस्यरेवत्यांजायतेफलम् ॥ २८ ॥ विनीतोधर्मशीलश्चसत्यवादीजितेंद्रियः विद्याव्यसनशीलश्चजायतेप्रथमांशके ॥ १ ॥ उत्पन्नविभवोभोक्तासंग्रामेष्वपराजितः नीतिज्ञःप्रमदाशक्तोद्वितीयेजायतेंऽशके ॥ २ ॥ उत्पन्नभोगभोक्तास्याच्छास्त्रविद्याविशारदः स्वधर्मप्रमदासक्तःतृतीयेजायतेंऽशके ३ ॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्चमायासक्तोनपुंसकः ॥ वीरविद्याविचारज्ञश्चतुर्थेजायतेंऽशके ॥ ४ ॥ इतिनक्षत्रचरणफलम् अथयोगफलम् ॥ कांतावंधुरतस्त्रीपुगृहदाररतस्तथा ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुविष्कुंभेजायतेनरः ॥ १ ॥ प्रीतियोगेपिसंजातोयोपितां वल्लभस्सदा महोत्साहःकृतज्ञश्चपरार्थैकमतिःसदा ॥ २ ॥

के जाननेवाला और स्त्रीमेंशक्त होनेवाला होताहै २ और जो तीसरे अंशमें जन्मताहै सो वो उत्पन्नभोगके भोगनेवाला और शास्त्रविद्यामें चतुर और अपनेधर्ममें और अपनीस्त्रीमें शक्तहोताहै ॥ ३ और जो चतुर्थअंशमें जन्मताहै सो स्त्रीजित और संतानकरकेरहित और मायाकरके आसक्त और नपुंसक और वीरविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ ४ ॥ इहेनक्षत्रोंकेचरणोंकाफलकहाहै अवविष्कुंभादियोगोंकाफलकहतेहैं जो मनुष्यविष्कुभयोगमें जन्मताहै सो स्त्रीकेभ्राताम प्रीतिकर्त्ताहै अन्य स्त्रियोंमें और घरमेंरतहोताहै और संपूर्णकार्योंमें चतुर होताहै ॥ १ ॥ और जो प्रीतयोगमें जन्मताहै सो स्त्रियोंका प्यारा होताहै और बड़े उत्साहवाला और कृतज्ञ और दूसरेके कार्य करणेमें बुद्धिवाला होताहै ॥ २ ॥

और जो आयुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला और स्थिरचित्त वाला और बहुत दान करणे वाला और संपूर्ण कृत्यमें तत्पर और सपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३ और जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा और अत्यत भागों वाला और बहुत कहने वाला और श्रेष्ठ धनवाला और गुणोंकररहित और शुभवाणी वाला और श्रेष्ठबुद्धि वालाहोताहै ४ और शोभन योगमें जो जन्मताहै सो बुद्धि वाला और गुणोंकर्के युक्त और अकस्मात् शोककर्के युक्त और मलरहित पवित्र चित्तवाला होताहै ५ और जो अतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी और शूरवीर होताहै और सत्य कर्के युक्त और धर्मके जानने वाला होताहै और परस्त्रीमें रत होताहै और कामी होता है ६ और जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्योंमें चतुर और धन धान्य कर्के युक्त और व्यापारमें चतुर होताहै ७ और जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगधकाप्यारा और धनी और वादमेंर

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चबहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेबाल सर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ बहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्ये जनितोनरः ॥ ४॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातो धौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररत कामीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वितःव्यापारकुशलो नित्यंसुकर्मणिनरोभवेत् ॥ ७॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलस परदाररतो नित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयोगेनरोजातःशूलवाञ्जायतेध्रुवम् ९ वाचालोपिमहासत्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठ सुशुभवान्गंडेनरोजात समाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्य वादीजितेंद्रिय वृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढश क्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शनः ध्रुवयोगेचयोजात सर्वदाकर्मतत्परः ॥ १२ ॥

त और आलसी और परस्त्रीमें रत होताहै ८ और जो शूलयोगमें जन्मताहै सो पराक्रम कर्के युक्त और श्रेष्ठ कर्मोंके करणे वाला गुणवान् होताहै और निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ और जो गंडयोगमें जन्मताहै सो वाचाळ और बड़े पराक्रम वाला और गभीर और गर्वी और श्रेष्ठ और शुभलक्षणों वाला होताहै १० और जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो बड़ी बुद्धिवाला और स्थिर और शूरवीर और सत्यबोलने वाला और इंद्रियोंके रोकने वाला और दृढवाक्य वाला और बड़े यशवाला होताहै ११ और जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै और दृढ पराक्रमवाला होताहै और बड़ी आयुषावाला होताहै और सुदररूपवाला होताहै और सपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

श्रौर शतभिषाके प्रथमपादमें सुंदरवाणीवाला दूसरेमें लक्ष्मीवाला तीसरेमेंसुखी चउथेमें पुत्रवान्होताहै २५ श्रौर पूर्वाभाद्रपदाके प्रथमपादमें शूर दूसरेमें चोर तीसरेमें श्रेष्ठबुद्धिवाला चउथेमें पुरका स्वामी श्रौर भोगी होताहै ॥ २६ ॥ उत्तराभाद्रपदाके प्रथमपादमें राजा दूसरेमें चोर तीसरेमें पुत्रवान् चउथेमें सुखी होताहै ॥ २७ ॥ श्रौर रेवतीके प्रथमपादमें ज्ञानी दूसरेमें चोर तीसरेमें युद्धमें क्षयहोनेवाला चउथेमें क्लेशवाला होताहै इहे नक्षत्रोंके प्रत्येकपादका फलकहाहै २८ ॥ श्रवनक्षत्रोंकेप्रत्येकपादकाडकडाफलकहतेहे जो मनुष्य पहले अंशमें जन्मताहै सो चतुर होताहै श्रौर धर्मवालाहोता है श्रौर सत्यबोलने वाला श्रौर इंद्रियोंके जीतनेवाला होताहै श्रौर विद्यावान् होताहै १ श्रौर जो दूसरे अंशमें जन्मताहै सो धनवान् और भोगके भोगनेवाला श्रौर संग्राम युद्धमेंनाहिंहारणेवाला श्रौर नीति

शतभिषक्प्रथमांशेवाग्मीश्रीमान्द्वितीयके सुखीतृतीयकेपादेचतुर्थेपुत्रवान्भवेत् ॥ २५ ॥ शूरश्चौरोमहाबुद्धिः पौरोभोगीभवेन्नरःपूर्वाभाद्रपदापादचतुष्केक्रमशःफलम् ॥ २६ ॥ अहिर्बुध्न्येक्रमात्पादचतुष्केसंभवात्फलम् राजाचतस्करश्चैवपुत्रवांश्चसुखीभवेत् ॥ २७ ॥ ज्ञानीचतस्करोयुद्धेक्षयीचक्लेशवान्भवेत् क्रमात्पादचतुष्कस्यरेवत्यांजायतेफलम् ॥ २८ ॥ विनीतोधर्मशीलश्चसत्यवादीजितेंद्रियः विद्याव्यसनशीलश्चजायतेप्रथमांशके ॥ १ ॥ उत्पन्नविभवोभोक्तासंग्रामेष्वपराजितः नीतिज्ञःप्रमदाशक्तोद्वितीयेजायतेंशके ॥ २ ॥ उत्पन्नभोगभोक्तास्याच्छास्त्रविद्याविशारदः स्वधर्मप्रमदासक्तःतृतीयेजायतेंशके ३ ॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्चमायासक्तोनपुंसकः ॥ वीरविद्याविचारज्ञश्चतुर्थेजायतेंशके ॥ ४ ॥ इतिनक्षत्रचरणफलम् अथयोगफलम् ॥ कांतावंधुरतस्त्रीपुगृहदाररतस्तथा ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुविष्कुंभेजायतेनरः ॥ १ ॥ प्रीतियोगेपिसंजातोयोपितांवल्लभस्सदा महोत्साहःकृतज्ञश्चपरार्थैकमतिःसदा ॥ २ ॥

के जाननेवाला श्रौर स्त्रीमेंशक्त होनेवाला होताहै २ श्रौर जो तीसरे अंशमें जन्मताहै सो धी उत्पन्नभोगके भोगनेवाला श्रौर शास्त्रविद्यामें चतुर श्रौर अपनेधर्ममें श्रौर अपनीस्त्रीमें शक्तहोताहै ॥ ३ श्रौर जो चतुर्थअंशमें जन्मताहै सो स्त्रीजित श्रौर संतानकरकेरहित श्रौर मायाकर्के आसक्त श्रौर नपुंसक श्रौर वीरविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ ४ ॥ इहेनक्षत्रोंकेचरणोंकाफलकहाहै अबविष्कुंभादियोगोंकाफलकहतेहैं जो मनुष्यविष्कुंभयोगमें जन्मताहै सो स्त्रीकेधातामें प्रीतिकर्ताहै अन्य स्त्रीयोंमें श्रौर घरमेंरतहोताहै श्रौर संपूर्णकार्यांमें चतुर होताहै ॥ १ ॥ श्रौर जो प्रीतयोगमें जन्मताहै सो स्त्रियोंका प्यारा होताहै श्रौर बड़े उत्साहवाला श्रौर कृतज्ञ श्रौर दूसरोंके कार्य करणेमें बुद्धिवाला होताहै ॥ २ ॥

श्रौर जो श्रायुष्य योगमें जन्मताहै सो नीतीके जानने वाला श्रौर स्थिरचित्त वाला श्रौर वहुत दान करणे वाला श्रौर संपूर्ण कृत्यमें तत्पर श्रौर सपूर्ण भोगोंकरयुक्त होताहै ३ श्रौर जो सौभाग्य योगमें जन्मताहै सो सुगंधकाप्यारा श्रौर अत्यत भागों वाला श्रौर वहुत कहने वाला श्रौर श्रेष्ठ धनवाला श्रौर गुणोंकररहित श्रौर शुभवाणी वाला श्रौर श्रेष्ठवुद्धि वालाहोताहै ४ श्रौर शोभन योगमें जो जन्मताहै सो वुद्धि वाला श्रौर गुणोंकर्के युक्त श्रौर अकस्मात् शोककर्के युक्त श्रौर मलरहित पवित्र चित्तवालाहोताहै ५ श्रौर जो अतिगंड योगमें जन्मताहै सो परापवादी श्रौर शूरवीर होताहै श्रौर सत्य कर्के युक्त श्रौर धर्मके जानने वाला होताहै श्रौर परस्त्रीमें रत होताहै श्रौर कामी होता है ६ श्रौर जो सुकर्मयोगमें जन्मताहै सो संपूर्ण कार्योंमें चतुर श्रौर धन धान्य कर्के युक्त श्रौर व्यापारमें चतुर होताहै ७ श्रौर जो धृतियोगमें जन्मताहै सो सुगधकाप्यारा श्रौर धनी श्रौर वादमेंर

नीतिज्ञःस्थिरचित्तश्चवहुदःकृत्यतत्परः आयुष्येजनितेवालःसर्वभोगसमन्वितः ॥ ३ ॥ वहुवाक्यःशुभधनोनिर्गुणःशुभवाक्सुधीः गंधप्रियोपिसुभगःसौभाग्येजनितोनरः ॥ ४॥ मतिमांश्चगुणाढ्यश्चशोकयुक्तःस्वतोभवेत् शोभनेचनरोजातोधौतचित्तःसुनिर्मलः ॥ ५ ॥ परापवादीशूरश्चसत्ययुक्तश्चधर्मवित् परदाररतःकामीचातिगंडेचजायते ६ ॥ दक्षश्चसर्वकार्येषुधनधान्यगुणान्वितःव्यापारकुशलोनित्यंसुकर्मणिनरोभवेत् ॥ ७॥ गंधप्रियोधनाढ्यश्चपरवादरतोलसः परदाररतोनित्यंधृतियोगेचजायते ॥ ८ ॥ सत्त्वयुक्तश्चसत्कर्मागुणवान्भाग्यतोपिहि शूलयोगेनरोजातःशूलवान्जायतेध्रुवम् ९ वाचालोपिमहासत्त्वोगंभीरोगर्वितोभवेत् श्रेष्ठःसुशुभवान्गंडेनरोजातःसमाहितः ॥ १० ॥ महामतिःस्थिरःशूरःसत्यवादीजितेंद्रियःवृद्धियोगेनरोजातोदृढवाक्योमहायशः ॥ ११ ॥ स्थिरकर्म्मादृढशक्तिर्दीर्घायुःप्रियदर्शनः ध्रुवयोगेचयोजातःसर्वदाकर्मतत्परः ॥ १२ ॥

न श्रौर आलसी श्रौर परस्त्रीमे रत होताहै ८ श्रौर जो शूलयोगमें जन्मताहै सो पराक्रम कर्के युक्त श्रौर श्रेष्ठ कर्मोंके करणे वाला गुणवान् होताहै श्रौर निश्चय कर्के शूलरोग वाला होताहै ॥ ९ श्रौर जो गंडयोगमें जन्मताहै सो वाचाल श्रौर वड़े पराक्रम वाला श्रौर गभीर श्रौर गर्वी श्रौर श्रेष्ठ श्रौर शुभलक्षणों वाला होताहै १० श्रौर जो वृद्धियोगमें जो जन्मताहै सो वड़ी वुद्धिवाला श्रौर स्थिर श्रौर शूरवीर श्रौर सत्यवोलने वाला श्रौर इंद्रियोंके रोकने वाला श्रौर दृढवाक्य वाला श्रौर वड़े यशवाला होताहै ११ श्रौर जो ध्रुवयोगमें जन्मताहै सो स्थिर कर्मकर्ताहै श्रौर दृढ पराक्रमवाला होताहै श्रौर वड़ी आयुषावाला होताहै श्रौर सुंदररूपवाला होताहै श्रौर संपूर्णकर्म करणे वाला होताहै १२

और जो व्याघातयोगमें जन्मताहै सो मूर्ख और मलीनचित्रकर्मोंके करणेवाला और निडर और बड़ागर्वी होताहै १३ और जो हर्षणयोगमें जन्मताहै सो कुटिल और हर्षक कैं युक्त और अमृतकीन्याईं मीठाबोलनेवाला और बड़ाबली और खेतीके करणेवाला होताहै १४ और जो वज्रयोगमें जन्मताहै सो धनकरयुक्त होताहै और दान नहींकर्ताहै और कृपणहोताहै और स्त्रीयोंसें वार्ताकरणेवाला होताहै और क्रूरहोताहै और संतानसें हीन होताहै १५ और जो सिद्ध योगमें जन्मताहै सो भोगी और धनवान् और थोड़ाबोलनेवाला और सुखी और सिद्धकर्मा और सत्यबोलनेवाला होताहै १६ और जो व्यतीपातयोगमें जन्मताहै सो चंचल और झूठबोलनेवाला और कुमंत्री होताहै और भोजनसिद्धकरणमें तत्परहोताहै औरकलाहीन और मूर्ख होताहै १७ ॥ और जो वरीयान् योगमें जन्मे सो बहुतया करकें पूज्य होताहै और धनकरकें युक्त होताहै और

मूर्खश्चमलिनश्चित्रकर्मणाभिरतःसदा ॥ निष्ठुरोथमहागर्वीव्याघातेजायतेनरः । ॥ १३ ॥ कुटिलःसौख्यसंपन्नोमृतवाचोमहाबलः कृषिकर्त्ताभवेन्नित्यंहर्षणेजायतेनरः ॥ १४ ॥ अदाताचधनाढ्यश्चकृपणोग्राम्यभाषणः क्रूरश्चैवानपत्यश्चवज्रयोगेभवेन्नरः ॥ १५ ॥ भोक्ताचधनवांश्चैवजायतेस्वल्पवाक्सुखी सुसिद्धःसत्यरक्तश्चसिद्धयोगेप्रजन्मतः ॥ १६ ॥ अस्थिरःसत्यरहितोमंत्री पाचनतत्परः कलाहीनोपिमूर्खश्चजनितोव्यतिपातके ॥ १७ ॥ बहुपूज्यो धनाढ्यश्चस्वकर्मनिरतोभवेत् ॥ जनानंदकरःश्लाघीवरीयसिनरःस्मृतः ॥ १८ ॥ दानदृत्तिर्दुराचारःसुलुब्धःसाहसश्चलः ॥ परिघाख्येनरोजातः स्वकुलेमतिकारकः ॥ १९ ॥ तीर्थयात्रारतोनित्यंपुत्रवान्धनवान्भवेत् ॥ ब्रह्मचर्यरतोनित्यंशिवयोगेप्रजन्मतः ॥ २० ॥ विबुधश्छन्नमंत्रीचसर्वव्यापारकोविदः ॥ सुचित्तोनीतिमांश्चैवसिद्धियोगेप्रजायते ॥ २१ ॥ विविधव्यवसायीचस्वामिभक्तोमहामतिः गंधप्रियोमहोदारस्सुसाध्यस्साध्यजन्मतः २२

अपने कर्ममें रत होताहै और जनों कों आनंद कर्ताहै और स्तुतियोग्य होताहै ॥ १८ ॥ और जो परिघ योगमें जन्मताहै सो दान करणेमें दुष्ट होताहै और लोभी और हठी और चंचल होताहै और अपने कुलमें बुद्धिवालाहोताहै ॥ १९ ॥ और जो शिव योगमें जन्मताहै सो तीर्थयात्रामें रत होताहै और पुत्रवान् और धनवान् होताहै और नित्यंप्रति ब्रह्मचर्यमेंरत होताहै ॥ २० ॥ और जो सिद्धि योगमें जन्मताहै सो पंडित होताहै और गुप्त मंत्री होताहै और संपूर्ण व्यापारमें चतुर होताहै और श्रेष्ट चित्तवाला और नीतिवाला होताहै ॥ २१ ॥ और जो साध्य योगमें जन्मताहै सो अनेक प्रकारोंके उद्यम करणे वाला होताहै और स्वामिकाभक्त और बड़ी बुद्धिवाला होताहै और सुगंधका प्यारा और बड़ा उदार और सुसाध्य होताहै

और जो शुभ योगमें जन्मताहै सो सत्य बोलने वाला और श्रेष्ठ भागी वाला और वक्ता और धर्मी और क्रोध रहित और निर्मल और नम्र और दूसरे को प्रसन्न करणे वाला होताहै ॥ २३ ॥ और जो शुक्ल जोगमें जन्मताहै सो सत्य बोलने वाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला और सुंदर और प्रसिद्धता वाला और वेदोंके जानने वाला और कला शास्त्रोंमें चतुर होताहै ॥ २४ ॥ और जो ब्रह्म योगमेंजन्मताहै सो मीठा बोलने वाला और बड़े पराक्रम वाला और ब्रह्मण्य और ब्राह्मणों का प्यारा और प्रगल्भ और निर्मल और पंडित होताहै ॥ २५ ॥ और जो ऐंद्र योगमें जन्मताहै सोवि जय करणे वाला और दौड़ने वाला होताहै और संपूर्ण कार्योंके जाननेवाला और धनी और प्रसि द्ध और मीठाबोलने वाला होताहै ॥ २६ ॥ और जो वैधृति योगमें जन्मताहै सो लोभी और चुगल बहुत बोलने मेंतत्पर होताहै और प्रथम अवस्थामें चलचित्त होताहै ॥ २७ ॥ इहयव ॥ नजातकमेंयोगोंकाफलकहाहै ॥ अबकरणोंकाफलकहतेहैं ॥

सत्यवाक्शुभगोधर्मीक्रोधहीनःसुनिर्मलः ॥ प्रणतःप्रियकारीचशुभयोगेप्रजन्मतः ॥ २३ ॥ सत्यवाक्सुमतिःकांतःख्यातिमान्श्रुतिपारगः ॥ कलाशास्त्रेषु कुशलःशुक्लयोगेप्रजन्मतः ॥ २४ ॥ प्रियवाक्योमहासत्वोब्रह्मण्योब्राह्मणप्रियः ॥ प्रगल्भोनिर्मलोधीरोब्रह्मयोगेप्रजन्मतः ॥ २५ ॥ ऐंद्रयोगेनरोजातोविजयीधावकोभवेत् ॥ प्रभूतःसर्वकार्येषुधनीस्यातःप्रियंवदः ॥ २६ ॥ लुब्धःपिशुनचित्तश्च वहुभाषणतत्परः ॥ प्रथमेचलचित्तश्चयोगेवैधृतिजन्मतः ॥ २७ ॥ इतियवनजातकेयोगोत्पन्नफलम् ॥ अथकरणफलानि ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिकरणानांचजातकम् ॥ शृणुकश्यपयत्नेनयथोवाचप्रजापतिः ॥ १ ॥ मदतीव्रउदाराढ्यःसुखवान्धनवर्जितः ॥ ववास्येकरणेजातःसेनापालोभवेन्नरः ॥ २ ॥ सुधीरःसुभगस्त्यागीबाललीलारतःसुखी ॥ बालवेयदिजननंबालकर्मरतःसदा ॥ ३ ॥ प्रसूतःकौलवेयस्तुकौतुकानंदवर्द्धनः ॥ पापकर्मरतःसौख्यःप्रच्छन्नःकौलवेयकः ॥ ४ ॥ साधकःसत्यसंपन्नःस्थिरश्चंडःप्रतापवान् तामसोमलिनस्तुषोजातस्तैतलकेनरः ॥ ५ ॥

हेकश्यप तू यत्न करकेंश्रवण कर जैसे ब्रह्मा कहताहै सोसुण १ ॥ जो मनुष्य बव नामक रणमें जन्मताहै तिसको वड़ा मदहोताहै और उदारहोताहै और सुखी होताहै और धनकर्के हीन-होताहै और सेनापतिहोताहै २ और जो बालव करणमें जन्मताहै सो श्रेष्ठ धैर्य वाला और श्रेष्ठभागी वाला और त्यागी और बालकोंकी खेलमें रत और सुखी और सदा बालकों केकर्ममें युक्तहोताहै ३ और जो कोलव करणमें जन्मताहै सो कौतुक कर्के जो आनंद तिसको बधावने वाला होताहै और पापकर्ममें रत होताहै और सुखी होताहै और गुप्त कौलवोंके धर्मको कर्ताहै ॥ ४ ॥ और तैतल करणमें जो जन्मताहै सो साधक और सत्य कर्के युक्त होताहै और स्थिर बुद्धि वाला और बड़े उ प्रताप वाला होताहै और तमोगुणी होताहै और मलीन होताहै ॥ ५ ॥

और जो गर करणमें जन्मताहै सो मत्रके जानने वाला और नीतिके जानने वाला और चतुर और दुर्वल और बहुत बोलने वाला और चपल युद्धके करणे वाला होताहै ६ ॥ और जो वणिज करणमे जन्मताहै सो अनेक व्यवहारोंके जानने वाला और व्यापार कर्के जीवका करणेवाला होताहै ७ और जो भद्रा करणमें जन्मताहै सो क्रूर हठी उग्र पापमें रत और चचल और सपूर्ण कार्योंके जानने वाला होताहै ॥ ८ ॥ और जो शकुनि करणमें जन्मताहै सो तातकाल उद्योगके करणे वाला और शात और सर्वदा काल भ्रमणे वाला और वडी वुद्धि वाला और शकुनोंके जानणे वाला होताहै ९ और जो चतुष्पद करणमें जन्मताहै सो खेती और व्यापार करणेवाला और उद्यमी और खेदकर्के रहित और आलस कर्के रहित और पराक्रम कर्के युक्त होताहै १० और जो नागकरणमें जन्मताहै सो धनकों और धातुयोंकों विशेषकर्के जानने वाला होताहै और आपने कर्मोंकर्के गुणवान् होताहै और नागोंके पालने वाला होताहै ॥ ११ ॥ और जो किंस्तुघ्नकरणमें जन्मताहै सो

मंत्रविन्नीतिमान्दक्षोदुर्वलोवहुभाषणः ॥ चपलोविग्रहरतोगराख्येजायतेनरः ॥ ६ ॥ नानापण्यविशेषज्ञोवणिक्कर्माभिजीवकः ॥ वणिजाख्येनरोजातोवाणिज्यात्तिःसदाभवेत् ७ ॥ क्रूरःसाहसिकश्चंडःपापकर्मरतश्चलः प्रभूतःसर्वकार्येषु विष्ट्याख्येचप्रजन्मतः ८ ॥ सद्योयोगकरःशांत.सदाभ्रामीमहामतिः शकुन्याख्येजातनरःशकुनज्ञोविशेषतः ९ ॥ कृषिवाणिज्यकारीचसोद्योगीविगतक्लमः निरालसःसत्वयुतोजातश्चैवचतुष्पदे ॥ १० ॥ धनधातुविशेषज्ञःस्वकर्मगुणवान्भवेत् नागाख्येकरणेजातोनागानांपालकोभवेत् ॥ ११ ॥ किंचिद्धर्मरतोनित्यंकिंचित्पापरतोभवेत् किंचिद्रोगार्दितोदेहेकिंस्तुघ्नेजायतेनरः १२ ॥ इतिकरणफलम् अथयोनिजफलम् ॥ चपलश्चंचलदृशःशीघ्रगामीरणप्रियः अश्वयोनौतुसंजातोवलवान्स्वामिवल्लभः ॥ १ ॥ मंदगामीवलाढ्यश्चवव्हाशीराजवल्लभ.सत्यवाग्ज्ञानवांश्चैवगजयोनौभवेन्नरः ॥ २ ॥ दुर्घटंदुर्लभंस्थानंभेदयत्यविशंकित.अजायोनिसुजातोसौवहुवुद्धिप्रदोभवेत् ॥ ३ ॥ दर्शनंभीतिदंनित्यंघटाटोपेनवर्तनम् परवेश्मापहारीचसर्पयोनौप्रजायते ॥ ४ ॥

थोडे धर्मकर्के नित्ययुक्तहोताहै और थोडेपापकर्के युक्तहोताहै और थोडे रोगकर्के तिसका देहपीडाकों प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ इहेकरणोंकाफलकहाहै ॥ अवयोनियोंकेफलकहतेहैं ॥ जोमनुष्य घोड़ेकी योनिमें जन्मताहै सो चपल और चचल दृष्टिवाला और सतावी चलनेवाला और युद्धमें प्रीतिवाला होताहै और वली होताहै और स्वामीका प्यारा होताहै १ ॥ और जो हाथीकी योनिमें जन्मताहै सो मदमद चलनेवाला और वली और बहुत भोजन करणेवाला और राजाका प्यारा और सत्यवोलने वाला और ज्ञानी होताहै ॥ २ ॥ और जो बकरे की योनिमें जन्मताहै सो दुर्घट दुर्लभ कठनस्थानकों भेदकर्ताहै और मनमें शंका नहिंकरताहै और बहुतवुद्धिके देने वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जो सर्पकी योनिमें जन्मताहै तिसका दर्शन भयको देताहै और प्रपचकरणेवाला और पराए घरके हरणेवाला होताहै ॥ ४ ॥

ओर जो कुत्तेकीयोनिमें जन्मताहै सो सर्वभक्षी ओर वृथावादी और दूत ओर स्वामिकेहितमें युक्तहोताहै ओर वनमें दु:खको सहारताहै ओर शूरवीरहोताहै ॥ ५ ॥ ओर जो बिल्लेकी योनिमें जन्मताहै सो पिंगवर्णके नेत्रोंवाला ओर सर्वभक्षी ओर चपल ओर द्वेषकरणेवाला ओर वृथाहिक्रोधकरणेवाला ओर डरणेवाला होताहै ॥ ६ ॥ ओर जो मूसेकीयोनिमें जन्मताहै सो धूर्त ओर अपनेकार्यके करणेवाला ओर दूसरेके कार्यका नाशकरणेवाला ओर शत्रुयोंकामूलकटदेनेवालाहोताहै ॥ ७ ॥ ओर जो गौकी योनिमें जन्मताहै सो बहुत गौयोंकरयुक्त होताहै ओर दुग्धका आहार करताहै ओर सुंदर रूपवाला होताहै ओर परोपकारके करणेवालाहोताहै ८ ओर जो महीषीकी योनिमें जन्मताहै सो मदमंद चलताहै ओर मोटे देहवाला होताहै ओर बहुतभोजन कर्ताहै ओर बलीहोता ओर

सर्वभक्षीवृथावादीदूतःस्वामिहितेरतः अरण्येदुःसहोवीरः श्वानयोनौभवेन्नरः ॥ ५ ॥ पिंगाक्षीसर्वभक्षीचचपलोद्वेषकारकः मार्जारयोनिसंजातोवृथाकोपीभयान्वित· ॥ ६ ॥ धूर्तःस्वकार्येनिरत.परकार्यविनाशकः शत्रूणांमूलविच्छेत्तानरोमूषकयोनिजः ॥ ७ ॥ गोधनैर्बहुभिर्युक्तः क्षीराहारोतिसुंदरः परोपकारकर्त्ताचपशुयोनौभवेन्नरः ॥ ८ ॥ मंदगामीस्थूलतनुर्बव्हाशीबलवान्धनी वहुक्षीराज्यभोजीचमहिषीयोनिसंभवः ९ ॥ कृतांतःसर्वभक्षीचविद्यावान्कुशलोनर· व्याघ्रयोनौभवेन्नित्यंदर्शनाद्भयदोमहान् १० ॥ गीतवाद्यप्रियोनित्यं सुंदरश्चारुदर्शनः ॥ मृगयोनिरतोधूर्त्तोमृगयोनौभवेन्नरः ॥ ११ ॥ पिंगाक्षश्चपलोरण्यगामीफलभुजोभवेत् ॥ नविश्वासंव्रजेत्कांश्चित्कपियोनिसमुद्भवः ॥ १२ ॥ चारुदर्शनकार्यार्थीपरकार्यार्थसादरः बिलवासीचिरायुःस्यान्नरोनकुलयोनिजः ॥ १३

धनीहोताहै ओर बहुत दूधके ओर घृतके खाणेवालाहोताहै ॥ ९ ॥ ओर यो भगेयाड़की योनिमें जन्मताहै सो सभको भयदेनेवाला ओर सर्वभक्षी ओर विद्यावान् होताहै ओर देखनेसें हिं बड़ेभयके देनेवालाहोताहै १० ओर जो हरणकी यो निमें जन्मताहै सो गाउणेबजाउणेमें नित्यप्रसन्नहोताहै ओर देखनेमें सुंदरहोताहै ओर मृगयोनिमें रतहोताहै ओर धूर्त होताहै ११ ॥ ओर जो वानरकी योनिमें जन्मताहै सो पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला ओर चपल ओर वनमें गमनकरणे वाला- ओर फलोंको भक्षणकरणेवाला ओर किसीका विश्वास नहिंकरणे वालाहोताहै ॥ १२ ॥ ओर जो नकुलकी योनिमें जन्मताहै सो देखनेमें सुंदरहोताहै ओर कार्यार्थीहोताहै ओर पराए कार्यमें आदरयुक्त होताहै ओर खुड्डमें रहताहै ओर बड़ी आयुषावालाहोताहै ॥ १३ ॥

श्रौर जो सिंहयोनिमें जन्मताहै सो बड़ावली श्रोर पिंगलनेत्रों वाला श्रौर पतले लक्कवाला उौर भयकेदेनेवाला श्रौर सर्वभक्षी होताहे १४ अवगणोंकाफलकहतेहैं जोदेवताका गणहोताहै सो गुरोंका श्रौर देवताका श्रौर ब्राह्मणोंका भक्तहोताहै श्रौर शास्त्रकेविचारणेवाला श्रौर देवताके तुल्य रूपवाला होताहै १ श्रौर जो राक्षसका गणहोताहै सो तमोगुणी पापके करणेवाला क्रोधी गर्वी श्रोर लड़ाई के करणेवाला कठोर गुप्तपापी होताहै २ श्रौर जो मनुष्यका गणहोताहै सो श्रन्नदाताश्रौरधनी श्रौर संतानवालाश्रौर देवताकेपूजनेवाला श्रौर श्रेष्ठस्त्रीके सुखकों भोगनेवाला होताहै ३ इहेगणोंकाफलकहाहै श्रवदिनरात्रिमेंजन्मकाफलकहतेहे जो मनुष्य दिनमें जन्मताहै सो तेजस्वी उौर पिताके तुल्यहोताहै उौर सुंदरदृष्टिवाला उौर राजाका प्यारा होताहै उौर बंधुयोंमे श्रेष्ठहोताहै ॥ १ ॥ उौर जो रात्रिमें-

महावलीचपिंगाक्षः कृशमध्योभयानकः ॥ सिंहयोनिप्रजातस्तुसर्वभक्षकरोभवेत् ॥ १४ इतियोनिफलम् ॥ अथगणजफलम् ॥ गुरुदेवद्विजातीनांभक्तः शास्त्रविमर्शकः ॥ देवतासदृशोमूर्त्त्याजातोदेवगणेनरः ॥ १ ॥ तामसःपापकृत्क्रोधीगर्विष्ठ.कलहप्रियःनिष्ठुरश्छिन्नपापश्चगणेस्याद्राक्षसेनरः॥२॥ अन्नदाताधनाढ्यश्चप्रजावान्देवपूजकः मनुष्यर्क्षेनरोजातोवरस्त्रीसुखभोगकः ३ इतिगणफ० अथादिवारात्रिजातस्यफलम् तेजस्वीपितृसदृशश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः बंधुपूज्योधनाढ्यश्चदिवाजातोनसंशयः ॥ १ ॥ मंदहग्बहुकामार्त्तःक्षयरोगीमलीमसः क्रूरात्माच्छन्नपापश्चानिशिजातोभवेन्नरः ॥ २ ॥ नन्वेवमुदाहृतानांसंवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात् निराधारकत्वेन फलादेशः कथंसम्यक्घटतीति व्यर्थमेवकिमर्थमुक्तमितिचेन्न समयनियमोप्यस्ति तथाहि जातकाभरणे उक्तानिसंवत्सरपूर्वकाणांफलानितत्प्राप्तिरितिप्रकल्प्या सांवत्सरंसावनवर्षपस्यपाकेऽयनर्तुप्रभवंखरांशोः ॥ १ ॥ मासोद्भवंमासपतेस्तथैवंरोगेणोडुपक्षप्रभवंचयत्स्यात् तिथिप्रभूतंकरणोद्भवंचचंद्रांतरेर्कस्यदशाविभागे ॥ २ ॥

जन्मताहै सो मंददृष्टिवाला उौरकामकर्के बहुतदुःखीहोताहै उौर क्षय रोगवाला उौर मलीन होताहै उौर क्रूरात्मा उौर गुप्तपापी होताहै ॥ २ अवइसमें संशयकर्तेहे कहेजो संवत्सरादिफल तिनका परिपाकसमयदशाकालके नाहिंहोनेसें निराधारहोणेसें भलीप्रकाराफलादेश कयसें घटेगा इसकर्केव्यर्थकहाहै जव श्रयसेंकहे तव इहे वात नाहिंहै इनमें समयका नियम- जातकाभरणग्रंथमेंकहाहै ॥ कहे जो सवत्सरादिफल तिनकी प्राप्ति श्रयसें कल्पना करणी सवत्सरकाफल सावनवर्षपतिकी दशामें होताहै उौर श्रयनका उौर ऋतुका फल सूर्यकी दशामेंहोताहै १ उौर महीनेका फल मासपतिकी दशामें होताहै उौरगणोंका फल श्रौरपक्षका फल श्रौर नक्षत्रोंका फल चंद्रमाकी दशामेंहोताहै श्रौर तिथिका फल श्रौर करणका फल चंद्रमाके मध्यमें जवसूर्यकी श्रंतर्दशाहोवे तव होताहै ॥ २

और वारका जो फलहै सो जन्मदिनमें जोवारहै तिसकी दशामें होताहै और योगका जो फलहै सो चंद्रमासूर्यकेमध्यमें जोवलीहै तिसकीदशामें होताहै और लग्नका जोफलहैसोलग्नेशग्रहकीदशामें होताहै और इसीप्रकार दृष्टिफल और भावफल और योगफल और राशिफल विचारणे योग्यहैं जैसें जो ग्रह जिसग्रहको देखताहै सो दृष्टिफल तिसकी अंतर्दशामें देताहै और जो ग्रह जिसभावमें स्थितहै और जो ग्रह जिसराशीमें स्थितहै सो तिस राशीके स्वामिकी अंतर्दशामें फल करताहै २ अथसंवत्सरादिफलोंको लिखकरके उपरंत जन्मकालीन अहर्गण सिद्धकरके लिखे और मध्यमग्रह और स्पष्टग्रहलिखे और जन्मलग्नकुंडलीलिखे और होराद्रेष्काणादि और चंद्रननवांशकुंडलियोंको लिखे कहाहै जन्मकालमें और प्रश्नादि

वाराद्भवंवारविभोर्विचिंत्यंयोगोत्थमिद्धकेवलान्वितस्य लग्नोद्भवंलग्नपतेर्दशायां दृग्भावयुग्राशिजमेवमूह्यम् ॥ ३ ॥ अथजन्मकालकोऽहर्गणः मध्यस्पष्टग्रहा लेख्याः जन्मलग्नकुंडलीलेख्या होराद्रेष्काणादिकुंडल्योलेख्याः चंद्रराशिनवांशकुंडलीचलेख्या उक्तंच जातकादिषुसर्वत्रग्रहैर्ज्ञानंप्रजायते तस्माद्गणितदृक्तुल्यात्स्वतंत्रात्साधयेद्ग्रहान् ॥ १ ॥ विवाहेविग्रहेयात्राप्रश्नकालव्रतादिषु ॥ ज्योतिःशास्त्रात्फलंसर्वंस्फुटंद्युचराश्रयम् ॥ २ ॥ तथाचवशिष्टः ॥ यस्मिन्पक्षेयत्रकालेयेनदृग्गणितैक्यकम् ॥ दृश्यतेतेनपक्षेणकुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥ ३ ॥ सौरभाष्येपि ॥ संसाध्यंस्पष्टतरंबीजंनलकादियंत्रेभ्यः तत्संस्कृतास्तुसर्वपक्षगसाम्यंभजंत्येव ॥ ४ ॥ ब्रह्मसिद्धांतेपि ॥ ध्यातग्रहोपदेशाद्बीजंज्ञात्वाचदेवज्ञैः ॥ तत्संस्कृतग्रहेभ्यःकर्तव्योनिर्णयादेशो ॥ ५ ॥

कालमें ग्रहोंकरके फलका ज्ञान होताहै तिसकारणसें जिसग्रंथके ग्रह दृष्टिकरके गणितके तुल्यमिलें तिसग्रंथके मतसें स्पष्टकरे १ और कहतेहैं विवाहमें और युद्धमें और यात्रामें और प्रश्नकालमें और व्रतादियोंमें ज्योतिःशास्त्रसें जो संपूर्ण फलहै सो स्पष्टग्रहोंके अधीनहै ॥ २ ॥ तैसेंहिवशिष्टकहताहै जिसकालमें जिससिद्धांत वाकरणके ग्रह गणितके बराबर आकाशमें देखनेमें आवें तिसीग्रंथकरके तिथ्यादियोंका निर्णयकरे ॥ ३ ॥ और सौरभाष्यमेंकहतेहैं नलिकादियंत्रोंसे धनऋणरूपबीजको सिद्धकरे तिसबीजकरसंस्कृत ग्रह संपूर्णपक्षोंके तुल्यताको प्राप्तहोतेहैं ४ और ब्रह्मसिद्धांतमेंकहतेहैं ज्योतिषियोंने शास्त्रकरकेतिसें ग्रहोंका बीज जाननेयोग्यहै तिसबीजकरकेसंस्कारको प्राप्तजोग्रह तिनोंसें निश्चयकरे फल कथनकरे ॥ ५ ॥

और ज्योतिर्विवरणमें कहतेहैं ब्रह्मसिद्धांतसें लेकर पवित्रयोसिद्धांतहैं तिनसें वी जन्मकालमें ग्रह साधनक
और श्रेष्ठयत्नाकर जिसकालमें जिसग्रंथके दृष्टिके बराबर देखनेमें ग्रह आवें तिससें सिद्धकरे ६ और इस
दृष्टान्तदेतेहैं जोसुवर्णके कानकोंतोड़देवे तिसककेंक्याहै और जो प्रत्यक्षदेखनेमें नहिंआवे तिसशास्त्रकरकेंक्य
प्रयोजनहै ७ और दामोदरपद्धतिमें कहतेहैं जिसग्रंथसेंसिद्ध हूये ग्रह दृष्टि और गणितमें एकजैसेंहोवे
तिसग्रंथकरकें तात्कालिक ग्रह स्पष्टकरे ॥ ८ ॥ सो ग्रहसाधन भलीप्रकारकरकें इष्टकालके आधीन
है सो इष्टकाल यंत्रादिकोंकरकें स्पष्टहोताहै सो कहतेहैं प्रथमदिनमें इष्टकालसाधनकहतेहैं हाथीके
दंतका बारा अंगुल १२ प्रमाण शंकु बनावे कैसा बनावे जो आगेसें सूचीकी न्याई सूक्ष्महोवे और

ज्योतिर्विवरणे पैतामहादयःपुण्याःक्रियाकालविनिर्णये । सद्यंत्रैर्जनुषःकाले दृक्तुल्यगणितात्खगाः ६ ॥ किंतेनापिसुवर्णेनकर्णघातंकरोतियः तथाकिंतेन शास्त्रेणयत्रप्रत्यक्षताऽस्फुटम् ७ । दामोदरपद्धतौ यांतियत्साधिताःखेटायेनदृग्गणितैक्यताम् तेनपक्षेणतत्कार्याःस्पष्टास्तत्समयोद्भवाः ॥ ८ ॥ तत्रग्रहसाधनसम्यगिष्टकालाधीनंभवतितत्कालोयंत्रादिभिःस्पष्टोभवतितदुच्यते ॥ अथदिवेष्टकालज्ञानम् ॥ सूचीमुखोद्वादशभिस्तथांगुलैरधःपृथुस्तिष्ठतियोमहीतले ॥ विना निखातंगजदंतनिर्मितःकीलःसशंकुर्नरइत्युदीरितः ९ । परमदिनंदिनमानविहीनं सप्तभिराहतपंचविभक्तम् आर्यभटेनविनिर्मितयाभासाचभवेद्दिनमध्यमछाया १० । यायत्रकालेभवतीहछायामध्यान्हहीनास्फुटशंकुयुक्तातयादिनंषड्गुणितंविभाज्यंपूर्वापरार्द्धगतगम्यनाड्यः ११ ॥ अत्रोदाहरणम् जंबूपुरेपरमदिन ३५ । २० दिनमान ३० हीन ५ । २० सप्तभिराहतं ३७ । २० पंचविभक्तं ७ । २८ इयंमध्यान्हछाया इष्टछायांगुलयोमध्यान्हादुपरि १० मध्यछायया हीना २ । ३२ शंकुयुता १४ । ३२ पष्ठ्यासवर्णितोजातोभाजकः ८७२ दिनमानंषड्गुणितं १८० पष्ठ्यासवर्णितोजातोभाज्यः १०८०० भाजकेनभाज्येभक्तेलब्धा १२ । १६ मध्यान्होपरिगम्यघटिकाःसूर्योदयादिष्टम् ॥ १७ । ४४ ॥

नीचेसें भागहोवे सोबिना गडके पृथ्वीमें स्थितहोवे सो शंकु नर कहाहै ॥ ९ ॥
परमदिन जो जिसदेशमें होवे सो वर्तमान दिनमानकरके हीनकरै और सातसेंतिसकों गुणदेवे
फेर पांचसें भागदेवे जो लब्ध होवे सो तिसदिनमें मध्यान्हकालकी छाया होतीहै १०
यहै आर्यभट्टने कहिहै और जिसकालमें जितनी शंकु की छाया आवे सो मध्यान्हछायाकरकें
हीनकरै और तिसमें बारां १२ का अंकमिलावे तिसकरके छैसें गुणित जो दिनमान तिसकों भा
गे जो लब्धहोवे सो इष्टघडीयां होतीयांहैं सो उदाहरणमें स्पष्टकराहै मध्यान्हके पूर्वगत और
मध्यान्हकेउपरगम्य होतीयांहैं ११

अबजलघटीस्थापनकीविधिनारदकेहताहे प्रथम ज्योतिषी शास्त्रका विचारकेलग्न सिद्ध करे १२ सोलग्न जलयंत्रकके सिद्धहोताहे इसवास्ते प्रथमघटीयंत्र सिद्ध करताहे दशपल ताम्र का पात्र जैसे शिरकाखोप-रीहोताहे तिसको न्याई बनावे और छेअंगुलप्रमाण तिसको ऊंचाकरे और बाग ॥ १२ ॥ अंगुलविस्तारकरे ॥ १३ ॥ और अपनेतीसरेभागकरकेयुक्त मापमात्र जो सुवर्ण तिसकी चारअंगुल ४ प्रमाण शलाका बनायकरके तिसपात्रको वेधकरेसो पात्र साठ ६० पलों करके जलसे पूर्ण होजाताहे और एकदिनमें सो घड़ीसाठवारी जलमें डूबतीहे ॥ १४ ॥ और तिसको ताम्रके पात्रमें अथवा मृत्तिकाके

॥ अथजलघटीस्थापनम् ॥ नारदः ॥ पूर्वसंचिंत्यगणितंशास्त्रोक्तंलग्नमानयेत् ॥ तल्लग्नंजलयंत्रेणद्द्याज्ज्योतिषकोत्तमः ॥ १२ ॥ षडंगुलमितोत्सेधंद्वादशांगुलमायतम् ॥ कुर्यात्कपालवत्ताम्रपात्रंचदशभिःपलैः ॥ १३ ॥ पूर्णंषष्ट्यात्वथपलैःषष्टिमज्जतिवासरात् ॥ मापमात्रत्र्यंशयुतस्वर्णकृतशलाकया ॥ १४ ॥ चतुर्भिरंगुलैरायतयाविद्धमितिस्फुटम् ॥ ताम्रपात्रेजलैःपूर्णेमृत्पात्रेवाथवाशुभे ॥ १५ ॥ गंधपुष्पाक्षतैःसार्द्धरलंकृत्यप्रयत्नतः ॥ तंडुलस्थस्वर्णयुतवस्त्रयुग्मेनवेष्टिते ॥ १६ ॥ मंडलार्द्धोदयंवीक्ष्यरवेस्तत्रविनिक्षिपेत् ॥ मंत्रेणानेनपूर्वोक्तलक्षणंयंत्रमुत्तमम् ॥ १७ ॥ एकांतपक्षेनिलवर्जितस्मिन्दध्यक्षतैः पूजितमंडलेच ॥ कुंडेंबुपूर्णेघटिकाप्रवाह्यासूर्यार्द्धबिंबेउदितेस्तगेवा ॥ १८ ॥ मुख्यत्वमसियंत्राणांब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ भवाभवायमर्त्यानांकालसाधककारणमिति ॥ १९ ॥ अथजन्मसमयेनिषेकसमयज्ञानपूर्वकजन्मसमयज्ञानोदाहरणंलिख्यते ॥ संवत् ॥ १७२७ ज्येष्ठशुदि ९ बुधे श्रीसूर्योदयाद्गतघटी ३६ पल ४६ तत्रराश्यादिकेधनुर्लग्ने ८ । ४ । २७ । १६ । एवंवृषस्थसूर्ये १ । १८ । ४३ । ३९ । एवंकन्यागतेचंद्रे । ५ । ९ । ४४ । २८ । जन्मसूर्यगतिः । ५७ । । १७ ॥ चंद्रगतिः । ८१७ । ४२ तत्रायनांशः १९ । ८ चरं १४३ चक्रं १३ अहर्गणः २६३९

पात्रमें जल पायकर स्थापनकरे ॥ १५ ॥ और प्रस्थप्रमाण चाउलोंके ऊपर तिसको धरे और गंधपुष्पअक्षतोंसे प्रथम तिसकी पूजाकरे और वस्त्रदोतिसपात्रके ऊपरवेष्टतकरे ॥ १६ ॥ और सूर्यअर्द्धोदय वा अर्द्धास्त देखकर तिसघडीको जलमें स्थापनकरे ॥ १७ ॥ और एकांतमें जहां वहुत वायु नहोवे ॥ तहां दहीं और अक्षतोंकर कुंडको पूजके कहा जो मंत्र तिसको पढके घडीजलमें धरे १८ ॥ हेघडीयंत्र तूं सपूर्णयंत्रोंमें मुख्यहे पूर्वतेरोको ब्रह्माने वनायाहे और मनुष्योंका जो शुभाशुभज्ञान तिसमें समयसाधनका तूकारणहे ॥ १९ ॥

अबजन्मसमयमेंनिषेककालकेज्ञानपूर्वकइष्टकालशोधनकाउदाहरणलिखतेहैं, तिसमें माईदासमिश्रने कहे जो श्लोक सो कहतेहैं प्रथमस्पष्टचंद्रमामें स्पष्ट लग्नको घटावे फेर, तिसकिया कला बनावे दोस्थानमेंधरे फेर तिनका चुराशीया ॥ ८४ ॥ भागलेवें तिसको दूसरेस्थानके अंकमें मिलावे फेर तिसमें उन्नीलक्ष छेहजार सतसठो सोलाकेअंक तिसमेंमिलावे और संपूर्ण ॥ अंककोंआठसउोसें भागलेवे जो लब्ध आवे सो गर्भस्थितिकालसे लेकर गर्भमोक्षपर्यंतअहर्गण होताहै १ ॥ जो अहर्गण आवे तिसको सावयव नलेवे केवल निषेककालकेवारका

अस्माज्जन्मसमयान्निषेकसमयाहर्गणोयथाश्रीमाईदासमिश्रोक्तः ॥ व्यंगाव्जलिप्तास्वाब्ध्यप्ठांशा ॥ ८४ ॥ द्व्याष्टिनगांगनवेंदुभिः १९६७१६ युक्ताः खाभ्रगजै ८०० भक्तागर्भस्थोहर्गणस्थिरः ॥ १ ॥ उदाहरणम् ॥ चंद्रः ५। ९। ४४। २८ लग्नं ८। ४। २७ ॥ १५ एतदूनोव्जः ९॥ ५॥ १७ ॥ १३ ॥ एतस्यालिप्ताः ॥ १६५१७ ॥ द्विस्थाः ॥ १६५१७ ॥ अस्याब्ध्यष्टांशालब्धाः ॥ १९६ अनेनतएवयुताजाताः १६७१३ ॥ अथगांगनवेन्दुभिः १९६७१६ युताजाताः २१३४२९ खाभ्रगजै ८०० भक्ताजातोऽहर्गणः जन्मसमये २६६ सावनःसप्त ७ तष्टेतलस्थेशून्य०वारःअनेनहीनोजन्मवारोबुधः ४ शेषं ४ अस्माज्जातोबुधवारोनिषेकसमये ॥ अथजन्मसमयादाधानतिथ्यानयनम् व्यंगाव्जांशा पृथक्त्रिघ्ना खाब्ध्या ॥ ४० ॥ तोनाइनो १२ हृता खतत्वा २५० द्व्याहितिथयोगर्भाज्जन्मावधिस्फुटाः २ ॥ चंद्रः ५। ९। ४४। २८। लग्नेन ८। ४। २७। १५। हीनः। ९। ५। १७। १३। अस्यांशा. २७५। १७। १३ पृथक्स्था. २७५। १७। १३। त्रिघ्ना. ८२५। ५१। ३९ खाब्ध्या ४० सालब्धा. २०। ३८। ४७ अनेनहीना पृथक्स्थाः २५४। ३८। २६।

ज्ञानकरणे वास्ते कहाहै और अहर्गणके तुल्य दिन मानकी कुक्षिमे निवासकर्ताहै इहे निश्चय प्रथमकरे और निषेकके वारका निश्चयकरे फेर निषेककालकी तिथिका निश्चयकरे उदाहरणकरके स्पष्टकहाहै अब गर्भकालमें तिथिका ज्ञानकहतेहै स्पष्टचंद्रमामें स्पष्टलग्नको घटावे और तिसके अंश बनावे और तिनाअंशोंको दोस्थानमे स्थितकरे एकस्थानमेंअंशोंको तीनसे गुणे और तिनको चालीस ४० से भाग लेवे जो लब्ध होवे सो तिसका दूसरे स्थानके अंकमें रहित करे

और शेषकों बारा १२ से भाग लेवे और जो लब्ध आवे तिसमें ढाईसौ २५० केअंककों मिलावे लवगर्भसमयसेलेकर जन्मकालपर्यंत तिथियां होतियांहै २ तिनोंकों तीस ३० से भागलेवे तबलब्धम हीनेहोतेहैं इसतिथिके अंककों सावयव नलेवे केवल तिथिका ज्ञान करलेवे और प्रथम जन्मकालमें जो मासतिथिका अंकहै तिसकों कर्मभूमिमें स्थापन करके तिसमें गर्भके जो मासादिक मासदिन तिनकों घटाय देवे यो शेष रहे सो शुक्लादिमास क्रमसें गर्भकालमें गतमासादि जानलेवे और ति सदिनमें सूर्योदयकालीन मध्यम सूर्यबनावे और निषेक कालमें सूर्य स्पष्टकरे और जन्म लग्नकोंच द्रमा कल्पनाकरे और जन्मचंद्रमा कों निषेक कालमें लग्न कल्पनाकरे और जो जन्मका चद्रमा हो

इनो । १२ । हृतालब्धाः । २१।१३ । १२ । खतत्वा । २५० । ढ्याः । २७१ । जातास्तिथयएतास्त्रिंश । ३० । द्भक्काजातामासाः । ९।तिथिः ।१ एतत्संख्यांकसमेनहीनाजन्ममासतिथयः तद्यथा ज्येष्ठशुक्लनवम्यांजन्माऽस्य ज्येष्ठशुक्लांकोमासात्मकः । २ । ९ । एतेमासाद्यागर्भमासाद्येन । ९ । १ । हीनेकृतेजातं ५ । ८ । अतोलब्धाःशुक्लादिक्रमेणपंचगताःवर्षस्यभाद्रपदस्या ष्टमीगताविद्यमानानवमी ॥ तद्दिनेऔदयिक.सूर्योमध्यमः । ४ । २४ । ५१ । ४८ । निषेकसमयेसूर्यः ४ ।२२।५६।५६। चंद्रः । ८ । ४ । । २७ । १५ । लग्नं । ५ । ९ । ४४ । २८ । चक्रं । १३ । अहर्गणः । २३७३ । अत्रजन्मचंद्रंलग्नंप्रकल्प्यपुनर्जन्मलग्नंचंद्रंप्रकल्पयेत्इत्युक्तत्वा तज्जन्मचंद्रं ५ । ९ । ४४ । २८ । इदंनिषेकलग्नं ॥ जन्मलग्नं ८ । ४ ।२७। १५ । इदमेवचंद्रोनिषेकसमये ॥ अस्मान्निषेकचद्रात् निषेकस्येष्टकालान यनम् ॥ जन्मलग्नकलापिंडमिति॥ १४६६७ ॥ खखनागे. ॥ ८०० ॥ वि भाजितेलब्धं ॥ १८ ॥ गतनक्षत्रज्येष्ठास्यवर्त्तमानंमूल भाजितेशेष ॥ २६७ अत्रमूलस्यसर्वर्क्षघटिका ॥ ६० ॥ अस्माच्छेषंपष्टिघ्न ॥ १६०२० ॥ तदुर्वरि तविकलाभिः । १५ । युतं । १६०३५। खखनागै ॥ ८०० ॥ भाजिते लब्धामूलस्यभुक्तघट्यः । २० । प । २ ।

माहै सो निषेक कालमें लग्न होताहै और जो जन्मकालमें लग्न होताहै सो निषेक कालमें चद्रमा होताहै इसी अर्थका उदाहरण करके स्पष्ट कहाहै ॥ अबइसमेंनिषेककालके चद्रमासेंनिषेककालका इष्टसाधनकहतेहैं जन्मकालका यो लग्न सोइ निषेककालका चद्रमाहोताहै तिसकारणसे जन्मलग्नकी या कलाबनावे और आठ ८०० ॥ सडोसे भागलेवे जो लब्धहोताहै सो गतनक्षत्र होताहै और जो-शेष बचताहै सो वर्त्तमान नक्षत्र होताहै इसनेंशेषकों साठसे गणे और विकलाके अंककों तिसमें मि लाय देवे और आठसउ ८०० से भागलेवे लब्ध जो है सो वर्त्तमाननक्षत्रकीमां भुक्तघड़ियांहो गयीहै

और जो प्रातःकालमें वर्त्तमाननक्षत्रकिया भुक्तघड़िया होवें तिनमें घटायदेवे तबनिषेककाल सिद्धहो ताहै सूर्योदयसें लेकर निषेकका इष्टकाल होताहै तिसकालमेंमध्यमसूर्यको चालन यथोक्तप्रकारकर्के सूर्यस्पष्टकरे फेर तिससमयमें मध्यमचद्रमा बनावे और चद्रोच्चको बनावे और त्रिफलसंस्कृतचद्रमा बनावे और चद्रमाका मंदफल सिद्धकर्के स्पष्टचद्रमा बनावे सो चद्रमा जन्मसमयमें लग्नहोताहै फेर जन्मके सूर्यसें और निषेकके चद्रमासें इष्टघड़िया ल्यावें अबइष्टल्यावनेकीरीतिकहतेहैं प्रथमजन्मके सूर्यको सायनकरे फेर निषेककेचद्रमाको सायनकरे इनोंसेंइष्टकालसिद्धकरे सूर्यकाभोग्य-

प्रातःकालेमूलस्यभुक्तघटिका:१३।५७। एतदूनस्यमूलस्यभुक्तघट्यःजातो निषेकस्येष्टकालः।६।५। अत्रचालितोमध्यमोरविः।४।२४।५७।४८ मंदफ०ऋ०।२।००।१६।संस्कृतोरविः।४।२२।५७।३२॥ चरंऋणं।३६। तत्संस्कृतःस्पष्टोरविः।४।२२।५६।५६। तत्रमध्यमश्चंद्रः ८। ।७।३४।३२।चंद्रोच्चं।४।६।२।३५। त्रिफलसंस्कृतश्चंद्रः।८।८ २९।१४। मंदफलंऋणं।४।१४।९।संस्कृतःस्पष्टश्चंद्रः।८।४।१५। ०५। गतिः७५५।७। अयंचंद्रोजन्मसमयेलग्नं पुनर्जन्मार्कनिषेकचंद्रभ्या मिष्टकलानयनम् यथाजन्मार्कःसायनः।२।७।।५१।३९। निषेकचं द्र.सायनः८।२३।३३।०५। आभ्यामिष्टकलानयनंयथा अर्कभोग्यस्त नोर्भुक्तकालान्वितोयुकमध्योदयोभीष्टकालोभवेदिति अर्कभोग्यकालः।२२३ ।३६।२०। तनोर्भुक्तकालः।२६।९।१६।१५। मध्योदयानिकर्क टतोवृश्चिकांतानामैक्यम्। १७१७।एतानिजातंसूर्योदयादिष्टपलात्मकं।२२१०। षष्ठ्याभक्तंजातंसूर्योदयादिष्टघट्यः॥ ३६।५०॥ दिनमानं ३४।४६॥ ऊ नितोजातोरात्रीष्टकालः २।४॥ अथवासूर्यःसायनः॥ २।७।५०।३९ षड्राशि ६ युतः ८।७।५०।३९॥ यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशांतरह तउदय स्यात्खाग्निहृत्विष्टकालइति लग्नं ८।२३।३३।०५॥ तदंशांतरं १५।४२।२६॥ उदयपलानि ३४३ तदंशांतरेणगुणितानि५३६।२।३८ खाग्नि ३० भक्तेलब्ध.इष्टकालः १७९ पष्ठि६० भक्तेघटिकाद्यः२।५९इदंसूर्येष ड्राशियुतत्वाद्रात्रिगतघटिकाः॥ २।५९॥ अत्रसूर्यः॥ १।१८।४२।३७

काल बनावे और लग्नका भुक्तकाल बनावे और मध्यमें जो उदय पलहैं तिनको जोड़देवे और साठ ६० सें भागलेवे तब सूर्योदयकालसें इष्टकाल होताहै और तिसइष्टकालमें दिनमानकोघटायदेवे तवरात्रि गतघटिकाहोतीहै अथवा सायनसूर्यमें छै ६ राशीमिलायकर यदितनुदिननाथावेकराशौतदं शांतरहतइत्यादि रीतिकर्के इष्टकाल ल्यावे तव रात्रीष्टकालआजावेगा सो सूर्यमें छैराशी जोड़नेकर्के रात्रि गतघटिकाहोतीहै फेर तिसकालमें सूर्यस्पष्टकरे

और लग्नस्पष्टकरे और चंद्रमास्पष्टकरे इसी प्रकार चंद्रमा करके और निषेककालकेसूर्यकरके गर्भइष्टकाल कोंसिद्धकरे फेर तिसकालमेंलग्नस्पष्टकरे और चंद्रमास्पष्टकरे और सूर्यस्पष्टकरे फेर चंद्रमाकरके और जन्मके सूर्यकरके इष्टकाल सिद्धकरे असकृत्कर्मकरके जितनाचिर पूर्वकेतुल्य नहिंइष्टआवे तितनाकाल असकृत्कर्मकरे अवनित्यानंदोक्तइष्टकालकाशोधनकहतेहें चंद्रमामे लग्नकों घटायकरके कला वनावे और तिनमें अपनें चुराशी ८४ में भागकों मिलावे और तिसमें उन्नीलक्ष छेहजार सत्तसउो सोलांके अंक ११,६७,१६ कोंमिलावे फेर आठसउो ८०० का भागदेवे जो लब्धआवे सो गर्भस्थअहर्गणहोताहे १ औरप्रकारतरकहतेहें लग्नमेंचंद्रमाकोंघटायकरके कला वनावे फेर अपने ८४ भागकों मिलावे

लग्नं ॥ ८।४।१६।४३ ॥ चंद्रः ॥ ५।९।४४।०१ ॥ अतश्चंद्रेणगर्भार्केणलब्धोगर्भेष्टकालः ३ ॥ ९ ॥ अत्रलग्नं ॥ ५ ॥ ९ ॥ ४० ॥ ३० ॥ चंद्रः ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३८ ॥ १० । सूर्यः । ४ ॥ २२ ॥ ५४ । ०४ । अतश्चंद्रेणजन्मार्केणच इष्टकालोरात्रिगतः ॥ २ ॥ ५८ ॥ अत्रलग्नं ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४८ । ५२ । चंद्रः ॥ ५ ॥ ९ ॥ ४३ ॥ २६ ॥ अतःसाम्यताजातःशुद्धः इष्टकालः ॥ अथेष्टकालशोधनं नित्यानंदकृततदेवोच्यते व्यंगावलिप्ताःस्वाब्ध्यष्टांशा ८४ द्याष्टिनगांग नवेंदुभिः ॥ ११ ६७ १६ ॥ युक्ताः ॥ खाभ्रगजे ॥ ८०० ॥ भक्तागर्भस्थोऽहर्गण.स्थिरः ॥ १ ॥ विचंद्रांगकलाःस्वाब्धिगजांशा ८४ ढ्याविहीनताः त्रिनगाक्षाष्टभूपक्षा ॥ २ १ ८ ५ ७ ३ ॥ स्वखाष्टा ८०० साग्रहगेणः ॥ २ व्यंगाब्जांशाःपृथक्त्रिघ्नाःखाब्ध्या ॥ ४० ॥ सोनाइनो १२ ह्रताः ॥ खतत्वा ॥ २५० ॥ ढ्याहितिथयोगर्भाज्जन्मावधिस्थिराः ३ जन्मतोनवमेमासेदशमेवा स्मृतापुरा ॥ जन्मलग्नसमेव्जेंगेजन्मेन्दुसममत्रतु ॥ ४ ॥ ग्लोम्नमंजन्मलग्नं स्यात्तस्मात्कालस्ततोविधुः कर्मैतदसकृत्तावद्यावत्सर्वंस्थिरंभवेदिति ॥ ५ ॥ इतिनिषेकादीष्टकालज्ञानम् ॥

फेर तिनकों इकीलक्षअठहजारपाचसऔत्रिहत्र २१८५७३ के अंकमें घटावे फेर आठसओ ८०० का भागदेवे तव गर्भकालका अहर्गण होताहे २ और चंद्रमासें लग्नकों घटावे फेर अंश वनावे तिनकों प्रथक् धरे एकस्थानमेंत्रिगुणकरे और चाली ४० सें भाग लेकर दूसरेस्थानमें घटायदेवे फेर तिसमें वारा १२ का भाग लेवे फेर लब्धमें ढाई सउोके २५० अंककों मिलावे तव गर्भकालकी तिथिसें लेकर जन्मकालकी तिथिपर्यंत तिथियाहोतीयांहे ३ आगे पूर्वकीन्याई इष्टशोधनकरे ४ ५ इहनिषेकादीष्टकालकाज्ञानकहाहे

अवप्रसंगसेंनिषेककाकारणसारावलीमेंकहतेहैं स्त्रीयोंकी जन्मराशीसें जब चंद्रमा । १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥ राशीओमें स्थित होवे और मंगलकर्के देख्याहोवे तब स्त्रीयोंको प्रत्येकमहीनेंमेंरजोदर्शन होताहै ऋषिश्रयसैंकहतेहैं ॥ १ ॥ चंद्रमाजलरूपहै और मंगल अग्निरूपहै जल और अग्निकेसंयोगकर्केपित्त उत्पन्न होताहै इसीप्रकार पित्तकर्के रक्तक्षोभकों प्राप्तहोकेस्त्रीयोंमेंरज उत्पन्न होताहै ॥ २ ॥ सो रजोदर्शन गर्भका कारण कहाहै और जब स्त्रीयोंकों ॥ ३ ॥ ६ ॥ १० ॥ ११ स्थानमें चंद्रमा मंगलकर्के देख्या होवे तब सो रज विफल होताहै गर्भका कारण नहिंहोताहै सो अन्यथा वाला वृद्धा वंध्यास्त्रीयोंमें होताहै ॥ ३ ॥ अवस्त्रीपुरुषकासंयोगहोणाऔरनहिंहोणाइहबादरायणऋषिकहताहै स्त्रीकेरजोदर्शनसमयमें पुरुषकों ॥ १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥

अथात्रप्रसंगेननिषेकस्यकारणमाह सारावल्याम् अनुपचयराशिसंस्थेकुमुदाकरबांधवेरुधिरदृष्टे ॥ प्रतिमासंयुवतीनांभवतीहरजोत्रुवंत्स्येके ॥ १ ॥ इंदुर्जलंकुजोग्निर्जलमिश्रंत्वग्निरेवापित्तस्यात् ॥ एवंरक्तेक्षुभितेपित्तेनरजःप्रवर्त्ततेस्त्रीषु ॥ २ ॥ एवंयद्भवतिरजोगर्भस्यनिमित्तमेवकथितंतत् ॥ उपचयसंस्थेविफलंप्रतिमासंदर्शनंतस्य ॥ ३ अन्यत्रवालवृद्धातुरवंध्याभ्यः एवंगर्भग्रहणयोग्यमार्त्तवंप्रदर्श्यस्त्रीपुरुषसंयोगसंभवासंभवौचाह ॥ बादरायणः ॥ पुरुषोपचयगृहस्थोगुरुणायदिदृश्यतेहिमयूख ॥ स्त्रीपुरुषसंयोगंतदावदेदन्यथानैव ॥ ४ ॥ नन्वत्रस्त्रियाउपचयस्थःकथनोक्तः अयुक्तमेतत्प्राधान्यात्पुरुषस्यैवकस्मिन्कालेयंविचारः उच्यते चतुर्थदिनेस्नातायामिति अथान्यदाहग्रंथान्तरे बलान्वितावर्कसितौस्वभांशेपुंसांयदाचोपचयेभवेताम् ॥ तथांगनानांशशिभूमिजौवा तदाभवेद्गर्भसमुद्भवश्च ॥ ५ ॥

स्थानमेंजन्मराशीसें चंद्रमाहोवे और बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तबस्त्रीपुरुषका संयोगहोताहै अन्यथा नहिंहोताहै अवइसमेंशंकाकरतेहैं स्त्रीयोंको उपचय । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमेंचंद्रमा पुरुषसंयोगकेदूरककारते क्यों नहिंकहा पुरुषका क्योंकहाहै इहे अयुक्तहै तब कहतेहै गर्भमें प्राधान्यता पुरुषकीहीहै इहेविचारचतुर्थदिनमें जवस्त्रीस्नानकरलेवे तबकहाहै ॥ ४ ॥ अवऔरग्रंथांतरकेमत सें कहतेहैं ॥ निषेकसमयमें पुरुषकों । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमें जन्मराशीसे सूर्य और शुक्र बलकर्केयुक्त अपनेनवांशमास्थित होवें और तैसेंहि स्त्रीयोंको जन्मराशिसें । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमें चंद्रमाऔर मंगल स्थितहोवें तव गर्भ स्थित रहताहै । ५ ।

और कहतेहे स्त्रीयोंको । २ । ६ । । १० । ११ । स्थानम वी चंद्रमा मगलकके देख्याहोवे तवगर्भग्रहणकरणेके जोग्यहोतीहै और पुरुषों कोंउपचय । ३ । ६ । १० । ११ । स्थानमे चंद्रमाहोवे और वृहस्पतिकर्कदेख्याहोवे तवस्त्री पुरुषका सयोग-होताहै इसकेविना नहिंहोताहै ॥ ६ ॥ अवआधानकालमेंचंद्रमासेंप्रसूतीकासमयकहतेहैं आधा

स्त्रीणांविधौचोपचयेकुजेनदृष्टेपिगर्भग्रहणेपियोग्या ॥ पुसांतथागीष्पतिना प्रदिष्टेस्त्रीपुंसयोर्योग्यमतोन्यथान ॥ ६ ॥ अथाधानकालेचंद्रवशात्प्रसव कालज्ञानमाह ॥ आधानंयदिदृश्यतेस्थिरगतेचंडीशचूडामणौनारीणाप्रस वस्तदाखलुभवेद्युग्मांकपक्षे ॥ २९२ ॥ दिनैः ॥ सप्ताशंत्यधिकेश्च पक्षसहिते ॥ २८७ ॥ स्तस्मिश्चरक्षेत्रगे ॥ चद्राष्टाश्वि ॥ २८१ ॥ दिनैरसातलभुजे ॥ २७६ ॥ वाद्वि स्वभावेविधाविति ॥ ७ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराज श्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिवंधेजातकखडेसंवत्सरादिफलकथनंनिषेकादिष्टशोधनंचनामतृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

नकालमें स्थिरराशियोंमें । २ । ५ । ८ । ११ । चंद्रमाहोवे तव स्त्रीयोंको प्रसूति दोसउोवान् म २९२ दिनोंकर्के होतीहै और चद्रमा । १ । ४ । ७ । १० । चरराशीम-होवे तव दोसउो सताशी । २८७ । दिनों कर्के होतीहै और चद्रमा द्विस्वभावराशीमें । ३ । । ६ । ९ । १२ । होवे तव दोसउोएकाशी । २८१ । दिनोंमें प्रसूतीहोतीहै ॥ ७ ॥



अबप्रयोजनग्रहसाधनेकाहे तिसमेंकल्पसें लेकर गतवर्षोका ओर अहर्गणका मध्यमग्रहसाधनके निमित्त सुगमउपायकर्के कृष्णज्योतिर्वित् के तीन श्लोकोंकर्के कहाहै प्रथमग्रहलाघवकरणके अहर्गणकों ब्रह्मसिद्धांतके अहर्गणतुल्य करणाकहतेहै ग्रहलाघवकाजो अहर्गण तिसमें वागलक्ष तीनहजार एकसउो तेरां १२३११३ के अंककों मिलावे फेर वर्त्तमान जो चक्राक तिसकर्के गुणिन जो चारहजार सोलाके अंककों ४०१६ तिसमें मिलायदेवें तव ब्रह्मसिद्धातके तुल्यअहर्गण होजानाहै तिसके आगे फेर कल्पादि अहर्गण सिद्धकरतेहै सो उदाहरणमें स्पष्टलिखते

अथग्रहभावसाधनाध्यायः तत्रादौग्रहलाघवीयादहर्गणाद्ब्रह्मतुल्यकरणादहर्गणानयनप्रकारः श्रीमद्गणेशदैवज्ञैरभिहितः तथा विश्वैर्हग्न्यरुणैर्युक्तोग्रहलाघवजोगणः चक्रघ्ननृपखाब्ध्याढ्योब्रह्मतुल्यगणोभवेत् ॥ १॥ तत्रकल्पादितोगताब्दानांदिनगणानांच मध्यग्रहसाधनार्थं सुगमोपायेन कृष्णज्योतिर्विदांश्लोकत्रयम् ॥ तद्यथा करशरयुगसप्ताभ्राभ्रषड्वन्हिषट्खद्वितुरग ॥ ७२०६३६००७४५२ ॥ सहितश्चेद्ब्रह्मतुल्यद्युपिंडः इहसभवतिकल्पांतावदंकाद्रिभूमीनगयुगखगपक्षाब्ध्यंकभू ॥ १९७२९४७१७९ युक्शकोब्दः ॥ १ ॥ शररसगुणभूपण्नागरामाभ्रवेदाम्बुधिशशिनग ७१४४०३८६१३६५ ॥ युक्तोब्रह्मतुल्यद्युपिंडः ॥२ ॥ नागरामनगवेदपट्शरक्ष्मा ॥ १५६४७३८॥ युतोदिनगणःकुतूहले ॥ स्याद्यंकलिमुखोथगोद्रिभूराम ३१७९ संयुतशकोत्रवत्सराः ॥ ३ ॥ उदाहरणम् ब्रह्मतुल्यद्युपिंडः २४८२६१ ॥ करशरयुगसप्तादिभिरेतैरंके ७२०६३६००७४५२ युक्तोजातःकल्पाद्यहर्गणः ॥ ७२०६३६२५५७१३ ॥ तथाअंकाद्रिभूम्यादिभिरंके १९७२९४७१७९ युक्तःशकः १७८४ जाताःकल्पादितोगताब्दाः १९७२९४८९६३ ॥ एवंशररसगुणादिभि ७१४४०३८६१३६५ युक्तोहर्गणः २४८२६१ जातःसृष्ट्यहर्गणः

हैं ॥ तत्रग्रहलाघवीयोहर्गणः ६५२ विश्वादिभिरंके १२३११३ युतोजातः १२३७६५ चक्र ॥ ३१ अनेनगुणितानृपखाब्धयः ४०१६जातः १२४४९६ युतोजातोब्रह्मतुल्योहर्गणः २४८२६१ अब उदाहरणकहतेहैं ब्रह्मसिद्धांतके तुल्य जो अहर्गण तिसमें करशरादिअंकोंकों मिलावें तव कल्पसें लेकर अहर्गणहोताहै तैसेंहि अंकाद्रिभूम्यादि अंकोंकर्केशककोंमिलावे तवकल्पसेंलेकर गतवर्षहोतेहैं और शररसाद्यादिअंकों कर्के अहर्गणकों युक्तकरे तव सृष्टिकालसें लेकर अहर्गण होताहैं और तैसांहि गोत्यद्रिरामादिअंकोंकर्के शककों युक्तकरे तव सृष्टिसें गतवर्षहोतेहैं

उोर अयसेंहिं नागरामनगादिअंकों कर्के अहर्गणको युक्तकरें तव कलियुगके आरंभसेंअहर्गण होताहे उोर तैसेंहिं गोद्रिभूरामादि अंकोंको शकमें मिलावें तव कलियुगसें लेकर गतवर्षहोतेहैं अव उदाहरणका क्रमलिखतेहे तिसमें उष्टश्रीमहाराजाधिराजजीकी आज्ञानुसाररखतेहे श्रीरघुवंशके जो राजा तिनके कुलमें श्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहधर्मावतारप्रभुउत्पन्न भयाहे उोर कैसावीहे श्रेष्ट जो शास्त्र तिनका श्रवण उोर मनन उोर निध्यासनमें उत्कंठाकों प्राप्तहे मनजिसका तिसकीआज्ञाककेंपंडितोंने ज्योतिःशास्त्रका समुदाय रचाहै किससमयमें सतारासउोचुराशी शकमें किसवास्ते श्रेष्ठबुद्धिवाल्योंकीप्रसन्नतावास्ते १ श्रीवीरविक्रमादित्यकेराज्याभिषेकसेंसंवत् १९१९ उोर शाकः

७१४४०४१०९६२६ तथा गोत्याद्रिरामादिभि १९५५८८३१७९युक्तः शकः१७८४ जाताःसृष्टिगताब्दाः१९५५८८४९६३ एवंनागरामनगादिभिः १५६४७३८ युक्तोहर्गणः २४८२६१ जातःकलिमुखोहर्गणः१८१२९९९ तथागोद्रिभूरामैः ३१७९ युक्तःशको १७८४ जाताःकलिगताब्दाः ४९६३ अथोदाहरणक्रमोलिख्यते श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतिर्जातोरघूनांकुले सच्छास्त्रश्रवणादिपूत्सुकमनाधर्मावतारःप्रभुः ज्योतिःशास्त्रसमुच्चयोविरचितस्तस्याज्ञयासूरिभिः शाकेवेदगजाद्रिभू १७८४ परिमितेसद्धीमतांप्रीतये १ तत्रश्रीनृपतिवीरविक्रमादित्यराज्यात्संवत् १९१९ शाकः १७८४ तत्रसकलपंडितमंडलीसमाश्रयविश्रांतिकल्पपादपस्यपरमाभिधेयप्रधानपुरुषस्यसकलमहाराज्यकलापरंपराभाजनस्यधर्ममार्गप्रवर्तकधुरीणस्यसकलमंडलेश्वरोपयुक्तपादपीठस्यश्रीमहाराजाधिराजरणवीरसिंहस्यराज्याभिषेकात्संवत् ७ अत्राब्दावधिकल्पगताब्दाः १९७२९४८९६३ शेषाब्दाः २३४७०५१०३७ कलियुगगताब्दाः ४९६३शेषाब्दाः ४२७०३७ एतेषांसंवत्सराणांमध्येकरणकर्तृभिर्ज्योतिर्वित्तिलकैःशालिवाहनशाकएवाभिमतः

१७८४ उोर संपूर्णपंडितजनोंकी जो मंडली तिनके विश्रामके वास्तेकल्पवृक्षकी न्याईं परमप्रधान पुरुष उोर संपूर्णमहाराज्यकीकलापरंपरासें लेकर धर्ममार्गमें जो प्रवृत्त तिनमें अतिचतुर उोर संपूर्ण राजयोंकरयुक्तपादपीठजिनको अयसे श्रीराजाधिराजमहाराजरणवीरसिंहजीके राज्याभिषेकसेंसंवत् ७ इनोंवर्षोंपर्यंतकल्पसे लेकर गतवर्षभये १९७२९४८९६३ उोर शेषवर्षरहे २३४७०५१०३७ ॥ उोर कलियुगसेंलेकरगतवर्षभये ४९६३ उोर शेषवर्षरहे ४२७०३७ उहेजो संवत्सरहे तिनके मध्यमें ग्रहलाघवकरणके वनावने वाले जो गणेशनामकर्केज्योतिषि तिनोंनेशालिवाहनका शकमानकर्के करणग्रंथरचाहे

और ग्रहलाघवकीटीकामें विश्वनाथज्योतिषि जो हैतिसनेश्रयसें कहाहे जिसग्रथमें कल्पसें लेकरग्रहों-काश्रानयन कियाहे तिसकानामसिद्धातहैं औरजिसग्रंथमें युगसें लेकरग्रहोंकाश्रानयनकियाहैतिसकानाम तत्रकहाहें और जिसग्रथमें शकसेंश्रादलेकर ग्रहसिद्धकियेहैं तिसकानामकरणकहतेहैं श्रवइसग्रथमेंजन्म पद्धति साधनकेवास्तेग्रहलाघवकरणसें ग्रहसाधनकर्त्तेहैं तिनोंकेनिमित्तउपपत्तिके सहितदोश्लोकों करके श्रहर्गणकहतेहें श्रव भापाकर्के श्रहर्गण ल्यावनेका प्रकार कहतेहैं शकजो है शालिवाहनके राज्यसें गतवर्ष समूहतिसमें चउदा सैबेतालींके १४४२श्रंकको घटावे शेप जो बचे सो सिद्धातरहस्यकरण नामग्रंथके श्रारभसें गतवर्ष होतेहैं श्रर्थात् १४४२ शकमें करणका श्रारभ भया फेर शेष वर्षोंको ग्यारां ११ सें भागलेवे जोफल लब्धहोवे तिसकी चक्रसंज्ञा कहीहै इसमें चक्र संज्ञाकरणेका-प्रयोजन कहतेहैं श्राचार्यने शिप्योंके क्लेशभयके दूरकरणे वास्ते ग्यारा २ वर्षका श्रपवर्त्तन वर्षगण मे दियाहे और ११ के भागलिये शेप जो वर्षहैं तिनकों बारा १२ के श्रंकसें गुणे गुणेपीछे चैत्रशुक्लपक्षसें लेकर इष्टकालपर्यंत जोगतमासहैं तिनकों मिलावे तब चक्रकालसेंलेकर मासगण

यदुक्तंसिद्धांतरहस्यविवरणेविश्वनाथदैवज्ञेन यत्रकल्पादेर्ग्रहानयनंससिद्धांतः यत्रयुगादेर्ग्रहानयनंतत्तंत्रम् यत्रशकाद्ग्रहानयनंतत्करणमिति श्रत्रजन्मपद्धतिसाधनार्थंसिद्धांतरहस्यकरणतोग्रहसाधनंक्रियते तदर्थमहर्गणंसोपपत्तिकंवृत्तद्वयेनाह द्व्यब्धीन्द्रोनितशकईशहृत्फलंस्याच्चक्राख्यंरविहतशेपकंतुयुक्तम् ॥ चैत्राद्यैःपृथगमुतःसदग्नचक्रादिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥ खत्रिघ्नगततिथियुङ्निरग्रचक्राड्रांशाढ्यंपृथगमुतोऽधिपट्कलब्धे ॥ ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो ॥ भवेद्वैवारःस्याच्छरहतचक्रयुग्गणोब्जात् ॥ २ ॥

होताहे श्रव इसमें सौर वर्षमासोंमें चाद्र मासोंका योगकरणेसें क्रियामें दोप पडताहे इसवास्ते श्राचार्यने सौरमासोंसे श्रधिकमास निकालकर सौर मासोंमें जोडकर्के चाद्रमासकिये तिनमें चैत्रादिगतमासोंका योग कियाहे ॥ फेर मासगणकों दूसरेस्थानमें धरे और चक्रकों दो २ के श्रंकसे गुणे फेर तिसमें दश १० के श्रकको मिलावे फेर तिसमें श्रमर ३३ के श्रकसें भाग लेवे जोलब्धहोवे तिसकी श्रधिमास सज्ञा कहिहै तिसकों दूसरे स्थान स्थितजो मासगण तिसमें-युक्तकरे तब स्पष्ट मासगण होताहे १ फेर तिसमासगणकों त्रिशत् । ३० । के श्रंकसें गुणे तिसमें मासगणमें लेकर इष्टकाल पर्यंतगततिथियोंको मिलावे फेर तिसमें चक्रकों छे ६ । का भागदेकर जो लब्धहोवे सो मिलावे शेपका त्यागकरे फेर तिसकों दूसरे स्थानमें स्थापनकरे और चहुट । ६४ । के श्रंकसें भागलेवे जो लब्धश्रावे तिनकी श्रवमदिन सज्ञाहे तिनोंकर्के दूसरेस्थान जो-श्रकस्थितहे तिनमें घटाय देवे तब श्रहर्गण होताहै इस प्रकार सावन श्रहर्गण उत्पन्न होताहे और वारके ज्ञानवास्ते फिर श्रहर्गणमे पाच । ५ । कर गुणित चक्रकों मिलावे और सात । ७ ।

कर भाग लेवे भागलिएपीछे जो शेष वचे सो चंद्रवारसे लेकर्के वार होताहै जहां शून्य शेष वचे तहां सोमवार होताहै जिस्सें ग्रंथके आदमें सोमवार था ॥ अब उदाहरण कहतेहै जैसें सतारांसऊचुराशी ॥ १७८४ ॥ शंकमें चउदासउोविताली ॥ १४४२ ॥ वर्षघटाए दिये तो वा को तीनसउोविताली ॥ ३४२ ॥ वर्षकरणग्रंथसें भये ओर तिनकों ग्यारां ॥ ११ ॥ का भागदिया तो लब्ध एकत्री ॥ ३१ ॥ चक्रभये शेषएक १ वचा तिसकों वारां १२ सें गुणदिया १२ और चैत्रशुक्लप्रतिपदासें लेकरइष्टमासपर्यंत सात ७ मास गतभये तिनकों जोडदिया नवउन्नी १९ भये तिनकों दूसरी जगास्थितकिया १९ और चक्र ३१ कों दो २ के साथ गुणः तो बाहट ६२ भये तिनकों मिलाया तो एकाशी ८१ भये फेर तिनमें दश १० कों मिलाया तो एकानमें ९१ भये फेरतिनकों तेत्री ॥ ३३ ॥ कर भागलियातोलब्धदो ॥ २ ॥ ऽधिमासभये इनों कों दूसरे स्थानके अकों में ॥ १९ ॥ जोड दियातोमासगण भया ॥ २१ ॥ फेर मासगण कों तीस ॥ ३० ॥ सेंगुणदिया तोछे सौ तीसभये ॥ ६३० ॥ फेरतिनमें शुक्लप्रतिपदा सें लेकर गततिथियां सताईं । २७ । तिनों कर युक्तकिया तोछे सौ सतवुंजा ॥ ६५७ ॥ भये फेर चक्र में ३१ छेका ६ भाग लिया तब लब्धभये पांच ५ तिनकों मिलायदिया ६६२ और चक्रके शेष का त्याग किया इन कों दूसरी जगा में स्थितकिया ६६२ तिन में चउहट्ट ६४ सेंभाग लिया तो लब्धभये क्षयदिन दश १० तिन कों दूसरी जगा स्थित जो अंक ६६२ तिन में हीन कियातब सावन अहर्गण सिद्धभया ६५२ अभीष्ट वारके वास्ते चक्र ३१ कों पांच ५ सेंगुण दिया १५५ अहर्गण में मिलाय दिया ८०७ सात ७ सेंभाग लिया लब्ध का त्यागकिया शेष दो २ वचे इससें बुधवार भया तब अहर्गण शुद्धभया है ॥ और इससें विशेष कहतेहैं ॥ अहर्गणसाधनके समयमें जब पूर्व वर्ष की अपेक्षा सें अधिमास अधिक आवे सो नाहिं ग्रहण करणा तिसका त्यागकरणा जैसें शाकः १५ ५५ चैत्रशुक्ल १ भृगौ अहर्गणः साध्यते और इसवर्षमें वैशाखमें आगें अधिमासहै उदाहरणम् शाकः १५५५ चउदांसौ विताली १४४२ सें हीन किया ११३ ग्यारां ११ कर भागलिया लब्ध चक्र १० शेष ३ वारांसें १२ गुणे ३६ चैत्रसें गतमास ० जोडे ३६ दूसरी जगामें धरे ३६ चक्र १० कों द्विगुण २० कर दश १० मिलाय ३० कर तिस में मेलें ६६ तेतरी ३३ सेंभागलिया लब्ध आधिमासाः २ इसमें वैशाखसें पूर्वहि अधिमास प्राप्त था सो नाहिं ग्रहणकरना अयसे स्थानमें एककर हीन अधिमास लेणा अयसें करणेसें अधिकमासः १ इसकर्के युक्तकिया दूसरे स्थानका अंक तब सतत्री भये ३७ त्रिंशत् ३० गुणितं ११२० गते तिथिः ० युक्तं ११२० चक्रस्य षडंशेन १ युक्तं ११११ द्विस्थं ११११ चतुःषष्ट्या । ६४ । भक्तंलब्धं क्षयाहाः १७ इनोंकर हीनकिये पृथक् स्थित तब अहर्गणभया १०१४ अभीष्टवारके वास्ते एक युक्तकिया तब अहर्गण १०१५ शुद्धभया और जब दो २ अधिमाससें अहर्गण सिद्धकरें तो अहर्गणः ११२४ अभीष्टवारार्थमेकाकिया ११२३ इहे अशुद्धभया इससेंउत्पन्नग्रह अशुद्धहोणेसें ॥ यदुक्तं सिद्धांतशिरोमणौ ॥ स्पष्टोधिमासःपतितोप्यलब्धोयदायदावाऽपतितोपिलब्धः ॥ सैकैर्निरेकैः क्रमशोधिमासैस्तदादिनौघःसुधयाप्रसाध्यइति । १ । एवंस्पष्टाधिमासोत्तरमहर्गणानयने यद्यधिकोधिमी

सो नलभ्यते.तथापिसंग्राह्यः यथा शाकः १५१२० द्व्यब्दैः १४४२ ऊनः ७८ एकादश ११ भक्तं लब्धं चक्रं ८.शेषं ० द्वादशगुणित ० चैत्रतो गतमासैः ७ युत ७ द्विस्थं ७ द्विगुणचक्र १६ युक्त २३ दश ३० युक्त ३३ त्रयस्त्रिंशताभक्त लब्ध अधिमासः १ अत्राधिमासो धिको नल भ्यते तथापिग्राह्यः तथाकृतेधिमासाः २ अनेन युक्त द्विस्थं ९ त्रिंशद्गुणित २७० गततिथियुक्त २७० चक्रस्यपड्ंशेन १ युत २७१ द्विस्थं २७१ चतु षष्ठ्या ६४ भक्त ४ अनेनहीनं द्विस्थजातोहर्गणः २६७ अभीष्टवारार्थंनिरेक.कृतः शनिवारे जातोहर्गणः २६६ यदितु यथागतैरधिमासैः अहर्गणः क्रियतेतदाय २१८मशुद्धः उक्तंचशिरोमणौ अभीष्टवारार्थमहर्गणश्चेत्सैकोनिरेकस्तिथयोपितद्वत् इतिअत्रान्योविशे षः जिसवर्षमें अधिमास पड़े तिस अधिमासके पूर्व अहर्गण साधनेमें अधिमास निरेक एककररहि तग्रहणकरणा और अधिमासकेमध्यमें अहर्गण साधनेमे अधिमासकिया गततिथिया ग्रहण करणिय अधिमासनहिं गिणना और अधिमासके उपरत मासोंमें अहर्गण सिद्ध करणे ॥ यद अधिमास अ धिकमासनहिंवी आवे तब वी अधिमास एक कर युक्त ग्रहण करणा और वी कहतेहैं जब वर्षा को चक्रलेणे वास्ते ग्यारासे भागलिये पीछे शेष शून्य० रहे तब अहर्गण सें उत्पन्न जो वार तिन

अथसारिण्यांमध्यमग्रहसाधनमाह अहर्गणाच्छीग्रहलाघवोक्तंकृत्वाबुधैः खा ग्निमितैर्विभाज्यम् लब्धंपुनर्द्वादशभिर्विभक्तं राश्यादिकास्तेचततोविधाय १
अथध्रुवक्षेपसंस्कारमाह निजध्रुवोनोनिजक्षेपकांकागणजोद्भवांकामिलितःप्रका शः सूर्योदयेतेखचराभवंतिचाल्येष्टकालेप्रविधायनान्यादिति २

में दोदो का अंतर पडताहै जैसें शाक १५७४ चैत्र शुक्ल प्रतिपदि १ रवौ अहर्गणः साध्यते तत्र चक्रं १२ शेषं शून्यं० अहर्गणः ३२ अत्रागतो भौमवारःअपेक्षित स्तु रविवारः एतादृश स्थले अ हर्गणोद्वाभ्यां रहितः सहितो वा कार्यः इतिशिवं॥ अथ सारणीकर्के मध्यम ग्रहोंका साधन कहतेहैं श्रीग्रहलाघव ग्रंथोक्त रीतीसें सिद्धकिया जो अहर्गण तिसकों बुद्धिमानों नेत्रोंह ३० के अंकसें भाग लेणा और जो लब्धहोवे तिसकों फेर बारा १२ सें भागलेणा तिस अहर्गण कों राशी अंशकला रूप करकें विधान करणा तिसराश्यादि अंक ल्यावने का प्रकार एह है प्रथम एकस्थानके अंकों कों टेढी पंक्ति में लिखे और तिसके नीचे दशकादि अंकों को लिखे और तिसके नीचे शताकादि और तिसके नीचे सहस्राकादि अकों को लिखे और तिनकों यथा स्थानप्रति विकलादि अंकों में मिलाय कर जोडदेवे तिसकों राश्यादि वनावें सो दिन गण भवखेट होताहै और ध्रुवक्षेप अकोंका संस्कार कहतेहैं अपनेअपने ध्रुवांकों करकें रहित जो अपनेअपने क्षेपांक जो सारणीके उपरि को ष्टमें वीसचक्रतें लेकर पंचाश चक्रपर्यंत बनाय धरेहै तिनमें इष्टचक्रके अंककों दिनगण भवखेटमें मिलावे तब मध्यम ग्रह सिद्ध होताहै ॥ २ ॥

अथ नूतनमध्यमसूर्यबुधभृगुसाधनम् ॥ खखतग । ७० । लवहीनोद्युत्रजोंकद्गशुक्राःखातिश्रिहतगणोनोलि प्तिकास्वंशकायाः अथ ध्रुवकक्षेपकयोःसंस्कारमाह ॥ दिनगणभत्रखेटश्चक्रनिघ्नध्रुवोनोदिनकृदुदयेरदक्षेपयुक्तमध्यमःस्यादिति । १ । अहर्गणकों दो जगा धरे एकजगामें सत्तर । ७० । सें भागलेकर अंशादि फल अंशकलाविकलारूप तीनस्थानमें स्थितकरे फेर तिसफलकों अहर्गणसेंघटावे फेर अहर्गणकों डेढसउ १५० के अंकसाथ भागलेवे जो फललब्धहोवे तिसकों कला विकलामें घटावेतव अंशादि सूर्य बुध शुक्र होतेहैं फेर चक्रांकके साथगुणित जो ध्रुवांक तिनकों घटावे फेर अपने क्षेपांककों मिलावे तव मध्यम ग्रह होताहै । १ । रवेर्ध्रुवांकः । ० । १ । ४९ । ११ । रवेःक्षेपांकः ११ । १९ । ४१ । ०० । रवेर्मध्यमागतिः ५९ । ८

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१३	११	९	७	६	४	२	००	२८	२६	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२
१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१
२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१९	८	५७	४६	३५	२४	१२

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च	
९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८		क्रां	
१०	८	६	५	३	१	२९	२७	२५	२४	२२	२०	१८	काः	
३२	४२	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	२०	३१	४१		
०२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१५	०४	५३		

रवेर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१९	२९	९	१९	२९	८	१८	२८
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२
८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	४३	०५	२६	४८	१०	३२	५३	१५
१०	२०	३०	४१	५१	०१	१२	२२	३२	४२	२५	०८	५१	३४	१७	०	४३	२५

शत १०० सहस्राणि १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
३	६	९	१	४	७	१०	२	५	८	५	२	११	८
८	१७	२५	४	१२	२१	२९	८	१७	२५	२१	१६	१२	८
३३	७	४०	१४	४८	२१	५५	२८	२	३६	१२	४८	२४	०
३७	१४	५१	२८	५	४२	२०	५७	३४	११	२२	३४	४५	५७
८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	५१	१७	४२	८

अथचंद्रोच्चसाधनम् नव ९ हृतदिनसंघश्चंद्रतुंगलवाद्यं भवतिखनग ७० भक्तयुक्तजोपेतालिप्तः, अहर्गण जो है तिसकों नव ९ के अंकसाथ भागलेवे जो अंशादिकफल आवेसो चद्रमाका उच्चहोताहै फेर दूसरीवार अहर्गणतें सतर ७० के अंकसें जोकलादिकफललेवे तिसफलकों पहले अंशादिचंद्रोच्च में कल्पारथानमेंघटावे फेर चक्रगुणितभुजांककों घटावे और क्षेपांककों मिलावे तव अंशादिचंद्रोच्चहोताहै चंद्रोच्च ध्रुवकः १ २ ४५ ०० चंद्रोच्चक्षेपकः५ १७ ३३ ०० चंद्रोच्चगतिः ६ ४१

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
२	६	९	०	३	६	९	०	३	५	८	११	२	५	८	११	२	५
२२	१९	१७	१४	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१९	१६	१४	११	८	५
३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	चक्राकः
८	११	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	
३	०	२७	२४	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	०	
३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अथचंद्रोच्चसाधनम् एक१ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५	६	७	८	१०
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१
४०	२१	२	४३	२४	५	४५	२६	७	४८	३७	२५	१४	२	५१	३९	२८	१७
५१	४२	३४	२५	१७	८	५९	५१	४२	३४	८	४२	१७	५१	२५	५९	३४	८

शत १०० सहस्राणि १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	७	११	२	६
११	२२	३	१४	२५	६	१७	२९	१०	२१	१२	४	२५	१६
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	४१	२	२३	४४
५	११	१७	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	५४	५१	४८	४५
४२	२५	८	५१	३४	१७	५९	४२	२५	८	१७	२५	३४	४२

अथचंद्रमध्यमसाधनम् गणमनु १४ हतिरिदु स्वाद्रिभूभागहीनं खमनु १४०, हृतगणोनोलिप्तिकास्व अपूर्वा अथचंद्रस्यभुजफलसंस्कारअयनांशसाधनंचाह देयतचरमस्योविलिप्तिकासुमध्येदोर्द्विगुणनवो- द्धृतकलासु भार्तचद्युमणिफलवे स्वेदाष्टयूनं ४४४ खरसहृत शकोनांशा ० अथचंद्रस्यदेशान्तर संस्कारमाह निजनिजपुरेरखान्तरस्थितयोर्ननोधाद्रसलब्धमितलिप्ता- स्वणर्मिदौपरेप्राक् अबचंद्रमाकेम ध्यमसाधनकाप्रकारकहतेहैं अहगणकोंचउदा १४ सेंगुणेदूसरोजगाधरे तिसकोसतारा १७ सेंभाग लेवेलब्धभयाजो अंशादिफल तिसकोंदूसरेस्थानके अहगणमें घटावे फेर अहगणकोएकसउचोलो १४०सेंभागेलब्ध जो कलादिफलतिसको कलास्थानमेंहीनकरे फेरचक्रगुणितध्रुवाककोंघटावै और क्षेपककामिलवितवअंशादिचंद्रमध्यमहोताहै और चंद्रमाकोंदेशान्तरसंस्कारकहतेहैं अपने २ देशसंजित नेयोजनरेखानगरहोवे तिसकेछठे ६ भागतुल्यकलारेखास पश्चिमधनकरे और पूर्वऋणकरे तवदेशा न्तरसंस्कृतचंद्रमाहोताहै चंद्रध्रुवक ०।३।४६।११ चंद्रक्षेपक ११।१९।६।० चंद्रमध्यमागति ७९० । ३५

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३[illegible]
९	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	६
३	२९	२६	२२	१८	१४	११	७	३	२९	२६	२२	१८	१४	१०	७	३	२[illegible]
४२	५६	९	२३	३७	५३	५	१९	३२	४६	०	१४	२८	४७	५५	९	२३	३[illegible]
२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१९	८	५७	४६	३५	२४	१३

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	चं०		
६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	का		
२५	२२	१८	१४	१०	७	०३	२९	२५	२१	१८	१४	१०	का		
५१	४	१८	३१	४६	०	१३	२७	४१	५५	०९	२२	३६			
०२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१२	१	५०			

चंद्रमध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९[illegible]
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	८	१	५	९	२	६	११	३
१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२२	५	१७	२८	१०	२२	४	१
१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	३१	१७	२	४९	३४	२०	६	५
३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	३७	२२	१४	३	५१	४०	२९	१[illegible]
५१	४२	३३	२४	१५	१७	२	५५	४७	३९	१८	५७	३७	१६	५०	३५	१४	५[illegible]

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	[illegible]	६	४	०
२१	२५	२२	२०	१८	१५	१३	११	८	६	१२	१९	२५	१
३८	१६	५४	३२	१०	४८	२६	४	४२	२१	४२	३	२१	४२
६	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	५	१०	१६	२१	२७
३३	६	३३	१३	४३	१६	४९	२३	५६	२९	५९	२३	५३	२८

अथभौममध्यमसाधनम् दिग्घ्नो १० द्विघादिनगणोंककुभि ११ स्त्रिशैलै ७३ भंकःफलांशक लिकावि वरंकुजःस्यादिति अबभौममध्यमसाधने ऋाप्रकारकहतेहै अहर्गणकोंदश १० केअंकसाथगुणे फेरदोस्थानमेंस्थितकरेएकस्थानमेंउन्नी १९ केअकसेंभागलेवे लब्धअंशादिफलकों भिन्नस्थापनकरे उौर दूसरे स्थानमें त्रिहत्र ७३ केअंकसेंभागलेकरकलादिफलाभिन्नस्थापनकरफेरतिनकाआपसमें अतरकोंतव अशादिदिनगणभवभौमहोताहै फेर अंशोंकों तीस ३० केअंकसेंभागलेकर राश्यादिकरे उौर चक्र गुणितध्रुवा ऋकोंघटावे क्षेपाककों मिलायदेवेतवमध्यमहोताहै भौमध्रुवकः ११२५।३२।०० भौमक्षेपकः १०।७।८।००भौमस्योच्चरविःभौमस्यमध्यमागतिः ३१२६

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
९	७	५	३	१	११	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	६	४	२
६	१०	१५	१९	२४	२८	३	७	१२	१६	२१	२५	०	४	९	१३	१७	२२
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	चक्रांकाः
०	११	९	७	५	३	१	११	९	७	५	३	१	
२६	१	५	१०	१४	१९	२३	२८	४	९	१३	१७	२२	
५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३२	०	२८	५६	२४	
०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	

भौममध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	१०	१५	२०	२६	१	६	११	१७
३१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९
२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५०	१५	४०	५	३१	५६	२१	४६
३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५

शतम् १०० सहस्रम् १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
१	३	५	६	८	१०	१	१	३	५	१०	४	९	३
२२	१४	७	२९	२२	१४	६	२९	२१	१४	२८	१२	२६	१०
२४	४८	१२	३६	०	२५	४९	१३	३७	१	३	५	७	९
११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	५५	५२	५०	४८
४५	३१	१७	३	४९	३५	२१	७	५३	३९	११	५९	३९	१९

॥ अथबुधकेंद्रसाधनम् ॥ त्रिघ्नोगणःस्ववसुद्दग्लव २८ युग्व्नशीघ्रकेंद्रंलवाद्यहिगुणा ३८ गणोनालितम् ॥ अबबुधशीघ्रकेंद्रकासाधनकहतेहैं ॥ अहर्गणकों तीन ३ सें गुणे दोस्थानमें स्थितकरे एकस्थानमें अठाईं २८ के अंकसेंभागलेरक अंशादिफल स्थापनकरे ओर दूसरेस्थानमें स्थित अहर्गणमें मिलावे फेर अहर्गणकों अठत्री ३८ केअंकसें भागलेकर कलादिफलकों कलास्थानमें हीनकरे फेर चक्रगुणितध्रुवाककोंघटावे और क्षेपकांककों मिलावे तव अंशादिबुधशीघ्रकेंद्र होताहे ॥ बुधस्यमध्यमोरविः ॥ स्वीयप्रथमाशुकेंद्रउच्चः ॥ बुधस्य ध्रुवकः । ४ । ३ । २७ । ०० ॥ बुधस्यक्षेपकः ८ । २९ । ३३ । ० ॥ बुधस्यमध्यमागतिः ५९ । ८ बुधस्यकेंद्रगतिः १८६ । २४ ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३...
१०	६	२	१०	६	२	९	५	१	९	५	१	९	५	१	८	४	०
२०	१७	१३	१०	६	३	२९	२६	२२	१९	१६	१२	९	५	२	२८	२५	२
३३	६	३९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३०	३	३६	९	४२	१५	४८	२१	५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
८	४	०	८	४	०	७	३	११	७	३	११	७	का
१८	१५	११	८	४	१	२७	२४	२०	१७	१३	१०	७	
२७	०	३३	६	३९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३०	३	काः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

बुधशीघ्रकेंद्रसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	१	२	३	४	५	६	७	८	९
६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६
२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१३	३७	०१	२	४	५	६	८	९	१०	[illegible]
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१३	२१	४२	०३	२४	४६	७	२८	४९	[illegible]

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
१०	८	७	५	३	२	०	१०	९	७	३	१०	६	९
१०	२१	२	१२	२३	४	१४	२५	६	१६	३	२०	६	२३
४०	२०	०	४०	२१	०१	४१	२१	२	४२	२४	६	४९	३१
१३	२१	४०	५४	७	२१	३४	४८	०१	१५	३०	४६	०१	१६
३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	४०	०	२१	४१

॥ अथगुरोर्मध्यमसाधनम् ॥ द्युपिंडोऽर्कभक्तोलब्धोगुरुःस्यात्द्युपिंडात्खशैलैः ७० ऽलिप्ताविहीनः अहर्गणको बारा १२ के अङ्कसे भागलेकर अंशादिफलको सिद्धकरे फेर अहर्गणको सत्तर ७० के अङ्कसे भागलेकर कलादिफलको सिद्धकर्के कलास्थानमें हीनकरे तब अंशादि गुरु होताहै अंशोंमें तीस ३० का भागदेकर राश्यादिबनावे फेर चक्रगुणितध्रुवाकको तिसमें घटायदेवे और क्षेपाकको मिलायदेवे तब राश्यादि गुरु मध्यम होताहै गुरोरुस्बम् ॥ रविःगुरोर्ध्रुवकः । ० । २६ । १८ । ० ॥ गुरोःक्षेपकः ॥ ७ ॥ २ ॥ १६ ॥ ० ॥ गुरोर्मध्यमागतिः ॥ ५ । ०० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
१	०	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	१	०	११	१०
१६	४१	२३	२७	१	४	८	१२	१५	१९	२३	२६	०	४	८	११	१५	१९
१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	८	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
९	८	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	११	क्रा
२२	२६	०	३	७	११	१५	१८	२२	२६	२९	३	७	काः
५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

गुरोर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७
४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	३९	२९	१९	९	५९	४९	३८	२८
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२
८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	५	८	११	१
८	१६	२४	३	११	१९	२८	६	१४	२३	१६	९	२	२५
१८	३७	५५	१४	३२	५१	१०	२८	४७	५	११	१७	२२	२८
३४	८	४२	१७	५१	२५	०	३४	८	४२	२५	८	५१	३४
१७	३४	५१	८	२५	४२	०	१७	३४	५१	४२	३४	२५	१७

॥ अथभृगोःश्रथमाशुकेंद्रसाधन् त्रि ३ ॥ निघ्नाद्युपिंडाद्दिघाक्षैः । ५ किभाज्वै १८१ रवाप्ताशयो गोभृगोराशुकेंद्रम् ॥ अवशुक्रशीघ्रकेंद्रकासाधनकहतेहें ॥ अहर्गणकों, तीन ॥, ३ ॥ से गुणे और दो-स्थानमें स्थितकरे एकस्थानमे पाच , ५ का, भागलेकर अंशादिफल सिद्धकरे और दूसरे स्थानमें एकसउएकाशी १८१ के अकसे, भागलेकर अंशादिफल सिद्धकरे फेर दोनोंका योगकरे तब अंशादि शुक्रहोतहे फेर तीस, ३० से भागलेकर राश्यादिबनावे, फेर चक्रगुणित ध्रुवांकको घटावे फेरक्षेपाककों मिलावे तब शुक्रकाशीघ्रकेंद्र होताहे शुक्रस्यमध्यमोरविः स्वयभृगूच्चः शुक्रध्रुवकः । १ ॥ १४ २। ० ॥ शुक्रस्यक्षेपकः ॥ ७ । २० ११० ॥ भृगोर्मध्यमागतिः ॥ ५९ । ८ ॥ शुक्रस्यकेंद्रगतिः ॥ ३७ । ० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
२	०	११	९	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१
९	२५	११	२०	१३	२९	१५	१	१७	३	१९	५	२१	७	२३	८	२४	१०
२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
११	१०	८	७	६	४	३	१	०	१०	९	७	६	क्रा
२६	१२	२८	१४	०	१६	२	१८	४	२०	६	२२	८	काः
५३	५१	४९	४७	५४	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३०	२९	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

भृगोराशुकेंद्रसाधनम् . एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	१२	१८	२४	०	६	११	१९	२५
३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
५९	५९	५९	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३६	३३	३०
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	९

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	५	१	१०	६
१	३	४	६	[illegible]	९	११	१३	१४	१६	३	१९	६	२२
३१	१८	२८	३७	१०	[illegible]	४६	१५	५०	३३	[illegible]	४३	१७	५२
२६	५३	२०	[illegible]	१४	४१	०	३२	१	[illegible]	०७	२५	५४	[illegible]
५१	४२	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४८	३९	३०	०	३१	५	३३

॥ अथशनेर्मध्यमसाधनम् ॥ स्रग्न्नु ॥ ३० ॥ कृतोदिनगणाच्छमुद्धःशनिःस्यात्पट्ंचभू ॥ १५६ हृत गणात्फललिप्तिकाद्यः ॥ अबशनिमध्यमसाधनकाप्रकारकहतेहै ॥ अहर्गणकोंतीस ॥ ३० ॥ वेअं कें भागलेवे लब्धअंशादिफलकों स्थापनकरे फेर अहर्गणकों एकसउछपुजा ॥ १५६ ॥ के अक सें भागलेवे लब्धकलादिफलकों कलास्थानमें जोडदेवे तव अंशादि शनिहोताहै तीस ॥ ३० ॥ सें भागकर राश्यादि बनावे फेर चक्रकरगुणिनध्रुवाकको घटायदेवे और क्षेपाकको तिसमें जोडदेवे तव राश्यादि मध्यम शनिहोताहै शनेर्ध्रुवांवेः शनेर्ध्रुवकः ॥ ७ ।१५ ।४२।०० । शनेः क्षेपकः ।९ । १५ २१ । ०० ॥ शनेर्मध्यमागतिः ॥ २ । ०० ॥

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	९	८	१	५	१०	२	७
१	१५	२९	१४	२८	१२	२७	११	२५	१०	२४	८	२२	७	२१	५	२०	४
२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७
०	०	०	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	च
११	४	८	१	५	१०	२	६	११	३	[illegible]	००	५	क्रा
१८	३	१७	१	१५	०	१४	२८	१३	२७	११	२६	१०	काः
४५	९	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

शनेर्मध्यमसाधनम् एक १ दश १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	७	११	१५	१९	२३	२६	३०	३४
२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	४१	३२	२३	१३	४	५५	४६	३६

शत १०० सहस्र १०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१७
२०	४१	१	२२	४२	३	२४	४५	५	२६	५२	१९	४५	१२
३८	१६	५५	३३	१२	५०	२९	७	४६	२४	४९	१३	३८	३
२७	५५	२२	५०	१८	४६	१३	४१	९	३६	१३	५०	२७	४

अथराहुसाधनम् ॥ नवकुभि ॥ १९ ॥ f पुवेदै ॥ ४५ घस्रसंघाद्द्विधाप्तात्फललवकलकैवचंरयादगुश्च क्र ॥ १२ ॥ शुद्धः ॥ अवराहुकासाधनकहतेहैं अहर्गणकों दो स्थानामें धरके एकजगा उन्नी १९ के अंकसें भागलेकर अंशादिफल स्थापनकरे और दूसरेस्थानके अहर्गणकों पंचताली ॥ ४५ ॥ के अंकसों भागलेकर,कलादिफलकों कलास्थानमें जोडे फेर अंशोंकों तीस ॥ ३० ॥ काभागदे कर राश्यादिकरे फेर बारां ॥ १२ ॥ राशीमें घटायदेवे तव दिनगणसें उत्पन्न राहु होताहै फेर चक्र-करगुणित ध्रुवांककों तिसमेंघटावे और क्षेपांककों मिलावे तव राहु होताहै राहोर्ध्रुवकः ७ २ ५० ०० ०० राहोः क्षेपकः ॥ २७ ३८ ॥ राहोर्गतिः ॥ ३ ॥ ११ ॥

२०	२९	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
२	[illegible]	०	५	१०	३	८	१	६	११	४	८	१	६	११	४	९	२
०	२९	२५	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	२९	२६	२४	२१	१८	१५	१२
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	२८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	चक्रांकाः
७	०	५	१०	२	७	०	५	१०	३	८	१	६	
९	१०	४	१	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

राहुसाधनम् एक१ दश१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२८	३८	२७	२७	२६	२६	२५	२५
५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८	५६	२४	५२	२०	४९	१७	४५	१३
२९	३८	२७	१६	५	५५	४४	३३	२२	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७
११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	५१	४७	४३	३८	३४	३०	२६	२२

शत१०० सहस्र१०००

१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	२०००	३०००	४०००	५०००
११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	८	६	[illegible]	३
२४	१३	१४	८	३	२८	२२	१७	१२	६	१३	२०	२७	४
४१	२३	५	४७	२९	११	५३	३५	१७	५९	५९	५९	५९	५९
५९	५८	५७	५७	५६	५५	५५	५४	५३	५२	४५	३८	३१	२४
१७	३५	५३	११	२९	४७	५	२३	४१	५८	५७	५६	५५	५४

अवमूलककेंसूर्यस्पष्टकर्त्तेहै प्रथमभुजकोटिपदज्ञानकहतेहैं तीनराशीसें हीनभुज होताहै और तीनराशी- सें अधिक ग्रह होवे तब छे ६ में घटायकर भुज होताहै और नओराशी ९ सें अधिक ग्रह होवेतब बारा ॥ १२ ॥ राशिमें घटायकर भुज होताहे और भुजकर्के हीन जो तीनराशी उसकी कोटीसंज्ञा कहिहै और तीन ॥ ३ ॥ राशीकी एकपदसंज्ञाकहिहैं और दोराशी अठारां अंशसूर्यका मंदोच्चकहा है २। १८। ०० अवचरबनावनाकहतेहे सायनसूर्यका भुजबनावे तिसभुजकेराशीके तुल्य चरखंडेकायो गकरे और अंशादिकोंकी भोग्यखंडेके साथगुणदेवे फेर तीस ३० का भागलेकर भुक्तखंडेमें जोडे तब चर पल होतेहै सो चरतुलासें छे ६ राशीपर्यंत सूर्यमें धन देवे और मेपसें छे ६ राशी पर्यं- त ऋण देवे ओर सायकालमे उलटादेवे धनका ऋण और ऋणका धन २ अवसूर्यकामदफलसा धतेहैं मंदोच्चमें ग्रहघटावे तिसकीमंद केंद्रसज्ञाकहिहै सूर्यका जो मदकेंद्र तिसका भुजबनावे फेर भुज-

अथमूलेनसूर्यस्पष्टीकरणम् तत्रभुजकोटिपदानांज्ञानमाह दोस्त्रिभोनंत्रिभोर्द्ध्वं विशोध्यंरसैश्चक्रतो ॥ १२ ॥ काधिकंस्याद्भुजोनंत्रिभम् कोटिरेकैकर्कत्रित्रिभैः स्यात्पदंसूर्यमंदोच्चमष्टाद्रयोंशाभवेत् ॥ १ ॥ अथचरसाधनंतत्संस्कारंचाह स्यात्सायनोष्णांशुभजर्क्षसंख्याचरार्द्धयोगोलवभोग्यघातात् खाग्न्याप्तयुक्त स्तुचरधनंर्णतुलाजषट्केतपतेन्यथास्ते ॥ २ ॥ अथकेंद्रज्ञानंमंदफलसाधनं फल संस्कारंचाह मंदोच्चग्रहवर्जितंनिगदितंकेंद्रंतदाख्यंबुधैः केंद्रेस्यात्स्वमृणंफ लंक्रियतुलाद्येथोविधेयंरवेः केंद्रेतद्भुजभागखेचर ९ लवोनघ्नानग्वा ॥ २० ॥ स्तेपृथकृतद्घ्नांशो ॥ ९ ॥ ननगेपुभि ॥ ५७ ॥ परिहृतस्तेंशादिकंस्यात्फलम् ३ अथचंद्रस्पष्टीकरणम् ॥ तत्रफलत्रयसंस्कृतचंद्रसाधनमाह ॥ स्वस्वदेशाद्यदा रेखायोजनानांतदंतरात् ॥ षडाप्तंप्रदद्याच्चंद्रेकलास्वर्णपरेपुरे ॥ १ ॥ भार्त २७ द्युमणिफलंचंद्रेसूर्यवांशेष्वत चरद्वि २ घ्नगो ९ हृतदेयंकलासुतत्फलत्रयम् २

के अंशबनावे अंशोका नवमभागलेकर तिससे वीस २० के अककों ऊनकरे और तिसीके सा थ फेर गुणदेवे गुणितांक कों दूसरे स्थानमेंधरे एकजगामें तिसके नवमांशकर ऊन जो सतुजा ५७ तिनकरके दूसरीजगाके अककों भागे जो लब्धआवे सो अंशादि सूर्यका मदफल कहाहै ३ ॥ अवचंद्रस्पष्टकरणेकाप्रकारकहतेहै तिसमे प्रथम त्रिफलसंस्कृतचंद्रमा कहतेहैं अपनेअपनेदेशसें मध्यरेखा जितनेयोजन होवे तिनकाछेसें भागलेकर जो लब्धहोवे सो कलारूपजान तिनको रेखासेपश्चिमदेशोमें धन और पूर्वदेशोमेंऋण मध्यमचंद्रमामें करे १ और सूर्यका जो मंदफलतिसकोंसत्ताई २७ सें भागलेवे जो फलआवेसो सूर्यकीन्याईधनऋणमध्यमचंद्रमामअंशोमें देवे और चरपलकों द्विगुणकरे और नव ९ सेंभागलेकर लब्ध यो फल तिसकों मध्यमचंद्रमामें कलारथानमेमिलावे तब त्रिफलसंस्कृतचंद्र

मा होताहै ॥ २ ॥ अवचंद्रमाकामंदफलसिद्धकरतेहैं चंद्रमाकों अपने उच्चमें घटायकर केंद्रसिद्धकरे और केंद्रके भुजांशा बनावे और तिनोंका षष्ठांशलेवे तिसकर्के तीस ३० के अंककों ऊनकर्के तिसोंके साथगुणे तिसकों दूसरे स्थानधरके फेर तिनका वीसमां २० भागलेवे तिसकर्के छपुंजा ५६ के अंककों हीनकरे और तिसकर्के दूसरे स्थानके अंककों भागे जो लब्धहोवे सो अंशादि चंद्रमाका मंदफल होताहै तिसकर्के त्रिफलचंद्रमा संस्कृत स्पष्टहोताहै ॥ ३ ॥ अवसूर्यचंद्रमाकीगतिस्पष्टकरते हैं केंद्रकी कोटीबनाय कर अंशबनावे और तिसका वीसमां२०भागलेवे तिसकर्के ग्यारांकेअंककों ऊननिघ्नकरे और सूर्यकीगतिका फलसिद्धकरणेमें तेरांसें १३भागे और चंद्रमाकों द्विगुणकर्केअपनेष ष्ठांशकरयुक्तकरे सो गतिफल कर्कादिकेंद्रमेंधन मकरादिकेंद्रमें ऋण मध्यमगतिमें करे तब सूर्यचंद्र माकी स्पष्टगती होतीहै ॥ ४ ॥ अवमूलकर्केभौमादिग्रहोंकास्पष्टकरणाकहतेहैं ॥ मंगल शनिः वृह

॥ २ ॥ अथचंद्रस्यमंदफलसाधनम् ॥ विधोःकेंद्रदोर्भागषष्ठोद्दननिघ्नःखरामा ३०पृथक्तन्नखां२०शोनितैश्च ॥ रसाक्षै५६र्हतास्तेलवाद्यंफलंस्याद्रवींदुस्फुटौ संस्कृतौस्तश्चताभ्याम् ॥ ३ ॥ अथरवींदोर्गतिस्पष्टीकरणम् ॥ केंद्रस्यकोटि लवखाश्वि २०लवोननिघ्नारुद्रा ११ रवेस्त्रिकु १३ हताःशशिनोद्वि २ निघ्नाः स्वांगां ६ शकेनसहिताश्चगतौधनर्णं केंद्रेकुलीरमृगषड्भगतेस्फुटास्यात् ४ ॥ अथमूलेनभौमादिस्पष्टीकरणम् भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्यादा शुकेंद्रंतुवित्भृग्वोरुक्तमिदंरसेध्विभनभाच्छुद्धंतदंशादिनै१५भक्तःखादिफलक्र मादिहगतांकोसौक्षयद्वयोहताच्छेषाद्बाणकु१५लब्धहीनयुगयंदिग्ह१०ल्लवाद्यं फलम् ॥ १ ॥ मृदुकेंद्रभुजांशकादिना१५ताःफलमंकःप्रगतस्तदूनितैष्यात् ॥ परशेषहतादिना १५ तयुक्तोदश१०भक्तःफलमंशकादिमांदम् ॥ २ ॥

स्पतिःइनोंकोमध्यमसूर्यमें घटायदेवेतब इनके शीघ्रकेंद्र होतेहै और बुध शुक्रकाशीघ्रकेंद्र अहर्गणसे उत्पन्नकियाहैसो शीघ्रकेंद्र छैराशीसे अधिकहोवे तववारांराशीमें घटायदेवे और तिसके अंश बनावे अंशोंकों पंद्रां १५ सेंभागे शून्यादिजो अंकलब्धआवे सो गतांक होताहै गतांककेनीचे जो अंकहै तिसकों भिन्नस्थानमें धरे और अंतरसें कलादियोंकों गुणे फेर तिसकोंपंद्रांका भागदेवे जो धन ऋण फलआवे सो गतांकके फलमेंधन और ऋणकरे फेर तिसकों दश १० सें भागलेवे तब अंशादिफल होताहै ॥ १ ॥ फेर मंदकेंद्रके भुजांशबनायकर पंद्रांसें १५ भागलेवे जो शून्यादिफल आवे तिस अंकके नीचे चक्रमें जो फलहै सो भिन्नस्थानमें धरे और अंतरसें कलादिगुणे और पंद्रां १५ सेंभाग लेकर गतांकके फलमेंजो हदेवे फेर दश १० सेंभागलेवे तब अंशादि मंदफल होताहै ॥ २ ॥

भौमादियोंकेमंदकेंद्रऔर फलसंस्कारविधिकहतेहै मंगलसें लेकर पाचताराग्रहोंके ४ । ७ । ६ । ३ । ८ राशियामंदकेंद्रकहाहै ॥ प्रथममध्यमग्रहमें चरफलकाअर्धकेंद्रवशसें धन ऋण देवे और पीछेसें अर्धफल सस्पष्टग्रहमें मंदफल संपूर्णदेवे और पूर्व जो शीघ्रकेंद्रतिसमें मंदफलविपरीतदेवे तव द्वितीयशीघ्रकेंद्र होताहैऔर तिससेंशीघ्रफलसिद्धकर्के सपूर्णमंदस्पष्टग्रहमें केंद्रवसमें धनऋणदेवे तव स्पष्टग्रहहोताहै ३॥

अथभौमादीनांमंदकेंद्राणि ॥ शुद्धोऽब्ध्यद्रिषडग्निनागग्रहतःस्यान्मंदकेंद्रंकुजात् ॥ प्राङ्मध्येचरफलस्यदलंप्रदध्यात्तस्माच्चमांदमखिलंविदधीतमध्ये द्राक्केंद्रकेपिचविलोममतश्चशीघ्रम् सर्वंचतत्रविदधीतभवेत्स्फुटोसौ ॥ ३ ॥

अथगतिसाधनमादाकांतरमाकर्यसृग्गुरूणाभकवाणनगैः ७५ शरैः ५ खरामैः ३० विद्भृगोर्हि २ हतशरो ५ द्धृतंतद्दृत्वाप्राग्वदितौमृदुस्फुटासा ४ भौमाच्चलाङ्कविवरंशर ५ हृत्स्ववाणा ५ ष्टाढचंन्नि ३ हृत्स्त

(भौमादीनांशीघ्रफलकोष्ठक)

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
म	०	५८	११७	१७४	२२८	२७९	३२४	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
अंतर	५८	५९	५७	५४	५१	४६	४०	२८	७	ऋ०	३२	११९	२४९
बु	०	४१	८१	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	००
अंतर	४१	४०	३६	३३	२८	२१	१३	००	ऋ०	१७	४०	६६	८९
व	०	२५	४७	६८	८५	९८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	००
अंतर	२५	२२	२१	१७	१३	८	२	ऋ०	६	१३	२३	३०	३६
शु	०	६३	१२६	१८६	२४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	००
अंतर	६३	६३	६०	६०	५६	५२	४८	३८	२१	ऋ०	१८	११७	३२६
श	०	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	००
अंतर	१५	१३	११	९	६	३	०	ऋ०	४	८	१२	१५	१८

(भौमादीनांमंदफलकोष्ठक)

	०	१	२	३	४	५	६
म	०	२९	५७	८७	१०९	१२४	१३०
अंतर	२९	२८	२८	२४	१५	६	०
बु	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६
अंतर	१२	९	७	५	२	१	०
बृ	०	१४	२७	३९	४८	५५	५७
अंतर	१४	१३	१२	९	७	२	०
शु	०	६	११	१३	१४	१५	१५
अंतर	६	५	२	१	१	०	०
श	०	१९	४०	६०	७७	८९	९३
अंतर	१९	२१	२०	१७	१२	४	०

४ हृतंद्विहृता २ क्षभक्तम् तद्धीनयुक्क्षयचयेचमृदुस्फुटास्यात् स्पष्टाथचेद्दहुऋणात्पतिताचवक्रा ५ कुज बुधभृगुजानांचेचलाकोंत्यमःस्याद्दश १० हृतपरिशेषाशानगा ७ ग्र ७ ग्नि ३ भक्ताः फलमिषुदहने ३५ युक्सप्तगोभि १७ ख्रिवाणै ५३ र्भवतिगतिफलंतत्स्यात्तदाने वपूर्वम् अथभाषाकर्केभोमादिग्रहो कीगतिसिद्धकर्तेहे शनि मंगल वृहस्पतिके मंदफलसाधनमें जो अंशोके अंतरहै तिसको क्रमसेंतीन ३ जगाधरे एकस्थानमें पचत्तर ७५ सें दूसरे में पाच ५ सें तीसरे मे तीस ३० सें भागलेवे और जो कलादिफलआवे सोक्रमसें शनि भौम गुरुकामदगति फलकहाहै और बुधशुक्रकेमादाकांतरकों दो २ सेंगुणे और पांच ५ सें भागलेवे जो लब्धआवे सो बुधशुक्रका मदगतिफलहोताहै तिसकों मध्यमगतीम कर्कादि केंद्रमें धन और मकरादिकेंद्रमें ऋणकरे तव मंदस्पष्टा गतिहोतीहै ४ और भौ

मादियोंका अतिमशीघ्रफलसाधनमें शीघ्राशातरहै तिनमें भौमके अतरकों पाच ५ सें भागे और बुध के अतरकों अपनें पंचमाशसें युक्तकरे और बृहस्पतिके अंतरकों तीन ३ से भागे और शुक्रके अतर कों चार ४ सें भागे और शनिके अतरकों द्विगुणकर्के पाचसें भागलेवे जोलब्धआवे सो क्रमसें भौमादिग्रहोंकी गतियोंका शीघ्रफलहोताहै तिसकों मंदस्पष्टगति में चलाकके अधिकहोया धनकरे और हीनहोयाऋणकरे और ऋणफल अधिकहोने सें ग्रहवक्री होताहै ५ ॥

अवसूर्यादियोंकेउच्चकहतेहें दोराशीअठाराअश २ । १८ । ० । ० सूर्यका उच्चकहाहै और चद्रमा का उच्च अहर्गणसें सिद्धकियाहै और बुधशुक्रका उच्च भी अहर्गणसें कहाहै और मगल बृहस्पति शनि इनका उच्च मध्यम सूर्य होताहै १ अबसारणीसेंसूर्यचद्रस्पष्टकरणेकहतेहै मदोच्चसें घटाया जो

अथसूर्यादीनामुच्चमाह व्यर्काशोच्चंत्रि ३ भा २ । १८ । ० । ० त्सूर्यश्चंद्रस्य गणजस्तथा ज्ञभृग्वोर्गणजौकेंद्रौशेषाणामुच्चस्याद्रविः १ अथरवींदोःस्पष्टीकरणम् मंदोच्चात्छोधितः सूर्योमृदुकेंद्रस्तदुच्यते तद्भुजांशमिति.कोष्टात्फलंग्राह्यं लवादिकं २ गुण्यांतरेणलिप्तानांरवपड्भक्तं फलंयुतं तत्फलंमध्यमेस्वर्णकेंद्रेमेषतुलादिके ३ अथचद्रस्पष्टीकरणम् आदौफलत्रयसंस्कृतचंद्रसाधनंपूर्वमुक्तम् अथमंदफलसाधनम् मंदकेंद्रस्यदोर्भागात्तंमृदुफलंददेत् फलत्रिसंस्कृतेकेंद्रवशाच्चंद्रस्फुटंस्मृतम् ४ अथगतिसाधनं ऊर्धस्थांशमितिकोष्टंतस्याधोंशादिकं फलम् तस्याधोगतिफलंज्ञेयंसारिण्यांसाबुधैःस्मृतम् ५ स्वर्णंगतिफलंकार्यंगतौमध्यस्फुटाचसा केंद्रेकर्कमृगेपड्भे ६ रवींदोस्तेगतीस्फुटे ॥ ६ ॥

सूर्यहै सो मंदकेद्र होताहै और तिसके भुजाशाकरे तिनोंअशोके तुल्य नीचे मदफलसारणीमे लिखा है और आगेके अंकसें अतरलेकर कलादिगुणदेवे साठ ६० सें भागलेकर अशादिफलमें मिलावे सो फल मध्यमसूर्यमें मेषादि केंद्रमें धन और तुलादि केंद्रमें ऋणदेवे और चरदेवे तब स्पष्टसूर्य होताहै३ अबचद्रस्पष्टकहतेहैं पूर्व कहाजो त्रिफलसंस्कृतचंद्रमातिसकोंउच्चमें घटावे तब मदकेंद्र होता है तिसके भुजाशाकरे तिनके तुल्यकोष्टका फल सूर्यकी न्याई सिद्धकरे और तिसअंशादिफलकों त्रिफलसस्कृतचद्रमामें केंद्रवशसें धनऋण करे तब स्पष्ट चद्रमा होताहै४अबगतिस्पष्टकरतेहैं जिसकोष्टका मदफललिया तिसीके नीचे गति फल लिखाहै सारणीमे तिसफलकों मध्यमगतिमें कर्कादिकेंद्रमें धन और मकरादिकेंद्रमें ऋणकरे तब स्पष्टागति होतीहै

अवभौमादिग्रहोंकास्पष्टसारणीसेंसाधनकहतेहैं प्रथमग्रहकों अपनेंउच्चमें घटावे जब उच्चसेंघटाए पीछें-छराशीसे अधिकरहे तब चक्रमें बारांराशीमें तिसकों शोधे फेर तिसके अंश बनावे तिनों अंशोकी संख्याककें जोकोष्ठहे तिसका अंशादिफल एकजगा स्थापनकरे ओर दूसरे कोष्टका जो अंतर तिससें कलाविकलाकों गुणे साठ ॥ ६० ॥ सें भागलेकर अंशादिफलमें मिलावे फेर तिसफलकों अर्धककें धरे फेर मेषादिकेंद्रहोवे तब ग्रहमें धनकरे ओर तुलादिकेंद्रमें ऋणकरे इसीप्रकार प्रथममध्यम ग्रहमें शीघ्रफलार्ध देवे फेर मंदफलसाधनककें संपूर्ण देवे तब मंदस्पष्ट ग्रह होताहै ओर मंदफल जैसे मध्यमग्रहमें दियाहोवे तिससें उलटा शीघ्रकेंद्रमें देवे तब द्वितीय शीघ्रकेंद्र स्पष्टहोताहै ओर दूसरे शीघ्रकें द्रसें शीघ्रफलसाधनककें संपूर्णफल मंदस्पष्टग्रहमें चयकोष्टमें धन ओर क्षयकोष्टमें ऋणदेवे तब स्पष्टग्रह होताहै ॥ ८ ॥ अवभौमादियोंकीगतिस्पष्टकहतेहे कोष्टके नीचे लिखा जो गतिफल तिसकों प्रथममंदफलके कोष्टमेंगतिफल मध्यमगतिमें कर्कादिकेंद्रमें धन ओर मकरादिकेंद्रमें ऋणदेवे तब मंदस्पष्टगति होतीहै १ ओर दूसरे शीघ्रकेंद्रके कोष्टसें गतिफललेकर मंदस्पष्टगतिमें अग्रि-

अथभौमादिस्पष्टीकरणम् ग्रहोनमुच्चात्वरितंविधेयंरसा ६ धिकेभैरवि १२ तेविशोध्यम् तदंशसंख्यागतकोष्टकंफलं कलादिशेषंपविवरेणानिघ्नम् ॥ ७ ॥ षष्ठ्य ६० धृतंभोग्यकहानिवृद्ध्यास्वर्णंग्रहकेंद्रवशात्फलंच आदौचरार्द्धंप्रविधायपश्चान्मांद्यंचसर्वंविदधीतमध्ये ॥ ८ ॥ अथभौमादिनांगतिसाधनम् मंदगतिफलंचादौगतौदेयंमृदुस्फुटा भवत्याशुगतेर्लब्धंदेयंकोष्टवशात्स्फुटम् ९ वक्रखेटगतिर्व्यस्तादेयाचायन्नशुध्यति पूर्वस्पष्टागतिः शोध्यातदाधिक्याद्दणात्मकात् ॥ १० ॥ अथक्वचित्स्थलेभृगुभौमयोः संस्कारविशेषः शुक्रारयोश्चल भवोत्यगतोयदांकः शेषांशकाश्चपतिताः पृथगक्षभू ॥ १५ ॥ भ्यः येल्पाभूभौ स्त्रि ३ विहता असृजोक्ष ५ भक्ता देयाः स्वशीघ्रफलवत्स्फुटयोः स्फुटौस्तः १

मचयकोष्टमें धन ओर क्षयकोष्टमें ऋणदेवे तब भोमादियोंकी स्पष्टगति होतीहै वक्रीग्रहकी गतिउलटी जब मदस्पष्टगतिमें घटजावे तब सो ग्रह उलटा चलताहै तिसीकों वक्री कहतेहे ॥ १० ॥ अथशुक्रभौममेंविशेषसंस्कारकहतेहे शुक्र भोमके दूसरे शीघ्रफलसाधनमे शीघ्रकेंद्रके भुजांश पंद्रा ॥ १५ ॥ सें भागलियेसें अग्यगतखंड प्राप्तहोवे अर्थात् एकसओरपेंहट ॥ १६५ ॥ सें अधिकहोवे तब इससंस्कारकों वी करे प्रथमशीघ्रफल सिद्धकरलेवे ओर फेर जब शुक्र मगलका शीघ्रका गतांक यारमा ॥ ११ ॥ आवे तब शेषबाकीरहे जो अंशादि तिनकों भिन्नस्थानमें धरके पद्रा ॥ १५ ॥ के अंकमें घटायदेवे ओर घटाए पीछे जो अंशादि थोडेहोवे तिनका फलसिद्धकरे सो कहतेहे जो शुक्रके अंशादिहैं तब तिनकों तीनसें भागकर अंशादिफललेवे ओर जब भौमके अंशादिहोवे तब तिनकों पांच ॥ ५ ॥ सें भागकर अंशादिफललेवे सो फल पूर्वस्पष्टभया जो ग्रह तिसमें पूर्वकीन्याई धनऋण करे तब शुक्र भौम स्पष्ट होतेहैं ॥ १ ॥

रवेर्मंदफलसारणीयम् ॥ रवेर्मंदोच्चराश्यादि ॥ २।१८।७।०॥ रवेर्मध्यमागतिःकलादिः ॥ ५९।८

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अं०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कं०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२९	३१	३४
वि०	२०	४०	५९	१८	३६	५५	१२	२९	४६	२	१७	३२	४६	५९	१२
अंतर	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२।२०	२६	१९	१९	१८	१९	१७	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१३	११
गफ	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०।०	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	१०	९	९	८	७	७	६	५
को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
क-	३६	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५
वि-	२३	३५	४५	५४	३	११	१७	२२	२८	३२	३४	३६	३७	३६	३४
अंतर	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१
	१२	१०	९	९	८	६	५	६	४	३	३	१	५९	५८	५७
गति	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फ-	४	३	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५१	५०
को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कं	६	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२
वि.	३१	२७	२०	१५	७	५८	४७	३५	२१	६	५०	३१	१२	५०	२७
अंत	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
र-	५६	५५	५३	५२	५१	४९	४८	४६	४५	४४	४१	४१	३८	३७	३६
ग.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ति	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४२	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३२	३०
को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कं-	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	४५	४७	४८	४९	५०	५२	५३
वि-	३	२७	९	३९	८	३४	५९	२२	४४	३	३०	३६	४३	३	१०
अंतर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	३४	३२	३०	२९	२६	२५	२३	२२	१९	१७	१६	१३	१२	९	८
ग	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फ-	२९	२७	२६	२४	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१३	१०	९	७	५

को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
श्र	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क०	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	२	३	४	५	५	६
वि	१८	२३	२६	२७	२६	२३	१८	११	१	४९	३५	१९	०	३९	१६
अंत	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
र-	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४१	३९	३७	३४
ग-	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ति	३	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	३९	३७	३५

को-	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क-	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वि-	५०	२२	५२	२०	४५	७	२८	४६	१	१४	२५	३४	४०	४३	४५
अंत	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
र-	३३	३०	२८	२५	२२	२१	१८	१५	१३	११	९	६	३	२	०
ग-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
फ	३३	३१	२८	२६	२४	२१	१९	१७	१४	१२	१०	७	५	२	०

चंद्रस्यमंदफलसारणीयम् ॥ चंद्रस्यमध्यमागतिःकलादिः ॥ ७९० । ३५ ॥

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श्र०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
क०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५८	३	८	१३	१८
वि०	२०	४१	०	१९	३७	५३	९	२४	४०	५१	०	९	१७	२३	२८
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५।२-	२१	१९	१९	१८	१६	१६	१५	१३	११	९	९	८	६	५	३
ग-	६७	६७	६७	६७	६६	६६	६६	६५	६५	६५	६४	६४	६४	६३	६३
फ-	५८	४४	२८	१२	५५	३७	१८	५९	३८	२०	५६	३५	१२	४९	२५

को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
श्रं-	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
क-	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	२	७	१२	१६	२१	२६	३०
वि-	३१	३३	३३	३१	२६	२०	१२	२	५०	३५	१८	५८	३६	१२	४५
अंत	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
र-	२	०	५८	५५	५४	५२	५०	४८	४५	४३	४०	३८	३६	३३	३०
ग०	६३	६२	६२	६१	६१	६०	६०	५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६
फ-	०	३४	८	४०	१५	४४	१६	४६	१६	४५	१३	४०	७	३२	०

को॰	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं॰	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
क॰	३५	३९	४४	४८	५२	५७	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३२
वि॰	१५	४२	७	२८	४७	२	१५	२४	३०	३२	३२	२७	१९	८	५२
अंतर	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३
	२७	२५	२१	१९	१५	१३	९	६	२	०	५५	५२	४९	४४	४१
गफ	५५	५४	५४	५३	५२	५२	५१	५०	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५
००	२२	४७	१०	३३	५५	१६	३६	५६	१४	३५	५०	०८	२४	४०	५५
को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
क-	३६	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२०
वि-	३३	१०	४३	१२	३८	५८	१५	२८	३६	४०	३९	३४	२५	११	५२
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२
	३७	३३	२९	२६	२०	१७	१३	८	४	५९	५५	५१	४६	४१	३६
गति	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५	३४	३३
फ-	९	२२	३५	४६	०	८	१९	२८	३७	४५	५२	५८	४	८	१५
को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
कं-	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	४९	५१
वि.	२८	०	२७	४९	६	१८	५०	२७	२४	१५	२	४३	१९	५०	१५
अंत	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१
र-	३२	२७	२२	१७	१२	७	२	५७	५१	४७	४१	३६	३१	२५	२०
ग.	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१७
ति	१६	२०	२२	२४	२५	२५	२४	२३	२०	२०	१४	११	६	१	५५
को-	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं-	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
क-	५२	५३	५४	५६	५७	५७	५८	५९	०	०	०	१	१	१	१
वि-	३५	५०	५९	३	१	५३	४१	२३	०	३०	५५	१५	२९	३७	४०
अंतर	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	९	४	५८	५२	४८	४२	३७	३०	२५	२०	१४	८	३	०
ग.	१६	१५	१४	१३	१२	११	९	८	७	६	५	३	२	१	०
फ-	४८	४०	३२	२२	१५	२	५०	४०	२८	१५	१	४६	३१	१४	०

भौमस्यशीघ्रफलसाधनम् ॥ भौमस्यपूर्वोदयकेंद्रम् ॥ । ० । २८ । ० । ० । भौमवक्रकेंद्र ॥ ५।१३।०।० ॥ भौममार्गिकेंद्रं ६।१७।०।० ॥ भौमपश्चिमास्तकेंद्रं ११।२।०।० ॥

ध.	को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अ	०	०	०	•	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
न्त	२३	•	२३	४६	९	३२	५६	१९	४२	५	२८	५२	१५	३८	१	२४	४८
र	१२	•	१२	२४	३६	४८	•	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ध-	ग	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
	फ	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४३	४४	४५	४६	४७	४७
	को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	ध-•	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	
	२३	११	३५	५८	२२	४६	९	३३	५६	२०	४४	७	३१	५४	१८	४२	
	३६	३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	••	
	गफ-	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	
	ध-	४८	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३८	३५	३४	३२	३१	२९	२८	२६	
	को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	
ध,	२२	४	२७	•५	१३	३६	५८	२१	४४	७	३०	५२	१५	३८	१	२४	
	४८	४८	३६	२४	१२	•	४८	३६	२४	१२	•	४८	३६	२४	१२	•	
ध.	ग-	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	
	फ-	२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	•	५८	५५	५३	५१	
	को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	• ध-	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२२	
	२१	४५	७	२८	५०	१२	३३	५५	१६	३८	०	२१	४१	४	२६	४८	
	३६	३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	•	३६	१२	४८	२४	•	
	ग-	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
	फ-ध-	४८	४६	४४	४१	३९	३७	३४	३१	२९	२६	२४	२२	१९	१७	१५	
	को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	
	०	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	
ध,	२०	८	२८	४९	९	३०	५०	१०	३१	५१	१२	३२	५२	१३	३३	५४	
	२४	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	
	ग.	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	
	फ ध-	१२	८	४	•	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	

को॰	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
०घ-	२८	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२
१८	१२	३०	४१	७	२६	४४	२	२१	३९	५८	१६	३४	५३	११	३०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
घ-	१२	७	२	५७	५३	४८	४३	३८	३३	२९	२४	१९	१४	९	५

भौमपूर्वोदयःशीघ्रफलसाधनम् ॥ ०।२८।०।० ॥ भौमवक्रकेंद्रम् ॥ ५।१३।०।० मार्गीकेंद्रम ६।१७।०।० ॥ पश्चिमास्तकेंद्रम् ॥ ११।२।०।० ॥ भौममध्यमागतिः ॥ ३१।२६ ॥

को॰	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
०घ-	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६
१६	४६	२	१८	३४	५०	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	८	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६	५	५
घ-	०	५१	४१	३२	२२	१३	३	५४	४४	३५	२५	१६	६	५७	४७

को॰	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
०घ	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
११	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	५	५	५	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	१	१
घ-	३६	११	२	४५	२८	१२	५५	३८	२१	४	४६	३१	१४	५७	४०

को॰	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
०घ.	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
२	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०	४३	४६	४८	५१	५४	५७	०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६
घ.	२४	४४	[illegible]	२४	४४	४	२४	४४	४	२४	४४	४	२४	४४	४

को॰	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
०ऋ-	३९	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३७	३७	३६
१२	४७	३४	२१	८	५६	४३	३०	१७	४	५२	३९	२६	१३	०	४८
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२
ऋ-	२४	३३	४३	५२	२	११	२१	३१	४१	५०	०	९	१९	२६	३८

कौ	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
० ऋ	२६	२५	२४	२३	२२	२२	२१	२०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४
४७	०	१२	२५	२७	५०	०२	१४	२७	३९	५२	४	१६	२९	४१	५४
२६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३३	३४	३५
ऋ	४८	३८	२९	१९	१०	०	५१	४१	३२	२२	१३	३	५४	४४	३५
कौ-	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
१ऋ-	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१३	११	९	८	६	४	३	१	०
२९	१४	३४	५५	१५	३६	५६	१६	३७	५७	१८	३८	५८	१९	३९	०
२६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	३६	३७	३९	४०	४२	४३	४५	४६	४७	४९	५०	५२	५३	५५	५६
ऋ-	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५

अंतिमशीघ्रफलसाधनेशीघ्रकेंद्रभुजाशाःपंचपष्ठिशतेभ्यअधिकास्तदाशुक्रारयोरित्युक्तफलंपुनर्देयम् भौमस्यमंदफलसाधनम् भौमस्यमंदोच्चम् ॥ ४।०।०।० भौमस्योच्चरविःभौमस्य मध्यमागतिः०३१।२६

कौ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध अ०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
११।०	११	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४
२६।०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
ग- ५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
घ-४८	४८	४७	४६	४६	४५	४४	४३	४३	४२	४१	४०	३९	३९	३८	३७
कौ-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अतर	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५
ध-११	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग-	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
फ-ध-	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६
कौ	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अतर	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
ध-११	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	३०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४
फध-	३६	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	८	४	१	५८	५५	५२

कों०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९-	२९	४१	५८	८	१८	२७	३६	४६	५६	६	१५	२५	३४	४४	५४
२६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३
ध-	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५८	५१	४४	३७	३०	२२	१५	८

कों०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अंतर	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
६८-	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
ध-	०	५३	४६	३९	३१	२४	१७	१०	२	५५	४८	४१	३३	२६	१९

कों०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३
२४	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१२	७	२	५७	५२	४७	४१	३६	३१	२६	२१	१६	१०	५	०

बुधशीघ्रफलसाधनम् ॥ बुधस्पष्टक्रम रवि० ॥ मध्यभागतः ५३.८ ॥ बुधकेन्द्रगतिः १८६ । २४
पञ्चमोऽपः ॥ १ ॥ २० ॥ ०० ॥ वक्रकेन्द्र ॥ ४ ॥ २५ ॥ ० ॥ ० ॥

कों०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंश० ०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
१६ ०	१२	३२	४३	५	२२	३८	५४	११	२०	४४	०	१६	३३	४९	६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
ग ४९	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
ध-१२	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	४

कों०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश०	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८
१२	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३
ध-	०	४१	२२	३	४४	२४	५	४६	२७	८	४८	२३	१०	५१	३२

को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं०	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
ध-१४	२०	३४	४९	३	१८	३२	४६	१	१५	३०	४४	५८	१३	२७	४२
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	४३	४३	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४१	४०	४०	४०	४०	३९
ध-	१२	५८	४३	२९	१५	०	४६	३१	१७	३	४८	३४	१९	५	५१

को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं-रे-	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५
१३	५५	८	२१	३४	४८	१	१४	२७	४०	५४	७	२०	३३	४६	०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	३९	३९	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३६	३६	३६	३५	३५	३४	३४
ध-	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-ध-	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
११	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	३३	३३	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	२८	२८	२७	२६	२६	२५
ध-	३६	३	२९	५६	२२	४८	१५	४१	८	३४	०	२७	५३	२०	४६

को	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
८ ध-	५६	४	१३	२१	३०	३८	४६	५५	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
ग-	२५	२४	२३	२३	२२	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१८	१७	१६	१६
फ ध-	१२	३४	५५	१७	३९	०	२२	४३	५	२७	४८	१०	३१	५३	१५

बुधशीघ्रफलसाधनम् ॥ पश्चिमास्तम् ५ । ५ । ० । ० ॥ पूर्वोदयः ॥ ६ । २५ । ० । ० मार्गि
केन्द्रम् ॥ ७ । ५ । ० । ० ॥ पूर्वास्तम् ॥ १० । १० । ० । ० ॥ मध्यमागति. ॥ ५९ ८ ॥

को	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अंतर	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१
ध ५	५९	४	९	१४	२०	२५	३०	३५	४०	४६	५१	५६	१	६	११
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	०
फध-	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	०

को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
०घ	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
अंतर	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९
६ऋ-	५	५८	५१	४४	३८	३१	२४	१७	१०	४	५७	५०	४३	३६	३०
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३६	३८	४०	४२	४४	४६
ऋ-	२४	१४	५	५५	४५	३६	२६	१७	७	५७	४८	३८	२९	१९	९
को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	२४९	१५०
अंतर	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५
१६ऋ.	१४	५८	४२	२६	१०	५४	३८	२२	६	५०	३४	१८	२	४६	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७५	७७
ऋ-	०	५	१०	१५	२०	२४	२९	३४	३९	४४	४८	५३	५८	३	८
को.	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अंतर०	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	८
२६ऋ.	९	३७	१०	४४	१८	५१	२५	५८	३२	६	३९	१३	४६	२०	५४
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	७९	८०	८१	८३	८४	८५	८६	८८	८९	९०	९२	९३	९४	९५	९७
ऋ-	१२	२९	४६	३	२०	३७	५४	१०	२७	४४	१	१८	३५	५२	९
को-	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	८	७	७	६	५	५	४	४	४	२	२	१	१	०	०
३५ऋ.	१८	४२	७	३१	५६	२०	४४	९	३३	५८	२२	४६	११	३५	०
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	९८	९९	१०१	१०४	१०५	१०७	१०८	१०९	१११	११२	११४	११५	११७	११८	११८
ऋ-	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२५

बुधस्यमंदफलसाधनम् बुधस्यमंदोच्चम् ७।०।०।०बुधस्यमध्यमागतिः५९।८बुधस्यकेंद्रगतिः१८६।२४

को॰	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अध॰	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
४ ०	४	९	१४	१९	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	२	७	१२
४८०	४८	३६	२४	१२	८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३
ध-	४९	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	४	०	५५	५०	४५	४०
को-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं.ध-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
३	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५८	२	६
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२
ध-	३६	३२	२९	२६	२३	२०	१६	१३	१०	७	४	०	५७	५४	५१
को॰	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अ-ध-	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२	८	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४२	४५	४८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
ध-	४८	४४	४१	३८	३५	३२	२८	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३
को-	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२ध-	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ग-	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
फध-	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२
को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०ध-	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
फध-	४८	४६	४४	४३	४१	४०	३८	३६	३५	३३	३२	३०	२८	२७	२५

कों०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०ध.	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२४	२२	२०	१८	१७	१५	१३	१२	१०	८	६	५	३	१	०

गुरोः शीघ्रफलसाधनम् गुरोरुच्चंरविः गुरोःपूर्वोदयः ० । १४ ० । ० ॥ वक्रकेंद्रम् ॥ ४ । ५ ।० ० मार्गिकेंद्रम् ॥ ७ । २ ५ । ० । ० ॥ पश्चिमास्तम् ११ । १६ ।० । ० ॥

कों०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंध०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
१०।०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०
० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ध.२०	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४

कों०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५
८ ध	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	६	१५	२४	३३	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ध-	२०	१९	१८	१६	१५	१४	१२	११	१०	८	७	६	४	३	३

कों०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अंतर	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
८ ध-	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४८
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	७	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५
ध-	०	५४	४९	४४	३८	३३	२८	२२	१७	१२	६	१	५६	५०	४५

कों०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
६ ध-	५४	१	८	१५	२२	२८	३५	४[illegible]	४९	५६	२	९	१६	२३	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४
ध-	४०	३४	२९	२४	१८	१३	८	२	५७	५२	४६	४१	३६	३१	२५

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
श्रध.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
५	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२
ध.	२०	१३	६	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	०	५३	४६

को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
श्रंतर	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
३ ध.	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	३६
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	१४	३६	४८	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	०	०
ध-	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८

गुरोःशीघ्रफलसाधनम् गुरोरुच्चंरविः गुरोर्मध्यमागतिः ५।०० ।गुरोःपूर्वोदयः ०।१४।०।० वक्रकेंद्रम् ४।५।०।० मार्गिकेंद्रम्७।२५। ०। ० पश्चिमास्तम् ११।१६।०।० ॥

को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
श्रं-ध	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध-	४०	४५	५०	५६	१	६	१२	१७	२२	२८	३३	३८	४४	४९	५४

को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
श्रंतर	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
२ ऋ-	४५	४३	४०	३८	३६	३३	३१	२८	२६	२४	२१	१९	१६	१४	१२
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४
ध-	०	९	१८	२८	३७	४६	५६	५	१४	२४	३३	४२	५२	०१	१०

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
श्रंतर	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८
५ ऋ	६	१	५६	५१	४६	४०	३५	३०	२५	२०	१४	९	४	५९	५४
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
ऋ-	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६

को॰	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
अंतर	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६
१ क्र.	४४	३५	२६	१७	८	५८	४९	४०	३१	२२	१२	३	५४	४५	३६
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९
क्र-	४०	४९	५८	८	१७	२६	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०
को॰	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अ.क्र.	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३
१२	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११
क्र.	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
को॰	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०
१४क्र	२४	१२	०	३८	३४	९	५५	४०	२६	१२	५७	४२	२८	१४	०
२४	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
क्र-	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२

गुरोर्मंदफलसाधनम् ॥ गुरोर्मंदोच्चम् ॥ ६। ०। ०। ०। गुरोरुच्चरविः ॥ गुरोर्मध्यमागति। ५। ००

को॰	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अ.०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
ध५०	५	११	१६	२२	२८	३३	३९	४४	५०	५६	१	७	१२	१८	२४
३६०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
को॰	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
५ ध-	२९	३४	३९	४४	५०	५५	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५

को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अध.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४९	५४
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	१९	१९	१९
को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३ ध.	५७	१	४	८	१२	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५
को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अ-ध	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२	५०	५३	५६	५९	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	३०
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१४	१३	१२	११	११	१०	१०	९	८	८	७	६	६	५	४
को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
०ध-	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३८	३९	४०	४१	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	४	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०

भृगोःशीघ्रफलम् ॥ भृगोर्मध्यमारविः ॥ भृगो.पश्चिमोदयः । ० । २४ । ० । ० । भृगोर्वक्रम् ॥ । ५ । १७ । ० । ० । ॥ पश्चिमास्तम् ॥ ५ । २७ । ० । ० । पूर्वोदयः । ६ । ३ । ० । ०

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अध-	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
२५-	२५	५०	१५	४०	६	३१	५६	२१	४६	१२	३७	२	२७	५२	१८
१२-	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
ग.१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५

को॰	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
व २५	४३	८	३३	५८	२४	४९	१४	३९	४	३०	५५	२०	४५	१०	३६
१२	१२	२४	३६	४८	•	१२	२४	३६	४८	•	१२	२४	३६	४८	•
गफ-	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३
को॰	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं.ध	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८
२८	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•
गफ॰	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
ध-	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•
को॰	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४
२४ध	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•
गफ	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
ध-	•	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
को॰	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं.ध	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२९	२९	२९	३०
२२	५८	२०	४३	५	२८	५०	१२	३५	५७	२०	४२	४	२७	४९	१२
२४	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	१२	४८	१२	३६	•
गफ	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
ध.	•	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
को॰	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५
२४ध	३२	५३	१४	३५	५६	१६	३७	५८	१९	४०	••	२१	४२	३	२४
४८	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•	२४	४८	१२	३६	•
गफ-	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ध-	•	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

भृगोःशीघ्रफलम् भृगोर्मध्यमोरविः भृगोर्मध्यमागतिः ॥ ५३ ॥ ८ ॥ केंद्रगतिः ॥ ३७ ॥ ०० मार्गिकेंद्रम् ६ १३ । ० । ० ॥ पूर्वास्तं ॥ ११ ॥६ । ० । ० ॥

को०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अध.	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३९	३९	४०
१९	४३	२	२१	४०	०	१९	३८	५७	१६	३६	५५	१४	३३	५२	१२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	१२	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९
ध.	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०
को०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४४
१५४	२७	४२	५७	१२	२८	४३	५८	१३	२८	४४	५९	१४	२९	४४	०
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	९	९	८	८	८	८	७	७	७	६	६	६	६	५	५
ध-	३०	१३	५६	३९	२२	५	४८	३१	१४	५७	४०	२३	६	४९	३२
को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
अ-ध	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
८	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४
ध-	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३
को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
अंतर	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४४	४४	४४
७ऋ-	५८	५१	४४	३७	३०	२२	१५	८	१	५४	४६	३९	३२	२५	१८
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ	४	[illegible]	६	९	११	१२	१४	१६	१७	१९	२१	२२	२४	२५	२७
ऋ-	३०	९	४८	२७	६	४५	२४	३	४२	२१	०	३९	१८	५७	३६
को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अऋ	४३	४२	४१	४१	४०	३९	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३२
४६	३१	३४	५७	१०	२४	३७	५०	३	१६	३०	४३	५६	९	२२	३५
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ	२३	२९	३२	३४	३६	३८	४०	४१	४३	४५	४५	४३	५०	५२	५४
ऋ	१५	३	५१	४०	२८	१६	५	५३	४१	३०	१८	६	५५	४३	३१

को०	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
२ अं	३०	२८	२६	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१०	८	६	४	२	०
१० अ	२५	१५	४	५४	४४	३३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२०	१०	०
२४	३६	१२	४६	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
ग-	५६	५९	६३	६६	६९	७३	७६	७९	८३	८६	८९	९३	९६	९९	१०३
फ अ	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

अंतिमरोधफलसाधने केंद्रभागाः पंचशतेभ्यश्चाधिकस्तदांशुकारयोरित्यादिसंस्कारःकार्यः ॥

भृगोर्मंदफलम् ॥ भृगोर्मंदोच्चम् ३ । ० । ० । ० भृगोर्मध्यमागतिः ५९ । ८ भृगोःकेंद्रगतिः ३७ । ०

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंश ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२ ०	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२८	३१	३३	३६
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
ध-	२४	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	९	८	६	४	३	१

को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंतर	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
२ ध	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
ध-	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२

को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं.ध-	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	४८	४६	४४	४३	४१	४०	३८	३६	३५	३३	३२	३०	२८	२७	२५

को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
० ध	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४
[illegible]	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	[illegible]	२४	२४	२४	२४	२४	२४

को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
ऋध.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	३०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	२४	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	९	८	६	४	३	१
को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
ऋ।०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध ०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शने शीघ्रफलम् शनेस्स्वरावि ॥ शनेर्मध्यमागति. २ ० ॥ शने पूर्वोदय ॥ ० १७ ० ० शनेर्मार्गि ८ ७ ० ० शनेर्वक्रम् ३ २३ ० ० ॥

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ऋ।०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
ध६।०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०
०।०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ग-६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
ध- ०	०	५७	५४	५१	४८	४४	४१	३८	३५	३२	२८	२५	२२	१९	१६
को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
ऋतर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
५ ध-	३५	४०	४५	५०	५६	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
घ-	१२	९	६	३	०	५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८
को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
ऋध	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	५२	५६	१	५	१०	१४	१८	२३	२७	३२	३६	४०	४५	४९	५४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ	४	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३
घ	२४	२१	१८	१५	१२	८	५	२	५९	५६	५३	४९	४६	४३	४०

कों०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं ध	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३	५७	१	४	८	१२	१५	१९	२२	२६	३०	३३	३७	४०	४४	४८
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
फग-	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२
ध-	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८

कों०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-ध-	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२	५०	५२	५५	५७	०	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध-	२४	१९	१४	९	४	०	५५	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२१	१६

कों०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१ ध	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४२
१२	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१२	७	२	५७	५२	४८	४३	३८	३३	२८	२४	१९	१४	९	०

शनेःशीघ्रफलसाधनम् ॥ शनेरुच्चंरविः शनेर्मध्मागतिः २।०। शनेःपाश्चिमास्तकेंद्रम् ११।१३।०।०।

कों०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५
अं-	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
०	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२९

कों०	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
अंतर	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१ ऋ	४०	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१८
३६	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
ऋ.	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५

को०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३०	१३५
अऋ.	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३	१४	११	८	५	२	५८	५५	५२	४९	४६	४२	३९	३६	३३	३०
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
अ.ऋ	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४
३।१२	१२	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१

को०	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१३९	१५०
अं-ऋ	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	२५	२०	१५	१०	६	१	५६	५१	४६	४२	३७	३२	२७	२२	१८
४८	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
गफ-	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
ऋ-	४८	५३	५८	३	८	१२	१७	२२	२७	३२	३६	४१	४६	४८	०

को०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५
अ.ऋ	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१
६	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ-	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
ऋ-	०	५	१०	१५	२०	२४	२९	३४	३९	४४	४८	५३	५८	३	८

को०	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अंतर	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७ऋ.	४०	३३	२६	१९	१२	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७	०
१२	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ऋ-	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३	५७

शनेर्मंदफलसाधनम् ॥ शनेरुच्चंरविः ॥ शनेर्मंदोच्चम् ॥ ८ । ०। ०। ० ॥ शनेर्मध्यमागतिः २।००

को०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंध०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
७।°	७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
० ग	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५ध	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५

को०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं ध	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
८	२	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०
२४	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
को०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
अं-ध-	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६
८	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गफ,	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३
को०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अंतर	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७
६ध	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ-	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	१३	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९
को०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
अं-ध.	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
४	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४९	५४
४८	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध-	९	८	८	७	७	७	६	६	५	५	५	४	४	३	३
को०	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अंतर	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१ ध,	५५	५७	५८	०	२	३	५	६	८	१०	११	१३	१४	१६	१८
३६	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०
गफ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०

अथलग्नादिद्वादशभाव सिद्धकरणेकाप्रयोजनसुधानिधिग्रंथमेंकहतेहैं जन्म वर्ष प्रश्न सें लेकरके योशुभाशुभफलहै तिनमें विद्वानोने द्वादशभाव सिद्धकरणेयोग्यहें तिनों लग्नादिभावोंसें तनुधनादियोंका यो शुभाशुभफलहै सो ग्रहदेतेहैं ॥ १ ॥ तिसमेंप्रथमचरखंडादिलंकोदयस्वोदयदिनार्द्धनतोन्नतकासाधन जातकमित्रसेनपद्धतिमेंकहतेहै ॥ यो यो अपनेदेशकी पलभाहै तिसकों तीनस्थानमें धरे फेर क्रमकर्के प्रथमस्थानमें दश१०कर्के दूसरेस्थानमें आठ८कर्के तीसरेस्थानमें दशकर्के गुणदेवे और अंत्यकेखंडेका तीसरा भागलेवे तव चरखंडे अपनेअपनेदेशके सिद्धहोतेहैं ॥ और लंकोदयकहतेहे मे ॥ २७८ वृ २९९ ॥मि ३२३ कं ३२३ सिं२९९ क २७८ ॥ एहिउलटे तुलासें लेकर मीनपर्यंत कहे

अथतन्वादिद्वादशभावसाधनम्॥ तत्रभावसाधनप्रयोजनं सुधानिधौ॥ जन्माब्दपृछादिशुभाशुभेषुभावाविधेयासुधियायतोत्र ॥ तत्तद्वशेनैवदिशंतिनित्यंशुभाशुभंभावफलंनभोगाः १ तत्रचरखंडादिलंकोदयस्वोदयदिनार्द्धादिनतोन्नतसाधनमुक्तं मित्रसेनपद्धतौ त्रिस्थाक्षभादि१०ग्वसु८दिग्वि१० निघ्नीचरस्यखंडा निगुणांश।३। मंत्यम् ॥ अष्टर्क्ष२७८मंकांकभुजा २९९ त्रिदंता३२३व्यक्षोदयाःस्युःक्रमशोत्क्रमस्थाः ॥ २ ॥ क्रमोत्क्रमोनयुक्तास्तैश्चरखंडैःक्रियादिकाः ॥ व्यस्तास्तुतेतुलात्ज्ञेयानिजदेशोदयाःस्मृताः ३ ॥ रवेर्दोर्लिवाःखाग्नि३०लब्धाश्चखंडाश्चरस्यांशशेषघ्नभोग्याद्विभक्तम् ॥ खरामैस्तदैक्यंचरंस्यात्तिथौ १५तद्धनर्णंक्रमात्सौम्ययाम्यंदिनार्द्धम् ॥ ४ ॥

है ॥ २ ॥ अवस्वदेशीयउदयकहतेहैं ॥ मेषसें लेकर जो लंकोदयहै तिनकों क्रमकर्के मिथुनपर्यंत चरखंडेमिलावे और कर्कसें लेकर उलटेमिलावे तव कन्यापर्यंत स्वोदयहोतेहे और सोई उलटे तुलासें मीनपर्यंतहोतेहे ३ अवचरसिद्धकरतेहै सायनसूर्यके भुजांशाःकरे तिनकों तीस३०सें भागलेवे यो लब्धहोवे उतने चरखंडेका योगकरे और शेषखंडेकर्के भोग्यांशोंको गुणे फेर तिसमें तीस३०का भाग लेकर खंडयोगमे मिलावे सो चरहोताहै ॥ अवदिनमानसिद्धकरतेहे तिस चरको पंद्रामें १५धनऋण करे तो दिनार्द्धहोताहै ॥ सायनसूर्य मेषादिछैराशीमे होवेतव धनकरे ओर तुलादिछैराशीमें स्थित होवे तव ऋणकरे तव दिनार्द्धसिद्धहोताहै ४

" अबवारप्रवृत्तिहोरेशकेवास्तेकहतेहैं ॥ लंकापुरीसेंलेकरके कुरुक्षेत्र कों स्पर्शकर्ता रेखा मेरूपर्वत पर्यंत जो है तिसकों भूमध्यरेखा कहते है तिसरेखाके पश्चिम और पूर्वदेशमें वारप्रवृत्ति इसप्रकारकर्के होती है जब अर्द्धरात्री में पंद्रां १५ घडियां मिलाय देवें और रेखास्थानसें जितने योजन अपना देशहे तिनों योजनों का असीति ८० भाग लेकर्के पश्चिमदेशमें ऊन करे और पूर्व देशमें युक्त करे तब वार प्रवृत्ति नित्यस्पष्ट होतीहे ५ अवनतोन्नतस्पष्टकहतेहैं मध्यान्हसमयसें लेकर्के पूर्वदिनकी अर्द्धरात्रि पर्यंत पूर्वनत होताहे और मध्यान्ह सें लेकर अर्द्धरात्रिपर्यंत पश्चिमनतहोताहै और तिस नतकों तीस में ३० घटायदेवें तब तिसकी उन्नत संज्ञा कहिहे सो नत और उन्नत चतुर्थ दशम भावसाधनमें इष्ट होताहे ६ अब लग्नस्पष्ट करते हैं तात्कालिकसूर्य में अयनांशा मिलावें फेर तिसके भोग्यांशो कर्के स्वोदय पलों कों गुणे फेर तीस ३० सें भागलेवे तव सूर्यका भोग्यकाल पलादि सिद्धहोता है तिसकों इष्टकालके पलो में शुद्धकरे घटायदेवे जो-

कोदयः			स्वोदयः	
२७८	मी	मे	२०३	मी
२९९	कुं	वृ	२३९	कुं
३२३	मं	मि	२९८	म
३२३	ध	कं	३४८	ध
२९९	वृं	सिं	३५९	वृं
२७८	तु	कं	३५३	तु

लंकाकुरुक्षेत्रसुमेरुशैलभूमध्यरेखापरपूर्वदेशे ॥ वारप्रवृत्तिस्तिथियुङ्निशीथेस्याद्योजनाशीतिलवोनयुक्ते ॥ ५ ॥ मध्यंदिनात्प्राक्परतस्तुपूर्वापरंनतंरात्रिदलावधिस्यात् ॥ त्रिंशत् ३०च्युतंचोन्नतसंज्ञमाहुस्तूर्याभ्रभावानयनेतादिष्टम् ६ तत्कालार्कोयनांशैर्युतउदयपलैःसंगुणाभोग्यभागास्त्रिंश ३० द्धर्कोर्कभोग्यःपलमयसमयःशोधयेदिष्टकालात् तच्छेपादग्रतश्चाऽपतिततनुपलैर्भाजितात्खत्रि ३० निघ्नादंशाद्यंतच्च रात्रौरस ६ भयुतरवेःपूर्ववच्चायनोनम् ७ रवे र्भोग्यपलादिष्टकालो भवति हीनकः खाग्नि ३० भि र्गुणितो भक्तः स्वोदये रंशकादियुक्। ८। लग्नं स्यादिति ॥ अथ दशम लग्नानयनम् ॥ पद्धतिचिंतामणौ ॥ युक्तायनांशार्कगतैष्यभागा लंकोदयघ्नाः खगुणो। ३० द्धृतातत्

. शेषरहे तिसमें आगेकी राशीके उदय पलघटावे जिस राशिके उदयपल न घटें तव शेषकों तीस ३० सें गुणकर्के तिस राशिके उदय पलों कर्के भागलेवे जो लब्धआवे सो अंश कला विकला लग्न के होतेहैं जिस राशीके स्वो दय कर्के भाग लियाहे तिसके पूर्वराशियां कों जोडदेवे, और अयनांशा घटायदेवे तव लग्नस्पष्टहोताहे और रात्रिमें सूर्यमेंछेराशीजोडदेवे और रात्रीष्टकालमान कें पूर्वकीन्याई लग्नस्पष्ट होताहे अव भोग्यकालसें हीन इष्टकाल होवे तिसमें लग्नस्पष्ट कहतेहैं ॥ जब सूर्यके भोग्यकालपलों सें इष्ट थोडा होवे तब तिसकों तीस ३० सें गुणे और अपने उदयपलों सें भागलेकर अंशादि स्पष्ट सूर्यमें जोड देवे तव स्पष्ट लग्न होताहै ८ अथदशमलग्नपद्धतिचिंतामणीसेंसिद्धकरतेहैं ॥ सायनसूर्यके जो भुक्त भोग्य अंशादि हैं सो सूर्यकी राशीके लंकोदयसेंगुणे फेर तीस ३० सेंतिनकोंभागे

अवसप्तवर्गोकेफलकहतेहे लग्न होरा द्रेष्काण सप्तांश नवमांश द्वादशांश त्रिंशांश एहसात पदलग्नमें कहेहैं १ लग्नमें देहके आकारकी विचारणाकरे और होरामें मनुष्यके धनसंपदा औरविपदाकाविचारकरे और द्रेष्काणमें कर्म फलकोंविचारे और सप्तमांशमें भ्राताकाविचारकरे २ औरनवांशचक्रमें सन्तान कों विचारे और द्वादशा शमेंस्त्रीका विचारकरे और त्रिंशांशचक्रमें मृत्युकाशुभाशुभस्थानमेंविचारकरे ३ तिसमें प्रथमबारालग्नोंके फल जातका भरणसेंकहतेहैं जोमनुष्य मेषलग्नमेंजन्मताहे सो बडेअभिमानवालाहोताहै औरगुणवान् औरक्रोधीहोताहे और अपने मित्रोंसें विरोधकर्त्ता और लोकोंसेंमित्रभावकर्त्ताहै और अपनेपराक्रम करके विशेषयशकोंप्राप्तहोताहे ४ और जिसमनुष्यके जन्मकालमें वृषलग्नहोवे सोगुणोंमें अग्रणी बडामुल्य होजाताहे और धनकरके पूर्ण होताहै और गुरोंका भक्त होताहे

अथशारीरकाध्यायोव्याख्यायते ॥ तत्रसप्तवर्गफलानि ॥ लग्नंहोराथद्रेष्काणः सप्तभागोनवांशकः द्वादशांशोथत्रिंशांशोलग्नः सप्तपदःस्मृतः १ लग्नेदेहाकारोहोरायामर्थसंपदोविपदः द्रेष्काणेकर्मफलंसप्तांशेवंधुसंज्ञाच.२ पुत्रंनवांशभागेद्वादशभागेविचिंतयेत्पत्नीं · त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाऽशुभंसर्वजंतूनाम् ३ तत्रलग्नफलानिजातकाभरणे ॥ चंडाभिमानीगुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधीचसखापरेषाम् पराक्रमप्राप्तयशोविशेषोमेषोदयेयः पुरुषोतिरोषः ४ गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेनपूर्णोभक्तोगुरुणांहिरणप्रियश्च धीरश्चशूर.प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पूरुषोयस्यवृषोविलग्ने ५ भोगीवदान्योबहुपुत्रमित्रः सुगूढमंत्रःसधनःसुशीलः तस्यस्थिति.स्यान्नृपसंन्निधाने लग्नेभवेन्नामिथुनाभिधाने ६ मिष्टान्नभुक्साधुरतोविनीतोविलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः प्रकृष्टसारोतितरामुदारोलग्नेकुलीरेहिनरोभवेत्सः ७ कृशोदरश्चारुपराक्रमश्चभोगीभवेदल्पसुतोल्पभक्षः संजातबुद्धिर्मनुजोभिमानीपंचाननेसंजनुनेविलग्ने ८

और युद्धकाप्याराहोताहे और धीर औरशूरवीर और मीठाबोलनेवाला और शांतस्वभाववालाहोताहे ५ और जोमनुष्य मिथुनलग्नमें जन्मताहै सोभोगीबका और बहुतपुत्रोंवाला और मित्रोंवाला होताहै और गुप्त मैत्री और धनकरके युक्त और श्रेष्ठस्वभाववाला और राजाकेपासरहणेवालाहोताहै ६ और जोमनुष्यकर्कटलग्नमेंजन्मताहै सोमिष्टान्नखानेवालाऔरसाधूजनोंसेंप्रीतिकरणेवालाऔर नम्रहोताहै और उलटीबुद्धिवाला और जलक्रीडाकरणेमेंमतिसकारवभावहोताहे और बडे सारवाला और बडाउदार होताहै ७ और जोमनुष्यसिंहलग्नमें जन्मताहै सोमनुष्य पतले पेटवाला और बडे पराक्रमवाला और भोगोंके भोगनेवाला और थोडेपुत्रोंवाला और थोडाभोजनकरणेवालाऔरबडेअभिमानवालाहोताहै ॥ ८

अबकन्यालग्नकाफलकहनेहैं जिसमनुष्यकेजन्मसमयमेंकन्यालग्नहोताहै सोमनुष्यकामक्रीडाऔरश्रेष्ठगुण और ज्ञान और पराक्रमऔर चातुरीसें लेकरकेअनेकगुणोंवाला होताहै और प्रसन्नताककें युक्तहोताहै और श्रेष्ठलक्ष्मीकों नित्यंप्रतिप्राप्तहोताहै ९ और जोमनुष्यतुलालग्नमेंजन्मताहैं सो अपने कुलमें भूषण रूपहोताहै और वडेगुणोंवाला और धनकेलाभवाला और व्यापारमेंअतिचतुरहोताहै और तिस के घरमेंलक्ष्मीस्थिरहोतीहैं १० और जो मनुष्यवृश्चिकलग्नमेंजन्मताहै सोशूरवीरऔर वडे विचारवाला और वडी निर्दोष विद्यावालाहोताहै और सर्वदाकालकलहःकेकरणेवालाहोताहै ११ औरजोमनुष्यध नुः लग्नमें जन्मताहै सो चतुर और राजाकी सेवा करणेवाला और सत्य प्रतिज्ञावाला और मनकी वातजाननेवाला होताहै और चतुर और कलाके जाननेवाला और धनुर्विद्याके जाननेवाला होताहै ॥ १२ ॥ जोमनुष्यमकरलग्नमें जन्मताहै सोवडेकठोरदेहवाला और शठहोताहै और जोअपनेमन

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः लग्नंकन्यायस्यजन्यां सधन्यःकन्यांक्षीराब्धेरवाप्नोतिनित्यम् ९ गुणाधिकत्वंद्रविणोपलब्धिर्वाणिज्य कर्मण्यतिनैपुणत्वं पद्मालयातन्निलयेनलोलालग्नतुलाचेत्सकुलावतंसः १० शू रोनरोत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः प्रसूतिकालेकिललग्नशालीभ वेदलिस्तस्यकलिःसदैव ११ प्राज्ञश्चराज्ञःपरिसेवनज्ञःसत्यप्रतिज्ञःसुतरांमनो ज्ञः सुज्ञाकलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्यजनुस्तनुःस्यात् १२ कठिनमूर्तिरतीव शठःपुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः सुचतुरोपिचलुब्धतरोवरोयदिनरोमकरो दयसंभवः १३ लोलस्वांतोऽत्यंतसंजातकामश्चंचद्देहःस्नेहकृन्मित्रवर्गे सस्थैरं भःसंभवैर्युक्तदंभश्चेत्स्यात्कुंभेसंभवोयस्यलग्ने १४ दक्षोल्पभक्षोऽल्पमनोभव श्चसद्रत्नहेमाचपलोतिधूर्तः स्यान्नाचनानारचनाविधानेमीनाभिधानेजननेविल ग्ने १५ भवेदलंलग्नवलेयथोक्तंविलग्नकालेप्रवलेप्रसूतौ तस्मिन्बलोनेयदिवा विलग्नेयुक्तेक्षितेक्रूरखगैस्तथाल्पं १६

की इच्छाहोवे सोकर्ताहै औरवहुतसंतान वाला होताहै और वडाचतुर और वडालोभीहोताहै १३ और जो मनुष्यकुंभलग्नमें जन्मताहै तिसका मनचंचलहोताहै और वडाकामी होताहै और सुंदर देहवालाहोताहै और मित्रों सें प्रीतिकरणेवाला और जलकर्केउत्पन्नजोवृक्षादियोंकेफलतिनोंकर्केयुक्त और दंभी होताहै ॥ १४ ॥ और जो मनुष्य मीनलग्नमें जन्मताहै सो वडाचतुर होताहै और थोडा भोजन कर्ताहै और थोडे कामवाला होताहै और श्रेष्टरत्नों कर्के और स्वर्ण कर्के युक्त होताहै और वडा चपल और धूर्त होताहै और अनेक प्रकारोंकिया रचनारचनेकी विधिकों जानताहै १५ और इहेजो वारालग्नोंका फलकहाहै जवलग्नपूर्णवलीहोवे तवयथोक्तफलकरणेकों समर्थहोताहै और लग्नहीनबल होवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त वादृष्ट होवे तव थोडा फलकर्ताहै १६

जो लग्नआवे सो सूर्यका भुक्त और भोग्यकाल होताहै ॥ फेर भुक्तकालकों पूर्वनतके पलों में घटावे और भोग्यकालकों पश्चिम नतके पलों में घटावे और फेर भुक्तमें गतराशीयोंके उदय घटावे और भोग्यमें ऐष्य राशियोंके उदय घटावे फेरशेषकोंतीससें गुणे और अशुद्ध राशीके उदय पलों सें भाग लेवे अंशादि फल ग्रहणकरे फेर तिसफलकोंभुक्तमें अशुद्ध राशीमें घटावे और भोग्यमें शुद्धराशीयां मेषसें लेकर मिलावे और अयनांश घटाय देवे तब लग्न स्पष्ट होताहै ९ और लग्नमें छे राशी मिलावें तब सप्तम भाव होताहै औरदशममें छे राशी मिलावें तब चतुर्थ भाव सिद्ध होताहै १० और पूर्व नतमेंबीधनदशमानयन कहतेहैंपूर्वनतकों उन्नतबनावे और सूर्यके साथ छे राशीमिलावे फेरलंकोदयोंसे धन कर्मकके दशम स्पष्ट होताहै ११ अबसंधियोंकर्केयुक्तद्वादशभावसिद्धकरणेकहतेहैं चतुर्थभावसेंलग्नकोंघटायदेवे जोशेषराश्यादिरहेतिसका

स्याद्भुक्तभोग्यंतपनस्यजह्यात् ॥ पलीकृतात्प्रागपरान्नतात्तत् क्रमाद्गतैष्यानुदयांश्चशेषमशुद्धहृत्खाग्नि३०गुणंलवाद्यं विशुद्धपूर्वापरभैर्विहीनयुतंखभं स्यादयनांशहीनम् ९ ॥ लग्नं सषड्भं मदनाभिधानंतुर्य्याभिधंस्याद्दशमात्सषड्भात् ॥ १० अथपूर्वनते पि धनदशमानयनम् प्राङ्नतस्योन्नतं कृत्वा रविं कृत्वा सषड्भकम् लंकोदयैर्द्धनाख्येन कर्मणास्यात्खभं स्फुटम् ॥ ११ ॥ अथससंधिसर्वभावानयनम् लग्नंचतुर्थात्संशोध्यंशेषंषड्भिर्विभाजितम् राश्याद्यं योजयेल्लग्नेसंधिःस्याल्लग्नवित्तयोः ॥ १२ संधिःषडंशसंयुक्तोधनभावोभवेत्स्फुटः धनभावःषडंशाढ्यःसंधिर्धनतृतीययोः ॥ १३ षडंशसंयुतःसंधिस्तृतीयोभावउच्यते षडंशाढ्यस्तृतीयःस्यात्संधिर्भ्रातृचतुर्थयोः तृतीयसंधिरेकाढ्यःसंधिःपातालपुत्रयोः १४ ॥ द्व्याढ्यस्तृतीयभावोपिपुत्रभावोभवेत्स्फुटः त्र्याढ्योद्वितीयसंधिःस्यात्संधिःपंचमभावजः १५ धनभावोवेदयुतोरिपुभावस्तुजायते लग्नसंधिःपंचयुतःसंधिस्याद्रिपुभावजः १६ लग्नाद्याःसंधिसहिताभावाःषट्राशिसंयुताः सप्तमाद्याभवंतीहभावाःसर्वेससंधयः १७

षडंश६छठाभागराश्यादिफललेवे तिसकोंलग्नमेंजोडदेवे तवलग्नऔरधनभावकीसंधिस्पष्टहोतीहै १२ और तिसीसंधिमेंछठेभागकों मिलावेतव धनभावस्पष्टहोताहै औरधनभावमेंषडंशकोंमिलावें तवधनभावकी और तृतीयभावकीसंधिहोतीहै १३ और तिससंधिमेंषडंशमिलावेतवतृतीयभावस्पष्टहोताहै औरतृतीयभावमेंषडंशकोंमिलावे तवतृतीयचतुर्थभावकीसंधिहोतीहै और तृतीयभावकीसंधिमेंएकराशिमिलावेंतवचतुर्थ पंचमभावकीसंधिहोतीहै १४ औरतृतीयभावमेंदोराशिमिलावें तवपंचमभावस्पष्टहोताहै औरदूसरेभावकीसंधिमेंतीनराशिमिलावें तवपंचमभावकीसंधिहोतीहै १५ औरधनभावमेंचारराशीमिलावेंतवरिपुभावहोताहै औरलग्नकीसंधिमेंपांचराशीमिलावे तवछठेभावकीसंधिहोतीहै १६ इसीप्रकारलग्नसेंलेकरकेछेभावसंधियोंके करकेयुक्तस्पष्टहोतेहैं औरलग्नादिछेभावजोहैंसंधियोंकर्केयुक्ततिनमेंछेछेराशीमिलानेसें द्वादशभावस्पष्टहोतेहैं

अवलग्नसेंइष्टकालसिद्धकरणाकेशवार्ककहताहै सूर्यकेभोग्यांशऔरलग्नकेभुक्तांशोंकायोगकरे औरमध्य केउदयपलमिलावेतवइष्टकालहोताहै पला मक औरजवलग्नऔरसूर्यएकहिराशिमेंहोवेंतवतिनकेअंशादि योंकाअनरस्वोदयकरगुणे औरतीस ३० सेंभागलेवेतवइष्टकालहोताहै औररात्रीकेइष्टकालमेंछैराशीकरयु क्तसूर्यसेंलग्नसिद्धकियाहोवे तवसूर्यास्तसेंलेकरकेइष्टकालसिद्धहोताहै ॥ १८ ॥ अवभावफलसिद्धकरणा कहतेहै ॥ योग्रहसंधियोंकेतुल्यस्थितहोताहै तिसकाफलशून्यहोताहै अर्थात्शुभाशुभभावफलनहिंकर्त्ता हैऔर योग्रहभावकेतुल्यहोताहै सोभावकाशुभाशुभफलपूर्णकर्त्ताहै और मध्यमेंअनुपातसेंफलकर्त्ताहै भा

अथलग्नादिष्टकालानयनमाह केशवार्कः॥ अर्कस्यभोग्यस्तनुभुक्तयुक्तोमध्योदयाढ्याःसमयोविलग्नात् ॥ यदैकभेलग्नरवीतदातद्भागांतरघ्नोदयखाग्निभागः रात्रीष्टकालेतुसषड्भसूर्यात्लग्नंततोप्युक्तवदिष्टकालः १८ ॥ अथभावफलसाधनं ॥ शून्यंसंधिपुभावगेखिलफलंस्याद्भावसंध्यंतरेणाप्तंसंधिखग्रांतरं क्षयचयेभावाधिकेल्पेखगे ॥ १९ ॥ अत्रविशेषोदामोदरपद्धतौ भावोनकः खगः पूर्वसंधिनारहितस्तदा ॰ अधिकश्चेद्विरामाख्यसंधेःशोध्यस्तदंतरं २० भावसंध्यंतरेणाप्तंतद्भावफलमुच्यते तदारोहंपूर्वसंधेरवरोहंतथांतिमं २१॥इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेग्रहभावसाधननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

वऔर संधिकेअंतरकर्केग्रहसंधिकेअंतरकोंभागे योलब्धआवेसोभावफलक्षयऔरचयसंज्ञकहोताहै जबग्रह भावसेंअधिकहोवेंतवक्षयफलहोताहै औरजवभावसेंहीनहोवेतवचयफलहोताहै १९ औरदामोदरपद्धतिमें विशेषकहतेहै योग्रहभावसेंऊनहोवेतिसकापूर्वसंधिसेंअंतरकरे औरजोअधिकहोवेतिसका आगेकीसंधिसें अंतरकरे २० औरभावसंधिकेअंतरसेंभागलेवेजोलब्धफलआवे सोभावफलहोताहै औरपूर्वसंधिकेअंतरसे आगेहऔरअंतिमसंधिकेअंतरसेंअवगेहसंज्ञकफलहोताहै २१ इतिजातकखंडेग्रहभावसाधनाध्यायः ४

अबसप्तवर्गोंकेफलकहतेहैं लग्न होरा द्रेष्काण सप्तांश नवमांश द्वादशांश त्रिंशांश ।हसात पदलग्नमें कहेहैं १ लग्नमें देहके आकारकी विचारणाकरे और होरामें मनुष्यके धनसंपदा औरविपदाकाविचारकरे और द्रेष्काणमें कर्म फलकोंविचारे और सप्तमांशमें भ्राताकाविचारकरे २ औरनवांशचक्रमें संतान कों विचारे और द्वादशां शमेंस्त्रीका विचारकरे और त्रिंशांशचक्रमें मृत्युकाशुभाशुभस्थानमेंविचार करे ३ तिसमें प्रथमवारालग्नोंके फल जातका भरणसेंकहतेहैं जोमनुष्य मेपलग्नमेंजन्मताहै सो बडेअभिमानवालाहोताहै औरगुणवान् औरक्रोधीहोताहै और अपने मित्रोंसें विरोधकर्त्ता और लोकोंसेंमित्रभावकर्त्ताहै और अपनेपराक्रम करकें विशेषयशकोप्राप्तहोताहै ४ और जिसमनुष्यके जन्मकालमें वृषलग्नहोवे सोगुणोंमें अग्रणी वचामुख्य होजाताहै और धनकर्के पूर्ण होताहै और गुरोंका भक्त होताहै

अथशारीरकाध्यायोव्याख्यायते ॥ तत्रसप्तवर्गफलानि ॥ लग्नंहोराथद्रेष्काणः सप्तभागोनवांशकः द्वादशांशोथत्रिंशांशोलग्नः सप्तपदःस्मृतः १ लग्नेदेहाकारोहोरायामर्थसंपदोविपदः द्रेष्काणेकर्मफलंसप्तांशेबंधुसंज्ञाच.२ पुत्रंनवांशभागेद्वादशभागेविचिंतयेत्पत्नी त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाऽशुभंसर्वजंतूनाम् ३ तत्रलग्नफलानिजातकाभरणे ॥ चंडाभिमानीगुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधीचसखापरेषाम् पराक्रमप्राप्तयशोविशेषोमेषोदयेयः पुरुषोतिरोषः ४ गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेनपूर्णोभक्तोगुरुणांहिरण्प्रियश्च धीरश्चशूर प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पूरुषोयस्यवृषोविलग्ने ५ भोगीवदान्योवहुपुत्रमित्रः सुगूढमंत्र.सधनःसुशीलः तस्यस्थिति.स्यान्नृपसंन्निधाने लग्नेभवेन्नामिथुनाभिधाने ६ मिष्टान्नभुक्साधुरतोविनीतोविलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः प्रकृष्टसारोतितरामुदारोलग्नेकुलीरेहिनरोभवेत्सः ७ कृशोदरश्चारुपराक्रमश्चभोगीभवेदल्पसुतोल्पभक्षः संजातबुद्धिर्मनुजोभिमानीपंचाननेसंजननेविलग्ने ८

और युद्धकाप्याराहोताहै और धीर औरशूरवीर और मीठाबोलनेवाला और शांतस्वभाववालाहोताहै ५ और जोमनुष्य मिथुनलग्नमें जन्मताहै सोभोगीवक्ता और बहुतपुत्रावाला और मित्रोंवाला होताहै और गुप्त मंत्री और धनकर्के युक्त और श्रेष्ठस्वभाववाला और राजाकेपासरहणेवालाहोताहै ६ और जोमनुष्यकर्कटलग्नमेंजन्मताहै सोमिष्टान्नखानेवालाओरसाधूजनोंसेंप्रीतिकरणेवालाऔर नम्रहोताहै और उलटीबुद्धिवाला और जलक्रीडाकरणेमेंअतिसकास्वभावहोताहै और बडे सारवाला और बडाउदार होताहै ७ और जोमनुष्यसिंहलग्नमें जन्मताहै सोमनुष्य पतले पेटवाला और बडे पराक्रमवाला और भोगोंके भोगनेंवाला और थोडेपुत्रोंवाला और थोडाभोजनकरणेवालाऔरवडेअभिमानवालाहोताहै ॥ ८

अवकन्यालग्नकाफलकहतेहैं जिसमनुष्यकेजन्मसमयमेंकन्यालग्नहोताहै सोमनुष्यकामक्रीडाऔरश्रेष्ठगुण और ज्ञान और पराक्रमऔर चातुरीसें लेकरकेअनेकगुणोंवाला होताहै और प्रसन्नताकर्के युक्तहोताहै और श्रेष्ठलक्ष्मीकों नित्यंप्रतिप्राप्तहोताहै ९ और जोमनुष्यतुलालग्नमेंजन्मताहै सो अपने कुलमें भूषण रूपहोताहै और बडेगुणोंवाला और धनकेलाभवाला और व्यापारमेंअतिचतुरहोताहै और तिस के घरमेंलक्ष्मीस्थिरहोतीहै १० और जो मनुष्यवृश्चिकलग्नमेंजन्मताहै सोशूरवीरऔर वडे विचारवाला और वडी निर्दोष विद्यावालाहोताहै और सर्वदाकालकलहःकेकरणेवालाहोताहै ११ औरजोमनुष्यध नुः लग्नमें जन्मताहै सो चतुर और राजाकी सेवा करणेवाला और सत्य प्रतिज्ञावाला और मनकी बातजाननेवाला होताहै और चतुर और कलाके जाननेवाला और धनुर्विद्याके जाननेवाला होताहै ॥ १२ ॥ जोमनुष्यमकरलग्नमे जन्मताहै सोवडेकठोरदेहवाला और शठहोताहै और जोअपनेमन

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः लग्नंकन्यायस्यजन्यां सधन्यःकन्यांक्षीराब्धेरवाप्नोतिनित्यम् ९ गुणाधिकत्वंद्रविणोपलब्धिर्वाणिज्य कर्मण्यतिनैपुणत्वं पद्मालयातन्निलयेनलोलालग्नंतुलाचेत्सकुलावतंसः १० शू रोनरोत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः प्रसूतिकालेकिललग्नशालीभ वेदलिस्तस्यकलिःसदैव ११ प्राज्ञश्चराज्ञःपरिसेवनज्ञःसत्यप्रतिज्ञःसुतरांमनो ज्ञः सुज्ञाकलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुधनुर्यस्यजनुस्तनुःस्यात् १२ कठिनमूर्तिरतीव शठःपुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः सुचतुरोपिचलुब्धतरोवरोयदिनरोमकरो दयसंभवः १३ लोलस्वांतोऽत्यंतसंजातकामश्चंचद्देहःस्नेहकृन्मित्रवर्गे सस्यैरं भःसंभवैर्युक्तदंभश्चेत्स्यात्कुंभेसंभवोयस्यलग्ने १४ दक्षोल्पभक्षोऽल्पमनोभव श्चसद्रत्नहेमाचपलोतिधूर्तः स्यान्नाचनानारचनाविधानेमीनाभिधानेजननेविल ग्ने १५ भवेदलंलग्नवलेयथोक्तंविलग्नकालेप्रवलेप्रसूतौ तस्मिन्वलोनेयदिवा विलग्नेयुक्तेक्षितेक्रूरखगैस्तथाल्पं १६

की इच्छाहोवे सोकर्ताहै औरवहुतसंतान वाला होताहै और वडाचतुर और वडालोभीहोताहै १३ और जो मनुष्यकुंभलग्नमें जन्मताहै तिसका मनचंचलहोताहै और वडाकामी होताहै और सुंदर देहवालाहोताहै और मित्रों सें प्रीतिकरणेवाला और जलकर्केउत्पन्नजोवृक्षादियोंकेफलतिनोंकर्केयुक्त- और दंभी होताहै ॥ १४ ॥ और जो मनुष्य मीनलग्नमें जन्मताहै सो वडाचतुर होताहै और थोडा भोजन कर्ताहै और थोडे कामवाला होताहै और श्रेष्टरत्नों कर्के और स्वर्ण कर्के युक्त होताहै और वडा चपल और धूर्त होताहै और अनेक प्रकारोंकिया रचनारचनेकी विधिकों जानताहै १५ और इहेजो वारालग्नोंका फलकहाहै जबलग्नपूर्णवलीहोवे तवयथोक्तफलकरणेकों समर्थहोताहै और लग्नहीनवल होवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त वादृष्ट होवे तव थोडा फलकर्ताहै १६

अथहोराकाफलकहतेहैं होराचक्रमें रूप और मित्रभावकाविचाराकियाहे चंद्रमाकी होरामे जन्मे और वहुतग्रहदूसरेस्थानमें स्थितहोवे तव वडासुंदर और वडेधनवाला श्रेष्ठहोताहै और सूर्यकीहोरामें जन्मे- और वहुतग्रह द्वादश १२ स्थानमें होवे तव मध्यम रूप मित्र धन वाला होताहै ॥ १७ ॥अव- सारावलीसें प्रत्येकहोराकाफलकहतेहै जोमनुष्य मेष लग्नकी प्रथम होरामें जन्मताहै सो लालनेत्रों- वाला और तीक्ष्ण दृष्टिवाला और शूरवीर और धनवान् और तोतेकीन्यांई नासिकावालाहोताहै और श्रेष्ठस्त्रीसें प्रीतिकर्ताहै और पुष्ट और ऊंचेदेहवाला और चोरोंकास्वामी होताहै ॥ १८ ॥ और जो मेपकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सो चोर और वडीमस्तीवाला और कठन पैरोंवाला और कठन अंगु- लीयोवाला और स्निग्धवडेविशालनेत्रोंवाला और चतुर और पुष्टदेहवाला और श्रेष्ठवुद्धिवालाहोताहै. ॥ १९ ॥ और जो वृपलग्नकीप्रथमहोरामेंजन्मताहैसोसौम्यस्वभाववाला और वडेनेत्र और मस्तक.

अथहोराफलम् होरायांरूपसौहार्दंपश्येजन्मनिसर्वदा वहवोधनगाःश्रेष्टास्त थानेष्टाव्ययेग्रहाः १७ सारावल्यां रक्तोत्कटदृक्शूरोधनवान्शुकनासिकोग्रि दाररतः पीनोन्नतःप्रचंडःतस्करनाथःक्रियादिहोरायां १८ चौरःप्रमादवहुलः खरोग्रपादांगुलिर्द्वितीयायां स्निग्धायताक्षचतुरःपृथुपीनतनुःसुमेधाच १९ सौम्योविशालचक्षुर्ललाटवक्षाश्चयानरतिवश्यः स्थूलाक्षितनुर्वृपभेप्रथमार्धेस्या त्प्रकोपनवपुष्मान् २० पृथ्वायतपीनतनुंह्युदारसत्वंसुमूर्धजंजनयेत् व्यस्त कटिंवृपभास्यंवृपस्यहोराद्वितीयाच ॥२१॥ मध्यायताक्षमध्यमतनुमूर्तिदृढाशी रोंघ्रिश्च मिथुनार्धेशूरोनावाग्मीमतिमान्सुरतिशीलः ॥ २२ ॥ स्वक्षःकामी शूरोमृदुवल्गुकथोमनस्वीच चार्वौष्टदंतदेहोभवेन्नृमिथुनेद्वितीयहोरायां २३ ॥ उद्वृत्तमूर्तिःसुशिरःप्रगल्भमंदस्वरश्चलोतिशठः श्यामतनुश्चकृतघ्नोभग्नाग्र दःकुलीरपूर्वार्धे ॥ २४ ॥

और छाती वाला होताहे और वाहनोंमें प्रीतीवाला और वश्य होताहै और वडेमोटे देहवाला और वडेक्रोधवाला होताहै ॥ २० ॥ और जो वृपकी दूसरी होरामें जन्मताहै सो वडे भारे पुष्टदेहवाला और वडे पराक्रमवाला और सुंदर केशों वाला और टेडे लक वाला और वैलकी न्यांई मुख वाला होताहै ॥ २१ ॥ और मिथुनकी पूर्व होरामें जन्मेतो मध्यम रूप और विशालनेत्र और छोटी मूर्तिः और दृढ शिर और पाद होतेहैं और शूरवीर वक्ता वुद्धिमान् कामचेष्टामें स्वभाव वाला होताहै २२ और जो मिथुनकी दूसरी होरामें जन्मताहै सो सुंदर नेत्रोंवाला कामी शूरवीर कोमल सुंदर वार्ता करणे वाला मनस्वी और सुंदर ओष्ट दंत देहवाला होताहै ॥ २३ ॥ और जो कर्कट की पूर्व होरामें जन्मताहै सोवर्तुलाकारदेहवाला और श्रेष्ठशिरवाला और प्रगल्भ और मंदस्वर वाला और चंचल और शठ होताहै और सुंदरदेह वाला और कृतघ्न और आगेकेदंद तिसके टूट जातेहैं ॥ २४ ॥

औरजोकर्कट कीदूसरी होरामें जन्मताहे सो जूआखेलने वाला और मार्गमे चलने वाला औरमोटे मुख वाला और समदेह वाला और कठोर देह वाला और क्रोधी होताहै ॥ २५ ॥ और जो सिंह की प्रथम होरामे जन्मताहै सो लाल कोणें वाले विशाल नेत्रों वाला प्रगल्भ वडे देह वाला कपट स्वभाववाला और अल्पअवस्थामेसुखभोगनेवाला और स्थिरपराक्रमवाला और स्थिरकर्मोवालाहोता है २६ और जो सिंहकीदूसरी होरामे जन्मताहे सो स्त्रीमें और मिष्टपान और मिष्ट भोजनमेंरतहोताहे और श्रेष्ठवस्त्रोंकीइच्छावाला और अनेकचेष्टाकरनेवाला और कठोर अंगोंवाला और दाता और मार्गमेरत और भोगी और स्थिरमित्रोंवालाहोताहै ॥ २७ ॥ और जो कन्याकी पूर्वहोरामेंजन्मताहै सो वडेकोमलदेहवाला और कांतिवाला और श्रेष्ठवाणीवाला और श्रेष्ठगायनकरणेवालोस्त्रीसेरतहोताहे और मखीरकीन्याईनेत्रहोतेहें और गायनविद्याकेजानने,

द्यूतरतोध्वनिनिरतः पृथुवक्त्रः प्रमाणसंपन्नः कठिनशरीरः क्रोधीजातनरो द्वितीयहोरायां ॥ २५ ॥ रक्तांतदृक्प्रगल्भोगुरुरायतदृष्टिदेहइनभागे जिह्मस्वभावःसुखभागंतेस्थिरसत्वकर्मोच ॥ २६ ॥ स्त्रीमिष्टपानभोजनव स्त्रेप्सुर्वहुविचेष्टकठिनांगः दाताध्वरतोभोगीस्थिरसुहृदश्चैवचांत्यर्धे ॥ २७ ॥ सुकुमारमूर्तिकांतिः सुवाक्सुगीतांगनारतिर्मधुदृक् गांधर्वविद्विनीतः सुभगः पूर्वार्द्धजःषष्ठे ॥ २८ ॥ कन्यांत्यर्द्धेह्रस्वः सेवागांधर्वलेख्यलिपिविज्ञः स्थूल शिरःसविपादःपापार्द्धसुखभाक्सुतीर्थश्च ॥ २९ ॥ वृत्ताननउच्चनसःपटुर्वि लासीधनीसुधीर्मंत्री पीनायतोस्थिसारोधनवान्प्रियसंयुतस्तुलाद्यर्धे ॥ ३० ॥ वहुर्थभाक्स्थिरार्थः श्यामः कुंचितशिरोरुहश्चशठः वृत्ताक्षस्त्वपरार्धेस्वसत्व भिन्नाग्रपादश्च ॥ ३१ ॥

वाला और वडा नम्र और श्रेष्ठभाग्योंवालाहोताहे ॥ २८ ॥ और जो कन्याकी दूसरीहोरामेजन्मता है सो छोटेदेहवाला और सेवा और गायन विद्या और लिखनेकी विद्याके जाननेवालाहोताहै और मोटे शिरवाला और पापकर्के धनकेसुखवाला और श्रेष्ठतीर्थयात्राकरणेवालाहोताहै ॥ २९ ॥ और- जो तुलाकी प्रथमहोरामे जन्मताहै सो गोलमुखवाला और ऊंचीनासिकावाला और चतुरविलासकरणेवाला और धनी और श्रेष्ठबुद्धिवाला मत्री और पुष्ठ विशाल देहवाला और अस्थिसार और धनी और श्रेष्ठमित्रोवाला होताहै ॥ ३० ॥ और जोतुला कीदूसरी होरामे जन्मताहै सो वहुतधनवाला और स्थिरधनवाला और सुंदरदेहवाला और कुडलोंवालेकेशोंवाला औरशठऔर गोलनेत्रोंवाला और अपनेपराक्रमकर्के भेदकोप्राप्तभये पादजिसके अयसा होताहे ॥ ३१ ॥

और जोवृश्चिककीप्रथमहोरामेंजन्मताहैसोलालकोणेवालेपिंगलवर्णके नेत्रोंवालाऔरउत्साहवालाऔर युद्धमेंशूरवीरऔरदुष्टस्वभाववाला औरमित्रकेधनकोंलेनेवाला होताहै ३२ औरजोवृश्चिककीदूसरीहोरामें जन्मताहै सोवडेविशालपुष्टदेहवाला और राजाकीसेवाकरणेवाला और वहुतऋणवालाऔरमित्रोंकर्के युक्तऔर वडेनेत्रोंवाला होताहै ३३ और जो धन की पूर्व होरामेंजन्मताहै सो दलितपृष्ट औरमुख और छातीवाला और हाथीकीन्याई निमीलित नेत्रोंवाला और पुष्ठकपोलोंवाला होताहै और वाल्यावस्थामेंघरके वडेजोहैं तिनोंकात्यागकरकेतपस्वीहोताहै ३४ और जोधनकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सोकमलदलकीन्याई विशालनेत्रोंवाला और वडीलंवियोंभुजोंवाला और शास्त्रार्थकेजाननेवाला और श्रेष्ठनीतिकेजाननेवाला और श्रेष्ठवाणीवाला और धर्ममेंतत्पर और वीशेषकर्केपूर्ण यशवालाहोताहै

रक्तांतपिंगदृष्टिःसाहसवपुरपिरणेशूरः दुष्टस्वभावनामाप्रियार्थभाग्वृश्चिका द्यर्धे ॥ ३२ ॥ विस्तीर्णोपचितायतपीनांगःक्ष्माधिपोपसेवीस्यात् वव्हृणमित्रसमेतःस्फुटिताक्षोवृश्चिकापरार्धेच ॥ ३३ ॥ दारितपृष्ठमुखवक्षाः करिकुंचितनेत्रपीनगंडःस्यात् वाल्येत्यक्तात्मगुरुश्चापाद्यर्धेतपस्वीच ॥ ३४ ॥ पद्मायताक्षोगुरुदीर्घवाहुः शास्त्रार्थवित्सुनीतःस्यात् वाक्सुभगोधर्मपरस्त्वपरेनिभृतो यशस्वीच ॥ ३५ ॥ श्याममृगाक्षोधन्यःस्त्रीष्वजितःसौम्यमूर्तिशठःआद्ये मूढाटनःसुरोषोमृगाद्यभागेतनूच्चनसः ॥ ३६ ॥ रक्तांतदृष्टिरलसस्तनुदीर्घांगोभवतिमूर्खः श्यामोरोमचितांगःसाहसिकोरौद्रकर्माच ३७ स्थिरमित्रलाभसक्तोमृदुसत्वोल्पसुतःसद्गुणःशूरः ताम्रप्रभासुवर्णःपापरतस्ताम्रदृग्घटाद्यर्धे ३८

॥ ३५ ॥ और जो मकरकी पूर्वहोरामेंजन्मताहै सो सुंदरकाले हरिणकीन्याई नेत्रोंवाला औरधन्य और स्त्रीयोंमें नहिंजीत्याजानेवाला और सौम्यमूर्तिः और प्रथमावस्थामेंशठ और मूढ और वहुतभ्रमणेवाला और वडेक्रोधवाला और ऊचीनासिकावाला होताहै ॥ ३६ ॥ और जो मकरकीदूसरी होरामेजन्मताहै सो लालकोणेवालेनेत्रोंवाला और आलसी और सूक्ष्मदेहवाला और लंवेअंगोंवाला और मूर्खहोताहै और नवीनअवस्थावाला और अंगोंमेंरोमोंवाला और हठकर्केक्रूरकर्मोंकेकरणेवालाहोताहै ॥ ३७ ॥ और जो कुंभकीपूर्वहोरामेंजन्मताहै सो स्थिरमित्रतावाला और लाभयुक्त और कोमलपराक्रमवाला और थोडेपुत्रोंवाला और श्रेष्ठगुणोंवाला और शूरवीर औरतावेकीन्याई लालवर्णवाला और लालदृष्टिवाला और पापकर्ममेंरतहोताहै ॥ ३८ ॥

औरजो कुंभकीदूसरी होरामें जन्मताहै सो कृष्णऔरकृशदेहवाला और व्यस्तअंगोंवाला औरशठ और आलसी औरनहिंकिसेकीवातमाननेवाला औरविषादकरणेवालाहोताहै औरतिसकाअंतनहिंपायाजाताहै औरतावेकीन्याई लालनेत्रोंवालाहोताहै ३९ औरजोमीनकीपूर्वहोरामें जन्मताहै सो छोटेदेहवाला औरमोटेसुंदरनेत्रोंवाला औरसुंदरदेहवाला और वडेमाथेवाला और वडीछातीवाला औरस्त्रीकाप्यारा और श्रेष्टयशवाला और क्रियामेंचतुर औरशूरवीरहोताहै ॥ ४० ॥ औरजोमीनकीदूसरीहोरामें जन्मताहै सो श्रेष्टऔरस्थिर औरश्रेष्टबुद्धिवाला औरउदारस्त्रीका औरराजाकाप्याराहोताहै औरसुंदरवाणीवाला और ऊचीनासिकावाला और सुंदरमूर्त्तिवालाहोताहै ॥ ४१ ॥ जिसकेनिषेककालमें वा. जन्मकालमें चद्रमा अथवासूर्य बलीहोयकर्के केंद्रगतलग्नकेस्वामीकोंदेखे तवहोरायथोक्तफलकोंदेतीहै ॥ ४२ ॥ और जवहोराकास्वामीपूर्णवलीहोरामें स्थितहोवे तवहोराकेगुणकोंजातकप्राप्तहोताहै और

असितकृशव्यंगतनुःशठोलसोनैष्कृतीविषादीच घटपरदलेदुरंतोदारिततान्म्रेक्षणःपुरुयः ॥ ३९ ॥ न्हस्वःपृथुचारुतनुर्महाललाटश्चपृथुवक्षः स्त्रीदयितोमीनेर्धेप्रथमेसुयशःक्रियापटुःशूरः ॥ ४० ॥ श्रेष्टःस्थिरःसुमेधाभृतोदारांगनानृपतिदयितः शुभवागुन्नतघोणोझषपरार्धेसुमूर्त्तिःस्यात् ॥ ४१ ॥ चंद्रार्कयोरेकतमोवलिष्टोहोरापतिंपश्यतिकेंद्रगंवा होरायथोद्दिष्टफलप्रदात्रीस्याद्गर्भसंस्थासुसमुद्भवेषु ॥ ४२ ॥ होरापतौपूर्णवलेचहोरेहोरागुणंस्वंलभतेप्रसूतः स्वस्वामियोगेक्षणतःफलंस्याद्भावोद्भवंश्रेष्टमऽतोन्यथान्यत् ॥ ४३ ॥ इतिहोराफलानि ॥ अथद्रेष्काणफलं ॥ द्रेष्काणेकेंद्रगःकुर्यादुच्चस्थोभूपतिंग्रहः स्वक्षेत्रगश्चमूनाथंमित्रगश्चापिवाग्मिनम् ॥ ४४ ॥ दाताहंतादीर्घःक्षयोदयीसंगरप्रचंडः स्यात् प्रियविग्रहास्त्रिभागेमेषाद्येवंधुपूज्यदंडश्च ॥ ४५ ॥ स्त्रीचपलःशास्त्ररतः स्त्रीमित्रार्थभाक्सुवाक्सुतनुः प्रियगीतश्चमनस्वीमेषत्र्यंशेद्वितीयेस्यात् ४६

जिसभावमेंहोरापति भावकेस्वामीकर्के युक्त वा दृष्टहोवे तवतिसभावकाशुभफलहोताहै और भावेश कर्केयुक्तदृष्टनाहिंहोवे तवतिसभावकानेष्टफलहोताहै ४३ ॥ इतिहोराफलम् अथद्रेष्काणकाफलकहतेहै द्रेष्काणचक्रमें उच्चग्रहहोवेसोराज्यप्राप्तकर्ताहे और जोअपनेक्षेत्रमेंग्रहहोवेसोसेनाकापतिकर्ताहै और जोग्रहमित्रकेघरमेंहोवेसोश्रेष्टवाणी कावक्ताकर्ताहे ॥ ४४ ॥ अवप्रत्येकराशिगतद्रेष्काणफल कहतेहै जोमेषकेपूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहै सो दाता औरहर्ता औरक्षयकों औरवृद्धिकों वारंवारप्राप्तहोताहै औरलंवाहोताहै युद्धमेंप्रचडहोताहै मित्रविरोधी औरसंवधियोंमेंउग्रदंडकर्ताहै ॥ ४५ ॥ और जोमेषकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो स्त्रीयोंमेंचपल औरशास्त्रमेंरत और स्त्रीके औरमित्रकेधनकोंभोगनेवालाऔर सुदरवाणीवाला और सुदरदेहवाला और गीतविद्याकाप्यारा और मनस्वीहोताहै ४६

और जोमेषकेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो गुणी और दूसरेकोंदोषकरणेवालाऔर वलपराक्रमकरकेयुक्त और राजाकीसेवाकर्त्ताहै और मित्रोंकात्याग और धर्ममेंवुद्धिवाला और सज्जनोंकेआदरकोंजाननेवालाहोताहै ॥ ४७ ॥ और जोवृषकेपूर्वद्रेष्काण में जन्मताहै सोमित्र औरभोज्यवस्तु औरस्त्रीयोंके वियोगसें संतप्तहोता है और वस्त्रभूषणोंमेंरत और स्त्रीकेस्वभावके अनुसारचलता है ॥ ४८ ॥ और जोवृषकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सोकोमलदेह वाला और स्त्रीके सौ भाग्यवाला और वडाधनी- और रूपवान् और भोगवल करकेयुक्तहोताहै और स्नानमें और भूषणोंमें रतहोताहै और स्थिर और- मनस्वी होताहे ४९ और जो वृषके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो चतुर और चर,और ,स्थिर देहवाला और मानकोंप्राप्तहोताहै और गौर वर्ण और मलीनरहणे वाला और डरणे वाला होता है और धनकरके रहितहोताहै और खोटे ,चरित्रों करके संतापकों प्राप्तहोताहै.॥ ५० ॥ और जो

गुणवान्परदोपकरोवलसत्वयुतोनरेंद्रसेवीस्यात् स्वजनप्रियधर्ममतिस्तृतीयभागेप्रियादराभिज्ञः ॥ ४७ ॥ प्रियमानभोज्यनारीवियोगतप्तोवृपस्यपूर्वेण वस्त्रालंकाररतोयुवतिप्रकृतानुसारीस्यात् ॥ ४८ ॥ सौम्यवपुःस्त्रीसुभगोमहाधनोरूपभोगवलयुक्तः ॥ स्नानविभूपणनिरतः स्थिरोमनस्वी द्वितीयेस्यात् ॥ ४९ ॥ चतुरश्चरस्थिरतनुर्मान्योगौरोमलीनसोभीरुः विगतधनःकुचरित्रैःप्रतप्यतेचवृपस्यांते ५० मिथुनादिकेत्रिभागेपृथूत्तमांगोधनान्वितःप्रांशुः कितवोगुणीविलासीनृपाप्तमानोवचस्वीस्यात् ५१ मृदुसौम्यसुरूपोवपुर्ह्रस्वमुखःसुक्ष्ममूर्धजोनास्यत धन्योमृदुर्महारिर्द्वितीयभागेप्रतापवान्सुयशः ५२ स्निग्धेक्षणोवपुष्मान्महाशिरःशत्रुयुतः प्रांशुःरूक्षनखःकरपादश्चलार्थविभृतोटनस्तृतीयेस्यात् ५३ कर्कटकाद्येभागेदेवब्राह्मणरतश्चलोगौरः कृत्यकरश्चपरेपांसुधीःसुमूर्तिःसुतांगनासुभगः ॥ ५४ ॥

मिथुनके पूर्व द्रेष्काणमें जन्मताहै सो मोटे शिरवाला और धनयुक्त औरलंवेदेहवाला और धूर्त्त और गुणी और विलासी और राजमान कों प्राप्त और अपने वचन के करणे वालाहोताहै ५१ और मिथुनके मध्यद्रेष्काणमेंजोजन्मताहै सोकोमलसुंदररूपवाला और छोटादेह औरछोटेमुख वाला और सूक्ष्मके शोंवाला और सूक्ष्मजंघावालाहोताहै और धन्य और वडे शत्रुयोंवाला और प्रतापी और श्रेष्ठयशवालाहोता है ५२ और जो मिथुनके तीसरेद्रेष्काण में जन्मता है सो स्निग्ध नेत्रों वाला और सुंदरदेहवाला और वडे शिरवाला और शत्रु युत और लंवे देहवाला होताहै और रूक्ष नखों वाला और कठोरपैरों वाला और चलधन कों प्राप्त होताहै और भ्रमणेवाला होताहै ५३ और कर्कके पूर्व द्रेष्काणमें जन्मे तो देवता और ब्राह्मणोंमें प्रीति वाला और चंचल और गौरवर्ण होता है और दूसरे कारर्यकरणे वाला और श्रेष्ठबुद्धिवाला और सुंदर मूर्त्तिः और पुत्रस्त्रीके सुखवाला होता है ५४

श्रोर जो कर्कट के मध्य द्रेष्काण में जन्मताहै सो धनका लोभी श्रोर दानमें रत श्रोर बहुस्वप्न देखने वाला श्रोर स्त्रीजित श्रोर अभिमानी होताहै श्रोर भाइयों करयुक्त श्रोर विलासी श्रोर चपल श्रोर बहुत रोगों वाला होताहै ५५ श्रोर जो कर्कके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो वनमें श्रोर जलोंमें रत होताहै श्रोर विदेशगामीहोताहै श्रोर धन. को प्राप्त होताहै श्रोर साधुहोताहै श्रोर वृथाहि शठता कर्ताहै श्रोर सुगंधादि द्रव्यमें तिसकी रुचि होतीहै ५६ श्रोर जो सिंहके प्रथमद्रेष्काणमें जन्मताहै सो दाता और हर्ता और बहुतधन श्रोर बहुतस्त्रीयों श्रोर शत्रुयोंवालाश्रोर राजाकासेवक श्रोर शत्रुजीतनेकीइछावालाहोताहै श्रोर स्थिर मित्रता श्रोर पराक्रमककेयुक्तहोताहै ॥ ५७ ॥ श्रोर जो सिंहकेदूसरेद्रेष्काणमें जन्मताहै सो श्रेष्टरुचिवाला श्रोर कामी श्रोर दाता श्रोर स्थिरस्वभाववाला श्रोर सुंदरदेहवाला श्रोर भूषणोंकिइछावाला

लुब्धार्थोदानपरःस्वप्नपरःस्त्रीजितोभिमानीस्यात् सहजान्वितोविलासीचपलोवहुरुग्द्वितीयेच ५५ काननतोयानुरतोविदेशगस्त्रीवलोर्थभाक्साधुः कर्कटकांत्यत्र्यंशेवृथाशठोभवतिमाल्यरुचिः ५६ दाताहर्त्तावहुधनदारोरिन्नृपसेवकोरिपुजिगीषुः स्थिरमित्रसत्त्वयुतःसिंहस्याद्यदृकाणेस्यात् ५७ सुरुचिःकामीदातास्थिरोवपुष्मान्विभूषणेप्सुःस्यात् सुखभाक्श्रुतिधर्मरुचिर्विस्तीर्णमतिर्द्वितीयेपि ५८ लुब्धःस्थिरायततनुस्तब्धः परवित्तहृत्सुधीःकितवः सिंहस्यांतेनैकसुतःस्त्रीणांनेष्टःप्रगल्भश्च ५९ सुकुमारतनुःश्यामोमधुदृक्मधुरसुवाक् सुधीःसुनयः स्त्रिभ्योर्थभाग्दृकाणेकन्यायेदीर्घकंठश्च ६० समरोत्कटोविलासीसुतयुग्मुनिसमगतिर्विदेशरतःधीरोव्ययीचाल्पकलाकथारताःषष्ठमध्यांशे ॥ ६१ ॥

श्रोर सुखकों भोगनेवाला श्रोर वेदधर्ममेंरुचिवाला श्रोर बडीबुद्धिवालाहोताहै ॥ ५८ ॥ और सिंहके तीसरेद्रेष्काणमें जोजन्मताहैसो लोभी स्थिर बडेदेहवाला और अनम्र और दूसरेकाधनहरणेवाला और श्रेष्टबुद्धिवाला और धूर्तहोताहै और अनेकपुत्रोंवाला और स्त्रीयोंकों नेष्टफलकरणेवाला और प्रगल्भहोताहै ५९ और जोकन्याकेपूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो सुंदरकोमलदेहवाला और मधुकीन्यांईनेत्रोंवाला और मीठीवाणीवाला और श्रेष्टबुद्धीवाला और श्रेष्टनीतिकेजाननेवालाऔर स्त्रियोंकाधनभोगनेवाला श्रोर लंबेगलेवालाहोताहै ॥ ६० ॥ श्रोर कन्याकेमध्यद्रेष्काणमेंजन्मताहै सो युद्धमें प्रबलहोताहै श्रोर विलासीहोताहै श्रोर पुत्रोंकरयुक्तहोताहै श्रोर मुनियोंकेतुल्यगतिवाला श्रोर विदेशगामीहोताहै श्रोर धीर्यवाला श्रोर बडेखर्चवाला श्रोर थोडीकलाके जानने वाला श्रोर थोडीयों बातांकरणेवाला होताहै ६१

और जो कन्याकेतीसरे द्रेष्काण मे जन्मताहे सो छोटे सुदरदेहवाला और दूसरे केधनकों भोगनेवाला और गायनमें प्रीतिवाला और वडेनेत्रोंवाला और राजाकीआज्ञामान नेवाला और त्यागी और स्थिरस्वभाव वाला और सुंदररूपवाला और तीव्रस्वभाववाला होताहे ॥ ६२ ॥ और जो तुलाके पूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहे सो नवीनअवस्थावाला और सेवाकर्के कलाकों प्राप्तहोनेवाला और व्यापारमेंचतुर और बुद्धिवालाहोताहे और मंत्रके जाननेवाला और कामदेव-कीन्याईरूपवालाहोताहे ॥ ६३ ॥ और जोतुलाके मध्यद्रेष्काणमें जन्मताहे सो कमलदलकी न्याईवि शालनेत्रोंवाला और सुंदररूपवाला और राजाका मित्रहोताहे और बहुतबातांकर्ताहे और प्रसिद्धहोता है और अपनेवंशकोवधावताहे और बहुतचाकरोंवाला और चतुरहोताहे ॥ ६४ ॥ और जोतुला केतीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहे सोनष्टमित्र और नष्टधन और नष्ट यशवाला और थोडीबुद्धिवाला और

नतसुतनुःपरधनभाग्गीतरतिःपृथुदृगवनिपाभिमतः त्यागीस्थिरःसुरूपश्चेंडाक न्यांत्यदृकाणे ६२ श्यामःसेवाप्तकलापण्यानियोगेपुनिपुणबुद्धिःस्यात् मंत्रज्ञः स्मररूपस्तुलादिमेभवतिदृक्काणे ६३ पंकजविशालनेत्रःसुरूपवान्नृपसखःप्रला पीस्यात् ख्यातःस्ववंशवर्धितवव्हानुचरःपटुर्द्वितीयेच ॥ ६४ ॥ चपलःशठोकृ तघ्नोविरूपजिव्होपचारतनुमूर्तिः नष्टसहृत्द्रविणयशःस्वल्पमतिःपाथिरतस्तृती येस्यात् ॥ ६५ ॥ गौरःस्थिर;प्रचंडोरणोत्कटःस्यान्नरोविशालाक्षः स्थूलविशा लशरीर.कलिप्रियोवृश्चिकाद्यंशे ॥ ६६ ॥ मिष्टान्नपानचतुरश्चलेक्षणोहेमगौरमू र्तिःस्यात् कांतःपरवित्तयुताऋजुक्रियावान्द्वितीयांशे ॥ ६७ सुभुजोमधुपिंगाक्षो महोदरःश्मश्रुरोमरहितश्च सहजवियुतःप्रहर्ताहिंस्रःकृष्णोलिनस्तृतीयेंशे ६८

मार्गमेंरतहोताहे और चपलऔर शठ और कृतघ्न और रूपकर्केरहित और छोटेदेहवालाहोताहे ६५ और जोवृश्चिककेपूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहे सो गौरवर्ण और स्थिरस्वभाववाला और वडाप्रचंड और युद्धमें तकडा और विशालनेत्रोंवालाहोताहे और वडेमोटेदेहवाला और कलहकेकरणेवाला होताहे ६६ और जेवृश्चिकके मध्यद्रेष्काणमें जन्मताहे सोमिष्टान्नपानमें चतुरहोताहे औरचंचलनेत्रोंवालाहोताहे औ रसुवर्णकीन्याई गौरवर्णवालाहोताहे और सुंदर और दूसरे केधनकर्केयुक्तहोताहे और सरलक्रियावाला होताहे ॥ ६७ ॥ और जोवृश्चिककेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहे सोश्रेष्ठभुजोंवाला और मधुपिंगलनेत्रों वाला और वडेउदरवाला और थोडीदाढीवाला और भाईयोंसेंरहित और हरणेवाला और मारणे वाला और कालेवर्णवालाहोताहे ॥ ६८ ॥

डोर जोघनके पूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहे सो गोलनेत्रोंवाल और गोलछातीवाला और गणोंमे प्रधान और धनी होताहे और अपने साधु आचारमें युक्त और कोमल हृदय वाला होताहे ६९ और जो धनके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो शास्त्रार्थके जाननेवाला और वक्ता और सैकडेहि यज्ञ करणेवाला और ऐश्वर्यवाला होताहे और मंत्रियोंमे वडाश्रेष्ट और अनेकतीर्थ और देवस्थानों में विचरणे वाला होताहे ७० और जोधनके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहे सो वंधुयोंमें प्रधान और चतुर और श्रेष्ठजनोंकी गतिकास्थान और धर्मी होताहे और मानी और परस्त्रीकोंनाहिं सेवनेवाला और रूप और यशकापात्र और वडाश्रेष्ट होताहे ७१ और जोमकरके पूर्वद्रेष्काणमें जन्मताहे सो विशेषकर्के लंवीयोंभुजोंवाला और कोमलस्वरूपवाला और वडेनेत्रोंवाला और वडेपट्टोवाला और शठ और श्रेष्ठ जनोंका स्वामीहोताहे और हास्यकर्के संयुक्तबोलनेवाला और

परिमंडलाक्षिवक्षागणेपुमुख्योधनीत्रिकोणाद्ये स्वोचितसाध्वाचारस्तथामृदुर्भवति सःजातः ॥ ६९ ॥ शास्त्रार्थवित्प्रवक्ताक्रतुशतकर्त्ताविभुर्द्वितीयेस्यात् मंत्रभृतां श्रेष्ठतमस्त्वनेकतीर्थायतनचारी ॥ ७० ॥ वंधुप्रधानचतुरःसतांगतिर्धर्मभाक्तृतीयेपि मानीपरांगनाऽभाक्रूपयशोभाजनंविजिष्णुश्च ॥ ७१ ॥ व्यालंवभुजःश्यामःपृथुनयनोरूशठःसुकांतःस्यात् स्मितभापीमकराद्येस्त्रीप्वजितोवल्गुचेष्टधनयुक्तः ७२ श्यामःशठोल्पवचनःचलःपरस्त्रीधनापहर्त्तास्यात् उद्वद्धजंघःपिशुनोदुरुक्तवादःप्रवासशीलश्च ७३ मृगमध्येइतिशेपः ॥ घोणाललाटशोभनकलुपःकृशदीर्घःपितृवियोगीच लभतेविदेशगमनात्प्रायोव्यसनानि चाप्यंते ७४ स्त्रीमानरतःप्रांशुःस्थिरकर्मासुखरतोधर्मोरिपुमान् कुंभादिमेद्दकाणेप्रियंगुकुसुमप्रभोभवति ७५

स्त्रीयोंमें अजित और सुंदरचेष्टावाला और धनीहोताहे ७२ और जोमकरकेमध्यद्रेष्काणमें जन्मताहे सो कोमलदेह और शठ और थोडावोलनेवाला और चलचित्त और परस्त्री और परधनकेहरणेवाला होताहे और जंघामेंवंधनवाला और चुगल और दुष्ट वचनकहनेवाला और प्रवासीहोताहे ७३ और मकरकेतीसरेद्रेष्काणमें जन्मताहे सोसुंदरनासिका और सुंदरमस्तकवाला होताहे और पापी और कृशदेहवाला और पिताकेवियोगवालाहोताहे और विदेशयानेसें व्यसनोंकों प्राप्तहोताहे ७४ और कुंभकेपूर्वद्रेष्काणमें जोजन्मताहे सोस्त्रीकेमानमेरतहोताहे और लंवेदेहवालाहोताहै और स्थिरकर्मकरणेवाला और सुखमेरत और अधम और शत्रुयोंवाला होताहै और तिसका देहलालवर्णकाहोताहे ७५

और कुंभकेमध्यद्रेष्काणमें जन्मेसोवहुतहास्यक्रीडाकरणे-वाला और श्रेष्टवाणीवाला और श्रेष्टच रित्रकरणेवालाहोताहै और गंधर्वविद्याकाप्यारा और लोभी और मधुपिंगलनेत्रोंवाला और साम र्थवालाहोताहै ७६ और जोकुंभकेतीसरेद्रेष्काणमेंजन्मताहैसो लंवा और शठ और प्रलापकरणेवाला और कृशदेहवाला और छोटियांभुजावाला और श्रेष्ठधनकोंप्राप्तहोनेवाला और अनम्रहोताहै और वहुतझूठकहनेवाला और अंतःकरणमें कपटी और वडेनेत्रोंवाला और रतिकेजाननेवालाहोताहै ७७ और जोमीनकेपूर्वद्रेष्काणमेंजन्मताहै सोगौरवर्ण औरमधुकीन्याईंनेत्रोंवाला और श्रेष्टवुद्धिवाला और कृतज्ञहोताहै और ज्ञानक्रियामेंरत और सुखी. और नम्र और प्रसिद्धहोताहै ७८ और जो मीनके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो धनी योंके उपचारकों जानने वाला और धनकों

रतिहास्यघनोघटधरमध्येचोत्कृष्टवाक्सुचरित्रकरः प्रियसंगीतोलुब्धोमधु गौरः पिंगदृक्समर्थश्च ७६ दीर्घः शठः प्रलापीकृशोल्पवाहुः सतार्थभाक्स्त ब्धः वव्हनृतोंतर्विषमोविदारिताक्षोरातिविदंत्येच ७७ मीनाद्येदृकाणेगौरोम धुदृक्सुधीः कृतज्ञश्च ज्ञानक्रियारतिनिरतः सुखीविनीतः सुवाक्ख्यातः ७८ धनिनोपचारवेत्तापरधनभुङ्मिष्टमन्नमाकांक्षी मुखरःस्वजनानुमतोज्ञानीज्ञप मध्यमत्र्यंशे ७९ श्यामः पृथुकरपादः सदन्नपानः सुहृद्वरश्चापि हास्यकला. विभिष्टोप्रियोज्ञपांत्येचदृकाणे ८० इतिरितोयंस्वगुणस्वभावै द्रेष्काणका. नांगुणाचिन्हकल्पः द्रेकापतौवीर्यवतीष्टदृष्टेद्रेकाफलंनिर्विकलंविदध्यात् ८१ इतिद्रेष्काणफलम् ॥ अथसप्तांशफलं ॥ सप्तांशेवंधुसंज्ञाचेति ॥ सप्तांशल ग्नात्सहजाधिनाथः क्रूरोथसौम्यः शुभपापदृष्टः पापैर्निजभ्रातृभिर्हीनएवसौ म्यै र्वहुभ्रातृयुतोनरः स्यात् ॥ ८२ ॥

भोगने वाला और मीठे अन्नकी इच्छावाला और मुखर और संवंधियोंको सलाह वाला और ज्ञा- नीहोताहै ७९ और जो मीनके तीसरे द्रेष्काणमें जन्मताहै सो कोमल देहवाला और वडे हाथ- पेरों वाला और श्रेष्ट अन्नपानकरणेवाला और मित्रोमें श्रेष्ट होताहै और हास्यकलाके जानने वा- ला होताहै ८० और इहे कहाजो द्रेष्काणोंका फलस्वभाव गुण चिन्हों कर्के जव द्रेष्काणका- स्वामी वलवान् होवे और मित्र ग्रहोंकर्के देख्या होवे तव पूर्ण फल होताहै ८१ इतिद्रेष्काणफ- लानि ॥ अवसप्तांशकाफलकहतेहैं ॥ सप्तसचक्रमें भ्राताकाविचार करणा कहाहै सप्तांशलग्नसें तीसरे घरकास्वामी क्रूरग्रहहोवे अथवाशुभग्रहहोवे शुभदृष्ट युक्त अथवा पापग्रहों कर्के दृष्टयुक्त हो- वे जवपापग्रहोंकर्केदृष्टयुक्तहोवे तव भ्रातृ हीन होताहै और शुभग्रहों कर्के दृष्ट युक्त होवे तव वहुतयों भाईयों कर्के युक्तहोताहै ८२

अवप्रत्येकराशिमेंसप्तांशफलकहतेहैं ॥ वक्ष्यमाणपड्वल मेंचंद्रमा वलीहोवे तव चंद्रमाकी राशिसें और लग्नवलीहोवे तव लग्न सें सप्तांशफल मेषादि राशियोंमें सप्तांशके क्रमकर्के स्वरूप और लक्षण जो जन्मकालमें पुरुषोंके यवनाचार्योंनेंकहे हें सो मैं कहताहां ८२ जोमनुष्य मेषके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो छोटीदाढीवाला और वडाप्रचंड और लालनेत्रों वाला और लडाई कर्ने में श्रेष्ट होताहे और युद्धकरणे वाला और चोरी करणे वाला और कृश देहवाला होताहै. ८३ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो भारे माथेवाला और गंडस्थलोंवाला और वडेमुखवाला और छोटे माथे वाला और सुंदर ठोडीवाला और सुंदरदाढिवाला होताहै और भोगमें और दानमेंरतहोताहै और वडेपुष्टमोंडयों वाला और गूढसंधियोंवाला और कृशसंधियोंवाला होताहे ८४ और जो तीसरेसप्तांशमें जन्मताहै सो चतुराई और चोरी और लडाई पापकर्के युक्त होताहे और लिखने वाला और शास्त्रके जानने वाला और कामी होताहै और सुदर रूपवाला और भ्रमणे वाला और वक्ता और कोमल देहवाला होताहै ८५ और जो चतुर्थ सप्तांशमेंजन्मताहै सो मोटे, नेत्र और कपोला और उदर और मोटेहाथों वाला होताहे और गौरवर्ण होताहे और भारा होताहै और धर्ममें रत होताहै और सुगंधवस्तूयोंमें और स्नान और भूषणों में प्रीतिवाला होताहै ॥ ८६ ॥

अथपृथक्सप्तांशफलानि गृहेगृहेचंद्रविलग्नयुक्तैःसप्तांशकैराकृतिलक्षणानि योनिप्रसूतौयवनैःपुराणैः स्मृतानिपुंसांकथयामितानि । ८२ । तनुमुखकूर्चश्चंडोरक्तांताक्षःकलिक्षताग्र्यश्च रणकर्मचौर्यनिरतःकृशःक्रियेपूर्वसप्तांशे ८३ पृथुभालगंडमुखोन्हस्वललाटःसुजत्रुकःशुभहक्पृथुपीनांशनतपर्वोद्वितियभागे कृशांशसंधिश्च । ८४ । दाक्षिण्यचौर्य्यविग्रहपापाढ्योविलेख्यशास्त्रवित्कृशः कामी कांतोटनःप्रवक्ताऽयामोमेषेत्तृतीयसप्तांशे । ८५ । पृथुनयनकपोलोदर पाणिगौरोगुरुश्चधर्मरतः ॥ माल्यस्नानविभूषणरतःक्रियेतूर्यसप्तांशेः ८६ । ताम्रद्युतिःप्रचंडो वृहद्भुजभ्रूशिरोललाटनसः अजपंचमसप्तांशेशूरस्ताम्रांतमध्वक्षः ॥ ८७ ॥ आयतमूर्तिर्गौरः कांतपृथुमधुविलोचनोधनवान् शुभवाग्वुद्धिर्ज्ञानी स्वधीतविद्योजषष्टसप्तांशे ॥ ८८ ॥

और जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो तावेकीन्याई काति वाला और प्रचंड और वडीभुजोंवालाऔर-वडीभ्रुवोंवाला और वडाशिर और वडे मस्तक और वडी नासिकावाला और लालकोणेवाले मधुवर्णके नेत्रोंवाला होताहै ॥ ८७ ॥ और जोछठेसप्तांशमे जन्मताहै सो विशालदेह और गौरवर्ण और सुंदरमोटेमधुवर्णके नेत्रोंवाला और धनी होताहै और श्रेष्टवाणी और वुद्धिवाला और ज्ञानी और विद्याकोंपढलेणेवाला होताहै ॥ ८९

और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटी और लंबी औरकाली मूर्तिवाला होताहै औरलडाईका प्यारा और भिन्ननख और दंत और विरले शिरकेवाल तिसके होतेहै और कठोरवाणीवाला औरप्रगल्भ और चुगल होताहै ॥ ८९ ॥ इतिमेषस्थ ॥ और जोवृषके प्रथम सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटे मस्तकवाला और मोटे गंडस्थलोंवाला और वडीछातीवाला और वडे मोंढयोंवाला और वडे पट्टोंवाला और वडीयों भुजोवाला और कोमल देहवाला होताहै और सूक्ष्म केशोंवाला और टेढी दृष्टिवाला होताहै ॥ ९० ॥ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्मता है सो स्निग्धकांतिवाला औरविशाल दृष्टिवाला औरमीठा बोलनेवाला और सुंदरनेत्रोंवाला सुंदरदेहवाला और कामी और विशेषकरकेज्ञानमें और कलामें रत होताहै ॥ ९१ ॥ और वृषके तीसरे सप्तांशमें-जोजन्मताहै सोचतुर और पीत गौर वर्ण और कोमल दृष्टिवाला और श्रेष्ठभागोंवाला और रति

पृथुदीर्घासितमूर्तिः कलिप्रियोभिन्ननखरदाश्चकेशाग्रः निष्ठुरवाक्प्रगल्भो पिशुनोजेसप्तमेभागे ८९ इतिमेषः पृथुभालगंडवक्ष स्कंधकपोलोरुवाहुकःश्यामः अतिसूक्ष्मकचोव्यस्ते क्षणोवृषेप्रथमसप्तांशे ९० स्निग्धद्युतिरायतदृङ्मधुरवचनश्चारुलोचनःसुतनुः कामीविज्ञानकला निरतोवृषेद्वितीयसप्तांशे ९१ प्राज्ञश्चपीतगौरो मृगदृक्सुभगोरतिप्रियोदाता मृदुतनुकचोवचश्वी वृषत्रितीयेचसप्तांशे ॥ ९२ ॥ उच्चमुखगंडघोनो धनभाक्स्फुटदृक्पृथुवचोगौरः रक्तनखोभिन्नकटिःखरोवृषभस्यतूर्यसप्तांशे ॥ ९३ ॥ ताम्राभ्रपिंगलाक्षः सुकुमारस्तीक्ष्णवाक्परस्वेछुः मृतदारोरोगीगविसप्तांशेपंचमेभवति ९४ पृथुकर्णायततनु रसितदृगुन्नतसक्रियादक्षः अभिमानीगविषष्ठे सप्तांशेह्यापदार्त्तश्च ॥ ९५

काप्यारा और दाता और कोमल देह और छोटेकोमल केशोंवाला और अपनीवाणीकों प्रमाणकरणेवा ला होताहै ॥ ९२ ॥ और वृषके चतुर्थ सप्तांशमें ऊचामुख और गंडस्थल और नासिकावाला होताहै और धनी और स्पष्टदृष्टिवाला और मोटी वोलीवाला और गौर वर्ण-और लालनख और टेढेलकवालाहोताहै और कठोरदेहवालाहोताहै ॥ ९३ ॥ और जोपंचम सप्तांशमें जन्मताहे सो तावेकीन्याई लालरंगका जोवादर तिसकीन्याई पिंगलेनेत्रोंवाला-और सुकुमारमूर्ति और तीक्ष्णवाणीवाला और दूसरेकेधनको इच्छावाला होताहै और स्त्रीतिसकी मरजातीहै और रोगी होताहै ॥ ९४ ॥ और वृषकेछठे सप्तांशमे जो जन्मताहै सोतिसकेकर्णपर्यंत सुंदरविशालनेत्र और कार्य करणेमें चतुरहोताहै औरअभिमानी और आपदाकरपीडित होताहै ॥ ९५ ॥

औरजोसातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो भ्रांतकीन्याई मुख और श्वेतकोणेवालेनेत्र और कोमलदेह और कृशदेहवाला और शूरवीर और लोभी और क्रोधी और वक्ता और चंचल और थोडेपराक्रमवाला और भ्रमणेवाला और शठहोताहै ॥ ९६ ॥ इतिवृषस्य ॥ और जो मिथुनके पूर्वसप्तांशमेंजन्मताहै सो ज्ञानी और कवि और अपना किहा करणेवाला और कोमल सुंदर देहवाला और पवित्र और विलासी और प्रीतिमेंऔर गीतमें रत और प्रसिद्धहोताहै ॥ ९७ ॥ और दूसरे सप्तांशमें धनी और मोटा और गौर वर्णके देहवाला होताहै और मोटे नेत्रोंवाला और चतुर होताहै और आलसमेंप्रीतिवाला और कोमल होताहै और गायन विद्यामें और धर्ममें रतहोताहै ॥ ९८ और तीसरे सप्तमांशमें वडेलालनेत्रोंवाला और विशाल मुखवाला और वडी ठोडी वाला और उदार कर्मोंके करणेवाला और शूरवीर और हरणेवाला और वक्ता और हास्ययुक्त होताहै ॥ ९९ ॥

गौत्यांशेभ्रांतमुखः सितांतदृक्श्यामकृशतनुःशूरः ॥ लुब्धःक्रोधी वक्ता चलोल्पसत्वोटनश्चशठः ॥ ९६ ॥ इतिवृषः ॥ ज्ञानीकविर्वचस्वी श्यामःकांत.शुचिर्विलासीच रतिगीतरतःस्यातो मिथुनादिमसप्तमांशेस्यात् ९७ धनवान्पृथुगौरतनुः पृथुदृक्प्राज्ञःप्रियालसश्चमृदुः संगीतधर्मनिरतो द्वितीयसप्तांशकेमिथुने ॥ ९८ ॥ पृथुदृक्ताम्रविदारित मुखोमहाहनुरुदारकर्मा च शूरोहर्त्तावक्ता प्रहसोमिथुनतृतीयसप्तांशे ९९ ॥ आयततनुःसुदृक् श्यामःपण्येप्रयोगमार्गपटुः शूरःसुभगःसम्मितवाग्मिथुनेचतुर्थसप्तांशे १०० रक्तनखाधरनेत्रश्चंडोवक्ताविभक्तभुजः रतिचौर्यकुटलकृत्पंचमसप्तांशकेमिथुने ॥ १०१ ॥ गुर्वायतगौरतनुःस्वक्षनसःशास्त्रकाव्यधर्मरतः मधुरःसुधीर्विशिष्टः षष्ठेसप्तांशकेमिथुने ॥ १०२ ॥ स्त्रीशस्त्यकथाद्यूताल्पसत्वरोगाध्वभाक् लोमिथुने युतसस्निग्धसमासितदीर्घागोंत्यसप्तांशे १०३ इतिमिथुनः

और जो चतुर्थ सप्तांश में जन्मताहै सो विस्तृत देहवाला और सुंदर दृष्टिवाला और कोमल रूप और व्यापार मार्गमेंचतुर और शूरवीर और श्रेष्ट भागोंवाला और थोडावोलनेवाला होताहै ॥ १०० ॥ और पंचम सप्तांश में लालनख और लालओंठ और लालनेत्रोंवाला और प्रचंड और वक्ता और शिथल भुजोंवाला होताहै और रति और चोरी और कुटिलताके करणे वाला होताहै ॥ १०१ ॥ और जो छठें सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे विशाल नेत्रोंवाला और गौरवर्णवाला और सुंदर नासिका वाला और शास्त्रोंमें और काव्योंमें और धर्ममें रत होताहै और मीठी वोलीवाला और श्रेष्ट वुद्धिवाला होताहै ॥ १०२ ॥ और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो श्रेष्ट स्त्रीकथा और जूएमें रत और थोडे पराक्रमवाला और रोगयुक्त और मार्गमें भ्रमणेवाला और स्निग्धवर्ण और श्यामरंग और लंबेअंगोंवालाहोताहै ॥ १०३ ॥ इतिमिथुनस्य

॥ और कर्कके प्रथम सप्तांशमें जन्मेतो बहुविस्तृत केश और पट्ट और छाती वाला और लंबेदेह वाला और वर्तुल देहवाला और पंडित और वडिवस्तिवाला विशाल नेत्रोंवाला और लंबीयों भुजोंवाला होताहै ॥ १०४ ॥ और जोदूसरे सप्तांशमें जन्मे तो मोटेओष्ट और गल्हांऔर कंठवाला और शूरवीर और तांवेकी न्याईंलालकांतिवाला और कृश और उन्नत और प्रफुल्लत कमलकीन्याईं मुख और पिंगले नेत्रोंवाला होताहै. ॥ १०५ ॥ और तीसरे सप्तांशमें विद्वान् और सूक्ष्म देहवाला और विशाल दृष्टिवाला और संगीतार्थके जानने वाला और कविःऔर चतुर और कोमल देहवाला और सुंदर होताहै- ॥ १०६ ॥ और जो चतुर्थसप्तांशमेंजन्मताहै सो मोटे नेत्रोंवाला और कोमल और सूक्ष्मकेशोंवा

उपवि तत्कचोरुवक्षाःश्यामःप्रांशुःसुवृत्तधीरश्च वस्त्यायतदृक्कार्किणि दीर्घभुजःप्रथमसप्तांशे ॥ १०४ ॥ स्थूलोष्टगंडकंठः शूरस्ताम्रद्युतिःकृशः प्रांशुः ॥ प्रहसोजास्यःपिंगाक्षः कुलीरराशेर्द्वितीयसप्तांशे १०५ विद्वांस्तनुरायतदृक्संगीतार्थविदःकविश्चतुरः कार्किणिमृदुस्तृतीयेसप्तांशेभवतिसुकुमारः १०६ पृथुदृग्मृदुसूक्ष्मकचःस्वतोलसःसुघोणश्च ॥ गीतज्ञोलंवभुजः कार्किणिसप्तांशकेचतुर्थेच १०७ उद्गंडघोणस्ताम्रःकृशतनुपिंगदृक्शूरः ॥ अन्यस्त्रीछुःकार्किणी पंचमसप्तांशकेलग्नात् १०८ दीर्घास्याक्षिनसःपृथुकर्णोमान्यश्चवंधुभिर्गौरः ॥ सुतनुर्मतिवचनकर्मा कार्किणिसप्तांशकेषष्ठे १०९ खरवाक्केशक्लेशोदीर्घकृशासिततनुःखलस्त्वटनः ॥ तीव्रदृगुन्नतनसःकार्किणिसप्तांशकेप्रांत्ये ११० इतिकर्कटः

ला और आलसी और सुंदर नासिका वाला और गीतके जाननेवाला और लंबीयों भुजो वाला होताहै ॥ १०७ ॥ और जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो ऊचे गंडस्थल और ऊची नासिकावाला और लालवर्ण और कृशदेहवाला और पिंगल दृष्टिवाला और शूरवीर और दूसरेकी स्त्रीकी इछावाला होताहै ॥ १०८ ॥ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो लंबेमुख और लंबे नेत्रोंवाला और लंबी नासिका वाला होताहै और बडेकर्णोंवाला और बंधुयोंकेमान्य औरगौर वर्ण और सुंदरदेहवाला औरवुद्धिसेंकहने वाला वुद्धिसें कर्मकरणेवालाहोताहै १०९ और कर्कके सप्तांशमें जन्मेतो कठोरवाणी और केशोंमें क्लेशवाला और लंबा और कृश और कालेदेहवाला होताहै और दुष्ट और भ्रमणेवाला और तीक्ष्ण दृष्टिवाला और ऊचीनासिका वाला होताहै ॥ ११० इतिकर्कटस्य

उौर जो सिंहके पूर्व सप्तांशमें जन्मे तो लालदेह उौर लाल नेत्रों वाला-होताहै उौर लंवा उौर प्रचंड उौर चतुर उौर वडीनासिकावाला उौर अस्थिसार उौर खर-रोमोंवाला होताहै ॥ १११ ॥ उौर जो सिंहके दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे तीक्ष्णनखों-वाला उौर लंवा उौर वक्ता उौर ढीठ उौर शास्त्र उौर शस्त्रोंके उपचार उौर नीतिके जानने वाला होताहै ॥ ११२ ॥ उौर जो सिंहके तीसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो वडे पुष्टदेहवाला उौर विशाल देहवाला उौर वडे माथे वाला उौर वडे नेत्रों वाला उौर वडे शिरवाला उौर धनसंचयकरणेवाला होताहै उौर धैर्य उौर पराक्रम उौर स्त्रीकर्के युक्तहोताहै ॥ ११३ ॥ उौर जो सिंहके चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो लडाई करणे वाला उौर खोटे स्वभाववाला उौर चंड और टेढी दृष्टिवाला उौर कवि-उौर सुखी उौर वडे उंचेदेहवाला उौर लालावर्ण वाला पुष्ट देहवाला उौर थोडे पराक्रमवाला होता

रक्तांगाक्षोदीर्घश्चंडः सुपटुःप्रवृद्ध घोणश्च सिंहादिमेस्थिसारःसप्तांशेतुंगखररोमः ॥ १११ ॥ अभ्युन्नत तीक्ष्णनखोदीर्घोवक्ताद्वितीयसप्तांशे धृष्टोर्थशास्त्रास्त्रोपचारनयाविद्भवेत्सिंहे ॥ ११२ ॥पृथुपीनायतदेहःपृथुभालाक्षशिरोर्थसंचयकः धृतिसत्त्वदारसंहितोहरेस्तृतीयेचसप्तांशे ॥ ११३ ॥ कलिदु.शीलश्चंडः केकरदृक्कविःसुखीनात्युच्चः रक्तघनतनुरसत्त्वःसिंहस्यतुरीयसप्तांशे ॥ ११४ ॥ सोत्साहवाक्स्थिरयशो मानप्रतापयुक्सुदृशः हरिपंचमसप्तांशे गौरोनाप्टथुशिरालश्च ॥ ११५ ॥ शिशिरायतवृत्ततनुर्ह्रस्वाल्पदृगोनरोत्यटनः हरिषष्ठेसप्तांशेन्यासेविहितः सुदीर्घघोणश्च ॥ ११६ ॥ मृदुरुन्नतगौरांगःप्राज्ञोल्पनसोल्पवाक्सुवेषश्च सिंहांत्येसप्तांशेगीतस्त्रीरतःकांतः ॥ ११७ ॥ इतिसिंहः॥ कन्यादिमसप्तांशे वाग्मी

प्राज्ञःसुधीर्विनीतश्च आयतदृक्तनुश्यामो निभृतःसमवंशघोणःस्यात् ॥ ११८

है ॥ ११४ ॥ उौर जो पंचम सप्तांश में जन्मता है सो उत्साहवाली वाणी वाला उौर स्थिरयशवाला उौर मान प्रताप कर्के युक्त उौर सुंदर दृष्टि वाला उौर वडे शिरवाला होताहै ॥ ११५ ॥ उौर जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो शीतल उौर विशाल गोल देहवाला उौर आयकोन्याई छोटेनेत्रों-वाला उौर भ्रमणे वाला उौर न्यासकर्ममें श्रेष्ठ उौर वडी नासिकावाला होताहै ॥ ११६ ॥ उौर जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो कोमल उौर ऊंचे गौरवर्ण के अगों वाला उौर चतुर उौर छोटीनासिकावाला उौर श्रेष्ठ वाणीवाला उौर सुंदर वेशवाला उौर गीत में उौर-स्त्रीमेंरत उौर सुदर होताहै ॥ ११७ ॥ इतिसिंहस्य ॥ उौर जो कन्याके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो-वक्ता उौर चतुर उौर श्रेष्ठ वुद्धिवाला उौर नम्रहोताहै उौर विशाल दृष्टि वाला उौर सुदर कोमल-देहवाला परिपूर्ण उौर समवंश उौर समान नासिकावाला होताहै ॥ ११८ ॥

उौर जो दूसरे सप्ताशमें जन्मता है सो पुष्ट पद उौर वश उौर भुजा उौर उदर वाला उौर अपने बचनकोंप्रमाणकर ऐवाला उौर कोमल उौर परि पूर्ण मुख उौर सुकुमार उौर रति में आसक्त होताहै ११९ ॥ और जो ती सरे सप्ताशमें जन्मताहै सो अभिमान वाले कुटुवमें जन्मता है उौर चोरीकरताहै लाल देह और चचलनेत्रोंवाला होताहै और छोटे रोम और मुख और अल्प चित्तवाला होताहै ॥ १२० ॥ उौर जो चतुर्थसप्ताशमें जन्मता है सो शिल्प उौर वेद धर्मशास्त्रादि कर्मोंके करणे वाला उौर वडी ठोडी उौर वडे मोंडे उौर वडे शिर वाला उौर चतुर होताहै उौर दान करणेकी रुचि वाला उौर प्रकट धनवाला उौर स्फुटवक्ता होताहै १२१ उौर जो पचम सप्ताशमें जन्मताहै सो आलसी उौर भययुक्त वाणी वाला उौर क्रोधी उौर पुष्टठोडी वाला उौर लंवे मुखवाला उौर नाडीयों वाले देह वाला उौर हरिणकी न्याई नेत्रों वाला होताहै १२२ उौर जो छठे सप्ताशमे जन्मता

पीनोरुवंशभुजोदरोवचस्वीमृदुस्तुपूर्णमुखः सुकुमारोरतिसक्तोंगनाद्वितीयेच सप्तांशे ॥ ११९ ॥ अभिमानकुटुंवस्तेयरतोरक्तगात्रदृक्चपलः तनुरोमोच्चकमुखोल्पकचित्तःकन्यातृतीयसप्तांशे ॥ १२० ॥ शिल्पश्रुतिमुखकर्मामहाहनुस्कधदृक्शिरःप्राज्ञः दानरुचिस्फुटधनवा कन्यासप्तांशकेतूर्य्ये १२१ कन्यापंचमसप्तांशेनरोलसोभीरुवाक्क्रोधी पीनहनुर्दीर्घमुखःस्नायुतनुर्मृगदृक् १२२ पूर्णैश्वर्यसमेतोदृढश्रुतिवचनेरतोधर्मी कन्याषष्ठेसप्तांशेकृष्णाक्षोवक्रमायतभ्रूः १२३ तनुपिंगकचोमध्वायतदृक्स्थूलोष्टगंडगलदंष्ट्रः उग्रःक्रुद्धस्ताम्ररुचिः कन्यायाःसप्तमांशेंत्ये ॥ १२४ इतिकन्या ॥ पद्माक्षउच्चघोण स्तरुणांकुरसन्निभःसुदृक्सुतनुः वक्ताधनार्जनज्ञ स्तुलादिमेसप्तांशेसुधर्न्निभृत् १२५ वृत्तास्यःकृषिकर्माध्वनिरतोन्नतनसोष्ठः हिंस्रोरक्तश्यामस्तुलाद्वितीयेचसप्तांशे १२६

है सो पूर्ण ऐश्वर्य करके युक्त होताहै उौर दृढता करके वेद वचनोंमें रत और धर्मी होताहै और श्याम नेत्रोंवाला उौर विशाल मुख उौर विशाल टेढीयों भ्रुवों वाला होताहै १२३ उौर जो सप्तम नवाशमें जन्मताहै सो छोटे छोटे पिंगले केशों वाला और मधुवर्णके विशाल नेत्रोंवाला और मोटे उोष्ट और गंडस्थल और गल और दाढों वाला और उग्र और क्रोधी और तावेकीन्याई प्रभा वाला होताहै १२४ ॥ इतिकन्यायाः ॥ और जो तुलाके पूर्वसप्ताशमें जन्माताहै सो कमलकीन्याई मुख वाला और ऊचीं नासिका वाला और नवीन अंकुरकीन्याई कोमल और दृढ सुदर देह वाला और वक्ता और धन उत्पन्न कर जानने वाला और मनुष्योंके पालने वाला होताहै १२५ और जो दूसरे सप्ताशमें जन्मताहै सो गोल मुखवाला और खेतीके करणेवाला और मार्गमें रत और ऊची नासिका वाला और ऊचेउोठों वाला और हिंसाकरणे वाला और रक्त श्याम वर्णवाला होताहै १२६

और तीसरे सप्तांशमें धर्मके जानने वाला और धन, उत्पन्न करणे वाला और शस्त्र और अ-स्त्रोंकी विद्या जानने वाला और ऊंची नासिका वाला और वडे केशों वाला और मोटे मुखवाला और मोटे नेत्र और मोटे देह वाला होताहै १२७ और जोचतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो काले रंग-वाला और कठोर स्वर वाला और कठोर अंगों वाला और लंबे मुख वाला और चपल और उग्र कर्मा और उलटे नखों वाला होताहै १२८ और जो पचम सप्तांशमें जन्मताहै सो श्रेष्ठ भ्रुवों वा-ला और श्रेष्ठ मुख वाला और सुंदर नेत्रों वाला होताहै और कोमल सुंदर देह वाला होताहै और कला क्रियामें चतुर होताहै और लंबे मुख वाला और श्रेष्ठ जनों करके सेव्या होताहै १२९ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहै सो नतपक्ष और काले नेत्रों वाला और सममूर्ति और स्त्रीकेवल-वाला और श्रेष्ठ वाणी वाला और चतुर होताहै और सुंदर मुख और सुंदर बोलने वाला और श्रेष्ठ

धर्मार्थशस्त्रास्त्रवि तुंगनसःशिरालश्चमहान् पृथुवदननयनमूर्ति स्तुलातृ तीयेचसप्तांशे १२७ कृष्णःखरस्वरांगो दीर्घमुखःपीनकठवक्षोष्ठः जिह्मश्चली ग्रकर्मा वक्रनखस्तुलाचतुर्थसप्तांशे १२८ शुभ्भ्रूनानाक्षिनेत्रः इयामःसुत नुःकलाक्रियानुपटुः दीर्घमुखःसत्सेव्यःसप्तांशे पंचमेतुलिनि १२९ नत पक्षासितनेत्रःसममूर्तिःस्त्रीवलःसुवाक्चतुरः तुलषष्टेसप्तांशे भवतिनरःसुमुख घोषकोष्ठश्च १३० स्थूलोष्ठास्थिरदो मधुपिंगकेशःस्वल्पदृक्शूरः वालाब्ज कोमलांगः सप्तमसप्तांशकेतुलिनि १३१ ॥ इतितुला ॥ घातानृतभेदाहवरतो न्नतश्चपिंगरक्ताक्षः अलिपूर्वसप्तमांशे खरापिंगकचःप्रचलदेहः १३२ पृथुदृक्स्तनु रंघ्रिःसुनसःकौर्पेद्वितीयसप्तांशे धृतपीतारुणकांतिःशास्त्रविधिज्ञःकलाज्ञश्च १३३

ओष्ठों वाला होताहै १३० और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहै सो मोटे ओष्ठों वाला और मोटियों हड्डीयों वाला और मोटे दंतो वाला और मधु पिंगलेकेशों वाला और छोटे नेत्रों वाला और शूरवीर और छोटे कमलकी न्याईं कोमल अंगो वाला होताहै ॥ १३१ ॥ इतितुलायाः ॥ और जो वृश्चिक के पूर्व सप्तांशमें जन्मताहै सो घातमें और झूठ बोलनेमें और भेद करणेमें और युद्धमें रत होताहै और ऊचे देहवाला और पिंग रक्त नेत्रों वाला और कठोर पिंगले केशों वाला और चलदेह वाला होताहै ॥ १३२ ॥ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्म-ताहै सो मोटे नेत्रोंवाला और सूक्ष्म पैरों वाला होताहै और सुंदर नासिका वाला और पीत रक्त क्राति वाला और शास्त्र विधिकेजाननेवाला और कलाके जानने वाला होताहै ॥ १३३ ॥

और जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहे सो बात करणेमें प्रथम तिसकी वाणी रोकी जातीहे और वाणी चातुरीकी बोलताहे और वृद्ध देहवाला होताहै और कालारंग होताहे और कठिन अंगों वाला होताहे वडयोंकी लज्जा नाहीं करणे वाला होताहे ॥ १३४ ॥ और जो चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहे सो वडे गडस्थलों वाला और वडी नासिका वाला और वडे पेटवाला और वक्रोक्तिबोलने वाला और उद्धत वाणी वाला होताहे और मानी होताहे और अपने हितकी बात कहने वाला होताहे और वडीयों भुजो वाला होताहे ॥ १३५ ॥ और जो पाचमें सप्तांशमें जन्मताहे सो पतले पेटवाला और वडी छातीवाला और वक्ता और जूएका प्यारा और सुंदर मुखवाला और श्रेष्ट भुजोंवाला और सेवा करणेवाला और थोडा चतुर होताहे ॥ १३६ ॥ और छठे सप्तांशमें कोमल कमल दलकी न्याईं नेत्रों वाला और बुद्धिमान् और सूक्ष्माग्र ऊची नासिका वाला और थोडा

पटुवाक्तिरुद्धपूर्वार्द्ध-वृद्धकायोसिताधिकृतमूर्तिः कठिनोघृणोगुरूणा मलिनितृतीयसप्तांशे ॥ १३४ ॥ पृथुगंडघोणजठरो वक्रवचःकोपतूर्यसप्तांशे उद्धतवचनोमानीचात्माहितभाषीमहाबाहुः ॥ १३५ ॥ कृशजठरपृथुवक्षा : वक्ताद्यूतप्रियःसुमुखबाहुः सेवायुक्तोल्पपटुः सप्तांशेपंचमेष्टमभे ॥ १३६ ॥ बालोत्पलदृग्मतिमां स्तनुतुंगनसोल्पवाग्मृदुर्धर्मी - अलिपष्ठेसप्तांशेसकोमलोदारसत्वतनुः ॥ ३६७ ॥ समरेच्छुःप्रांशुनसः पृथुशीर्पस्फिक्पिंगरोमाक्षः अलिसप्तांशेंत्येचख्यातःस्थिरधीरसत्वश्च ॥ १३८ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ स्थूलोष्ठगंडनसा पृथूदरोरश्चसत्ववान्मधुदृक् तुंगशिरःस्थूलपादश्चापादिमसप्तमांशेच ॥ १३९ ॥ मृगदृक्सुवृत्तजंघो न्यार्थहृद्विशेपविपमज्ञ :

बोलने वाला और कोमल देह वाला और धर्मी और कोमलता करके युक्त वडाउदार और वडे पराक्रम वाला होताहे ॥ १३७ ॥ और जो सातमें सप्ताशमे जन्मताहे सो युद्धकी इछा वाला और ऊचीं नासिका वाला और वडे शिर वाला और ऊचेकटिमासपिंडोंवाला और पिंगले रोमोंवाला और पिंगले नेत्रों वाला और प्रसिद्ध और स्थिर बुद्धि वाला और अल्प अंतःकरण वाला होताहे ॥ १३८ ॥ इतिवृश्चिकस्य ॥ और जो धनके पूर्व सप्ताशमें जन्मताहे सो मोटे ओठों और मोटे गंडस्थल और मोटी नासिका और वडा उदर और वडी छाती वाला होताहे और पराक्रम वाला और मधुकीन्याई नेत्रो वाला होताहे और ऊचे शिरवाला और मोटे पैरों वाला होताहै ॥ १३९ ॥ और दूसरे सप्ताशमे हरिणकी न्याई नेत्रों वाला और गोल जघो वाला और दूसरेके धनकों हरणे वाला और वि

शेषके ऊोर विषमके जानने वाला ऊोर लंबेहाथों वाला ऊोर मोटे कान ऊोर मोटी नासिका वाला होताहे ॥ १४० ॥ ऊोर तीसरे सप्तांशमें क्रोधी श्रोर वक्ता श्रोर त्यागी श्रोर कृश सारकी न्यांई देहवाला श्रोर स्त्रीयोंमें लडाई करणे वाला श्रोर ईर्षा वाला श्रोर लाल देह श्रोर लाल नेत्रों वाला श्रोर वामना श्रोर वक्रेकी न्याई शब्दवाला होताहे ॥ १४१ ॥ ऊोर जो धनके चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहे सो ऊची सुंदर नासिका वाला ऊोर ऊचे मोंढयो वाला ऊोर मोटे देह वाला ऊोर वडी ठोडी वाला श्रोर हरिणकी न्याई नेत्रों वाला ऊोर वानरकी न्याई ऊचे शिरवाला ऊोर गीतका प्यारा होताहे ॥ १४२ ॥ श्रोर जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहै सो कठोर देह वाला श्रोर विशाल मूर्ति श्रोर सुदर नासिका वाला श्रोर विशाल दृष्टिवाला श्रोर इंद्रियोंके रोकने वाला श्रोर काव्य शास्त्रादि कलाकों जानने वाला होताहे ॥ १४३ ॥ श्रोर जो छठे सप्तांशमें जन्मताहे सो तपस्वी होताहे श्रोर कोमल वाणी वाला श्रोर श्रेष्ट कर्म क

दीर्घकरःपृथुश्रुतिघोणश्चापद्वितीयसप्तांशे १४० क्रोधीवक्तात्यागी कृशसार वपुःप्रियासुकलिरीर्ष्यः ताम्रांगाक्षोन्हस्वोवन्हिरवोधनुपितृतीयसप्तांशे १४१ उन्नतसुनसस्कधःस्थूलतनुहनूर्मृगेक्षणःपुरुषः कपितुंगशिरोगीतप्रियश्चतुर्थेध नुपिसप्तांशे १४२ तनुकठनायतमूर्तिःसुनसोदारितदृक्प्रसमश्च स्थितिकाव्या दिकलाज्ञःसप्तांशेपंचमेधनुषि १४३ हयपष्ठेसप्तांशे तपोभिरामोमृदुवचःसुक र्माच पृथुमुखनयनोगुणधनो मृणालगौरोऽपालितशीर्षः ॥ १४४ ॥ दीर्घोष्ठना सिकाक्षः सुसत्यवाग्यातितनुर्धनुषिशूरः सप्तांशेंत्येत्यागीमहाललाटश्रवण दंतः ॥ १४५ ॥ इतिधनुः ॥ तनु वंशघोणोजिह्मः दीर्घास्यः कीर्तिभाक्श्यामः खरकृष्णवर्णवासो भीरुर्मकरादिसप्तांशे ॥ १४६ ॥ गौरोपचितोरुतनुःसुमु खोधनीसमदचेष्टः दक्षश्चलोयुयुत्सु द्वितीयसप्तांशकेमकरे ॥ १४७ ॥

र्मांहे श्रोर मोटे मुख श्रोर मोटे नेत्रों वाला होताहे श्रोर गुणोंकाधनी होताहे श्रोर भयेकी न्यांई गौर वर्ण वाला श्रोर काले केशों वाला होताहे ॥ १४४ ॥ श्रोर जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहे सो लंवे ओष्ट श्रोर लंवी नासिका श्रोर लंवे नेत्रों वाला होताहे श्रोर सत्यवाणी वाला श्रोर शूरवीर श्रोर त्यागी श्रोर वडे माथे वाला श्रोर वडे कर्णों वाला श्रोर वडे दांतो वाला होताहे १४५ ॥ इतिधनुः ॥ श्रोर जो मकरके पूर्व सप्तांशमें जन्मताहे सो छोटे वंशवाला श्रोर छोटी नासिका वाला श्रोर जिह्म श्रोर लंवे मुख वाला श्रोर यश वाला श्रोर नवीन अवस्था वाला श्रोर कठोर श्रोर काले देह वाला श्रोर मलीन वस्त्रो वाला श्रोर डरणे वाला होताहे ॥ १४६ ॥ श्रोर मकर के दूसरे सप्तांशमें जन्मताहे सो गौर वर्ण श्रोर सुदर वडे देह वाला श्रोर सुदर मुख वाला श्रोर धनी श्रोर मस्ती वाला होताहे श्रोर चतुर श्रोर चंचल श्रोर युद्धकी इछा वाला होताहे ॥ १४७ ॥

और जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहे सो लाल अंग और लाल नेत्रों वाला और प्रचंड और कृश होताहे और परस्त्री करके और दूसरेके धनकरके मस्तीको प्राप्त होताहे और खोटे स्वभाव वाला और सुंदर होताहे ॥ १४८ ॥ और चतुर्थ सप्तांशमें जन्मेतो हासी करके युक्त कोमल वचन कहने वाला और बुद्धिमान् और वडे शिर और वडे गंडस्थल वाला और वडी नासिका वाला और वडे नेत्रों वाला और स्त्रीकी इच्छा वाला और कमलकी न्यांई कोमल पेट वाला और कोमल अंगों वाला होताहे ॥ १४९ ॥ और जो पंचम सप्तांशमें जन्मताहे सो गंधर्व विद्यामें और शिल्प विद्यामें और युद्धमें और सेवामेंप्रीति वाला होताहे और विशेपकरके मानवाला होताहे और लंबे और काले देहवाला और वडे गंडस्थलों वाला होताहे ॥ १५० ॥ और जो छठे सप्तांशमें जन्मताहे सो स्वर्ण की न्यांई प्रभा वाला और विशाल देहवाला और श्रेष्ठ जनोंका प्यारा

रक्तांगाक्षश्चंडःकृशःपरस्त्रीधनःसमदचेष्टः विषमस्वभावःकांतस्तृतीयसप्तांशकेम करे,१४८ स्मितमृदुभाषीमतिमान् वृहत्शिरोगंडघोणनेत्रश्च मृगतूर्यसप्तमांशे स्त्रीच्छुःपद्मोदरश्यामः॥ १४९ ॥ संगीतशिल्पविग्रहसेवानिरतोविशेपतोमान्यः मृगपंचमसप्तांशे दीर्घासितमूर्त्तिरुरुगंडः ॥ १५० ॥ हेमप्रभोविशालःश्रेष्ठजनानांप्रियःकुवलयाक्षः मृगषष्ठेसप्तांशेतपःश्रुतिज्ञानवांश्चमृदुः ॥ १५१ ॥ वृद्धोरुतनुश्चंडो ऽनपत्योरक्तचक्षुरभिमानी पृथुकंठास्यनसाभ्रु रटनोंत्यिमकर सप्तांशे १५२ इतिमकरः निःकृतिरवलोसत्वःखरकेकरदृग्वृहच्छिरालः दीर्घश्चादिम सप्तांशेघटस्य विनतघोणः १५३ पक्कामलकानिभःपृथुरल्पकथोदारितास्यनासाक्षः कुंभद्वितीयसप्तांशेपिपासुः शूरोमनस्वीच १५४

और कमल दलकी न्यांई नेत्रों वाला और वेदके जानने वाला और कोमल होताहे १५१ और जो सातमें सप्तांशमें जन्मताहेसो वृद्ध और वडेदेहवाला और प्रचंड और संतान करके रहित और लाल नेत्रोंवाला औरअभिमानीहोताहे और वडे गलवाला और वडे मुखवाला और वडी नासिका वाला और वडियोंभ्रुवों वाला और भ्रमणे वाला होताहे १५२ इतिमकरस्य॥ और जो कुंभके पूर्व सप्तांशमें जन्मेतो नपुंसक और वलहीन और तीक्ष्ण टेढी दृष्टि वाला और वडे शिरवाला और लंवा और नीमी नासिका वाला होताहे १५३ और जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहे से पक्के हुवे आवलेकी प्रभा वाला होताहे और मोटा और थोडा वोलने वाला और वडे मुखवाला और वडी नासिका वाला और वडे नेत्रोंवाला होताहे और तृषा वाला और शूरवीर और मनस्वी होताहे १५४

श्रोर जो तीसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो बिल्लिकी न्याई नेत्रोंवाला श्रोर चलस्वभाव और तांबेकी न्याई देह वाला और थोडीबुद्धिवाला और भेद और युद्ध श्रोर चोरी श्रोर झूठके करणे वाला श्रोर धूडे कपिले केशों वाला होताहै १५५ और जो चतुर्थ सप्तांशमें जन्मताहै सो कोमल थोडा बोलनेवाला और तृषाकीइच्छा वाला और ऊची नासिका वाला श्रोर रक्त गौर वर्ण वाला श्रोर हरिणकीन्याई नेत्रोंवाला श्रोर नील वस्त्र धारणेवाला श्रोर चतुर श्रोर नीति वाला होताहै १५६ श्रोर कुंभके पंचम सप्तांशमें जन्मे तो रूखे केशों वाला और व्यस्त अंगों वाला और गौर श्याम वर्ण श्रोर सुवर्णकी प्रभा वाला होताहै श्रोर श्रेष्ट वाणी वाला श्रोर विदेशकी इच्छा वाला श्रोर शिल्पकी रुचिवाला और पानकी रुचिवाला होताहै १५७ और छटे सप्तांशमें जन्मे तो श्वेत गौर वर्ण और मोटा देह श्रोर सुंदर मुख श्रोर नेत्र श्रोर नीतिके जानने वाला होताहै श्रोर वेद व्रत

मार्जारदृक्कलमन स्ताम्रांगःस्वल्पधीर्घटतृतीये भेदाहवचौर्य्यान्तकृत्सप्तांशेस धूम्रकपिलकचः १५५ मृद्वल्पवाक्पिपासुस्तुंगनसोरक्तगौरएणाक्षः नीलांबरश्चतुर्थेघटसप्तांशेचपटुर्विनीतः १५६ रूक्षकचोविततांगो गौरश्यामःसरुक्मसुखवचनः घटपंचमसप्तांशे प्रवासरुचिः शिल्पपानरुचिः १५७ गौरो च्छःपृथुगात्रसुमुखेक्षणोविनीतश्च घटषष्ठेसप्तांशेवेदव्रतदेवतादिकथः १५८ दीर्घस्ताम्राक्षतनुः स्यातःसत्वाधिकपृथुनसोष्ठः उद्धतवाग्वपुष्मान्पिंगकेशोघटांत्यसप्तांशे १५९ इतिकुंभः स्वक्षःसुघोणदशनः कुवलयदलप्रभःसुमतिः श्रुतिसत्वरतःस्वच्छो मीनादिमसप्तमेभागे १६० चूतांकुरारुणतनु स्तनुरोमसुखश्चकरकंजो युधिवैरिहाद्वितीये झषसप्तांशेसुदृढसत्वः १६१

वाला श्रोर देवता कों मानने वाला होताहै १५८ श्रोर जो सातमें सप्तांशमें जो जन्मताहै सो लंबा श्रोर तांबेकी न्याई नेत्र श्रोर देह वाला श्रोर प्रसिद्ध श्रोर वडे पराक्रम वाला श्रोर मोटी नासिका श्रोर मोटे ओष्ठों वाला श्रोर उद्धत बोलने वाला श्रोर सुंदर देह वाला होताहै श्रोर पिंगले केशों वाला होताहै १५९ इतिकुंभस्य श्रोर मीनके पूर्व सप्तांशमें जन्मे तो सुंदर नेत्रों वाला श्रोर सुंदर नासिका वाला श्रोर सुंदर दांतों वाला श्रोर कमल दलकी न्याई प्रभावाला श्रोर श्रेष्ट बुद्धि वाला होताहै श्रोर वेदके सारमें युक्त श्रोर निर्मल होताहै १६० श्रोर जो दूसरे सप्तांशमें जन्मताहै सो श्राम्रके श्रंकुर की न्याई लाल वर्ण वाला श्रोर छोटे रोमों वाला श्रोर छोटे मुख वाला श्रोर छोटे हाथों वाला श्रोर युद्धमें शत्रुयोंकों मारणे वाला श्रोर दृढ पराक्रम वाला होताहै १६

और जो तीसरे सप्ताशमें जन्मताहै सो मोटे सुंदर मुखवाला और वृद्ध और व्यस्तअंगो वाला और गधर्वविद्याके जानने वाला और नीतिकेजाननेवाला और सुंदर भ्रुवों और सुदर नासिका और सुदरके शों वाला होताहै १६२ और जो चतुर्थ सप्ताशमें जन्मताहै सो मंत्री और अर्थके निश्चय वाला और पूर्णमुख वाला और सुंदर वाणीवाला और श्रेष्टबुद्धि वाला होताहै और पालाशपत्र की न्याई भि न्न भिन्न अंगों वाला होताहै १६३ और जो पंचम सप्ताशमें जन्मताहै सो गोर प्रभाकर्के लालवर्ण वाला और नील कमलकी न्याई नेत्रोंवाला होताहै और कोमल और पवित्र और चतुर होताहै और मासकर्के पुष्टमुखवाला और क्षमावाला होताहै १६४ और जो छठे सप्ताशमें जन्मता सो धर्मकर्के युक्त और चतुर और कमलदलकीन्याई वर्णवाला और गोलदेहवाला और मोटे नेत्र और मोटे मोढे और मोटे दांतो वाला होताहै १६५ और जो सातमें सप्ताशमे जन्मताहै सो रूक्षअं

पृथुसुमुखाख्योवृद्धोपचितांगोगीतविद्दिनीतश्च सुभ्रुनासाकेशो झषसप्तांशे तृतीयेच १६२ मंत्रीसुनिश्चितार्थःपूर्णास्योवल्गुवाक्सुबुद्धिश्च झषतूर्ये सप्तांशेपलाशदलवद्विभक्तांगः १६३ गौरप्रभारुणवर्णो नीलोत्पलदृङ्मृदु.शुचिर्दक्षः मांसलवक्रतनु र्झषपंचमसप्तांशकेक्षांतः १६४ धर्मयुग्दक्षोवारिजदलवर्णनिभोविवृत्तदेहः पृथुसुदृगंसदशनोमीनर्क्षेषष्ठसप्तांशे १६५ रूक्षांगोमलिनरूपःभग्ननसोविविक्तदृष्टिश्च जिह्मोनशुद्धवेशो झषराशौचांत्य सप्तांशे ॥ १६६ ॥ इतिमीनः ॥ तथाचयवनः ॥ शूरःप्रचंडःस्थिरसभ्यकर्मा सप्तांशकेर्कस्यवलीप्रसिद्धः, शुचिर्मुहुर्द्धर्मपरोविनीतोरतिप्रियःस्याच्छशिनः सुधीश्च ॥ १३७ ॥ दुर्मर्पणःसत्ववलाभिमानीस्यात्सप्तभागेक्षितिनंदनस्य कवि.कथाशिल्पकलाभिरामो विद्वान्सुवाक्योनिपुणोवुधस्य १६८

गों वाला और मलिनरूप और नीमी नासिका वाला और पवित्र दृष्टिवाला और कपटी नहिं होताहै और शुद्धवेशवाला होताहै १६६ ॥ इतिमीनस्य ॥ और यवनाचार्य कहताहै जो मनुष्य सूर्य के सप्ताशमें जन्मताहै सो शूर वीर और वडे तेजवाला और स्थिर और सभाके कर्मकर्णवाला और प्रसिद्ध वली होताहै और जो मनुष्य चद्रमाके सप्ताशमे जन्मताहै सो पवित्रहोताहै और वार वार धर्मके करणे वालाहोताहै और नम्र और रतिका प्यारा होताहै १६७ और जो मनुष्य भौमके सप्ताशमें जन्मताहै सो वडे क्रोधवाला और पराक्रम के अभिमान वाला होताहै और जो मनुष्य वुधके सप्ताशमे जन्मताहै सो कविः और कथाके करणे वाला और शिल्पविद्याके जानने वाला और विद्यावान् और श्रेष्ट वाक्य कहने वाला और चतुर होताहै १६८

और जो बृहस्पति के सप्तांशमें जन्मताहै सो बडा चतुर और स्थिर पराक्रम वाला और स्थिर बुद्धि वाला और ज्ञानियों में श्रेष्ठ होताहै और जो शुक्रके सप्तांशमें जन्मताहै सो कामी और विलासी और क्रीडा हास्यलीला के करणे वाला और गंधर्व विद्यामें प्रीति वाला होताहै १६९ और जो शनिके सप्तांशमें जन्मताहै सो मूर्ख और आलसी और कपटी और खोटे कर्म करणे वाला और पापमें रत होताहै और जो ग्रह अपने उच्च अपने मित्रके घर और अपने क्षेत्र मेंहोवे सो यथार्थ श्रेष्ठ फलकों कर्त्ताहै और जो ग्रह नीच राशिमें और शत्रुक्षेत्रमें स्थितहोवे सो नेष्ट फल कर्त्ताहै ॥ १७० ॥ इतिसप्तांशफलानि ॥ अब नवांशका फल कहतेहैं नवांश चक्रमें पुत्रका विचार कहाहै नवांश लग्नसें पांचमें घरका स्वामीशुभग्रह होवे और शुभग्रहोंकर्के युक्त और दृष्टहोवे तव बहुतपुत्रहोतेहैं और पांचमे घरका स्वामी

विशारदःस्यात्स्थिरसत्वबुद्धिर्गुरोर्मतोज्ञानवतांवरिष्ठः कामीविलासीरतिहास्यलीलागंधर्वगीताभिरतिर्भृगोःस्यात् ॥ १६९ ॥ मूर्खोलसोजिह्ममतिर्विकर्मासौरस्यपापाभिरतोनरःस्यात् ॥ स्वक्षेत्रनीचोच्चविधानियानिज्ञेयानि चैषांतुफलानितानि ॥ १७० ॥ इतिसप्तांशफलानि ॥ अथनवांशफलानि पुत्रं नवांशभाविइति ॥ नवांशलग्नात्सुतपश्चसौम्यशुभाशुभैर्युक्तावलोकितोवा ॥ शुभैःसुताःस्युःप्रचुरानरस्यक्रूरैर्नसंतानसुखंतदाभवेत् ॥ १७१ अथमेषादिनवांशफलम् चोरःक्रियांशेसुखभाक्वृषांशेपुण्णातिविद्यांमिथुनांशकेवा कर्कांशकेस्याद्धनवान्महांशःसिंहांशकेक्लीवसमोंगनांशे ॥ १७२ ॥ शूरस्तुलांशेभृतकोष्टमांशेदासोहयांशेहिमगौवलिष्ठे पापोमृगांशेपिशुनोग्रचेष्टः कुंभांशकेमीनलवेप्रधानः ॥ १७३ ॥ इतिलग्नगतनवांशफलम्

क्रूरहोवे और क्रूरग्रहोंकर्के युक्त और दृष्टहोवे तव संतानका सुख नहिं होताहै १७१ अब जन्मलग्नगतमेषादिनवांशका फल कहतेहैं और जो मेषके नवांशमें जन्मताहै सो चोर होताहै और वृषके नवांशमें सुख भोगनें वाला होताहै और मिथुनके नवांशमें विद्यावान् होताहै और कर्कटकेनवांशमें धनवान् और सिंहकेनवांशमेंवडे मोंढयों वाला होताहै और कन्याके नवांशमें नपुंसककीन्यांई होताहै १७२ और तुलके नवांशमें शूरवीर होताहै और वृश्चिककेनवांशमें भृत्यचाकरी करणेवालाहोताहै और धनके नवांशमें सेवाकरणेवाला होताहै और मकरके नवांशमें पापी होताहै औरकुंभके नवांशमें चुगल और उग्ररूप होताहै और मीनके नवांशमें प्रधानपुरुष होताहै १७३

श्रीर जब चद्रमा वली होवे तव चंद्रराशि गत नवांशका फल होताहे इतिचंद्रराशिगत नवांशफलम् अब भिन्नभिन्न नवांशफल सारावलीमें कहतेहै अब चंद्रराशिगत नवांशसें वर्ण और स्वभाव और स्वरूपऔर लक्षण कहतेहे जब पूर्ण वलीचद्रमाहोवेअथवा नवांशपति वलीहोवे तब वक्ष्यमाणफल यथार्थहोताहे १७४ और जोमेपके पूर्व नवांशमें चंद्रमास्थित होया जन्मताहै सो भिडूंकीन्याई मुखवाला और छोटीनासिका वाला और कृशदेह और थोडेरोमों वालाहोताहै और वडी टाटी स्वर वाला और नेत्रोंकों सकोच करणे वाला होताहै १७५ और जो दूस रे नवांशमे जन्मताहै सो लंवेमुख और लंवेगलवाला और कोमल अगोंवाला और पतलीयोंजघों वाला और विशाल नेत्रों वाला और वादरकी न्याई वाणी वाला और नाहिंहै स्थूलमस्तक और कक्षमोंढयो के अंतलकी अस्थिजिस की और वडेमोंढे वाला होताहै १७६ और जो तीसरे नवांशमे जन्मताहै सो वहुत रोमो करकेयुक्त छो टी भुजा और छोटे मोंढयों वाला और वाणीकर्के पडित और रोमोंवालेमोढेतिस्के होतेहै-

अथपृथक्नवांशफलंसारावल्यां ॥ अतोंशकोत्थिंदुगतेपुवक्ष्येवर्णस्वभावाकृतिल क्षणानि प्रधानवीर्य्यांशगतःशशीयत्तत्स्वामिनापिक्रमजंविधत्ते १७४ मेपेजां शेजमुखस्तनुनासाग्रःकृशोल्परोमाच चंडध्वनिःशशांकेकृशसंकुचिताक्षपां गश्च ॥ १७५ दीर्घास्यगलःश्याम कृशांघ्रिःस्फुटेक्षणोंबुदवाक् नचपृथुलला टजत्रुणि गुर्वंसक्रियेंद्रुपभभागे १७६ रोमन्यस्ततनुजांसोवाक्पंडितःसरो मांसः कृशजंघजानुरालुप्तकुंतलोजेनमिथुनांशे १७७ भ्रांताननदृक्खंजो रक्तवपुर्ह्रस्वभालनासश्च ॥ अटनःखरांघ्रिरोमःकृशत्वचाढ्य.क्रियेचतुर्थांशे १७८ हयदृग्गजाकृतिशिरःपीनोवृत्तोग्रमूर्तिरल्पकचः खरवक्रांघ्रिश्चक्रियेसिं हांशेपृथुनसोललाटश्च १७९ ॥ मृद्वात्मवान्वपुष्मान्स्फुटाग्रनासःस्फुटाग्रदृ हदंसः यज्ञाग्निकर्मनिरतःकृशःसुनिपुणोभवेत्पष्ठे ॥ १८० ॥

और पतलीया जंघा और जानु और केशोंकर्के रहित होताहै १७७ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो भ्रांतकी न्याई मुख और दृष्टिवाला और लडा और लाल देहवाला और छोटे मथे और नासिका वाला और भ्रमणे वाला और कठोर पाद और कठोर रोमों वाला और पतले चमडेवाला होताहै १७८ और जो पांचमे नवांशमें जन्मताहै सो घोडेकी न्याई नेत्रोंवाला और हाथीकी न्याई वडे शिरवाला और पुष्ट और गोल देहवाला और क्रूर मूर्ति और थोडे वालों वाला और कठोरमुख और कठोर पादों वाला और वडी नासिका और वडे माथेवाला- होताहै १७९ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो कोमल मनवाला और सुंदर देहवा ला और ऊची नासिका वाला और वडे मोंढयों वाला और यज्ञ और अग्निहोत्रके करणे वाला और कृश देहवाला और चतुर होताहै १८०

और मेषके सप्तम नवांशमे जन्मताहे सो सुंदरनासिका वाला और कालेनेत्रो वाला और दूर्वांकुर की न्याई वर्ण और विलासकरणे वाला और धनलाभवाला और अपनी स्त्रीमे रत और शांतस्वभाववा लाहोताहे ॥ १८१ ॥ और मेषके अष्टमनवांशमे जोजन्मताहे सो वानर कीन्याई मुखवाला और वहुतवकवादकरणे वाला और कठोर चमडे वाला और ऊचेदेह वाला और गुह्यरोगी और हिंसाके करणे वाला और झूठवोलने वाला और घातकरणे वाला और मित्रोंकाप्यारा और क्रूर होताहे ॥ १८२ ॥ और जोमेषकेनवम नवांशमें जन्मताहे सो लंवा और कृशदेह वाला और विहारकरणे-वाला और टेडेमस्तकवाला और टेडे ओष्ठ और कर्णा वाला और टेडेमुखवाला होताहे और वहुत-कहने वाला और सरल और क्रोधी और विद्यावाला होताहे ॥ १८३ ॥ इतिमेष· ॥ और जोवृषके· पूर्वनवांशमें जन्मताहै सो कालेदेहवाला और खोटीदृष्टिवाला और लोभी और परकर्म करणे वाला

सुनसःकृशोसिताक्षोदूर्वांकुरसन्निभोविलासतनुः लब्धधनोजसप्तमभागेना रीरतः शांतः ॥ १८१ ॥ वानरमुखःप्रवक्ताखरत्वगुन्नततनुश्चगुह्यगद. हिंसा नृतघातरतःसुहृत्प्रियोग्रस्सदाष्टमजः ॥ १८२ ॥ दीर्घः कृशोविहारीव्यस्तल लाटश्चवोष्ठवदनश्च वहुवाग्ऋजुश्चकोपीविद्वान्स्यान्मेषनवमांशे १८३ इतिमेषः असितसमांगोविषमेक्षणोविलुब्धोन्यकर्मकृन्नीचः ॥ तत्पूर्वार्द्धेसुखप्रकृतिवि रुद्धोवृषप्रथमभागेच॥ १८४ ॥ पृथुवदनांसश्रवणोगंभीरदृगल्पधीरानृतभार्षी अलसोविरुद्धदारः प्रतिकूलोवृषद्वितियांशे ॥ १८५ ॥ गौरांगः स्तब्धाक्षोवहु भाषीवित्तशीलसंयुक्त. धर्मज्ञोवहुभृत्योवृषभतृतीयेभवेन्मनुजः ॥ १८६ ॥ ह्रस्वोटनः सरोषामेषाक्ष. पिंगलस्त्वमर्षयुतः परधनहरणाभिरतश्चतुर्थभागेच वृषभस्य ॥ १८७ ॥

और नीच और पूर्वावस्थामे सुख का और स्वभावका विरोधीहोताहे ॥ १८४ और दूसरेनवांशमें जन्मताहे सोमोटेमुख वाला और मोंढेवाला और मोटेकर्णो वाला और गंभीर दृष्टिवाला और थोडीवुद्धिवाला और झूठवोलने वाला और आलसी और विरुद्धस्त्री वाला और उलटे स्वभाववा-ला होताहे ॥ १८५ ॥ और जोवृषके तीसरेनवांशमें जन्मताहे सो गौर अंगों वाला और अनम्रने-त्रोवाला और वहुतवार्ताकरणे वाला और धनकरके और सुंदरस्वभावकरके युक्त होताहे और धर्मकेजा-ननेवाला और वहुतचाकरों वाला होताहे ॥ १८६ ॥ और जोचतुर्थ नवांशमे जन्मताहे सो छोटेदे-हवाला और क्रमणे वाला और क्रोधवाला और भिडूंकीन्याई नेत्रों वाला और पिंगलवर्ण और-दूसरेकाधनहरणे वाला होताहे ॥ १८७ ॥

और जोचतुर्थ नवांश में जन्मता है सो गोल और विशाल नेत्रों वाला और सुंदर देह वाला. और स्त्रीयोंमे अतिसकहोताहै और बहुनकहने वाला और खोटी स्त्रीमें रत होताहै ॥ १८८ ॥ और जोछठे नवांशमें जन्मताहै सो कोमल चित्त वाला और सुरद-रदेह वाला और ऊचीनासिका वाला और वडेमोंठयो वाला और यज्ञ और अग्निहोत्रकेकरणे वाला और कृश देह वाला और चतुर होताहै ॥ १८९ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तिस-की नवीन स्त्री मरतीहै और मौनरहताहै और लवीनासिका वाला और समनेत्रो वाला और अग-तिसकेवधनकोंप्रात्पहो.तेहैं और मित्रों का वैरी और वडे पयरों वाला और सूक्ष्मकेशों वाला होताहै १९० और जो वृषके अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो शेरकीन्यांई क्रूरदृष्टि वाला और सुदर रूप और चंचल और ऊर्ची नासिकावाला और अल्प कर्मों केकरणेवाला होताहै और राक्षसकी न्याई स्वभाव

परिमंडलायताक्ष.श्यामतनुःस्त्रीष्वतिप्रसक्तश्च वृषभस्यपंचमांशेबहुप्रलापी विरुद्धदाररतः ॥ १८८ ॥ मृद्वात्मवान्वपुष्मान्स्फुटाग्रनासःस्फुटाग्रबृहदसः यज्ञाग्निकर्मनिरतः कृशः सुनिपुणोभवेत्षष्ठे॥ १८९ मृतनवयुवतिःपुरतोमना ग्विलंवितनसोमिताक्षःस्यात् उद्धांगःस्वजनद्वेषीगुरुपाद.सूक्ष्मकेशश्च १९० व्याघ्रेक्षणःसुदर्शनश्चलितःस्फुटनासिकोल्पकर्मास्यात् क्रव्याच्छील:केशाग्र नखैःसुखरैस्तथाष्टमजः ॥ १९१ ॥ मंदस्मितोल्पसत्वोभीरुःसमरुचिरमूर्ति कितवःस्यात्ः अनिश्चितधनःप्रसिद्ध.कृशस्त्वधस्तात्प्रलाप्यंते ॥ १९२ ॥ ॥ इतिवृषः ॥ रोमसभुजोशिताक्ष.कृशांघ्रिहस्तस्तथोच्चनसः दूर्वाकांडश्यामो मिथुनेपूर्वांशजःपुरुपः ॥ १९३ ॥ घटशीर्षश्चविकर्माघातरुचिर्मध्यलग्नघोणःस्यात् वहुभापीवहुचेष्टोद्वितीयभागेसुविग्रहाधिपतिः ॥ १९४ ॥

वाला और केश और नख तिसके करडे होतेहैं ॥ १९१ ॥ और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो मंदमंद हसने वाला और थोडे पराक्रम वाला और डरणे वाला और समरुचि देहवाला और धूर्त होताहै और तिसके धनका निश्चय नहिहोताहै और प्रसिद्धहोताहै और अधोभाग सें कृशहोताहै और वहुत वार्ता करणेवाला होताहै ॥ १९२ ॥ इतिवृषस्य ॥ और जो मिथुनके पूर्व नवांशमें जन्मताहै तिसकी भुजों मे रोमहोतेहैं और कालेनेत्र और कृशपाद और हाथ और ऊची नासिका वाला होताहै और दूर्वाश्याम वर्णहोताहै ॥ १९३ ॥ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो घडेकी न्यांई शिरवाला और खोटेकर्म करणेवाला और घातकरणेमे इच्छावाला और चिपडी नासिकावाला और वहुत कहनेवाला और वहुत चेष्टाकरणेवाला और युद्धकरणेमे मुख्यहोताहै ॥ १९४ ॥

औरजोतीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गोरवर्णवाला औरअत्यंतलालनेत्रोंवाला और श्रेष्टनासिकावाला और समदेहवाला और श्रेष्ट बुद्धिवाला और लंबेमुखवाला और कालीयों भ्रुवोंवाला और वाणी चातुरीसें बोलणेवाला होताहै ॥ १९५ ॥ औरजो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहैसो सुंदर भ्रुवोंवाला और सुंदर माथे वाला और कामी और नीलकमलकी न्याईं मूर्तिवाला और वडी छातीवाला और श्वेतदांतोंवाला और हरिण कीन्याईं मुखवाला और श्रेष्ठरोमावलीवाला होताहै ॥ १९६ ॥ और जो पांचमें नवांशमें जन्मताहै सो मोटे नेत्रोंवाला और वडेकटिमास पिंडो वाला और पुष्टछाती वाला और पुष्टभुजों वाला और दुष्ट और काले वर्णवाला और मोटे शिरवाला और मायाके जानने वाला और श्वेत कमलो की न्याईं नेत्रोंवाला होताहै ॥ १९७ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो मधुवर्णके नेत्रों वाला और प्रलाप करणेवाला और उलटे माथे वाला और उलटे हृदेवाला और समअंगो

गौरोतिरक्तनयनःसुनासिक.समतनुःसुमेध.स्यात् दीर्घाननोसितभ्रूर्वाक्चतुरस्त्वथतृतीयेंशे ॥ १९५ ॥ सुभ्रूललाटःकामीनीलोत्पलमूर्तिर्विपुलवक्ष स्यात् सितदंतोमृगवक्त्रःप्रशस्तरोमांचितश्चतुर्थेंशे ॥ १९६ ॥ पृथुलोचनोवृहत्स्फिक्पीवरवक्षोभुजःखलःकालः स्थूलशिरामायावीसितांबुजनयनस्तुपंचमजः ॥ ॥ १९७ ॥ मध्वेक्षणःप्रलापीव्यस्तललाटहृदयःसम सुतनुः कितवश्चरुधिरोष्टरदस्तुपष्टेतुसत्वयुतः ॥ १९८ ताम्रारुणोरुजठरःसमुन्नताक्षोविशालवक्षः स्यात् शिक्षास्त्रशिल्पनिरतोहास्यरतिःसप्तमेजातः ॥ १९९ ॥ श्यामोगुरुर्मनस्वीललितोमधुराभिधानश्च व्यस्तविवृद्धशरीरोदीर्घोसितदृक्कलाविदष्टमजः २०० वृत्तासितदृक्सुतनुःस्निग्धोमेधावलाःरतिज्ञःस्यात् विज्ञानकाव्यनिरतोनवमांशिनाभवेच्छ्रेष्ठः ॥ २०१ ॥ इतिमिथुनः ॥

वाला और श्रेष्टदेह वाला और धूर्त्त और लाल होठ और लाल दांतों वाला और पराक्रमी होताहै १९८ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तांबेकी न्याईं लालवर्ण वाला और वडे पेटवालाऔर सुंदर ऊंचे नेत्रोंवाला और वडी छाती वाला और शिक्षा और अस्त्रों के जननेवाला और शिल्पमें और हास्यमें रत होताहै ॥ १९९ ॥ और जो अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो तरुण अवस्थावाला और भारे देहवाला और मनस्वी और सुंदर और मीठी बोलीवाला और उलटा वृद्धिकों प्राप्तभया देह जिसका तिसकीन्याईं और लंबा और कालेनेत्रों वाला और कलाके जाननेवाला होताहै २०० और जो नवमनवांशमें जन्मताहै सो गोल कालेनेत्रों वाला और सुंदर देह वाला और स्निग्ध औरबुद्धिकेबलवाला और रतिके जानने वाला और विद्यावान् और काव्यमें रत वडा श्रेष्ट होताहै २०१ इतिमिथुनः

॥ और जो कर्कटके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो निर्मल जलकीन्याई गौर वर्ण वाला और सुंदर केशों वाला और विशाल लाल नेत्रों वाला और गोल मुख वाला और ऊंचे नेत्रों वाला और श्रेष्ठ छाती वाला होताहै २०२ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो लाल प्रभा वाला और युद्धमें वडा क्रूर और लडाईका प्यारा और विल्लीकी न्यांई मुख और नेत्रों वाला और त्यागी और कृशजानू और कृश जंघों वाला होताहै ॥ २०३ ॥ और तीसरे नवांशमें गौर वर्ण वाला और सुंदर नेत्रों वाला और वक्ता और विद्यावान् और स्थूलस्त्री वाला और स्थूल अंगों वाला और बुद्धिमान् और कोमल कर्मके करणे वाला और आलसी होताहै ॥ २०४ ॥ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो तरुण प्रभावाला और नीमियों भुवों वाला और विशाल और पुष्ट और ऊंचे देह वाला और श्रेष्ठ नासिका और श्रेष्ठ नेत्रों वाला और आगेकेदंतोसें हीन और दाता और अपने जातीमें शठता के करणे वाला होताहै ॥ २०५ ॥ और कर्कटकेपांचमें नवांशमें जो जन्मताहै सो मोटीकुक्षि वाला और क्रूर और वाहनोंका स्वामी और खोटे कर्म करणे वाला और घडेकी न्यांई शिर वाला और थोडी वुद्धि वाला और नीमें मुख वाला और लंबेनेत्रों वाला और चंचल सुंदर भुवों वाला होताहै ॥ २०६ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो लंबे और विशाल देहवाला और श्रेष्ठ नेत्रों वाला और वडे प्रतापवाला और गौर वर्ण वंशवाला और सुंदर नासिकावाला और वक्ता और मोटे दांतों वाला होताहै ॥ २०७ ॥ और जो सातमे नवांशमें जन्मतासो भिन्नकेशों वाला और चंचल ठोडी वाला और वहुनाडीवा और जंघोंमें रोमों वाला और दूसरेके घरमें रहनें वाला और काककी न्यांई होताहै २०८ ॥ और जो आठमे नवांशमें जन्मताहै सो घटकी न्यांई शिर वाला और कुशिल्पी और कृश पोटेकी न्यांई मुख वाला और कृश जानु और कृश जंघा वाला होताहै और खोटी वुद्धि वाला और चिपटी नासिका वाला और कृष्ण वर्ण होताहै २०९

निर्मलवारिसुगौरः सुमूर्द्धजःस्याद्विशालरक्ताक्षः मंडलमुखोन्नताक्षस्तनुवक्षानाकुलीराद्ये ॥ २०२ ॥ रक्तच्छवीरणोग्रःकलिप्रिय स्याद्बिडालमुखनेत्रः कर्किणिद्वितीयभागेत्यागीकृशजानुजंघश्च ॥ २०३ ॥ गौरःसुनेत्रोवाग्मीप्रज्ञानवान्स्थूलयोषिदंगश्च ॥ धीमान्मृदुकर्मरतस्तृतीयभागेभवेदलसः ॥ २०४ ॥ श्यामच्छविर्नतभ्रूर्विशालपीनोच्चतनुःसुनासाक्षः क्षीणाग्ररदोदातास्वजातिकार्येशठःचतुर्थेस्यात् ॥ २०५ ॥ पृथुकुक्षिरुग्रःकर्किणिमध्यांशेयानपोविकर्माच घटशिरोल्पमतियुतोनताननोदीर्घदृक्चलत्सुभ्रूः २०६ दीर्घविशालशरीरःप्रशस्तनयनोवहुप्रतापःस्यात् गौरःसुवंशघोणोवक्तापृथुचपृथुदंतः ॥ २०७ ॥ भिन्नशिरोरुहरोमाचलहनुःस्यात् सिरालरोमजंघश्च परगृहनिवासशीलःकाकाकारश्चसप्तमजः ॥ २०८ ॥ घटशिरःकुशिल्पीकृशाश्वमुखजानुजंघक कुमतिः मध्यविलग्नेनसःस्यादष्टमभागेतुकृष्णश्च ॥ २०९ ॥

और जोनवमें नवमनवांशमे जन्मताहै सो गौर वर्ण और मछकी न्याई नेत्र और वडे पेट वाला और मोटी पुष्ट छाती वाला और लंबी ठोडी वाला और लंबेओठों वाला और वडे पेट वाला और कृश जानु और कृश गिटेयों वाला होताहै ॥ २१० ॥ इतिकर्कटः ॥ और जो सिंहके पूर्व नवांशमे जन्मताहै सो मंदोदर और प्रचंड और लालनासिकावाला और वडियों नाडियों वाला और शूरवीर और ऊंचीछातीवालाहोताहै ॥ २११ ॥ जो सिंहके दूसरेनवांशमेज न्मताहै सो ऊचे वडे माथे वाला और चारकोणवालादेह विशालतिसकाहोताहै और वडेनेत्रोंवाला और लंबीयांभुजोंवाला और ऊंचीछातीवाला और वडीनासिकावाला होताहै ॥ २१२ ॥ और जो सिंहकेतीसरेनवांशमेजन्मताहै सो वहुतरोमों वाला और विशालभुजों वाला और चकोरकी न्याई नेत्रों वाला और सुंदर चंचल देहवाला और त्यागीहोताहै और ऊंचीनासिकावाला और स्निग्धदेह

गौरोझषसमनयनोगुरूदरःपृथुपीनवक्ष स्यात् दीर्घहनुर्लंबोष्ठोमहोदरःसुकृश जानुगुल्फोंत्ये ॥ २१० ॥ इतिकर्कटः ॥ मंदोदरःप्रचंडोरक्ताग्रनसो वृहच्छिरा शूरः ॥ उन्नतमांसलवक्ष सिंहेप्रथमेभवेद्भागे ॥ २११ ॥ उन्नत विततललाटश्चतुरस्रतनुर्विशालनेत्रगुरुः ॥ दीर्घभुजोन्नतवक्षःपृथुरग्रघोणो द्वितीयेंशे ॥ २१२ ॥ रोमचितायतवाहुश्चकोरनयन शुभश्चलस्त्यागी उन्ना सिकस्तृतीयेस्निग्धतनुवाहुर्वृत्तगलः ॥ २१३ ॥ घृतमंडगौरदेहोदीर्घासि तलोचनोमृदुशरीरः ॥ भिन्नध्वनिश्चतुर्थेपृथुचरणोभेककुक्षिःस्यात् ॥ ॥ २१४ ॥ घटाशिरोल्पकेशोसितघोणाक्षश्चलोमशोर्ध्वतनुः ॥ लंबोदरःप्रचं डोदंष्ट्रोत्कटोह्यर्धमध्ये २१५ ॥ स्रस्तोल्परोममूर्त्तिः स्निग्धसमोसितविलोचनो दीर्घः श्याम.स्त्रीणांचतुरोवाक्चतुरोवाक्यमंडित.पद्बे ॥ २१६ ॥

वाला और स्निग्धभुजा वाला और गोल गल वालाहोताहै २१३ और जो सिंहके चतुर्थनवांशमे जन्मता है सो घृतमंडकीन्याईं गोरदेहवाला और लंबे और काले नेत्रों वाला और कोमलदेहवाला और भग्नस्वर और मोटेपैरोंवाला और डिडू कीन्याईं कुक्षियोंवालाहोताहै ॥ २१४ ॥ और जोसिंहके पांचमे नवांशमें जन्मताहै सो घडे कीन्याइ शिरवाला और थोडे केशों वाला और श्वेत नासिकावाल और श्वेतनेत्रोंवाला और ऊर्द्धभागमें वहुतरोमोंवाला और लंबेउदरवाला और प्रचंड और वडीया दाढोंवाला होताहै ॥ २१५ ॥ और जो सिंहके छठे नवांशमें जन्म ताहै सो स्रस्त ढीले अंगोंवाला और थोडे रोमो वाला होताहै और स्निग्ध देहवाला और सममूर्त्तिः और काले नेत्रों वाला और लवा और तरुणरूप और स्त्रीयोंमे चतुर और वाणीकर्के चतुर होताहै और श्रेष्ट वाणीवालापंडित होताहै ॥ २१६ ॥

और जो सातमे नवांशमें जन्मताहै सो लंबेमुखवाला और वडेकेशोंवाला और पुष्टठोडीवाला और स्त्रीयोंमें खोटे भाग्यों वाला और काला और पराक्रमी और वहुत रोमों वाला और कुटिल और कठोर वचन कहने वाला होताहै ॥ २१७ ॥ और जो आठमें नवांशमें जन्मताहै सो टीठोंकी न्यांई वाणीवाला और वहुत केशों वाला और मित्रों सें हीन और थोडी चेष्टा वाला और कृष्णवर्ण और स्थिर और कठोर अंगों वाला और खोटे कर्म और खोटे स्वभाव वाला होताहै ॥ २१८ ॥ और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो लंवीयों भुजों वाला और कठोर मुखवाला और कालेनेत्रों वाला और दृढजंघा वाला और दृढ पार्श्वों वाला होताहै और पीडितनेत्रोंवाला और देह पीडा वाला और दूर्वावतश्याम वर्णवालाहोताहैं २१९ इतिसिंहः और जो कन्याके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो टेढेमुख और ऊचे मुखवाला और पुष्ट अंगों वाला

दीर्घाननःशिरालःपीनहनुःस्त्रीपुदुर्भगःकृष्णः स्यात्सप्तमेससत्वोरोमाचितःकुटिल निष्ठुराभाषी २१७ उद्दृष्टवाक्शिरालोविसुहृज्जनोल्पचेष्टःस्यात् कालःस्थिरः खरांगोविकर्मशीलोष्टमेहरेर्भागे २१८ लंवभुजःखरवदनोसितनेत्रःसुदृढजंघपा र्ष्णिःस्यात् पीडितचक्षुशरीरोदूर्वाश्यामोहरौनवमे २१९॥ इतिसिंहः ॥ वक्रोन्नतपीनांगःसारंगमुखोधनीप्रदाताच संभोगरुचिःश्यामःकन्याप्रथमांशकेजातः २२० श्यामोघटसमकुक्षिःपिशुनःकलहप्रियःसुगूढवचः ॥ भार्याचपलाचस्याद्वितीयभगेमहोदरश्चैव ॥ २२१ ॥ स्फुटनासिकःस्फुटःस्यात्प्रशस्तसमुचितगौरवाव्हंसः वाग्मीमुहृत्तृतीयेश्रुतवाक्यःस्त्रीरतिःस्यातः ॥ २२२ ॥ सुकुमारमूर्तिमधुरोल्परोमदीर्घोविभक्तपृथुवाहुः॥ आताम्रगौरसुवपुश्चतुर्थजोधःकृशःसुमूर्धाक्षः ॥ २२३ ॥

हरण की न्यांई मुखवाला और धनी और दाता होताहै और भोगकी रुचि वाला और तरुण रूपहोताहै और जो कन्याके दूसरे नवांशमें जन्मताहैं सो तरुण रूप और घडेकी न्यांई कुक्षिवाला और चुगल और लडाई काप्यारा और गूढ वचन श्रेष्ठ वोलने वाला और चंचल स्त्रीवाला होताहै और वडे उदर वाला होताहै ॥ २२१ ॥ और जो कन्या के तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो वडी नासिका वाला और वडे मुख वाला और सुंदरगौरवर्ण और श्रेष्टभुजा औरवडेमोंढयों वाला होताहै और श्रेष्ट वाणीवाला औरमित्र भाव वाला और श्रवणकर्के वचनकों धारणेवाला और स्त्रीमें प्रीति वाला और प्रसिद्ध होताहै ॥ २२२ ॥ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर कोमल मूर्तिवाला और मीठी वोली वाला और थोडे रोमों वाला और लंवा और मोटीयों भुजों वाला और तांवेकी न्यांई लालवर्ण के देह वाला और अधोभागसें कृश होताहै ॥ २२३ ॥

ऊेरजोपांचमेंनवांशमेंजन्मताहै सोमोटे ऊंठो ऊेर मोटीयों भुजों वालाऊेर ऊचे ऊेर पुष्ट ऊेर मोटे शिर वाला श्रौर वडे मोंडयोंवालाहोताहै ऊेर वडीछातीवाला . ऊेर दूसरे के आश्रयमें रहणे वालाऊेरवांधेकीन्याई जंघोंवालाहोताहै २२४ ऊेर जो छठे नवांशमें जन्मताहै सोस्निग्धप्रभाव वाला ऊेर अपने वाक्यकों मानने वाला ऊेर ढीले देहवाला ऊेर शास्त्रके वनाने वाला ऊेर वडी वुद्धिवाला ऊेर लिखने की कलाके जानने वाला ऊेर विहारी होताहै ॥ २२५ ॥ ऊेर जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो छोटे मुख वाला ऊेर ऊचे मोंढयों वाला ऊेर स्निग्ध ऊेर कोमल देह वाला ऊेर सुंदर केशों वाला ऊेर वडे पेट वाला ऊेर मोटे हाथ ऊेर मोटे पैरों वाला ऊेर जलसें डरणे वाला होताहै ॥ २२६ ॥ ऊेर जो आठमें नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर कोमलदेह वाला ऊेर गौर वर्ण ऊेर लंवा ऊेर सुंदर दृष्टिवाला ऊेर प्रचंड ऊेर मानकरणे वाला ऊेर वडीयां लंवीयां पु-

स्थूलोष्ठवाहुरुन्नतपीनपृथुशिरामहांसःस्यात् ॥ पंचमजःपृथुवक्षाःपराश्रयो दृढजंघश्च ॥ २२४ ॥ स्निग्धछविःस्ववाक्यःस्रस्ततनुःशास्त्रकृतमतिः प्रचुरः ॥ लिपिलेख्यकलाभिज्ञःसुमतिःषष्ठांशजोविहारीच ॥ २२५ ॥ ह्रस्ववदनोन्नतांसःस्निग्धमृदुः सुजातकेशःस्यात् । सप्तमजःपृथुजठरःपृथुकरचरणोम्वुभीरुश्च ॥ २२६ ॥ सुकुमारगौरदीर्घदेहःशुभदृक्प्रचंडमानीस्यात् व्यालंवपीनवाहुःपिंगलरोमोष्टमेजातः ॥ २२७ ॥ स्यातोमृदुःसुमूर्त्तिर्विशालनेत्रोऽवलःसदृशसत्वः ॥ चतुरोनवमांशेस्यान्नतांसलेख्यादिविद्वांश्च ॥ २२८ ॥ ॥ इतिकन्या ॥ गौरोविशालनेत्रःश्लाघीदीर्घाननोर्थगोप्तास्यात् ॥ घनकूर्चपुण्यकुशलस्तुलाधराद्यंशजोटनःस्यातः ॥ २२९ ॥ प्लुतमंडलनेत्रःस्यात्करालदंतो विलग्नमध्यश्च ॥ विस्तृतरुचिमांस्ताम्रोसिततरजघनः संहतभ्रूश्च ॥ २३० ॥

ष्ट भुजोंवाला ऊेर पिंगल वर्णके रोमों वाला होताहै ॥ २२७ ॥ ऊेर जो नवमे नवांशमें जन्मताहै सो प्रसिद्ध ऊेर कोमल ऊेर सुंदर देह वाला ऊेर वडे नेत्रों वाला ऊेर निर्वल ऊेर तुल्यअंतस्करण वाला ऊेर चतुर ऊेर नीमें मोंढयों वाला ऊेर लिखने वाला ऊेर विद्वान् होताहै ॥ २२८ ॥ ॥ इतिकन्या ॥ ऊेर जो तुलाके पूर्व नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण ऊेर वडे नेत्रों वाला ऊेर श्लाघने योग्य ऊेर धन जोडने वाला ऊेर वडी दाढी वाला ऊेर धर्मात्मा ऊेर भ्रमणे वाला ऊेर प्रसिद्ध होताहै ॥ २२९ ॥ ऊेर जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो गोल नेत्रोंवाला ऊेर विकराल दांतोंवाला ऊेर मध्यभागसें कृश ऊेर प्रभा वाला लालतांवेकी न्याई वर्ण जिसका ऊेर कालीयों जंघों वाला ऊेरमिलिन भ्रुवों वाला होताहै ॥ २३० ॥

और जो तुलाके तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण और घोडेकी न्यांई दांतोवाला और सुंदरमुखवाला और मधुवर्ण ऊंचे नेत्रोंवाला और सुंदर केशोंवाला और बहुत धनको प्राप्तहोताहै और लंबे केशों वाला और लंबी नासिका वाला होताहै और शरणागतकी रक्षाकर्त्ताहै ॥ २३१ ॥ और जो चतुर्थनवांशमें जन्मताहै सो सूक्ष्म अंग और सूक्ष्म भुजोंवाला डरणेवाला और नीमें दांतो वाला और कृशदेहवाला और हरिणकी न्यांई सूधी दृष्टि वाला और छोटी नासिका वाला और विषाद करणेवाला और तरुण रूप और खोटे स्वभाव वाला होताहै ॥ २३२ ॥ और जो पांचमें नवांशमें जन्मताहै सो गंभीर दृष्टि वाला और वडे केशों वाला और मित्रोंका प्यारा और वडी बुद्धिवाला और कठोर केश और कठोर चमडा और कठोर दृष्टि वाला और चिपडी नासिका वाला होताहै ॥ २३३ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो पुष्ट मोढेओं वाला और वडे देह वाला और वडी कुक्षिवाला और सुंदर नासिका वाला सुंदर वंशवाला और स्निग्ध नखोंवाला और

गौरोश्वरदःसुमुखोमधून्नताक्षःकृशोतिलब्धयशः दीर्घशिरोरुहघोणस्तृतीयजःस्याच्छरण्यश्च ॥ २३१ ॥ तन्वंसबाहुभीरुर्नतदंतकृशोमृगतरलदृक्च स्यात् ऱ्हस्वनसःसविषादीश्यामोशीलश्चतुर्थजोभवति ॥ २३२ ॥ गंभीरदृक्शिरालःसुहृत्प्रियःपंचमेतिमानीस्यात् खरकेशत्वक्नेत्रोमध्यविलग्नघोणश्च ॥ २३३ ॥ पीनांसोरुतनुःस्याद्विशालकुक्षिःसुनासिकावंशः स्निग्धनखःसुनयज्ञःषष्ठेशास्त्रार्थशिक्षावित् ॥ २३४ ॥ रक्तावदातामतिमान्गुरुरल्पतनुर्महाललाटश्च दंडोधस्ताद्विवलःसप्तमजःस्याद्यशस्वीच ॥ २३५ तुंगांशगंडभोक्ताकठिनःपृथुतरजघनोसितभ्रूःस्यात् निर्णीतवाक्प्रशांतः सद्वक्षः स्कंधमस्तकोष्टमजः ॥ २३६ ॥ स्वक्षःप्रसन्नगौरः समचारुतनुः पटुःकलानिरतः दाक्षिण्यहास्यनिरतोविट्स्वभावो भवेन्नवमे ॥ २३७॥ इतितुला

नीतिके जानने वाला और शास्त्रोंके और शिक्षाके जानने वाला होताहे ॥ २३४ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो रक्तगौर वर्ण और वडी बुद्धि वाला और भारे और छोटे देह वाला. और वडे माथे वाला और अधो भागमें निर्बल और यशवाला होताहै ॥ २३५ ॥ और जो, आठमें नवांशमें जन्मताहै सो ऊंचे मोंढे और गंडस्थलों वाला और भोगी और कठिन और मोटीयों जंघो वाला और कालीयोंभ्रुवों वाला और निश्चयकर्के वचन कहने वाला और शांत स्वभाव- और श्रेष्ट छाती वाला और श्रेष्ट माथे वाला होताहै ॥ २३६ ॥ और जो नवम नवांसमें जन्मताहै सो सुंदर नेत्रों वाला और प्रसन्नमूर्त्तिः और गौर वर्ण और सम सुंदर देह वाला और चतुर कलाके जानने वाला और चतुराई से हास्य करणे वाला और व्यापारीके स्वभाव वाला होताहै ॥ २३७ ॥ इतितुला ॥

और जो वृश्चकके पूर्व नवांशमें जन्मताहे सो छोटे देहवाला और ऊंचे ओठों और ऊंची नासिका वाला और सुंदर माथेवाला और दृढअंगों वाला और गौर वर्ण और डिंडूंकी न्याई लाल नेत्रों वाला और घडेकी न्यांई शिरवाला होताहे ॥ २३८ ॥ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहे सो गौर वर्ण और भारे विशाल हृदे वाला और विशाल भुजों वाला और लाल नेत्रों वाला और वडे वलवालेकों मारणे वाला और हठ करणे वाला और थोडे केशों वाला होताहे ॥ २३९ ॥ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहे सो चतुर और दृढ मोंढयों भुजों वाला और प्रसन्न मूर्त्ति और श्रेष्ट वाक्य कहने वाला होताहे और दासी में रत और सुंदर देह वाला और चोर और लाल ओठों वाला होताहे ॥ २४० ॥ और जो

ह्रस्वोन्नतोष्ठघोणःसुललाटःस्याद्दढांगगौरश्च ॥ दर्दुररक्ताक्षिर्घटशिरोष्ट मे प्रथमनवमांशे ॥ २३८ ॥ गौरःपृथ्वायतहृद्बाहुस्ताम्राक्षदृग्द्वितीयेस्यात् उद्वृत्तवलनिहंतासाहसनिरतोल्पकेशश्च ॥ २३९ ॥ प्राज्ञोदृढांसवाहुःप्रस न्नकोशोविवुद्धवाक्यःस्यात् दासीरतोवपुष्मांश्चौरोरुधिराधरोष्ठश्च ॥ २४० परदारद्रोहरतिःक्षितोधीरश्चतुर्थजोदीर्घः श्यामोसितकेशाक्षःप्रगल्भपीनोद रो तुंगः २४१ गंभीराताम्राक्षोभग्ननसःपंचमेविरोधवशः दृप्तोह्युदुग्रकर्मा व्यस्तदृढांसोयशस्वीस्यात् २४२ सुनयःप्रचंडकर्मापद्मेक्षाल्पकचघनभ्रू श्च दारितमुखःसिरालःप्रकीर्णरदःसिरावबद्धांगः २४३

चतुर्थ नवांशमें जन्मताहे सोपरस्त्रीमें और द्रोहमें रत और धीर्यसे रहित और लंबेदेहवाला और तरुण रूप और श्याम केश और श्याम नेत्रोंवाला और प्रगल्भ और पुष्ट पेटवाला और ऊंचा होताहे २४१ और जो पाचमें नवांशमें जन्मताहे सो गंभीर और तावेकीन्याई लाल नेत्रोंवाला और चिपटी नासिका वाला और विरोधी होताहे और वडा अभिमानी और क्रूर कर्मोंके करणे वाला और उलटे वडे दृढ मोंढयों वाला और यशवाला होताहे २४२ और जो छठे नवांशमें जन्मताहे सो सुंदर नीतिवाला और प्रचंड कर्म करणेवाला और छोटे नेत्रों वाला और थोडेकेशोंवाला और वडीयां भुजों वाला होताहे और वडेमुख वाला और वडे शिरवाला और प्रकीर्ण दांतोंवाला और नाडियां करके वांधेहे अंगजिसके अयसा होताहे २४३

और जो सातमें नवांशमे जन्मताहै सोनीमे पेटवाला और नीमे लकवाला और मोटे नेत्रोंवाला और माडेदांतोंवाला और वडेमुख वाला और कृष्ण वर्ण लंबा और छोटी ठोडीवाला और वडी छाती वाला होताहै २४४ और जो अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो चिपटी नासिका वाला और वडेशिरवाला और बंधुओंसें वैर करणेवाला और भ्रांत दृष्टिवाला और बहुतकहनेवाला और गुरोंकी आज्ञाको करणे वालाहोताहै २४५ और जो नवम नवांशमे जन्मताहै सो गौर वर्ण और मछकी न्याई दृष्टिवाला और शांतचित्त पिंगलवर्णके नेत्र और आगेमेंहि दृष्टिवाला और पुष्ट और श्रेष्ठ कर्मोंमें रत और दाता और गुरु देवताकी भक्तिवाला होताहै २४६ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ और जो धनके पूर्वनवांशमे जन्मताहै, सो सुंदर वडी नासिका वाला और बकरेकी न्याई दृष्टिवाला और स्फुट हास्य करणेवाला और.

निम्नोदरकटिह्लनाक्षःकुरदोदारितमुखोसितोदीर्घः तनुहनुःपृथुवक्षःसप्तमभागेलिनिसिरालः२४४ चिपिटाग्रनासिकःस्याद्विस्तीर्णशिराःस्वबंधुवैरश्च विभ्रांतदृक्प्रभाषीगुरुष्वभिमतोष्टमांशकज :२४५ गौरोझषकेकरदृक्प्रशांतपिंगाग्रदृक्पीनः सत्कर्मरतोदातागुरुदेवरतोलिनोंतिमेंभागे २४६ ॥ इतिवृश्चिकः ॥ सुबृहन्नसोजदृष्टिःस्फुटाग्रहासःप्रभिन्नरोमाचगौरःसुवद्धवृषणःचापाद्यंशेप्रचंडःस्यात् २४७ प्रोतुंगशिरःस्थिरधीर्विस्तीर्णाक्षोगुरुतरश्च विकृताग्रनसोदीर्घोमहातनुःस्याद्वितीयेंशे २४८ शिक्षाशास्त्रार्थमतिःप्रगल्भःसंपूर्णमूर्तिःसुभगश्च स्त्रीवल्लभोमनस्वीतृतीयजोहास्यशिल्पज्ञः २४९ दक्षोमधुमंडलदृग्गौरः कछपविवद्धकुक्षिःस्यात् प्राज्ञोटन.सुकेशःपृथुशुभकीर्तिश्चतुर्थांशे २५०

भिन्नरोमों वाला और गौर वर्ण और बद्धवृषण और प्रचड होताहै २४७ और जो दूसरे नवांशमें जन्मताहै सो ऊचे शिरवाला और स्थिर बुद्धिवाला और विशालनेत्रों वाला और वडा भारा होताहै और टेढी नासिकावाला और लंवा और वडेदेहवाला होताहै २४८ और जो तीसरे नवांशमे जन्मताहै सो शिक्षा शास्त्रमे बुद्धिवाला और प्रगल्भ और पूर्णमूर्तिः और श्रेष्ठ भाग्योंवाला और स्त्रीका प्यारा और मनस्वी और हासीके और शिल्पके जानने वाला होताहै २४९ और जो चतुर्थ नवांशमे जन्मताहै सो चतुर और मधुपिंगल वर्णके नेत्रोंवाला और गौर वर्ण और कछपकी न्याई वडीकुक्षियो वाला और चतुर और भ्रमणे वाला और श्रेष्ठ केशोंवाला और मोटा और श्रेष्ठ यशवाला होताहै २५०

और जो पांचमे नवांशमें जन्मताहै सो मोटे कर्ण और मोटे नेत्र और मोटे मुख वाला और वडे शत्रुओंके साथ लडने वाला और वडियों भ्रुवोंवाला और पुष्ट औरऊंचेमोंढयों वाला और वडे हाथों वाला और सुंदर रोमों वाला और निश्चयबुद्धिवाला होताहै ॥ २५१ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो स्निग्धकाले कोणे वाले वडे नेत्रों वाला और वडे माथेवाला और सुंदर देहवाला और काव्यशास्त्रमें रत और मोटे पुष्ट मुख वाला और विद्यावान् और कथामें रत होताहै ॥ २५२ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहै सो तरुणरूप और दृढ और अपनेवचनकों प्रमाण करणे वाला और ऊंचे शिरवाला और संग्रह करणे वाला और संधिकरणेवाला और लंवा और विशाल नेत्रोंवाला और वडाचतुर होताहै ॥ २५३ ॥ और जो अष्टम नवांशमें जन्मताहै सो चिपटी नासिकावाला और वडे विस्तारवालियों नाडियोंवाला और आपने वंधुयोंमें वैर करणेवाला और भ्रांतनेत्रोंवाला और वहुतकहने वाला और गुरों की आज्ञा करणे वाला होताहै ॥ २५४ ॥ और

पृथुकर्णनेत्रवदनःप्रवृद्धमहारिविग्रहोमहाभ्रूःस्यात्. पीनोन्नतांसहस्तःपंचमजो रूपरोमदृढवुद्धिः ॥ २५१ ॥ स्निग्धासितांतपृथुदृङ्महाललाटःसुमूर्तिःकाव्यरतः पृथुपीनमुखोनापष्टेविद्वान्कथासुरतः २५२ ॥ स्यामोदृढोवचस्वीतुंगाशिराःसंग्रहानुसंधिरतः दीर्घोविशालनयनोदाक्षिण्यपटुश्चसप्तमजः ॥ २५३ ॥ चिपिटाग्रनासिकःस्याद्विस्तीर्णशिराःस्ववंधुवैरश्च विभ्रांतदृक्प्रभापीगुरुप्वभिमतोष्टमांशकजः२५४ गौरोहयाकृतिमुखोदीर्घासितदृक्कथासुवाक्यःस्यात् सभ्यः सतांविवादीनवमेजटिलोरुजंघश्च ॥ २५५ ॥ इतिधन्वी ॥ विरलाग्ररदःश्यामः प्रभिन्नवाक्खरशिरोरुहःख्यातः पीताभ्रहास्यनिरतोमकराद्येचलधनःकृशांगः स्यात् ॥ २५६ ॥ प्रचुरांगधनःप्रवासीशठोलसःकुटिलनासिकःसुवहुरोमः श्यामतनुर्मंदसितोवहुगीतरतिर्द्वितीयजःकल्प्यः ॥ २५७ ॥ गांधर्वरसिकःख्यातो गौरोनितांतदृक्सुनसः वहुमित्रवंधुरतिमांन्तृतीयजास्त्विष्टकर्माच ॥ २५८ ॥

जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो गौर वर्ण और घोडेकी न्याईं मुखवाला और लंवे काले नेत्रों वाला और श्रेष्ठवाक्य कहनेवाला और सभामें मुख्य और श्रेष्टोंसे वादकरणेवालाऔर जटिल और वडियों जघांवाला होताहै ॥ २५५ ॥ इतिधनुः ॥ और जो मकरके पूर्वनवांशमें जन्मताहै सो तिसके आगेके दांत विरले होतेहैं और तरुण रूप होताहै और भिन्न वाणीवाला और रूखेकेशों वाला और प्रसिद्ध होताहै और पीले वादलोंकी न्याईं हासिमें रतहोताहै और अस्थिर धनवाला और दृश अंगो वाला होताहै ॥ २५६ ॥ और जोदूसरे नवांशमें जन्मताहै सो वडे अंगों वाला और धनी और विदेशवासी और शठ और आलसी और टेडी नासिकावाला और वहुत रोमोंवाला और तरुण रूप और गीतमें प्रीति वाला होताहै ॥ २५७ ॥ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गंधर्वविद्याके जानने वाला और प्रसिद्ध और गौर वर्ण निवद्धदृष्टिवाला और सुंदर नासिकावाला और वहुत मित्रों और भाईयों वाला और वुद्धिमान् श्रेष्ठकर्म करणेवाला होताहै ॥ २५८

और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो लाल और कृष्ण और गोलनेत्रोंवाला और वडे माथेवाला और दुर्वल अंगों वाला और विकीर्ण केशोंवाला और विरले दातों वाला और विरली वाणी वाला होताहै ॥ २५९ ॥ और जो पाचमें नवाशमें जन्मताहै सो वडे गंडस्थलोंवाला और खोटी स्त्रीका स्वामी और भोग भोगने वाला और श्रेष्ठ नासिका वाला और तरुण रूप और गोल भुजों वाला और स्थिर रंभी होता है ॥ २६० ॥ और जो छठे नवाशमें जन्मताहै सो स्निग्ध प्रभा वाला और सुंदर वेश वाला और काममें प्रीति वाला और सूक्ष्म दात और सूक्ष्म वचन वाला और वडी ठोडी वाला और वडे माथे वाला होता है ॥ २६१ ॥ और जो सातमें नवाश में जन्मताहै सो तरुण रूप और आलसी और थोडा वोलने वाला और कुंडलों वालेकेशों वाला और वडे देह वाला और कठन अंगों वाला और

रक्तासितवृत्ताक्षोमहाललाटस्तुदुर्वलांगकरः ॥ भवतिचविकीर्णकेशश्चतुर्थ जोविरलदंतवाक्यश्च ॥ २५९ ॥ उद्गंडघनःकुस्त्रीपतिःप्रभोक्तासुन सिकावंशः श्यामोवृत्तोरुभुजःपंचमभागेस्थिरारंभः ॥ २६० ॥ स्निग्धछविः सुवेशः कामरतिः सूक्ष्मदंतवाक्यश्च षष्ठांशजः पृथुहनुर्महाललाटः पुमां न्भवति २६१ ॥ श्यामोलसोल्पभाषीकुंचितकेशोवृहत्तनुः कठिनः मृदु पाणिपादोमतिमान् सप्तमजःशीलसंपन्नः ॥ २६२ ॥ गंभीरदृक्प्रघो णोवक्रास्योभिन्ननखाशिरोजःस्यात् ॥ उद्धतनु सुवाक्यश्चाष्टमजोघटललाटः स्यात् ॥ २६३ ॥ विपुलसुहन्मेदासृक्पूर्णमुखोगीतनृत्यनिरतश्च साध्वा र्यसत्वयुक्तः साधुर्नवमेभवेत्सुनयः ॥ २६४ ॥ इतिमकरः ॥ श्यामोमृ दुकृशांगः पीततनुः काव्यशास्त्रविपुलमतिः कामीरतिमान्दाताकुंभस्याद्येभवे जातः ॥ २६५ ॥

कोमल हाथ पेरों वाला और वुद्धिमान् और श्रेष्ठ स्वभाव वाला होताहे ॥ २६२ ॥ और जो आठमें नवाशमें जन्मता है सो गंभीर नेत्रों वाला और वडी नासिका वाला और उलटे मुख वाला औरभिन्ननख और भिन्नकेशों वाला और वाघेकी न्याई देह वाला और सुदर वाक्य वाला और घटकीन्याई माथे वाला होताहै २६३ और जो नवम नवाशमें जन्मताहै सो वहुत मित्रोंवाला और वहुत मिंझ और रुधिर वाला और पूर्ण मुख और गीतमें और नृत्यमें रत और मीठा वोलने वाला और श्रेष्ठ पराक्रमवाला और नीति वाला होताहै २६४ इतिमकरः और जो कुंभके पूर्व नवाशमें जन्मता है सो तरुण रूप और कोमल और कृशअंगों वाला और पीले वर्ण वाला और काव्यशास्त्रोंमें वडी वुद्धि वाला और कामी और प्रीति वाला और दाता होताहै ॥ २६५

ओर जो दूसरे नवांशमें जन्मताहे सो कठोर चमडे और मुख और कठोरनेत्र ओर कठोर केशोंवाला होताहै और दीनोंकाप्यारा और साधु ओर लंबी गरदनवाला होताहै और लंबे मुखवाला होताहै ॥ २६६ ॥ ओर जो तीसरे नवांश में जन्मताहे सो भोगी और पुष्ट देहवाला और तेजस्वी और मोटे दांतोंवाला ओर थोडाबोलनेवाला और लालकोणे वाले मोटे नेत्र ओर वडी नासिकावाला होताहे ॥ २६७ ॥ ओर जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहे सो स्त्रीमें रत और गौर वर्ण ओर वडे मुखवाला और शत्रुयोंको तपावने वाला और वडागभीर ओर धैर्य ओर पराक्रम वाला और भोगी ओर प्रीतिकर्के युक्तहोताहे ॥ २६८ ॥ ओर जो पांचमें नवांशमें जन्मताहे सो स्पष्टअर्थके जाननेवाला और कलाके जाननेवाला ओर कठिनरोम ओर कठिन हाथ पैर और कठिन केशों वाला और वडीनासिका वाला ओर काले नेत्रोंवाला होताहै ॥ २६९ ओर जो छ

त्वगास्यदृष्टिशिरोजैः खरैश्चमुविपन्नवत्सलःसाधुः दीर्घशिरो धरसुमुखोद्वितीयभगेतुकुंभस्य ॥ २६६ ॥ भोक्ताचपीनदेहस्तेजस्वीपृथुरदोल्पकचः पृथुरक्तांत.पृथुदृक्प्रचंडघोणातृतीयेंशे ॥ २६७ ॥ कांतानुरतोगौरोविदारितास्यो रिपुप्रतापकरः गंभीरधीरसत्वश्चतुर्थजो भोगरतियुक्तः ॥ २६८ स्पष्टार्थ विस्कलाज्ञ·खररोमकरांघ्रिकेशनिकरःस्यात् संरुद्धघटघोण.पंचमज. कृष्ण नयनश्च ॥ २६९ ॥ व्याघ्रानन.प्रगल्भ·कुंचितकेश·स्वनिश्चितार्थश्च व्याघ्रमृगोरगहंता षष्ठांशेवल्लभोनृपतेः ॥ २७० ॥ कृशदेहोल्पश्मश्रुर्दीर्घ मुखाक्षोन्नताग्रनासश्च विरलांगुलिरदलोहितदेहःस्यात्सप्तमेस्खलितः २७१ मेषाक्षिवदनतीक्ष्णोनरेंद्रभोगीधनेश्वरःसुभगः ॥ स्थूलरदोविरलाक्ष कुतनु· स्यादष्टमेमनुजः ॥ २७२ ॥ श्याम श्यामाग्ररदोविश्लेपितसुखोधनपुत्र दारयुतः नवमांशजःसुवाक्यःप्रथित.शक्तोभवेत्पुरुपः ॥ २७३ ॥ इतिकुंभः

ठेनवांशमें जन्मताहे सो चित्रेकी न्याई मुख और प्रगल्भ और कुंडलोंवाले केशोंवाला होताहै और निश्चयवालाहोताहैऔर चित्रेमृग सर्पइनोंके मारणे वाला होताहै और राजाका प्याराहोताहै २७० ओर जो सातमें नवांशमेंजन्मताहेसो कृशदेह और थोडीदाढीवाला औरलंबेमुखवाला और आगेसें ऊंची नासिकावालाऔर विरलीया अंगुलिया ओर विरलेदांत औरलालवर्ण और ढीलेअंगोंवाला होताहै२७१ओर जोअष्टमनवांशमें जन्मताहे सोवकरेकीन्याई नेत्रोंवाला ओरक्रूरमुखवाला ओरराजाकी न्याई भोगभोगने वाला ओर धनी ओर श्रेष्ठभाग्यवाला ओर मोटे दांतोंवाला ओर माडे देहवाला होताहे २७२ ॥ ओर जो नवम नवांशमें जन्मताहे सो तरुणरूप ओर कालेदांतों वाला ओर सुखकके विक्षेपको प्राप्त होने वाला ओर धन ओर पुत्र ओर स्त्रीकर्के युक्त होताहे ओर सुंदर बोलनेवाला ओर प्रसिद्ध ओर समर्थ वाला होताहे ॥ २७३ ॥ इतिकुंभः ॥

और जो मीनके पूर्वनवांशमें जन्मताहैसोगौरवर्ण औरभिन्नभिन्नअंगोंवाला और चंचल और कोमल-और स्त्रीके स्वभाव वाला और चलचित्त होताहै और छोटी गरदनवाला और पतले लकवाला होताहै २७४ औरजो दूसरेनवांशमें जन्मताहै सो मोटे पुष्टमुखवाला और मोटी नासिकावाला औरक्रियामें चतुर और चतुराईसें बोलनेवाला औरसुंदरदेहवालाऔर वनपर्वतोंमें विचरणेवाला और वडेशिरवाला होताहै२७५ और जो तीसरे नवांशमें जन्मताहै सो गौरवर्ण और शठ और सुंदर नेत्रोंवाला और छिद्देहवाला और धर्मी और विद्यावान् और बोलनेमें चतुर और नम्र और रूपवाला और चतुर होताहै ॥ २७६ ॥ और जो चतुर्थ नवांशमें जन्मताहै सो गुणवान् और सुंदर स्वभाववाला और वृद्धोंकीसेवा करणे वाला और क्रियामें चतुर और पंडित होताहै और वडे पराक्रमवाला और नीतिके जानने वा-ला और ऊचीनासिका वाला होताहै ॥ २७७ ॥ और जो पाचमे नवांशमें जन्मताहै सो लंबे

गौरोविभक्तदेहश्चलोमृदुःस्त्रीमतः प्रचलचित्तः ॥ ह्रस्वगलः कृशमध्यो मीनाद्यंशेभवेत्पुरुषः ॥ २७४ ॥ पृथुपीनमुखाग्रनसःक्रियापटुवाक्रुचिरदेहः काननपर्वतचारीवृहच्छिराःस्याद्द्वितीयेंशे ॥ २७५ ॥ गौरःशठःसुचक्षुःस्त्रस्ततनुर्धर्मवान्सुविद्वांश्च दाक्षिण्यवान्विनीतस्तृतीयजोरूपवांश्चतुरः ॥ ॥ २७६ ॥ गुणवान्विपन्नशीलःप्रवृद्धसेवीक्रियापटुर्धीरः सत्वाधिकोनयज्ञस्तुंगनसःस्याच्चतुर्थेंशे ॥ २७७ ॥ दीर्घोसितःप्रतापीप्रशांतधीःस्वल्पनासिकः स्वक्षः हिंसानुरतःसुभगोदुष्प्रसहःपंचमेप्रतापीस्यात् ॥ २७८ कांतःप्रतापगुणवान्प्रसन्नवेशोश्वनासिकोमानी तिर्यङ्नयनःस्यातःषष्ठेस्यात्प्रियकथानिपुणः ॥ २७९ ॥ पुरुषोभिमानकर्त्ताधर्मरुचिःश्रेष्ठसाचिवःस्यात् ॥ प्रचलोविषादशीलःशठस्थितिःसप्तमेभागे ॥ २८० ॥ दीर्घोवृहच्छिराःस्यात्कृष्णालसरूक्षनेत्रकेशश्च मंदात्मजोध्वनिरतोरणकुशलश्चाष्टमेभवति २८१

देहवाला और कृष्णवर्ण और प्रतापी और श्रेष्ठ वुद्धि वाला और छोटी नासिकावाला और सुंदर नेत्रों वाला और हिंसामें रत और श्रेष्ठ भाग्यों वाला और वडे तेजवाला होताहै ॥ २७८ ॥ और जो छठे नवांशमें जन्मताहै सो सुंदर रूपवाला और प्रताप और गुणवाला और श्रेष्ठ वेशधारण वाला और घोडेकीन्याईनासिकावाला और मानवाला होताहै और टेढी दृष्टिवाला और प्रसिद्ध होताहै और प्रीती वालियों कथोंमें रतहोताहै ॥ २७९ ॥ और जो सातमें नवांशमें जन्मताहे सो अभिमानके करणे वाला और धर्मी और श्रेष्ठमंत्री और चंचल और खोटे स्वभाव वाला और शठता करणे वाला होताहै २८० और जोअष्टम नवांशमें जन्मताहै सो लंवा और वडे शिर वाला और कृष्णवर्ण और आलसी और कठोरदृष्टि और कठोरे केशोंवाला और खोटे पुत्रवाला और मार्गमें रत और युद्धमें श्रेष्टहोताहै ॥ २८१ ॥

और जो नवम नवांशमें जन्मताहै सो छोटे देहवाला और कोमल और श्रेष्ठपंडित विशालछाती वाला और बडेनेत्र और बडीनासिका वाला और स्निग्ध होताहै और श्रेष्ठअंग और श्रेष्ठबुद्धि औरगुणों वाला और प्रसिद्ध होताहै २८२ इतिमीनः ॥ और जो राशियोंकाफल आगेकहनाहै द्वादशांश में सोफल कहने जोग्यहै और त्रिंशांशमें सप्तांशके तुल्य फलकहाहै २८३ अब द्वादशांशका फल कहतेहै द्वादशांश कुंडलीमें स्त्रीका विचार कहाहै जन्मसमयमें द्वादशांश लग्नसेंसप्तमका स्वामी शुभ अथवाअशुभहोवेक्रूरदृष्टवाशुभग्रहकर्केदृष्टहोवे तवशुभोंकर्केदृष्ट और युक्तहोवे तवस्त्री पुत्रोंकर्के युक्त और एकहि होतीहै और क्रूरोंकर्के स्त्रीभावकादुःख रहताहै २८४ और द्वादशांशमें चंद्रमाकी राशिके समान फल होताहै और स्वभाव और अंगोंके लक्षण पूर्व कहाजो सप्तांशकाफल तिसके तुल्य जाननेयोग्यहै और पारिजातमें विशेषकहतेहैं जोमनुष्य मेषके द्वादशांशमें जन्मताहै सो दुष्टात्मा और चोर और पापी होताहै और जो वृषके द्वादशांशमें जन्मताहै सो स्त्री

ह्रस्वोमृदुःसुधीरोविशालवक्षोक्षनासिकःस्निग्धः विहितांगवुद्धिर्गुणवान्नवमांशेस्यात्समाख्यातः २८२ यत्प्रोक्तंराशिफलंद्वादशभागेपितत्फलंवाच्यम् सप्तमभागसमानंशेषेपुविनिर्दिशेत्प्राज्ञः २८३ इतिमीनः ॥ अथद्वादशांशफलं ॥ द्वादशांशेचिंतयेत्पत्नीमितिपूर्वप्रतिज्ञामालोच्योच्यते स्याद्वादशांशादशुभाःशुभावा जायाधिपःक्रूरशुभेक्षितोवाभार्याशुभैःपुत्रयुतातथैकास्त्रीदुःखमेवाप्यपरैर्नरस्य ॥ २८४ अत्रचंद्रराशितुल्यफलंवक्ष्यमाणम् प्रकृतिवर्णलक्षणानिसप्तांशतुल्यज्ञेयानीति अत्रपारिजातेविशेषः ॥ जातोमेषद्वादशांशेखलात्माचौरःपापाचारधर्मानुरक्तः स्त्रीवित्ताढ्योरोगवानुक्षभांशेयुग्मांशेतुद्यूतकृत्यःसुशीलः २८५ दुष्टाचारःकर्कटांशेतपस्वीसिंहेभागेराजकृत्यःसशूरः द्यूताचारःस्त्रीरतःकन्यकांशेव्यापारीस्यात्तौलिभांशेधनाढ्यः २८६ कीटांशकेवधरुचिर्विटचोरनाथश्चापांशकेपितृमहीसुरदेवभक्तः सस्याधिपोमृगमुखांशभवःसुभृत्यः कुंभेखलस्त्वनिमिषेधनिकश्चविद्वान् २८७

और धनकर्के युक्त और रोगी होताहै और मिथुनके द्वादशांशमें जूआ खेलनवाला और सुशील होताहै २८५ और कर्कटके द्वादशांशमें दुष्ट आचार वाला तपस्वी होताहै और सिंहके द्वादशांशमें राजकृत्यके करणेवाला और शूरवीर होताहै और कन्याकेद्वादशांशमें जूऐमें और स्त्रीमें रतहोताहै और तुलाके द्वादशांशमें व्यापारी और धनी होताहै १८६ और वृश्चिकके द्वादशांश में वधकरणेवाला और चोरोंका स्वामी होताहै और धनके द्वादशांशमें पितरोंका और ब्राह्मणोंका और देवताका भक्त होताहै और मकरकेद्वादशांशमें खेतीयोंका स्वामी और श्रेष्ठ चाकरोंवाला होताहै और कुंभके द्वादशांशमें दुष्ट होताहै और मीनके द्वादशांशमें धनी और विद्वान् होताहै २८

अब त्रिंशांशका फल कहतेहै त्रिंशांशकी कुंडलीमें संपूर्ण मनुष्योंका शुभाशुभ मृत्युका लक्षण विचारणा कहाहै सो कहतेहै त्रिंशांशलग्नमें अष्टम गृहका स्वामी शुभग्रहहोवे और शुभग्रह करके युक्त अथवा दृष्ट होवे तब तीर्थस्थानमें और शुभस्थानमें दान धर्मादियों करके मृत्यु होताहै और जो त्रिंशांश लग्नसे अष्टमका स्वामी क्रूरग्रह होवे और पापग्रहों करके युक्त और पापग्रहों करके दृष्टहोवेतब अग्निकरके वा जलादियोंकरके अपमृत्युको प्राप्त होताहै २८८ और मृत्युकालमें विशेष विचार अष्टम भावमें कहेंगे और पारिजातमें त्रिंशांशफल कहतेहै जोमनुष्य मंगलके त्रिंशांशमें जन्मताहै सो चप

अथत्रिंशांशफलम् त्रिंशांशेनिधनफलंशुभाशुभंसर्वजंतूनामिति पूर्वप्रतिज्ञा अत्रोच्यते त्रिंशांशलग्नान्निधनाधिपश्चक्रूरोथसौम्यःशुभपापदृष्टः तीर्थेशुभेक्रूरतरेनरस्यमृत्युंददेदग्निजलादितश्च २८८ अत्रापिविशेषमष्टमभावेकथयिष्यामि तथाच पारिजाते त्रिंशांशेधरणीसुतस्यचपलःकाठिन्यवाक्क्रूरधीर्मंदस्याटनतत्परोमालिनधीर्जीवांशकेवित्तवान् सौम्यांशेगुरुदेवभक्तिनिरतःसाधुप्रियोवंधुमान्कामी कांतवपुःसुखीचभृगुजस्त्रिंशांशकेजायते २८९ इतित्रिंशांशफलम् ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेपद्वर्गफलनिरूपणंनामशारीरिकाध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥

ल और कठोर बोलने वाला और क्रूर बुद्धिवाला होताहै और शनिके त्रिंशांशमें जन्मेतो भ्रमणशील होताहै और मलीन बुद्धि वाला होताहै और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें धनी होताहै और बुधके त्रिंशांशमें गुरु देवता पितर तीनोंका भक्त होताहै और साधुयोंका प्यारा और भाईयों वाला होताहै और शुक्रके त्रिंशांशमें कामी और सुंदर देहवाला और सुखी होताहै ॥ २८९ ॥ इतित्रिंशांशफलम् ॥ इतिश्रीजातकखंडेशारीरिकाध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥

अवसूर्यादिग्रहोंके भावादि फलोंका अध्यायकहतेहै तिसमें प्रथम सूर्यका भाव फल कहतेहै जिस मनुष्यको लग्नमें सूर्यस्थितहोवेतोथोडेकेशोंवाला और रूपमें आलसी देहवाला और वडे प्रचंडक्रोध वाला और लंबेदेह वाला और कंडूरोगवाला और नेत्र रोग वाला और कठोर देहवाला और शूरवीर और क्षमायुक्त और निर्लज्ज होताहै और कर्कट राशीमें होवे तव कमलकीन्याई नेत्रोंवाला और मेषराशीमें होवे तव स्थितिके हरणेवाला और सिंहराशीमें स्थित होवे तब रात्र्यंध दीपवाला और तुला राशीमें स्थित होवे तव दरिद्री और नष्ट पुत्रोंवाला होताहै १ और जवसूर्यदूसरे भावमें स्थित होवे तव धनकर्के और पुत्रकर्केऔर श्रेष्ट वाहन कर्के रहित होताहै और बुद्धिहीन और मित्रभावसें रहित होताहै और दूसरेके घरमें निवासकर्ताहै २ और जव तीसरे भावमें सूर्यस्थित होवे तव मीठा बोलने वाला और धन और वाहनोंकर्के युक्त होताहै और श्रेष्ट कर्मोंमें चित्त

अथग्रहभावादिफलाध्यायः तत्रतन्वादिभावेसूर्यफलम् लग्नेर्केल्पकचःक्रियालसतनुःक्रोधीप्रचंडोन्नतोपामीलोचनरुक्सुकर्कशतनुःशूरोक्षमीनिर्घृणःफुल्लाक्षःशशिभेक्रियेस्थितिहरःसिंहेनिशांधःपुमान् दारिद्रोपहतोविनष्टतनयःसंस्थस्तुलासंज्ञिके १ धनसुतोत्तमवाहनवर्जितोहतमतिःसुजनोज्झितसौहृदः परगृहोपगतोहिनरोभवेद्दिनमणौद्रविणादिसंस्थितिः २ प्रियंवदःस्याद्धनवाहनाढ्यःसुकर्मचित्तोनुचरान्वितश्च मितानुजःस्यान्मनुजोवलीयान्दिनाधिनाथेसहजाधिसंस्थे ३ सौख्येनयानेनधनेनहीनंतातस्यचित्तोपहतप्रवृत्तं चलन्निवासंकुरुतेपुमांसंपातालशालीनालिनीविलासी ॥ ४ स्वल्पापत्यंशैलदुर्गेशभक्तंसौख्यायुक्तंसत्क्रियार्थैर्विमुक्तम् ॥ भ्रांतस्वांतंमानवंहिप्रकुर्यात्सूनुस्थानेभानुमान्वर्त्तमानः शश्वत्सौख्येनान्वितःशत्रुहंतासत्वोपेतश्चारुयानोमहौजाः पृथ्वीभर्तुःस्यादमात्योहिमर्त्यःशत्रुक्षेत्रेमित्रसंस्थेयादिस्यात् ॥ ६ ॥

लगाने वाला औरचाकरों कर्के युक्त होताहै और थोडे भाईयों वाला और वडावलवानहोताहै ३ और जव चतुर्थ भावमें सूर्य स्थित होवे तव मनुष्य को सुखकर्के और वाहनों कर्के और धन कर्के हीन कर्ताहै और पितासें विरोधकर्ताहै और अपने घरमें स्थित नहिं रहणे देताहै ॥ ४ ॥ और जिसको पंचम भावमें सूर्य स्थितहोताहै सो मनुष्य थोडी संतान वाला और वन दुर्गा की भक्ति और शिवजीकी भक्ति कर्ताहै और सुखसें रहितहोताहै और श्रेष्ठकर्म और श्रेष्ट धनोंकर्के हीन होताहै और भ्रांतचित्त होताहै ॥ ५ ॥ और जिसको छठे भावमें सूर्य स्थित होताहै सो निरंतर सुखको प्राप्तहोताहै और शत्रुयों को हतकर्ताहै और पराक्रमकर्के युक्त होताहै और सुंदर वाहनोंवाला और वडे तेज वाला होताहै और राजाका मंत्री होताहै ॥ ६ ॥

और जिसकों सप्तमभावमें सूर्य स्थित होताहै सो लक्ष्मी करकेरहित औरदेहकी शोभाककें हीन और भय ककें औरोरोगोककें पीडित औरखोटे स्वभाव वाला होताहै और राजाके कोप ककें दुखकों प्राप्त होना है ७ और जिसकों अष्टमभावमें सूर्यस्थितहोताहैसोमदद्दष्टिवालाऔर वहुतशत्रुयों वाला और बुद्धि हीन और वडे क्रोध वाला होताहै और थोडे धन वाला और विशेष से दृशग्रं गों वाला होताहै ॥ ८ ॥ और जिसकों नवम स्थान में सूर्य स्थित होवे सो धर्म कर्ममें रत और श्रेष्ट बुद्धि वाला और पुत्र मित्रके सुख ककें युक्त सदाहोताहै और माताके वर्गमें विरोधी होताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमें सूर्य स्थित होताहै सो निश्चय ककें श्रेष्ट बुद्धि वाला

श्रियाविमुक्तोहतकायकांतिर्भयामयाभ्यांसहितःकुशीलः नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यःसीमंतिनीसद्मनिपद्मनीशे ७ नेत्राल्पत्वशत्रुवर्गाभिवृद्धिंबुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः अर्थाल्पत्वकार्श्यमंगेविशेषादायुःस्थानेपद्मिनीप्राणनाथे ८ धर्मकर्मनिरतश्चसन्मतिःपुत्रमित्रजसुखान्वितःसदा मातृवर्गविपमोभवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवनेदिवामणौ ॥ ९ ॥ सद्बुद्धिवाहनधनागमनानिनूनभूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि साधूपकारकरणंमणिभूपणानिमेपूरणेदिनपतिःकुरुतेनराणां १० गीतप्रीतिंचारुकर्मप्रवृत्तिंचंचत्कीर्तिवित्तपूर्तिंनितांतं भूपात्प्राप्तिंनित्यमेवप्रकुर्यात्प्राप्तिस्थानेभानुमान्मानवानाम् ॥ ११ ॥ तेजोविहीनेनयनेभवेतांतातेनसाकंगतचित्तवृत्तिः विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयातेकांतेनलिन्याःफलमुक्तमार्यैः ॥ इति रवेः ॥ १२ ॥

और वाहनों वाला और धन लाभ वाला होताहै और राजा की कृपा और पुत्रोंके सुख वाला होताहै और साधूयों में उपकारोंके करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश भावमें सूर्य स्थितहोताहै सो गीतमें प्रीति वाला और श्रेष्ट कर्मोंमें प्रवृत्ति वाला और वडे यश वाला और वडे धन वाला होताहै और राजा से नित्य प्रति लाभ वाला होताहै ॥ ११ ॥ और जिस मनुष्य को सूर्य व्ययभावमे स्थित होताहै सो तिसके नेत्र तेज ककें हीनहोतेहै अर्थान्मंद दृष्टि वाला होताहै और पिताके साथविरोध बुद्धि वाला होताहै और लोकों के साथ भिविरोध कर्ताहै इहे व्य भाव [illegible] ने कहाहै ॥ १२ ॥ इतिरवेः ॥

अबचंद्रमाकाभावफलकहतेहे जिसमनुष्यकों कर्कटऔर वृषराशीका चंद्रमालग्नमेंस्थितहोवे सो चतुरऔर रूपवान् और धनी और भोगी और श्रेष्ठगुणोंवालाहोताहे और कर्कट वृषराशीकेविना और राशियोंमेंस्थितहोवे तब उन्मत्त और नीच और बोला और विकलांग अथवा जल्हाहोताहे ॥ १ ॥ औरजिसकों दूसरेभावमेंचंद्रमाहोताहे सो सुख और पुत्र और धन करकेयुक्त और श्रेष्ठहोताहे जबचंद्रमा पूर्णहोवेतब यथोक्तफलकर्ताहे और जबक्षीणचंद्रमादूसरे भावमेंहोवेतबगदगदवाणीवाला और धनहीनऔर बुद्धिहीनहोताहे और चंद्रमाकेहीनकला और अधिककलाहोणेसें अनुपात करकेखोटा औरचंगाफलहोताहे ॥ २ ॥ और जिसकोंतीसरेभावमें चंद्रमाहोताहे सो हिंसाकरणे वाला और गर्ववाला और कृपण और थोडीबुद्धिवाला और बंधुजनोंके आश्रयरहणे वाला होताहे और दयासें और भयसेंरहितहोताहे ॥ ३ ॥ और जिसकोंचतुर्थभावमें चंद्रमाहोताहे सो जलस्थानसें उत्पन्न

अथचंद्रभावः दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्यश्चंद्रेकुलीरवृषभाजगतेविलग्ने उन्मत्तनीचबधिरोविकलोऽथमूकः शेषेपुनाभवतिहीननतेनोविशेषात् ॥ १ ॥ सुखात्मजद्रव्ययुतोविनीतोभवेन्नरःपूर्णविधौद्वितीये क्षीणेस्खलद्वाक्आविधनोल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वेफलतारतम्यम् ॥ २ हिंस्रःसगर्वःकृपणोल्पबुद्धिर्भवेज्जनोबंधुजनाश्रयश्च दयाभयाभ्यांपरिवर्जितश्चद्विजाधिराजेसहजेप्रसूतौ ॥ ३ ॥ जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिकृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम् प्रसूतिकालेकुरुतेकलावान् पातालसंस्थोद्विजदेवभक्तिम् ॥ ४ ॥ जितेंद्रियःसत्यवचाःप्रसन्नोधनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः सुसंग्रहीस्यान्मनुजःसुशीलःप्रसूतिकालेतनयालयेब्जे ॥ ५ ॥ मंदाग्निःस्यान्निर्दयःक्रौर्ययुक्तोनाल्पालस्योनिष्ठुरोदुष्टचित्तः रोपावेशोत्यंतसंजातशत्रुःक्षेत्रेरात्रिनाथेनरःस्यात् ॥ ६ ॥ महाभिमानीमदनातुरश्चनरोभवेत्क्षीणकलेवरश्च धनेनहीनोविनयेनचंद्रेचंद्राननस्थानविराजमाने ॥ ७ ॥ नानारोगैःक्षीणदेहोतिनिस्वश्चौराराातिक्षोणिपालाभितप्तः चित्तोद्वेगव्याकुलोमानवःस्यादायुःस्थानवर्तमानेहिमांशौ ॥ ८ ॥

जोधनतिसकोंप्राप्तहोताहे और खेतीकासुख और स्त्रीकासुख और वाहनोंके सुखकरकेयुक्तहोताहे ४ और जिसकों पंचम भावमें चंद्रमास्थितहोताहे सो इंद्रियोंको जीतनेवाला और सत्यबोलनेवाला और प्रसन्नमूर्तिः और धन और पुत्रोंके सुखवाला और श्रेष्ठसंग्रहकरणेवाला होताहे ॥ ५ और जिसकोंछठे भावमेंचंद्रमा होताहे सो मंदाग्निवाला और दयाकरके रहित और क्रूरताकरकेयुक्त औरबडा आलसी और कठोर और दुष्टस्वभाववाला औरक्रोधी और बहुतशत्रुओंवालाहोताहे ॥ ६ ॥ और जिसकोंसप्तमभावमेंचंद्रमाहोताहे सो बडाअभिमानी और कामातुर और दृशदेहवाला और धनकरके और नम्रताकरके हीनहोताहे ॥ ७ ॥ और जिसकों अष्टम भावमें चंद्रमाहोताहे सोअनेकप्रकारोंकेरोगोंकरके कृशदेहवालाहोताहे और निर्धनहोताहे और चोरोंकरके और शत्रुओंकरके और राजाकरकेसंतापकों प्राप्तहोताहे और चित्तकेउद्वेगो करकेव्याकुलहोताहे ॥ ८ ॥

और जिसकों नवमभावमें चंद्रमा होताहै सो स्त्रीपुत्र और धनकर्के युक्त होताहै और पुराण श्रवण करणेमें प्रीतिवाला और श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ तीर्थ करणेमें तत्पर होताहै ९ और जिसकों दशम भावमें चंद्रमा स्थित होवै सो राजासें धनको लब्धिवाला और श्रेष्ठ यशवाला और श्रेष्ठ देहवाला होताहै और पराक्रम और संतोषकर्के युक्त होताहै और बडे प्रकाशवाली स्थिर-लक्ष्मीकों प्राप्त होताहै १० और जिसको एकादश भावमें चद्रमा स्थित होताहै सो श्रेष्ठ मानकों प्राप्त होताहै और अनेक प्रकारोंकेवाहनोंकों प्राप्त होताहै और यशकों प्राप्त होताहै और श्रेष्ठगुणोंकों प्राप्त होताहै और प्रसन्नताकों प्राप्त होताहै ११ और जिसकों व्ययभावमें चद्रमा स्थित होताहै सो श्रेष्ठस्वभाव कर्के हीन होताहै और मित्रोंकर्के हीन होताहै और नेत्रोंमेंविकलतावाला होताहै और वहुत शत्रुयों वाला होताहै और क्रोधवाला विशेषसें होताहै १२ इतिचद्रस्य

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नःपुराणवार्त्ताश्रवणानुरक्तः सुकर्मसत्तीर्थपरोनरःस्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ९ क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशालाकीर्त्तिर्मूर्त्तिःसत्वसंतोषयुक्ता चंचल्लक्ष्मीःशीलसंशालिनीस्यान्मानस्थानेयामिनीनायकश्चेत् १० सन्माननानाविधवाहनाप्तिःकीर्त्तिश्चसद्भोगगुणोपलब्धिः प्रसन्नतालाभविराजमानेताराधिराजेमनुजस्यनूनम् ११ हीनत्वंवैचारुशीलेनमित्रैर्वैकल्यंस्यान्नेत्रयोःशत्रुवृद्धिः रोपावेशःपूरुपाणांविशेषात्पीयूषांशौव्ययसंवेश्मनीह १२ इति चंद्रस्य ॥ अथभौमभावफलं ॥ अतिमतिभ्रमतांचकलेवरक्षतयुतंवहुसाहसमुग्रताम् तनुभृतांकुरुतेतनुसंस्थितोऽवनिसुतोगमनागमनानिच १ अधनतांकुजनाश्रयतांतथाविमतितांकृपयाऽतिविहीनतां तनुभृतांविदधातिविरोधितांधननिकेतनगोऽवनिनंदनः २ भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारतांचारुपराक्रमश्च धनानिचभ्रातृसुखोझितत्वंभवेन्नराणांसहजेमहीजे ३ दुःखंसुहृद्वाहनतःप्रवासोकलेवरेरुक्वलताबलत्वं प्रसूतिकालेकिलमगलाख्येरसातलस्थेफलमुक्तमार्यैः ४

अवभौमकाभावफलकहतेहै जिसकोंतनुभावमें मंगलस्थित होताहै तिसकोंवुद्धिमें अत्यंत भ्रम होताहै और तिसकादेहघाओंकर्के और व्रणोंकर्केयुक्त होताहै और वडे उग्र हठवाला होताहै और गमनागमनमें भ्रमता रहताहै १ और जिसकों दूसरेस्थानमें मंगलहोताहै सो निर्धनताकों और खोटेजनके आश्रयकों और खोटीवुद्धिकोंप्राप्तहोताहै और दयाकर्के हीन होताहै २ और जिसकों तीसरे भावमें मंगल होताहै सो राजाको कृपाकों प्राप्त और श्रेष्ठसुखकों प्राप्त और वडी उदारता वाला और वडे श्रेष्ठपराक्रम वाला होताहै और धनकों प्राप्त होताहै और भ्राताके सुखसें हीन होताहै ३ और जिसकों चतुर्थभावमें मगलस्थित होताहै तिसकों मित्रोंसें और वाहनोंसें दुःख होताहै और विदेशमें वास होताहै तिसकेदेहमें रोगप्रवल होताहै और निर्वलहोताहै इहेजन्मलग्नमें चतुर्थ भावमें मंगलकाफल श्रेष्ठजनोंने कहाहै ४

औरजिसकोंपंचमभावमेंमंगलस्थितहोवे तिसकों कफऔरवायुककेंदेहमेंव्याकुलताहोतीहै और स्त्रीसें और मित्रोंसें और पुत्रसेंसुखकी हानिहोतीहै और तिसकीबुद्धिचंचलहोतीहै स्थिरनहिं होतीहै ५ और जिसकोंछठेभावमेंमंगलस्थितहोवे तिसकाजठराग्निविशेषसेंप्रबलहोताहै औरकोपहोताहै औरशत्रुयोंकानाशकर्त्ताहै और श्रेष्ठजनोंकोसंगतिकर्त्ताहै और कामकीवुद्धिवालाहोताहै ६ और जिसकोंसप्तमभावमेंमंगलस्थितहोताहै,, तिसकादेहअनेकप्रकारोंके अनर्थोंककेंऔरव्यर्थचिंताकर्केक्षीणहोताहै औरशत्रुयोंकेसमूहोंककेंपीडितहोताहै और स्त्रीसेंउत्पन्नभयाजोदुःखतिसककेंअत्यंततप्तहोताहै ७ औरजिसकोंअष्टमभावमेंमंगलहोवे तिसकेनेत्रोंमेंविकलताहोतीहै औरदुर्भगताहोतीहै और जिसकों रक्तसें पीडाऔर नीचकर्मोंमें प्रवृत्तिहोतीहै और तिसकी बुद्धिमें अंधताहोतीहै और श्रेष्ठजनोंकीनिंदाकर्ताहै,८ और,जिसकों नवमभावमें मंगल होताहै तिसकामन हिंसाकरणेंमें स्थितहोताहै

कफानिलाद्याकुलताकलत्रान्मित्राच्चपुत्रादपिसौख्यहानिः मतिर्विलोलाविपुलात्मजेऽस्मिन्प्रसूतिकालेतनयालयस्थे ५ प्राबल्यंस्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोषावेशःशत्रुवर्गोपशांतिः सद्भिःसंगोऽनंगवुद्धिर्नराणांगोत्रापुत्रेशत्रुसंस्थेप्रसूतौ ६ नानानर्थोव्यर्थचिंतोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवहीनदेहं दारारागात्यंतदुःखप्रतप्तंदारागारांगारकोऽयंकरोति ७ वैकल्यंस्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वंरक्तात्पीडानीचकर्मप्रवृत्तिः बुद्धेरांध्यंसज्जनानांचनिंदारंध्रस्थानेमेदिनीनंदनेस्मिन् ८ हिंसाविधानेमनसाप्रवृत्तिर्भूमीपतेर्गौरवतोल्पलब्धिम् क्षीणंचपुण्यंद्रविणंनराणांपुण्यस्थितःक्षोणिसुतःकरोति ॥ ९ ॥ विश्वंभरापतिसमत्वमतीवतोषंसत्साहसंपरजनोपकृतौप्रयत्नम् चंचद्विभूषणमणिद्विविधागमाश्चमेपूरणेधराणिजःकुरुतेनराणां ॥ १० ॥ ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमंसुललितानिचवाहनानि भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानिदद्यादवाप्तिभवनेहिसदावनेयः ११ स्वामित्रवैरंनयनातिवाधांक्रोधाभिभूतांविवलत्वमंगे धनव्ययंवंधनमल्पतेजोव्ययेधराजोविदधातिनूनम् ॥ १२ ॥ इतिभौमस्य ॥

औरराजासें गौरवता थोडी प्राप्तहोतीहै और पुण्य और धन क्षयकों प्राप्तहोताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशमभावमें मंगल स्थितहोताहै सो राजाके समान प्रसन्नताकों प्राप्तहोताहै और दूसरे के उपकार करणेंमें श्रेष्ठ उत्साहसें यत्नकरणे वाला होताहै और सुंदर भूषण मणियों ककेंयुक्तहोताहै और दोप्रकार कर्के धर्मा धर्मककें लाभकों प्राप्तहोताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश भावमें मंगल होताहै तिसकों तांबेका और मुंगेयोंका और स्वर्णका और वस्त्रोंका लाभहोताहै और सुंदर वाहनोंका लाभहोताहै और राजाकी कृपा और वडे कौतक और मंगलोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्यय भाव में मंगल स्थित होताहै तिसकों मित्रों सें विरोध और नेत्रोंमें अत्यंत पीडा और क्रोधककें युक्त और अंगोंमें निर्बलता कर्त्ताहै और धनका नाश और वंधन और थोडे तेजवालामनुष्यकों कर्त्ताहै ॥ १२ ॥ इतिभौमस्य ॥

अथवुधकाभावफलकहतेहै जिसकों जन्मकालमें लग्नमे वुधहोवे सो वडाशात औरनम्र ओरवडाउदार चित्तहोताहे और सर्वदाकालआचारमें तत्पर ओर पंडितहोताहे ओरविद्यावान् ओरकलाकेजाननेवाला ओरवहुतपुत्रोंवालाहोताहे १ औरजिसकोंदूसरेभावमेंवुध होताहै सोनिर्मलस्वभाववाला औरगुरों-काप्यारा औरकुशलताकरकेयुक्त ओरवडेसुखवालाहोताहै औरवडीशोभाकरके औरउच्चपदवी करके युक्त होताहे २ ओरजिसकों तीसरे भावमे वुधहोताहैसो हठसे अपने संवाधियोंकरयुक्तहोताहे औरचित्तकी शुद्धिसें रहित औरसुखसें रहितहोताहे और अपनी इच्छाकरके शुभकर्मको कर्ताहे ३ औरजिसकोच-तुर्थ भावमे वुधहोवे सो श्रेष्ठ वाहनों करके युक्त और धन धान्य करके युक्त होताहै और संगीतमे ओर नृत्यमेंरुचिवाला और विद्या औरभूषणों कीप्राप्तिवालाहोताहे ४ औरजिसकोंपंचमस्थानमेंवुधहोवे

॥ अथवुधभावफलम् ॥ शांतोविनीतःसुतरामुदारोनरः सदाचारपरोऽति-धीरः विद्वान्कलाज्ञोविपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौजननेतनुस्थे १ विमलशी-लयुतोगुरुवत्सलःकुशलताकलितार्थमहत्सुखः विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतोधन निकेतनगेशशिनंदने २साहसान्निजजनैःपरियुक्तश्चित्तशुद्धिरहिताहतसौख्यः मानवःकुशलितेप्सितकर्ताशीतभानुतनयेनुजसंस्थे ॥ ३॥ सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतःसंगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः विद्याविभूषागमनाधिशालीपातालगेशीत-लभानुसूनौ ४ पुत्रसौख्यसहितंवहुमित्रं मंत्रवादकुशलंचसुशीलम् मानवं-किलकरोतिसलीलं शीतदीधितिसुतःसुतसंस्थः ५ वादप्रीतिःसामयोनिष्ठुरा-त्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रेरा-त्रिनाथात्मजेस्मिन् ६ चारुशीलविभवैरलंकृतःसत्यवाक्यनिरतोनरोभवेत् कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनींदुजे ७ भूतप्रसादाप्तसमस्त सपत्नरोविरोधीसुतरांसुगर्वः सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्तारंध्रेभवेच्चंद्रसुतः प्रसूतौ ८

सो पुत्रकेसुखकोप्राप्तहोताहै और वहुतमित्रों वालाहोताहै औरमंत्रवादमें कुशल औरश्रेष्ठस्वभाववाला होताहै औरनिश्चयकरके लीला करके युक्तहोताहे ५ औरजिसकोंछठेभावमे वुध स्थितहोवे सो वादमे प्रीतिवाला और रोगकरकेयुक्त और कठोरहृदयवाला और अनेकशत्रुओंकरकें पीडित और नित्यप्रति आलस्यकरकें व्याकुलचित्तवालाहोताहे ६ और जिसको सातमें भावमे वुधस्थितहोवे सो सुंदरस्वभाव और ऐश्वर्योंकरके युक्तहोताहे औरसत्यवोलनेवालामनुष्यहोताहे औरस्त्री औरस्वर्ण और पुत्रोंकरकेयुक्त-होताहै ७ औरजिसको अष्टमभाव मवुधस्थितहोवे सोमनुष्य भूतोंकीकृपासे संपूर्णसंपदाको प्राप्तहो-ताहे और विरोधकरनेवाला होताहै और वडेगर्ववाला होताहै और संपूर्णयत्नोंकरकेदूसरेकेद्रव्यकोहरणे वाला होताहै ८

और जिसको नवमभाव मे वुधस्थितहोताहै सो उपकारके करणेवाला और श्रेष्ट विद्याके जानने वाला और आदर करणेवाला ओर चाकरोंका सुख और धनका सुख और पुत्रों के सुखवाला और विशेषकर्के संसारके तरणेकी इछावाला होताहै ॥ ९ ॥ और जिसको दशमस्थानमें वुधस्थित होवे सो ज्ञानवुद्धिवाला और श्रेष्ट कर्मो वाला और अनेक संपदा कर्केयुक्त और राजमान्य होताहै और सुदरलीलाकर्केवाग् विलासके करणे वालाहोताहै १० और जिसकोंएकादशस्थानमें वुधस्थित होवे सो भोगोंमे युक्त और वडे धनवाला और नम्र और नित्य आनंदमें प्राप्त और श्रेष्ठस्वभाववाला और वडे वलवाला होताहै और अनेक विद्यामे अभ्यास करणे वाला होताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्ययभावमें वुधहोवे सो दयाकर्के हीन और मित्रों कर्केहीन और अपने कार्यमे चतुर और अपने पक्षको जीतने वाला और धूर्त्त और मलीन होताहै ॥ १२ ॥ इतिवुधस्य ॥ अथवृहस्पतिका

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादर स्यादनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षौविशेषात् वितरण करणोद्यन्मानसोमानवश्चेदमृतकिरणजन्मापुण्यधामागमोयम् ॥ ९ ॥ ज्ञान प्रज्ञ श्रेष्ठकर्मामनुष्योनानासंपत्संयुतोराजमान्यः चंचल्लीलावाग्विलासाधिशालीमानस्थानेवोधनेवर्त्तमाने ॥ १० ॥ भोगासक्तोऽत्यंतवित्तोविनीतोनित्यानंदश्चारुशीलोवलिष्ठः नानाविद्याभ्यासकृन्मानव स्याल्लाभस्थानेनंदनेशीतभानोः ॥ ११ ॥ दयाविहीन.स्वजनोज्झितश्चस्वकार्यदक्षोविजितात्मपक्षः धूर्त्तोनितांतंमलिनोनर.स्याद्व्ययोपपन्नेद्विजराजसूनौ ॥ १२ इतिवुधस्य ॥ अथगुरु भावः॥ विद्यासमेतोभिमतोहिराज्ञांप्राज्ञःकृतज्ञोनितरामुदारः नरोभवेच्चारुकलेवरश्चतनुस्थितेचित्रशिखंडिसूनौ ॥ १॰ ॥ सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तःसंत्यक्तवैरोपिनरोगरीयान् त्यागीसुशीलोद्रविणेनपूर्णोगीर्वाणवंद्येद्रविणोपयाते ॥ २ ॥ सौजन्यहीन.कृपण कृतघ्न कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च नरोग्निमांद्याबलताममेत.पराक्रमेशक्रपुरोहितेस्मिन् ॥ ३ ॥ सन्माननानाधनवाहनाद्यैः सजातहर्षं पुरुप सदैव नृपानुकंपासमुपात्तसपद्भोलिभृन्मंत्रिणिभूतलस्थे ४

भावफलकहतेहै जिसकोंवृहस्पति तनुभावमें स्थितहोताहै सो विद्याकर्के सयुतहोताहै और राजाकी आज्ञामानने वाला और चतुर और कृतज्ञ और उदारचित्त होताहै और सुदर देहवाला होताहै १ ॥ और जिसकों वृहस्पति दूसरे भावम स्थित होताहै सो श्रेष्ट रूप और विद्या और गुण और यश कर्क युक्तहोताहै और वैभावकों त्यागनें वाला और त्यागी और श्रेष्ठ स्वभाववाला और धनकर्के पूर्ण होताहै ॥ २ ॥ और जिसको तीसरे भावमें वृहस्पति होताहै सो सुहृद्भावकर्केहीन और कृपण और कृतघ्न और स्त्री और पुत्रोंमें प्रीतिसें रहित और मदाग्निकर्के वलहीन होताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थभावमे वृहस्पति स्थितहोवे सो सन्मानकों प्राप्तहोताहै और अनेक प्रकारों काधन और वाहनादियां कर्के युक्तहोताहै और सर्वदाकाल राजाकी कृपासें संपदाकों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥

और जिसकों पंचम भावमें बृहस्पति स्थितहोवे सो श्रेष्टमित्र और पुत्र और श्रेष्ट मंत्रशास्त्र और अनेक प्रकारोंके श्रेष्ट वाहण और अनेक प्रकारोंके धनकों प्राप्त होताहै और कोमल वाणी करकें वाग्विलासकों कर्ताहै ५ और जिसकों छठे भावमें बृहस्पति स्थित होवे सो श्रेष्ठ गीत और श्रेष्ट विद्यामे चित्त हत होताहै अर्थात् गीत और विद्यामें तिसकी चित्तवृत्ति नहि लगतीहै यशमें प्रीति कर्ताहै शत्रुजनोंकों हत कर्ताहै और प्रारब्ध कार्यमें आलस्य करणेवाला होताहै ६ और जिसकों सप्तम भावमें बृहस्पति होवे सो शास्त्रअभ्यासमें चित्तकों लगावणेवाला और नम्र और स्त्री और धनका अत्यंत सुख करणे वाला और मंत्री और काव्यके करने वाला होताहै ७ और जिसको अष्टम भावमें बृहस्पति स्थित होवे सो दूतवृत्तिकों कर्णेवाला और मलीन दीन और विवेककरकेंही न होताहै और नम्रतासें रहित और आलस्य करकें सहित और कृशदेह वाला होताहै ८ और जि

सन्मित्रपुत्रोत्तममंत्रशास्त्रमुख्यानिनानाधनवाहनानि दद्याद्गुरुःकोमलवाग्विलासंप्रसूतिकालेतनयालयस्थः ५ सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिःकीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता प्रारब्धकार्यालसकृन्नरःस्यात्सुरेंद्रमंत्रीयदिशत्रुसंस्थः ६ शास्त्राभ्यासासक्तचित्तोविनीतःकांतावित्तात्यंतसंजातसौख्यः मंत्रीमर्त्यःकाव्यकर्ताप्रसूतौजायाभावेदेवदेवाधिदेवे ७ प्रेष्योमनुष्योमलिनोतिदीनोविवेकहीनोविनयोज्झितश्च नित्यालसःक्षीणकलेवरःस्यादायुर्विशेपेवचसामधीशे ८ नरपतेःसचिवःसुकृतीकृतीसकलशास्त्रकलाकलनादरः व्रतकरोहिनरोद्विजतत्परःसुरपुरोधसिवैतपसिस्थिते ९ सद्राजचिन्होत्तमवाहनानिमित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि यशोभिवृद्धिंबहुधाविधत्तेराज्येसुरेज्योविजयंनराणाम् १० सामर्थ्यमर्थागमनानिनूनंसद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि भूपप्रसादंकुरुतेनराणांगीर्वाणवंद्योयदिलाभसंस्थः ११ नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपंपापात्मानंसालसंत्यक्तलज्जम् बुद्ध्याहीनंमानवंमानहीनंवागीशोयंद्वादशस्थःकरोति ॥ १२ ॥ इतिगुरोः ॥

सकों बृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे सो राजाका मंत्री और धर्मात्मा और यज्ञकरणेवाला और संपूर्ण शास्त्रके विचारमें चित्तकों धारणे वाला और व्रतोंके करणे वाला और ब्राह्मणोंके पालने वाला होताहै ९ और जिसकों दशम भावमें स्थित बृहस्पति होवे सो श्रेष्ठराजलक्षणोंकों धारणे वाला और श्रेष्ट वाहनो वाला और मित्र और पुत्र और धन स्त्री के सुखकों प्राप्त होताहै और अनेक प्रकारोंके यशकों प्राप्तहोताहै १० और जिसकों एकादशभावमें बृहस्पति होताहैसो बडीसमर्थाकर्केयुक्तऔर धनके लाभकों निश्चयकर्के प्राप्त होताहै और श्रेष्टवस्त्र और श्रेष्ठवाहणोंवाला होताहै औरराजाको रुपावालाहोताहै ११ और जिसकोंव्ययभावमें बृहस्पतिस्थितहोवे सो अनेकप्रकारोंके चित्तके उद्वेगोंकर्के क्रोधकों प्राप्त होताहै और पाप करणे वाला और आलस्य करकें युक्त और लज्जाकों त्याग करणेवाला और बुद्धि और मानकर्के हीन होताहै १२ ॥ इतिगुरोः ॥

॥ अवशुक्रकाभावफलकहतेहैं ॥ जिसकों तनुभावमें शुक्रस्थितहोवे सो वहुतकलाके जानने में श्रेष्ट होताहै और निर्मलवाणी वाला और श्रेष्ट स्त्रीकर्के काम चेष्टा कों करणे वाला होताहै और राजमा. नकों और धनकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंदूसरे भावमें शुक्रहोवे सो श्रेष्ट अन्न और पानादि पदार्थों में प्रीतिवाला और श्रेष्ठ वस्त्र और भूपण और धन और वाहनों कर्के युक्तहोताहै और वि चित्रविद्याके जाननेवाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरेभावमे शुक्रहोवे सो कृश अंगों वाला और कृपण और दुष्टचित्तवाला और धनकर्के हीन और कामदेव कर्कें पीडित होताहै और श्रेष्ट. जनोंकों क्लेशदेने वाला और वहुत खोटे व्यवहार करणे वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें शुक्र स्थित होवे सो मित्रोंका और भूमिका और ग्रामोंका और श्रेष्टवाहनोंका अनेकप्रकारों के सुखकों भोगने वाला और देवताकों वंदनाकरणेवाला और नित्यं प्रति आनंदकर्के युक्तसोमनुष्य

॥ अथशुक्रभावः ॥ वहुकलाकुशलोविमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवःपुमान् अवनिनायकमानधनान्वितोभृगुसुतेतनुभावगतेसति ॥ १ ॥ सदन्नपानाभिर तंनितांतंसद्वस्त्रभूपाधनवाहनाढ्यं विचित्रविद्यंमनुजंप्रकुर्याद्दनोपपन्नोभृगुनंद नोयम् ॥ २ ॥ कृशांगयष्टिःकृपणोदुरात्माद्रव्येणहीनोमदनानुतप्तः सतामभि घोवहुदुष्टचेष्टोभृगोस्तनूजेसहजेनरःस्यात् ॥ ३ ॥ मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानांना नासौख्यंवंदनंदेवतानाम् नित्यानंदंमानवानांप्रकुर्यात्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थि तोयम् ॥ ४ ॥ सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः नरप्र तेर्गुरुगौरवभाङ्नरोभृगुसुतेसुतसद्मनिसंस्थिते ॥ ५ अभिमतोनभवेत्प्रमदाज नेननुमनोभवहीनतरोनरः विवलताकलितःकिलसंभवेभृगुसुतेरिगतेरिभया न्वितः ॥ ६ ॥ वहुकलाकुशलोजलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः अति तरांनटिनीकृतसौहृदःसुनयनाभवनेभृगुनंदने ७ प्रसन्नमूर्तिर्नृपलब्धमानःश ठोतिनिःशंकतरःसगर्वः स्त्रीपुत्रचिंतासहितःकदाचिन्नरोष्टमस्थानगतेसितास्ये ८

होताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों पंचम भावमें शुक्र स्थित होताहै सो संपूर्ण काव्यों कर्के युक्त और पुत्र और वाहन और धान्योंकर्के युक्तहोताहै और वडे राजमान कों प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिस कों छठे भावमें शुक्रस्थितहोताहै सो स्त्रीजनोंका प्यारा नहिं होताहै और कामकर्के हीन होताहै और निर्वलताकर्के संयुक्तहोताहै और शत्रुयों के भयकर्के युक्तहोताहै ॥ ६ ॥ और सिसकों सप्तम भावमें शुक्रस्थितहोवे सो वहुतकलामे श्रेठ होताहै और जलक्रीडाके करणे वाला और रतिविलास केकरणेमें वडाचतुर होताहै और अत्यंत चंचलस्त्रींसें सुहृद्भाव करणे वाला होताहै ॥ ७ ॥ और जिसकों अष्टमभावमें शुक्रस्थितहोताहै सो प्रसन्नमूर्त्ति और राजाके मानकों प्राप्त और शठ और नि शंकवोलनेवाला और गर्व कर्केयुक्त होताहै और स्त्रीकीऔर पुत्रकीचिंताकर्के कदाचित् युक्तहोताहै ८

और जिसकों नवम भावमे शुक्रहोताहै सो अभ्यागतोंमे और गुरु देवता की पूजामे और तीर्थ यात्रा में धन खर्च कर्ताहे और नित्य प्रति धन और वाहनों के सुख कों प्राप्तहोताहै और मुनियों की न्याई रूप कों धारताहै और क्रोध कर्के रहित होताहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमे शुक्र होवे सो सौ भाग्यता और सन्मान कर्के सोभा को प्राप्त होताहै और स्नान पूजन ध्यानमें चित्तकों लगाताहै और धनी होताहै और स्त्री पुत्र मे नित्य प्रति प्रीति करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसको एकादश भाव में शुक्र होवे सो श्रेष्ट गीत नृत्यमें प्रीति कों प्राप्त होताहे और नित्य प्रति यात्राकी चिंता कों प्राप्तहोताहै और श्रेष्ट कर्म और धर्म और वेदमें चित्त की वृत्तिको लगावताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्यय भाव में शुक्र स्थित होवें सो श्रेष्ट कर्मोंके मार्ग कों त्याग देताहै और विरोध करणे वाला होताहै और कामदेवके आराधनमे चित्तकोधारताहै और दया और

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः प्रतिदिनधनयानात्यतसंजातहर्षः मुनिजनसमवेष.पूरुषस्त्यक्तरोषो भवतिनवम भावेसंभवेभार्गवेस्मिन् ॥ ९ ॥ सौभाग्यसन्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमनाधनाढ्यः कांतासुतप्रीतिरतीवनित्यंभृगोःसुतेराज्यगतेनराणाम् ॥ १० ॥ सद्गीतनृत्यादरतानितांतं नित्यंचचिंतागमनानिनूनम् सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोःसुतोलाभगतोयदिस्यात् ॥ ११ ॥ संत्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधीमनोभवाराधनमानसश्च दयालुतासत्यविवर्जितःस्यात् काव्येप्रसूतोव्ययभावयाते ॥ १२ ॥ इतिभृगो. ॥

॥ अथशनिभावः ॥ प्रसूतिकालेनलिनीशसूनु.स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतोविलग्ने कुर्यान्नरंदेशपुराधिनाथंशेषेष्वभद्रंसरुजंदरिद्रम् ॥ १ ॥ अन्यालयस्थोव्यसनाभिभूतोजनोझितः स्यान्मनुजश्चपश्चात् देशांतरेवाहनराजमानो धनाभियानेभवनेर्कसूनौ २ राजमानशुभवाहनयुक्तोग्रामपोवहुपराक्रमशाली पालकोभवतिभूरिजनानांमानवोहिरविजेसहजस्थे ३ पित्तानिलक्षीणवलंसुशीलमालस्ययुक्तंकलिदुर्वलांगं मालिन्यभाजंमनुजंविदध्याद्रसातलस्थोनलिनीशजन्मा ४

सत्कर्के रहितहोताहै ॥ १२ ॥ इतिशुक्रस्य ॥ अवशनिकाभावफलकहतेहै जिसकों जन्मसमयमें तनु भावमें शनि स्थित होवे और तुला मकर कुंभ राशिमेस्थितहोवे सो मनुष्य देशोंका और पुर ग्रामों का स्वामी होताहै और शेष जो राशी हैं तिनमें तनु भाव गत शनि होवे तो नीच और रोगी और दरिद्री होताहै ॥ १ ॥ और उच्चस्वक्षेत्र के विना धनभावमे जिसकों शनि स्थित होताहै सो व्यसनों कर्के पीडित और मनुष्यों कर्के त्यक्त और विदेशमे वाहन कों और राजमान को प्राप्त होताहै २ और जिसकों तीसरे भावमे शनि स्थित होवे सो राजमान कर्के और श्रेष्टवाहनों कर्के युक्त होताहै और ग्रामका स्वामी और वडे पराक्रम वाला होताहै और वहुत जनोंकी पालना करणेवाला होताहै ३ और जिसकों चतुर्थभावमेशनिस्थितहोताहैसोपित्त और वायुकर्केक्षीणवलवाला और खोटे स्वभाववालाऔर आलस्य कर्केयुक्त औरलडाई कर्के दुर्वलांग और धनहीन मनुष्यहोताहै ४

और जिसको पंचम भावमें शनि स्थित होताहे सो सर्वदा कालरोग कर्के कृश देह वाला होताहे और धन कर्के और कामकर्के रहितहोताहे और पुत्रकों पीडा करणे वाला होताहै ॥ ५ ॥ और जिसकों छठे भावमें शनि स्थित होता है सो शत्रुयोंके समूहकों जीतने वाला और गुणके जानने वाला और श्रेष्ठ कर्मों के जाननेवाला और अनेकोंकों परि पालन करणे वाला और पुष्ट देह वाला और प्रबल जठराग्नि वाला और बडा बलवान् होताहै ॥ ६ ॥ और जिसकों सप्तम भावमें शनिस्थित होवे सो रोग कर्के निर्बलताकों प्राप्त होताहे, और उपजीवका कर्के और मनुष्योंसें मिलाप कर्के रहित होताहे और स्त्री और घर और अन्नकों चितासें दुःखी होता है ॥ ७ ॥ और जिस कों अष्टमभाव में शनि स्थित होवे सो कृश देह वाला और निश्चय कर्के दद्रू और फोडेयों कर्के पीडित और संतोष सें रहित और आलस्य कर्के युक्त होताहे ॥ ८ ॥ और जिसकों नवम

सदागदक्षीणतरंशरीरंधनेनहीनत्वमनंगहानिम् प्रसूतिकालेनलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितःपुत्रभयंकरोति ॥ ५ ॥ विनिर्जितारातिगणोगुणज्ञःसुज्ञाभ्यनुज्ञा परिपालकःस्यात् पुष्टांगयष्टिःप्रबलोदराग्निर्नरोर्कपुत्रेसतिशत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥ आमयेनबलहीनतांगतोहीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः कामिनीभवनधान्यदुःखितःकामिनीभवनगेशनैश्चरे ॥ ७ ॥ कृशतनुर्ननुदद्रूविचर्चिकाप्रभवतो भयतोपविवर्जितः अलसतासहितोहिनरोभवेन्निधनवेश्मनिभानुसुतेस्थिते ॥ धर्मकर्मसहितोविकलांगोदुर्मतिर्हिमनुजोऽतिमनोज्ञः संभवस्यसमयेयदिकोणस्त्रित्रिकोणभवनेयदिसंस्थः ॥ ९ ॥ राज्ञःप्रधानमतिनीतियुतंविनीतंसद्ग्रामवृंदपुरभेदनकाधिकारम् कुर्यान्नरंसुचतुरंद्रविणेनपूर्णमेपूरणेहितरणस्तनुजः करोति ॥ १० ॥ कृष्णाश्वानींद्रनीलोर्णकानांनानाचंचद्वस्तुदंतावलानाम् प्राप्तिंकुर्यान्मानवानांबलीयान्प्राप्तिस्थानेवर्त्तमानेर्कसूनौ ॥ ११ ॥ दयाविहीनोविधनोव्ययार्त्तःसदाऽलसोनीचजनानुयातः नरोंऽगभंगोज्झितसर्वसौख्योव्ययस्थितेभानुसुतेप्रसूतौ ॥ १२ ॥ इतिशनेः ॥

भावमें शनि स्थित होताहे सो धर्म कर्म कर्के युक्तहोताहे और व्याकुल अंगों वाला और खोटी बुद्धि वाला और अत्यंतता कर्के अपने मनकों मानने वाला होताहे ॥ ९ ॥ और जिसकों दशम भावमें स्थित शनिहोवे सो राजाका मंत्री और नीति कर्के युक्त और नम्र होताहे और श्रेष्ठ ग्राम और पुरों के समूहों कों भेद करणे के अधि कारकों प्राप्त होताहे और चतुर और धन कर्के पूर्ण होता हे ॥ १० ॥ और जिसको एकादशभावमें स्थित शनिहोवे सो काले रंगके घोडे और नीलें द्रमणियां और ऊर्ण वस्त्र और हाथीयों के लाभ वाला होताहे जब बल युक्त एकादशमें शनिहोवें तब अयसाहोताहे ॥ ११ ॥ और जिसकों व्ययभावमें शनि स्थितहोवे सो दयासें हीन और धन से हीन और खर्च कर्के पीडित और सदा आलसी नीचों की संगति करणे वाला और अंगहीन और सुख हीन होताहे ॥ १२ ॥ इतिशनेः ॥

और कहतेहैं तन्वादि द्वादश भावों काफल शनिका जो कहाहै सोई फल शनिकी न्याई राहुका जानने योग्यहै मुनियों के मतमें अयसें कहाहै ॥ १३ ॥ और जो ग्रह अपने उच्च में स्थित होताहै सो भावफल पूर्ण देताहै और जो ग्रह अपने क्षेत्र में और मित्रके क्षेत्रमें स्थित होताहै सो अर्द्ध भावफल देताहै और जो शत्रु क्षेत्र में स्थित होताहै सो चतुर्थांश भावफल देताहै और जो ग्रह अस्त होताहै अर्थात्सूर्यके समान अंशादि होताहै सो भावफल थोडा बी नाहिं देताहै ॥ १४ ॥ ॥ अवराहुकाभिन्नभावफलकहतेहैं ॥ जिसकों लग्नमें राहुस्थित होवे सो दुष्ट बुद्धि वाला और खोटे स्वभाववाला और संबधियों के ठगने वाला होताहै और शिरपीडा कर्के युक्त और काम चेष्टा कर्के पीडित कर्त्ताहै और विवादमें जयकर्त्ताहै और रोगकर्के युक्तकर्त्ताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंराहु दूसरे भावमें स्थित होताहै सो मनुष्यकों कठोर कर्त्ताहै और धनहीन और दरिद्री और निश्चयकर्के भ्रमणे वाला कर्त्ताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरे भावमें राहु स्थित होताहै सो शत्रुयोंके ऐश्वर्य

तन्वादिस्थशनेःप्रोक्तंयच्चभावोद्भवंफलम् राहोस्तदेवविज्ञेयंमुनीनामपिसंमतम्१३ स्वोच्चस्थितःपूर्णफलंहिधत्तेस्वर्क्षेहितर्क्षेहिफलार्धमेव फलांघ्रिमात्रंरिपुमंदिरस्थं श्चास्तंप्रयातःखचरोनकिंचित् ॥ १४ ॥ अथराहुभावफ० ॥ लग्नेतमोदुष्टमतिस्वभावंनरंचकुर्यात्स्वजनानुवंचकम् शीर्ष०यथाकामरसेनसंयुतंकरोतिवादेविजयंसरोगम् ॥ १ ॥ धनगतोरविचंद्रविमर्दनोमुखरतांकितभावमथोभवेत् धनविनाशकरोहिदरिद्रतांखलुतदालभतेमनुजोटनम् ॥ २ ॥ दुश्चिक्येरिभवोद्भवंविनिहतेलोकेयशस्वीनरः श्रेयोवादिभवंतदाहिलभतेसौख्यंविलासादिकम् भ्रातृणांनिधनंपशोश्चमरणंदारिद्रभावैर्युतंनित्यंसौख्यगणैःपराक्रमयुतंकुर्याच्चराहुःसदा ॥ ३ ॥ सुखगतेरविचंद्रविमर्दनेसुखविनाशनतांमनुजोलभेत् स्वजनतांसुतमित्रसुखनरोनलभतेचसदाभ्रमणंनृणाम् ॥ ४ ॥ गतसुखोनहिमित्रविवर्धतामुदरशूलविलासनिपीडनम् खलुतदालभतेमनुजोभ्रमंसुतगतेरविचंद्रविमर्दने शत्रुक्षयंद्रव्यसमागमंचपशूपुपीडांकटिपीडनंच समागमंम्लेछजनैर्महाबलंप्राप्नोतिजंतुर्यदिषष्ठगेतमे ॥ ६ ॥

कों नाशकर्त्ताहै और लोकमें यशवाला होताहै और कल्याणता कों और ऐश्वर्य कोंप्राप्त होताहै और सुख और विलासकों प्राप्तहोताहै और भ्राता जो है तिनकों मृत्युकर्त्ताहै और पशुयों कानाशकर्त्ताहै और दारिद्रकर्के युक्तकर्त्ताहै और नित्यं प्रति सुखके समूहों कर्के युक्त और पराक्रम कर्के युक्तकर्त्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें राहुस्थित होताहै सो सुखके नाशकों प्राप्तहोताहै और मित्र और पुत्र के सुखकों नाहिं प्राप्त होताहै और सदाभ्रमण कर्त्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों पंचमभावमें राहुस्थित होताहै सो सुखकर्के रहित और मित्रताकर्के रहित और पेटमें शूल कों प्राप्तकर्त्ता है और विलास में पीडा कर्त्ताहै और भ्रमकों उत्पन्नकर्त्ताहै ५ और जिसकों छठेभावमें राहुस्थित होवे सो शत्रुयोंकाक्षय और द्रव्यके समागमकों प्राप्तहोताहै औरपशुयों कों पीडा कर्त्ताहै और लक्क पीडा कर्के युक्त होताहै और म्लेच्छोंके समागमकों प्राप्त होताहै और वडेवलकों प्राप्तहोताहै ॥ ६ ॥

और जिसकों सप्तमभावमें राहुस्थितहोताहै सो निश्चयकर्के स्त्रीसें विरोध अथवास्त्रीके नाशकों कर्त्ताहै अथवा प्रचंडरूप बडे क्रोधवाली स्त्रीकों प्राप्तकर्त्ताहै अथवा विवाद करणेवाली अथवा रोगनी स्त्रीकोंप्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥ और जिसकों अष्टमस्थानमें राहुस्थितहोवे सो नाशकों प्राप्त और गुदामें पीडा और प्रमेह रोग अथवा अंडवृद्धि रोगकों प्राप्तहोताहे और शत्रुभावकर्के व्याकुलहोताहै ॥ ८ ॥ और जिसकों नवमभावमें राहुस्थितहोताहै सो धर्म और धनके नाशकों प्राप्तहोताहै और थोडासुख और निश्चयकर्के भ्रमणहोताहै और दरिद्रभाव और संबंधियोंका थोडा सुख होताहै और देहपीडाहोतीहै ॥ ९ ॥ और जिसकों दशमभावमें राहुहोताहेसो पिताकेसुखकों नहिंप्राप्तहोताहै और खोटे भाग्यों-वाला होताहे और शत्रुयोंकानाशकर्त्ताहै और रोगी और वाहन हीन और वातरोगी होताहै जब मीन राशिका दशममें स्थितहोवे तबघरकों भोगने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश-

जायाविरोधंखलुवाप्रणाशंप्रचंडरूपामथकोपयुक्ताम् विवादशीलामथरोगयुक्तां प्राप्नोतिजंतुर्मदनेतमेच ॥ ७ ॥ अनिष्टनाशंखलुगुह्यपीडांप्रमेहरोगंवृषणस्य वृद्धिं प्राप्नोतिजंतुर्विकलारिलाभंसिंहीसुतेवाखलुमृत्युगेहे ॥ ८ धर्मार्थनाशः किलधर्मगेतमेसुखाल्पतावैभ्रमणंनरस्य दारिद्रताबंधुसुखाल्पताचभवेच्चलोके किलदेहपीडा ॥ ९ ॥ पितुर्नोसुखंकर्मगोयस्यराहुःस्वयंदुर्भगःशत्रुनाशंकरोति रुजोवाहनेवातपीडांचजंतोर्यदासौखगोमीनगःकष्टभाजम् १० ॥ लाभिगतेय दितमेसकलार्थलाभंसौख्याधिकंनृपगणाद्विविधंचमानम् वस्त्रादिकांचनचतुष्पद सौख्यभावंप्राप्नोतिसौख्याविजयंचमनोरथंच ॥ ११ ॥ नेत्रेचरोगंकिलपादघातं प्रपंचभावंकिलवात्सलत्वम् दुष्टेरतिंमध्यमसेवनंचकरोतिजातंव्ययगेतमेवा १२ इतिराहोः ॥ अथकेतोर्भावफलं ॥यदालग्नगश्चेच्छिखीसूत्रकर्त्तासरोगादिभोगो भयंव्यग्रताच कलत्रादिचिंतामहोद्वेगताचशरीरेप्रबाधाव्यथामारुतस्य ॥ १

भावमें राहुस्थितहोवे सो संपूर्ण अर्थलाभकों प्राप्त और अधिकसुखकों प्राप्तहोताहै और राजवर्गसें अनेकप्रकारके सुखकों प्राप्तहोताहै और वस्त्रादियोंका और स्वर्णका और चतुष्पदोंके लाभकों प्राप्त होताहै और जयकों और मनोरथोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ११ ॥ और जिसकों व्ययभावमें राहुस्थितहो-ताहै सो मनुष्य नेत्र रोगी और पादमें घात वाला और बडाप्रपंची और निश्चयकर्के प्रीति करणे वाला होताहै और दुष्ट जनसें प्रीति वाला और मध्यम पुरुषकी सेवाकरणे वाला होताहै ॥ १२ ॥ ॥ इतिराहोः ॥ अबकेतूकाभावफलकहतेहैं ॥ जिसमनुष्यकों लग्नमें केतुस्थितहोताहै सो सूत्रकर्ताहो-ताहै और रोगादियों कर्के भयकों प्राप्तहोताहे और चित्तशुद्धिकों नहि प्राप्तहोताहै और स्त्रीकी चिंता-और बडे उद्वेगकों प्राप्तहोताहे और देहमें वायुकीपीडाकर्के युक्तहोताहै १ ॥

और जिसमनुष्यकों दूसरेभावमें केतुस्थितहोताहै सो धान्य और धनकेनाशकों प्राप्तहोताहै और कुटुं वसें विरोधकोंप्राप्त होताहै और राजासें धनकी चिंताकों प्राप्तहोताहै और मुखरोगवाला सर्वदाकाल होताहै और जब केतु अपने घरमें और शुभग्रहके घरमें स्थितहोवे तब वडे सुखवाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसकों तीसरे भावमें केतुस्थितहोवे सो शत्रुओंका नाश और शत्रुयोंसें विवादकर्त्ताहै और धन और भोग और ऐश्वर्य और वडातेजकर्त्ताहै और भ्राताकानाश और बाहोंमें पीडाकर्त्ताहै और अपने उच्चराशीमें केतुस्थितहोवे तब सुख और संसारमें उदासी नताकर्त्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों चतुर्थ भावमें केतुस्थितहोवे सो तिसकों माताका सुख कदाचित् नहिं होताहै और मित्रवर्गसे और पिताके वर्गसे नाशकों प्राप्तहोताहै और भ्राताकर्के रहित होताहै और जबकेतु अपने उच्चका होवे अर्थात् वृश्चिकराशीमें अथवा सिंहराशिमें होवे तबमाता और पिता और मित्रादियों

धनेचेच्छिखीधान्यनाशोधनंचकुटुंबाद्विरोधोन्नृपाद्गव्यचिंता मुखेरोगतासंततंस्या त्तथाचयदास्वेगृहेसौम्यगेहेतिसौख्यम् ॥ २ ॥ शिखीविक्रमेशत्रुनाशंचवादंधनं भोगमैश्वर्यतेजोधिकंच भवेद्बंधुनाशःसदाबाहुपीडासुखंस्वोच्चगेहेभवोद्विगताच ३ चतुर्थेचमातुःसुखंनोकदाचित्सुहृद्वर्गतःपितृतोनाशमेति शिखीबंधुहीनःसुखं स्वोच्चगेहेचिरंनैतिसर्वैःसदाव्यग्रताच ॥ ४ ॥ यदापंचमेयस्यकेतुश्चजातः स्वयंस्वोदरेघातपाताादिकष्टं सुबंधुप्रियासंततिःस्वल्पपुत्रःसदासंभवेद्वीर्ययुक्तो नरश्च ॥ ५ ॥ शिखीयस्यषष्ठस्थितोवैरिनाशोभवेन्मातुलात्पक्षतोमानभं गः चतुष्पात्सुखंद्रव्यलाभोनितांतंनरोगोस्यदेहेसदाव्याधिनाशः ॥ ६ ॥ शिखीसप्तमेमागतश्चित्तवृत्तिंसदावित्तनाशोऽथवावारिभूतः भवेत्कीटगेसर्वदाला भकारी कलत्रादिपीडाव्ययेत्युग्रताच ॥ ७ ॥

कासुखहोताहै परतु चिरकाल सुख नहिंहोताहै और सदाचित्त उदासीनरहिताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों पंचमभावमें केतु होताहै तिसके पेटमे घात और डिगने सें कष्ट होताहै और सबांधि. यासें प्रीतिवाला और थोडे पुत्रों वालाहोताहै और सर्वदाकाल कल्याणकर्के युक्त और बलवान होता है ५ और जिसकों छठेभावमें केतुहोताहै सो शत्रुयों कानाशकर्त्ताहै और मामयों के पक्षसें मान भगकों प्राप्तहो ताहै और चतुष्पद जोहै गौवा और महिषिया और घोडेयोंसें लैकर्के तिनका सुख होताहै और निरंतरधनकों प्राप्तहोताहै और देहसें आरोग्य सर्वदाकाल व्याधियोंसें रहित होताहै ६ ॥ और जिसकों सप्तमभावमे केतुहोताहै तिसको रस्ते सें चिताकर्के चित्तवृत्ति रहितीहै और सदा शत्रुयों कर्के धनकानाश होताहै और वृश्चिकराशिमेंस्थितहोवे तब सदा लाभकरणे वाला होताहै और स्त्री आदिकों की चिंता और सदा चित्तके विकारको प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥

और जिसमनुष्यकों अष्टमभावमें केतुस्थितहोताहै तिसकोंगुदामेरोगहोताहै और जबवृश्चिक और कन्या और मिथुनराशीमें और मेष और वृषराशीमें स्थित होवे तब वडे द्रव्य कालाभकर्त्ताहै ८ और जिसमनुष्य को नवमभावमें केतु स्थित होवे तिसके क्लेशकानाश कर्त्ताहै और सो मनुष्य पुत्र की इछावाला होताहै और म्लेछ के प्रसंगसें तिसके भाग्यों कीवृद्धि होतीहै और कारण सें तिसकों पीडा होतीहै और बाहुयों में पीडा होती हैं और तप और दानमें तिसकी श्रद्धा नाहीं होती है ॥ ९ ॥ और जिसमनुष्य कोंदशम भावमें केतुस्थित होताहै तिसकों पिताका सुख नहिंहोताहै और खोटे भाग्योंवाला और बहुनशत्रुयों केनाशकरणे वाला होताहै और रोगी और वाहन कोपीडा वाला और वायुविकार वाला होताहै और जबकन्या राशीमें होवे तब सुख और दुःख दोनों के करणे वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसकों एकादश भावमें केतुहोवे सो सुंदर बोलने वाला और श्रेष्ठ विद्या

गुदेपीडनंबाहनैर्द्रव्यलाभंयदाकीटगेकन्यकेयुग्मगेवा भवेच्छिद्रगेराहुछायायदा स्यादजेगोलिगेजायतेचातिलाभः ८ यदाधर्मगःकेतवःक्लेशनाशःसुतार्थीभवेन्म्लच्छतोभाग्यवृद्धिः सहेतुर्व्यथाबाहुरोगंविधत्तेतपोदानतोहास्यवृद्धिंकरोति ९ पितुर्नोसुखंकर्मगोयस्यकेतुःस्वयंदुर्भगःशत्रुनाशंकरोति रुजोवाहनेवातपीडांच जतोयदाकन्यगःसौख्यगःकष्टभाजं ॥ १० ॥ सुभाषीसुविद्याधिकोदर्शनीयःसुभोगःसुतेजाःसुवस्त्रोपियस्य गुदेपीड्यतेसंततेर्दुर्भगत्वंशिखीलाभगःसर्वकालंकरोति ११ शिखीरिःफगःपादनेत्रेचपीडांस्वयंराजतुल्योव्ययंवैकरोति रिपोर्नाशनंमानसेनैवशर्मरुजापीड्यतेवस्तिगुह्यांगरोगं १२ इतिकेतुफ० अथमेषादिगृहेरवौग्रहदृष्टिफलम् ॥ दानधर्मबहुभृत्यसंयुतःकोमलामलतनुर्गृहप्रियःश्रावनेयभवनेविरोचनेशीतदीधितिनिरीक्षितेसति॥ १ क्रूरोनरःसंगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलंबलीयान् भवेदवश्यंकुजगेहसंस्थेदिवामणौक्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २ ॥

वाला और रूपवान् और श्रेष्ठ भोगोवाला और तेजस्वी श्रेष्टवस्त्रों वाला और गुदामें रोग वाला और खोटी संतानवाला होताहै ११ और जिसकों व्ययभावमें केतु होताहै सो पैरोंमें और नेत्रोंमें पीडावाला और आपराजाकी न्याई खर्चकरणे वाला होताहै और शत्रुयों कानाशकर्त्ताहै और तिसके चित्तमें सुखनाहीं होताहै और वस्तिमें और गुदामें रोगकर्के पीडित होताहै ॥ इतिकेतोः अवमेषादिराशियोंमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहोंकोया दृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमेंसूर्यस्थितहोवे और चंद्रमाकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य दान औरधर्मकर्के युक्त और बहुत चाकरोंवाला और कोमलनिर्मल देह वाला और घरमेंप्रीति वालाहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकोंमंगलकेगृहमेंसूर्यहोवे और मंगलदेखताहोवे सो क्रूर और युद्धमेंधीर्यवाला और लालनेत्रोंवाला और लालपैरोंवाला और बडाबली निश्चयकर्केहोताहै ॥ २ ॥

और जिसकों मंगल केघरमें सूर्य बुधकर्के दृष्टहोवे सो वलकर्के और सुखकर्के और धन कर्के रहितहोताहै और दूत और प्रदेशमे रहणे वाला और मलीन सदारहताहै और अवश्यमेव शत्रुयों वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसकों मंगलके घरसूर्यबृहस्पतिकर्के दृष्टहोवे सो दाता और दयावान् और बडेधनकर्केयुक्त और राजाकामंत्री और कुलमे प्रसिद्ध होताहै ॥ ४ ॥ और जिसकों मंगलकेघरमेंसूर्य शुक्रकर्के दृष्टहोवेसोहीनवर्णकी स्त्रीसेंप्रीति कर्ताहै और बडादीन और धनकर्केहीनहोताहै और खोटेमित्रवाला और त्वचामें दद्रुस्फोटादिदोष, कर्केयुक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमे भौमकेघरमें सूर्य शनिकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य उत्साहकर्के रहित और मलीन और बडादीन और दुःखकर्केयुक्त और बुद्धिहीनहोताहै ॥ ६ ॥ अव-

सुखेनसत्वेनधनेनहीनःप्रेष्यःप्रवासीमलिनःसदैव भवेदवश्यंपरवान्मनुष्यः सहस्त्ररश्मौकुजभेज्ञदृष्टे ॥ ३ ॥ दातादयालुर्बहुलार्थयुक्तोनृपालमंत्री कुलधुर्यवर्यः स्यान्मानवोभूतनयालयस्थेपत्यौनलिन्याःकिलजीवदृष्टे ॥ ४ हीनांगनाप्रीतिरतीवदीनोधनेनहीनोमनुजःकुमित्रः त्वग्दोषयुक्तःक्षितिपुत्रगेहेमित्रेऽधिसंस्थेभृगुपुत्रदृष्टे ॥ ५ ॥ उत्साहहीनोमलिनोतिदीनोदुःखाभिभूतो विमतिर्नरःस्यात् कांतिर्नलिन्याःक्षितिजालयस्थेप्रसूतिकालेरविजेनदृष्टे ॥ ६ वरांगनाप्रीतिकरोनितांतंस्याद्भूरिभार्यःसलिलोपजीवी दिनाधिराजेभृगुजालयस्थेकलानिधिप्रेक्षणतांप्रयाते ॥ ७ ॥ संग्रामधीरोतितरांमहौजाःसुसाहसंप्राप्तधनोरुकीर्त्तिः क्षीणोनरःस्याद्भृगुमंदिरस्थेसहस्त्ररश्मौकुसुतेनदृष्टे ॥ ८ ॥ संगीतसत्काव्यकलाकलापेलेखक्रियायांकुशलोनरःस्यात् प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयातेप्रद्योतनेसोमसुतेनदृष्टे ॥ ९ ॥ वंशानुमानान्नृपतिप्रधानःसद्रत्नभूपाद्रविणान्वितोवा भीरुर्नरःशुक्रगृहंप्रपन्नेदृष्टेरवौदेवपुरोहितेन ॥ १० ॥

शुक्रकेघरमें स्थितसूर्यमेंग्रहोंकीदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्रकेघरसूर्यस्थितहोवे और चद्रमाकर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठस्त्रीसेंप्रीतिकरणेवाला और बहुतस्त्रीयोंवाला और जलके प्रसंगसें उपजीविकावालाहोताहै ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रके घरमेंसूर्यमंगलकर्के देख्याहोवे सो युद्धमेंधीर्य वाला और बडेतेजवाला और बडेहर्षकर्केधन और यशकोंप्राप्तहोताहै और देहकर्केक्षीणहोताहै ॥ ८ ॥ और जिसकोंशुक्रके घरमेंसूर्यबुधकर्केदेख्याहोवे सो गीतविद्या और श्रेष्ठकाव्यसमूहके करणेवाला और लिखनेमेंचतुर और प्रसन्न मूर्तिहोताहै ॥ ९ ॥ और जिसकोंशुक्रकेघरमे सूर्य बृहस्पतिकर्के देख्याहोवेसो अपने वंशके अनुमानसें राजाकामंत्रीहोताहै और श्रेष्ठरत्न और भूषणऔर द्रव्यकर्केयुक्तहोताहै और भयकर्केयुक्तहोताहै ॥ १० ॥

और जिसके जन्मसमयमेंशुक्रकेघरमेंसूर्य शुक्रकर्के देख्याहोवेसो सुंदरनेत्रोंवाला और सुंदरदेहवाला और प्रधानपुरुषहोताहै औरमित्रों औरशत्रुयोंकर्के युक्तहोताहै औरचिंताकर्केयुक्तहोताहै ११ औरजिसके जन्मकालमें शुक्रके घरमें सूर्य शनि कर्के देख्याहोवे सोमनुष्य दीन और धनकर्केहीन और आलसकर्केवडामलीन औरस्त्रीकेसाथ चित्तवृत्तिसेंहीनहोताहै औरखोटीवृत्तिवाला,और रोगकर्केयुक्तहोताहै १२ अववुधकेघरमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसमनुष्यकाजन्मकालमेंवुधकेघरसूर्यचंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो मित्रोंकर्के और शत्रुयों कर्केपीडितहोताहै और विदेशरहणेवाला औरधनकर्केहीनहोताहै औरनिरंतर सदाउदासीनरहिताहै १३ औरजिसके जन्मकालमें बुधकेघरमें सूर्य मंगलकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य शत्रुयोंकेभयकर्के और कलहादियोंकर्के संयुक्तहोताहै और अत्यंतदीनहोताहै औरयुद्धमें जयविधिसेंहीनहोताहै और वडीलज्जाकों प्राप्तहोताहै और आलसकर्के युक्तहोताहै १४ औरजिसमनुष्य

सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः भवेन्नरोदैत्यगुरोर्गृहेर्के संवीक्षितेदैत्यपुरोहितेन ११ दीनोर्थहीनोलसतांप्रपन्नोभार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेर्केर्कसुतेनदृष्टे १२ मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्चविदेशजातोऽपिधनेनहीनः निरंतरोद्वेगकरोनरः स्यात्सौम्यालयेर्केहरिणांकदृष्टे १४ रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोत्यंतदीनो रणजयविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः भवतिननुमनुष्यःसालसश्चापिहंसे वुधभवननिवासेलोहितांगेनदृष्टे १४ भूपप्रसादोन्नतिमात्मजानांसंहतिनोशत्रुजनात्तमित्राः प्रसूतिकालेनालिनीवनेशे वुधर्क्षसंस्थेचवुधेनदृष्टे १५ सुगुप्तमंत्रोतितरांस्वतंत्रः कलत्रपुत्रादिजनेसगर्वः भवेन्नरःशीतकरात्मजर्क्षेदिवाकरेदेवगुरुप्रदृष्टे १६ विदेशवासीचपलोनिवासीविषाग्निशस्त्रांकितमूर्तिवर्ती पृथ्वीपतेर्दौत्यकरोनरः स्यादर्केवुधर्क्षेभृगुपुत्रदृष्टे १७ धूर्तोतिभृत्योगतचित्तवुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमनामनुष्यः दिवाकरेशीतकरात्मजर्क्षेनिरीक्षितेभास्करिणाप्रसूतौ १८ पण्येश्चपानीयभवैर्महार्थोपृथ्वीपतिर्वासाचिवश्चरौद्रः भवेन्नरोजन्मनिचंडरश्मौ कर्काटकस्थेशिशिरांशुदृष्टे- १९

केजन्मसमयमें वुधकेघरमें सूर्य वुधकर्केहीदेख्याहोवे सो राजाकीप्रसन्नताकर्के तिसकेपुत्रोंका ऐश्वर्य शत्रु और मित्रनहींसहारसकतेहै १५ और जिसकोंवुधकेघरमें सूर्य वृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्य गुप्तमंत्री और भलीप्रकार स्वतंत्रहोताहै और स्त्रीपुत्रादि जनोंकर्के गर्वकों प्राप्तहोताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें वुधके घरमें सूर्य शुक्रकर्के देख्याहोवे सो विदेशमेंरहिताहै औरचपल औरविलासकरणेवालाहोताहै और विष और अग्नि और शस्त्रोंकर्के तिसकेदेहमें चिन्हहोतेहैं और राजाकादूतहोताहै १७ और जिसकेजन्मसमयमें वुधके घर सूर्य शनिकर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य धूर्त और वहुतचाकरोंवाला और वुद्धिकर्केहीन और सर्वविधियोंसें उदासीनरहिताहै १८ अवकर्कराशिमेंस्थितसूर्यमें ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहैं जिसके जन्मसमय में कर्कराशिका सूर्य चंद्रमा कर्केदेख्याहोवे सो जलकेसंबंध कर्के व्यापारसें वडे धनको प्राप्तहोताहै और राजा अथवा राजाका मंत्री वडा क्रूरहोताहै ॥

और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशीमें सूर्यमंगलकर्के देख्याहोवे सो अपने संबंधियों सोंचित्तकी शुद्धिसें रहित होताहै और शोथ रोगादियों कर्के भगंदरादि रोगों कर्के पीडित होताहै २० और जिसके जन्म कालमें कर्क राशीमें स्थित सूर्य बुध कर्के देख्या होवें सो विद्या और यश और मानकर्के शोभाकों प्राप्तहोताहै और राजाकी कृपाकर्के मनाकयो अभिलाषा कों प्राप्तहोताहै और शत्रुयोंकर्के रहितहोताहै २१ और जिसके जन्मसमयमें कर्कमें सूर्यवृहस्पति कर्केदेख्याहोवे सो मनुष्य कुलमें प्रधान और वडेयशवाला और राजासें वडेपदार्थोंकों प्राप्तहोताहै २२ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशीमें सूर्यशुक्रकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य स्त्रीके प्रसंगसें वस्त्र और धनकेलाभकोंप्राप्तहोताहै और दूसरेकेकृत्यमें हृदयसें दुःखीहोताहै २३ अव सिंहराशीमें स्थितसूर्यकों ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहै ॥ जिसके जन्मकालमें सिंहराशी का

स्ववंधुवर्गैर्गतचित्तशुद्धिःशोफादिरोगैश्चभगंदरैर्वा पीडानराणांहिकुलीरसंस्थेदिवामणौक्षोणिसुतेनदृष्टे २० विद्यायशोमानविराजमानोभूपानुकंपाप्तमनोभिलापः निरस्तशत्रुश्चवुधेनदृष्टेकर्कटकस्थेद्युमणौनरःस्यात् २१ कुलाधिकश्चामलकीर्त्तिशालीभूपालसंप्राप्तमहत्पदार्थः भवेन्नरःशीतकरर्क्षयातेदिवामणौवाक्पतिवीक्ष्यमाणे २२ स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिःपरस्यकृत्येहृदयेविपादः निशाकरागारकृताधिकारेदिवाकरेशुक्रनिरीक्ष्यमाणे २३ धूर्त्तोगभीरःक्षितिपालमान्योधनोपलब्धार्थयुतःप्रसिद्धः मित्रेनिजक्षेत्रगतेप्रसूतौनक्षत्रनाथेननिरीक्ष्यमाणे २४ कफानिलार्त्तःपिशनोन्यकार्यैस्यादंतरायश्चपलस्वभावः क्लेशीनरःशीतकरर्क्षसंस्थेदिवामणौमंदनिरीक्ष्यमाणे २५ नानांगनाप्रीतिरतीवधूर्त्तःकफात्मकःक्रूरतरश्चशूरः महोद्यमःस्यान्मनुजःप्रधानःसिंहस्थितेकुसुतेनदृष्टेः २६ धूर्त्तोनृपानुव्रजनःसुसत्वोविद्वत्प्रियोलेखनतत्परश्च भवेन्नरःकेसरिणिप्रयातेदिवामणौसौम्यनिरीक्ष्यमाणे २७

सूर्यचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य धूर्त्त और गंभीर और राजाके मानकों प्राप्त और धनकेलाभवाला और प्रसिद्धहोताहै २४ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशीमें सूर्यशनिकर्के देख्याहोवे सो कफ और वायुकर्केपीडित और चुगलहोताहै और दूसरेका कार्य विगाडनेवाला और चपलस्वभाववालाहोताहै औरक्लेशभोगनेवाला होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशीका सूर्य मंगलकर्के देख्याहोवे सो मनुष्य अनेक स्त्रीयोंसें प्रीतिकर्त्ताहै और अत्यंत धूर्त्त होताहै और कफके स्वभाववाला औरवडा क्रूरशूरवीरहोताहै और वडा उद्यमी और प्रधानहोताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें सिंह राशीका सूर्य वुध कर्के देख्याहोवे सो धूर्त्त और राजा की अज्ञामें चलनेवाला और वडे पराक्रमवाला और विद्वानोंसेंप्रीतिकरणेवाला और लिखने वाला होताहै २७

और जिसके जन्मकाल में सिंहराशिका सूर्य वृहस्पति करके देख्याहोवे सो देवताके मदिर और बाग और बाउली यों के लगावनें वाला और सवधियों सें प्रीत करणे वाला होताहै ॥ २८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकासूर्य शुक्रकरके देख्या होवे सो चमडे के दोष वाला और क्रोधकरके अपयशकों प्राप्तहोताहै और उत्सवकरके रहित होताहै औरअपने जनों करकेत्यागकों प्राप्तहोताहै २९ और जिसके जन्मकालमें सिंहकासूर्यशनिकरकेदेख्याहोवे सोमनुष्यशठ और कार्यकेनाशकरणेवाला और संवधियोंकों निश्चयकरके संतापकोदेने वाला होताहै ॥ ३० अववृहस्पतिकेघरमें स्थितसूर्यकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकोंवृहस्पतिकेघरमें अर्थात् ॥ ९ ॥ १२ ॥ राशिमेंस्थितसूर्य चद्रमाकरके देख्याहोवे सोदेहकीशोभाकरके और पुत्रकेसुखकरके युक्तहोताहै और वाग्विलासमें चतुर और कुलीन

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्त्तास्वजनाप्रियश्च भवेन्नरोदेवपुरोहितेनानिरीक्षितेर्केमृगराजसंस्थे ॥ २८ ॥ त्वग्दोषरोपापयशोभिभूतोगतोत्सवःस्वीयजनोज्झितश्च स्यान्मानवःसत्वदयाविहीनः पंचाननेर्केभृगुजेनदृष्टे ॥ २९ ॥ शठोनरःकार्यविघातकर्त्तासंतापयेदात्मजनांश्चनूनम् नरोमृगेंद्रोपगतेदिनेशेदिनेशपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणे ॥ ३० ॥ कायकांतिसुतसौख्यसमेतोवाग्विलासकुशलः कुलशाली स्यान्नरःसुरपुरोहितभस्थभास्करेहिमकरेणहिदृष्टे ॥ ३१ ॥ संग्रामसंप्राप्तयशोविशेपोवक्ताविमुक्तानुजनानुसंगः स्थिराश्रयोजीवगृहस्थितेर्केभौमेनदृष्टेपुरुषःप्रचंडः॥ ३२॥ धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञःसद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः सतांमतःस्यात्पुरुषोदिनेशेसौम्येक्षितेजीवगृहोपयाते ३३ नृपालमैत्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञोधनधान्ययुक्तः विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहेसंदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३४ ॥

होताहै ॥ ३१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमे स्थितसूर्य मंगलकरके देख्याहोवे सोमनुष्य युद्धकर्मसें विशेषकरके यशकों प्राप्तहोताहै और वक्ता होताहै और सवंधियोंसें रहित होताहै और स्थिरजीविकावाला होताहै ॥ ३२ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमे स्थितसूर्य वुधकरके देख्या होवेसो धातुक्रियाके और काव्यकलाके और कथाके जानने वाला और श्रेष्ठवाणी वाला और मंत्रादिविधिमें चतुर और श्रेष्ठजनोंकीसमति वाला होताहै ॥ ३३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें वृहस्पतिकेघरमें स्थितसूर्य वृहस्पति करके देख्याहोवेसो राजाकामंत्री और अपनेकुलमें राजा होताहै और कलाविधिकेजानने वाला और धनधान्यकरके युक्त और विद्यावान् होताहै ॥ ३४ ॥

श्रौर जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिकेघरमें सूर्य शुक्रकर्केदेख्याहोवेसो मनुष्यसुगंधिवाले पुष्प श्रौरसुगंधिवालेवस्त्र सुंदरधारताहै श्रौर स्त्रीकासुख श्रौर भूषणोंकासुखविशेषकर्के भोगताहै ॥ ३५ ॥ श्रौर जिसकों बृहस्पतिकेघरमें सूर्य शनिकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य पराया श्रन्न भोजनकर्त्ताहै श्रौर नीच कर्मोंके करणे वाला श्रौर चतुष्पदजोहै घोडे महिषीयोंसें लेकर तिनमें प्रीतिकरणे वाला होताहै ३६ श्रव शनिकेक्षेत्रमें स्थितयोसूर्य तिसमें ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें शनिके घरमेंसूर्य चंद्रमाकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य स्त्रीकेप्रसंगकर्केधन श्रौर सुखके नाशकों प्राप्तहोताहै श्रौर मायामेंचतुर चंचलचित्तकीवृत्तिवालाश्रर्थात् चित्तकों रोक नहिं सकताहै ३७ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें शनिकेघरमे सूर्यमंगलकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्य शत्रुयोंसें लडाई कर्के धनके नाशकोंप्राप्तहोताहै श्रौर व्याधियोंकर्के श्रौरशत्रुयोंकर्के संतापकोंप्राप्तहोताहै श्रौर श्रत्यंतव्याकुलदेहवाला श्रौर वडीचिंताकर्के

सुगंधमाल्यांवरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः भवेन्नरोदेवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतनेदानववंद्यदृष्टे ॥ ३५ ॥ परान्नभुङ्नीचतरःप्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरोनरः स्यात् सूर्येसुराचार्यगृहप्रयातेनिरीक्षितेभानुसुतेनसूतौ ॥ ३६ ॥ नारीप्रसंगे नगतार्थसौख्योमायापटुश्चंचलचित्तवृत्तिः भवेन्मनुष्यःशनिवेश्मनिस्थेसहस्त्रर श्मौहिमरश्मिदृष्टे ३७ परकलहगतार्थोव्याधिवैरिप्रतप्तस्त्वतिविकलशरीरोऽत्यंतचिंतासमेतः भवतिननुमनुष्यःसंभवेतिग्मरश्मौगतवतिसुतगेहेदृष्टदेहेकुजेन ३८ क्लीवस्वभावःपरचित्तहारीसाधूज्झितःशूरतरोनरःस्यात् दिवाकरेशीतकरात्मजेनदृष्टेप्रसूतौशनिमंदिरस्थे ॥ ३९ ॥ सत्कर्मकर्त्तामतिमान्वहूनांसमाश्रयश्चारुयशोमनस्वी स्यान्मानवोभानुसुतालयस्थे भानौचवाचस्पतिनाप्रदृष्टे ॥ ४० ॥ शंखप्रवालमणिरत्नवित्तंवरांगनाभ्योऽपिधनोपलब्धिम् करोतिभानुर्ननुमानवानांशन्यालयस्थोभृगुजेनदृष्टः । ४१ ॥ प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षःक्षोणीपतिप्रीतिमहत्प्रतिष्ठः प्रसन्नमूर्त्तिःप्रभवेन्मनुष्यःशन्यालये केशनिनाप्रदृष्टे ॥ ४२ ॥ इतिमेषादिगृहेरवौदृष्टिफलम् ॥

युक्तहोताहै ३८श्रौर जिसके जन्मसमयमें शनिकेघरमे सूर्यबुधकर्के देख्याहोवे सो नपुसकों के स्वभाव वाला श्रौर दूसरे के चित्त कों हरणे वाला श्रौर साधुयों कर्के रहितश्रौर वडा शूरवीर होताहै ३९ श्रौर जिसके जन्मसमयमें शनिकेघरमें सूर्य बृहस्पति कर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठ कर्म करणेवाला श्रौर बुद्धि मान् श्रौर वहुत मनुष्यों के पालने वाला श्रौर श्रेष्ठ यशवाला श्रौर मनस्वी होता है ॥ ४० श्रौर जिसके जन्मसमयमें शनिके घरमें सूर्यशुक्र कर्के देख्याहोवे सो सख श्रौर मुंगे श्रौर मणियों श्रौर रत्नों वाला होताहै श्रौर श्रेष्ठ स्त्रीयोंसें धनके लाभकों प्राप्त होताहै ॥ ४१ ॥ श्रौर जिसमनुष्यके जन्मसमयमे शनिके घरमें सूर्य शनिकर्के देख्या होवे सो वडे प्रतापकर्के शत्रुयोंके पक्ष कों जीतताहै श्रौर राजाकी प्रसन्नता कर्के वडी प्रतिष्टा कों प्राप्तहो ताहै श्रौर प्रसन्नमूर्त्ति वाला मनुष्य होताहै ४२ इहमेषादिद्वादशराशियोंमेंस्थितजोसूर्यतिसमेंग्रहदृष्टियोंकाफलकहाहै ॥ शिवम् ॥

अथमेषादिराशियोंमें स्थितजो चंद्रमाति समें ग्रह दृष्टि योंकाफलकहतेहे ॥ जिसमनुष्यके जन्मसमयमें मेषराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्याहोवे सो मनुष्य क्रूरस्वभाववाला वीनम्रजनों के ऊपरकोमल होता है श्रोर पंडित श्रोर राजमानको प्राप्त होताहै श्रोर युद्ध में डरणे वाला होताहै १ श्रोर जिसकों मेषराशीमें स्थित चंद्रमामगलकर्के देख्या होवे सोमनुष्य विष श्रोर श्रग्निःश्रोर वायुः श्रोर शस्त्रा स्त्रों के भयकों प्राप्तहोताहे श्रोर कदाचित् मूत्रकृच्छ्रकों प्राप्तहोताहै श्रोर वडे श्राश्रय वाला होताहै श्रोर दंतो में श्रोर नेत्रोंमे पीडा वाला होताहै ॥ २ श्रोर जिसकों मेषराशीमें चंद्रमाबुध कर्के देख्याहोवे सो वडे प्रकाशवाले यशकों प्राप्तहोता है श्रोर संपूर्ण वियामें प्रवीण होता

अथमेषादिगृहेचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः उग्रस्वभावोऽपिमृदुर्नतानांधीरोधराधीश्वरगौरवाढ्यः नरोभवेत्संगरभीरुरेवंमेषेशशांकेनलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥ विषाग्निवातास्त्रभयकदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रंमहदाश्रयश्च दंताक्षिपीडानिविडाजडांशौ मेषस्थितेभूमिसुतेनदृष्टे ॥ २ ॥ विलसदमलकीर्त्तिःसर्वविद्याप्रवीणोद्रविणगुणगणाढ्यःसंमतःसज्जनानाम् भवतिननुमनुष्योमेषराशौशशांकेशशधरसुतदृष्टेश्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥ नृपप्रधानःपृतनापतिर्वाकुलानुमानाद्बहुसंपदाढ्यः भवेन्नरःकैरविणीवनेशेमेषस्थितेगीष्पतिनाप्रदृष्टे ॥ ४ ॥ योषाविभूषाधनमूनुसौख्योभोक्तासुवक्तापरिभुक्तरोषः स्यात्पूरुषोमेषगतेऽमृतांशोनिरीक्ष्यमाणेभृगुणागुणज्ञः ॥ ५ ॥ गदयुतंहतचित्तसमुन्नतिंविगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ॥ क्रियगतोऽर्कसुतेननिरीक्षितोहिमकरोहिनरंकुरुतेखलम् ६

है श्रोर धन श्रोर गुणों के समूहोंसें युक्त होताहे श्रोर श्रेष्ठ जनों कीसंमति कर्के युक्तहोताहे ॥ ३ ॥ श्रोर जिसकों मेषराशी में चंद्रमा वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो मनुष्य राजाका मंत्री अथवा सेनाकास्वामी होताहे श्रोर अपने कुलके अनुमानसें वडी संपदाकर्के युक्तहोताहे ॥ ४ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमे मेषराशिमे स्थितचंद्रमा शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो स्त्री श्रोर भूषण श्रोरधन श्रोर पुत्रकेसुखकोंप्राप्तहोताहे श्रोर भोगी श्रोर श्रेष्ठवक्ता श्रोर क्रोधसेंरहित श्रोर गुणकेजाननेवाला होताहे ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मेषमेंचंद्रमाशनिकर्केदेख्याहोवेसो रोगकर्केयुक्त श्रोर नष्टचित्तवृत्तिवाला श्रोर धनरहित श्रोर झूठबोलने वाला श्रोर खोटे पुत्रवालाहोताहे ॥ ६ ॥

अबवृषराशिमें चंद्रमाकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसकेजन्मसमयमेंवृषराशीमेंचंद्रमासूर्यककेंदेख्याहो वेसोखेतीयोंकीक्रियामेंरत और खेतीयोंकेविधानकोंजाननेवालाऔर मंत्रीहोताहे और वाहनोंककें और धान्यांककेंयुक्तहोताहे और अपनेकार्यमेंचतुर होताहे ७ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशीमेंचंद्रमामंगलककेंदेख्याहोवेसो कामातुर और स्रीयों के चित्त कों हरणेवाला और साधुयोंकामित्र और वडापवित्र और प्रसन्नमूर्तिहोताहे ॥ ८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशीमें चंद्रमा बुधककें देख्याहोवेसोचतुर और विधिकेजाननेवाला और दयाककें युक्त और हर्षककें युक्त और संपूर्ण जीवोंमें हितकरणेवाला और गुणोंककेंयुक्तहोताहे ९ औरजिसकेजन्मसमयमें वृषराशिमेंचंद्रमा वृहस्पतिककेंदेख्याहोवे तिसकोंस्रीपुत्रकेआनंदककेंयुक्त और श्रेष्ठयशककें और धर्मक्रियामें युक्त और मातापिताकीभक्तिमें युक्तकर्ताहे ॥ १० और जिसके जन्मसमयमें वृष राशिमें चंद्रमाशुक्रककें देख्याहोवे तिसकों भूषण और वस्त्र और घर और भोजनके पदार्थ और शय्याकासुख और

कृषिक्रियायांनिरतोविधिज्ञः स्यान्मांत्रिकोवाहनधान्ययुक्तः नरोनितांतंचतुरः स्वकार्येदृष्टेदिनेशेनवृषेशशांके ॥ ७ ॥ कामातुरश्चित्तहरोंगनानांस्यात्साधुमित्रःसुतरांपवित्रः प्रसन्नमूर्तिश्चनरोवृषस्थेशीतद्युतौभूमिसुतेनदृष्टे ॥ ८ प्राज्ञंविधिज्ञंकृपयासमेतंहर्षान्वितंभूतहितेरतंच गुणाभिराममनुजंप्रकुर्यात्वृषेशशांकःशशिजेनदृष्टः ॥ ९ ॥ जायात्मजानंदयुतंसुकीर्तिंधर्मक्रियायांनिरतंचपित्रोः भक्तौप्रसक्तंमनुजंप्रकुर्यात्वृषास्थितेंदुर्गुरुणाप्रदृष्टः १० भूषणांवरगृहाशनशय्यागंधमाल्यचतुरंघ्रिसुखानि आतनोतिसततंमनुजानांचंद्रमावृषगतोभृगुदृष्टः ११ कलानिधिःपूर्वदलेवृषस्यशनीक्षितश्चेन्निधनंजनन्याः करोतिसत्यंमुनिभिर्यदुक्तंतथापरार्द्धेखलुतातघातम् १२ प्राज्ञंसुशीलंद्रविणेनहीनंक्लेशाभिभूतंसततंकरोति नरंचसर्वोत्सवदंचसूतौद्वंद्वेस्थितोभानुमताचदृष्टः ॥ १३ ॥ उदारदारंचतुरंचशूरंप्राज्ञंचसुज्ञंधनवाहनाद्यैः युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेंदुर्निरीक्षितोजन्मनिभूसुतेन ॥ १४ ॥

सुगंधिद्रव्यऔर पुष्प और चारपाएजोहे गोमहिषीसेंलेककेंतिनकासुखप्राप्तहोताहे ११ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृषराशिकाचंद्रमाशनिककें देख्याहोवेतवऔसेंफलकर्ताहे जबवृषराशिके पूर्वलेअर्धमेंचद्रमाकोंशनिदेखेतब तिसकीमाता मरतीहे औरवृषकेउत्तरभागमें चंद्रमाकों शनिदेखे तबतिसकेपिताकोंमारताहे ऐसे मुनियोंनेकहाहे ॥ १२ ॥ अब मिथुनमेंस्थितचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसकेजन्मकालमें मिथुनकाचद्रमासूर्यककेंदेख्याहोवेतिसकों चतुर और श्रेष्ठस्वभावककें युक्त और धनककेंहीनऔर निरंतरक्लेशककें युक्तकर्ताहे और संपूर्णउत्सवोंकोंदेताहे १३ और जिसकेजन्मकालमें मिथुनकाचंद्रमामंगलककेंदेख्याहोवे तिसकोंउदारतावाला और चतुर औरशूरवीर और विशेषबुद्धिवाला और भलीप्रकारककेंजाननेवाला औरधन औरवाहनादियोंककेंयुक्तकर्त्ताहे १४

ओर जिसके जन्मसमयमे मिथुनराशिमे चंद्रमा बुधकर्के देख्याहोवे सो बडे धैर्य वाला ओर सर्वदा काल आचारवान् ओर उदारचित्त ओर राजासे धनलाभकों कर्त्ताहे ॥ १५ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनराशिमें चद्रमावृहस्पति कर्के देख्याहोवे तिसकों विद्या ओर विवेक ओर धनकर्के. युक्त ओर नम्रताकर्के युक्त ओर बडे पुण्यो वाला कर्त्ताहे ॥ १६ ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनराशिमें चद्रमा शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों वस्त्र ओर पुष्प ओर श्रेष्ट स्त्रीयोंकालाभ कर्त्ताहे ओर श्रेष्ठ वाहनोंका ओर भूषणाकासुखकर्त्ताहे ॥ १७ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमे मिथुनराशिमें चद्रमाशनि कर्के देख्याहोवे सो मनुष्यधन ओर स्त्री ओर वाहन ओर पुत्रोसें लेकरपदार्थोंसें हीनहोताहे ओर निंदाको प्राप्तहोताहे ॥ १८ ॥ अवकर्कटराशिमेंस्थित चद्रमाको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहते

धीरंसदाचारमुदारसारंनरंनरेंद्राप्तधनंकरोति निशाधिनाथोमिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेनदृष्ट ॥ १५ ॥ विद्याविवेकान्वितमर्थवंतंख्यातविनीतंसुतरांसुपुण्यम् करोतिमर्त्यंमिथुनेधिसंस्थोनिशीथिनीशोगुरुणाप्रदृष्टः॥ १६ ॥ वस्त्रप्रसूनान्नवरांगनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्चविभूपणेभ्यः करोतिसौख्यंहिसुधामयूखोद्वंद्वस्थितोजन्मनिशुक्रदृष्टः॥ १७ ॥ धनांगनावाहननंदनाद्यैर्विश्लेपमायातिविगर्हितत्वम् नरोहिनीहारकरैर्नृयुग्मेनिरीक्षितेभानुसुतेनसूतौ ॥ १८ ॥ निरर्थकक्लेशकरंविकीर्णैर्नृपाश्रयंदुर्गकृताधिकारम् कुर्यात्कलावान्परिसूतिकालेकुलीरसंस्थोनलिनीशदृष्टः ॥ १९ ॥ दक्षंचशूरजननीविरुद्धंक्षीणांगयष्टिमनुजंकरोति कुलीरसंस्थ.परिसूतिकालेदृष्टःकलावान्किलमंगलेन ॥ २० ॥ दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यंसेनापतिंवासाचिवंमनुष्यम् कर्काधिरूढ कुरुतेहिमांशुर्हिमांशुपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणः ॥ २१ ॥ नृपाधिकारंगुणिनंनयज्ञंसुखान्वितंचारुपराक्रमंच करोतिजातंयदिचक्रवर्तीपीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः ॥ २२ ॥

हे जिसकेजन्मसमयमे कर्कटका चंद्रमा सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसकों निरर्थक क्लेशहीनजातीके लोकोंकर्के कर्त्ताहे ओर राजाके आश्रयकर्के किलेकोटोंकी रक्षाकरणे वाला कर्त्ताहे १९ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमे चद्रमा मगलकर्के देख्याहोवे तिसकों चतुर ओर शूरवीर ओर मातासें विरोधी ओर दुर्बलदेहवाला कर्त्ताहे ॥ २० ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कका चंद्रमा बुध. कर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीके ओर धनके सुखवाला ओर सेनापति अथवा राजाका मंत्रीकर्त्ताहे ॥ २१ ॥ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कका चद्रमा वृहस्पति कर्के देख्याहोवेतिसकों राजाका अधिकार प्राप्तकर्त्ताहे ओर गुणवान् ओर नीतिके जानने वाला ओर सुखकर्के युक्त ओर श्रेष्ट पराक्रम वाला कर्त्ताहे ओर चक्रवर्तीकर्त्ताहे ॥ २२ ॥

और जिसके जन्मसमयमें कर्कटका चंद्रमा शुक्रकर्केदेख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट रत्नों कर्के युक्तऔर सुवर्ण कर्के युक्त और भूषण और श्रेष्ट स्त्रीयोंका निरंतरसुखकर्ताहै ॥ २३ ॥ और जिसके जन्म समयमें कर्कट राशिमें चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तिस को सत्य कर्के हीन औरमाता सें विरोधी और सर्वदाकाल भ्रमणे वाला और धन कर्के हीनऔर पापमें रत कर्ताहै ॥ २४ ॥ ॥ अवसिंहराशिमेंचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंका फलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमे सिंहराशिका चंद्रमा-सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसको गुणयुक्त और निरतरराजाकाप्यारा और श्रेष्ट अधिकार प्राप्तहोताहै और-संतानमें विलंवकर्ताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकाचंद्रमा मंगल कर्के देख्याहोवे सोराजा-का वजीर होताहै और धन और वाहन और पुत्र और स्त्री इनके सुखकों निश्चय कर्के प्राप्त होताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका चंद्रमा वुधकर्के देख्या होवे तिसकों धन और स्त्री और वाहन

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावरांगनासौख्ययुतंनितांतम् नरंनिजागारगतं करोति सुधाकरःशुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ २३ ॥ सत्येनहीनंजननीविरुद्धंसदाटनंपापर तंगतार्थं करोतिजातंनिजगेहगामीचेद्यामिनीशोरविजेनदृष्टः २४ ॥ गुणयुतं सततंनृपतिप्रियं वरपदंचविलंवितसंततिम् हरिगतोवितनोतिनिशा-करः खरकरप्रवलोकनसंयुतः २५ नरपतेः सचिवोधनवाहनात्मजकलत्रसु; खोहिभवेन्नरः हरिणलक्ष्मणिकेसरिणिस्थितेक्षितिसुतेनतनुप्रविलोकिते २६ धनांगनावाहननंदनेभ्यः सुखप्रपूर्णहिनरंकरोति द्विजाधिराजोमृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः २७ वहुश्रुतविस्मृतसाधुवृत्तकुर्यान्नरभूमिप-तेःप्रधानम् चंद्रोमृगेंद्रोपगतोऽमरेंद्रोपाध्यायदृष्टः ॥ पारिसूतिकाले २८ स्त्रीवै-भववैगुणिनंगुणज्ञंप्राज्ञंविधिज्ञंकुरुतेमनुष्यं पीयूषरश्मिर्जननेयदिस्यात् पंचाननस्थोभृगुपुत्रदृष्टः २९ कांतावियुक्तं कृपिकर्मदक्षोदुर्गाधिकारोहिनरोल्प-कार्थः सिंहोपयातेसतिशीतभानौ निरीक्षितेसूर्यसुतेनसूतौ ३० भूमीशकोशाधिकृतसुवृत्तं भार्यावियुक्तंगुरुभक्तियुक्तम् जातंचकन्यास्थितशीतरश्मिस्त-नोतुजंतुंखररश्मिदृष्टः ३१

और पुत्रोंसें सपूर्णसुखवाला होताहै २७ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशिमें चंद्रमा वृहस्पति कर्के देख्याहोवे तिसकों वहुश्रुत और विशेषकर्के साधु और राजाके प्रधानताको प्राप्तहोताहै २८ औरजिस-के जन्मसमयमें सिंहराशिका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे सो स्त्रीके ऐश्वर्यवाला और गुणी और गुणके जानने वाला और चतुर और विधिके जाननेवाले मनुष्यको कर्ताहै २९ और जिसके जन्म-समयमें सिंहराशिमे चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे सो स्त्रीकर्के रहित और खेतीयोंके कर्ममें चतुर और किलेकोटोंका अधिकारवाला और थोडेधनवालाहोताहै ॥ ३० ॥ अवकन्याराशिमेंचंद्रमाको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमे कन्याराशिका चंद्रमा सूर्यकर्के देख्या होवे तिस कों भंडारका अधिकारवाला और श्रेष्ठगृत्तिवाला और स्त्रीसेंरहित औरभक्तिमें युक्त कर्ताहै- ३१

और जिसके जन्मसमयमें कन्याकाचद्रमामंगल कर्केदेख्याहोवे तिसकों हिसाकरणेमें तत्पर और बडा सूरवीर और बडाक्रोधी राजाके आश्रयवाला और युद्धादियोंमें जयको प्राप्त करणे वाला होताहै ३२ और जिसकेजन्मसमयमे कन्याकाचंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो ज्योतिःशास्त्रकोंऔर काव्य औरसंगीत विद्यामे चतुर होताहै और युद्धमें श्रेष्ट यशकों प्राप्त होताहै। ३३ और जिसके जन्मसमयमें कन्याका चद्रमा बृहस्पति कर्के देख्या होवे सो-बहुतभाई योंवाला और राजाका प्यारा और श्रेष्ठवृत्तिवाला और श्रेष्टयशवाला होताहै ॥ ३४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कन्याराशिका चंद्रमाशुक्र कर्के देख्या होवे तिसकों वेश्याके विलासमें चित्तकों करणे वाला और स्त्रीका वशवर्त्ती और राजासें धनलाभ वाला कर्ताहै ३५ और जिसके जन्मस

हिंसापरंशूरतरसकोपंनृपाश्रयंलब्धजयंरणादौ कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टोमनुजंकरोति ३२ ज्योतिर्विद्यांकाव्यसंगीतविद्यांप्राज्ञंयुद्धेलब्धकीर्तिंविनीतं कुर्यान्नूनंमानवंमानवंतंकन्यास्थेंदुश्चेंदुजेनप्रदृष्टः ३३भूरिबंधुमवनीपतिप्रियंचारुवृत्तशुभकीर्त्तिसंयुतं मानवंहिंकुरुतेंगनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ३४ विलासिनीकेलिविलासचित्तकांताश्रितंभूपतिलब्धवित्तम् कुर्वन्नरंशीतकरःकुमार्यांसंस्थःसितेनप्रविलोकितश्च ॥ ३५ ॥ निष्किंचनंहीनमतिंनितांतस्त्रीसंश्रयादात्मधनंजनन्याः हीनप्रकुर्यात्खलुकन्यकायांगतोमृगांकोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥ सदाटनःसौख्यधनैर्विहीनःसदंगनासूनुधनैर्विहीनः मित्रैरमित्रैश्चनरोतितप्तस्तुलाधरेशीतकरेर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥ बुध्यापरार्थाकरणैकचित्तंमायासमेतंविषयाभितप्तं करोतिजातंहितुलागतेंदुर्निरीक्ष्यमाणोधरणीसुतेन ॥ ३८ ॥ कलाविधिज्ञंधनधान्ययुक्तवक्तृत्वविद्याविभवैःसमेतं कुर्यान्नरंशीतकरस्तुलास्थःप्रसूतिकालेशशिजेनदृष्टः ॥ ३९ ॥

मयमें कन्याकाचंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तिसकों धन कर्के हीन और बुद्धि कर्के हीन और निरंतर स्त्रीके आश्रय धनवाला और माता सें हीन होताहै ३६ अबतुलाराशिमें चंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें तुलाराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे सो सर्व दाकाल भ्रमणेवाला और सुख कर्के और धनों कर्के रहितहोता है और श्रेष्टस्त्रीपुत्रों कर्के रहित होताहै और मित्रों कर्के और शत्रुयों कर्के तप्ताहै ३७ और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे सो बुद्धि कर्के दूसरे के धन में चित्तकोंधारताहै और माया कर्के युक्त और विषयों कर्के तप्ता है ३८ और जिसके जन्मकाल में तुलाका चंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो कलाविधिके जानने वाला और धन धान्य कर्के युक्त और वक्ता और विद्याके ऐश्वर्यों कर्के युक्त होताहै ३९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा बृहस्पति कर्के देख्या होवे सो वस्त्र भूषणों में चतुर और ख रीदकरणे में और बेचणे कीविधिमें चतुर होताहै ४० और जिसके जन्मसमयमें तुलाका चंद्रमा शुक्र कर्के देख्या होवे सो बडा चतुर और अनेक प्रकारोंके उद्यम कर्के अर्थ सिद्धकरणे वाला और राज यों कीकृपाकर्के युक्त और प्रसन्नमन और पुष्ट देहवाला होताहै ४१ और जिसके जन्मसम यमें तुलाका चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवेसो धनों कर्के और धान्यों कर्के और वाहनों कर्के युक्त होताहै और विषयभो गों कर्के रहितहो ताहे ४२ अबवृश्चिकराशिमें चंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलक- हतेहैं ॥ जिसके जन्मकाल में वृश्चिककाचंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठवृत्ति से हीन और धन कर्के युक्त और मनुष्यों कीबात नहि सहारणे वाला और उद्यमी और सेनामें रहिने वाला होताहै ४३ और जिसके जन्मसमयमें वृश्चिककाचद्रमा मंगल कर्के देख्याहोवे सो युद्धमें विशेष यशकों प्रा

विचक्षणोवस्त्रविभूषणेषुक्रयेथवाविक्रयताविधाने तुलाधरेशीतकरेनरःस्याद्दृष्टे शुनासीरपुरोहितेन ४० प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थःस्यात्पार्थिवानांकृपयासमेतः हृष्टोनरःपीनकलेवरश्चजूकेमृगांकेभृगुजेनदृष्टे ॥ ४१ ॥ धनैश्चधान्यैर्वरवाहनै श्चयुतोऽपिहीनोविषयोपभोगैः ॥ भवेन्नरस्तौलिनिजन्मकालेकलानिधौभानुत नूजदृष्टे ॥ ४२ ॥ सद्वृत्तिहीनंधनिनंजनानामसह्यमत्यंतकृतप्रयासम्. बल निवासमनुजंप्रकुर्यात्ताराधिपःकौर्प्यगतोर्कदृष्टः ४३ रणांगनावाप्तयशोविशे षोगभीरतागौरवसंयुतश्च भूपानुकंपासमुपात्तवित्तोनरोलिनींदौक्षितिजेनदृष्टे ४४ वाग्विलासकुशलोरणशीलोगीतनृत्यनिरतश्चनितांतम् कूटकर्मणिनरोनिपुणः स्याद्वृश्चिकेशशिनिचंद्रजदृष्टे ४५ लोकानुरूपः सुतरांसुरूपः सत्कर्मकृद्वित्त- विभूषणाढ्यः स्यान्मानवोजन्मनिशीतरश्मौसंस्थेऽलिनीज्येननिरीक्ष्यमाणे ४६ प्रसन्नमूर्तिःसमुदारकीर्त्तिः कूटक्रियाज्ञोधनवाहनाढ्यः कांताहतार्थःपुरु- षोलिजाते शीतद्युतौदैत्यगुरुप्रदृष्टे ४७ रथनभ्रंशंद्रव्यनाशाल्पवित्तं नीचा- पत्यासत्वयक्ष्मप्रकोपं कुर्याच्चंद्रः सूतिकालेलिसंस्थ.छायापुत्रप्रेक्ष्यमाणत्वंप्रयातः ४८

प्तहोता है और गंभीरता और गौर वताकर्के युक्त और राजा कीकृपा कर्के धनकों प्राप्तहोताहै ४४ और जिसके जन्मसमयमें वृश्चिकराशिमें चद्रमा बुधकर्के देख्या होवे सो वाग्विलासमें श्रेष्ठ और युद्धकरणे वाला और निरंतर गीतनृत्यमें रत और झूठेकर्मोंमें चतुर होताहै ४५ और जिसके जन्मस- मयमें वृश्चिककाचद्रमा बृहस्पतिकर्के देख्या होवे सो लोकोंकी इछासें वर्तने वाला और अत्यंतरूप- वाला और श्रेष्ठकर्मकरणे वाला और धन और भूषणों कर्के युक्तहोताहै ४६ और जिसके जन्मसम- यमें वृश्चिकका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे सो प्रसन्नमूर्त्ति और बडे यशवाला और कठिन कृत्य- के जानने वाला और धन और वाहनों कर्केयुक्त और स्त्रीकर्के नष्टधन तिसका होताहै ४७ और- जिसके जन्मसमयमें वृश्चिकका चद्रमा शनिकर्के देख्या होवे तिसकों भ्रष्ट और धनका नाश और- थोडे धनवाला और नीच संतान वाला और पराक्रमकर्के रहित और यक्ष्मरोग वालाकरताहै ४८

॥ अथधनराशिमें चंद्रमाको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें धनराशिमें चंद्रमा सूर्यकर्के देख्या होवे सो वडे प्रतापवाला और श्रेष्टयशकर्के युक्त और सपदा कर्के युक्त और वाहनोंकर्के युक्त और युद्धमें जयको प्राप्त और राजाकी कृपावाला कर्ताहै ४९ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिमें चंद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे सो सेनाकास्वामि और वडे प्रतापको प्राप्तहोताहै और लक्ष्मी और भूषणोंके लाभवाला होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें धन राशिका चंद्रमा बुधकर्के देख्या होवेसो श्रेष्टवाग्विलासकरणे वाला और वहुत चाकरों कर्के युक्त और ज्योतिषाविद्या और शिल्पविद्याके जानने वाला कर्ताहै ५१ और जिसके जन्मसमयमें धनका चद्रमा बृहस्पतिकर्के देख्या होवे सो वडे अधिकारमें स्थितहोताहै और धनवान् और श्रेष्ठवृत्ति वाला होताहै और सुंदरदेहवाला होताहै ५२ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्या होवे

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनान्याहवजंजयंच नृपप्रसादंकुरुतेनराणांताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ४९ सेनापतित्वंचमहत्प्रतापंपद्मालयालंकरणोपलब्धिम् कुर्यान्नराणांहरिणांकएषःशराशनस्थोऽवनिजेनदृष्टः ५० सद्वाग्विलासंवहुभृत्ययुक्तंकुर्यान्नरंज्योतिषाशिल्पविद्यम् तुरंगजंघेहिकुरंगजन्माकुरंगलक्ष्मप्रभवेनदृष्टः ५१ महत्पदस्थोधनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः धनुर्धरेशीतकरेप्रयाते निरीक्षितेशक्रपुरोहितेन ५२ संतानार्थात्यंतसंजातधर्मैः शश्वत्सौख्येनान्वितोमानवः स्यात् तारास्वामीचापगामीप्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्ष्यमाणत्वंप्रयातः ५३ सत्त्वोपेतंनित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारंमानवंचप्रचंडम् कोदंडस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौशीतरश्मिःकरोति ५४ गतधनोमलिनश्चलनप्रियोहतमतिःखलुदुःखितमानसः हिमकरेमकरेचदिवाकरेक्षिततनौहिनरःप्रभवेद्यदि ५५ ॥ अतिप्रचंडोधनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्चदारात्मजसौख्ययुक्तः स्यान्मानवोवैभवभाक्नितांतंमृगेमृगांकेवनिसूनुदृष्टे ५६

सो संतान और धन और अत्यंतधर्मको प्राप्तहोताहै और निरंतरसुख कर्के युक्त होताहै ५३ और जिसके जन्मसमयमें धन राशिमें चंद्रमा शनि कर्के देख्या होवे सो सत्य कर्के युक्त और नित्यप्रति शास्त्रमें अनुरक्त और श्रेष्ठवक्ता और वडे प्रचंडप्रताप वाला होताहै ॥ ५४ ॥ अथमकरराशिमें चद्रमा को ग्रह दृष्टियोंका फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंमकरराशिकाचद्रमासूर्य कर्के देख्याहोवे सो धनरहित और मलीन और भ्रमणमें प्रीतिवाला और बुद्धिहीन और निश्चयकर्केदुःखित और दीनहोताहै ५५ और जिसकेजन्मसमयमें मकरका चंद्रमा मंगलकर्केदेख्याहोवे सो वडाप्रचंड और धन और वहानों कर्के युक्त और चतुर और स्त्रीपुत्रके सुखकर्के युक्त और निरंतरऐश्वर्यके भोगने वाला होताहै ५६

ऊर जिसके जन्मसमयमें मकरका चंद्रमा बुधकर्के देख्याहोवे सो बुद्धि कर्के हीन ऊौर निधन ऊौर घरके त्याग करणे वाला ऊौर स्त्रीपुत्रों कर्के त्याग कियाहुवा होताहे ॥ ५७॥ ऊौर जिसके जन्मसमयमें मकरका चंद्रमा बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सो राजा कापुत्रहोताहे ऊौर सत्यकर्के युक्त ऊौर गुणकेजानने वाला ऊौर स्त्रीपुत्रादियोंकर्के युक्त होताहे ५८ ऊौर जिसके जन्मसमयमें मकरकाचंद्रमाशुक्रकर्के देख्या होवे सो श्रेष्ठनीतिकेजानने वाला ऊौर धनऊौर वाहनोंकर्के युक्त ऊौर पुत्र ऊौर भूषण ऊौर वस्त्रों के सुखकर्के युक्त होताहे ५९ ऊौर जिसके जन्मसमयमें मकर राशिमें चंद्रमा शनिकर्के देख्या होवे सो वडा आलसी ऊौर धन हीन ऊौर पराक्रम रहित ऊौर मलीन ऊौर व्यसनों कर्के संतप्त होताहे ६० ॥ अबकुंभराशिमें स्थितचंद्रमाकों ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिमें चंद्रमा सूर्य कर्के देख्या होवे सो खेतीथा करणे वाला होताह

बुद्ध्याहीनोनिर्धनस्त्यक्तगेहोगेहिन्याद्यैरुझितःपूरुषःस्यात् आकोकेरस्थानगेशीतरश्मौपीयूषांशोरात्मजेनप्रदृष्टे ५७ नृपात्मजःसत्ययुतोगुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतोनरःस्यात् मृगाननेजन्मनियामिनीशेवाचामधीशेननिरीक्ष्यमाणे ५८ सुनयनोधनवाहनसंयुतःसुतविभूषणवस्त्रसुखोनरः कुमुदिनीदयितेमृगसंस्थिते भृगुसुतेनजनैरनुवीक्षिते ५९ महालसोमंदधनस्त्वसत्योमलीनसःस्याद्व्यसनाभिभूतः पीयूषमूर्त्तिर्यदिनक्रवर्त्तीत्रिमूर्त्रिपुत्रेणनिरीक्ष्यमाणः ६० कृषीवलःकैतवसंयुतश्चनृपाश्रितोधर्मरतोनरःस्यात् पीयूषमूर्त्तिर्यदिकुंभगामीत्वंभोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः ६१ धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तोविषमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः भवतिमलिनाचित्तोऽत्यंतधूर्त्तोहिमर्त्यःशशिनिकलशयातेवीक्षितोभूसुतेन ६२ विषयसौख्यरतोशनसंविधौरुचिरतीवशुचिःप्रियभाषणः युवतिनीतसुगीतकृतादरोघटगतेंदुरिहज्ञनिरीक्षितः ६३ महीपुरग्राममुखादिसौख्यंभोगान्वितंसाधुजनप्रवृत्तिं कुर्यान्नरंश्रेष्ठतरंघटस्थेनिशाकरःशक्रगुरुप्रदृष्टः

ऊौर आश्चर्यकर्मकेकरणे वाला ऊौर राजाके आश्रयवाला ऊौर धर्ममें रत होताहे ६१ ऊौर जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिमें चंद्रमामंगल कर्केदेख्या होवे सो धनऊौरघरऊौर माता ऊौर पिताकेवियोगकोप्राप्त होताहे ऊौर वडे कठिन पदार्थोंकोंउत्पन्न करणे वालाऊौर वहुत वोलनेवाला होताहेऊौरमलीनचित्तवाला ऊौर वडाधूर्त्तहोताहे६२जिसके जन्मसमयमे कुंभकाचंद्रमाबुध कर्के देख्या होवेसो विषयोंकेसुखमें रत ऊौर भोजनमें विधानके जानने वाला ऊौर अत्यंत पवित्र ऊौर मीठावोलने वाला ऊौर स्त्रीयाके नीतिके जानने वाला ऊौर गीतकीप्रीति वाला होताहे ६३ ऊौर जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमा बृहस्पति कर्के देख्या होवे सो पृथ्वी ऊौर पुरग्रामादिसुखकोंप्राप्त होताहे ऊौर भोगोंकर्केयुक्त ऊौरसाधुजनोंकी प्रवृत्तिवाला ऊौर वडा श्रेष्ट होताहे ॥ ६४

और जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमा शुक्रकर्के देख्याहोवे सो मित्र और पुत्र और स्त्री और घरके सुखसें रहितहोताहै और दीन और गौरवसें हीन होताहै ॥ ६५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कुंभका चंद्रमाशनिकर्के देख्याहोवे सो गधे और ऊंट और नवीन घोडे खचरों केलाभकों प्राप्तहोताहै और खोटीस्त्रीमें रत और धर्ममें विरुद्धवृत्ति वाला होताहै ॥ ६६ ॥ अवमीनराशिमें चंद्रमाकोंग्रहदृष्टिकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा सूर्य कर्के देख्याहोवे सो कामदेवकेसुखकों प्राप्त होताहै और सेनापति होताहै और श्रेष्ठकर्म की सिद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ६७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा मंगलकर्के देख्याहोवे सो शत्रुयोंकर्के युक्त और कुलटास्त्रीकेसंगकों प्राप्त होताहै और सुखसें रहित और निरंतरपापमें रत होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके जन्मस

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनोदीनोजनोत्सारितगौरवः स्यात् निशाकरेकुंभधरेप्रसूतौसंवीक्षितेदानवपूजितेन ॥ ६५ ॥ खरोष्ट्रवालाश्वतरादिलाभंकुस्त्रीरतंधर्मविरुद्धवृत्तिं करोतिपुंसांहिघटेऽधितिष्ठन्निशाकरोभास्करसूनुदृष्टः ॥ ६६ ॥ मनोद्भवोत्कर्पमतीवसौख्यंसेनापतित्वंवहुवित्तवृद्धिं सत्कर्मसिद्धिंकुरुतेहिमांशुर्झपेदिनेशेननिरीक्ष्यमाणः ॥ ६७ ॥ पराभिभूतंकुलटाधिसख्यंसौख्योज्झितंपापरतंनितांतम् करोतिजातंहिनिधिःकलानां मीनस्थितोभूमिसुतेन दृष्टः ६८ ॥ वरांगनासूनुसुखानिनूनंमानंधनंभूमिपतेःप्रसादं कुर्य्यान्नराणांहरिणांकएपोवैसारिणस्थोज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥ ६९ ॥ उदारदेहंसुकुमारदेहंसद्देहिनीसूनुधनादिसौख्यं नृपांविदध्यात्पृथुरोमगामीतमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥ ७० ॥ सद्गीतविद्यादिरतंसुवृत्तंविलासिनीकेलिविलासशीलं करोतिमर्त्यंतिमियुग्मसंस्थः शीतद्युतिर्जन्मनिशुक्रदृष्टः ॥ ७१ ॥ कामातुरंदारसुतैर्विहीनंनीचांगनासख्यमविक्रमंच नीहाररश्मिः शफरंप्रपन्नोनरंविदध्याद्रविसूनुदृष्टः ७२ इतिचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः

मयमें मीनका चंद्रमा बुधकर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठस्त्री और पुत्रके सुखकोंप्राप्त होताहै और मानकों और धनकों और राजाकी प्रसन्नताकों प्राप्त होताहै ६९ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमा बृहस्पति कर्के देख्याहोवे सो तिसकों उदार देहवाला और सुंदर कोमलदेहवाला और श्रेष्ठस्त्री पुत्रकेसुख वाला और धनादिसुख वाला और अपनेकुलमेंराजाकर्ताहै ७० और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमाशुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ठगीतविद्यामें रत और श्रेष्ठवृत्तिवाला और वेश्याके विलासवाला और श्रेष्ठस्वभाववालाकर्ताहै ॥ ७१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मीनका चंद्रमाशनिकर्के देख्याहोवे सो तिसकों कामातुर और स्त्रीपुत्रों कर्के हीन और नीचस्त्रीमें सक्त और पराक्रमसें हीनकर्त्ताहै ॥ ७२ ॥ इतिचंद्रंप्रतिग्रहदृष्टयः ॥

अथस्वक्षेत्रमें स्थितमंगलकोंग्रहदृष्टियों काफल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिमें मंगलसूर्य करके देख्याहोवे सो चतुरहोताहै और श्रेष्ठवक्ता होताहै और पितामाताकाभक्त होताहै और धनी और मंत्री और उदार होताहै ॥ १ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका मंगल चंद्रमाकरके देख्याहोवे सो दूसरे की स्त्रीमें सक्त होताहै और बडाशूरवीर होताहै और कृपासें रहित होताहै और चोरोंकेमारणे वाला होताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमें स्थित मंगल बुधकरके देख्याहोवे सो वेश्याजनोंके भूषण-वस्त्रोंमें एक वृत्तिवाला और चतुर और दूसरेके द्रव्यके हरणे वाला होताहै ॥ ३ ॥ और जिसके-जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बृहस्पति करके देख्या होवे सो अपने वशमें राजा होताहै

अथस्वभेभौमेग्रहदृष्टयः प्राज्ञःसुवक्तापितृमातृभक्तोधनीप्रधानोतितरामुदारः नरोभवेदात्मगृहेमहीजेसरोजिनीराजानिरीक्ष्यमाणे १ अन्यांगनासक्तमतीवशूरंकृपाविहीनंहतचोरवर्गं नरंप्रकुर्यान्निजधामगामीभूमीतनूजोद्विजराजदृष्टः॥ २ पण्यांगनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी भवेन्नरःस्वर्क्षगतेप्रसूतौ क्षोणीसुतेसोमसुतेनदृष्टे ३ वशेऽवनीशोधनवान्सकोपोनृपोपचारःकृतचौरसख्यः आरेनिजागारगतेनरःस्यात्सूतौसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ४ भूयोभूयोऽशोभनोत्सुक्यसक्तःकांताहेतोर्यानचिंतानितांतम् प्राणीपुण्येकर्मणिप्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षेभौमेभार्गवेणप्रदृष्टे ५ ॥ मित्रोज्झितंमातृवियोगतप्तं कृशांगयष्टिंविपमंकुटुंबे ईर्पाविशेषंपुरुषंविदध्यात् कुजःस्वभेस्थोर्कसुतेनदृष्टः ६ इतिस्वर्क्षेभौमफलम् अथशुक्रगृहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः कांतामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिंविपक्षं प्रचंडकोपंकुरुतेमनुष्यं कुजःसितागारगतोऽर्कदृष्टः १

और धनी होताहै और क्रोध करके युक्त होताहै और राजयों के चिन्हों वाला और चोरोंसे मैत्री करणे वाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका मंगल शुक्र करके देख्याहोवे सो वारवार श्रेष्ठ उत्सवोंको देखताहै और स्त्री के निमित्त जात्रा की चिंताको निरंतर प्राप्त होताहै और पुण्य कर्ममें प्रीति वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल शनि करके देख्याहोवे सो मित्र करके हीन और माता केवियोग करके तप्त और कृशदेहवाला और कुटुंबसे विरोधी और ईर्षा करके युक्तहोताहै ६ इतिस्वर्क्षेभौमफलम् अथशुक्रगृहेभौमेग्रहदृष्टयः जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाराशिमें मंगल सूर्य करके देख्याहोवे सो स्त्रीके मनकी वृत्तिसें हीनहोताहै और वन और पर्वतों में रहणेकी रुचि वाला और शत्रु हीन होताहै और बडे प्रचंड क्रोध वाला होताहै ॥ १ ॥

श्रोरजिसकेजन्मसमयमें वृषतुला राशिमें मंगलचंद्रमा कर्केदेख्याहोवेसोमाताकाविरोधीश्रोरयुद्धमेंडरणे बालाश्रोर वहुत स्त्रीयोंकास्वामि होताहे २ श्रोरजिसकेजन्मसमयमेंवृषतुलाराशिमें मंगल बुध कर्के देख्या होवे तिसकी शास्त्रमें प्रवृत्ति होतीहे श्रोर लडाई करणेमें प्रीति होतीहे श्रोर वहुत वार्ता कर्ताहे श्रोर तिसकों धनका लाभ थोड़ा होताहे श्रोर देहकी श्रेष्ट शोभा होतीहे ३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाका मंगल वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो संबंधियोंकी प्रीति में रत होताहे श्रोर वडे भाग्यों वाला होताहे श्रोर श्रेष्ठ गीत नृत्यादि विधिके जानने वाला होताहे ४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलका मंगल शुक्र कर्के देख्या होवे सो वडे भाग्यों वाला श्रोर राजाका मंत्री श्रथवा सेनाका स्वामी श्रोर वडे सुख कर्के युक्त होताहे ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाका मंगल शनि कर्के देख्या होवे सो प्रसिद्ध श्रोरनम्र श्रोर धनी श्रोर श्रेष्ठमित्रोंवाला श्रोरपवित्र

श्चंवाविरुद्धःखलुयुद्धभीरुर्वह्वंगनानामपिनायकश्च स्यान्मानवोभूतनयेसितर्क्षेनक्षत्रनाथेननिरीक्ष्यमाणे २ शास्त्रप्रवृत्तिःकलहप्रियःस्यादनल्पजल्पोल्पधनागमश्च सत्कायकांतिः परिसूतिकालेसितालयस्थोशशिजेनदृष्टः ३ वंधुप्रियेस्यान्निरतोऽतिभाग्यःसद्गीतनृत्यादिविधिप्रवीणःक्षोणीतनूजेभृगुजर्क्षयातेसंवीक्ष्यतेवाक्पतिनाप्रसूतौ ४ सुभाग्यनामाक्षितिपालमंत्रीसेनापतिर्वाविहुसौख्ययुक्तः स्यान्मानवःशुक्रगृहोपयातेनिरीक्षितेभूमिसुतेसितेन ५ स्यातोविनीतोधनवान्सुमित्रःपवित्रवुद्धिःकृतशास्त्रयत्नः नरःपुरग्रामपतिःसितर्क्षेभूनंदनेभानुसुतेनदृष्टे६ इतिशुक्रगृहेभौमेग्रहदृष्टयः अथवुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः विद्याधनैश्वर्ययुतंसुसत्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलं कुर्यान्नरंसोमसुतालयस्थःक्षोणीसुतःसूर्यनिरीक्ष्यमाणः १ संरक्षणेभूपतिनानियुक्तंकांतारतिंसत्वयुतंसतोपम् भूमीसुतःसंजनयेन्मनुष्यंवुधर्क्षसंस्थःशशिनाप्रदृष्टः २ अनल्पजल्पंगणितप्रगल्भंकाव्यप्रियंचानृतचारुवाक्यं दौत्येप्रयासैःसहितंप्रकुर्याद्धरातनूजोज्ञगृहेज्ञदृष्टः॥ ३ ॥

बुद्धि वालाश्रोरशास्त्रमेंश्रभ्यासकरणेवाला श्रोरपुरग्रामोकास्वामीहोताहे ६ इतिशुक्रगृहेभौमेग्रहदृष्टयः अथवुधकेक्षेत्रमेंजोमंगलतिसमेंग्रहोंकीदृष्टिकाफलकहतेहैं॥ जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमेंमंगल सूर्यकर्केदेख्याहोवे तिसकों विद्याश्रोरधन श्रोरऐश्वर्यकर्केयुक्त श्रोरश्रेष्ठपराक्रम श्रोरवनपर्वतकिलेकोटोंकेदेखना श्रयसेस्वभाववालाकर्ताहे ॥ १ ॥ श्रोरजिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमेंमंगलचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सोराजानेश्रपनीरक्षाकेवास्तेस्थापनकरीदाहे श्रोरश्रपनीस्त्रीमेंप्रीतिकरणेवालाश्रोरपराक्रमकर्केयुक्त श्रोरसतोपकर्केयुक्त होताहे ॥ २ ॥ श्रोरजिसकेजन्मसमयमेंमिथुनकन्याराशिमेंमंगलवुधकर्केदेख्याहोवे सोवहुतवोलनेवाला श्रोरगणितशास्त्रमेचतुरश्रोरकाव्यमें प्रीतिवाला श्रोर झूठेवनायकर सुंदरवचनकहनेवाला श्रोर दूतकर्ममें वडाउद्यमकरणेवालाहोताहे ॥ ३ ॥

उौरजिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मगल वृहस्पति कर्के देख्याहोवे सो मनुष्यव्यसनादियोंकरकें अपनेदेशकोंत्यागके उौर देशकोंजाताहे उौर तिसकों उच्चस्थानमें पुक्कर्ताहे ॥ ४ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मंगल शुक्रकर्केदे ख्याहोवे तिसकोंवस्त्र श्रोर श्रन्नजलकेसुखकर्केंयुक्त श्रोर श्रपनीस्त्रीमेंसक्त उौर वडीसमृद्धिकों प्राप्त कर्ताहे ॥ ५ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें मगल शनिकर्केदेख्याहोवे सो अत्यंतशू रवीर उौर मलीनउौरश्रालसी उौर किलेकोट पर्वत उौरवनोंमें विलासकरणेवालाहोताहे ॥ ६ ॥ इति वुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः ॥ श्रवककराशिमेंस्थित मगलकोग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामगलसूर्यकर्केदेख्याहोवे सो पित्तकेकोपकर्केपीडितहोताहे उौर वडेधैर्यवाला उौर द

श्रन्यदेशगमनव्यसनाद्यैःसंयुतंहिकुरुतेनरमुच्चैः सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेनचदृष्टः ॥ ४ ॥ वस्त्रान्नपानीयसुखैःसमेतंकांताप्रसक्तंसुतरांसमृद्धम् कुर्यान्नरंभूमिसुतोवुधर्क्षसंस्थःप्रदृष्टोभृगुनंदनेन ॥ ५ ॥ श्रतीवशूरोमलिनोऽलसश्चदुर्गाचलारण्यविलासशीलः भवेन्नरोभास्करसूनुदृष्टेधरासुतेसोमसुतालयस्थे ॥ ६ ॥ इतिवुधभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः ॥ श्रथकर्कस्थभौमेग्रहदृष्टयः॥ पित्तप्रकोपार्तियुतोऽतिधीरोदंडाधिकारीसुतरांमहौजाः भवेन्नरःकर्कगतेमहीजेनिरीक्ष्यमाणेरविणाप्रसूतौ १ गदाभिभूतोगतवस्तुशोकोविहीनवेषोगतसाधुवृत्तः भवेन्नरःकर्कटगेमहीजेसोमेनसूतौचनिरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥ मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुंबभारःपापप्रचारःखलचित्तवृत्तिः वुधेनदृष्टेसतिकर्कटस्थेभौमेनरःस्याद्व्यसनाभिभूतः ३ नरेंद्रमंत्रीगुणगौरवाढ्योमान्योवदान्योमनुजःप्रसिद्धः कुलीरसंस्थेतनयेधरित्र्यानिरीक्षितेचित्रशिखंडिजेन ४ श्रर्थक्षयोदुर्व्यसनेननूनंनिरंतरानर्थसमुद्भवःस्यात् भवेन्नराणांभृगुणाप्रदृष्टेऽंगारकेकर्कटराशिसंस्थे ५

डके श्रधिकारकोंप्राप्त उौर वडेवलवालाहोताहे ॥ १ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमेंकर्कराशिका मगल चंद्रमाकर्केदेख्याहोवे सो रोगोंकर्केयुक्त उौर नष्टवस्तुके शोककर्केयुक्त उौर वेशकर्केहीन उौर साधुवृत्तिसें रहितहोताहे ॥ २ ॥ उौर जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमें मगलवुधकर्के देख्याहोवे सो मित्रोंकर्के रहित उौर थोडेकुटुंववाला उौर पापकरणेवाला उौरदुष्टचित्तवृत्तिवालाहोताहे ॥ ३ ॥ उौर जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामगलवृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोजाराकामंत्री उौर गुण उौर गौरवकर्केयुक्तउौरवडामानवाला उौरप्रसिद्धहोताहे ४ उौरजिसकेजन्मसमयमेंकर्कराशिकामगलशुक्रकर्केदेख्याहोवेसोनिश्चयकर्केखोटेविषयोंसें धनकोंप्राप्तहोताहैउौरतिसकोंनिरंतरश्रनर्थोंकीउत्पत्तीरहतीहै ५

और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिकामंगलशनिकर्केदेख्याहोवेसो जलधान्यजोहे शाली. सेंलेकरकेधनकोंप्राप्तहोताहे औरसुंदरदेहकीसोभावाला औरराजासेंधनकोंप्राप्तहोताहे ६ इतिकर्कट-स्थेभोमेग्रहदृष्टयः अवसिंहराशिकेभौमकोंग्रहग्रदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसकेजन्मसमयमें सिंहरा-शिमेंस्थित मंगलसूर्यकर्केदेख्याहोवे सोमनुष्यअपनेमित्रों और संबधियोंसेंप्रीतीकरणेवालाहोताहे और शत्रुयोंसेंवैरकरणेवालाहोताहे और वनपर्वतोंमेंनिवासकरणेवालाहोताहे १ और जिसकेज-न्मसमयमेंसिंहराशिमें मंगलचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे सोमाडेरूपवाला और कठिनस्वभाववालाहो. ताहे और माताकेसाधनम्र और अपनेकार्यमेंचतुर और तीक्ष्ण और सुंदरबुद्धिवालाहोताहे १ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशिमेंमंगलबुधकर्केदेख्याहोवेसो श्रेष्ठकाव्य और कलाकेसमूहोंके.

कीलालधान्यादिधनःसुकांतिर्महीपतिप्राप्तधनोमनुष्यः महीसुतेकर्कटराशियातेनिरीक्षितेसूर्यसुतेनसूतौ ६ इतिकर्कटस्थभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहस्थभौमेग्रहदृष्टयः हितप्रकर्त्ताऽभिमतेपुनूनंद्विपज्जनानामहितप्रदाता . वनाद्रिकुंजेपुकृतप्रचारः सिंहेमहीजेरविणाप्रदृष्टे १ अपुष्टमूर्त्तिःकठनस्वभावश्चांवाविनीतोनिपुणःस्वकार्ये तीव्रःपुमांश्चारुमतिःप्रसूतोसिंहेमहीजेद्विजराजदृष्टे २ सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापेऽभिज्ञोपिलुब्धश्चलचित्तवृत्तिः स्वकार्यसिद्धोनिपुणोनरः स्यात्सिंहेमहीजेशशिजेनदृष्टे ३ प्रशस्तवुद्धिर्नृपतेःसुहृच्चसेनाधिनाथोभिमतोवहूनां विद्याप्रवीणोहिनरःप्रसूतौजीवेक्षितेसिंहगतेमहीजे ४ गर्वोन्नतोत्यंतशरीरकांतिर्नानांगनाभोगयुतःसमृद्धः भूमीसुतेसिंहगतेप्रसूतौनिरीक्षितेदैत्यपुरोहितेन ५ भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽन्याचिंताव्द्धाकातिर्त्वंद्रविणोज्झितत्वं भवेन्नराणांधरणीतनूजेसिंहास्थितेभानुसुतेनदृष्टे ६ इतिसिंहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः

जाननेवाला और लोभी और चंचलचित्तवृत्तिवाला और अनेककार्यकीसिद्धिमेंचतुरहोताहे ३ और जिसकेजन्मसमयमें सिंहकामंगलवृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोश्रेष्ठबुद्धिवाला और राजाकामि. त्र और सेनाकास्वामि और वहुतजनोंकीइच्छाकरणेवाला और विद्यामें चतुरहोताहे ४ और जिस. केजन्मसमयमें सिंहकामंगलशुक्रकर्केदेख्याहोवे सोअभिमानकर्केवडाऊचाजाताहे और अतिसुंद. रदेहकीसोभावालाहोताहे और अनेकस्त्रियोंकेभोगकर्केयुक्त और समृद्धिकर्केयुक्तहोताहे ५ और. जिसकेजन्मसमयमेंसिंहराशिकामंगलशनिकर्केदेख्याहोवे सोदूसरेकेघरनिवासकरणेवाला और ब. डीचिंताकर्केयुक्त और वृद्धस्वरूपवाला और द्रव्यकर्केहीनहोताहे ६ इतिसिंहस्थेभौमेग्रहदृष्टयः

अववृहस्पतिकेक्षेत्रमेंमंगलकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्म समयमें धन मीनराशिमें मंग. ल सूर्यकर्के देख्याहोवेसो वनपर्वत किलेकोटोंमें निवासकर्त्ताहे और क्रूरस्वभाववाला और भाग्योंवा-का और जनोंकर्के पूजितहोताहे १ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनकामंगल चंद्रमाकर्के दे-ख्याहोवेसो विद्वानोंकीविधिकेजाननेवाला और राजाकोंनहिंसहारणेवाला और लडाईमेंप्रीतिवाला और संपूर्णो कर्केसाज्य और चतुरहोताहे॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें धन मीनराशिमें मगल बुध कर्केदेख्याहोवे तिसकों चतुर और शिल्पवियामें निपुण और श्रेष्टस्वभावकर्केयुक्त और संपूर्णविद्यामें-श्रेष्ठ और नम्रस्वभाकर्केयुक्तकर्त्ताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनराशिका मंगल वृहस्प तिकर्के देख्याहोवे तिसकोंस्त्रीकीचिंताकर्केयुक्त और निरंतरशत्रुवर्गमें लडाईकर्केयुक्त और स्थानमेंभ्रष्ट

अथजीवभवनस्थभौमेग्रहदृष्टयः वनाद्रिदुर्गेपुकृताधिवासंक्रूरंसभाग्यंजनपूजितं च ॥ करोतिजातंधरणीतनूजोजीवक्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ १ ॥ विद्वद्विधिज्ञंनृपतेरसह्यंकालिप्रियंसर्वनिराकृतंच ॥ प्राज्ञंप्रकुर्यान्मनुजंधराजोजीवक्षेगःशीतकरप्रदृष्टः ॥ २ ॥ प्राज्ञंचशिल्पेनिपुणंसुशीलंसमस्तविद्याकुशलंविनीतम् ॥ करोतिजातंखलुलोहितांगः सौम्येनदृष्टोगुरुगेहयातः ॥ ३ ॥ कांतातिचिंतासहितंनितांतमरातिवर्गैःकलहानुरक्तं ॥ स्थानच्युतंभूमिसुतःप्रकुर्यात्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः ॥ ४ ॥ उदारचित्तोविषयानुसक्तोविचित्रभूषापरिभूषितश्च भाग्यान्वितःस्यात्पुरुषोऽवनीजेजीवर्क्षगेदानवपूज्यदृष्टे ॥ ५ ॥ कायकांतिरहितश्चनितांतंस्थानसंचलरतोऽपिचदुःखी ॥ अन्यकर्मनिरतश्चनरःस्यात्जीवधाम्निकुसुतेऽर्कजदृष्टे ॥ ६ ॥इतिजीवर्क्षस्थेभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथशन्यागारगतभौमेग्रहदृष्टयः ॥ कलत्रपुत्रार्थसुखैःसमेतंश्यामंसुतीक्ष्णंसुतरांचशूरं कुर्यान्नरंभूतनयोर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतःप्रसूतौ ॥ १॥ सत्भूषणंमातृसुखेनहीनंस्थानच्युतंचचलसौहृदंच ॥ उदारचित्तंप्रकरोतिजातंकुजोर्किगेहेशनिनाप्रदृष्टः २

कर्त्ताहे ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनका मगल शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो उदारचित्त और विषयोंमेंयुक्त और अनेकप्रकारोंकेभूषणोंकर्केभूषितहोताहे औरभाग्योंकर्केयुक्तहोताहे ॥ ५ और जिसकेजन्मसमयमें धन मीन राशिका मंगल शनि कर्के देख्याहोवे सो देहकीशोभासेंरहित और एकस्थानसें दूसरेस्थानमें भ्रमणा इसमेरत और दुःखी और परकार्यमेंरतहोताहे ॥ ६ ॥ इतिजीवक्षेगेभौमेग्रहदृष्टयः॥ अवशनिकेक्षेत्रमें मंगलकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकामंगलसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसकोस्त्रीपुत्र धन सुखकर्के युक्तऔरतरुणरूप और तीक्ष्ण और बडाशूरवीरकर्त्ताहे १ और जिसके जन्मसमयमें मकर कुंभका मंगल चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसकोंश्रेष्टभूषणोंवालाकर्त्ताहे औरमाताकेसुखसेंरहितऔरस्थाननाशकोंप्राप्त औरचंचलमित्रता और उदारचित्तकर्त्ताहे २

जिसके जन्मसमयमे मकरकुंभराशीका मंगल बुध कर्क देख्याहोवे सो मीठा बोलनेवाला और भ्रमणने धन को लब्धीवाला और पराक्रमकर्केयुक्त और आश्चर्यकर्मोंकर्केयुक्त और भयकर्के रहित होताहै ३ ॥ और जिसके जन्म समयमे मकर कुंभ राशिका मंगल बृहस्पति कर्क देख्याहोवे तिसकारखो आयुषावाला और राजाकोइपावाला और गुण कर्केयुक्त और भाईयोंकी प्रीतिवाला और सुंदरदेहकी शोभावाला और रूलमें बहुतबोलनेवाला कर्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमय में मकर कुंभका मंगलशुक्र कर्क देख्याहोवे सो श्रेष्ठभाग्य और सौभाग्यके सुखोंकरयुक्तहोताहै और स्त्रीकेवश्यहोताहै और असतलडाईमे प्रीतिवालाहोताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिका मंगल शनिकर्क देख्याहोवे सो राजासे धनकोप्राप्तहोताहै और स्त्रीकाविरोधीहोताहै और बहुश्रुतहोताहै और बडीबुद्धिवाला और कष्टकर्केयुक्त और युद्धमें प्री

प्रियोक्तियुक्तोऽटनलब्धवित्तःसत्वान्वित कैतवसंयुतश्च अभीर्नरोमंदगृहंप्रयातेपृथ्वीसुतेचंद्रसुतेनदृष्टे ॥ ३ ॥ दीर्घायुषंभूपकृपागुणाढ्यंबंधुप्रियंचारुशरीरकांति ॥ कार्यप्रलापंजनयेन्मनुष्यंजीवेक्षितोमंदगृहेमहीजः ॥ ४ ॥ सद्भोगसौभाग्यसुखैःसमेत.कांतावशोऽत्यंतकलिप्रियश्च क्षोणीसुतेमंदगृहेप्रयातेनिरीक्ष्यमाणेभृगुणानर.स्यात् ५ नृपाप्तवित्तोवनिताविपादोबहुश्रुतोऽत्यंतमति सकष्टः रणप्रिय स्याद्धरणीतनूजेमंदेक्षितेमंदगृहप्रयाते ६ इतिमंदागारगतभौमेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमगेहेबुधग्रहदृष्टय. बंधुप्रियंसत्यवचोविलासनृपालसद्गौरवसंयुतच करोतिजातंक्षितिसूनुगेहेसंस्थोबुधोभानुमताभ्रदृष्ट· ॥ १ सङ्गीतनृत्यादिरुचि प्रकामंकांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः कौटिल्यभाक्स्यान्मनुज कुजर्क्षेसोमात्मजेशीतकरप्रदृष्टे २ ॥ भूपप्रियंभूरिधनंचशूरकलाप्रवीणंकलहोद्यतंच क्षुधान्वितसजनयेन्मनुष्यसौम्य कुजर्क्षेकुसुतेनदृष्टः ३

तिवालाहोताहै ६ ॥ इतिशनिगृहगतभौमेग्रहदृष्टय ॥ अबमंगलकेगृहमे बुधकोग्रहोंकिदृष्टिकाफल कहतेहै जिसकेजन्मसमयमे मेष वृश्चिकराशिमे बुध सूर्यकरदेख्याहोवे तिसको बंधुओंकाप्यार और सत्यबोलनेवाला और विलासकरणेवाला और राजासे श्रेष्ठगौरवकेलाभवालाकर्ताहै १ ॥ और जिसके जन्मसमयमे मेष वृश्चिकराशिमें बुध चन्द्रमाकर्केदेख्याहोवे सो श्रेष्ठगीतनृत्यादिकोंमे इच्छावालाहोताहै और कामकरयुक्त और स्त्रीमेप्रीति और वाहन और चाकरोंकर्केयुक्तहोताहै और कुटिलताकरणेवालाहोताहै २ और जिसके जन्मसमयमे मेष वृश्चिकका बुध मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकोराजाकाप्यार और बडेधनकरयुक्त और शूरवीर और कलामेंचतुर और लडाईकरणेमेंउद्यत और क्षुधाकर पीडितकर्ताहै ३

श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका बुध वृहस्पतिककेंदेख्याहोवे तिसकोंसुखी श्रौर चतुर श्रौर श्रेष्ठवाणीककेंयुक्त श्रौर स्त्रीपुत्रादिकोंककें सहित श्रौर प्रसन्नमूर्त्तिकर्त्ताहै ४ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिक का बुध शुक्रककें देख्याहोवे तिसकों स्त्रीकेविलासककें युक्त श्रौर गुण श्रौर गौरवककेंयुक्त श्रौर मित्रोंकाप्यारा श्रौर श्रेष्ठबुद्धिवाला श्रौर नम्रकर्त्ता है ५ श्रौर जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिमें बुध शनिककेंदेख्याहोवे तिसकों सुंदरउत्साहवाला श्रौर वडेक्रूरस्वभाववाला श्रौर कुलमेंविरोधकरणेवाला श्रौर श्रेष्ठबुद्धिसेंहीनकर्त्ताहै ॥ ६ इतिभौमर्क्षेबुधेग्रहदृष्टयः ॥ श्रवशुक्रकेक्षेत्रमें बुधकोंग्रहदृष्टिकाफलकहतेहै श्रौर जिसके जन्मसमयमे वृषतुलाराशिमें बुध सूर्यककेंदेख्याहोवे तिसकों दरिद्र श्रौर दुःख श्रौर रोगककें तप्तदेहवाला श्रौर निरंतर परोपकारमें रत श्रौर शांतस्वभाव श्रौर श्रेष्ठचित्तककेंयुक्तकर्त्ताहै ॥ १

सुखोपपन्नंचतुरंसुवाक्यंकांतासुताद्यैःसहितंप्रसन्नं करोतिमर्त्यंकुजगेहगामी सोमात्मजोवाक्पतिनाप्रदृष्टः ४ कांताविलासंगुणगौरवाढ्यंसुहृत्प्रियंचारुमतिंविनीतं करोतिजातंशशिजःकुजक्षेंसंस्थश्चशुक्रेणनिरीक्ष्यमाणः ५ ॥ सुसाहसचोग्रतरस्वभावंकुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिं करोतिमर्त्यंहरिणांकसूनुर्भौमर्क्षसंस्थःशनिनाप्रदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिभौमर्क्षेबुधेग्रहदृष्टयः ॥ ॥ श्रथशुक्रर्क्षेगेबुधे ग्रहदृष्टयः ॥ दारिद्रदुःखामयतप्तदेहपरोपकाराभिरतं नितांतं शांतंसुचित्तंपुरुषंप्रकुर्यात्सौम्योभृगुक्षेत्रगतोर्कदृष्टः ॥ १ ॥ वहुप्रपंचंधनधान्ययुक्तंदृढव्रतंभूमिपतिप्रधानं ख्यातंप्रकुर्यान्मनुजंहिसौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थःशशिनाप्रदृष्टः ॥ २ । राजापमानादिगदप्रतप्तंत्यक्तंसुहृद्भिर्विषयैश्च नूनं कुर्यान्नरंसोमसुतःसितर्क्षेसंस्थोधरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ३ ॥ देशोत्तमग्रामपुराधिराजंप्राज्ञंगुणज्ञंगुणिनंसुशीलं कुर्यान्नरंचंद्रसुतेसितर्क्षेसंस्थेसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ४ श्रतिसुललितवेषंवस्त्रभूषाविशेषैर्युवतिजनमनोज्ञमन्मथोत्कर्षहर्षं श्रतिचतुरमुदारंचारुभाग्यंप्रकुर्यात्भृगुगृहगतसौम्योभार्गवेणप्रदृष्टः ५ ॥

श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृष तुला राशिमें बुध चंद्रमा ककें देख्याहोवे तिसकोंवडाप्रपंची श्रौर धन धान्य ककें युक्त श्रौर दृढव्रत श्रौर राजाकामंत्री श्रौर प्रसिद्ध कर्त्ताहै २ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृष तुलाका बुध मंगल ककें देख्याहोवे सो राजाके श्रपमानों ककें श्रौर रोगककें तप्तहोताहै श्रौर मित्रों ककेंत्याज्य श्रौर विषयोंसें निश्चयककें रहितहोताहै ३ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिका बुध वृहस्पतिककें देख्याहोवे तिसकोंश्रेष्ठदेशश्रौर पुरग्रामोंकाराजाकर्त्ताहै श्रौर चतुर श्रौर गुणोंकेजाननेवालाश्रौर गुणोंवाला श्रौर श्रेष्ठस्वभाववालाकर्त्ताहै ४ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका बुध शुक्र ककें देख्याहोवे तिसकों श्रत्यंतसुंदरवेशवाला श्रौर वस्त्र भूषणों ककें युक्त श्रौर स्त्रीजनोंके मनकोंजाननेवाला श्रौर वडेकामककेंहर्षकोंप्राप्त श्रौर वडाचतुर श्रौर उदार श्रौर श्रेष्ठभाग्योंवालाकर्त्ताहै ॥ ५ ॥

और जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाकाशुक्र शनिकर्केदेखाहोवे तिसकोंस्त्री और मित्र और पुत्र और वाहनोंकादुःखहोताहै और सततचित्त और सुख और धनकर्के हीनकर्ताहै ६ ॥ इतिशुक्रर्क्षगेबुधेग्रहदृष्टयः ॥अबअपनेक्षेत्रमेंजोबुध तिसकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें बुध सूर्यकर्केदेखाहोवे तिसकोंसत्यकर्के युक्त और श्रेष्ठलीलाविलासकर्केयुक्तकर्त्ताहै और राजासेंमान कोवृद्धिकर्ताहै और चंचलताकोंहीनकर्ताहै १ और जिसकेजन्मसमयमेंमिथुनकन्याराशिकाबुधचंद्रमा कर्के देखाहोवे सो बहुतवार्ताकरणेवाला और अमृतकीन्याईंवाणीवाला औरलडाईमेंप्रीतिवाला और राजाकेपासरहणेवालाहोताहै २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याकाबुधमंगलकर्केदेखाहोवेतिसकोंप्रसन्नदेहवाला और कुटिल और कलाकेजाननेवाला और राजाकेकृत्यमें भलीप्रकारचतुर और लो

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तंसुखवित्तहीनं ॥ कुर्यान्नरंशत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितोज्ञःसितधामगामी ६ ॥ इतिशुक्रर्क्षगेबुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथस्वक्षेत्रस्थ बुधंप्रतिग्रहदृष्टयः ॥ सत्योपेतंचारुलीलाविलासंभूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिंच चंचत्क्षीणंचापिकुर्यान्मनुष्यंस्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोर्कदृष्टः १ ॥ अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषीकलिप्रियोराजसमीपवर्ती भवेन्नरःसोमसुतेस्वगेहेनिरीक्ष्यमाणेमृगलांच्छनेन ॥ २ प्रसन्नगात्रंकुटिलंकलाज्ञंनरेंद्रकृत्येसुतरांप्रवीणं जनप्रियंसंजनयेन्मनुष्यंभौमेक्षितोज्ञःस्वगृहेधिसंस्थः ३ ॥ बव्हर्थसामर्थ्यविराजमानंसद्राजमानाप्तपदाधिकारं ॥ श्रुतंप्रकुर्यान्निजमंदिरस्थःसौम्यःप्रदृष्टःसुरपूजितेन ४ ॥ नरेंद्रदूतोविजितारिवर्गःसंधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः वरांगनासक्तमनोभिलाषःशुक्रेक्षितज्ञेनिजभेनरःस्यात् ॥ ५ ॥ प्रारंभसिद्धिंविनयंविशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मास्वेमंदरस्थोरविसूनुदृष्टः ६ इतिस्वक्षेत्रस्थबुधेग्रहदृ० ॥

कोंमेंप्रीतिवालाकर्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याकाबुधबृहस्पतिकर्केदेखाहोवे तिसकों बहुतधन और समर्थकर्केशोभायुक्तकर्ताहै और श्रेष्ठराजाकेमानसें अधिकारकों प्राप्तहोताहै और बहुश्रुतकर्ताहै ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याका बुधशुक्रकर्केदेखाहोवे सो मनुष्यराजाकादूत और शत्रुपक्षकों जीतनेवाला और दोनोंकीसंधिकरानेमें बडाचतुर और श्रेष्ठस्त्रीमेंआसक्तचित्तवालाहोताहै ५ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुनकन्याका बुधशनि कर्के देखाहोवे सोप्रारंभ कार्यकों सिद्धकर्त्ताहैऔर विशेष कर्के नम्रहोताहै और श्रेष्ठवस्त्र भूषणादि समृद्धिकोंप्राप्तहोताहै ६ इतिस्वक्षेत्रस्थबुधेग्रहदृष्टयः

॥ अथकर्कराशिमें स्थितबुधकोंग्रहदृष्टियों काफलकहते हे जिसके जन्म समयमें कर्क राशिमें बुधसूर्य कर्के देख्याहोवे सो वस्त्रादि शुद्धि में और मणियों के संचयकरणेमें और घर सें लेकर जोवस्तुहैं तिनके बनाने में चतुर और पुष्पमालाग्चने.में चतुरहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका बुध चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो स्त्रीके निमित्तवडे कपट कों प्राप्तहोताहै और धन के व्यय कोंप्राप्तहोताहै और कृशदेहवाला होताहे ओर बहुत दोषों कर्के पीडितहोताहै २ और जिसके जन्मसमयमें कर्ककाबुध मंगल कर्के देख्याहोवे तिसकों अल्पश्रुत और चौरों में प्रीति वाला और शूरवीर और मीठा बोलने वाला और झूठकहने में चतुरकर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका बुधबृहस्पति कर्के देख्या होवे सो वडा चतुर विधिके जानने वाला

अथकर्कस्थेबुधेग्रहदृष्टयः वस्त्रादिशुद्धौमणिसंग्रहेचगृहादिनिर्माणविधौप्रवीणः प्रसूनमालाग्रथनेपिमर्त्यःकुलीरगेज्ञेनलिनीशदृष्टे १ कांतानिमित्तात्समहद्व्यलीको द्रव्यव्ययात्यंतकृशांगयष्टिः बहूपसर्गोऽपिभवेन्मनुष्यःकुलीरगेज्ञेशशिनाप्रदृष्टे २ स्वल्पश्रुतंचौर्यरतंचशूरंप्रियंवदंकूटविधौप्रवीणम् कुर्यान्नरंशीतकरस्यसूनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः ३ प्राज्ञोविधिज्ञोविधिनाऽधिशालीसद्वाग्विलासो ऽवनिपालमान्यः स्यान्मानवोजन्मनिसोमसूनौकुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे॥ ४ प्रियंवदश्चारुशरीरभाक्चसद्गीतवाद्यादिविधौप्रवीणः स्यान्मानवोदानववंद्य दृष्टेकर्कटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ५ गुणैर्विहीनंस्वजनैर्वियुक्तमलीकदंभानु रतंकृतघ्नम् करोतिनर्त्यंपरिसूतिकालेकुलीरगोज्ञोरविसूनुदृष्टः ६ इतिकुली रगामिनिबुधेग्रह० ॥ अथसिंहगतेबुधेग्रहदृष्टयः कृपाविहीनंचचलस्वभावं सेर्ष्यंचहिंसाभिरतंचरौद्रम् क्षुद्रंप्रकुर्यान्मनुजंप्रसूतौबुधोर्कदृष्टोमृगराजसंस्थः १

और वडे भाग्यों वाला और श्रेष्ठ वाग्विलास करणे वाला और राजा कर्के मान्य होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका बुध शुक्र कर्के देख्या होवे सो मीठा बोलने वाला और सुंदर देहवाला और श्रेष्ठ गीत और वाजे तिनकी विधि जानने में चतुर होताहै ५ और जिसके जन्मसमय में कर्कका बुध शनि कर्के देख्या होवे तिसकों गुणों कर्के रहित और संबंधियों से रहित और झूट और दंभमें रत और कृतघ्नकर्त्ताहै ६ इतिकुलीरगामिनिबुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहराशिमेंबुधकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकाबुध सूर्य कर्के देख्याहोवे तिसकोंदया कर्के हीन और चंचलस्वभावकर्के युक्त और ईर्षा कर्के युक्त और हिंसामें रत और क्रूर और क्षुद्रकर्त्ताहै ॥ १ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिकावुध चंद्रमा कर्के देख्या होवे तिसकों रूपकर्के युक्त और श्रेष्ठ-वुद्धि कर्के युक्त और नम्र और संगीतविद्या और नृत्यमेंरत और श्रेष्टवृत्तिवाला कर्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकावुध मंगलकर्के देख्या होवे सो कामकर्के और पराक्रम कर्के और वृत्ति कर्के रहितहोताहै और जख्मों कर्के तिसका देह अंकितहोताहै और हीन वुद्धि और अनेकदुःखों-कर्के युक्त होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका वुध वृहस्पति कर्के देख्या होवे सो कोमल और निर्मल स्वभाववाला और कुलीन और सुंदर नेत्रों वाला और समर्थ वाला और श्रेष्ठवाहनों वाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका वुध शुक्र कर्के देख्या होवे सो श्रेष्ट रूप वाला उोर प्रीति कर्के वाग्विलास करणे वाला उोर राजाके आश्रित रहणे वाला उोर वाहन

रूपान्वितंचारुमतिंविनीतं संगीतनृत्याभिरतंनितांतं सद्वृत्तवृत्तंकुरुतेहिमर्त्यं-चंद्रेक्षितोसिंहगतोवुधाख्यः २ कंदर्पसत्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षतांकितंहीनमतिंविचित्रम् सदुःखितंसंजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतःशशीजः ३ कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्चसमर्थः वाहनोत्तमधनोमनुजःस्यादिंदुजेहरिगतेगुरुदृष्टे ४ सद्रूपशालीप्रियवाग्विलासोनृपाश्रितोवाहनवित्तयुक्तः भवेन्नरःसोमसुतेप्रसूतौ सिंहस्थितेदानववंद्यदृष्टे ५ स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधविस्तीर्णगात्रंचकुरूपमुग्रम् सुखेनहीनंमनुजंप्रकुर्यान्मदेक्षितःसिंहगतोयदिज्ञः ६ इतिसिंहगतेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथगुरुभवनस्थेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ शूलाश्मरीमेहनिपीडितांगोभंगोज्झितःशांतिमुपागतश्च स्यात्पूरुषोगीष्पतिवेश्मसंस्थोनिशीथिनीस्वामिसुतेर्कदृष्टे १ लेखक्रियायांसुतरांप्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानां नरःसुखीशीतमयूखपुत्रेचंद्रेक्षितेजीवगृहंप्रयाते २

उोर धन कर्के युक्त होनाहै ५ उोर जिसके जन्मसमयमें सिंहका वुध शनि कर्के देख्या होवे सो मनुष्य दुर्गंधि देह वाला तिसके प्रसीने सें दुर्गंधि होतीहै उोर वडेदेहवाला उोर कुरूप उोर उग्र-उोर सुख कर्के हीनहोताहै ॥ ६ ॥ इतिसिंहगतेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अवगुरुभवनमेंस्थितवुधकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसकेजन्म समयमें धन मीनराशिका वुध सूर्यकर्के देख्या होवे सो शूल-पथरी उोर प्रमेह रोगकर्के पीडित होताहै उोर मनोद्वेगकी निवृत्तिसेंशांतिकोंप्राप्तहोताहै १ उोर जिसके जन्मसमयमें धन मीनका वुधचंद्रमा कर्के देख्याहोवेसोलिखनेकांममेंभलीतरां सें चतुरहोताहै उोर साधुयोंको उोर मित्रजनों की सगति करणे वाला उोर सुखीहोताहै २

और जिसके जन्मसमयमें धन मीनका वुध मंगल करके देख्या होवे सो परंपराके चिरकाल वनमेंस्थित जो चोरहैं तिनके लेखकहोतेहैं और अन्न और धनों करके रहितहोतेहै ३ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिमें वुध कों वृहस्पतिदेखताहै सो मनुष्य विशेष करके ज्ञानीहोताहै और अपनेकुलकाभूषणहोताहै औरराजाकाजोभंडारहैतिसमेंलिखनेवालाहोताहैऔरवहुतजनोंके पालनेवालाहोताहै ४ और जिसकेजन्मसमयमें धनमीनराशिकावुध शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों राजाकी वजीरीका और लिखनेका अधिकार प्राप्तहोताहै और चोरीमें सक्तहोताहै और कोमलदेहवाला और द्रव्यकर्केयुक्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धन मीनराशिका वुध शनिकर्के देख्याहोवे सोमनुष्य वहुतअन्नकेभोजन करणेवाला और मलीन और खोटीवृत्तिवाला और वन पर्वतों में निवासकीइच्छावाला और कार्यमेंउपयोगीनाहिंहोताहै ॥ ६ ॥ इतिजीवर्क्षेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथशनिकेक्षेत्रमेंवुधकोंग्रहदृष्टियोंके.

परंपराचोरवनस्थितानांस्युर्लेखकाधान्यधनैर्विहीनाः नरस्तुनीहारकरप्रसूतौजीवालयेमंगलदृष्टदेहे ३ विज्ञानशालीस्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्त्ता भर्त्तावहूनांमनुजस्तुसौम्येजीवेक्षितेजीवगृहंप्रयाते ॥ ४ ॥ भूपामात्यापत्यलेखाधिकारंचौर्यासक्तंसौकुमार्येणयुक्तः द्रव्योपेतंमानवंसोमसूनुर्जीवक्षेस्थःशुक्रदृष्टःकरोति ॥ ५ ॥ वह्वन्नभोक्तामलिनःकुवृत्तःकांतारदुर्गाचलवासशीलः कार्योपयुक्तोनभवेन्मनुष्योजीवर्क्षगेज्ञेऽर्कसुतेनदृष्टे ॥ ६ ॥ इति जीवर्क्षस्थेवुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथशन्यालयस्थेज्ञे ग्रहदृष्टयः ॥ प्रारब्धकार्योकालितप्रतापंसन्मल्लविद्याकुशलंकुशीलं कुटुंविनंसंजनयेन्मनुष्यंवुधःशनिक्षेत्रगतोर्कदृष्टः ॥ १ ॥ जलोपजीवीधनवांश्चभीरुःप्रसूनकंदोद्यमतत्परश्च पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थेवुधेसुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे २ व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यःसुखीवाक्चपलोर्थयुक्तः स्यान्मानवोभानुसुतर्क्षसंस्थेदृष्टेव्जसूनोक्षितिनंदनेन ॥ ३ धान्यवाहनधनान्वितःसुखीग्रामपत्तनपतिर्महामतिः भानुसूनुभवनेव्जनंदनेदेवदेवसचिवेक्षितेनरः ॥ ४ ॥

फलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिका वुधसूर्यकर्केदेख्याहोवे सो अपनीप्रारब्धकर्के हि प्रतापीहोताहै और श्रेष्ठमल्लविद्यामेंचतुर और खोटेस्वभाववाला और कुटुंबीहोताहै ॥ १ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभका वुधचंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो जलकेसवंधकर्केउपजीवकावाला और धनी और भयकरणेवाला और पुष्प और कंदमूलमें उद्यमकरणेवालाहोताहै ॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंमकरकुंभराशिमेंवुध मंगलकर्केदेख्याहोवेसोलज्जाओर आलस्यकर्के अनम्रस्वभाववालाऔर सौम्यमूर्त्तिः और चपलवाणीवाला और धनकर्केयुक्तहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकावुध वृहस्पतिकर्केदेख्याहोवेसो धान्य और वाहन और धनकर्केयुक्त और सुखकर्केयुक्तहोताहै और ग्रामपुरों कास्वामी और वडीवुद्धिकर्केयुक्तहोताहै ॥ ४

॥ और जिनके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिकाबुधशुक्रकर्केदेख्याहोवे सो बहुतसंतानकेउत्पत्तकरणेवाला, और माडेरूपवाला और श्रेष्ठबुद्धिकर्केरहितऔर नीचजनोकीसंगतिकरणेवाला और बहुतकामकर्केयुक्तहोताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिमें बुधशनिकर्केदेख्याहोवे तिसकोसुखकर्केरहितऔर पापमेंयुक्त और दीन और धनकर्केहीन और खोटेजनों कीसंगतिमेंलीन कर्ताहै इतिशन्यालयेबुधेग्रहदृष्टयः

अथमंगलकेक्षेत्रमेंस्थितबृहस्पतिकोग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिका गुरुसूर्य कर्के देख्याहोवे सो झूठसें डरणे वाला और बहुत धर्मों के करणे वाला और प्रसिद्ध और श्रेष्ठ भार्यों कर्के युक्त और नम्र होताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका गुरुः चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो प्रसिद्ध और नम्र और स्त्रीकाप्यारा और श्रेष्ठ जनोंकीसंमति वाला और धर्म में रत और शांतस्वभाववाला होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकका गुरुः

बहुप्रजासंजनकंकुरूपंप्रज्ञोज्झितंनी चजनानुजातं कामाधिकंसंजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितोज्ञःशनिगेहसंस्थः ॥ ५ ॥ सुखोज्झितंपापरतंचदीनमकिंचनं हीनजनानुजातं करोतिमर्त्यंशनिधामगामीसौम्यस्तमोहंतृसुतेनदृष्टः ॥ ॥ ६ ॥ इतिशन्यालयगामिनिबुधेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमक्षेगे गुरौग्रहदृष्टयः ॥ असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्तास्यातश्चसद्भाग्ययुतो विनीतः भवेन्नरोदेवगुरौप्रयातेभौमस्यगेहेरविदृष्टदेहे १ ख्यातोविनीतोवनितानुयातःसतांमतोधर्मरतःप्रशांतः जातोभवेद्भूमिसुतर्क्षयातेवाचांपतौशीतकरेणदृष्टे २ क्रूरोतिधूर्तःपरगर्वहर्तानृपाश्रियाजीवनवृत्तिकर्त्ता भर्त्ताबहूनांनतुमानवःस्यात्जीवेकुजर्क्षेचकुजेनदृष्टे ३ सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनःच्छिद्रप्रतीक्षी प्रणतानुयातः मर्त्योभवेत्कैतवसंप्रयुक्तोवाचस्पतौभौमगृहेज्ञदृष्टे ४ गंधमाल्यशयनासनभूषायोषिदंबरनिकेतनसौख्यं संप्रयच्छतिनृणांभृगुणाचेदीक्षितः सुरगुरुःकुजसंस्थः ५ लुब्धंरौद्रंसाहसैःसंयुतंचमित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितंच कुर्यान्मित्रोनिष्ठुरंदेवमंत्रीधात्रीपुत्रक्षेत्रगोमंदृष्टः ६

मंगल कर्के देख्याहोवे सो क्रूर और बडा धूर्त्त और दूसरे के अभि मानकों दूरकरणे वाला और राजाकेआश्रयसें जीवका करणे वाला और बहुत जनोंके पालने वाला होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिककागुरुः बुध कर्के देख्या होवे सो श्रेष्ठ वृत्ति और सत्य और श्रेष्ठ वाणी सें रहितहोताहै और दूसरेकेछिद्र देखने वाला और जोमनुष्य नम्रहोवे तिसकी संमति वाला और धूर्त्तकर्म करणे वाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकका गुरुः शुक्र कर्केदेख्याहोवे सोसुगंध माल्य और शय्या और आसन और भूषण और स्त्री और वस्त्र और घरके सुखोंवाला होताहै ५ और जिसके जन्म समयमें मेषवृश्चिक राशिमें गुरु शनि कर्के देख्याहोवे तिसकों लोभी और क्रूर और हठकर्के युक्त और मित्र और सन्तानके सुखसें रहित और मित्रमेंकठोरताकर्केयुक्तकर्ताहै ६

इतिभौमर्क्षेगेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथशुक्रकेगृहगतगुरुकौंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्म समयमें वृष तुलाराशिका गुरु सूर्य करके देख्याहोवे तिसकौं युद्ध करके जयप्राप्तकर्त्ताहै और अंगोंमें घातकर्त्ताहै और रोगकरके युक्तकर्त्ताहै और वहुतवाहन और वहुतचाकरों करके युक्त कर्त्ताहै और राजाका मंत्री कर्त्ताहै, १ और जिसके जन्मसमय में वृषतुला राशिका गुरुः चंद्रमा करके देख्याहोवे तिसकौं सत्यकरकेयुक्त और सदानम्र और परो पकारमें रत और श्रेष्ठ चित्तकरके युक्त कर्त्ताहै और श्रेष्ठ भाग्यों वाला कर्त्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिकागुरुः मंगलकरकेदेख्याहोवेतिसकौं वडेभाग्योंवालाऔरपुत्रोंकेसुखवालाऔरमीठावोलनेवालाऔरराजासेमानकौंप्राप्तहोनेवालाकर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुला राशिका गुरुः वुध करके देख्याहोवे तिसकौं श्रेष्ठ विद्यामें रतऔर

इतिभौमर्क्षेगेगुरौग्रहदृष्टयः अथशुक्रागारस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ संगरासविजयंक्षतगात्रंसामयंचवहुवाहनभृत्यम् मंत्रिणंहिकुरुतेसुरमंत्रीदैत्यमंत्रिगृहगोरविदृष्टः १ सत्येनयुक्तंसततंविनीतंपरोपकाराभिरतंसुचित्तम् सद्भाग्यभाजंकुरुतेमनुष्यंजीवःसितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः २ भाग्योपपन्नंसुतसौख्यभाजंप्रियंवदंभूपतिलब्धमानं नरंसदाचारपरंकरोतिभौमेक्षितेज्योभृगुजालयस्थः ३ सन्मंत्रविद्यानिरतंनितांतंभाग्यान्वितंभूपतिलब्धवित्तम् चंचत्कलाज्ञंपुरुषंप्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥ धनान्वितंचारुविभूषणाढ्यंसद्वृत्तचित्तंविभवैःसमेतं करोतिमर्त्यंसुरराजमंत्रीशुक्रालयस्थोभृगुसूनुदृष्टः ५ सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतंप्राज्ञंपुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् नरंप्रकुर्याच्चतुरंसुरेज्योदैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेनदृष्टः ६ ॥ इतिशुक्रागारस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथवुधवेश्मसंस्थेगुरौखगदृष्टयः ॥ सत्पुत्रदारंधनमित्रसौख्यंश्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् नरंप्रकुर्यात्सुरराजमंत्रीरविप्रदृष्टोवुधवेश्मनिस्थः १

सदा भाग्यों करके युक्त और राजासें धनलाभ करके युक्त और सुंदर कलाकेजानने वाला कर्त्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका गुरुः शुक्र करके देख्याहोवे तिसकौं धन और श्रेष्ठ भूषणों करके युक्त और श्रेष्ठ वृत्तिमें चित्तकरणे वाला और ऐश्वर्यों करके युक्त कर्त्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिमें गुरुः शनिकरके देख्याहोवे तिसकौं श्रेष्ठ पुत्र और स्त्रीसें लेकरके सुखकौं प्राप्तकर्त्ताहै और चतुर और पुरग्रामोंके उत्सवों करके युक्त कर्त्ताहै ६ ॥ इतिशुक्रगृहेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ ॥ अथवुधकेक्षेत्रमेंस्थितवृहस्पतिकौंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिमें स्थित वृहस्पतिकौं सूर्य देखताहोवे तिसकौं श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री और धन और मित्रका सुख और श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके विराजमान कर्त्ताहै १

॥ और जिसके जन्मसमय में मिथुनकन्याका गुरु चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसनें गुणों कर्के युक्त और ग्रामपुरों में उपकारकरणे वाला और वडे गौरव कर्के विराजमान कर्ताहे ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका गुरुः मंगलकर्के देख्या होवे तिसकों युद्धमें जयकोंप्राप्त कर्ताहे और देहमें घातकर्ताहे और धनकर्के और पराक्रमकर्के युक्त कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका गुरुः वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट मित्र और स्त्री पुत्र और धनकें सुखकों प्राप्तहोताहे और चतुर और ज्योतिष शास्त्र और शिल्पविद्याके जानने वाला होताहे और श्रेष्ट बोलने वाला और कामीहोताहे ४ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिमें गुरुः शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों धनस्त्री पुत्रके सुखकर्के युक्त औरवडी मल्हायत वाउलीया और खेतीयोंमें चित्तवाला और प्रसन्नहोताहे ५ और जिसके जन्मसमयमें मि

गुणान्वितंग्रामपुरोपकारंविराजमानंवहुगौरवेण कुर्यान्नरंदेवगुरुर्वुधर्क्षेसंस्थोनिशानाथनिरीक्षमाणः २ संग्रामसंप्राप्तजयंक्षतांगंधनेनसारेणसमन्वितंच करोतिजातं विवुधेंद्रमंत्रीवुधालयस्थःक्षितिसूनुदृष्टः ३ सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्योदक्षोभवेद् ज्योतिषशिल्पवेत्ता स्याच्चारुभाषीपुरुषःप्रकामंजीविवुधर्क्षेचवुधेनदृष्टे ४ धनांगनासूनुसुखैरुपेतःप्रासादवापीकृपिकर्मचित्तः भवेत्प्रसन्नःपुरुषःसुरेज्येदैत्येज्यदृष्टे वुधवेश्मसंस्थे ५ नरेंद्रसद्गौरवसंप्रयुक्तंनित्योत्सवंपूर्णगुणाभिरामं। नरंपुरग्रामपतिंकरोतिगुरुर्ज्ञगेहेशनिनाप्रदृष्टः ६ इतिवुधवेश्मसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अथकुलीरसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिःपूर्वंचपश्चात्खलुतत्सुखानि कुर्यान्नराणांहिगुरुःसुराणांकुलीरसंस्थोरविणाप्रदृष्टः ॥ १ ॥ नरेंद्रकोशाधिकृतिंसुकांतिंसद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् सद्वृत्तचित्तंजनयेन्मनुष्यंकर्कस्थितेज्यःशशिनाप्रदृष्टः ॥ २ ॥ मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिःसद्वृत्तबुद्धिर्विलसत्प्रतापः मंत्रीनरःकर्कटराशिसंस्थेगीर्वाणवंद्येशशिसूनुदृष्टे ॥ ३ ॥

थुनकन्याका गुरुःशनि कर्केदेख्याहोवे तिसकों राजासें गौरव कर्के युक्तकर्ताहे और नित्यप्रतिउत्सवों कर्के युक्त और गुणों कर्के पूर्ण और पुरग्रामोंका स्वामीकर्ताहे ६ इतिवुधवेश्मसंस्थेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अवकर्कराशिमें गुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिमें गुरुसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसकों स्त्री और पुत्र और धनकेसुखकोंप्रथमहानि कर्ताहे और पीछेसें स्त्री पुत्र धनकासुखहोताहे ॥ १ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिका गुरु चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो राजाकेभंडारकाअधिकारीहोताहे और सुंदरशोभावालाहोताहे और श्रेष्टवाहन और धनादियों कर्के युक्त और श्रेष्टवृत्तिमें चित्तवालेकों कर्ताहे २ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिमें गुरुवुध कर्के देख्याहोवे सो मित्रके सबधकर्के संपूर्णसिद्धिकोउत्पन्नकर्ताहे और श्रेष्टवुद्धिमेंवृत्तिकोंलगानेवाला और वडेप्रतापवाला और मंत्रीहोताहे ३ ॥

और जिसके जन्मसमय में कर्कटराशि कागुरुशुक्रकर्के देख्याहोवे सो बहुतस्त्रीयोंकेऐश्वर्यको भोगताहै और अनेकसुखोंकों प्राप्तहोताहै ॥ ४ और जिसकेजन्मसमयमें कर्कराशिमेंगुरुशनि-कर्के देख्याहोवे सो सन्मान औरभूषण और गुण और श्रेष्टस्वभावकोंप्राप्तहोताहै और सेना और पुर ग्रामकास्वामीहोताहै और बहुतवोलनेवालाहोताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिकागुरु मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बालक और स्त्रीया और वस्त्र और सुंदरभूषणोंवालाऔरगुणी और शूरवीर और चतुरहोताहै ६ इतिकुलीरस्थगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अवसिंहकेगुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥जिसकेजन्म समयमें सिंहराशिका गुरुसूर्यकर्केदेख्याहोवे तिसकों खर्चकर्केयुक्त औरप्रसिद्धता कर्केयुक्तऔर अत्यंत धूर्त और राजासेंधनलाभयुक्त और शुभकर्ममें चित्तवालाकर्ताहै १ औरजिसके जन्मसमयमें सिंहका

वव्हंगनावैभवमंगनानांनानासुखानामुपलब्धयःस्युः कुलीरयातेवचसामधीशेनिरीक्षितेदैत्यपुरोहितेन ४ सन्मानभूषागुणचारुशीलःसेनापुरग्रामपतिर्नरःस्यात् अनल्पजल्पःखलुकर्कटस्थेवाचस्पतौसूर्यसुतेनदृष्टे: ५ ॥ कुमारदारांबरचारुभूषाविशेषभाजंगुणिनंचशूरं प्राज्ञंक्षतांगंकुरुतेमनुष्यंकर्कस्थितेज्योऽवनिजेनदृष्टः ६ ॥ इतिकुलीरस्थगुरौग्रहाणांदृष्टयः ॥ अथसिंहयातेजीवेग्रहदृष्टयः॥ व्ययान्वितंस्यातमतीवधूर्तं नृपाप्तवित्तंशुभकर्मचित्तं नरंप्रकुर्यात्सुरराजमंत्रीसूर्येणदृष्टोमृगराजसंस्थः १ ॥ प्रसन्नमूर्तिंगतचित्तशुद्धिंस्त्रीहेतुसंप्राप्तधनंवदान्यम् कुर्यात्पुमांसंवचसामधीशःशशांकदृष्टःकरिवैरिसंस्थः ॥ २ ॥ मान्योगुरूणांगुरुगौरवेणसत्कर्मनिर्माणविधौप्रवीणः प्राणीभवेत्केसरिणिस्थितेस्मिन्गीर्वाणवन्द्येऽवनिजनदृष्टे ३ गृहादिनिर्माणविधौप्रवीणोगुणाग्रणीस्यात्सचिवोनृपाणां वाणीविलासिप्रचुरोनरःस्यात्सिंहस्थितेदेवगुरौज्ञदृष्टे ४ भूमीपतिप्राप्तमहत्पदस्थःकांताजनप्रीतिकरोगुणज्ञः भवेन्नरोदेवगुरौहरिस्थेनिरीक्षितेचासुरपूजितेन ५

गुरुचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे तिसकों प्रसन्नवदनऔर चित्तशुद्धिसेंरहितऔरस्त्रीकेनिमित्तसेंधनकोंप्राप्तहोताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सिंहकागुरु मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बडेगौरवकर्के और बडोंकर्के मानकोंप्राप्तहोताहै और श्रेष्टकर्मकरणेमें चतुरहोताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिं-हराशिकाबृहस्पति बुधकर्केदेख्याहोवे सो घरसेंआदलेकरबनानेमेंचतुरहोताहै और गुणवानों-का अग्रणीहोताहै और राजयोंकामंत्रीहोताहै और वाणीविलासमें चतुरहोताहै ४ और जि-सके जन्मसमयमें सिंहराशिकागुरु शुक्रकर्केदेख्याहोवे सो राजाकर्के दीयेहुवेबडेअधिकारमें-स्थितहोताहै और स्त्रीजनोंसें प्रीतिकरणेवाला और गुणके जानने वाला होताहै ॥ ५ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सिंहका बृहस्पति शनिकर्के देख्याहोवे सोसुखकर्केहीनऔर मलीन-श्रेष्ठवाणीवाला और कृशदेहवाला और उत्सवकर्केरहितहोताहे ६ ॥ इतिसिंहगुरोग्रहदृष्टयः अथस्वक्षेत्रस्थगुरुकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिमें बृहस्पतिसूर्य-कर्केदेख्याहोवे सो राजासेंविरोधबुद्धिवाला और निश्चयकर्के मित्रोंसेंविमनहोताहै और निरंतर-शत्रुनिसऊपरखडेरहतेहै १ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनका गुरु चंद्रमाकर्के देख्याहोवे-सो भाग्य और धनकीवृद्धिकर्के गर्वकोंप्राप्तहोताहे और स्त्रीमित्रकाप्याराहोताहे २ और जिसके-जन्मसमयमें धनमीनकागुरुः मंगलकर्के देख्याहोवे सो फोडेयों और यक्ष्मोंकर्के अंकितहोताहे और-युद्धमें चतुर होताहै और हिंसाकरणे वाला और वडेक्रूरस्वभाव वाला होताहै और परोपकारमेंरत-

सुखेनहीनंमलिनंमुवाचंकृशांगयष्टिंविगतोत्सवंच करोतिमर्त्यंमरुतामममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेनदृष्टः ॥ इतिसिंहयातेगुरोग्रहदृष्टयः ॥ अथस्वगृहयातेगुरोग्रहदृष्टयः ॥ राज्ञाविरुद्धत्वमतीवनूनंसुहृज्जनेनापिचवैमनस्यं शत्रूद्गमः स्यान्नियतंनराणांजीविर्कदृष्टेस्वगृहंप्रयाते ॥ १ ॥ सुगर्वितंभाग्यधनाभिवृद्ध्याप्रियाप्रियत्वाभिमतंविशेषात् करोतिजातंसुखिनंविनीतंचंद्रेक्षितोदेवगुरुःस्वभस्थः ॥ २ ॥ व्रणांकितंसंगरकर्मदक्षंहिंसापरंक्रूरतरस्वभावं परोपकाराभिरतंप्रकुर्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेनदृष्टः ॥ ३ ॥ नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारोदाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः परोपकारादरतैकचित्तोनरोगुरौस्वक्षगतेज्ञदृष्टे ४ सुखोपपन्नंधनिनंप्रसन्नंप्राज्ञंसदैश्वर्यविराजमानम् नूनंप्रकुर्यान्मनुजंसुरेज्योदैत्येज्यदृष्टोनिजमंदिरस्थः ५ पदच्युतंसौख्यसुतैर्विहीनंसंग्रामसंजातपराभवंच करोतिदीनंस्वगृहेसुरेज्यःसूर्यात्मजेनप्रविलोक्यमानः ६ इतिस्वगृहेगुरोग्रहदृष्टयः

होताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धनमीन राशिका गुरु बुधकर्के देख्याहोवे सो राजाके-आश्रयसें वडे अधिकारकों प्राप्त होताहे और स्त्री और धन के ऐश्वर्यकर्के सुखकों प्राप्त होताहै और परोपकारके वास्ते एकाचित्त होताहे ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें ॥ धन मीनकागुरु शुक्रकर्के-देख्याहोवे सो सुखऔर धन और प्रसन्नताकोंप्राप्त होताहै और चतुर और सदा ऐश्वर्यकर्के विराज-मान होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिका गुरु शनि कर्के देख्याहोवे सो अधिका-रसें गिडताहै और सुख और पुत्रोंकर्के रहित होताहै और युद्धमें तिरस्कारकों प्राप्तहोताहे ६ ॥ इति-स्वगृहेगुरोग्रहदृष्टयः ॥

अवशनिकेक्षेत्रमेंगुरुको ग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिमें गुरु सूर्य करके देख्याहोवे तिसको प्रसन्नवदन और शुभवाग्विलास करकेयुक्त और परोपकारमें आदरकरणे वाला और राजाके कुलमें प्राप्तकर्ताहै १ औरजिनकेजन्मसमयमें मकरकुंभ राशिकागुरुचंद्रमाकरके देख्याहोवे सोकुलके धारणे वाला और तीव्र बुद्धिवाला और श्रेष्टस्वभाववालाऔर धर्मक्रियामें भली प्रकार करके उदार और अभि मानी और पितामाताकाभक्त होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें मकर कुंभराशिका गुरु मंगल करके देख्याहोवे तिसको राजा कीकृपा करके धनकीसिद्धि होतीहै और. यश और सुखकी प्राप्तिवालाहोताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभ राशिका गुरु बुध करके देख्याहोवे तिसको शांतस्वभाव और निरंतर स्त्रीके वश्य और धर्म कृत्यमें रतकर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें म

॥ अथशनिगृहगतेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ प्रसन्नकांतिशुभवाग्विलासंपरोपकारादरतासमेतम् कुलेनृपालंकुरुतेसुरेज्योमंदालयस्थोयदिभानुदृष्टः १ ॥ कुलोद्वहस्तीव्रमतिःसुशीलोधर्मक्रियायांसुतरामुदारः नरोऽभिमानीपितृमातृभक्तोजीवेशनिक्षेत्रगतेंदुदृष्टे २ स्यादर्थसिद्धिर्नृपतिप्रसादात्कीर्त्तेःसुखानामुपलब्धिरेव सूतौसुरेज्येशनिमंदिरस्थे निरीक्ष्यमाणेधरणीसुतेन ३ शांतंनितांतंवनितानुकूलंधर्मक्रियायांनिरतंनितांतम् करोतिमर्त्यंमरुतांपुरोधाबुधेनदृष्टःशनिमंदिरस्थः ४ विद्याविवेकार्थगुणैःसमेतःपृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलापः स्यात्पूरुषःसूर्यसुतर्क्षसंस्थेजीवेप्रसूतौभृगुजेनदृष्टे ५ कामंसकामंसुगुणाभिरामंसद्मार्थप्राप्तिंधनधान्ययुक्तम् स्यातंविनीतंकुरुतेमनुष्यंमंदेक्षितोमंदगृहस्थजीवः ६ इतिमंदगृहयातेगुरौग्रहदृष्टयः॥ अथकुजगेहयातेशुक्रेग्रहदृष्टयः कृपाविशेषन्नृपतेर्नितांतमतीवजायाजनितव्यलीकं कुर्यान्नराणांतरणिप्रदृष्टः शुक्रोहिवक्रस्यगृहप्रयातः १ श्रेष्ठप्रतिष्ठंचलचित्तवृत्तिंकामातुरत्वाद्विकृतिंप्रयातम् करोतिमर्त्यंकुजगेहयातोभृगोःसुतःशीतकरेणदृष्टः २

कर कुंभराशिका बृहस्पति शुक्रकरके देख्याहोवे तिसको विद्या और विवेक और धन और गुणोंकरके युक्त कर्ताहै और राजासे मनो भिलषितप्राप्ति कर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभराशिका गुरु शनि करके देख्याहोवे तिसकीयांकामना सिद्धहोतीयाहै और श्रेष्ठगुणों करके युक्तहोताहै और लक्ष्मी और धन और धान्य करके युक्त होताहै ॥ ६ ॥ इतिशनिगृहेगुरौग्रहदृष्टयः ॥ अवमंगलकेगृहमेंशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिक राशिमें शुक्र सूर्य करके देख्याहोवे तिसको राजाकी निरंतरकृपावाला कर्ताहै और अत्यंत स्त्रीजनित कपटको प्राप्तहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिका शुक्र चंद्रमा करके देख्याहोवे तिसको श्रेष्ठप्रतिष्ठा युक्तकर्ताहै और चंचलचित्तवृत्तिकर्ताहै और कामातुरहोनेसेविकारको प्राप्तकर्ताहै २

जिसके जन्मसमयमें मेष वृश्चिकराशिका शुक्र मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों धनकर्के और मान कर्के और सुख कर्के हीन कर्ताहे और दीनकर्ताहे और विशेष कर्के मलीन कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिका शुक्र बुध कर्के देख्याहोवे तिसकों दुष्टजनकर्ताहे और धन और अपने सबंधियों कर्के हीन कर्ताहे और अपनी बुद्धि और सामर्थ्यसें रहितकर्ताहे और क्रूर और प्राये धन के हरणे वाला कर्ताहे ४ और जिसके जन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिका शुक्र बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे तिसकों स्त्रीपुत्रादिसुखों कर्के युक्त कर्ताहेऔर श्रेष्ट देहकी शोभाकर्ताहे और भलेप्रकार नम्रकर्ताहे और उदार चित्तकर्ताहे ५ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिक राशिका शुक्र शनिकर्के देख्याहोवे तिसकों गुप्तधनवाला कर्ताहे और अपनेमनमेंशांत होताहे और मानकों प्राप्त और चतुर और मित्र

धनेनमानेनसुखेनहीनंदीनंविशेषान्मलिनंकरोति ॥ नूनंधरित्रीतनयालयस्थःशुक्रोधरित्रीतनयेनदृष्टः ३ अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनंस्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखंच क्रूरंपरार्थापहरंनरंहिकरोतिशुक्रःकुजभेज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥ कलत्रपुत्रादिसुखैःसमेतंसत्कायकांतिंसुतरांविनीतम् उदारचित्तंप्रकरोतिमर्त्यंजीवेक्षितोदैत्यगुरुःकुजर्क्षे ॥ ५ ॥ सुगुप्तवित्ताभिमतप्रशांतंमान्यंवदान्यंस्वजनानुयातम् करोतिजातंक्षितिपुत्रगेहेसंस्थःसितोभानुसुतेनदृष्टः ६ ॥ इतिकुजगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथनिजवेश्मगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ वरांगनाभ्योधनवाहनेभ्यःसुखानिनूनंलभतेमनुष्यः प्रसूतिकालेनिजवेश्मयातेसितेपतंगेननिरीक्ष्यमाणे १ विलासिनीकेलिविलाससक्तःकुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली नरःसुशीलःशुभवाग्विलासःस्वीयालयेस्यात्स्फुजितींदुदृष्टे ॥ २ ॥ गृहादिसौख्योपहतंनितांतंकलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् कुर्यान्नराणादनुजेंद्र-मंत्रीस्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ३ गुणाभिरामंसुभगप्रकामं सौम्यंसुसत्वंधृतिसंयुतंच स्वक्षेत्रगोदैत्यगुरुःप्रकुर्यान्नरंतुपारांशसुतेनदृष्टः ४

कोसंततिवाला कर्ताहे ६ इतिभौमगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अबस्वक्षेत्रीशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमेंवृषतुलाकाशुक्रसूर्यकर्केदेख्याहोवेतिसकोंश्रेष्टस्त्रीयोंकाऔरधनऔरवाहनोंका निश्चय करसुखकर्ताहे १ औरजिसकेजन्मसमयमेंवृषतुलाराशिकाशुक्रचंद्रमाकर्केदेख्याहोवेंसोवेश्याकेविलासमें सक्तहोताहैऔरकुलकेपालनेवालाऔरनिर्मलबुद्धिवालाऔरसुशीलऔरशुभवाग्विलासकरणे वालाहोता है और जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाराशिका शुक्र मंगल कर्के देख्या होवे तिसकोंगृहादि सुखों-कर्के रहित कर्ताहे और लडाई केप्रसंगसें अपमानकों प्राप्त कर्ताहे ३ और जिसके जन्मसमयमें-वृष तुला राशिका शुक्र बुध कर्के देख्या होवे तिसकों गुणों कर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्योंवाला और कामी कर्ताहे और सौम्य सुभाववाला और श्रेष्ट पराक्रम वाला और दृढता कर्के युक्त कर्ताहे ४

और जिसके जन्मसमयमें वृष तुला राशिका शुक्र बृहस्पति करके देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठ वाहनोंका और स्त्रीके सुखोंका और धनादियोंका लाभकर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें वृष तुलाराशिका शुक्र शनि करके देख्या होवे तिसकों रोग करके युक्त और साधु वृत्तिसें हीन और सुख और धन करके रहितकर्ताहै ॥ ६ ॥ इतिस्वक्षेत्रगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अबबुधकेक्षेत्रमेंशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहते है जिसकेजन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र सूर्य करके देख्या होवे सो राजाके अंतःपुरका अधिकारी होताहै और नम्रहोताहै और गुण करके युक्त होताहै और शास्त्रके जाननेवाला होताहै १ और जिसकेजन्मसमयमें मिथुन कन्याराशिका शुक्र चंद्रमा करके देख्या होवे तिसकों श्रेष्ठरत्न और वस्त्रादि सुखों करके युक्त कर्ताहै और नीलकमलकी न्याईं सुंदर नेत्रोंवाला कर्ताहै २ और जि-

सद्वाहनानांगृहिणीगुणानांसुमित्रपुत्रद्रविणाविकानाम्करोतिलब्धिंनिजवेश्मयातःसितःसुराचार्यनिरीक्षितश्चेत् ५ गदाभिभूतोहतसाधुवृत्तःसौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिदीनः भवेत्प्रसूतौनिजवेश्मयाते भृगोःसुतेभानुसुतेनदृष्टे ६ इतिनिजवेश्मगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ नृपावरोधाधिकृतंविनीतंगुणान्वितंशास्त्रकृतप्रवेशं कुर्यान्नरंदैत्यगुरुः प्रसूतौसौम्यर्क्षसंस्थेरविणाप्रदृष्टः १ सद्रत्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् सुकेशपाशंमनुजंप्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थोभृगुरिंदुदृष्टः २ भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणःकांतानिमित्तंद्रविणव्ययःस्यात् नरोहिनीहारकरात्मजर्क्षेस्थितेसितेभूमिसुतेनदृष्टे ३ प्रज्ञांमहद्वाहनवित्तवृद्धिंसेनापतित्वंपरिवारसौख्यं कुर्यान्नराणामुशनाप्रकामंबुधर्क्षसंस्थश्चबुधेनदृष्टः ४ सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरांविनीतः मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टेसितेदेवपुरोहितेन ॥ ५ ॥ पराभिभूतंचपलंविविक्तंसदुःखितंसर्वजनोज्झितंच मर्त्यंकरोत्येवभृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षेरविजेनदृष्टः ॥ ६

सके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र मंगल करके देख्या होवे तिसकों भाग्योंकरके युक्त और कामविधिमें चतुर और स्त्रीके निमित्त द्रव्यखर्चनेवाला कर्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका शुक्र बुध करके देख्या होवे तिसकों वडी बुद्धिवाला और वाहन और धनकी वृद्धिवाला और सेनाकास्वामि और परिवारके सुखवाला कर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्या राशिका शुक्र बृहस्पति करके देख्या होवे सो श्रेष्ठ बुद्धिकीवृद्धिसें वडे ऐश्वर्य करके युक्त होता है और प्रसन्नचित्त और भली प्रकार नम्रहोताहै ॥ ॥ ५ और जिसके जन्मसमयमें मिथुन कन्याका शुक्र शनि करके देख्या होवे तिसकोंअपमानकरकेयुक्तऔरचपलस्वभावकरकेयुक्तऔर दुःखितऔर संपूर्णजनोंकरकेरहितकर्ताहै ॥ ६ ॥

इतिबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथकर्कराशिमेंस्थितशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहे ॥ जिसके जन्म समयमें कर्क राशिका शुक्र सूर्य कर्के देख्या होवे सो स्त्रीकेक्रोध कर्के हर्षकेनाशकों प्राप्तहोताहै और शत्रुजनों कर्के पीडित होताहे १ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र चन्द्रमा कर्के देख्या होवे तिसकों पूर्वकन्या और पीछेसें पुत्रलाभ होताहै और माताकों और विमाताकों बहु मानोंके करणे वाला होताहे २ और जिसके जन्मसमयमें कर्कका शुक्र मंगल कर्के देख्या होवेसो मनुष्य कलाके जाननेमें चतुर होताहै और शत्रुपक्षमें रहितहोताहे और बुद्धि कर्के सुखकों प्राप्तहोताहै और स्त्रीकर्के चिंतातुररहिताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्रबुध कर्केदेख्या होवे तिसकोविद्या मे प्रवीण और गुणी और गुणके जाननेवाला कर्ताहै और स्त्रीपुत्रों कर्के उत्पन्नजोदुःखतिसकर्केतप्त कर्ताहे और

॥इतिबुधर्क्षसंस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथकर्कटगेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥
॥ सरोपयोषाकृतहर्षनाशःस्यात्पूरूषःशत्रुजनाभिभूतः दैत्यार्चितेकर्कटराशियाते निरीक्षितेहर्पतिनाप्रसूतो ॥ १ ॥ कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमंवासपत्नींवहुगौरवाणि कुर्यान्नराणांहरिणांकदृष्टः कुलीरगोभार्गवनामधेयः २ कलासुदक्षोहतशत्रुपक्षो बुध्याचसौख्येनयुतोमनुष्यः परंतुकांताकृतचिंतयार्त्तो भौमेक्षितेकर्कटगोसितेस्यात् ॥ ३ ॥ विद्याप्रवीणगुणिनंगुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तं जनोज्झितंचापिकरोतिमर्त्यं काव्यःकुलीरोपगताज्ञदृष्टः ४ अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तंविनीतंमतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यं प्रियवचनविलासंमानुषंसंविधत्ते सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवःकर्कटस्थः ५ सद्वृत्तसौख्योपहतंगतार्थं व्यर्थप्रयत्नंवनितान्वितंच स्थानच्युतंसंजनयेन्मनुष्यंमंदेक्षितःकर्कगतः सिताख्यः ६ इतिकर्कराशिस्थितेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहेसितेग्रहदृष्टयः ॥ स्पर्धातिसंवर्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनोमनुष्यः क्रमेलकाद्यैर्यदिवायुतःस्यादर्केक्षितेसिंहगतेसिताख्ये १

जनोंसे रहितकर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र बृहस्पति कर्के देख्या होवे तिसकों बडाचतुर और उदार और श्रेष्ट वृत्ति वाला और नम्र और बुद्धि और ऐश्वर्य कर्के युक्त और स्त्रीपुत्रका सुख कर्ताहे और श्रेष्ट वाग्विलास करणे वाला कर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शुक्र शनि कर्के देख्या होवे तिसकों श्रेष्ट वृत्ति और सुखसें रहित कर्ताहै और धन रहित और व्यर्थ उद्यम वाला कर्ताहै और स्त्रीजित कर्ताहै और स्थानसें भ्रष्ट कर्ताहै ६ इतिकर्कस्थेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथसिंहराशिमेंस्थितशुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सिंहराशीका शुक्र सूर्य कर्के देख्या होवे सो दूसरेकी स्पर्धासें चित्त वृत्तिकों वधावताहै और स्त्रीके आश्रयकर्केधनलाभकोंप्राप्तहोताहैअथवाऊठांकर्केंऔरखचरोंखोतयोंकर्केधनलाभकों प्राप्तहोताहे १

और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र चंद्रमा कर्के देख्याहोवे तिसकी माता को सौकनानिश्च यकर्के होतीहै और. स्त्रीसें विरोध होताहै और ऐश्वर्यकाउदय होताहै २ और जिसके जन्मसमय में सिंहराशिका शुक्र मंगल कर्के देख्याहोवे तिसकों राजाकाप्यारा और धान्य धनों कर्के युक्त और कामसें उत्पन्नजो व्यसन तिनों कर्के संतप्तकर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शुक्र बुध कर्के देख्याहोवे सो धन कर्के युक्त और संग्रहकरणेवाला और लोभी और कामकी वृद्धिसें निंद्यवि कारकों प्राप्त कर्त्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र बृहस्पति कर्के देख्याहोवे सोराजाका मंत्री और धनवाहनों कर्के युक्त और वहुतसी पुत्र और चाकरोंके सुखवाला होताहै और प्रसिद्ध कामोंके करणे वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शुक्र शनि कर्के देख्याहोवे सो राजाके तुल्य संपूर्ण समृद्धि वाला अथवाराजा कर्के दंडके अधिकार में स्थित

नूनंजनन्याश्चभवेत्सपत्नीपत्नीविरोधोविभवोद्भवश्च यस्यप्रसूतौदनुजेंद्रमं त्रीचंद्रेक्षितःसिंहगतोयदिस्यात् २ नृपप्रियंधान्यधनैरुपेतंकंदर्पजातव्यस नाभिभूत करोतिमर्त्यंमृगराजसंस्थोभृगोस्तनूजोऽवनिजेनदृष्टः ३ धनान्वि तंसंग्रहचित्तवृत्तिंलुब्धस्मराधिक्यविकारनिंद्यम् दैत्येंद्रमंत्रीकुरुतेमनुष्यंसिंह स्थितःसोमसुतेनदृष्टः ४ नरेंद्रमंत्रीधनवाहनाढ्योवह्वंगनानंदनभृत्यसौख्यः विख्यातकर्माचभृगोस्तनूजेर्जीवेक्षितेसिंहगतेनरःस्यात् ५ नृपोपमसर्वसमृ द्धिभाजंदंडाधिकारेप्यथवानियुक्तं करोतिमर्त्यंमृगराजवर्तीदैत्यार्चितःसूर्यसु तेनदृष्टः ६ इतिसिंहस्थेसितेग्रहदृ० अथजीवभवनेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ रौद्रं प्राज्ञंभाग्यसौभाग्यभाजंसत्त्वोपेतंवित्तवंतंविशेषात् ननादेशप्राप्तयानंमनुष्यंकु र्याच्छुक्रोजीवभेभानुदृष्टः १ सद्राजमानेनविराजमानंख्यातंविनीतंवहुभोगयुक्तं धीरंससारंहिनरंकरोतिभृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः २ द्विषामसह्यंधनिनंप्रस न्नंकांताकृतप्रेमभरंसुपुण्यं सद्वाहनाढ्यंकुरुतेमनुष्यंभौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः ३

होताहै ६ इतिसिंहस्थसितेग्रहदृष्टयः ॥ अथजीवभवनमें शुक्रकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिकाशुक्र सूर्य कर्के देख्याहोवे तिसकों क्रूर और चतुर और भाग्य के सौभाग्य कर्के युक्त कर्त्ताहै और पराक्रमकर्के युक्त और विशेष कर्के धनवान् कर्त्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिका शुक्र चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो श्रेष्ठ राजमान कर्के विराजमान होताहै और प्रसिद्ध और नम्र होताहै और वहुत भोगों कर्के युक्त और धीर और पराक्रमकर्के युक्त कर्त्ताहै २ और जिसके जन्मसमयमें धन मीन राशिका शुक्र मंगल कर्के देख्याहोवे तिसकों शत्रुयोंकों नाहिं सहारणे वाला कर्त्ताहै और धनी और प्रसन्न और स्त्रीके प्रेमसें धन प्राप्त और श्रेष्ठ पुण्योंवाला और श्रेष्ठ वाहनों कर्के युक्त कर्त्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें बु

मीनका शुक्र बुध करके देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट वाहन और धन और वस्त्र और भूषणोंकरके युक्त कर्ताहै और निश्चय करके श्रेष्ट अन्नोंकासुखकर्ताहै ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमय में धनमीनकाशुक्र बृहस्पतिकरके देख्याहोवे तिसकों घोडे और घर और वस्त्र और भूषण और हाथियोंकासुखकर्ता है ॥ ५ ॥ और जिसके जन्मसमय में धनमीनका शुक्र शनिकरकेदेख्याहोवे तिसकों श्रेष्ट भोगके सुखों वाला और नित्यं प्रतिउत्सवों करकेयुक्त और श्रेष्टधनकरकेयुक्तकर्ताहै ॥ ६ ॥इतिजीवगृहेशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथशनिकेगृहमेंशुक्रके ग्रहदृष्टियोंकाफल कहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशिकाशुक्रसूर्यकरके देख्याहोवे तिसकों स्थिरस्वभाववाला और ऐश्वर्यवालाकर्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मकरकुंभ राशिकाशुक्र चंद्रमाकरके देख्याहोवे

सद्वाहनार्थावरभूषणानांलाभंसदन्नानिसुखानिनूनं ॥ कुर्यान्नराणांगुरुमंदिरस्थोदैत्यार्चितःसोमसुतेनदृष्टः ॥ ४ ॥ तुरंगगेहांबरभूषणानां महागजानांवनितासुखानाम् ॥ करोत्यवाप्तिंभृगुजःप्रसूतौजीवेक्षितोजीवगृहाश्रितश्च ॥ ५ सद्भोगसौख्योत्तमभोगभाजंनित्योत्सवोत्कर्षयुतंसुवित्तम् करोतिमर्त्यंगुरुगेहजातोदैत्यार्चितोभानुसुतेनदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिजीवगेहेशुक्रेग्रहदृष्टयः अथशनिक्षेत्रगतेसितेग्रहदृष्टिः ॥ स्थिरस्वभावंविभवोपपन्नं महाधनंसारविराजमानं कांताविलासैःसहितंप्रकुर्यात्भृगुःशनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः १ ओजस्विनचारुशरीरयष्टिप्रकृष्टसत्वंधनवाहनाढ्यम् करोतिमर्त्यंशनिगेहयातोभृगोःसुतःशीतकरेणदृष्टः २ अमामयाभ्यामतितप्तमूर्त्तिमनर्थतीर्थेक्षतिसंयुतंच कुर्यान्नरंदानवराजपूज्यःकुजेक्षितःसूर्यसुतालयस्थः ३ विद्वद्विधिज्ञंयानिनंसुतुष्टंप्रज्ञंसुसत्वंबहुलप्रपंचं ॥ सद्भाग्विलासंमनुजंप्रकुर्यात्भृगुःशनिक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ४ संद्गंधमाल्यावरचारुवाद्यसंगीतसंजातरुचिःशुचिश्चस्यान्मानवोदानवराजपूज्येसुरेज्यदृष्टेशनिमंदिरस्थे ५

तिसकों तेजस्वी और सुंदरदेह वाला औरबडेपराक्रमवाला कर्ताहैऔरधन औरवाहनोंकरके युक्तकर्ताहै २ ॥ और जिसकेजन्म समयमेंमकर कुंभराशिकाशुक्रमंगलकरकेदेख्याहोवे तिसकोंश्रमकरके और रोगोंकरकेतप्तकर्ताहै और अनर्थके कारणसे और तीर्थों के कारणसे खेदयुक्तकर्ताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभका शुक्रबुधकरकेदेख्याहोवे तो विद्वानों की विधि को जानने वाला और धनी और भलीप्रकार प्रसन्न और चतुर और प्रपंची और श्रेष्टवाग्विलासीहोताहै ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमय में मकरकुंभराशिकाशुक्रबृहस्पतिकरकेदेख्याहोवे तो श्रेष्टगंधमालाकरकेयुक्त और श्रेष्टवस्त्रोंकरकेयुक्त और बाजे और संगीतविद्यामें इच्छावालाहोताहै ५

औरजिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभराशि काशुक शनिकर्केदेख्याहोवेतिसको प्रसन्नदेहवालाऔरअनेकप्रकारकेलाभवाला औरधन और स्त्रीऔर वाहन और पुत्रोंकेसुखवाला कर्ताहै ६ इतिशनि क्षेत्रगतशुक्रेग्रहदृष्टयः अथभौमक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै जिसकेजन्मसमयमेंमेषवृश्चकराशीकाशनि सूर्यकर्केदेख्याहोवे सो महिषीयां और गोयाऔर बकरियाऔर भेडोंकीसमृद्धिवालाहोताहै और खेतीयोंकेकर्ममेंसदारतहोताहै और श्रेष्ठकर्मकरणेवालाहोताहै १ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चक का शनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे सो नीचकीसंगतिवाला और चपल और खोटेस्वभाववाला और दुष्ट और सुखकर्के और धनोंकर्के रहितहोताहै ॥ २ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशि का शनि मंगलकर्केदेख्याहोवे सो बहुत बकवादकरनेवाला और धनसंपदासें रहित और कार्यक्षयकोंप्राप्त और विशे

प्रसन्नगात्रंचविचित्रलाभंधनांगनावाहनसूनुसौख्यम् कुर्यान्नरंदानववृंददेवो मंदेक्षितोमंदगृहेऽधिसंस्थे ।६ ॥ इतिशनिक्षेत्रगतशुक्रेग्रहदृष्टयः ॥ अथभौमालयस्थेशनौग्रहदृष्टयः॥ लुलायगोजाविसमृद्धिभाजंकृषिक्रियायांनिरतःसदैव सत्कर्मसक्तंजनयेन्मनुष्यंभौमालयस्थो शनिरर्कदृष्टः १ ॥ नीचानुयातंचपलंकुशीलंखलंसुखार्थैः परिवर्जितंच कुर्यादवश्यंरविजोमनुष्यंशशीक्षितोभूसुतगेहसंस्थः ॥ २ अनल्पजल्पंगतसत्पदार्थंकार्यक्षतिंजातविशेषवित्तं करोतिजातंननुभानुसूनुःकुजेनदृष्टःकुजवेश्मसंस्थः ॥ ३ ॥ चौर्यकर्मकलहादितत्परंकामिनीजनगतोत्सवंनरम् ज्ञेक्षितोहिकुरुतेऽर्कनंदनोभूमिसूनुभुवनाधिसंस्थितः ॥ ४ ॥ सुखधनैःसहितंनृपमंत्रिणंनृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोऽवनिजवेश्मगतःकुरुतेनरम् ॥ ॥ ५ ॥ बहुप्रयाणाभिरतंविकांतिंपापांगनासक्तमतिंविचित्तम् ॥ करोतिमर्त्यंक्षितिजालयस्थोभानोस्तनूजोभृगुजेनदृष्टः ॥ ६ ॥ इतिभौमालयस्थेशनौग्रहदृष्टयः अथशुक्रवेश्मगेशनौग्रहदृष्टयः ॥ विद्याविचारेप्रचुरोतिवक्तापरान्नभोक्ता विधनश्चशांतः भवेन्नरस्तिग्मकरेणदृष्टेसूर्यात्मजेभार्गववेश्मसंस्थे ॥ १ ॥

षपनसेंरहितहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकका शनि बुधकर्के देख्याहोवे सो चोरी और लडाईकरणेमें तत्परहोताहै और स्त्रीजनोंकेउत्सवसेंरहितहोताहै ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चकराशिका शनि बृहस्पतिकर्केदेख्याहोवे सोसुखधनकर्केयुक्त और राजाकामंत्रीकर्ताहै और राजकेआश्रयकर्के मुख्यताकोंप्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मेषवृश्चिकराशिकाशनिशुक्रकर्के देख्याहोवे सो बहुत कर्के यात्रामेंरतहोताहै और शोभारहितहोताहै और खोटीस्त्रीमेंरत और चित्तसेंदुरीहोताहै ॥ ६ ॥ इतिभौमगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथशुक्रकेगृहमें शनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका शनि सूर्यकर्केदेख्याहोवे सो विद्याके विचारमें बडाचतुर और वक्ता और पराअन्नभोजनकरणेवाला और धनहीन और शांतस्वभाववालाहोताहै १ ॥

और जिसकेजन्मसमयमें वृषतुलाका शुक्र चंद्रमाकर्केदेख्याहोवेसोराजाकी कृपासैंवडेअधिकारकों प्राप्तहोताहै और स्त्रीभूषणोंकेसुखकों प्राप्तहोताहै और बलकर्के युक्तहोताहै ॥ १ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों युद्धकार्यमें रत और बहुतवकवादी और बडी प्रसन्नताकर्के युक्त कर्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाका शनि बुधकर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीमें रत और नीचजनोंकी संगतिवाला और हास्यविनोदमेंरत और धनहीन और नपुंसकोंसैं मैत्रीवाला होताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाकाशनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सोपरोपकारमें चित्तवृत्तिकर्ताहै औरपरायेदुखकर्केदुःखी होताहै और दाता और उद्यमकरणे वाला होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें वृषतुलाराशिका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे सोरत्नादिलाभकों और स्त्रीके विलासकों और जलके लाभकों और राजासैं गौरवलाभकों प्राप्तहोताहै ६

नृपप्रसादाप्तमहाधिकारंयोषाविभूषांवरजातसौख्यं बलान्वितंसंजनयेन्मनुष्यंमंदः सितर्क्षेहरिणांकदृष्टः २ संग्रामकार्याभिरतंनितांतमनल्पजल्पंचमहत्प्रसाद कुर्यान्नरंतिग्मकरस्यसूनुर्भूसूनुदृष्टोभृगुजालयस्थः ३ कांतारतोनीचजनानुयातोविनोदहास्याभिरतोगतार्थः क्लीबादिसख्यश्चभवेन्मनुष्य.शनौसितर्क्षेशशिसूनुदृष्टे ४ ॥ परोपकारेकृतचित्तवृत्तिःपरस्यदुःखेनसुदुःखितश्च दातोद्यमीसर्वजनप्रियश्चमंदे सितर्क्षेगुरुणाभिदृष्टे ५ रत्नादिलाभंवनिताविलासंजलाधिकत्वंनृपगौरवाप्तिम् कुर्यान्नराणांतरणेस्तनूजःशुक्रेक्षितःशुक्रगृहंप्रयातः ६ इतिशुक्रगृहेशनौग्रहदृष्टयः अथबुधमंदिरेशनौखेटदृशः ॥ सुखाञ्झितंनीचरतंसकोपमधार्मिकंद्रोहकरंसुधीरम् कुर्यान्नरंतिग्मकरस्यसूनुर्भानुप्रदृष्टोबुधमंदिरस्थः ॥ १ ॥ प्रसन्नमूर्त्तिर्नृपतिप्रसादप्राप्ताधिकारोन्नतिरार्यवृत्तिः कांताधिकारोयदिवानरःस्यान्मंदेज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे २ प्रकृष्टबुद्धिर्गुरुतरांविधिज्ञःस्यातंगभीरंचनरंकरोति सोमात्मजक्षेत्रगतोर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टःपरिसूतिकाले ३ धनान्वितंचारुमतिंविनीतगीतप्रियंसंगरकर्मदक्षं शिल्पेऽप्यभिज्ञंमनुजंप्रकुर्यात्सौम्येक्षित.सौम्यगृहस्थमंदः ४

इतिशुक्रगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अब बुधकेक्षेत्रमें शनिकों ग्रहदृष्टियोंका फल कहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याराशिका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे तिसकों सुखरहित और नीचकर्ममेंरत और क्रोधकर्केयुक्त और अधर्मी और द्रोहके करणेवाला कर्ताहै १ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याकाशनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तिसकों प्रसन्नमूर्ति और राजाकी प्रसन्नताकर्के अधिकारकों प्राप्त और श्रेष्ठवृत्तिवाला अथवा स्त्रियोंके अधिक कों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्ठ बुद्धि और विधिकेजाननेवाला और प्रसिद्ध और गंभीरताकर्के युक्त कर्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याकाशनि बुधकर्के देख्याहोवे तिसकों धनयुक्त और सुंदर बुद्धियुक्त और नम्र और गीतमें प्रीतिवाला और युद्धकर्ममें चतुर और शिल्पके जानने वाला कर्ताहै ४

ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे सो राजाके आश्रय वाला ओर सुंदरगुणोंकर्के युक्त ओर श्रेष्ठजनोंका प्यारा ओर गुप्तधनवाला ओर मनस्वी होताहै ५ ओर जिसके जन्मसमयमें मिथुनकन्याका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों स्त्रीयोंके भूषणकरणेमें चतुर ओर श्रेष्ठ कर्म ओर धर्ममें रत ओर स्त्रीमें सक्तचित्तवालाहोताहै ६ इतिबुधगृहे शनौ ग्रहदृष्टयः ॥ अब कर्कराशिमें स्थित शनिकों ग्रहदृष्टियोंका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो आनंद ओर स्त्री ओर धनोंकर्के रहित होताहै ओर सर्वदाकालअन्नभोगों कर्के रहित ओर माताकों बडाक्लेशकरणेवाला होताहै १ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कका शनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवेसो संबंधियोंकों निश्चयकर्के पीडा कर्ताहै ओर माताकों पीडा कर्ताहै ओर धनोंकी वृद्धि कर्ताहै २ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शनि मंगल कर्के

राजाश्रितश्चारुगुणैःसमेतःप्रियःशतांगुप्तधनोमनस्वी भवेन्नरोमंदचरोयदि स्यात्नृराशिसंस्थःसुरपूज्यदृष्टः ५ योषाविभूषाकरणेप्रवीणःसत्कर्मधर्मानुरतनितांतम् स्त्रीसक्तचित्तंप्रकरोतिमर्त्यंसितेक्षितोभानुसुतोज्ञगेहे ६ इतिबुधगेहेशनौग्रहदृ० अथकुलीरोपगतमंदंप्रतिग्रहदृष्टिः ॥ आनंददारद्रविणैर्विहीनःसदान्नभोगैरपिवोज्झितश्च मातुर्महत्क्लेशकरोनरःस्यान्मंदेकुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे १ निपीडनंबंधुजनेजनन्यांनूनंधनानामभिवर्द्धनंच कुर्यान्नराणांद्युमणेस्तनूजःकुलीरसंस्थोद्विजराजदृष्टः २ गलद्बलक्षीणकलेवरश्चनृपार्पितार्थोत्तमवैभवोपि स्यान्मानुषोभानुसुतेप्रसूतौकर्कस्थितेक्षोणिसुतेनदृष्टे ३ वाग्विलासकठिनोटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपियुक्तः दंभवृत्तिचतुरोपिनरःस्यात्कर्कगामिनिशनौबुधदृष्टे ४ क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनैरत्नवाहनविभूषणैरपि संयुतोभवतिमानवोजनौजीवदृष्टियुजिकर्कगेशनौ ५ उदारतागौरवचारुमानैः सौंदर्यवर्यामलवाग्विलासैः नूनंविहीनामनुजाभवेयुः शुक्रेक्षितेकर्कगतेर्कसूनौ ६ ॥ इतिकर्कोपगतेशनौग्रहदृष्टयः ॥

कर्के देख्याहोवे सो बलकर्के हीन ओर देहकर्के क्षीण होताहै ओर राजाकर्के दीयाजो धन तिसकर्के ऐश्वर्यवाला होताहै ३ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि बुधकर्के देख्याहोवे सो वाग्विलासमें कठिन होताहै ओर भ्रमणकरणेमें बुद्धि वाला ओर इछाके मनोरथों कर्के युक्त होताहै ओर दंभकरणेमें चतुर होताहै ४ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्क राशिका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों क्षेत्र ओर पुत्र ओर स्त्री ओर धनोंकर्के ओर रत्नोंकर्के ओर वाहनों कर्के ओर, भूषणों कर्के युक्त होताहै ५ ओर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे सो उदारताकर्के ओर गौरवकर्के ओर सुंदरमानों कर्के ओर सौंदर्यता कर्के ओर निर्मलवाणीके विलासोंकर्के निश्चयकर्के हीन होताहै ६ इति कर्कस्थ शनौ ग्रहदृष्टयः

अब सिंहके शनिकों ग्रहदृष्टियों काफलकहतेहै॥ जिसकेजन्मसमयमें सिंहराशीका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो धनकर्के ओर धान्योंकर्के और वाहनों कर्के और श्रेष्टवृत्तिकर्के और श्रेष्टचरित्रोंकर्केहीनहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिमें शनि चंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो श्रेष्ठरत्न और भूषण और वस्त्रोंकर्के युक्त सुंदर यशवालाहोताहै और मित्र और पुत्र और स्त्रीके सुखसें पूर्णहोताहै और प्रसन्न मूर्त्ति होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सिंहराशिका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे सो युद्ध कर्म में बडाचतुर होताहै और दयासें रहित और क्रोध कर्के युक्त होताहै और क्रूरस्वभाववाला होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि बुधकर्के देख्याहोवे तिसकों धन और स्त्री पुत्रके सुख कर्के हीनकर्ताहै और नीचव्यसनोंकर्के युक्त और दीन कर्ताहै ४ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि बृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्टमित्रपुत्रादिगुणोंकर्के युक्त और प्रसिद्ध और श्रेष्ट

अथसिंहोपगतेशनौग्रहदृष्टयः ॥ धनेनधान्येनचवाहनेनसद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च भवेद्विहीनोमनुजःप्रसूतौसिंहस्थितेभानुसुतेर्कदृष्टे १ सद्रत्नभूषांवरचारुकीर्तिकलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् प्रसन्नमूर्तिंकुरुतेऽर्कसुनुर्नरंहरिस्थोहरिणांकदृष्टः २ संग्रामकर्मण्यतिनैपुणःस्यात्कारुण्यहीनोमनुजःसकोपः क्रूरस्वभावोननुभानुसूनौपंचाननस्थेऽवनिसूनुदृष्टे ३ धनांगनासूनुसुखेनहीनंदीनंचनीचव्यसनाभिभूतम् करोतिजातंतपनस्यसूनुःसिंहस्थितःसोमसुतेक्षितश्च ४ सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतंख्यातंसुवृत्तंसुतरांविनीतं नरंपुरग्रामपतिंकरोतिसौरिर्हरिस्थोगुरुणाप्रदृष्टः ५ धनैश्चधान्यैरपिवाहनैश्चसुखैरुपेतंवनिताप्रतप्तम् कुर्यान्मनुष्यंतपनस्यसूनुःपंचाननस्थोभृगुसूनुदृष्टः ६ ॥ इतिसिंहोपयातेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथगुर्वागारेशनैश्चरेग्रहदृष्टयः ख्यातिंधनाप्तिंबहुगौरवाणिस्नेहप्रवृत्तिंपरनंदनेषु लभेन्नरोदेवगुरोरगारे शनैश्चरेपद्मिनिनाथदृष्टे १ सद्वृत्तशालीजननीवियुक्तोनामद्वयालंकरणप्रयातः सुखार्थभार्यासुखभाङ्नरःस्यात्सौरेसुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे २

वृत्तिवाला कर्ताहै और विशेष कर्के नम्र कर्ताहै और पुरग्रामका स्वामी कर्ताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सिंहका शनि शुक्रकर्के देख्याहोवे तिसकों धनोंकर्के और धान्योंकर्के और वाहनों कर्के और सुखों कर्के युक्त कर्ताहै और स्त्रीकर्के तप्त कर्ताहै ६ ॥ इतिसिंहस्थितेशनौग्रहदृष्टयः ॥ अथबृहस्पतिकेक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहै ॥ जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशीका शनि सूर्यकर्के देख्याहोवे सो प्रसिद्धताकों और धन प्राप्तिकों और गुणोंकों और गौरवकों प्राप्त होताहै और प्रायेपुत्रोंमें प्रीति करणेवाला होताहै १ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनका शनि चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तिसकों श्रेष्टवृत्तिवालो और मातासें रहित और दो नामोंकर्के भूषित और पुत्र धन स्त्री इनके सुखभोगने वाला होताहै २

और जिसके जन्मसमयमें धनमीनका शनि मंगलकर्के देख्याहोवे तिसकों वातरोगकर्के युक्त और लोकोंमें विरुद्धवर्त्तने वाला और विदेश रहनेवाला और वडादीन कर्ताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें धनमीनराशिका शनि वुधकर्के देख्याहोवे सो गुणोंकर्के युक्त और धनवान् और कामी और राजासें वडेअधिकारकों प्राप्त और सदाचारमें विराजमान होताहै ४ और जिसकेजन्मसमयमें धनमीनराशिका शनि वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तिसकों राजाकामंत्री अथवा सेनापति और संपूर्णकर्मोमेंयुक्त और वलवान् और सुशीलहोताहै ५ और जिसकेजन्मसमयमें धनमीन काशनिशुक्रकर्केदेख्याहोवे सोविदेशवासी और वहुतकार्योमेंसक्त और दोमाताकापुत्र और वडापवित्रहो ताहै ६ इतिगुरुगृहेशनेर्ग्रहदृष्टयः अथस्वक्षेत्रमेंशनिकोंग्रहदृष्टियोंकाफलकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमय

वातान्वितंलोकविरुद्धचेष्टंप्रवासिनंदीननरंकरोति नरंधरासूनुनिरीक्ष्यमाणोमा र्त्तंडपुत्रःसुरमंत्रिणोभे ३ गुणाभिरामोधनवान्प्रकामीनराधिराजाप्तमहाधिकारः नरःसदाचारविराजमानःशनौज्ञदृष्टेगुरुमंदिरस्थे ४ नृपप्रधानःपृतनापतिर्वा सर्वाधिशालीवलवान्सुशीलः स्यान्मानवोभानुसुतेप्रसूतौजीवेक्षितेजीवगृहं प्रयाते ५ विदेशवासीवहुकार्यसक्तोद्विमातृपुत्रःसुतरांपवित्रः ॥ स्यान्मानवो दानवमंत्रिदृष्टेमंदेऽमराचार्यगृहंप्रयाते ६ इतिगुर्वागारेशनैश्चरेग्रहदृ ष्टयः ॥ अथनिजागारगतमंदप्रतिग्रहदृष्टयः कुरूपभार्यश्चपरान्नभो क्तानानाप्रयासामयसंयुतश्च विदेशवासीप्रभवेन्मनुष्योमंदेनिजागारगतेऽर्क दृष्टे ॥ १ ॥ धनांगनाढ्यंद्विजिनानुजातंचलस्वभावंजननीविरुद्धं कामातुरं चापिनरंप्रकुर्यान्मंदःस्वभंस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ २ ॥ शूरःक्रूरःसाहसीसद्गुणा ढ्यःसर्वोत्कृष्टःसर्वदाहृष्टचित्तः ख्यातोमर्त्यश्चात्मभस्थेऽर्कपुत्रेधात्रीपुत्रप्रेक्षण त्वंप्रयाते ३ सद्वाहनान्साहासिकान्ससत्वान्धीरांश्चनानाविधकार्यसक्तान् करोतिमर्त्यान्ननुभानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थःशशिपुत्रदृष्टः ४

समकरकुंभराशिकाशनिसूर्यकर्केदेख्याहोवेसोकुरूपस्त्रीवाला और प्रायेअन्नकोंभोजनकरणेवाला और अ नेकप्रयत्नोंकर्के और रोगोंकर्केयुक्तहोताहै और विदेशवासीहोताहै १ और जिसकेजन्मसमयमें मकर कुंभराशिकाशनिचंद्रमाकर्केदेख्याहोवेसो धन और स्त्रीयोंकर्केयुक्त और दुःखकर्केजन्मयाहुया और च पलस्वभावकर्केयुक्त और मातासेंविरुद्ध और कामातुरहोताहै २ और जिसकेजन्मसमयमेंमकरकुंभराशिका शनि मंगलकर्केदेख्याहोवेसोक्रूरऔर शूरवीर और हठी और श्रेष्ठगुणोंकर्केयुक्त और सपूर्णोमेंउत्कृष्ट और सदाप्रसन्नमन और प्रसिद्धहोताहै ३ और जिसकेजन्ममसमयमेंमकरकुंभकाशनिवुधकर्केदेख्याहोवेतिसकों श्रेष्ठवाहनोंवाला और उत्साहकर्केयुक्त और पराक्रमकर्केयुक्त और धीर्यताकर्केयुक्त और अनेककार्योमेंसक्त करताहै ४

और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभकाशनि बृहस्पतिककेदेख्याहोवे तिसकोंभाग्योंकर्केयुक्त और राजाकामंत्री और रोगकर्केरहित और सुंदरदेहवालाकर्त्ताहे ५ और जिसकेजन्मसमयमें मकरकुंभ काशनि शुक्रकर्केदेख्याहोवे तिसकोंकामातुर और श्रेष्ठनियमकर्केरहित और भाग्योंकर्केयुक्त और सुखी औरधनीकर्त्ताहे और भोगभोगनेंवाला और लक्ष्मीकास्वामीहोताहे २ इतिस्वगृहेशनौग्रहदृष्टयः ॥ इति श्रीजातकखंडेग्रहभावादिफलाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥ अब ग्रहोंका बलसाधन करणेका अध्यायक हतेहें ॥ तिसमें प्रथम दृष्टिका सिद्धकरणा मित्रसेनपद्धतिमें कहतेहें होराशास्त्रके जान नेवाल्योंने तीसरे और दशमेंस्थानमें पाददृष्टि एकचरणदृष्टि ग्रहकी कहिहे और त्रिकोणमें नवमें पांचमें स्थानमें अर्धदृष्टि दोचरणदृष्टि कहिहे और चतुर्थ अष्टम स्थानमें

गुणान्वितंक्षोणिपतिप्रधानंनिरामयंचारुशरीरयष्टिं कुर्यान्नरंदेवगुरुप्रदृष्टश्च डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ५ कामातुरंसंन्नियमेनहीनंभाग्योपपन्नंसुखिनंधना ढ्यम् भोक्तारमीशंकुरुतेस्वभस्थोरवेःसुतोभार्गवसूनुदृष्टः ६ इतिनिजा गारगतमंदप्रतिग्रहदृष्टयः ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञया महेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेग्रहभावादिफलाध्यायःषष्ठः ॥ ६ ॥ अथग्रहाणांबलसाधनाध्यायः ॥ तत्रादौदृष्ट्यानयनंमित्रसेनपद्धतौ खभेविक्रमे १०।३ पाददृष्टिर्ग्रहेस्यात्त्रिकोणे ९।५ ऽर्द्धदृष्टिर्द्युने ७ पूर्णदृष्टिः त्रिपादायतूर्या ष्टमे ॥ ४ ॥ ८ दृष्टिरेवंस्मृताहोरिकज्ञैर्य्यथाशास्त्रदृक्षा १ गुरोःपूर्णदृष्टिस्त्रिको णे ९ ॥ ५ यथास्यात्तथासूर्यपुत्रस्यखेविक्रमे १० ॥ ३ च ॥ चतुर्थेखिलानैध ने ४ ॥ ८ भूसुतस्यविशालाःस्मृतादृष्टिरेवंग्रहज्ञैः २ केशवार्कः खैका ० १

त्रिपाद तीनचरण दृष्टि कहिहे और सातमें स्थानमें पूर्ण चारपाद दृष्टिकहिहे ॥ १ ॥ और बृहस्पति की नवम और पंचममें पूर्ण दृष्टि कहिहे और तैसेंहि तीसरे दशमें स्थानमें शनिकी पूर्ण दृष्टिहोती. हे और मगलकी चतुर्थ और अष्टममें पूर्ण दृष्टि होतीहे ॥ २ ॥ अब केशवोंसेंस्पष्टदृष्टि करतेहें च क्रमें एकराशिसें लेकर बाराराशियोंके नीचे शून्यसें लेकर्के दृष्टिफलके अंक धरेहें तिसमें इहरीतिहे योदेखने वाला ग्रहहे तिसकी द्रष्टा संज्ञाहे और जिसकों देखताहे तिसकी दृश्यसंज्ञाकहीहे तब रा श्यादि दृश्यग्रहमें राश्यादि द्रष्टाकों घटायदेवे योराश्यादि अंक शेषरहे तिसके नीचे दृष्टिकाफल लिखाहे तिसफलकों पृथक् स्थिनकरे आगेके कोष्टसाथ अंतरकर्के शेषअंशादिगुणदेवे फेरतिसमेंती स ३० का भाग देकर शोधन ऋण फलकों लब्धि होवे तिसकों पूर्व दृष्टिफलमें धनऋणकरे फेरति

सकों चारके अंकसें भागलेवे तवस्पष्टदृष्टि होजातीहै और बृहस्पति और शनि और मंगलकी दृष्टिमें-विशेष चक्रमें लिख्याहे जब गुरुकी दृष्टिसाधनेमे राश्यादि अंक आठ और चार ८ ॥ ४ आवे तब पूर्णदृष्टिहोतीहै और शनिकी दृष्टि साधनेमें राश्यादि अंक नव और दो ९ ॥ २ होवें तब पूर्णदृष्टिहोतीहै और भौमकी दृष्टि साधनेमें राश्यादि सात और तीन ७ ॥ ३ अंक होवें तबपूर्ण दृष्टि होतीहै-और सूर्यादि सातग्रहोंके राश्यादि छे ६ अंकके नीचे पूर्ण चारपाद ४ दृष्टि कहिहै ३ और ग्रथांतर में राहुकेतुकी उच्चमूलत्रिकोणसंज्ञाकहिहै राहुका उच्च वृषराशि और केतुका उच्च वृश्चिक और राहु का मूलत्रिकोण कुंभराशि और मेष मित्रराशिहै और केतुका सिंहराशि मूलत्रिकोण और तुलामि

त्रि ३ द्वि २ ख ० वेद ४ राम ३ यम २ भू १ खा० भ्रा० ख० मेकादिभे १।२।३।४।५।६।७।८।९।१० ११। १२। द्रष्टावर्जितदृश्यकस्यगुरुणाचेदष्टवेदेकृताः॥ मंदेनांकयमेऽसृजानगगुणैकाभादिजाःसंस्कृताः॥ भागन्नक्षयद्वाद्विखानललवेनाब्ध्युद्धृताद्दग्भवेत् ३ अथग्रंथांतरे राहुकेत्वोरुच्चमूलत्रिकोणसंज्ञोच्यते राहोर्वृषश्चकेतोस्तुवृश्चिकंतुंगसंज्ञकम् मूलत्रिकोणंकुंभं चक्रियामित्रभमुच्यते १ एतत्सप्तमराशिस्तुकेतोर्मूलत्रिकोणकमिति

दृष्टिसाधनचक्रमिदम्

अंकाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूचंबुशु	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०	०
भौ	०	१	४	२	०	४	४	२	१	०	०	०
जी	०	१	३	४	०	४	३	४	१	०	०	०
श	०	४	३	२	०	४	३	२	४	०	०	०

त्रक्षेत्रकहाहै राहुकेतुका उपयोग पद्धतिकारोंने आयुषाके विचारमें नाहि कहाहै और मेने और ग्रथोंके फलादेशवास्ते इहां इनके उच्चमूलत्रिकोणकीसंज्ञा कहिहै ॥ अत्रोदाहरण ॥ द्रष्टाचंद्रः ॥ ५ ॥ १२ ॥ २५ २८ ॥ दृश्योरविः २ ॥ १४ ॥ २० ॥ ५८ अयद्रष्टा हीनोजातः ९ ॥ १ ॥ ५५ ॥ २० नवराश्यधोकः १ अनयोरंतरंक्षयः अंतरेणभागाद्य १ ॥ ५५ ॥ ३० गुणित १ ॥ ५५ ॥ ३० त्रिंशद्भिर्भक्तलब्ध ० ॥ ३ ॥ ५१ ॥ अनेनभादिजोंकःसंस्कार्यः कथंपरक्षयेहीनः कार्यः परवृद्धौयुक्तःकार्यः अत्रपरहीनोस्तिअतःकारणाल्लब्धेन ० ॥ ३ ॥ ५१ भादिजोंकः १ हीनःऊनः ० ॥ ५६ ॥ ९ चतुर्भक्तोजातासूर्योपरिचंद्रदृष्टिः ०० ॥ १४ ॥ २ एवमन्येषाम्

अबकहतेहैं विनाग्रहोंके बलजाननेसें आयुषाका ज्ञान नांहिहोताहै तिस कारणसें छैप्रकारका ग्रहोंका बल अब कहतेहैं १ स्थान् १ दिक् २ काल ३ चेष्टा ४ निसर्ग ५ दृग् ६ इहे छै बल कहेहैं पांचप्रकारका स्थानबलहै तिसमें प्रथम उच्चबलसिद्धकर्तेहैं सूर्यसें लेकर शनिपर्यंत ग्रहोंकियां उच्चि-राशिया १ २ १० ६ ४ १२ ७ इहे चक्रमें स्पष्टलिखीहैं और इनके परमोच्चांश बी चक्रमें लिखेहैं श्रोर नीचराशियां श्रोर नीचांश कहेहैं २ अब ग्रहोंके मूलत्रिकोण राशियां कहतेहैं सूर्यसेंलेकर ५ २ १ ६ ९ ७ ११ इहे मूलत्रिकोण राशियां च क्रमेंस्पष्टकर्केंलिखियाहैं और इसमें विभागकर्के विशेष कहते हैं सूर्यसिंहके बीस अंश मूलत्रिको ण और दश अंश स्वक्षेत्री होताहैं और चंद्रमा वृषके तीनअंश उच्च उपरंत मूलत्रिकोण होताहै

। उच्चमूलत्रिकोणस्वभवनसंदेहेचक्रमेतत्

ग्र०	सू	चं	म	बु	बृ	शु	श	ग्रहाः
रा०	सिं	वृ	मे	कं	ध	तु	कु	राशयः
उ०	मे१०	३	म२८	१५	कं५	मी२७	तु२०	उभागः
मू०	२०	२७	१२	५	१०	१५	२०	मूलत्रि-
स्व०	१०	कंस्व	१८	१०	२०	१५	१०	स्वगृह-

स्वर्क्षे	०।३०।०
समभे	०।७।३०
मूलत्रि	०।४५।०
मित्रर्क्षे	०।१५।०
ऽधिमिभे	०।२२।३०
शत्रुभे	०।३।४५
ऽधिशत्रुभे	०।१।५२।३०

बलज्ञानंविनायस्मादायुर्ज्ञानंनजायते तस्माच्चषड्विधंवीर्यंग्रहाणा.मुच्यतेऽधुना १ अथोच्चादिभवनानिर्णयः अर्कादितुंगभवनान्यज १ गो २ मृगास्य १० क न्या ६ कुलीर ४ झष १२ यूकधराः ७ क्रमेण ॥ आशा १० कृशाणु ३ न रका २८ हरि १५ पुड्ड २७ विंश २० द्रागैस्तथास्मर ७ग्रहेषुभवंतिनी चाः २ मूलत्रिकोणभानिनान्मृगराज ५ गो २ ज १ कन्या ६ हयांग ९ ध ट ७ कुंभधरा ११ स्तदंशाः विंश २० द्व २७ मित्र १२ शर ५ दिक्तिथ यो १५ नखा २० श्चशेषाःनिजोच्चबलवतःपरतःस्वभांशाः ३ अथोच्चबलसप्त वर्गजबलसाधने केशवार्कः नीचोनोभगणात्च्युतःषडधिकश्चेत्षट्हृदोच्चबलं

और मंगल मेषके बारां अंश मूलत्रिकोण उपरंत स्वक्षेत्री होताहै और बुध कन्याके १५ अंशउच्च और तिसकेआगे ५ अंशमूलत्रिकोण और १० अंश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर बृहस्पति धनके दश १० अंश मूलत्रिकोण श्रोर २० अंश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर शुक्र तुलाके १५ अंश त्रिकोण श्रोर १५ अंश स्वक्षेत्री होताहै श्रोर शनि २० अंश कुंभके त्रिकोण श्रोर १० अंश स्वक्षेत्री होताहै ३ अब उच्चबल श्रोर सप्तवर्गजबल साधनमें केशवार्क कहताहै ग्रहकों अपने परमनीचक र्कै ऊनकरे श्रोर जब छैराशिसें अधिकहोवे तब बारांराशिमें घटावे श्रोर जब छैराशिसें ऊनहोवे तब यथास्थित सिद्धरहने देवे फेर तिसकों छे ६ सें भागलेवे जोलब्धहोवे सो राश्यादि उच्चबल हो ताहै इसमें भागलेनेका प्रकार कहते हैं जब ग्रह छै राशिके तुल्यहोवे तब रूप १ बल होताहै

ओर छेराशिसे हीन होवे तव रूपके स्थानमे प्रथम शून्य • लेवे सो राशिजाने ओर शेषकों स
ट ६० से गुणे ओर नीचेके अककों द्विगुणकर्के तिसमे मिलावे फेर तिसको छेसे भागलेके दू
सराफल शून्यके नीचे धरे इसिप्रकारकर्के विकला पर्यंत चारस्थानमे फल उच्चवलहोताहे अव सतव
र्गज वल कहतेहे लग्नादि सतवर्गोका स्वामी स्वक्षेत्रादि जिसे स्थानमे स्थित होवे तिसराफल च
क्रसे ग्रहणकरे फेर सतवर्गके फलको एकत्र करे तिसकानाम सप्तवर्गजवल कहाहे ४
ओर मित्रादिस्थानोंमेजानने केवास्ते चक्रमे सूर्यादि सातग्रहों के मित्रसम शत्रुग्रहलिखेहे ओर तात्का
लिक मित्रा ऽमित्रादि पांचप्रकारके ग्रहकहतेहे योग्रह जिसग्रहसे तीसरे ३ ग्यारमे ११ दूसरे २

स्वर्क्षेर्द्वसमभेष्टमस्त्रिचरणामूलत्रिकोणेवलं मित्रर्क्षेघ्रिरधीष्टभेत्रय इभांशावैरिभे ष्टांशकोर्द्दतांशोध्यरिभेग्रहाधिपवशात्खेटस्यसप्तैक्यजम् ४ अथमित्रामित्रादिग्रहामित्रसेनेनोक्ता. अर्कात्स्युःसुहृदःकुजेंदुगुरवोज्ञार्कारवीज्येंदवः शुक्रार्कौदिवसेश्वरारविधवो ज्ञार्कौ ज्ञशुक्रोक्रमात् अर्कात्स्युःक्रमतोरयः सितशनी कश्चिन्न सौम्यो विधुः शुक्रज्ञौ सितगूष्णगू शशिकुजार्काः स्यु· समा श्चापरे ५

॥ अथमित्रसमशत्रुचक्रम्							
सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रहाः
चंमबृ	सूबु	सूचबृ	सूशु	सूचमं	बुश	बुशु	मित्राणि
बु	मंबृशुश	शुश	मंबृश	श	मंबृ	बृ	समाः
शुश	०	बु	च	बुशु	सूचं	सूचमं	शत्रवः

अथतात्कालिकामित्राऽमित्रादयोग्रहाः पराक्रमायस्वसुखांत्यखस्थाः । ३ । ११ । २ । ४ । १२ । १० । तत्कालमित्राण्यरयोन्यभावे १ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । मित्रसुमित्रंचसमोहितोरिःसमस्तथैवरिपवोविचिंत्य· ॥ ६ ॥ अथोपचयादिसंज्ञाः पापग्रहपुंस्त्र्यादिग्रहसंज्ञामाह गृहाण्युपचयाख्यानित्र्यायारिदशमानिच ।३ । ११ । ६ । १० । लग्नांवुखास्तं ॥ १ । ४ । १० । ७ । केंद्राणित्रिकोणंनवं । ९ । ५ । पंचमं ॥ ७ ॥ पापाःशनिनभौमास्ते संयुक्तोज्ञोविधुःकृशः क्षीवौसोम्यशनीनार्यौशुक्रेंदूचापरेनराः ॥ ८ ॥ अत्रचंद्रस्यपापत्वाऽभाव.क्षीणचंद्रयोगेवुधस्यशुभंत्रमिदं अतःपद्धतौसर्वत्रदग्वलानयने चक्राद्दिहानोचतनुगेखले इत्यादि

चतुर्थ ४ वारमे १२ दशमे १० स्थानमे स्थितहोवे सोतात्कालिक मित्र होताहे ओर उनसे
लग्न । १ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । स्थानमे स्थित होवे सो तात्कालिक शत्रु होताहे ओर दोनों
स्थानमे सोमित्र होवे सो अधि मित्र जानना ओर दोनो स्थानमे शत्रु अधि शत्रु जानना ओर
मित्रशत्रुसमहोताहै ओर समभित्र मित्र होताहै ओर समशत्रुशत्रुहोताहे । ६ । ओर ३ । ११ । ६
। १० । स्थान की उपचय संज्ञा कहिहे ओर १ । ४ । ७ । १० । स्थानको केंद्रसज्ञाकहिहै ओर
। ९ । ५ । स्थानकोत्रिकोणसज्ञाकहिहै ॥ ७ ॥ ओर शनिसूर्यमगल येपापग्रहहे ओर उनके स-

युक्त बुध पापीहोताहे और क्षीण चंद्रमा पापी कहाहे और बुधशनी नपुंसक कहेहे और चंद्रशुक्र स्त्रीग्रह कहेहे और सूर्य मंगल बृहस्पति पुरुष ग्रहकहेहें ॥ ८ ॥ अथयुग्मायुग्म और केंद्रादिद्रेष्काण बलकहतेहे ॥ शुक्रचंद्रमा दोनों समराशिमें और समराशिमें नवांशमें पाद ० । १५ । बलदेतेहे और सूर्य मंगल बुध गुरु शनैश्चर इहेपांचग्रहविषम राशिमें वा विषमनवांशमें पाद । ० । १५ बल देतेहे ॥ इसमें श्रीपतिपद्धतिकेटीकाकारने अशोंमें मुख्यता कहिहे सोझूठहे जिससे और संपूर्ण जातककारोंका मत नहिहे उक्तंचलघुजातके चंद्रसितोस्त्रीक्षेत्रेपुरुष क्षेत्रोपगाः शेषा एवमन्येष्वपि ग्रंथेषुक्षेत्रंराशिरेवस्यात् अत्रापिराशिरेवग्राह्या और सूर्यादिग्रह क्रमसे केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानमेंरूप । १ । और । पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । स्थानमेंरूपार्ध । ० । ३० । और आपोक्लिम । ३।६ । ९ । १२ । स्थानमें पाद । ० । १५ । बलसंपूर्णग्रह देतेहे और स्त्रीग्रह चंद्र शुक्र तीसरे द्रेष्काणमें और पुरुषग्रह सूर्य मंगल गुरु प्रथम द्रेष्काणमें और नपुंसक बुध शनि मध्य द्रे

स्थलेचंद्रस्यशुभत्वेव एतेषांमतेरिष्टयोगादौयत्रचंद्रस्यपापत्वाभिधानंतत्रअल्पबल त्वबोध्यम् अथयुग्मायुग्मबलकेंद्रादिबलद्रेष्काणबलंचाह शुक्रेंदूसमभांशकेहिविष मेन्येदद्युरंघ्रिंबलंकेंद्राद्येषुचरूपकार्द्धचरणान्यच्छंतिखेटाःक्रमात् स्त्रीखेटौचरमे नराःप्रथमकेक्लीबौचमध्येतथा द्रेष्काणेवितरंतिपादमुदितंस्यात्स्थानवीर्य्यंत्विदम् ९ ॥ इतिपंचधास्थानबलम् ॥ अथदिग्बलम् मंदाल्लग्नमिनात्कुजाच्चहिबुकंशो ध्यंविधोर्भंगवान्माध्यज्ञाद्गुरुतोस्तमत्रग्सभात्पुष्टंत्यजेच्चक्रतः दिग्वीर्य्यंरसह त्वथोसमयजंरूपंसदास्याह्निदं त्रिंशद्भक्तनतोन्नतेशशिकुजार्कीणांपरेषांबलम् १० शुक्लेत्येतिथिहृतेप्यतिथयोवीर्य्यंसतांभूच्चतंपापानांद्विगुणंविधोरिदमथान्हर्क्ष शकेषुक्रमात् ॥सौम्यार्कार्किभुवांनिशः शशिसितारोणांचरूपंसदज्यस्यार्धांघ्रि

काणमें पाद । ० । १५ । बलदेतेहे । ९ । इहेपांचप्रकारकास्थान बलकहाहे ॥ १ ॥ अब एकप्रकारका दिग्बल कहतेहें ॥ शनैश्चरसे लग्नको शोधे और सूर्य मंगलसे चतुर्थभावको शोधे और चंद्रमा शुक्रसे दशमभावको शोधे और बुधगुरुसे सप्तमभावकोशोधे और शोधनकरियेसेपीछे राशि से अधिककी वरा ॥ १० ॥ में घटायकर शेषका छे ६ करकेभागलेवे और उच्चबलकी न्याई शेष को साठसे गुणके और द्विगुणत नीचेके अंकको मिलावे ओग्छेसेंभागलेवेतबदिग्बल स्पष्ट होताहे अब चारप्रकार का कालबल कहतेहें ॥ बुधका सदा दिनरात्रिमें रूप १ बल होताहे और नतको तीस ३० से भागेतब चंद्रमा मंगल शनिका बल होताहे और उन्नतको तीस ३० से भागेतो सूर्य गुरु शुक्रकारूपादिबलहोताहे भागलेनेकाप्रकारउच्चबलकीन्याईशेषाकोसाठगुणकरके नीचेके अंककोद्विगुण करकेमिलावे उदाहरणनत २४।५६ त्रिंशद्भक्तलब्धं ०।४९। ५२ शशिकुजार्कीणांबल ॥ उन्नत ५ ४ त्रिंशद्भक्त रविगुरुशुक्राणांबलम् १० और कालबलकेतीनभेदकहतेहें ॥ शुक्लपक्षमें गततिथियोंको साथ

यवग्रहण करे तिन कों पंद्रा १५ कर्केभागे लब्धरूपादिशुभग्रहोंका चंद्र बुध गुरु शुक्रकापक्षवलहो ताहै और तिसंवलकोंरूप १ सेंघटावेतव पापग्रहोंका सूर्य भौम शनिकापक्षवलहोताहै और बुधपापग्र हकर्केंयुक्तपापी और शुभग्र.कर्केयुक्त शुभहोताहै और कृष्ण पक्षमें शेषतिथियों सें पूर्वकीन्यांईपक्षवल सिद्धहोताहै ॥ और चंद्रमाका पक्षवलद्विगुणकरे चंद्रमाकाचेष्टावलवक्ष्यमाणपक्षवलकेतुल्यहोताहै इस कर्केंइहांद्विगुणकरणाकहाहै अवपक्षवलमें त्रैराशिककहतेहैं चंद्रमामें सूर्यकोंघटायकर्के अंशवनावे और अंशोंकों वारा १२ सेंभागे लब्धगततिथियां और शेषकों साठ ६० सेंगुणें वारा १२ सेंभागे लब्धघ टिका शेषंपष्टिगुणं द्वादशभक्तंलब्धं पलानि इति अवत्रिभागवलकहतेहैं दिनके प्रथम त्र्यंश मेंजन्मेतो बुधका रूप १ वल और दूसरे त्र्यंशमें सूर्यकारूप १ वल और तीसरे त्र्यंशमें शनिकारूप १ वलहो ता है इसिप्रकार रात्रीके प्रथमत्र्यंशमें चंद्रमाका दूसरेमें शुक्रकातीसरेमें मंगलका रूपवलहोताहै अरु गुरुका सर्वदाकालरूप १ वलहोताहै अरु वर्षपतिका पाद ० १५ अरु मासपतिकादोपाद ०।३०

चयाद्वलीकिलसमामासद्युहोरेश्वराः ॥ ११ ॥ अथवर्षेशमासेशयोरानयनम् ॥ ग्रहलाघवाहर्गणात् द्विष्ठोयंग्रहलाघवाह्निचयश्चक्राहतैःपट्शरैः पट्दस्त्रैश्च युतःसवाणतपनःसेषुश्चखांगाग्निभिः खाज्याशैर्विहृतःफलेगुणयमघ्नेचक्रानिघ्ना क्षखेपितेद्वित्रियुतेनगैर्विहृतकेस्तोर्कात्समामासपौ ॥ १२ ॥ अत्रकल्पितोदाह रणम् ॥ तत्रचक्रम् ॥ ग्रहलाघवद्युनिचयः ९६ द्विष्ठः ९६ एकत्रचक्राहतैःपट् शरैः३३६ युक्तः ४३२ अपरत्र चक्राहतैः पट्दस्त्रै १५६ युतः २५२ प्रथमः सवाणतपनैः १२५ युक्तः ५५७ द्वितीयःसेषुः २५७ प्रथमःखांगाग्नि३६०ह तफल १ द्वितीयःखाज्याशैः ३० हृत्फलं ८ प्रथमं १ गुणघ्नं ३ द्वितीयं ८ यमघ्नं १६ प्रथम ३ चक्रानिघ्नाक्षयुतं ३३ द्वितीयं१६ चक्रनिघ्नशून्ययुतं १६ प्रथमं३३ द्वियुतं ३५ द्वितीयं १६ त्रियुतं १९ उभयत्रसप्ततष्टेशेषं ० । ५ वर्षेशोर्कः मासेशःशुक्रः एवंयथेष्टाहर्गणेसाध्यौ

अरुदिनपतिकातीनपाद ०।४५ अरु होरा पतिकारूप १ वलहोताहै ११ इसमेंकल्पितउदाहरणकहते हैं ग्रहलाघवके अहर्गणकों ९६ दोस्थानमेंधरे ९६ एकस्थानमेंचक्र ६ कर्के गुणिततीनसौ छत्री ३३६ केअंककोंयुक्तकरे ४३२ अरु दूसरेस्थानमें चक्रकर्के गुणितछवी २६ केअंकमें १५६ युतकरे २५२ अरु प्रथमाककोएकसोपचीस १२५ सेंयुतकरे ५५७ अरु दूसरे कों पांचसें ५ युक्तकरे २५७ प्रथम कों तीनसौसाठ ३६० सेंभागलेकर्केफलग्रहणकरे १ अरु दूसरेकों तीस ३० सेंभागलेकरफल ८ ग्रह णकरे अरु प्रथमकों १ त्रिगुणकरे ३ अरु दूसरेकों ८ दोसें २ गुणे १६ प्रथम कों चक्र ६ कर्के गु णित पाच ३० कोंयुक्तकरे ३३ दूसरेकों १६ चक्रकर्केगुणितशून्यकों ० युत्तकरे १६ अरु प्रथमकों दोका २ अंकमिलावे ३५ अरु दूसरेमेंतीन १६ मिलावे १९ अरु दोनोंस्थानोंमें सात ७ कर्के तष्टत करेपीछेशेष ० ५ अत्रवर्षेशःसूर्यः ० मासेशःशुक्रः ५ इसीप्रकारकर्के यथेष्टाहर्गणमें वर्षमासपातिसिद्धकरे

अब होरेशकेवास्ते वारप्रवृत्तिकहतेहैं चरार्द्धका ओर देशांतरपलोका वियोग अथवा योग करे जैसें चरऋणहोवे ओर देशातरपल धनहोवे तववियोग अंतरकरणा ओर चरार्द्ध धनहोवे ओर देशातरपलवी धनहोवे तवयोगकरणा जवऋणफलरहे तव सूर्योदयसें उपरत उतने कालकर्के वारप्रवृत्ति होतीहे ओर जवधनफलरहे तवसूर्योदयके पूर्व उतनेकालकर्के वारप्रवृत्ति होतीहे ॥ १३ ओर वारप्रवृत्तिसें लेकर्के घडियोंको द्विगुणकरे ओर पाचसेभागलेवे तवकालहोराकेस्वामियोंकीलब्धिहोतीहे सो कालहोरेश्वरअपनेअपनेवारसेछठाछठाहोताहे जेसेंप्रथमसूर्यहोराहोवेतवक्रमसेंसूर्य १ शुक्र २ वुध ३ चन्द्र ४ शनि ५ गुरु ६ भोम ७ एह होरेश होतेहे अवइसमेंउदाहरणदेतेहैंपश्चिमेरेखातोयोजानानि ३६ स्वाङ्गुनानि २७ जातानिदेशातरपलानि धनानि २७ चरपलानि धनं ८४ धनधनयोर्योगः १११ सूर्योदयादधोधनेइत्युक्तत्वात् सूर्योदयादधःआभिः १ ५१ जातावारप्रवृत्तिः अथेष्टकालः १३ वारप्रवृत्तेर्धनघटीभिः १ ॥ ५१ युक्ताअथेतावारप्रवृत्तेःसकाशाद्गतघटिका: १४ ॥ ५१ द्विघ्नाः २९

अथहोरेशानयनं ॥ तत्रादौवारप्रवृत्तिः ॥ चरार्द्धदेशांतरयोर्वियोगयोगोत्थमानीयपलैश्चसम्यक् ॥ सूर्योदयादूर्ध्वमृणेधनेधोवारप्रवृत्तिंमुनयोवदन्ति १३वारप्रवृत्तेर्घटिकाद्विनिघ्नाःकालस्यहोरापतयःशराप्ताः दिनाधिपाद्यारविशुक्रसौम्यशशांकसौरेज्यकुजाःक्रमेण १४ ॥ अथायनवलंचेष्टावलंच ॥ तत्रादावयनवलम् ॥सदाक्रांतिभागैर्युताङ्गस्यसिद्धाः २४ शनींदोर्युतोनाक्रमाद्याम्यसौम्यैः विलोमंपरेषांगजांभाधि ४८ भक्ताभवेदायनंवीर्य्यमर्कस्यदृघ्नम् १५ इहायनवलार्थंप्रथमतोग्रहाणांक्रांतयःकर्तव्याः॥ तत्करणप्रकारश्चग्रहलाघवे॥ स्युःखंडानिखवार्द्धयोंवरकृताःशैलाग्नयोऽब्धयग्नयस्त्रिंशत्तत्त्वधृतीनवारिनिधयरतेःसायनांशाग्रहात् वाव्हंशाभ्रकु १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	खंडानी
४०	८०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४	क्रांति
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०	योगा

५० गताताःकालहोराः ५ शेष ४ ॥ ५२ वर्त्तमानहोरायाभुक्त यथादिनेशवारोभौम तदुक्तक्रमेण भौमरविशुक्रवुधचंद्राः ५ गतावर्त्तमानाशनेर्होरा तस्याःभुक्त ४ । ५० अवअयनवल ओर चेष्टावलकहतेहे ॥ प्रथमअयनवलकहतेहें ॥ वुधकीक्रांतियदियाम्यअथवासौम्यहोवेतिनमेंसिद्ध २४ अंशमिलावे ॥ ओर शनिचन्द्रमाके याम्यक्रांतिभागोंमें २४ अंशयुक्तकरे ओर सौम्यक्रांतिभागोंमें ऊनकरे ओर परेषां सूर्यमंगलगुरुशुक्रके सौम्यक्रांतिभागोंमे २४ युक्तकरे ओर याम्यक्रांतिभागोंमेंऊनकरे ओर संपूर्णोंको अठताली ४८ से भागलेवेलब्धरूपादि अयनवल होताहे ओर सूर्यके अयनवलको द्विगुणकरे जिसमें वक्ष्यमाण चेष्टावल सूर्यका अयनवलके तुल्यहोताहे १५ अव क्रांत्यानयनेकाप्रकार ग्रहलाघवसें कहतेहे ग्रहकोंसायनकर्केतिसके भुजाशवनावे ओर तिनका दशमभागलेवे योलब्धाक आवे तिनकेतुल्याकोंका योग चक्रसें लेकर युदाकरे ओर शेषकोंगतखंडके अगलेसें गुणदेवे ओर तिसको दशसे भागलेकर खंडयोगमें मिलावे ओर फेर निमकोंदशसें १०

भागलेवे योलब्धआवे सो तिस ग्रहके क्रांतिभाग होतेहे सो ग्रहसायनक्रिया मेषादि छैराशी में उत्तर और तुलादि छैराशियोंमें दक्षिणक्रांतिवाला कहाहै अवमुख्यचेष्टाबल और नैसर्गिक बलकहतेहै प्रथम मध्यग्रहका और स्पष्टग्रहका योगकरे फेर तिसकाअर्धकरे और तिसकर्के नि सीके शीघ्रोच्चकों हीनकरे तब भौमादि पंचताराग्रहोंके चेष्टाकेंद्र होतेहें अवशीघ्रोद्दकह तेहें भौम गुरु शनिकामध्यमसूर्यशीघ्रोच्चहोताहें और बुध शुक्र के अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकें द्रमें मध्यमसूर्यकों मिलानेसें शीघ्रोच्चहोतेहें और केंद्र छे ६ राशिसें अधिकहोवे तब बारा १२ राशि में घटायकरधरे फेर तिसकों छेका भागदेकर पूर्वोक्त उच्चबलकीन्याई शेष कों साठ ६० गुणित कर्के और द्विगुणितनीचेके अंककों मिलावे तवरूपादिचेष्टाबल सिद्धहोताहै अवनैसर्गिकबलकहते है रूप १ कों सात ७ सें भागें तब शनिका और दो २ कों सातसे भागें तो भौमका और तीन

भागसंख्यकयुतिःशेषैष्यघाताद्दशाप्ताढ्या दिग्विहतालवादिरपमस्तद्दिक्स्वगोला द्भवेत् १६ अथमुख्यंचेष्टाबलंनैसर्गिकबलंचाह मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलंचेष्टाख्यकें द्रंकुजात्स्याच्चेतद्भगणाश्युतंपडधिकंपट्हृच्चचेष्टाबलं स्यादेकोत्तररूपमद्रिविहृतं नैसर्गिकंस्याद्बलंमन्दारज्ञसुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनांक्रमात् १७ युद्धेवा णवियोगहृत्खचरयोर्वीर्यैक्ययोरंतरंस्वंसौम्यस्थखगेक्षयंचयमदिक्संस्थस्य कुर्याद्बलम् सदृष्ट्यंघ्रिगुग्रदृष्टिचरणोनंखेटवीर्यंभवेत्भावानांबलमीशजंचनृ चतुष्पादाख्यकीटांबुजाः १८ जायांब्वाद्यखभोनिताःखलुततोदिग्वीर्यवत्तद्युतं

३ कों सातसें भागें तो बुधका और चार ४ कों सातसें भागेंतो गुरुका और पांच ५ कों सातसें भागेंतो शुक्रका और छे६कों सातसें भागेंतो चद्रमाका और सात ७ कों सातसें भागेंतो सूर्यका रूपादि निसर्गबलहोताहे १७ और कदाचित् जन्मसमयमें ग्रहयुद्धहोवे तब तिनोंग्रहोंके बलका अ तरकर्के और तिनोंके कलात्मक शरबनावे और वाणोंके अंतरसें बलके अंतरकों भागे योलब्धआवे तिसफलकों उत्तरदिशाके ग्रहमें धन और दक्षिणदिशाके ग्रहमें ऋणकरे यहे संस्कार चेष्टाबलका भे दहै और दृग्बल कहतेहें जिसग्रहमें योयोशुभदृष्टिहै तिसका चतुर्थांश धन दृग्बल होताहे और पापीग्रहोंकी दृष्टिका चतुर्थांश ऋणदृग्बलहोताहै और धनऋणदृग्बलोंका अंतरस्पष्ट दृग्बल होताहै अब तन्वादिभावोंकाबलकहतेहे॥ भावोंके स्वामीयोग्रहहै तिनोंका योयोबलहै सोसोभावोंकाबल कहाहै

अव तन्वादिभावोंका दिग्बल कहनेहैं योनरराशियां मिथुन कन्या तुल कुंभ राशिके यो भावहें तिन कों सप्तमभावकर्के रहितकरे और यो चतुष्पदराशिमेष वृष धनुकाउत्तरभाग सिंह मकरकापूर्वभाग तिनकों चतुर्थभावकर्के रहितकरे और जोकीटराशियांकर्कट वृश्चिकहै तिनकों लग्नकर्के रहितकरे और यो जलचरराशिहे मकरकापश्चिमार्ध और मीनातिनकों दशमभावकर्केरहित करे औरतिसके अनंतर दिग्वीर्यकीन्यांई वलसाधनकरे पूर्ववत् ॥ और भावोंके दृग्वल कहनेहे भावोंमें योदृष्टियांहैतिन में शुभग्रहदृष्टियोंका चतुर्थांश युक्तकर्के और पापग्रहोंका हीनकरे और फेर वुधगुरुकीदृष्टिकों युक्त करदेवेतव भावोंका स्पष्टदृग्वलहोताहै अव रश्मीष्टकष्टसाधनके वास्ते सूर्यचंद्रमाकेचेष्टाकेंद्रवलकहते है सूर्यकर्के रहित यो चंद्रमा है सो चद्रमाका चेष्टाकेंद्र होताहे और अयनांशकर्के युक्त और तीन राशियोंकर्के सहित यो सूर्यहे सो सूर्यका चेष्टाकेंद्र होताहे फेर केंद्रोंसें पूर्वकीन्यांई छे राशिसें अ धिकोंकों वारा १२ में घटाय छे ६ सें भाग लेकर चेष्टावलकी रीतिसें वलवनावे किसवास्ते रश्मि

सदृष्यंघ्रियुगुग्रहदृष्टिचरणोनंज्ञेज्यदृग्युक्पुनः अथरश्मीष्टकष्टसाधनार्थमर्कचंद्रयोश्चेष्टाकेंद्रवेलचाह व्यर्केन्दुस्त्रिभयुक्तसायनरविश्चेष्टाख्यकेंद्रतयोर्गोकष्टविधौवलंकुरुततःप्राग्वन्नवीर्यायते १९ अथरश्मिसाधनम् येचेष्टोच्चवलेरसैर्विनिहतेसैकेनिजारश्मयश्चेष्टातुंगवलाहतेपदमिहष्टंस्याद्वलोनैकयोः घातान्मूलमिदंहिकष्टमथतद्रूपंदशायाःफलंवीर्यंदृग्पृथगिष्टकष्टगुणितंद्वेचेष्टकष्टाव्हये २० ॥ अथसप्तवर्गजशुभाशुभवलमाह ॥ स्वेच्चेरूपंत्रिकोणेचरणविरहितंस्वर्क्षगेदंत्रयोष्टांशाश्चाधीष्टर्क्षइष्टर्क्षयुजिचचरणःस्यात्समर्क्षेष्टमांशः भूपांशोवैरिगेहेध्यरिभयुजिरदांशश्चनीचेखमीशादिदृंगेहेतद्वलैकमसदथदलं पद्सुका

और इष्टकष्टकी सिद्धिके वास्ते १९ अवरश्मिसाधनकहतेहे ग्रहोंके यो चेष्टावल और उच्चवल है तिनकों छे ६ सें गुणे और एक तिसमें मिलावे तव ग्रहोंकिया अपनी-अपनी रश्मियां होतीहे चेष्टावलसें चेष्टारश्मियां और उच्चवलसें उच्चरश्मियां होतीहे अव इष्टकष्ट सिद्धकरतेहे चेष्टावल और उच्चवलकों आपसमें गुणे तिसका मूल इष्टहोताहे और चेष्टावलकों उच्चवलकों एकरूप १ सें घटायके घातकरणेमें जो मूलहे सो कष्टहोताहे और मूललेनेका प्रकार लीलावतीमें स्पष्ट कहाहैऔरइष्टकष्टकेअनुसारग्रहदशाकेफलकोंकहेहैऔरग्रहोंकेवलऔरदृष्टियांइष्टकष्ट कर्केगुणितइष्टा ख्कष्टरूपहोताहैं २० अवसप्तवर्गसेंशुभाशुभफलकहतेहेलग्नोदयमसवर्गमेंयोग्रहउच्चमेंस्थितहोवेतिसका रूप१वलग्रहणकरे और मूलत्रिकोणमें पादहीन ० ४५ और स्वक्षेत्रमें अर्ध ० ३० औरअधिमित्रमेंतीन अष्टमांश ० २२ ३० और मित्रक्षेत्रमें पाद ० १५औरसमगृहमें अष्टमांश ० ७।३० और शत्रुकेगृह में षोडशांश ० ३ ४ और अधिशत्रुकेगृहमें द्वात्रिंशांश ० १ ५२ ३० और नीचमेंशून्य ० और उच्ची,

चग्रहमें और मित्रादिग्रहोंका विचार न करे इहेग्रहोंका शुभवलकहाहै इसकर्के रहित एकरूप १ गृहमें शुभवलहोताहै जैसें लग्नका स्वामी जिसउच्चादिस्थानमें स्थितहोवे तिसस्थानका वलग्रहमें ग्रहण करणा इहेवल वर्गेशकेवशसें होताहै शुभकहाहै और तिसशुभफलकर्के रहितरूप १ गृहमें अशुभवल होताहै ॥ और होरादिछे ६ वर्गमें गृहाधिपकर्केयो शुभवलप्राप्त भयाहै तिसका अर्ध स्थापनकरे जेसेंहो रादि स्वामि उच्चादिगृहमें होवें तिनके उक्तशुभवलकों रूप १ मेंघटाय कर्के अशुभस्थापनकरे फेर दोनों शुभाशुभवर्गोंका ऐक्य करे इसप्रकार सप्तवर्ग जवलकायोगकरणाकहाहै और इसमें कईक आ. चार्यकहतेहै क्रियमाणवलके वर्गाधिपजैसें स्थानमें स्थितहोवे तैसा फलग्रहणक णा सो असत्है पदा र्थजोहै जैसेंइसग्रथमें कहाहै तैसेंहीहै ॥ अवग्रहोंकीशुभाशुभपंक्ति सिद्धकरणी कहतेहै प्रथमनव ९ रेखा ऊर्धदेवे और दश १० रेखाटेढोयाखैंचे तवसप्तवर्गी चक्रवनताहै तिसके प्रथमजोसातकोष्टहै शुभै क्यके और अशुभऐक्यके तिन दोनोंकों चार ४ भागदेकर लब्धकों शुभाशुभपक्ति के प्रथम कोष्टमें गृह स्थानमें स्थापनकरे और होरादिहोरा द्रेष्काण सप्तांश नवांश द्वादशांश त्रिंशांश केस्थानोंमें तिसशुभाशु

वैंतदैक्ये २१ अत्रगृहस्वामीयस्मिन्स्वोच्चादिस्थानेस्तितत्रोक्तंशुभंगृहेग्राह्यं एतदीशाद्वर्गेशाद्गृहेइष्टज्ञेयं ॥ अथदलंहोरादिषट्सुदलमिति ॥ होरादिवर्गस्वामीयस्मिन्स्वोच्चादिभेस्तितदुक्तंशुभंग्राह्यं ॥ तद्रूपाच्छोध्यमशुभंस्यात् ॥ तदैक्येकार्यं ॥ एवंसप्तवर्गोत्पन्नानांशुभाशुभानामैक्यकार्यमिति ॥ अथशुभाशुभपंक्तिमाह ॥ पंक्त्योः सप्तसुकोष्टयोःप्रथमयोरिष्टासदैक्यैकतापृथ्येस्थाप्येभद लादिषट्सुचतदर्द्धवर्गपानांपृथक् ॥ कृत्योक्तयासदसद्युतीनिजनिजतान्निघ्न इष्टाशुभैवर्गेट्तनूस्थखगोजसोःसदसतोर्घातात्पदघ्नेस्फुटे ॥ २२ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशाविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडे पड्वलेष्टकष्टसाधनाध्यायःसप्तमः ॥ ७ ॥

भफलके अर्धकों दोनोंपक्तियोमें छेस्थान मेंहि स्थापनकरे इसमें उदाहरण दरवातेहै जेसेंसूर्यका शुभैक्य १ । २ । ४ चतुर्भक्त । ० । १५ । ४२ । गृहकोष्टेस्थाप्यं और अस्यार्ध ० । ७ । ५१ । होरादिछेकोष्टो मे शुभपक्तिमें स्थापनकरे अयसेही सूर्यका अशुभैक्यं । २ । ५७ । ५२ । चतुर्भक्तं । ० । ४४ । १८ । अशुभपंक्तिके गृहकोष्टमें स्थापनकरे और तिसका अर्ध । ० । २२ । ९ । होरादिछेकोष्टमें स्थापनकरे अयसेहिंचद्रादिग्रहोकास्थापनकरे ॥ अवशुभाशुभपंकीकोंस्पष्टकरतेहै ॥ वर्गेपानामिति ॥ गृहहोरादि सप्तवर्गस्वामियोंका भिन्नभिन्न उक्त प्रकार कर्के अपने २ शुभाशुभकायोग तिस कर्के अप ने अपने वर्गमें स्थित शुभाशुभवलकों गुरूपदिष्टरीतिसेंगुणे योग्रहजिसराशिमें स्थितहोवे तिसके स्वा मीका योवर्गस्थ शुभाशुभवलहैतिसकर्केगुणे और एकस्थानमें भिन्नस्थापनकरे. और वर्गेश और वर्गमेंस्थि तग्रहतिनके शुभाशुभवलकेघातका मूल शुभाशुभपक्ति सिद्धहोतीहै तिसमे वर्गेश और वर्गमें स्थितग्रह केशुभवलके घातकामूलशुभपक्ति और अशुभवलकेघातकामूल अशुभपंक्तिहोतीहै ॥ २२ ॥ इतिजात कखंडेपड्वलाध्यायः ॥ ७ ॥

अत्र ग्रहों केषड्वलका फल और उच्चराशियोंका फल कहतेहैं विनाग्रहवलके जातकफलकानिर्णय-नहिं होताहै तिसकर्के यो पूर्वाचार्योंने छैप्रकारका ग्रहवलकहाहै तिसकाफलमैं कहताहा ॥ १ ॥यो-ग्रह उच्चवलमें स्थित होताहै सो परमलक्ष्मी प्राप्त कर्ताहै और जोग्रह मूलत्रिकोणमें वली होताहै सो सेनापति कर्ताहै और योग्रह स्वक्षेत्रमें वली होताहै तिसकर्के राजाकी प्रसन्नता और श्रेष्ठलक्ष्मीको-मनुष्य प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ और योग्रहराशिवलमें स्थित होताहै सो कलामें चतुर कर्ताहै और परलोकके भय वाला और सुंदररूप वाला कर्ताहै और यो ग्रह नीचमें और शत्रुकेक्षेत्रमें वली होताहै सो पराजयको और अत्यंत दीनभावको प्राप्त कर्ताहै ॥ ३ ॥ और यो ग्रह दिग्वलकर्के युक्त होताहै

अथग्रहाणांषड्बलोच्चराशिफलाध्यायः सर्वजातकफलस्यनिर्णयोनोभवेद्ग्रहबलेन विनाहिषड्विधग्रहबलस्यनिर्णयंतेनवच्मियदुदीरतमाद्यैः ॥ १ ॥ स्यात्तुंगवीर्य्येप रमाचलक्ष्मीवलाधिपत्यंचत्रिकोणवीर्य्ये स्वर्क्षादिवीर्य्ये नृपतेः प्रसादंश्रेष्ठांच लक्ष्मींलभतेमनुष्यः ॥ २ ॥ कलासुदक्षः परलोकभीरुर्वरांगनाराशिवलेसुरूपः स्याद्राशिवीर्य्येचपराजयः स्यान्नीचारिगेदैन्यमतीवखेटे ॥ ३ ॥ विभूषणंस्वांव रवाहनाद्यंककुव्बलिष्ठस्यदिशिप्रदः स्यात् दिवारात्रिवलेदद्यात्खेचरोभूगजा न्वितां लक्ष्मींसौर्य्यं सुखंपुंसांवैरिणांचपरिक्षयम् ॥ ४ ॥ क्वचिद्राज्यंक्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यंक्वचिद्व्ययं ददातिविहगाश्चित्रंचेष्टावीर्य्यसमन्वितः ॥ ५ ॥ स्त्रीसुवर्ण महीवस्त्रगजरत्नादिसंपदाम् शत्रुनाशंसुखंकीर्तिंदद्यात्पक्षवलान्वितः६ वक्रि णश्चमहावीर्य्याः शुभाराज्यप्रदाग्रहाः पापाव्यसनदाः पुंसांकुर्वंतिचवृथाटनम् ७

सो अपनी दिशासें भूषण वस्त्र वाहनोका लाभकर्ताहै और दिनरात्रिवलमें यो ग्रहस्थित होताहै सो पृथ्वी और हाथी और लक्ष्मी और ऐश्वर्य और सुख कर्ताहै और शत्रुयोंका नाश कर्ताहै ॥ ४ ॥ और योग्रहचेष्टा वली होताहै सो किसिस्थानमें राज्य और किसिस्थानमें मान और किसिस्थानमें धनप्राप्त-और किसिस्थानमें धनका खर्च करदेताहै ॥ ५ ॥ और जोग्रह पक्षवलकर्के युक्त होताहै सो स्त्री और सुवर्ण और पृथ्वी और वस्त्र और हाथी और रत्नादिसंपदा और शत्रुनाश और सुख और यशको देताहै ॥ ६ ॥ और शुभग्रह वक्री होकर्के वली होवें सो राज्यको देतेहैं और पापीग्रह वक्रीहोकर्के-वली होवें तव मनुष्योंको दुर्व्यसन और वृथाभ्रमण देतेहैं और योग्रह शत्रुको युद्धमें जीतताहै सो ग्रह

सुख और जयकों देताहै और योग्रहदग्बली और आकाशमें प्रकाशकों कररहाहै सो ग्रह राज्यकों और आरोग्यताकों देताहै ॥ ८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पापीग्रहों सें शुभग्रह वली होवें सो आचार और सत्य और सुख और पवित्रताकर्के युक्त और श्रेष्ठरूपवाले और तेजस्वी और कृत्यके जाननेवाले और ब्राह्मण देवताके भक्त और श्रेष्ठवस्त्र पुष्प मणियोंके भूषणों कर्के प्रीतिकों प्राप्तहोतेहैं ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पापीग्रह वली होतेहै सो लोभी और खोटे कर्मोंमें रत और अपनेकार्यकों करणेवाले और पापकर्के युक्त और लडाई करणेवाले और अपनें संबंधियों कर्के हीन और क्रूर शठ और प्रायेधनवाले और कृतघ्न और मलीन होताहै ॥ १० ॥ अब रश्मियोंके फल कहतेहैं ताजकशास्त्रके जानने वाले जो मणित्थहै तिनके शास्त्रमें रश्मिफल मु

योग्रहोनिर्जितारातिः सकरोतिसुखंजयं प्रस्फुरन्मंडलोराज्यमारोग्यंदग्बलान्वितः ॥ ८ ॥ आचारसत्यसुखशौचरताःसुरूपास्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः सद्वस्त्रमाल्यमणिभूषणसंप्रियाश्चसौम्यग्रहैर्बलयुतैःपुरुषाभवंति ९ ॥ लुब्धाःकुकर्मनिरतानिजकार्यनिष्ठाःपापान्विताःसुकलहाःस्वजनैर्वियुक्ताः क्रूराःशठाः परधनामलिनाः कृतघ्नाः पापग्रहैर्बलयुतैः पुरुषाभवंति १० अथरश्मिफलम् रश्मिप्रधानमेतद्यस्माच्छास्त्रंवदंतिमाणित्थाः ॥ तस्मात्प्रयत्नतोहंकथयामियथामतंतेषाम् ॥ ११ ॥ स्वोच्चस्थेदशसूर्येनवचंद्रेपंचभूमिपुत्रेच ॥ पंचेंदुजेतथेज्येसप्ताष्टौभार्गवेशनेःपंच ॥ १२ ॥ एवंहिमहाशास्त्रेमणित्थमयवादरायणप्रोक्ते ॥ सप्तप्रत्येकस्थानिर्दिष्टारश्मयोग्रहेंद्राणाम् ॥ १३ ॥ सर्वंप्रमाणमेतेमुनिवचनात्किंतुसप्तसंख्यैव ॥ वहुमतवादोस्माकंनीचगतःस्याद्विगतरश्मिः ॥ १४ ॥ अभिमुखराशिर्नीचाद्भ्रष्टःस्वोच्चात्पराङ्मुखोज्ञेयः अंतरगतेनुपातोयथातथासंप्रवक्ष्यामि ॥ १५॥

ख्य कहाहै तिसकारणसें तिनके शास्त्रसें यत्नसें निकालकर्के जैसें तिनका मतहै तैसें मे कहताहा ॥ ११ ॥ अपने उच्चमें सूर्यकिय दश रश्मि और चंद्रमाकिया नव ॥ ९ ॥ और मंगलकिया पाच ५ और बुधकियां वी पाच ॥ ५ ॥ और तैसेंहि बृहस्पति किया सात ॥ ७ और शुक्रकियाआठ ॥ ८ ॥ और शनिकियापांच ॥ ५ ॥ १२ ॥ इसप्रकार कर्के वडेशास्रो में मणित्थ और मयासुर और वादरायण कहतेहैं ॥ और प्रत्येकग्रहाकिर्यासात ॥ ७ ॥ रश्मियाहोतीहै ॥ १३ ॥ और संपूर्ण मुनियों के मतमेंबीसातहिकहियाहै और जोग्रहनीचमें स्थितहोताहै सोरश्मियोंकर्केहीनहोताहै ॥ १४ ॥ जो ग्रह नीचसें और उच्चसें भ्रष्ट होताहै अर्थात् नीचमें और उच्चमें नाहीं है और अंतरगतराशियों में स्थित है तिसकियां रश्मिया स्पष्ट करणेमें जो अनुपात त्रैराशिक है सो मैं कहता हा ॥ १५ ॥

अव रश्मियास्पष्टकरते हैं ॥ राश्यादि स्पष्टग्रहकों अपने नीच कर्के हीनकरे शेष छैराशिसें अधि करहे तव चक्रमें वारा १२ राशिमें शुद्धकरे फेर तिसकों अपनीगरश्मियोंसेगुणे पूर्व कहियाजो मध्यम राश्मियातिनसें गुणें उोर छै ६ का भाग लेवे यो लब्धहोवे सो ग्रहकिया स्पष्टरश्मिया होतीहै ॥ १६ उोर सो ग्रह मित्रके द्वादशांशमें अथ वा अपने द्वादशांशमें अथवा अपने उच्चमें होवे तव रश्मियों कों द्विगुण करे उोर स्वक्षेत्रमें वी द्विगुणकरे ॥ १७ ॥ उोर शत्रुके द्वादशांशमें उोर अपने नीचमें ग्र हहोवे तव रश्मियोंकों षोडशांश कर्के ॥ १६ ॥ रहित करे उोर शनि उोर शुक्रके विना यो ग्रह अ स्त होवे सो रश्मिहीन होताहे तिसग्रहकिया शून्य ० राश्मिधरे ॥ १८ ॥ उोर वक्रके मध्यमें द्विगुण उोर वक्रके त्यागमें अष्टमांशहीन राश्मिया करे इस प्रकाररश्मियोंका विधान पूर्वाचार्योंनें दिखाया है ॥ १९ जिसके जन्मकालमें एकसेंलेकर्के पाच पर्यंत रश्मिया होवें सो दुःखी कुलकर्के हीन उोर दूसरे कों तर्ककरणेवाला उोर दरिद्री नीचकर्ममें रत होताहे ॥ २० ॥ उोर जिनके जन्ममें पाचसेंले

नीचविहीनश्चक्रात्पतित.पङ्भवनतोयदाभ्यधिकः आत्मीयरश्मिगुणित.पङ्क्तो रश्मयस्तस्मात् ॥ १६ ॥ मित्रद्वादशभागेस्वेवास्वोच्चेथवातस्य ॥ द्विगुणाः स्युर्दीधितयःस्वराशिगेतद्वत्येवम् ॥ १७ ॥ वैरिद्वादशभागेनीचेचभवं निषोडशांशोनाः अस्तंगतोविरश्मि शनिसितवर्ज्योग्रहोज्ञेयः ॥ १८ ॥ वक्रांतस्थेद्विगुणावक्रत्यागेष्टभागहीनाश्च एवंरश्मिविधानंपूर्वाचार्यैं समुद्दि ष्टम् ॥ १९ ॥ एकादिपंचयावद्रश्मिभिरतिदुःखिता.कुलविहीनाः ॥ पर तर्ककादरिद्रानीचरता.सभवतिनराः ॥ २० ॥ परतोदशकंयावत्सूर्यादीनांवि देशगमनरता. ॥ जायंतेत्रमनुष्या.सौभाग्यपरिच्युतामलिना. ॥ २१ ऊर्द्ध्वंपंचदशातेर्यावतोवहुजना:सुजनाः धर्मभिरता.ससुखा.कुलस्यतुल्या.प्र जायंते २२ आविंशतर्भवेयु कुलाधिकाधनयुताजना स्याताः कीर्तिकराश्च मनुष्यायथाक्रमंस्वजनसंपूज्याः २३ पूज्याःसुभगा क्रतिनोधीरा स्यु शरक्र तियावत् परतोभवतिमनुजा ससाधितसकलकरणीया. २४ ॥

कर दशपर्यंत रश्मिया होवें सो विदेशवासकरणेमे रत होतेहे उोर सौभाग्यसें रहित उोर मलिन होतेहैं ॥ २१ श्रोर जिसके जन्मसमयमे दश १० सें अधिक श्रोर पचदश १५ यावत् रश्मिया ग्रहोंकि या होतीहे सो प्राप्तिकर्के युक्त श्रोर वहुत मवधियोंवाले श्रोर धर्ममेरत श्रोर श्रेष्टसुखवाले श्रो र अपने कुलके तुल्य जन्मतेहै २२ श्रोर जिसके जन्मसमयमे पद्रा १५ सें लेकर वीसपर्य त रश्मिया होतीहै सो मनुष्य अपने कुलसें अधिक श्रोर धनकर्के युक्त श्रोर प्रसिद्ध होतेहै श्रोर यशके करणे वाले श्रोर सवंधियोंकर्के मानेहुये होतेहै २३ श्रोर जिसके जन्मसमयमे वीस सें २० अधिक श्रोर पचीसके भीतर रश्मिया होवें सो पूज्य श्रोर श्रेष्ट भाग्यों वाले श्रोर यज्ञकर णेवाले श्रो' पंडित होतेहे श्रोर पचीस २५ के उपरंत श्रोर वीसपर्यंत जिसके जन्मसमयमे रश्मि या होवें सो मनुष्य संपूर्ण कार्यसिद्धकरणेवाले होतेहै २४

श्रोर राजाश्रित श्रोर राजासें सुखकोंप्राप्तहोतेहे ॥ श्रोर राजाके मन्त्री श्रोर सपूर्णां कर्के-पूज्यहोतेहै ॥ २५ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें एकत्री ॥ ३१ ॥ रश्मिया होवें सो श्रेष्ट-प्रसिद्ध श्रोर राजयोंके इष्ट होतेहे श्रोर जिसके जन्मसमयमें वत्री ३२ रश्मियां हो-वे सो पाचसो ५०० ग्रामकास्वामी होताहै ॥ २६ ॥ श्रोर जिसके जन्ममें तेत्री ३३ रश्मियाहोवें सो एकहजार १००० ग्रामका स्वामी होताहे श्रोर जिसके जन्मसमयमें चौत्री ३४ रश्मिया होवें सो तीनहजार ३००० ग्रामकास्वामी होताहै २७ श्रोर जिसके जन्मकालमें पेत्री ३५ रश्मिया होवें सो मडलेश होताहै श्रोर वडेखजाने वाला श्रोर वडे पराक्रम वाला होता है श्रोर वडेयश श्रोर सोभाग्यकेकरण वाला लोकोंकोंहोताहे २८ श्रोर जिसके जन्ममें छित्री

अनउत्तरणचंडान्नृपाश्रितान्नृपतिलब्धसौख्याश्च त्रिंशद्यावत्साचिवा.पूज्याश्चवे जंतूनाम् २५एकत्रिंशत्सस्थै प्रवरा ख्यातामहीभुजामिष्टाः द्वात्रिंशद्भि पुरुषाः पचशतग्रामपतय स्यु· २६ ग्रामसहस्राधिपतित्रिशत्त्र्यधिक.करोतिरश्मीनां त्रिसहस्रग्रामाणांपुरुषसूतौचतुस्त्रिंशत् २७परतोमडलभाजोवहुकोशसमान्वि तामहासत्त्वाः प्रख्यातकीर्तियशमाभवतिसुभगाश्चलोकानाम् २८त्रिंशत्पड्भिः सहितारश्मीनांयस्यजन्मसमयेस्यात् सार्धभुनक्तिलक्षग्रामाणांसपुमान्नियतम् २९ त्रिशत्सप्तकसहितारश्मीनांसभवेभवेद्येषाम् लक्षात्रितयप्रभुत्वंग्रामाणां जायतेतेषाम् ३० त्रिशद्वसुभिःसहितागावोयेषांभवतिपुरुषाणाम् मुनिस मितलक्षाणांग्रामाणांतेधिपाश्रिया· ३१ त्रिशत्सनवागावोजन्मनियेषांग्रहो त्थिताःपुंसां सतोषितसकलजनाभवतिपृथ्वीश्वरा पुरुषाः ३२ दशजलधि गुणायारश्मिसख्यानराणांदिशतिपृथुलभूमे.पालकत्वचतेषां हतरिपुवनिता भिर्गीयतेतांवकीर्त्ति करुणारुदितशब्दैरुध्यताक्रांतसारम् ३३

३६ रश्मिया होवें सो मनुष्य डेढलक्ष १५०००० ग्रामका स्वामी होताहे २९ श्रोर जिसके जन्मसमयमें सतत्री ३७ रश्मिया होवे सो तीनलक्ष ३००००० ग्रामोंका पति होताहै ३० श्रोर जिसके जन्मसमयमे अठत्री ३८ रश्मिया होवें सो सातलक्ष ७०००० ग्रामोंका स्वामी होताहै ३१ श्रोर जिनोंके जन्मसमयम उनताली ३९ रश्मिया ग्रहोंकिया होवें सो संपूणजनोंकों प्रसन्न करणे वाले पृथ्वीके राजाहोतेहें ३२ श्रोर जिनमनुष्योंके जन्मसमयमें चाली ४० रश्मिया ग्रहोंकिया होवें तिनकों सारीपृथ्वीका राज्य प्राप्तहोताहै श्रोर हतकिये यो शत्रु तिनाकियां स्त्रीयों नेंगायन कीयायश जिनका श्रोर शत्रुओं किया स्त्रीयोंके रोणेकर्के भरेगएहे पर्वतों केविवर तिससें ॥ ३८ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें द्रूकताली ॥ ४१ ॥ रश्मियांहोवे सो दो समुद्र पर्यंत पृथ्वीका राजकर्ताहै श्रोर जिसके जन्ममें चिताली ॥ ४२ ॥ रश्मियां होवें सो तीन समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा होताहै ॥ ३४ ॥ श्रोर तैसेंहि त्रिताली ॥ ४३ ॥ रश्मियोंका फल कहाहै श्रोर जिसके जन्मसमयमें चुताली ॥ ४४ ॥ रश्मियां होवें सो सारी पृथ्वीका राजाहोताहै श्रोर सौम्यमूर्ति श्रोर देवता श्रोर ब्राह्मणोंकिभक्ति वाला होताहे श्रोर वडी श्रायुषा वाला श्रोर पराक्रमी होताहै ॥ ३५ ॥ श्रोर चुरताली-रश्मियोंसें अधिक अधिक एक जिसके जन्मकालमें होवें सो शत्रुवोंसे रहित दीर्घायु राजा होताहै श्रोर संपूर्ण करके पूज्य इंद्रके तुल्य प्रतापी होताहै ॥ ३६ ॥ श्रोर पंजताली ॥ ४५॥ सें अधिक अठताली पर्यंत जिसके जन्ममें रश्मियां होवें तिसकों मृत्युका गृह जानना अथवा कदाचित

शशिजलनिधिसंख्यैराश्मिभिःसूयतेयोद्विजलधिरसनायाःपार्थिवःस्यात्सभूःमेत्रिजलधिरसनायाःपक्षवेदाख्यसंख्येस्त्रिजलधिरसनायारामवेदैस्तथैव ३४ वेदाब्धितुल्यैश्चमयूखजालैर्जातानरेन्द्राःखलुसर्वभूमेः ॥ सौम्याःसुरब्राह्मणभक्तिशीलादीर्घायुषःसत्वयुताभवंति ३५ परतःपरतःकिरणैर्द्दीर्घायुपार्थिवः पालकानि रुपसर्गाःसर्वनमस्याःसुभगामहेंद्रतुल्यप्रतापाश्च ३६ चत्वारिंशद्युक्तःपंचादिभिरत्वयस्यसूतौस्यात् ॥ ज्ञेयंतस्यारिष्टंसर्वक्षितिपालकत्वंवा ३७ भुवनभरसहिष्णोःसर्वतःक्षीणशत्रोस्त्रिदशपतिमहिम्नःसर्वलोकैस्तुनम्यः विदधतिविहगानांरश्मयोतीवदीप्तास्तुरंगकृतिसमानाश्चक्रवर्तित्वमेव ३८ अभिमुखकरप्रवाहःफलप्रयच्छंतिपुष्टतरमत्र तद्विपरीतंपुंसांपराङ्मुखस्थग्रहेंद्राणाम् ३९ जन्मसमयेग्रहेभ्योरश्मीनांसंक्षयोभवति॥ वृद्धौवृद्धिर्न्दृणांपरमोच्चगताःक्रमेणैव ४०

सीत तव सारी पृथ्वीका राज्यकर्ताहै॥ ३७ ॥ श्रोर जिसके जन्ममें उनुंजा ॥ ४६ ॥ रश्मियां होवें सो अवतार होताहै भुवनके भारकों सहारणे वाला श्रोर शत्रुवोंसे रहित श्रोर इंद्रकीन्याई संपूर्ण लोकों करके पूजित चक्रवर्ती होताहै ॥ ३८ ॥ श्रोर यो ग्रह सन्मुखदेखनेमें श्रावे तिसके वो रश्मियां पुष्टफलकों देताहे श्रोर यो ग्रह पराङ्मुख जन्मकों प्राप्त होवे तिसकोंभी रश्मियां विपरीत उलटा फल खोटा करताहै ॥ ३९ ॥ श्रोर जन्मसमयमें ग्रहों किया रश्मियोंका क्षय होवे देखनेमें नहिं होवें तब क्षयहोताहै श्रोर रश्मियोंकी वृद्धिहोवे तब जिनों मनुष्यों की वृद्धिहोवे श्रोर परम उच्चमें स्थित ग्रह इसिक्रमसें वृद्धिकर्ताहै ॥ ४० ॥

इतिरश्मिफलम् ॥ अब ग्रहोंकी अवस्थाका फल कहतेहैं सारावलीसें दीप्त १ स्वस्थ २ मुदित ३ शांत ४ शक्त ५ प्रपीडित ६ दीन ७ विकल ८ खल ९ इहे नवप्रकारकी ग्रहअवस्थाकहियाहे १ यो ग्रह अपने उच्चमें स्थितहोताहै सो दीप्त कहाहे और अपने क्षेत्रमें स्वस्थ और मित्रके क्षेत्रमें मुदित और शुभग्रहके वर्गमें शांत और प्रकट रश्मियों वाला शक्त और सूर्य करके लुप्त विकल और पापग्रहों करके युक्त पीडित होताहे औरनीचराशिमें स्थित दीन होताहे अब अवस्थोंका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें दीप्तावस्थामें ग्रह होताहै सो अपनी दशामें पुरुषकों प्रतापी और प्रतापके अग्निमें शत्रुओंके समूहकों दग्धकर्ताहे और लक्ष्मीकरके युक्त और हाथियोंके

॥ इतिग्रहाणांरश्मिफलानि ॥ अथदीप्तादिफलान्युच्यंते ॥ सारावल्यां ॥ दीप्तःस्वस्थोमुदितःशांतःशक्तःप्रपीडितोदीनः ॥ विकलःखलश्चकथितोनवप्रकारोग्रहोहरिणा १ स्वोच्चेभवतिचदीप्तःस्वस्थःस्वगृहेसुहृद्गृहेमुदितः ॥ शांतःशुभवर्गस्थःशक्तःस्फुटकिरणजालश्च २ विकलोरविलुप्तकरोग्रहाभिभूतःप्रपीडितश्चापि ॥ पापगणस्थश्चखलोनीचोदीनःसमाख्यातः ३ स्वोच्चेविचरतिपुरुषःप्रतापमहदाग्निदग्धरिपुनिचयः ॥ लक्ष्म्यालिंगितदेहोगजमदसंसिक्तभूपृष्ठः ॥ ४ ॥ स्वस्थःकरोतिजन्मनिसुखेननरंसरत्नपरिवारम् नृपतेर्दंडपतित्वंगृहधान्यकुटुंबपरिवृद्धिम् ॥ ५ ॥ उदयास्तश्चेज्जातःसूर्य्याद्दक्षिणवामगोग्रहःकश्चित् ॥ पापंप्रथयतिफलंदक्षिणगश्चोत्तरेशुभदः ॥ ६ ॥ मुदितोविलसतिमुदितोविलासिनीकनकरत्नपरिपूर्णः ॥ विजितसकलारिपक्षःसमस्तसुखभाजनःपुरुषः ॥ ७ ॥ शांतेप्रशांतचेताःसुखधनभागीमहीपतेःसचिवः विद्वान्परोपकारीधर्मपरोजायतेसुभगः ॥ ८ ॥

मदसें सो पृथ्वीकों सिंचन कर्ताहे ४ और स्वस्थावस्थामेंस्थित ग्रह मनुष्यकों सुखकर्के और रत्नोंकर्के और परिवारकर्के युक्तकर्ताहे और राजासें दंडके अधिकारकों प्राप्तकर्ताहे और गृह और धान्य और कुटुंबकीवृद्धिकों देताहे ५ और जिसके जन्मसमयमें कोईग्रहउदयअथवा अस्त होवे सो सूर्यके दक्षिणमें पापफल कर्ताहे और उत्तरमें शुभफलदेताहै ६ और मुदितावस्थामें ग्रह वेश्याका और स्वर्णका और रत्नोंका सुखकर्ताहे और संपूर्णशत्रुओं कों जीतकर्के संपूर्णसुखकों भोगताहे ७ और शांतावस्थामें ग्रह शांतचित्त और सुख धन कर्के युक्त राजाका मंत्री कर्ताहे और विद्यावान् और परोपकार करणेवाला और धर्ममें तत्पर और श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै ८

श्रोर सुप्तावस्थामें ग्रह स्त्री श्रोर गंधमाल्यपुष्प मालाकर्केविलासकों प्राप्त कर्ताहे श्रोर वडे यशवाला श्रोर संपूर्णोका प्यारा होताहे ९ श्रोर पीडितावस्थामें स्थितयो ग्रहहे सो दुःखोंकर्के उोर व्याधियोंकर्केपी डित कर्ताहे श्रोर पुरुष देशसें देशांतरकों विचरताहे उोरशक्तिकर्के श्रोर प्रसिद्धताकर्केरहित होताहे १० श्रोर जिसके जन्ममें दीनावस्थामें स्थित ग्रह होवे सोराजावी श्रपने वहुत साधनोंवाला शत्रुयोंकर्के सेनाके नाशकों प्राप्त होताहे उोर परमदीनताकर्के तप्ताहे ११ श्रोर जिसके जन्मसमयमें विकलावस्थाकों ग्रह प्राप्त होताहे सो श्रपनी दशामें स्थानसेंभ्रष्ट उोर मलीन श्रोर परदेशमें गमनकरणे वाला श्रोर धनके नाशकों प्राप्त उोर शत्रुयोंके भयकर्के चकताचित्तवाला होताहे १२ उोर जिसके जन्मसमयमें खलअ

स्त्रीस्त्रग्गंधमाल्यैर्विलसतिपुरुषःसदाविततकीर्तिः ॥ दयितःसर्वजनस्यचराज्ञा स्येभवतिविख्यातः ॥ ९ ॥ दुःखैर्व्याधिभिरारिभिःप्रपीडितेपीडितःपुरुषः ॥ देशाद्देशंविचरतिशक्त्यारहितोगतख्यातिः १० बहुसाधनोपिराजाप्रध्वस्तव लप्रपीडितोरिपुणा ॥ नाशमुपयातिविजितेदीनेदैन्यंपरंप्राप्तः ॥११ ॥ स्वस्थान परिभ्रष्टोमलिनश्चासौप्रयातिपरदेशं ॥ विध्वस्तधनोविकलोरिपुभयसंचाकित चित्तश्च ॥ १२ ॥ स्त्रीहरणदुःखतप्तःसमस्तधनवान्पीडितमनस्कः ॥ नजहा तिशोकभारंकथमपिखलसंज्ञिकेपुरुषः १३ इतिग्रहाणांदीप्तादिश्रवस्थाफलानि श्रथग्रहाणामंतश्चर्यालक्षणम् ॥ श्रात्मारविःशीतकरश्चेतःसत्वंधराजःशशि जश्चवाणी ॥ ज्ञानंसुखंचेंद्रगुरुर्मदश्चशुक्रःशनिःकालनरस्यदुःखम् १ श्रत्रचफ लघटनाविचारोयथा॥श्रात्मादयोगगनगैर्वलिभिर्वलवत्तराः ॥ दुर्वलैर्दुर्वलास्ते तुविपरीतंशनेःस्मृतम् २

वस्थामें ग्रह स्थितहोवे सो श्रपनीदशामें स्त्रीहरणके दुःखकर्के तप्त उोर संपूर्ण धनकर्केयुक्तभी पीडित मन होताहे उोर कदाचित् शोककेभारकोंनहिं त्यागसक्ताहे १३ इतिदीप्तादिश्रवस्थाफलानि श्रवग्रहोंकी श्रंतश्चर्याका लक्षण कहतेहें कालनरयोहे मनुष्य जिसका श्रात्मा सूर्यकहाहे श्रोर चंद्र मा मनकहाहे श्रोर सत्वपराक्रम मंगल कहाहे श्रोर वाणी बुधकहाहे श्रोर ज्ञानसुख वृहस्पति कहा है श्रोर मदवीर्य शुक्रकहाहे श्रोर दुःख शनैश्चर कहाहे १ श्रव इसमें फलका विचार श्रयसें कहा हे श्रात्मासेंलेकर्के जोग्रह कहेहे सो वलीहोवें तव श्रात्मादि संपूर्ण वलवान् होतेहें श्रोर निर्वलहो वे तो दुर्वलहोवेहें श्रोर शनिका विपरीत फल कहाहे निर्वलहोना शुभ होताहे २

अब ग्रहोंकोबाह्यचर्याका लक्षणकहतेहैं सूर्यचन्द्रमा राजा हैं और बुधकुमार नववर्षकेवालककोन्याईहै और मंगल सेनापतिहै और शुक्रबृहस्पति वजीरहै और शनैश्वर चाकरहै इहे ग्रह जन्मसमयमें बलवान् होवें तब अपने स्वरूपकों तिसके देहमें प्रकट कर्तेहै इहां पूर्वोक्त प्रकार कर्के बलवत्वताजाननी ७ इतिश्रीजातकखंडेग्रहाणांषड्बलादि फलनिरूपणाध्यायः अष्टमः॥ ८ ॥ अबरिष्टाध्यायकहतेहै आयुर्दाकेज्ञानविनासंपूर्णजन्मपत्रकाफलनिष्फलहै तिसकारणसें आयुर्दाके जानने वास्ते प्रथम रिष्टाध्यायकहता हों॥ १ ॥ और जातकपारिजातमें विशेषकहनाहै कलियुगमें योनिजन्मायोमनुष्य तिनका आयु बा

अथग्रहाणांवाह्यचर्यालक्षणम् ॥ राजारविः शशधरश्चबुधःकुमारःसेनापतिःक्षितिसुतःसचिवौसितेज्यौ ॥ भृत्यस्तथाचरविजःसबलानराणांकुर्वंतिजन्मसमयेनिजमेवरूपम् ३ अत्रचोक्तप्रकारेणबलवत्त्वंज्ञेयम् ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवन्धे जातकखंडेग्रहाणांषड्बलादिरश्मिफलनिरूपणाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥ अथारिष्टाध्यायः ॥ आयुर्ज्ञानाभावेसर्वविफलंप्रकीर्त्तितंयस्मात् ॥ तस्मात्तद्ज्ञानार्थमरिष्टाध्यायंप्रवक्ष्यामि १ जातकपारिजातेविशेषः आद्वादशाब्दांतरयोनिजन्मनामायुःकलौनिश्चयितुंनशक्यते ॥ मात्राचपित्राकृतपापकर्मणावालग्रहैर्नाशमुपैतिवालकः २ आद्येचतुष्केजननीकृताघैर्मध्येतुपित्रार्जितपापसंघैः वालस्तदंत्यासुचतुःशरत्सुस्वकीयदोषैःसमुपैतिनाशम् ३ सारावल्याम् त्रिविधमिह शास्त्रकारानियतमनियतंचयोगजमाहुः ॥ योगसमुत्थतावद्वक्ष्येपश्चात्तुपरिशेषं ॥ ४ ॥

वर्षके अंदर नहिंजानाजाताहै इनमें हेतुकहतेहै माता और पिताके पापकर्मोंकर्के और पूतनादि वालग्रहोंके पीडकर्के बीमृत्युकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ प्रथमके चारवर्षमें माताके पापोंसें और चारसें आगे आठवर्ष पर्यंत पिताके पापोंसे और आठमें लेकर बारवर्ष पर्यंत पूतनादि वालग्रहोंके रिउ सें वालक अपनेदोषसें नाशकों प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ और सारावलीमें कहतेहै तीनप्रकारका आयु शास्त्रकारकहतेहै एक नियतएक अनियत और एक योगज इनमें सें प्रथम रिष्टज्ञानके वास्ते योगज कहनेहै और पीछेसें नियत और अनियकहैं गे ॥ ४ ॥

और कहतेहै जिसके जन्मकालमें बृहस्पति मेषवृश्चिकराशिमें अष्टमस्थानमे स्थितहोवे और सूर्य चंद्रमामगलशनिकीदृष्टिकर्केयुक्तहोवेऔरशुक्रकीदृष्टिकर्केरहितहोवेतवतीनवर्षकर्केमारदेताहै ५ औरजिसकेजन्ममें वक्रीहोकर शनि मेष वृश्चिकराशिमें स्थितहोवे अष्टम वाछठे वाकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० मेंस्थितहोवे और बलवान्मंगल कर्केदेख्याहोवे तव दोवर्षमें मारताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्रमा कर्के युक्त शनि होवे तव सोवालकवर्ष पर्यंतजीताहै अयसें ब्रह्मशर्मादि आचार्यकहतेहै ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अष्टम और छठेस्थानमें मगल सूर्य शनि एकत्र मिलकेस्थितहोवें सो बालक यम कर्के रक्षा कराहु वावी एक महीने कर्के मरताहै ॥ ८ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंएकपापीग्रहलग्नसेअष्टमवाछेठस्थानमेंस्थितपापग्रहकर्के देख्याहोवेसोनिश्चयकर्केजिसनेंअमृतपानबीकीयाहोवेएकवर्षकेअंदर तिसकोंमारदेताहै ९ औरजिसकेजन्ममेंमासिंहकर्कराशिकाशुक्रवार

बृहस्पतिर्भौमगृहेष्टमस्थःसूर्येंदुभौमार्कजदृष्टियुक्तः अब्दैस्त्रिभिर्भार्गवदृष्टिहीनोलोकांतरंप्रापयतिप्रजातम् ॥ ५ ॥ वक्रीशनिर्भौमगृहेप्रपन्नाच्छिद्रेथपष्ठेथचतुष्टयेवा कुजेनसंप्राप्तबलेनदृष्टोवर्षद्वयंजवियतिप्रजातम् ॥ ६ ॥ भास्करहिमकरसहितःशनैश्चरोमृत्युदःप्रसवकाले वर्षजीवतिजातस्त्वित्याहुर्ब्रह्मशर्माद्याः ॥ ७ ॥ भौमदिवाकरसौराःछिद्रेजातस्ययस्यशत्रुगृहे म्रियतेवश्यंसनरोयमकृतरक्षोपिमासेन ॥ ८ एकःपापोष्टमगःशत्रुगृहेपापवीक्षितोलग्नात् मारयतिनरंप्रजातंसुधारसोयेनपीतोपि ॥ ९ ॥ रविशशिभवनेशुक्रोद्वादशरिपुगोऽशुभैःसर्वैः दृष्टःकरोतिपड्भिर्वर्षैर्मरणंकिमत्रचित्रंहि ॥ १० ॥ कर्कटधामनिसौम्यःषष्ठाष्टमसंस्थितोविलग्नर्क्षात् चंद्रेणदृष्टमूर्तिर्वर्षचतुष्केणमारयति ॥ ११ ॥ तीव्रफलराजयोगायवनाद्यैर्येविनिर्मितास्तेषु जायंतेखलकुलजारिष्टंतेपुप्रसूतानाम् ॥ १२ केतुर्यस्मिन्नृक्षेभ्युदितःतस्मिन्प्रसूयतेयोहि मासद्वयेनमरणंनिर्देश्यतस्यजातस्य ॥ १३ ॥ गगनस्थोदिवसकरःपापैर्बहुभिर्नरीक्षितःसद्यः मारयतिभौमधामनिशानिभेचनसंशयोभवति १४ ॥

मेंछठे स्थानमें स्थितहोवे औरपापग्रहोकर्के देख्याहोवे तव छे वर्षकर्के मृत्युकर्त्ताहै इसमे कोई आश्चर्यनहिंहे ॥ १० ॥ और कहतेहै कर्क राशिमे बुध जन्मलग्नसें छठे और अष्टम स्थानमें स्थितहोवे और चंद्रमाकर्के देख्याहोवे तव चारवर्षमें मारताहे ॥ ११ ॥ और कहतेहै बडे तीव्रफल करनेवाले जोराज योग यवनादि आचार्योंने कहेहे तिनराजयोगोंमें नीचकुलमें यो जन्मतेहै तिनकों रिष्टहोताहे ॥ १२ ॥ और कहतेहैं जिसनक्षत्रमें धूम्रकेतुउदयहोवे तिसनक्षत्रमें यो जन्माहे तिसकों निश्चयकर्के दोमहीने कर्केमृत्युकहे १३ और जिसके जन्मकालमें मेष वृश्चिक मकरकुंभ राशिकासूर्य दशमस्थानमें स्थितहोवे और बहुत पाप ग्रहों कर्के देख्या होवे सो तात्काल मृत्युकों प्राप्तकर्त्ताहै ॥ १४ ॥

और कहतेहैं जन्मलग्नमें निगडसर्प पाश विहंग इहेकूर द्रेष्काणमें सें कोई द्रेष्काणहोवे और क्रूर करके युक्त और स्वामी दृष्टिसें रहितहोवे तव सातवर्षमें मृत्यु होताहै ॥ १५ ॥ मीनकर्कटराशि के अंत्यके द्रेष्काण और वृश्चिकके आद और मध्यके इहेचारसर्पनिगडसज्ञाहै और वृषका आद और मकरके आद और अंत्यमें और तुलाके मध्य और अंत्यका और सिंह कुंभ के आदके इहेसातद्रेष्काण पाशधर पक्षिसंज्ञाहै ॥ १६ ॥ और कहते है जिसके जन्मसमयमे केंद्र१।४।७। १०॥में राहु पापग्रहों करके देख्याहोवे तिसको दशवर्षकरके और कईक आचार्यसोला वर्षमें मृत्युकहतेहै १६ और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें पापीग्रह सूर्य मंगल शनि राहु त्रिकोण ९ ५ और केंद्र १।४ ७ १० में स्थितहोवें और शुभग्रह चंद्रबुधगुरुशुक्र छठे अष्टम बारमें ६ ८ १२ स्थानमें होवें और सूर्यके उदयमें जन्मे सो तात्कालप्राणोंकों त्यागताहै १७ और कर्क वृष मेष राशिके विना और राशिमें क्षीणचंद्रमालग्नमें स्थितहोवे और क्रूरग्रहोंकरके देख्याहोवे तव तात्काल मृत्युकर्त्ताहै १८ और

लग्नेयेद्रेष्काणानिगडाहिविहंगपाशधरसंज्ञाः मरणायसप्तवर्षैःक्रूरयुतानस्वपतिदृष्टाः॥ १५ राहुश्चतुष्टयस्थोमरणायनिरीक्षितोभवतिपापैः वर्षैर्वदंतिदशभिःषोडशभिःकेचिदाचार्याः ॥ १६ ॥ पापास्त्रिकोणकेंद्रेसौम्याःषष्ठाष्टमव्ययगताश्च सूर्योदयेप्रसूतःसद्यःप्राणांस्त्यजतिजंतुः॥ १७॥ क्षीणशरीरश्चंद्रोलग्नस्थःक्रूरवीक्षितःकुरुते स्वर्गगमनहिपुंसांकुलीरगोजान्परित्यज्य ॥ १८॥ वर्षान्मारयतिशशीषष्ठाष्टमसंस्थितोविलग्नक्षात् सद्यःक्रूरैर्दृष्टःसौम्यैरष्टाष्टकेनैव १९ अशुभशुभैःसंदृष्टोवर्षचतुष्केणनिर्दिशेदन्त्यम् अनुपातःकर्त्तव्यः प्रोक्तादूनग्रहैर्दृष्टे २० सौम्यःषष्ठाष्टमगाःक्रूरैर्वक्रोपसंगतैर्दृष्टा मासेनमरणदास्तेयदिनशुभैस्तत्रसंदृष्टाः २१लग्नात्द्वादशधनगैःक्रूरैर्म्रियतेचरधरिपुसंस्थैः शुभसंपर्कमयातैर्मासेषष्ठेऽष्टमेवापि २२ रंध्राधिपजन्मपतीषष्ठाष्टमरिष्फगौप्रसवकाले अस्तमितौमरणकरौराशिप्रमितैर्वदेद्वर्षैः २३

छठे और अष्टममें स्थित चंद्रमा वर्ष करके मृत्युकर्त्ताहै और क्रूरग्रहोंकरके देख्याहुवा तात्काल मारताहै और शुभग्रहोंकरके देख्या होवे तव आठवर्षकरके मृत्युकों प्राप्तकर्त्ताहै १९ और शुभाशुभग्रहोंकरके देख्याहोवे तव चारवर्षमें मारताहै और शुभाशुभदृष्टि अधिक ऊनहोवे तव अनुपात करके त्रैराशिककरके मरणकहे २० और शुभग्रह छठे और अष्टममें स्थित होवे और वक्रीहोयकरके पापग्रहोंनें देखेहोवे और शुभग्रहोंकरके नाहिं देखेहोवें तव महीनेकरके मारतेहैं २१ और जिसके जन्मलग्नसें दूसरे बारमें स्थानमें पापग्रह स्थितहोवे अथवा छठे अष्टमें स्थानमें क्रूरग्रह स्थित होवें और शुभग्रहोंकरके युक्त नाहिं होवें तव छठे वा आठमें महीनेंमें मृत्यु कर्त्तेहै २२ और जिसके जन्मकालमें अष्टमेश और लग्नेश दोनों मिलके छठे आठमें बारमें स्थानमें स्थितहोवें और अस्तगत होवें तव जिसराशिमें स्थितहोवें तिसके [illegible]

श्रोरकहतेहेजन्मलग्नकास्वामीसप्तममेंस्थितपापग्रहोंकर्केजीत्याहोवेतवएकमहीनेकर्केमृत्युकर्ताहेश्रोरति सकीन्यांई जन्मराशिका स्वामि अष्टममें स्थितशुभदृष्टिकररहितमहीनेमें मृत्युकर्ताहे २४ श्रोरकहतेहे चंद्रमा मिथुन कन्याराशिका सूर्यमंगलकर्के युक्त श्रोर शुभग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे तववालककों नवम वर्षमें मृत्यु कर्ताहे इसमें संशय नहिंहे श्रोर कहतेहे जिसके जन्मकालमें सूर्य शनि शुक्र तीनों पापग्रहोंकर्के युक्त होवें श्रोर यदवृहस्पतिकर्केवी देखे होवें तववी नवमवर्षमें मृत्यु कर्तेहे २५ श्रोर कहतेहे लग्नकास्वामी अष्टमस्थानमें स्थितहोवे श्रोर वलवान्संपूर्णपापियों कर्के देख्या होवे तव वालककों निःसंदेह चतुर्थमासमें मृत्यु कर्ताहे २६ श्रोर कहतेहे जन्मलग्नकास्वामी सूर्य होवे श्रोर शनिकर्के युक्त अष्टममें स्थितहोवे श्रोर शुक्रकर्के देख्याहोवे तव अपनीराशिके समानवर्षोंमें मृत्युक

होराधिपतिर्द्यूनेपापजितोमरणमेवविदधाति मासेनजन्मराशेस्तद्वच्छिद्रेनशुभदृ ष्टा २४ चंद्रःकुजरवियुक्तःस्वसुतस्थानेनचापिशुभदृष्टः मरणंशिशोःप्रयच्छ तिवर्षेनवमेनसंदेहः भानुभानुतनयोशनसःस्युश्चेत्प्रसूतिसमयेखलयुक्ताःयद्यपी ज्यगुरुणापरिदृष्टारिष्टदास्तनुभृतांनवमेब्दे २५ होरेश्वरस्तुमृत्यौपापैःसकलैश्च दृश्यतेवलिभिः मासिचतुर्थेमरणंजातस्यकरोतिनसंदेहः २६ जन्माधिपतिःसूर्यः स्वपुत्रसहितेष्टमेभवतिराशौ वर्षैराशिप्रतिमैर्मरणायासितेनसंदृष्टः २७ द्यूनचतु रस्रसंस्थेपापद्वयमध्यगेशशिनिजातःविलयंप्रयातिनियतंदेवैरपिरक्षितोवालः२८ व्ययाष्टसप्तोदयगेशशांकेपापेनयुक्तेशुभदृष्टिहीने केंद्रेपुसौम्यग्रहवर्जितेपुप्रा णैर्वियोगंव्रजतिप्रजातः २९ चक्रस्यपूर्वभागेपापाःसौम्यास्तथोत्तरेचैव वृ श्चिकलग्नेजातोगतायुषोवज्रमुष्टियोगेस्मिन् ३० क्षीणेशशिनिविलग्नेपापैः केंद्रेपुमृत्युसंस्थैर्वा भवतिविपत्तिरवश्यंयवनाधिपतेर्मतंचैतत् ३१ राश्यत

र्ताहे २७ श्रोर कहतेहे सातमें ७ चतुरस्र ४ ८ स्थानमें दो पापी ग्रहोंके मध्यचंद्रमा स्थित होवे तव देवत्योंकर्के रक्षाकिया निश्चयकर्के चंद्रमाकीराशिके तुल्य वर्षोंमें मृत्युकों प्राप्तहोताहे ॥ २८ ॥ श्रोर जिसके जन्मलग्नसें वारमे १२ आठमें ८ सातमें ७ लग्नमें १ पापग्रहों कर्के युक्तचंद्रमाहोवे श्रोर शुभग्रहों कीदृष्टि कर्के रहितहोवे श्रोर केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० । शुभग्रहों कर्के रहित होवें तव शीघ्रहिप्राणों कोंत्यागताहे ॥ २९ ॥ श्रोर जिसके जन्मकालमें लग्नसें सप्तमभाव पर्यंत पापग्रह स्थितहोवें श्रोर सप्तमसें लग्नपर्यंत शुभग्रह स्थितहोवें श्रोर वृश्चिक लग्नमें जन्में तव इहेवज्र मुष्टि योगकहाहे इसमे जन्माहुवा आयुषाकर्के रहित होताहे ॥ ३० ॥ श्रोर क्षीणचंद्रमालग्नमें होवे श्रोर पापग्रह केंद्र स्थानोंमें अथवा अष्टममेंहोवें तव यवनाचार्यके मतसें शीघ्र मरताहे ३१

और संध्याकालमें चंद्रमाकी होरामें जन्म और राशिके अंत्यमें पापग्रहहोवें और चंद्रमाकर्के युक्त किसीक केंद्रस्थानमें स्थितहोवे तब शीघ्र मृत्युहोताहै ३२ और पापग्रहोंके मध्यमें चंद्रमा लग्न सप्तम अष्टम स्थानमें स्थितहोवे और बलवान् शुभग्रहोंकर्के नहिं देख्याहोवे तब निश्चयकर्के शीघ्रमृत्युको प्राप्तहोताहै ३३ और जिसके जन्मलग्नसें छठे आठमें स्थानमें क्रूरग्रहस्थितहोवें और पापग्रहों कर्के देखे होवे तिसको माताके सहित मृत्युको प्राप्तकर्तेहै और शुभग्रहों कर्के देखे होवें तबव्याधि पीडाकरतेहै इहेसत्याचार्यकेमतमेंकहाहै ३४ और कहतेहै ग्रहणसमयमें क्रूरयुक्तचंद्रमा लग्नमे स्थितहोवे और अष्टमस्थानमें मंगल होवे तब माताकर्के युक्त मृत्युको प्राप्तहोताहै और ग्रहणकाल मे क्रूरयुक्त सूर्यलग्नमें होवे तब माताकर्के युक्तशस्त्र कर्के मृत्यु होताहै ३५ और कहतेहै क्षीण चंद्रमालग्नमें स्थितहोवे और केंद्रमें और अष्टममें पापग्रहस्थितहोवें और शुभग्रहों कर्के नहिं देखे हो

गतैःपापैःसंध्यायांतुहिनरश्मिहोरायाम् मृत्युःप्रत्येकस्थैःकेंद्रेषुशशांकपापैश्च ३२ पापद्वयमध्यगतेहोरासप्ताष्टसंस्थितेचंद्रे सौम्यःसबलैरनिरीक्षितेयदातदाजातोध्रुवंम्रियते ३३ द्यूनाष्टमगैःपापैःक्रूरग्रहवीक्षितैःसहजनन्याम्रियते शुभसंदृष्टै.सत्यस्यमाताद्वंद्वेव्याधिम् ३४ ग्रहणोपगतेचंद्रेसक्रूरेलग्नगेकुजेष्टमगे मात्रासार्धंम्रियतेचंद्रवदर्केसशस्त्रेण ३५ क्षीणशशिनिविलग्नेकंटकनिधनाश्रितैस्तथापापैः सौम्यादृष्टैर्मृत्युःसद्योजातस्यनिर्देश्यः ३६ द्यूनगतेर्केलग्नयमेकुजेवाविपर्ययेवापि अन्यतरयुतेथवेंदौशुभैरदृष्टेऽचिरान्मृत्युः ॥ ३७ ॥ होरानिधनास्तगतैःपापैःक्षीणेंव्ययस्थितेचंद्रो जातस्यभवतिमरणंसद्यःकेंद्रेषु चेन्नशुभाः ३८ लग्नांत्यनवमनैधनसयुक्ताश्चंद्रसौरीसूर्यारा: जातस्यवधकृतः स्युःसद्योगुरुणानचेद्दृष्टाः ९३ लग्नेचंद्रेर्केवापापावलिनस्त्रिकोणनिधनेषु सौम्यैरयुक्तदृष्टाःसद्योमरणायकीर्त्तितोयवनैः ४०

वें तबतात्कालमृत्युकोंप्राप्त होताहै ३६ और कहतेहै सातमें ७ सूर्यस्थितहोवे और लग्नमें शनि वामंगलहोवे अथवालग्नमें सूर्यसातमे शनिवामंगलहोवे अथवा दनों स्थानोंसे और स्थानमे चंद्रमा शुभग्रहोंकर्के नहिं देख्याहोवे तब थोडे कालकर्के मृत्युकर्त्ताहै ३७ और कहतेहै लग्नमें द्वादश नवम अष्टम स्थानमें चंद्रमा सूर्य शनि मंगल इहे चारग्रहस्थित होवें और बृहस्पतिकर्के नदेखेहोवें तब तात्काल मृत्युकर्त्तेहै ३८ और लग्न अष्टम सप्तमस्थानमे पापीग्रहहोवे और क्षीण चंद्रमावारमें स्थितहोवे और केंद्रमें शुभग्रहनहोवें तबतात्काल मृत्युको प्राप्त होताहै ३८ और लग्नमें चंद्रमावा सूर्यस्थित होवे और पापीग्रह बलीहोयकर्के त्रिकोण ९ । ५ । में और अष्टम में स्थितहोवें और शुभयुक्तशुभदृष्टनहिं होवें तबतात्कालमृत्युकर्त्तेहै ४०

और जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमाकर्के युक्त शुक्रहोवे और बृहस्पति कर्के न देख्याहोवे तिसको नववर्षो ९ कर्के मृत्युको प्राप्त कर्ताहे इसमे संदेह नहिंहै ४१ और अष्टम ८ सप्तम ७ बारमे १२ लग्न १ मे त्रिकोण ९ । ५ में क्षीणचद्रमा कर्के युक्त बली पापग्रह स्थित होवें तब तिसजातककों आयुपासें हीन कहतेहें ४२ अब अनुक्तकालमें रिष्टयोगकों एकवर्षकेम ध्यमे रिष्टकालकहतेहै जिस रिष्टयोगमें कालका नियम नहिं कहाहै तिसमें योगकरणे बाल्यो ग्रहोंके मध्यमें यो बलीग्रहहै तिसके स्थानमें राशिमें जब चंद्रमा आवे तब मृत्युकर्त्ताहे अथवा-चंद्रमा जन्मकालमें जिसराशिकाहै तिसमें फेर चारवशकर्के आवे तब मृत्यु कर्ताहे अथवा जब तिनको बलवान्पापग्रह देखे तवमृत्युकर्ताहे ४३ और जिसकेजन्मकालमें सूर्य चंद्रभोमगुरुवा भौम सूर्य चंद्रमाशुक्रवासूर्य शनि भौम चद्रमा एकत्रस्थित होवें तव पाच ५ वर्षकर्केमृत्युकर्तेहै ४४ और

शुक्रोरविशशिसहितोमारयतिनरंसदाप्रसवकाले ॥ दृष्टोनदेवगुरुणानवभिर्वर्षैर्नसंदेहः ४१ निधनास्तव्ययलग्नत्रिकोणगाःक्षीणचंद्रसंयुक्ताः ॥ पापावलिनःशुभदैरदृश्यमानागतायुषंप्राहुः ४२ योगेवलिनःस्थानंस्वंवालग्नगतेपिवाचद्रे ॥ वलवतिवाशुभदृष्टेह्यावर्षान्मृत्युकालःस्यात् ४३ रविचंद्रभौमगुरुभिःकुजभृगुसूर्येन्दुभिस्तथैकस्थैः रविशनिभौमशशांकैर्मरणंखलु पंचभिर्वर्षैः ४४ राशिप्रमितैर्वर्षैर्मारयतिविलग्नपोरिपुस्थाने मासैर्द्रेष्काणपतिर्दिवसैरंशाधिपोहंति ४५ मारयतिषोडशाहाच्छनैश्चरःपापवीक्षितोलग्ने संयुक्तोमासेनतुवर्षाच्छुद्धस्तुमारयति ४६ रविशशियुक्तःशशिजःसौम्यैर्दृष्टो विनाशयतिनून एकादशभिर्वर्षैःशक्रेज्योपिस्थितेजातम् ४७लग्नेरविसौरकुजैः शत्रुग्रहेसप्तमेशशीक्षीणः दृष्टोनदेवगुरुणासप्तभिरब्दैर्विनाशयति ४८

लग्नकास्वामीछठे स्थानमें जिसराशिमें स्थित होवे तिसके तुल्य वर्षोंकर्के मृत्युकर्ताहे और द्रेष्काणका स्वामि छठेस्थानमें जिसराशिमें होवे उतने महीने कर्के और नवांसकास्वामि उतने दिनोंकर्के मृत्युकर्त्ताहे और पापग्रहोंकर्के देख्या लग्नमे शनि सोलादिनकर्के मारताहे और पापकर्के युक्त लग्नमे शनि महीने कर्के मारताहे और शनिशुद्ध होवेजिसको शुभाशुभदृष्टियोग रहित होवे तव वर्षमें मारताहै ४६ और जिसके जन्मकालमें सूर्य चद्रमा कर्के युक्त बुध शुभग्रहों कर्के देख्या होवे तव निश्चसे जाहरमें ११ वर्षमे मृत्युकर्त्ताहे जब बृहस्पतिकर्के युक्तवी होवे तव वी मारताहे ४७ और कहतेहे जन्मलग्नमें सूर्य शनि मंगल स्थित होवे और छठे सातमे स्थानमे क्षीणचद्रमा बृहस्पति कर्के देख्यान होवे तव सातवर्षो कर्के मृत्यु कर्ताहे ४८

और सूर्यकी रश्मियों कर्के युक्त चंद्रमाकेंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थितहोवे और मंगलऔर-शनिकर्के देख्याना युक्तहोवे तव दोवर्षकर्के वालककों मारताहै ४९ और लग्नेश होयकर्केक्षीणचंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थित होवे और क्रूर ग्रहोंकर्के देख्याहोवे और शुभग्रहोंकी दृष्टिसेंरहित होवे तव तीन वर्षकर्के मारताहै ५० और लग्नकास्वामी पापग्रहहोवे और चंद्रमाके नवांशमें चंद्रमासें वाहरमें १२ स्थानमें स्थितहोवे और क्रूर ग्रहोंकर्के देख्याहोवे तवनव ९ वर्षोंकर्केमारताहै ५१ और जिसकेजन्म समयमें चक्रके दृश्यभागमेंशुभग्रह और अदृश्यभागमें पापग्रह स्थित होवें औरलग्नमें राहु स्थितहोवेतव पांचवर्षकर्के मृत्युकों प्राप्तहोताहै ५२ और जन्मलग्नसें सातमें ७ स्थानमें राहुसूर्यचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे और शुभग्रहोंकर्के नाहिं देख्याहोवे तव निश्चयकर्के वाहरमें १२ वर्षमें मारताहै ५३

केंद्ररविमुषिततनुक्षितिसुतमंदावलोकितोथयुतः वर्षद्वयेनचंद्रोमारयातिकिमत्रगणितेन ४९ लग्नाधिपतिश्चंद्रोमरणपदस्थोतिकृष्णतांजातः क्रूरैःसकलैर्दृष्टोनशुभैर्वर्षैस्त्रिभिस्तुमारयति ५० लग्नाधिपतिःपापःशशिनोंशेरिष्फगोयदा चंद्रात् क्रूरैर्विलोक्यमानोमारयतिशिशुंनवभिरब्दैः ५१दर्शनभागेसौम्याःक्रूराश्चादृश्यगाःप्रसवकाले राहुर्लग्नोपगतोयमक्षयंनयतिपंचभिर्वर्षैः५२राहुःसप्तमभवनेशशिसूर्यनिरीक्षितोनशुभदृष्टः दशभिर्द्वाभ्यांसहितैरब्दैर्नूनंविनाशयति ५३ घटसिंहवृश्चिकोदयकृतस्थितिर्जीवितंहरतिराहुः पापैर्निरीक्ष्यमाणःसप्तमितैर्निश्चितंवर्षैः ५४ केतोरुदयःपूर्वंपश्चादुल्कातिपवननिर्घातः रौद्रेसार्पमुहूर्त्तेप्राणैःसंत्यज्यतेजातः ५५ क्षीणंयदाशशांकंपश्येद्राहुःसमागतःक्रूरैः मारयतितदादिवसैर्निर्व्याजंकतिपयैरेव ५६ तथा मातंगे ८ नवभि ९ श्चरामनयने २३ नेत्राश्वि २२ भिः सायके ५ रेकेनां १ वुधिभि ४ स्त्रिलोचनमिते २३

और कहतेहै कुंभ सिंह वृश्चिक राशिमें राहु स्थितहोवे और पापग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव निश्चयकर्के सातमें ७ वर्षमें मृत्युकर्ताहै ५४ और कहतेहै धूम्रकेतुके उदयकालके पूर्व वा पीछे उल्कापात और प्रचंडवायुः और निर्घातशब्द होवे और जिसकालमें रौद्र और सार्प मुहूर्त्तमें जन्में तव शीघ्र मरजाताहै ५५ और जव क्षीणचंद्रमाकों क्रूरयुक्त राहुदेखे तव निसंदेह महीनेके अंदर मृत्युकर्त्ताहै ५६ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें कुंभके छवीमें २६ अंशमें और इकीस २१ में अंशमें और सिंहके पाचमें ५ अंशमें और वृषके नवम ९ अंशमें ५७ और वृश्चिकके त्रयोविंशति २३ अंशमें और मेषके अष्टम ८ अंशमें और कर्कटके वाहिमें २२ अंशमें और तुलाके चतुर्थ ४ अंशमें और मकरके वींमें २० अंशमें ५८ और कन्याके प्रथम १ अंशमें औरधनके अठारमें १८

अंशमेंऔरमीनकेदशमें १० अंशमें औरमिथुनकेवाहिमें २२ अंशमें चंद्रमास्थितहोवेतवमृत्युकर्ताहै ५९ कितनेकालमें चंद्रमा मृत्युकर्ताहै सो कहतेहैं जन्मसमयमेंजितने अंश चंद्रमाकेभुक्तहोवें उतनेवर्षोंकर्के मृत्युकों प्राप्तकर्ताहै जव धर्मराजवी रक्षातिनकोंवाधे तववी मृत्युकों प्राप्तहोतेहे ६० अव प्रसंगसें पितासेंलेकर संवंधियोंकों रिष्टयोगकहतेहै यवनजातकमें पिता सूर्य और माता चंद्रमा और भाई मंगल और मामें वुध और नाना वृहस्पति और मासीयां शुक्र और पुत्र शनिः इहे सूर्यादिग्रह त्रिकोणमें १ ५ स्थितहोवे और पापग्रहकर्के युक्त और दृष्टहोवें तव क्रमकर्के पित्रादि संवंधियोंको हतकतेहै १. और कहतेहैंदिनमें शनि औररात्रिमें सूर्य पितृव्य पिताके भाईकहे तिनकों पापग्रह योग

धृत्या १८ चविंश २० न्मितैः भूनेत्रैः २१ दशभिर्लवैः १० यदिभवेन्मेपादिसंस्थोविधुर्वर्षैर्भागसमैःकरोतिनिधनंकालोयमत्रोदितः कुंभेविंशतिषट्केभागेमृत्युस्तथैकविंशाख्ये सिंहेचपंचमांशेवृषेचनवमेतथैवोक्तः ५७ अलिनित्रिविंशतियुतेमेषतथाष्टमेदिशतिमृत्युं कर्कटकेद्वाविंशेतुलनिचतुर्थेमृगेविंशे ५८ कन्यायांप्रथमेंशेधनुर्धरेष्टादशेझपेदशमे मिथुनेचद्वाविंशेशशीप्रसूतस्यमरणकरः ५९ येभुक्ताःशशिनोंशाजन्मनिवर्षैर्गतिस्तुतावद्भिः मरणंहिजन्मभाजामप्यंतकवद्धरक्षाणाम् ६० अथात्रप्रसंगात्पित्रादीनामरिष्टयोगानाह यवनजातके तातांविकासोदरमातुलाश्चमातामहोमातृस्वसाचसूनुः सूर्यादिखेटाःक्रमशःप्रदिष्टास्त्रिकोणगास्तेपिपतान्निहन्यु १ सौरोन्हिरात्रौतपनःपितृव्यस्तेषान्ययोगात्तुपितृव्यनाशः दिवसेमातापितरौशुक्ररवीशशिशनीनिशायांच मातृभगिनीपितृव्यौविपर्ययात्कीर्तितौयवनैः २ पापग्रहयुक्तश्चेत्तदानाशयतिनियमेन पंचस्वरायांविशेषः भ्राताद्विवाकरोरात्रौदिवसेचशनैश्चरइतिसोमसिद्धांते भौमाच्चनिधनेचंद्रःपापयुक्तोभवेद्यदि पितृघातपरोक्षेचमाताचाम्रियतेध्रुवम् ३ रंध्रेर्कस्सप्तमेभौमोनिधनस्थेचसूर्यजे

होनेसें पितृव्यकानाशहोताहै और दिनमें माता पिता शुक्र और सूर्य होतेहे और रात्रिमें चंद्रमा शनि होतेहै और मासी और चाचाइहे विपर्यय कर्के यवनाचार्योंनेंकहेहैं रात्रीमेंशुक्र मासीऔर सूर्य चाचा और दिनमें चंद्रमामासी और शनि चाचा होताहै इहे पापग्रहकर्केयुक्त होवें तव निश्चयकर्के मारतेहे और पंचस्वरामें विशेषकहाहै रात्रिमें सूर्य और दिनमें शनि भ्राताहोताहै और सोमसिद्धांतमें कहतेहै जिसके जन्मसमयमें मंगलसें अष्टमस्थानमें चंद्रमा पापग्रहो कर्के युक्तहोवेसो पिताकों मारताहै और पिताविदेशगत होवे तव निश्चय कर्के माताकों मारताहै ३ और जिसकेजन्मसमयमें अष्टम सूर्य और सप्तममंगल और अथवा अष्टम शनि स्थितहोवे

और यद शुभग्रहों कके नहि देखेहोवेंतिसके पिताकामृत्युकहे ४ और जबजन्मसमयमे सूर्यसेंसप्तमराशि मे शनिमंगलस्थितहोवेअथवा शनिमगलकेमध्यमे सूर्यहोवेपिताकेमारणेवालाहोताहै ५ औरजन्मलग्नसें दशमस्थानमेंशनिहोवे तवथोडेकालकेपुत्रकोमारताहै अर्थात् जातकआपमर्त्ताहै और सूर्यपिताको और चद्रमा माता कों हतकर्त्ताहै ६ इसमें क्षीणचंद्रमादशमहोवेतवमाताकोंहतकर्त्ताहैऔर जिसका दिनमे जन्महोवे और शुक्र पापीग्रहकक युक्त वा देख्या होवे तव तिसकी माता निश्चयकरके मृत्युके प्राप्त होतीहै ७ और रात्रिमे जन्महोवे और चद्रमा पापीकेघर होवे और यद पाप ग्रहों करके देख्या होवे तव तिसकी माता मृत्युकों प्राप्तहोतीहै ८ अथवा जिसके जन्मसमयमे क्षीणचंद्रमा को सपूर्णपापी ग्रह देखें और शुभग्रह न देखतेहोवें तव तिसकी माता मृत होतीहै ९ और जन्मलग्नसें वा चद्रमासे चतुर्थ स्थानमें पापीग्रह बडेबलककके युक्त स्थितहोवे तव माताकों मृत्यु कर्त्ताहै १० और जिसकेजन्मस-

पितृमृत्युर्वदेत्तस्यशुभैर्नेयादिदृश्यते ४ सूर्याच्चसप्तमेराशौशनिभौमौयदास्थितौ तदापितृवधोज्ञेय.स्तयोर्मध्येथवारवि· ५ उदयाद्दशमेमदोनाशयेदचिरात्सुत पितरभास्करोहन्यान्मातरंहिमदीधितिः ६ अत्रदशमस्थचद्रनिषेध.क्षीणचद्र विषयइति् प्रसवेचदिवाभागेशुक्रेवापापसंयुतेअथवापापसदृष्टेमाताचम्रियतेध्रु वम् ७ प्रवसेरात्रिसमयेचंद्र पापगृहेस्थितः माताचम्रियतेतस्ययदिपापैः समीक्षितः ८ अथवाक्षीणचंद्रंचपापा पश्यंतिसर्वशः शुभग्रहानपश्यंतिमा ताचम्रियतेतदा ९ निधनारिगतश्चद्रोभौमश्चसप्तमेस्थितः तस्यमातृविना श स्यार्चदिपापै.समन्वित. १० लग्नाच्चतुर्थग पापोयदिस्याद्बलवत्तर· त दामातृवधकुर्याच्चंद्राच्चैवविशेषतः ११ अथारिष्टानियवनजातके ॥ शनि क्षे त्रगतोभानुर्भानुक्षेत्रेशनैश्चर ॥ द्वादशेवत्सरेमृत्यूरक्षितायदिशंकर· १ भौ मक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेक्षिते सुत द्वादशेवत्सरेमृत्यूरक्षितायदिशकरः २ शुक्रक्षेत्रेयदाजीवोजीवक्षेत्रेचभार्गव. अष्टादशेभवेन्मृत्यूरक्षितायदिशंकरः ३ भूमिपुत्रेयदाजीवेषष्ठाष्टमतृतीयके अष्टमेदशमेमृत्यूरक्षितायदिशकरः ४

मयमे अष्टम और छठे स्थानमे चंद्रमा स्थित होवे और पापीग्रहो करके युक्त होवे तव माताको मृत्यु कर्त्ताहै ११ अव यवनजातकसे रिष्टयोगकहतेहे जिसके जन्मसमयमें मकरकुभराशिमे सूर्यस्थितहोवे और सिंहराशिमे शनिहोवे तव जिसका शिव रक्षाकरणेवालेहोवें सो वी बारहमे १२ वर्षमे मृत्युको प्राप्तहोताहै १ और जिसके जन्ममें मेष वृश्चिकराशिमे गुरु और धन मीनराशिमें मगल होवे सोवी शिवककं रक्षाकियाभी बारहमे १२ वर्षमेंमृत्युहोताहे २ और जिसके जन्मकालमे वृषतुलाराशिका गुरु और धनमीनराशिमें शुक्रहोवे सो शिवकके रक्षितवी अठारमें १८ वर्षमे मृत्युको प्राप्तहोताहै ३ और जिसके जन्मम मगल और गुरु दोनो छठे आठमे तीसरे स्थानमे होवे तव शिवकके रक्षतवी आठमे वा बारहमे १२ वर्षमे मृत्यु होताहै ॥ ४ ॥

और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ और दशम स्थानमें राहु स्थितहोवे और केंद्रमें १ ४ ७ १० और छठे आठमें स्थानमें चंद्रमा होवे तब जातकका सोहलमें १६ वर्षमें मृत्युहोताहै इसमें संशय नहिंहै ५ और जिसके जन्मकालमें राहु छठा और चंद्रमा अष्टम होवे सो बालक जन्मताहि मि रगी रोगकर्के युक्त होताहै ६ और जिसके जन्मकालमें बाहरमें १२ आठमें स्थानमें बृहस्पति हो वे और लग्नमें चंद्रमा होवे सो अपने आपकों और माताकों और पिताकों हत कर्ताहै ७ और जिसके जन्ममें लग्नमें क्रूरराशि स्थितहोवे और लग्नकास्वामी अस्तहोवे सो भाग्यहीन जन्मताहै औरआठवर्षजीताहै ८ अबऔररिष्टकहतेहै पूर्णा ५।१०।१५ और नंदा १।६।११ तिथियोंके मध्यमें दोघटीतिथिगंडहोतेहै और कर्क सिंहराशिकेमध्यमें एकघटी और वृश्चिक धनराशिके मध्यमें एकघडी और मीन मेषके मध्यमें एकघडी राशिगंड होतेहै १ और मूला मघा अश्विनी इनके आ

चतुर्थेदशमेराहुःकेंद्रेषष्ठेष्टमेशशी षोडशेब्देभवेन्मृत्युर्जातकस्यनसंशयः ५ जन्मकालेयदाराहुःषष्ठेष्टमेचचंद्रमाः अपस्मारीभवेद्बाल सद्योजातोनसंशयः ६ रिष्फेऽष्टमेयदाजीवोलग्नेभवतिचंद्रमाः आत्मानमातरंतातंहंतिजातोनसंशयः ७ क्रूरक्षेत्रेयदालग्नेअस्तंयातिचलग्नपे अकर्मणस्तदाजातोह्यष्टवर्षाणिजीवति ८ अथान्यद्रिष्टमप्याह मध्येपूर्णानदयोर्नाडिकेद्वेस्याद्गंडांतंकीटहर्य्योस्तथैका कोदंडादौवृश्चिकांतेझषांतेमेषस्यादौराशिगंडांतमेव १ चतुर्घटीमूलमघाश्विनाद्यैगैंडांतमंतेचफणींद्रपौष्णे आद्यनाड्यांतुजातस्यपितामरणमाप्नुयात् द्वितीयायांतथामातातृतीयायामथान्वयः २ चतुर्थ्यांजायमानस्तुहंतिभ्रातृन्नसंशयः तिथ्यृक्षगंडेपितृमातृनाशोलग्नस्यसंधौतनयस्यनाशः सर्वेपुनोजीवतिहंतिवंशं जीवेत्पुनःस्याद्बहुवारणाश्वः ३ विघ्नांद्रारिद्र्यमाप्नोतिकुलिकंगस्यवैकृतिं यमघंटेफलंरुक्स्याद्रिक्तायांखंडितामियात् ४

दकिया चारघडिया ४ और श्लेषा ज्येष्टा रेवती इनके अंत्यकिया ४ घडिया गंडात होतेहै और तिनमे पूर्वघडीमें जन्मेंतो पिता और दूसरीमें माता और तीसरीमें जातीके संबंधि और चतुर्थमें जन्मे तो भाइयोंकों हत कर्ताहै और कहतेहै तिथिके और नक्षत्रोंके गंडोंमे पिता माताका नाशहोताहै और लग्नकी संधिमें पुत्रका नाशहोताहै और तिथि नक्षत्र लग्नकी संधियोंमे जन्माहुवा प्रथम जीता नहिंहै और जीवे तब वंशका क्षय कर्ताहै और कदाचित् और राजयोगादि शुभग्रहोंके वल्युक्तहोवे तब प्रतापी बहुत हाथियोंढयोंवाला होताहै ३ और जोभद्राकरणमें जन्मताहै सो दरिद्री होताहै और जो कुलिकयोगमें जन्मताहै सो अंगविकारकों प्राप्तहोताहै और जो यमघटमें जन्मताहै सो रोगीहोताहै और रिक्तातिथिमें जन्मे सो खंडिताकों प्राप्तहोताहै ४

औरव्यतीपातमेंजन्मेसोअग हीनहोताहैऔरपरिघयोगमेंजन्मेसोमृत्युकोप्राप्तहोताहैऔरवैधृतयोगमेंज न्मेसोपिताकानाशकर्त्ताहैऔरअमावास्याकोंजन्मेसोत्रधनकोंप्राप्तहोताहै ५ औरशूलयोगमेंजन्मेसोसमूल नाश कर्त्ताहै और उलटाजन्मे और नाभिनालकर्के वेष्टितहोवे ६ सो राष्ट्रमें और राजयोंकों और धनकों नाश कर्त्ताहै और तैसेंहि हीनाधिक अंगोकर्केचकारसेंयमलजन्में और संधियोंमें ७ और प र्वदिनोंमें जन्मे सो रिष्टभयकों देताहै तैसेंहि दंतोसहित जन्मे और पैरोकर्के जन्मे सो रिष्टकर्त्ताहै ८ और तिससे क्रूरग्रहोंकी शांतिकरे और तिसमें ज्योतिषीका पूजन करे और शांतिकरणेसें रिष्टशांत होताहै ॥ ९ ॥ और कहतेहै चंद्रमा विषप्रदग्धांशमें स्थित होवे तिसकालमें जो जन्मताहै सो तात्का ल मृत्युकों प्राप्त होताहै और जिसके जन्ममें विषांशमें सूर्यहोवे तिसका पिता मृत्युकों प्राप्त होताहै

व्यतीपातेंगहानिःस्यात्परिघेमृतिमादिशेत् वैधृतेपितृहानिःस्यान्नष्टेंदौवध्यतांव्र जेत् ५ शूलेसमूलनाशःस्यात्कुलनाशश्चवैधृतौ विपरीतप्रसूतौतुनाभिनालेनवे ष्टितं ६ राष्ट्रस्युनृपतेश्चैवस्वस्यापिचाविनाशकः अधिकांगेचहीनेचसंधयोरुभयोर पि ७ पर्वण्यपिप्रसूतौचसर्वारिष्टभयप्रदः तद्वत्सदंतजातश्चपादजातःतथैवच ८ तस्माच्छांतिंप्रकुर्वीतग्रहाणांक्रूरचेतसाम् दैवज्ञंपूजयेत्तत्रशांत्याशांतिर्भविष्यति ९ विषांशकगतेचंद्रेजातोयमपुरंव्रजेत् ॥ आदित्यांशेपितुर्मृत्युश्चंद्रांशेमातुरे वच १० भौमांशेमातुलस्यैवंसौरांशेभ्रातुरेवच ॥ अन्यांशेविषसंस्पृष्टेजातो यमपुरंव्रजेत् ११ स्ववर्गेमित्रभेस्वोच्चेशुभयुक्तेशुभेक्षिते ॥ गंडांतदोषसंभूतंस द्यएवंव्यपोहति १२ गर्गः कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेपड्विधफलं ॥ चतुर्द शींचषड्भागान्कुर्यादादौशुभंस्मृतं १३ द्वितीयेपितरंहंतितृतीयेमातरंतथा॥ च तुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् १४

और चंद्रमाहोवे तव माता मृत्युकों प्राप्तहोतीहै और विषांशमें मंगलहोवे तव माता और विषांशमें शनिहोवे तव भ्राता मृत्युकों प्राप्त होताहै और शेषग्रह विषांशमें होवें तव बालक मृत्युकों प्राप्त हो. ताहै ॥ ११ ॥ और विषांश जानने काप्रकार पूर्व संज्ञाध्यायमें षष्ट्यंशके मध्यमें तीस ॥ ३० ॥ कलाकर्के विषांश स्पष्ट कियाहै और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा उच्चमें और अपने वर्गमें और मित्रके क्षेत्रमें शुभग्रह कर्के युक्त दृष्टहोवे तव गंडांत दोषकों तात्काल दूरकर्त्ताहै ॥ १२ ॥ और गर्गकृ. ष्णपक्षकी चतुर्दशीके छेभागकर्के फलकहताहै सामान्य दशघडीका एकभाग होताहै प्रथम भागमें जन्मे तो शुभहोताहै ॥ १३ ॥ और दूसरेमें पिताकों हतकर्त्ताहै और तीसरेमें माताकों हतकर्त्ताहै और चउथेमें मामेकों हतकर्त्ताहै और पांचमेंमें वंशका नाशकर्त्ताहै और छठेमे सर्वनाश कर्त्ताहै ॥ १४ ॥

औरवी रिष्टका उपाय कहतेहैं ग्रथांतरमें अपने इष्टदेवताके पूजनसें संपूर्ण दोष नाशकों प्राप्त होताहै और॥ जोजो दोष ग्रह राशि नक्षत्र अंशोंकर्के उत्पन्नहै सोसो दान पूजा व्रतादि कर्नेकर्केसंपूर्णशांत. होतेहै २ और पूर्वकहेयो-यवनजातकमें वालरिष्टयोग महारिष्ट तिनका उपाय इसविधकर्के करणा सो कहतेहै ॥ तिसदोषके दूरकरणेवास्ते अनेक वस्तूयोंकर्के वारां १२ तुला करावे भक्तिकर्के ३ तावेकी १ और लोहेकी २ और घृतकी ३ और गोहेकी ४ और मृत्तिकाकी ५ और सुरमेकी ६ और कमलोंके फूलोंकी ७ औरअनेकफलोंकी ८ और भस्मकी ९ और लकडियोंकी १० और वृक्षोंके कडयोंकी ११ और वृक्षोंके पत्रोंकी १२ इहे यथाक्रमपूर्वक वारां तुलाकरावे और गोमयादि वस्तूके तुल्य ब्राह्मणकों अन्नतोलके पीछेसें देदेवे ५ इतिश्रीजातकखंडेरिष्टाध्यायोनवमः ९ अब रिष्टभगाध्याय कहतेहैं ॥ एक वृहस्पति अतिवली होयकर्के और अपनीया किरणोंकर्के प्रका

पष्ठेनुसर्वनाशःस्याच्चतुदर्ष्यो.फलंक्रमात् ॥ अथात्ररिष्टप्रतीकारःकिंचिदुच्यते ग्रंथांतरे ॥ पूजनेनेष्टदेवस्यदोषोनश्यतिनान्यथा ॥ ग्रहराश्यंशभेदेनतिथिवारर्क्षयोगतः ॥ १ ॥ येयेदोषाःसमुत्पन्नास्तेषांशांतिःप्रजायते ॥ जपहोमनमस्कारदानपूजाव्रतादिभिः ॥ २ ॥ अथयवनजातकोक्तमहारिष्टप्रतीकारः ॥ तद्दोषपरिहारार्थंतुलादानंतुकारयेत् ॥ द्वादशपरिमाणंचनानाद्रव्यैस्तुभक्तितः ॥ ३ ॥ ताम्रजलोहजचाज्यंगोमयंचमृदंजनम् ॥ पद्मपुष्पैःफलैर्भस्मजैंधनैःकंटकैस्तथा ॥ ४ ॥ वनस्पतीनांपत्रैस्तुकुर्य्याच्चसर्ववस्तुभिः गोमयादिसमपश्चाद्धान्यदद्याद्द्विजातये ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवन्धेजातकखंडेरिष्टाध्यायोनवमः ९ अथरिष्टभंगाध्यायः सर्वानिमानतिवलःस्फुरदंशुजालोलग्नोपगःप्रशमयेत्सुरराजमंत्री एकोवहूनिदुरितानिसुदुस्तराणिभक्त्याप्रयुक्तइवशूलधरप्रणामः १ सौम्यग्रहैरतिवलैर्विवलैश्चपापैर्लग्नेचसौम्यभवनेशुभदृष्टियुक्ते सर्वापदाविरहितोभवतिप्रसूतःपूजाकरःखलुयथादुरितग्रहाणाम् ॥ २ ॥ पापायदिशुभवर्गसौम्यैर्दृष्टाःशुभांशवर्गस्थैः निघ्नंतितदारिष्टंपतिंविरक्तंयथायुवतिः ३

शकोंप्राप्त लग्नमें स्थितहोवे तव एकहि वृहस्पति पूर्वोक्त संपूर्णरिष्टोंकों दूरकर्त्ताहै किसक्कीन्याई जैसें भक्तिकर्के शिवजीकों प्रणाम करणेसें पापदूर होतेहे १ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुभग्रहवलीहोवें और पापीग्रह निर्वलहोवें और लग्नमें शुभग्रहकी राशिहोवें और शुभग्रहकर्के दृष्टियुक्तहोवे तव संपूर्ण रिष्टोंसें रहित होताहै जैसें कोई खोटेग्रहोंका पूजनकर्के सुखीहोताहै २ और जिसके-जन्मकालमें पापीग्रह शुभवर्गमें स्थितहोवें और शुभनवांशमें और शुभवर्गमें स्थितहोयकर्के शुभग्रह-तिनकों देखरहेहोवें तव रिष्ट नाश होताहै जैसें विरक्तस्वामीकों स्त्रीनाशकों प्राप्तहोताहै ३ और जिसकेजन्मलग्नतें तीसरेछठे ग्यारहमें स्थानमें राहुस्थितहोवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे सो तात्कालरिष्ट दूरकर्त्ताहै जैसें रूईके समूहकों वायुदूरकर्ताहै ४ और जिसके जन्मकालमें शीर्षोदयराशियों। ३

।५।६।७। ८। ११। में संपूर्ण ग्रह स्थित होवें और अस्तनीचहोवें तब रिष्टनाशकों प्राप्त होताहै जैसें अग्निमें घृत दग्ध होताहै ५ और जन्मकालमें जयकों प्राप्तशुभग्रह होवे और शुभग्रहों करकें देख्याहोवे तब सपूर्ण रिष्टकों दूरकर्त्ताहै जैसें प्रबलवायु वृक्षोंकों तोडदेताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें स्निग्धकोमल पवनचलतीहोवे और कुलदेवता और सूर्यादिग्रह स्वस्थहोवें और श्रेष्ठक्षण शुभनक्षत्रका मुहूर्त्तहोवे तब रिष्टदूरहोताहै जैसें जलकी धारोंसें धूलिशमन होतीहै ७ और कहतेहैं अगस्त्यमुनिके उदयकालमें और वसिष्ठादि सप्तऋष्योंके उदयकालमें सपूर्ण रिष्ट दूरहोतेहैं जै

राहुस्त्रिषष्ठलाभेलग्नात्सौम्यैर्निरीक्षितःसद्यः नाशयतिसर्वदुरितंमारुतइवतूलसघातम् ॥ ४ ॥ शीर्षोदयेपुसर्वैर्गगनाधिनिवासिभिःसूतौ प्रकृतिस्थैश्चारिष्टविलीयेतघृतमिवाग्निधृतम् ॥ ५ ॥ तत्कालेयदिविजयीशुभग्रहःशुभानिरीक्षितोवश्यम् भंजयतिसर्वरिष्टंमारुतइवपादपान्प्रबलः ॥ ६ ॥ स्निग्धमृदुपवनभाजःकुलजाश्चतथैवखेचराःस्वस्थाः शस्ताःक्षणाश्चरिष्टंशमयंतिरजोयथांबुधारौघाः ॥ ७ ॥ उदयेगस्त्यस्यमुनेःसप्तर्षीणांवसिष्ठपूर्वाणां सर्वंनश्यतिरिष्टंतमइवसूर्योदयेजगति ॥ ८ ॥ अजवृषकार्कीणिलग्नेरक्षतिराहुःसमस्तपीडाभ्यः पृथ्वीपतिःप्रसन्नःकृतापराधंयथापुरुषम् ॥ ९ ॥ वहवोयदिशुभफलदायोगास्तत्रापिनेष्यतेरिष्टं सूर्यात्त्रिकोणइंदौयथाचयात्रानरेंद्रस्य ॥ १० ॥ अथचंद्ररिष्टभंगानाह ॥ उडुपतिकृतरिष्टानांभंगस्तावन्निरुच्यतेसम्यक् शेषाणामपियवनाद्यथामतब्रह्मपूर्वाणाम् ॥ १

सें सूर्योदयमें जगतका अंधकार दूरहोताहै ८ और जन्मकालमें मेष वृष कर्क राशिमे स्थित राहु सपूर्ण पीडासें रक्षाकर्त्ता जैसें राजा प्रसन्नताको प्राप्तहोके अपराधी पुरुषकों छोडदेताहै ९ और जिसके जन्मसमयमें शुभफलके देनेवाले योग वहुत होवें तब वीरिष्ट नहिं होताहै जैसें राजाकी यात्रासमयमें सूर्यसें त्रिकोण। ९। ५। चंद्रमा शुभहोताहै १० अब चंद्रमाके रिष्टभग योग कहतेहैं चंद्रमाके किये रिष्टहै प्रथम तिनके भंगजोग यवना चार्य और ब्रह्मगुप्तादि मतसें कहताहा और शेष रिष्टोंके भंग वीक्हताहां १

और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा संपूर्णग्रहों करके देख्याहोवे सोरिष्टों को हरताहै जैसेंशत्रुके धन-कों राजाहरताहै २ और कहतेहे पूर्णचद्रमा मित्रके नवांशमें स्थितशुक्रकर्के देख्या होवे सोरिष्टकों-दूरकर्चाहै जैसें वातके हरणेमें वस्तिकर्महै तैसें वस्तिकर्म वैद्यशास्त्रमें प्रसिद्धहै शिरोवस्ति नेत्रवस्ति इत्या दिः ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मकालमें परमोच्चमें चंद्रमा स्थित शुक्रकर्के देख्याहोवे सो रिष्टकानाशक-र्त्ताहै जैसें पित्तकफरोगकों दस्त और वमनकराणे सेंरोगदूरकर्त्ताहै ४ और कहतेहैं क्षीणचंद्रमा भीशुभ ग्रहों केवर्गमें स्थित और शुभग्रहों कर्के देख्याहुआरिष्टकों दूरकर्त्ताहै जैसें महाअतिसाररोगकों जायफल का क्वाथदूरकर्त्ताहै ५-और चंद्रमासें सप्तम अष्टम षष्ठ ॥ ७।८।६ ॥ स्थानमें स्थितशुभग्रह पापग्रह कर्के युक्तहोंनै तब रिष्टहरतेहै जैसें कल्याणघृत उन्मादरोष कों हरताहै उन्मादघृतवैद्यशास्त्रमें कहाहै ६ और शुभफलके देनें वाले ग्रहसें युक्तचंद्रमा रिष्टोंकों हरताहै और शुभग्रहोंके द्रेष्काणमें स्थित.

सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टश्चंद्रोविनाशयतिरिष्टम् ॥ आपूर्यमाणमूर्तिर्यथानृपःस्वंनये तद्वैरी २ चंद्रःसंपूर्णतनुःशुक्रेणनिरीक्षितःसुहृद्भागे ॥ कष्टहराणांश्रेष्ठोवातह राणांयथावस्तिः ३ परमोच्चेशिशिरतनुःशुक्रेणनिरीक्षितोहरतिरिष्टम् ॥ सम्यग्विरेकवमनंपित्तकफार्त्तियथावैषाम् ४ चंद्रःशुभवर्गस्थःक्षीणोपिशुभे क्षितोहरतिरिष्टम् ॥ जलमिवमहातिसारंजातीफलवल्कलक्वाथितम् ५ सप्ताष्ट मषष्ठस्थाःशशिनःसौम्याहरंतिकष्टफलं ॥ पापैरमिश्रचाराःकल्याणघृतंयथो न्मादम् ६ युक्तःशुभफलदायिभिरिंदुःसर्वाणिहंतिरिष्टानि तेषामेवत्र्यंशेलवणमृ तिपूरणंनयनशूलम् ७ आपूर्यमाणमूर्त्तिर्द्वादशभागेशुभस्ययदिचंद्रः रिष्टंनय तिविनाशंतक्राभ्यासोयथागुदजान् ८ सौम्यक्षेत्रेचंद्रोहोरापतिनाविलोकितो हंति ॥ रिष्टंनवीक्षितोन्यैःकुलांगनाकुलमिवान्यगता ९ क्रूरभवनेशशांकोभु वनेशनिरीक्षितस्तदनुवर्गे ॥ रक्षतिशिशुंप्रजातंकृपणइवधनंप्रयत्नेन १०

सोरिष्टहर्त्ताहै जैसें लवणकी मृति नेत्रशूलकोंहरति है ७ लवणमृतिवैद्यशास्त्र में प्रसिद्धहै और कहते. हैं पूर्णचद्रमा शुभग्रहके द्वादशांशमें स्थितहोवे तब रिष्टकों नाशकर्त्ताहै जैसें तक्रपानकरणे वाले मनुष्यके गुदाके रोग संग्रहणी अतिसारादि दूर होतेहै ॥ ८ ॥ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुभग्रहकी राशिमें स्थित चंद्रमा लग्नके स्वामि कर्के देख्याहोवे और पापी ग्रहोंकी दृष्टि कर्के रहित होवे तब रिष्टनाश होताहै जैसें श्रेष्ठकुलकीस्त्री दूसरेपुरुषकों प्राप्तहोकर्के कुलनष्ट कर्त्तीहै ९ और कहतेहैं क्रूरराशिमें चद्रमा स्थित होवे और तिसि राशिके वर्गमें होवे और तिसि लग्नके स्वामीकर्केदे ख्याहोवे सोबालककी रक्षाकर्त्ताहै जैसेंकृपण पुरुष धनकी रक्षाकर्त्ताहै यत्नकर्के तिसकीतरह १०

और कहतेहैं जन्मलग्नकास्वामी बली होवे और मित्रग्रहों कर्के देख्याहोवे और शुभग्रहों कर्के युक्तहोवेतबरिष्ट दूरकर्ताहै जैसेंभीरुपुरुषसंग्रामकों प्राप्तहो कर्के नष्ट होताहै ११ और जन्मलग्नकास्वामी लग्नमे स्थितहोवे और संपूर्णग्रहों कर्के देख्या होवे सो रिष्ट दूरकर्ताहै जैसें पिष्टोपण और विदलकर्के प्रत्ये कअन्नजनकर्नेसेंजीर्ण दूरहोताहै ॥ १२ ॥ और जिसके जन्मसमयमे पूर्ण चंद्रमा अपने उच्चमें वृषराशिमें वा स्वक्षेत्रमें कर्कटराशिमें और मित्रग्रहोके वर्गमें वा शुभवर्गमें वा अपने वर्गमे स्थित होवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और शत्रुग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे तव बडे रिष्टकों हतकर्ताहै जैसें अंधकारकों सूर्यदूरकर्ताहै ॥ १३ ॥ और कहतेहैं क्रूरग्रह चंद्रमाके नवांशमें बुधशुक्रके एकादश ॥ ११ ॥ वा लग्न १ वा दशम ॥ १० ॥

जन्माधिपतिर्बलवान्सुहृद्भिरभिवीक्षितःशुभैर्युक्तः॥ रिष्टोस्यनश्यतितदाभीरुरिवत्रासंसंग्रामः ११ जन्माधिपतिर्लग्नेदृष्टःसर्वैर्विनाशयतिरिष्टं ॥ पिष्टोपणविदलाभ्यांप्रत्येककृतांजनंयथाजीर्णम् १२ स्वोच्चस्थःस्वगृहेथवापिसुहृदांवर्गेथसौम्यस्यवासंपूर्णःशुभवीक्षितःशशधरोवर्गेस्वकीयेथवा ॥ शत्रूणामवलोकनेनपतितःपापैरयुक्तेक्षितोरिष्टंहन्तिसुदुस्तरंदिनपतिःप्रालेयराशिंयथा ॥ १३ ॥ शशिनोंशेबुधसितयोरायेक्रूरस्थवाकृतोगगने ॥ दुरितंचातुर्थिकइवनश्यतिमुक्तिकुसुमरसनस्यैः ॥ १४ ॥ लग्नेश्वरश्चंद्रःषट्त्रिदशायाष्टहिबुकेपुशुभदृष्टः ॥ क्षपयतिसमस्तरिष्टाननुयातोनिरपराधइव १५ एकोजन्माधिपतेःपरिपूर्णफलःशुभग्रहैर्दृष्टः ॥ हंतिनिशाकररिष्टंव्याघइववनेमृगंमत्तम् १६ केंद्रेशतायुर्भृगुजेगुरौवारिष्टंचचंद्रग्रहजंविनश्येत् ॥ एकोवलीलग्नपतिर्निहंतिदृष्टःशुभैश्चद्रकृतंचरिष्टम् १७

स्थानमें होवे तब रिष्ट दूर होताहै जैसें मोतीनेके पुष्पोंके रसकी नस्य लेवेसें चातुर्थिक ज्वर दूर होताहै ॥ १४ ॥ और लग्नकास्वामी और चंद्रमा लग्नसें छठे तीसरे बाहवें अष्टमें चतुर्थ स्थानमें शुभग्रहोंकर्के देखे होवें सो संपूर्ण रिष्टकों त्यागदेतेहैं जैसें कोई निरपराधपुरुषकों त्यागताहै ॥ १५ और एक जन्मलग्नका स्वामी पूर्णवली शुभदृष्टहोवे सो चंद्रमाके रिष्टकों हत कर्ताहै जैसें वनमें बडे मस्तहुवे मृगकों व्याघ्र मारताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्ममें केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ में शुक्र बृहस्पति होवें सो पूर्ण आयुषावाला होताहै और चंद्रमाके रिष्टकों नाशकर्ताहै और एकलग्नका स्वामी शुभग्रहोंकर्के देख्याहुवा वली चद्रमाकर्के कियाजो रिष्ट तिसकों हत कर्ताहै ॥ १७ ॥

श्रीर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें चद्रमासें बारहमें ॥ १२ ॥ शुक्रबुधहोवें श्रौर जाहरमें ॥ ११ ॥ पापग्रहहोवें श्रौर दशम ॥ १० ॥ में बृहस्पति स्थित होवे तब रिष्टका नाश होताहै श्रौर कहतेहैं कृष्णपक्षमें दिनमें जन्म श्रौर शुक्लपक्षमे रात्रिको जन्महोवे तव छठे ६ अष्टमे ८ स्थानमें दी चंद्रमा रिष्ट नाहिं करताहै ॥ १८ ॥ श्रौर पूर्ण चद्रमा बृहस्पतिशुक्रकर्के युक्तहोवे श्रौर क्रूरग्रहोंकर्के न देखाहो वे श्रौर कर्क वृषराशिमे होवे सो त्रिकोण ॥ ९ ॥ ५ ॥ में स्थित माताके सुखवास्ते होताहै अर्थात् माताका रिष्ट दूरकरताहै श्रौर तेसें ही सूर्य सिंह मेषराशिमें पापग्रहोंकी दृष्टिरहित त्रिकोण ॥ ९ ॥ ५ में स्थित होवे तब पिताको रिष्ट नहिं करताहै ॥ १९ ॥ श्रौर दिनमें शुक्र श्रौर चद्रमा श्रौर शनि युग्म ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥ १० ॥ १२ ॥ श्रौर अयुग्म ॥ १ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥ ११ ॥ राशियोंमें स्थित होवें तव माता पिताकी रक्षा करतेहै श्रौर उलटे स्थित होवें तव चाचे श्रौर मासीयोंकी रक्षा

चंद्राद्व्ययेशुक्रबुधौचलाभेपापागुरुर्व्योम्निवरिष्टनाशः ॥ कृष्णेदिवाचेन्निशिशुक्लप क्षेशशीनरिष्टोरिपुरंध्रगोपि १८ संपूर्णइंदुर्गुरुशुक्रयुक्तःक्रूरैरदृष्टःस्वगृहेस्वतुंगे सपचमस्थोपिसुखायमातुःपितुश्चतद्वत्खलुभास्करोपि १९ दिवासिताकौनिशिचं द्रमंदौयुग्मौजसंस्थौजननीचतातः ॥ संरक्षितोव्यत्ययतस्तदन्यौपितृव्यमातृष्व सृरक्षकौतो २० एतेत्रसर्वभंगामयानिरुक्ताःपुरातनाःसिद्धाः ॥ यैर्ज्ञातैर्दैवविदोनरें द्रवाल्लभ्यमुपयांति २१ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेश विरचितेज्योतिर्महानिबन्धेजातकखंडेसर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायोदशमः १०

अथसुनफाऽनफादिनानाविधयोगाध्यायः सुनफानफाधुरधुराःक्रमेणयोगा भवंतिरविरहितैः वित्तांत्योभयसंस्थैःकैरवणीबांधवाद्विहगैः ॥ १ ॥ एतेन यदायोगाःकेंद्रग्रहवर्जितशशांकश्च केमद्रुमोतिकष्टःशशिनिसमस्तग्रहाऽदृ ष्टे ॥ २ ॥ सुनफानफाःस्वरूपास्त्रिंशद्योगास्त्रिंशद्गुणाःषष्टिः संख्याधौरधु राणांप्रस्तारविधौसमाख्याता ॥ ३ ॥

करतेहैं २० श्रौर इहे रिष्टयोगके भंग जो मैंने कहेहैं सो पुरातनग्रंथोंमें सिद्धहैं जिसके जानने करकेंज्योतिषी राजाकी प्रसन्नताको प्राप्त होतेहैं १२ इतिश्रीजातकखंडटीकायांसर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायोदशमः १० अथ सुनफा नफादि अनेक योगोंकाऽध्याय कहतेहें ॥ चंद्रमासें दूसरे श्रौर बारहमें स्थानमें सूर्यके- विना श्रौर ग्रह स्थित होवे तव सुनफा नफा योग होतेहैं श्रौर दोनों स्थानोंमें ग्रहहोवें तव धुर धुरा योग होताहै जैसे चद्रमाके दूसरे सुनफा श्रौर बारहमें अनफा श्रौर दोनोंस्थानोंमें ग्रहस्थितहोनसें धुर धुरा योग होताहै १ श्रौर जब इहे तीनयोगमें कोई योग नाहिं होवे तव केमद्रुम नाम योग होताहै श्रौर जब केंद्रस्थान । १ । ४ । ७ १० । में कोई ग्रह श्रौर चंद्रमा नहोवे श्रौर चंद्रमा को संपूर्ण ग्रह देखते न होवें तब केमद्रुम बडे दुष्ट फलको देताहै २ श्रौर सुनफादि योगोंके भेदप्रस्तार विधिमें एकहजार आठसौ १८०० कहाहै ३

अब इनके फलकहतेहैं ॥ जो मनुष्य सुनफायोगमें जन्मताहै सोलक्ष्मीवाला और अपने पराक्रमकरके ऐश्वर्यवाला और बहुतधर्मके स्वभाववाला और शास्त्रके जानने वाला और बडे यशवाला और अपने गुणों करके युक्त और सुंदर और सुखी और राजाका मंत्री बडी बुद्धिवाला होताहै ४ और जोऽनफायोगमें जन्मताहै सो श्रेष्ठवाणीवाला और प्रभु और धनका स्वामी और रोगरहित और श्रेष्ठ स्वभाववाला और अन्नपान पुष्प वस्त्र और स्त्रियोंके भोगने वाला और प्रसिद्ध स्थिर बुद्धिवाला और संपूर्ण इरादेके जान-नेवाला होताहै ५ अब दुरधुरा योगका फल कहतेहैं योमनुष्य धुरधुरायोगमें जन्मताहै सो वाणी और बुद्धि और पराक्रम और गुणोंकरके प्रसिद्ध होताहै और पृथ्वीमें स्वतंत्र भोगों को भोगताहै और दाता और कुटुंबजनोंके पालनमेंखेदयुक्त और श्रेष्ठवृत्तिवाला और कुटुंबमें नियुक्तहोताहै ६ ॥ और जो केमद्रुम योगमें जन्मताहै सो स्त्री धनबधु मित्र जन और गृहवस्त्रोंकरके रहित और दरिद्रता और

अथैषांफलानि॥ श्रीमान्स्वबाहुविभवोबहुधर्मशीलःशास्त्रार्थवित्पृथुयशाःस्वगुणाभिरामः कांतःसुखीचनृपतेःसचिवोथवास्याज्जातःपुमान्विपुलधीःसुनफाभिधाने ॥ ४॥ वाग्मीप्रभुर्धनपतिर्विरुजःसुशीलोभोक्तान्नपानकुसुमांबरकामिनीनाम् ख्यातःसमाहितमतिश्चसमस्तचित्तोयोगेनिशाकरकृतेऽनफजेसुवेशः॥५॥ वाग्बुद्धिविक्रमगुणैःप्रथितःपृथिव्यांस्वातंत्र्यसौख्यधनवाहनभोगभागी दाताकुटुंबजनपोषणलब्धखेदःसद्वृत्तवान्धुरधराप्रभवोधुरिस्थः ॥ ६ ॥ कांतार्थबंधुगृहवस्त्रसुहृद्विहीनोदारिद्र्यदैन्यगदुःखमलैरुपेतः प्रेष्यःखलःसकललोकविरुद्धबुद्धिःकेमद्रुमेभवतिपार्थिववंशजोपि ॥ ७ ॥ केंद्रादिसंस्थैर्ग्रहैर्योगाःकीर्तितायेनफादयः तेप्रधानाःसमाःस्वाश्चंद्राल्पादैर्विचिंतयेत् ॥ ८ ॥ अथ कुजादिग्रहयुतसुनफायोगफलम् विक्रमवित्तप्रायोनिष्ठुरवचनश्चभूपतिश्चंडः हिंस्रोडिम्भविरोधीसुनफायांभौमयोगेन ॥ ९ ॥ श्रुतिशास्त्रगेयकुशलोधर्मरतःकाव्यकृन्मनस्वीच सीक्षेत्रसर्वहितोरुचिरतनुःसोमजेभवति ॥ १० ॥

दैन्य ताकरके युक्त और रोगदुःखकरके युक्त और दूत और दुष्ट और संपूर्ण लोकोंसे विरुद्धबुद्धि वाला और राजाके कुलमेंभी जन्माहुया ऐसा होताहै ७ और जो सुनफादि योगकहेहै सो ग्रहकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित पूर्णबल और पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । मे मध्यफल और आपोक्लिम । ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें अल्पफलकर्तहै ॥ ८ ॥ अब भौमादिग्रहोंका सुनफायोगकाफल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें चद्रमासे दूसरे स्थानमें मगल होवे सो बडापराक्रमी और धनी और निष्ठुरवाणीवाला और सेनापति और प्रचंड हिंसाके करणेवाला और बालकोंका विरोधी होताहै ॥ ९ ॥ और जिसके जन्ममें बुधचद्रमासे दूसरे स्थानमें होवे सो वेद शास्त्र और संगीतमें चतुर और धर्ममें रत और काव्यकरणे वाला और मनस्वी और सीमें और सेत्रमें हितवाला और सुंदररूप वाला होताहै ॥ १० ॥

ओर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाके दूसरेस्थानमें बृहस्पति होवे सो अनेक विद्याककें प्रसिद्ध राजा वा राजश्रीकर्केयुक्त और श्रेष्ठकुटुंब ओर धनकी समृद्धिकर्के युक्त होताहै ११ और जिसके जन्ममें चंद्रमाकेदूसरे शुक्रहोवे सो स्त्री ओर क्षेत्रकर्के युक्त और गृहपति होताहै ओर चुपायेजीवो कर्के युक्त ओर वडे पराक्रमवालीहोताहै ओर राजाके सत्कारकोंप्राप्त ओर श्रेष्ठवेशवाला ओर चतुरहोता है १२ ओर चंद्रमाके दूसरेस्थानमें शनिहोवेतब चतुरबुद्धिवाला ओर ग्रामपुरोंमें मान्य ओर धनकी समृद्धिवाला होताहै ओर क्रियामें गुप्त ओर मलीनहोताहै १३ अबभौमादिग्रहोंके अनफायोगकेफ लकहतेहे जिसके जन्ममें चद्रमाके बाहरमें स्थानमें मगलहोवे सो चोरोंकास्वामी ओर धनी ओर मानी ओर युद्धमेंप्रबल ओर ईर्षाकर्केयुक्त और क्रोधि और सुंदरदेहवालाहोताहै १४ और चंद्रमासें बाहरमें १२ बुधहोवेतबगंधर्वविद्याकेजाननेवाला औरलिखनेमेंचतुर ओर कवि ओर वक्ता ओर रा

नानाविद्याख्यातंनृपंनृपश्रीयुतंतथावापि सुकुटुंबधनसमृद्धंसुनफायांसुरगुरुः कुरुते ११ स्त्रीक्षेत्रवित्तगृहपश्चतुष्पदाढ्यःसुविक्रमोभवति नृपसत्कृतःसुवेशो दक्षःशुक्रेणसुनफायाम् १२ निपुणमतिर्ग्रामपुरेनित्यंसंपूजितोधनसमृद्धः सुनफा यांरविपुत्रेक्रियासुगुप्तोभवेन्मालिनः १३ ॥ अथकुजादिग्रहयुतानफायोगफ० चौरस्वामीदृप्तःसुधनीमानीरणोत्कटःसेर्ष्यः क्रोधीश्लाघ्यःसुतनुःकुजोऽनफा यांप्रगल्भश्च १४ गांधर्वलेख्यपटुःकविःप्रवक्तानृपाप्तसत्कारः रुचिरःसुभगो नयवान्प्रसिद्धकर्माबुधेनभवेत् १५ गांभीर्यसत्वसेवास्थानयुतोबुद्धिमान्नृपाप्त यशाःअनफायांत्रिदशगुरौसंजातःसत्कविर्भवतिः १६ युवतीनामतिसुभगःप्रण यीक्षितिपस्यगोपतिःकांतः कनकसमृद्धश्चपुमानऽनफायांभार्गवेभवति १७ विस्तीर्णभुजःसुभगोगृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः दुर्वनितागणभोक्तागुणसहि तःपुत्रवान्रविजे १८

जाकेसत्कारकोंप्राप्त ओर श्रेष्ठ भाग्योंवाला ओर नीतिके जाननेवाला होताहै १५ ओर चंद्रमासें बाहरमें १२ बृहस्पतिहोवे तब गंभीर ओर सत्वकर्केयुक्त सेवामेंयुक्तहोताहै ॥ ओर बुद्धि वाला राजासें यशकों प्राप्तहोने वाला ओर श्रेष्ठ कविहोताहै १६ ओर जिसके जन्मसयमें चंद्रमासें बाहरमें १२ शुक्रहोवे सो स्त्रियोंके सोभाग्य वाला ओर राजाकीप्रीति वाला ओर गौवोंकास्वामी और सुंदररूपवाला ओर सुवर्णकीसमृद्धी वाला होताहै १७ ओर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासें बाहरमें १२ शनि होवे सो वडेविस्तारवालीयोंभुर्यो वाला ओर शूरवीर ओर वाक्यकोंप्रमाण करणे वाला ओर चतुष्पदोंकी समृद्धी वाला ओर दुष्ट स्रीयोंके भोगने वाला ओर गुणों कर्के युक्त- ओर पुत्रोंवाला होताहै १८

॥ अथधुरधुरायोगकेफलकहतेहे ॥ जिसके जन्मकाल में चंद्रमा मंगल बुध केमध्यहोवे सो झूठबोलने वाला और बहुतधनवाला और बडाचतुर और गुणोंकर्के युक्त और लोभी और वृद्धस्त्रीमें सक्त और कुलमें मुख्यहोताहै ॥ १९ ॥ और जिसके जन्ममें मगलबृहस्पति-के मध्यमें चंद्रमा होवे सो कर्मोंमें प्रसिद्ध और धूर्त्त और बहुतधन और शत्रुओं कर्के युक्त और क्रोधी और ढीठ होताहै और रक्षाकरणे वाला और संग्रहकरणे वाला होताहै २० और जिसके जन्ममें मंगल शुक्रके मध्यमें चंद्रमाहोवे सो श्रेष्ठ भाग्यो वाला और विषादी और शस्त्रास्त्रोंके जानने वाला और शूरवीर होताहै और व्यायामकरणे वाला और युद्ध करणे वाला होताहै और जिसके जन्ममें शनिमंगलके मध्यमें चद्रमा स्थितहोवे सो निंद्यस्त्रीके रमणे वाला और बहु-

अथधुरधुराफलानि ॥ अनृतकोवहुवित्तोनिपुणोतिशठोगुणाधिकोलुब्धः वृद्धा सतीप्रसक्तःकुलाग्रणीःशशिनिभौमबुधमध्ये १९ ख्यातःकर्मसुकितवोवहुधनवैरः स्वमर्पणोधृष्टः आरक्षकःकुजगुर्वोःसंग्रहशीलःशशिनिमध्ये २० उत्तमरामा सुभगोविषादशीलोस्त्रविद्भवेच्छूरः व्यायामीरणशीलःसितारयोर्मध्यगेचंद्रे २१ कुत्सितयोषिद्रमणो बहुसिंचयकारकः श्वसनतप्तः क्रोधीपिशुनोरिपुमान्यमारयोः स्याद्धुरधुरायाम् २२ धर्मपरः शास्त्रज्ञोवाचाटः सत्कविर्भवेन्नृपतिः ॥ त्यागयुतेविख्यातोगुरुबुधमध्यस्थितेचंद्रे २३ प्रियवाक्सुभगः कांतः प्रनृत्य गेयादिविक्रयीनृपतिः सेर्प्यः सूरोमंत्रीबुधसितयोर्धुरधुरायोगे २४ देशादेशं गछतिवित्तवरोनातिविद्यासहितः चंद्रेन्येषांपूज्यः स्वजनविरोधीज्ञमंदयोर्मध्ये २५

सं चयकरणे वाला और वायु कर्के तप्तहोताहै और क्रोधी और चुगल और शत्रुओं कर्के युक्त होताहै २२ और जिसकेजन्ममें बुध बृहस्पतिके मध्यमें चंद्रमास्थितहोवे सो धर्ममें तत्पर और शास्त्रके जाननेवाला और वाचाल और श्रेष्ठकविः और राजा और त्याग कर्के युक्त और प्रसिद्धहोताहै २३ और जिसके जन्ममें बुध शुक्र केमध्य चंद्रमाहोवें सो मीठाबोलनेंवाला और श्रेष्ठभाग्योंवाला और सुंदर और नृत्यगीतोंके वेचनेवाला और बहुत मनुष्यों कालामि और ईर्षा कर्के युक्त औरशूरवीर और मंत्री होताहै २४ और जिसके जन्ममें बुध शनिके मध्य चंद्रमाहोवे सो देशदेशांतरमें फिरणेवाला और धन वाला और बडीविद्या कर्के नहियुक्त होताहै और मित्रोंकाविरोधी और जनों कर्के पूज्यहोताहै २५

और जिनके जन्ममें गुरुशुक्रके मध्यमेंचंद्रमा होवे सो धैर्यबुद्धिवाला और सुखकर्केयुक्त और नीतिके. जाननेवाला औरसुवर्णरत्नों कर्केपूर्ण और प्रसिद्ध और राजकेकरणेवालाहोताहै २६ और जिस केजन्ममें गुरुशनिकेमध्यमें चंद्रमाहोवे सो सुख और नीतीविद्याकर्के युक्त और मीठीवाणीवाला और विद्वानोंकाप्यारा और मान कर्केयुक्त और धनी और सुंदररूपवालाहोताहै २७ और जिसकेज न्मसमयमें शुक्र शनिके मध्यमें चंद्रमाहोवे तिसकोंवृद्धस्त्रीवाला और कुलमेंप्रधान और चतुर और स्त्रीकाप्यारा और धनकीसमृद्धिवाला कर्ताहै और राजाके सत्कारकों कर्ताहै २८ अबकेमद्रुमयोग. मेंविशेषकहतेहे जातकपारिजातसें जिसकेजन्मकालमे लग्नमे चंद्रमावा सप्तमस्थानमे स्थितहोवे और वृहस्पतिकीदृष्टिसे रहितहोवे तबकेमद्रुमहोताहे और जिसकेजन्मसमयमे संपूर्णग्रह अष्टवर्गमे चारासें दुसेंहीनहोवे और षड्बलमे पंचरूपसे हीनहोवे तबकेमद्रुमयोगहोताहै २९ और जिसकेजन्मसमय

धृतिमेधासौख्ययुतोनीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः ख्यातोनृपकृत्यकरोगुरुसि तयोर्धुरधुरायोगे ॥ २६ ॥ सुखनयविज्ञानयुतः प्रियवाग्विद्वान्सुवत्सलो. मान्यः स्वतोधनीसुरूपः चंद्रेगुरुभानुजांतःस्थे ॥ २७ वृद्धवनितंकुलाढ्यंनिपु णं स्त्रीवल्लभंधनसमृद्धम् नृपसत्कृतंविधेयंकुरुतेचंद्रःसितासितयोः २८ अथात्र प्रसंगात्केमद्रुमयोगेविशेषोक्तं जातकपारिजाते लग्नस्थितेहिमकरे यदिवास दस्थेकेमद्रुमोभवतिजीवदृशाविहीने अत्यल्पबिंदुसहितायदिखेचरेंद्राः केम द्रुयोगफलदाविबलाश्चसर्वे २९ चंद्रेसभानौयादिनीचदृष्टे पापांशकेयातिद रिद्रयोगंक्षीणेंदुलग्नान्निधनेनिशायांपापेक्षितेपापयुतेतथास्यात् ३० विधुंतुदा दिग्रहपीडितेंदौ पापेक्षितेचाशुदरिद्रमेति लग्नाञ्चतुष्केंद्रग्रहेसपापेनिशाकरा द्वायदितद्वदंति ३१ चंद्रेपराजितशुभग्रहदृष्टियुक्तेराव्हादिपीडिततनौतुदरि द्रएव नीचारिवीक्ष्यणयुतेरिपुराशिवर्गेचंद्रेतुलाधरगतेतुतथावदंति ३२ ॥

में चंद्रमा सूर्य कर्के युक्त वृश्चिकराशिमें और पापीग्रहके नवांशमेंस्थितहोवे तब दरिद्रयोगके मद्रुमहो ताहै और क्षीणचंद्रमा रात्रिके जन्ममें जन्मलग्नसें अष्टमहोवे और पापीग्रहों कर्के देख्या होवे तब केमद्रुमयोगकों प्राप्तहोताहै ३० और राहुसेंलेकर पापग्रहों कर्के चंद्रमापीडितहोवे और पापग्रहों कर्के देख्या होवे तब शीघ्रहिदरिद्रयोगकों प्राप्तहोताहे और लग्नसें वाचंद्रमासें केंद्रस्थानोंमें १।४।७।१०। पापग्रहस्थितहोवें तब दारिद्रयोगहोताहै ३१ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा राहुसें लेकर पापग्रहोंकर्के युक्तहोवे और पराजितजोशुभग्रहतिसकर्के देख्याहोवे तब दरिद्रयो गहोताहै और जिसके जन्ममें तुलाराशिकाचंद्रमाशत्रुवर्गमे स्थितऔरनीचग्रहकर्के औरशत्रुग्रहकर्के देख्याहोवे तब दरिद्रीहोताहै ३२

और जिसके जन्मसमयमेंकेंद्रमेंवा त्रिकोण ९ ५ में चंद्रमाहोवेऔर नीचऔर शत्रुकेवर्गमेंहोवे और चंद्रमासेंबाहरमें१२आठमें ८ छठे ६ स्थानमेंवृहस्पतिहोवेतवदरिद्रीहोताहै और चरराशिचरनवांशमें वापापीकेनवांशमें स्थितचंद्रमाशत्रुकर्केदेख्याहोवे और वृहस्पतिकीदृष्टिसेंहीनहोवेतवदवडादरिद्रीहोताहै ३३और नीच शत्रु पापग्रहके वर्गमें स्थित शनि औरवृहस्पति आपसमेंदेखते होवेंअथवा एकराशिमें स्थित होवें तवराजाके वंशमें जन्मनेवाला वीकेमद्रुमयोगकोंप्राप्तहोताहै ३४ और जिसके जन्मका लग्नमें पापग्रहकी राशिमें और पापग्रहकर्के युक्तचंद्रमाहोवे वापापीके नवांशमें चंद्रमा रात्रिके जन्ममें होवे और हीनवलीहोवे और दशमेश कर्के देख्याहोवे तवकेमयोगहोताहै और नीचनवांशमें स्थित चंद्रमापापीग्रहकर्के युक्तहोवे और नवमेशदेखताहोवे तवकेमद्रुमहोताहै और रात्रिके जन्ममें क्षीणच द्रमा वृश्चिकराशिमें होवे तवकेमद्रुमयोगहोताहै ३५ अवकेमद्रुमयोगकाभंगकहतेहे जिसके जन्म

केंद्रेवायदिकोणगेहिमकरेनीचारिवर्गस्थितेचंद्रादंत्यसपत्नरंध्रगृहगेजीवेदरिद्रो भवेत् पापांशेरिपुवीक्षितेचरगृहेचंद्रेचरांशेथवा जातोयातिदरिद्रयोगमतुलंदेवेज्य दृग्वर्जिते ३३ अन्योन्यदृष्टौशनिदानवेड्यौनीचारिपापग्रहवर्गयातौ एकर्क्षगौवा यदिराजवंशेजातोपिकेमद्रुमयोगमेति ३४चंद्रेपापयुतेतुपापभवनेपापांशकेवानि शिव्योमेशनिरीक्षितेगतवलेकेमद्रुयोगोभवेत् भाग्यस्थानपतीक्षितेखलयुतेनी चांशकेवृजेतथा चंद्रेनीचयुतेनिशिक्षयतनौजातस्यकेमद्रुमः ३५ अथकेमद्रुमभंगः निशाकरेकेंद्रगतेभृगौवाजीवेक्षितेनैवदरिद्रयोगः शुभान्वितेवाशुभमध्यगेवाजी वेक्षितेनैवदारिद्रयोगः ३६ चंद्रेतिमित्रनिजतुंगगृहांशकस्थेजीवेक्षितेयदिदरि द्रतयावहीनः पूर्णेतनौशुभयुतेविदितुंगजातेजीवेक्षितेहिमकरेनभवेद्दरिद्रः ३७ योगेकेमद्रुमेप्राप्तेयस्मिन्कस्मिंश्चजातके राजयोगाविनश्यंतिहरिंदृष्ट्वायथाद्विपाः ॥ इतिचंद्रयोगप्रकरणम् अथवोसिवेस्युभयचरीयोगाः ॥ सूर्याद्व्ययगैर्वोसि द्वितीयगैश्चंद्रवर्जितैर्वेसिः उभयस्थैर्ग्रहेंद्रैरुभयचरीनामतःप्रोक्तः १

समयमें चंद्रमावा शुक्रकेंद्र १ ४ ७ १० स्थानमें स्थितहोवें और वृहस्पतिकर्के देखेहोवें तव दरिद्रयो गनहिंहोताहै और अथवाचंद्रमा शुभग्रहकर्के युक्त वाशुभग्रहोंके मध्य वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रयोगनहिंहोताहै ३६ और चंद्रमा अधिमित्रके वा अपने उच्चकी राशिवानवांशमें स्थितहोवें और वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रताकर्के रहितहोताहै और पूर्णचंद्रमा शुभग्रहकर्के युक्त वुधके उच्चमें स्थितहोवे और वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे तव दरिद्रयोगनहिंहोताहै ३७ और कहतेहे जिसकि सीकेजन्मकालमें केमद्रुमयोगहोवे तवराजयोगनाशकोंप्राप्तहोतेहैं जैसेंशेरकों देखकर्के हाथीभागतेहै३८ इतिचंद्रयोगप्रकरणम् अववोसिवेस्युभयचरीयोगकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमाकेविनाकोई ग्रहसूर्य सें वाहरमें १२ स्थानमें स्थितहोवे तवदो सियोगकहाहै और सूर्यसें दूसरे स्थानमें कोई ग्रहचंद्रमाके विनास्थितहोवे तव वेशियोगहोताहै और सूर्यके दोनोंतर्फ ग्रहहोवें तव उभयचरीनामककेयोगहोताहै

अथवोस्यादियोगोंकाफलकहतेहे शुभग्रहके वोसिमे यो जन्मताहे सो चतुर और दाता और विद्या के आनंद करके युक्त और सुख धन यश बल करके युक्त होताहै और पापग्रहके वोसियोगमें जन्मे तो विदेश रत और बडामूर्ख और कामातुर और वधकीरुचिवाला और विकराल मुखवालाहोताहै २ और यो शुभग्रहके वेशियोगमें जन्मताहे सो श्रेष्ठवाणीवाला और धनी और भयरहित और शत्रुरहितहोताहे और पापग्रहकी वेशियोगमें दुष्टजनोंसें प्रीतिवाला और पापकरणेवाला और धन सुखादियोंकरके रहितहोताहे ३ और शुभग्रहोंकी उभयचरीयोगमें जन्मतेयोहे सो राजाके तुल्य धन सुख स्वभाव दयाकरके युक्तहोतेहे और पापग्रहोंकी उभयचरीयोगमें पापकरणेवाले और रो

अथैषांफलानि वोसौशुभग्रहयुतेनिपुणःप्रदाताविद्याविनोदसुखवित्तयशोव लाढ्यः पापान्वितेयदिविदेशगतोतिमूर्खःकामातुरोवधरुचिर्विकृताननःस्यात् २ जातःसुशीलःशुभवेसियोगेवाङ्मीधनीवीतभयोजितारिः पापग्रहेदुष्टजना नुरक्तःपापात्मकोवित्तसुखादिहीनः ३ सौम्यान्वितोभयचारिप्रभवानरेंद्रास्तत्तु ल्यवित्तसुखशीलदयानुरक्ताः पापान्वितोभयचरीयदिपापकृत्यारोगाभिभूत परकर्मरतादरिद्राः ४ अथांतरेविशेषः सूर्याद्व्ययेद्वितीयेऽमृतधरविगताःसौम्य पापाश्चखेटायोगोयंभूपतुल्योप्युभयचरिवरोभाषितोज्ञानदोहैः अत्येवोसिप्रासि द्धोधननिलयगतोवेसियोगःप्रशस्तः तस्यप्रांत्येद्वितीयेभवतिनखचरःकर्त्तरी सानशस्ता ५ इतिवोस्यादियोगाः अथनाभसायोगाः यवनाद्यैर्विस्तरतःकथिता योगास्तुनाभसानाम्नाअष्टादशशतसंख्यास्तेषांद्वात्रिंशदिहवक्ष्ये १ नौच्छत्रकू टकार्मुकशृंगाटकवज्रदामनीपाशाः वीणामुरुजोमुसलोवापीहलशरसमुद्रच क्राणि २ मालामर्दोर्धेंदुःकेदारगदाविहंगयूपाश्च युगशकटयूपदंडारज्जुःश क्तिर्यवोनलोगोलः ३

गकरके युक्त और परकर्ममेंरत और दरिद्रीहोतेहैं ४ और ग्रंथांतरमें विशेषकहतेहे सूर्यसें बाहरमें १२ और दूसरे २ स्थानमें चद्रमाके विना शुभपापी कोईग्रहस्थितहोवें तब उभयचरीयोग राजयोगके तु ल्य मुनियोंनेकहाहे और केवलसूर्यसें बाहरमे ग्रहहोवें तबवोसि और दूसरे स्थानमें होवें तबवेशि येहेशुभयोगहोतेहे और बाहरमें दूसरेस्थानमें सूर्यसें कोईग्रहनहिंस्थितहोवे तबकर्त्तरीयोगकहाहै सोशु भनहिंहोताहे ५ ॥ इतिवोस्यादियोगाः ॥ अथनाभसादियोगकहतेहैं यवनाचार्यादियोंनें विस्तारकरके अठारासो १८०० नाभसनामकरके योगकहेहैं तिनमें बत्ती ३२ योगमें इसग्रंथमें कहताहूं १ नौ का १ छत्र २ कूट ३

धनुः ४ शृंगाटक ५ वज्र ६ दामनी ७ पाश ८ वीणा ९ मुरुज १० मुसल ११ वापी १२ हल १३ शर १४ समुद्र १५ चक्र १६ माला १७ मर्द १८ अर्द्धशशी १९ केदार २० गदा २१ विहंग २२ यूप २३ युग २४ शकट २५ और यूप २६ दंड २७ रज्जु २८ शक्ति २९ यव ३० नल ३१ गोल ३२ इनोंबत्तीयोंयोगोंमें चराचर जगतका जन्महोताहै और माणित्थ ताजक के जाननेवाले मुसल और नल और रजुयोगोंको आश्रयजनककहतेहे ४ और गोल युग शूल केदार पाश दामनी वीणा इहेसातयोगपूर्वाचार्योंनें संख्यासंज्ञककहेहें ५ और दल और भुजंगमाला पराशरनेकहेहैं और वीसयोग औरोंनें सूर्यादियोंनें आकृतिसंज्ञावालेकहेहे ॥ ६ ॥ और कहतेहैं आश्रययोगमें जोजन्माहै सो राजा वासुखधनलाभकर्के युक्त होताहै और योगकर्त्ताग्रह और किसीग्रहकर्के मिले होवें तब आश्रययोगकाफलनहिंकर्तेहै ७ और जो मनुष्य आकृतियोगों

सचराचरस्यजगतोयोगैरेतैःप्रकीर्त्यतेप्रसवः आश्रयजातान्प्राहुर्माणित्थामुसलरज्जुनलयोगान् ४ गोलयुगशूलकेदाराख्याःपाशास्तुदामनीवीणाःसप्तैतेसंख्याताःपूर्वाचार्यैःसमुद्दिष्टाः ५ द्वेचदलयोगसंज्ञेभुजंगमालेपराशरेणोक्ते आकृतिजाताविंशतिरपरैःकथिताश्चसावित्रैः ॥ ६ ॥ आश्रययोगेजातोभूपतिरपि सौख्यधनलाभयुतः ॥ अन्येनामोश्रितास्तेविगतफलाःस्युस्तथायोगाः ७ नंदंतिस्वैर्भाग्यैर्नृपलब्धधनान्नृपप्रियाःख्याताः ॥ प्रायेणसौख्ययुक्ताश्चाकृतियोगेषुयेजाताः ८ परभाग्यलब्धसौख्याः परभाग्यैरेवजीवनंतेषाम् ॥ संख्यासंज्ञैर्जातायेपुरुषाःसर्वतोविकलाः ९ क्वचित्स्वभाग्यैःक्वचिदेवमेवक्वचित्परंभूपतितःफलंच ॥ क्वचित्सुखंदुःखमतीवकष्टंदलाख्ययोगेपुरुषोलभेत ॥ १० ॥ होरादिकंटकेभ्यःसप्तर्क्षगतैःक्रमेणयोगाःस्युःनौछत्रकूटकार्मुकानिर्दिष्टाःपूर्वयवनेंद्रैः ॥ ११ ॥

में जन्मतेहै सो विशेष कर्के सुखी और अनेकभाग्यों कर्के आनंदको प्राप्त और राजासें धनलाभको प्राप्त और राजाके प्यारे और प्रसिद्ध होतेहे ॥ ८ ॥ और जो मनुष्य संख्यासंज्ञिक योगों में जन्मतेहै सो दूसरेके भाग्यों कर्के सुखको प्राप्त होतेहै और दूसरेकेभाग्यों कर्के जीवकाकर्तेहै ॥ ९ ॥ और योमनुष्य पराशरोक्तदलयोगमें जन्मताहै सो किसीस्थानमें अपने भाग्योंसें और किसीस्थानमें दूसरेके भाग्योंसें और किसीकालमें राजाके सुखको और कवीसुख और कवी दुःखको प्राप्त होताहै १० अबनौकादियारयोगकहतेहे चारजोकेंद्रहैं तिनमें लग्नकेंद्रसें लेकर्के एकएककेंद्रसें सातराशियोंमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवे तब नौकादियार योगहोतेहे जैसें। १ । २ । ३ । । ४ । ५ । ६ । ७ । स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह होंमें तब नौका योग होताहै और अयसेंहि। ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ ॥ १० स्थानमें छत्र और ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १ ॥ स्थानमें कूट और ॥ १० ॥ ११ ॥

१२ । १ । २ । ३ । ४ । स्थानमे कामुक चापयोग यवनाचार्योंनेकहेहैं । ११ । अवयूपादिचारयोगकहतेहैं लग्नादिचारकेंद्रस्थानोसें क्रमकर्के चारघरमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवें तव क्रमसें यूप शर शक्ति दंड नाम कर्के योग होतेहै जैसें १ । २ । ३ । ४ । स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवें तव यूप योग और । ४ । ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ स्थानोंमें शर योग और ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ स्थानोंमें शक्ति योग और ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १ ॥ स्थानोंमें दंडयोगहोताहै ॥ १२ ॥ अवअर्धशशीयोगकहतेहैं पणफर ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ॥ और आपोक्लिम ॥ ३ ॥ ६ ॥ ९ ॥ १२ ॥ सेंलेकरसातघरोंमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवे तव अर्द्धशशीयोग होताहै सो आठप्रकारकाकहाहै ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवे तव एक ॥ १ ॥ और तीसरे सें नवम पर्यंत ॥ २ ॥ और पांचमेसें एकादशपर्यंत ३ और छठेसेंद्वादशपर्यंत ॥ ४ ॥ और अष्टमसेंदूसरे पर्यंत ५ और नवमसें तीसरे पर्यंत ६ और एकादशसें पांचमें पर्यंत ७ और द्वादशसें छठेस्थान पर्यंत संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव आठमा अर्धशशीयोग होताहै और गदायोगकहतेहैं समी

लग्नादिकेंद्रगेभ्यश्चतुर्भिरेकास्थितैर्ग्रहैर्योगाः ॥ यूपशरशक्तिदंडाःसत्याचारव्रतानित्यम् ॥ १२ ॥ सप्तर्क्षगैर्ग्रहेंद्रैःकेंद्रादन्यत्रकीर्त्तितोर्धशशी ॥ केंद्रस्यासन्नैर्भवनद्वयगैर्गदानाम १३ लग्नास्तयोश्चसौम्यैःपापैःसुखकर्मगैर्भवतिवज्रम् ॥ विपरीतैर्यवयोगोमिश्रैःपद्मोवहिःस्थितैर्वापी ॥ १४ ॥ होरास्तगतैःशकटंचतुर्थदशमाश्रितैर्विहगः उदयान्यगैस्त्रिकोणेहलंशृंगाटकंतदुभयस्थैः ॥ १५ ॥

पवर्त्तीदो केंद्रस्थानोंमें संपूर्णग्रहस्थित होवें तव गदानामयोग होताहै सोचार प्रकारकाहै लग्नचतुर्थमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवेंतव १ चतुर्थसप्तममें २ सप्तम दशममें ३ दशम लग्नस्थानमें संपूर्ण ग्रहहोवें तव ४ योगहोतेहै १३ अववज्रादिचारयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्न १ और सप्तमस्थानमें शुभग्रह और चतुर्थ दशमस्थानोंमे पापीग्रहहोवें तव वज्रयोग होताहै और विपरीत उलटे ग्रहहोनेंसें यवनामयोगहोताहै और शुभपाप दोनोंग्रहहोनेसें पद्मयोग होताहै और नवमैकादश और द्विद्वादश और त्रिपंचषष्ठाष्टमस्थानोंमें संपूर्ण ग्रहहोवें तव वापीयोग होताहै १४ और जिसके जन्मसमयमे लग्न । १ । और सप्तम । ७ ॥ स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव शकट नामकर्के योग होताहै और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ ४ दशम १० स्थानमें संपूर्ण ग्रहस्थित होवें तव विहग पक्षीयोग होताहै और जिसके जन्मकालमें लग्न १ पंचम ५ नवम ९ स्थानमें संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव हल योगहोताहै और लग्नकेविना और स्थानोंमें संपूर्ण ग्रहपरस्परत्रिकोण । ९ ५ में स्थितहोवें तव शृंगाटक योगहोताहै ॥ १५ ॥

सोतीनप्रकारका कहाहै । २ । ६ । १० ॥ स्थानमें । १ । और । ६ । ७ । ११ । में २ । और । ४ । ८ । १२ । स्थानमे ३ तीसरा होताहै और लग्नसें लेकर एक २ राशिके अंतरमें छै स्थानों में ग्रह स्थितहोवें तव चक्र योगहोताहै जैसे । १ । ३ । ५ । ७ । ९ । । ११ । स्थानों में संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव चक्र योगहोताहै और तैसेंहि धनभावसें लेकर । २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । स्थानमे सपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तव जलधि समुद्रयोगहोताहै ॥ १६ ॥ इहेविंशति । २० । संख्याककें आकृतिज योग लग्नकुंडलीमें इनयोगोंके नामस्वरूपककें जानेजाते हैं इसककें इनयोगोंकीसंज्ञा आकृतिजकहिहैं सोमेने इसग्रंथमें कहेहै और आश्रयजात योगोंको जैसें वृद्धगर्गके मतमें कहेहै तैसेंहिकहताहो ॥ १७ ॥ और नलमुसल रज्जु इहेतीनयोगकहतेहें द्विस्वभावराशिमें और चरराशिमें और स्थिरराशिमें क्रमककें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवे तव नलमुसल रज्जु इहेयोग क्रमककें होतेहें जेसें एकद्विस्वभाव राशिमें वा दो द्विस्वभावराशिमे वा तीनद्विस्वभावराशिमें वा चार द्विस्वभावराशियों में सपूर्ण ग्रह स्थितहोवें और चरस्थिर राशिया ग्रहों ककें रहितहोवें तव नलयोगहोताहै और तैसेंहि एक चरराशिमें वा चारहि चरराशियों में संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव मुसल

राश्यंतरितैर्लग्नात्षड्ग्रहसंस्थैर्भवेच्चक्रम् अर्थात्तथैवयातैश्चक्राकारोभवेज्जलधिः १६ इत्याकृतिजाएतेविंशतिसंख्यामयासमुद्दिष्टाः आश्रयजातान्वक्ष्येयथामतंवृद्धगर्गस्य १७ उभयचरास्थिरसंज्ञैःसर्वैर्नलमुसलरज्जवःक्रमशः केंद्रेषुसौम्यपापैर्मालासर्पश्चदलयोगौ १८ एकभवनादिसंस्थैःसख्यास्ख्याःस्युर्यथाक्रमंयोगाः गोलयुगशूलकेदाराख्याःपाशस्तुदामनीवीणा १९ एतेषांफलयोगंकथयामियथाक्रमंमुनिभिरुक्तम् सर्वदशास्वपिफलदाःसकलाह्येतेवुधैश्चिंत्याः २०

योगहोताहै और तैसेंहि एक स्थिर राशिमें वा दो तीन चार स्थिर राशियोंमें संपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव रज्जु योगहोताहै अवमाला सर्प दल योग कहतेहै जिसके जन्मसमयमें केंद्र । १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें शुभग्रहस्थितहोवें तवमाला योगहोताहै और केंद्रस्थानों में पापीग्रह स्थितहोवें तव सर्पयोगहोताहै जैसें केंद्रमें शुभग्रहहोवें और राशिया ग्रह रहित होवे तव माला योगकहाहै और पापग्रहहोवें तव सर्पयोगहोताहै और केंद्रमेहिशुभाशुभसपूर्ण ग्रहस्थितहोवें तव दलयोगहोताहै ॥ १८ ॥ अवगोलादिसातयोग कहतेहें जिसके जन्मकालमें सातग्रह एकस्थानमें स्थितहोवें तव गोलयोगहोताहै और सातग्रह दो राशिमें स्थितहोवें तव युग योगहोताहै और सातग्रह तीनराशिमें स्थितहोवें तव शूल योगहोताहै और सातग्रह चारराशिमें स्थितहोवें तव केदारयोगहोताहै और सातग्रह पांचराशिमें स्थितहोवें तव पाशयोगहोताहै और सातग्रह छै राशिमें होवें तव दामनी योगहोताहै और सातग्रह सातराशिमें होवें तव वीणायोगहोताहै ॥ १९ ॥ और इनों योगोंका फलयथाक्रमककें जैसें मुनियोंने कहाहै तैसें कहताहों इहेयोग सर्वदाकाल फलदेतेहैं ॥ २० ॥

अवपूर्वोक्तयोगोंकाफलकहतेहैं ॥ जोमनुष्यनीकायोगमेजन्मताहैसोजलकर्के उपजीवकाकरणेवालाऔरऐश्वर्यकोप्राप्तहोताहै औरवडाउद्यमकरणेवाला औरयशवाला औरप्रसन्नहोताहै औरकृपण औरवली औरलोभीहोताहै ॥ २१ ॥ औरजोकूटयोगमें जन्मताहै सोझूठवोलनेवाला औरधूर्त औरवंधनकोप्राप्त औरवलवान् औरधनहीन औरशठ औरक्रूर औरपर्वत औरवनोंमेंवासकरणेवालाहोताहै ॥ २२ ॥और-योछत्रयोगमेजन्मताहै सोअपनेसंबंधियोंसेंमिलनेवाला औरदयावान् औरदाता औरराजाकाप्याराऔरश्रेष्ठवुद्धिवाला औरप्रथम और अंत्यअवस्थामेश्रेष्ठभाग्योंवाला औरवडीआयुषावालाहोताहै २३॥ औरयोकार्मुकयोगमें जन्मताहै सोझूठवोलनेवालाऔरगुप्तपापकरणेवाला औरचोरऔरधूर्तऔरवनमेंरत और मध्य अवस्थामें भाग्योंकर्केरहितहोताहै ॥ २४ ॥ और यो अर्धचंद्रयोगमेंजन्मतेहैं सो

अथपूर्वोक्तयोगफलानि ॥ सलिलोपजीविविभवाव्हायासख्यातकीर्तयोहृष्टाः कृपणावलिनोलुब्धानोसंभूताश्चलाःपुरुषाः ॥ २१ ॥ आनृतिककितववंधनमक्षानिष्किंचनाःशठाःक्रूराः ॥ कूटसमुत्थानित्यंभवंतिगिरिदुर्गवासिनोमनुजाः ॥ २२ ॥ स्वजनाश्रयोदयावान् दातानृपवल्लभःप्रकृष्टमतिः ॥ प्रथमेंत्येवयसिनरःसुभगोदीर्घायुरातपत्रीस्यात् २३ आनृतिकगुप्तपापाश्चोराःकितवाश्चकाननेनिरताः ॥ कार्मुकयोगेजाताभाग्यविहीनावयोमध्ये ॥ २४ ॥ सुभगाःसेनापतयःकांतशरीरानृपप्रियावलिनः मणिकनकभूषणयुताभवंतियोगेर्धचंद्राख्ये ॥ २५ ॥ आद्यंतवयःसुखिनःशूराःसुभगानिरोगदेहाश्च ॥ भाग्यविहीनामध्येवज्रेजाताःखलैर्विरुद्धाश्च ॥ २६ ॥ व्रतनियममंगलरतावयसोमध्येसुखार्थपुत्राढ्याः दातारःस्थिरचित्तायवयोगभवाःसदापुरुषाः ॥ २७ ॥ स्फीतयशाःसुगुणाढ्याश्चिरायुषोविपुलकीर्त्तयःकांताः शुभशतकृत्पृथिवीशाः कमलभवामानवानित्यं ॥ २८ ॥

श्रेष्ठभाग्योंवाले और सेनाकेस्वामि और सुंदरदेहवाले और राजाकेप्यारे और वलीहोतेहैं और मणियासुवर्ण भूषणोंकर्केयुक्तहोतेहैं ॥ २५ ॥ और जोवज्रयोगमें जन्मतेहैं सो आद्य और अंत्य अवस्थामें सुखी और शूरवीर और श्रेष्ठभाग्योंवाले और निरोगदेहवालेहोतेहैं और मध्यअवस्थामें भाग्योंकर्केरहितहोतेहैं और दुष्टोंकर्के विरोधीहोतेहैं ॥ २६ ॥ और जोमनुष्ययवयोगमें जन्मतेहैं सोव्रत और नियमोंकेमंगलमेंरतहोतेहैं और मध्यअवस्थामें सुख धन पुत्रोंकर्केयुक्तहोतेहै और दाता और स्थिरचित्तवालेहोतेहैं ॥ २७ ॥ और जोमनुष्यकमलयोगमें जन्मतेहैं सोवडेयशवालेऔरश्रेष्ठगुणोंकर्केयुक्त और वडीआयुषावाले और वडेसुंदरदेहवालेऔरअनेकशुभकर्मोंकर्केकरराजाहोताहै २८

श्रौर जोमनुष्यवापीयोगमें जन्मतेहै सोनिधिउत्पन्नकरणेमेंचतुरवुद्धिवालेहोतेहैं श्रौर स्थिर धन श्रौर सुख श्रौर सपदाकर्केयुक्त श्रौर भलीप्रकारतृप्तहोतेहे श्रौर नीतिकेसुखकर्केप्रसन्नहोतेहैं ॥ २९ ॥ श्रौर जोमनुष्यशकटयोगमेंजन्मतेहै सो रोगकर्केपीडित श्रौर खोटीयोंस्त्रीयोंवाले औरमूर्ख और गड्डां वाहकर्के जीवकाकारणेवाले और धनहीन और सबंधियोंकर्के और मित्रोंकर्केहीनहोतेहैं ३० ॥ श्रौर यो मनुष्य विहगयोगमें जन्मतेहै सो भ्रमणेकी इच्छावले श्रौर निंद्य श्रौर दूरवृत्तिके करणे वाले श्रौर अधिकारियों के श्रागे कामकरणेवाले श्रौर प्रसन्नरहने वाले श्रौर लडाई करणेमें प्रीतिवाले होतेहैं ३१ श्रौर योमनुष्यगदायोगमें जन्मतेहे सो निरंतर उद्योगकर्के धनवान्होतेहैं श्रौर यज्ञ करणे वाले श्रौर शास्त्रमें श्रौर गायनमें चतुर होतेहैं श्रौर धन रत्न सपदा कर्के युक्त होतेहैं ३२ ॥

निधिकरणेनिपुणधियःस्थिरार्थसुखसंयुताःसुतृप्ताश्च ॥ नयनसुखसुहृष्टा वापीयोगेनराजाताः ॥ २९ ॥ रोगार्त्ताःकुकलत्रामूर्खाःशकटानुजीविनोनिःस्वाः ॥ स्वजनैर्मित्रैर्हीनाःशकटेजाताभवंतिनराः ॥ ३० ॥ भ्रमणरुचयोनिकृष्टादूताःसुरतानुजीविनोहृष्टाः कलहप्रियाश्चनित्यंविहगेयोगेनराजाताः ३१ सततोद्युक्तार्थपरायज्वानःशास्त्रगेयकुशलाश्च धनकनकरत्नसंपत्संयुक्तामानवागदायांतु ३२ प्रियकलहसमरसाहससुखिनोनृपतिप्रियाःसदाकांताः आढ्यायुवतिद्वेष्याःशृंगाटकसंभवामनुजाः ३३ वव्हाशिनोदरिद्राःकृषीवलादुःखिताश्चसोद्वेगाः बंधुसुहृद्भिस्त्यक्ताःप्रेष्याहलसंज्ञितेपुरुषाः ३४ प्रणताशेषनराधिपकिरीटरत्नप्रभास्फुरत्पादः भवतिनरेंद्रोमनुजश्चक्रेयोजायतेयोगे ३५ वहुधनरत्नसमृद्धैर्भोगैर्युवतीजनाप्रियाविसुताः उदधिसमुत्थाःपुरुषाःस्थिरचित्ताःसाधुशीलाश्च ३६

श्रौर योमनुष्य शृंगाटकयोगमे जन्मतेहैं सो लडाईमें प्रीतिवाले श्रौर युद्धके उत्साहकर्के सुखी श्रौर सर्वदाकालराजाके प्यारे श्रौर सुंदर देहवाले होतेहै श्रौर धनाढ्य श्रौर स्त्रीके द्वेषी होतेहे ॥ ३३ ॥ श्रौर योहलयोगमे जन्मतेहैं सो वहुत भोजनकरणे वाले श्रौर दरिद्री श्रौर खेतीके करणेवाले श्रौर दुःखी श्रौर उद्वेगकर्के युक्त श्रौर मित्र वंधुयों कर्के त्यागकिये हुये होतेहैं ॥ ३४ श्रौर यो मनुष्य चक्रयोगमे जन्मताहे सो श्रनेक राजयोंके किरीट मुकुटों कर्के शोभायुक्त होतेहै पाद जिसके श्रर्थात् वडे वडे राजाप्रणामकरेंहैं जिसको श्रसा राजाहोताहै ॥ ३५ श्रौर जोसमुद्रयोगमे जन्मतेहैं सो वहुत धन श्रौर रत्नों की समृद्धि कर्केयुक्त श्रौर स्त्रीजनोंकेप्यारे श्रौर पुत्रहीनहोतेहैं श्रौर स्थिर चित्त श्रौर श्रेष्ट स्वभाववाले होतेहे ॥ ३६ ॥

श्रौरयोमनुष्ययूपयोगमेजन्मताहैसोश्रात्मवेत्ताहोताहै श्रौरयज्ञकर्ममेंरतहोताहैश्रोरत्यागीहोताहैश्रौर सत्य शौचकर्केयुक्तहोताहैश्रोरव्रत श्रोरानेयमश्रोरमंत्रमेंरतहोताहैश्रोरश्रेष्ठहोताहै ३७ श्रौरयोमनुष्यशरयोगमे जन्मताहैसो वाणवनानेवालाश्रोरचौरादियोंकोवाधने वाला श्रौर मृगों केसाधनकोंसेवनेवाला श्रौर मांस भोजनकरणे वाला श्रौर हिंसाके करणे वाला श्रौर खोटे घाएके करणे वाला श्रौर खोटे स्व भाववाला होताहै ॥ ३८ ॥ श्रौर यो मनुष्यशक्तियोगमे जन्मताहै सो धनकर्के रहित श्रौर व्या, कुल श्रौर दु:खीहोताहै श्रौर नीच श्रौर श्रालसी श्रौर वडी श्रायुषवालाहोताहै श्रौर संग्रामकर्म. मेंचतुर श्रौर स्थिरभाग्यों वाला होताहै ॥ ३९ ॥ श्रौर यो मनुष्यदडयोगमें जन्मताहै सो विष. मस्वभाववाला श्रौर क्रूर श्रौर धन हीन श्रौर निर्लज्ज श्रौर श्रेष्ठजनोंसें वाहर श्रौर दुःखी श्रौर नीच; श्रौरदूरवृत्तिवालाहोताहै ४० श्रौरयोमनुष्यमालायोगमेंजन्मताहैसोनित्यप्रतिसुखकोंप्राप्तश्रौरवाहनश्रौर

श्रात्मविदिज्यानिरतास्त्यागयुताःसत्यसौख्यसंपन्नाः व्रतनियममंत्रनिरता यूपेजाताविशिष्टाश्च ३७ ॥ इपुकरणदस्युवंधनमृगसाधनसेविनोतिमांसादाः हिंस्रा.कुशल्पकराःशरयोगेसाधुशीलाश्च ॥ ३८ ॥ धनरहिताविकलदु.खितनीचाश्रलसाश्चिरायुपःपुरुपाः ॥ संग्रामयुद्धनिपुणाःशक्त्यांजाताःस्थिरा.सुभगाः ॥ ३९ ॥ विपमाःक्रूराःनि.स्वाःसर्वेसुनिर्घृणाःसुजनवाह्याः दुःखितनीचप्रेष्यादंडप्रभवाभवतिनराः ॥ ४० ॥ नित्यंसुखप्रधाना वाहनवस्त्रार्थभोगसंपन्नाः सुभगाःसुवहुस्त्रीकामालायांसंप्रसूताःस्युः ॥ ४१ विषमाःक्रूरानि.स्वानित्यंदु.खार्दिता.सुदीनाश्च ॥ परभक्ष्यपानानिरताःसर्पेजाताभवंतिनराः ४२ अधमप्रियाःसुरूपा.परदेशेष्वर्थभाजिनोमनुजाः ॥ क्रूराःखलस्वभावारज्जुप्रभवःसदाकथिताः ४३ मानज्ञाधनयुक्ताःकर्मोद्युक्तानृपप्रिया ख्याताः ॥ वहुपुत्रा स्थिरचित्तामुसलसमुत्थाभवंतिनराः ४४ क्रूरातिरिक्तदेहाधनसंचयभागिनोतिनिपुणाश्च ॥ वन्धुहिताश्चसुरूपानलयोगे संप्रसूयंते ४५

वस्त्रश्रौरधनश्रोर भोगोंकर्केयुक्त होता है श्रौर श्रेष्ट भार्यौवाला ऊौर वहुतस्त्रीयोंवाला होताहै ॥ ४१ श्रौर जो मनुष्य सर्प योगमें जन्मतेहे सो खोटेस्वभाववाले श्रोर क्रूर श्रोर नित्यप्रतिदु.खकर्के पीडित श्रौर दीनहोतहे श्रौर दूसरोंके श्रन्नजलकों भक्षण करणेवाले होतेहैं ॥ ४२ ॥ श्रोर जो रज्जुयोगमे जन्मतेहैं सो नीचोंसे प्रीतिकरणे वाले श्रौर सुदररूपवाले श्रौर परदेशसें धनको प्राप्त होनेवाले श्रौर क्रूरदुष्टस्वभाववाले होतेहैं ४३ ॥ श्रोर जो मनुष्य मुसलयोगमें जन्मतेहे सोमानकेजाननेवाले श्रौर धनकर्के युक्त श्रोर कर्मोमे उद्यमकरणे वाले श्रौर राजाकेप्यारे श्रोर प्रसिद्ध श्रोर वहुतपुत्रोंवाले श्रौर स्थिर चित्तवाले होतेहैं ॥ ४४ ॥ श्रौर जो मनुष्य नल योगमें जन्मतेहैं सो वडेक्रूर श्रौर स्थूदेहवालेश्रोरधनसचयकरणेवालेश्रोरवडेचतुरहोतेहैंश्रोरवंधुयोंकेप्यारेश्रौरसुदररूपवाले होतेहैं ४५

श्रोर जो गोलयोगमें जन्मतेहैं सो वलकर्के युक्त श्रौर धनराहित श्रौर विद्यामा. नकर्के रहित श्रोर मलोन होतेहैं श्रोर नित्यप्रतिदुःखी श्रौर दीनहोतेहैं ॥ ४६ ॥ श्रौर जो युगयोग, में जन्मतेहै सो पखंडी श्रोर धनहीन श्रोर जातिसें वाह्य श्रोर पुत्र मानधर्मसें रहित होतेहै ॥ ४७ ॥ श्रोर योमनुष्य शूलयोगमें जन्मतेहै सो वडे तीक्ष्ण श्रोर धनकर्के हीन श्रोर हिंसाके करणेवाले श्रोर श्रंगोंमें घाऊं वाले श्रोर वडे शूरवीर होतेहै श्रोर युद्धकरणे कीइछावाले होतेहै ॥ ४८ ॥ श्रौर योम नुष्य केदारयोगमें जन्मतेहै सो वहुत जनोकर्के युक्त श्रोर खेतीयों के कृत्यमें वली श्रौर सत्यवादी श्रोर श्रेष्टभाग्योंवाले श्रोर धनकर्के युक्त होतेहै ॥ ४९ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें पाशयोग होताहै

वलसंयुक्ताविधनाविद्याज्ञामानवर्जितामलिनाः ॥ नित्यंदुःखितदीनागोले योगेभवंतिनराः ॥ ४६ ॥ पाखंडभागिनोवाधनरहितावावहिष्कृतायोगे सुतमानधर्मरहितायुगयोगेमानवाजाताः ॥ ४७ ॥ तीक्ष्णालसाध नहीनाहिंस्त्राःसुवहुक्षतामहाशूराः ॥ संग्रामलब्धशब्दाःशूलेयोगेप्रसूयंते ४८ सुवहूनामुपयोज्याःकृपीवलाःसत्यवादिनःसुभगाः ॥ केदारेसंभूताश्चलप्रभा वाधनैर्युक्ताः ४९ पाशेवंधनभाजःकार्यदक्षाःप्रपंचकाश्चैव ॥ वहुभागिनोवि शीलावहुभृत्याःसंप्रसूतास्युः ५० दामिन्यामुपकारीपशुगणयुक्तोधनेश्वरो मूढः ॥ वहुसुतरत्नसमृद्धोधीरोवैजायतेविद्वान् ५१ प्रियगीतनृत्यवाद्या निपुणाःसुखिनश्चधनवंतः ॥ नेतारोवहुभृत्यावीणायांकीर्त्तिताःपुरुषाः ५२ ॥ इतिनाभसयोगप्रकरणम् ॥

सो वंधन को प्राप्त होताहै श्रोर कार्यमें चतुर होताहै श्रोर प्रपंची होताहै श्रोर वहुभागी होताहै श्रोर खोटे स्वभाववाला होताहै श्रोर वहुत चाकरों वाला होताहै ॥ ५० ॥ श्रोर योमनुष्य दामिनी, योगमें जन्मताहै सो उपकारी होताहै श्रोर पशुवोंके समूहसें युक्त होताहै श्रोर मूढ होताहै श्रोर धन कास्वामी होताहै श्रोर वहुत पुत्र श्रोर रत्नोंकीसमृद्धि वाला श्रोर धैर्य वाला श्रोर विद्वान् होताहै ५१ श्रोर जो मनुष्य वीणा योगमें जन्मतेहै सो गीत श्रोर नृत्य श्रोर वाद्य कर्के प्रीतिवाले होतेहै श्रो चतुर श्रोर सुखी श्रोर धनवाले होतेहैं श्रोर नीतिके जाननेवाले श्रोर वहुत चाकरोंवाले होतेहैं ५२ ॥ इतिनाभसयोगप्रकरणम् ॥

अवताजकमें शुभाशुभयोगकहतेहैं तिसमें प्रथम नेत्रनाशनेत्रचिन्हयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्न में स्थित चंद्रमा कर्क और मेषके नवांशमेंहोवे और वृषके नवमांशमें और धनके पूर्वनवांशमें होवे तब दृष्टिकर्के हीन होताहै, और वृषके उनीमें अंशमें और मीनके वीमें अंशमें लग्न गतचंद्रमाहोवे. तब दृष्टिहीन होताहै और जिसके जन्मकालमें कर्क राशिके सूर्य चंद्रमा लग्नमें स्थित होवें और सिंहके दशअंशसें लेकर सतारां अंशपर्यंत स्थित होवे तब दृष्टिहीन होताहै अथवा सूर्य चंद्रमाक' न्यालग्नमें स्थित चतुर्थ ४ और एकोन विंशति विंशति एकविंशति ॥ ४ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ अंशोंमें स्थित होवें तब दृष्टिहीन होताहै १ और धनराशिमें सूर्य चंद्रमा लग्नगतहोवें और नवमें एकाविंशति और द्वाविंशति अंशमें स्थित होवें तब दृष्टिहीन होताहै और कुंभराशिमें लग्नगत सूर्य चंद्रमा विंशति एकविंशति और द्वाविंशति और पांचमें अंशमें स्थित होवे तब दृष्टिहीन होताहै

अथताजकेशुभाशुभयोगाः ॥ तत्रनेत्रनाशनेत्रचिन्हयोगाः ॥ कर्केजोऽक ९ लवेवृपेचनवमेचापादिकेह्यंशकेथोलग्नस्थविधौवृपांऽत्यलवयोश्चैकोनविंशाद् द्वये १९। २० ॥ कर्केसूर्यविधूतनौहरिदिगंशात्सप्तभागस्थितौ कन्यालग्नग तौयुगातिधृतिविंशस्वर्गभागस्थितौ १ गोस्वर्गाकृतिभागगौतनुगतौतौचापविं शात्त्रये कुंभाद्येचलवेशरेपुचतथानिःप्राणदृष्टिःस्मृता क्षीणेंदुचगुरुर्नपश्यति शनिःपश्येद्धनेर्केखलौस्थेइनभाद्व्युनगौचस्वगतइंदुर्वीक्ष्यतेल्पाक्षिणी २ क्रूरे तनौतनुपतावशुभास्थितेचक्रूरद्वयांतरगतौयदिचंद्रसूर्यौ जातस्तदांधइनराश्रि पयोद्युनेस्वर्क्षंद्रात्तुपष्ठउदितश्चभवेत्तदांधः ३ कर्मप्रकाशेविशेषः ॥ पड्भ्योद शांतंवृपभेग्रहेभ्यस्तिथ्यंतमंधामिथुनेचभागाः ॥ कर्केहरौचस्मृतिभाष्टविंशा अलोभनागाक्षिमृगांककाष्टा ४

और जिसके जन्मसमयमें क्षीण चंद्रमाकों बृहस्पतिनदेखता होवे और शनिदेखताहोवे तब थोडी दृष्टि वाला होताहै और धन २ स्थानमें सूर्य स्थित होवे अथवा सूर्यसें दूसरे स्थान दोपापीग्रह होवें अथवा धन २ स्थानमें स्थित चंद्रमाकों पापीग्रहदेखे तब थोडीदृष्टिवालाहोताहै २ और जिसके जन्मकालमें लग्नपतिक्रूरराशिमें अष्टमस्थानहोवे अथवा चंद्रमा सूर्य क्रूरग्रहोंके अथवा सूर्य चंद्रमासें सातमें ७ स्थान मंगलहोवे तब अंध होताहै और चंद्रमासें छठेस्थानमें भोमउदितहोवे तब अंधहोताहै ३ अबकर्मप्रकाशमें अधकाणयोग जाननेकेवास्ते अंध अंशकहतेहैं वृषराशिमें छठे अंशसें लेकर दश पर्यंत अंधभागहोतेहै और मिथुनमें नव अंशसें लेकर पंद्रांअंश पर्यंत अंधभागहोतेहैं और कर्क और सिंहराशिमें अष्टादश १८ सप्तविंशति २७ अष्टाविंशति २८ इहे अंधभागहोतेहै और वृश्चिकमें सप्तविंशति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशति ॥ २८ प्रथम १ दशम १० अंधभागहोतेहैं ४

और मकरमें छवीसें ॥ २६ ॥ लेकर उन्नी ॥ १९ ॥ पर्यंत त्रयी अध भागहोतेहैं और वृष राशिमें अष्टम । ८ । दशम । १० । अष्टादश १८ एकोनविंशति १९ इहे अवभागहोतेहे इहे, यो अंधभागकहेहे सो चंद्रमा सूर्यकेजानने योग्यहैं ५ और क्षीण चद्रमामें विशेष कहतेहैं वृषमें एकविंशति १२ द्वाविंशत् २२ एकोनत्रिंशत् २९ अवभागहोतेहे और कर्कराशिमें एकोनविंशति १९ विंशति ॥ २० ॥ अंधभागहोतेहैं और सिंहराशिमें दशसें लेकर सोलापर्यंत अधभागकहेहैं और कन्यामें उन्नीसें लेकर इकी पर्यंत अधभागहोतेहैं ॥ ६ ॥ और धन राशिमें बीससें लेकर त्रयी पर्यंत अंधभागहोतेहैं ॥ और कुंभमें प्रथम १ द्वितीय २ चतुर्थ ४ पचम अधभागहोतेहे और चंद्रमा सूर्यकी राशिमें स्थित अधभागोंकों भली प्रकार देखके, और ग्रहोंकी दृष्टिसें फलकों कहे ॥ ७ ॥ अवफलकुहतेहैं इहेपूर्वकहेजो अधभागइनमें स्थित चंद्रमा और सूर्यलग्नगतहोवें अथवादूसरे वाहरम स्थानमें स्थित होवें तवनेत्राकानाशकर्त्ताहे ८ और जव चद्रमा सूर्य गुरु और शुक्रकर्के देखे होवें तव

मृगेंद्रवाहप्रभृतंनवद्विप्रांतोघटेष्टौदशहस्तिचंद्राः ॥ नवोडुपौचेतिविवस्वतोंऽटौ भागाभवेयुर्द्वितयस्यचांधाः ५ क्षीणविधौचैककरवाहुनेत्रग्रहद्विचांशावृषभेथकर्के नवेंदुविंशोदशतोनृपांतंहरोस्त्रियांनदशत्रयंच ६ चापेनखाद्यंत्रिभुजांत्यमाद्यद्वि तुर्थ्यपंचापिघटेंधभागाः सम्यग्विलोकयेंदुरविस्थराशीन्फलंवदेद्दृष्टिवशाद्ग्रहा णाम् ७ एतेपुचांधभागेपुचंद्रसूर्यौतुलग्नगौद्वितीयद्वादशस्थौचेन्नेत्रनाशस्तथाभवेत्
८ यदातौगुरुशुक्राभ्यांदृष्टौचेत्स्वल्पदोषतः वुधेनतिमरांधः स्यात्पापैर्दृष्टैर्विना शकृत् ९ भूर्द्वेखेवाक्रूरितायेशदग्धास्तेभ्योदोषःस्यात्स्फुटोभूम्यधोन्यः सूर्येंदुभ्यांचेतिपापानुसारात् व्यक्ताव्यक्तौदक्षवामाक्षिदोषौ १० भूर्द्वेचंद्रे क्रूरितेनक्तमक्ष्णोर्दक्षस्यार्त्तिर्भास्करेचापरस्य षष्ठेचेदोसौम्यदृग्योगवर्ज्ये लग्नेषष्ठेशेसितेरुक्शुभैश्च ११ षष्ठाधांशेवक्रतर्क्षेक्षिरोगोलग्नेवास्मिन्म दृष्टेकफात्मा

धोडादोपकर्तहैं और वुधकर्के देखेहोवे तब रात्रिमें अधताकर्तहे और पापीग्रहों कर्के देखेहोवे तवने त्रनाशकर्तहे ९ और कहतेहैं भूर्द्वेति चतुर्थभावके भुक्तांशसे लेकर दशम भोग्यांश पर्यंत क्षीणचद्रमा वा दग्धनष्टचद्रामा स्थितहोवे तव वामनेत्रका नाशकर्त्ताहै और चतुर्थ भावके भोग्यांशसें लेकरदश मभावके भुक्तांशपर्यंत चद्रमास्थितहोवे तव वामनेत्रमें प्रगट दोषकर्त्ताहे और इसीप्रकार कर्के सूर्यस्थि तहोवे तवदक्षिणनेत्रम चिन्हकर्त्ताहे और इसीप्रकार सूर्य चद्रमासे दक्षिणवामनेत्रमें पापग्रहोंकीदृष्टि से प्रगट और गुप्तचिन्हकहे १० और चद्रमा भूर्द्वेमें स्थित और पापीग्रहकर्के पीडितरात्रिके जन्म में दक्षिणनेत्ररोग कर्त्ताहे और इसीप्रकार सूर्य होवे तव वामनेत्रम रोगकर्त्ताहे और छठेस्थानमें चद्र माशुभ दृग्योग हीन नेत्ररोगकर्त्ताहै और षष्ठेशशुक्रलग्नमें स्थितहोवे और शुभग्रहदर्शीहोकर्के ६ । ८ । १२ स्थानमें होवें तवनेत्ररोगीहोताहे ११ और षष्ठेशचंद्रमा वक्रीग्रहकीराशिम होवे तवने त्ररोगीहोताहै

और षष्ठेशचंद्रमा शनिकर्के देख्याहोवे तब श्लेष्मविकारसें और मंगल कर्के देख्याहोवे तब तापसें और गुरु शुक्र बुध कर्केदेख्याहोवे तब क्रमसें सोफादिविकार कर्के अंध होताहै १२ और कहतेहें लग्नादित्येति लग्न और चंद्रमा सूर्य क्रूरग्रहोंकर्के युक्त होवें तब अंध योगहोताहै और लग्न शुभस्थानमें होवे और लग्नेश और सूर्यक्रूर युक्त छठे स्थानमें होवें तब अंधयोगहोताहै और क्रूरलग्न षष्ठेश कर्के वा मगल कर्के युक्त होवे तब अंधयोगहोताहै और लग्नेश वक्रीहोय कर्के चंद्रमासें बाहरमें स्थानमें स्थितहोवे तब अंधयोगहोताहै २१ चद्रादित्याविति चंद्रमासूर्य तीसरे वा केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवें तब अंधयोगहोताहै अथवा मंगल केंद्रमें स्थितपापग्रहोंकर्के देख्या होवे तब अंधयोगहोताहै और शुभग्रह छठे अष्टमें बाहरमें स्थानमें होवें और चद्रमासूर्य तीसरे वा केंद्रमें स्थित क्रूरदृष्ट होवें तब अंधयोगहोताहै और मकरकुंभराशिमें सातमें स्थनमें सूर्यस्थित होवे तब अंधयोगहोताहै १४ सूर्यइति सूर्य वा चंद्रमा अंधकारांशमें स्थितहोवें तब अंधयोगहोताहै और दिनके जन्ममें भृगुपरि सूर्य चतुर्थसें दशमपर्यंत सूर्यस्थितहोवे क्रूर कर्के देख्याहोवे तब दक्षिण नेत्रनें काणा होताहै और षष्ठेश चद्रमा होवें क्रूरोंकर्के दृष्ट और शुभदृष्टिसें हीन तबदक्षिण नेत्रसें

भौमेजेविभार्गवेज्ञेसचंद्रेतापाच्छोफात्श्लेष्मतः शस्त्रतोंधः ॥ १२ लग्नादित्याव्जत्रयेक्रूरमध्येलग्नाधीशेक्रूरितेनोदयेशे. षष्ठेक्रूरेलग्नगेतद्वभौमे षष्ठेशेवावक्रतेस्मिन्विधूधं १३ चंद्रादित्यौविक्रमेकेंद्रगौवाभौमेकेंद्रेचेदसौम्यंक्षेगेवा क्रूरैर्दृष्टैरंध्रपष्ठांत्यगाः स्युःसौम्यःसूर्येऽस्तेर्कपुत्रगृहेवा १४ सूर्येचंद्रेवांधकारांशमध्येचक्षुर्नाशोऽब्जेसभौमेन्हिशुक्रे युक्तेमंदेनासितेर्केचपुण्येसौम्येदृष्टेवामकाणोनिशायाम् १५ सूर्येभूर्द्धेचान्हिदक्षाक्षिकाणश्चंद्रेरीशेभूसुतेचेतिलग्ने; सूर्याधःस्यात्ज्ञारयोश्चिन्हमक्ष्णोरेकांशेवाभौमशीतांशुयोगात् ॥ १६ ॥ सूर्येनष्टेवक्रराशिस्थितेचभौमाक्रांतेवाकुलीरस्थितेब्जे नंदांशांतश्चापगेचाद्रिमेंशेनक्तंभानौचान्हिमंदेक्षितेंधः १७ क्षीणेचंद्रेनीश्वरेर्किप्रदृष्टेचापस्थितेवांधतत्स्थेद्वयोर्वा

काणा होताहै और षष्ठेश भौमलग्नमें होवे शुभदृष्टि रहित और पापदृष्टि युक्त तब पुष्प युक्तकाणादक्षिणनेत्रसें होताहै और चंद्रमा मगल कर्के युक्त अष्टमहोवे और दिनेजन्महोवे तब काणाहोताहै और रात्रिजन्ममें नवमस्थानमें सूर्य शनि होवे और शुभग्रहन देखें तब वामनेत्रसें काणाहोताहै १५ और चतुर्थसें क्रूर दशमपर्यंत सूर्य दिवाजन्ममें होवे तब दक्षिणनेत्रसें काणाहोताहै और षष्ठेशचद्रमा वा मगल लग्नमें होवे और सूर्यसें बाहरमें मंगल बुध होवे तब नेत्रोंमें चिन्हहोताहै वा मंगल चद्रमा एक अंशमें होवे तब चिन्हहोताहै ॥ १६ ॥ और कहतेहें सूर्येनष्टइति दिनके जन्ममेंसूर्यनष्टसज्ञामें स्थितहोवे और मंगलकोराशिमें वामगलकर्के युक्त तब अंधयोगहोताहै और कर्कराशिमें अंशोंकेमध्य चद्रमाहोवे तबअंधयोगहोताहैऔर रात्रिके जन्ममें धनराशिमें और अंशोंमेंस्थित चद्रमाहोवे तब अंधयोगहोताहै और सूर्यदिवाजन्ममें धनके प्रथमांशमें स्थितशनिकर्केदेख्याहोवे तब अंधयोगहोताहै १७ क्षीणचद्रइति क्षीणचंद्रमाशनिकर्के दृष्टधनराशिमें स्थितहोवे और गुरुशुक्रकर्के अदृष्टहोवे तब अंधहोताहै

सूर्यसें दूसरेस्थानमें चंद्रमाक्रूरयुक्तहोवे तव अंधहोताहै औरदशमस्थानमेंचंद्रमापापदृष्टऔरशुभदृष्टिही नहोवेतव अंधहोताहै १८ नीचाव्जइति नीचराशिमें चंद्रमा छठेवाहरमें होवे और क्रूरदृष्टहोवे तव अंधहोताहै और अस्तमंगल लग्नमें स्थितहोवे तव अंधाहोताहै और जलराशियोंमें अष्टमनवमगत चंद्रमासूर्यकेंद्रस्थानमें होवें तव अंधहोताहै और अस्तहोयककेंशनी नीचमेंस्थितहोवे औरसूर्यग्रहणके समयमें जन्मे सो अंधहोताहै १९ अवपराशरीमेंकहतेहै धनभावकास्वामी शुक्रककें युक्तहोवे अथवा शुक्रकेक्षेत्र मूलत्रिकोण उच्चराशियोंमें स्थितहोवे और लग्नेशककें संवधकोंप्राप्तहोवे तव नेत्र हीनकर्त्ता है २० और तिसरस्थानमें चंद्रमासूर्यस्थितहोवें तव रात्र्यंधहोताहै और धनेशलग्नेश और सूर्यएकस्थानमें स्थितहोवें तव अंधहोताहै, और पितामाता भ्रातादिलग्नोंके स्वामी धनेश और सूर्यसें मिलककें एकस्थानमें स्थितहोवें तव पित्रादियोंकों अंधताकहे २१ ॥ इतिनेत्ररोगप्रकरणम् ॥ अथवाग्दोषप्रकर

सूर्येध्यर्क्षेक्रूरयुग्मार्दितेचव्योमस्थेंदुप्रेक्षितेचाल्पदृष्टिः ॥ १८ ॥ नीचाब्जे चात्याद्विषो.क्रूरदृष्टेभूमिपुत्रेभगतेकोस्तगेच केंद्रेकेंद्वोरंध्रभागेवुराशोनीचेमंदेकोशुगेकोपरागे १९ पराशरीये शुक्रेणयुक्तोयदिनेत्रनाथःशुक्रस्यवार्क्षादिगृहत्रयस्थः संवंध्यपिस्याद्यदिदेहपेननेत्रंविधत्तेविपरीतभावं २० तत्रस्थितौचंद्ररवीनिशांध्यंजात्यंधतांतित्रपदेहपार्कोः पैत्र्यर्क्षनाथेनयुतास्तदांध्यंकुर्वंतिमात्रादिफलंतथैदक् २१ ॥ इतिनेत्रदोपप्रकरणम् ॥ अथवाग्दोषप्रकरणम् ॥ ॥ तत्रहोराशंभुप्रकाशे ॥ कर्कालिर्यंत्यगतैःपापैर्भांत्यस्थैर्वाद्येपविधौ मूकःपापेक्षितेसद्भिर्दृष्टेगीःस्याच्चिरेणतु १ क्रूरग्रहैःसंधिगतैःशुभालोकनवर्जितैः हिमांशुसहितैर्वालोजडःस्यान्नात्रसंशयः ३ ॥ कर्मप्रकाशेपि ॥ ज्ञेकर्कटालिझपगेतरणेरधःस्थेचंद्रेक्षितेरिपुपतौविहपापदृष्टे वह्निष्णुचंद्रमसिभौमयुतेचलग्नेतुंगस्वरोरिपुवुधेरसनाविनाशः ४

ण कहतेहै तिसमेंप्रथम शंभुहोराप्रकाशमें कहतेहै जिसके जन्मसमयमें कर्क और वृश्चिक और मीन राशिमें पापीग्रहस्थित होवें और राशिके अंत्यमें वाग्पराशिमें चंद्रमास्थितहोवे और पापदृष्टहोवे सो मूक अर्थाद्गुगाहोताहै और शुभग्रहोंककें देख्याहोवे चंद्रमा तव चिरकालककेंवोलने वाला होताहै अर्थात्पाचवर्षके उपरंतवाताकरताहै १ और जिसके जन्मसमयमें क्रूरग्रहसंधिगतहोवे और शुभदृष्टिककें रहितहोवें अथवाक्रूरग्रहचंद्रमाककें युक्तहोवें तव वालकजडकीन्याईहोताहै ३ और कर्मप्रकाशमें कहतेहै ज्ञइति जिसके जन्मसमयमें कर्कटवृश्चिकमीनराशिमें स्थितवुधसूर्यसें अधस्थनीचेचंद्रमाककें देख्याहोवे तव जिह्वादोषहोताहै और छठेस्थानकास्वामीवुधनिः शब्दराशि ४ । ८ १२ में स्थितहोवे और पापीग्रहोंककें देख्याहोवे तव गुंगाहोताहै और शुक्लपक्षमें चद्रमामंगलककें युक्तलग्नमें स्थितहोवे तव गुंगाहोताहै और षष्ठेशवुधलग्नमें स्थितपापीग्रहोंककें देख्याहोवे तव गुंगाहोताहै ४

और कहतेहैं सोमारमजेति बुध शनिके गृहमें अर्थात् मकरकुंभराशीमें स्थितहोवे तव गद्गदवाणी वा टाहोताहै और बुधनवंमस्थानमें और शुक्रदशमस्थानमें स्थितहोवे तव लड्ढोकिवाला अटककर्के बोलनेवालाहोताहै और बुधशनिकर्के सप्तमदृष्टिसें देख्याहोवे तव कफकर्के लड्ढोकिवालाहोताहै और दोपापीग्रहएक अंशमें स्थितहोवे तव लड्ढोकिवालाहोताहै ५ और सर्वार्थचिंतामणीमेंकहतेहैजिसकेजन्मसमयमेंधन भावकास्वमीशुभग्रहोंकर्केयुक्त त्रिकोण ९ ५ और केंद्र १ । ४ ।७। १० स्थानोंमेंस्थितहोवे वाउच्चमेंस्थितहोवे शुभग्रह और पुरुषग्रहोकिदृष्टिकर्के युक्तहोवे सो युक्तिकर्के साहितश्रेष्ठवाणी वोलने वालाहोताहै ६ और धनभावकास्वामी वृहस्पतिकर्केयुक्त अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तव मूकअर्थात् गुंगाहोताहै और इसिप्रकार पित्रादि धनभावकेस्वामी वृहस्पतिकर्केयुक्तअष्टममें स्थि

सोमात्मजेशनिग्रहेधृतगद्गदोक्तिर्मार्गेस्थितेथचासितेविदिलड्ढरोक्तिः ज्ञकोर्कयोःसमदृशाकफवाक्तथैकभागस्थयोरशुभयोरसनाविनाशः ५ सर्वार्थचिंतामणौ वाक्स्थानपेसौम्ययुतेत्रिकोणेकेंद्रस्थितेतुंगसमन्वितेवा शुभाक्षितेपुंग्रहदृष्टियुक्तेवाग्मीभवेद्युक्तिसमन्वितोसौ ६ वाक्स्थानपेदेवपुरोहितेनयुक्तेयदानाशगतेत्रमूकः पित्रादिकानामियमेवरीतिरुक्तामुनीन्द्रैर्बहुशास्त्रविद्भिः ७ अथ मुखरयोगः क्षीयमाणविधुरत्रभौमयुक्चाशुभेतुमुखरःप्रजायते लग्नआरफुजितिसप्तमदृष्ट्याज्ञःप्रपश्यतितदामुखरःस्यात् ८ अथहास्यमस्करयोगो यज्ञेहास्यपरःकुजेथसबलेभेर्कोक्षितौवित्कुजौ याज्यातांखलुहास्यवेत्परजनात्तद्वच्छनेर्भेपितौ षष्ठाष्टांत्यविधुश्चपश्यतिसितंचेल्लोकविस्मापता वाक्स्फुरतिर्मिथ आरसौम्यशशिनश्चावीर्यवाक्दृग्युताः ९

हहोवें तव वहुतशास्त्रोंके जाननेंवाल्यो मुनियोंने पित्रादियोंको मूकताकहिहै ७ अवमुखरयोगताजकमें कहतेहैं क्षीणचंद्रमंगलकर्केयुक्त और पापग्रहकर्केयुक्तहोवे तव मुखरहोताहै और लग्नको और शुक्रको सप्तमदृष्टिकर्के बुधदेखताहोवे तव वीमुखरहोताहै ८ अवहास्यमस्करयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मंगलवलवान्राशिमेंस्थितहोवे और सूर्यकर्केदृष्टवुधमंगलदोनों ग्रहहोवें सो यज्ञमें हास्यके करणेवालाहोताहै और दोनोंवुधमंगल मकर कुंभराशिमें स्थितहोवें और मंगलवलवान्होवे तव यज्ञकरणेवाल्योंको दूसरेकिसीमनुष्यसें हास्यको प्राप्तकर्ताहै और जिसके जन्ममें छठे आठमें वाहरमें स्थानमें चंद्रमास्थितहोयकर्के शुक्रकोंदेखे तव लोकोंको आश्चर्यकोंप्राप्तकर्ताहै और मंगलवुधचंद्रमा वलीहोयकर्के आपसमेंयुक्त और देखते होवें तव वाक्स्फुरतीवाला शीघ्रवोलनेंवालाहोताहै ९

औरकहतेहैं योग्रह अपने उच्चमें औरअपनेक्षेत्रमेंस्थितहोताहैसोदोषकरणेवालानहिंहोताहैअर्थात्पापीग्रहवी उच्चस्वक्षेत्रमेंदोषनहिंकर्त्ताहै और उच्चस्वक्षेत्रकेविनाछठे आठमें बारहमें स्थानमें शुभग्रहवीदोषकर्त्ताहै इहे संपूर्णयोगोंमें विचारहै १० इतिवाग्दोषप्रकरणम् अथमतिहीनयोगकहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें शनि बुधदोनोंस्थितहोवें-और सप्तमदृष्टिकर्के मंगलदेखताहोवे सो मनुष्य बुद्धिहीनहोताहै और जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाके मध्यमें मंगलस्थितहोवे तव बुद्धिहीनहोताहै ॥ १ ॥ और कहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें चंद्रमा स्थित होवे और अधिकारकर्के युक्त दशम स्थानमें शनि स्थित होवे और सप्तमदृष्टिकर्के बुधदेखताहोवे तव बुद्धिहीन होताहै और जिसके जन्मलग्नमें मंगल चंद्रमा दोनों स्थित होवें और पूर्ण दृष्टिकर्के बुध देखे तव बुद्धिहीन होताहै २ और लग्नेश्वर होय-

दोषकृन्नचसर्वत्रस्वोच्चस्वर्क्षगतोग्रहः षडादित्रयसंस्थश्चेत्तद्विनादोषकृच्छुभः १० ॥ इतिवाग्दोषप्रकरणम् अथमतिहीनयोगाः लग्नगौशनिबुधौद्युनदृष्ट्या सूक्ष्मपश्यतितदामतिहीनः चंद्रभानुविवरेयदिभौमोयास्यतीहखलुबुद्धिविहीनः१ लग्नसंस्थहिनगौदशमस्थेसाधिकाररविजेद्युनदृष्ट्या ॥ ज्ञेक्षितेतितदयुग्बुधपूर्णेक्षणोक्षेऽनागेरंगकुजेन्दू २ लग्नेश्वरेशशिनिभौमनिपीडितेचबुद्ध्याविहीनउदयेसयुतेपिनद्रत् ॥ एकर्क्षगेकलवगौरिपुगौशनीनौदृष्टौखलैर्गतमतिःशुभदृष्टिहीनौ ३ पंचमेमंदसंयुक्तेलग्नेवामंदवीक्षिते ॥ तदीशेपापसंयुक्तेबुद्धिजाड्यंभवेत्तदा ४ मंदमांद्यगुसंयुक्तेपंचमेशुभवर्जिते ॥ तदीशेपापसंदृष्टेविस्मृतिःप्रायशोभवेत् ५ नीचमूढारिगेहस्थेपापखेचरवीक्षिते ॥ बुद्धिविस्मृतिपूर्वास्यात्कारकेऽशुभसंयुते ६ ॥

कर्के चंद्रमा मंगलके साथ युक्त होवे तव बुद्धिहीन होताहै और तैसें हिलग्नकास्वामी चंद्रमा बुधकर्के युक्त लग्नमें होवे तव बुद्धिहीनहोताहै औरशनि सूर्य एकराशिमें और एक नवांशमें स्थित छठे स्थानमें होवें और शुभदृष्टि कर्के हीन और पापग्रहों कर्के देखेहोवें तव बुद्धिहीन होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें पंचमभावशनिकर्के युक्तहोवे अथवाशनि कर्के देख्याहोवे और पंचमेश पापीग्रहों कर्के युक्त होवे तव बुद्धिमें जडताकर्त्ताहै ४ और पंचमभावशनि और गुलिक और राहुकर्के युक्त होवे और शुभग्रहकर्के हीन होवे और पंचमेश पापग्रहोंकर्के देख्याहोवेतव बुद्धिविस्मृतिकर्त्ताहै ५ और जिनके जन्मसमयमें बृहस्पति नीच औरअस्तऔरशत्रुकेघरमेंस्थितपापग्रहोंकर्केदेख्याहोवेयायुक्तहोवेतवबुद्धिविस्मृतिवालाहोवाहैअथवाचरकारकपापग्रहोंकर्केयुक्तहोवेतव बुद्धिहीनहोताहै ६

इतिबुद्धिहीनयोगप्रकरणम् अवकर्णदोषकेयोगकहतेहैंकर्मप्रकाशमें ॥ सौम्यइतिषष्ठेशबुध छठे आठमे बाहरमें स्थानमें स्थित होवे और शनिक्रूरदृष्टिकर्के देखताहोवे तव बोलाहोताहै और षष्ठेशबुधको और षष्ठभावको सतमदृष्टिकर्के शनिदेखे तव बोलाहोताहै औरधनराशिका बृहस्पति शनिकीदृ ष्टिमें स्थित बुध शुक्रकर्के युक्तहोवे तव बोला होताहै और मंगलकर्के युक्त पूर्णचंद्रमा छठे स्थानमें स्थित होवे तव बोलाहोताहै १ नक्त मिति रात्रिकेजन्ममें छठे स्थानमें बुध होवेतव वाम कर्णसे बोला होताहैइसीप्रकार रात्रिके जन्ममें दशम स्थानमें शुक्रहोवे तव वामकर्णसे बोला होताहै २इति कर्णदोषयोगाः अवखंजयोगकहतेहैं जिसको भाषामें लूल्हाकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेष वृश्चिककर्क मकर मीन राशिमें शनि चंद्रमा दोनों स्थित होवें औरक्रूरग्रहकर्केयुक्त होवेंतवलूल्हाहोताहै और जिसके जन्मसमयमें गुरुसहममे कर्क वृश्चिक मीन मकर मेष लग्न स्थित होवेंतव खंजा होताहै ॥ ३

इतिबुद्धिहीनयोगप्रकरणम् ॥ अथवधिरयोगाः ॥ कर्मप्रकाशे ॥ सौम्येरिपेचकुग्रहे ६।८।१२ शनिनातुरीयदृष्टेरिपौसमदृशावधिरत्वदोषः ॥ चापस्थवक्रशनिहग्गवाक्पतौज्ञशुक्रान्वितेचारिपुभेकुजपूर्णविध्वोः १ नक्तंवुधेरिपुगृहेसितेचव्योमसंस्थिते ॥ उच्चैःस्वरेणशृणुतेश्रवणेदक्षिणेतरे २ ॥ इतिश्रवणदोषयोगाः ॥ अथखंजयोगाः ॥ मेषालिकर्कमृगमीनगतौशनींदूक्रूरान्वितौभवतितत्रनरस्तुखंजः कर्कालिमीनमृगमेषविलग्नसंस्थेगुर्वाख्यसद्मनितदाभवतीहखंजः ३ होराशंभुप्रकाशेपि लग्नेझषेचंद्रयुतेचयद्वासिंहाजचापांतगतश्चपापैः ॥ वृषेविधावर्कयमारदृष्टेपंगुर्नरःस्याच्छुभदृष्टिहीने ॥ ४ ॥ अथकुष्ठयोगाः चंद्रेमेषवृषस्थःशनिभौमाभ्यांयुतस्तदासगदकुष्ठी ॥ मीनालिकर्कटस्थाःशनिशुक्रकुजेंदवोरुधिरकुष्ठी ५ क्रूराःकुलीरझषवृश्चिकराशिसंस्थाल्लूतादिकंचपरिवर्तकजातकुष्टं षष्ठाधिपोयदिगुरूरिपुपःसितोवाक्रूरेक्षितस्तनुगलोवदनस्थशोफी ६

और शंभुहोराप्रकाशमेंकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें मीनलग्न मेंचंद्रमाहोवे और सिंह और मेष और धनके अंत्यार्ध में पापीग्रहस्थितहोवें तव पंगु होताहै और वृषराशिमेंचंद्रमासूर्य शनि मंगलकर्केदेखा होवे और शुभग्रहोंकीदृष्टीसेहीनहोवे तव पंगुहोताहै ४ अवकुष्ठयोगकहतेहैं जिसकेजन्मकालमें मेष वृष राशिमें चंद्रमास्थितहोवे और शनिमंगलदोनोंकर्केयुक्तहोवेतवरोगयुक्तकुष्ठीहोताहै और मीन वृश्चिक कर्कटराशिमें शनि शुक्र मंगल चंद्रमा स्थितहोवें तवरुधिरकर्के कुष्ठीहोताहै ५ और जिसकेजन्मका लमेंक्रूरग्रह मीन वृश्चिक कर्कराशिमें स्थितहोवें तवलूता और मंडालों कर्केयुक्तकुष्टहोताहै और जिसकेजन्मकालमें छठेभावकास्वामी बृहस्पति वा शुक्रहोवे और क्रूरग्रहकर्केदेखेहोवें तव गल और मुखमें सोजाकर्केकुष्टहोताहै ६

और जिसकोंवाहरमेंस्थानमें बृहस्पतिहोवेतव गुप्त रोगीहोताहै और शनिमंगलबाहरमें वाछठेस्थानमें स्थितहोवें तवफोडयोंकर्केयुक्तहोताहै ७ और कर्कवृश्चिकमीनराशिमेंचंद्रमासूर्यदोनोंक्रूरग्रहकर्केयुक्तहोवें तवश्वेतकुष्ठीहोताहै और पापग्रहकर्केयुक्तचंद्रमाहोवे तव कुष्ठी सुखकर्के रहितहोताहै ८ अवकुब्ज योगकहतहै आद्यंतमदृति चंद्रमाकीराशिके प्रथम १ अंशमें वा अत्यकोंतीमें ३० अंशमें शनि स्थितहावे और क्रूरग्रहोंकर्केदेख्याहोवेतवकुब्वाहोताहै और लग्नकास्वामी मंगल शनिके ऊर्ध्वभूमि केंद्रमें स्थितहोवे और वक्रग्रहकीराशिमें होवे तवकुब्वाहोताहै और भूमिकेंद्रकहतेहैं शनि सें लैकरचतुर्थराशिभूमिकेंद्रहै तिससेंदशमपर्यंत ऊर्ध्वकेंद्रकहाहै और चक्राल्पराशि यों मीन मेषहै तिन

द्वादशस्थोयदाजीवोगुप्तरोगीतदाभवेत् ॥ शनिभौमौरिष्फसंस्थौषष्ठस्थौ वालदाव्रणी ॥ ७ ॥ सक्रूरौचंद्रयुक्तौचकर्कवृश्चिकमीनगौ श्वेतकुष्ठीखलाद्यैर्वा दौकुष्ठीसुखविवर्जितः८ अथकुब्जयोगाः आद्यंतिमेंथदरजेशशिराशियातेसूर्यात्म जेचात्रभवेच्चकुब्जः भूस्थार्कजोपरिगतेचविलग्ननाथेचक्राल्पराशियुजिभूतन येचकुब्जः ९ अथवामनरूपयोगः यदिपृष्ठोदयराशिगंविधुंरविजोविश्मगतः प्रपश्यति लघुकोथोदयपेत्यमाजभेप्रवदंत्यत्रजनुर्लघीयसः १० अथनिर्बल योगः चंद्रंविरूपयादृष्ट्यायदिपश्येच्छनैश्वरःनिःप्राणश्चतदाजंतुर्निवलश्चभवेद्ध्रु वम् ॥ ११ ॥ अथांगछेदयोगः चंद्रभौमौयदालग्नेअंगछेदःप्रकीर्तितः लग्नगेंदौ कलत्रस्थेभौमेंगछेदईरितः १२

में लग्न का स्वामि होय कर्के मंगल स्थितहोवे तव कुब्वाहोताहै ९ अववामन योग कहतेहैं जिस केजन्मकालमें पृष्ठोदय १।२।४।८।१० राशियोंमेंचंद्रमास्थितहोवे तिसकों मकर कुंभ मेंस्थि तशनि देखे तव वामना होताहै और जिसके जन्ममें लग्नस्वामि मेषराशिमें वाहरमें स्थानमें स्थितहोवे सोवामनरूपहोताहै १० अवनिर्बलयोगकहतेहै जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा कों क्रूरदृष्टिकर्केवल हीन शनैश्चरदेखताहोवेसोनिश्चयकर्केनिर्बलहोताहै ११ अव अंगछेदयोगकहतेहैं जिसके लग्नमें चंद्र मा भौम दोनों लग्नमें स्थितहोवें तव अंगछेदहोताहै और लग्नमें चंद्रमा और सप्तममें मंगलस्थितहोवे त व अंगछेदकहाहै ॥ १२ ॥

अबचोर योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें बुध सूर्य मंगल तीनों जन्मलग्नसें सप्तमस्थानमें स्थितहोवें और चंद्रमा चतुर्थ दृष्टिकर्के और सप्तम दृष्टिकर्के देखताहोवे तब सर्वदाकाल चोरकर्ताहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासें केंद्रस्थानों १ । ४ । ७ । १० ॥ मेंमंगलस्थितहोवे और शुभग्रहोंक र्के देख्यानहोवे तबचोर होताहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शनि मंगलबुधचंद्रमा कर्के देख्याहोवे सो चोर होताहै १२ अबपुंश्चलयोगकहतेहैं जिसके जन्मलग्नसें सप्तम शुक्रबुध दोनों होवे सो पुंश्चलहोताहै और मंगलशुक्रदशममें वा सप्तममें स्थितहोवे तब परस्त्रीगामी होताहै और, मंगल शुक्र जन्मलग्नसें चतुर्थस्थित होवें तबपरस्त्री गामी होताहै और शनि सूर्य बुध शुक्र च, तुर्थस्थितहोवें तब परस्त्रीगामी होताहै और शनिसूर्य बुध शुक्र चतुर्थ स्थित होवें वास्वक्षेत्रीहोवें तब परस्त्रीगामी होताहै और जिसके जन्मकालमें दशमसप्तममें बुध शुक्र शनिहोवें अथवादिने जन्ममें

अथचौरयोगाः ॥ ज्ञार्क्याऽसृजाद्युनगताविधुनाचतुर्थपूर्णेक्षिताःप्रजनयंतिसदैवचौरं केंद्रेकुजेचशशिनश्चशुभैर्नदृष्टेचौरःकुजज्ञविधुवीक्षितएनिरस्ते ॥ १३ ॥ अथपुंश्चलयोगाःशुक्रज्ञौद्युनगौतथास्मरगदृशांस्यात्पुंश्चलोऽसृक्सितौखेस्तेवापरदारगः कुजसितौतुर्येचखेपुंश्चलः मंदेनेंदुजआस्फुजित्सुखगतःस्वस्थोपिवापुंश्चलःखेचास्तेज्ञसितार्कजाअथादिनेस्वर्क्षेसितःपुंश्चलः १४ अथरूपद्वययोगः दग्धःसूर्योस्तभागेचेद्रूपद्वयमुदाहृतं भगलिंगंचविज्ञेयंजंतोर्जातस्यानिश्चितम् १५ दग्धस्यलक्षणं कर्मप्रकाशे योभानोर्भवनंगतोजिगमिषुर्वासौविरश्मिर्मतइति अथषंढत्वयोगाः ॥ शुक्रेशनिनायुक्तेदशमेरंध्रेथशुभदृशाहीने ॥ मंदेषष्ठांत्यगतेजलराशौषंढत्वभाग्भवति १६ सिताढ्यमंदेदशमेनपुंसकंपष्ठेव्ययेचार्कसुतेंबुराशौ ॥ नपुंसकंवैखलुशुक्रतःस्यात्प्रकीर्तितंताजकरोमकाद्यैः १७

स्वक्षेत्रमें शुक्र होवे तब परस्त्रीगामी होताहै १४ ॥ अबरूपद्वययोगकहतेहैं योग्रहदग्धसंज्ञाकों प्राप्त होयकर्के सूर्य केसप्तमांशमें स्थित होवें सो दोरूप पुरुष स्त्री दोनोके चिन्हतिसमनुष्यकों होतेहैं १५ अबदग्धग्रहकालक्षण कहतेहैं योग्रहसूर्य साथ एक अंशमें होताहै तिसकी दग्धसंज्ञाकहिहै अबक्लीव योगकहतेहै जिसके जन्मसमयमें शनिकर्के युक्त शुक्र दशम ॥ १० ॥ वा अष्टम ॥ ८ ॥ स्थानमें स्थित होवें और शुभग्रहोंकी दृष्टिकर्के हीन होवें तब क्लीवहोताहै और जिसके जन्ममें कर्क वृश्चिक मीनराशिमें छठे बाहरमें स्थानमें शनि स्थित होवे तब नपुंसकहोताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्म में शुक्र कर्के युक्त शनि दशम स्थानमें होवे तब नपुंसकहोवे और जलराशिमें शुक्रसें शनि छठे बाहरमें स्थानमें स्थित नपुंसककर्ताहै इहेताजक शास्त्रके जानने वाल्योंनें रोमकादियोंनेकहाहै ॥ १७

और जातकालकारमें विशेषकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा आपसमें परस्परदेखें तब क्लीव होताहै १ और बुध शनि परस्परदेखे तब क्लीव होताहै २ और मंगल समराशिगत सूर्य को देखे तब क्लीव होताहै ॥ ३ ॥ और लग्न और चद्रमा दोनो ओजराशियोंमें स्थित होवें तब क्लीव होताहै ४ और बुध ओजराशिमें स्थित होवे और चद्रमा समराशिमें होवे और मंगल करके दोनो देखे होवे तब क्लीव होताहै ५ और पुरुष राशिमें ओजराशि लग्न गतहोवे और चद्रमा तिसमेंस्थित होवे तब क्लीवहोताहै६ १८ अथक्रमतुर और अल्पप्रजायोगकहतेहे जिसकेजन्मसमयमें शुक्रप्रसूतिराशियोंमें मिथुनसिंह कन्या धनु इहेप्रसूतिराशियाहें इनमेंस्थितहोवे और मिथुनके परार्द्धमें होवे और कुगेह षष्ठ अष्ट म द्वादशस्थानमें स्थितहोवे तब कामातुरकर्ताहै और शुक्र मीन राशिमेंस्थितहोवे और षष्ठेश मंगलकरके हतहोवे अर्थात् छठे भावके स्वामीको मंगलनें युद्धमें जीत्याहोवे तब मृतापत्य वा अल्पाप

जातकालंकारेविशेष अन्योन्यंपश्यतश्चेत्तरणिहिमकरौतत्तनूजौमिथोवाभूसूनुः पश्यतीनंसमभवनगत लग्नचंद्रौयदौजे ओजर्क्षेयुग्मराशौशशिसुतशशिनौभू सुतेनेक्षितौचेत् पुंराशौलग्नशुक्रौतदनुहिमकरःक्लीवयोगाःषडेते ॥ १८ ॥ अथकामातुराल्पप्रजायोगाः शुक्रेप्रसूतिगमनाम्निथुनापरार्द्धेस्वांशेहारिप्रथम कार्द्धगत कुगेहे कामातुरंजनयतेझषगस्तथास्मिन् षष्ठेश्वरेकुजहतेचमृताल्प सूतिम् १९ अथाश्चर्यविकारयोगा, भूमीपुत्रशशिरवियुतेदर्शपूर्णेष्टकालेमंदेत्य स्थेकुजतनुभुजोर्योगतोस्तेदशावा भौमेचालौगुरुसितदृशावर्जितौतौवलग्नेसू तौमंदेकुजयुजिमदेसम्यगर्शोविकारः २० क्रूरेविनाशनस्थेमदगेशुभदृष्टिव र्जितेश्चरुक् अन्यरतगृहेमंदेवालौपुण्येसभूमिसुते ॥ २१ ॥ अथव्रणयोगाः

त्यकोप्राप्तकर्ताहै १९ अब आश्चर्यविकारकेयोगकहतेहैं भूमीपुत्रइति जन्मकालमें जोगतपर्वातपलग्न हैं तिसमें जन्म और मंगल सूर्यकर्के वा चंद्रमाकर्के युक्तहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और जन्मलग्न से बारहमें स्थानमें शनि स्थितहोवे और पापग्रहोकर्के देख्याहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और लग्नेश जोहै सो मंगलकर्के देख्याहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और वृश्चिक राशिमें मंगलहोवे और जन्मलग्न गुरुशुक्रकादृष्टिसे हीनहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और लग्नमें शनि और सप्तममें मंगलहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै २० क्रूरइति अष्टमेश क्रूरग्रहसप्तममें होवे और शुभदृष्टिहीनहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और दिनमें जन्म और सप्तमशनिहोवे तब आश्चर्यरोगीहोताहै और वृश्चिक राशिमें नवमें स्थानमंगलहोवे आश्चर्यरोगीहोताहै २१ आश्चर्यरोग भाषया ममेसीया इति ॥ अबव्रणयोगकहतेहैं

भूपुत्रइति जिसके जन्मसमयमें वृश्चिक राशिका मंगललग्नमेंस्थितहोवे और बृहस्पतिऔर शुभकीदृष्टि सें रहितहोवे तब व्रणपिटकादि रोगयुक्तहोताहै और वृश्चिकराशिका मंगल चतुर्थस्थानमें स्थितहोवे अथवा वृश्चिककेनवांशमें चतुर्थस्थितहोवे अथवा केतुकर्केयुक्त चतुर्थस्थानमें होवे तब व्रणादि रोगहोतेहैं और केतुकर्केयुक्त शनि सप्तमस्थानमें होवे तब व्रणादिहोतेहैं और छठेस्थानमें शनि और बाहरमें स्थानमें मंगलहोवे तब व्रणादिहोतेहैं २२ अवदद्रुयोगकहतेहैं स्निग्धभइति स्निग्धराशियोंहैं कर्क वृश्चिक मीन इनोंमें शनि कर्के युक्त चंद्रमा भूमिनवांश २।६।१० वृषकन्या मकरराशिके नवांशमें सप्तमस्थानमें स्थितहोवे तब दद्रुरोगवाला होताहै अवअंडवृद्धियोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मंगल शुक्रकर्के युक्त अष्टममेंस्थितहोवे तब वायुकर्के अंडवृद्धिवालाहोताहै २३ और मंगलकर्के युक्त शुक्र वृश्चिक राशिमेंहोवे तब पार्थिवभागकर्के अंडवृद्धिहोतीहै और मेदवृश्चिकराशिमें बुधशुक्रदोनों

भूपुत्रेगुरुसितदृष्टिवर्जितेलेजायंतेव्रणपिटकास्तनौविशेषात् भुव्यस्मिन्नथचतुर्थकेसपुच्छेमंदेवास्तयुजितथाद्वयोर्व्ययेरौ २२ अथदद्रुयोगाःस्निग्धभेशुनगतेरजनीशेभूमिभागगतभास्करियुक्तेदद्रिणोभवतिभौमसितावजैरंडवृद्धिरलिगेमृतिभागे २३ अथांडवृद्धियोगाःसारेसितेष्टमगतेनिलभूतमंडकोप्येकुजान्वितासितेक्षितिभागमंडभौमक्षगौबुधसितौशशिजीवदृष्याहीनौतदारुधिरकोपजमंडमुक्तम् २४ अथप्लीहयोगाः दृष्टेक्रूरखगैःशुभैर्नचविधौपष्ठेश्वरेप्लीहकृत् दृष्टेसप्तमलग्नपेखलखगैःस्यात्प्लीहरोगीपुमान् जन्मन्येवविनष्टदग्धकशनिःसूर्येमहाप्लीहता लग्नस्वामिनिचोग्रपीडितशनौप्लीहार्थसांगेस्थिते ॥ २५ ॥ अथमुखदुर्गंधियोगाः शनिगृहेशनिहद्दगतेपिवाभवतिचंद्रगृहेत्वथभार्गवे अजगतेवपुषींदुयुतेबुधेरिपुपतौचमुखस्यविगंधिता ॥ २६ ॥ अथकपटयोगाः

स्थितहोवें और चंद्रमा गुरुकीदृष्टिसें हीनहोवें तब रुधिरकर्के अंडवृद्धिहोतिहै ॥ २४ ॥ अवप्लीहयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें छठे घरकास्वामी चंद्रमाहोवे और क्रूरग्रहों कर्के देख्याहोवे और शुभग्रह नहिंदेखतेहोवें तब प्लीहरोगकर्त्ताहै और जिसके जन्म समयमें सप्तमलग्नका स्वामी पापीग्रहों कर्के देख्याहोवे तब प्लीहरोगी होताहै और जिसके जन्म समयमें शनिनष्ट और सूर्य कर्के दग्धहोवे सो वडीप्लीहकर्के युक्त होताहै और जिसके जन्म समयमें लग्नेश पापग्रहों कर्के पीडितहोवे अथवा शनिजन्मलग्नमें स्थितहोवे सो प्लीहकर्के युक्तहोताहै ॥ २५ ॥ प्लीहकों भाषामें तिपकहतेहैं अवमुखदुर्गंधियोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्र मकर कुंभ राशिमें स्थितहोवे वा शनिकीहद्दामें स्थितहोवे वा कर्कराशिमें होवे तब मुखदुर्गंधि कर्त्ताहै और जिसकेजन्ममें षष्ठेश बुध चंद्रमाकर्केयुक्तमेषराशिमें लग्नगतहोवे तब मुखमें दुर्गंधिकर्त्ताहै २६ अवकपटयोगकहतेहैं

जिसके जन्मसमयमें वुधकर्के युक्त मंगलहोवे सो कपटी होताहै और वली वुध क्रूरग्रह कर्के युक्त नवमस्थानमें होवे तब कपटी होताहै और मंगल तीसरे स्थानहोवे और चतुर्थेश और नवमेश दोनों छठे स्थानमें होवें और मेषराशिमें वुधहोवे तव कपटकर्के लिखने वाला होताहै ॥ २७ ॥ अवअसत्ययोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें कृष्णाष्टमीसें अमावास्यापर्यंत चंद्रमा भौमसें वुधके साथयोगकरे अर्थाद्भौम युक्तराशिकों त्यागकर्के वुधयुक्त राशिमें प्रवेशकरे सोमनुष्य झूठ बोलने वाला होताहै और जिसके जन्मसमयमें मंगल वुध एक अंशमें केंद्रस्थानमें स्थित होवें सो झूठवोलने वाला होताहै ॥ २८ ॥ अवद्रोहयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंदशम स्थानमें वुधस्थितहोवे और चतुर्थस्थानमें चंद्रमाहोवे सो छल कर्के दूसरे केद्रव्यकों हर्त्ताहै और जि

सज्ञेकुजेकपटकृच्चवुधवलाढ्येक्रूरान्वितेऽध्वयुजिभूमिसुतेतृतीये भूकेंद्रपेषुनवमाधिपतौचषष्ठेमेषेवुधेकपटलेखकरोनरःस्यात् २७ अथासत्ययोगाःअपरराऋकृतभ्युदयेविधाववनिजाद्व्रजतिज्ञमसत्यवाक् ज्ञकुजयोर्दरजैकगकेंद्रयोर्वितथवागथरंजयतेजनान् ॥ २८ ॥ अथद्रोहयोगाः खस्थेवुधेतुर्यगतेच चंद्रेद्रोहात्परद्रव्यमुपाददाति कुजेतृतीयेथवुधेसचंद्रेरिपौविलग्नाधिपतौवुधेवा ॥ २९ ॥ अथपरदारयोगाः द्यूनेथखेसितवुधार्किपुवारभृग्वोस्तुर्येथखेभृगुसुतेशशिसौरिदृष्टे क्रोडारयोररिगयोर्निजवर्गभौमेदृष्याकवेःसकलयापरदारगामी ॥ ३० ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितजातकखंडे सुनफानफादिनानाविधयोगाध्यायएकादशः ॥ ११ ॥

सके जन्मसमयमें तीसरे मंगल होवे और चंद्रमा कर्के युक्त वुधहोवे और छठेस्थानमें लग्नकास्वामी वुध स्थितहोवे तव द्रोहकर्त्ताहै ॥ २९ ॥ अवपरस्त्रीकेयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें मंगल और शनिसें सप्तम दशम स्थानमें शुक्र वुध शनि तीनग्रहहोवें सो परस्त्रीगामी होताहै अथवा शुक्र चतुर्थ वा दशममें स्थितहोवे और चंद्रमा शनिकर्के दृष्टहोवे तव परस्त्रीगामी होताहै और जिसके जन्मसमयमें शनि मंगल छठे स्थानमें स्थितहोवें और अपने वर्गमें भौमहोवे और पूर्ण दृष्टिकर्के शुक्रदेखताहोवे तव परस्त्रीगामीहोताहै ॥ ३० ॥ इतिश्रीजातकखंडेसुनफानफादिनानाविधयोगाध्यायएकादशः ॥ ११ ॥

॥ अथद्विग्रहादियोगाध्यायसारावलीसंकहतेहैं ॥ वृद्धयवनाचार्यनेंद्विग्रहादियोगोंमेंयेफलकहाहै ॥ सो फल इसग्रंथमें मत्सरोंको त्यागकर्के विशेषकर्के कहताहौं १ जिसकेजन्मसमयमें सूर्यचंद्रमादोनों एकराशीमें स्थितहोवें सो स्त्रीयोंकेवशहोताहै श्रौर नम्रतासेंरहित होताहै श्रौर कूटके जाननें वाला होताहै श्रौर लघुचित्तवाला होताहै श्रौर स्त्रीयोंमें श्रेष्ठ श्रौर मद्यके वेचनेमें चतुर श्रौर क्रियामें चतुर होताहै २ श्रौर जिसकेजन्ममें सूर्य मंगलकायोगहोवे सो तेजस्वी श्रौर हठी श्रौर धूर्त श्रौरबली श्रौर झूठबोलनेवाला श्रौर पापबुद्धि श्रौर वधकरणेवाला श्रौर प्रचंडहोताहै ३ श्रौर जिसकेजन्ममें सूर्य बुधकायोगहोताहै सोसेवाकरणेवाला श्रौर तिसकेपास धन स्थिरनहिंरहताहै श्रौर मीठाबोलनेवाला श्रौर यशकीइच्छावाला श्रौर श्रेष्ठ श्रौर राजाकी प्रीतिवाला श्रौर श्रेष्ठ जनोंका प्यारा श्रौर बल रूपविद्याकर्के युक्तहोताहै ४ श्रौर जिसके जन्ममेंसूर्यबृहस्पतिकायोगहोवे सो बहुतधर्म

॥ अथद्विग्रहादियोगाध्यायः ॥ सारावल्यां ॥ यवनाचार्यैर्दृष्टैर्द्विग्रहयोगेषुयत्फलंप्रोक्तम् तदहमपहायमत्सरमधुनावक्ष्येविशेषेण १ युवतीनांवशगःस्यादवनीतःकूटवित्प्रलघुचित्तः स्त्र्यासवविक्रयकुशलोरव्युडुपत्योःक्रियानिपुणः २ तेजस्वीसाहसिकोधूर्तोबलसंयुतोऽनृतवाक् पापमतिर्वधनिष्ठोरविकुजयोःस्यात्प्रचंडश्च ३ सेवाकृदस्थिरधनोरविज्ञयोःप्रियवचायशोर्थीस्यात् आर्यःक्षितिपतिदयितःसतांचबलरूपविद्यावान् ४ बहुधर्मोनृपसचिवःसमृद्धिमान्मित्रसंश्रयात्तार्थः सूर्येबृहस्पतियुतेभवेदुपाध्यायसंज्ञश्च ५ शस्त्रप्रहरणविद्याशक्तियुतोनेत्रदुर्बलोभवति रंगज्ञोरविसितयोःस्त्रीसंगमलब्धबंधुजनः ६ धातुज्ञोधर्मपरःसुकर्मनिरतःप्रनष्टसुतदारः निजवंशगुणैःशुद्धःशनिरव्योरात्तशीलश्च ७ शूरोरणप्रतापीमल्लोऽसृग्वेदनार्त्तदेहश्च मृच्चर्मधातुशिल्पीकूटज्ञश्चंद्रकुजयोगे ८

करणेवाला श्रौर राजाकामंत्री श्रौर समृद्धिवाला श्रौर मित्रोंसेंधनकी प्राप्तिवाला श्रौर विद्याकेपढाउनेवाला होताहै ५ श्रौर जिसकेजन्ममें सूर्य शुक्रकायोगहोताहै सो शस्त्रप्रहारोंकीविद्यामेंशक्तिकर्के युक्त होताहै श्रौर दुर्बलदृष्टिवाला होताहै श्रौर रंगकेजाननेवाला श्रौर स्त्रीसंगमकों प्राप्त श्रौर सबाधजनोंकों प्राप्त होताहै ६ श्रौर जिसके जन्ममें सूर्य शनिका योगहोताहै सोधातुयोंके जाननेवाला श्रौर धर्मवाला श्रौर श्रेष्ठ कर्मोंमेंरत श्रौर स्त्रीपुत्रसेंरहित श्रौर श्रपनेवंशके गुणोंकर्के शुद्ध श्रौर श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहै ७ श्रौर जिसके जन्ममें चद्रमामंगलकायोगहोवे सो शूरवीर श्रौर युद्धमें प्रतापी श्रौर भलेहान श्रौर रुधिरकीपीडाकर्के दुःखीदेहवाला श्रौर मृत्तिका श्रौर चर्म श्रौर धातुके शिल्पवाला श्रौर कूटकेजाननेवाला होताहै ८

और जिसके जन्ममें चंद्रमाबुधका योगहोवे सो काव्यकथामें अत्यंत चतुर और धनवके युक्त और स्त्रीयोंकी संमतिवाला और सुंदररूपवालाहो वाहै और प्रफुल्लतमुखवाला और धर्ममें रुचिवाला और विशेष गुणों वाला होताहै ९ और जिसके जन्ममें चंद्रमाबृहस्पतिका योगहोवे सो दृढ मित्रतावाला और नम्र और संबंधियोंका मानकरणेवाला और श्रेष्ठ वेशके धारणे वाला और देवताऔर ब्राह्मणोंके पूजने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा शुक्रदोनों एकराशिमें स्थितहोवें सो माला और धूपऔर वस्त्रोंमें सक्त होताहै और क्रियाविधिके जाननेवाला और कलहकाप्यारा और बहुतभोजनकरणेवाला होता है और वस्तुके वेचने और खरीदनेमेंचतुरहोताहै ११ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाशनि एकराशिमें स्थितहोवें सो वृद्धस्त्रीयोंके रमणेवाला और हाथी और घोडयोंकेपालनेवाला और खोटेस्वभा

काव्यकथास्ववितिनिपुणःसधनःस्त्रीसंमतःसुरूपश्च स्मितवदनःशशिबुधयोर्धर्मरुचिःस्याद्विशिष्टगुणः ॥ ९ ॥ दृढसौहृदोविनीतःस्ववंधुसंमानकृत्सुवेशश्च गुर्विंद्वोस्त्वतिशीलःसुरद्विजेज्यारतःपुरुषः ॥ १० ॥ स्रग्धूपांवरसक्तः क्रियाविधिज्ञः कलिप्रियोत्यशनः क्रयविक्रयेषुकुशलः शशिभार्गवयोःसदा योगे ॥ ११ ॥ जीर्णवधूजनरमणोगजाश्वमपालकोविगतशीलः वश्यो विधनः पुरुषः परात्मकः स्याच्छशांकशनियोगे १२ स्त्रीदुर्भगोतिवित्तः सुवर्णलोहादिवद्धमतिः दुष्टस्त्रीविधवानांबुधकुजयोरौषधिक्रियानिपुणः १३ शिल्पश्रुतिशास्त्रज्ञोमेधावीवाग्विशारदोमतिमान् अस्त्रप्रियः प्रधान सुरगुरुकुजयोः समागतयोः १४ पूज्योगुणप्रधानोगणितज्ञः परयुवतिगोधूर्तः द्यूतानृतशाठ्यरतोविदः सितेरधिरसंपु भवति १५

थवाला होताहै और वश्य और धनरहित और परकर्मके करणेवाला होताहै १२ और जिसके जन्ममें मगलबुधकायोग होताहै सो स्त्रीके सुखसे रहित और वडे धनवाला होताहै और दुष्ट स्त्रीयोंमें और विधवा स्त्रीयोंमें सुवर्ण और लोहादियोंकी न्याई कठन चित्त वाला होताहै और औषधि के करणमें चतुरहोताहै १३ और जिसके जन्ममें मगल और बृहस्पति कायोगहोता है सो शिल्पके जानने वाला और वेदके और शास्त्रके जानने वाला और श्रेष्ठ वाणीवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला और शस्त्रोंमें प्रीतिवाला और प्रधानपुरुषहोताहै १४ और जिसके जन्ममें मंगलशुक्रकायोगहोवे सो पूज्य और गुणमें प्रधान और गणितके जानने वाला और परस्त्रीमें रत और धूर्त होताहै और जूयेमें और झूठवोलनेमें और शठतारनेमें रतहोताहै ॥ १५ ॥

और जिनकेजन्मसमयमें मंगलशनिकायोगहोताहै सो धातुवादमें और इंद्रजालमें श्रेष्ठ होताहै और प्रपंची होताहै और चोरीकरणेवाला होताहै और धर्मसे रहितहोताहै और शस्त्र करके और विपकके घात करणेवाला और लडाईकर्नेमें रुचिवालाहोताहै १६ और जिसके जन्ममें बुधबृहस्पतिकायोग होताहै सो नृत्यकर्मकेजाननेवाला और चतुर और गीत और वाजोंके जाननेवाला और धैर्यवाला और अवश्यसुखको प्राप्तहोताहै १७ और जिसके जन्ममें बुधशुक्रका जोग होताहै सो निश्चयकरके धनी होताहै और नीतिकेजाननेवाला और अनेकशिल्पके जाननेवाला और वेदके जाननेवाला और श्रेष्ठवाक्यबोलनेवाला और हास्यमेंरत और सुगंधमाल्य मेंरुचिवालाहोताहै १८ और जिसके जन्ममें गुरुशुक्रकायोग होताहै सोसर्व दाकालविद्याकरके पंडितहोताहै और पंडितोंकरके वार्ताकर्ताहै और पुत्रमित्रधनकरके युक्तहोताहै १९ और जिसके जन्ममें शनिबुधकायोगहो

धात्विंद्रजालकुशलःप्रपंचकःस्तेयकर्मनिरतश्च कुजसौरयोर्विधर्मःशस्त्रविपघ्नः कलिरुचिःस्यात् १६ नृत्यविधौविज्ञातःप्राज्ञोपिचगेयवाद्यविन्मनुजः गुरुबुधयोगेधृतिमान्सौख्ययुतोजायतेवश्यम् १७ अतिशयधनोनयज्ञोबहुशिल्पो वेदवित्सुवाक्यःस्यात् नीतिज्ञोहास्यरतोबुधसितयोगेगंधमाल्यरुचिः १८ गुरुसितयोगफ॥ विद्ययाभवतिपंडितःसदापंडितैरपिकरोतिविवादं पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतोमानवःसुरगुरौभृगुयुक्ते १९ ऋणवान्दंभप्रायःप्रपंचकस्तेयकर्मनिरतश्च निपुणःशोभनवाक्यःशनिबुधयोगेपुमान्भवति २० शूरोवित्तसमृद्धो नगराधिपतिर्यशस्वीच शनिजीवयोः प्रधानःश्रेणीसभाग्रामसंघानाम् २१ चारुविचारणदक्षस्त्वक्षरचित्रादिकर्मविच्छिल्पी मल्लोटनः पशुपतिः शनिसितयोगेपुमान्जातः २२ उक्तफलगगनगाद्यन्योन्यगणस्थिताः॥ अधमादिविकल्पेनकुर्वंतिविकृतिंतदा २३ इतिद्विग्रहयोगप्रकरणम् ॥

णहेसोऋणवाला और दंभी और प्रपंची और चोरीमेंरत और सुंदरबोलनें वाला होताहै २० और जिनके जन्ममें बृहस्पति शनिकायोगहोवे सो शूर वीर धनकी समृद्धि वाला और नगरकास्वामी और यशवाला और प्रधान और ग्रामोंके समूहोंको प्राप्त होने वाला होताहै २१ और जिसके जन्ममें शुक्रशनिकायोगहोताहै सो श्रेष्ठ विचारमें चतुर होताहै और अक्षर और चित्रकाराक कर्मोंको जानने वाला शिल्पीहोताहै और मल्लविद्याके जाननेवाला और भ्रमणेवाला और पशुओंकास्वामीहोताहै २२ इहांद्वियोगोंका जोफलकहाहै जहांग्रहअपनेअपनेस्थानमें बलकरके युक्तस्थितहोवें तब यथार्थ जैसाफलकहाहै तैसादेतेहैं और नीचारतादिस्थानोंमेंविकल्पकरके विरुद्धफलकरतेहैं २३ इतिद्विग्रहप्रकरणम् ॥

॥ अथतीनग्रहकेयोगकाप्रकरणकहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमा मंगलतीनों एकराशिमें स्थितहोते हैं सो निर्लज्ज और पापकरणे वाला और यंत्रोंके जानने वाला और शत्रुयोंके हरणेमें शूरवीरहोताहै और पाषाणके कृत्यमें चतुरश्रेष्ठ होताहै १ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमाबुधतीनों एकराशिमें स्थितहोवें सो तेजस्वी और चतुरबुद्धि वाला और शास्त्रकलाके जाननेवाला और साधुयोंकीसंगति करणेवाला और वाहनोंमें रत और राजकृत्यकेकरणेवाला और धैर्यवाला होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाबृहस्पतिएकराशिमें स्थितहोतेहैं सो क्रूर और मायामें चतुर और सेवाकरणेमेंश्रेष्ट और विदेशवासकरणेवाला और श्रेष्ट बुद्धिवाला और चंचलबुद्धिवाला होताहै ३ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रशुक्रकायोग होताहै सो पराधनके हरणेमें चतुर और परस्त्रीमें रत और शस्त्रवृत्तिकेकरणेवाला होताहै ४ और जिसके

निर्लज्जःपापरतोयंत्रज्ञःशत्रुहारणेशूरः अश्मक्रियासुकुशलःसहास्थितैःसूर्यशशिभौमैः १ तेजस्वीनिपुणमतिःशास्त्रकलासाधुगोष्ठियानरतः नृपकृत्यकरो धीरोरविशशिशशिजैस्तथैकस्थैः २ क्रूरोमायानिपुणःसेवाकुशलोविदेशगमनरतः मेधावीचपलमतिःसहस्थितैरर्कशशिजीवैः ३ परधनहरणेनिपुणःपरदाररतःशस्त्रवृत्तिश्च रविचंद्रदैत्यपूज्यैरेकस्थैर्जायतेमनुजः ४ धातुविवादेनिरतोमूर्खःपरतर्ककोदरिद्रश्च सूर्यनिशाकररविजैरेकस्थैर्जायतेमनुजः ५ भवतिख्यातोमल्लःसाहसिकोनिष्ठुरोविगतलज्जः धनसुतकलत्ररहितःसहस्थितैरर्ककुजसौम्यैः ६ वचसिनिपुणोमहार्थःक्षितिपतिमंत्रीचमूपतिर्वापि सत्यवचनःप्रचंडःसहस्थितैर्भौमगुरुसूर्यैः ७ नयनातुरःकुलीनःसुभगोवात्सल्यसंयुतोमनुजः वक्रभृगुदिवसनाथैःसंयुक्तःस्याद्विभवयुतः ८

जन्ममें सूर्य चंद्रमाशनिकायोगहोवे सो धातुवादमें रत और मूर्ख और दूसरे कों तर्ककरणे वाला और दरिद्रीहोताहै ५ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुध कायोगहोवेसो प्रसिद्धमल्लभलोहानहोताहै और हठकरणे वाला और कठोर बोलने वाला और लज्जासें हीन और धनपुत्र स्त्रीसें रहित होताहै ६ और जिसके जन्ममें सूर्य मंगल बृहस्पति कायोगहोवे सो वाणीकर्के चतुर और वडे धन कोंप्राप्तहोताहै और राजाकामंत्री अथवासेनाकास्वामीहोताहै और सत्यबोलने वाला और वडाप्रचंडहोताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगल शुक्र कायोग होवे सो नेत्रों कर्के पीडितहोताहै और कुलीनहोताहै और श्रेष्ठभाग्यों वाला और प्रीतिकर्के युक्त होताहै और ऐश्वर्यकर्के युक्तहोताहै ॥ ८ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगलशनिका योगहोताहै सो व्याकुल अंगोंवाला और धनहीन और नित्यहि रोगकर्के पीडित और लडाई के करणे वाला और अपने संबंधियोंसें रहित और बडामूर्ख होताहै ९ और जिसके जन्ममें सूर्य बुध बृहस्पति कायोगहोताहै सो नेत्ररोगी और धनवाला और शास्त्रकला और काव्यकथा और शिल्पकर्के युक्त और लिखने वाला होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बुधशुक्र कायोगहोवे सो अत्यंत शास्त्रके जानने वाला और बडावाचाल और पित्रादियों कर्के त्याज्यदेशदेशांतरोंमें भ्रमणेवाला और स्त्रीके निमित्तकर्के संतापकों प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बुध शनिका योगहोवे सो क्लीवकीन्याई और द्वेषी और संपूर्णोंकर्केजीत्याहुयाऔर संबंधियोंकर्के त्याज्य होताहै ॥ १२ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य बृहस्पति शुक्रका योगहोवे सोदुर्बलपक्षवाला औरशूर वीर होताहै और धनकर्के रहित और राजाकामंत्रीहोताहै और नित्यप्रति

विकलांगोधनरहितोनित्यंरोगार्दितःकलहयुक्तः ॥ स्वजनरहितोतिमूर्खःक्षितिजार्कजभानुभिःसहितैः ९ नेत्रातुरोतिधनवान्शास्त्रकलाकाव्यगोष्ठीशिल्पयुक्तः ॥ वाचस्पतिबुधसूर्यैरेकस्थैर्लिपिकरःपुरुषः १० अतिशास्त्रोवाचाटोभ्रमतिचदेशान्निराकृतोगुरुभिः ॥ स्त्रीहेतोःसंतप्तःशशिसुतरविभार्गवैःसहितैः ११ क्लीवाचारोद्वेष्यःसर्वजितोबंधुभिःपरित्यक्तः ॥ सौरादित्येंदुसुतैरेकस्थैर्जायतेमनुजः १२ दुर्बलपक्षःशूरःप्राज्ञोनिस्वश्चभूपतेःसचिवः ॥ परकार्यपरोनित्यंभार्गवगुरुभास्करैर्मिलितैः १३ असदृश्यश्वरकार्यःपूज्यस्वजनःसुदारसुतमित्रः ॥ नृपतीष्टोविगतभयोजीवार्कजदिनकरैःसहितैः १४ शत्रुभयात्सोद्वेगोमानकलाकर्मवर्जितोमनुजः ॥ कुत्सितचरितःकुष्ठीसितार्किरविसंयुतैर्भवति १५ पापकराजायंतेनीचाचाराःसुहृत्स्वजनहीनाः ॥ आजीविनश्चपुरुषाःशशांकबुधभूमिजैःसहितैः १६ व्रणितांगःस्त्रीलोलश्चौरःकांतश्चसंमतःस्त्रीणां भौमशशांकसुरेज्यैरेकस्थैश्चंडरोषश्च १७

परकार्यमें तत्पर होताहै ॥ १३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य गुरु शनि का योग होताहै सो अपनें तुल्यसें शीघ्रकार्य के करणे वाला और श्रेष्ठ संबंधियों वाला और स्त्री पुत्र मित्रों वाला होताहै और राजाकीप्रीति वाला और भयसें रहित होताहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य-शुक्र शनि का योग होवे सो शत्रुयों के भयसें उद्वेगवाला होताहै और मान और कला और कर्मोंसें रहित होताहै और निंद्यचरित्रों वाला और कुष्ठी होताहै १५ और जिसके जन्ममें चं[illegible] मंगल बुध कायोगहोवे सो पापके करणे वाला होताहै और नीच आचार वाला और [illegible] सज्जनोंसें रहित और आजीवकाकेकरणेवाला होताहै १६ और जिसके जन्ममें चंद्रमा [illegible] कायोगहोताहै सो अंगोंमें व्रणों फो डयोंवाला और स्त्रीमें चंचल और चोर और [illegible] और स्त्रीयोंके मतवाला और बडे चंडक्रोध वाला होताहै ॥ १७ ॥

श्रोर जिसके जन्ममें चंद्रमामंगल शुक्रकायोग होवे सो खोटे स्वभाववाली मात का पुत्र होताहै श्रोरे धर्ममें इच्छावाला श्रोर शीतसें डरनें वाला होताहै ॥ १८ ॥ श्रोर जिसके जन्ममें चद्रमा मंगल शनि कायोगहोवे सो बाल्यावस्थामें माताकी मृत्युकों कर्त्ताहै श्रोर क्षुद्रहोताहै श्रोर विषमस्वभाववाला श्रोर चलचित श्रोर कवि श्रोर द्वेषकरणेवाला होताहै १९ श्रोर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा बुध वृहस्पतिका योगहोताहै सो धनवान् श्रोर श्रेष्ट वाणी वालाश्रोरतेजस्वीश्रोरप्रसिद्धतावालाश्रोर बडेयशवाला श्रोर बहुते मित्रों श्रोरभाइयों श्रोर पुत्रोंवाला होताहै २० श्रोर जिसके जन्मसमयमें चद्रमा बुध शुक्रका योगहोवे सो विद्याकर्के संस्कृतबुद्धिवाला

दुःशीलायाःपुत्रःपतिश्चतस्याःसदैवनिर्दिष्टः ॥ कुजभृगुशशिभिःसहितैर्धर्मरुचिःशीतभीरुश्च ॥ १८ ॥ बाल्येमृतजननीकःक्षुद्रोविषमश्चलोकविद्विष्टः जायेतनरोयोगेभूसुतशशिभास्करसुतानाम् ॥ १९ ॥ धनवान्कल्पोवाग्मीतेजस्वीख्यातिमान्विपुलकीर्त्तिः ॥ बहुमित्रभ्रातृसुतोबुधेंदुसुरपूजितैर्युक्तैः ॥ २० ॥ विद्यासंस्कृतमतिरापनीचाचारोभवेत्पुमान् जातः सेर्ष्योधनप्रलुब्धोबुधभार्गवचंद्रसयोगे ॥ २१ ॥ असुतोविकलःप्राज्ञोवाग्मीचसुपूजितःक्षितिपः भवतिनरःसंयोगेसौरेंदुशशांकपुत्राणाम् २२ साध्वीतनयःप्राज्ञःकलास्वभिज्ञोबहुश्रुतःसाधुः भार्गवगुरुशशियोगेजातःपुरुषोभवेत्सुभगः २३ शास्त्रार्थबुद्धिनयवान्वृद्धश्रीसंगतोविगतरोगः शशिवाचस्पतिसौरैरेकस्थैःश्रीयुतोभवति २४ लिपिकरपुस्तकवाचकपुरोधसांभवतिजन्म

नीचा चारमेंस्थित होताहै श्रोर ईर्षाकर्के युक्त श्रोर धनकालोभी होताहै २१ श्रोर जिसके जन्ममें चंद्रमा बुध शनि कायोगहोवे सो पुत्ररहित श्रोर कलारहित श्रोर चतुर श्रोर वक्ता श्रोर पूज्य श्रोर श्रपने कुलमें राजाहोताहै २२ श्रोर जिसके जन्ममें चद्रमा वृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो श्रेष्टमाता कापुत्रहोताहै श्रोर चतुरहोताहै श्रोर कलोंके जानने वाला श्रोर बहुश्रुत श्रोर साधुहोताहै श्रोर श्रेष्टभार्योंवाला होताहै २३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा वृहस्पति शनि कायोगहोवे सो शास्त्रार्थकेजानने वाला श्रोर बुद्धि वाला श्रोर नीतिके जाननेवाला श्रोर वृद्धलोके सेवनेवाला श्रोर रोग रहितहोताहै श्रोर लक्ष्मीकर्के युक्तहोताहै २४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें चद्रमा शुक्र शनिका योगहो

ताहै सो लिखने वाला और पुस्तकवाचनवाला और पुरोत और पुन्यात्मा होताहै और ज्योतिषीहो ताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध बृहस्पतिकायोगहोताहै सो श्रेष्टकविऔर युवाकांताका स्वामी और श्रेष्ठस्त्रीकास्वामी और दूसरेकेधनका उद्योगकरणे वाला और गंधर्व वेदमें श्रेष्ठहोताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें मगल बुधशुक्रकायोगहोताहै सो अकुलीन और विकृत अंगोंवाला और चपल और ढीठ और मुखर और नित्य उत्साहकर्के युक्तहोताहै २७ और जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध शनिकायोग होताहै सो प्रेष्य होताहै दूतवृत्तिके करणे वाला और नेत्ररोगी होताहै और विदेशवासकरणेवाला और मुखरोगी होताहै नम्रकी वार्त्ताकों सहारणे वाला होताहै २८

सुमतीनां दैवविदांपुरुषाणांशशिभार्गवसौरसंयोगे ॥ २५ ॥ सुक विःस्त्रोणीनाथःसद्युवतिपतिःपरार्थउद्युक्तः गांधर्ववेदकुशलोबुधगुरुक्षितिसूनु भिःसहितैः ॥ २६ ॥ अकुलीनोविकलांगश्चपलोधृष्टश्चजायतेमनुजः मुखरोनित्योत्साहीकुजबुधभृगुनंदनैःसहितैः २७ प्रेष्यःसामयनेत्रःप्रवासशी लोभवेद्वदनरोगी नमतेप्रसहनशीलोबुधार्किरुधिरैःसहैकस्थैः ॥ २८॥ नृपतीष्टःसत्सुतवान्विलासिनीभ्यःसदाप्तबहुसौख्यः सकलजनानंदकरोभार्ग वगुरुभूमिजैःसहितैः २९ नृपसंमतःकृशांगोनीचाचारोविगर्हितोमित्रैः भव तिनरोविगतघृणःसुरेज्यकुजसौरिसंयोगे ३० चारित्रविहीनायाःपुत्रोभर्त्ताथ वासुखविहीनः नित्यंप्रवासशीलःसयुक्तैःकुजशशिसितैर्मनुजः ३१

और जिसके जन्मसमयमें मंगलबृहस्पतिशुक्र का योगहोताहै सो राजाकाप्यारा और श्रेष्ट पुत्रवा ला और वेश्याजनों केश्रेष्ट सुखवालाहोताहै और सर्वदा बहुतसुखकों प्राप्तहोताहै और संपूर्णज नोंकों आनंदके करणेवाला होताहै २९ और, जिसके जन्मसमयमें मंगल बृहस्पति शनिकायो गहोवे सो राजाकी संमती वाला और कृशदेहवाला और नीचाचार में स्थित और मित्रोंकर्के निंदाकोंप्राप्त और लज्जासें रहितहोताहै ३० और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा मंगल शुक्र कायो गहोवे सोगुणहीनमाताकापुत्रहोताहै और गुणहीनस्त्रीकास्वामीहोताहै और सुखकर्केरहितहोता है और नित्यप्रतिविदेशमें इच्छावालाहोताहै ३१

औरजिसकेजन्मसमयमेंवुधवृहस्पतिशुक्रकायोगहोवेसोशत्रुयोंकेसमूहकानाशकरणेवालाऔरराजाहोताहै औरश्रेष्ठभाग्योंवाला औरशूरवीर वडेयशवालाऔरसत्यवोलनेंवालाहोताहै ३२ औरजिसकेजन्मसमयमें बुधवृहस्पति शनिका योगहोवेसोस्थान धन ऐश्वर्य कर्केयुक्तहोताहै और चतुर और वहुत भोगों केभोगनेवाला और दानकरणेवाला और धैर्य्य और सुखकर्केयुक्तहोताहै ३३ और जिसकेजन्मसमयमें वुध शुक्र शनिकायोगहोताहै सो माडेमुखवाला और धूर्त और झूठवोलनेवाला और पर स्त्रीमें रत और खोटेस्वभाववालाहोताहै और कलाके जाननेवाला और अपनेदेशमेंरतहोताहै ३४ और जिसकेजन्मसमयमें वृहस्पति शुक्र शनि का योगहोवे सो हीनकुलमें जन्मको प्राप्त होयकेवी

क्षपितारिगणोनृपतिःसुभगःशूरस्तथाविपुलकीर्त्तिः वुधजीवशुक्रसहितेभवति नरःसत्यवचनश्च ३२ स्थानधनैश्वर्ययुतप्राज्ञवहुभोगिनंप्रदानरतम् धृतिसौ ख्ययुतंसुभगंजनयंतिवुधार्किजीवाख्याः ३३ विमुखोधूर्तोनृतवाक्परयुवतिरतो भवेद्विषमशीलः वुधशुक्रसूर्यतनयैःकलास्वभिज्ञःसुदेशरतः ३४ न्यूनकुलेपि चजातोभूपतिर्विपुलकीर्त्तिः गुरुभार्गवदिनकरजैरेकस्थैःशूलसंपन्नः ३५ पापैर्यु क्तेचंद्रेमातुरभावःप्रकीर्त्तितःप्रायः सूर्येपितुरन्यथान्यैःशुभंवदेन्मिश्रितैर्मिश्रम् ३६ प्रायःशुभाःसमेताधनभूतियशोन्वितंनृपतिचेष्टम् उत्पादयंतिमनुजंभूमंड लमंडनंश्रेष्ठम् ३७ पापास्त्रयोपिसहिताःकुर्वंतिनरंदुर्भगंलोके दारिद्र्यदुःखत प्तंगर्हितरूपंविनयहीनम् ३८ इतित्रिग्रहयोगप्रकरणम्

वडेयशवालाराजाहोताहै और शूल कर्के युक्तहोताहै ३५ और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा पापीग्र होंकर्केयुक्तहोवे तवतिसकी माताका नाशहोताहै और सूर्यपापीग्रहोंकर्के युक्त होवे तव पिताकानाश होताहै और चंद्रमा सूर्यशुभग्रहोंकर्के युक्तहोवें तव मातापिताको शुभफल होताहै और शुभपाप दोनोंकर्के युक्तहोवें तव मातापिताको मिश्रित फलकर्तेहैं ३६ और जिसकेजन्ममें शुभग्रहोंका योग वहुतेयोंकाहोवे सो धनऐश्वर्य यशकर्के युक्तराजाकीन्याई होताहै और भूमंडलको श्रेष्ठ प्रकाशकर्णे वाला होताहै ३७ और वहुनपापग्रहोंके योग होनेसें मनुष्यदुर्भग और दरिद्री और दुःखकर्के संतप्त और निंद्यरूप और नम्रतासें हीनहोताहै ३८ इतित्रिग्रहयोगप्रकरणम्

अवचतुर्ग्रहयोगकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र मंगल बुध कायोगहोवे सो लिखनेमेंचो री करणे वाला और मुखरोगी और माया प्रपचमे कुशल होताहै ॥ १ और जिसके जन्मसमयमे सूर्य चद्रमा मंगल वृहस्पति कायोगहोवे सो धनीहोताहै और नित्यप्रति नम्रहोताहै और तेजस्वी होताहै और नीतिक जाननेवाला और शोक कर्क रहितहोताहै और कृत्यमें समर्थवाला होताहै और चतुरहोताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्र मंगल वृहस्पति शुक्र कायोगहोताहै तिस कों विनामुखसे व लनेसे हिलाभहोताहै और मुखके भोगने वाला और चतुर और धनसग्रह करणे वाला होताहै और विद्या और पुत्र और स्त्रीव कर युक्तहोताहै ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मगल शनिकायोगहोवे सो माडे देहवाला और वहुत छोटेदेहवाला और धनहीन और याचना

लिपितस्करमुखरोगीमायाप्रपंचकुशलश्च वुधरविभौमशशांकैरेकर्क्षगतै पुमान्भवति ॥ १ ॥ धनधान्विनतोनित्यंतेजस्वीनीतिमान्विगतशोकः कर्मसमर्थोनिपुण शशिकुजगुरुभास्करैःसहितैः ॥ २ ॥ अयोजितवाग्व्यात्ति मुखभाङ्निपुणोथसग्रहशीलः विद्यासुतदारयुत शशिकुजगुरुभार्गवे सहितैः ॥ ३ ॥ विषमशरीरोन्हस्वोधनरहितोयाचितस्तथामूर्खः गर्ह्य सर्वस्यतथारविशशिकुजसौरिसंयोगे ॥ ४ ॥ सौवर्णिकःपुटाक्ष शिल्पिपुरोधामहाधनोधीरः जात स्याद्विरुजतनुः शशिवुधगुरुभास्करैःसहितैः ॥ ५ ॥ विपुल सुभगोवाग्मीन्हस्वोनृपसमतोभवेन्मनुजः जात स्यादेकरथैरविशशिवुधभार्गवे सततम् ६ मातापितृवियुक्तोधनसौख्यविवर्जितोभ्रमणशीलः भिक्षाशनोन्यभृतकोरविदुसौम्यार्किभिर्विकलनत्रः ॥ ७ ॥

करणेवाला और मूर्ख और सवपुरुषोंकर्के निंदाकों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र वुध वृहस्पति कायोगहोवे सो सुवर्ण कर्के युक्तहोताहै और मोटे नेत्रावाला और शिल्पविद्या केजाननेवाला और वडेधनवाला और पंडित और रोगरहित होताहै ॥ ५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र वुध शुक्र कायोगहोवे सो वडे ऐश्वर्य्यों वाला और वक्ता और मधरे देहवाला और राजाको समानेवाला होताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र वुध शनिकायोगहोवे सो माता पिताकर्के रहित और धन सुखकर्के रहित और भ्रमण करणे वाला और भिक्षाकर्के भोजनकरणे वाला और दूसरे कीचाकरी करणे वाला होताहै और विकलनेत्रोंवाला होताहै ॥ ७ ॥

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्र बृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो जल जीवोंका और वनके मृगोंका स्वामीहोताहै और सुखके भोगने वाला और राजाकर्के पूज्यहोताहै ८ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र बृहस्पति शनिकायोगहोताहै सो नेत्ररोग वाला और तीक्ष्ण स्वभाववाला और बहुत पुत्र वाला और धनवाला और श्रेष्ठस्त्रीक सौभाग्यवाला होताहै ९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चद्रशुक्रशनिका योगहोवे सो स्त्रीयोंके तुल्य आचार वाला और वडेदुर्बलदेहवाला और सपूर्णसे डरणवाला होताहै १० और जिसके जन्ममें सूर्यमगल बुध बृहस्पतिका योगहोवे सो शूरवीरअथवा सूत्रधार धनवाला सुत्रधारहोताहै और धनस्त्रीक सुखसें रहित और दुःखकर्क पीडित और भ्रमणेवालाहोताहै ११ और जिसके जन्ममें सूर्यमगलबुधशुक्रकायोगहोवे सो परस्त्रीमें रत और चोर और खोटीदृष्टिवाला और

सलिलमृगारण्यानांस्वामीस्यात्सौख्यभाङ्नृपतिपूज्यः शुक्रार्कगुरुशशांकैरेक क्षेगतै पुमान्निपुण ८ ॥ सामयनेत्रस्तीक्ष्णोवहुसुतवित्तोवरांगनासुभग सूर्ये न्दुचद्रसौरैरेकस्थैर्जायितेमनुजः ॥ ९ ॥ वनितासदृशाचार पुरस्सरोत्यतदु र्वलशरीरः भीरुःसर्वत्रभवेदर्केन्दुसितासितैःसहितैः ॥ १० ॥ शूरो थसूत्रधारश्चक्रधरोविपन्नधनदारः दुःखार्तोटनशील समेगतैरर्कजीमवुध भौमै ११ परदाररतश्चौरोविपमाक्षोविगतसत्वईर्ष्यालु भवतिप्रसवेपुरुषोर वि सितभौमदुजैःसहितै १२ योधःप्राज्ञः श्रेष्ठोनीचाचारःकवि प्रधानश्च मंत्री चमूपतिर्वाबुधार्ककुजसौरिसयोगे १३ सुभगःपूज्योलोकेधनवान्नृपसमतोभवे त्पुरुष रविभौमजीवशुक्रैरेकस्थैर्नीतिमान्पुरुषः १४ सोन्मादोगणमान्य सिद्धा र्थोबहुमित्रसम्पृक्तः भानुकुजजीवसौरैरेकस्थे स्यान्नृपात्समतः १५ विकलो नीचाचारोविपमाक्षोलोकवधूविद्विष्टः

पराक्रमसेहीन और ईर्षा करके युक्तहोताहै १२ और जिसके जन्ममें सूर्यमगलबुधशनिकायोगहोवे सो योधा और चतुर और स्त्रीका पाल और नीच चारम युक्त और कवि और प्रधानहोताहै १३ और जिसके जन्ममें सूर्यमगलबृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो शोभावाला और लोकमें पूज्य और धनी और राजाके सम्मतिवाला और नीतिवालाहोताहै १४ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमगलबृहस्पतिशनिकायोग होवें सो उन्मादकरकेयुक्त और बहुतजन माननीय प्राप्त और कार्यसिद्धकरणेवाला और बहुतमित्रोंवा ला और राजाकीसम्मतिवालाहोताहै १५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमंगलशुक्रशनिकायोगहोवे सो व्याकुल और नीचाचारवाला और खोटीदृष्टिवाला और सबकेप्यारे द्वेषकरणवाला

और सूर्यमंगलशनिकायोगहोवेसो दूसरेकेभाग्यकोप्राप्तहोनेवालाहोताहै १६ औरजिसकेजन्ममें सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रकायोग होवेसो धनवाला और सुखी और प्रधान और अर्थसिद्धकरणवाला और बहुतबुद्धिवाला और श्रेष्ठहोताहै १७ और जिसके जन्ममें सूर्यबुधबृहस्पतिशनिकायोगहोवे सो क्लीवकीन्याईं और मानकरणेवाला और लडाईकीइच्छावाला और भाईयोंवाला और उत्साहसें रहितहोताहै १८ और जिसके जन्ममें सूर्यबुधशुक्रशनिकायोगहोवे सो सुस्वरहोताहै और श्रेष्ठभाग्योंवाला और चतुर और कोमल सुखवाला और सत्यशौचकरकेयुक्त और धैर्यवाला और मित्रोंकेसहायतावाला होताहै १९ और जो सके जन्ममें सूर्यबृहस्पतिशुक्रशनिकायोगहोवे सो लोभी और कवि और प्रधान और कारीका और नीचोंकास्वामी और राजाकाप्याराहोताहै २० और जिसके जन्ममें चंद्रमंगलबुधबृहस्पतिका

सूर्यकुजशुक्रसौरैःपराभवंसर्वतोयाति ॥ १६ ॥ धनवान्सुखीप्रधानः सिद्धार्थोबहुमतःप्रकृष्टश्च भानुबुधजीवशुक्रैर्भवतिपुमानेकराशिगतैः ॥ १७ ॥ क्लीवाचारोमानीकलहरुचिः सहजवान्निरुत्साहः अर्कार्किबुधसुरेज्यैरेकस्थैर्जायतेपुरुषः ॥ १८ ॥ सुस्वरःसुभगः प्राज्ञोमृदुसौख्यःसत्यशौचसंपन्नः धीरोमित्रसहायोरविसितबुधसौरिसंयोगे ॥ १९ लुब्धःकविःप्रधानःकारकनाथोधिपश्चनीचानां आदित्यार्किसितेज्यैरेकोजातोभवेदिष्टः २० शास्त्रकुशलोनरेंद्रःसमहामात्रोथवामहाबुद्धिःशशिकुजसोमजजीवैरेकस्थैर्यःपुमांजातः कलहरुचिर्निद्रालुर्नीचःस्याद्बंधकीपतिःसुभगः वंधुद्विष्टोनसुखीशशिकुजबुधभार्गवैःसहितैः २२ शूरोद्विमातृपितृकोदुष्कुलजोबहुकलत्रसत्पुत्रः भवतिसुकर्माभिरतःशशिबुधकुजसौरिसंयोगे २३ विकलांगःसुकलत्रःसाहसिकोतीवमानसंपुक्तः प्राज्ञोबहुमित्रयुतःशशिकुजबुधभार्गवैःसहितैः २४

योगहोवे सो शास्त्रमें कुशल और राजा और दरो बुद्धि वालाहोताहै ॥ २१ ॥ और जिसकेजन्ममें चंद्र मंगल बुध शुक्र कायोगहोवे सो लडाई की इच्छावाला और बहुत निद्रावाला और नीच और कुलटास्त्रीकास्वामी और श्रेष्ठभाग्योंवाला और बंधुवोंकाद्वेषी और सुखहीनहोताहै २२ और जिसकेजन्ममें चंद्र मंगल बुध शनिकायोगहोवे सो शूरवीर और दोमाता और दोपिताकाप्यारहोताहै और माडे कुलमें जन्मकेभी बहुतस्त्रीयों और श्रेष्ठ कर्मे युक्तहोताहै और श्रेष्ठकर्मोंमें रतहोताहै २३ और जिसके जन्ममें चंद्र मंगल बुध शुक्र कायोगहोवे सो व्याकुल अंगोंवाला और श्रेष्ठस्त्रीवाला और हठकरणेवाला और बडेमानकरकेयुक्त और चतुर और बहुत मित्रोंकरकेयुक्तहोताहै २४

और जिसके जन्ममें चंद्र मंगल बृहस्पति शनि का योगहोवे सो बोलाहोताहै ॥ और धनीहोताहै और शूरवीरहोताहै और उन्मादकर्केयुक्तहोताहै और बाणीमें चतुरहोता है और स्थिरचित्त और बुद्धिमान् उदारचित्तहोताहै २५ और जिसके जन्ममें चद्र मंगल शुक्र शनिकायोगहोवे सो कुलटास्त्रीकापतिहोताहै और प्रगल्भ होताहै और मध्य और अंत्य अवस्थामें नित्य उदासरहेताहै २६ और जिसके जन्म समयमें चंद्र बुध बृहस्पति शुक्र का योगहोवे सो विद्वान् और क्रोधी और धनी और सौभाग्यवाला होताहै और शत्रुओं कर्के रहितहोताहै २७ और जिसके जन्ममें चद्र बुध बृहस्पति शनि कायोगहोवे सो कृतबुद्धि और ग्रंथवालयों में श्रेष्ठ और तेजस्वी और बंधुओं काप्यारा और बुद्धिवाला होताहै

बधिरोधनवान्छूरःसोन्मादोवाक्पटुःस्थिरप्रकृतिःमतिमानुदारचित्तोभौमेंदुशनेश्वरसुरेज्यैः २५ कुलटापतिःप्रगल्भोमध्यान्तेनित्यमेवसोद्वेगः जातःपुरुषोवश्यःशशियमकुजभार्गवैर्भवति २६ विद्वान्हिमातृपितृकःसक्रोधोधनयुतस्तथासुभगः भवतिनरोविगतारिपुर्बुधगुरुशशिभार्गवैःसहितैः २७ कृतबुद्धिर्ग्रंथरस्तेजस्वीबंधुवल्लभोमतिमान् नृपसेवकोवरकविःशशिबुधजीवार्किभिःसहितैः २८ मात्रारहितःसुभगस्त्वग्दोषीभ्रमणशीलश्च बहुभाषीसत्यपरःशशिबुधभृगुसौरिभिर्युक्तैः २९ परदारगमनशीलोविशीलभार्योविधनबंधुश्च प्राज्ञोलोकद्विष्टःशशांकविबुधेज्यभृगुसौरैः ३० स्त्रीकलहरुचिर्धनवान् प्राज्ञोलोकेचशीलसम्पन्नः भवतिपुमान्विरुजतनुर्बुधेंदुगुरुभार्गवैःसहितैः ३१

और राजा कासेवक और श्रेष्ठकवि होताहै २८ और जिसके जन्ममें चद्र बुध शुक्र शनिका योगहोवे सो मातार्के रहित और श्रेष्ठभाग्यवाला और त्वचा केदोषवाला दद्रुकोढादिदोषवाला और भ्रमण करणे वाला और बहुतकहनेवाला और सत्यकर्के युक्तहोताहै २९ और जिसके जन्म समयमें चद्र बृहस्पति शुक्र शनिकायोगहोवे सो परस्त्रीके गमनकरणवाला और खोटेस्वभाववाली स्त्रीवाला और धन और बंधुओं कर्केरहित और चतुर और लोकोंसेद्वेषकरणेवाला होताहै ३० और जिसके जन्ममें चंद्र बुध बृहस्पति शुक्र का योगहोवे सो स्त्रीसे लडाई करणे वाला और धनी और चतुर और लोकों में श्रेष्ठस्वभाववाला और रोगकर्के रहितहोताहै ३१

और जिनके जन्ममें मंगलबुधबृहस्पति शनि कायोगहोवे सो शूरवीर और विद्यावान् और वक्ता और धन रहित और वादी और दुःखके सहारणे वाला और बुद्धि वाला होताहै १२ और जिसके जन्ममें मंगलबुधशुक्रशनिकायोगहोताहै, सो भलवान् और पुष्ट और काठिन अंगों वाला और युद्ध मेंबड़ा दुर्मद और प्रसिद्ध और कुत्तयों करके रमणे वाला होताहै १३ और जिसके जन्ममें मंगल बृहस्पति शुक्रशनिकायोगहोवे सो बडे बलवाला और धनवाला और स्त्रीमेंचंचल और हठमें प्रीति वाला और चंचल और धूर्त होताहै १४ और जिसके जन्ममें बुध बृहस्पति शुक्र शनिका योग होवे सो बुद्धि मान् शास्त्र मेंरत और काममें युक्त और विधिके जानने वाला चाकर और तीव्रसंयो गवाला होताहै १५ इतिचतुर्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥ अवपचग्रहयोगकहतेहैं जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र मं

शूरोविद्वान्वाग्मीधनरहितःसत्यशौचसम्पन्नः वादीद्वंद्वसहिष्णुर्मतिमान्संहितैर्बुधारगुरुसौरैः ३२ स्यान्मल्लःपरिपुष्टःकठिनांगोयुद्धदुर्मदःख्यातः रमतेचसारमेयैर्बुधारयमभार्गवैःसहितैः ३३ ओजस्वीवित्तयुतःस्त्रीलोलःसाहसप्रियश्चपलः भौमगुरुशुक्रसौरैरेकस्थैर्जायतेकितवः ३४ मेधावीशास्त्ररतःकामाशक्तोविधेयभृत्यश्च बुधजीवशुक्रसौरैःसहस्थितैस्तीव्रसंयोगः ३५ इतिचतुर्ग्रहयोगप्रकरणम् दुःखीबहुप्रपंचोजायाविरहेनतापितशरीरः भवतिपुमानेकगतैरवींदुकुजजीवचंद्रसुतैः १ कर्मकरश्चपरेषांविसुहृद्विकृतोविगतसत्वः क्लीवैर्यातिचसरूयंरविज्ञकुजसोमशुक्रैश्च २ अल्पायुर्नचधनभाग्दीनोभवतिचसर्वसुखहीनः विकलत्रोसुतमित्रःसूर्यशनिबुधेंदुभूमिसुतैः ३ जात्यंधोबहुदुःखीमातृपितृभ्यांसदैवसंत्यक्तः भवतिनरोगेयरुचिःकुजेंदुगुरुभार्गवार्कैश्च ४

गलबुधबृहस्पतिकायोगहोताहै सो दुःखी और बहुतप्रपंचवालाऔरस्त्रीकेवियोगकरकेसंतप्तदेहवालाहोताहै १ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मंगलबुधशुक्रकायोगहोवे सो परकर्मकेकरणेवालाऔर मित्रोंसेरहित और विकारकोंप्राप्त और पराक्रमसे हीनहोताहै और नपुंसकोंसे सखाभावकरणेवाला होताहै २ और जिसके जन्ममें सूर्य चद्र मंगल बुधशनिकायोगहोताहै सो थोडी आयुवाला और धनरहित और दीन और संपूर्ण सुखों करके हीन और स्त्रीपुत्रमित्रसे हीनहोताहै ३ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमंगलबृहस्पति शुक्रकायोगहोवे सो जन्मताहि अंधाहोताहै और बहुतदुःखी होताहै और माता पिताकरके सदात्यागकों प्राप्तहोताहै और गायन विद्याकीरुचिवाला होताहै ४

और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमामंगलबृहस्पति शनिकायोगहोताहै सो युद्धकरणेमें श्रेष्ठ समर्थ वाला होताहै और प्राये धन को हरणेवाला और संतापके देने वाला और चुगल और दुष्ट होताहै ५ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र मंगलशुक्रशनिका योग होवे सो मान और धन और ऐश्वर्य करके हीनहोताहै ॥ और मलीनआचारवाला और स्त्रीमें आसक्तहोताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बुध बृहस्पति शुक्रका योग होवे सो यंत्रोंके जानने वाला और बडे ऐश्वर्य वाला और राजाकामंत्री वा दंडकानेता होताहै और प्रसिद्ध और श्रेष्ठ यशकरके युक्त होताहै ७ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बुध बृहस्पति शनिका योग होवे सो डरणेवाला और मित्रोंसे रहित और उन्मादी और ठगीकरणेमेंचतुर और उग्र और पराम भोजनकरणेवाला होताहै ८ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रबुधशुक्रशनिका योगहोवे सो दीर्घदेहवाला और रोमोंसेरहितदेहवाला और

युद्धेकुशलसमर्थःपरवित्तहरःपरोपतापीच पिशुनःखलश्चपुरुषःशनिशशिकुजजीवदिवसेशैः ॥ ५ ॥ मानार्थविभवहीनोमलिनाचारःपरांगनाभिरतः पंचभिरेकस्थैःस्याद्दिनेशशशिशुक्रशनिभौमैः ॥ ६ ॥ यंत्रज्ञोबहुविभवो नृपसचिवोदंडनायकोवास्यात् ख्यातःशुभकीर्तियुतोबुधेंदुरविजीवशुक्रैश्च ॥ ७ ॥ भीरुःप्रियसत्यक्तःसोन्मादोवंचनेसुनिपुणश्च उग्रःपरान्नभोगी बुधेंदुगुरुसूर्यरविपुत्रैः ॥ ८ ॥ दीर्घोलोमशगात्रोमंदोत्साहीसुतार्थसुखहीनः स्यात्पचभिरेकस्थैरविचंद्रबुधार्किभृगुपुत्रैः ॥ ९ वाग्मींद्रजालनिरतश्चलचित्तःस्त्रीपुवल्लभोमातिमान् बहुशत्रुर्विगतयशोरवींदुगुरुशुक्रभानुसुतैः १०॥ कामीबहुतुरगनरःस्फीतःसेनापतिर्विगतशोकः राज्ञांप्रियोतिसुभगोबुधाररविजीवशुक्रैः स्यात् ११ निरुद्वेगीरोगीभुक्तोभिक्षांगृहाद्गृहंगत्वा जीर्णमलीनमवासारविबुधकुजजीवपुत्रैः १२ व्याधिभिरभिसंग्रस्तःस्थानभ्रस्तोऽतिदुःखसंततः भ्रमतिक्षुधितःसकलैःकुजार्करविपुत्रशशिभृगुजैः १३

उत्साहसे रहित और पुत्र और धनसे रहित होताहै ९ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रबृहस्पति शुक्रशनिका योग होवे सो वक्ता और इंद्रजालमें रत और चलचित्त और स्त्रीको प्यारा और बुद्धिवाला और बहुशत्रुवाला और यशहीन होताहै १० और जिसके जन्ममें सूर्यमंगलबुध बृहस्पति शुक्रका योग होवे सो कामी और बहुतघोडयोंवाला और प्रसिद्ध सेनाकास्वामी और शोकहीन और राजाका प्यारा और बडेभाग्योंवाला होताहै ११ और जिसके जन्ममें सूर्यमंगल बुध बृहस्पति शनिका योग होवे सो निरुद्वेगवाला और रोगी और घरघरमें भिक्षाकरके भोजन करणेवाला और पुराण मलीन वस्त्रोंवाला होताहै १२ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रमंगलशुक्रशनिका योग होवे सो व्याधियोंकरके ग्रस्त और स्थानक दुःखकरके संतप्त और क्षुधाकरकेयुक्तभ्रमणकरनेवाला होताहै १३

और जिसके जन्मसमयमें सूर्य मंगल वृहस्पति शुक्रशनिका योगहोवे सो पाताल यंत्र और धातु पारेमें लेकर्के रसायनोंमें वडा चतुरहोताहै और रसायनों कर्के प्रसिद्ध होताहै ॥ १४ ॥ ओर जिसके जन्ममें सूर्य बुध वृहस्पति शुक्रशनिका योग होवे सो बहुत शास्त्र ज्ञानमें चतुर होताहै और मित्रसें प्रीतिवाला और वडे योंकी संमति वाला होताहै ओर धर्ममें तत्पर दयावान् होताहै १५ ओर जिसके जन्ममें चंद्रमंगलबुध वृहस्पति शुक्रका योगहोवे सो साधुवृत्तिवाला ओर पापसें रहित ओर विद्या और धन सुख ओर सत्य कर्के युक्त ओर बंधुयों का प्यारा ओर बहुतमित्रोंवालाहोताहै १६ ओर जिसके जन्ममें चंद्रबुधवृहस्पति शुक्रशनिकायोगहोवे सो बहुतशत्रु ओर मित्रोंकेपक्षवाला ओर परायेधनमें हितकरणे वाला ओर खोटे स्वभाववालाहोताहै १७

बिलयंत्रधातुपारदरसायनेष्वतिपटुःपुमान्भवति एभिःप्रसिद्धकर्माक्षितिसुतरविजीवसितसौरैः १४ बहुशास्त्रज्ञानपटुर्मित्रहितःसंमतोगुरूणांच धर्मपरःकारुणिकःसूर्यासितशुक्रबुधजीवैः १५ साधुःकल्मषहीनोविद्याधनसौख्यसत्यसंपन्नः बंधुहितोबहुमित्रोबुधेंदुकुजजीवभृगुपुत्रैः १६ बहुशत्रुमित्रपक्षः परार्थहितकृद्वेद्विगतशीलः एकस्थैरतिमानीबुधेंदुगुरुशुक्ररविपुत्रैः १७ प्रेष्योमूर्खःक्लीबोमलिनाचारोतिदुर्भगोविकलः भवतिनरोधनरहितःशशिकुजगुरुशुक्ररविपुत्रैः १८ नृपमंत्रीनृपतिसमोगणनाथःसर्वलोकपूज्यश्च सैष्योभवतिनरश्चेचंद्रेंदुजशुक्रशनिजीवैः १९ सतमस्कःसोन्मादोराज्ञामतिवल्लभोविगतशोकः निद्रातुरोदरिद्रःकुजगुरुबुधशुक्ररविपुत्रैः २० इतिपंचग्रहयोगप्रकरणम्

ओर जिसके जन्ममें चंद्रमंगल वृहस्पतिशुक्रशनिका योग होवे सो दूतवृत्तिके करणेवाला और मूर्ख ओर नपुंसक ओर मलीन आचारवाला और अत्यंत खोटे भाग्योवाला ओर व्याकुल ओर धन हीन होताहै १८ ओर जिसके जन्ममें चंद्रबुधवृहस्पतिशुक्रशनिका योग होताहै सो राजाका मंत्री और राजाके समान ओर सेनाकास्वामी ओर संपूर्णलोकोंकर्के पूज्य ओर दूसरोंके युक्तहोताहै १९ और जिसके जन्ममें मंगलबुधवृहस्पतिशुक्रशनिका योग होवे सो अंधकाररूप वडेउन्मादवाला ओर राजाका अत्यंतप्यारा और शोकसें रहित ओर निद्राकर्केआतुर ओरदरिद्री होताहै २० इतिपंचग्रहप्रकरणम्

अब छै ६ ग्रहयोगका फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सूर्य चन्द्रमंगल बुधबृहस्पति शुक्रकायोग होवे सो विद्या और धन और धर्ममेंरत होताहै और क्षमाकरणेवाला और बहुतबोलने वाला और श्रेष्ठबुद्धिवाला होताहै १ और जिसके जन्ममें सूर्य चंद्रमंगलबुधबृहस्पतिशनिकायोग होवे सो दाता और परकर्ममेंरत और चचलस्वभाववाला और श्रेष्टपराक्रमकर्केयुक्त और विजनदेशमें रमणेवाला होताहै २ और जिसके जन्ममें सूर्य चन्द्रमंगलबुधशुक्रशनिकायोग होवे सो धनसंचयकर. णेवाला और श्रेष्ठभाग्योंवाला और मानवाला और शत्रुयोंकेहरणेमें प्रसिद्धऔर वन और पर्वतोंमेंरह. णेवाला होताहै ३ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रशनिका योगहोवे सो श्रेष्ठ जनों, काप्यारा और बडेतीव्रक्रोधवाला और लोभी होताहै और चुगलोंसे प्रीतिकरणेवाला और अत्यंत,

विद्याधनधर्मरत.क्षमीचवहुभाषकोविकृष्टमतिः एकभवनोपयातैर्बुधदुरव्यारगुरुशुक्रैः १ दातापरकर्मरतःचलस्वभावोविशुद्धसत्वसंयुक्तः रमतेविजनेदेशे रवींदुवक्रज्ञगुरुरविजैः २ संचयशीलःसुभगोमानीरिपुहारणेतिविख्यातः वन पर्वतेपुरमतेरविशशिभौमज्ञसितसौरैः ३ आर्यजननांदयितोनरोत्कटस्तीव्ररोपणोलुब्धः पिशुनप्रियोतिसुभगोरविभौमेज्यैंदुसितसौरैः ४ मंत्रीनृपस्यसुभगः क्षांतियुतोभवतिशोकपरितप्तः अकलत्रोधनरहितोरवींदुबुधजीवसितसौरैः ५ तीर्थेभ्रमतिसदायःपुत्रैर्दारैर्धनेनरहितश्च पर्वतवनोपसेवीबुधाररविजीवसितसौरैः ६ प्रायोदारिद्र्यदुःखोमूर्खःषट्पंचभियुतैर्विहगैः अन्योन्यदर्शनादपिफल मेवंस्कंदिलःप्राह ७ ॥ इतिषट्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥

श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै ४ और जिसके जन्ममें सूर्यचंद्रमंगलबुधबृहस्पतिशुक्रशनिकायोग होताहै. सो राजाकामन्त्री श्रेष्ठभाग्योंवाला और क्षमाकर्केयुक्त और शोभाकर्के सतप्त और स्त्रीकर्केरहित और धनकर्के रहित होताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यमंगलबुधबृहस्पतिशुक्रशनिकायोग होताहैसो पुत्र स्त्री और धन कर्के रहित सर्वदाकाल तीर्थोंमें भ्रमताहै और पर्वत और वनकेसेवनेवाला होताहै ६ और जिसके जन्ममें पाचग्रहोंका वा षट्ग्रहोंकायोग होताहै अथवा पाच छै ग्रह परस्परदेखते होवें सो मनुष्य बहुत दरिद्री होतेहैंऔर मूर्ख होतेहैंऔर दुःखी होतेहैंअयर्सेज्योतिःशास्त्रके जाननेवालेकहतेहैं ७ ॥ इति षट्ग्रहयोगप्रकरणम् ॥

अब चारपांच पट्ग्रहादि योगोंकर्के प्रव्रज्यायोग कहतेहैं ॥ चतुर्ग्रहादि यो योगकहेहैं तिनमें निश्च यकर्के तपस्वीयोंका जन्म होताहै सो तिनों तपस्वीयोंके जन्मके फल अनेक प्रकारके योमुनियोंनें कहेहैं सो विचित्रताकर्के में इसग्रंथमें कहताहा ॥ १ ॥ जिसके जन्मसमयमें सूर्यचंद्रमाशुक्रवृहस्पति मगल इहे पाचग्रह एकराशिमें स्थितहोवें वा सूर्यचद्रमाबुधमंगलइहे चार ग्रहास्थितहोवें वा सूर्यमंग लशनिबुधशुक्रइहे पांचग्रह स्थितहोवें सोमनुष्य गृहस्थ छोडके तपस्वी होताहै ॥ २ ॥ और जिसके जन्ममें मंगलचंद्रमासूर्यवृहस्पति एकराशिमें होवें और सूर्यचंद्रशनिबुधएकराशिमें होवें और सूर्यचंद्र मंगलशनिएकराशिमें होवें सोगृहस्थधर्मको त्यागकर्के संन्यासी होताहै ॥ ३ जिसके जन्मसमयमें

योगानिरुक्ताश्चतुरादिसंस्थैर्व्यासोग्रहैःकैरपितापसानां जन्मेहतेषामपरैर्मुनींद्रैःसंसेवितांस्तान्कथयामिचित्रान् १ सूर्येन्दुशुक्रेज्यमहीसुतेषु सूर्येन्दुसोमात्मजभूमिजेषु एकास्थितेषुप्रभवेत्तपस्वीसूर्यारमंदज्ञसितेषुचैवम् २ कुजेंदुसूर्येन्द्रपुरोहितैश्चतीक्ष्णांशुचंद्रार्किशशांकजैश्च सूर्येन्दुभूपुत्रशनैश्चरैः स्यादेकस्थितैःप्रव्राजितोमनुष्यः ३ आदित्यभूजार्कशशांकपुत्राभौमार्कचंद्रात्मजसूरयश्च एकर्क्षसंस्थास्तपसःस्थितानांकुर्वंतिजन्मप्रभवंनरेंद्राः ४ चंद्रार्कभौमार्किसितामहाबलाःसुरेज्यभूम्यात्मजसूर्यसौरयः ॥ कुजेंदुवागीशशनैश्चराइमेजन्मप्रदास्तेपिभवंतितापसाः ५ कुजार्किसोमात्मजदेवनंदनैःकुजार्किचंद्रात्मजसूरिभार्गवैः ॥ रवींदुभौमासितदानवप्रियैर्भवंतिसूतौव्रतसंस्थिवानरः ६

सूर्यमंगलशनिबुधएकराशिमें और मंगलसूर्यबुधवृहस्पतिएकराशिमें स्थितहोवें सोतपस्वीजनोंमें राजाहोताहै ॥ ४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमासूर्यमंगलशनिशुक्र बडेबलकर्केयुक्त एकराशिमेंस्थितहोवें और वृहस्पतिमंगलसूर्यशनि एकराशिमेंहोवें और मंगलचंद्रवृहस्पतिशनि एकराशिमें स्थितहोवें सोतपके करणेवाला होताहै ॥ ५ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें मंगलसूर्यबुधवृहस्पति एकराशिमें और मंगलशनिबुधवृहस्पतिशुक्र एकराशिमें स्थित और सूर्यचंद्रमंगलशनिशुक्र एकराशिमें स्थितहोवें तब व्रतमें स्थित होताहै ॥ ६

॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें शुक्रमंगलशनिबृहस्पति सूर्य एकराशिमेंस्थित श्रौर मंगलचंद्रबृहस्पतिबुधशनि एकराशिमें स्थित श्रौर शुक्रचंद्रबुधशनिमंगलएकराशिस्थितहोवें सो तपस्वी वनऔरपर्वतोंमें रहने वाला होताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध मंगलबृहस्पति सूर्यएक राशिमें स्थितहोवें और चंद्रमा सूर्य बुध शुक्र मंगल एकराशिमेंस्थितहोवें सो मनुष्यदृढव्रतके धारणेवालेमुनिहोतेहैं ८ श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्र एक राशिमें स्थित होवें श्रौर चंद्र मंगल शनि बुध गुरु सूर्य एकराशिमें स्थितहोवें श्रौर मंगल चंद्र सूर्य शनि शुक्र बुध एकराशिमें स्थित होवें सो मनुष्य सेनाकर्के युक्त अर्थात् जमात वाला महंत होताहै ॥ ९ ॥ श्रौर जिसके जन्ममें

सितारसूर्यात्मजजीवभास्करैःकुजेंदुदेवेज्यबुधार्कनंदनैः सितेंदुपुत्रार्किशशांकभूसुतैर्भवेत्तपस्वीवनपर्वतालयः ७ चंद्रेंदुपुत्रारसुरेज्यभास्करैःशशांकसूर्येन्दुजशुक्रभूमिजैः स्थितैरमीभिःसहितैर्नृसंभवाभवंतिहृत्यामुनयोदृढव्रताः ८ रवींदुभौमेंदुजजीवभार्गवैः शशांकभौमार्किबुधेज्यभास्करैः ॥ कुजेंदुसूर्यार्किसितेन्दुसंभवैर्भवेद्बहूभिःसहितोनरोव्रती ९ सितेंदुसूर्यार्कजजीवरुोहितैःसितार्किभौमार्कशशांकसोमजैः ॥ एकत्रयातैर्गगनेचरैःसदाभवंतिजातामुनयस्तपास्विनः १० कुजज्ञवागीशसितार्किभास्करैःसितार्किजीवेंदुजचंद्रभूमिजैः ॥ बलप्रधानैःसहितैर्विहंगमैर्व्रजंतिजाताःपुरुषास्तपस्विनाम् ११ रवींदुवागीशशनैश्चरैश्चशनैश्चरेंद्वर्कसितैरवश्यं ॥ रवींदुपुत्रक्षितिजेंद्रपूज्यैस्तपस्विनःस्युःफलकंदभक्ष्याः १२

शुक्र चंद्र सूर्य शनि गुरु मंगल एकराशिमें स्थित होवें श्रौर शुक्र शनि मंगल सूर्य चंद्र बुध एकराशिमें स्थित होवें सो मुनि श्रौर तपस्वी होताहै १० श्रौर जिसके जन्मसमयमें मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि सूर्य एकराशिमें स्थित होवें श्रौर शुक्र शनि गुरु बुध चंद्र मंगल एकराशिमें स्थित होवें श्रौर बलकर्के युक्त होवें तव सो पुरुष तपस्वी होताहै ॥ ११ श्रौर जिसके जन्ममें सूर्य चंद्र बृहस्पती शनैश्चर एकराशिमें होतेहैं श्रौर शनि चंद्र सूर्य शुक्र एकराशिमें होतेहैं श्रौर सूर्य बुध मगल बृहस्पति एकराशिमें स्थित होतेहैं सोअवश्यकर्केफलकंदमूलभक्षणकरणेवालेतपस्वी होतेहैं॥ १२ ॥

और जिसके जन्ममें मंगल सूर्य बुध शुक्र एकराशिमें होतेहैं और मंगल चंद्र बृहस्पति बुध एकराशिमें स्थित होतेहैं सो व्रती और वृक्षोंके छिल्लोके वस्त्र धारणे वाला होताहै ॥ १३॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध मंगल शनि एकराशिमें स्थित होवें बुध मंगल बृहस्पति शनि एकराशिमें स्थित होवें तिसकों तपस्वीयोंका नायक कर्तेहैं १४ और जिनोंके जन्मसमयमें चंद्रमा शनि शुक्र बुध बलयुक्त एकराशिमें स्थित होवें और मंगल बुध शुक्र शनि एकराशिमें स्थित होवें और शनि चंद्र सूर्य शुक्र एकराशिमें स्थित होवें सो तपस्वी फलशाक भक्षणकरणेवाले होतेहैं ॥ १५ ॥ और जिसके जन्ममें सूर्य मंगल चंद्रमा शुक्र एकराशिमें स्थित होवें और चंद्र मंगल बुध सूर्य एकराशिमें होवें और बृहस्पति शुक्र सूर्य चंद्रमा एकराशिमें स्थित होवें और शुक्र जीव बुध

वक्रार्कसोमात्मजदानवेज्यैर्भौमेंदुवागीशशशांकपुत्रैः ॥ एकर्क्षगैर्जन्मनियस्य जंतोर्भवेद्व्रतीवल्कलचीरधारी १३ शशींदुपुत्रक्षितिजार्कपुत्रावुधक्षमापुत्रसुरेज्य सौराः ॥ एकत्रगायस्यनरस्यसूतौकुर्वंतितंतापसमेवकांतम् १४ चंद्रार्किभार्गवशशांकसुतावलस्थाभौमेंदुपुत्रासितभास्करनंदनाश्च ! मंदेंदुभास्करसितानि यतंयतीनांकुर्वंतिजन्मफलशाककृताशनानाम् १५ रविकुजशशिशुक्रैश्चंद्रभौमज्ञसूर्यैःगुरुसितरविचंद्रैःशुक्रजीवेंन्दुपुत्रैः ! कुजबुधसितचंद्रैरेभिरेकेक्षया तैर्भवतिगिरिवनौकास्तापसःसर्ववंद्यः १६ सितशशिकुजगुरुसौरैश्चेद्रन्दुजभौमदेवगुरुशुक्रैः॥ रविकुजबुधशनिजीवैर्भवतियतिर्दुःखितोदीनः ॥ १७ ॥ कुजार्कदेवेज्यसितेंदुपुत्रैःशनीज्यसोमात्मजचंद्रभौमैः समागतैःस्युःसबलैर्यथोक्तैर्जटाधरोवल्कलचीरवासाः १८

एकराशिमें स्थित होवें और मंगल बुध शुक्र चंद्रमा एकराशिमें स्थित होवें सो तपस्वी संपूर्णोंकर्के वंदनाकों प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्र चंद्रमा मंगल बृहस्पति शनि एकराशिमें स्थित होवें और चंद्रमा बुध मंगल बृहस्पति शुक्र एकराशिमें स्थित होवें और सूर्य मंगल बुध शनि बृहस्पति एकराशिमें स्थित होवें सो संन्यासी बडेदुःखकों प्राप्त और बडादीन होताहै १७ और जिसके जन्मसमयमें मंगल शनि बृहस्पति शुक्र बुध एकराशिमें स्थित होवें और शनि बृहस्पति बुध चंद्रमा मंगल एकराशिमें स्थित होवें और बलकर्के युक्त होवें सो तपस्वी जटाके धारणे वाला और वृक्षोंके छिल्लडोंके वस्त्रधारणे वाला होताहै १८

श्रीरजिसके जन्मसमयमेंसूर्य बुधचंद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रएकराशिमेंस्थितहोवेंश्रीरसूर्यचंद्रमंगलबृहस्पति शुक्र शनिएकराशिमेंस्थितहोवेंसोतपस्वियोंकारूपधारकवडाश्रेष्ठहोताहै १९ श्रीरजिसकेजन्मसमयमें दशमघरकास्वामी सूर्य कर्के युक्तहोवेसो संन्यासीभक्ति कर्केयुक्तहोताहैश्रीरप्रव्रज्याकेकारकग्रहवलीहोवें तववी भक्तियुक्तहोताहै श्रौर जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण ग्रह नवमस्थानमें स्थित होवें वा चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें सो संन्यासी ग्रहोंके वलके अनुसार होताहै २० श्रौर जिसके जन्मसमयमें दशमघरका स्वामी सूर्यकर्के युक्त होवे अथवा श्रौर ग्रहों कर्के देख्याहोवे सो याचनाकर्के दीक्षित होताहै इहे यव नाचार्यका वाक्यहै २१ श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा शनि के द्रेष्काणमें स्थित होवे श्रौर मंग ल सूर्य कर्के देख्या होवे सो तपस्वी होताहै अथवा मंगलके नवांशमें चंद्रमा शनिकर्के देख्याहोवे तव

भान्विदुजेन्दुकुजजीवसुरारिपूज्यैःसूर्येंदुभौमगुरुशुक्रशनैश्चरैश्च ॥ प्राप्नो त्यवश्यमिहतापसरूपमेभिरेकर्क्षगैर्गगनवासिभिरायंतज्ञः ॥ १९ ॥ प्रव्र ज्येशेदिनकरगतेभक्तिवंतोतिमात्रं ॥ प्रव्रज्यायाःस्वबलसहितैर्वीर्यमाहुर्ग्रहे न्द्रैः ॥ संपूर्णैर्वानवभवनगतैःप्रच्युतिस्थैर्वहुत्वं ॥ वीर्योपेतैर्भवतिवहुभिः स्याद्बलस्यानुपूर्व्या ॥ २० ॥ प्रव्रज्यायाःस्वामीरविमुपिततनुर्निरीक्षितो वान्यैः याचितदीक्षोभवतियवनाधिपतेर्यथावाक्यम् २१ शशीदृकाणेरविजस्य संस्थितःकुजार्कदृष्टःप्रकरोतितापसं कुजांशकेवारविजेनदृष्टोनवांशतुल्यंकथयं तितंपुनः २२ जन्माधिप.सूर्यसुतेनदृष्टःशेषैरदृष्टःपुरुपस्यसूतौ श्रामीयदी क्षांकुरुतेह्यवश्यंपूर्वोक्तमत्रापिविचारणीयम् २३ जन्मपतिर्विकलांगःपश्यति सौरिंचतुष्टयेप्रवलम् यस्यसभाग्यविहीनःप्रव्रज्यांप्राप्नुयात्पुरुपः २४ गुरुहि मगुरवीणामेकपूर्वोदयस्थोगगनतलगतोवावारिजात्मालपमूर्त्तिः अविकलवल भाजासूर्यपुत्रेणदृष्टोजनयतिखलुजातंतापसंदुःखभाजम् २५

नवांशपतिग्रहके समान तपस्वी कहतेहैं २२ श्रौर जिसके जन्मलग्नका स्वामी शनिकर्के देख्या होवे श्रौर शेप श्रौर कोई ग्रहनहीं देखता होवे तव तिस पुरुषकों आत्मदीक्षामें अवश्य युक्त कर्ताहै श्रौर पूर्वोक्त लक्षणतिसमें विचारणे योग्यहै गृहस्थ या वानप्रस्थ इत्यादि २३ श्रौर जिसके जन्मलग्नका स्वामी निर्वलहोयकर्के केंद्रमें स्थित वलवान् शनिकों देखे सो पुरुष भाग्योंकर्के हीन प्रव्रज्यामें प्राप्त होताहै २४ श्रौर जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति चंद्रमा सूर्यके मध्यमें एक ग्रहवी पूर्वोदयमें स्थित होवे श्रौर आकाशमें स्थित शुभग्रहोंकर्के रश्मि मूर्तिकों प्राप्तहोवें श्रौर अल्प वलकों प्राप्तहोवें श्रौर शनिकर्के देख्या होवे सो तपस्वी कोंदुःखके भोगने वाला कर्ताहै २५

श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्यको शुभग्रहके नवांशमें वा अपने उच्चमें वा पंचमस्थानमें स्थित हुवे कों शनि देखताहोवे बलीहोयकर्के तब सो दीक्षित भवनोंकास्वामी होताहै श्रौर चित्तकर्के दीक्षित होताहै २६ श्रौर जिसके जन्मसमयमें शुक्लपक्षमें पूर्णवली होयकर्के चंद्रमा श्रौर वलककेंहीन लग्नेशकों देखे तवतपस्वी वडादुःखी श्रौर शोककर्केयुक्त श्रौर धनकर्के संबंधियोंकर्के हीन श्रौर वडे क्लेशकर्के अन्नपानकों प्राप्त होताहै २७ श्रौर जिसके जन्मसमयमें शनि शुभग्रहके नवांशमें स्थित होयकर्के चंद्रमाकों देखे श्रौर तबसेंहीं श्रौर ग्रहोंकों देखे श्रौर चंद्रमासें लेकर्के ग्रह उच्चनवांशमें स्थित नहिं होवें तब पुरुषकों दीक्षाकर्के युक्त कर्तेहैं २८ श्रौर जिसके जन्मसमयमें एकराशि में संपूर्णग्रह स्थितहोवें श्रौर लग्नकास्वामी तिनकों देखता होवें तव तिसपुरुषकों अवश्यमेव दीक्षा होतीहै अपसें

कुमुदगहनवंधुःसौम्यभागेवलस्थंवियतिगमनशीलंस्वोच्चगेपंचमेवा यदिदिनकरपुत्रःपश्यतिप्राप्तवीर्योभवतिभुवननाथोदीक्षितःस्वांतएव २६ अतिशयवलयुक्तःशीतगुःशुक्लपक्षेवलविरहितरिक्तंप्रेक्ष्यतेलग्ननाथम् यदिभवतितपस्वीदुःखितःशोकतप्तोधनजनपरिहीनःकृच्छ्रलब्धान्नपानः २७ सौरःशुभभागस्थःपश्यतिचंद्रंग्रहांस्तथैवान्यान् तुंगांशेष्वप्रसंजनयतिदीक्षान्वितंपुरुषम् २८ एकर्क्षगतैःसर्वैर्जन्माधिपतिर्निरीक्ष्यतेयस्य दीक्षातस्यावश्यंभवतीहपुरातनैःकथितम् २९ अग्नीनांपरिचारकागिरिनदीतीराश्रमेतापसाःसूर्याराधनतत्परागणपतेर्भक्ताउमायाश्चये गायत्रींजपतांवनेनियमिनांगंगाभिषेकार्थिनांकौमारव्रतधारिणामधिपतिस्तेषांचवैभास्करः ३० वृद्धाःश्रावकभस्मधूलिधवलाःशैवेव्रतेयेस्थितावाह्योपासकृतावनेनियमिनांभक्ताश्चनिःसंगिनः सिद्धांतेखलुसोमनाम्निनिरताःकापालकानंवरास्तेषांनायकतांगतःशशिधरःशंखांवुयोनिद्युतिः ३१

पुरातन ऋषियोंने कहाहै २९ अब प्रव्रज्याके स्वामी ग्रह कहतेहैं यो तपस्वी अग्निहोत्रके करणेवाले श्रौर पर्वत नदीके कनारे आश्रमवनायकर तपस्या करतेहैं श्रौर यो सूर्यके आराधनमें तत्परहोतेहैं श्रौर यो गणेशके श्रौर पार्वतीके भक्तहैं श्रौर वनमें स्थितहोयकर्के गायत्रीका जपकर्तेहैं श्रौर श्रीगंगाजीका स्नान नित्यप्रति कर्तेहैं श्रौर नैष्टिक ब्रह्मचर्यकोंधारतेहैं तिनोंका स्वामी सूर्यनारायणहै ३० श्रौर यो वृद्ध श्रावकधर्ममें स्थित हिंसादि दोषोंसें रहित श्रौर भस्मकर्के श्वेतवर्णके देह जिनके श्रौर शिवदीक्षावाले उपवासव्रतोंकेकरणेवाले श्रौर वनमें नियम धारकर्के वासकरणेवाले श्रौर संगसें रहित श्रौर सोमसिद्धांतमें रत श्रौर कपालोंके धारणेवाले श्रौर नग्नव्रतके धारणेवाले श्रौर शंख श्रौर कमलकी न्याई शोभाजिनकी अपसे तपस्वीयोंका स्वामी चंद्रमा होताहै ३१

और यो बुद्धिके आश्रयहोयकर्के देवताकी उपासना कर्तेहैं और यो शिखाके विना पांडुरवस्त्रोंकर्के युक्त और भिक्षाकेमांगणेवालेजो हैं और लालवस्त्रधारणे वाले और इंद्रियोंकों जीतनेवाले तिनों कास्वामी मंगल होताहै ३२ और यो कपटकर्के जीविकाकरणेवाले और यो गारुडमंत्रोंकर्के दीक्षितहैं और यो मयूरतंत्रके मतमें स्थित और कचे मांसकेभोजनकरणेमें युक्त तिनोंका स्वामी बुध होताहै ३३ और जो तपस्वी एकदंडकों अथवा तीनदंडकों धारणकर्तेहैं और कषायांवर गेरीके रंगके वस्त्र धारतेहैं और वानप्रस्थ धर्ममें स्थित होतेहैं और जोगृहस्थधर्ममें यज्ञोंका नियम करणेवालेहैं और जो श्रेष्ठब्रह्मचर्यमें प्राप्तहोतेहैं और जो तीर्थमें स्नानकरणेवाले हैं तिनोंका स्वामी बृहस्पतिकहाहै

उपासकाबुद्धिसमाश्रयंगताःशिखांविनापांडुरभिक्षुकाश्चये सवाससोरक्तपटा जितेंद्रियाःप्रभुःसचैषांक्षितिजःप्रकीर्त्तितः ३२ आजीविनांकुहकिनांसमयाधिकारियेदीक्षितास्तनुभृतःखलुगारुडेच तंत्रेमयूरपिशिताशनयुक्तियुक्तास्तेषांशशांकतनयोधिपतिर्निरुक्तः ३३ एकंत्रीनथवावहंतिमुनयोदंडान्कषायांवरा वानप्रस्थमुपागताःफलपयोभक्षाश्चसद्भिक्षवः गार्हस्थ्यक्रतुसंज्ञितानियमिनःसद्ब्रह्मचर्यंगतास्तेषांदंडपतिःसुरेंद्रसचिवस्तीर्थेषुयेस्नातकाः ३४ पाशुपतयज्ञदीक्षाव्रतेषुयेनित्यमेवसंयुक्ताः वैष्णवचरकाणामपितेषांनेताप्रकीर्त्तितःशुक्रः ३५ पाषंडव्रतनिरतादिगंवराःश्वेतभिक्षवोयेच तेषामधिपतिरार्किःश्रावकलंविनःसुदुस्तापसाः ॥ ३६ ॥ प्रकथितमुनियोगेराजयोगोयदिस्यादशुभफलविपाकंसंवमून्मोल्यपश्चात् जनयतिपृथवीशंदीक्षितंसाधुशीलं प्रणतनृपशिरोभिर्घृष्टपादाब्जयुग्मम् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधजातकखंडेद्विग्रहादियोगाध्यायोद्वादशः ॥ १२ ॥

---

३४ और जो पशुपति यज्ञकी दीक्षामें स्थितहैं और नित्यप्रति व्रतोंमें संयुक्तहैं और वैष्णवचरकोंके जाननेवाले जोहैं तिनका स्वामी शुक्रकहाहै ३५ और जो पाखंडव्रतमें स्थितहैं और दिगंवरजो हैं नग्नतके धारणे वाले और श्रावक मतमें स्थित होनेवाले और वडे कठिनतपके करणे वाले जो तपस्वीहैं तिनका स्वामी सूर्यकापुत्र जो शनिहै सो कहाहै ३६ और कहतेहैं कहेयो मुनियोगहैं इनमें जब राजयोगहोवे तव सर्वणं अशुभफलकों दूरकर्के पीछेसें वडे प्रतापकर्के युक्त राजा होताहै कैसाराजाहोताहै दीक्षाकर्के युक्त और साधुस्वभावकर्के युक्त और वडेवडेराजा तिसके कमलरूपीचरणोंको अपने शिरोंकर्के नम्र होयकरस्पर्श करतेहैं ३७ इतिश्रीजातकखंडेद्विग्रहादियोगफलाध्यायोद्वादशः १२

अब राजयोगाध्याय कहतेहैं इहे शास्त्र राजयोंका उपयोगीहै जिससें विशेषसें राजयोगोंककें राजा जन्मतेहैं तिसकारणसें राजयोगोंका चिंतनककें इसग्रंथमें कहताहां १ और जिसके जन्मसमयमें तीन अथवा चार ग्रह अपने उच्चमें वा मूलत्रिकोणमें स्थितहोवें और बलककें युक्त होवें सो राजाके वंशमें जन्माहुया राजा होताहै और जिसके जन्ममें पाचवाछे ग्रह उच्च और मूलत्रिकोणमें स्थित बली होवें सो सामान्यकुलमेंबी जन्माहुया राजा होताहै और उच्चत्रिकोणमें ग्रह हीनबलहोवें तब राजा केतुल्य होताहै औरपृथ्वीके पालनेंवाला राजा होताहै और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पापीग्रह



अथराजयोगाध्यायः राजोपयोगिशास्त्रंयस्मात्प्रभवोविशेषतस्तेषाम् संचिंत्यचनृयोगैस्तानेवातःप्रवक्ष्यामि १ स्वोच्चत्रिकोणभगतैर्बलसंयुतैश्चत्र्याद्यैर्नृपोभवतिभूपतिवंशजातः पंचादिभिर्जनपदेपिभवंतिसेद्धैर्हीनैःक्षितीश्वरसमोनतुभूमिपालः २ अशुभगगनवासैःस्वोच्चगैःक्रुरचेष्टंकथयतियवनेंद्रोभूपतिविक्रमोत्थम् नतुभवतिनरोंद्रोजीवशर्मोक्तपक्षेभवतिनृपतिपुण्यैरुत्कटैर्भूमिपालः ३ येष्विहभवंत्यवश्यंभूपतियोगेषुनीचकुलपुरुषाः तानग्रतःप्रवक्ष्येयथामतंशास्त्रकाराणाम् ४

उच्चमें स्थितहोवें सो राजा क्रूर स्वभाववाला और अपनेक्रमककें राजकर्ताहै अयसें यवनाचार्यके मतसें कहाहै और जीवशर्मा आचार्यकेमतसेंसो राजा नहि कहाहै जिसककें क्रूरग्रहोंके उच्चहोनेंसे बली और लोकोंके सितावने वालाहोताहै और पूर्वजन्मके वडे पुण्यों ककें पृथ्वीके पालनेवाला होताहै ३ और कहतेहैं जिनराजयोगोंमें जन्माहुया नीचकुलमें भी अवश्यमेव राजा होताहै सोराजयोगपूर्व कहताहैं जैसें शास्त्रकारोंके मतमें कहेहैं ४

श्रोर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य शनि मंगल वृहस्पति चारग्रह वा तीन ग्रहवी उच्चमें स्थि तहोवें तव षोडशवृद्धयवनों केमतसें राजा कहेंहें श्रोर दोग्रह वा एकग्रह उच्चमें स्थित होवेंश्रोर वृषराशिका चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तववी षोडशयवनोंके मतसें नीचकुलमें जन्मकी पायकेवी पृथ्वीकों एक वाडीकीन्याई पालताहे ५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें श्रेष्ठगणकानवांश जन्मलग्नमें स्थितहोवे श्रोर श्रथवाचद्रमावीश्रेष्ट नवांशमें स्थितहोवे श्रोर चारग्रह चंद्रमासेंरहित वलीहोवें श्रोर तिनोंकर्के चंद्रमा देख्या होवे तव नीचकुलमें जन्मावी राजा होताहै ६ श्रोर जिसके जन्मा

स्वोच्चस्थैरविसौरभौमगुरुभिः सर्वैस्त्रिभिश्चकर्कैर्लग्नेषोडशवृद्धयावनमतेसंदर्शिताःपार्थिवाः द्वाभ्यांचैकतमोदयेस्वभवनेचंद्रेपुनःषोडशःसर्वैर्नीचकुलोद्भवोपिवसुधांपात्येकवाटीमिव ॥ ५ ॥ गणोत्तमोलग्नवांशकोद्गमोनिशाकरश्चापिगणोत्तमेथवा चतुर्ग्रहैश्चंद्रविवर्जितैर्वलीनिरीक्षितः स्यादधमोद्भवोनृपः ॥ ६ ॥ उदयगिरिनिविष्टैर्मेषसंस्थैर्ग्रहेंद्रैः शशिरुधिरसुरेज्यैर्जायतेपार्थिवेंद्रः त्रिजलधिरसनायाःपालकोयस्यभूमेर्हतरिपुपरिवारःसर्वतःफूत्करोति ७ स्वोच्चेरवावथकुजेकियगेविलग्नेमेषोदयेचसकुजेवचसामधीशे भूयान्महीभृदिहयस्याविपक्षसैन्यंतिष्ठेन्नजातुपुरतः सचिवस्ययस्य ॥ ८ ॥

समयमे मेषराशिमें स्थित चद्रमा श्रोर मंगल श्रोर वृहस्पति उदयकों प्राप्तहोवें सो राजाधिराजहोताहे श्रोर तीनसमुद्रपर्यंत पृथ्वीके पालने वाला होताहै श्रोर जिसकी भूमिमें हतहोयेगएहे शत्रुओंके समूह श्रोर चारदिशोंमें वडे स्वासोंकोंलेतेहैं ७ श्रोर जिसके जन्मसमयमें उच्चराशिमें सूर्य स्थित होवे श्रोर श्रथवा मेषराशिकामंगल वृहस्पति कर्के युक्त लग्न में स्थितहोवेतिसराजाके श्रागें कोईवीशत्रुपक्षकीसेना स्थित नहिं होयसक्तीहै श्रोर तिसके मंत्रीके श्रागेंवशत्रुयों कीसेना नहिं स्थितहोय शकीहै ८

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा धनराशिमें स्थित होवे शुक्र और बृहस्पति कर्कयुक्त होवे और मंगल उच्चराशिमें स्थित होवे और मकरराशिके पूर्वभागमें शनिस्थित होवे और कन्यालग्नमें बुध स्थित होवे तब अवश्यही राजाहोताहै कैसा वोहोताहै बहुतविद्यामें कुशल श्रेष्ठ होताहै ९ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा कर्कराशिमें स्थित होवे और शुक्लपक्षमें जन्मलग्नमेंस्थितहोवे और सप्तमस्थानमें बुधस्थितहोवे और छठे स्थानमें सूर्यस्थितहोवे और चतुर्थस्थानमें शुक्रस्थितहोवे और बृहस्पति दशम स्थानमें स्थित होवे और मंगल और शनि तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो राजा चंद्रमा कीन्याई श्वेत चौरीयोंको झुलावताहै और राज्यलक्ष्मीको भोगताहै १० और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वृषराशीका जन्मलग्नमें स्थित होवे और कुंभराशिमें शनि स्थित होवे और सिंहराशिमें सूर्य स्थित

निशाभर्त्ताचापेभृगुतनयदेवेज्यसहितःकुजःप्राप्तःस्वोच्चंमृगमुखगतःसूर्यतनयः विलग्नेकन्यायांशिशिरकरसूनुर्यदिभवेत्तदावश्यंराजाभवतिवहुविज्ञानकुशलः९ स्वर्क्षेनक्षत्रनाथःस्फुटकरनिकरालंकृतःप्राप्तलग्ने द्यूनेसोमस्यपुत्रोयादिरिपुभवनंभास्करःसंप्रयातः पातालेदानवेज्योगुरुरपिगगनेसौरभौमौतृतीयेस्याद्भूपालोवहेद्यः शशिधवलचलच्चामरांराज्यलक्ष्मीम् १० शिशिरकिरणःस्वोच्चलग्नयथांवुनिधेः समो घटधरगतोभानोः पुत्रोमृगाधिपतौरविः अलिग्रहगतोवाचांनाथः स्फुरत्करराजितोयदिनरपतिः स्फीतश्रीकस्तदावहुवाहनः ११ मृगमदेलग्नेकुमदवनवंधुश्चतिमिगस्तथा कन्यांमुक्त्वाबुधभवनसंस्थःकुतनयः स्थितोनाप्यांसौरिर्धनुषिसुरमंत्रीयादिभवेत्तदाजातोभूपः सुरपतिसमावाप्तमहिमा १२ उदयतिमीनेशशिनिनरेंद्रः सकलकलाढ्यः क्षितिसुतउच्चे मृगपतिसंस्थेदशशतरश्मौघटधरगेस्यादिनकरपुत्रे १३ ॥

होवे और वृश्चिकराशिमें बृहस्पति स्थित होवे और उदयको प्राप्तहोवे और यदप्रभाककें युक्त होवे तब राजा बडीलक्ष्मी वाला और बहुत वाहनोंकरके युक्त होताहै ११ और जिसके जन्मसमयमें मकरलग्नमें शनिस्थित होवे और चंद्रमा मीनराशिमें स्थित होवे और मिथुन राशिमें मंगलस्थित होवे और कन्याराशीमें शनि स्थित होवे और धनराशिमे बृहस्पति यद स्थित होवे तब इंद्रके तुल्य महिमा वाला राजा होताहै १२ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें मीनलग्नमें चंद्रमा उदयहोवे और मंगल उच्चराशिमें मकरमेंस्थित होवे और सिंहराशिमें सूर्य स्थित होवे और कुंभराशिमें शनि स्थित-होवे तब राजासंपूर्णकलाओंकरके युक्त होताहै १३

और जिसके जन्मसमयमें लग्नमेंमंगल स्थित होवे और चंद्रमाकर्के युक्त बुध सप्तमस्थानमें स्थित होवे और प्रकटकिरणों कर्के दिशोंकोंप्रकाशकरे तब राजाशत्रुयोंकर्के नहि जीत्या जाताहे और वेदार्थके जानने वाला और अनेक कारणोंकेजानने वलाहोताहे १४ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य और चंद्रमाउच्चराशिमें स्थित होवें तब राजा तैसेंहि संपूर्णलोकोंके हृदयमें आनदकोंउत्पन्न कर्त्ताहै और तिसकोंस्मरणकर्केशत्रुयोंकियां स्त्रीयानिरंतरनेत्रोंसें जलधाराकों त्यागतियाहें और शोकरूप अग्निके हृदयमें दग्धहोतियाहैंऔर जिसकेजन्मसमयमें कुंभराशिमेंशुक्र और मेषराशिमें मगल और कर्कटराशि में बृहस्पतिस्थितहोवे तब राजानिश्चयकर्के अपनेयश कर्के चारदिशा कों प्रकाशकर्त्ताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिकर्कराशिमें स्थितहोवेस्वर्णकीन्याईप्रभायुक्तहोवेऔर मेपराशिमें सूर्यस्थित

लग्नेकुजोज्ञःसशशीयदास्तेस्फुटांशुसंभारविराजिताशः राजातदाशत्रुभिरत्रधृ ष्येवेदार्थविद्धेतुशतानुवादी ॥ १४ ॥ करोत्युत्कृष्टोच्चेदिनकृदमृतामोदानिलयः स्थितिस्ताद्दग्भूपंसकलभवनानंदजननम् अपूर्वोयंस्मृत्वानयनजलसिक्तोसि सुतराम् रिपुस्त्रीशोकाग्निर्ज्वलतिहृदयेतीवसततम् ॥ १५ ॥ शुक्रोघटेकुजो मेषेस्वोच्चेदेवपुरोहितः यदिराजाभवेन्नूनंस्वयशोधौतदिङ्मुखः ॥ १६ ॥ उदयतिगुरुरुच्चेतप्तहेमप्रभाभोहरिततुरगनाथोव्योममध्यावगाही गविशशि बुधशुक्रायस्यसूतौनरस्यस्वभुजविजितभूमिःसर्वतःपार्थिवेंद्रः १७ धनुषिसुरे ज्यःशशभृदुपेतोमृगमकरस्थःक्षितितनयश्च उदयतितुंगेसुररिपुवंद्यःशशित नयोवायदिनृपतिःस्यात् १८ चापार्धेभगवान्सहस्रकिरणस्तत्रैवताराधिपोल ग्नेभानुसुतोथवीर्य्यसहितःस्वोच्चेथभूनंदनः यद्येवंभवतिक्षितेरधिपतिःसंश्रित्य शौर्यंभवाद्दूरादेवनमंतियस्यरिपवोदग्धाःप्रतापाग्निना ॥ १९ ॥

होवेऔर वृषराशिमें चद्रमा बुध शुक्र स्थित होवें सो राजाअपने भुजोंके वलकर्के पृथ्वीकोंजीतताहै और सर्वत्र राजाधिराज होताहे ॥ १७ ॥ और जिसके जन्मसमयमे धनराशिमें बृहस्पति चंद्रमा कर्के युक्तस्थितहोवे और मकर राशिके पूर्वभागमें मंगलस्थितहोवे और मीनराशिमें शुक्र स्थितहोवे अ थवा कन्याराशिमें बुधस्थित होवे तब राजा होताहै ॥ १८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें धनराशि के पूर्वार्धमें सूर्यचद्रमास्थित होवें और लग्नमें शनि वलकर्केयुक्त स्थितहोवे और मकरराशिमें मगल स्थितहोवे यव इसप्रकारका राजयोग जिसकों होवे सो वडेप्रतापकों प्राप्त होताहे और तिसके प्रताप रूपअग्निकर्के दग्धभयेजो शत्रु सो दूरसेंहि तिसकों वंदना कर्तेहैं ॥ १९ ॥

और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमासेसतम औरषष्ठ औरअष्टमस्थानमें स्थितसंपूर्णग्रह शुभहोतेहैं और क्रूरग्रहोंसेंसूर्यादि दूरस्थानमें स्थितशुभहोतेहैं ऐसे योगमें जन्मतायोराजाहै तिसकीसेनाके जो मत्तहाथीहैं तिनके मदका जो जलहै तिसकों समुद्रके कनारेयोंके वनोंमें भौरेपानकर्तेहैं २० और कहतेहै जो राजा अधियो गमेंजन्मताहै तिसकों शीघ्रजरावस्थानहिंप्राप्त होतीहै और तिसकों शत्रुयोंका भय नहिं होताहै और सौभाग्य और सुखकों भोगताहै ॥ २१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कन्याराशिमें उच्चकों प्राप्त बुधस्थितहोवे और मीनराशिमें चंद्रमा और शुक्रहोवें और मकरराशिमें शनि स्थितहोवे और मिथुनराशिमें शुक्र स्थितहोवे तिसकों राजयोंके मारणे वाला वडाराजाकर्तेहैं और तिसके हाथियों

द्यूनंषष्ठमथाष्टमंशिशिरगोःप्राप्ताःसमस्ताःशुभाः क्रूराणांयदिगोचरेणपतितो भान्वादयोदूरतः भूपालः प्रभवेत्सयस्यजलधेर्वेलावनांतोद्भवैःसेनामत्तकरींद्रदानसलिलंभृंगैर्मुहुःपीयते २० नप्राप्नोतिजरामाशुनोभवत्यरिजंभयम् जातःस्यादधियोगेचनृपःसौभाग्यसौख्यभाक् ॥ २१ ॥ बुधःस्वोच्चेलग्नेतिमियुगलसंस्थौशशिभृगुमृगेमंदःसौरोजितुमगृहगोदानवसुहृत् नृपंकुर्याद्यस्यक्षितिभृदहितध्वंसनिरतोनिरालोकोलोकश्चलितगजसंघातरजसा ॥ २२ ॥ कार्मुकेत्रिदशनायकमंत्रीभानुजोवनिजचंद्रसमेतः मेषगश्चतपनोयदिलग्नेभूपतिर्भवति सोतुलकीर्तिः ॥ २३ ॥ स्वर्क्षात्केंद्रेपुयातैर्गुरुबुधभृगुजैर्मंदभान्वारयुक्तैःस्वोच्चेचंद्रेपितिष्ठन् जनयतिनृपतिंकीर्तिशुक्लीकृतांगम् अत्युच्चेलग्नसंस्थोरविरपि भगवान्पार्थिवंक्रूरचेष्टं यातायातैःसमंताच्चतुरुदधिजलंयस्यसेनाःपिबंति ॥ २४

की धूडसें लोकालोक पर्वत व्याप्तहोताहै २२ और जिसके जन्मसमयमें धनराशिमेंवृहस्पतिस्थितहोवे शनि मंगल चंद्रमाकरकेंयुक्त होवे और मेषराशिमें लग्नगतसूर्यहोवे सो राजावडेयशवाला होताहै २३ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें अपनी राशीसें केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें वृहस्पति और बुध और शुक्र क्रमकरकें शनि सूर्य मंगल करकें युक्त होवें और अपने उच्चराशिमे २ चंद्रमास्थित होवे तव वडेयशकरकें युक्त राजाहोताहै और जिसके जन्ममें परमोच्चस्थानमें सूर्य लग्नगतहोवे सो क्रूरस्वभाववाला राजा होताहै और गमनागमनकरकें चारो ओर सें समुद्रकेजलकों तिसकियां सेना पानकर्तियांहैं ॥ २४ ॥

और जिसके जन्मसमयमें जलचरराशीके नवांशमें चतुर्थस्थानमें चंद्रमा स्थित होवे और लग्नमें शुभग्रह स्ववर्गमें स्थित होवे और केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित न होवे. तब कला और यश करकेयुक्त राजा होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमाको शुक्र बृहस्पतिबुध देखते होंमें और लग्नकास्वामी बडे बलकरके युक्तहोवे और लग्नमें वर्गोत्तम नवांश अर्थात् लग्नराशि का नवांश होवे तबराजा होताहै २६ और जिसके जन्मसमयमें तीनग्रहोंसे लेकर वर्गोत्तममें और केंद्र १ । ४ । ७ । १० । में स्थितहोवे वा शुभग्रहों करके युक्तहोवें और रूक्ष धूम्र विवर्ण देहवाले नहोवें तब राजा कर्तेहैं २७ और जिसके जन्मसमयमें एकग्रह भी अपने उच्चमें स्थितहोवे अथवा वर्गोत्तममें स्थित होवे और बलवान् होवे और मित्रग्रहकरके देख्याहोवे सो राजा कर्ताहै ॥ २८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्णग्रह शीर्षोदय ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११ राशि

उदकचरनवांशकेसुखस्थःकमलरिपुःसकलाभिरामकीर्तिः उदयतिविहगेशुभेसुवर्गेभवतिनृपोयदिकेंद्रगानपापाः ॥ २५ ॥ आपूर्णमंडलकलाकलितशशांकं पश्यंतिशुक्रसुरपूजितसोमपुत्राः लग्नाधिपोतिबलवान्पृथिवीश्वरःस्याद्वर्गोत्तमश्चनवमःखलुचद्विलग्ने ॥ २६ ॥ वर्गोत्तमेत्रिप्रभृतिर्ग्रहेंद्रा.केंद्रस्थितावाशुभसंयुताश्च नीरूक्षधूम्रानविवर्णदेहाःकुर्वंतिराज्ञःप्रसवंग्रहेंद्राः ॥ २७ ॥ एकएवग्रहःस्वोच्चेवर्गोत्तमगतोपिवा, बलवान्मित्रसंदृष्टःकुरुतेचमहीपतिम् २८ शीर्षोदयर्क्षेषुगताःसमस्तानीचारिवर्ज्यस्वगृहेशशांकः सौम्येक्षितोन्यूनकलोविलग्नेदद्यान्महींरत्नगजाश्वपूर्णाम् २९ उपचयगृहसंस्थोजन्मपोयस्यचंद्राच्छुभगृहमथवांशवीर्ययुक्ताश्चसौम्याः सकलबलवियुक्तायेचपापाभिधानाः सभवतिनरनाथःशक्रतुल्योबलेन ३० अत्युच्चस्थःसुरुचिरवपुःसर्वएवग्रहेंद्रोमित्रैर्दृष्टोयदिरिपुदृशांगोचरनप्रयातः कुर्यान्नूनप्रसभमरिभिर्वर्जितोगौरवाढ्यैर्नागेंद्राश्वैश्चलविचलितैर्यस्यतंपार्थिवेंद्रम् ३१

योंमें स्थित होवें और नीच और शत्रुकी राशिसें रहित होवें और चद्रमाकके राशिमेंस्थितहोवे और शुभग्रह कर्के देख्याहोवे और पूर्ण चंद्रमालग्नमें स्थित होवे सो रत्न और हाथि और घोडयोकर्के युक्त पृथ्वीको देताहै २९ और जिसके जन्मसमयमे चद्रमासेउपचय ३ । ६ । १० । ११ स्थानमे जन्मलग्नकास्वामी होवे शुभराशिमें वा शुभनवांशमें स्थित होवे और शुभग्रहबलीहोवें और पापी ग्रहबलहीन होवें सो राजाबलकर्के इंद्रके तुल्य होताहै ३० और जिसके जन्मसमयमें शुभ अथवा पापी ग्रह परमोच्चमें स्थित होवे और प्रकाश कर्के युक्त होवे और मित्र ग्रहोंकरके देख्याहोवे और बढ शत्रु ग्रहो कीदृष्टिसे रहित होवे सो ग्रह राजाको बलवान् शत्रु से रहित और बडे गर्व वाले हाथियों घोडयो कर्के युक्त कर्ताहै ३१

श्रीर जिनके जन्मसमयमें परमोच्चमें चंद्रमा स्थित होवे श्रीर शुक्र कर्क देख्याहोवे श्रीर पापीग्रह श्रापोक्लिम। ३। ६। ९। १२। स्थानमें स्थित होवें तब निश्चयकर्के राजा कहेहे ॥ ३२ ॥ श्रीर जिसक जन्मसमयमें शुभ ग्रहकेंद्र । १ । ४। ७। १०। स्थानोंमे मित्रग्रहोंकर्के देखेहोवें श्रीर शुभ ग्रहयुद्धमें शत्रुयो कर्के नाहिं जीतेहोवें श्रीर वलकर्के युक्त जन्मलग्न जन्मराशिके स्वामी होवे तब राजा होताहै श्रीर जिनको जन्मराशिकास्वामी नवमस्थानमें स्थित होवे श्रीर कर्कटराशिमें स्थित होवे तब यशवाला होताहै श्रीर जिसके हाथियोंके मदके पानकरणे वाले जो भ्रमरे तिनोंकर्के चार दिशा गायनकरी जातीहैं ॥ ३३ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें उच्चराशिमें होरा स्थित होवे तिस-

परमोच्चस्थितश्चंद्रोयादिशुक्रेणदृश्यते कुर्यान्महीपतिंपूर्णंपापैरापोक्लिमोपगैः ३२ ॥ दृश्यतेशुभदैःस्वकेंद्रभवनेमित्रैश्चपापैरपि ॥ युद्धेनोरिपुनिर्जितोवलयुतोजन्मोदयर्क्षाधिपो भूप.स्यान्निजराशिनाथनवमेचंद्रोदयेचेद्यशोयस्येभश्रुतदानलब्धमधुपैश्चांतार्दिशंगीयते ॥३३ ॥ उच्चराशौभवेद्धोरायस्यासौकुरुतेनृपम् ॥ स्वांशयसुहृदश्चांशेदृष्ट.केंद्रोपगे शुभैः ॥ ३४ ॥ स्थितोभानो पुत्रोविरचयतिवलःपश्चिमांशेमृगस्यरविःसिंहेशुक्रस्तुलिनिरुधिरोमेपगःकर्कटेदुः ॥ कुमारींसंप्राप्तेयदिभवतिवाशर्वरीनाथसूनुः प्रजातोभूपालस्तदवतिमहीमेकशुक्लातपत्राम् ॥ ३५ ॥ वर्गोत्तमेस्ववर्गेषुगताग्रहेंद्राः सर्वेयदारुचिररश्मिशिखाकलापाः ॥ उत्पाद्यतेजलधिसोमवतींधरित्रींयःपालयेत्क्षितिपतिर्जितशत्रुवर्गः ॥ ३६

को राजा करेहै श्रीर अपने अंशमें वा मित्रके अंशमें होवे श्रीर केंद्रगत शुभग्रहोंकर्के दृष्ट होवे तब राजा होताहै ॥ ३४ ॥ श्रीर जिसके जन्म समयमें शनि बलवान् होयकर्के मकरके पश्चिमार्द्धमें स्थित होवे श्रीर सिंहराशिमें सूर्य स्थित होवे श्रीर तुलाराशिमें शुक्र स्थित होवे श्रीर मंगल मेषराशिमे श्रीर कर्कटराशिमें चंद्रमा होवे श्रीर अथवा कन्याराशिमें बुध स्थित होवे तब राजा होताहै केसा एकछत्रपृथ्वीमें राजाहोताहै अर्थात्सार्व भौम राजा होताहै ॥ ३५ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण ग्रह वर्गोत्तममें स्थित होवें श्रीर प्रकाशकर्के युक्त उदयका प्राप्तहोवें सो राजा समुद्रपर्यंत पृथ्वीको पालनेवाला श्रीर शत्रुयोंके समूहको जीतने वाला होताहै ॥ ३६ ॥

श्रीर जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी केंद्र १।४।७।१०। स्थानमें स्थितहोवे श्रोरमित्रग्रहोंकरकेदेखा होवे श्रोर लग्नमें शुभग्रह स्थितहोवें इसयोगमें निश्चय करके राजा होताहै ॥ ३७ श्रोर जिसके जन्म-समयमें बृहस्पति चंद्रमाकरके युक्त बृषलग्नमें स्थित होवे श्रोर यद लग्नका स्वामी वलीहोयकरके त्रिकोण ॥ १ ॥ ५ ॥ स्थानमें स्थित होवे श्रोर सूर्य शनि मंगल वलीहोयकरके जिसकों नाहिं देखते होवें सो राजा यशकरकेयुक्त श्रोर सपूर्णशत्रुश्रोंके नाशक ऐ वाला होताहै ॥ ३८ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें तीनग्रह नीचराशिमें स्थित न होवें श्रोर शत्रुकीराशिमें स्थित नाहिं होवें श्रोर श्रपनी राशिमें अथवा श्रपने नवांशमें श्रोर यद श्रपने उच्चके नवांशमें स्थित होवें श्रोर चंद्रमा पूर्णहोवे श्रोर पूर्वोक्ततीनों ग्रह मित्रग्रहों करके देखे होवें सो राजा करतेहैं ॥ ३९ ॥

केंद्रेविलग्ननाथःसुहृद्भिरथवीक्षितोविहगैः ॥ लग्नस्थितेचसौम्येभूपतिरिहजायतेनियतम् ॥ ३७ ॥ सुरपतिगुरुःसेंदुर्लग्नेवृषेसमुपस्थितोयदिवलयुक्तोलग्नेशश्चत्रिकोणगृहंगतः ॥ रविशनिकुजैर्वीर्योपेतैर्नयस्यनिरीक्षितोभवति ॥ सनृपःकोर्त्यायुक्तोहताखिलकंटकः ॥ ३८ ॥ ननीचगृहसंस्थितानचरिपोर्भमप्यागताःस्वराशिमथवांशकंत्रयइहोच्चमंशंयादि ॥ कलाभिरिहपूरितंकुमुदखंडबोधप्रदंसुहृद्भिरभिवीक्षिताःक्षितिपतिंविदध्युर्ग्रहाः ॥ ३९ योयः पूर्णशिशिरकिरणंप्राप्तवर्गोत्तमांशं सुस्पष्टार्चिर्गगनगमनः पश्यतिस्वोच्चसंस्थः सक्षोणीशंजनयतिसदास्वांदशांप्राप्यसौम्यः स्यातिंलोकेयदिवलयुताः कंटकस्थानपापाः ॥ ४० जन्मोदयलग्नपतीवलसहितौकेंद्रगौहिबुकेइंदुर्जलगृहगश्चेत्त्रिकोणगोवामहीपालः ॥ ४१ स्वगृहेमित्रभागेषुस्वांशेवामित्रराशिषु कुर्वंतिचनरंसूतोसार्वभौमंनराधिपम् ॥ ४२ ॥

श्रोर जिसके जन्मसमयमें वर्गोत्तमनवांशमें स्थित पूर्णचंद्रमाकों उच्चराशिमें स्थित श्रोर उदयप्रातहोयकरके यो शुभग्रह देखता होवे सो श्रपनीदशामें राज्यप्राप्त कर्ताहै श्रोर जगतमें प्रसिद्धताके कर्ताहै जब वलीहोयकरके कंटक। १।४।७।१०। स्थानोंमें पापीग्रह नाहिं स्थित होवें तब राजा होताहै ॥ ४० ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्न श्रोर जन्मलग्नका स्वामी दोनों वलकरकेयुक्त होवें श्रोर चंद्रमा चतुर्थस्थानमें श्रथवा त्रिकोण। १।५। में जलचरराशिमें स्थित होवे तब राजा होताहै ॥ ४१ श्रोर जो ग्रह श्रपने क्षेत्रमें श्रोर मित्रके नवांशमें वा श्रपने नवांशमें वा मित्रकी राशिमें स्थित होवें सो चक्रवर्ती सारी पृथ्वीका राजा करतेहैं ॥ ४२ ।

औरजिसकेजन्मसमयमेंसंपूर्ण ग्रहपरमोच्चमेंस्थितहोवें औरबुधअपनेउच्चांशमें होवेतिसदे तीनलोकका राजा होवे औरदेवता औरदैत्योंके वंदना कोप्राप्तहोताहै ४३ औरजिसकेजन्मसमयमेंउत्तरदिशामेंवशिष्ट औरपूर्वदिशामेंबृहस्पति औरपश्चिमदिशामेंशुक्र और दक्षिणदिशामेंअगस्त्य इहे चारहि उदयको प्राप्त होवें सोसंपूर्ण राक्षस और ऋक्ष और सर्प और वानरोंका स्वामीहोताहै ४४ और जिसकेजन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वृषराशिमें अथवा कर्क राशिमें स्थितहोवे और बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित और केंद्रस्थानमें स्थित शुक्र कर्के देख्या होवे और अपने नवांशमें लग्नगत सूर्य होवे और वह कर्केयुक्त लग्नकोंदेखे तब राजा होताहै जिसराजाके हाथियोंकर्के चार समुद्रके किनारेमें कटकोंवालेवन भग्नक रिदेहैं ॥ ४५ । और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा संपूर्ण ग्रहोंकर्के देख्याहोवे सो चिरकालजीवने वाला और

परमोच्चगताःसर्वेस्वोच्चांशेयदिसोमजः त्रैलोक्याधिपतिंकुर्याद्देवदानववंदितम्
४३ यस्योत्तरस्यांभगवान्वशिष्टोबृहस्पतिःप्रागपरेचभार्गवःअगस्त्यनामाखलु
दक्षिणस्यांसोराक्षसर्क्षोरगवानराधिपः ४४ शशीपूर्णःस्वोच्चेस्वगृहमथवास्वो
च्चभंवाप्रयातो दिवंपातुर्मंत्रीदितिजगुरुणावीक्षितः केंद्रसंस्थः रविर्लग्नेस्वांशे
यदि बलयुतःपश्यतिस्यात्सभूपः प्रभग्नंयस्येभैश्चतुरुदधिभूशल्यकीनामरण्यम्
४५ ॥ कुमुदगहनबंधौवीक्ष्यमाणेसमस्तैर्गगनगृहनिवासैर्दीर्घजीवीविनाश्य
फलमशुभसमुत्थयच्चकेमद्रुमोत्थंभवतिमनुजनाथः सार्वभौमोजितारिः ॥ ४६
उच्चाभिलाषीसवितात्रिकोणेस्वर्क्षेशशीजन्मनियस्यजंतोः सशास्तिपृथ्वींबहुर
त्नपूर्णांबृहस्पतिः कंटकगोयदिस्यात् ॥ ४७ ॥ तुंगेपुषड्विबुधमार्गचराउपेताः
स्वर्क्षेमयूषकिरणैःपरिपूरितांगाः ॥ उत्पादयंतिकुलिशांकितपाणिपादंपृथ्वी
पतिंसगरवेणुयजातितुल्यम् ४८ ॥

संपूर्ण अशुभ फलकों और केमद्रुमयोगकों दूरकर्के सारी पृथ्वीका राजकरणेवाला होताहै और शत्रुयोंके जीतनेवाला होताहै ४६ और जिसके जन्मसमयमें उच्चका अभिलाषीहोयकर्के सूर्य त्रिकोण ९।५ मे स्थित होवे और कर्कटराशिमें चद्रमा स्थित होवे और बृहस्पति केंटक । १ । ४ ॥ ७ ॥ १० में स्थित होवे सो राजा संपूर्णरत्नोंकर्के युक्त पृथ्वीको शासना कर्ताहे अर्थात् सारी पृथ्वीका राज्यकरणेवाला होताहै ॥ ४७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें छैग्रह उच्चकों प्राप्तहोवें और स्वक्षेत्रमेंउदयकों प्राप्तहोवें सो कुलिशकर्केचिन्हत हाथपैरोकोंकर्के और सगर वेणु ययाति इन्होंराजायोंके तुल्यहोताहै ॥ ४८ ॥

और जिन केजन्मसमयमें शुभग्रह केराशियोंमें और शुभग्रहोंकेनवांशोंमें शुभग्रहस्थितहोवें और अपनीरश्मियोंकरके प्रकाशको प्राप्तहोवें और पापग्रह सूर्यकी किरणों के साथ आच्छादित होवें और शत्रुयोंकरके युक्तहोवें सो राजा पर्वत और वनोंमें रहनेवाला तपस्वी होताहै ॥ ४९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह चंद्र बुध गुरु शुक्र पणफर । २ । ५ । ८ । ११ । स्थानोंमें स्थित होवें और पापीग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० और आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ । स्थानमें स्थित होवें सो राजा अपने भुजोंके बलकरके शत्रुयोंको हनन कर्ताहै और बृहपतिके तुल्य बुद्धिवाला होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमे लग्नका स्वामी दशम और चतुर्थ और सप्तमस्थानमें स्थित होवे और मित्रग्रहोंकी राशियोंमें और मित्रग्रहोंकरके देखा होवे सो पृथ्वी तलका राजाकर्त्ताहै और बडे शत्रुओंके नाशकरणे वाला कर्त्ताहै ५१ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचद्रमा मेषके नवांशमें स्थित और बृहस्पति करके देख्याहोवे और बृ

शुभभवनसमेतैःसौम्यभागेषुसौम्यैःस्फुटरुचिरकरौघैःप्रस्फुरद्भिर्विलग्ने रविमुषितमयूखैस्तैश्चपापैरमित्रैर्गिरिगहननिवासीतापसःस्यान्नरेंद्रः ४९ इह पणफरगाःशुभप्रदाउभयगृहेयदिपापसंचयःस्वभुजहतरिपुर्महीपतिःसुरगुरुतुल्यमतिःप्रकीर्तितः ५० विलग्ननाथःखजलास्तसस्थ सुहृद्गृहेमित्रदृशांपथिस्थितः करोति नाथंपृथिवीतलस्यदुर्वारवैरिपरिनाशशीलं ५१ संपूर्णमूर्तिर्भगवांश्छशांकोमेषांशकस्थोगुरुणाचदृष्टः ॥ नीचैर्नकैश्चिद्गुरुवीक्षितोन्यैःप्राहक्षितीशंयवनाधिराजः ५२ लग्नाच्छशीत्रिरिपुलाभनभस्तलेपुसूतावखंडितवपुःपृथिवीश्वरःस्यात् ॥ दृष्टःसुरेंद्रसुहृदानहिवीक्षितोन्यैर्जन्माधिपादृशमितात्स्मरगोथवास्यात् ५३ विभ्रद्रश्मिकरालपूर्णपरिधिर्नक्षत्रसपालक स्तुंगांशेसमवस्थितश्चसकलैःसंद्रोक्षितव्योमगैः कुर्याद्भूमिपतिंसयस्यचलितंहस्त्यश्वसैन्यंमहद्ध्याच्छेषफणीकयकयमपिक्ष्माभारखिन्नःश्वसन् ॥ ५४

हस्पतिकों कोई नीचग्रह नहिं देखता होवे तिसकों यवनाधिराजजोहै यवनाचार्य सो राजा कहताहै अर्थात् यवनाचार्यके मतसें राजा होताहै ५२ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें चंद्रमा तीसरे छठे ग्यारहवें दशवस्थानमें स्थित होवे और पूर्ण देहवाला होवे और बृहस्पति करके देख्याहोवे और पापग्रहों करके नहिं देखाहोवे अथवा पूर्ण चद्रमा शत्रुके विना जन्मलग्नके स्वामीसें पूर्वोक्तस्थानोंमें स्थित होवे सो राजा होताहै ५३ और जिसके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा रश्मियोंकरके प्रकाशहोयरहा होय सो उच्चके नवांशमें वृषराशिके नवांशमें स्थित होवे और संपूर्ण ग्रहोंकरके देख्याहोवे तिसकों राजा करताहै कैसावो राजा होताहै जिसकी सेना हाथी और घोडेयोंके चलने करके पृथ्वीके भारकरके शेषनाग पीडित होयकरके स्वासकों लेताहै अर्थात् बडी सेना वाला राजा होताहै ॥ ५४ ॥

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा अश्विनविवकके शोभाकोप्राप्त सूर्यकेनवांशमें स्थितहोवे तवराजावहुत हाथियों वाला होताहे यदशुभग्रहकेंद्रमें १ । ४ । ७ । १० स्थित पापग्रहोंकरके नहिं देखे होवें तव राजा होताहे ५५ जिनके जन्मसमयमें तीनग्रह नीच और शत्रुकी राशीमें स्थितहोवें और उच्चन राशीमें वलकरके युक्त होवें और शुभग्रहोंकी दृष्टिकरके युक्त होवें और चंद्रमा गौकेदुग्धकीन्याई श्वेतविवकरके आकाशकोप्राप्तहोवे सो राजा शत्रुओंके जीतनेवाला होताहै ५६ और जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमाशुभग्रहके नवांशमें स्थित होवे और जब वलीहोयकरके दशमघरकास्वामीतिसको देखता होवे और लग्नमें पापीग्रह और नीचग्रह स्थितनहोवें तव राजा सारीपृथ्वीका राज्यकरणेवाला और सुंदरदेहवाला होताहे ५७ और जिसके जन्मसमयमें जलचरराशिके नवांशमें चंद्रमा लग्नमें स्थित

सुधामृणालोपमबिंबशोभीशशीनवांशेनलिनीप्रियस्य यदीक्षितोसौबहुहस्तिपूर्णं शुभाश्चकेंद्रेयुनपापदृष्टाः ॥ ५५ ॥ नीचारिराशिसहितैर्विहगैस्त्रिभिश्चतुंगांशकैर्वलयुतैःशुभदृष्टियुक्तैः गोक्षीरशंखधवलोमृगलांछनश्चयस्यायस्यजन्मनिसभूमिपतिर्जितारिः ॥ ५६ ॥ कुमुदगहनवंधुश्चेष्टमशंप्रपन्नंयदिवलसमवेतःपश्यतिव्योमचारी उदयभवनसंस्थः पापकोनैवनीचोभवतिमनुजनाथःसार्वभौमःसुदेहः ५७ जलचरराशिनवांशकइंदौतनुभवनेशुभदेस्वकवर्गे अशुभफलैःखलुकंटकहीनैर्भवतिनरोवहुवाहननाथः ॥ ५८ ॥ वर्गोत्तमेहिमकरःसकलःस्वकेंशेकुर्यान्महीपतिमपूर्वयशोभिरामम् यस्याश्वदंदखरपादरजोभिभूतोभानुःप्रशांतशिशिरोनुकरोतिरूपम् ५९ सर्वग्रहक्तेयोगेचक्रवर्तीश्वरोभवेत् एकैकेनतथाजातामंडलानामधीश्वराः ६० एकोपिविहगःकुर्यात्पंचमांशगतोनृपम् समस्तवलसंपूर्णंचक्रवर्त्तित्वमेववा ६१ ॥

होवे और शुभग्रह अपने वर्गमें स्थितहोवें और पापीग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानसें रहितहोवे तव राजा वहुत हाथी और घोडयोंका स्वामी होताहै ॥ ५८ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा वर्गोत्तम नवांशमें स्थित अथवा अपने नवांशमें स्थित होवे सो अपूर्वयशकरके युक्त राजा होताहै जिसके घोडयोंकी और खरोंकी धूडकरके सूर्य शांत शीतल स्वरूप होताहै ५९ और जिसके जन्ममें संपूर्णग्रहोंकरके राजयोगकियाहोवे सो राजाचक्रवर्ती होताहै और एक एक ग्रह करके यो राजयोगहोताहे तिसने जन्मलेकर मंडलका स्वामी होताहै ६० और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्णवलको प्राप्तहोकरके एक भी ग्रह पंचमांशमें स्थितहोवे सो चक्रवर्ती राजा करताहै ६१

और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा वृषराशिमें स्थितहोवे और तिसकों बृहस्पति देखताहोवे सो राजामणिगोंकर्के प्रकाशवाली उत्तरखंडकी पृथ्वीका पालने वाला राजा होताहै ६२ और जिसके जन्मसमयमें अपने उच्चमें अथवा अपने मूलत्रिकोणमें और अपने क्षेत्रमें स्थितजो ग्रहहोवे और चंद्रमाकों देखताहोवे सो ग्रह भीलजातीवालेकों भी राजा करदेताहै ६३ और जिसके जन्मसमयमें अपनीराशिके द्रेष्काणमें चंद्रमास्थित होवे और शुभग्रह परिपूर्णवलीहोवे तब महाराजाकरताहै ॥ ६४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने नवांशमें सूर्यस्थितहोवे और चंद्रमाकर्के राशिका होवे सो राजागजोंकेमदके कणकणोंकर्के पृथ्वितलकों सिंचनकरताहै ॥ ६५ ॥

पश्यतियदिचंद्रमसंविवुधगुरुर्वृषभसंस्थितंप्रसवे ॥ अवतिपृथिवीमेतदुदगग्रां स्फुरन्मणिद्योतितादिगताम् ॥ ६२ ॥ कुर्य्यात्तुंगेत्रिकोणेवास्वराशिस्थो विलोकयन् ग्रहस्तुपारकिरणनिपादमपिपार्थिवम् ॥ ६३ ॥ स्वगृहतृतीयभागेशशिस्थितःपार्थिवंसदाकुरुते परिपूर्णवलाःशुभदायदिप्रसूतौ महाराजम् ॥ ६४ ॥ स्वांशेदिवाकरोयस्यस्वक्षेत्रेचक्षपाकरः सराजागजदानौघशीकरोक्षितभूतलः ॥ ६५ ॥ लग्नेरविपुत्रसंयुतेदेवेज्येस्तगतेनवोदिते दृष्टेऽसुरराजमंत्रिणाग्रामीणोनृपतिर्भवेदिह ॥ ६६ ॥ उदयेऽसुरमंत्रिवरोगुरुदृष्टिपथचगतः कुरुतेसनृपनियतंयदितुंगगतश्चबुधः ॥ ६७ शुक्रभास्करेंदवो भागमेकमाश्रिताः जीवदृष्टिमात्रका स्यात्तदामहापतिः ६८ ॥ लग्नगाःसितशशांकजभौमाःसप्तमेशशिनिवाक्पतियुक्ते तिग्मरश्मितनयेनचदृष्टेजायतेपृथुयशाःपृथिवीशः ॥ ६९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें लग्न शनिकर्केयुक्त होवे और उदयहोयकर्के बृहस्पति सप्तमस्थानमें स्थित होवे और शुक्रकर्के देखाहोवे तब इसयोगमें ग्रामीण राजा होताहै ॥ ६६ ॥ और जिसके जन्म समयमें लग्नमें शुक्र स्थितहोवे और बृहस्पतिकर्के देखाहोवे और यद उच्चराशिमें बुधस्थित होवे सो निश्चयकर्केराजा होताहै ६७ और जिसकेजन्मसमयमें शुक्र और सूर्य और चंद्रमा एकनवांशमें स्थित होवें और बृहस्पति कर्के देखे होवें तब राजा होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें शुक्र बुध मंगल स्थित होवें और सप्तमस्थानमें चंद्रमा बृहस्पतिकर्के युक्त होवे औरशनिकर्के नहीं देख्या होवे तब बडे यशवाला राजा होताहै ॥ ६९ ॥

और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिमंगलके नवांशमें स्थितहोवे औ मंगलकर्केदेखाहुआपूर्णबलीहोवे तब नियधर्मके करणेवालेराजाकाकर्त्ताहे और मेषराशिमदशमस्थानमें सूर्य स्थितहोवे तब नियराजाहोताहै ७० और जिसके जन्मसमयमें तीसरे स्थानमें शुक्र और चद्रमा और बुध और सूर स्थित होवें और मंगल सप्तममें स्थित होवे औ बृहस्पति नवम स्थित होवे और लग्नमें वर्गोत्तम नवांशम स्थित होवे तब असा योग होवे तब हीन कुलम जन्मावी राजा होताहै ॥ ७१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति अथवा बुध अथवा शुक्र अथवा चद्रमा धर्म ९ स्थानमें उदयका प्राप्त रश्मियों अर्कके प्रभाका प्राप्त होवें और यव मित्रग्रहोंकर्के दृष्ट और युक होवें तब देवनाके तुल्य बडाराजा कत्तहें ७२ और जिसके जन्मसमयमें नवमस्थानमें उच्चराशिगत ग्रहहोवे अथवा उच्चकों देखताहोवे यद दो ग्र

विबुधगुरुर्यदिभौमनवांशेरुधिरनिरीक्षितपूर्णबलश्च जनयतिकुत्सितधर्ममही पक्रियपरिसंस्थितकर्मगतोर्कः ७० तृतीयगा शुक्रशशिज्ञभास्करा कुजोस्त सस्थोनवमेबृहस्पतिः गणोत्तमोलग्ननवांशकोद्गमोयदातदाहीनकुलेमहीपतिः ॥ ७१ ॥ जीवोबुधोभृगुसुतोयनिशाकरोवाधर्मेविशुद्धतनव स्फुटरश्मिजालाः मित्रैर्निरीक्षितयुतार्यदसूतिकालेकुर्वंतिदेवसदृशन्नृपतिमहांतम् ॥ ७२ तपोगृहयस्यभवेत्तदुच्चकंग्रहेण नेनाथयुतंनिरीक्षितम् ग्रहद्वयस्वोच्चगतंयदाभवे त्तदाकुटुंबीनियतमहीपतिः ७३ मूलभवनेशशिदेवनमस्यौभवनपतिप्रसमी क्षितदेहौ भृगुतनयोयदिमीनसमेतोभवतिनृप खलुकुत्सितवंश ७४ चद्रास्त्रि पुष्करस्थ स्वोच्चेवचसांपतिः सलक्ष्मीकम् उत्पादयतिरवामिन्मुत्तममानसमग्र भुवः ७५ केंद्रेस्वोच्चसमेत सुरमंत्रीदशमगोपदाशुक्रः नूनभवतिपुरुषस्त स्तपृथिवीश्वरास्याताः ७६

ह उच्चराशिमें स्थित होवें तब बडेकुटुम्बवाला राजा होताहै ७३ और जिसके जन्मसमयमें पंच मभावमें चद्रमा और बृहस्पति और पचमशकक दोना दृष्ट होवें और शुक्र जब मीनराशिमें स्थि तहोवे तब निश्चयकर्के नियवंशम जन्मावी राजा होताहै ७४ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा तीसरे स्थानमें और दशम स्थानमें स्थित होवे और बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित होवे तब बडे श्रेष्ठ मानकर्के युक्त और बडीलक्ष्मीवाला सारीपृथ्वीका राजा होताहै ७५ और जिनोके जन्मसम यमें केंद्रस्थानमें और उच्चराशिमें बृहस्पति स्थित होवे और दशमस्थानमें शुक्र स्थितहोवे तब निश्चयकर्के संपूर्ण पृथ्वीके स्वामी पुरुषहोतेहैं ७६

और जिसके जन्मसमयमें बडियाँ रश्मियोंके समूहकर्के कर्कटराशिमें चंद्रमास्थित होवै और अपने नवांशमें बुध और बृहस्पति और शुक्र होवें अथवा चतुर्थ स्थानमें होवें और सूर्यकर्के देखेहोवें तब ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यवर्णोंके राजा करेंहैं ॥ ७७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने मूलत्रिकोणमें सूर्य दशमस्थान स्थितहोवे और शुक्र बृहस्पति बुध अपनी राशिमें स्थित होवें और चंद्रमासें तीसरे छठे ग्यारहमें स्थानमें स्थितहोवें तब गोपालोंके कुलमें जन्में ओंवी राजाहोतेहैं ७८ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शुभग्रह मित्रोंके नवांशमें स्थितहोवें और मित्रग्रहोंकर्के दृष्टहोवें और यद उच्चराशिमें १० मंगलहोवे तब संपूर्ण पृथ्वीके पालने वा

स्वर्क्षे शशीविपुलरश्मीशिखाकलापः स्वांशेस्थिताबुधबृहस्पतिदानवेज्याः पातालगादिनकरेणनिरीक्षिताश्चसंसूचयंतिनृपतींद्विजमुख्यजातम् ७७ रविर्नभस्थः स्वत्रिकोणगोपिवास्वराशिसंस्थाःसितजीवचंद्रजाः तृतीयषष्ठायगताश्चचंद्रत कुर्वंतिगोपालमपिक्षितीश्वरम् ७८ सप्तमभवनेसौम्यामित्रांशगताःसुहृद्भिरिहदृष्टाः उच्चेकुजोयदिनृपःसमस्तभूपालकःश्रेष्ठः ७९ रविशशिबुधवक्रैर्व्योम्निमित्रांशकस्थैर्नचरिपुभवनस्थैर्नाथदृष्टैर्ननीचैः सतपसिभृगुपुत्रेभूपतिःस्यात्प्रयाणेगजमदजलसेकैर्नश्यतेयस्यरेणुः ८० स्वोच्चेभानुः प्रकटितबलोव्योममध्येसजीवःशुक्रोधर्मेयदिकुजयुतःस्वंनवांशप्रपन्नः लग्नेवर्गैः शुभभवनगोचंद्रपुत्रेणदृष्टःपृथ्वीपालोधवलितजगत्स्वर्पाशितैःस्वैर्यशोभिः ८१

का राजा होताहै ७९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा बुध मंगल दशमस्थानमें मित्रग्रहोंके नवांशमें स्थितहोवें और शत्रुक्षेत्रमें और शत्रुग्रहोंकर्के देखे नहिं होवें और नीचराशिमें स्थित नाहिं होवें और नवमस्थानमें शुक्र स्थितहोवे तिसराजाके यात्रासमयमें हाथियोंके मदकर्के धूड नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ८० ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपने उच्चमें बली होयकर्के सूर्यस्थित होवे और दशमस्थानमें बृहस्पति कर्के युक्तहोवे और नवमस्थानमें मंगल कर्के युक्त होवे और अपनेनवांशमें स्थितहोवे और लग्नमें शुभग्र.को वर्गहोवे और बुध कर्के देख्या होवे सो राजा अपने यशकर्के चारदिशाओंको प्रकाश करताहै ८१

और जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा वृषराशिकालग्नमें स्थित होवे और तुलाराशिमें स्थित शुक्रक के देख्याहोवे और बुध चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तव अन्य कुलमें जन्माहुयावी राजा होताहै ८३ और जिसके जन्मसमयमें मंगलवलीहोयकर्के अपने उच्चमें स्थित होवे और सूर्य चंद्रमावृहस्पतिक के देख्याहोवे तव निंद्य कुलमें जन्मावी राजाहोताहै और संपूर्ण पृथ्वीकी रक्षा करणेमें समर्थ होता है ८४ और जिसके जन्मसमयमें अभिजित् मुहूर्तहोताहै सो वडेयशवाला राजा होताहै और इ- स अभिजित् मुहूर्तमें नीचकुलमेंजन्मावी नवीनपदके राज्याधिकारका स्वामीहोताहै ८५ ॥ और जो मनुष्य गंडांतकालमें जन्मताहै अर्थात् रेवतीकेचतुर्थचरणमें और अश्विनीके प्रथम चरणमेंऔ र श्लेषाकेचतुर्थचरणमें और मघाकेप्रथमचरणमें और ज्येष्ठाके चतुर्थचरणमें और मूलाकेप्रथमचरणमें

वृषेशशीलग्नगतःसुपूर्णःसितेनदृष्टोवणिजस्थितेन बुधोपिपातालगतोयदिस्या त्तदान्यजातोभवतिक्षितीशः ८३ क्षमासुतःस्वोच्चमुपागतोवलीरवींदुवाचस्प तिभिर्निरीक्षितः भवेन्नरेंद्रोयदिकुत्सितस्तदासमस्तपृथ्वीपरिरक्षणक्षमः ८४ जायतेभिजितियःशुभवत्सोभूपतिर्भवतिसोतुलकीर्त्तिः नीचवेश्मकुलजोपिन रोस्मिन्राजयोगइतिनव्यपदेशः ८५ गंडांतविष्टिसहवैधृतिपातजातस्ताराप तिःसहयदाप्रतिकृत्तिकायां क्रीडेत्कृपाणफलकाहतचंडवेगात् प्रोत्थापितारि जशिरोभिरिहावनीशः ८६ बुधोदयेसप्तमगेवृहस्पतौचंद्रेकुलीरेसुखराशिगे मले वियद्गतेभार्गवनंदनेग्रहेप्रशास्तिपृथ्वीमनुजोनिराकुलः ८७ एकांतरगै र्विहगैःपड्भिश्चक्रेक्षितीश्वरंकुर्यात् अत्रैवशुभेलग्नेसकलमहीपालकोनृपतिः ८८

जन्मताहै और भद्राकरण में जो जन्मताहै और वैधृति व्यतीपात योगमें जोजन्मताहै और जिसके जन्ममें कृत्तिकाके संमुखचद्रमा होताहै सो वडेवेगकर्के खड्ग फलक कों शत्रु योंके शिरमें भ्रमामणे वाला राजाहोताहै अर्थात् वडा उग्रराजा प्रजाकों वी तपावने वाला होता है ८६ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें बुध होवे और सप्तमस्थानमें वृहस्पति होवे और पूर्णचन्द्र मा कर्कटराशिमें चतुर्थ स्थित होवे और शुक्र दशमस्थानमें स्थित होवे सो मनुष्य शत्रुयोंकर्के रहि- त पृथ्वीकी शासना कर्त्ताहै ८७ और जिसके जन्मसमयमें एकएकगृहके अंतरमेंछे राशियोंमें सपू- र्णग्रह स्थितहोवें और शुभग्रहके लग्नमें जन्महोवे तव संपूर्णपृथ्वीके पालनेवाला राजाहोताहै ८८

श्रौर इसीयोगमेंसमुद्रयोगकहाहे जब दोलग्नमें स्थित होवें श्रौर शुभग्रहकेंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवें तब राजयोंकाराजाहोताहै ८९ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें लग्नसें लेकर्के छैराशिपर्यंत श्रंतर रहित संपूर्णग्रह स्थितहोवें सो पंकिनामकर्के योग कहाहे ॥ तिसमें जन्माहुयाराजा-श्रथवा राजाका मंत्री होताहे ॥ ९० श्रौर जिसके जन्मसमयमें पंचम श्रौर चतुर्थ श्रौर तीसरे स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थितहोवें तवकूर्मयोग कहतेहैं ॥ यवनाचार्यादि तिसमें जन्मताजोहै ॥ सो वंधुपुत्रधनहाथियों कर्के युक्त श्रौर धनकर्के युक्त राजा होताहे ॥ ९१ ॥ उौर जिसके जन्मसमयमें दशमसप्तमचतुर्थलग्नस्थानोंमें संपूर्णग्रह स्थित होवें तब नगरनामकर्केयोग होताहै जिसमें जन्माहुश्रा राजा होताहे ॥ ९२ ॥ उौर जिसके जन्मसमयमें सप्तमचतुर्थ. दशमस्थानमें शुभ-

श्रयमेवसुमुद्राख्योद्वौलग्नेयदिसंस्थितौ करोतिभूभुतांनाथंसौम्यैःकेंद्रेषुसंस्थितैः ८९ निरंतरंयदिभवनेषुषट्सुग्रहाःस्थिताउदयगृहात्समस्ताः सपंक्तिरिह्यिवनृपंप्रकुर्यात्रतुष्टयेवानृपमंत्रिणंच ९० सुतसुखदुश्चिक्यगतायदिकूर्मकीर्तयंतियवनाद्याः वंधुसुतार्थगजाढ्योवहुभृत्योजायतेनृपतिः ॥ ९१ ॥ कर्मास्तसुखहोरासुग्रहाःसर्वेप्रतिष्ठिताः कुर्वंतिनगरंनामयत्रस्यात्पृथिवीपतिः ९२ मदतनुसुखखस्थिताःशुभाःकुजरविरविजाश्चधर्मलाभसंस्थाः यदिभवतिमहीपतिःप्रशांतमूर्त्तिर्यवनपतिकृताह्ययंमहीपयोगः ९३ लाभधर्मस्थिताःसौम्याःपापाःकर्मणिसंस्थिताः नृपतीनामयंयोगोभवेत्कलशसंज्ञितः ९४ त्रयोग्रहभ्रातृसुतांवुसंस्थास्तपोभवौद्वौपरिसांज्ञितौच कलत्रलग्नोपगताश्चशेषा नृपस्ययोगःखलुपूर्णकुंभः ९५ सुविस्तरंनीचकुलोद्भवामयाविचित्ररूपाःकथिताःक्षितीश्वराः श्रतःपरंपार्थिववंशजाश्रमीभवंतियोगामुनिभिःप्रकीर्तिताः ९६

ग्रह स्थित होवें श्रौर मंगल सूर्य शनि इहे नवम श्रौर लाभ ॥ ११ ॥ स्थानमें स्थित होवें तव इस योगमें जन्माहुश्रा शांतमूर्त्ति राजा होताहे इहे राजयोग यवनाचार्यके मतसें कहाहे ॥ ९३ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें लाहरमें श्रौर नवमें स्थानमें शुभ ग्रह स्थित होवें श्रौर पापीग्रह दशमस्थानमें होवें इहे राजयोंकों कलशनामकर्के राजयोग कहाहे ॥ ९४ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तीन ग्रह तीसरे पाचमें चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें श्रौर दोग्रह नवमस्थानमें स्थित होवें श्रौर वाकीके ग्रह-सप्तम श्रौर लग्नमें स्थित होवें तव राजाकों पूर्णकुंभयोग होताहे ॥ ९५ ॥ श्रौर कहतेहैं इसग्रंथमें मैंने श्रेष्ट विस्तारकर्के नीचकुलमें जन्मेंकोवी राजयोग वडेविचित्ररूपकर्के कहेहैं श्रव इसीग्रंथमें श्रागें राजाके कुलमें जोजन्मतेहैं तिनके राजयोग जैसें मुनियोंनें कहेहैं तैसेंहि मैं कहताहों ९६

ध्रुवम् ॥ और जिसके जन्मसमयमें सिंहलग्नमें सूर्यस्थितहोवे और मेषलग्नमेंचन्द्रमास्थितहोवे और कुंभरा-
शिमें शनिस्थितहोवे और मीनराशिमें बृहस्पति स्थितहोवे और मकरराशिमें मंगल-
स्थितहोवे सो राजा संपूर्णलोकोंकरकेवंदनाकोंप्राप्तहोताहै ॥ ९७ ॥ और जिसकेजन्मस-
मयमें बलवान् शुभग्रहकी राशिमें और क्रमकरके लग्न और नवम स्थानमें शुभग्रह स्थितहो-
वें और पापग्रह तीसरे ग्यारहवें या छठे स्थानमें स्थित होवें सो राजा बडीलक्ष्मीवाला और
जिसकीयात्राके समयमें हाथियोंके जलका जो श्रवण सो बदलोंकी पंक्तिकी उत्पत्तकरताहै ऐसें
बदलोंके बिंदुवोंसे पृथ्वी सिंचनकरी जातीहै जिसकीप्रयाणें हाथियोंके मदमें सिंचन होतीहै अर्था-
त् बहुतहाथियोंवाला राजा होताहै ९८ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रतुलाराशिका चतुर्थस्थानमें

सिंहोदयेदिनकरोमृगलांछनोजेकुंभस्थितोरविसुतःस्वगृहेसुरेज्यः स्वोच्चेचभू
मितनयःपृथिवीश्वरस्यजन्मप्रदःसकललोकनमस्कृतस्य ९७ ॥शुभेलग्नेयातेव
लवतितथाधर्मराशिक्रमेण शुभैःशेषैर्लग्नाद्धनमथगृहंत्र्यायषट्कर्मगैर्वा महीभ
र्ताश्रीमान्भवतिनियतंयस्यमातंगसंघाः प्रयाणेमेघानांश्रुतमदजलैर्भ्रांतिमुत्पा
दयंति ॥ ९८ ॥ दनुजपतिगुरुर्बंधुस्थानेस्ववेश्मगतोयदा तुहिनकिरणःसंपू
र्णगस्तपःसमवस्थितः त्रितनुभवनंप्राप्ताःशेषाग्रहायदिभूपतिर्भवतिधृतिमा
न्स्फीतश्रीकस्तदायहुवाहनः ॥ ९९ ॥ स्वोच्चोदयस्तपदःकुमुदस्यबंधुर्जा
येपंगोवणिजिदानवपूजितश्च शेपाश्चमत्स्ययुगलेयदिदेवमार्गाश्चंद्राङ्गनिर्म
लयशोभवतिक्षितीशः ॥ १०० ॥ नक्षत्रनाथसहितःसवितानभस्थःसौरिर्वि
लग्नभवनेहिबुकेसुरेज्यः देवारिपूज्यबुधभूमिसुतैश्चलाभैःस्यात्महिपतिर्गृह
स्वगुणैर्नरःस्यात् १०१ ॥

॥ और जिसके जन्मसमयमें मकरराशिकों छोडकर्के लग्नमें वृहस्पति स्थितहोवे सो अवश्यमेव मत्तहाथियोंकर्केपरिवारित राजा होताहै ॥ १०२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्नमें शनिकर्के युक्त मंगल स्थितहोवे और दशमस्थानमें चंद्रमा स्थितहोवे और वृहस्पतिवी दशमस्थानमें स्थित होवे और शुक्र सप्तमस्थानमें स्थितहोवे और ग्यारहमें स्थानमें सूर्यस्थित होवे और चंद्रमा चतुर्थराशिमें स्थित होवे जब अयसा योगहोवे तब श्रेष्ठयशवाले राजा का जन्म होताहै ॥ १०३ ॥ और जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमे उच्चहोयकर्के चंद्रमा स्थितहोवे सो मनुष्यकों राज्यप्राप्त कर्त्ताहै और जब पूर्णचंद्रमा होवे तब क्यामहिमाहै वडे प्रतापवाला राजा होताहै ॥ १०४ ॥ और जिसके

मृगराशिंपरित्यज्यस्थितोलग्नेवृहस्पतिः करोत्यवश्यंनृपतिंमत्तेभपरिवृंहितम्
१०२ लग्नेभौमोरविजसहितःशीतरश्मिःखमध्ये वा चांस्वामीदशमगृहगो भार्गवःसप्तमस्थः आयेहेम्नाशिशिरकिरणोवंधुराशिंप्रपन्नोयद्येवंस्याद्विमलयशसोजन्मभूपालकस्य १०३ घूनेपिकुमुदवंधुःस्वोच्चगतःपार्थिवंकरोतिनरम् किंपुनरखंडमंडलह्विमधवलप्रकाटितसुदीप्तिः १०४ लग्नंविहायकेंद्रेसकलकलापूरितोनिशानाथः विधातिमहीपालंविक्रमधनवाहनोपेतम् १०५ यदिपश्यतिदानवार्चितंवचसामधिपस्तदाभवेत् नृपतिर्वहुनायकोनरोभुजगेंद्रइवप्रतापवान् ॥ १०६ दिवौकसांपतेर्मंत्रीकुर्यात्पश्यनवुधंनरं शिरोभिःशासनंतस्य धारयंतिनृपाःसदा ॥ १०७ ॥ लग्नाधिपतिःस्वोच्चेपश्यन्मृगलांछनंनृपंकुरुते वहुगजतुरगवलौघैःक्षपितविपक्षंमहाविभवम् ॥ १०८ ॥

जन्मसमयमें लग्नकों छोडकर्के केंद्रस्थान १।४।७।१० । में पूर्णचंद्रमा स्थितहोवे सो वडेधन और पराक्रम और वाहनोंकर्के राजा होताहै ॥ १०५ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रकों वृहस्पति देखताहोवे तब सो वहुतजनोंका स्वामी शेषनागकोन्यांई प्रतापवाला राजा होताहै १०६ और जिसके जन्मसमयमें इंद्रकामंत्री वृहस्पति वुधकों देखताहोवेतिसकीआज्ञाकों संपूर्णराजा शिरमें धारणकर्त्तेहै ॥ १०७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्नकास्वामीअपनी उच्चराशिमें स्थितहोवे और चंद्रमाकों देखता होवे तब मनुष्यकों वहुत हाथि और घोडे और सेनाके समूहकर्के युक्त और शत्रुओंसें रहित और वडे ऐश्वर्यकर्के युक्त कर्त्ताहै ॥ १०८ ॥

उोर जिसके जन्मसमयमे उच्चराशिमें चंद्रमाकों बुध और शुक्र देखते होवें तब तिसपुरुषकों राजा कर्त्ताहैं कैसावो राजा होताहै बडे शत्रुयोंककें वंदित और बडे यशककें युक्त और बडे सौभाग्यवाला होताहै ॥ १०९ ॥ और जिसके जन्मसमें अधिमित्रांशमें चंद्रमास्थितहोवे और शुक्र ककें देख्या होवे तिसकी लक्ष्मी निश्चल होतीहै और ध्वजा छत्र ककें युक्त और हाथियोंककें युक्त होतीहै ॥ ११० ॥ और जिसके जन्मसमयमें अपनेनवांशमें अथवा अधिमित्रके नवांशमें चंद्रमा स्थित होवे और बृहस्पतिककें देख्याहोवे और दिनका जन्महोवे तब राजा होताहै इसमें संशय नहिंहै १११ और जिसके जन्मसमयमें जन्मलग्नकास्वामी केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें बलककें संयुक्त होवे तिसकों गोपाल कुलमें जन्मेकोंवी परमऋद्धि वाला राजा कर्त्ताहै और राजवंशमें जन्मे

इंदुःस्वोच्चेपश्यन्करोतिबुधभार्गवौनरंनृपतिम् प्रणतारिपक्षमुच्छ्रितयशसंसौभाग्यवंतंच ॥ १०९ ॥ अधिमित्रांशगश्चंद्रोदृष्टोदानवमंत्रिणा निश्चलांकुरुते लक्ष्मींध्वजच्छत्रगजाकुलाम् ॥ ११० स्वांशेधिमित्रभागेवागुरुणायदिदृश्यते शशीमहीपतिंकुर्याद्दिवसेनावसंशयः ॥ १११ ॥ जन्माधिपतिःकेंद्रेबलपरिपूर्णः करोतिपरमर्द्धिम् गोपालकुलेपिनृपंकिंपुनरवनीशसंभूतम् ११२ रविरप्यधिमित्रस्थोयदिचंद्रंनिरीक्ष्यते अंशकाधिपतिःकुर्याद्धर्मार्थसहितंनृपम् ॥ ११३ ॥ उच्चस्थःशशितनयःकुमुदाकरबंधुनासमधिगतःपुरुषम् जनयतिसगजाधिपतिं गजमदगंधनवासितदिंगतम् ११४ प्रधानबलसंयुक्तःसंपूर्णःशशलांछनः एकोपिकुरुतेजातंनराधिपमरिंदमम् ॥ ११५ ॥ केंद्रेविलग्ननाथःश्रेष्टबलोमानवाधिपंकुरुते गोपालकुलेपिनरंकिंपुनरवनीश्वराणांहि ॥ ११३ ॥

तो क्यावातहै ११२ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य अधिमित्रकी राशिमें स्थित होवे और अंशकास्वामी चंद्रमाकों देखता होवे तब धर्मार्थककें युक्त राजा कर्त्ताहै ॥ ११३ और जिसकेजन्मसमयमे उच्चमेंस्थित बुध चंद्रमाककें युक्त होवे तिसकों हाथियोंकास्वामी कर्त्ताहै और हाथियोंके मद ककें चारदिशाओंकों सुगंधित करणेवाला राजा कर्त्ताहै ११४ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा प्रधानबलककें युक्तहोवे तब एकहि चंद्रमा शत्रुयोंके दमन करणेवाला राजा कर्त्ताहै ११५ और जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें स्थित होवे सो गोपाल कुलमेंजन्मेकोंवी राजा कर्त्ताहै और राजयोंके कुलमें जन्मेतों क्यावार्त्ताहै ११६

और जिसके जन्मसमयमेंकर्कटराशिमें केंद्र ।१।४।७ १० स्थानोंमें बृहस्पतिस्थित होवेऔरदशमस्थानमें शुक्रहोवे तव चारऔर समुद्रकीतडागीवालीपृथ्वीकाराजाहोताहै ११७ औरजिसकेजन्मसमयमें मेषराशिमेंसूर्यस्थितहोवेऔरचद्रमा कर्के युक्तहोवेतवकेरलऔरकर्णाटऔरअंध्र और द्राविड और कछ और शोण देशोंका राजा कर्ताहै ॥ ११८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें कर्कटराशिमें बृहस्पति चद्रमाकर्के युक्तहोवे तिसकों काश्मीरमडलका राजा अवश्यमेव कर्ताहै ११९ और जिसके जन्मसमयमें उच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें शुक्र बृहस्पति जाहरमें और केंद्र १।४ ७।१० में स्थित होवें सो राजाके कुलमें जन्माहुआ अवश्यमेव राजा होताहै ॥ १२० ॥

कर्कटसंस्थःकेंद्रेबृहस्पतिर्दशमगश्चसितः चतुरुदधिमेपलाया.स्वामीभूमेर्यदा जातः ११७ मेषसहस्त्ररश्मि:सहशशिनासंस्थित.करोतिनृपम् केरलकर्णाटां ध्रद्राविडानांकछशोणकुलस्य ॥ ११८ ॥ उच्चस्थस्त्रिदशगुरुःकैरवबनबंधुसंगमं प्रातः काश्मीरमंडलभवंकरोतिपुरुपाधिपमवश्यम् ११९ तुंगायस्त्वगृहोदयकं टकनवमोदयेपुशुक्रगुरू सोवश्यंभवतिनरोराजांशसमुद्भवोन्नृपतिः १२०
सत्स्थानकालादिबलैरुपेता.शुभग्रहा.केंद्रमुपागताश्च ॥ कुर्वन्तिपापैरविमिश्रचारा.पृथ्वीभुजांत्रिप्रभृतिग्रहेंद्राः १२१ रवेर्द्वितीयेबुधजीवभार्गवानचाशुभैर्दृष्टयुतानचार्कगा. ॥ स्फुरत्करौघस्फुटपिंजरीकृतानरप्रकुर्वन्तिसमुद्रपालकम्. १२२ कुंदाब्जकाशधवल.परिपूर्णकांतिर्जन्माधिपेनवलिनाशुभदेन दृष्टः ॥ स्त्रीमानभंगनिपुणंदयित.क्षपाया.प्रख्यातकीर्त्तिसुनयंकुरुतेनरेंद्रं १२३

और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह श्रेष्ठस्थानोंमें और कालादि बलककें युक्त होवें और केंद्रस्थानोंमें स्थित होवें और पापीग्रहोंकर्क रहितहोवें जब तीनसे लेकरकेग्रह अपसे होवें तवराजा कर्त्तेहैं १२१ और जिसके जन्मसमयमें सूर्यकेदूसरे स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें और अशुभग्रहोंकर्के दृष्ट और युक्त नाहीं होवें और अस्तंगत नाहीं होवें और अपनीयों किरणों कर्के प्रकाशवाले होवें तव तिसकों समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा कर्त्तेहैं ॥ १२२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा श्वेतकमलकी न्याईं निर्मल और पूर्ण देहकर्के युक्त होवे और जन्मलग्नका स्वामी शुभग्रहकर्के देख्या होवे सो राजा स्त्रीयोंका अभिमान तोडने वाला और वडे यश वाला और श्रेष्ठनीतिके जानने वाला होताहै १२३

श्रीर जिसके जन्मसमयमें शुक्रकर्के युक्त बृहस्पति दूसरेस्थानमें स्थित होवे तिसको पृथ्वीके पालनेवालाराजाकर्त्ताहैं श्रीर शत्रुयोंके दमन करणे वाला होताहै ॥ १२४ ॥ श्रीर जो मनुष्य कारकयोगोंमें जन्मतेहैं सो पृथ्वीके भोगनेवाले होतेहैं श्रीर तिनके हाथिघोडे श्रीर प्यादे योंकी धूडश्राकाशमंडलमें छाय जातीहै ॥ १२५ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें मंगल लग्नमें स्थित होवे शनि चतुर्थस्थानमें स्थित होवे श्रीर मकर लग्नमें श्रीर शनिके नवांशमें चतुर्थस्थानमें शुक्र बृहस्पति बुध स्थितहोवें तब राजा होताहै ॥ १२६ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिका बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे श्रीर चंद्रमाबी कर्कराशिमें स्थित होवे श्रीर मीनराशिमें परमोच्चांशमें शुक्र स्थित होवे श्रीर तैसेंहि मेषलग्नमें सूर्य श्रीर मंगल स्थित होवें तब राजा स्वर्गका स्वामी होताहै ॥ १२७ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें शुक्र

देवमंत्रीकुटुंबस्थोभार्गवेनसमान्वितः जनयेद्वसुधापालंनिर्जितारातिमंडलम् १२४ कारकयोगेजाताभवंतिपृथ्वीभुजोनरायेषां ॥ गजतुरगपत्तिविदलितरजोविताने भवेद्गगनम् १२५ कुजेविलग्नेतरणेश्चनंदनेरसातलेशुक्रबृहस्पतींदुजैः ॥ मृगोदयेमंदनवांशकस्थितेरसातलेसोभवतीहपार्थिवः १२६ स्वोच्चेगुरुस्तनुगतः स्वगृहेशशांकः शुक्रोझपेपरममुच्चमितोसितश्च मेषेतथैवभगवान्सविताकुजश्चस्वर्गाधिपोयदिभवेन्नृपतिः प्रजातः ॥ १२७ शुक्रेज्यौ संसितौः शुचीतिमियुगेस्वोच्चश्चपूर्णः शशी दृष्टस्तीव्रविलोचनेनादिनकृन्मेषेयदासौनृपःसेनायाश्चलितेनरेणुपटलैर्यस्यप्रनष्टेरवावस्तभ्रांतिसमाकुलाकमलिनीसंकोचमागच्छति ५२८ क्रूरैर्नीचैरिपुगृहगतैःषष्ठदुश्चिक्यगैर्वासौम्यैःस्वोच्चंपरमुपगतैर्निर्मलैःकेंद्रगैश्चश्राज्ञास्थानेशिशिरकिरणेकर्कटस्थेनिशायामेकच्छत्रांत्रिभुवनतलंयस्यसक्ष्मातलेशः १२९

बृहस्पति उदयको प्राप्त होयकर्के मीनराशिमें स्थितहोवें श्रीर वृषराशिमें पूर्ण चंद्रमा स्थित होवे श्रीर मेषराशिमें स्थित यो सूर्य तिसकर्के देख्याहोवे सो राजा होताहै कैसाबी राजा होताहै जिसकीसेनाके चलनेकेसमयमें उडीयो धूलि तिसकर्के सूर्य छप जाताहै श्रीर सूर्यास्तकी भ्रांतिकर्के कमलिनीयां संकोचको प्राप्त होतीहैं अर्थात् वडीसेना वाला राजा होताहै ॥ १२८ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमे क्रूरग्रह नीचराशिमें स्थित होवें श्रीर शत्रुक्षेत्रमें स्थित होवें अथवा तीसरे छठे स्थानमें स्थित होवें श्रीर शुभग्रह परमउच्चस्थानमें प्राप्त होवें श्रीर रश्मियोंकर्के प्रकाशयुक्त होवें अथवा केंद्र ॥ १ ॥ ४।७।१०। स्थानोंमें स्थित होवें श्रीर रात्रिके जन्ममें दशमस्थानमें कर्कटराशिका चंद्रमा स्थित होवे सो राजा तीनभुवनमें एकछत्रवाला होताहै १२९

श्रोरजिसकेजन्मसमयमेंउदयकोंप्राप्त बृहस्पति लग्नमें स्थितहोवे श्रोरअष्टमीकाचंद्रमा जाहरमेंस्थानमें स्थित होवे श्रोरबुधकर्केदेख्याहोवेश्रोर चंद्रमासेंदूसरेस्थानमेंसूर्यस्थितहोवेश्रोरमंगलककेंनहिंदेख्याहोवे सो राजा बहुतहाथी श्रोर घोडयोंमें स्थित होयककें पृथ्वीकों पालताहै १३० श्रोर जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा मंगल मेषलग्नमें स्थित होवें श्रोर शुक्र शनि बुध वृषराशिमें स्थित होवें श्रोर धन. लग्नमें नवमस्थान बृहस्पति स्थित होवे श्रोर अपने भावमें स्थित होवे श्रोर सूर्य अपने उच्चमें श्रोर उच्चके नवांशमें स्थित होवे तब इसयोगमें उत्पन्नभयायो राजा सो शत्रुयोंकों हत करणेवाला होता. है १३१ श्रोर जिसके जन्मसमयमें चंद्र बुध बृहस्पति पांचमें स्थानमें स्थित होवें श्रोर सूर्य कर्के रहित होवें श्रोर छठेस्थानमें सूर्य स्थित होवे श्रोर मंगल अपने उच्चमें स्थित होवे श्रोर नवमस्था.

होरालेखामुपेतःस्फुटकरनिकरैःपूरितांगःसुरेज्यश्चंद्रःशुक्राधंदेहोभृवभवनगतः स्वेनपुत्रेणदृष्टः ॥ चंद्राद्भानुर्द्वितीयेयदिभवतितदानैवदृष्टःकुजेनजातःपायेतभूमिंबहुगजतुरगक्षुण्णभूपृष्ठपीठः ॥ १३० ॥ रविशशिकुजैर्मेषेलग्नेसिताकिबुधैर्वृषेधनुपिनवमेदेवज्येचस्वभावमुपास्थिते ॥ रविरपियदिस्वोच्चेवर्गप्रधानलवोदयेभवतिनृपतिःसिद्धार्थज्ञोहतारिरिहोद्भवः १३१ शशिशशिसुतजीवैःपंचमस्थैर्विहीनैरविरपिरिपुराशौस्वोच्चगेभूमिपुत्रे ॥ तपसिचरविपुत्रेजायतेपार्थिवेंद्रःप्रथितविपुलकीर्तिर्दानधर्मप्रतापैः १३२ त्रिदशगुरोरविहिमकरौस्वसुतस्ययदा भृगुतनयःकुजस्ययदिदृष्टिपथंचगतोभवति ॥ विलग्नगोयदिकोदयराशिरिहप्रथितयशोभवतिक्षितिपतिःक्षपितारिगणः १३३ बुधःकन्यालग्नेसुरपतिगुरुश्चापितिमिगश्विनःक्षोणीपुत्रःप्रथमभवनेवीर्य्यसहितः ॥ शनिःशत्रुस्थानेत्रिदशरिपुवंद्यश्चहिबुकेयदैवंस्यात्सूतौस्वभुजविजयिभूपतिरिह ॥ १३४ ॥

नमें शनि स्थित होवे तब दान श्रोर धर्मकर्के युक्त बडे प्रतापवाला राजा होताहै ॥ १३२ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें सूर्य श्रोर चद्रमा बृहस्पति कर्के श्रोर शनि बुध कर्के देखे होवें श्रोर शुक्र मंगलकर्के देख्या होवे श्रोर लग्नमें शीर्षोदयराशि स्थित होवें तब प्रसिद्धयश वाला श्रोर शत्रुयोंका क्षय करणेवाला राजा होताहै ॥ १३३ ॥ श्रोर जिसके जन्मसमयमें कन्यालग्नमें बुध स्थित होवे श्रोर बृहस्पति धनलग्नमें होवे श्रोर सूर्य मीनलग्नमें स्थित होवे श्रोर मगल मेषलग्नमें स्थित होवे श्रोर बलकर्के युक्त होवें श्रोर छठेस्थानमें शनिहोवे श्रोर शुक्र चतुर्थस्थानमें होवे तब श्रपसें योगमें अपने भुजोंकर्के विजयकों प्राप्त राजा होताहै ॥ १३४ ॥

और जिसके जन्मसमयमें शनि लग्नमें स्थित होवे और मकरराशिकाहोवे और सूर्य सप्तमस्थानमेंहोवे और शुक्र अष्टमस्थानमें स्थित होवे और वृश्चिकमें मंगल और कर्कटराशिमें चंद्रमा होवेतबप्रसिद्ध राजा होताहै १३५ और जिसके जन्मसमयमें मकरलग्नमें उदयको प्राप्त मंगल होवे और शनि नवमस्थानमें स्थित होवे और सूर्यचंद्रमाकर्के युक्त सप्तमस्थानमें होवे तब चंचलस्वभाववाला राजा होताहै ॥ १३६ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाकर्के युक्त शनि लग्नमें स्थितहोवे और बृहस्पति सप्तमराशिमें होवे और अपने उच्चमें स्थित बुधशुक्रकर्के देख्या होवे तब वडा क्रूरराजा होताहै १३७ और जिनके जन्मसमयमें पापीग्रह जाहरमें स्थानमें बृहस्पतिकी दृष्टिसें रहित होवें और लग्नमें शुक्र स्थित होवे और चंद्रमा कर्कट राशिमें स्थित होवे तब अयसे योगमें वाउलीयां और रहै

यमेविलग्नेमकरेप्रतिष्ठितेदिवाकरेद्यूनगतेसितेष्टमे कुजेलिगेकर्कटगेनिशाकरे भवेत्प्रसिद्धोजगदीश्वरोनरः ॥ १३५ ॥ मृगोदयेभूमिसुतेसुनिर्मलेशनैश्चरे धर्मगृहेव्यवस्थिते दिवाकरेसप्तमगेसहेंदुनाचलस्वभावोनृपतिःप्रजायते ॥ १३६ ॥ शनैश्चरेलग्नगतेसचंद्रेबृहस्पतौसप्तमराशिगेच शुक्रेणदृष्टेशशिजेस्व तुंगेजायेतपृथ्वीपतिरप्रधृष्यः ॥ १३७ ॥ पापाभवेसुरपुरोहितदृष्टिशुद्धालग्ने सुरारिदयितः शशिनिस्वराशौवापीतडागसुरवेश्मकरोनरोत्रजायेतमानवपति र्द्विजदेवभक्तः ॥ १३८ ॥ एकःस्वोच्चेशुभभवनगःसंस्थितोनिर्मलांशुःकेंद्रेभानुः प्रकटितकरःकेवलःपूर्णवीर्यः दृष्टःकुर्यादमरगुरुणापंचमस्थेनजातंभूमेर्नाथंबहु गजपतिंसर्ववंद्यंकृतार्थम् १३९ षष्ठेतमःसहजगेहगतोथवापिसिंहेंदुराशिसहि तोथभवर्क्षसंस्थः दृष्टःशुभैर्दिनकरेंदुविहीनदृष्टिःकुर्यान्नृपंस्वभुजनिर्जितशत्रुप क्षम् ॥ १४० ॥

और देवताकेमंदिर लगावने वाला और ब्राह्मण और देवताका भक्त राजा होताहै ॥ १३८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें एकग्रहवी अपनेउच्चमें और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे और निर्मलकिरणा कर्के प्रकाशितहोवे और केवल एकहि सूर्य केंद्रस्थान । १ । ४ । ७ । १० । में दिनके जन्ममें पूर्णवली होवे और पंचम दृष्टिकर्के बृहस्पतिकर्के देख्या होवे तव राजा बहुत हाथियोंकर्के युक्त और संपूर्ण लोकोंकर्के वंदित और कृतार्थ होताहै ॥ १३९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें छठे वा तीसरे घरमें राहुस्थितहोवे अथवा सिंहकर्कटराशिमें जाहरमें स्थान स्थित होवे और शुभग्रहोंकर्के देख्या होवे और सूर्यचंद्रमाकीदृष्टिसें रहित होवे तव अपनीभुजाओंकर्के शत्रुपक्षकोंजीतनेवाला राजाकर्ताहै १४०

और जिसके जन्मसमयमें मंदमंद वायु चलरहाहै और आकाशनिर्मल धूलिकर्के रहितहोवे और ग्रहवलवानहोवें और उपद्रवोंकर्के रहित और वैरकर रहित होवें और तारामंडलमें बृहस्पति उदयकों प्राप्तहोवे और जब वृषराशिमें शुक्र होवे तव तिससमयमें जन्माहुआ राजा होताहै १४१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें चद्रमा बुध मंगल अपने नवांशमें स्थित होवें और नीचराशिमें नहिंस्थित होवे और क्रमकर्के वाहरमें और जारमें और तीसरे स्थानमें स्थित होवें और अस्तकोंनाहिं प्राप्तहोवें और पांचमे स्थानमें चद्रमाकर्के युक्त बृहस्पति होवे तव राजा अपने यशकर्के दिशोंकों प्रकाश करणे वाला होताहै १४२ और जिसके जन्मसमयमें अधिमित्रकीराशिमें केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमे जन्मराशिकास्वामी लग्नके स्वामीकर्के युक्त होवे और वलकर्के युक्त लग्नकों देखे-

वहतिमृदुशरीरेनिर्मलेव्योममध्ये वलिनिनिरुपसर्गा खेचराऽव्यक्तवैराःउदयति सुरवद्येमंडलेमातृकानां यदिवृषभगृहस्थोभार्गव स्यात्क्षितीशः ॥ १४१ ॥ शशिवुधरुधिरांगे स्वांतकस्थैर्ननीचैर्व्ययभवसहजस्थैर्नापिसूर्यप्रविष्टैः तनय भवनसस्थेवाक्पतौचंद्रयुक्तेभवतिमनुजनाथ कीर्तिशुक्लीकृताशः ॥ १४२ ॥ अधिमित्रगृहेकेंद्रेजन्माधिपतिर्विलग्नपतियुक्तः पश्यतिवलपरिपूर्णोल ग्नंस्यात्पुष्कलोयोगः १४३ पुष्कलयोगेपुरुषाजायतेभूमिपालकानित्यं सुचिरभवंतिहतरिपवोगजमदगधेनवासितदिगता १४४ राश्यादौलग्न पति करोतिलग्नेनरेंद्रदंडपतिं मध्येमंडलनाथग्रामपतिंचैवभवनांते ॥ १४५ पौष्णेफाल्गुण्यश्विनिमूलेसौम्येचभास्कर कुरुते लग्नगतोनरनाथयोजनशत मात्रकेदेशे ॥ ४६

तव पुष्कल नामकर्के योग होताहै १४३ और पुष्कलयोगमें जो मनुष्य जन्मतेहैं सो नित्य प्रति-राजा होतेहैं और चिरकाल राज्यके करणे वाले और शत्रुयोंका हतकरणे वाले और हाथियों केम दकर सुगंधित करणेवाले होतेहें १४४ और जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी राशिके प्रथमभागमे लग्नगतहोवे तव दंडनीतिके करणेवाला राजाहोताहै और मध्यभागमें स्थित होवे तव मंडलीक राजाहोताहै और राशिकेअंत्य भागमे होवे तव ग्रामपतिराजा होताहै १४५ और जिसकेजन्मसमयमें रेवती पूर्वाफाल्गुनी अश्विनी मूला मृगशिरा नक्षत्रमें स्थित सूर्य लग्नगत होवे तव तिसकों सौ १०० जोजन पृथ्वीका राजा वर्णाहै १४६

और जिनकेजन्मसमयमेंकृत्तिकाऔर रेवती औरस्वाति और पुष्यनक्षत्रमेंशुक्रस्थितहोवे औरअश्विनीमें स्थितहोवे तव राजाधिराजकर्त्ताहै १४७ और जिसकेजन्मसमयमें लग्नकास्वामीउच्चमे स्थितहोवेकर्के केंद्र१।४।७।१० में स्थितहोवे तव सारी पृथ्वीकाराजाकर्त्ताहै और केवललग्नका स्वामीकेंद्रमें स्थित होवेतव सामान्य राजाधनकीसमृद्धी वाला होताहै १४८ और जिसके जन्मसमयमें मीनराशिमें पूर्ण चद्रमा स्थित होवे और मित्र ग्रहोंकर्के देख्याहोवे तव सारी पृथ्वीका राजाकर्त्ताहै और सिद्धार्थ के ज्ञानदेवाला कर्त्ताहै इसमें सशय नहिंहै १४९ और जिसके जन्मसमयमें मगलदशमस्थानमें स्थित होवे और चंद्रमा वुधशुक्रइहे नवमस्थानमे स्थित होवें और जाहरमें स्थानमें उचराशिका सूर्य स्थित होवे और वृहस्पतिकर्के युक्तहोवे सो सारीपृथ्वीकाएकराजाहोताहै ॥ और जिसके

कृत्तिकारेवतीस्वातीपुष्यस्थायीभृगो सुतः करोतिभूभुजांनाथंअश्विन्याम पिसंस्थितः ॥ १४७ ॥ विदधातिसार्वभौमंलग्नाधिपतिःस्वतुंगग.केंद्रे नृपतिंलग्नाधिपतिर्जन्मपतिर्द्धनसमृद्धंच ॥ १४८ ॥ मीनेनिशाकर.पूर्णः सुहृद्ग्रहनिरीक्षितः सार्वभौमंनृपंकुर्यात्सिद्धार्थज्ञंनसंशयः ॥ १४९ ॥ याते भौमेकर्मस्थानंशशिरकरवुधभृगुसुतैस्तपःसमवस्थितैः आयेस्वोच्चेप्राप्तेभानु स्त्रिदशपतिसचिवसहितोयदिप्रसवेप्रभवेत्क्षोणीभर्त्तायानेयस्यप्रचलिततुरगरज सादिवःसरितोगते नाथैकत्वंभूयोभूतधरणितलपरिगमसुखंप्रयातिरवेर्हयाः १५०, शशिसहितेकेंद्रस्थेशनैश्चरेभवतिजारजातोत्र राजाभुविगजतुरगग्रामधनाविव र्द्धितश्रीकः १५१ शुक्रवाक्पतिवुधैर्निधनस्थैर्द्यूनगै.शशिरविक्षितिपुत्रैः जायते क्षितिपतिःपृथुवक्षा.सर्वतःक्षपितशत्रुसमूहः १५२

समयमें घोडेयोंके खुरोंकर्के उडीयो धूलि तिसकर्के सूर्यके रथके घोडेपृथवीतलकेसुखकों होतेहैं अर्थात् वडी सेनावाला राजा होताहै ॥ १५० ॥ और जिसकेजन्म यमेचद्रमा कर्के युक्त केंद्रस्थानों १।४।७।१० में शनि स्थितहोवे सो राजाजारजान हैं और हाथि घोडे ग्राम धनकी वृद्धिवाला होताहै ॥ १५१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें वृहस्पति वुध इहे तीनग्रह अष्टमस्थानमें स्थितहोवें और चद्रमा सूय मगल इहे तीनग्रह सतम नमें स्थित होवें तव वडीछातीवाला राजा होताहै चार ओरसें शत्रुयोंके समूहोंका क्षयकरणेवा नाहै १५२

और जिसके जन्मसमयमें बलकर्के युक्त सूर्यककर्ट राशिमें स्थितहोवे और चंद्रमा कर्के युक्त होवे और लग्नमें बृहस्पति उच्चमेंस्थितऔर उदितहोवे और छठेस्थानमें मंगलस्थितहोवे तिसराजाकी सेनाके चलनेमें धूलीकर्के आकाशमार्ग छाया जाताहै १५३ और जिसके जन्मसमयमें कुंभराशिके अष्टमांशमेंचंद्रमा त्रिकोण ९।५ स्थानमें स्थितहोवे तव राजा अवश्यमेव संपूर्णलोकों कों शुभके देनेवाला होताहै १५४ और कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें मेषकेसप्तमांशमें मंगल स्थितहोवे तब राजाकर्ताहै और मिथुनलग्नके इकीस २१ अंशमें स्थितहोवे तब राजाकर्ताहै १५५ और कुंभराशिके १५ अंशमें चंद्रमास्थितहोवे तब राजा कर्ताहै और कर्कटराशिके दशम अंशमें स्थितचंद्र

भानुःप्राणीशशिगृहगतःशीतरश्मिश्चतस्मिन्नेकेस्वोच्चेयदिगगनगोनिर्मलःपूर्णरश्मिः लग्नंप्राप्तःसुरपतिगुरुःषष्ठगःस्यात्क्षितीशः छन्नोयस्यप्रचलितचमूरेणुभिर्व्योममार्गः १५३ कुंभस्याष्टमभागेत्रिकोणसंस्थेपिवानिशानाथे जातोभवत्यवश्यंराजाशुभदः समस्तलोकस्य १५४ मेषस्यसप्तमांशेकरोतिपृथ्वीसुतःस्थितोनृपतिम् एकाधिकविंशेनचमिथुनस्यांशेभवेद्भूपः १५५ कुंभस्यपंचदशकेभागेचंद्रःस्थितोमहीपालम् कर्कटस्यचदशमेकरोतिपुरुषंसदाप्रसवे १५६ धनुषिचात्रिंशेजीवःकरोतिनृपतिंजनस्यातं सिंहस्यपंचमांशेतथाचहेलिबुधौज्ञेयौ १५७ एकास्मिन्पंचकर्तौ तत्रैवदशस्ववास्थितश्चंद्रः ॥ भागेषुवीरनृपतिंकरोतिभुजलब्धपृथ्वीशम् ॥ १५८ मकरस्यपंचमांशेकरोतिरविजोनरेश्वरंसुनयम् भागेभूतलतिलकंधर्मज्ञंशास्त्रनिरतंच १५९ कर्कटगौशशिजीवौपंचसुभागेषुसंस्थितौकुरुतः भुपतिमप्रधृष्यं रविमिवसर्वग्रहगणस्य १६०

माराजाकर्ताहै १५६ औरधनराशिके त्रीसमें १० अंशमें स्थित बृहस्पतिवडाप्रसिद्धराजा कर्ताहै और सिंहराशिके पांचमें अंशमें सूर्यबुधस्थितहोवे तब राजाहोताहै १५७ और एकराशिमेंपंचाविंशति अंशमें और दशमेंअंशमें चंद्रमा स्थितहोवे तव राजाअपनी भुजोंके बलकर्के पृथ्वीकोंप्राप्त होताहै १५८ और मकरराशिके पांचमें अंशमें स्थितशनि श्रेष्ठनीतिके जाननेवाला राजाकर्ताहै और पृथ्वीतलमें तिलक और संपूर्णधर्मोकेजाननेवाला राजा होताहै १५९ और कर्कटराशिके पांचअंशोमें चंद्रमाऔर बृहस्पतिस्थितहोवें तव वडेतेजवाला राजा होताहै जैसें संपूर्णग्रहोंके मध्यमें सूर्यहैतिसकीन्याई १६०

श्रोर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा पुष्पनक्षत्रमें श्रोर वर्गोत्तममें श्रोर कृत्तिका श्रोर अश्विनीनक्षत्रमें स्थित होवे श्रोर त्रिपुष्करयोगकर्के पूर्ण चंद्रमा होवे तव पृथ्वीका राजा कर्त्ताहै १६१ श्रोर जिसके जन्मसमयमें अश्विनी श्रोर अनुराधा नक्षत्रमें शुक्र स्थित होवे श्रोर धनिष्टामें मगल स्थित होवे श्रोर अपने उच्चमें वा वर्गोत्तममें स्थित होवे तव श्रेष्टराजा होताहे १६२ श्रोर जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा दशमस्थानमें स्थित होवे श्रोर निर्मल शुक्र नवमस्थानमें स्थित होवे श्रोर संपूर्णग्रहअस्तकों वो प्राप्त होवें तववो वडे पुरुषार्थ वाला राजा होताहे १६३ श्रोर जिसके जन्मसमयमें मगलसें पंचम श्रोर नवम श्रोर तीसरे स्थानमें क्रमसें वृहस्पति श्रोर चंद्रमा श्रोर सूर्य स्थित होवें तव राजा कुवेरके समान धनवालाहोताहे १६४ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वुधसें सूर्य तीस

चंद्रः पुष्पेनृपतिंवर्गोत्तमकृत्तिकाश्विनीसंस्थः विदधातिसार्वभौमंत्रिपुष्करेणापिपरिपूर्णः १६१ अश्विन्यनुराधास्थःसितःश्रविष्टासुपार्थिवंभौमः कुरुतेस्वोच्चमुपागतोवर्गोत्तमगश्चनान्यत्र १६२ व्योम्निशंखधवलोनिशाकरोभार्गवस्तपसिसंस्थितः शुचिः अस्तगाश्चयदिशेषखेचराःस्यान्महीपतिरनल्पपौरुषः १६३ जीवनिशाकरसूर्याःपंचमनवमतृतीयगावक्रात् ॥ यदिभवतितदाराजाकुवेरधनतुल्यएवासौ १६४ रविस्तृतीयेभृगुनंदनःसुखेवुधस्यचान्येयदिपंचमेस्थिताः ननीचराशौनचशत्रुवेश्मगाभवेन्नरेंद्रस्त्रिसमुद्रपालकः ॥१६५ ॥ वृहस्पतेर्भौमदिवाकरेंदवोगतास्त्रयोचांवुनभस्तलंक्रमात् विपक्षराशोपरिशेषखेचरायदातदाभूमिपतिर्नृपात्मजः ॥ १६६ भृगोरपत्याद्बुधभास्करात्मजौचतुष्टयस्थौपरिशेषखेचराः तृतीयलाभर्क्षगतास्तुतेयदामहीपतिंकुर्युरसंशयंतदा ॥ १६७ ॥

रेस्थानमें स्थित होवे श्रोर शुक्र चतुर्थस्थानमें स्थित होवे श्रोर बाकीके ग्रह पचमस्थानमें स्थित होवें श्रोर नीचराशिमें श्रोर शत्रुकी राशिमें स्थित नहिंहोवें तव तीनसमुद्रपर्यंत पृथ्वीके पालनेवाला राजा होताहे १६५ श्रोर जिसके जन्मसमयमें वृहस्पतिसें लेकर्के मगल श्रोर सूर्य श्रोर चंद्रमा क्रमकर्के चतुर्थ श्रोर दशम श्रोर लग्नमें स्थित होवें श्रोर बाकी के ग्रह छठे स्थानमें स्थित होवें तव राजकुमारराजा होताहे १६६ श्रोर जिसके जन्मसमयमें शुक्र से केंद्रस्थानों । १ । ४ । ७ । १०।में वुध श्रोर शनि स्थित होवें श्रोर बाकीके ग्रह तीसरे ग्यारहमें राशिमेंस्थितहोवें तव निःसंदेह राजाकर्त्ताहैं १६७

श्रौर जिसके जन्मसमयमें बुध श्रौर बृहस्पति श्रौर शनि केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमें स्थित होवें श्रौर बृहस्पति श्रौर बाकीके ग्रह उच्च राशियोंमें स्थितहोवें तब सिंहासनका स्वामी राजा होताहै ॥ १६८ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्यसें तीसरे पांचमें जाहरमें स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थित होवें सो राजावा राजाका मंत्री वा सेनाका पति होताहै १६९ श्रौर जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी उदय होवे श्रौर पापीग्रह जाहरमें स्थित होवें श्रौर शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवें तब अपने बलकर्के संपूर्ण पृथ्वीकों जीतने बाला होताहै १७० श्रौर जिसके जन्मसमयमें लग्नपतिके तीसरे उौर एकादश उौर छठे स्थानमें पापीग्रह स्थितहोवें

शुक्रबुधरवितनयाःकेंद्रेवाचस्पतिर्भवेदुच्चे सिंहासनाधिशायीयदिराजास्त्वोच्चगाश्चपरिशेषाः १६८ सवितुस्तृतीयपंचमलाभर्क्षसमाश्रिताःसदायस्य सर्वेग्रहाः सनृपतिर्भवोसेनापतिर्वापि ॥१६९ ॥ लग्नपतिःस्फुटरश्मिःपापालाभर्क्षगाःशुभाःकेंद्रे ॥ यदिभवतितदानृपतिःस्वभुजार्जितसर्वभूमितलः ॥ १७० ॥ लभेतृतीयषष्ठेयदिपापालग्नपस्यशुभदृष्टाः भवतितदाधरणीशःसमस्तनृपवंदितःसाधुः ॥ १७१ ॥ विचरतिसुरपूज्योमेषराशौतुसिंहे दहनकिरणदृष्टेभूमिपुत्रेसुरश्मौ नचगगनविचारीकश्चिदेकोपिनीचे यदिनृपतिसमर्थोजायतेपार्थिवेंद्रः ॥ १७२ ॥ चंद्राद्ग्रहैर्निगदिताःसुनफादयश्चकेंद्रस्थितैर्यदिभवंतिचयत्रयोगाः विश्वंभरापतिकुलेपुमहत्सुजातायोगेपुतेपुमनुजेश्वरवालमंते ॥ ॥ १७३ ॥ केंद्रगःसुरगुरुःसशशांकोयस्यजन्मनिचभार्गवदृष्टः भूपतिर्भवति

उौर शुभग्रहोंकर्के देखे होवें तब राजा संपूर्णराजयोंकर्के वंदित उौर साधुहोताहै ॥ १७१ ॥ उौरजिसकेजन्मसमयमें बृहस्पति मेषराशिमें स्थितहोवे उौर सिंहराशिमें मंगल सूर्यकर्के देखाहोवे उौर अस्तनहिं होवे उौर कोईबी ग्रहनीचराशिमें स्थितनहिं होवे तब बडासमर्थ वाला राजाहोताहै ॥ १७२ उौर जिसके जन्मसमयमें पूर्वकहेयो सुनफादि योगहैं चंद्रमासें सो योग केंद्रस्थानस्थितग्रहोंकेपदहोवें तिनोंमें राजाके कुलमें यो जन्महैं सो राजा होतेहैं ॥ १७३ ॥ उौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाकर्के युक्त बृहस्पति केंद्र । १ ।४ । ७ । १० । स्थानोंमें स्थितहोवे उौर शुक्रकर्के देखाहो ये उौर कोईबीग्रह नीच राशिमें स्थित नहिं होवे तब बडे यशवाला राजा होताहै ॥ १७४ ॥

औरजिसकेजन्मसमयमें जिसकिसलग्नमें उदयाचलमें स्थितशुक्रमंगल और शनिकर्केदेख्याहोवें औरअप नें नवांशमें अति वलयुक्त होवें और वृहस्पति पंचमस्थानमें स्थित होवे तव अपनी भुजोंकर्के शत्रुयों कों जीतने वाला और हाथियोंकर्के युक्त सारीपृथ्वीका राजा कर्ताहै ॥ १७५ ॥ और जिसके ज न्मसमयमें सिंहराशिमें सूर्य और कर्कटराशिमें चंद्रमा दोनों वृहस्पतिकर्के देखे होवें तव दोनों रा जाकर्ताहैं ॥ १७६ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें वुध कर्कटराशिमें स्थितहोवे और वृहस्पति धनराशिमें स्थित होवे और दोनों सूर्यमंगलकर्के देखे होवें तव वडा प्रसिद्ध राजा होताहै ॥ १७७ ॥ और जि सके जन्मसमयमें मीनराशिमें चंद्रमा स्थितहोवे और कर्कटराशिमें वृहस्पति स्थित होवे और शुक्र कुंभराशिमें स्थित होवे तव राजा होताहै १७८ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रकर्के देख्या हुआ

सोत्तमकीर्तिर्नीचगोपदिनकश्चिदिहस्यात् १७४ उदयशिखरसंस्थोभार्गवो यत्रतत्रकुजरविसुतदृष्टःस्वांशकस्थोविवीर्यः जनयतिनरनाथंवाक्यतोपं चम स्थेभुजवलहतशत्रुंसार्वभौमंगजाढ्यम् १७५ सिंहकमलिनीभर्त्ताकुलीरस्थो निशाकरः दृष्टौद्वावपिजीवेनपार्थिवंकुरुतस्तदा १७६ ॥ वुधःकर्कटमारूढोवा क्पतिश्चधनुर्द्धरम् सूर्यभूसुतदृष्टौचयदिस्फीतोमहीपतिः १७७ शफरीयुगले चंद्रःकर्कटेचवृहस्पतिः शुक्रःकुंभेयदाशक्रस्तदाराजाभवेदिह १७८ सितदृष्टः शनिःकुंभेपद्मिनीदयतोहये चंद्रोजलचरेराशौयदिराजातदाभवेत् ॥ १७९ ॥ कुजोलिगोथमेषेवारविजीवानिरीक्षितः वृषेज्ञःशुक्रसंदृष्टस्तदापिपृथिवीपतिः १८० अमलवपुरवक्रःकैरवानांविकासीस्वकगृहमथवांशेस्वोच्चमंशंगतोवा हि तगगननिवासैःपंचभिर्दृश्यमानोजनयतिपृथवीशंनीचभेनोयदिस्यात् १८१ कभेमंदोगुरुभृगुसुतावुद्गमेखेशशांकोवंधावर्कोवुधकुतनयौवक्रगौचेत्सभूपः

शनिःकुंभराशिमेंस्थितहोवे और सूर्य धनराशिमें स्थितहोवे और चंद्रमा जलचरराशिमें स्थितहोवेतव राजाहोताहै १७९ और जिसके जन्मसमयमें मंगल वृश्चिकराशिमेंअथवा मेषराशिमें स्थितहोवेऔरसूर्य वृहस्पतिकर्के देख्याहोवे औरवृषराशिमें वुध शुक्रकर्के देख्याहोवे तववी राजा होताहै १८० और जि सके जन्मसमयमें पूर्णचंद्रमा कर्कटराशिमें वा कर्कटके नवांशमें वा वृषके नवांशमें और पांच मि त्रग्रहोंकर्के देख्या होवे और नीचराशिमें स्थित नहिं होवे तव राजा कर्ताहै ॥ १८१ ॥ और जिस के जन्मसमयमें ग्यारमें स्थानमें शनि स्थित होवे और वृहस्पति शुक्र लग्नमें स्थित होवें और चंद्रमा दशमस्थानमें स्थित होवे और तीसरेस्थानमें सूर्य स्थित होवे और वुध और मंगल वक्रमतीवाले होवें सो राजा होताहै

जिसराजाकी सेनाके मत्त हाथियों करके युक्त यो समुद्र सो पर्वतोंकी भ्रांतिकरके फेर सेतुबंधनके भयसे समुद्र क्षोभको प्राप्त होताहै ॥ १८२ ॥ इतिराजयोगाः ॥ अब पंचमहापुरुषोंके लक्षण कहतेहैं श्रीकर्के युक्तजो देवकी तिनामकरके जो राजाहैं सो पचमहापुरुष संज्ञाकरके राजयोंको कहते भये तिनको निः संदेह करके मैं कहताहों १ अबमालव्यादिपांचराजयोंकेलक्षणकहतेहैं जिसराजाके जन्मसमयमें शुक्र और मगल और शनि और बृहस्पति और बुध इहे पांचग्रह यथाक्रमकरके बलीहोयकरके अपनेक्षेत्रमें वाकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानमें वा अपनीउच्चराशियोंमें स्थित होवें तब मालव्यसे लेकरके पांचराजाहोतेहैं जैसें जिसराजाके जन्ममें शुक्र बलीहोयकरके स्वक्षांदिस्थानमें स्थित होवे तिसको मालव्यसंज्ञाहोतीहै और जिसके जन्मसमयमें मगल स्वक्षांदिस्थानोंमें होवे तिसको रुचकसंज्ञाकहिहै २ और जिसके जन्ममें शनि स्वक्षांदिस्थानोंमें होवे तिसकी

यत्सेनायाःकृतजलकटिः क्रोधमत्तेभशैलैर्भूयःसेतोःस्मरतिसभयःक्षोभितांतोंबुराशिः १८२ इतिराजयोगाः ॥ अथपंचमहापुरुषलक्षणम् ॥ श्रीदेवकीर्तिराजापचमहापुरुषसंज्ञितान्नृपतीन् कथयतियांस्तानहमपिकथयामिनिराकुलीकृत्य १ स्वक्षेत्रेथचतुष्टयेचबलिभिःस्वोच्चस्थितैर्वाग्रहैः शुक्रांगारकमंदजीवशशिजैरेतैर्यथानुक्रमम् मालव्योरुचकः शशोथकथितोहंसश्चभद्रस्तथासर्वेषामतिविस्तरात्प्रतिमतात्संकथ्यतेलक्षणम् ॥ २ ॥ महीसुतात्सत्वमुदाहरंतिगुरुत्वमिंदोस्तनयाद्गुरोश्च स्वरंसितात्स्नेहमिहानुवर्णैबलाबलैःपर्णलघूनिचैवम् ॥ ३ ॥ ऋजुर्दयालुर्बहुदासभृत्यःस्थिरस्वभावःप्रियसत्यवादी सुरद्विजोपास्तिरतःसहिष्णुर्भवेन्नरःसत्वगुणप्रधानः ४

शशसंज्ञाहोतीहै और बृहस्पति स्वक्षांदिस्थानोंमें होवेतब तिसकी हंससंज्ञाहोतीहै और बुधस्वक्षांदिस्थानोंमें स्थित होवे तिसकी भद्रसंज्ञाकहिहै अबइनोंपांचों केलक्षण जैसे मुनियोंने विस्तारकरकेकहेहैं सो मैं कहताहों ॥ २ ॥ और कहतेहैं मगलसे सत्वजो पराक्रमहै सो कहतेहैं और बुधसे गुरुता देहस्थूलताकहतेहै और बृहस्पतिसेस्वर शब्द पटुताकहिहै और शुक्रसे देहकीस्निग्धता और इनोंग्रहो के बलाबलसें पूर्ण और न्यूनाधिकगुणहोतेहै ३ अबसत्वगुणादिफलकहतेहैं ॥ जो मनुष्यमपूर्ण कर्मोंमें सरलहोवे और दयावान होवे और बहुतचाकरोंवाला होवे और स्थिरस्वभाववाला होवे और मीठा सत्यबोलने वाला होवे और देवता ब्राह्मण की उपासनामें रतहोवे और किसीकी बातको सहारणे वाला होवे सो सत्त्व गुणी कहाहै ४

और जोमनुष्य शूरवीर और कलाके जाननेवाला और काव्योंके जानने वाला और स्त्रीमें सक्त चित्त वाला और यज्ञकरणेमें चतुर और बडे आडंबर वाला और हास्यमें रत और वार्त्ताकरणेमें प्रगल्भ और वेदार्थके जाननेवाला सो रजोगुणी कहाहै ॥ ५ ॥ जोमनुष्य मूर्ख और आलसी और दूसरेयोंके ठगने वाला और क्रोधी और माडे वर्णवाला और चुगल और क्षुधाकर्के पीडित और आचारसें रहित और अपवित्र और इंद्रियोंकोंनहि रोकणे वाला और लोभी और मदकर्के युक्त सो तमोगुणी हो,ताहै ॥ ६ ॥ और ग्रंथांतरमें कहाहै सूर्य बृहस्पति चंद्रमा जिसके जन्ममे बलीहोवें सो सत्वगुणी होताहै और शुक्र बुध बलीहोवें तब रजोगुणी होताहै और शनि मंगल बलीहोवें तब तमोगुणी होताहै और मिश्रग्रहोंकर्के गुणभी मिश्रितहोजातेहैं ६ ॥ और भारोभवतिनृपाणामिति अब राजाके देहका मान कहतेहैं दोहजारपल ॥ २००० ॥ की एक भारसंज्ञा कहिहै और जोपृथ्वीके भोगनेवाले राजा

शूरःकलाकाव्यनिविष्टबुद्धिःस्त्रीसक्तचित्तःक्रतुप्रवीणः ॥ आडंबरीहास्यरतिः प्रगल्भेवेदार्थविद्राजसिकःप्रदिष्टः ५ मूर्खोलसोवंचयतापरेषांक्रोधीविवर्णः पिशुनःक्षुधार्त्तः ॥ आचारहीनोनशुचिर्नदांतोलुब्धःप्रमादीतमसाभिभूतः ६ ग्रंथांतरे आदित्यामरमंत्रिशीतकिरणाःसत्वप्रधानाग्रहाःशुक्रज्ञौसरजोगुणौ शनिधरापुत्रौतमःस्थायिनाविति ॥ भारोभवतिनृपाणांभूम्यार्धभुजतांप्रसूताना म् ॥ येषांभारोप्यर्धःसकलमहीपालकास्तेस्युः ७ समाःस्वरैःसिंहमृगे द्रदंतिनांरथौघभेरीवृषतोयदालिनाम् ॥ समस्तभूमंडलरक्षणक्षमाभवंतिभूपा जितशत्रवोनराः ८ स्निग्धैर्भवंतिभूपाजिव्हात्वग्दंतनेत्रनखकेशैः ॥ रूक्षै रेतौनिस्वाःसारस्वतजातकेकथिताः ९

होतेहैं सो अर्धभार प्रमाणकर्के तुलामें होतेहैं अर्थात् जिनके देहका तोल भारार्ध एकहजारपल ॥ १००० ॥ प्रमाणकर्के होवे सो सारी पृथ्वीका राजकर्तेहैं और किसकालमें परीक्षाकरणी पचीश, वर्षमें पुरुषकी और वीसवर्षमें स्त्रीकी ७ और कहतेहैं जिनमनुष्योंकास्वरसिंहकीन्याई और हाथिकी न्याई और रथोंके समूहमें जोरवर तिसकीन्याई और बडेनगारेकी न्याई और बैलकीन्याई और बद लोंकीन्याई और भमरोंकी न्याई गंभीरहोवे सोमनुष्य संपूर्णपृथ्वीमंडलको रक्षाकरणेमें समर्थ होतेहैं और शत्रुयोंको जीतनेवाले होतेहैं ८ और कहतेहैं जिन्हों मनुष्योंके जिव्हा और त्वचा चमडा और दंत और नेत्र और नख और केश स्निग्ध होतेहैं सो मनुष्य राजा होतेहैं और जिनके इहे पूर्वोक्त जि,व्हासें लेकर्के रूक्ष कठोर होतेहैं सोमनुष्य निर्धन होतेहैं इहे सारस्वत जातकमे संपूर्णकहेहैं ॥ ९ ॥

और स्निग्ध और तेजकर्केयुक्त शुद्धवर्ण राजयोंके कहेहैं और क्लेशभोगनेवाल्योंके उल्टे वर्णहोतेहै और पुत्र और धन और सुखके भोगनेवाल्योंके मध्यम होतेहैं ॥ १० ॥ और कहतेहैं बृहस्पति और शुक्र और शनि और मंगल और बुध इनपाचग्रहोंकर्के क्रमसें आकाशतत्वसें लेकर्के तत्वोंके स्वभाव होतेहैं जैसें आकाशकास्वामी बृहस्पति और जलका स्वामी शुक्र और वायुकास्वामी शनि और अग्निकास्वामी मगल और पृथ्वीतत्वका स्वामी बुध कहाहै और वायु और पित्तकेवलसें श्रेष्ठरूपवाली छाया होतीहै और मिश्रग्रहबलीहोवें तब रूपकी छायावी मिश्रित होतीहै ॥ ११ ॥ और जिसकी आकाशकी प्रकृति होतीहै सो शब्दार्थके जानने वाला और नीतिमे चतुर और प्रगल्भ और विद्याकर्केयुक्त और विभागकर्के धनके भोगनेवाला और अगोंमे सधियोंमे छिद्रो वाला और कृश हाथपैरोंवाला होताहै और लंबे देहवाला होताहै ॥ १२ ॥

स्निग्धस्तेजोयुक्त.शुद्धोवर्ण·प्रकीर्त्तितोनृपतेः ॥ विपरीत·क्लेशभुजांसुतार्थसुखभोगिनांमध्यः ॥ १० ॥ व्योमांबुवाताग्निमहीस्वभावा·सुरासुरेज्यार्कि महीजसौम्यैः ॥ छायामरुत्पित्तबलात्सुरूपामिश्रैस्तुमिश्राबलिभिर्नरा स्युः ॥ ११ ॥ शब्दार्थविन्न्यायपटु प्रगल्भोविज्ञानयुक्तोविवृतार्थभोगः ॥ छिद्रांगसंधिःकृशपाणिपादोव्योमप्रकृत्यापुरुषोतिदीर्घः ॥ १२ ॥ जलस्वभावोबहुवारियायीप्रियाभिलाषीद्रवभोजनश्च चलस्वभावोबहुमित्रपक्षः क्षोणीपतिर्नातिचिरं प्रगल्भः ॥ १३ ॥ सत्वेनवायोः पुरुष कृशांग· क्षिप्रं प्रकोपस्यवशंप्रयाति कृतैकबुद्धिर्भ्रमणेरतश्चतदासितोभूपतिरप्रधृष्यः ॥ १४ ॥ शूरः क्षुधार्तश्चपलोतितीक्ष्णः प्राज्ञःकृशोबद्धतनुर्विरोधी विद्वांश्चमानीबहुभक्षणश्चवन्हिस्वभावःपुरुषोतिकायः १५ ॥

और जिसमनुष्यमें जलतत्वकी छाया होतीहै सो बहुतजलोंमे रहणेवाला और स्त्रीकी इच्छा वाला और द्रवणेवाले पदार्थ भोजनकरणेवाला और चंचलस्वभाववाला और बहुतमित्रोंवाला और बहुत काल पृथ्वी कास्वामी और प्रगल्भ होताहै १३ और जिस पुरुषमे वायुतत्वकी छाया होतीहै सो कृश अंगोंवाला और शीघ्र क्रोधके वश होने वाला और केवल भ्रमणेमे हिंइच्छा करणेवाला और कृष्णवर्णवाला और बडाकूर राजा होताहै १४ और जिसमें अग्नितत्वकी छाया होतीहै सो शूर वीर और क्षुधाकर्के पीडितहोनेवाला और बडा चंचल तीक्ष्ण होताहै और चतुर और कृश अंगोंवाला और बद्धवैरवाला और विद्यावान् और मानवाला और बहुतभोजनकरणेवाला और बडेदेहवाला होताहै ॥ १५ ॥

और जिसमनुष्यकों पृथ्वी तत्वकी छाया होतीहै सो कपूर और मालती कीन्याई और कमलोंकी न्याई श्रेष्टगंधिवाला और भोगोंकों भोगने वाला और स्थिर सुखकों प्राप्तहोने वाला और सिंहकीन्याई और वदलकीन्याई शब्दवाला और स्थिर चित्तवृत्तिवाला होताहै १६ और कहतेहैं आकाशतत्वकी छाया जिसमनुष्यकों होतीहै सोकयसीहै स्फटिकमणीकीन्याई और श्वेतकमलकी न्याई निर्मल और निधिकीन्याई पुरुषोंकों धर्मार्थकामके सिद्धकरणे वाली और श्रेष्ठभाग्योंके करणे वालीहोतीहै १७ और जलकी छाया कैसीहै स्निग्ध और शुक्लवर्णकी और हरित वर्णकी और स्त्री कीन्याई और माताकीन्याई संपूर्णसुखोंके करणे वाली और सौभाग्यऐश्वर्यके सुखकों करणेवाली होतीहै ॥ १८ ॥ और जिसके देहमें वायुकी छाया होतीहै सो कालेवर्णकी मलीनकांतिवाली और दुर्गंधिवाली और तिसछायाकर्केमनुष्यमूर्ख और मलीन कठोर वर्ण और शोकसंतापकर्के तप्त और वध और दैन्यरुचि वाला और व्याधि और अनर्थोंकों प्राप्तहोताहै १९ और जिसके देहमें अग्नित

कर्पूरजात्युत्पलपुष्पगंधोभुनक्तिभोगान्स्थिरलब्धसौख्यः सिंहाब्दघोषःस्थिर चित्तवृत्तिर्महीप्रभावोभवतिप्रजातः१६स्फटिकोत्पलसंकाशास्वच्छागगनोत्थि ताभवेच्छाया निधिरिहपुंसांधन्यात्रिवर्गफलसाधिनीसुभगा १७ स्निग्धा सिताच्छहरिताकांतामातेवसर्वसुखजननी सौभाग्याभ्युदयशुभान्करोतिजलसं भवाछाया १८ असितजलदकांतिःपापगंधोतिमूढोमलिनपरुषवर्णःशोकसंता पतप्तः सभवतिवधदैन्यव्याध्यनर्थार्थनाशान्वितरतिपवनोत्थायस्यकांतिःशरीरे १९ कमलदहनकांतिश्चंडदंडोतिधृष्टःप्रणतसकलशत्रुर्विक्रमाक्रांतभूमिः भज तिमणिसुवर्णसर्वकार्यार्थसिद्धिं प्रशमितगतकोपोवन्हिजायांप्रभायां ॥ २० आज्यांबुसिक्तवसुधाऽगुरुतुल्यगंधसुस्निग्धदंतनखरोमशरीरकोश्ः ॥ धर्मा र्थतुष्टिसुखभाग्जनसंप्रियश्चछायांयदाभजतिभूमिकृतांमनुष्यः२१शीतालुर्बहुभा पकोद्रुतगतिर्नौवास्थितःकुत्रचिच्चौरोमत्सरवान्प्रचाररुचिकःसौभाग्ययुक्तोनरः

त्वकी प्रभाहोतीहै सो लालकमलकीन्याई और अग्निकी न्याई शोभाकर्के युक्त और वडेप्रचंडदंडकर्के युक्त और ढीठ और संपूर्ण शत्रुयोंकर्के प्रणत और पराक्रमकर्के पृथ्वीके जीतनेवाला और मणियों कोंऔरसुवर्णकोंप्राप्तहोनेवालाऔरसपूर्णकार्यार्थोंकीसिद्धिवालाऔरनष्टहोयकर्केक्रोधसेंरहितहोताहै२०] और जिसमनुष्यमें पृथ्वीकी छायाहोतीहै सो घृत और जल कर्के सेचन करीयो पृथ्वी तिसकीगंध- की न्याई और अगुरुचदनकीन्याई सुगंधिवाला होताहै और सुंदर स्निग्धदंत और नख और रोम और देहवाला होताहै और धर्म अर्थ कर्के और प्रसन्नता कर्के युक्त और जनोंसें प्रीतिवाला होताहै ॥ २१ ॥ और अवदेहमें स्थित वायुपित्त श्लेष्म के लक्षण कहतेहैं जिसके देहमें वायु प्रधान होताहै सो शीतकर्के युक्त और वहुत वोलनेवाला और शीघ्रचलने वाला और किसीस्थानमें नौकामें स्थित होनेवाला और चोरीकरणे वाला और मात्सर्यवाला और प्रचारमें रुचिवाला और सौभाग्यकर्के युक्त

और शीघ्रताकर्के दानकरणेवाला और वडी मित्रभावमें बुद्धि वाला और गंधर्व विद्याके जाननेवाला और क्षमाके करणेवाला और मैत्रीकरणेमें वडाचतुर और स्वप्नमें आकाशकों जाने वाला होताहै ॥ २२ ॥ और धैर्यसें रहित और रूक्षवर्णकी दाढी और केशोंवाला और कृतघ्न और हाथ पैरोंसें स्फुटित और क्रोधी और कांतिकर्के रहित और विलापकरणेवाला और वंधन मेंनाहि आवनें वाला और धनकानाशकरणेवाला होताहै ॥ २३ ॥ अव पित्ताधिक पुरुषके लक्षण कहतेहैं जिसमनुष्यमें पित्त अधिकहोताहै सो दुर्गंधिवाला और शीघ्रक्रोधकरणेवाला और वडी बुद्धिवाला शीघ्रप्रसन्नहोने वाला और पुष्टदेहवाला और लालनख और नेत्र और हाथ और पैरों वाला और वृद्धकीन्याई आकारवाला और दाहकर्के युक्त होताहै और बुद्धिवाला और युद्धमें निर्भयरहणेवाला और शीतकी रुचिवाला और शत्रुयोंको ग्रहणकर्के वोलने वाला और किसींसें नहिं डरणेवाला और वहुतभोज,

दातास्यादचिरातिसौहृदमतिर्गन्धर्ववेत्ताक्षमीमित्राणांसमुपार्जनेतीनिपुणः स्वप्नेनभोगच्छति ॥ २२ ॥ अपगतधृतिरूक्षःश्मश्रुकेशःकृतघ्नःस्फुटितचरणहस्तःक्रोधनोनष्टकांतिः ॥ विलपतिननिवद्धोवित्तसंहारकारीभवतिपुरुषएवंमारुतीकप्रधानः २३ दुर्गंधोलघुकोपनोविपुलधीःक्षिप्रप्रसादःपुनःपीनोरक्तनखाक्षिपाणिचरणोवृद्धाकृतिर्दाहवान् ॥ मेधावीयुधिनिर्भयोहिमरुचिर्वृतेविगृह्यापरान्नोभीतःप्रणयंप्रयातिवहुभुकुर्यान्नतानांप्रियम् २४ स्वप्नेविपश्यति सुवर्णदिनेशदीपान्दावाग्निकिंशुकजपानिकरानुकारान् ॥ रक्ताव्जमंडरुधिरौघतडित्समूहान्पित्ताधिकोनिगदितःखलुलक्षणज्ञैः २५ श्रीमान्श्लिष्टांगसंधिर्धृतिवलसहितःस्निग्धकांतिसुदेहोग्राहीसत्त्वोपपन्नोहतमुरजघनघोषणःस्यात्सहिष्णुः ॥ गौरोरक्तांगनेत्रोमधुररसरुचिर्वद्धवैरःकृतज्ञःक्लेशेस्याद्दत्तचित्तःसकलजनहितःपूजकानांगुरूणाम् २६

न करणेवाला और नम्रजनोंकी प्रीतिकरणेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और स्वप्नमें सुवर्ण और सूर्य और दीपोंकोंऔर दावाग्नि और पलाश और गुलदुपहरकेपुष्पोंके समूहकों देखने वाला और लालकमल और पिछ और रुधिर और विजलीयोंके समूहकों देखताहै ॥ २५ ॥ अव श्लेष्माधिक पुरुषके लक्षण कहतेहैं जिसके देहमें श्लेष्म अधिकहोताहै सो शोभाकर्के युक्त और मिलीन अंग और संधियोंवाला और धैर्य और वलकर्केयुक्त और स्निग्धकांतिवाला और सुंदर देहवाला और ग्रहणकरणेवाला और पराक्रमकर्के युक्त और मृदंग और वदलकीन्याई शब्दवाला औरसहन शीलहोताहै और गौर वर्ण और लालनेत्रोंवाला और मीठेरसकीरुचिवाला और वैरकों नहित्यागकरणेवाला और कृतज्ञ और क्लेशमें चित्तदेनेवाला और संपूर्णजनोंका हितकरणेवाला और पूजकोंका और गुरोंका हितकरणेवाला होताहै ॥ २६ ॥

और श्लेष्मवालामनुष्यस्वप्नमेंसमुद्र और नदी और सरदेखताहै और मोती और हंस औरश्वेतकमल और शख और नक्षत्रमंडल और कुमदपुष्प और चंद्रमा और वर्फ पडती देखताहै इहेलक्षण श्रेष्ठ मुनियोंनेक्रमकर्के कहेहैं २७ और बलकर्के रहितजो चंद्रमा सूर्यहै तिनकर्के युक्तयो मंगल सें लेकर्के पांचग्रह होवें तब राजा नाहिं होतेहै तिनकी दशामें सुख और धन कर्के युक्तहोतेहै ॥ २८ ॥ अब मालव्यसंज्ञक राजाके लक्षण कहतेहैं मालव्य संज्ञक जो राजाहै सो मोटे ओठों वाला नहि होताहै और न्यूनाधिक देहवाला नाहिं होताहै और अति रिक्त अंग और संधियों वाला नाहिं होताहै और लकसें सूक्ष्म और चंद्रमाकीन्याई शोभावाला और लंबी नासिकावाला और सुंदर कपोलोंवाला और प्रकाशवालेनेत्रोंवाला और बराबरश्वेतदंतोंवाला और जानुपर्यंत भु

सुप्तस्तुपश्यतिसमुद्रनदीसरांसिमुक्ताफलप्रकरहंससिताब्जशंखम् नक्षत्रचक्रकुमुदेन्दुतुषारपातान् श्लेष्माधिकोमुनिवरैःकथितःक्रमेण २७ बलरहितेंदुरविभ्यांयुक्तैर्भौमादिभिर्ग्रहैर्मिश्राः नभवंतिभूमिपालादशासुतेषांसुखार्थयुताः २८ अथमालव्यः नस्थूलोष्ठोनाविषमवपुर्नातिरिक्तांगसंधिर्मध्येक्षामःशशधररुचिर्हस्तिनासःसुगंडः संदीप्ताक्षःसमसितरदोजानुदेशांतबाहुर्मालव्योयंविलसतिनृपःसप्ततिर्वत्सराणाम् २९ वक्त्रंत्रयोदशमितानितथांगुलानिदैर्घ्येणकर्णविवरादशविस्तरेण मालव्यसंज्ञमनुजःसभुनक्तिनूनंलाटान्समालवससिन्धुसपारियात्रान् ३० इतिमालव्यलक्षणं अथरुचिकलक्षणं ॥ दीर्घास्यःस्वच्छकांतिर्बहुरुधिरबलः साहसावाप्तकार्यश्चारुभ्रूर्नीलकेशःश्रमकरणरतोमंत्रविच्चोरनाथः

जोंवाला और सत्तर ॥ ७० ॥ वर्षपर्यंत राज्यकरणेवाला होताहै ॥ २९ ॥ और तेरां १३ अंगुली प्रमाणके मुखवाला और कर्णसें लेकर्के दशअंगुलीविस्तारकर्के मुखवाला सो मालव्य संज्ञक राजा निश्चय कर्के लाट देश और मालवदेश और सिंधु देश और पारि यात्र देशोंको भोगता है ३० इतिमालव्यलक्षणम् अब रुचिकके लक्षण कहतेहैं रुचिकसंज्ञकजोराजाहै सो लंबे मुखवाला और निर्मलकांति वाला और बहुत रुधिरकेबल वाला और उत्साह कर्के कार्य सिद्ध करणे वाला और सुंदरभ्रुवों वाला और नीलवर्णके केशों वाला और श्रमकरणे में रत और मंत्रके जानने वाला और चोरोंका स्वामी

और रक्तश्याम वर्ण वाला और वडाशूरवीर और शत्रुयोंका वल मथनेंवाला और शंखकीन्याई गल वाला और वडेपराक्रमवाला और क्रूरस्वभाववाला और देवताकाभक्त और ब्राह्मणोंमें और गुरोंमें रत और श्रेष्ठजानु और श्रेष्ठजंघावालाहोताहै ३१ औरखट्वांग और पाश और वृष और धनुष और वज्र और वीणा औरशक्ति इनों चिन्होंकर्के अंकित हाथपैर और अंगुलीया जिसकियां और मन्त्राभिचारमें चतुर और तुलाके मानकर्के हजार १००० पलतोलतिसका होताहै ३२ और विंध्याचल और सह्य पर्वतोंकाराजा और उज्जयनपुरीका राजाहोताहै और सत्तर ७० वर्ष राज्यकों कर्के शस्त्र और अग्निकर्के मृत्युकों प्राप्तहोकरस्वर्गकोंजाताहै इसप्रकारकारुचिकनामककैराजाहोताहै ३३ इतिरुचिकलक्षणानि अथ शशकराजाके लक्षण कहतेहैं शशकसंज्ञक जो राजाहै सो सूक्ष्मदंतोंवाला और शीघ्रगतिवा

रक्तश्यामोतिशूरोरिपुवलमथनोकंवुकंठोमहौजाः क्रूरोभक्तोमराणांद्विजगुरुनिरतःक्षामसज्जानुजंघः ॥ ३१ ॥ खट्वांगपाशवृषकार्मुकवज्रवीणाशक्त्यंकहस्तचरणश्चतथांगुलिश्च मंत्राभिचारकुशलस्तुलयासहस्रमानंचतस्यकथितंमुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ३२ ॥ विंध्याचलसह्यगिरीन्भुक्त्वावंतींचसप्ततिंशरदाम् शस्त्रानलकृतमृत्युंप्रयातिदेवालयंरुचकः ॥ ३३ ॥ इतिरुचकः ॥ अथ शशकलक्षणं ॥ तनुद्विजःशीघ्रगतिःशशोयशठोतिशूरोविजनप्रचारः वनाद्रिदुर्गेषुनदीषुसक्तःप्रियातिथिर्नातिलघुःप्रदिष्टः ॥ ३४ ॥ सेनानाथोवलनिधिरतोदंतुरश्चापिकिंचिद्धातोर्वादेभवतिनिरतश्चंचलःकोलनेत्रः स्त्रीसंयुक्तःपरधनहरोमातृभक्तःसुजंघोमध्येक्षामोवहुविधमतीरंध्रवेधीपरेषाम् ३५ पर्यंकशक्तिशरशस्त्रमृदंगमालावीणोपमायदिकरेचरणेचरेखा वर्षाणिसप्ततिमितानिकरोतिराज्यंप्रात्यंतिकःक्षितिपतिःकथितोमुनींद्रैः ३६ इतिशशः॥ अथहंसलक्षणम्

ला और शठ और वडाशूरवीर और विजनदेशमें रहनें वाला और वन पर्वत किले कोटोंमें रहने वाला और अभ्यागतका प्यारा और अत्यंतछोटा नहिंहोताहै ॥ ३४ ॥ और सेनाकास्वामी और वलके समुद्रमें रत और ऊंचेदंतों वाला और थोडाधातुवादमें रत और वडाचचल और सूरकी न्याई नेत्रोंवाला और स्त्रीकर्के युक्त और पराेधनकेहरणेवाला और माताकाभक्त और श्रेष्ठ जंघावाला और लकसूक्ष्म और वहुत प्रकारोंकी वुद्धिवाला और शत्रुयोंकेछिद्रवेधने वाला होताहै ॥ ३५ ॥ और फेर कैसाराजा होताहै पर्यंक और शक्ति और वाण और शस्त्र और मृदंग और माला और वीणा कीन्याई जिसके हाथ और पैरोंमें रेखा होतीहै और सत्तर ७० वर्षप्रमाणकर्के राज्यकरताहै और पश्चिमदेशमें राजा होताहै ऐसें मुनियोंनें कहाहै ३६ इतिशशकलक्षणानि ॥ अव हंससंज्ञक राजाके लक्षण कहतेहैं

हंससंज्ञावाला राजा लालमुख और उन्नत नासिका वाला और प्रसन्न इंद्रयवाला और गौर वर्ण और पुष्ट कपोलों वाला और लाल अंगुलीयों वाला और हंसकीन्याई शब्दवाला और श्लेष्म प्रकृति वाला और शंख और कमल और अंकुश और पाश और दोमत्स्य और खट्वांग और माला और कुंभ इन्हींचिन्हों कर्के अंकितहोतेहैं पाद और हाथ जिसके और मखीरकीन्यांई पिंगलवर्णके नेत्रोंवाला और गोल शिरवाला होताहै ॥ ३७ ॥ और जलस्थानमें प्रीतिकरणेवाला और अत्यंत कामी और निश्चयसें स्त्रीयोंकर्केतृप्तिकों नहि प्राप्तहोने वाला और छ्यासी ८६ अंगुली प्रमाण कर्के ऊंचा और छ्यानू ९६ वर्षकी आयुषावाला होताहै ॥ ३८ और शूरसेन और गांधार देशमें और

रक्तास्योन्नतनासिकःसुचरणोहंसःप्रसन्नेंद्रियो गौरःपीनकपोलरक्तकरजोहंसस्वनःश्लेष्मलः शंखाब्जांकुशपाशमत्स्ययुगलैःखट्वांगमालाघटैश्चिन्हैः पादकरांकितोमधुनिभेनेत्रेचवृत्तंशिरः ३७ जलाशयप्रीतिरतीवकामीनयाति तृप्तिंवनितासुनूनं उच्चोंगुलैर्वैषडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिसमानाम् ३८ पातीहदेशांश्चसशूरसेनान्गंधारगंगायमुनांतरालान्भुक्त्वावनांतेनिधनंप्रयाति हंसोयमुक्तोमुनिभिःपुराणैः ३९ इतिहंसः अथभद्रल णं शार्दूलप्रतिमाननोद्विपगतिःपीनोरुवक्षस्थलोलंबापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः कामीकोमलसूक्ष्मरोमनिकरैःसंरुद्धगंडोमहान् प्राज्ञःपंकजगर्भपाणिचरणःसत्वाधिकोयोगवित् ॥ ४० ॥

गंगायमुनाके मध्यमें राज्यकर्ताहै और वनके मध्यमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै इहे पुरातनमुनियोंने हंस के लक्षण कहेहैं ॥ ३९ ॥ इतिहंसलक्षणानि ॥ अब भद्रके लक्षण कहतेहे भद्रसंज्ञक जो राजा होताहै सो सिंहकीन्यांई मुखवाला और हाथिकीन्यांईगतिवाला और पुष्टपट्ट और छाती वाला और लंबे देहवाला और पुष्ट और गोल भुजों वालाऔर प्रमानकर्के सम और कामी और कोमल और सूक्ष्म रोमोंके समूहकर्के आछादित भये गंडस्थल जिसके और चतुर और कमलदलकीन्यांई हाथपैरोंवाला और वडेपराक्रमवाला और जोगसिद्धिकेजाननेवाला होताहै ४०

और शंख और खड्ग और हाथि और गदा और कमल और बाण और ध्वजा और चक्र और चंद्रमा और हल इन्होंचिन्हों करके चिन्हित होतेहैंहाथपैर जिसके और बडे मत्तयोहाथि तिनके मदकरके पृथ्वीकों सिंचनकरणेवाला और केसरकीन्याईं गंधिवाला और सुंदर शब्दवाला होताहै ४१ और शास्त्रार्थके जाननेवाला और धैर्यकरकेयुक्त और तुल्यसुंदर भ्रुवोंवाला, और हाथिकीन्याईंगुप्तगुह्यदेशवाला और श्रेष्ठकुक्षिवाला और धर्ममेंरत और सुंदरमस्तकवाला. और पंडित और स्थिरस्वभाववाला और काले कुंडलोंवाले केशोंवाला होताहै ४२ और भद्रराजा संपूर्णकर्मोंमें स्वतंत्रहोताहै और अपने जनोंपर क्षमानहिकर्त्ताहै और तिसके ऐश्वर्यकों नित्यं

शंखासिकुंजरगदाकुमुदेपुकेतुचक्राब्जलांगलविचिन्हितपाणिपादः मत्तागुरुद्विपमदप्रभवांबुसिक्तोभूःकुंकुमप्रतिमगंधतनुःसुघोषः ४१ शास्त्रार्थविद्धृतियुतः समसंगतभ्रूर्नागोपमोभवतिचापिनिगूढगुह्यः सत्कुक्षिधर्मनिरतःसुललाटपट्टोधीरःस्थिरस्त्वसितकुंचितकेशभारः ॥ ४२ ॥ स्वतंत्रःसर्वकार्येषुस्वजनंप्रतिनक्षमा भुज्यतेविभवश्चास्यनित्यंमंत्रिजनैःपरैः ४३ भारस्तुलायांतुलितोयदिस्याच्छ्रीकान्यकुब्जादिपतिस्तदासौ यस्त्र्यादिपुत्रैःसहितःसभद्रःसर्वत्रराजाशरदामशीति ४४ इतिभद्रः इतिपंचमहापुरुषलक्षणम् अथनृपानुचरलक्षणं वराहसहितायां तत्रादावेवतत्प्रविभागमाह पंचापरेवामनकोजघन्यः कुब्जोथवामंडलकोथसाचीपूर्वोक्तभूपानुचराभवंतिसंकीर्णसंज्ञाःशृणुलक्षणैस्तान्

प्रतिमंनिजन और अभ्यागत भोगतेहैं ४३ और तुलामानकरके भाराहोताहै और कान्यकुब्जादिकदेशोंका राजा होताहै और स्त्रीपुत्रादियोंकरकेयुक्तहोताहै और सो भद्रसंज्ञक राजा अशी ८० वर्षपर्यंत जीवताहै ४४ इतिभद्रलक्षणम् इतिपंचमहापुरुषलक्षणानि अबपंचमहापुरुषोंके अनुचरोंकेलक्षण वाराहीसहितामें कहतेहैं तिसमेंतिनोंकेप्रथम भिन्न भिन्न नाम कहतेहैं एक वामन नामकरके और जघन्य नामकरके दूसरा और कुब्जनामकरके तीसरा और मंडलकनामकरके चौथा और साचीनामकरकेपांचमा उहेपूर्वकहे जो पंचमहापुरुष तिनकोसेवाकरणेवाले अनुचर पांच तिनकेहोतेहैं और तिनकी संकीर्णसंज्ञा कहिहै औरभिन्न भिन्न लक्षणोंकरके तिनकोंश्रवणकरो

॥ प्रथम वामनके लक्षण कहतेहैं ॥ बुधग्रहके योगकर्के उत्पन्नभया जो भद्रसंज्ञकराजातिसकीसेवा करणेवाला वामननामकर्के अनुचरहोताहै सो वामन पूर्णअंगोंवाला और किंचित् भग्न पृष्ठ और पट्ट और कक्षांतरालमें किंचित् न्यून होताहै और पाचराजयोंके मध्यमें भद्रनामकर्केराजाका सेवक और यशकर्केप्रसिद्ध होताहै और दाता और विष्णुका भक्तहोताहै २ अवजघन्यकेलक्षणकहतेहैं शुक्रग्रहके योगकर्के मालव्यराजाहोताहै तिसकीसेवाकरणेवाला जघन्यनाम कर्के अनुचर होताहै तिसके अर्द्धचंद्रमाकीन्याई कर्ण होतेहैऔर अष्टगंधीवालाहोताहै और तिसमेंवीर्य अधिक होताहै और चुगल होताहै और कवि होताहै और रूक्षआभावाला होताहै और हाथकी अंगुलीयातिसकीया मोटिया होतीयाहैं ३ और क्रूरस्वभाववाला और धनवाला और मोटीबुद्धिवाला और प्रसिद्ध और लालवर्ण

॥ तत्रवामनलक्षणम् ॥ संपूर्णांगोवामनोभग्नपृष्ठः किंचिच्चोरुमध्यकक्षांतरेषु ख्यातोराज्ञोह्येपभद्रानुजीवीस्फीतोदातावासुदेवस्यभक्तः ॥ २ ॥ अथजघन्यलक्षणमाह श्लोकद्वयेन ॥ मालव्यसेवीतुजघन्यनामाखंडेंदुतुल्यश्रवणःसुगंधिः शुक्रेणसारःपिशुनःकविश्चरूक्षच्छविःस्थूलकरांगुलीकः ॥ ३ ॥ क्रूरोधनीस्थूलमतिःप्रतीतस्ताम्रच्छविःस्यात्परिहासशीलः नरांघ्रिहस्तेष्वसिशक्तिपाशपरश्वधांकःसजघन्यनामा ॥ ४ ॥ अथकुब्जलक्षणमाह ॥ श्लोकद्वयेन ॥ कुब्जोनाम्नायःसशुद्धोह्यधस्तात्क्षीणोकिंचित्पूर्वकायेनतश्च हंसासेवीनास्तिकोर्थैरुपेतोविद्वान्शूरःसूचकःस्यात्कृतज्ञः ५ ॥ कलास्वभिज्ञःकलहप्रियश्चप्रभूतभृत्यः प्रमदाजितश्च संपूज्यलोकंप्रजहात्यकस्मात्कुब्जोयमुक्तःसततोद्यतश्च ॥ ६ ॥

वाला और हास्यकरणेवाला और शक्ति और पास और परिघ ष्वाडेकीन्याई शस्त्र इनोंकर्के चिन्ह सहायपैरोंवाला सो जघन्यनामा होताहै ४ अथकुब्जकेलक्षणकहतेहैं कुब्जनामकर्के यो हंसराजाका सेवकसो शुद्धहोताहै और अधोभागमें किंचित् न्यूनहोताहै और देहके पूर्वभागमें किंचित् नीम्न होताहै और नास्तिक होताहै और धनोंकर्के युक्तहोताहै और विद्वान् और शूरवीर होताहै और चुगल होताहै और कृतज्ञ होताहै ५ और कलाकेजानणेवाला होताहै और कलहकाप्यारा होताहै और लोकोंको पूजकर्के अकस्मात् त्याग देताहै और बहुतचाकरोंवाला होताहै और स्त्रीजित होताहै और निरंतर उद्यम रहिताहै ६

अवमंडलककेलक्षणकहतेहै मंडलकनामकर्के योरुचकराजाका सेवकहै सो अभिचारके जाननेमें श्रेष्ट होताहै और वेतालादि यक्षभूतादि इत्यादियोंमें समर्थ होताहै ॥ ७ ॥ और वृद्धकीन्याईदेहवाला और कठिन और रूक्ष केशोंवाला और शत्रुयोंके हतकरणेमें समर्थ होताहै और ब्राह्मणोंमें और देवतामें और यज्ञोंमें और योगशास्त्रमें सांख्यशास्त्रमें प्रसक्त बुद्धिवाला और स्त्रीजित होताहै ८ अव साचीके लक्षण कहतेहै ॥ साची नामकर्के यो शशराजाका सेवकहै सो वडे विरूप देहवाला होताहै और दुर्भग होताहै और जनोंका प्यारा नाहीं होताहै और दाता दानकरणेमेंस्वभाववाला होताहै और वडेकार्योंको आरंभकर्के समाप्तकरणेवाला होताहै और पूर्वकहेजो शशसंज्ञक राजाके

॥ अथमंडलकलक्षणमाह श्लोकद्वयेन ॥ मंडलकनामधेयोरुचरानुचरोभिचारवित्कुशलः कृत्यावेतालादिषुकर्मसुविद्यासुचानुरतः ॥ ७ ॥ वृद्धाकारःखरपरुपमूर्धजःशत्रुनाशनेकुशलः द्विजदेवयज्ञयोगप्रसक्तधीःस्त्रीजितोमतिमान् ८ ॥ अथसाचीलक्षणमाह साचीतियःसोतिविरूपदेहःशशानुगामीखलुदुर्भगश्च दातामहारंभसमाप्तकार्योगुणैःशशस्यैवभवेत्समानः ९ अथपुरुषलक्षणज्ञानस्यप्रभावमाह पुरुषलक्षणमुक्तमिदंमयामुनिमतानिनिरीक्ष्यसमासतः इदमधीत्यनरोनृपसंमतोभवतिसर्वजनस्यचवल्लभः १० इतिपंचमहापुरुषानुचरलक्षणानि अथप्रसंगादन्यानपिराजोपयोगियोगानाह ॥ जातकपारिजाते ॥ अथचंद्राधियोगः सौम्यैःस्मरारिनिधनेष्वधियोगइन्दोस्तस्मिन्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म संपत्तिसौख्यविभवाहतशत्रवश्चदीर्घायुषोविगतरोगभयाश्चजाताः ॥ १ ॥ अथलग्नाधियोगः ॥

गुण तिनकेसमान तुल्य होताहै ॥ ९ ॥ अवपुरुषलक्षणजाननेकाप्रभावकहतेहै ॥ इहे यो मैने पुरुषोंके लक्षण कहेहैं मुनियोंके मतको देखकर्के इनको पढकर्के मनुष्य राजाका प्यारा होताहै और संपूर्णजनोंका प्यारा होताहै ॥ १० ॥ इतिपंचमहापुरुषानुचरलक्षणानि ॥ अव और भी यो राजाके उपयोगीहैं तिनके योग कहतेहैं जातकपारिजातमें अव चंद्राधियोग कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमासे सप्तम और षष्ट और अष्टम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थितहोवें तिसमें सेनापतिवा वा मंत्रीका वा राजाका जन्म होताहै और संपदा और सुख ऐश्वर्य और शत्रुयोंकानाश और वडी आयुषवाला और रोगसे और भयसे रहितहोताहै १ अव लग्नाधियोगकहतेहैं

और जिसकेजन्मसमयमें लग्नसेंछठेऔर सातमें औरआठमें स्थानोंमेंशुभग्रहस्थितहोवेंऔरपापीग्रहोंके योग और दृष्टिसेंरहितहोवें तब लग्नाधियोगहोताहै और चतुर्थस्थान पापग्रहोंकर्केरहित होवे २ और लग्नाधियोगमें जन्मताजोहै सो बहुतशास्त्रकेजाननेवाला और विद्यामेंचतुरऔर सेनाकामुख्यअधिकारी होताहै और निष्कपट होताहै और बडीमहिमावाला होताहै और लोकोंमें यशवाला और धन कर्के और गुणोंकर्के अधिक होताहैं ॥ ३ ॥ अब गज केसरी योगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा सें केंद्र १।४।७।१० स्थानोंमें बृहस्पति स्थितहोवे तब गजकेसरीयोग कहतेहैं और शुक्र और बृहस्पति और बुध कर्के चंद्रमा देख्या होवे और शुक्र बृहस्पति बुध नीच और अस्तनहिं होवें तब

लग्नादरिद्यूनगृहाष्टमस्थैःशुभैर्नपपाग्रहयोगदृष्टैः लग्नाधियोगोभवतिप्रसिद्धः पापैःसुखस्थानविवर्जितैश्च ॥ २ ॥ लग्नाधियोगेबहुशास्त्रकर्त्ताविद्याविनीतश्चबलाधिकारी मुख्यस्तुनिष्कापटिकोमहात्मालोकेयशोवित्तगुणाधिकः स्यात् ॥ ३ ॥ अथगजकेसरीयोगः केंद्रस्थितेदेवगुरौमृगांकाद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति दृष्टेसितार्येदुसुतैःशशांकेनीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ४ गजकेसरिसंजातस्तेजस्वीधनवान्भवेत् मेधावीगुणसंपन्नोराजप्रियकरोभवेत् ॥५ अथामलायोगः यस्यजन्मसमयेशशिलग्नात्सद्ग्रहोयदिचजन्मनिसंस्थः तस्यकीर्तिरमलाभुवितिष्ठेदायुपोंतमविनाशनसंपत् ॥ ६ ॥ लग्नाद्वाचंद्रलग्नाद्वादशमेशुभसंयुते योगोयममलानाम कीर्तिराचंद्रतारकी ॥ ७ ॥ राजपूज्योमहाभोगीदाताबंधुजनप्रियः परोपकारीगुणवान्अमलायोगसंभवः ८

वी गजकेसरी योग होताहै ॥ ४ ॥ और गजकेसरीयोगमें यो जन्मताहै सो तेजस्वी और धनवान् होताहै और बुद्धिवाला और गुणोंकर्के युक्त और राजाको प्रीतिकेकरणेवाला होताहै ॥ ५ ॥ अब अमला योग कहवेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाके साथ शुभग्रह स्थित होवे तिसका यश निर्मल और तिसकी संपदा आयुपापर्यंत स्थित रहिताहै ६ ॥ और लग्नसें अथवा चंद्रमाके लग्नसें बाहरमें स्थानमें शुभग्रह स्थितहोवे तब अमला नामकर्के योग होताहै तिसमें यो जन्मताहै तिनका यश चद्रमा और तारापर्यंत पृथ्वीमें स्थित रहिताहै ॥ ७ ॥ और अमलायोगमें यो जन्मताहै सो गजपूज्य और धनी बडेभोगनेवाला और दाता और बंधुजनोंका प्यारा और परोपकारी होताहै ॥ ८ ॥

अब शुभाऽशुभयोग कहतेहैं जिसका जन्मलग्न शुभाऽशुभ ग्रहोंकर्के युक्त होवे तब शुभाशुभ नाम कर्के योग होताहै और दूसरे और बारहमें स्थानमें लग्नसें शुभग्रह स्थितहोवें तब शुभकर्त्तरी और पापीग्रहस्थित होवें तब पापकर्त्तरी होताहै ॥ ९ ॥ और शुभयोगमें यो जन्मताहै सो वाग्मी वक्ता और रूपशील और गुणोंकर्के युक्त होताहै और पापयोगमें पापकर्मकरणेवाला और प्राये धनकों भोगने वाला होताहै ॥ १० ॥ और शुभकर्त्तरीमें तेज और धन और बलकर्के युक्त होताहै और पाप कर्त्तरीमें पापी और भिक्षामागनेवाला और मलीन होताहै ॥ ११ ॥ अब पर्वतयोग कहतेहैं जिस के जन्मसमयमें शुभग्रह केंद्र । १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानोंमें स्थित होवें और छठा और आठमा घर शुद्धहोवे ग्रहकर्के रहित होवे अथवा शुभग्रहकर्के युक्त होवे तब पर्वत योग होताहै और लग्न

अथशुभाऽशुभयोगादि शुभाशुभाढ्येयदिजन्मलग्नेशुभाशुभाख्यौभवतस्त दानीं व्ययस्वगैःपापशुभैर्विलग्नात्पापाख्यसौम्यग्रहकर्त्तरीच ॥ ९ ॥ शुभयो गभवोवाग्मीरूपशीलगुणान्वितः पापयोगोद्भवःकामीपापकर्मापरार्थभुक् ॥ १० ॥ शुभकर्त्तरिसंजातस्तेजोवित्तबलाधिकः पापकर्त्तरिकेपापीभिक्षा शीमलिनोभवेत् ॥ ११ ॥ अथपर्वतयोगः सौम्येषुकेंद्रगृहगेषुसपत्नरंध्रेशु द्धेथवाशुभयुतेयदिपर्वतःस्यात् लग्नांत्यपौयदिपरस्परकेंद्रयातौमित्रेक्षितौ भवतिपर्वतनामयोगः ॥ १२ ॥ भाग्यान्वित.पर्वतयोगजातोविद्याविनोदाभि रत प्रदाता कामीपरस्त्रीजनकेलिलोलस्तेजोयशस्वीपुरनायकःस्यात् ॥ १३ ॥ अथकाहलयोग. अन्योन्यकेंद्रगृहगौगुरुबंधुनाथौलग्नाधिपेबलयुतेयदिकाहलः स्यात् कर्मेश्वरेणसहितेतुविलोकितेवास्वोच्चेस्वकेसुखपतौयदिताहश स्यात् ॥ १४ ॥ ओजस्वीसाहसीमूर्खश्चतुरंगबलैर्युतः यत्किंचिद्ग्रामनाथस्तुजातः स्यात्काहलेनरः ॥ १५ ॥

और द्वादशके स्वामी आपसमें केंद्रस्थित होवें और मित्रग्रहोंकर्के देखे होवें तब पर्वत नामकर्के योग होताहै ॥ १२ ॥ और पर्वत योगमें जन्माहुआ भाग्योंकर्के युक्त होताहै और विद्याविलासमें रत और दाता और कामी और परस्त्रीमें चचल और तेजस्वी और यशस्वी और पुरका स्वामी हो ताहै ॥ १३ ॥ अब काहल योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवम और तीसरे घरके स्वामी आपसमें केंद्रस्थित होवें और लग्नकास्वामी बलवान् होवे तब काहल योगहोताहै और चतुर्थघरका स्वामीदशमेशकर्के युक्त वा देख्या होवे और चतुर्थघरका स्वामी अपने उच्चमें वा अपने राशिमें होवे तब भी काहल योग होताहै ॥ १४ ॥ और काहल योगमें यो जन्मताहै सो पराक्रमी और हठी और मूर्ख और चतुरंगिनीसेनाकर्के युक्त और थोडे ग्रामोंकास्वामी होताहै ॥ १५ ॥

अब मालिका योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्नादि स्थानोंसें लेकर्के सात घरोंमें साताहि ग्रह स्थित होंवें सो राजा अनेक हाथि घोडेयों का स्वामि होताहै और धनभावसेंलेकर्के सातघरोंमें संपूर्ण ग्रहस्थितहोंवें तवनिधिका स्वामी औरपितरोंका भक्त और पंडित और क्रूररूप चक्रवर्ती होताहै ॥ १६ ॥और तीसरेभावसें मालायोगहोवे तवशूरवीर राजा और धनी और रोगी होताहै और चतुर्थभावसें माला योग होवे तव बहुतदेशोंका स्वामी और भाग्योंवाला भोगी और महादान करणेवाला राजा होताहै ॥ १७ ॥ और पंचमभावसें मालायोग होवे तव राजा यज्ञकरणेवाला होताहै और षष्ठभावसें मालायोग होवे तव किसीक समयमें वनके सुखकों भोगने वाला और दरिद्री होताहै और सप्तमभावसें मालायोग होवे तव वहुत स्त्रीयोंका प्यारा और वडी आयुषा वाला राजा होताहै

अथमालिकायोगः लग्नादिसप्तग्रहगायदिसप्तखेटाजातोमहीपतिरनेकगजाश्वनाथः वित्तादिगानिधिपतिःपितृभक्तियुक्तोधीरोग्ररूपधनवान्नरचक्रवर्ती ॥ १६ ॥ जातोयदाविक्रममालिकायांभूपःसशूरोधनिकश्चरोगी ॥ सुखादिकाचेद्बहुदेशभाग्यभोगीमहादानपरोमहीपः १७ पुत्राद्यायदिमालिकानरपतिर्यज्वाथवाकीर्तिमान्जातःषष्ठग्रहात्क्वचित्वनसुखप्राप्तोदरिद्रोभवेत् ॥ कामादिग्रहमालिकायदिवहुस्त्रीवल्लभोभूपतिर्दीर्घायुर्धनवर्जितोनरवरःस्त्रीनिर्जितश्चाष्टमात् १८ धर्मादिग्रहमालिकागुणनिधिर्यज्वातपस्वीविभुः कर्माद्यायदिधर्मकर्मनिरतःसंपूजितःसज्जनैः लाभाद्राजवरांगनामणिपतिःसर्वक्रियादक्षकोजातोरिष्फग्रहात्वहुव्ययकरःसर्वत्रपूज्योभवेत् १९ अथचामरयोगः लग्नेश्वरेकेंद्रगतेस्वतुंगेजीवेक्षितेचामरनामयोगः सौम्यद्वयेलग्नगृहेकलत्रेनवास्पदेवायदिचामरःस्यात् २०

और अष्टमभावसें मालाहोवें तव धनरहित और स्त्रीजित होताहै ॥ १८ ॥ और नवमसें माला होवें तव गुणोंका समुद्र और यज्ञकरणेवाला तपस्वी और ऐश्वर्यवाला होताहै और दशमसेंलेकर मालाहोवे तव धर्मकर्ममेंरत और श्रेष्ठजनों कर्के पूजित होताहै और ग्यारहमेंस्थानसें माला होवे तव राजा और श्रेष्ठस्त्रि और मणियोंका स्वामी और संपूर्णक्रियामें चतुर होताहै और बाहरमेंस्थानसें माला योग होवे तव वडेखर्चवाला और सर्वत्र पूजा कोंप्राप्त होताहै ॥ १९ ॥ अवचामरयोग कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नकास्वामी केंद्रस्थानों १ । ४ । ७ । १० में उच्चराशिकाहोवे और बृहस्पतिकर्के देख्या होवे तव चामरनामकर्के योग होताहै और जिसके लग्नमें वा सप्तममें या नवम दशममें शुभग्रह दो स्थित होंवें तववी चामर योग होताहै २०

श्रौर चामरयोगमें योजन्मताहै सो राजपूज्य श्रौर विद्वान् श्रौर वक्ता श्रौर पण्डित वा राजा होताहै श्रौर सर्वज्ञ श्रौर वेदशास्त्रका अधिकारी श्रौर सत्तरवर्ष जीवनें वाला होताहै २१ अवशंखयोगकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें पंचमेश्रौरछेठ भावके स्वामी श्रापसमेंकेंद्रगतहोवेंश्रौरलग्नकास्वामी वली होवे तव शंखयोगहोताहे श्रौरलग्न श्रौर दशमका स्वामी चर १। ४। ७। १० राशियोंमें स्थित होवें श्रौर नवम भावकास्वामी वली होवे तव वी शंखयोग होताहे २२ शंखयोगमें यो जन्मताहै सो भोगी श्रौर दयावान्श्रौर स्त्री पुत्र धन धर्म वाला श्रौर शास्त्रके ज्ञानवाला श्रौर श्राचारवाला श्रौर साधु श्रौर क्रियावान् होताहै श्रौर अश्शी ८० वर्ष पर्यंत जीवताहै २३ श्रव भेरीयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दूसरे श्रौर लग्नमें श्रौर सातमें श्रौर वाहरमें स्थानमें ग्रह स्थित होवें श्रौर दशम भावका स्वामी वली होवे तव भेरीयोग होताहै श्रौर वृहस्पति श्रौर शुक्र

योगेजातश्चामरेराजपूज्योविद्वान्वाङ्मीपंडितोवामहीपः सर्वज्ञःस्याद्वेदशास्त्राधिकारीजीवेद्वर्षसप्ततिर्वत्सराणाम् २१ अथशंखयोगः ॥ अन्योन्यकेंद्रगृहगौसुतशत्रुनाथौलग्नाधिपेवलयुतेयदिशंखयोग.लग्नाधिपेचगगनाधिपतौचरस्थेभाग्याधिपेवलयुतेतुतथावदंति २२ शंखेजातोभोगशीलोदयालुःस्त्रीपुत्रार्थक्षेत्रवान्पुण्यकर्मा शास्त्रज्ञानाचारसाधुक्रियावान्जीवेद्वर्षत्सराणामशीतिम् २३ अथभेरीयोगः ॥ स्वांत्योदयास्तभवनेषुवियच्चरेषुकर्माधिपेवलायुतेयदिभेरियोगः ॥ केंद्रेगतेसुरगुरौसितलग्ननाथौभाग्येश्वरेवलयुतेतुतथैववाच्यम् २४ दीर्घायुषाविगतरोगभयानरेन्द्रावव्हार्थभूमिसुतदारयुताःप्रसिद्धाः ॥ आचारभूरिसुखशौर्य्यमहानुभावाभेरीप्रयातमनुजानिपुणाःकुलीनाः २५ अथमृदंगयोगः ॥ उच्चग्रहांशकपतौयदिकोणकेंद्रेतुंगस्वकीयभवनोपगतेवलाढ्ये ॥ लग्नाधिपेवलयुतेतुमृदंगयोगःकल्याणरूपनृपतुल्ययशप्रदःस्यात् ॥ २६ ॥

श्रौर लग्नकास्वामी केंद्र। १। ४। ७। १०। स्थानोंमें स्थित होवे श्रौर नवम भावका स्वामी वली होवे तव वी भेरी योग होताहे ॥ २४ ॥ श्रौर यो भेरीयोगमें जन्मताहै सो वडीश्रायुषावाला श्रौर रोग श्रौर भयसें रहित राजा होताहे श्रौर वहुत धन श्रौर पृथ्वी श्रौर पुत्र श्रौर स्त्रीयोंकर्के युक्त श्रौर प्रसिद्ध होताहे श्रौर वडे आचारवाला श्रौर सुख ऐश्वर्य्यवाला श्रौर वडे प्रतापवाला श्रौर चतुर श्रौर कुलीन होताहै ॥ २५ ॥ अव मृदंग योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें उच्चग्रहके नवांशका स्वामी कोण। ९। ५। में श्रौर केंद्र॥ १। ४॥ ७॥ १०॥ में उच्चमेंवा स्वक्षेत्रमें वली होवे श्रौर लग्नकास्वामी वलीहोवे तव मृदंगयोग होताहै सो कैसाहे जन्ममें कल्याण श्रौर सुंदररूप श्रौर राजाके तुल्य यशके देने वाला होताहै ॥ २६ ॥

अब श्रीनाथयोग कहतेहैं जिसकेजन्मसमयमेंसप्तमभागकास्वामी उच्चराशिमें दशम भावमेंस्थित होवे और दशमकास्वामी नवमभावके स्वामीकर्के युक्त होवे तव श्रीनाथ योग होताहै और श्रीनाथयोगमें यो जन्मताहै सो इन्द्रके तुल्य राजा होताहै ॥ २७ ॥ अब शारदायोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दशमभावका स्वामी पंचम भावमें स्थित होवे और बुध केंद्र ॥ १ ॥ ४।७।१० स्थानमें स्थित होवे और सूर्य सिंहराशिमें होवे और बली होवे तव शारदा योग होताहै और चन्द्रमासें कोण ॥ ९ ॥ ५ ॥ स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे और बुधसें त्रिकोण ९ ॥ ५ स्थानमें मगल स्थित होवे अथवा बुधसें ग्याहरमें स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे तबभी शारदा योग होताहै २८ और यो मनुष्य शारदायोगमें जन्मतेहे सो स्त्री और पुत्र

अथश्रीनाथयोगः ॥ कामेश्वरेकर्मगतेस्वतुंगेकर्माधिपेभाग्यपसंयुतेच ॥ श्रीनाथयोगःशुभदस्तदानींजातोनरःशक्रसमोनृपालः २७ अथशारदायोगः योगःशारदसंज्ञकःसुतगतेकर्माधिपेचंद्रजेकेंद्रस्थेदिननायकेनिजगृहप्राप्तेतिवीर्य्यान्विते ॥ चंद्रात्कोणगतेपुरंदरगुरौसौम्यत्रिकोणेकुजेलाभेवायदिदेवमंत्रिणिबुधात्तच्छारदासंज्ञकः २८ स्त्रीपुत्रबंधुसुखरूपगुणानुरक्ताभूपप्रियागुरुमहीसुरदेवभक्ताः ॥ विद्याविनोदरतिशीलतपोबलाढ्याजाताःस्वधर्मनिरताभुविशारदाख्ये ॥ २९ ॥ अथमत्स्ययोग ॥ लग्नधर्मगतेपापेपंचमेसदसद्युते चतुरस्रगतेपापेयोगोयंमत्स्यसंज्ञकः ३० कालज्ञःकरुणासिंधुर्गुणधीबलरूपवान् ॥ यशोविद्यातपस्वीचमत्स्ययोगेसमुद्भवः ३१

और भाई योंके सुखकर्के युक्त होतेहै और राजाके प्यारे और गुरु और ब्राह्मण और देवताके भक्तहोतेहैंऔरविनोदमेंप्रीतिवालेऔरश्रेष्ठस्वभाववालेऔरतपोवलकर्केयुक्तहोतेहैंऔरश्रेष्ठकर्मोंमेंरतहोवेहैं २९ अब मत्स्ययोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें लग्नमें और नवमस्थानमें पापीग्रह स्थितहोवें और पचमस्थानमें शुभाऽशुभग्रह दोनों स्थित होवें और चतुर्थ और अष्टमस्थानमें पापीग्रह होवें तव मत्स्ययोग होताहै ॥ ३० ॥ और यो मनुष्य मत्स्ययोगमें जन्मताहै सो कालके जानने वाला और दयाकासमुद्र और गुण और बुद्धि और वल और रूपकर्के युक्त होताहै और यशकर्के और विद्याकर्के और तपकर्के युक्त होताहै ॥ ३१ ॥

अव कूर्मयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सप्तम और पचम और षष्ठस्थानोंमें शुभग्रह स्थित होवें और अपने उच्च और मित्रके अशमें और राशिमें स्थितहोवें और तीसरे और जाहरमें स्थानमें पापीग्रह स्थित होवें और मित्रके घर और उच्चराशिमें स्थित होवें तव कूर्मयोग होताहै ॥ ३२ ॥ और यो मनुष्य कूर्मयोगमें जन्मताहै सो प्रसिद्धयशवाला और पृथ्वीमें राजके भोगनेवाला और वडे कर्मोंवाला और पराक्रम और गुणोंकर्के प्रधान और पंडित और सुखी और वाणोकर्के उपकारकरणेवाला और राजा होताहै । ३३ । अव खड्गयोगकहतेहै जिसके जन्मसमयमें नवमभावका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे और दूसरेस्थानका स्वामी नवमस्थानमें स्थित होवे और लग्नका स्वामी केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ वा कोण ९ ॥ ५ ॥ में स्थित होवे तव

अथकूर्मयोगः कलत्रपुत्रारिगृहेषुसौम्याःस्वतुंगमित्रांशकराशिधाताः ॥ तृतीयलाभोदयगास्त्वसौम्यामित्रोच्चसंस्थोयदिकूर्मयोगः ३२ विख्यातकीर्त्तिर्भुविराज्यभोगीधर्माधिकःसत्वगुणप्रधानः॥ धीरःसुखीवागुपकारकर्ताकूर्मोद्भवोमानवनायकोवा ३३ अथखड्गयोगः॥ भाग्येशेधनभावस्थेधनेशेभाग्यराशिगे लग्नेशेकेंद्रकोणस्थेखड्गयोगइतीरितः ३४ वेदार्थशास्त्रानिखिलागमतत्वयुक्तिवुद्धिप्रतापवलवीर्यसुखानुरक्ताः॥ निर्मत्सराश्चनिजवीर्यमहानुभावाःखड्गेभवंतिपुरुषाःकुशलाःकृतज्ञाः ३५ अथलक्ष्मीयोगः॥ केंद्रमूलत्रिणकोस्थेभाग्येशेपरमोच्चगे ॥ लग्नाधिपेवलाढ्येचलक्ष्मीयोगइतीरितः ३६ गुणाभिरामोवहुदेशनाथोविद्यामहाकीर्तिरनंगरूपः ॥ दिगंतविश्रांतनृपालवंद्योराजाधिराजोवहुदारपुत्रः ३७

खड्गयोग कहाहै ॥ ३४ ॥ और यो मनुष्य खड्गयोगमें जन्मताहै सोवेदार्थके जानने वाला और शास्त्र और सपूर्णवेद और तत्वयुक्तिके जानने वाला और प्रतापी वलवीर्य्यकर्के युक्त और सुखकर्के युक्त होताहे और मात्सर्यकर्केरहित और अपने पराक्रमकर्के वडेऐश्वर्यवाला और श्रेष्ठऔरकृतज्ञ होताहे ॥ ३५ ॥ अव लक्ष्मीयोग कहतेहे जिसके जन्मसमयमें नवमभावका स्वामी केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें अपणे मूल त्रिकोण राशियोंमें स्थित होवे औरपरम उच्चमें स्थित होवे और ॥ लग्नेश वली होवे तव लक्ष्मीयोग कहाहै ॥ ३६ ॥ और यो मनुष्य लक्ष्मीयोगमें जन्मताहै सो गुणोंकर्के युक्त और वहुत देशोंकास्वामी और विद्याकर्के वडेयशवाला और कामदेवकीन्याई रूपवाला और सपूर्णराजयों कर्के वंदित और वहुत सी पुत्रोंकर्के युक्त राजाधिराजहोताहै ॥ ३७ ॥

अब कुसुमयोग कहतेहै जिसके जन्मसमयमें स्थिरलग्नोंमें । २ । ५ । ८ । ११ । शुक्र केंद्रस्थानोंमें स्थित होवे और पूर्णचद्रमा त्रिकोण । ९ । ५ । में स्थित होवे और दशमस्थानमें पापीग्रह और शनि स्थित होवे तव कुसुमयोग होताहैं ॥ ३८ ॥ और यो कुसुमयोगमें जन्मताहै सो दाता और राजाकर्के वंदित और भोगी और बडे वशमे जन्माहुआ मुख्यराजा होताहै और लोकोंमें बडेयश कर्के युक्त और प्रतापी होताहै और मनुष्योंका स्वामी होताहै ॥ ३९ ॥ अब पारिजात योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें जिसराशिमें लग्नेश स्थितहोवे तिसराशिकास्वामी जिसराशिमें होवे तिसराशीका स्वामी जिसग्रहके नवांशमें होवे सो ग्रह केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । और त्रिकोण । ९ । ५ । में अपने उच्चमें स्थित होवे तव पारिजातयोग होताहैं ॥ ४० ॥ और यो मनुष्य पारिजात

अथकुसुमयोगः स्थिरलग्नेभृगौकेंद्रेत्रिकोणेंदौशुभेतरे मानस्थानगतेसौरे योगोयकुसुमोभवेत् ३८ दातामहीमंडलनाथवंद्योभोगीमहावंशजराजमुख्यः लोकेमहाकीर्तियुतःप्रतापीनाथोनराणांकुसमोद्भव स्यात् ३९ अथपारिजातयोगः विलग्ननाथस्थितराशिनाथस्थानेशराशीशतदंशनाथः केंद्रत्रिकोणोपगतोयदिस्यात्स्वतुंगगोवायदिपारिजातः ४० मध्यांतसौख्यःक्षितिपालवंद्योयुद्धप्रियोवारणवाजियुक्तः स्वकर्मधर्माभिरतोदयालुर्योगोन्नृपःस्याद्यदिपारिजातः ४१ अथकलानिधियोगः द्वितीयेपंचमेजीवेबुधशुक्रयुतेक्षितेक्षेत्रेतयोर्वासप्राप्तेयोगःस्यात्सकलानिधिः ॥ ४२ कामीकलानिधिभवःसुगुणाभिरामः संस्तूयमानचरणोनरपालमुख्यैः सेनातुरंगमदवारणशंखभेरीवाद्यान्वितोविगतरोगभयारिसंघः ४३ ॥

योगमें जन्मताहै सो मध्य और अत्यावस्थामें सुखी और राजाकर्के वदित और युद्धकाप्यारा और हाथिघोडेयों कर्के युक्त और अपने धर्मकर्ममें रत और दयावान राजा होताहैं ॥ ४१ ॥ अब कलानिधि योग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें दूसरे और पांचमें स्थानमें बृहस्पति बुधशुक्र कर्के युक्त वा दृष्ट होवे अथवा बुधशुक्रकी राशिमें स्थित होवे तब कलानिधि योग होताहै ॥ ४२ और कलानिधि योगमें यो जन्मताहै सो कामी और अपनेगुणोंकर्के युक्त और बडेराजयोंकर्के स्तुतिको प्राप्तहोतेहै चरण जिसके और सेना और घोडे और मत्तहाथि और शख और द्रगांसें लेकर बाजे तिनकर्केयुक्त होताहै और रोग भय और शत्रुयोंके समूहसें रहित होताहै ॥ ४३ ॥

अब अंशावतारयोग कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शुक्र और बृहस्पति केंद्र । १।४।७।१०। और त्रिकोण । ९ । ५ । स्थानोंमें स्थित होवें और तुलाराशिमें शनिकेंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित होवे और चरलग्नोंमें । १ । ४ । ७ । १० । जब जन्महोवे तब अवतार नामकर्के योग होताहै ॥ ४४ ॥ और यो मनुष्य अवतारयोगमें जन्मताहै सो पुण्यश्लोक युधिष्ठिर नलादि राजयोंकी न्याईं होताहै और तीर्थचारी और कलाके जानने वाला और कामी और कालविधान करणेवाला और आत्माकों जीतने वाला और वेदांतके जानने वाला और वेदशास्त्रका अधिकारी और राजलक्ष्मीके धारणे वाला होताहै ॥ ४५ ॥ अब हरिहरब्रह्मयोग कहतेहे जिसके जन्मसमयमें धनभावके स्वामीसें दूसरे और बाहरमें और आठमें स्थानमें

अथअंशावतारयोगः केंद्रगौसितदेवेड्यौस्वोच्चेकेंद्रगतेकेजे चरलग्नेयदा जन्मयोगोयमवतारजः ॥ ४४॥ पुण्यश्लोकस्तीर्थचारीकलाज्ञःकामासक्तः कालकर्त्ताजितात्मा वेदांतज्ञोवेदशास्त्राधिकारीजातोराजश्रीधरोंशावतारे ४५ अथहरिहरब्रह्मयोगाः वित्तेशाद्व्ययरिःफरंध्रभवनप्राप्ताश्चसौम्यग्रहाःकामेशात्सुखभाग्यरंध्रगृहगाजीवाब्जचंद्रात्मजाः देहेशाद्यादिवेधुमानभवगाःसूर्यास्फुजिद्भूमिजाःप्रोक्तास्तत्रपुरातनैर्हरिहरब्रह्माख्ययोगाइमे ४६ निखिलनिगमविद्यापारगःसत्यवादीसकलसुखसमेतश्चारुवाकामशीलः जितरिपुकुलसंघः सर्वजीवोपकारीहरिहरविधियोगेसंभवःपुण्यकर्मा ॥ ४७॥ अथपारिजातादि योगाः ॥

शुभग्रहस्थित होवें तबहरियोगहोताहै और सप्तमभावके स्वामीसें चतुर्थ और नवम और अष्टम स्थानमें बृहस्पति और चंद्रमा और बुध स्थित होवें तबहर योग होताहै और लग्नेशसें चतुर्थ और दशम और एकादशमें सूर्य और शुक्र और मंगल स्थित होवे तब पुरातनमुनियोंनें ब्रह्म नामकर्के योग कहाहै ४६ और यो तीन योगोंके मध्यमें एक जन्मताहै सोसंपूर्ण वेदविद्याके जानने वाला और सत्यवादी और संपूर्ण सुखकर्के युक्त और श्रेष्ट वाणी वाला और कामी और सुंदर स्वभाववाला और शत्रुयोंके समूहोंकों जीतने वाला और संपूर्ण जीवोंमें उपकारकरणे वाला और पुण्यकर्म करणे वाला होताहै ४७ अब पारिजातादि योग कहतेहैं

जिसके जन्ममें पारिजातां शोंमें संपूर्णग्रहस्थितहोवें तब सुखहोताहै और उत्तमांशोंमें स्थित होवेंतब आरोग्यता होतीहैऔर गोपुरांशमें स्थित होवेंतव गोधनवहुतहोताहै औरसिंहासनांशमें स्थितहोवें तब ऐश्वर्यहोतीहै ४८ और पारावतांशमें स्थित होवें तब विद्यायश लक्ष्मी वहुतहोतीहै और देवलोकांश मेंग्रह स्थितहोवें तब बहुत वाहन और सेना होतीहै और ऐरावतांशोंमें स्थित होवें तब राजा होताहै ४८ इतिराजानुजीविनांयोगप्रकरणम् ॥ अवराजयोगका भंग कहतेहैं इसग्रंथमें विस्तार करके विचित्र राज योग कहेहै तिनकाभी भंग जैसें होताहै १ जिसके जन्मलग्नमें नीचराशिगत मंगल और बृहस्पति और शनि इनमें दो ग्रह वा एक ग्रह स्थित होवे और चंद्रमावृश्चिकराशिमें स्थित होवे तब राजयोग नष्ट होताहै २ और जिसके जन्मसमयमें लग्न और अष्टम और षष्ठ द्वादश १।८।६।१२। स्थानमों क्षीण चंद्रमा स्थित होवे और एक ग्रह करके वी नहिं देख्याहोवे तब राज योगका भंग होताहै ३ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण क्रूर ग्रह केंद्रस्थानमें।१।४।७।१०। स्थित होवें और नीच और शत्रुकीराशिमें स्थित होवें और शुभग्रहकरके युक्त और दृष्ट नहिं होवें तवराजयोगकाभंग होताहै और शुभग्रह छठे और आठमें स्थानमें स्थित होवें तब वी राज योगकाभंग होताहै ४ और कहतेहैं जिसका जन्म लग्न वर्गोत्तमसें रहित होवे और ग्रहों करके देख्या नहिं होवे तब राज योग का भंगहोताहै और तिसलग्नमें जन्माहुया दरिद्री होताहै ५ और कहतेहैं जिसका कुंभलग्नमें जन्म होवे और तीन ग्रह कुंडलीमें नीचराशिगत होवें और बृहस्पति अस्त वानीचराशिमें स्थित होवे और कुंडलीमें एक ग्रह वी उच्चराशिमें स्थित नहिं होवे और पापीग्रह दशमस्थानमें होवे तब सैंकडेहि राजयोग नाशकों प्राप्त होवेंहैं ६

सपारिजातद्युचरःसुखानिनीरोगतामुत्तमवर्गयातः सगोपुरांशेयदिगोधनानिसिंहासनस्थःकुरुतेविभूतिं ॥ ४८ ॥ करोतिपारावतभागयुक्तोविद्यायशःश्रीविपुलंनराणां सदेवलोकेवहुयानसेनामैरावतस्थोयदिभूपतित्वम् ४९ इतिनृपानुचरयोगप्रकरणम् अथराजयोगभंगः विस्तरतोनिर्दिष्टाःक्षितिपतियोगाविचित्रसंस्थानाः भंगश्चभवतितेषांयथातथासंप्रवक्ष्यामि १ कुजार्कजीवार्किभिरत्रनीचैर्द्वाभ्यांत्रिभिश्चैकतमेविलग्ने निशाकरेवृश्चिकराशिसंस्थविशीर्यतेराजकरोहियोगः २ मूर्त्यष्टमादिभागेचराश्यादिपुशशीयदाक्षीणः ॥ एकेनापिनदृष्टोग्रहेणभंगस्तदानृपतेः ३ सर्वेक्रूराःकेंद्रेनीचारिगतानसौम्ययुतदृष्टाः शुभदाव्ययरिपुरंध्रेतदापिभंगोभवेन्नृपतेः ४ लग्नंगणोत्तमोनंनखेचरैर्दृश्यतेतदाभंगः भवतिचनृपयोगानांदारिद्र्यायप्रजातस्य ॥ ५ ॥घटोदयेनीचगतैस्त्रिभिर्ग्रहैर्बृहस्पतौसूर्यगतेत्रनीचगे ॥ एकोपिनोच्चेप्यशुभेपिखेगतेप्रयातिनाशंशतशोनृपोद्भवाः ६ ॥

श्रौर जिसके जन्मसमयमें केंद्र १ । ४ । ७ । १० । स्थान ग्रहों कर्के रहितहोवें श्रौर शुभग्रह श्रस्तंगत श्रौर नीचराशिगत होवें श्रौर चन्द्रमा बृहस्पति श्रस्तंगत वा नीचराशिगत होवें तब राज योगका भंग होताहै ॥ ७ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें सूर्य श्रपने नवांशमें स्थित होवे श्रौर चंद्रमा नष्ट होवे श्रौर पापग्रहोंकर्के देख्याहोवे श्रौर शुभग्रहोंकीदृष्टि सें रहित होवे सो मनुष्य प्रथमराज्य कर्त्ताहै श्रौर पीछेसें दुःखकोंप्राप्त होताहै श्रौर तिसकी श्राशानष्ट होतीहै ८ श्रौर जिसके जन्मसमयमें चंद्रमाका शत्रुग्रह लग्नमें स्थित श्रौर चंद्रमा कर्के देख्याहोवे श्रौर सूर्य मंगल शनि क्रमकर्के तीसरे छठे आहरमें स्थानमें स्थित होवें श्रौर केंद्र स्थानशुभग्रहोंकर्के रहितहोवें श्रौर शुभग्रह श्रस्तकोंप्राप्तहोवें तब क्षणकर्केराजयोग भ्रष्टहोताहै ९ श्रौर जिसके जन्मसमयमें पाच ग्रह श्रस्त होवें श्रथवा शत्रुकी राशिमेंस्थित होवें तब योराजयोग कहेहै सो

केंद्रेषुशून्येषुशुभैर्नचेंदौ अस्तंगतैर्नीचमथप्रयातैः बृहस्पतौसूर्यगतेपिनीचे प्रणश्यतेक्ष्माधिपतेस्तुयोगः ७ स्वांशेरवौशीतकरेप्रनष्टे पापैश्चदृष्टेशुभदृष्टिहीने कृत्वापिराज्यंप्रथमंमनुष्यःपश्चात्सदुःखंलभतेहताशः ८ शिशिरकिरणशत्रुर्लग्नगश्चेंद्रदृष्टः सहजरिपुभवस्थाभानुभूपुत्रमंदाः शुभविरहितकेंद्रैरस्तगैर्वापिसौम्यैर्नृपतिजननयोगोयातिनाशंक्षणेन ९ पंचाभिः शत्रुगैः खेटैरस्तंयातैरथापिवा प्रयांतिविलयंयोगाभूभुजांयेप्रकीर्त्तिताः १० उल्कायाः पतनेचैव निर्घातव्यतिपातयोः केतोःप्रदर्शनेचैवयांतिनाशंनृपोद्भवाः ११ अन्यैःक्रूरोत्पातैस्त्रिशंकुतारायदोदयंयाति सर्वेप्रयांतिविलयंनृपयोगाभानुजोयदिविलग्ने १२ कर्त्तारोनृपतीनांगगनसदोयुद्धकांक्षिणोमलिनाः रूक्षाजर्जरदेहाविघ्नंजनयंतियोगस्य १३ परंनीचगतेचंद्रेक्षीणेयोगोमहीपतेः नाशमायातिराजेवदैवज्ञप्रतिलोमगः १४ तुलायांपद्मिनीबंधुस्त्रिशांशेदशमेस्थितः हंतिराज्यंयथालोभः समस्तगुणसंचयम् १५ जूकस्यदशमेभागेस्थितः कमलबोधनः सहस्रंराजयोगानांमंदमेवकरोत्यसौ १६

नाशकोंप्राप्तहोतेहै १० श्रौर जिसकाजन्म उल्कापातकेसमयमें होवे श्रौर निर्घातके समयमें होवे श्रौर महापात व्यतीपातमेंहोवें श्रौर धूम्रकेतुके उदयमें जन्महोवे तब राजयोग नष्ट होतेहै ११ श्रौर जिसके जन्मसमयमें दिव्य भौम श्रंतरिक्षके उत्पातहोवें श्रौर तीनशिखावाला तारा उदयहोवे श्रौर शनि जन्मलग्नमें स्थित होवे तब संपूर्ण राजयोग नष्ट होतेहैं ॥ १२ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमें राजयोगकेकरणेवाले ग्रहयुद्धमें मलीन होजावें रूक्ष श्रौर तेजकर्के हीनहोवे तब राजयोगमें विघ्नउत्पन्न कर्तेहैं १३ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें चंद्रमा परमनीचमें स्थित होवे क्षीण होवे तब राजयोगकों नष्ट कर्त्ताहै जैसें ज्योतिर्षासें विरोधकरणेवाला राजा नष्ट होताहै १४ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तुलाराशिमें सूर्य स्थित होवे श्रौर दशमभावके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब राजयोगकोंहतकर्त्ताहै जैसें संपूर्णगुणकेसमूहकोंलोभ नष्ट कर्त्ताहै १५ श्रौर जिसके जन्मसमयमें तुलाके दशमें श्रंशमें सूर्य स्थित होवे सो हजारों राजयोगोंकों नष्ट कर्त्ताहै १६

और जिन्होंके जन्मसमयमें कईक ग्रह अपने मूलत्रिकोणमें और उच्चमें और स्वक्षेत्रमें स्थितहों वें और एक सूर्य परम नीचमें स्थित होवे तिनकों राजयोगका संभवनहीं होताहै ॥ १७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें मकर राशिका बृहस्पतिलग्नमें स्थित होवे और चंद्रमाकर्क राशिमें स्थितन हिहोवे तब तिसकों भलीप्रकारकर्के तपावताहै जैसें धनरहित कामातुर पुरुषकों वेश्या तपाव तीहै ॥ १८ ॥ और जिसके जन्मसमयमें एक चंद्रमा केमद्रुमयोगकों प्राप्त होवे और शुभग्र हों कर्के नहिं देख्या होवे तब राजयोगमें विघ्न कर्ताहै और मलीन आचारवाला होताहै ॥ १९ और जिसके जन्मसमयमें तीन चार पांच ग्रह नीचराशिमें स्थित होवें सो मनुष्य भिक्षाकों मां गताहै और बडा दुःखी और मलीन होताहै और संपूर्ण राजयोंकेपुत्रोंकर्के तिरस्कारकों प्राप्तहोताहै और धनहीनहोताहै २० और जिसकेजन्मसमयमें पंचसें लेकरके ग्रह अधिशत्रुकी राशिमें स्थितहो वें और अस्तंगत होवें और जब सूर्यचंद्रमा अपने उच्चमें नहिं होवें तब राज योगकों प्राप्तहो

स्वत्रिकोणगृहंकेचित्स्वोच्चंयाताःस्वमंदिरं अतिनीचेरविश्चैकोनतेषांफलसंभवः ॥ १७ गुरुर्मृगेविलग्नस्थोदुःखैःसंतापयेन्नरम् कामार्तमधनंवेश्यायद्वदिंदुर्नचे त्स्वभे १८ एकोवापिशशांकोग्रहेणकेमद्रुमोयदिनदृष्टः विघ्नयतिराजयोगंमलि नाचारःप्रसूतःस्यात् १९ भिक्षामटतिव्यायैर्नीचर्क्षगतैःसुदुःखितोमलिनः स कलमहीभुक्पुत्रैःपरिभूतोजायतेनिःस्वः २० अध्यरिभवनंप्राप्तैःपंचादिभिर स्तगतैश्चगगनचरैः ध्वंसंप्रयातिराजायदिरविचंद्रौनतुंगस्थौ २१ सचिवोदानवे ज्यस्यनीचेचेत्समुपस्थितः संप्राप्तमतुलंराज्यंनरंच्यावयतेध्रुवम् २२ राजयो गाःसमाख्यातास्तेषांभंगाश्चदारुणाः परीक्ष्ययत्नतःप्राज्ञःफलंब्रूयाच्छुभाशुभम् २३ कमलगहनबंधुःकन्यकालिंगितांगस्तुलिनिकुजसुरेज्यौचंद्रमामेषसंस्थः नचयदिपरिशेषैर्दृश्यतेस्यात्सभूपः प्रचलितगजमेघाच्छादिताशाननोघः २४

यकर्के नाशकों प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्र नीचराशिमें स्थितहोवे सो बडे राज्यकों प्राप्तहुया जोमनुष्य तिसकों निश्चयकर्के गिराय देताहै ॥ २२ ॥ और कहते हैं इससमयमें अनेकभेदों कर्के युक्त राजयोगकहेहैं और राजयोगोंके भंग करणे वाले बडे क्रूर योग भी कहेहैं तिनकीपरीक्षा बुद्धिवान् यत्न कर्के फलकोंकहे ॥ २३ ॥ और कहतेहैं जि सके जन्मसमयमें सूर्य कन्याराशिमें स्थित होवे और तुलाराशिमें मंगल और बृहस्पति स्थित हो वें और मेषराशिमें चंद्रमा स्थित होवे और यव शेषग्रहयोंहैं तिनकर्के नहिं देखे होवें सो राजा कैसा होताहै तिसकी सेनाके जो हाथिहैं बदलोंकीन्याई चारदिशोंकों आछादन करतेहैं अर्थात् बहुत हाथियों वाला राजा होताहै ॥ २४ ॥

इतिश्रीजातकखंडमेहशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेभाषाटीकायांराजयोगाद्ध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

अबराजयोगोंके प्रसंगसें सामुद्रिकाध्याय कहतेहे जिसमनुष्यको जन्मकालमें प्रबल राजयोग होवें तिसके हाथ और पैरोंमे निर्मल राज चिन्ह होतेहे सो चिन्ह इसग्रंथमें विस्तारकर्के कहतेहे १ अनामिका अंगुलीके मूल सें प्राप्त जो रेखा पुण्यविधाना नाम कर्के कहिहे और मध्यमा अंगुलीसेंले कर्के जो रेखा मणिबंध हाथके मूलपर्यंत प्राप्त होवे सो रेखा निश्चयकर्के राज्यप्राप्तिके वास्ते ऊर्ध्वरेखा नामकर्के कहिहे २ और जिसमनुष्यके अंगूठे यों के मध्यमें यवों काचिन्ह होवे सो यशवाला और अपने वंशमे भूषण और विशेष भूषणों कर्के युक्त और नम्र होताहै ३ और जिसके

इतिराजयोगभंग इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेराजयोगादिनिरूपणनामत्रयोदशोध्यायः १३

अथराजयोगसंगतिकसामुद्रिकाध्यायः प्रसूतिकालेप्रबलायदिस्युर्नृपालयोगा पुरुषस्ययस्य सद्राजचिन्हानिपदेतदीयेभवंतिवापाणितलेऽमलानि १ अनामिकामूलगताप्रशस्तासाकीर्तितापुण्यविधानरेखा मध्यांगुलेर्यामणिबंधमासाराज्यासयेसाचकिलोर्ध्वरेखा २ विराजमानंयवलांछनंचेदंगुष्ठमध्येपुरुषस्ययस्य भवेद्यशस्वीनिजवंशभूषाभूषादिशेषैः सहितोविनीतः ३ चेद्वारणोवातपवारणंवासारंग(कुंभ)रिणीस्त्रिशूली चीणाच्चपाणौचरणेनराणांतेस्युर्नराणामधिपावरेण्याः ४ आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्चतत्पाणितलेमिलंति स्यान्मंडलीकोऽवनिपालकोवाकुलेतृपालं कुलताग्रतस्यात् ५ चेद्यस्यपाणौचरणेचचक्रंधनुर्धराब्जध्वजनासनानि रथाश्वदोलाकमलाविलासात्तस्यालयेस्युर्गजवाजिशाला ६

हाथ पैरोंमे हाथी की न्याई वा छत्रकीन्याई अथवा मछकी न्याई बातलाई की न्याई वा कुंभकी न्याई रेखा होवे सो श्रेष्ठ राजा होताहै ४ और जिसके हाथ पैरोंमे सीसेकी न्याई और माला कीन्याई और कमंडलूकीन्याई और पर्वत कीन्याई और हलकीन्याई रेखाहोवें मंडली का राजा अपने कुलके अनुसार होताहे ५ और सो जिसमनुष्यके हाथपैरोंमें चक्र और धनुष और कमल और पद्म और ध्वजका चिन्ह होवे और तिसके घरमें रथ और घोडे और हाथी घोडेयोंकियां शाला लक्ष्मीकी दपा(?)मे होतीहै ६

और जिसमनुष्यके हाथ पैरोंमें स्तंभकीन्याई और वृक्षकीन्याई और दोटेकीन्याई और गदाकी न्याई और मृदंगकी न्याई अथवा दंडकी न्याई रेखा होवें सो मनुष्य अखंड राज्य लक्ष्मीको भोगताहै अथवा पंडितों में शिरोमणी होताहै ७ और जो मनुष्य गोल शिरवाला और बडे मस्तक वाला और कर्ण पर्यंत नीलकमल कीन्याई नेत्रोंवाला और जानु पर्यंत लंबी भुजों वाला तिनकों श्रेष्ठ मुनि आजानुबाहुपृथ्वी मंडलका राजाकहतेहे ८ और जिसमनुष्यकी सूधी नासिका होवे और छातीशिला तलकी न्याई बराबर होवे और गंभीर होवे और बडे कोमल लालवर्णके पग होवें सो राजा होताहै ९ और जो मनुष्य प्रसन्न मूर्त्ति होताहै और बडे उदारचित्त वाला और श्रे

स्तंभस्तुकुंभस्तुतरुस्तुरगोगदामृदंगोंऽघ्रिकरप्रदेशे दंडोथवाऽखंडितराज्यलक्ष्म्यास्यान्मंडितःपंडितशौंडिकोवा ॥ ७ ॥ सुवृत्तमौलिस्तुविशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः आजानुबाहुपुरुषतमाहुर्भूमंडलाखंडलमार्यवर्याः ८ नरस्यनासासरलाचयस्यवक्षस्थलंचापिशिलातलाभं नाभिर्गंभीरातिमृदूभवेतामारक्तवर्णोचरणौसभूपः ९ प्रसन्नमूर्तिं समुदारचेतावंशाभिमानीशुभवाग्विलासः अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीलभतेमनुष्यः १०

करतलेयदियस्यतिलोभवेदविरलोकिलतन्दधनागमः ॥ पदतलेचातिलेनसमन्वितेनृपतिवाहनचिन्हसमन्वितः ११ एतत्फलंराजकुलोद्भवानांस्यान्मानवानांमुनयोवदंति अकल्पयेदन्यकुलोद्भवानांनूनंतदूनस्वकुलानुमानात् १२

श्रवंशमें जन्मताहै और श्रेष्ठ वाणी वाला और अन्यायसे डरने वाला और गुरु और साधुयोंमें नम्र होवाहै सो श्रेष्ठ राज्यलक्ष्मीको प्राप्त होताहै १० और जिसकी हाथकी तलीमें तिलहोवे तिसको बहुतधन प्राप्त होताहै और जिसकी पैरकी तलीमें तिलहोवे और वाहनका चिन्हहोवे तब सो राजा होताहै ॥ ११ ॥ यह संपूर्णचिन्ह जो मनुष्य राजाके कुलमें जन्मते हैं तिनका विशेषकरके मुनियोंने कहेहैं और अन्यकुलमें जन्मे तो न्यायसे चिन्हभाव तब तिनके अनुमानसे न्यूनाधिकफल कल्पना करके कहे ॥ १२ ॥

और जो इह चिन्ह कहेहैं सो प्रकटहोवें तव संपूर्णफलकर्त्तेहैं और पुरुषोंकों दक्षिण हाथपैरोंमें और स्त्रीयोंकोंवामेहाथपैरोंमें शुभहोतेहैं १३ अव और बिशेष कहतेहैं जिसमनुष्यकेदेहमें पांचअंग लंवे होवें और चार अंग छोटे होवें और पांच सूक्ष्म होवें और छै अंग ऊचे होवें और सातलाल वर्णके होवें और तीनअंगगंभीर डूंगे होवें और तीन अंग विस्तारवाले होवें सो श्रेष्ठ होताहै १४ और कहतेहैं जिसके हनुःगंडस्थल और नेत्र और वाहु भुजा और नासिका और स्तनोंका मध्य भाग इहे पांच लंवे विना राज्योंके नाहिं होताहै १५ और नाभिः और स्वरशव्द और सत्वपराक्रम इहे तीनों गंभीर होवें तव मनुष्योंकों श्रेष्ट कहेहैं और छाती और माथा और मुख इहे ती

चिन्हानियानिप्रतिपादितानिव्यक्तानिसंपूर्णफलप्रदानि वामेतरेप्रोचकरेनराणांधन्यानिवामेखलुकामिनीनाम् १३ अथान्यद्विशेषमाह पंचदीर्घचतुर्ह्रस्वंपंचसूक्ष्मंषडुन्नतम् सप्तरक्तंत्रिगंभीरंत्रिविस्तीर्णप्रशस्यते १४ हनुलोचनवाहुनासिकास्तनयोरंतरमत्रपंचकम् इतिदीर्घमिदंतुपंचकंनभवत्येवनृणामभूभृताम् १५ नाभिःस्वरःसत्वमितिप्रशस्यंगंभीरमेतत्त्रितयंनराणाम् ॥ उरोललाटोवदनंनराणांविस्तीर्णमेतत्त्रितयंप्रशस्तम् १६ वक्षोथकुक्षिद्वयनासिकास्यंकृकाटिकाचेतिषडुन्नतानि ॥ ह्रस्वानिचत्वार्य्यथलिंगपृष्ठंग्रीवाचजंघेचहितप्रदानि १७ नेत्रांतपादकरताल्वधरोष्टजिव्हारक्तानखाश्चखलुसप्तसुखावहानि सूक्ष्माणिपंचदशनांगुलिपर्वकेशाःसाकंत्वचाकररुहाश्चनदुःखितानाम् ॥ १८ यवैरंगुष्ठोदरेयस्ययशस्वीचनरोभवेत् अनामिकामूलजास्याद्रेखायस्यसपुण्यवान् ॥ १९ ॥

नों विस्तारवाले श्रेष्ट होतेहैं १६ और छाती और दोनोंकुक्षी और नासिका और मुख और कृकाटी इहे छै अंग ऊचे शुभ होतेहैं और लिंग और पृष्ट और ग्रीवा गर्दन और जंघा इहे चार छोटे शुभ होतेहैं ॥ १७ ॥ और नेत्रोंकेकोये और पैर और हाथ और तालु और ओठ और जिव्हा इहे सात लाल वर्ण के होवें तवशुभहोतेहैं और दांत और अंगुलीयोंकीग्रंथी और शिरकेवाल और त्वचाचमडा और हाथोंकी अंगुलीयां इहेपांचसूक्ष्महोवें तव शुभहोतेहै १८ और कहतेहैं जिसके अंगूठेके मध्यमें यवकीन्याई आकार होवे सो मनुष्य यशवाला होताहै और जिसके हाथ में अनामिकाकमूलसें रेखा होवे सो मनुष्य पुण्यवान् होताहै ॥ १९ ॥

और कहतेहैं जिसमनुष्यकीच्छातीवडी होवे सो धनी होताहै और जिसके गंडस्थल और शिर वडा होवे सो जयकों प्राप्त होताहैऔरजिसका ऊरू मोटा होवे सो वहुत पुत्रोंवाला होताहै और जिसके पैर वडे होवें सो धनवान् होताहै ॥ २० ॥ और जिसके नेत्र स्निग्ध होवें सो सौभाग्यकर्के युक्त होताहै और जिसके दंतस्निग्ध होवें तिसकों श्रेष्ठ भोजन मिलताहै और जिसका देह स्निग्ध होवे सो सुखकर्के युक्त होताहैऔर जिसके पैर स्निग्ध होवें तिसकोंवाहनमिलताहै २१ और कहतेहैं जो मनुष्य उलूकीन्याई और काककीन्याई और डिडूंकी न्याई नेत्रोंवालेहैं और जिनके कपोलोंमे थोडे वालहोतेहें सो सपूर्ण पापी होतेहैं ॥ २२ ॥ और स्वरहीनहै शब्दजिनका और काककीन्याई शब्दजिनका और केकर मेढि दृष्टि जिनकी और नकुलकी न्याई नासिका जिनकी और वहुत नाडि,

उरोविशालोधनवान्हनु शीर्षोपराजितः वहुपुत्रःकटिस्थूलोविशालचरणोधनी२०चक्षुःस्नेहेचसौभाग्यंदंतस्नेहेचभोजनम् वपुःस्नेहेनसौख्यंस्यात्पादस्नेहेच वाहनं ॥ २१ ॥ उलूकाक्षाश्चकाकाक्षामंडूकाक्षाश्चयेनराः अल्परोमकपोलाश्चतेसर्वेपापवुद्धयः २२ विस्वराःकाकनादाश्चकेकरावभ्रुनासिकाः शिरालारोमशाहूस्वोत्तरोष्ठास्तेचपापिनः २३ पितृशीलोत्तमाकन्यामातृशीलोनरस्तथा समपुष्टस्तुल्यरूपोविवाहःसुखदोभवेत् २४ अन्यच्च ययोरेवसमंवित्तंययोरेवसमंकुलं ॥ तयोर्विवाहंसख्यंचनतुपुष्टविपुष्टयोः २४ शंखपद्मयवछत्रमालामत्स्यध्वजादयः ॥ पादपाणौभवत्येवराज्ञांतद्योपितांतथा २५ स्त्रीलक्षणेविशेषमाह व्यासः ॥ मार्जारपिंगलानारीविषकन्येतिकीर्त्तिता ॥ सुवर्णपिंगलानारीनातिदुष्टापरेजगुः २६

या और रोम जिनकेदेहमें और नीचेके ओष्ठसें छोटाहै ऊपरका ओष्ठजिनका सो पापी होतेहैं २३ और पिताकेस्वभाववाली कन्याश्रेष्ठहोतीहै और माताकेस्वभाववालापुरुषश्रेष्ठहोताहै और जो पुरुष सो तुल्य पुष्टहोवें और तुल्य रूप होवें तिनका आपसमें विवाह सुखके देनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ औरजिनोंकावित्तऔरकुलतुल्यहोवेतिनोंकाविवाहऔरमेलताहोतीहैऔरविषमोकाविवाहऔरमेलतानहि होतीहै २४ और कहतेहैं शंखकमलयवछत्रमालामत्स्यऔरध्वजअंकुशइत्यादिचिन्हपैरोंमें और हाथोंमे राजाओंके वा राणीयोंके होतेहैं ॥ २५ ॥ अब स्त्रीयोंके लक्षणोंमें व्यास विशेष कहताहै विल्लेकी न्याई पिंगलवर्णकी स्त्री विषकन्या होतीहै सो विषकन्या दुष्ट होताहै और सुवर्णकीन्याई पिंगलवर्णकी स्त्री अतिदुष्टानहि होतीहै ऐसे कोईक ऋषि कहतेहैं ॥ २६ ॥

और जो स्त्री काली जिव्हावाली और लंबे ओठोंवाली और पिंगलवर्णके नेत्रोंवाली और घर्घरशब्दकर्के वाणी वाली और जिसकेपैरोंमें और कुचोंमें और ओठोंमें रोमहोवें सो स्त्री त्यागकरणे योग्यहै। २७। और जिसस्त्रीकियाअंगुलीयां और दंत विरलेहोवें और कुचोंऊपर और कपोलोंऊपर बड़े वालहोवें और काला तालूहोवेऔर मातापितासे हीन अथवा अधिक अंगा वाली होवे सो त्यागकरणे योग्यहै २८ और जिसस्त्रीकी चिची अंगुल और अनामिका अंगुल और मध्यमा अंगुल पैरकी पृथ्वीकों नाहीं स्पर्शकरे सोस्त्री व्यभिचारिणी होतीहै ॥ २९ और जिसस्त्रीके पैरकी अंगुष्ठके पासकी अंगुली अंगूठेसें लंबी अधिक होवे सो स्त्री भर्त्ताके घर नाहीं रहतीहै अपनी इच्छाकर्के कामचारणी होतीहै ३० और जिसस्त्रीका उदर पेट लंबा होवे सो

कृष्णजिव्हाचलंबोष्ठीपिंगाक्षीघर्घरस्वरा ॥ त्याज्यायस्याश्चपादौचकुचावो ष्ठौचरोमशौ २७ विरलांगुलिदंतापकुचगंडरुहत्कचा ॥ कृष्णतालु परित्याज्याव्यंगांगापितृमातृत ॥ २८ ॥ कनिष्ठानामिकायस्यायदि मध्यमिकातथा ॥ भूमिनस्पृशतेसास्त्रीविज्ञेयाव्यभिचरिणी ॥ २९ ॥ पादेप्रदेशिनीयस्याअंगुष्ठंसमतिक्रमेत् ॥ नसाभर्तृगृहेतिष्ठेत्स्वच्छदाकामचा रिणी ३० उदरेश्वशुरंहतिललाटेहतिदेवरम् ॥ स्फिजौपतिंलंवमानेधनं कूर्मोदरीहरेत् ॥ ३१ पृष्ठावर्त्तापतिंहतिनाभ्यावर्त्तापतिव्रता ॥ कट्यावर्त्ता तुस्वच्छंदास्कंधावर्त्तार्थभागिनी ३२ सुस्वराचसुवेषाचमृद्वंगीचारुभाषिणी ॥ प्रशस्तासुगति कन्यायाचदृङ्मनसाप्रिया ३३

श्वसुरकों हत कर्त्तीहै और जिसका माथा लंबा होवे सो देवरकों हत कर्त्तीहै और स्फिजिकटिके अधोभाग और पट्टके ऊपर मांसपिंडकानामहै सो लंबा होवे तब स्वामीकों हत कर्त्तीहै और कूर्म कीन्याई उदरवाली धनकों हरतीहै ॥ ३१ ॥ और जिसस्त्रीके पृष्ठमें चक्रकीन्याई रोमावली होवे सो स्वामीकों हत कर्त्तीहै और जिसकीनाभिमें चक्रकीन्याई होवे सो पतिव्रता होतीहै और जिसके लकमें चक्रकीन्याई चिन्हहोवे सो अपनी इच्छा करणेवाली होतीहै और जिसके मोंढयोंमें चक्रका न्याई चिन्हहोवे सो धनवती होतीहै ३२ और जो स्त्री श्रेष्ठस्वरवाली और सुंदर वेषरखने वाली और कोमल अंगोंवाली और मीठा बोलने वाली और श्रेष्ठ हंस और गजकीन्याई चलने वाली और जिसके देखनेकर्के नेत्र और मन प्रसन्नहोवे सो स्त्री श्रेष्ठ होतीहै ॥ ३३ ॥

श्रौरजोस्त्रीडिंडूकोन्याईकुक्षियोंवालीश्रौरवोहढवृक्षकीन्याईऊपरसेंवडेविस्तारवालीइसप्रकारकीस्त्रीपुत्र कोंजन्मे सो राजा होताहै ३४ श्रौर वराह कहताहै जिसस्त्रीके मध्यमागुलीपर्यंत मणिवंधसें लेकर्के हाथकी तलीमें रेखा होवे तिसकों ऊर्ध्वरेखाकर्के कहतेहैं सो रेखा राज्यसुखके देनेवालीहै अथवा पुरुषकों होवे तव राजाकीन्याईं होताहै ३५ श्रौर जिसके हाथमें कनिष्टका श्रंगुलीके मूलसें उत्प. न्नरेखा मध्यमा श्रगुलीके श्रौर प्रदेशिनी श्रगुलीके मूलपर्यंत स्थित होवे सो पूर्णश्रायुषावाला होताहै श्रौर उक्तप्रमाणसें हीनहोव तव श्रायुषावी हीन होतीहै ३६ श्रौर श्रगुष्टके मूलमें प्रसूतिकिया रेखा होतीयाहै सो रेखा वडीया होवें तव पुत्रहोतेहै श्रौर छोटीया सूक्ष्महोवे तव कन्याहोतीयाहै श्रौर सो रेखा श्रछिन्न श्रौर लंवीया होवें तव चिरकालजीणेवाले वालक कन्या होतेहैं श्रौर सूक्ष्म श्रौर छिन्न श्रौर वहुतछोटीया होवें तव थोडी श्रायुषावाले होतेहै ३७ श्रौर श्रायुरेखा श्रौर कनिष्ठ श्रगुलीके

मंडूककुक्षिकानरीन्यग्रोधपरिमंडला एवंजनयतेपुत्रंसतुराजाभविष्यति ३४वराहः मध्यांगुलीयामणिवंधनोत्थारेखागतापाणितलेंगनानाम् ऊर्ध्वगतापाणितलेथवायापुंसोथवाराजसुखायसास्यात् ३५ कनिष्टकामूलभवागतायाप्रदेशिनीमध्यमकांतराला करोतिरेखापरमायुषःसाप्रमाणहीनाथतदूनमायुः ३६ श्रंगुष्टमूलेप्रसवस्यरेखा पुत्राढ्हत्य प्रमदाश्चतन्व्यः ॥ श्रछिन्नदीर्घाश्चचिरायुषांता स्वल्पायुषःछिन्नलघुप्रमाणाः ३७ कलत्रकांतयो सख्यंजीवितारूयकनिष्ठयोः ॥ मध्येविचिंतयेद्दक्षेवामहस्तेनरस्त्रियोः ३८ श्ररेखंवहुरेखंवायेषांपाणितलंनृणां ॥ तेस्युरल्पायुषोनि स्वादु खितानात्रसंशयः ॥ ३९ ॥ क्लेशसंपल्लवारेखाकुर्याच्छिन्नायुष क्षय माणिवंधोन्मुखाद्वृद्ध्यैविपदांगुष्टसंमुखा ४० मत्स्य करतलेयस्यसनरोवहुकोशवान् ॥ भाग्यरेखासुतीक्ष्णाग्राशुभाछत्राकृतिस्तथा ४१

मध्यमें पुरुष स्त्रीके सख्यभावकी रेखा होतीहै सो रेखा पुरुषके दक्षिणहाथमें श्रौर स्त्रीके वामहाथमें चिंतन करे ३८ श्रौर जिन्हों मनुष्योंके हाथमे रेखा नाहिं होवें श्रथवा वहुत रेखा होवें सो मनुष्यथोडी श्रायुषावाले श्रौर निर्धन श्रौर दुःखी होतेहै इसमे संशय नाहिंहै ॥ ३९ ॥ श्रौर जिसके हाथमें पत्रोंकीन्याई रेखा माणिवंधके समुखहोवे तव क्लेश दुःख होताहै श्रौर छिन्नरेखा त्रुटित रेखा होवे तव श्रायुषाका क्षय होताहै श्रौर मणिवधके संमुखवृद्धिकीरेखा होतीहै श्रौर श्रगूठेके संमुख रेखा विपदा कर्तीहै ४० श्रौर जिसके हाथकी तलीमें मच्छकीन्याईं रेखा होवे सो मनुष्य वडे धनवाला होताहै श्रौर जिसके हाथमे छत्रकीन्याईं तीक्ष्ण श्रग्रभागवाली होवे तिसका नाम भाग्य रेखाहै सो शुभकहिहै ४१

और जिसके हाथकी अंगुलीयोंका मध्यभाग आपसमें मिलितहोवे सो धनसचय कर्त्ताहै और अंगुलीयोंके मध्यमे छिद्ररहे सो द्रव्य खर्च कर्त्ताहै अर्थात् तिसकेपास धनसंचय नाहिं रहिताहै ४२ और कहतेहै जिसस्त्रीकियां दोनो भ्रुवां मिलीहोवे और लंबे ओठोवाली और काणी और छजकीन्याई कानों वाली और टेढे मुखवाली और टेढी नासिकावाली और अत्यंत मौनरहने वाली और बहुत बोलने वालीसो त्याग करणे योग्यहै ४३ और जिसस्त्री के केश और वस्त्रके स्पर्शसें पुष्पोंकी माला मलीन होजावे और जिसके स्नानवालें जलमें बहुत छोटे जीव उत्पन्न होवें ॥ ४४ ॥ और मड्डणी और वस्त्रमें जूंआ जिसकों बहुत होवें और अन्नका चुरायकर्के खाने वाली और पवित्रतासें रहितसो स्त्री त्यागकरणे योग्यहे ४५ अब पुरुषोंकेलक्षण

श्लिष्टान्यंगुलिमध्यानिद्रव्यसंचयहेतवे ॥ तानिचेच्छिद्रयुक्तानित्यागशीलकराणिच ॥ ४२ ॥ मिलद्भ्रूयुग्मिकाकाणालंबोष्ठीशूर्पकर्णिका वक्रास्यानासिकाचातिमौनात्याज्यातिभाषिणी ॥ ४३ ॥ यस्या.केशांशुक स्पर्शात्म्लायंतिकुसुमस्त्रजाः ॥ स्नानांभसिविपद्यंतेवहव.क्षुद्रजंतवः ४४ धीयंतेमत्कुणास्तस्यैतथाजूकाश्चवासासि ॥ चौर्य्यान्नभक्षिणीशौचहीनात्याज्यानितंविनी ४५ ॥ अथपुरुषलक्षण ॥ तत्रोर्ध्वमंगुलमानमाह कात्यायनः अष्टशतं १०८ षण्णवतिः ९६ परिमाणंचतुरशीति ८४ रितिपुसाम् ॥ उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्यास्वमानेन ४६ अथस्वरः ॥ करिवृषरथौघभेरीमृदंगसिंहाब्दनिःस्वनाभूपाः ॥ गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्चधनसौख्यसत्यक्ताः ४७ आकाशादिप्रकृतिगुणा.पंचमहापुरुषलक्षणाध्यायेनिरूपिताः

कहतेहे जिसमे ऊचा अंगुलीयोंका प्रमाण कत्याय नकहताहे अपनेहाथकी अंगुलीयोंके प्रमाणसें अष्टोतरशत । १०८ । अंगुलीका ऊचा पुरुष उत्तम श्रेष्ट कहाहै और छयानू ९६ अंगुली ऊचा सम मध्यम कहाहे और चुराशी ८४ अंगुली ऊचा हीन कहाहे ४६ अबस्वरके लक्षण कहतेहे यो मनुष्य हाथीकीन्याई और बैलकी न्याई और रथके समूहसें यो शब्दहोताहे तिसकीन्याई और भेरी यो वडा नगारा तिसकीन्याई और मृदगकीन्याई और शेरकीन्याई और बादलकीन्याई गंभीरवाणीवाले जोहे सो राजा होतेहैं अर्थात् गंभीरवाणीवालापुरुष राजाहोताहै और खोतेकीन्याई और जर्जर शब्द रूक्षयुक्त और कठोरस्वरवाली वाणी धन और सुखसें रहितजो मनुष्यहोतेहै तिनकी होताहै ४७ और संपूर्ण तत्वप्रकृतियोंके गुण पचमहापुरुष लक्षणाध्यायमें कहचुकेहैं

अथमनुष्योंके प्रत्येकांगोंका फल कहतेहैं तिसमें प्रथम पैरोंके लक्षणकहतेहैं परसीनेसें रहित और कोमलतलीयों वाले और कमलकीन्यांईशोभावाले और अंगुलीयांआपसमें समानमिलित शोभाककें युक्त और सुंदरनखोंककें और पार्ष्णिककेंयुक्त और उष्णस्पर्शवाले और नाडियोंककेंहीन और गुढमांसककें ढकेहुवे गिट्टे और कच्छुएकीन्यांई ऊपरसें ऊचे पैर राजाके होतेहैं ४८ और समुद्रकहताहै; मांसककेंयुक्त और स्निग्ध और गरम और अंगुलीयोंककेंशोभायुक्त और ऊचे और परसीनेसेंहीन और नाडियोंसे रहित पाद राजाके होतेहैं ४९ और गर्गकहताहै लालकमलकीन्यांई प्रभावाले और रुधिरकीन्यांई लाल पादवाले राजा होतेहैं और सुखके भोगने वाले होतेहैं ५० अब पैरोंके अशुभ लक्षण कहतेहैं छजकीन्यांई आगेसें विस्तारवाले और रूक्ष और धूडे नखोंवाले और टेढे और ना

अथमनुष्याणांप्रत्येकांगलक्षणानि तत्रादावेवपादयोर्लक्षणमाह अस्वेदनौमृदुतलौकमलोदरभौश्लिष्टांगुलीरुचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णीउष्णौशिराविरहितौचनिगूढगुल्फौकूर्मोन्नतौचचरणौमनुजेश्वरस्य ४८तथाचसमुद्रः॥ पादैःसमांसैःसुस्निग्धैःसोष्णैःश्लिष्टैःसुशोभनैः॥ उन्नतैःस्वेदरहितैःशिराहीनैश्चपार्थिवः ४९तथाचगर्गः॥ पद्मरक्तोत्पलनिभैस्तथाक्षतजसन्निभैः॥ नृपाःपादतलैर्ज्ञेयायेचान्येसुखभागिनः ५० तत्रैवाशुभलक्षणान्याह शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौवक्रौशिरासंततौसंशुष्कौविरलांगुलीचचरणौदारिद्र्यदुःखप्रदौ ५१ तथाचसमुद्रः॥ शूर्पाकारैस्तथाभग्नैर्वक्रैःशुष्कैःशिरायुतैःसस्वेदैःपांडुरैरेवंश्चरणैरतिदुःखिनः ५२ मार्गायोत्कटदौकपायसदृशौवंशस्यविच्छेददौब्रह्मघ्नौपरिपक्वमृद्द्युतितलौपीतावगम्यारतौ ५३ उत्कटावध्वनिरतौकपायौकुलनाशिनौ॥ब्रह्मघ्नौदग्धमृद्वर्णौवतिपीतावगम्यदौ ५४

ड़ियों ककें युक्त और शुष्क और विरलीयां अंगुलीयांवाले पैर दारिद्र और दुःखके देनेवाले होतेहैं ५१ और समुद्रकहताहै छजकीन्यांई और भग्नस्फुटित और शुष्क और नाडियोंककेंयुक्त और परसीनेककेंयुक्त और धूडेनखोंवाले पैरवडेदुःखभोगनेवालेयोंके होतेहैं ५२ और मुर्गा के वर्णकीन्यांईपैर मार्गमें सदाचलनेवाल्योंके होतेहैं और वंशछेदकेकरणेवालेहोतेहैं और लालमिट्टीकीन्यांई पैरोंकी तलियोंवाले ब्रह्महत्या कर्तेहैं और पीलीयां तलियोंवाले अगम्या स्त्रीमें गमनकर्तेहैं ५३ और समुद्रकहताहै जिसके उत्कटपैरहोवें सो मार्गमें रत होताहै और जिसके कषायवर्णके पैर होवें सो कुलकानाश कर्ताहै और दग्धमृत्तिकाकी आभावाले पैर ब्रह्महत्याकोंदेतेहैं और अत्यंत पीले वर्णके पैर अगम्यास्त्री का गमन करातेहैं ॥ ५४॥

॥ अब जंघा पदजानूके लक्षण कहतेहैं विरले छोटेरोमों वालियां और गोलजघा और हाथीकी वाहुलीको न्याई श्रेष्ट पट्ठोंकर्के युक्त और समतुल्य दोनोंजानुयोंवाले राजाहोतेहैं ॥ और कुत्तेकीन्याई और गिदड़ोंकी न्याई जंघोंवाले धनरहितहोतेहैं ॥ ५४ ॥ अवजघों के रोमोंका लक्षण कहतेहै राजयोंके रोमकूपोंमें एक एक रोमहोताहै और पंडितोंके और यज्ञकराव नेवाल्योंके रोमकूपोंमें दोदो रोमहोतेहै और जिनकेरोमकूपोंमें तीन वा चार रोम होतेहैंसो निर्धनहोतेहैं इसी प्रकारकर्के शिरके केशवी निंद्य और श्रेष्ट जानने योग्यहैं ॥ ५५ ॥ और समुद्र कहताहै जिसके रोमकूपमें एकहि रोमहोवे सो राजा होताहै और दोरोमोंवाला वडेयशकों प्राप्त होताहै और तीनरोमोंवाला और 'वहुतरोमोंवाला मनुष्य भाग्यहीन' होताहै ॥ ५६ ॥

अथजंघोरुजानूनांलक्षणमाह प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभि श्चउपचितसमजानवश्चभूपाधनरहिताःश्वसृगालतुल्यजंघाः ५४ अथजंघयो रोमलक्षणमाह ॥ रोमैकैककूपकेपार्थिवानांद्वेद्वेज्ञेयेपंडितश्रोत्रियाणां ॥ त्र्याद्ये निःस्वामानवादुःखभाजःकेशाश्चैवंनिंदिताःपूजिताश्च ५५ ॥ तथाचसमुद्रः ॥ एकरोमोभवेद्राजाद्विरोमश्चमहायशाः त्रिरोमोवहुरोमश्चनरोभाग्यविवर्जितः ५६ निर्मांसजानुर्म्रियतेप्रवासेसौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः स्त्रीनिर्जिताश्चैवभवंति निम्नैराज्यंसमांसैश्चमहद्भिरायुः ५७ तथाचसमुद्रः निर्मांसजानुर्यस्यप्रवा सेम्रियतेतुसः अल्पैर्भवतिसौभाग्यंविकटैश्चदरिद्रता ५८ स्त्रीजितःस्यात्तथा निम्नैर्मांसयुक्तैर्नराधिपः अतिस्थूलैश्चिरंकालजीवेदैश्वर्यसंयुतः ५९

और कहतेहैं मांसकर्के रहित जानुयोंवाला विदेशमें मरताहै और छोटे जानुयोंवाला सौभाग्य भो गताहै और विकट येडौल जानुयोंवाला दरिद्री होताहै और निम्नडूगेजानुयोंवाला स्त्रीजित हो ताहै और मासकर्केसहितजानुयोंवाला राजा होताहै और वड़े जानुयोंवाला वडी आयुपावाला होताहै ॥ ५७ ॥ और समुद्र कहताहै मांसहीनजानुयोंवाला प्रवासमें मरताहै और छोटेजानुयों वा ला सौभाग्यवाला और विकटजानुयोंवाला दरिद्री होताहै ॥ ५८ ॥ और डूगेजानुयों वाला स्त्रीजित और मासकर्केयुक्त जानुयों वाला राजा और वडे मोटेजानुयों वाला ऐश्वर्यकर्के युक्त चिरकालरहिताहै ॥ ५९ ॥

॥ अब लिंगके लक्षण कहतेहे छोटे लिंगवालाधनीहोताहै और संतानसें रहित होताहै और मोटेलिंगवाला धनोंकर्केहीन होताहै और जिसका लिंगावामेपासे में नीमा होवे और टेढा होवे सो पुत्र और धनकर्के रहित होताहै और दक्षिणपासेमें नीमाहोवे तब पुत्रोंवाला होताहै और अधो भागमें नीमा होवे तब दरिद्री कर्ताहै और नाडियोंकर्के युक्त होवे तब थोडे पुत्रोंवाला होताहै और स्थूलग्रथिकर्के युक्त होवे तब सुखकर्त्ताहै और कोमल होवे तब प्रमेहादिरोगोंकर्के मृत्यु होतीहै ६० अब इसमें और लक्षण कहतेहैं जिनके अंडकोश निगूढ मांसमें छपे होवें सो राजा होते हैं और लंबे और भग्न होवें तब धनहीन होतेहैं और सरल और गोल और सूक्ष्मनाडियों कर्के युक्त लिंगवाले धनीहोतेहै ॥ ६१ ॥ और समुद्र कहताहै यो मनुष्य दक्षिणावर्त्त लिंगवाला होवे सो पुत्रवान् होताहै और वामावर्त्तलिंगवालेके कन्या वहुत होतीहैं ॥ ६५ ॥

अथलिंगलक्षणमाह लिंगेल्पेधनवानपत्यरहितःस्थूलेपिहीनोधनैर्मेढ्रेवामनते सुतार्थरहितोवक्रेन्यथापुत्रवान् दारिद्र्यंविनतेत्वधोल्पतनयोलिंगेशिरासंतते स्थूलेग्रंथियुतेसुखीमृदुकरोत्यंतंप्रमेहादिभिः६० अत्रैवान्यल्लक्षणमाह कोशनि गूढैर्भूपादीर्घैर्भग्नैश्चवित्तपरिहीनाः ऋजुवृत्तशेपसोलघुसिरालशिश्नाश्चधनवंतः ६१तथाचसमुद्रः दक्षिणावर्त्तलिंगोयःसभवेत्पुत्रवान्नरः वामावर्त्तेतथाकन्याःसु बह्व्याःसंभवंतिच ६२ स्थूलैःसिरालैःकठिनैर्नरादारिद्रभाजनाः ऋजुभिर्वर्त्तु लैर्लिंगैःपुरुषाःसुखभागिनः ६३यस्यपदोपविष्टस्यभूमिंस्पृशतिमेहनं भोगवा न्सतुविज्ञेयोनरोदारिद्र्यभाजनः ६४ भूमौपादोपविष्टस्ययस्यस्पृशतिमेहनं भोगवान्सतुविज्ञेयस्तथातुरगमेहनः ६५ स्थूलग्रथियुतेलिंगेनरोतिसुखभाग्भ- वेत् लिंगेनमृदुनामर्त्योम्रियेतकृच्छ्रपीडितः६६अथवृषणलक्षणमाह जलेमृत्युरेक वृषणोविषमैःस्त्रीचंचलःसमैःक्षितिपःह्रस्वायुश्चोद्बद्धैःप्रलंबवृषणस्यशतमायुः ६७

और मोटे और नाडियों कर्के युक्त और कठिन लिंग वाले मनुष्य दरिद्री होतेहैं और सरल और गोल लिंगों वाले पुरुष सुखी होतेहैं ६३ और जिसमनुष्यका पैरोंके भारबैठेसें लिंगपृथ्वीकों स्पर्श करे सो मनुष्य भोगी होताहै और दरिद्रीहोताहै ६४ और कहतेहैं पृथ्वीमें स्पर्श करणे वाला और घोडेकीन्याई लिंगवाला भोगी कहाहै ६५ और मोटीग्रथिवाले लिंगकर्के मनुष्य सुखभोगताहै और कोमल लिंग कर्के प्रमेहादि कष्टों कर्केमर्ताहै ६६ अबवृषणोंके लक्षण कहतेहैं जिसका एकहि अंडकोश होवे सो जलमें मृत्युकों प्राप्तहोताहै और जिसके विषम होवें दोनो समाननहिं होवें सो स्त्रीयोंमें चचलहोताहै और तुल्य समानवृषणोंवाला राजाहोताहै और नाडियों कर्के बद्धहोवें तब थोडी आयुषा वाला होवाहै और लंबे वृषणोंवालासउ वर्ष जीवताहै ६७

और समुद्र कहताहै एक अंडवाला जलमें मरता और विषम अंडों वाला स्त्रीयोंमे चंचलहोताहै ॥ और सम अंडों वाला राजा होताहै और सलग्न अंडों वाला थोडाकाल जीवताहै ॥ ६८ ॥ और लंबे अंडों वाला सऊवर्ष जीताहै ॥ अब माणि मूत्रका लक्षणकहतेहै ॥ और जिसकी लालमाणि होवे सो धनी होताहै और जिसकी धूडी और मलीन माणि होवे सो धनहीनहोताहै लिंगाग्रभागकों माणि कहतेहै ॥ और जिसकी मूत्रधारा शब्दकर्के चले सो सुखी होताहै और जिसकी शब्द रहित चले सो धनहीन होताहै ६९ और जिनकामूत्र दो तीन धाराकर्के और दक्षिणावर्त्त होयके गिरताहै सो राजा होतेहै और जिनका बिखरकर्के मूत्र गिरता है सो निर्धन होतेहै ७० और जिसके मूत्रको एकधारा वगे सो रूपको देताहै और पुत्रकों दे

तथाचसमुद्रः ॥ एकांडोजलमृत्युःस्याद्विषमेस्त्रीषुचंचलःसमांडोनरनाथश्चसंलग्नेरल्पजीवनः ६८ प्रलंबांडप्रमाणंतुशतंजीवतिमानवः अधुनामणिमूत्रलक्षणमाह रक्तैराढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याःपांडुरैश्चमलिनैश्च सुखिनःसशब्दमूत्रानिःस्वानिःशब्दमूत्रधाराश्च ॥ ६९ ॥ द्वित्रिचतुर्धाराभिःप्रदक्षिणावर्त्तवलितमूत्राभिः पृथिवीपतयोज्ञेयाविकीर्णमूत्राश्चधनहीनाः ७० एकैवमूत्रधारावलितारूपप्रधानसुतदात्री स्निग्धोन्नतसममणयोधनवनितारत्नभोक्तारः ॥ ७१ ॥ मणिभिश्चमध्यनिम्नैःकन्याःपितरोभवंतिनिःस्वाश्च वहुपशुभाजोमध्योन्नतैश्चनास्थुलवर्णैर्धनिनः ७२ तथाचरत्नाकृतिर्मणिर्यस्यसमेमध्येविराजिते पार्थिवःसतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा ७३ सुवर्णरजतप्रख्यैर्मणिमुक्तासमप्रभैः प्रवालसदृशैःस्निग्धैर्मणिभिः पार्थिवोभवेत् ७४

ताहै और जिनाकिया स्निग्ध और ऊचीया और बराबरमणिया होतीयाहै सो धन और स्त्रीया और रत्नोंके भोगनेवाले होतेहै ७१ और जिनाकिया मणिया मध्यभागसें निम्न होतीयाहै सो कन्याके पिता होतेहै और धन रहितहोतेहै और जिनाकिया मणियामध्यसें ऊचीया होतीयाहै सो मनुष्य पशुआके गोमहिष्यादित्यादियाके सुखवाले होतेहै और अत्यंत भयानक नाहिंहोनेसें धनीहोतेहैं ७२ और समुद्र कहताहै जिस पुरुषकी मणी रत्नकीन्याई मध्यभागमें शोभायुक्तहोवे सो राजा होताहै ॥ ७३ और जिसका मणी सुवर्ण और चांदि और मणियोंकी न्याई और मोतीयोंकी न्याई प्रभावाली होवे और मुंगेके समानस्निग्ध मणियां वक राजाहोताहै ७४

और जिसकी मणी धूडेवर्णकी और मलीन और कठोर और पिंगल वर्ण की और छोटी, होवे सो निर्धन होताहै और जिसके देहसें मूत्रकीधारा दक्षिण वर्च होयके गिरे सो राजाहोताहै अस ऐं समुद्रने कहाहै ७६ और जिसके मूत्र किंवा दोधारा स्निग्ध शब्दसें रहित गिरे, सो, भोगवान् और गौओंकर्के युक्त होताहै ७७ और जिसके मूत्रमें बहुतधाराशब्दकर्के युक्त रूक्ष गिरेसो नीच पुरुष होताहै ॥ अब वस्तिशुक्र मैथुनके लक्षण कहतेहै और जिनकी वस्ति नाभिके नीचे चार अंगुलीप्रमाण कर्के स्थान शुष्क और नाडियों कर्के युक्त होवे सो धनहीन और दुर्भग होतेहैं और जिनके वीर्यकी पुष्पोंकी न्याई गधिहोवे सो राजे होतेहैं ७८ और मखीरकी गधिवाला वीर्य ध नवानोंका होताहै और मच्छकी गधिवाला वीर्य वहुत संतान वालोंका होताहै और थोडे वीर्यवा ला कन्याकापिता होताहै और मांसकीन्याई वीर्यकी गधिवाला वडाभोगीहोताहै ७९ और मदि

पांडुरेमलिनेरूक्षे श्यावेरल्पेश्चनिर्धनः मूत्रधारापतेद्देहाद्दक्षिणावलितायदि पार्थिव सतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा ७६ द्विधारंचपतन्मूत्रंस्निग्धशब्दविवर्जि त भोगवान्सतुविज्ञेयोगवाढ्योनात्रसंशयः ७७ वहुधारेतथारूक्षेसशब्दे पुरुषाधमः ॥ अधुनावस्तिशुक्रमैथुनानांलक्षणमाह ॥ परिशुष्कवस्तिशी र्षैर्धनरहितादुर्भगाश्चविज्ञेयाः कुसुमसमगंधशुक्राविज्ञातव्यामहीपालाः ७८॥ मधुगंधेवहुवित्तामत्स्यसगंधेवहून्यपत्यानि तनुशुक्रःस्त्रीजनकोमांससगंधोम हाभोगी ७९ मदिरागंधेयज्वाक्षारसगंधेचरेतासिदरिद्रः शीघ्रंमैथुनगामी दीर्घायुरतोन्यथाल्पायुः ८० तथाच विस्तीर्णमांसलास्निग्धावस्ति पुंसांप्र शस्यते निर्मांसकर्कशारूक्षादुःखदारिद्र्यदास्मृता ८१ गोमायुसदृशायस्य खरोष्ट्रमहिषस्यच सभवेद्दुःखितोनित्यंधनहीनश्चमानवः ८२ तथाच पुष्प गंधोभवेद्राजावहुस्वोमधुगंधितः मत्स्यगंधःपुत्रवान्स्यात्स्त्रीप्रजस्तनुरेतसः ८३

रा कीन्याई वीर्यकीगधिवाला यज्ञकरणे वाला होताहै और सज्जी क्षा कीन्याई गधिके वीर्य वाला दरिद्री होताहै और शीघ्रमैथुन करणे वाला दीर्घायु होताहै और चिरकाल मैथुन करणे वाला अ ल्पायु होताहै ८० और कहतेहैं विस्तार कर्के युक्त और मास कर्के युक्त और स्निग्ध वस्ति पुरु षोंकी श्रेष्ट होती है और मास कर्के हीन और कठोर और रूखी दुःख और दारिद्रके देने वाली हो तीहै ८१ और जिसकी वस्ति गिदडकी न्याई और ऊठकी न्याई और संढेकी न्याई होवे सो नित्य प्रति दुःखी और धन कर्के रहित होताहै ८२ और कहतेहैं जिसकेवीर्यमें पुष्पोकीग धि होवे सो राजाहोताहै और मखीरकीन्याई गधिवाला धनीहोताहै और मच्छकीन्याई गधिवाला पुत्रवान् होताहै और थोडेवीर्यवालाकन्यावालाहोताहै ८३

और मांसकीगंधिवालाबडाभोगीहोताहै और मद्यकी गंधिवालापदकारणे वाला होताहै और क्षारकीन्याईगंधिवालाधनहीनहोताहै ८४ औरचिरकालमैथुनकरणे वाला थोडी आयुषावालाहोताहै अबस्फिग्केलक्षणकहतेहैं ॥ स्फिक्नामपट्ठोंकेऊपरमांस पिंडोंकाहै ॥ जिसके बडेमोटे स्फिक् होवें सोधनहीन होताहै और श्रेष्ठमांसकर्के युक्त स्फिक् होवें तब सुखी होताहै और अर्ध स्फिक्वालाशेरकोंमारणेवाला होताहै और डिंडूकीन्याई स्फिक्वाला राजाहोताहै ८५ और समुद्रकहताहै जिसके स्फिक् बडेमोटे होवें सो निर्धनहोताहै और श्रेष्ठ मांसकर्के युक्त स्फिक् होवें तब सुखीहोताहै और मंडूककीन्याई स्फिक् वाला राजा होताहै ८६ और अर्धस्फिक् वाला शेरके मारणेवाला होताहै ८७ अब कटि जठरके लक्षण कहतेहैं जिसका सिंहकी न्याई लक होवे सो राजा होताहै और बांदरकी न्याई और ऊठकीन्याई लक वाला धनरहितहोताहै और देहके समा-

मांसगंधोमहाभोगीयाज्ञिकोमदिरासमे ॥ गंधोयेषांक्षारसमस्तेविनिःस्वाम नुजाःस्मृताः ८४ चिरंमैथुनगामीयःसहृस्वायुर्भवेन्नरः ॥ अथस्फिग्लक्षण माह ॥ निःस्वोतिस्थूलस्फिक्समांसलस्फिक्सुखान्वितोभवति व्याघ्रांतोध्य र्धस्फिङ्मंडूकनराधिपतिः ॥ ८५ ॥ तथाचस- ॥ अतिस्थूलौस्फि जौयस्य . निर्धनःसभवेन्नरः समांसलस्फिक्सुखितोमंडूकस्फिङ्नराधिपः ॥ ८६ . ॥ अध्यर्धस्फिङ्नरोयस्तुव्याघ्रांतः सतुकीर्तितः ॥ ८७ ॥ अथक टिजठरलक्षणमाह ॥ सिंहकटिर्मनुजेंद्रःकपिकरभकटिर्धनैःपरित्यक्तः स मजठरोभोगयुतोघटपिठरनिभोदरोनिस्वः ८८ तथाचस- सिंहतुल्याकटिर्यस्य सनरेंद्रोनसंशयःश्वसृगालखरोष्ट्राणांतुल्यायस्यसनिर्धनः८९समोदराभोगयुता विषमानिर्धनाःस्मृताः ९० अथपार्श्वकक्षोदरलक्षणम् अविकलपार्श्वाधनिनो निम्नैर्वक्रैश्चभोगसंत्यक्ताःसमकुक्षाश्चभोगाढ्यानिम्नाभिर्भोगसंत्यक्ताः ९१

न लक वाला भोगीहोताहै और घडेकी न्याई और पिठरोभांडविशेषः तिसकीन्याई लक वाला धन हीनहोताहै ८८ और समुद्र कहताहै जिसका सिंहकेतुल्य लक होवे सो राजा होताहै और कुत्ते और गिदडकीन्याई और खोते और ऊठकीन्याई लक वाला धन रहित होताहै ८९ और समान उदर वाला भोगीहोताहै और विषम टेढेपेट वाला निर्धनहोताहै ९० अब पार्श्व कक्ष उदरके लक्षण कहतेहैं ॥ जिसके दोनों पार्श्व समान तुल्य होवें सो धनी होताहै और नीमें और टेढे पार्श्वोंवाला भोगों कर्के रहितहोताहै और समकुक्षियों वाले भोगों कर्के युक्त होतेहैं और नीमि कुक्षिवाले भोगहो नहोतेहैं ९१

श्रौर ऊंचीर्क्षी कुक्षीवाले राजा होतेहैं श्रौर विषम नीमीऊंचीकुक्षी वाले कुटिल होतेहैं श्रौर सर्पकीन्याई पेटवाले दरिद्री होतेहैं श्रौर बहुतभोजनकरणे वाले होतेहैं १२ कटिकेऊपर श्रंगुल भाग पार्श्व कहाहै ॥ श्रौर समुद्र कहताहै ॥ मांस करके युक्त पार्श्वोंवाले धनीहोतेहैं श्रौर नीमें श्रौर टेढे श्रौर विषम पार्श्वोंवालेमनुष्य भोगोंसें रहितहोतेहैं १३ श्रौर कहतेहैं ऊंचीकुक्षीवाले राजा होतेहैं श्रौर विषम कुक्षीवाले दुष्ट होतेहैं श्रौर सर्पके पेटकी न्याईं नीमी कुक्षी वाले धनरहित श्रौर बहुतभोजनकरणेवाले होतेहैं १४ श्रब नाभिके लक्षण कहतेहैं जिनकी ऊंची मंडलाकार विस्तारवालीनाभिहोवे सो सुखीहोतेहैं श्रौर छोटी श्रौर श्रदृश्यश्रौर बहुत नीमीनाभिक्लेशकेदेनेवाली

उन्नतकुक्षाः क्षितिपाःकुटिलाः स्युर्मानवाविषमकुक्षा.सर्पोदरादारिद्राभवतिबव्हाशिनश्च १२ कटेरुपरिचतुरंगुलोभाग.पार्श्वशब्दवाच्यः तथाचस- पार्श्वे.समांसोपचितैर्धनिनोमानवाःस्मृता.निम्नैर्वक्रैश्चविषमैर्नराभोगविवर्जिताः१३ नृपाश्चोन्नतकुक्षा.स्युर्विषमाभिर्दुराशया.सर्पोदरानतानिःस्वाःस्मृताबव्हाशिनस्तथेति १४ श्रथनाभिलक्षणमाह ॥ परिमंडलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्चनाभिभि सुखिनः स्वल्पाच दृश्यानिम्नानाभिः क्लेशावहाभवति १५ वलिमध्यगताविषमाशूलवाधंकरोतिनैस्वंच शाठ्यंवामावर्ताकरोतिमेधांप्रदक्षिणतः १६ शाठ्यलक्षणम् वचसामनसायश्चदृश्यतेकार्यतत्पर कर्मणाविपरीतश्चसशठ सद्भिरिष्यते १ मेधालक्षणम् शुश्रूषाश्रवणंचैवग्रहणंधारणंतथा ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानंचधीगुणाः २ पार्श्वायताचिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरंगवाढ्यमधः शतपत्रकर्णिकाभानाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते १७ तथाचसमुद्रः वर्तुलाविपुलात्युच्चानाभिर्यदिनरेश्वरः श्रल्पादृश्यातथानिम्नानाभि क्लेशावहाभवेत् ॥ १८ ॥ वलिमध्यगतायाचसाशूलवधकारिणी वामावर्ताशाठ्यभावेधिषणांचप्रदक्षिणा १९ ॥

होतीहै १५ श्रौर जिसकीनाभिकेमध्यमें विषमवलिरेखाहोवे सोनाभिशूलपीडाकरके मृत्यु श्रौर निर्धनताकर्ते हैं श्रौर वामावर्तनाभि शठोंकी होतीहै श्रौर दक्षिणावर्तमेधा बुद्धिकरण वालीहोतीहै १६ श्रौर जिसकी नाभिपासेपासें चोडी होवे सो चिरकालजीणेवाला होताहै श्रौर ऊपरसें चउडीहोवे तबलक्ष्मीकास्वामी होताहै श्रौर नीचेसेंबडीहोवे तब गाडाकर्कयुक्तहोताहै श्रौर जिसकी नाभिकमलकीन्याईं होवे सो राजाहोताहै १७ श्रौर समुद्रकहताहै जिसकी गोल श्रौर बडी श्रौर ऊंची नाभिहो वेसो राजाहोताहै श्रौर छोटी श्रौर श्रदृश्य श्रौर नीमी नाभि दुःखकरनेवाली होतीहै १८ श्रौर जिसकी नाभिकेमध्यमें सूईहोवे सो शूलकरके मरताहै श्रौर वामावर्तशठोंकी नाभिहोतीहै श्रौर दक्षिणावर्तश्रेष्ठबुद्धिवालोंकीहोतीहै १९

और पासेयोंमें वडीहोवे तब चिरकालजीताहै और ऊपरके भागसें वडीहोवे तबधनीहोताहै ॥ और नीचेसेंवडीहोवे तब गौयांबहुत होतीयाहैं और भोगों कर्केयुक्तहोताहै ॥ १०० ॥ और जिसकी कमलकी डोडीकेतुल्यनाभिहोवे सो राजाहोताहै ॥ १०१ ॥ अवउदरमें वलियों केलक्षणकहतेहैं जिसके उदरमें एकवली होवे सो शस्त्रों कर्के मरताहै और दोवली वाला स्त्रीभोगनेवाला और तीनवली वाला आचार्य परोपदेष्टाहोताहै और वलीसेंरहित उदरवालारा जाहोताहै १०२ और जिनकेउदरमें टेढी यावलीया होतीयांहै सो अगम्यास्त्रीकें गमनकरणेवालेहोते हैं और जिनके उदरमें सरलवलीयाहोतीहैं सो सुखी और परस्त्रीकेद्वेषीहोतेहैं १०३ और समुद्रकहता हैजिसके पेटमें एकवलीहोवे सो शस्त्रकर्के हतहोताहै और दोवलीवालापुरुष स्त्रीकेभोगने वालाहो

पार्श्वायतादीर्घजीवंधनयुक्तातथोर्द्धगा अधोगोवहुलंकुर्यान्नाभिर्भोगसमन्वितम् १०० पद्मस्यकर्णिकातुल्यानाभिःकुर्यान्नरेश्वरम् १०१ अथवलीनांलक्षणमाह ॥ शस्त्रांतस्त्रीभोगिनमाचार्यंवहुसुतयथासंख्यं एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विंद्यान्नृपत्ववालिम् १०२

विषमवलयोमनुष्याः भवंत्यगम्याभिगामिनःपापाः ऋजुवलयःसुखभाजः परदारद्वेषिणश्चैव १०३ तथाचसमुद्रः एकवलिःशस्त्रमृत्युःस्त्रीभोगी द्विवलिः स्मृतः त्रिभिराचार्यइत्याहुश्चतुर्भिःस्याद्बहुप्रजाः १०४ अवलिस्तुनृपःप्रोक्तो यज्वादानैकतत्परः विषमावलयोयेषुतेनराऽसुखभागिनः १०५ अथपार्श्व लक्षणमाह मांसलमृदुभिःपार्श्वैःप्रदक्षिणावर्त्तरोमभिर्भूपाः विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीनाःपरप्रेष्याः १०६ कटेरुपरिचतुरंगुलेभागःपार्श्वशब्दवाच्यः॥ तथाचस- मांसलैर्मृदुभिःपार्श्वैर्दक्षिणावर्त्तरोमभिः नराभुम्यधिपाज्ञेयाविपरीतैः सुदुःखिताः १०७॥

ताहै और तीनवलीयोंवाला आचार्य परोपदेशके करणेवालाहोताहै और चारवलीयोंवाला बहुत संतानकर्केयुक्तहोताहै १०४ और वलियोंसेंरहितराजा होताहै और यज्ञदानमें तत्परहोताहै और जिनके पटमें टेढियावलियाहोतीहैं सो दुःखभोगने वालेहोतेहैं १०५ अवपार्श्व लक्षणकहतेहैं मासक र्केयुक्त और कोमल और दक्षिणावर्त्त रोमोंकर्केयुक्त पार्श्व राजोंकेहोतेहैं और इनसे विपरीत धन और सुखसें रहितोंके और परकार्यके करणेवाल्योंके होतेहै १०६ और समुद्रकहताहै मासकर्के युक्त और कोमल और दक्षिणावर्त्त रोमोंकर्केयुक्त पार्श्वोंवाले राजाहोतेहैं और शुष्क और वामावर्त रोमों वालेपार्श्व दुःखभोगने वाल्योंकेहोतेहै १०७

अब चूचुकोंके लक्षण कहतेहैं जिनके स्तनोंके अग्रभागउचे दोनो समहोतेहैं सो श्रेष्ठ भाग्योंवाले होतेहैंऔर जिनके स्तनाग्रलंबे और विषम होतेहैं सोनिर्धन होतेहैंऔर जिनके पुष्टऔर मांसमेंनिमग्न होतेहैं सो राजा होतेहैं औरसुखी होतेहैं १०८ औरसमुद्रकहताहै जिनकेस्तनोंकेउन्नतअग्रभाग सम होतेहैं सो श्रेष्टभाग्योंवाले होतेहैंऔर जिनके एकवडा और एकछोटा स्तनोंका अग्रभागहोताहै और जिनके लंबे स्तनाग्रहोतेहैं सो दारिद्री होतेहैं और जिनके स्तनाग्र मांसमें निमग्नहोतेहैं सोराजा होतेहैं ॥ १०९ ॥ अब हृदयके लक्षण कहतेहैं जिनपुरुषोंका हृदयसम ऊचा होताहै और मोटा और अचल और मांसकर्के युक्त सो राजा होतेहैं और जिनका शुष्क और मांसकर्केरहित और रूक्ष और रोमोंकर्केयुक्त और नाडियोंकर्केयुक्त सो निर्धन होतेहैं ॥ ११० ॥ और समुद्र कहताहै

अथचूचुकलक्षणम् सुभगाभवंत्यनुद्वद्धचूचुकानिर्धनाविषमदीर्घैः पीनोपचितनिमग्नैःक्षितिपतयः चूचुकैः सुखिनः ॥ १०८॥ चूचुकंस्तनाग्रम् तथाचसमुद्रः चूचुकैश्चाप्यनुद्वद्धैः सुभगाःसुखभागिनः निर्द्धनाविषमैर्दीर्घैर्मग्नैर्मांसयुतैर्नृपाः १०९ अथहृदयलक्षणमाह ॥ हृदयंसमुन्नतं पृथुनवेपनंमांसलंचनृपतीनां विपरीतमधमानांखररोमचिंतसिरालंच ११०तथाचसमुद्रः अचलंपृथुमुच्चंचनृपाणां हृदयंस्मृतं ॥ विपरीतंसिरालंचरोमशंदुःखभागिनाम् १११ अथवक्षोलक्षणमाह ॥ समवक्षसोर्थवंतःपीनैःशूराह्याकिंचनास्तनुभिः ॥ विषमंवक्षोयेषांतेनिःस्वाःशस्त्रनिधनाश्च ११२ तथाचसमुद्रः अर्थवान्समवक्षाःस्यात्पीनैःशूराधनान्विताः ॥ अल्पैश्चविकलादीनाविषमाःशस्त्रमृत्यवः ११३ ॥

जिनका स्थिर और मोटा और ऊचा हृदय होताहै सो राजा होतेहैं और उलटा और नाडियोंवाला और रोमोंकर्केयुक्त हृदय दुःख भोगने वाल्योंका होताहै ॥ १११ ॥ अबवक्षस्थलके लक्षण कहतेहैं जिनका सम बराबर वक्षस्थल होताहै सोधनी होतेहैं और जिनका पुष्ट होताहै सो शूरवीर होतेहैं और जिनका छोटा वक्षस्थल होताहै सो धनहीन होतेहैं और जिनका विषम ऊचानीमा वक्षस्थल होताहै सो निर्धन होतेहैं और शस्त्रकर्के मृत्युको प्राप्त होतेहैं ॥ ११२ ॥ और समुद्र कहताहै बराबरच्छातीवाला धनवान्औरपुष्टवडीच्छातीवाला शूरवीर और धनी होताहै और छोटीच्छातीवाला व्याकुल और दीनहोताहै और टेढी च्छातीवाला शस्त्रोंकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै ११३

अब जत्रुके लक्षण कहतेहैं मोढेयोंको और कक्षकी संधिका नाम जत्रु कहाहै जिस मनुष्यकी जत्रु टेढी होवे सो कठिन स्वभाववाला होताहै और जिसकी जत्रु संधिकर्के युक्तहोवे सो धनहीन होताहै और जिसकी जत्रु ऊंची होवे सो भोगी होताहै और जिसकी नीमी होवे सो निर्धन होताहै और जिसकी पुष्ट जत्रु होवे सो धनी होताहै । ११४ ॥ और समुद्र कहताहै विषमजत्रुवाला क्रूरहोताहै और कठिन जत्रुवाला दरिद्री होताहैऔर ऊंची जत्रुवाला भोगी और नीमीजत्रुवाला निर्धन होताहै और पुष्टजत्रुवाला धनी होताहै ११५ अब ग्रीवा औरपृष्ठके लक्षण कहतेहैं चिपटीगर्दन वाला धनही न होताहै और शुष्क और नाडियोंवाली गर्दनवाला वी निर्धन होताहै और संढेकीन्याईं गर्दनवाला शूरवीर होताहै और बैलकीन्याईं गर्दनवाला शस्त्रकर्के मरताहै ॥ ११६ ॥

अथजत्रुलक्षणमाह विषमैर्विषमोजत्रुभिरर्थविहीनोस्थिसंधिपरिणद्धैः ॥ उन्नतजत्रुर्भोगीनिम्नैर्निस्वोर्थवान्पीनैः ११४ तथाचसमुद्रः जत्रुभिर्विषमैःक्रूरादरिद्राःक्रूरसंधिभिः ॥ भोगीचोन्नतजत्रुःस्यान्निम्नैर्निःस्वोन्यथाधनी ११५ अथ ग्रीवापृष्ठलक्षणमाह ॥ चिपिटग्रीवोनिःस्वः शुष्कासिराचयस्यवाग्रीवामहिषग्रीव शूरःशस्त्रांतोर्वृषसमग्रीवः ॥ ११६ ॥ कंबुग्रीवोराजाप्रलंबकंठःप्रभक्षणोभवति ॥ पृष्ठमभग्नमरोमशमर्थवतामशुभदमतोन्यत् ११७ तथाचसमुद्रः ग्रीवाचवर्तुलायस्यसनरोधनवान्स्मृतः ॥ कंबुग्रीवानरायेतुराजानस्तेनसंशयाः ११८ दीर्घग्रीवानरायेतुतेपिदुःखस्यभागिनः वक्रग्रीवानरायेतेदांभिकाः पिशुनास्तथा ११९ ॥ निःस्वस्तुचिपटग्रीवःशुष्कग्रीवस्तथैवच ॥ शूरस्तुमहिषग्रीवःशस्त्रांतोवृषकंधरः १२० ॥ तथाचसमुद्रः सस्निग्धंमांसलंपृष्ठमभग्नंचाथरोमशम् ॥ सधनानांविपर्यस्तंनिर्धनानांप्रकीर्तितम् १२१

और शंखकीन्याईंकंठवाला राजा होताहै औरलंबेकंठवाला वहुत भोजनकर्ताहै औरपृष्टसँग्रभग्न औ रोमरहित धनवाल्योंका कंठहोताहै और इससें विपरीत माडाहोताहै ११७ और समुद्र कहता है जिसकी गोल गर्दन होतीहै सोधनी होताहै और शंखकीन्याईं ग्रीवावाला राजा होताहै ११८ और लंबी ग्रीवावाले दुखीहोतेहैं और वगुलेकीन्याईंगर्दनवाले दंभीहोतेहैं और चुगलहोतेहै ११९ और चिपटिग्रीवावाला निर्धनहोताहै और शुष्कग्रीवावालावीनिर्धनहोताहै और संढेकीन्याईं गर्दनवाला शूरवीर होताहै और बैलकीन्याईंगर्दनवाला शस्त्रोंकर्केमृत्युहोताहै १२० समुद्रजीकहतेहैंजिनकी पृष्टस्निग्ध औरवहुत मांसवालीहोवे और कुबीनहीहोवेरोमोंसेंरहित होवे सो पुरुषधनवालेहोतेहैं इन लक्षणोंसें उलटा होवेतोनिर्धनहोतेहैं ॥ २१ ॥

औरकक्षकेलक्षणकहतेहैंजिनकीकक्षापरसीनेसेंरहितऔरपुष्टऔरऊचीऔर श्रेष्ठगांधिवालीऔरसमरोमोंवा लीसोधनीलोकहोतेहैंऔरइससेंविपरीतकक्षावालेनिर्धनहोतेहैं १२२ बाहुमूलकेनीचेकक्षाहोतीहैऔरसमुद्र कहताहै परसीनेसेंरहितऔरमांसककेंयुक्त और श्रेष्टगोंधवालिऔररोमोकरकेंयुक्त कक्षा धनवाल्योंकीहोती है और इससें विपरीत निर्धनोंकी होतीहै १२३ अबअंसोंके लक्षण कहतेहैं मांसकरकेंरहित और बहु तरोमोंकरकेंयुक्त और भग्न और छोटे अंस निर्धन पुरुषोंके होतेहैं और बडे विस्तारवाले और भुजोंसें मि लित और सुंदर पुष्ट अंस सुखवाल्योंके और बलवानोंके होतेहैं १२४ और समुद्रकहताहै केलेकेस्तंभ कीन्याई और बकरीके मोंढयोंकीन्याई जिनोंके मोढे होतेहैं सो राजा और बडे भंडारवाले और महा बली होतेहैं ॥ १२५ ॥ और मासकरकेंरहित और बहुतरोमोंवाले मोढे निर्धनके होतेहैं ॥ अथ बाहुल

अथकक्षालक्षणमाह ॥ अस्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसंकुलाःकक्षाः विज्ञात व्याधनिनामतोन्यथार्थैर्विहीनानाम् १२२ बाहुमूलतलंकक्षाशब्देनोच्यते तथाचस निःस्वेदनांसला:कक्षाःसुगंधारोमसंकुलाः धनिनांतुविजानीयान्निर्धनानामतो न्यथा १२३ अथांसलक्षणमाह निर्मांसोरोमचितौभग्ना वल्पौचनिर्धनस्यांसौ विपुलावव्युच्छिन्नौसुश्लिष्टौसौख्यवीर्यवताम् १२४ तथाचस- कदलीस्तंभसंका शाअजस्कंधाश्चयेनराः राजानस्तेविजानीयान्महाकोशामहाबलाः १२५ नि र्मांसरोमबहुलानिर्धनस्यप्रकीर्तिताः ॥ अथबाहुलक्षणमाह करिकरसदृशौवृत्ता वाजान्वलंबिनौसमौपीनौ ॥ बाहूपृथिवीशानामधनानांरोमशौहूस्वौ १२६ तथा उद्बद्धबहुःपुरुषोवधबंधमवाप्नुयात् ॥ दीर्घबाहुर्भवेद्राजासमुद्रवचनंत था १२७ प्रलंबबाहुरैश्वर्यंप्राप्नुयाद्गुणसंयुतम् ॥ हूस्वबाहुर्भवेद्दासःपरप्रेष करस्तथा १२८ वामावर्त्तभुजायेतुयेतुदीर्घभुजानराः ॥ समानबाहवोयेतु राजानस्तेप्रकीर्त्तिताः १२९॥

क्षण कहतेहै जिनकीया भुजा हाथीकी बाहुलीकीन्याई गोल होवें और जानुपर्यंत लंबिया और पु ष्ट औरदोनोंबराबरहोंवेसोराजाहोतेहैंऔरनिर्धनोंकियाभुजारोमोंवालियां और छोटियाहोतीयांहैं १२६ ॥ और समुद्र कहताहै जिसकियाबांधेकीन्याई भुजाहोवें सो मनुष्य बध और बंधनकों प्राप्त होताहै और लंबीयों भुजोंवाला राजा होताहै ॥ १२७ ॥ और अत्यंत लंबियां भुजोंवाला ऐश्वर्यंकों प्राप्त होताहै और गुणोंकरकें युक्त होताहै और छोटियोंभुजोंवाला दासकर्मकरताहै और परकार्य कर्त्ताहै ॥ १२८ ॥ और जो वामावर्त भुजोंवाले और यो लंबीयोंभुजोंवाले और दोनों भुजातुल्य जिनकि यां सो राजा होतेहैं ॥ १२९ ॥

अव हाथोंके लक्षण कहतेहे जिनके हाथोंकियांअगुलिया लंबीया होतीयाहैं सो वडी आयुषावाले होतेहैं और जिनके हाथोंमें वली झुर्डी नाहिंहोतीहै सो श्रेष्ट भाग्यों वाले होतेहैं और बुद्धिमान् जो मनुष्यहोतेहै तिनकिया अगुलीया सूक्ष्म होतीयाहैं और परकर्मके करणेवाल्योंकियां अंगुलियां चिपटीया होतीयाहैं १३० ॥ और मोटियीं अंगुलीयोंवाले धनराहित होतेहैं और जिनकिया अगुलिया वाहरमें नींमियाहोवें सो शस्त्रककें मत्तेहैं और वांदरकीन्याईं हाथों वाले धनी होतेहैं और चित्रेकीन्याईं हाथोंवाले पापी होतेहैं १३१ अब और कहतेहैं जिनके मणिबंधन गूढहोवें और दृढहोवें और श्रेष्टसंधियोंकर्के मिलित होवें सो राजा होतेहैं और इनोंलक्षणोंसें हीन मणिबंधोंवाल्योंके हाथ छेदे जातेहैं और ढीले और शब्दकर्केयुक्त मणिवधोंवाले धनरहित होतेहै ॥ १३२ ॥ और कहतेहैं जिसके हाथकीतली नींमी होवे सो पिताके धनकर्के हीन होताहै और यों

इदानींहस्ततलक्षणमाह ॥ हस्तांगुलयोदीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्चसुभागानां मेधाविनांचसुक्ष्माश्चिपिटाःपरकर्मनिरतानां ॥ १३० ॥ स्थूलाभिर्धनरहितावाहिर्नताभिश्चशस्त्रनिर्याणाः कपिसदृशकराधनिनोव्याघ्रोपमपाणयः पापाः ॥ १३१ ॥ अन्यदप्याह मणिवधनैर्निगूढैर्दृढैश्चसुश्लिष्टसाधिभिर्भूपाः ॥ हीनैर्हस्तच्छेदाःश्लथै सशब्दैश्चानिर्द्रव्याः ॥ १३२ ॥ अन्यदप्याह पितृवित्तनाविहीनाभवंतिनिम्नेनकरतलेननराः संवृत्तनिम्नैर्धनिनःप्रोत्तानकराश्चदातारः १३३ अन्यदप्याह तुपसदृशनखाःक्लीवाश्चिपटैःस्फुटितैश्चवित्तसंत्यक्ताः कुनखविवर्णैःपरतर्ककाश्चताम्रैश्चभूपतयः १३४ अन्यदप्याह अंगुष्ठयवैराढ्याःसुतवतोंगुष्ठमूलजैश्चयवै. दीर्घांगुलिपर्वाण सुभगादीर्घायुषश्चैव १३५ अन्यदप्याह स्निग्धानिम्नारेखाधनिनांतद्व्यत्ययेनानि.स्वानाम् विरलांगुलयोनिःस्वाधनसंचयिनोघनांगुलयः १३६

डीनीमी तली वाले धनी होतेहै और उंची तली वाले दाता होतेहैं । १३३ । और कहतेहैं जिनके तोहों की न्याईं नख होवें सो नपुंसक होतेहे और चिपिटे और फूटे नखोंवाले धनहीन होतेहैं और कुनखी और मलीन नखोंवाले दूसरेका तर्कके करणे वाले होतेहे और लालनखोंवाले राजा होतेहै । १३४ । और कहतेहैं जिनके अंगूठेंमें यवांका आकारहोवे सो धनी होतेहैं और जिनके अंगूठेके मूलमें यवहोवें सो पुत्रोंवाले होतेहैं और लंबीयीं अंगूलीयांके ग्रंथियोंवाले श्रेष्ट भाग्योंवाले और वडी आयुषावाले होतेहैं । १३५ । और कहतेहे धनियोंपुरुषोंकेहाथमें स्निग्ध और नींमिया रेखा होतीयाहैं और निर्धनोंके हाथोंमेंतिनस विपरीत होतीयाहैं और विरलीयां अंगुलीयोंवाले धनहीन और घनिर्मी अंगुलीयोंवाले धनके संचयवाले होतेहैं ॥ १३६ ॥

और कहतेहै ॥ जिसके मणिबंधनसे निकसकर्के तीनरेखा हाथकीतलीमे स्थितहोवे सो राजा होताहै और जिनके हाथमें दोमछलीकी रेखा होवे सो नित्यप्रति लाभदेतीहै १३७ और धनवानोंके हाथमें वज्रकीन्याई रेखा होतीहै और विद्यावानोंके हाथमे मछलीके पुच्छकीन्याई रेखा होतीहै और राजयोंके हाथमे शंखकीन्याई और छत्रकीन्याई और पालकीकीन्याई और हाथीघोडेकी न्याई और कमलकीन्याईरेखाहोवीहे १३८ और वडेधनवालेयोंकेहाथमें कलशेकीन्याई औरकमल केदंडकीन्याई औरध्वजाकीन्याई और अंकुशकीन्याई रेखाहोतीहे औराजिनकेहाथमे मालाकीन्याई रेखाहोवे सो धनीहोतेहे और जिनकेहाथमेस्वस्तिककीन्याई अष्टदलरूपकरेखाहोवे सो ऐश्वर्यभोगताहै १३९ और जिसके हाथमे चक्रकीन्याई और खड्गकीन्याई और कुहाडेकीन्याई और त टोलेकी न्याई और वरछीकी न्याई और धनुषकी न्याई और वरछेकी न्याई रेखाहोवें सो सेनाके स्वामी होतेहैं और उखलकीमुसलकी रेखावाले यज्ञकरणेवाले होतेहै १४० और मच्छ और ध्व

अन्यदप्याह तिस्रोरेखामणिबंधनोत्थिता करतलोपगानृपतेः मीनयुगांकित पाणिर्नित्यसत्रप्रदोभवति १३७ वज्राकाराधनिनांविद्याभाजांचमीनपुच्छनि भाः शंखातपत्रशिबिकागजाश्वपद्मोपमान्नृपतेः १३८ कलशमृणालपताकांकु शोपमाभिर्भवतिनिधिपालाः दामनिभाभिश्चाढ्या स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्यम् १३९ चक्रासिपरश्वुतोमरशक्तिधनु कुंतसन्निभारेखाः कुर्वंतिचमूनाथंयज्वा नमुलूखलाकाराः १४० मकरध्वजकोष्ठागारसन्निभाभिर्महाधनोपेताः वेदी निभेनचैवाग्निहोत्रिणोब्रह्मतीर्थेन १४१ वापीदेवकुलाद्यैर्धर्मंकुर्वंतिचत्रिकोणा भिः अंगुष्ठमूलेरेखास्तुपुत्रा स्युर्दारिकाःसूक्ष्माः १४२ रेखाःप्रदेशिनिगा शता युषांकल्पनीयमूनाभिः छिन्नाभिर्द्रुमपतनंबहुरेखारेखिनोनिःस्वाः १४३ अथ चिबुकाधरदशनानांलक्षणमाह अतिकृशदीर्घैश्चिबुकैर्निर्द्रव्यामांसलैर्धनोपेताः बिंबोपमैरवक्रैरधरैर्भूपास्तनुभिरस्वा १४४

जा और कोठघरकी न्याई रेखावाले बडे धनी होतेहैं और वेदकीन्याई ब्रह्मतीर्थ करके अर्थात् अ गुष्ट मूल मे वेदी होवे तब अग्निहोत्री होतेहे १४१ और जिनके हाथमें वाउलीकीन्याई और दे वता कीन्याई और त्रिकोणरेखाहोवें सो धर्म करणे वाले होतेहै और कहतेहै अंगुष्ठके मूलमे जो रेखा सो दीर्घ होवे तव पुत्र जन्मतेहे और सूक्ष्महोय तब कन्याजन्मतीमाहै १४२ और जिसके हाथमे चिचीअंगुलीके नीचेसे लेकर्के तर्जनीके पर्यंत रेखाहोवे सो सउवर्ष जीताहै और उनहो वे तव कल्पनाकर वर्ष सख्या कहे और सो रेखाछिन्नहोवे तव वृक्षसें गिरताहै और बहुतरेखाहोवे गुनहोवे तवधनहीन होतेहे १४३ अथचिबुक अधर दांतोके लक्षण कहतेहै जिनकीठुडी बहुतदृश और लंबीहोवे सो धनहीनहोताहै और धनवानोंकीठुडी मासकर्के युक्त होतीहै और जिनकेकडुरिकीन्याई लाल ओठ होताहै और टेडेनहीं होतेहै सो राजा होतेहै और जिनके सूक्ष्मओठ होतेहै सो निर्धन होतेहै १४४

और स्फुटित और खंडित और विवर्णरूक्ष ओठोंवाले धनरहितहोतेहैं ॥ और स्निग्ध और घने दंतोंवाले और तीक्ष्णदाढों वाले और समबराबर दंत शुभ होतेहैं ॥ १४५ ॥ और समुद्र कहताहै मांसरहित और लंबे चिबुकवाले निर्धन और मांससहित चिबुकवाले धनी और पुत्रोंवालेहोतेहैं १४६ और लालओठोंवाला राजा और कमल कीन्याईं ओठोंवाला धनीहोताहै और मोटे ओठों वालेऔर बहुत रोमों वाले औरशुष्कओठों वाले औरसूक्ष्मओठों वाले दु:खीहोतेहे १४७ और जिनके ऊपरले ओठलालहोवें सो धनवान् होतेहे और सुख करके युक्त होतेहैं और खंडे ओठों वाले द्रव्य हीनहोतेहैं और रूखे ओठोंवाले दुःखी होतेहैं १४८ और जिनके दंतकुंदपुष्पकीडोडीकी न्याईं होवें सो राजा होतेहैं और रिच्छोंकीन्याईं और बानरोंकीन्याईं दंतों वाले नित्यं प्रतिक्षुधाकर्के

उष्ठैःस्फुटितविखंडितविवर्णरूक्षैश्चधनपरित्यक्ताः स्निग्धाघनाश्चदशनाःसुतीक्ष्णदंष्ट्राःसमाश्चशुभाः ॥ १४५ ॥ तथाचसमुद्रः निर्मांसैश्चिबुकैर्दीर्घैर्निर्द्रव्याश्चानुवांचिनः समांसलैर्धनोपेताबहुपुत्रसमावृताः ॥ १४६ ॥ रक्ताधरोनरपतिर्धनवान्कमलाधरः स्थूलोष्ठेर्बहुलोमाचशुष्कैःक्षीणैश्चदुःखिताः १४७ उत्तरौष्ठैर्लोहितैश्चधानिनःसौख्यसयुताः खंडैर्विवर्णैर्निर्द्रव्याःरूक्षैर्दुःखसमन्विताः १४८ कुंदकुड्मलसंकाशैःप्रकारैर्दशनैर्नृपाः ऋक्षवानरदंताश्चानित्यंक्षुत्परिपीडिताः १४९ हस्तिदंताःखरदंताःस्निग्धदंताःगुणान्विताः करालैर्विषमैर्दीर्घैर्दशनैर्दुःखजीविनः १५० द्वात्रिंशद्दंताराजानएकोनश्चापिभोगवान् ॥ त्रिंशद्दंतानरायेतेसुखदुःखस्यभागिनः १५१ एकोनत्रिंशद्दशनाःपुरुषादुःखजीविनः ॥ अष्टाविंशद्दंतायेपतितिदुखस्यभाजनाः १५२ अथजिव्हातालुवोर्लक्षणमाह ॥ जिव्हारक्तादीर्घाश्लक्ष्णासुसमाचभोगिनोज्ञेया श्वेताकृष्णापरुषानिर्द्रव्याणांतथाताल्लुः १५३ तथाचसमुद्रः कृष्णाजिव्हाभवेद्यस्यसमलायदिवाभवेत् ॥ सपापवान्भवेन्मर्त्योरूक्षास्थूलाथवाभवेत् १५४ ॥

पीडित होतेहैं और हाथीकीन्याईं और खोतेकीन्याईं स्निग्ध दंतोंवाले गुणी होतेहैं और विकराल और लंबे दंतोंवाले दुःखकर्के जीतेहैं १५० और बत्ती दंतोंवाले राजा होतेहे एकत्ती दंतोंवाला भी राजा होताहे और तीह ३० दंतोंवालेमनुष्यसुख और दुःख भोगतेहैं १५१ और उनत्रीदंतोंवाले पुरुषदुःखकर्के जीतेहैं जिनके अठाई दतहोतेहे सो अत्यंतदुःखी होतेहैं १५२ अबजिव्हातालुकेलक्षण कहते जिनकी जिव्हा लाल और लबी और श्लक्ष्णबराबर होतीहै सो भोगोंके भोगने वाले होतेहैं जिनकीजीभ्शाचिट्टी और काली और कठोरहोतीहै सो द्रव्यहीन होतेहै और तैसेहि जिव्हाकी न्याईं तालुका फल कहाहै १५३ और समुद्रकहताहै जिसमनुष्यकी काली जिव्हा होवे और मलीन जिव्हा होवे और कठोर और मोटी जिव्हा होवे सो मनुष्य पापी होताहै १५४

और श्वेत जिह्वा वाले मनुष्य शौचाचारमें हीन होतेहैं और कमलकी न्याई और सूक्ष्म और लंबी जिह्वा श्रेष्ठहोतीहै १५५ और जिनोंकी जिह्वा वडीमोटी और वडीचौडीनहिंहोतीहै सो राजा होतेहैं और जिसकी जिह्वा आगेसेंनीमी और लंबी और सूक्ष्म और आगेसें लाल होवे सो मनुष्य संपूर्णविद्याके जानने वाला होताहै इसमें संशयनहिंहै १५६ और कहतेहैं जिसमनुष्यका काला तालु होवे सो मनुष्य कुलके नाशकरणे वाला होताहै और विकृत और स्फुटित तालु होवे सोशुभन हिं होताहै १५७ और कहतेहैं सिंहकीन्याई तालुवाला और हाथीकीन्याई तालुवाला राजाहोताहै और कमलकीन्याई तालुवाला राजा होताहै और श्वेत तालुवाला निर्धन होताहै १५८ अब मुखके लक्षण कहतेहैं सौम्य और गोल और निर्मल और सुंदर और सम मुख राजाओंका होताहै

श्वेतजिह्वानराज्ञेयाःशौचाचरविवर्जिताः पद्मपत्रसमाजिह्वासूक्ष्मादीर्घासुशोभना१५५नस्थूलानातिविस्तीर्णायेषांतेमनुजाधिपाः निम्नादीर्घाचहृस्वाचरक्ताग्ररसनायदि सर्वविद्याप्रवक्तासोभवेन्नास्त्यत्रसंशयः१५६ कृष्णतालुर्नरोयस्तुस भवेत्कुलनाशनः विकृतःस्फुटितोयस्यतालुस्तस्यनशोभनः १५७ सिंहतालुर्नरपतिःगजतालुस्तथैवच ॥ पद्मतालुर्भवेद्राजाश्वेततालुश्चनिर्धनः १५८ अथास्यलक्षणमाह ॥ वक्रंसौम्यंसंवृत्तममलंश्लक्ष्णंसमंचभूपानाम् विपरीतंक्लेशभुजांमहामुखदुर्भगानांच १५९ ॥ तथाच सौम्यंचसंवृतंवक्त्रं अमलयस्यदेहिनः महाराजाभवेन्नित्यंविपरीतेतुनिर्धनः१६०अथमुखलक्षणमाह स्त्रीमुखमनपत्यानांशाठ्यवतांमंडलंपरिज्ञेयम् दीर्घंनिर्द्रव्याणांभीरुमुखाःपापकर्माणः १६१ चतुरस्रधूर्तानांनिम्नवक्रंचतनयरहितानाम् कृपणानामतिहृस्वंसपूर्णंभोगिनांकांतम् ॥ १६२ ॥

और इनसेंविपरीत क्लेशभोगने वालोंका होताहै और वडामुख दुर्भगोंका होताहै १५९ और समुद्रकहताहै सौम्यऔर गोलऔर निर्मलमुखजिसकाहोताहैसो महाराजाहोताहै और इससें विपरीत मुखवाला निर्धनहोताहै १६० और कहतेहैं जिनका स्त्रीयोंकीन्याई मुख होताहै सो संतानकरके रहित होतेहैं और जिनका वर्तुल मुख होताहै सो शठता करणेवाले होतेहैं और जिनका लंबा मुख होताहै सो द्रव्यहीन होतेहैं और जिनका डरकीन्याई मुख होताहै सो पापकर्मोंके करणेवाले होतेहैं १६१ और जिनका चारकोणवाला मुख होताहै सो धूर्त होतेहैं और जिनका नीमा मुख होताहै सो पुत्रोंकरके रहित होतेहैं और कृपणोंका वहुत छोटा मुख होताहै और भोगीपुरुषोंका मुख पूर्ण और सुंदर होताहै १६२

और समुद्र कहताहै संतानकर्के रहितोंका मुखस्त्रीकी न्यांई और गोल मुख शठोंका और लंबामुख ब्राह्मणोंका और भययुक्त मुख दुष्टबुद्धिवाल्योंका होताहै ॥ १६३ ॥ और चारकोणोवाला मुख धूर्तोंका और नीचा मुख पुत्रहीनोंका और छोटा मुख कृपणोंका और चिपटा मुख परोपजीवियोंका होताहै १६४ और जिसका मुख मांसवाला और स्निग्ध और प्रभाकर्केयुक्त और देखनेमेंसुंदर और श्रेष्ठवर्णकर्के युक्त और संधियोंकर्के विश्लिष्ट सो मनुष्य निरंतरसुखी होतेहैं १६५ अब श्मश्रुकेलक्षण कहतेहैं ॥ जिसकी दाढीके बाल आगेसें स्फुटितनहिंहोवें और स्निग्ध होवें और कोमल और उन्नत होवे तब शुभ होतीहै और जिसकी दाढी लालवर्णकीहोवें और कठोर होवेंऔर थोडेवालोंवाली होवे सो चोर होताहै १६६ और समुद्र कहताहै स्निग्ध और

तथाचसमुद्रः स्त्रीमुखंनिरपत्यानांमंडलंशाठ्यसेविनां दीर्घमुखंचविप्राणांभीरुवक्रादुराशयाः १६३ चतुरस्रंतुधूर्त्तानांनिम्नैःसुतविवर्जिताः ॥ कृपणानांतथाह्रस्वंचिपटंपरजीविनां १६४ यन्मुखंमांसलंस्निग्धंसप्रभंप्रियदर्शनम् वर्णाढ्यंसंधिविश्लिष्टंअजस्रंसुखभागिनाम् १६५ अथश्मश्रुलक्षणम् ॥ अस्फुटिताग्रंस्निग्धंश्मश्रुशुभंमृदुचसन्नतंचैव ॥ रक्तैःपरुषैश्चौराःश्मश्रुभिरल्पैर्विज्ञेयाः १६६ तथाचसमुद्रः ॥ स्निग्धमस्फुटिताग्रंचसन्नतंश्मश्रुचेष्यते ॥ रक्तैरल्पैस्तथारूक्षैःश्मश्रुभिस्तस्कराःस्मृताः १६७ अथकर्णलक्षणमाह निर्मांसैःकर्णैःपापमृत्यवश्चपिटैःसुवहुभोगाः कृपणाश्चह्रस्वकर्णाःशंकुश्रवणाश्चभूपतयः १६८ रोमशकर्णादीर्घायुषश्चधनभागिनोविपुलकर्णाः ॥ क्रूराःसिरावनद्धैर्व्यालंबैर्मांसलैःसुखिनः १६९ तथाचसमुद्रः ह्रस्वकर्णामहाभोगामहाकर्णाश्चयेनराः आवर्तकर्णाधनिनःस्निग्धकर्णास्तथैवच १७०

आगेसें अस्फुटित और श्रेष्ठसंनत दाढी शुभ होतीहै और लालरंगकी और रुखी और थोडेवालोंवालीदाढी कर्के चोर होताहै १६७ अब कर्णोंके लक्षणकहतेहैं मांससें हीन कर्णोंवालेकी अपमृत्यु होतीहै और चिपटे कर्णोंवाले भोगोंकों भोगतेहैं और छोटे कर्णोंवाले कृपण होतेहैं और शंकु किलेकीन्यांई कर्णोंवाले सेनाके स्वामी होतेहै १६८ और जिनके कर्णोंमें रोमहोवें सो वडीआयुषावाले होतेहै और वडेकर्णोंवाले धनी होतेहै और नाडियोंकर्केयुक्त कर्णोंवाले क्रूरहोतेहैं और लंबे और मांसवाले कर्णोंकर्के सुखी होतेहैं १६९ और समुद्र कहताहै जो मनुष्य वडेकानोंवाले होतेहैं सो भोगी होतेहैं और जिनके कर्णोंमेंआवर्त्त होताहै सो धनी होतेहैं और स्निग्धकर्णोंवाले भी धनीहोतेहैं १७०

श्रीर शंकुकीन्याई कानों वाले वडी श्रायुषा वालेहोतेहैं श्रौर श्रावर्त कर्णों वाले थोडेधनीहोतेहैं श्रौर लंबे कर्णों वाले सुखी होतेहैं श्रौर तपस्वीहोतेहैं १७१ श्रौर मांसकर्के रहित कानों वाले खोटीमृत्युसें मरतेहैं श्रौर चिपटे कर्णों वालेभोगभोगतेहैं श्रौर रोमोंवाले कर्णोंकर्के वडी श्रायुषा वालेहोतेहैं १७२ श्रौर नाडियोंवालेकर्णोंकर्के क्रूर श्रौर मास कर्के युक्तकर्णोंकर्केसुखीहोतेहैं १७३ श्रवगंडश्रौर नासकाकेलक्षणकहतेहैं नीमे गंडस्थलों वाला भोगीहोताहै श्रौर मास कर्के पूर्णगंडस्थलों वाला मंत्रीहोताहै श्रौर तोतेकीन्याई नासा वाला सुखीहोताहै श्रौर शुन्क नासिकावाला चिरकालजीवताहै ॥ १७४ ॥ श्रौर छिन्नकीन्याई नासावाला श्रगम्यगामिहोताहै श्रौर लंबी नासिकावाला सौभाग्य कर्के युक्त होताहै श्रौर श्राकुंचित्त नासोंवाला चोरहोताहै श्रौर चिपिटी नासावाला स्त्रीकोंहतकर्ताहै



दीर्घायुषःशंकुकर्णास्तुटिकर्णामहाधनाःसुखान्वितादीर्घकर्णालंवकर्णास्तपस्विनः १७१ निर्मासैःपापमरणाश्चिपटैर्भोगिनोनराः दीर्घायुषोलोमकर्णाधनिनोविपुलैःस्मृताः १७२ सिरावनद्धैर्विषमामांसलैःसुखभागिनः १७३ श्रथगंडनासालक्षणमाह भोगीत्वनिम्नगंडोमंत्रीसंपूर्णमांसगंडोयःसुखभाक्शुकसमनासश्चिरजीवीशुष्कनासश्च १७४ च्छिन्नानुरूपयागम्यगामिनोदीर्घया तुसौभाग्यं श्राकुंचितयाचौराःस्त्रीमृत्युःस्याच्चिपटनासः १७५ धनिनोग्रवक्रनासादक्षिणविनताःप्रभक्षणाःक्रूराः ऋज्वीस्वल्पच्छिद्रासुपुटानासासुभाग्यानाम् १७६ तथाचस- शुकनासःसौख्यभोगीशुष्कनासाश्चिरायुषः च्छिन्नानुरूपापुंसांस्यान्नासातेऽगम्यगामिनः १७७ दीर्घनासाभोगयुक्ताश्रग्रवक्रा धनान्विताः क्रूरादक्षिणवक्राश्चस्पष्टनासानृपोत्तमाः १७८ स्त्रीमृत्युश्चपटाभिश्चकुटिलाभिश्चतस्कराः १७९ श्रथक्षुतलक्षणमाह

१७५ ॥ श्रौर श्रागेसें टेढी नासा वाले धनीहोतेहैं श्रौर दक्षिणमें नीमी नासा वालेवहुत भोजन कर्तेहैं श्रौर क्रूरहोतेहैं श्रौर छोटे छिद्रोंवालीश्रौर श्रेष्ट पुटोंवाली नासा भाग्यवानोंकोहोतीहै १७६ श्रौर समुद्रकहताहैं तोतेकी न्याईनासा वालासुख भोगताहै श्रौर शुष्कनासावालावडी श्रायुषावाला होताहै श्रौर छिन्ननासिकाकीन्याईनासिकावालायो पुरुषहैंमो श्रगम्यगामीहोताहै १७७ श्रौर लंबी नासावाले भोगों कर्के युक्त होतेहे श्रौर श्रागेसें वक्र नासावालेधनीहोतेहे श्रौर दक्षिण मेंवक्रनासावाले क्रूर होतेहैं श्रौर स्पष्टसूधी नासावाले श्रेष्ट राजा होतेहैं १७८ श्रौर चिपिटी नासावाले स्त्रीकेहतकरणे वालेहोतेहैं श्रौर कुटिलनासावाले चौर होतेहैं १७९ श्रव छिकाके लक्षणकहतहे

और धनिलोंकोंको छिकएकवार वादोतीनवारडकठीनादककें सहितहोतीहै और वडीआयुषावाल्यो कोछिकस्वर सहितहोतीहै १८० और पराशरकहताहै भोगी पुरुषोको एकाछिकआवतीहै और धनीलों कोंकोंइकठिदोछिकाहोतीयाहै और वडीआयुषा वाल्योंकोंतीनछिकाइकठीयाआवतीयाहै और चारछि का भोगकेनाश करणे वालीयांहोतीयाहे और चारसें अधिक छिका आवें सो दोषसेंवायु विकार कर्के होतीयाहें तिनका शुभाशुभ फल नहिंहोताहै ॥ १८१ ॥ अब लोचनोंके लक्षण कहतेहैं ॥ जिनके कमलदलकी न्याइं लोचनहोतेहें सो धनी होतेहैं और जि नके नेत्र कोणोंमें लालहोतेहैं सो शोभावाले होतेहे और जिनके मखीकीन्याइं पिंगलवर्णकेने त्रहोतेहै सो वडेधनको प्राप्तहोतेहे और बिल्लेकीन्याइं नेत्रोंवाले पापी होतेहें १८२ और हरिणकी न्याईं और इरेकीन्याइंनेत्रोंवाले चोरहोतेहे और केकरनेत्रोंवाले क्रूरहोतेहैंऔर हाथीकीन्याइं नेत्रोंवा

धनिनांक्षुतंसकृद्विस्त्रिपिंडितंह्रादिसानुनादंच दीर्घायुषांप्रसक्तंविज्ञेयंसंहि तंचैव ॥ १८० ॥ तथाचपराशरः ॥ सकृत्क्षुतभोगवतांद्विर्धनायचिरायुषाम् चतुः स्याद्भोगनाशायपरमस्मात्तुदोषजम् ॥ १८१ ॥ अथलोचनलक्ष णमाह ॥ पद्मदलाभैर्धनिनोरक्तांतविलोचना श्रियोभाजःमधुपिंगलैर्महार्था मार्जारविलोचनैःपापाः ॥ १८२ ॥ हरिणाक्षामंडललोचनाश्चजिह्मैश्च लोचनैश्चैराः क्रूरा केकरनेत्रागजसदृशविलोचनाश्चभूपतयः १८३ ऐश्वर्यं गभीरैर्नीलोत्पलकांतिभिश्चविद्वांसः अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनभ वति १८४ मंत्रित्वस्थूलदृशांश्यावाक्षाणांचभवतिसौभाग्य दीनाद्दृक्नि स्वानांस्निग्धाविपुलार्थभोगवताम् १८५ तथाच समेगोक्षीरवर्णाभेरक्तांते कृष्णतारके प्रसन्नेचविशालेचास्निग्धेचैवायतेशुभे १८६ अतसीपुष्पसंका शेभवेतांयस्यलोचने भूपतिःसतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा १८७ व्याघ्रचक्षु र्धनैर्युक्ताःकेकराक्षा कलिप्रियाः विडालहंसवर्णाश्चभवतिपुरुषाधमाः १८८

ले राजा होतेहे १८३ और गंभीर नेत्रोवाले एश्वर्यकर्केयुक होतेहै और नीलकमलकीन्याइं नेत्रों वाले विद्यावान् होतेहे और असतकालेआन्योंवालेके नेत्र फूटजातेहे १८४ और मोटे नेत्रोंवाला मंत्री होताहै और श्यामनेत्रोंवालासोभाग्यकर्के युक्त होताहै और दीनदृष्टिवाला धनहीनहोताहै और भोगवाल्योंके और धनवाल्योंकेनेत्र स्निग्ध और विस्तारवाले होतेहै १८५ और समुद्र कहताहे जिन के वरावर और गोके दुग्धकीन्याइं नेत्र होतेहैं और कृष्णवर्णके तारयोंवाले होतेहैं और प्रसन्न और वडे और स्निग्ध और चोडे सोशुभ होतेहे १८६ और जिनके नेत्र अलसीकेपुष्पकीन्याइं होतेहैं सोराजाहोतेहैं इहेसमुद्रकावचनहे १८७ और चित्रेकीन्याइंनेत्रोंवालेधनोंकर्के युक्त होतेहैंऔर नेढीदृष्टिवालेलडाईकेप्यारेहोतेहे और विल्लेकीन्याइं और हंसकी न्याइं नेत्रोंवाले नीच होतेहैं १८८

और मोर की न्याई और नउल की न्याई नेत्रों वाले मनुष्य मध्यम होतेहैं और मखीर को न्याई पिंगलनेत्रों वाला सर्वदालक्ष्मी वाला होताहै १८९ और घृत की न्याई पिंगल नेत्रों वाले राजा और भोगोंकर्के युक्त होतेहैं और सवज नेत्रों वाले और हाथी की न्याई पिंगलने त्रों वाले धनके स्वामी होतेहैं १९० और बलवान् गुणों कर्के युक्त पृथ्वीमें चक्रवर्तीहोतेहैं और जिनके तप्तसुवर्णकी न्याई नेत्रहोतेहैं १९१ सो राजा होतेहे असें समुद्रने कहाहै१९२ यो दो केवराबर नेत्रझमकतेहैं सो धनीहोतेहे और तीनके बराबरनेत्रझमकतेहैं सोसुखी होतेहैं १९३ योचारके बराबरनेत्रझमकतेहैं सो बडेधनवाले होतेहैं यो पांच केबराबर नेत्रझमकतेहैं सोचिरकाल जीवतेहैं १९४ अब भ्रुवोंके लक्षण कहतेहैं जिसकियांभ्रुवां मध्यसें उन्नत होवें सो थोडी आयुपावाले होतेहैं और

मयूरनकुलाक्षाश्चनरास्तेमध्यमाःस्मृताः नश्रीस्त्यजतिसर्वत्रपुरुषंमधुपिंगलं १८९ आज्यपिंगलनेत्राश्चराजानोभोगसंयुताः लोचनाहरिताभाश्चगजपिं गधनेश्वराः १९० बलवतोगुणोपेताःपृथिव्यांचक्रवर्तिनः तप्तहाटकवर्णा भेभवेतांयस्यलोचने १९१भूपतिःसतुविज्ञेयःसमुद्रवचनंयथा १९२ द्विमात्रस्प धिनोयेतुधनिनस्तेप्रकीर्त्तिताः त्रिमात्रस्पर्धिनोज्ञेयाःपुरुषाःसुखजीविनः १९३ चतुर्मात्रनिमेषश्चधनवान्परिकीर्त्तितःदीर्घायुषोधर्मरताःपंचमात्रनिमेषिणः१९४ अथभ्रूलक्षणमाह अभ्युन्नताभिरल्पायुषोविशालोन्नताभिरतिसुखिनः विषम भ्रुवोदारिद्रावालेंदुनतभ्रुवःसधनाः १९५ दीर्घाऽसंसक्ताभिर्धनिनः खंडाभि रर्थपरिहीनाः मध्यविनतभ्रुवोयेतेसक्ताःस्त्रीष्वगम्यासु १९६ तथाचस अभ्युन्नताभिःस्वल्पायुर्विशालाभिःसुखान्विताः मध्योन्नताभ्रुवोयेचपापस्त क्ताश्चतेनराः १९७ बालेंदुभ्रूसमाश्चाढ्यादरिद्राविषमभ्रुवः असंलग्नभ्रुवोये तुधनिनस्तेनराःस्मृताः १९८

विस्तारकर्के उन्नतहोवें तब बडे सुखवाले होतेहैं और न्यूनाधिक भ्रुवोंवाले दरिद्रि होतेहे और द्वितीया केचंद्रमाकीन्याई भ्रुवों वाले धनी होतेहै १९५ और लंबियों भ्रुवों वाले और आपसमें नहिमिलता होवें तब धनी होतेहैं और खंडित भ्रुवों वाले धनहीन होतेहे और जिनकिया भ्रुवां मध्यसें नीमीया होवें सो अगम्यास्त्रियोंमें शक्तहोतेहे १९६ और समुद्र कहताहै जिसकियाभ्रुवां माधेमें ऊचीहोवें सो थोडी आयुषा वाला होताहै और विशाल भ्रुवों वाले सुखीहोतेहे और जिनकियां भ्रुवां मध्यसें ऊचीयाहोवें सो पापमें तत्पर होतेहैं १९७ और बालचंद्रमाकीन्याई भ्रुवोंवाले धनीहोतेहे और वि षमभ्रुवों वाले दरिद्रि होतेहैं और जिनकियां भ्रुवांआपसमें नाहि मिलतहोवें सोधनाढ्यहोतेहे १९८

श्रोर खडित भुवों वाले धन हीनहोतेहे श्रोर विदम भुवो वाले नीच होतेहे ॥ श्रव शख श्रोर ललाटके लक्षण कहतेहें ॥ जिसके शख ऊचे श्रौर विस्तार वाले होवे सो धनी होताहे श्रोर नीमेशखोंवालापुत्र श्रौर धनसें रहिनहोताहै श्रौर टेढेमाथेवाले धनहीन होतेहे श्रोर श्रर्धचद्रमा कीन्याइं माथे वाले धनीहोतेहे १९९ श्रोर जिसका माथा शिप्पिकीन्याड श्रागेसे चउडा होवे सो श्राचर्यताको प्राप्त होताहै परोपदेश कर्त्ता होताहे श्रोर जिसका माथा नाडियो कर्के युक्त होवे सो पाप करणे वाला होताहे श्रौर जिसका माथा नाडियो कर्के ऊचा होवे सो धनी होताहै श्रौर स्व स्तिककी न्याई नाडियोकर्के चिन्हत होवे सोवी धनी होताहै स्वस्तिकः सर्वतोभद्रोपमः २००

खंडाभिर्निर्धनाज्ञेयाविपमाभिर्नराधमाः अथशखललाटलक्षणमाह ॥ उन्नतविपुलेःशखैर्धनिनोनिम्नैःसुतार्थसत्यक्ताः विपमललाटाविधनाधनवतो र्धेन्दुसदृशेन ॥ १९९ ॥ शुक्तिविशालैराचार्यतासिरासततैरधर्मरताः उन्नतसिराभिराढ्याःस्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च २०० निम्नललाटावधव धभागिनःक्रूरकर्मनिरताश्चअभ्युन्नतैश्चभूपाःकृपणाःस्युःसवृत्तललाटाः २०१ तथाचसः ललाटेनार्धचद्रेणभवतिपृथिवीश्वराः विपुलेनललाटेनमहाधनयुताः स्मृता २०२ विपमेनाधमाज्ञेयाःपापाःमर्त्याःसिराततैः निम्नेनतुललाटेनक्रू रकर्मरतानरा २०३ अभ्युन्नतैश्चभूपा स्युःसवृत्तै कृपणाःस्मृताः२०४अथ रुदितलक्षणमाह रुदितमदीनमनश्रुस्निग्धंचशुभावहंमनुष्याणां रूक्षदीनप्रचु रास्त्रुचैवनशुभप्रदपुसाम् २०५

ोर नीमे मुन्तकवाला वधवधनको प्राप्तहोताहे श्रौर ऊचेमाथेवाले राजा होतेहे श्रोर गोलमाथेवा े कृपणहोतेहे २०१ ॥ श्रौर समुद्र कहताहै अर्धचंद्रमाकीन्याई माथेवाले राजा होतेहे श्रौर वडे ाथेवाले वडेधनवाले होतेहैं ॥ २०२ श्रौर विषम माथेवाले नीच होतेहे श्रौर नाडियोवाले मा ावाले पापी होतेहे श्रोर नीमेमाथेवाले क्रूरकर्मकरणेवाले होतेहे ॥ २०३ ॥ श्रोर ऊचेमाथेवाले नापति होतेहे श्रौर गोलमाथेवाले कृपण होतेहे ॥ २०४ ॥ श्रव रुदितके लक्षण कहतेहे श्रदी नकीन्याई श्रौर श्रसुपातसें रहित श्रौर स्निग्ध रोदन मनुष्योंको शुभकेदेने वालाहोताहै श्रौर रूक्ष ीर ीनकीन्याई श्रौर वहुतश्रसुपातोकर्केयुक्त रोदन श्रशुभके देनेवाला होताहै ॥ २०५ ॥

और समुद्र कहताहै अदीनकीन्याई और अश्रुपातोंसें हीन और स्निग्ध रोदन शुभ होताहै और रूक्ष और दीनकीन्याई और अश्रुपातोंकर्के युक्त रोदन अनिष्ट करणे वाला होताहै ॥ २०६ ॥ अब हसने के लक्षण कहतेहैं देहकंपके बिना जो हासहै सो शुभके देनेवाला होताहै और नेत्र मीटकर्के पापी हसतेहैं और वारंवारहसनेवाले दुष्टहोतेहैं और उन्मादवाले पीछेसें वारंवार हसतेरहतेहैं २०७ ॥ और समुद्र कहताहै कंपरहित हसना राज्योंका होताहै और शुभके देने वाला होताहै और कंपसाहित, हसना अशुभकों देताहै और दोषकर्के युक्त योहै सो वारंवार हसताहै और नेत्र मीलनकर्के हसना अशुभके देनेवाला होताहै ॥ २०८ ॥ अब माथेकी रेखाके लक्षण कहतेहैं जिसके सारे माथेमें तीन रेखा प्रकट होवें सो सौ । १०० । वर्ष जीताहै और जिसके माथेमें चाररेखा होवें सो राजा होता

तथाचसमुद्रः अदीनानस्रुसाहितंस्निग्धंचरुदितंशुभम् ॥ रूक्षंदीनंवाष्पयुतंपुरुषाणामनिष्टदम् २०६ अथहासितलक्षणमाह ॥ हसितंशुभदमकंपंसनिमीलितलोचनंतुपापस्य ॥ दुष्टस्यहासितमसकृत्सोन्मादस्यासकृत्प्रांते २०७ तथाचसमुद्रः हासितंकंपरहितंनृपाणामन्यथाऽशुभम् ॥ असकृद्दोषयुक्तस्यमीलिताक्षस्यचाशुभम् २०८ अथललाटरेखालक्षणमाह ॥ तिस्रोरेखाः शतजीविनांललाटायताःस्थितायदिताः ॥ चतसृभिरवनीशत्वंनवतिश्चायुःसमंचाब्दाः २०९ विच्छिन्नाभिश्चागम्यगामिनोनवतिरप्यरेखेन केशांतोपगताभिर्लेखाभिरशीतिवर्षायुः २१० पंचभिरायुःसप्ततिरेकाग्रावास्थिताभिरपिषष्टिः ॥ वहुरेखेनशतार्धचत्वारिंशच्चवक्राभिः २११ भ्रूलग्नाभिस्त्रिंशद्विंशतिकोवामभागवक्राभिः क्षुद्राभिःस्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चांतरेकल्प्यम् २१२

है और नव्वे ॥ ९० । वर्ष जीताहै ॥ २०९ ॥ और माथेमें रेखावाछिन्न होवें तव अगम्यगामी होताहै और रेखासें रहित माथा होवे तववी नव्वे ९० । वर्ष जीताहै और केशपर्यंत लंबीया रेखा होवें तव अस्सी ८० वर्ष जीताहै ॥ २१० । और पांचरेखाकर्के सत्तर ७० वर्ष आयु होताहै और आगेसें दूसरीरेखा विस्तारकर्के युक्त होवे तव साठवर्ष आयु कहाहै और वहुत रेखा जिसके माथेमें होवेंसोपंचाशत् ५० वर्ष आयुवालाहोताहैऔरजिसकेमाथेमेंवक्ररेखाहोवेंतिसकाआयुचालीवर्षहोता, है२११ और छोटिया रेखा जिसकेमाथेमेंहोवेंसो थोडी आयुवाला होताहैऔरवडीछोटीरेखामें अनुपातकर्के आयु होताहै २१२

श्रीर समुद्र कहताहै जिसके माथेमें पांचरेखा होवें सो धनी होताहै श्रीर ऐश्वर्यकों प्राप्त होयकर्के स
। १०० । वर्ष जीताहै ॥ २१३ ॥ श्रीर जिसके माथेमें चाररेखा होतीयांहैं सो अस्सी ८० । व
जीताहै श्रीर जिसके माथेमें तीन रेखा होवें सो सत्तर ॥ ७० ॥वर्ष जीताहै श्रीर जिसके माथेमें दे
रेखा होवेंसो ६० वर्ष जीताहै श्रीर एकरेखाकर्के चालीववर्षजीताहै २१४श्रीर जिसकेमाथेमेंरेखा नहि
होवें सो निधिका स्वामी होताहै श्रीर जिसके माथेमें छिन्नरेखा होवे सो पापी होताहै ॥ २१५
श्रीर छोटि रेखा वाले थोडी श्रायुः श्रीर व्याधिकर्के युक्त होतेहैं२१६ श्रीर जिसके माथेमें त्रिशूल
श्रीर पट्ट होताहै सो ऐश्वर्यवाला श्रीर सेनाका पति होताहै ॥ २१७ ।
अथ शिरके लक्षण कहतेहैं मंडलाकारशिरवाले गौश्रोंकर्के युक्त होतेहैं श्रौर छत्रकीन्याई शिरवालेरा
जा होतेहैं श्रौर चिपिटे शिरवाले मातापिताके मारणेवाले होतेहैं श्रौर श्रस्थियुक्त शिरवाले चिरकालक

तथाचसमुद्रःरेखाःपंचललाटेतुयस्यासौधनवान्स्मृतः ॥ शतंजीवतिवर्षाणामै
श्वर्यमधिगच्छति २१३ चतूरेखाद्यशीतिस्तुत्रिभिःसप्ततिरेवच ॥ षष्टिर्द्वा
भ्यांतुरेखाभ्यांचत्वारिंशत्तथैकया २१४ अरेखेनललाटेनभवंतिनिधिपाल
काः रेखाच्छेदेनुविज्ञेयाःपापकर्मरतानराः २१५ अल्पायुषस्तथाल्पासु
व्याधियुक्ताश्चतेसदा २१६ त्रिशूलंपट्टिसंवापिललाटेयस्यदृश्यते ऐश्वर्यंतस्य
विज्ञेयंसेनानांनायकश्चसः ॥ २१७ ॥ अथशिरोलक्षणमाह ॥ परि
मंडलैर्गवाढ्याःच्छत्राकारैःशिरोभिरवनीशाः ॥ चिपिटैःपितृमातृघ्नाःकरोटि
शिरसांचिरान्मृत्युः ॥ २१८ ॥ घटमूर्धाध्वानरुचिर्द्विमस्तकःपापवृद्ध
नैस्त्यक्तः ॥ निम्नंतुशिरोमहतांवहुनिम्नमनर्थदंभवति ॥ २१९ ॥ तथा
समुद्रः उक्तां तिदोनिम्नशिरःअल्पोपहतएवच च्छत्राकारशिरोराजागवाढ्यःप
रिमंडलःविषमंतुदरिद्राणांशिरोदीर्घंचिरायुपाम् २२० नागकुंभशिरोराजा स
मैं सर्वत्रभोगिनः ॥ अधुनामूर्धजलक्षणमाह ॥ एकैकभवैःस्निग्धैःकृष्णैराकुं
चितैरभिन्नाग्रैः ॥ मृदुभिर्नचातिवहुभिःकेशैःसुखभाक्नरेंद्रोवा २२१

के मरतेहैं २१८ श्रौर घडेकीन्याई शिरवाले मार्गमें रत रहतेहैं श्रौर दो शिरकीन्याई शिरवाले पापी श्रौ
धनहीन होतेहैं श्रौर महत्पुरुषोंकाशिरनिम्नहोताहै श्रौर श्रत्यन्तनीमा शिर अनर्थके देनेवाला होताहै २१९
श्रौर समुद्र कहताहै नीमाशिर अनर्थकों देताहै श्रौर अल्पमृत्युकों देताहैश्रौरछत्रकीन्याई शिरवाला रा
जा होताहै श्रौर गोल शिरवाला गौयोंकर्के युक्त होताहै श्रौर टेढे शिरवाले दरिद्रि होतेहैं श्रौर लंबेशिर
वाले वडीश्रायुषावालेहोतेहैं २२० श्रौरहाथीकेकुंभकीन्याईशिरवालाराजाहोताहैश्रौरदेहकेवरावरशिर
वाले भोगीहोतेहैं श्रवकेशोंके लक्षण कहतेहैं जिसके शिरमें रोमकूपमें एक एक हियाल होवें श्रौर
स्निग्ध होवें श्रौर काले होवें श्रौर श्रागेसें कुंडलोंवालेहोवें श्रौर श्रागेसें भेदकों नहि प्राप्तहोवें श्रौर
कोमल श्रौर श्रत्यंत वहुत नहिंहोवें तव सुखीहोताहै श्रथवा राजा होताहै ॥ २२१ ॥

और धनहीनोंके केश एकरोमकूपमें बहुत होतेहैं और विषम होतेहैं और कपिल होतेहैं और मोटे और आगेसे स्फुटित और कठोर और छोटे होतेहैं और अत्यंत कुंडलोंवाले और बहुतघने होतेहैं ॥ २२२ ॥ और समुद्र कहताहै धनवानोंके केश एक एक और स्निग्ध और काले और अत्यंतघने नहिं होतेहैं और इनों से विपरीत निर्धनोंके होतेहैं ॥ २२३ ॥ और गर्ग कहताहै मनुष्यके अंगोंमें चउदां ॥ १४ ॥ युग्म सम बराबर श्रेष्ठ होतेहैं और चार काले और चार बराबर और दश कमलकीन्याई और दश विस्तार वाले और तीनश्वेत श्रेष्ठ होतेहैं २२४ दोनोंपैर औरगिट्टे औरपट्टोंमेंमांसपिंड औरपासे औरअंडकोश और नेत्र और स्तन और कंठ और ओठ और जानुयोंकीयां संधियां और जंघा और हाथ और भुजा और

बहुमूलविषमकपिलाःस्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च अतिकुटिलाश्चातिघनाश्चमूर्धजावित्तहीनानाम्२२२तथाचस- एकैकसंभवाःस्निग्धाःकृष्णानातिघनाःकचाःपूजितविपरीताश्चनिर्धनानांप्रकीर्त्तिताः२२३तथाचगर्गःचतुर्दशसमोद्वंद्वश्चतुःकृष्णश्चतुःसमः ॥ दशपद्मोदशव्यहत्त्रिशुक्लःशस्यतेनरः २२४ पादौगुल्फौस्फिजौपार्श्वव्टषणौचक्षुषीस्तनौ कंठोष्ठौवंक्षणौजंघेहस्तौबाहूचकुक्षिकौ २२५ चतुर्दशसमद्वंद्वःसमुद्रोनृपुशंसति अक्षितारेभ्रुवौश्मश्रुःकेशाश्चैवासिताःशुभाः२२६ अंगुल्योहृदयंनेत्रेदशनाश्चसमानृणाम्चत्वारःसंप्रशस्यंतेमदैश्वर्यसुखावहाः२२७ जिव्होष्ठंतालुरास्यंचमुखंनेत्रेस्तनौनखाः हस्तौपादौचशस्यंतेपद्माभादशदेहिनाम् ॥ २२८ ॥ पाणिपादमुरोग्रीवाव्टषणौहृदयंशिरः ललाटमुदरंपृष्ठंव्टंहतःपूजितादश ॥ २२९॥

कुक्षी ॥ २२५ ॥ इहे चौदां बराबर श्रेष्ठ होतेहैं और नेत्रोंके तारे और भुवां और दाढी और केश इह चार काले शुभ होतेहैं ॥ २२६ ॥ और अंगुलीयां और हृदय और नेत्र और दंत इहे चार बराबरहोवें तब मद ऐश्वर्य और सुखके देनें वाले होतेहैं ॥ २२७ ॥ और जिव्हा और ओष्ट और तालु और मुख और दोनोंनेत्र और स्तन और नख और हाथ पैर इहे दश मनुष्योंके कमलदलकी आभावाले श्रेष्ट होतेहैं ॥ २२८ ॥ और हाथ और पैर और छाती और गर्दन और अंडकोश और हृदय और शिर और मस्तक और पृष्ट इहे दश मनुष्योंके विस्तारवाले शुभ होतेहैं ॥ २२९ ॥

और नेत्रदोनोंतारासें हीन और दांत श्वेतशुभहोतेहैं इहेलक्षणसंपूर्ण मनुष्योंके कहेहै ॥ २३० ॥ और स्कंदपुराणांतर्गत काशीखंडमें स्त्रीयोंके लक्षण विशेष कहेहै अगस्त्यके प्रति स्कद कहताहै जिस गृहस्थोंके घरमें शुभलक्षणोंवाली स्त्रीहोवे सो सर्व दाकाल सुख भोगताहे इसकारणसें सुखकी समृद्धिके वास्ते प्रथमस्त्रीके लक्षण कहतेहैं १ देह और आवर्त और गंध और तत्वछाया और सत्वपराक्रम और स्वर और गति चलना और वर्ण रंग इह आठप्रकारोंकी बुद्धिवानोंने लक्षणोंकी भूमिकाकहिहै २ और स्कंदजी कहतेहैं हेअगस्त्य पादतलसें लेकर्के और शिरके केशों पर्यंत क्रमकर्के शुभाशुभलक्षणोंको श्रवण कर ३ प्रथम पादतलमें रेखा कहतेहैं और फेर अंगुष्ट और अंगुलीयां और नख कहतेहैं और फेर पृष्ट और गिट्टे दोन

नेत्रेताराविरहितेदशनाश्वसिताःशुभाः एतच्चलक्षणंकृत्स्नंनराणांसमुदाहृतम् ॥ २३० ॥ अथस्कंदपुराणांतर्गतकाशीखंडेस्त्रीलक्षणेविशेषमाह स्कंदउवाच सदागृहीसुखंभुंक्तेस्त्रीलक्षणवतीयदि अतःसुखसमृद्ध्यर्थमादौलक्षणमीक्षयेत् १ ॥ वपुरावर्तगंधाश्चछायासत्वंस्वरोगतिः वर्णश्चेदष्टधाप्रोक्ताबुधैर्लक्षणभुमिका२आपादतलमारभ्ययावन्मौलिरुहंक्रमात् शुभाशुभानिवक्ष्यामिलक्षणानिमुनेशृणु ॥ ३ आदौपादतलंरेखास्ततोगुष्टांगुलीनखाःपृष्टंगुल्फद्वयंपार्ष्णिजंघेरोमाणिजानुनि ४ उरूकटीनितंबस्फिग् भगोजघनवस्तिकेनाभिःकुक्षिद्वयंपार्श्वोदरमध्यवलित्रयं ५ रोमालीहृदयंवक्षोवक्षोजद्वयचूचुकं जत्रुस्कंधांसकक्षोर्दोर्मणिबंधकरद्वयम् ६ पाणिपृष्टंपाणितलंरेखांगुष्टांगुलीनखाःपृष्टिःकृकाटिकाकंठचिबुकंचहनूद्वयम् ७

और दोनो पासे और जंघा दोनों और रोमोंके लक्षण और दोनों जानुयोंके लक्षण कहतेहै ॥ ४ और पट और स्फ और नितंब कटिमें मासपिंडके लक्षण फेर योनिके और जंघोंके और नाभिकेनीचे वस्तिके और नाभिके और दोनों व्यखीयोंके और दोनों पासयोंके और पेटके मध्यमें तीन वलियोंके लक्षण कहतेहै ॥ ५ ॥ और रोमोंकी पंकिके और हृदयके और छातीके और दोनों कुचोंके और कुचाग्रभागोंके लक्षण कहतेहैं और मोटचों और कण्ठकी संधियोंकानामजत्रुहै तिसके और मोंढयोंके और दोनों भुजोंके और भुजोंके मणिबंधके और दोनो हाथोंके लक्षण कहतेहैं ॥ ६ ॥ और हाथोंकी पृष्टके लक्षण और तलियोंके लक्षण और हाथकी रेखा और अंगुष्ट और अगुलियोंके और नखोंकेलक्षणऔरपृष्ट औरकयाटिके और गलऔर ठुडी और दोनों खाडीयोंके लक्षण कहतेहैं ७

श्रौर दोनोंकपोलोंके लक्षण श्रौर मुख श्रौर नीचेके श्रौर ऊपरके दोनोंश्रोठोंके लक्षण श्रौर दंत श्रौर जिन्हाके लक्षण श्रौर घंटिका श्रोर तालुके लक्षण श्रौर हसनेके लक्षण श्रौर नासिकाके लक्षण श्रौर छिकाके लक्षण श्रौर नेत्रोंके लक्षण कहतेहैं ८ श्रौर पिम्मणियोंके लक्षण श्रौर भ्रुवोंके लक्षण श्रौर कर्णके लक्षण श्रौर मस्तकके लक्षण श्रौर शिरके श्रौर सीमंत सिंधूराधारस्थानके लक्षण श्रौर केशोंके लक्षण इह छयासठ ६६ स्त्रीयोंके लक्षणणोंकी श्रेष्ठ भूमिका कहिहै ९ सो क्रमकर्के पादतलसें लेकर्के शुभाशुभलक्षणकहतेहैं ॥ स्त्रीयोंके पैरोंके तल स्निग्ध श्रौर मांसकर्केयुक्त श्रौर कोमल श्रौर बरावर श्रौर परसोनेसें रहित श्रौर उष्ण श्रौर लालवर्णके वहुत भोगके योग्य होतेहैं १० श्रौर रूक्ष श्रौर वर्णरहित श्रौर कठोर श्रौर खंडित प्रतिविंवक जिनका वालुकादि स्थानोंमें खंडित चिन्हलगे श्रौर छजकी न्याई श्रगेसें विस्तारवाले श्रौर शुष्क पाद

कपोलौवक्रमधरोत्तरोष्ठौद्विजजिव्हिकाः ॥ घंटिकातालुहसितंनासिकाक्षुतम
क्षिणी ८ पक्ष्मभ्रू कर्णभालानिमौलिसीमंतमौलिजाः ॥ षष्टिषड्डुत्तरा
योषिदंगलक्षणसत्खनिः ९ स्त्रीणांपादतलंस्निग्धंमांसलंमृदुलंसमं ॥ अस्वे
दमुष्णमरुणंवहुभोगोचितस्मृतं १० रूक्षंविवर्णंपरुषंखंडितंप्रतिविंवकं शू
र्पाकारंविशुष्कचदुःखदौर्भाग्यसूचकम् ११ चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीना
तपत्रवत् यस्याःपादतलेरेखासाभवेत्क्षितिपांगना १२ भवेदखंडभोगा
योर्ध्वमध्यांगुलिसंयुता ॥ रेखाखुसर्पकाकाभादुःखदारिद्र्यसूचका १३ उ
न्नतोमांसलोंगुष्ठोवर्तुलोतुलभोगदः वक्रोह्रस्वश्चचिपटःसुखसौभाग्यभंजकः १४
विधवाविपुलेनस्याद्दीर्घांगुष्ठेनदुर्भगा मृदवोंगुलयःशस्ताघनावृत्ताःसमुन्नताः १५

दुःख श्रौर दौर्भाग्यके करणे वाले होतेहैं ॥ ११ ॥ श्रौर जिसके पैरमें चक्र श्रौर स्वस्तिककीन्याई रेखा श्रौर शख श्रौर कमल श्रौर ध्वजा श्रौर मत्स्य श्रौर छत्रकीन्याई रेखा होवे सो राजाकीराणी होतीहै १२ श्रौर जिसके मध्यमांगुलीपर्यंत ऊर्ध्वरेखा होये सो अखंडित भोगके वास्ते होतीहै श्रौर जिसके पादमें चूहेकी श्रौर सर्पकी श्रौर काककी न्याई रेखा होवे सो दुःख श्रौर दरिद्रके देनेवाली होतीहै १३ श्रौर जिसके पैरका श्रगूठा ऊचा श्रौर मांसकर्केयुक्त श्रौर गोल होवे सो वहुतभोगोंके देनेवालीहोतीहै श्रौर टेढा श्रौर छोटा श्रौर चिपटा श्रंगूठासुख सौभाग्यके नाश करणेवाला होताहै १४ श्रौर श्रत्यंत वडे श्रंगूठेवाली विधवा होतीहै श्रौर लवे श्रंगूठे वालीदुर्भगा होतीहै ॥ श्रौर जिसस्त्रीकिया श्रंगुलियां कोमल श्रौर घनिया श्रौर गोल श्रौरश्रेष्ट ऊंचियां होवें सो शुभ होतीहै १५

और अत्यन्त लंबीयों अंगुलियों वाली कुलटा और कृश अंगुलियों वाली धनहीन होतीहै और अत्यन्त छोटीयों अंगुलियों वाली थोडी आयुषा वाली होतीहै और भुग्नअंगुलियोंवाली, कुटिल कपट करणेवाली होतीहै १६ और चिपिटियों अंगुलियोंवालीदासी होतीहै और विरलीयों अंगुलियोंवाली दरिद्रिणी होतीहै और जिसस्त्रीकी अंगुलि एककेऊपरएकचढीहोवे सो बहुतस्वामियोंको मारकरकेंदूसरेकी दूती होतीहै १७ और जिसस्त्रीके मार्गमेंचलनेसें पृथ्वीसेंबहुत धूली उच्छलें तिसस्त्रीका पांशुलानामकरकेंकहतेहै सो तीनकुलका नाश करतीहै ॥ १८ ॥ और जिसस्त्रीके चलते हुये कनिष्ठिका अंगुलि पृथ्वीमें स्पर्शनहिं करे सो स्त्री एकस्वामीका मारक करके दूसरास्वामी करतीहै १९ और जिसस्त्रीकी अनामिका अंगुली पृथ्वीकोंनाहिं स्पर्शकरतीहै सो

दीर्घांगुलीभि कुलटाकृशाभिरतिनिर्धना ह्रस्वायुष्याचह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी— १६ चिपिटाभिर्भवेद्दासीविरलाभिर्दरिद्रिणी परस्परसमारूढाःपादांगुल्योभवतिहि। १७ हत्वाबहूनपिपतीन्परप्रेष्यातदाभवेत्॥ यस्या पथिसम्यायांत्यारजोभूमे समुच्छलेत् - सापांशुलाप्रजायेतकुलत्रयविनाशिनी। १८ यस्या कनिष्ठिकाभूमिंनगच्छत्या परिस्पृशेत् सानिहत्यपतिंयोषाद्वितीयकुरुते पति — १९ अनामिकाचमध्याचयस्या भूमिंनसंस्पृशेत् पतिद्वयानिहत्याचाद्वितीयाचपतित्रय २० पतिहीनत्वकारिण्यौहीनेतेद्वेडमेयदि प्रदेशिनीभवेद्यस्याअंगुष्ठाद्व्यतिरेकिनी २१ कन्यैवकुलटासास्यादेषएवविनिश्चय २२ स्निग्धा समुन्नतास्ताम्राव्रता पादनखा शुभाः राज्ञीत्वसूचकस्त्रीणांपादपृष्ठंसमुन्नतम् २३ अस्वेदमसिराढ्यचमसृणमृदुमांसल दरिद्रामध्यभग्नेनशिरालेनसदाध्वगा २४

दोस्वामीमारककें तीसरास्वामी करतीहै और जिसकी मध्यमा अंगुलि भूमिका नाहि स्पर्श करतीहै सो तीनस्वामीहतककें चतुर्थ स्वामीकरतीहै २० और जिसस्त्रीकि कनिष्ठिका और अनामिका दोनों अंगुली हीन होवें सो स्वामीसें रहित होतीहै और जिसस्त्रीकी प्रदेशिनी अंगुली अंगूठेसे अधिकहोवे २१ सोस्त्री कुमारीहि व्यभिचारिणी होतीहै निश्चयकरकें २२ और जिसस्त्रीके पैराके नख स्निग्ध और ऊचे और लालरंगके और गोल होवे सो शुभहोतेहै और जिसस्त्रीके पैराकी पृष्ठऊंची होवे सो राजाकी राणी होतीहै २३ और जिसस्त्रीके पेरपसीनेमें और नाडियासें रहित स्निग्ध होवे और कामल और मांसकरके युक्त होवे सो शुभ होतेहै और भुग्न अन्तर्वाले पैरोवालीदरिद्रा होतीहै और नाडियोंवाले पैरोवाली सदामार्गमें चलतीहै २४

अब पैरोंकी ग्रथीजोहैं गिटें तिनके लक्षणकहतेहैं जिसके गिट्योंमे रोमहोवे सो दासी होतीहै और जिसके गिटेमांसरहित होंवेसो दुर्भगाहोतीहै और जिसके गूढ मासकर्क छिपे होवे और नाडियासें हीन होवेंऔरें गोलहोवें सो शुभकहेहै २५ और ,वडेस्थूल और शिथिल देखनेमे आवे सोदुर्भाग्यकोंदेतेहैं अबपेरोंके पश्चाद्भागकेशुभाशुभलक्षणकहतेहैं जिसस्त्रीकेपैरोंकीयाव्वखीर्यावरावरहोवे सोशुभ और वरावरनांहिंहोवें तव दुभगाहोतीहै २६ अवपिंडीयोंके ,शुभाशुभलक्षणकहतेहैं रोमोंसेंरहि त और दोनो वरावर और स्निग्ध और गोल पिंडीयाशुभहोतीयाहैं २७ और जिसकि जघानाडियों ककरहित होवें और सुंदर मनके हरणेवालीयाहोने सो राजाकीस्त्रीहोतीहै २८ और एकरोमवाली राजाकीस्त्री और दो रोमों वाली सुख युक्त और जिसके रोमकूपोंमे तीनरोम होवें सो विधवाहोतीहै ॥

रोमाढ्येनभवेद्दासीनिर्मांसेनचदुर्भगा गूढौगुल्फौशिवायोक्तावासिरालौसुवर्त्तुलौ २५ स्थपुटौशिथिलौदृश्यौस्यातांदौर्भाग्यसूचकौ समपार्ष्णिः शुभानारी पृथुपार्ष्णिश्चदुर्भगा ॥ २६ ॥ कुलटोन्नतपार्ष्णि स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्चदुःखभाक् रोमहीनेसमेस्निग्धेयज्जंघेक्रमवर्त्तुले ॥ २७ ॥ साराजपत्नीभवतिविसिरे सुमनोहरे २८ एकरोमाराजपत्नीद्विरोमाचसुखावहात्रिरोमारोमकूपेपुभवेद्वैधव्यदुःखभाक् ॥ २९ वृत्तपिशितसलग्नजानुयुग्मप्रशस्यते निर्मांसस्वैरचारिण्यादरिद्रायाश्चविश्लथम् ३० विशिरै करभाकारैरुरुभिर्मसृणैर्घनै सुवृत्तैरोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभा ३१ ॥ वैधव्यरोमशैरुक्तदौर्भाग्यचिपिटैरपि मध्यच्छिद्रैर्महादुःखदारिद्र्यंकठिनत्वचे ॥ ३२

२९ अब जानुयोंके लक्षणकहतेहै जिसके दोनों जानू गोल और मास कर्क युक्त होवे सो श्रेष्ठहोतेहैं और स्वैरिणीयोंके जानू मासरहित होतेह और दरिद्रास्त्रीके ढिल्ले होतहे ॥ ३० ॥ अब पट्टाक शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं ॥ जिसके पट नाडियोंसे रहित और करभकन्याई मणिवंध कनि ष्ठिका पर्यंत स्थानकीन्याई वा हाथीके सुंडकीन्याई और आपसमें दोना स्पर्श करें और श्रेष्ठ गोल और रोमोंसे हीन होवे सो राजाकी प्यारी होतीहै ३१ और रोमा करके युक्त होवें तब विधवा होतीहै और चिपटहोवे तब खोटे भाग्योंवाली होतीहै और मध्यमें छिद्रहोवे तब बहुत दु खवाली होतीहै और कठोर चमडे वाले पट दरिद्रणी करतेहै ॥ ३२ ॥

अवकटिकेशुभाशुभलक्षणकहतेहैं चौवी अंगुल विस्तार कर्केचारकोणे वाला और ऊचाकटि भाग स्त्रीयोंका शुभहोताहै ३३ और निम्न और चिपिटा और लंवा और मांसरहित और कठिनऔर छोटा औरोमों कर्के युक्त दुःख और वैवव्यकेकरणेवालाहोताहे ३४ और नितंबका लक्षण कहतेहैं स्त्रीयोंका नितंव ऊचा और मांसयुक मोटा शुभहोताहे औरइससेंविपरीतअशुभहोताहै ३५ अव कटि मास पिंडकाल- कपित्थफलकीन्याई गोलऔर कोमलमांसयुक्त पुष्ट वलिरहित स्फिजदोनों रति सुखके वधावनें वालेहोतेहैं ३६ औरयोनिकच्छूकीपृष्टकीन्याईऔरहाथीकेमोंढेयोंकी न्याईशुभहोतीहैऔर वामेंपा सेंसऊचीहोवेतव कन्याजन्मतियांहैं और दक्षिणपासेसेंऊचीहोवे तव पुत्रजन्मतेहैं ३७ और चूहेकीन्याई रोमोंवाली और गूढमणीवालीऔर श्रेष्ठ निविड और दृढ और मोटी और ऊची और कमलदलकीन्याई

चतुर्भिरंगुलैःशस्ताकटिर्विंशतिसंयुतैः समुन्नतानितंवाढ्याचतुरस्रामृगीदृशाम् ॥ ३३ ॥ विनताचिपिटादीर्घानिर्मांसासंकटाकटिः ह्रस्वारोमयुतानार्यादुःखवैधव्यसूचिका ॥ ३४ ॥ नितंवविंवोनारीणामुन्नतोमांसलःपृथुः महाभोगायसंप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मणेमतः ३५ कपित्थफलवद्वृत्तौमृदुलौमांसलौघनौ स्फिजौवलिविनिर्मुक्तौरतिसौख्यविवर्द्धनौ ३६ शुभःकमठपृष्ठाभोगजस्कंधोपमोभगः वामोन्नतस्तुकन्याजःपुत्रजोदक्षिणोन्नतः ३७ आखुरोमागूढमणिःसुश्लिष्टःसंहतःपृथुःतुंगःकमलववर्णाभःशुभोश्वत्थदलाकृतिः ३८ कुरंगखुररूपोयश्चुल्लिकोदरसन्निभः रोमशोविवृतास्यश्चदृश्यनासोतिदुर्भगः ३९ शंखावर्त्तोभगोयस्यासागर्भमिहनेच्छति चिपिटःकर्पराकारःकिंकिरीपददोभगः ४० वंशवेतसपत्राभोगजरोमोच्चनासिकः विकटःकुटिलाकारोलंवगल्लस्तथाशुभः ४१भगस्यभालंजघनंविस्तीर्णंतुंगमांसलं मृदुलंमृदुरोमाढ्यंदक्षिणावर्त्तमीडितम् ४२

और पिप्पलके पत्रकीन्याई योनि शुभहोतीहे ३८ और हरिणके खुरकीन्याई और चुल्लेकीन्याई और महुतरोमों कर्के युक्त और वडे मुखवाली और जिसकी नासिका देखनेमें आवे सो अत्यंत निंद्यहोतीहै ३९ और जिसस्त्रीकी योनी शंखकीन्याई वालियों वाली होवे सो गर्भनहिं धारतीहे और चिपिटी और ठीकरेकीन्याई सोदूतीहोतीहै ४० और जिसकी योनि वंश और वेतके पत्रकीन्याई होवे और हाथीके रोमोंकीन्याई रोमोंवाली और ऊची नासिकावाली और विकट कुटिलहोवे और लंवे गल वाली अशुभहोतीहै ४१ इस प्रकारकाभगकाललाटउपरिभाग अशुभकहाहै अव जंघाके शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं जिसकी जंघा कोमल और सूक्ष्म रोमों कर्के युक्त और दक्षिणावर्तहोवेसोशुभहोतीहै४२

और वामावर्त्त और मांसरहित और कुटिल योनि वैधव्यके देनेवालीहोतीहैं और संकुचित और नि म्नदुःखके देनेवालीहोतीहैं ४३ अबवस्तिके शुभाशुभलक्षणकहतेहैं नाभीके नीचेचार अंगुलीप्रमाण बस्तीहोतीहे और जिसकी वस्तिविस्तारयुक्त और कोमल और थोडीऊचींहोवे सो शुभकहिहै और रोमोंकर्के और नाडियोंकर्के और रेखाकर्के अंकित अशुभहोतीहै ४४ अबनाभिके लक्षणकहतेहे जिसकीनाभि गंभीर और दक्षिणावर्त्तहोवे सो सुख और संपदाके देनेवालीकहिहै और जिसकीना भिवामावर्त्त और ऊचीहोवे और प्रकटग्रंथीवालीशुभनहिंहोतीहैं ४५ अबदोनोंकुक्षोंके लक्षणकहतेहे जोस्त्रीभारीकुक्षियोंवालीहोतीहे सो पुत्रोंकोजन्मतीहै और सुखदेनेवालीहोतीहै और जिसकीकुक्षि डिडुंकीन्याईहोवे तिसकापुत्रराजाहोताहे ४६ और ऊची और वलियोंकर्के युक्त कुक्षिवालीवंध्या और विरागयुक्त और दासीकमकर्केहोतीहैं ४७ अबपार्श्वोंके लक्षणकहतेहैं जिसके बराबर और

वामावर्त्तंचनिर्मांसंभुग्नंवैधव्यसूचकम् संकटस्थपुटंरूक्षंजघनंदुःखदंसदा ४३
वस्तिःप्रशस्ताविपुलामृद्वीस्तोकसमुन्नता रोमशाचशिरालाचरेखांकानैवशोभ
ना ४४ गंभीरदक्षिणावर्त्तानाभिःस्यात्सुखसंपदेवामावर्त्तासमुत्तानाव्यक्तग्रंथि
र्नशोभना ४५ सूतेसूतान्बहून्नारीपृथुकुक्षिःसुखास्पदं क्षितीशंजनयेत्पुत्रंमंडूका
भेनकुक्षिणा ४६ उन्नतेनवलीभाजासावर्तेनापिकुक्षिणा वंध्याप्रव्रजितादासी
क्रमाद्योषाभवेदिह ४७ समैःसमांसलैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिःशुभैः पार्श्वैः
सौभग्यसुखयोर्निधानंस्यादसंशयम् ४८ यस्यादृश्यशिरेपार्श्वेउन्नतेरोमसंयुते
निरपत्याचदुःशीलासाभवेद्दुःखसेवधिः ४९ उदरेणातितुच्छेनविसिरेणमृदुत्व
चा योषिद्भवतिभोगाढ्यानित्यंमिष्टान्नसेविनी ५० कुंभाकारंदरिद्रायाजठ
रंचमृदंगवत् कूष्मांडाभंयवाभंचदुःपूरंजायतेस्त्रियाः ५१ सुविशालोदरीनारी
निरपत्याचदुर्भगा प्रलंवजठराहंतिश्वशुरंचापिदेवरं ५२

मांसयुक्त और कोमल गुप्त अस्थियोंवाले पास्से शुभहोतेहे और सौभाग्य और संपदाकी खानहोतेहैं इसमें संशयनहिंहै ४८ और जिसस्त्रीके स्तनोंमें नाडियांदेखनमें आवें औरपास्सेउचे और रोमोंकर्के युक्तहोवें सास्त्रीसंतानसेंरहित और दुष्टस्वभाववालीऔरदुःखकीखानहोतीहै ४९ अबउदरकेलक्षणकह तेहैं जिसस्त्रीका छोटापटहोवेऔर नाडियोंकर्केरहितऔरकोमलत्वचाकर्केयुक्तहोवेसोस्त्रीभोगकेयोग्यहो तीहैं और नित्यंप्रतिमिष्टान्नभोजनकरणेवालीहोतीहै ५० और जिसका उदरघडेकी न्याईहोवे सो दरिद्रा होतीहै और जिसकाउदरमृदंगकीन्याईपेटेको औरयवकीन्याईहोवेसोदुःखकरकेभराजाताहै५१ औरवडेविशालउदरवालीस्त्रीसंतानसेंरहित और खोटेभाग्योंवालीहोतीहै औरवडेलंबेपेटवालीस्त्रीसुस रकों अथवा देवरकों हतकर्तीहै ५२

और जिसकाउदर मध्यसेसूक्ष्महोवे सो श्रेष्ठ भाग्योंवाली और जिसके उदरमे तीनरे खापड़े सो भोगकर्के युक्त होतीहै ॥ और जिसके पेटमे सूधी सूक्ष्मरोमों की पंकि होवे सो स्त्री कल्यणकी भूमी होतीहै ५३ और जिसके पेटमे कपिलवर्णकी और टेढी और छेदकोंप्राप्त रोमोंकी पंकिहोवे सो चोरीकरणेवाली और विधवा और खोटे भाग्यों वाली होतीहै ५४ अब हृदयके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीका हृदय रोमोंसे रहित औ बराबर निम्ननहि होताहै सो स्त्रीऐश्वर्य और स्वामीके सुखवाली और पतिकी प्रसन्नताकोंप्राप्त होतीहै ५५ और विस्तारवालेहृदयवालीस्त्री व्यभिचारिणी और दयाहीन होतीहैं और जिसके हृदयमें बहुत रोम होवें सो निश्चयकर्के स्वामीकों हतक तीहै ५६ और जिसकीछाती अठारा १८ अंगुल प्रमाणकी और पुष्ट और उ

मध्यक्षामाचसुभगाभोगाढ्यासवलित्रया ऋज्वीतन्वीचरोमालीयस्यासाशर्मनर्मभृ ५३ कपिलाकुटिलास्थूलाविच्छिन्नारोमराजिकाचौरं वैधव्यदौर्भाग्यविदध्यादिहयोषिताम् ५४ निर्लोमंहृदयंयस्याः समनिम्नत्ववर्जितं ऐश्वर्यंचाप्यैवधव्यंप्रियप्रेमंसमालभेत् ५५ विस्तीर्णहृदयायोषापुंश्चलीनिर्दयातथा उद्भिन्नरोमहृदयापतिंहंतिविनिश्चितं ५६ अष्टादशांगुलततमुरःपीवरमुन्नतंसुखायदुःखायभवेद्रोमशंविषमंपृथु५७ घनौवृत्तौदृढौपीनौसमौशस्तौपयोधरौस्थूलाग्रौविरलौशुष्कौवामोरूणांनशर्मदौ ५८ दक्षिणोन्नतवक्षोजापुत्रिणीत्वग्रणीमतावामोन्नतकुचासूतेकन्यांसौभाग्यसुंदरी अरघट्टघटीतुल्यौकुचौदौःशील्यसूचकौ पीवरास्यौसांतरालौपृथूपांतौनशोभनौ ६० मूलेस्थूलौक्रमकृशौवक्रेतीक्ष्णौपयोधरौ सुखदौपूर्वकालेतुपश्चादत्यंतदुःखदौ ६१

न्नतहोवे सो सुखके वास्ते कहिहै और विषम और रोमोंकर्केयुक्त और बडीभारीदुःख देने वालीहोतीहै ५७ अब कुचोंके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीके स्तन घने और गोल और पुष्ट और दोनोंबराबर होवेंसो श्रेष्ठ होतेहैं और आगेसे मोटे और विरले और शुष्क स्तन स्त्रीयोंके शुभनहिहोतेहै ५८ और जिसस्त्रिका दक्षिणस्तनऊंचाहोवे सो पुत्रजन्मने वाली और श्रेष्ठ होतीहै और जिसका वाम स्तन ऊचा होवे सो कन्या जन्म तीहै ५९ और जिसस्त्रीके स्तनजलघटीयंत्रकी न्याई होवें सो स्त्री खोटेस्वभावेवा ली होतीहै और मोटे मुखवाले और आपसमे अंतरलवाले और मूल से बडे मोटे शुभनहि होतेहैं ६० और कहतेहैं जिसस्त्रीके स्तन मूलमेमोटे और क्रमकर्केआगेसे कृशऔर अग्रभागसें तीक्ष्ण होवें सो प्रथम अवस्थामें सुखदेतेहै और पीछेसेंअत्यंत दुःखदेतेहैं ६१

अवचूचकके लक्षण कहतेहै स्त्रीयोंके कुचकेअग्रभागविड़स्याम और गोलशुभहोतेहैं और अंतरमेंछ पेहुये और लंबे और कृश क्लेशके देनेवाले होतेहैं ६२ अवजत्रुयोंके लक्षण कहतेहैं जिसस्त्रीके मोटे और कठकी संधिया मोटीया होवें सो धनवान्यकी वृद्धि वालीहोतीहै और ढिलीयां अस्थियोंवाली और नीमियां अस्थियोंवाली और न्यूनाधिक अस्थियोंवाली दरिद्रेणी होतीहै ६३ अव मोढधोंके लक्षण कहतेहैं जिसके मोंढे अवद्ध नीमे और लंबे नहिहोवें और मोटेशु भहोतेहैं और टेढे और अत्यतमोटे और रोमों करकेयुक होवें सो दासी और विधवा करणे वाले होतेहैं ६४ और अंसदोनों गूढ और मांसमें मिलेहुये शुभहोतेहैं और ऊंचे अग्रवाले विधवाकर्तेहै और मासरहितदुःखदेतेहैं ६५ औरकछांदोनों सूक्ष्मरोमोंवालीया और मासयुक्तओरस्निग्धऊंचीयांशुभहोतीयाहै

सुदशांचूचकयुगंशस्तंश्यामंसुवर्तुलं अंतर्मग्नंचदीर्घंचकृशंक्लेशायजायते ॥ ६२ ॥ पीवराभ्यांजत्रुभ्यांधनधान्यनिधिर्वधूः श्लथास्थिभ्यांचानिम्नाभ्यां विपमाभ्यांदरिद्रिणी ॥ ६३ ॥ अवद्धावनतौस्कंधावदीर्घौवकृशौशुभौ वक्रौ स्थूलौचरोमाढ्यौप्रेष्यवैधव्यसूचकौ ॥ ६४ ॥ निगूढसंधीसस्तावंशौशुभा वंसौसुसंहतौ वैधव्यदौसमुच्चाग्रौनिर्मांसावातिदुःखदौ ६५ कक्षेसुसूक्ष्मरो मेचतुंगेस्निग्धेचमांसले शस्तेनशस्तेगंभीरेसिरालेस्वेदमेदुरे ६६ स्यतांदोषौ तुनिर्दोषौगूढास्थिग्रंथिकोमलौ विसिरौचविरोमाणौसरलौहरिणीदृशां ॥ ६७ वैधव्यंस्थूलरोमाणौह्रस्वौदौर्भाग्यसूचकौ परिक्लेशायनारीणांपरिदृश्यसिरौभु जौ ६८ अंभोजमुकुलाकारमंगुष्ठांगुलिसंमुखं ॥ हस्तद्वयमृगाक्षीणांवहुभो गायजायते ६९ मृदुमध्योन्नतंरक्ततलंपाण्योररंध्रकं ॥ प्रशस्तंशस्तरेखाढ्य मल्परेखशुभश्रियं ॥ ७० ॥

और गंभीर और नाडियोंकरकेयुक्त और पसीनेकरके युक्त श्रेष्ठनहिहै ६६ और भुजादोषरहित और गूढअस्थिवालीया और कोमल और नाडियोंसे और रोमोंसे रहितशुभहोतीयाहै ६७ और जिसस्त्रीके भुजोंमें मोटे रोम होवें सो विधवा होतीहै और जिसकी दोनो भुजा छोटियां होवें सो स्त्री दुर्भगाहोतीहै और जिनस्त्रीयोंकी भुजों में नाडिया देखनेमें आवेंसो क्लेश करके युक्त होतियांहैं ६८ अवहाथोंके शुभाशुभ लक्षण कहतेहैं कमलकी डोडीकीन्याई अंगुष्ट और अंगुली यां संमुख सूधीयां जिसमें अपसे दोनो हाथस्त्रीयोंके वहुत भोगके निमित्त होतेहैं ६९ पाणिल क्षणलक्षणमाह जिसकीयां तलियां कोमल और मध्यमें ऊंचिया होवें और छिद्ररहित होवें और श्रेष्ठरेखाकरके युक्त और थोडियां रेखां वाले हाथ शुभ होतेहैं ७०

और बहु रेखोंकर्के विधवा होतीहै और रेखाहीन हाथोंवाली दरिद्रणी होतीहै और नाडियों कर्के युक्त हाथोंवाली भिक्षामागनें वाली होतीहै ७१ और हाथोंकी पृष्ट नाडियों सें रहित और रोंमोंसें रहित और ऊचीशुभ होतीहै और रोंमोंकर्के युक्त और नाडिया कर्के युक्त और नीमी हाथोंकी पृष्ट वाली और नाडिया कर्के युक्त हाथ वाली स्त्रीकात्यागकरे ७२ अब हाथकी रेखाकेलक्षण कहतेहे रक्त वर्णकीया और प्रकट और स्निग्ध और पूर्ण त्रुटित नहिं होवें और गोल होवें अयसिगा रेखा स्त्रीया के हाथमे भाग्योंके अनुसार शुभहोतिमाहै ७३ और जिसके हाथोंमें मच्छकीन्याईं रेखा होवे सोसौभाग्यवाली होतीहै और जिसकेहाथमेंस्वस्तिक त्रिकोण सदृशरेखा होवे सो धनवाली होतीहै और जिसके हाथमें कमल होवे सो राजाकी राणी होतीहै और राज्यकरणे वाले पुत्रको जन्मती है ७४ और जिसके हाथमें नद्यावर्त्त जो स्वस्तिकहै सो प्रदक्षिणावर्त्त होवे सो चक्रवर्ती रा

विधवाबहुरेखेणविरेखेणदरिद्रिणी ॥ भिक्षुकीतुसिराढ्येननारीकरतलेनवै ॥ ७१ ॥ विरोमविसिरंशस्तंपाणिपृष्टंसमुन्नतम् ॥ वैधव्यहेतुरोमाढ्यं निम्नंसिरायुतंत्यजेत् ॥ ७२ ॥ रक्ताव्यक्तागंभीराचस्निग्धापूर्णाचवर्त्तुला ॥ कररेखांगनायाःस्याच्छुभाभाग्यानुसारतः ॥ ७३ ॥ मत्स्येनशुभगानारीस्वस्तिकेनवसुप्रदा ॥ पद्मेनभूपतेःपत्नीजनयेद्भूपतिंसुतम् ७४ चक्रवर्त्तिस्त्रियाः पाणौनंद्यावर्त्तःप्रदक्षिणःशंखातपत्रकमठानृपमातृत्वसूचकाः ७५ तुलामानाकृतौरेखेवणिक्पत्नीत्वहेतुके ॥ गजवाजिवृषाकाराःकरेवामेमृगीदृशां ७६ रेखाप्रासादवज्राभाब्रूयुस्तीर्थकरंसुतं ॥ कृषीवलस्यपत्नीस्याच्छकटेनयुगेनवा ७७ चामरांकुशकोदंडैराजपत्नीभवेद्ध्रुव ॥ अंगुष्ठमूलान्निर्गत्यरेखायातिकनिष्ठिकां ७८ यदिसापतिहंत्रीस्याद्दूरतस्तांत्यजेत्सुधीः ॥ त्रिशूलासिगदाशक्तिदुंदुभ्याकृतिरेखया ७९

जाकी राणी होतीहै और शंख और छत्र कछोपड जिसके हाथमें होवें सो राजमाता होतीहै ७५ और जिसके हाथमें तुला दंडकीन्याईं रेखा होवे सो वणियेंकी स्त्री होतीहै और जिसके हाथमें हाथी औरघोडेकी और बैलकी न्याईंवामहाथमे रेखा होवें ७६ और महलकीन्याईं और वज्रकी न्याईं रेखा होवें सो तीर्थ कर्त्ता और शास्त्रकरणे वाले पुत्रको जन्मतीहै और जिसके हाथमें गाडीकी न्याईं रेखा होवे सो खेतीकरणेवालेकीस्त्री होतीहै ७७ और चौरी और अंकुश और धनुषकी न्याईं रेखा कर्के राजाकी राणीहोतीहै और जिसस्त्रीके हाथमें अंगूठेके मूलमेंसे कर्के कनिष्टका पर्यंत रेखा होवे सो स्त्री पतिके हनकरणे वाली होतीहै तिसको दूरसेंहि त्यागकरे और जिसके हाथमें त्रिशूलकीन्याईंऔरगड्गकीन्याईंगदाकीन्याईं और शक्तिकीन्याईं और वडे नगारेकी न्याईंरेखाहोवें

सो स्त्री दानकर्के पृथ्वीमें यशवाली होतीहै और जिसस्त्रीके हाथमें कंकपक्षिकीन्यांई और डिडूकी न्यांई और गिद्दडकीन्यांई और भिग्याडकीन्यांई और विछूकीन्यांई और सर्पकीन्यांई रेखा होवें और खोतेकीन्यांई और ऊठकीन्यांई और विल्लेकीन्यांई रेखाहोवें ॥ सो दुःखकेदेनेवालियां होतियाहै ८० अवअंगूठेकेलक्षणकहतेहै सूधा और गोल अंगुष्ठशुभ होताहै और गोल नखों वाला और कोमल शुभहोताहै ८१ अवअंगुलियोंकेलक्षणकहतेहै श्रेष्ठग्रंथियोंवालियां और गोल और क्रमकर्के आगेसेंकृश शुभहोतियांहै और चिपिटियां और स्थूल ॥ और रूक्ष और पृष्टमें रोमों वालियां अशुभहोतियांहै ८२ और अत्यंत छोटियां और कृश और टेढियां और रोमोंवालियां और बहुतग्रंथियोंवालिया अंगुलियां स्त्रीयोंकियां दुःखके देने वालियां होतियांहैं ८३ और लालवर्ण और

नितंविनीकीर्तिमतीत्यागेनपृथिवीतले कंकमंडूकजंवूकवृकवृश्चिकभोगिनः रासभोष्ट्रविडालाःस्युःकरस्था दुःखदाःस्त्रियाः ८० शुभदःसरलोंगुष्ठोवृत्तो वृत्तनखोमृदुः ॥ ८१ ॥ अंगुल्यश्चसुपर्वाणोदीर्घावृत्ताःक्रमात्कृशाः चिपिटास्थ पुटारूक्षाःपृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ८२ अतिह्रस्वाःकृशावक्राविरलारोमहेतुकाः दुःखायांगुलयःस्त्रीणांवहुपर्वसमन्विताः ॥ ८३ ॥ अरुणाःसशिखास्तुंगाःकर जाःसुदृशांशुभाः निम्नाविवर्णाःशुक्त्याभाःपीतादारिद्र्यदायकाः ॥ ८४ ॥ नखे पुर्विंदवःश्वेताःप्रायःस्युःस्वैरिणीस्त्रियाः पुरुषाअपिजायंतेदुःखिनःपुष्पितै र्नखैः ॥ ८५ ॥ अंतर्निमग्नवंशास्थिःपृष्ठिःस्यान्मांसलाशुभा पृष्ठेनरोमयुक्तेनवै धव्यंलभतेध्रुवम् ८६ भुग्नेनविनतेनापिससिरेणापिदुःखिता ऋज्वीकृकाटि काश्रेष्ठासमांसाचसमुन्नता ८७

शिखायुक्त ऊचे नख ॥ स्त्रीयोंके शुभहोतेहैं और निम्न और विवर्ण और सिप्पोंकी न्यांई और पीले दारिद्रकेदेनेवाले होतेहैं ॥ ८४ ॥ और जिनोंस्त्रीयोंके नखोंमे श्वेतवर्णके विंदुहोवें सो स्त्रीयां वाहुल्यता कर्के स्वैरिणिया होतियांहैं और श्वेतविंदुओंवाले नख पुरुषोके वी दुःखदेनेवाले होतेहैं ॥ ८५ ॥ अवपृष्ठके लक्षण कहतेहैं जिसकीपृष्ठ अंदरकों नीमी होवे और वंशकीन्यांई टेढी अस्थियोंवाली और मासकर्के युक्त शुभहोतीहै और जिसकी पृष्ठरोमोंकर्के युक्त होवे सो निश्चयकर्के विधवा होतीहै ८६ और जिसकीपृष्ट भुग्न कुटिलहोवे और नीमीहोवे और नाडियोंकर्के युक्तहोवे सो दुःखित होतीहै अवकृकाटिकाकेलक्षणकहतेहैं जिसकी कव्याडी सूधी और मासकर्के युक्त और ऊची होवेसो शुभ होतीहै ८७

और शुष्क और कुटिल और रोमोंवाली और नीमी और नाडियोंकर्केयुक्त अशुभ दुःखकेदेने वाली होतीहै अब कंठके लक्षण कहतेहै जिसका गल और मांसकर्के युक्त और गोल और चार अंगुल प्रमाण शुभहोताहै ८८ और गर्दनतीनरेखावाली और गूढअस्थियोंवाली शुभहोतीहै और मांसरहित और चिपिटी और लंबी और निम्न शुभनहि होतीहे ॥ ८९ ॥ और मोटी गर्दन वाली विधवा और टेढीगर्दनवाली दासी और चिपिटी गर्दनवाली वंध्या और छोटीगर्दनवाली पुत्रहीन होतीहै ॥ ९० अब चिबुकके लक्षण कहतेहैं ठुवी दोअंगुलप्रमाणकर्के और गोल और पुष्ट और कोमल श्रेष्ट होती है और मोटी और दोविभागवाली और चौडी अशुभ होतीहै ॥ ९१ अब हनूकेलक्षणकहतेहैं

शुष्काशिरालारोमाढ्यविशालाकुटिलाशुभा मांसलोवर्तुलःकंठःप्रशस्तश्चतु रंगुलः ॥ ८८ ॥ शस्ताग्रीवात्रिरेखांकात्वव्यक्ता स्थिसुसंहता नि र्मांसाचिपिटादीर्घास्थपुटानशुभप्रदा ॥ ८९ ॥ स्थूलग्रीवाचविध वावक्रग्रीवाचकिंकरी वंध्याहिचिपिटग्रीवाह्रस्वग्रीवाचनिःसुता ९० चिवुकं द्व्यंगुलंशस्तंवृत्तंपीनंसुकोमलं स्थूलंद्विधासंविभक्तमायतंरोमशंत्यजेत् ९१ हनुश्चिवुकसंलग्नानिर्लोमासुघनाशुभा वक्रास्थूलाकृशाह्रस्वारोमशानशुभप्रदा ९२ शस्तौकपोलौवामाक्ष्याःपीनौवृत्तौसमुन्नतौ रोमशौपरुषौनिम्नौनिर्मांसौ परिवर्जयेत् ९३ समंसमांसंसुस्निग्धंस्वामोदंवर्तुलंमुखं जनितवदनछायंधन्या नामिहजायते९४पाटलोवर्तुलःस्निग्धोलेखाभूषितमध्यभूः सीमंतिनीनामधरो धराजानिप्रियोभवेत् ९५ कृशःप्रलंबस्फुटितोरूक्षोदौर्भाग्यसूचकःश्यावःस्थू लोऽधरोष्ठःस्याद्वैधव्यकलहप्रदः ९६

हनूजो साडीहैसो रोमहीनऔर ठुन्नीकर्केयुक्त और घनी शुभहोतीहै और वक्र और मोटी औरदृश और छोटी और रोमोंकर्के युक्त शुभ नहि होतीहै ९२ अब कपोलोंके लक्षण कहतेहैं स्त्रीके कपोल पुष्ट और गोल और ऊंचे शुभहोतेहैं और रोमोंवाले और कठोरऔर नीमे और मांसहीन अशुभ होतेहैं ९३ अब मुखके लक्षण कहतेंह स्त्रीका मुख मांसयुक्त और स्निग्ध और सुगंधिवाला और गोल शुभहोताहै । ९४ । अब नीचेके होटके लक्षण कहतेहैं पाटलके पुष्पकीन्याई लाल औरगोलऔर स्निग्धऔर रेखा कर्के भूषित मध्यस्थानजिसका अधमो सो राजाकी प्यारी होतीहै ९५ और स्फुटित और कृश और लंबा और रूक्ष खोटे भाग्यको सूचन कर्ताहै और कापिल और मोटा विधवा कर्ताहै और कलहको देताहै ९६

अव उत्तरोष्ठके लक्षण कहतेहे स्त्रीका ऊपरका ओठ स्निग्ध श्रेष्ठभोगदेताहै और किंचित् मध्यभागसें ऊंचा और रोमहीन शुभ होताहै और उलटा होवेतो अशुभ कर्ताहै ९७ अव दंतोंके लक्षण कहतेहें गौके दुग्धकीन्याई वर्णवाले और वत्री ३२ संख्याकर्के शुभ होतेहें और नीचेसें और ऊपरसें तुल्य होवें और किंचित् उन्नत होवें सो शुभहोतेहें ९८ और पीले और धूडे वर्णके और मोटे और लंवे और दोपंक्तिवाले और सिप्पींकी न्याई और विरले दुःख और दुर्भाग्यका कारण होतेहै ९९ और जिसस्त्रीके दंत नीचेके दंतोंसें ऊपरके अधिकहोवें सो स्त्री माताकों भक्षणकर्तीहै और जिसके दंत विकराल होवें सो स्वामीसें हीन होतीहै और जिसके विरले होवें सो व्यभिचारिणी होतीहैं ॥ १०० ॥ अव जिव्हाके लक्षणक तेहें जिसस्त्रीकी श्रेष्ठ लाल वर्णकी जिव्हा होवे और कोमल होवे सो स्त्री मीठा भोजन कर्तीहै औरश्वेतवर्ण कीजिव्हा और आगे सें विस्तारवाली होवे तवदुखप्राप्तकर्तीहै ॥ १०१ ॥

मसृणोमत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठःसुभोगदः किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमाविपरीतोवि रुद्धकृत् ९७ गोक्षीरसन्निभाःस्निग्धाद्वात्रिंशद्दशनाःशुभाः ॥ अधस्तादुपरि ष्टाच्चसमास्तोकसमुन्नताः ९८ पीताःश्यावाश्चदशनाःस्थूलादीर्घाद्विपंक्तयः शुक्त्याकाराश्चविरलादुःखदौर्भाग्यकारणं ९९ अधस्तादधिकैर्दंतैर्मातरंभक्षये त्स्फुटं पतिहीनाचविकटैःकुलटाविरलैर्भवेत् १०० जिव्हेष्टमिष्टभोक्त्रीस्याच्छोणा मृद्वीतथासिता दुःखायमध्यसंकीर्णापुरोभागसविस्तरा १०१ सितयातोय मरणंश्यामयाकलहप्रिया दरिद्रिणीमांसलयालंवयाऽभक्ष्यभक्षिणी १०२ वि शालयारसनयाप्रमदातिप्रमादभाक्स्निग्धंकोकनदाभासंप्रशस्तंतालुकोमलम् १०३ सितेतालुनिवैधव्यंपीतेप्रव्रजिताभवेत् ॥ कृष्णेऽपत्यवियोगार्त्तारूक्षेभूरिकुटुंवि नी ॥ १०४ ॥ कंठेस्थूलासुवृत्ताचक्रमतीक्ष्णासुलोहिता अप्रलंवाशुभाघंटा स्थूलाकृष्णाचदुःखदा ॥ १०५ ॥ अलक्षितद्विजंकिंचित्किंचित्फुल्लकपोलकं ॥

और कहतेहै चिट्टीजिव्हावाली जलकर्के मर्तीहै और कालीजिव्हावाली लडाईकी प्यारीहो तीहै और मोटी जिव्हावाली दरिद्रिणी होतीहै और लंवी जिव्हावाली अभक्ष्यवस्तूका भक्षण कर्तीहै १०२ और वडेविस्तारवाली जिव्हाकर्के स्त्रीवडे मदवाली होतीहै और स्निग्ध और लाल वर्ण का तालु मलरहित शुभहोताहै १०३ और जिसस्त्रीका चिट्टा तालुहोवे सो विधवाहो तीहै और जिसका पीला तालु होवे सो विरागिनी होतीहै और कालेतालूवाली पुत्रवियोगकर्के दुखी होतीहै और रूक्ष तालू वाली स्त्रीवडेकुटुंवकर्केयुक्तहोतीहै ॥ १०४ ॥ अवघंटिकाका लक्षण कहतेहै जिसकी घंटिका कंठमेंमोटी और आगेसे गोलऔरक्रमकर्केतीक्ष्णहोवेऔरश्रेष्ठलाल वर्णकीशुभहोतीहैलंवीऔरमोटीऔरकालीअशुभहोतीहै १०५ अवहसनेकेशुभलक्षणकहतेहैस्त्रीका हसनाजिसमेंथोडेदंत देखनेमे आवेंऔर थोडेकपोलऊचेहोवें

ओर नेत्रमीलनन होवे अयसा हसना शुभहोताहै १०६ ॥ अवनासिकाके लक्षण कहतेहैं वरावर गोल दोनो पुट जिसके और छोटे छिद्रवाली शुभहोतीहै और आगेसें मोटी और मध्यसें नीमी और ऊची शुभनहि होतीहै १०७ और जिसकी नासिका आगेसें कुंचित और लालवर्णकी होवे सो वैधव्यक्लेशकों देतीहै और चिपिटी नासिका वाली दूती होतीहै और अत्यंत छोटी और अत्यंतलंवी नासिकावालीलडाईकी प्यारी होतीहै १०८॥ अब छिकके लक्षण कहतेहै जिसकों लंवेस्वरकर्के छिक होवे और इकठीआ दोतीन छिकाहोवें सोवडी आयुषाकों कर्त्तीहे अब नेत्रोके लक्षण कहतेहैं स्रीके नेत्र लालकोंणोंवाले और कालेतारेवाले शुभहोतेहैं ॥ १० और गौकेदुग्धकीन्याई शुक्लतायुक्तऔर कालीया पिम्मणीया वाले शुभहोतेहैं और ऊचेनेत्रँ

स्मितंप्रशस्तंसुदृशामनिमीलितलोचनं ॥१०६समवृत्तपुटानासालघुच्छिद्राशुभावहा ॥ स्थूलाग्रामध्यानिम्नाचनप्रशस्तासमुन्नता १०७॥ आकुंचितारुणाग्राचवैधव्यक्लेशदायिनी परप्रेष्याचचिपिटाह्रस्वादीर्घाकलिप्रिया१०८दीर्घायुःकृत्क्षुतंदीर्घंयुगपद्वित्रिपिंडितं ठलनालोचनेशस्तेरक्तांतेकृष्णतारके १०९ ॥ गोक्षीरवर्णेविशदेसुस्निग्धेकृष्णपक्ष्मणि उन्नताक्षीनदीर्घायुर्वृत्ताक्षीकुलटाभवेत् ॥ ११० मेषाक्षीमहिषाक्षीचकेकराक्षीनशोभना ॥ कामग्रहीतानितरांगोपिंगाक्षीसुदुर्वृता १११॥ पारावताक्षीदुःशीलारक्ताक्षीभर्तृघातिनी ॥ कोटराननाद्दुष्टागजनेत्रानशोभना ११२ पुंश्चलीवामकाणाक्षीवंध्यादक्षिणकाणिका ॥ मधुपिंगाक्षीरमणीधनधान्यसमृद्धिभाक् ११३ पक्ष्मभिःसुघनैःस्निग्धैःकृष्णैःसूक्ष्मैःसुभाग्यभाक् ॥ कपिलैर्विरलैःस्थूलैर्निंद्याभवतिभामिनी ११४ ॥

वाली थोडीआयुकों भोगतीहै और गोल नेत्रोंवाली कुलटा व्यभिचारिणी होतीहै ११० और भेडकीन्याईऔरमहिषकीन्याईऔर केकरनेत्रोंवालीस्त्रीशुभनहि होतीहै और गौकीन्याई पिंगलनेत्रोंवाली प्रतिदिनकामक्रीडा औरदुष्टचारित्रोंकर्के युक्त होतीहै १११ और कबूतरकीन्याई नेत्रोंवाली दुःशीला होतीहै और लालनेत्रोंवाली स्वामीकों हतकर्त्तीहै और ठुणखरकीन्याई नीमेनेत्रोंवाली दुष्टाहोतीहै और हाथीकीन्याईनेत्रोंवाली शुभनहिंहोतीहै ॥ ११२ ॥ और वामेंनेत्रसें काणी पुंश्चली और दक्षिणनेत्रसें काणी वंध्याहोतीहै और मखीरकीन्याई पिंगलनेत्रोंवाली स्त्री धनधान्यकर्केयुक्त होतीहै ॥ ११३ ॥ अदपिम्मणीयोंके लक्षण कहतेहैं पिमणीया घणीया और स्निग्ध और कालीया और सूक्ष्म सुख और भाग्योंकों देतीहै और कपिलीया और विरलीया और मोटीया पिम्मणीयां वाली स्त्री निंद्यहोतीहै ११४

अब भ्रुवोंके लक्षण कहतेहै स्त्रीकियांभ्रुवां दोनों स्निग्ध और कालियां और अपसमें मिलीनाहिंहोवें सो शुभहोतीयाहें और कोमलरोम और धनुषकीन्याई टेढीयांशुभहोतीयांहै १५ और कठोर रोमों बालीआ और मोटीया और खिंडरीहुयां और सूधीयाऔरआपसमें मिलित और वडीलंवीआ और पिंगल वर्ण कियां शुभ नांहि होतीयांहें १६ अब कर्णांके लक्षण कहतेहैं लंबे कर्ण और श्रेष्ट आवर्त्तकर्के युक्त सुख और शुभकों देतेहै और शष्कुलीसें हीन और नाडियों वाले और कुटिल और बहुत छोटे अशुभ होतेहैं १७ अब माथेके लक्षण कहतेहैं स्त्रीका माथा नाडियोंसें हीन और रोमोंसें हीन और अर्ध चन्द्रमाकीन्याई और ऊचा और तीनअंगुल प्रमाणका सौभाग्य और आरोग्यता कोंदेताहै १८ और जिसके माथेमें प्रकट स्वस्तिक रेखा होवे सो राज्यसंपदाकों देतीहै

भ्रुवौसुवर्त्तुलेतन्व्याःस्निग्धेकृष्णेअसंहते प्रशस्तेमृदुरोमाणौसुभ्रुवःकार्मुकाकृती १५ खररोमाचपृथुलाविकीर्णासरलास्त्रियाः नभ्रूःप्रशस्तामिलितादीर्घरोमाचपिंगला १६ लंवौकर्णौशुभावर्त्तौसुखदौचशुभप्रदौ शष्कुलीरहितौनिंद्यौसिरालौकुटिलौकृशौ १७ भालःशिराविरहितोनिर्लोमार्धेन्दुसन्निभः अनिम्नस्त्र्यंगुलोनार्याःसौभाग्यारोग्यकारणं १८ व्यक्तस्वास्तिकरेखंचललाटंराज्यसंपदे प्रलंबमस्तकंयस्यादेवरंहंतिसाध्रुवं १९ रोमशेनशिरालेनप्रांशुनारोगिणीमता ॥ २० ॥ सीमंतःसरलःशस्तोमौलिःशस्तःसमुन्नतः गजकुंभनिभोवृत्त सौभाग्यैश्वर्यसूचकः २१ स्थूलमूर्धाचविधवादीर्घशीर्षाचबधकी विशालेनापिशिरसाभवेद्दौर्भाग्यभाजनं २२ केशाअलिकुलच्छायाःसूक्ष्माःस्निग्धाःसुकोमलाः किंचिदाकुंचिताग्राश्चकुटिलाश्चातिशोभनाः ॥ २३ ॥

स्वस्तिकस्त्रिकोणविशेषः और जिसस्त्रीका लंवामस्तकहोवे सो देवरकों पतिके छोटे भाईको हत कर्त्ताहै १९ और रोमोंवाले और नाडियोंवाले और लंवेमाथेवाली रोगिणी होतीहै २० अब सीमंतके लक्षण कहतेहैं सीमंतस्त्रीका सूधा श्रेष्ट होताहै और माथा ऊचा हाथीके मस्तककीन्याई सौभाग्य और ऐश्वर्यकों कर्त्ताहै २१ अब केशोंके लक्षणकहतेहै जिसके मोटे केशहोवें सो विधवा होतीहै और लंबे शिरवाली वंध्या होतीहै और वडे शिरवालीस्त्री दुष्टभाग्योंवाली होतीहै २२ और जिसस्त्रीके केशभ्रमरकीन्याई श्यामहोवें और सूक्ष्महोवें और स्निग्ध होवें और कोमलहोवें और आगेसें थोडे कुंडलोंवाले होवें और कुटिल होवे सो अत्यंतशुभ होतेहैं २३

श्रौर जिसकेकेश कठोर श्रौर श्रागेसे कुटिल श्रौर विरले श्रौर पिंगलवर्णके श्रौर छोटे श्रौर रूखेहोवेंसो दुःख श्रौर दरिद्र श्रौर बंधन कोंदेतेहैं २४ इहैं छ्यांहट ६६ श्रंगोंके लक्षण कहेहैंश्रव प्रसगसे मशक श्रौर तिलोंके लक्षण कहतेहै श्रौर जिसके भ्रुवोंके मध्यमें श्रथवा माथेमें मशक श्रथवा तिलहोवे सो राज्यप्राप्तकर्त्ताहै श्रपने कुलके श्रनुमानसे श्रौर जिसस्त्रीके वाम कपोलमें लाल वर्णका मशक होवे तिसको मिष्टान्न प्राप्तकर्त्ताहै ॥ २५ ॥ श्रौर तिल श्रौर लाछन चिन्हहृदयमें सो भाग्यको देताहै २६ श्रौर, जिसस्त्रीके दहने स्तनमें लाल चिन्ह होवे सो स्त्रीचार कन्या उौर तीनपुत्रजन्मतीहै ॥ उौर जिसस्त्रीके वामेस्तनमें तिल श्रथवा लालचिन्हहोवे

परुषा.कुटिलाग्राश्चविरलाश्चशिरोरुहाः ॥ पिंगलालघवोरूक्षादुःखदारिद्र्यबंधनाः २४ भ्रुवोरंतर्ललाटेवामशकोराज्यसूचकः वामेकपोलेमशकःशोणोमिष्टान्नदःस्मृतः २५ तिलकंलांछनंवापिहृदिसौभाग्यकारणं यस्यादक्षिणवक्षोजेशोणेतिलकलांछने २६ कन्याचतुष्टयंसूतेसूतेसाचसुतत्रयम् ॥ तिलकं लांछनशोणंयस्यावामेकुचेभवेत् २७ एकंपुत्रंप्रसूयादौततःसाविधवाभवेत् ॥ गुह्यस्यदक्षिणेभागेतिलकंयदियोषितः २८ तदाक्षितिपतेःपत्नीसूतेवाक्षितिपंसुतम् ॥ नासाग्रेमशकःशोणोमहिष्याएवजायते २९ कृष्णःसएवभर्तृघ्नयाःपुंश्चल्याश्चप्रकीर्तितः ३० नाभेरधस्तात्तिलकंमशकोलांछनंशुभं मशकस्तिलकंचिन्हंगुल्फदेशेदरिद्रकृत् ३१ करेकर्णेकपोलेवाकंठेवामेभवेद्यदि एषां त्रयाणामेकंतुप्राग्गर्भेपुत्रदंभवेत् ३२ भालगेनत्रिशूलेननिर्मितेनस्वयंभुवा नितंबिनीसहस्राणांस्वामित्वंयोपिदाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

२७ सो स्त्रीप्रथम एकपुत्रजन्मतीहै उौर जिसस्त्रीके गुह्यस्थानके दक्षिणभागमें तिलहोवे २८ सो राजाकीराणीहोतीहै श्रौर राज्यकरणे वाले पुत्रकोंजन्मतीहै उौर नासाके श्रग्रभागमें लालमशक राजाकी राणीकोंहिहोताहै २९ उौर नासाके श्रग्रमे कालेवर्णका मशक स्वामी घातकरणेवालीको उौर व्यभिचारिणीकों होताहै ३० उौर स्त्रीको नाभिकेनीचे तिल श्रौर मशक श्रौर लाछन शुभहोताहै श्रौरमशकश्रौर तिलश्रौरचिन्हगिट्टेयोंमेंदरिद्रकरणेवाले होतेहैं ३१ श्रौरजिसस्त्रीके हाथ श्रोरकानश्रौरकपोल श्रौर कठ श्रौरवामें श्रग तिल वा मशक वा चिन्हतीनोंमे एक होवे सो स्त्री प्रथमगर्भमें पुत्रजन्मतीहै ३२ श्रौर जिसके माथेमें ब्रह्माने त्रिशूल निर्माण कियाहोवे सो स्त्री हजारस्त्रीकी स्वामिनी होतीहै ३३

और यो स्त्री सोईहुई दतोंकों आपसमें घर्षणकरे और किटिकिटिशब्दकोकरें और विशलावे सो स्त्री श्रेष्ठलक्षणोंवालीवी श्रेष्ठ नाहिं होतीहैं ३४ और जिसस्त्रीके हाथोंमें रोमोंका आवर्त्त चक्र दक्षिणावर्त्तहोवे सो शुभहोताहैं और वामावर्त्तअशुभहोताहै औरनाभिमें और कर्णोंमें और छातीमें दक्षिणावर्त्त शुभकहाहै ३५ और पृष्टके दक्षिणभागमें दक्षिणावर्त्तरोमोंकाचक्रशुभहोताहैऔर जिसस्त्रीके पृष्टके मध्यमें नाभिकीन्याई वर्त्तुल गोल चक्र होवे सो बड़ीआयुषा और पुत्रोंकीवृद्धिकर्त्ताहैं ३६ और भगके माथेमें जिसकों दक्षिणावर्त्त चक्र होवे सो राजाकीस्त्रीहोतीहै और कदाचित्भजेहुएगडेकीन्याई चिन्हहोवे तव बहुतपुत्रोंका सुखदेताहैं ३७ और जिसकेलकमें और गुह्यस्थानमें रोमोंका चक्रहोवे सो स्वामीकों और संतानकों हतकर्त्ताहैं और जिसकेउदरमें और पृष्टमें दोनोंचक्रहोवें तवशुभनहिं होतेहें ३८ और एकहोवेतव स्वामीकों हतकर्त्ताहैं और दोहोवें तव व्यभिचारिणीवी होतीहैं और जिसस्त्रीकेकंठमेंदक्षिणावर्त्तचक्रहोवेसोदुःख और वैधव्यकाकारणहोताहैं ३९ और जिसस्त्रीके सीमंतमें अथवा माथेमें भौंरडी होवे तिसकों दूरसैंहि त्यागकरे सो स्वामिकों एकवर्षकक हतकर्त्ताहैं और जिसकी क्याडीमें भौंरडीहोवे तिसकावी त्यागकरे ४० और रोमोंका आवर्त्तक भौरडी दक्षिणा वर्त्त अथवा वामा वर्त्त मस्तकमें एक वा दो होवें तव वामावर्त्त अशुभहोताहै ४१ सो दशदिनके अदर स्वामि घात करणेवाले होतेहैं और जिसस्त्रीके लकमें आवर्त्त होवे सो व्यभिचारिणी होतीहै और जिसकी नाभीमें होवे सो पतिव्रताहोतीहैं ४२ और जिसकी पृष्टमें आवर्त्तहोवे सो स्वामिके घातकरणेवाली और व्यभिचारिणी होतीहैं ॥ ॥४३ औरस्कधजीअगस्त्यकोंकहतेहैं ॥

सुप्तापरस्परंयातुदंतान्किटिकिटायते ॥ सुलक्षणाप्यशस्तासायाकिंचित्प्रलपेत्तथा ॥ ३४ ॥ पाणौप्रदक्षिणावर्त्तोधन्योवामोनशोभनः ॥ नाभौश्रुतावुरसिवादक्षिणावर्त्तईडितः ॥ ३५ ॥ सुखायदक्षिणावर्त्तःपृष्ठवंशस्यदक्षिणे ॥ अत पृष्ठनाभिसमोवह्वायुःपुत्रवर्द्धनः ३६ राजपत्न्याःप्रदृश्येतभगमौलौप्रदक्षिणः सचेच्छकटभंगःस्याद्बहुपुत्रसुखप्रदः ३७ कटिगोगुह्यगोवर्त्तःपत्यपत्यनिपातनः ॥ स्यातामुदरवेधेनपृष्ठावर्त्तौनशोभनौ ३८ एकेनहंतिभर्त्तारंभवेदन्येनपुंश्चली कंठगोदक्षिणावर्त्तोदुःखवैधव्यहेतुकः ३९ सीमंतेथललाटेवा त्याज्यादूरिप्रयत्नतः सापतिंहंतिवर्षेण यस्यामध्येककाटिकम्४० प्रदक्षिणोवावामोवा रोम्णामावर्त्तकः स्त्रियाः एकोवामूर्द्धनिद्वौवावामेवामगतीअपि ४१ आदशाहपतिघ्नौतौ त्याज्यौदूरात्सुबुद्धिना कट्यावर्त्ताकुटलानाभ्यावर्त्तापतिव्रता ४२ पृष्ठ्यावर्त्ताचभर्त्तृघ्नीकुलटावाथजायते ॥ ४३ ॥ स्कंदउवाच

हेअगस्त्य श्रेष्ठ लक्षणों वाली वी स्त्री दुःशीला व्यभिचारादि स्वभाववाली होवे सो कुलक्षणोंकी शिरोमणी होतीहै और श्रेष्ठ लक्षणोंमें हीन वी जो स्त्री पतिव्रताहोवे सो संपूर्ण शुभलक्षणोंकी भूमि होतीहै ४४ और श्रेष्ठ लक्षणोंवालीस्त्री और श्रेष्ठ चरित्रों वाली और स्वामीके अधीन और स्वामीदेवताजिसका असी स्त्री विश्वेश्वर शिवजीकी कृपासें प्राप्तहोतीहै ॥ ४५ ॥ अब स्त्रीकों सुंदररूपहोणेका हेतु कहतेहैं ॥ जिनों स्त्रीयोंने पूर्वजन्ममें कुमारियाकन्या वा विवाहितस्त्रीया अनेकप्रकारोंके भूषणोंवस्त्रों कर्के अलंकृत कियाहैं सो इसजन्ममें श्रेष्टरूपोंवालियां होतियाहैं ४६ और जिनोंस्त्रीयोंने पूर्वजन्ममें श्रेष्ट तीर्थोंका स्नानकियाहै अथवा देहत्यागकियाहै सो श्रेष्ट रूप और शुभलक्षणोंवालि

॥ सुलक्षणापिदुःशीलाकुलक्षणाशिरोमणिः ॥ अलक्षणापियासाध्वीसर्वलक्षणभूस्तुसा ॥ ४४ ॥ सुलक्षणासुचारित्रास्वाधीनापतिदेवता ॥ विश्वेशानुग्रहादेव गृहेयोपिदवाप्यते ॥ ४५ ॥ अलंकृतास्त्ववासिन्योयाभिःप्राक्तनजन्मनि नानाविधैरलंकारैस्ताःसुरूपाभवंतिहि ४६ सुतीर्थेपुवपुर्याभि क्षालितवाविहायित तालावण्यतरंगिण्योभवतीहसुलक्षणाः ४७ आर्चिताजगतांमातायाभिर्मृडवधूरिह ताभवतिसुचारित्रायोषाःस्वाधीनभर्तृकाः ४८ स्वाधीनपतिकानांचसुशीलानांमृगीदृशां स्वर्गापवर्गावत्रैवसुलक्षणफलंहितत् ४९ सुलक्षणैःसुचरितैरपिमंदायुषंपतिं दीर्घायुषंप्रकुर्वंतिप्रमदाः प्रमदास्पद ५० अतःसुलक्षणायोषा परिणेयाविचक्षणैः लक्षणानिपरीक्ष्यादौहित्वादुर्लक्षणान्यपि ५१ लक्षणानिमयोक्तानिसुखायगृहमेधिनां विवाहानपिवक्ष्यामितन्निबोधघटोद्भव ॥ ५२ ॥ इतिस्त्रीलक्षणम् ॥

याहोतियाहे ४७ और जिनोंने इसजन्ममें पार्वतीकापूजन कियाहै सो श्रेष्ट चरित्रोंवालिया और स्वामीकों वशकरणेवालियाहोतीयाहैं ४८ और जिन्होंस्त्रीयोंके स्वामी अपने अधीनहैं और श्रेष्टस्वभाव जिनकाहै तिनकों स्वर्ग और मोक्ष इहांहिहै सो श्रेष्टलक्षणोंका निश्चय कर्के फलहै ४९ और स्त्री श्रेष्ट लक्षणा कर्के और श्रेष्ट चरित्रों कर्के थोडीआयुषवाले स्वामीकोंवी हर्षादियोंकर्के दीर्घआयुकर्तीहैं ५० इसकारणसेंबुद्धिमानोंनें श्रेष्ट लक्षणोंवाली स्त्रीविवाहने योग्यहै प्रथम दुष्टलक्षणोंकात्याग कर्के श्रेष्ट लक्षणोंकों देखे ५१ इहेस्त्रीयोंके लक्षण गृहस्थियोंके सुखके वास्ते मैंने कहेहे हेअगस्त्य अब आगे आठप्रकारके विवाह श्रवणकर सोकाशीखंडमेंकहेहैं ॥ ५२ ॥ इतिस्त्रीलक्षणानि ॥

अवशिवपुराणके उनतालीसमें ३९ अध्यायमेंगणेशजीके विवाहके प्रसंगमेंस्त्रीयोंकेविशेष लक्षण कहतेहैं प्रथम बुद्धिवान् श्रेष्ठ लक्षणोंवाली कन्याको देखकर्के विवाहे जिसविवाहकरणेसें दुःखकोंनाहिं प्राप्तहोताहै १ तिसकारणसें कन्याके दोषोंकों सपूर्णताकर्के कहताहों जिन्होंलक्षणोंके जानणेकर्के बुद्धिमान् कदाचित् दुःखके समुद्रमें नहिंडूवताहै २ कपिलेरंगकी और केकरनेत्रोंवालीऔर हीनांगी और रोगणी और दुष्टा और रोमाकर्केरहित और बहुतरोमोंवाली और अधिकअंगवाली और पिंगलवर्णवाली ३ और टेढीनासकावाली और अत्यंत कृश और लंबी और स्थूल और श्रवणेवाली इहसंपूर्णत्यागकरणेयोग्यहैं ४ इहेचउदां १४ दोषवाहरके कन्यामें कहेहैं और अंदरकेदोषआरुतासमायोंहे तिनोंनेवडे क्लेशकर्के जाने जातेहैं ॥ ५ ॥ सोप्रकारकहतेहैं तिसकारणसें

अवशिवपुराणेएकोनचत्वारिंशे ३९ ध्यायेगणेशविवाहप्रस्तावेकन्यालक्षणानि तस्मात्परीक्ष्यमतिमान्कन्यांलक्षणसंयुतां विवाहेतयथानस्यात्सर्वथानर्थभाजनम् १ तथाचसंप्रवक्ष्यामिकन्यादोषानशेषत.यान्विज्ञायसुधीःक्वापिनमज्जेद्दुःखसागरे २ कपिलाकेकराक्षीचहीनांगीरोगिणीखला अलोमाचातिलोम्नीचाधिकांगीपिंगलातथा ३ वक्रनासाकृशादीर्घास्थपुटास्खलतिरतथाएताःकन्याःपरित्याज्याविवाहेतुकृतात्मभिः ४ इमेकन्यागतादोषाश्चतुर्दशप्रकीर्तिताः वाह्याआभ्यंतरादोषादुर्ज्ञानाश्रकृतात्मभिः ५ तस्माद्वेदोक्तमार्गत्यदोषज्ञानंभवेदिह अष्टौपिंडान्विधायादौशुद्धमृत्संभवानिह ६ताभिस्तस्याःपरीक्षेतलक्षणंहृद्गतंच यत्क्षेत्राद्गोष्टाद्वेदितःसिंधुतश्च,द्यूतस्थानादैरिणाच्चापिसम्यक् चतुष्पदात्पितृवनात्तथैवमृदोग्राह्याःशुद्धिमभीप्समानैः ७ इत्थमानीयमृत्कूटानसंकीर्णान्पृथक्पृथक् वेदमंत्रेनसमंत्र्यापिंडितांस्तान्गुरुर्वदेत् ॥ ८ ॥ एतन्मध्येत्वयाग्राह्यापिंडमेकसुलक्षणे पिंडंगृह्णातिमतिमान्फलंब्रूयात्सुनिश्चितम् ९

वेदोक्त विधिकर्केअंदरकेदोषोंकाज्ञान होताहै आठ शुद्धमृत्तिकाके पिंडबनावे ६ तिनोंपिंडोंकर्के हृदयगत लक्षणोंकीपरीक्षाकरे एकक्षेत्रकीमृतिका १ औरगौस्थानकी२और वेदीकेस्थानकी ३ औरसमुद्रकेकनारेकी ४ और कल्लरकेस्थानकी ६ और जुरस्तेकी ७ और श्मशानभूमीकी इहेआठस्थानोंकी मृत्तिकालेकर्के अष्टगोलाकारवनावे और तिनको चिन्हितकर्के अष्टरंगकर्के युक्तवनावे तिन्होंकर्के कन्याके अतरीयलक्षणोंका ज्ञान करलेवे इसप्रकारकर्के मृतिकाके गोलेभिन्न सज्ञाकर्के वेदमंत्रोकर्केमंत्रितकरे फेरतिनकों गुरु कन्याके आगेधरदेवे और अयसेंकन्याकोंकहे ८ हेपुत्रिश्रेष्टलक्षणावाली इनकेमध्यसेंएकपिंडकोंउठायलेयजवकन्यापिंडकोंउठायलेवेतववुद्धिमान्उसपिंडकाफलकहदेवेनिश्चयकर्के९

और जबक्षेत्रके पिंडकों उठावे तबअन्नों करकेंयुक्त और स्वामी और पुत्रकेसुखकरकेंयुक्तहोतीहै और अथ गौकेस्थानकेंपिंडकोंउठावे तब स्वामीको अत्यंत प्यारीहोतीहै और वेदिकेपिंडकों उठावेतब बडेरूप वालीहोतीहै १० और नदीके पिंडकोंउठावे तबसमृद्धिवालीहोतीहै और जूएकेंपिंडकों उठावे तबदु ष्टाहोतीहै और चुरस्तेकेंपिंडकोंउठावे तब विरागिनीहोतीहै और कहरके पिंडकों उठावे तब धनहीन होतीहै ११ और श्मशानपिंडकों उठावे तबक्रूरऔर स्वामीकेमारणेवाली होतीहै इहेआठदोषअदर

क्षेत्रपिंडेन्नसंयुक्तापतिपुत्रसुखान्विता गोष्ठपिंडेपतिमतीरूपिणीवेदिपिंडतः १० नदीपिंडेसमृद्धास्यात्द्यूतपिंडेशठाभवेत् चत्वारचतुस्सृतीपिंडादेरिणाद्ध नवर्जिता ११ श्मशानपिंडेसुक्रूरापतिघ्नीस्यान्नसंशयः आंतरंलक्षणंवीक्ष्यकु र्यान्द्वयोर्मनोरमाम् १२ इमेकन्यागतादोषामयातेचप्रकीर्तिताः पितृसंबंधतो दोषान्शृणुत्वंवरवर्णिनि १३ हीनकर्माथनिश्छंदोलोमशोर्शसघ्रामयी क्षयी निष्पौरुषः श्वित्रिकुष्ठ्यपस्मारिणस्तथा दशेमान्पितृदोषांश्चपरीक्ष्यविधिव द्बुधः कन्यांसुलक्षणवतींविवाहेतमुदान्वितः १४ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्री रणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडे सामुद्रिकाऽध्या यश्चतुर्दशः १४



केमैनेकहेहैं इनोंकोंदेखकके स्त्रीकोंविवाहे १२अबपिताकेसंबंधसेंदोषोंकोंश्रवणकरो१३ जिसकन्याका पिताजातीसेंहीनहावे और वह छिनहोवे और बहुतरोमोंवाला और आर्शरोगी और आमरोगीऔरक्ष यीरोगवाला और उद्यमकरकेंरहित और श्वेतकुष्ठी और मिरगीरोगवाला इहेदशदोषपिताके देखक केंबुद्धिमान् श्रेष्ठलक्षणोंवाली कन्याकोप्रसन्नताकरके युक्तविवाहे १४ इतिश्रीजातकखंडेभाषाटीकायां सामुद्रीकलक्षणंनामचतुर्दशोऽध्यायः १४

अवअष्टकवर्गाध्यायकहतेहैं ॥ तिसमें मनुष्यकी जन्मराशिसें लेकर्के संहिताकारोंने जोगो चरफल ग्रहोंकाकहाहै सोमोटाफल वालकोंके बोधकेवास्तेइसग्रंथमें प्रथमकहताहां ॥ १ ॥ जन्मके सूर्यमें यात्राहोतीहै ॥ और दूसरेसूर्यमें भयहोताहै औरतीसरे सूर्यमें लक्ष्मी प्राप्तहोतीहै और चतुर्थमेंव्यसनहोताहै और पांचमेंमेंदीनताहोतीहै और छठेमें शत्रुनाशहोताहै और सातमेंयात्रा और आठमेंमें अत्यंतपीडा और नवममेंकांतिकाक्षय और दशममें वांछासिद्धिऔर एकादशमें लाभ और द्वादशसूर्यमें खर्चहोताहै इहक्रमकर्केसूर्यकाफलकहाहै २ अवक्रमकर्केबाराराशिमें चन्द्रमाका फल कहतेहैं जन्मराशिसेंलेकर्के १ श्रेष्ठअन्नऔर २ धननाश ३ धनलाभ ४ कुक्षिरोग ५ कार्यनाश ६ लाभ ७ धन ८ रोग ९ राजाकाभय १० सुख ११ लाभ १२ शोककर्ताहै इहचंद्रमाकाफलबाराभावकाक्रमसें

॥ अथाष्टकवर्गाध्यायोव्याख्यायते ॥ नृजन्मराशेःखचरप्रचारैर्यद्गोचरेसां हितकैःप्रणीतम् स्थूलफलंतत्किलसंप्रवच्मिबालावबोधप्रदमङ्गनानाम् ॥ १ ॥ गतिर्भयंश्रीर्व्यसनंचदैन्यंशत्रुक्षयोयानमतीवपीडा कांतिक्षयोभीष्टव रिष्टसिद्धिर्लाभोव्ययोऽर्कस्यफलंक्रमेण २ सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभंकुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् वित्तंरुजंराजभयंसुखंचलाभंचशोकंकुरुतेमृगांकः ३ पुत्रय मेंधनस्यस्यचंद्रस्योक्रमसत्फलं कलाक्षयेपरिज्ञेयकलावृद्धौतुसाधुतत् ४ भीतिंक्षतिंवित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशंधनमर्थनाशम् शस्त्रोपघातंचरुजंचरोगं लाभव्ययंभूतनयस्तनोति. ५ वधुंधनंवैरिभयंधनातिपीडांस्थितिंपीडनमर्थ लाभम् खेदंसुखंलाभमथार्थनाशक्रमात्फलंयच्छतिसोमसूनुः ६

कहाहै ३ और पांचमें और नवमें और दूसरेचन्द्रमाका जो खोटाफल कहाहै सो फलकृष्णपक्षमें होताहै और शुक्लपक्षमें २ । ५ । ९ चन्द्रमाका फलशुभहोताहै ॥ ४ ॥ अवमंगलका भावफलकहतेहैं ॥ जन्ममें १ भय और २ खेद और ३ धनलाभ और ४ शत्रुवृद्धि और ५ धननाश और ६ धनलाभ और ७ धननाश और ८ शस्त्रघात और ९ रोगभय और १० रो ग और ११ लाभ और १२ स्थानन खर्च करताहै इहे क्रमकर्के मंगलकाफल कहाहै ५ अव बु धका फल कहतेहैं ॥ जन्मराशीमें १ वधु और २ धन और ३ शत्रुभय और ४ धनलाभ और ५ पीडा और ६ स्थिति और ७ पीडा और ८ धनलाभ और ९ खेद और १० सुख और ११ ला भ और १२ धननाश इहक्रमकर्के जन्मराशिसें बुधफलकहाहै ६

और जन्मराशिमें १ भयऔर २ धनलाभ और ३ पीडाऔर ४ शत्रुवृद्धि और ५ सुख और ६ शोक और ७ राजमान और ८ रोगभयऔर ९ दीनता और १० मानवृद्धि और ११ धनलाभ और १२ पीडा क्रमकरकेजन्मराशीसें वृहस्पतिफलकर्त्ताहै ७ अबशुक्रकाफलकहतेहैं जन्मराशिमें १ शत्रुक्षय और २ अत्यन्तधनलाभ और ३ सुख और ४ धनलाभ और ५ पुत्र प्रीति और ६ शत्रुवृद्धि और ७ शोक और ८ धनलाभ और ९ श्रेष्ट वस्त्र लाभ और १० पीडा और ११ स्वकीयधनलाभइह शुक्रकर्त्ताहै ८ अब शनिका फल कहतेहैं जन्मराशिमें १ अष्टकर्त्ताहै और २ क्लेश और ३ कल्याण और ४ शत्रुवृद्धि और ५ पुत्रसेंसुख और ६ सुखकीवृद्धि और ७ दोषवृद्धि और ८ पीडा और ९ सुख और १० निर्धनता और ११ धनलाभ और १२ अनेकअनर्थ शनिकर्त्ताहै ९ अब

भीतिंवित्तंपीडनंवैरिवृद्धिंसौख्यंशोकंराजमानंचरोगम् सौख्यंदैन्यंमानवित्तंचपीडांदत्तेजीवोजन्मराशेःसकाशात् ७ रिपुक्षयंवित्तमतीवसौख्यंवित्तंसुतप्रीतिमरातिवृद्धिं शोकंधनाप्तिंवरवस्त्रलाभंपीडांस्वमर्थंचददातिशुक्रः ८ अष्टंक्लेशंशचशत्रुप्रवृद्धिंपुत्रात्सौख्यंसौख्यवृद्धिंचदोषम् पीडांसौख्यंनिर्धनत्वंधनाप्तिंनानानर्थंभानुसूनुस्तनोति ९ हानिंनैस्वंस्वंचवैरंचशोकंवित्तंवादंपीडनंचापिपापम् वैरंसौख्यंद्रव्यहानिंप्रकुर्याद्राहुःपुंसांगोचरेकेतुरेवं १० राशौराशौगोचरेखेचराणामुक्तंपूर्वैर्यत्फलंजन्मराशेः तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानांभिन्नंभिन्नंदृश्यतेवश्यमेव ११ यस्मिन्राशौशीतरश्मिःप्रसूतौसंस्थःप्रोक्तोजन्मराशिःसएव एवंलग्नेनान्विताःसप्तखेटास्तेकिंनस्युःप्राणिनांजन्मभानि ॥ १२ ॥

राहुका फलकहतेहैं ॥ जन्मराशिमें १ हानि और २ धनहीनता और ३ धनप्राप्ति और ४ वैर और ५ शोक और ६ धन और ७ विवाद और ८ पीडा और ९ पाप और १० वैर और ११ सुख और १२ धनहानि पुरुषोंकों गोचरमें कर्त्ताहै ॥ और राहुकीन्याईं भावफल केतु कर्त्ताहै १० और कहतेहैं राशिराशिमें गोचरमें ग्रहफल पूर्वाचार्योंने कहाहै जन्मराशिसें लेकर्के सो फल एकराशिमें जन्मे जो मनुष्यहैं तिनकों भिन्नभिन्न देखनेमें आवताहै इसमेंक्याबानहै ११ और जन्मकालमें जिसराशिका चद्रमा होताहै तिसको मनुष्योंकी जन्मराशिमानतेहैं ॥ इसी प्रकारकर्के लग्नकर्के युक्त सातग्रहोंकिया राशिया जन्मराशियाक्योंनाहिं होतियाहैं ॥ १२ ॥

इसमें कहतेहैं मनुष्योंकियानिश्चयकर्के आठहिजन्मराशियांहैन और तिन्होंसेंशुभाशुभफल रेखाविंदु के अंतरालसें अष्टवर्गोंकर्के कहाहै इसकारणसें गोचरफलसें अष्टवर्गोंका फल मुख्यहै १३ अब सूर्यका अष्टवर्ग बनाना कहतेहैं प्रथमलग्न कुंडली ग्रहयुत लिखे और तिसमें रेखा अथवा विंदुदोनोंमें शुभाशुभ मानकर्के फलका विचारकरे सूर्य अपने स्थानसें और शनिसें और भौमसें आठमें और नवमें और ग्यारहमें और दूसरे और केंद्र १।४।७।१०में शुभफल देताहै और शुक्रसें ७ । ६ । १२ स्थानमें और गुरुसें ९ । ६ । ५।११ स्थानमें शुभफलदेताहै और चंद्रमासें ग्यारहमें और छठे और तीसरे और दशमें शुभफल देताहै और बुधसें पांचमें और तीसरे और नवमें और बारहमें और छठे औरग्यारहमें और दशमें शुभफल देताहै और लग्नसें तीसरे और चतुर्थऔर ग्यारहमें और छठे और बारहमें स्थानमें शुभफल देताहै १४ अब चंद्रमाका अष्टवर्ग कहतेहैं चंद्रमा भौमसें ।३।५।२।३।६।१०।११ स्थानमें शुभहोताहै और शनिसें ६।३।११।५ शुभ होताहै और लग्न

पुंसामतोऽष्टौकिलराशयःस्युः शुभाशुभान्यत्रफलानितेभ्यः ततश्चरेखामिलनांतरालात्स्पष्टंफलंचाष्टकवर्गमुक्तं १३ स्वान्मंदारकुजतोरविर्मृतितपोलाभार्थकेंद्रस्थितः शुक्राद्स्तारिपुव्ययेषुचगुरोर्धर्मारिपुत्राप्तिषु चंद्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषुज्ञाद्धिजात्पंचत्रिनंदव्ययारिप्राप्त्यम्बगतस्तनोस्त्रिषुसुखोपात्यारिरिःफे शुभः १४ भौमात्ग्लौनवधीधनोपचयगः षट्त्र्याप्तिधीस्थोर्कजाल्लग्नाच्चोपचयेरवेरुपचयाष्टास्तेषुशस्तोबुधात् धीरंध्रेषुचतुर्व्ययत्रिषुगुरोःकेंद्राष्टलाभव्ययेस्वादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्तांबुत्रिकोणेभृगोः १५ स्वाद्भौमोऽष्टचतुष्टयायधनगोजीवात्षडायांत्यखेचंद्रादायरिपुत्रिगोभृगुसुतादष्टांत्यलाभारिगःज्ञात्पंचायरिपुत्रिगोर्कतनयात्केंद्राष्टधर्मायगःसूर्याच्चोपचयात्मजेषुतनुतस्त्र्यायारिखाद्यैःशुभः १६ शुक्रादासुतधर्मलाभमृतिगःसौम्यःकुजार्क्योस्तपःकेंद्रायाष्टधनेस्वतोप्युपचयांत्यैकात्रिकोणेशुभः

सें ३।६।१०।११ स्थानमें शुभ होताहै औरसूर्यसें ३।६।१०।११।८।७शुभहोताहै और बुधसें ५।८।४।१।स्थानमें शुभ होताहै और बृहस्पतिसें १।४।७।१०।८।११।१२ शुभ होताहै और चंद्रमा अपनेस्थानसें १।३।६।१०।११।७ शुभ होताहै और शुक्रसें ३।१०।११।७।४।३।५ स्थानमें शुभफलदेताहै १५ अब भौमका अष्टवर्गकहतेहैं मंगल अपनेस्थानसें ८।४।११।२स्थानमें शुभ फल देताहै और बृहस्पतिसें ६।।११।।१२।।१० स्थानमें शुभफल देताहै और चंद्रमासें ११।।६।।३ स्थानमें शुभफलदेताहै और शुक्रसें ८।।१२।।११।।६ स्थानमें शुभफलदेताहै और बुधसें ५।।११।।६।।३ स्थानमें शुभफल देताहै और शनिसें १।।४।।७।।१०।।८।।९।।११ स्थानमें शुभदेताहै और सूर्यसें ३।।६।।१०।।११।।५।।स्थानमेंशुभदेताहै और लग्नसें ३। ११। ६। १०। १ स्थानमेंशुभफलदेताहै १६ ॥ अबबुधाष्टक वर्ग कहतेहैं बुधशुक्रसें ।।५।।९।।११।। ८ स्थानमें शुभफल देताहै और मंगल शनिसें १।।२।।४।।७।।१०।।११।।८।२स्थानमें शु

भफल देताहै और अपनेसें ३॥६॥१०॥११॥१२।७॥१॥५ स्थानमें शुभफल देताहै और सूर्यसें १ ॥ ॥ ५ ॥१२॥६॥११॥ शुभफल देताहै और बृहस्पतिसें ६॥११॥८॥१२ स्थानमें शुभफल देताहै और चंद्रमासें ॥ १०॥११॥८॥६॥४॥२ ॥ स्थानमें शुभफल देताहै और लग्नसें २ ॥ १०॥११॥८॥१॥४॥ ६ स्थानमेंशुभफलदेताहै १७अबजीवाष्टकवर्गकहतेहैं बृहस्पतिअपनेस्थानसें२।१११८॥३॥७॥४।७॥१०स्थानमें शुभफलदेताहै और शुक्रसें २॥३॥१०॥११॥६॥५स्थानमें शुभ फल देताहै और लग्नसें १॥४॥७ १०।११।५।६।२।९।स्थानमें शुभफलदेताहै और मंगलसें २।८।१।४।७।१०।११स्थानमेंशुभफलदेताहै और चंद्रमासें ७ । २ । ९ । ५ । ११ इनस्थानोंमें शुभफलदेताहै और सूर्यसें । ३ । ९ ८ ११ । १ । ४ । ७ । १० । २ स्थानमें शुभफलदेताहै और बुधसें ९ । ५ । २ । ११ । १० । १ । ४ । ६ स्थानोंमें शुभफल देताहै और शनिसें ३ । १२ । ५ । ६ । स्थानमें शुभफलदेताहै १८ ॥ अब शुक्रकाअष्टवर्गकहतेहैं शुकलग्नसें ॥ ११२ ॥ ३ ॥ ४।५।८। ९। ११। स्थानमें शुभफलदेताहै चंद्रमा

कोणांत्यारिभवेरवेरिपुभवाष्टांत्येगुरोरिंदुतः खायाष्टारिसुखार्थगः स्वस्वभवाष्टे कांबुषट्सूदयात् ॥ १७ ॥ स्वात्स्वायाष्टत्रिकेंद्रेस्व नवदशभवाराति धीस्थश्चशुक्राल्लग्नात्केंद्रायधीपट्स्वनवसुचकुजात्स्वाष्टकेंद्रायइज्यः इन्द्रो द्यूनार्थकोणाभिपुसहजनवाष्टायकेंद्रार्थगोर्कात् ज्ञात्कोणेद्यायखायांबु धिरिपुशनेरत्र्यंत्यधीपट्सुशस्तः १८ खास्तांत्याहितवर्जितेषुतनुतः शुक्रो विनास्तारिखचंद्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्कोद्व्यायाष्टांतिषु मदाद्द्व्येकरि पुव्ययास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधीखिज्ञात्कोणभवत्रिपट्सुभवधीत्र्यंत्यारि धर्मेकुजात् ॥ १९ स्वान्मदस्त्रिपडायधीपुरवितोष्टायद्विकेंद्रे शुभोभौमात् खायपडंत्यधीत्रिपुतनोःस्वायांबुपट्स्थेकगः ज्ञादायारिनशांत्यखाष्टसुभृगो रत्यायपट्संस्थितश्चंद्रादायरिपुत्रिगःसुरगुरोरंत्यायधीशत्रुगः ॥ २० ॥

सें । १ । २ । ३ । ४ ५ । ८ । ९॥११ । १२ । स्थानमें शुभफलदेताहै औरअपनेसे १॥२। ३ । ४ ५॥८ । ९ । १० । ११ स्थानमें शुभफलदेताहै और सूर्यसें १२ । ८ ११ स्थानमे शुभफलदेताहै और शनिसें।३।४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११। स्थानमें शुभफल देताहै और बृहस्पतिसें ९ ।११। ८ । ॥५ । १० । स्थानमें शुभफल देताहै और बुधसें ३ । ५ । ११ । ३ । ६ स्थानमें शुभफल देताहै और भौमसें ११ । ५ । ३ । १२ । ६ । ९ स्थानमें शुभफल देताहै १९

अबशनिका अष्टवर्गकहतेहैं शनिअपनेसे ३ । ६ । ११ ।५ स्थानमें शुभदेताहै और सूर्यसें८ । ११ ॥ २ ।१। ४॥७ १० ॥ स्थानमें शुभदेताहै और मंगलसें १०। ११ ।६ ।१२ ।५ ।३ ।स्थानमें शुभ देताहै और लग्नसें १० । ११। ४। ६ ।३ ।१ स्थानमें शुभदेताहै और बुधसें ११।६। ३। १२। १०।८ स्थानमें शुभदेताहै और शुक्रसें, १२ । ११ । ६ स्थानमें शुभदेताहै और चंद्रमासें।११ ॥ ६। ३ स्थानमें शुभदेताहै और बृ स्पतिसें १२ । ११ ॥ ५॥ ६ स्थानमें शुभफलदेताहै । ॥ [illegible]

अथरवेरष्टवर्गांकाः ४८ — अथचंद्रस्याष्टवर्गांका:४९

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ल	चं	म	बु	बृ	शु	श	ल	र
१	३	१	३	५	६	१	३	१	२	१	१	३	३	३	३
२	६	२	५	६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	६
४	१०	४	६	९	१२	४	६	६	५	४	७	५	६	१०	७
७	११	७	९	११	०	७	१०	७	६	५	८	७	११	११	८
८	०	८	१०	०	०	८	११	१०	९	७	१०	९	०	०	१०
९	०	९	११	०	०	९	१२	११	१०	८	११	१०	०	०	११
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०	०	११	१०	१२	११	०	०	०
११	०	११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथभौमस्याष्टवर्गांकाः३९ — अथबुधाष्टकवर्गांकाः५४

मं	बु	बृ	शु	श	ल	र	चं	बु	बृ	शु	श	ल	र	चं	म
१	३	६	६	३	१	३	२	१	६	१	१	१	५	२४	१
२	५	१०	८	४	३	५	६	३	८	२	२	२	६	५	२
४	६	११	११	७	६	६	११	५	११	३	४	४	९	६	४
७	११	१२	१२	८	१०	१०	०	६	१२	४	७	६	११	८	७
८	०	०	०	९	११	११	०	९	०	५	८	९	१२	१०	८
१०	०	०	०	१०	०	०	०	१०	०	८	९	११	०	११	९
११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	९	१०	१२	०	०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	११	११	०	[illegible]	०	११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथगुरोरष्टवर्गांकाः ५६ — अथशुक्रस्याष्टवर्गांकाः५२

बृ	शु	श	ल	र	चं	मं	बु	शु	श	ल	र	चं	मं	बु	बृ
१	२	३	१	१	२	१	१	१	३	१	८	१	३	३	५
२	५	५	२	२	५	२	२	२	४	२	११	२	५	५	८
३	६	६	४	३	७	४	४	३	५	३	१२	३	६	६	९
४	९	१२	५	४	९	७	५	४	८	४	०	४	९	९	११
७	१०	०	६	७	११	८	६	५	९	५	०	५	११	११	११
८	११	०	७	८	०	१०	९	८	१०	८	०	८	१२	०	०
१०	०	०	९	९	०	११	१०	९	११	९	०	९	[illegible]	[illegible]	०
११	[illegible]	०	१०	१०	०	०	११	१२	०	१०	०	११	०	०	०
								[illegible]	[illegible]	०	०	१२	०	०	०

और कहतेहैंलग्नकर्के युक्त सातग्रहोंके यो स्थान कहेहैं तिन्होंस्थानोंमें शुभफलकों देतेहैं और इन्हीं नें अनुक्त स्थानोंमें निश्चयकर्केअशुभ फलकोंदेनेहैं और शुभाशुभके अंतरकरणेसें यो अधिकफलहो वे सो फल अपनीराशिसें ग्रहदेताहै २१ और सूर्यादिग्रहोंके क्रमकर्के चक्र लिखेहैं तिनमें शुभाशुभ फलका क्रम सुधाकर्के धराहै चक्रकों देखकर्के अष्टकवर्ग सिद्ध करलेवे अब शुद्धिके वास्ते सूर्यादिग्र हाकियांसंपूर्णशुभरेखाकहतेहैं सूर्यकियां ४८ और चंद्रमाकिया ४९ और मंगलकियां ३९ और बु धकियां ५४ और बृहस्पतिकियां ५६ और शुक्रकियां ५२ और शनिकियां ३९ और संपूर्णोंका ऐक्य ३३७ है ॥ और कईक ग्रंथोंमें रेखाकेस्थानमेंबिंदुकल्पनाकर्केफलादेश कहतेहैं २२ अब और कहतेहैं जन्मलग्नकास्वामी जिसराशिमें स्थितहोवे तिसराशिसें जिस जिसस्थानमें रेखा निश्च

स्थानानियानिप्रतिपादितानिशुभानिचान्यान्यशुभानिनूनम् तयोर्वियोगादधिकंफलंयत्स्वराशितोयच्छतितद्ग्रहेंद्रः ॥ २१ भुजंगवेदानवसागराश्वनवाग्नयःसागरसायकाश्च रसेषवोयुग्मशरानवत्रितुल्याःक्रमेणाष्टकवर्गरेखाः २२ विलग्ननाथाश्रितराशितोत्रभवंतिरेखाःखलुयत्रयत्र ॥ विलग्नतस्तत्रचतत्रराशौसंस्थापनीयाःसुधियाक्रमेण २३ क्लेशोर्थहानिर्व्यसनंसमत्वंशश्वत्सुखानित्यधनागमश्च ॥ संपत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीःप्रत्येकरेखाफलमामनंति २४ इत्येकखेटस्यहिसंप्रदिष्टारेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ॥ अष्टाद्विसंख्यास्तुसमास्ततोपियथाधिकोनाःसदसत्फलास्ताः २५

अथशनेरष्टवर्गकाः ११

श	ल	र	चं	मं	बु	गु	शु
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	२	६	५	८	९	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७	०	१०	१०	१२	०
०	१०	८	०	११	११	०	०
०	११	१०	०	१२	१२	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

यकर्केहोवे सोरेखालग्नसें लेकरके तिसीतिसी राशिमेंश्रेष्ट बुद्धिवाल्योंने स्थापनकरणे योग्यहै २३इसका तात्पर्य इहेहै जोजिस ग्रहका अष्टकवर्ग बनावे तिसग्रहकी राशिसेंलग्नकुंडलीमें ग्रहस्थापन कर्के रेखा और बिंदु सिद्धकरे और ग्रहजिसजिसराशिमें स्थितहोवें तिसतिस स्थानसेंरेखा बिंदु सिद्धकरे अबप्रत्ये क रेखाका फल कहतेहै १ क्लेश और २ धनहानि और ३ व्यसन और ४ सम और ५ निरंतर सुख और ६ नित्यधनप्राप्त ७ औरसंपदाकीवृद्धि और ८ श्रेष्टलक्ष्मी प्राप्तकर्तीयाहैं इहे फल एकोरेखा सें लेक-आठपर्यंत कहाहै २४ इहे एकग्रहकी रेखाका फलकहाहै और इष्टादिनमें संपूर्णग्रहोंकिये रेखासिद्धकर्केफलकहे जबअठाई २८ रेखाहोवेंतबग्रहोंका बलाबल शुभाशुभ सम होताहै और अ ठाईसें अधिक होवेंतब शुभफलकर्तेहैं और अठाईसें हीनरेखाहोवेंतब नेष्टफलकर्तेहैं। २५

अब ग्रहोंके शुभाशुभफलका समयकहतेहैं मंगल और सूर्य इह दोनों राशिके आदमें प्रवेश कालमें हि फल कर्तेहैं और शुक्र बृहस्पति दोनों जबराशिके मध्यभागमें आवतेहैं तब फलकर्तेहैं और चंद्रमा शनी दोनों ग्रह राशिके अंत्यभागमें फल देतेहैं और बुध सर्वदाकाल सारी राशिमें बराबर फल कर्ताहै ॥ २६ ॥ अब अंगविभागसें ग्रहरिष्टका प्रकार कहतेहैं सूर्य रक्तपित्तकर्के शिर और मुखमें पीडा कर्ताहै और चंद्रमा कफ रक्तकर्के छातीमें और गलमें पीडा कर्ताहै और मंगल पित्तमज्जाकफ रक्त कर्के पृष्टमें और उदरमें पीडा कर्ताहै और बुध त्रिदोषकर्के पैरोंमें और हाथोंमें पीडा कर्ताहै ॥ २७ ॥ और कटिदेशमें और जघामें वात कफ कर्के बृहस्पति पीडा कर्ताहै और गुदामें और अंडकोशमें कफवायुकर्के शुक्र पीडा कर्ताहै और जानुयोंमें और पट्टोंमें वायुकर्के शनि पीडा कर्ताहै २८ ॥

कः कीदृक् फलदइत्याशंक्याहइलातनूजश्चपतिर्नलिन्याः प्रवेशकालेफलदः किलस्यात् राश्यर्धभागेभृगुजामरेज्यौप्रांतेशनींदूचसदेंदुसूनुः ॥ २६ ॥ शिरःप्रदेशेवदनेदिनेशोवक्षःस्थलेचापिगलेकलावान् पृष्ठोदरेभूतनयश्चपीडांकरोति सौम्यश्चरणेचपाणौ ॥ २७ कटिप्रदेशेजघनेचजीवः कविश्चगुह्यस्थलमुष्कयुग्मेजानूरुदेशेनलिनीशसूनुश्चारेणवाजन्मनिचिंतनीयम् ॥ २८ ॥ यदायदास्यात्प्रतिकूलवर्तीस्वांगस्वदोषेणकरोतिपीडाम् इदंतुपूर्वप्रविचार्यसर्वप्रश्नप्रसूत्यादिषुकल्पनीयम् २९ अथात्रदिनचर्याप्रकारोयथासर्वग्रहाणांरेखैक्यंकुर्यादिष्टदिनेततः फलंशुभाशुभंब्रूयात्तत्प्रकारोविधीयते ॥ १ ॥ सर्वग्रहाणांरेखैक्यंशक्रतुल्ययदाभवेत् तदात्रिवर्गहानिः स्यात्तिथितुल्येमहापदः ॥ २ ॥ भूपतुल्येभूपभयहानिः सप्तदशेस्मृता अष्टादशेतुरेखैर्क्येधनहानिश्चजायते ॥ ३ ॥

जब सूर्यादि ग्रहगोचरसें और अष्टवर्गोंसें प्रतिकूलनेष्टफल करणेवाले होवें तब आपने २ अंगोंमें अपनेदोषोंसेंपीडाकर्तेहैं इसप्रकारकर्के पूर्वविचारकेप्रश्नलग्नसें औरजन्मलग्नसें औरवर्षमासादिकालमेंकल्पना करणेयोग्यहै २९ अबअष्टवर्गकीरीतीसें दिनचर्याकहतेहैं जिसदिनमें शुभा शुभफलदेखनाहोवेतिसदिनमेंसंपूर्णग्रहोंकीरेखावनायकर्के शुभाशुभफलकहेतिसकाप्रकारकहतेहैं १ जिसदिनमें संपूर्णग्रहोंकीरेखाके योग चउदां १४ होवें तिसदिनमें धर्मार्थकामकीहानिहोतीहै और पंद्रां १५ होवेंतब बडीआपदाकी प्राप्ति होतीहै २ और सोलां १६ होवें तब राजाका भय होताहै और सतारा १७ होवें तब किसीकार्यकी हानी होतीहै और जिसदिनमें अठारा रेखाका योग होवे तिसमें धनकी हानी होतीहै ३

और जिसदिनमेंउन्नी रेखाहोवेंतिसदिनमेंखोटीबुद्धि और बंधुपीडाहोतीहै और जिसदिनमें बीसरेखा होवेंतिसदिनमें खर्च और किसीसें लडाई होतीहै ४ और जिसदिनमें उकी रेखा होवें तिस दिनमें हृदत दुःख होताहै और जिसदिनमें बाई रेखा होवें तिस दिनमें अपमान और शून्यफल होताहै ५ और जिसदिनमें तेवी २३ रेखा होवें तिसदिनमें धर्म और अर्थकीहानि होतीहै और जिसदिनमें चउवी २४ रेखा होवें तिसदिनमें अकस्मात् धनकी हानि होतीहै ६ और जिसदिनमेंपचीस २५ रेखा होवें तिसदिनमें हस्त गत द्रव्यकी हानि होतीहैऔर जिसदिनमें छवी २६ रेखा होवें तिसदि

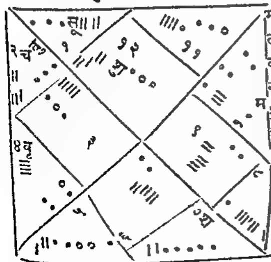
कुमतिर्बंधुपीडास्यात्तथाचैकोनविंशतौ रेखैर्वंधनखतुल्येतुव्ययश्चकलहःस्मृतः ४ एकविंशतिरेखैश्चेहृदिदुःखप्रजायतेपराभवस्त्वफलतादैन्यचाकृतिसंख्यके ५ त्रयोविंशतिकेप्रोक्ताहानिर्धर्मार्थयोरपि अकस्माद्धनहानिःस्याच्चतुर्विंशोन्मिते तथा ॥ ६ करस्थितस्यद्रव्यस्यहानि स्यात्पंचवर्गके पड्विंशतुल्येकलहःसम ताधिष्ण्यसंज्ञके ॥ ७ ॥पिंडेद्रव्यागमश्चैकोनात्रिंशेजनपूजनम् त्रिंशन्मितेराज पूज्यःसुकृतंमुखसंयुतम् ॥ ८ ॥ एकत्रिंशन्मितेद्रव्यंसन्मानंचविशेषतः दंततु ल्येःसर्वसिद्धिर्महालाभोमरैःसमैः ॥ ९ चतुरधिकत्रिंशद्रेखाभिःक्रमेणचैकैकव द्धिनाक्रमशः रससाररेखायावत् फलमुक्तत्वष्टवर्गजंपुंसामिति ॥ १० ॥

नमें किसीसेंलडाई होतीहै और जिसदिनमें सताईरेखा होवें तिसदिनमें शुभाशुभफलसमानहोता है ७और जिसदिनमेंअठाई रेखाहोवेंतिसदिनमें धनलाभकिंचित् होताहै और जिसदिनमेउनत्री रेखाहो वें तिस दिनमें मानहोताहै औरजिसदिनमेंतीस ३०रेखा होवें तिसदिनमेंराजासेमानहोताहै और पुण्य कर्म और सुखहोताहै ८ और इकत्रीरेखाहोवें तब द्रव्यलाभ और सन्मान होताहै और बत्रीरेखा हो वेंतब सर्वसिद्धिहोतीहै और तेत्री रेखाहोवें तब बडालाभ होताहै ९और चौत्री रेखा सेंलेकर्के छित्रीरे खापर्यंत अधिक २ शुभ फल कहाहै १०

और अष्टकवर्गोंके फलका विचार बृहज्जातकमें कहतेहैं इतिनिगदितमिति इह कहाजो अष्टवर्गवनामनेका प्रकार तिनकर्के कहेजोस्थानहै सो इष्ट शुभहै और अन्यत् उक्तस्थानोंसे विना ओर स्थान अनिष्ट अशुभकहेहै इसमें उहकहाहै स्वात्मंदात्कुजतोर्गवि मूर्तिरपेलाभायकेंद्रस्थित इत्यादि पाठकनमेंजोजो स्थानकहेहैं तिनका शुभफलहै औरअनुक्तस्थानोंका अशुभफल होतामें विशेषसे इष्टानिष्ट फलके परस्पर घटायदेवे जो अधिकवचे सो शुभाशुभफल कहतेहैं इसमें अयसे कहाहै जन्मकालमें जिसस्थानमें ग्रह स्थित होवें तिसस्थानसे शुभाशुभफलको ग्रहदेतेहैं तिसमें जो पाठकनसे शुभस्थान कहतेहैं तिन्होंको विंदुओंकर्के चिन्हतकरे फेर रेखा विंदुयोंका अंतरकर्के शुभाशुभफलकीपक्ति होतीहै जहां आठविंदु पडें तहां पूर्णशुभ फल होताहै ओर छै विंदुयोंसे पादोन ओर चारविंदुयोंसे अर्थ और दो विंदुयोंसे पा

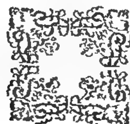
अथाष्टकवर्गफलविचारेबृहज्जातकेविशेषः इतिनिगदितमिष्टंनेष्टमन्यद्विशेषाद धिकफलविपाकंजन्मभात्तत्रदद्युः उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टंत्वपचयगृह नीचारातिगैर्नेष्टसंपत् ॥ ११ ॥

दचतुर्थांशशुभ फलहोताहै ओर इसीप्रकारसे रेखाकर्के अशुभ फल होताहै अत्रोदाहरणे ग्रहसंस्थामो नलग्नतःतिसमें मीनराशिका शुक्र ओर दूसरे मेषका सूर्य ओर तीसरे वृषके चंद्र बुध और पाचमें कर्कटराशिमें गुरुओर अष्टम तुलामें शनि और एकादश मकरका भौ



म इसग्रहसंस्थाकर्के चक्रलिखाहै इसमें भौमका शुभाशुभफ लदिखातेहैं स्वात्मंदात्कुजतोर्गविमूर्तिरपेलाभायकेंद्रस्थित दायरिपुत्रिगोभृगुसुतादष्टायलाभारिग ज्ञात्सचायारिदिगोकेत नयात्केन्द्राष्टधर्मायग सूर्यात्सेचत्र...त्कजेदुतनुतः स्वाद्यात्स्वाद्याः शुभः १ अब इसमेंशुभा शुभफलका विचार कहतेहैं मेषरा शिमें रेखा पांच ओरविंद तीन अंतरसे रेखा दोशेपहै तिस में भौमका चतुर्थांशक्र मेषराशिमें नष्ट फल है गोचरवक ज

व मेषका भौम होगा तव चतुर्थांशकर्के अशुभ फलकरेगा इसीप्रकार वृषराशिमें रेखा पांच विंदू तीनहैं वृषराशीका भौमवी चतुर्थांशकर्के अशुभहै और मिथुनमें बीरेखापांच विंदूतीनहैं मिथुनराशीके भौमका फल चतुर्थांश कर्के अशुभहै और कर्कटमें चार विंदू और चार रेखाहैं तव कर्कट राशिमें भौमका फल शुभाशुभ कुछनहिंहै मध्यमहै ॥ और सिंहमें पांच विंदू और तीनरेखाहैं अंतरकरणेसें विंदूदोशेषहैं तिससें जव सिंहराशिमें भौम आवे तव चतुर्थांश कर्के शुभफल कर्त्ताहै और कन्यामें रेखा छे और विंदू दो है अंतरसें चार रेखा अधिकहैं तिससें कन्याका भौम अर्ध अशुभफलकर्त्ताहै और तुलामें रेखातीन विंदुपाचहैं तिसमें तुलाका मंगल चतुर्थांशकर्के शुभहै और वृश्चिकमें रेखा-सात और विंदु एकहै तिससें वृश्चिक राशिका भौम तीनपाद कर्के अशुभहै और धनराशिमें रेखाछे और विंदूदोहैं तिसमें धनका भौम अर्ध फल सदा नेष्ट कर्ताहै ॥ और मकरमें तीनरेखा पांचविंदुहै- तिससें मकरराशिका भौम सदा चतुर्थभागकर्के शुभहै और कुंभराशिमें और चार विंदुहैं तिसमें कुंभराशिका भौम सर्वदा समहै और मीनराशिमें रेखापाच विंदुत्रयहे तिसमें मीनराशिका भौम सदैव चतुर्थांशकर्के अशुभहै ॥ इस प्रकारकर्के शुभाशुभफलके आठस्थानहैं तिनका अंतर कर्के जो शेष वचे सो फलकहे ॥ इस प्रकारकर्के जन्मकालमें ग्रहयुक्तराशिकर्के संपूर्ण ग्रहोंके अष्टवर्ग वनावे और इसमें यकाकर्तेहैं योग्रह अष्टकवर्गकीरीतीसेंशुभहोवे और सोईग्रहअन्ययुक्तिकर्के भावफल दृक्फलादि युक्तिकर्के अशुभहोवे तिसमें फलादेश किसप्रकारकर्के कहना सो कहतेहैं तिसमें तुल्य दोनों स्थानोंमें विरोध होवे तव सो ग्रहफलहीन होजाताहै और जव जोग्रह अष्टवर्गकीरीतिकर्के सुवर्ण दहै और किसीकरीतिकर्के सुवर्णापहारी होवे तवसो ग्रह सुवर्णदनहिं होताहय जवदोकारणोंकर्के सुवर्ण दहोवे और एककारण कर्के सुवर्णापहारीहोवे तब सो ग्रह सुवर्णद होताहे और एक कारणकर्के सुवर्णदहोवे और दोकारणोंकर्के सुवर्णापहारी होवेसोग्रह सुवर्णापहारीहोताहै इसरीतिसेंविचारकरेऔर इसकारणसें वादरायण और यवनाचार्यादि योंनें अष्टवर्ग विधान कीयाहैजोइसग्रहसें इह ग्रह इसस्थान में शुभवाऽशुभहोताहै अब इसमें और कहतेहैं जव अष्टवर्गविशेषताकर्के कहेहैं तव चन्द्रराशिसें अर्थात्-जन्मराशीसें गोचरफल भिन्नभिन्नकिसकर्के कहाहै सोकहतेहैंअष्टवर्गज फल विशेषहै और गोचरफल



अष्टवर्गको अपेक्षातें गौणहै ॥ किसकारणसें यवनाचार्यनेवी भिन्नभिन्न गोचरफल कहकर्के पीछेसें अष्टवर्ग अंगीकारकियेहैं ॥ और बादरायणनेवी गोचर फलकथनानंतर अष्टवर्गफल कहाहै तद्वाक्यं यथा कष्टश्रेष्टेतुल्य संख्येफलेचेत्स्यातांनाशः फलयोस्तत्रवाच्यः ॥ वाच्यःपंक्तियों तिरिक्तस्तयोःस्था त्स्थानेस्थानेकल्पनेयंप्रदिष्टेति ॥ इसकाइहअर्थहै पूर्वोक्तरीतिसें सिद्धकिये योग्रहोंके अष्टवर्ग तिन में रेखा विंदु रूपकर्के योकष्टऔरश्रेष्टफलकहाहै सोदोनोंकष्टश्रेष्ट फलसमानहोवें तव शुभाशुभफल दोनों का नाशहोताहै और यो फलअधिकहोवे अंतरकियेसें तिसग्रहकीपंक्ति काफलकहे और इहकल्पना प्रत्येकस्थानमें कहिहै ॥ उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टमिति ॥ और यो ग्रह लग्नसें वा चंद्रमासें उपचय । ३ । ६ १० । ११ । स्थानोंमें स्थितहोवे और मित्रग्रहकीराशिमें और अप नी उच्चराशिमें और उपलक्षणसें स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें स्थित होवे सोग्रह पुष्ट फलकों देताहै औ र यो ग्रह लग्न और चंद्रमासें अपचय । १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ । स्थानोंमे स्थित होवे और नीचराशिमें और शत्रुकीराशिमें उपलक्षणसें अस्त और निर्जितहोवे सो श्रेष्टफल नहिं

अथजातकपारिजातेविशेषः चक्रंविलिख्यसहलग्नदिवाकराद्यैःसूर्यादिलग्नभ वनांतवियच्चराणाम् वाक्याष्टकोपगतवर्णनियोजिताश्चेद्भिन्नाष्टवर्गजनितास्ति लविंदवःस्युः ॥ १ ॥ देवोधवोधीगवशस्तमोरमाधूलिःक्रमाद्गुणाकरादिविंदवः सालोलसंख्यासमुदायविंदवः सर्वाष्टवर्गःसमुदायसंज्ञकः ॥ २ ॥

करताहै अव इसमें शंकाकरतेहै इह विचारजन्मकालीनग्रहस्थितिमें करणा अथवा चारवशसें कल्प नाहै इसमें देवकीर्त्ति कहताहै अपचयराशौजीवे शत्रुक्षेत्रेच जन्मकालेस्यात् परंतु सदयात्पापंफलम निशपनोयथाकालमिति ॥ असमर्थानायाश्रायामाह ॥ नीचस्थाग्रहनिर्जितास्त्वभिभूताविरश्मयोह स्ताः भुजगाइवमंत्रहताभवंतिकार्याक्षमालग्ने इति तत्रशास्त्रेपुयानिचान्यान्युत्रादिसंस्थानाशुभाशुभप्रवृत्ति दर्शकानि ॥ नीचादिस्थानामशुभफलप्रदर्शकानितानिजन्ममयेज्ञेयानि ॥ यानिचशुभानामशुभा नांवाफलानिग्रह वशेनैवपुष्टिप्रदर्शकानि तानिचारवशात्फलदानकालेग्रहस्यक्षेपानीत्यलम् ॥ अथ जातकपारिजातमें विशेष कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यादिग्रहोंकों लग्नकर्के युक्त आठ कोष्टके चक्रमें स्था पनकरे तदथा नवरेखा ऊर्ध्वकरे और दशरेखा तीर्यक्‌करे तव बहत्र कोष्ट सिद्धहोतेहैं तिनमें ऊर्ध्वपंक्तिमें सूर्यादिसातग्रह और अष्टमा लग्न स्थापनकरे और नीचेके कोष्टोंकोंपूर्वोक्त प्रकारकर्के विंदुकरे भिन्नाष्टवर्गमें जो कहेहैं और तिन्होंविंदुवोंका योग समुदायसंज्ञिक कहतेहैं सूर्यादिसातग्र होंके सर्यके रेख ॥ ४८ ॥ चंद्रमाके ४९ ॥ ४९ ॥ भौमके योग ॥ ३९ ॥ बुधके सभा । ५४

बृहस्पतिके तम । ५६ । शुक्रके रमा । ५२ । शनिके धूलि । ३९ । संपूर्णग्रहोंके विंदुयों का योग सालोलसरूपा । ३३७ । कर्कं होताहै । २ । भिन्नाष्टवर्गचक्रमें पूर्वलिखेहैं ॥ अब जन्मपत्रमें अष्टकवर्ग बनानेकेचक्र कहतेहैं त्रयोदशरेखा पूर्वापरदेवे और नवरेखादक्षिणोत्तरदेवे अयसें करणेसें अष्टोत्तरशत कोष्ट ॥ १०८ ॥ सिद्ध होतेहे तिनमें ऊर्ध्वकी पंक्तिमें लग्नादि । १२ । राशियां लिखे तिन्हमें जन्मकालीन ग्रहयथास्थित राशिमें स्थितकरे और चक्रके बाहर लग्नके कोष्टसें नीचेके कोष्टके बाहर सूर्यादि सातग्रह और लग्नका चिन्ह करे ऊर्ध्वसें लेकर आठकोष्टोंके समान फेर लग्नादि राशियोंके नीचे ग्रहोंके विंदु समान कोष्टमें स्थित करे तब अष्टवर्ग सिद्धहोताहै

और कहतेहे मेषादिराशियोंमें जिसभावमें आठविंदुहोवे तिसभावकी पुष्टि और बल और वृद्धिकरणेवाले होतेहै और जिसभावमें छै पाच सात विंदुहोवे तिसभावका शुभफल देतेहैं और जिसभा,

मेषादियद्गृहगतावसुसंख्यकास्तास्तद्भावपुष्टिबलवृद्धिकराभवंति षट्पंचसप्तसहितानिशुभप्रदानित्रिद्व्येकाविंदुयुतभानिनशोभनानि ३ मिश्रफलंभवतिसागरविंदुयोगैरोगापवादभयदायदिशून्यभावाः एकादिविंदुयुतभातुमुखग्रहाणांभिन्नाष्टवर्गजनिसर्वफलंप्रवच्मि ४ करोतिनानाविधरोगदुःखभयाटनादीनिचसैकविंदुः द्विकोमनस्तापनृपालचोरकृतापवादाशननाशनानि ५ त्रिकस्तु संचारकृशावलंबकलेवरव्याकुलमानसानि सुखासुखार्थव्ययवित्तलाभफलप्रदःसागरविंदुकःस्यात् ६

॥

वमें तीन दो एक विंदुहोवें सो तिसभावका शुभफलनहिंदेतेहे ३ और जिसभावमें चार विंदुका योगहोवे तिसकामिश्रफल शुभाशुभदोनों फल होतेहैं और योभाव विंदुसे रहित होवे तिसभावका रोग अपवाद भय पीडा फल होताहे अब एकादि विंदुयोंकरके युक्त सूर्यादिग्रहोंका भिन्नाष्टवर्गका जन्मकालमें संपूर्णफल कहताहों ४ जिसराशिमें जन्मकालमे ग्रहस्थितहोवे तिसराशिमें एकविंदुहोवे सो ग्रह अपनी दशामें अनेक रोग और दुःख और भय और विदेशभ्रमण कर्ताहे और जिसग्रहके दोविंदुहोवे तिसको मनस्ताप और राजासें और चोरसे भय और अपवाद और भोजनकानाश होताहे ५ और जिसग्रहके तीन विंदुहोवे सो ग्रहभ्रमण और देहमेंकृशता और व्याकुलताकर्ताहै और जिसग्रहके चार विंदुहोवे सो सुख दुःख और धनव्यय और लाभ दोनोंफल कर्ताहै ६

और पांच विंदुयों करकें युक्त ग्रह श्रेष्ट वस्त्रलाभ और पुत्रसुख और साधुका संग और विद्या और धनकर्ताहै और छै विंदुयोंकरकें युक्त ग्रह श्रेष्ट मोहणकरणेवाला रूप और श्रेष्ट स्वभाव और युद्धमें जय और धन और जश और वाहनदेताहै ७ और सातविंदुयोंकरकेंयुक्त ग्रहघोडे हाथीसें लेकें वाहन और सेना और धनकासुखदेताहै और आठविंदुयोंकरकें युक्त ग्रह रूपगुण पुत्र स्त्री वाहनसेना धनकरकें युक्त राजप्रतापकों प्रकट कर्ताहै ८ और कहतेहैं यो ग्रह पांचसें लेकरकें विंदुयोंसें युक्त और अपनेवर्गमें स्थितहोताहै सो ग्रह नित्यंप्रति शुभफलकर्ताहै और इससें अन्यथा चार विंदुयोंसें हीन और शत्रुवर्गादिस्थित होवे तव नेष्ठ फल देताहै और गोचरमेंवी तिसी प्रकारफल दे

सद्वस्त्रलाभसुतलालनसाधुसंगविद्याधनानिकुरुतेतुसपंचविंदुः ॥ षट्‌विंदुकस्तुनवमोहनरूपशीलसंग्रामजिद्धनयशोवलवाहनानि ॥ ७ ॥ सप्तविंदुस्तुरगादियानसेनाधनप्राभवशोभनानि ॥ विंद्वष्टकःसप्तगुणाभिरामराजप्रतापंप्रकटीकरोति ८ शरादिविंदुस्थितराशियातस्वकीयवर्गेशुभदस्तुनित्यम् अतोन्यथाचेदफलप्रदातागोचारतःशून्यफलंप्रमादी ९ स्वोच्चमित्रादिवर्गस्थाःकेंद्रादिवलसंयुताःअनिष्टफलदाःसर्वेस्वल्पविंदुयुतायदि १० दुष्टस्थानस्थितायेचयेचनीचारिभांशगाः ॥ तेसर्वेशुभदानित्यमधिविंदुयुतायदि ११ दिनेशमुख्यग्रहवर्गकेषुयदाशनिःशून्यगृहंप्रयातः ॥ करोतिपित्रादिकभावनाशमतीवरोगादिभयाकुलानि १२ अथसूर्यस्यविशेषफलम्

ताहै और विंदुरहित ग्रह प्रमादकर्ताहै ९ और यो ग्रह अपने उच्च और मित्र और स्वक्षेत्रके वर्गमें स्थितहोवें और केंद्रादि वलकरकें युक्तहोवें सो सपूर्णग्रह स्वल्प विंदुयुत नेष्ट फल कर्तेहैं १० और कहतेहैं यो ग्रह दुष्टस्थानमें स्थितहैं और यो ग्रह नीचराशिमें और शत्रुक्षेत्रमें और शत्रुकेनवांशोंमें स्थितहैं सो संपूर्णग्रह जन्मकालमें चारसें अधिक विंदुयोंकरकें युतहोवें तव सर्वदाकाल शुभफल देतेहैं ११ और कहतेहैं सूर्यादिग्रहोंके वर्गमें जिसभावमें विंदुहीन शनिहोवे और पित्रादिकभावमें स्थित होवे तिसभावका नाश और अत्यन्त रोगादि भय देताहै १२

श्रोरजिसके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें स्थित नीच और शत्रुकीराशिमें एक दो तीन विंदुयोंककेंयुक्त होवे सो मनुष्यरोगी होताहै और पाचसे लेकर्के आठपर्यंत विंदुसहित लग्नमें सूर्य उच्च अथवास्व क्षेत्रमें स्थितहोवे सो राजा और वडी आयुपावालाहोताहै १३ और जिसके जन्मसमयमें कें द्र १ । ४ । ७ । १० और त्रिकोण ९ । ५ । स्थानोंमें और छे श्रोर पाच और सातऔर आठविंदुयों कर्के युक्त होवे तव क्रमकर्के रुद्र २२ मल ३५ नील ३० चल ३६ वर्षोमें जातककों अथवा जातकके पिताकों मृत्यु कर्त्ताहै १४ अव सूर्यका और फलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्याष्टकवर्गमें सूर्य रेखाविंदुको शोधन कर्के दोविंदु अधिकरहैं अर्थात्पाचविंदु सूर्यके होवें और केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० में स्थित सूर्य होवे और चद्रमाकर्के युक्त

लग्नंगतेदिनकरेरिपुनीचभागेजात:कृशाणयुगविंदुयुतेचरोगी वाणादिविंदुसहितोदयगेदिनेशेस्वोच्चेथवानिजगृहेनृपतिश्चिरायुः १३ केद्रत्रिकोणोपगतेदिनेशेषट्पंचसप्ताष्टकविंदुवर्गे रुद्रामलानीलचलाव्दकेषुजातस्यवातजनकस्य मृत्युः १४ शोध्यावशिष्टद्वयविंदुयातेकेंद्रस्थितेसेंदुशनीदुसूनौ भानौदशाव्दात्परतःसमृद्धांतातस्यराज्यश्रियमाहुरार्याः १५ अथचंद्रस्य शून्यागारंतरणिशशिनोरष्टवर्गेतदीयमासंराशौ सकलशुभदेकर्मणित्याज्यमाहुः ॥ यक्ष्मालस्यंशशिनितनुगेसैकलोकाक्षिविंदौ सप्तत्रिंशच्छरदिमरणंद्वित्रिखेटान्वितेच १६ केंद्रत्रिकोणायगतेशशांकेनीचारिगेद्व्यादिकलाविहीने विदुर्द्विकेवायदिवात्रिविंदौतद्भावनाशंकथयंतितज्ज्ञाः १७

शनि और वुध होवें तव दशवर्षजन्मसे उपरांत तिसके पिताकों राज्यलक्ष्मी प्राप्त होतीहै अयसें श्रेष्ठमुनिकहतेहैं १५ अव चद्रमाका फलकहतेहै सूर्यचंद्रमाके अष्टकवर्गमें जिसराशिमें विंदुन होवे अर्थात्विंदुसें शून्यराशि होवे तिससंक्रातिमासकों सपूर्ण शुभकार्यमें त्यागकरे अर्थात् विंदुयुक्त राशि के मासमें शुभकर्मकरणा कहतेहैं और जिसके जन्मसमयमें लग्नगतचद्रमा एक दो तीन विंदुकर्के युक्तहोवे तिसकों यक्ष्मरोग और आलस्यकर्त्ताहै और जिसका दो तीन ग्रहोंककयुक्तलग्नमें होवेतव सत त्रि ३७ वर्षमेंमृत्यु कर्त्ताहै १६ और जिसके जन्मसमयमें केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ चंद्रमानीचराशीका ८ वा शत्रुकी राशिमें कृष्णपक्षमें दो वा तीन विंदुकर्के युक्त जिसभावमें स्थित होवे तिस भावका नाश कर्त्ताहै अयसे ऋषि कहतेहैं १७

और जिसकेजन्मसमयमेंचारविंदुसेलेकरके आठविंदुपर्यंतचंद्रमायुक्तहोवे और कोण ९।५ और चतुष्टय १।४।७।१०स्थानोमेंऔरएकादश ११ स्थानमेंवलयुक्तस्थितहोवेतिसभावकीवृद्धिकरताहै और कहतेहैंआठविंदुकरकेयुक्तचंद्रमाकेंद्रस्थान १।४।७।१० मेंजिसकोस्थितहोवे सोविद्या और धन औरवलकरकेयुक्तराजाहोताहै १८ अवमंगलकाफलकहतेहैं जिसकेजन्मसमयमेंउच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें नवम ९ चतुर्थ ४ लग्न १ दशम १० स्थानमेंमंगलआठविंदुकरकेयुक्तहोवे सोमनुष्य क्रोडधनकास्वामीहोताहै और धनमेषसिंहमकरवृश्चिकराशिकामंगलकेंद्र १।४।७।१०स्थानमेंस्थित और चारविंदुयोंसे अधिकाविंदुयुतहोवे सोराजाहोताहै १९और जिसकेजन्मसमयमें आठविंदुकरकेयुतमंगलदशम १०वालग्न१ मेंस्थितहोवे सो छोटा राजा होताहै और राजाके कुलमें जन्माहुवावहुत देशोंकाराजा होताहै और अपनेउच्चमें और अपने क्षेत्रमें मंगल स्थित आठविंदुकरके युत होवे सो चक्रवर्ती राजा होताहै २०

वेदादिविंदुयुतकोणचतुष्टयेवालाभेविधौवलयुतेयदिभाववृद्धिः विंद्वष्टकेशशिनिकेंद्रगतेतुजाताविद्यायशोधनवलप्रवलानरेंद्राः १८ अथकुजस्य स्वोच्चेस्वकेगुरुसुखोदयमानयातेविंद्वष्टकेचयदिकोटिधनप्रभुःस्यात् चापाजसिंहमृगकीटविलग्नसंस्थेभौमेचतुष्टयफलोपगतेचराजा १९विंद्वष्टकेधरणिजेतिलघुक्षितीशोमानेथवातनुगतेचमहीपतिःस्यात् जातोवनीशकुलजोयदिदेशनाथःस्वोच्चेस्वराशिसहितेयदिचक्रवर्ती२० अथवुधस्य केंद्रत्रिकोणेवसुविंदुकेज्ञेजातीयविद्याधिकभोगशालीस्वोच्चादिकेकद्वितयत्रिविंदौतद्भाववृद्धिर्नचभावहानिः२१विद्याधिक्यंयत्तदागारमासेविद्यारंभःसर्वविद्याकरःस्यात् गोचारेणज्ञस्यशून्यालयस्थेमंदेवंधुज्ञातिसंपद्विनाशः २२ अथगुरोः जीवाष्टवर्गाधिकविंदुराशौलग्नेनिषेकःकुरुतेसुतार्थी तद्राशिदिग्भागगृहास्थितानिगोवित्तयानानिवहूनिचस्युः ॥ २३ ॥

अब बुधका फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें आठविंदुयों करके युक्तकेंद्र १।४।७।१० त्रिकोण९।।५ स्थानमेंबुधस्थितहोवे नव जातीमेंप्रधानपनाऔर विद्याकरके युक्त और भोगोंकेभोगनेवाला होताहै और उच्चस्वक्षेत्रमित्रगृहमें एक दोतीनविंदुयोंकरके युक्तवुध भावकी वृद्धिकरताहै नाशनहिंकरताहै २१ ॥ और जिसराशिमेंवुध चारविंदुयोंसे अधिक विंदुयुक्त होवे तिसमेंकांतिमासमें विद्याकाप्रारंभ संपूर्णविद्याकेकरणेवाला होताहै और वुधको विंदुरहितराशिमें जब गोचरकरके शनि आवे तब जातिभ्रष्ट और वुद्धिनाश और संपदाका नाश होताहै २२ अब बृहस्पतिका फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें बृहस्पतिके अष्टकवर्गमें चारविंदुमें अधिक विंदुयुत राशि होवे तिसलग्नमें निषेक गर्भाधान करणेसें पुत्रजन्मताहै और तिसराशिकेदिशभागमें गौआऔरधनऔरवाहनोंकरकेयुतस्थान शुभ होतेहैं २३

और जीवाष्टकवर्गमें चारसें हीन विंदुयुत राशिमें जब गोचरमें सूर्य आवे तब संपूर्णशुभकर्मो का नास होताहै और पाचसें लेकर्के विंदुयुत जीव षष्टाष्टमव्यय स्थानमेंभी स्थित होवे तवभी बडी आयुषा कर्के युक्त और धनी और शत्रुयोंके जीतनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ और जिसके जन्म समयमें आठ विंदु युक्त राशिमें बृहस्पति केंद्र ॥ १ । ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें वा नवमस्थानमें स्थित होवे अथवा नीच और शत्रुकी राशिकों त्यागकर्के और मौढ्य दोषसें अ न्यमें रहित होवे तब अपने यशकर्के युक्त राजा होताहै ॥ २५ ॥ और जब अयसे योगमें ब्राह्म णके कुलमें जन्मे तब राजाके तुल्य प्रतापी होताहै और अनेक यज्ञकर्मोंके करणेवाला और बुद्धि और प्रताप और गुणोंकर्के युतहोताहै २६ और जिसके जन्ममें सातया आठ विंदुयुत राशिमें

जीवाष्टवर्गकयुविंदुगृहोपयातेभानौकृताखिलशुभानिविनाशितानि ॥ पंचा दिविंदुकरिपुव्ययरंध्रगेऽपेजातश्चिरायुरतिवित्तजितारिकःस्यात् ॥ २४ ॥ स्वोच्चेथवानिजगृहेवसुविंदुयुक्तेकेंद्रास्थितेसुरगुरौगुरुभावगेवा नीचारिभावमप हायविमूढराशौजातःस्वकीययशसापृथिवीपतिःस्यात् ॥ २५ ॥ यदामहीदेव कुलप्रयातः तदीययोगेनरपालतुल्यः कृतानिपुल्यप्रभवप्रसिद्धबुद्धिप्रतापानि गुणाभिरामः ॥ २६ ॥ सप्ताष्टविंदौसहलक्ष्मणेनजीवेबहुस्त्रीधनपुत्रवंतः षट्वि दुकेवाहनावित्तवंतः सपंचविंदोजयशीलवंतः ॥ २७ ॥ अथशुक्रस्य साष्टविंदु फलंकोणकेंद्रगेभार्गवेतुबलवाहनाधिपः आयुरंतमविनाशभोगवान्वित्तरत्नभु विशादिविंदुके ॥ २८ ॥ नीचास्तरिष्फनिधनोपगतेचकाव्येपूर्वोदिताक्षितिप योगविनाशनंस्यात् शुक्राल्पविंदुयुतमंदिरदिग्विभागेस्त्रीवश्यहेतुशयनीयगृ हंप्रशस्तम् ॥ २९ ॥

बृहस्पति स्थित होवेसोस्त्रीपुत्रधनकर्के युक्त चिरकाल जीताहै और छै विंदुयुक्त राशिमें बृहस्पति हो वे तब वाहन और धन कर्के युक्त होताहै और पांचविंदुयु तराशिमें बृहस्पतिहोवे तब जयवंतयुक्त श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहै २७ अब शुक्रका फलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें आठ विंदुयुत राशिमें शुक्र केंद्र १ ।४। ७ ।१० कोण ९।५ स्थानमें स्थित होवे सो सेनाका स्वामी और वाहनोंका स्वा मी होताहै और पांच विंदुसें लेकर्के युक्त राशिमें शुक्र होवे तब संपूर्ण आयुषा पर्यंत भोगवान् और धनरत्नोंकर्के युक्त होताहै २८ और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नीचराशिमें और अस्तंग त और द्वादश।ष्टमस्थानमें शुक्र स्थित होवे तब पुर्वोक्त राजयोगकानाश करताहै और शुक्रके चार विंदुसें हीन राशिकी दिशामें गृहके स्थानमें स्त्रीवश्यके निमित्त शयनका स्थान शुभ होताहै २९

अथशनिकाफलकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें शनिके अष्टकवर्गमें शून्यराशिमें जब गोचरमार्गकर्के
फेर शनि आवे तब जातक शीघ्र मृत्युकों प्राप्त होताहै अथवा धनक्षयकों प्राप्त होताहै और जिस
के जंमसमयमें एक दो तीन बिंदुकर्के युक्त केंद्र १।४।७।१० स्थानमें उच्च राशिकोविना शनि स्थि
त होवे तब अल्पायु कर्ताहै ३० और छै पाच बिंदुयुक्त लग्नमें बलीहोयकर्के शनि स्थित होवे
तब जन्मसें लेकर्के अत्यन्तदुःखी और धननाशकों प्राप्त होताहै और पांचबिंदुसें लेकर्के अधिक
बिंदुयुत राशिमें और नीचशत्रुकी राशिमें शनि स्थित होवे और चंद्रमा शुभग्रहके वर्गमें स्थित हो
वे तब चिरायु बडी आयुषावाला होताहै ३१ और मूलादि नीच शत्रु राशिमें पाच वा चार बिं
दुकर्के युत शनि होवे तब धाकर और ऊठ इत्यादि धनकर्के युत होताहै और मंगलकर्के युक्त

॥ अथशनेः ॥ कोणस्यशून्यतरराशिगतेतुमंदेजातस्यमृत्युफलमाशुध
नक्षयोवा एकाद्वित्रिकयुतबिंदुयुतेचकेंद्रेमुक्तेस्वतुंगभवनेरविजेल्पमायुः ३०
षट्पंचबिंदुसहितेतनुगेबलाढ्येजन्मादिदुःखबहुलंधननाशमेति मंदेशरादि
फलनीचसपत्नभावेजातश्चिरायुरतिशोभनवर्गकेंद्रौ ॥ ३१ ॥
मूलादिनीचगृहगेशरवेदबिंदौदासोष्ट्रवित्तसहितस्तनयेतनुस्थे सारेजुबिंदुगणि
तेपुरमंत्रतंत्रग्रामाधिपस्तुगिरिबिंदुगृहेधनाढ्यः ॥ ३२ ॥
अथसामुदायाष्टकवर्गफलम् ततःसमालिख्यभगोलचक्रेसमस्तबिंदुस्थितरा
शिकोष्ठम् रव्यादिकानामजपूर्वकानांबिंदूपयोगंप्रवदामि १ आपंच विं
शतिफलान्यफलानिसत्यमात्रिंशदक्षसहितानिचमध्यमानि ॥ त्रिंशत्परा
णिसुखवित्तयशस्कराणितत्रावबुद्धिफलदानिचसामुदाये २

पाच चार बिंदुयुत राशिमें स्थित होवे तब पुर और ग्रामका स्वामी और तंत्र मंत्रके
जाननेवालाहोताहै ॥ और सात बिंदुयुतराशिमें धनी होताहै ॥ ३२ ॥ अब सामु
दायाष्टक वर्गका फलकहतेहैं प्रथम राशिचक्रकों लिखे तिसमें सूर्यादि ग्रहोंके जो मेषादि
राशियोंमें स्थित बिंदुतिनके योगकों स्थापनकरे तिसकों जन्मपत्रमें संमीलन चक्रकर्के लिखतेहैं
तिनमें प्रत्येक तन्वादिभावोंमेंबिंदुयोगका फल सामुदाय संज्ञाकर्के कहतेहैं १ संपूर्णबिंदुयोग प
चविंशति २५ सें हीन अशुभ होताहै और पचविंशति सें लेकर्के त्रिंशद्विंदुपर्यंत शुभाशुभदोनों
फलकर्तेहैं अर्थान्मध्यमफल देतेहैं और त्रिंशत् ३० बिंदुनसेंलेकर्के बिंदुयोंकायोग सुख और धन
और यशकों देताहै और भावकीवृद्धि कर्ताहै २

और योग्रह अपनि उच्चराशीमें और स्वक्षेत्रमित्रक्षेत्रमेंत्रिकोण९।५केंद्र१।४।७।१० स्थानमेंस्थित और शुभग्रहके वर्गमेंस्थित सो संपूर्णग्रह अल्पविंदुयुत भावकीहानिकर्त्तेहें ३ औरयो ग्रहद्वादशअष्टमषष्ठ सप्तमस्थानमें और नीच शत्रुकी राशीमें और शत्रुके वर्गमें स्थित होतेहै और गुलिककी राशिके स्वामी साथ युक्तहोतेहें सो अधिक विंदुयोंके योगकर्के मुख्यफलशुभफलकर्त्तेहें और भावकीहानि नहीं कर्त्तेहें ४ और जिसके जन्मसमयमें दशमस्थानमें जो विंदुका योग तिससें एकादशस्थानमें वहुत होवें और एकादशसें द्वादशस्थानमें थोडे विंदु होवें और द्वादशसें लग्नमें वहुत होवें तव मनुष्य सुखी और धनी और यश और वलकर्के युक्तहोताहै ५ और जितने सख्या कर्केविंदु लग्नमें स्थितहोवें और उतनेहि एकादशस्थानमें होवें तव विंदुतुल्य वरसर व्यतीत हु

येतुंगराशिस्वसुहृद्गृहस्थायेकोणकेंद्रोपचयस्थिताश्च येसौम्यवर्गादिवलोपयाता स्तेनाशदालाघवविंदुकाश्चेत् ३ येचावसानरिपुरंध्रतुरंगभानांयेनीचपापरिपुखेचरवर्गसंस्थाः ॥ येमांदिराशिपतिनासहवोधकाश्चतेसर्वमुख्यफलदास्त्वधिविंदुकाश्चेत् ४ मानस्थिताल्लाभगृहेवहुत्वेलाभाल्लघुत्वेयदिरिःफराशौ ॥ रिष्फोपयातादधिकेविलग्नेनातःसुखीवित्तयशोवलाढ्यः ५ यावद्बिंदौलग्नेतावदीशेसंख्यातीतेवत्सरेराजमानम् ॥ वित्तंपुत्रंचातिविद्यामुपैतिजातःसंपद्योगशालीनरश्चेत् ॥ ६ ॥ रिष्फाधीशेमंदगेस्वोदयस्थेहोरारंध्रस्वामिनौ दुर्वलौच ॥ लग्नेयावद्बिंदुसंख्यास्तदीयाजातस्यायुर्वत्सराःसंभवति ७ यानाधीशेलग्नगे वाहनस्थे लग्नाधीशे तद्ग्रहोपेतराश्योः ॥ त्रिंशत्संख्याविंदवःसत्त्वयश्चेज्जाताराजश्रीनिधानानरेशाः ८

येपीछे मनुष्यकों राजासेंमान और धन और पुत्र और विद्या प्राप्त होताहै और संपदाके योगकों प्राप्तहोताहै ६ और जिसके जन्मसमयमें द्वादश घरका स्वामीशनिके क्षेत्रमें वा अपने क्षेत्रमें स्थित होवे और लग्न और अष्टमकेस्वामी दोनों निर्वलहोवे और लग्नमें जितने सख्या कर्के विंदुयोंका योग होवे उतने वर्षप्रमाणकर्के तिसका आयुहोताहै ७ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थघरका स्वामी लग्नमें स्थित होवे और लग्नका स्वामी चतुर्थस्थानमें होवे और तिनकी राशियोंमें स्थित यो विंदुहें सो तेत्रीं ३३ संख्या कर्के होवे तव मनुष्य राज्यलक्ष्मीको प्राप्त होतेहे और राजा होतेहै ८

औ र योगांतर कहतेहैं लग्न चतुर्थ एकादश इन्हों तीनों भावोंमें त्रिंशत् ॥ १० ॥ संख्यासें अधि
कबिंदु स्थित होवें तब मनुष्य कों बहुतलक्ष्मी और राज्य चाली ४० वर्षके उपरंत प्राप्तहोताहै
१ और जिसके जन्मसमयमें पंचविंशति २५ बिंदुयोसें लेकर्के तेत्री ३३ बिंदुपर्यंत चतु
र्थस्थानसें नवमभावपर्यंत बिंदुस्थित होवें तब मनुष्य अठाई २८ वर्षके उपरंत सेना औ
र वाहनों कर्के युक्त होताहै १० और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति कर्कट राशिका
चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे और चाली ॥ ४० ॥ बिंदु संख्या कर्के युक्तहोवे और मेषराशि
में लग्नगत सूर्यहोवे असे योगमें योजन्मताहै सो लक्ष १००००० घोड्योंका स्वामी होताहै ११
और कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चाली ४० बिंदुयोंकर्केयुक्त लग्नमें वा एकादशमें वा दशम स्था

होरावंधुप्राप्तिभावत्रयेषुत्रिंशन्मानाधिक्यबिंदूपगेषु जातस्तेजःश्रीबहुत्वंचरा
ज्यंचत्वारिंशद्वत्सरादूर्ध्वमेति ॥ ९ ॥ यत्पंचविंशतिमुखास्त्रिदशांतसंख्यावं
धुस्थितान्नवमराशिकबिंदवश्च यद्यष्टकेनसहविंशतिवत्सराणामतेपरंशर
दिवानरवाहनाढ्यः ॥ १० ॥ देवाचार्येवाहनस्थेस्वतुंगेचत्वारिंशाद्बिंदुसंख्या
समेते मेषागारेलग्नगेवासरेशेजातोराजालक्ष्यसंख्याश्वनाथः ॥ ११ ॥ च
त्वारिंशाद्बिंदुयुक्तेविलग्नेचापेमानेभार्गवेमीनराशौ स्वोच्चेभौमेकुंभगेभानुपुत्रेजा
त सर्वश्रीधरःसार्वभौमः ॥ १२ ॥ क्रियादिराशित्रितयोपजाताभवंतिपूर्वादि
चतुर्दिशश्च फलाधिकेयदिश्रितत्प्रदेशेधनादिवृद्धिंसमुपैतिजातः ॥ १३ ॥
अथगर्गपराशरादिमतेनप्रतिमासंसमुदायाष्टकवर्गफलप्रतीकारः सप्तभिर्बिं
दुभिर्युक्तेमासेमृत्युर्भवेन्नृणां अपमृत्युविनाशायदद्यात्तिलपर्वतम् ॥ १ ॥

नमें मीन राशिका शुक्रहोवे और मकरराशिका मंगल और कुंभराशिका शनि होवे सो सार्वभौम रा
जा सारीपृथ्वीका राज्यकरणे वाला होताहै १२ और कहतेहैं मेषादि राशियोंकों तीन अ । वृश्चिक्के
पूर्वादि चार दिशा कहियाहैं जैसें १ । ५ । ९ । पूर्व २ । ६ । १० । दक्षिण । ३ । ७ । ११ । पश्चिम । ४ । ८
१२ उत्तर जिन्हो राशियोंमें अधिकबिंदु होवें तिसदिशासें धनादि वृद्धिकों मनुष्य प्राप्त होताहै- १
अब गर्गपराशरादिमतकर्के प्रत्येकमासमें प्रस्ताराष्टकवर्गका फल और तिसका उपाय कहतेहैं -जि
मासमें संपूर्णग्रहोंके सातहि ७ बिंदुहोवें तिसमासमें अपमृत्युकर्के मरताहे तिसअपमृत्युके दूरकर
वास्ते तिलपर्वतकादानकरे १

॥ सुवर्ण वा वीसपल प्रमाणकर्के तोले ॥ ६६ । माले ८ ॥ अथवा तिसकाअर्ध अथवा यथाशक्ति करके दानकरे और जिसमासमें आठ विंदुहोवें तब हीनताको प्राप्त और शीघ्रमृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २ तिस अरिष्टकेदूरकरणेवास्ते कपूरकी तुला करे अथवा तिसके मूल्यका अर्ध राजा दान करे और इतरलोकोंको दशपल कपूर चंद्रमाकी प्रीतिके वास्ते दान करणा कहाहै ३ तिस दोषसें तत्कालरहितहोतेहैं और इच्छाफलकोप्राप्तहोतेहैं और जिसमासमें नव९ विंदुहोवें तिस मासमें निश्चयकरकेसर्पसेंमृत्युकोप्राप्तहोताहै ४ तिसकेनिमित्त विष्णुकी प्रीतिवास्तेचारघोडयोंवाला रथदानकरे और जिसमासमेंदशविंदुकायोगहोवे तिसमासमेंमनुष्यशस्त्रसेंप्राणों कोंत्यागताहै ॥ ५ तिसरिष्टके दूरकरणेवास्ते बहुत हीरोंकरके युक्तजोयादानकरे और जिसमासमें एकादश ११

सुवर्णविंशतिपलंतदर्धंवास्वशक्तितः वसुभिर्हीनतांयातिशीघ्रंमृत्युवशंनरः २ सकर्पूरतुलांदद्यात्तन्मूल्यार्धमथापिवा इतरेषांदशपलंचंद्रप्रीत्यैप्रकल्पयेत् ३ तद्दोषान्मुच्यतेसद्योवांछितंचफलंभवेत् नवभिर्विंदुभिःसर्पान्म्रियतेमनुजोध्रुवम् ॥ ४ ॥ ततस्तार्क्ष्यरथप्रीत्यैरथंदद्याच्चतुर्हयम् दशभिर्विंदुभिःशस्त्रात्प्राणांस्त्यजतिमानवः ५ वहुहीरकनीरंध्रंकवचंतत्रदापयेत् रुद्रैःप्राप्याभिशापंचप्राणैर्मुक्तोभवेन्नरः ६ मुक्ताहारान्वितंचंद्रंरौप्यंस्यदशभिःपलैः ॥ निर्मितंश्रद्धयादद्याद्ब्राह्मणायाग्निहोत्रिणे ७ आदित्यैर्जलदोषेणमानवस्यमृतिंवदेत् ॥ भूमिंदद्याद्द्विजेंद्रेभ्योभोग्यांशतकुटुंबिभिः ८ त्रयोदशभिर्तैर्व्याघ्रान्मानवोमृतिमाप्नुयात् ॥ हिरण्यगर्भदानेननरस्तद्दोषात्प्रमुच्यते ९ अचिरंजीवितंजह्याच्छनैःकालेनभक्षितः ॥ मूर्तिंवरवराहस्यदद्यात्कांचननिर्मिताम् १० पंचेंदुभिःप्रमीयेतगजदानमिहोच्यते ॥

विंदुहोवें तिसमें ब्राह्मणादियोंके शापको प्राप्तहोयकरके प्राणोंको त्यागताहै ६ तिसके निमित्त मोतीयोंके हारकरके युक्त दशपल प्रमाण चांदीका चंद्रमा दानकरे श्रद्धाकरके युक्त अग्निहोत्रीब्राह्मणको देवे ७ और जिसमासमें बारां १२ विंदुहोवें तिसमें जलदोषकरके मृत्युको प्राप्त होताहै तिसरिष्टकेनिमित्त श्रेष्ट ब्राह्मणोंकतांई सौ १०० कुटंबीके भोजनके वास्ते पृथ्वीदान देवे ८ और जिस मासमें त्रयोदश १३ विंदु होवें तिसमें शेरकरके मृत्युको प्राप्तहोताहै तिस रिष्टके वास्तेब्रह्माकी मूर्तिदान करणे करके तिसदोषसें रहित होताहै ९ जिस मासमें चतुर्दश १४ विंदुहोवे तिस मासमें कालकरके शीघ्रही मृत्युको प्राप्तहोताहै तिसरिष्टके दूरकरणे वास्ते सुंदर सूकरकी मूर्ती बनायकरके सुवर्णका दानकरे १० और जिसमासमेंपंद्रा १५ विंदुहोवें तिसमें अकस्मात्मृत्युहोताहै

तिस रिष्टके निमित्त हाथी दान करणा कहाहै और अशक होवे तव यथाशक्ति सुवर्ण का हाथी बनायकर्के दान करणा योग्यहै ११ अथवा तिलोंकर्के युक्त महादान करणा कहाहै और जिस मासमें सोलाबिंदु होवे तिसमें मनुष्य रिष्टको प्राप्तहोताहै १२ तिसमें कल्पतरु दान कर्के तिस दोषसें रहित होताहै अथवा दशकर्ष सुवर्ण दानकरे अथवा पांच कर्ष दानकरे दश मासेकों कर्ष कहतेहैं १३ और जिसमासमें सतारा बिंदु १७ होवे तिसमें आधि और व्याधिकर्के पीडित होताहै और स्थानसें चलायमान और थोडा भोजन नित्य प्रतिकरताहै ॥ १४ और तिस दोषकों गुडधेनुके दान करणेकर्के दूरकरे और तिसकालमें पापीग्रहकी द

अशक्तेस्तुयथाशक्तिहेमहस्तीप्रदीयते ११ तिलगर्भमहादानमथवापरिकीर्त्तितम् मासेषोडशभिर्युक्तेनरोरिष्टमवाप्नुयात् ॥ १२ तत्रकल्पतरुंदत्त्वातेनदोषेणमुच्यते ॥ दशापिवासुवर्णानितदर्धवाप्रदापयेत् १३ अपिचंद्राधियुतो व्याधिनापरिपीड्यते ॥ स्थानाच्चचलितोभूत्वामिताहारीदिनेदिने १४ गुडधेनुप्रदानेनतद्दोषपरिवर्जयेत् पापग्रहदशास्याच्चेन्महादानप्रदीयते १५ वसुविंदुसयुतेमासेनिर्दयः कलहप्रियः निर्धनोसत्यवादीस्याद्विष्टेनपरिभूयते १६ रत्नगोभूहिरण्यानिदातव्यानिशुभेप्सुभिः नवेंदुभिर्भवेद्देशत्यागोवामरणेन वा १७ तत्रशांतिर्गजरथगजंवाश्वमथापिवा संप्रदायविधानेनतद्दोषान्मुच्यते सुखी १८ विंशत्याबुद्धिरहितोनीचकर्मरत सदा श्वेताश्वदानमथवागोदानसंप्रदीयते १९

शाहोवे तव षोडश महादानकरे १५ जिसमासमें अठारा बिंदुहोवें तिसमें दयासें रहित और लडाईमें प्रीतिवाला और निर्धन और झूठबोलने वाला होताहै १६ और तिसरिष्टके दूरकरणे वास्ते रत्न गौआं और पृथ्वी और सुवर्णदान शुभकी इच्छावालेनें करणा योग्यहै और जिसमासमेंउन्नी १९ बिंदुहोवें तिसमें देशत्यागअथवा मरण होताहै १७ तिसरिष्टकी शांतिवास्ते हाथी का रथ वा हाथी वा घोडा दान कर विधानसदानकरणेसें तिसदोषसें रहित होताहै और सुखी होताहै १८ और जिसमासमें वीस २० बिंदुहोवें तिसमें बुद्धिहीन और नीच कर्मोंमें रत सर्वदाकाल होताहै तिसरिष्टके निमित्त श्वेत घोडा वा गोदान करे १९

श्रीरलक्षवादशहजारवा एकहजारब्राह्मणोंकोंभोजन देवे श्रौरजिसमासमेंइक्की२१ विंदुहोवेंतिसमासमें
उद्यमसें रहित श्रौर रोगकर्के पीडित होताहै २० श्रौर वडे ऐश्वर्यसें हीनहोताहै श्रौर चित्तमें पाप
हिताहै तिस रिष्टको दूरकरणे वास्तेधान्यपर्वतकादान श्रौर परमेश्वरकोमूर्तिस्थापन करणा कहाहै२१
भक्ति कर्के श्रौर विधानसें करे तिसदोषकी निवृत्तिवास्ते श्रौर जिसमासमें बाई विंदु होवें तिसमें क्षी
णदेहकर्के युक्त श्रौर क्षीण सबंधियोंकर्के पीडित होताहै २२ श्रौर सर्वदाकाल दुःखकों प्राप्तहोताहै
तिस रिष्टके तिमित्त उभयमुखी गौदान करे ॥ श्रथवा दशमहादान करे शांतिकी कामना कर्के
श्रौर जिसमासमें तेयी २३ विंदु होवें तिसमें श्रनेकक्लेशोंकर्के युक्त होताहै २३ तिसके निमित्त सूर्य

लक्षायुतसहस्रंवाकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ भूमिपक्षैर्निरुद्योगास्त्वथवारो
गपीडिताः ॥ २० ॥ ऐश्वर्याधिक्यरहिताभवेयुःकृष्णमानसाः धान्यपर्वत
दानंवाब्रह्मस्थापनमेवच २१ कुर्याद्भक्त्याविधानेनतद्दोषस्यापनुत्तये श्राक्
स्याचपरिक्षीणःक्षीणैर्वंधुभिरर्दितः २२ दुःखमेवसदाविंदेद्देयोभयमुखीततः ॥
श्रथवादशदानानिप्रदद्याच्छांतिकाम्यया रामपक्षयुतेमासेनानाक्लेशान्प्रपद्य
ते २३ सौवर्णीप्रतिमांभानोर्निर्मितांसप्तभिःपलैः तदर्धेनाथवाशक्त्याथवा
धार्धेनवापुनः २४ प्रदद्याद्ब्राह्मणेंद्रायदोषस्यक्षयकाम्यया चतुर्विंशतियुक्ते
तुमासेस्त्रीबुद्धिमोहितः २५ श्रगम्यागमनंवापिक्रूरग्रहदशायुत निरस्तोबं
धुभिःप्राणीस्थानभ्रष्टोधनक्षयः २६ गोसहस्रप्रदातव्यमथवापिगवांशतम्
दशवापिप्रदातव्यागावस्तद्दोषशांतये २७

की प्रतिमा दशपलसुवर्णकी श्रथवा पाच पलकी श्रथवा यथा शक्तिकर्के दानकरे २४ श्रेष्ट ब्राह्मण
केताईं दोष दूरकरणे वास्तेदानदेवे श्रौर जिसमासमें चौवी २४ विंदु होवें तिस मासमें स्त्रीकीबुद्धि
कर्के मोहकों प्राप्त होताहै २५ यद क्रूरग्रहकीदशा होवे तव श्रगम्या स्त्रीमें गमन कर्ताहै श्रौर सबं
धियोंसें निरस्त होताहै श्रौर स्थानभ्रष्ट होताहै श्रौर धनक्षयकों प्राप्तहोताहै २६ तिस रिष्टके दूरकरणे
वास्ते हजार गौदानकरे श्रथवा सौ १०० गौका दानकरे श्रथवा दश गौका तिस दोषकी शां
तिवास्ते दानकरे २७

और क्रूरग्रहकी दशाकर्के युक्तमास होवे तब यो कहाहै सो संपूर्णताकर्केदानकरे और शुभग्रहकी दशा होवे तब यथाशक्तिकर्के विधान करे २८ और जिसमासमें पंजी २५ विंदुहोवें तिसमें ग्रहपीडा और अतीसार और वातरोगादियोंकर्के पीडित होताहै २९ और चिरकाल मंदाग्निरह तीहैऔररुधिरकी व्याधि होतीहै तिसकी शांतिके वास्ते यज्ञ होमादिकरे और ब्राह्मणोंकों भोजन देवे ३० सूर्यादि नवग्रहोंकी शांतिके वास्ते करे और जिसमासमें छव्वी २६ विंदुहोवें तिसमासमें जडता होतीहै ३१ और अनेक वार कहके वो वात भूलजातीहै और मन स्थिर नहि रहिताहै तिसदोषकी निवृत्ति वास्ते ब्राह्मणोंकर्के युक्त सरस्वतीका पूजनकरे ३२ खंड और क्षीरसें लेकर्के

क्रूरग्रहदशायुक्तेमासेकुर्याद्यथोदितम् शुभग्रहदशायांतुयथाशक्तिविधीयते २८ संयुक्तेविंदुभिस्तत्वैर्मासेफलमिदंभवेत् ग्रहपीडातिसाराभ्यांवातरोगादिभिस्तथा २९ दीर्घकालंचमंदाग्निरुधिरव्याधिशांतये कारयेद्यज्ञहोमादिब्राह्मणानांचतर्पणम् ३० प्रीतयेभास्करादीनांग्रहाणांवर्द्धतेततः ऋतुपक्षसमायुक्तेमासेजाड्यंप्रजायते ३१ उक्तमप्यसकृत्सद्योविस्मरेदतिचंचलः तत्र वागीश्वरीपूजांब्राह्मणैःसहकारयेत् ३२ शर्करापायसाद्यैश्चतोपयेन्मधुसंयुतं मुक्तोजाड्यादिभिर्दोषैःप्रज्ञावैपुल्यमाप्नुयात् ३३ नक्षत्रैश्चसमायुक्तेवहुवित्तव्ययोभवेत् मलिनश्चिंतयाग्रस्तश्चाज्ञाभेदश्चजायते ॥ ३४ तत्रसंपत्प्रदांदेवीं महालक्ष्मींप्रपूजयेत् श्रीसूक्तादिविधानेनजपहोमादिकारयेत् ३५ लक्ष्मीप्रसादसपन्नोधनधान्यैःसमान्वितः वसुपक्षयुतेमासेनलाभोहानिरेवच ३६

पदार्थोंसें मधुकर्के संयुक्त ब्राह्मणोंकों तृप्तकरे अयसें करणेसें जडतादि दोषोंसें रहित होताहै और बडी वुद्धिकों प्राप्त होताहै ३३ और जिसमासमें सताइ विंदु होवें तिसमें वहुत धनका खर्च होताहै और मलीन और चिंताकर्के ग्रस्त और आज्ञाभंगकों प्राप्त होताहै ३४ तिसमें संपदाके देने वाली देवीमहालक्ष्मीका पूजनकरे और श्रीसूक्तादि विधानकर्के जपहोमादि कर्मकरे ३५ लक्ष्मीकी कृपाकों प्राप्त हुवा हुया धन और धान्योंकर्के युक्त होताहै और जिसमासमें अठाई विंदु होवें तिसमें लाभनहि होताहै और हानिहोतीहै ३६

श्रीरउद्यमनिष्फलहोताहैश्रीरधनकदाचितहिमिलताहैतिसकेनिमित्तसूर्यनारायणकीसेवाउौरजपहोमकरे ३७ तव सपूर्णदोषोंकर्के रहित होताहै श्रीरतेजस्वी होताहै श्रीर सुखकों प्राप्त होताहैश्रीर जिसमासमें उनत्री २९ विंदुहोवें तव चिंता कर्के व्याकुल होताहै ३८ श्रीर घृत श्रीर वस्त्र श्रीर सुवर्णादिदानकरणेसेंदोषसेंरहित होताहैश्रीर जिसमासमें तीस ३० विंदुहोवेंतव मानसी पीडाकोंप्राप्तहोताहै ३९ तिसरिष्टके निमित्त कर्षमात्रसुवर्ण वा श्राधा कर्ष ब्राह्मणके ताईदेवे कुटुंवी उौर वेदकेजाननेवालाब्राह्मणहोवे तिसकोंदेवेश्रीसूर्यनारायण प्रसन्नताकों प्राप्तहोवे इह दानवाक्यका उच्चारण करे ४० तव रोगरहित उौर नित्यप्रति श्रानंद कर्केयुक्त उौर चिरंजीवी होताहै श्रीर तीसाविंदुसें श्रधिक विंदुयोग.

उद्योगोविफलंयातिलभ्यतेनधनक्वचित् सूर्योपसेवनयुतोजपहोमादिकारयेत् ॥ ३७ ॥ अशेषदोषनिर्मुक्तस्तेजस्वीसुखमाप्नुयात् एकोनत्रिंशतावापिचिंतयाव्याकुलोभवेत् ॥ ३८ ॥ घृतवस्त्रसुवर्णानिदत्वादोषाद्विमुच्यते त्रिंशताविंदुभिश्चापिप्राप्नुयान्मानसींव्यथाम् ॥ ३९ ॥ सुवर्णंवातदर्धंवाब्राह्मणायनिवेदयेत् कुटुंविनेवेदाविदेश्रीसूर्यःप्रीयतामिति ४० तेजस्वीनित्यमानंदीनीरोगीर्जीवतेचिरम्॥ दुष्टग्रहदशायुक्तोविंदुभिस्त्रिंशदादिभिः ४१ शुभमेवफलंविंद्यादितिजातकनिर्णयः ॥ त्रिंशद्विंदुयुतेमासेव्यापाराद्धनमाप्नुयात् ४२ उद्योगसिद्धिश्चभवेन्मान्यतेचनृपैःसह सत्क्षौमवस्त्रलाभश्चचतुस्त्रिंशत्समन्विते ४३ कीर्तिंचमहतींविंद्याद्धार्मिकस्तीर्थभक्तिमान् पंचरामैर्भवेच्छ्रीमान् पट्त्रिंशद्विंदुभिःपुनः ४४ सुपुत्रलाभंकथयेज्जातकागमदर्शनः सप्तत्रिंशद्युतेमासेकन्यालाभःप्रजायते ४५ युक्तेष्टत्रिंशतामासेचिंतितंफलमाप्नुयात् रत्नद्रव्याणिचैकोनचत्वारिंशन्निगद्यते ४६

में दुष्टग्रहकी दशामैंवी शुभफल होताहै इह जातक शास्त्रमें निश्चय कीयाहै उौर कहतेहैं जिसमासमें तीस ३० विंदु होतेहैं तिसमें व्यापारसें धनकों प्राप्त होताहै४२ उौर उद्यममें सिद्धि उौर राजासेंमान होताहै, उौर श्रेष्ठपट्ट वस्त्रका लाभ इह फल चौंत्री विंदुयुत मासमें होताहै ४३ उौर पैंत्री ३५ विंदुयुत मासमें वडायश उौर यज्ञतीर्थादिधर्मकोंप्राप्तहोताहै उौरछित्री ३६ विंदुयुतमासमें श्रेष्ठपुत्रकालाभहोताहै श्रयसें जातक शास्त्रकें जाननेवाल्योंनें कहाहै उौर जिसमासमें सतत्री ३७ विंदुहोवें तिसमें श्रेष्ठ कन्याकालाभहोताहै ४५ श्रौरजिसमासमें श्रठत्री ३८ विंदुहोवेंतिसमासमेंचिंतित फलकों प्राप्तहोताहै श्रीर जिसमासमें उनतालिविंदुहोतेहैं तिसमें रत्न श्रौर द्रव्यकालाभ होताहै ४६

और जिसमासमें चाली ४० विंदुहोवे तिसमे धन और यशकी वृद्धि होतीहै और जिसमासमे इकताली ४१ विंदुहोवे तिसमे अनेकप्रकारों का लाभ होताहै ४७ और जिसमासमे बिताली ४२ विंदुहोवें तिसमे वडाउदार और श्रीमान् और वहुतयों कर्के सेवित होताहै और वडाधनी औरवहुतभोगोंकेभोगनेवालापृथ्वीमंडलमेंहोताहै४८जिसमासमेंपजताली४५ विंदुहोवेंतिसमेंज्ञानीऔर धनीहोताहैऔरपुण्यसागरताकोंप्राप्तहोताहैऔर लोकोकारक्षक होताहै ४१ और जिसमासमेंअठताली ४८ विंदुहोवें तिसमेंपवित्रलक्ष्मीकीवृद्धि कोंप्राप्तहोताहै और राजलक्षणोंकर्कयुक्त

धनवान्कीर्तिमांश्चैव चत्वारिंशन्नवर्द्धते भूवेदविंदुयुक्तेतुनानालाभंप्रपद्यते ४७ पक्षवेदे.पुन.श्रीमानुदारोवहुसेवितः महाधनोमहाभोगोमहीमंडलसंस्थित.४८ पंचवेदान्वितेमासेज्ञानवान्धनिकोभवेत् ॥ पुण्यसागरसंयुक्त.परमात्मास्वयं भवेत् ४९ वसुवेदमितेमासेपुण्यश्रीस्तूपचीयते ॥ राजलक्षणसंयुक्तःसर्वजीवदयापरः ५० ज्ञानिनांधनिकानांचपुण्यमार्गानुवर्तिनाम् मध्येश्रेष्ठतरोमर्त्यस्तारामध्येयथाशशी ५१ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेऽष्टवर्गाध्याय.पंचदशः ॥ १५ ॥

अथतन्वादिद्वादशभावफलाध्यायोव्याख्यायते होरालंकारमुख्यप्रभवशुभफलाद्यानिसर्वाणिपुंसांतत्तद्भावोद्भवानिद्युचरवलवशाद्यानितानिप्रवच्मि येयेभावा सितज्ञामरगुरुपतिभिः संयुतावीक्षितावानान्यैर्दृष्टानयुक्तायदिशुभफलदामूर्तिभावादिकेषु १

और सपूर्ण जीवोंमे दयाकेकरणे वाला होताहै ५० और ज्ञानियोंके और धन वानोंके मध्यमें श्रेष्ठहोताहै जैसे तारा गणके मध्यमे चंद्रमाशोभा युतहोताहै ५१ ॥ इति श्रीजातकखंडेभाषाटीकायांपंचदशोध्यायः १५ अव लग्नसें लेकर्के बारां भावोंका व्याख्यान कर्के होरालंकारादिमुख्यग्रंथोंमें जोजो भावफल शुभाशुभ ग्रहोंके वलसें मनुष्योंका कहा सोसो इसग्रथमें कहतेहे जौनसें भाव शुक्र बुधवृहस्पति कर्के युक्त और दृष्ट होवें और पापीग्रहोंकर दृष्ठ युक्तनाहि होवे सोसो तन्वादि भाव शुभफलकों देतेहे १

और कहतेहैं जिस भावमे शुभ ग्रहका लग्न स्थित होवे और भावके स्वामीकर्के युक्त और दृष्ट होवे तिसभावका ऐश्वर्यफल कहाहै और जबपापग्रहकर्के युक्त और दृष्ट नहिहोवे तब तिस भावका सुख होताहै २ और जिसभावमें नीच राशिगत ग्रह होवे और जिसमें शत्रुराशिगत ग्रह होवे सो ग्रह भावका नाश कर्ताहै अर्थात् तिस भावकी हानि होतीहै और जिसभावमें मूलत्रिकोण और उच्च और मित्रक्षेत्रमें शुभपापमें कोई ग्रह स्थित होवे तिसभावकी वृद्धिकर्ताहै ३ और कहते है जिसभावकास्वामी छठे आठमें बाहरमे स्थानमें स्थित होवे और ६ ८ १२ केस्वामी जिसभावमें स्थित होवें शास्त्रके जानणेवाले तिस भावकी हानि कहतेहैं अर्थात् षष्ठाष्टमद्वादशेशानां षष्ठाष्टमद्वादशस्थाने शुभत्व भावोकफलोनाहानिनिर्देशात् और सो भाव शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे तब फल अन्य

तन्वादिभावेषुशुभोदयेषुतद्भावनाथोपगतेक्षितेषु । तदुक्तभावस्यसमृद्धिरुक्तानपापखेटेक्षितसंयुतेषु २ नीचस्थोरिपुराशिस्थःखेटोभावविनाशकः मूलस्वतुंगमित्रस्थोभाववृद्धिकरोभवेत् ३ यद्भावनाथोरिपुरंध्ररिष्फेदुःस्थान६८१२ पोयद्भवनेस्थितस्तु तद्भावनाशंकथयंतितज्ज्ञाःशुभेक्षितश्चेत्फलमन्यथास्यात् ४यद्भावपेकेंद्रगतेविलग्नात्त्रिकोणगेवायदिसौम्यदृष्टेतुंगादिवर्गोपगतेबलाढ्येतद्भावपुष्टिफलमाहुरार्याः ५ तत्तद्भावत्रिकोणेसुखमदनगृहेचास्पदेसौम्ययुक्तेपापानांदृष्टिहीनेभवनपसहितेपापखेटैरयुक्ते भावानांपुष्टिमाहुःसकलशुभकरंचान्यथाचेत्प्रणाशंमिश्रमिश्रग्रहेंद्रैरखिलमपितथामूर्त्तिभावादिकानाम् ६

थाहोताहै तिसभावकी हानि होतीहै ४ और जिसभावका स्वामी लग्नसें केंद्र १ ४ ७ १० स्थानमें स्थितहोवे अथवा कोण ९ ५ स्थानमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के युक्त होवे और उच्च स्वक्षेत्र मित्र गृहमें बलकर्के युक्तहोवे तिसभावकी पुष्टी फल श्रेष्ठ मुनिकहतेहैं ५ और कहतेहैं लग्नादिद्वादश भावोंके स्वामियोंमें जिसजिसभावका स्वामी त्रिकोण ९ ५ में और सुख ४ ॥ में और मदन ७ में और आस्पद १० में शुभग्रहों कर्के युक्त और पापग्रहोंकी दृष्टिसें रहित होवे और भावके स्वामी कर्के युक्तहोवे और पापग्रहोंकर्के नहि युक्तहोवे तब तिन्हों तिन्हों भावोंकापुष्ट शुभफल कर्ताहै और उलटे होनेसें तिन्हांभावोंका नाशकर्ताहै और मिश्रितशुभाशुभग्रहोंकेयोगकर्के और दृष्टिकर्केमिश्रफल होताहै ६

और कहतेहैं जिसभावका स्वामी अष्टम ८ स्थानमें स्थित होवे और सूर्यकर्के युक्तहोवे अथवा नी
चराशिमे वा शत्रुकीराशिमे स्थितहोवे और यदशुभग्रहोंकर्के युक्त दृष्ट नहिं होवे तदतिस तिस भाव
का विनाश मुनियोंके समूह कहतेहे जिसजिस लग्नादि भावमें खेट जो ग्रहहे तिनके योग और दृ
ष्टिका फल होवे सो विचारकर्के लग्नादि भावोंका फल क्रमसें कहे ७ और जिसभावका स्वामी
छठे आठमें बारमें स्थानमें और शत्रु और मूढअस्तम और दुर्बल सो ग्रह जिस भावमें स्थित होवे
सो ग्रह तिस भावके शुभकरणेकों समर्थ नाहिं होता है ८ और जोग्रह ६।८।१२ । स्थानमें स्थित
होवे और नीच और शत्रुके नवांशमें स्थित होवे और सो ग्रह अपने उच्चनवांश और उच्च राशि
और मित्रांश राशिमें स्थित होवे अथवा शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे सो ग्रह शुभफलकर्ताहैं ९ और जि

नाशस्थानगतोदिवाकरकरच्छन्नस्तुयद्भावपोनीचारातिगतोथवायदिशुभैः खे
टैरयुक्तास्थितः तद्भावस्यविनाशनमुनिगणा शंसंतिखेटैर्युतोयद्यत्रापिफलप्रदो
नहितदामूर्त्यादिभानाक्रमात् ७ दुःस्थाने ६।८।१२ वारिगेमूढेदुर्बलेभावनाय
के भावस्यसपदकर्तुंनशक्ताभावमाश्रिताः ८ दुष्टस्थितोवापियदानभोग पापा
रिनीचांशकसंयुतोयः स्वतुंगमित्रांशकराशियुक्तः शुभेक्षितोवायदि शोभनःस्यात्
९ भावेशाक्रांतराशीशेदुःस्थेभावस्यदुर्बलम् स्वोच्चमित्रस्वराशिस्थेभावपुष्टिवदेहु
ध १० यद्भावलाभधनविक्रमराशियातायद्भावनाथसुहृदश्चतदुच्चनाथा तद्भा
वपुष्टिवलमवरचारिणस्तेकुर्वंतिमूढरिपुनीचविवर्जिताश्चेत् ११ भावांशतुल्य
खलुवर्त्तमानोभावोद्भवंपूर्णफलंविधत्ते भावानकेनाप्याधिकेचखेटैस्त्रैराशिकेनात्र
फलविचार्य्यम् १२ ॥

सभावका स्वामी जिस राशिमें स्थित होवे तिसराशिकास्वामी ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे तब
भावकों निर्बल कर्ताहै और अपनेउच्च मित्र स्वक्षेत्रम स्थित होवे तब भावकों पुष्ट कर्ताहै १० और
कहतेहैं जिसभावमें एकादश द्वितीय तृतीय भावके स्वामीकी राशिस्थित होवे और जिस भावका
स्वामी मित्र उच्च राशिमें स्थित होवे तिसका स्वामी जिस भावमे स्थित होवे सो ग्रह शत्रु और नीच
और मूढ राशिसें रहित होवे तब तिस भावकी वृद्धि कराहै ॥ ११ ॥ और जो ग्रहभावके
समान होवे सो ग्रह तिसभावका पूर्ण फल कर्ताहै और यों ग्रह भावांशोंसें हीनहै अथवा अधिकहै
सो ग्रहत्रैराशिककर्के भावकाफलन्यूनकर्ताहै सो विचारणेयोग्यहै १२

औरकहतेहैं देह और धनइत्यादिपदार्थजिसककेंसंपूर्णमनुष्योंके जानेजातेहैंसोद्वादश भावाध्यायअवमैं विशेषकर्केकहताहां १३ प्रथमलग्नभावमे किसकाविचारहै सोजातकपारिजातमें कहतेहेदेहका मान औेर वर्ण औेर स्वरूप औेर लक्षण औेर यश औेर गुण औेर स्थान औेर सुख दुःख औेर विदेश वास औेर तेजबल औेर दुर्बलता इतने फल श्रेष्ठ मुनी लग्नभावमे विचार करतेहै १ अब औेर कहतेहे जिसके जन्मलग्नमें शुभग्रहकीराशी । २ । ३ । ४ । ६ । ७ । ९ । १२ । स्थितहोतीहैं सो मनुष्य चिरकाल जीने वाला औेर राजाके मानवाला औेर सुखीहोताहै औेर जिसके जन्म लग्नकों स्वामी देखताहै सो धनी औेर तीव्र बुद्धिवाला औेर कुलके औेर यशके बधावने वाला होता है २. औेर कहतेहें लग्नमें यो नवांश तिसके स्वामीसें अथवा यो ग्रहसपूर्णग्रहोंमें बली होवे तिसग्रह सें देहका स्वरूप लक्षण कहे औेर जिस राशिके नवांशमे चद्रमा स्थित होवे तिसके स्वामीके तु

मूर्त्यादयःपदार्थाज्ञायंतेयेनसर्वजंतूनाम् तमहमधुनाप्रवक्ष्येभावाध्यायंविशेषेण १३ तत्रतनुभावेकिंचिंतनीयमित्युक्तम् जातकपारिजातेशरीरवर्णाकृतिलक्षणानि यशोगुणस्थानसुखासुखानि प्रवासतेजोबलदुर्बलानिफलानिलग्नस्यवदंतिसंतः १ नरश्चिरायुर्नृपपूजितःसुखीलग्नेभवेत्सौम्यगृहेयथातथा लग्नेयदास्वामिनिरीक्षितेधनीकुशाग्रबुद्धिःकुलकीर्तिवर्द्धनः २ लग्नांशपाद्वीर्ययुताद्ग्रहाद्वातनुस्वरूपाकृतिलक्षणानि वर्णंवदेच्चंद्रनवांशनाथाद्विलग्नपात्सर्वशुभाशुभानि ३ त्रिकोणकेंद्रेयदिलग्ननाथेशुभान्वितेशोभनवीक्षितेवा शुभग्रहागारगतेबलाढ्येचतुःसमुद्रांतयशःसमेति ४ होराधिनाथेरिपुरंध्ररिष्फेपापान्वितेपापनिरीक्षितेवा पापग्रहाणांभवनोपयातेजातोऽप्रकाशोभवतीहमर्त्यः ५ कीर्तिस्थानगतोविलग्नभवनेजातःस्वयंकीर्तिमान् वित्तस्थेतुविशेषकीर्तिसहितः ॥ स्वोच्चादिवर्गान्विते

ल्य जातकका वर्ण कहे ओर लग्नके स्वामीसें संपूर्ण शुभाशुभ फल कहे ३ औेर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें त्रिकोण । ९ । ५ ओेर केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमे शुभग्रह कर्के युक्त ओेर शुभग्रह कर्के दृष्ट लग्नका स्वामी स्थित होवे सो समुद्रपर्यंत यशकों प्राप्त होताहे ॥ ४ ॥ औेर जिस के जन्मसमयमें लग्नेश छठे आठमें बाहरमें स्थानमे पापीग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवे ओर पापीग्रहों की राशिमे स्थित होवे सोमनुष्य प्रकाशको नहि प्राप्त होताहे प्रसिद्धनाहिं होताहे ५ औेरजिसके जन्म लग्नकास्वामी लग्नमें स्थित होवे तब मनुष्य अपने गुणोंकर्के यशकों प्राप्त होताहे ओर लग्नका स्वामी धनभावमें स्थित होवे तब विशेष यशकर्के युक्त होताहे जबलग्नेश उच्चमित्रस्वक्षेत्रके वर्गमें स्थित होवे तब विशेष यशवालाहोताहै

और लग्नेशदुष्टस्थान ६ । ८ । १२ । मे स्थित होवे तव चंचल होताहे एक स्थानमें स्थित नहिं रहिताहि अथवा दुष्टजन होताहे और केद्रकोणमें शुभग्रहकर्के युक्त होवे तव शुभयात्राका सुख होताहैं ॥ ६ ॥ और जिसके जन्ममें लग्नेश पचमस्थानमें स्थित पचमेश कर्केयुक्त होवे अथवा नवमस्थानमें नवमेश कर्के युक्त होवे अथवा लग्नमे स्थित होवे तव तिसका पिताथशवाला होताहे और जिसके जन्ममें तीसरे भावका स्वामी लग्नमें स्थितहोवे और लग्नका कारक और तीसरेका स्वामी एकराशिमें स्थित होवें और दोनोंबलीहोवे तव तिसका भाई यशवाला होताहे ॥ ७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पचमभावका स्वामी अथवा बुध लग्नमें वा चतुर्थस्थानमें लग्ने

दुःस्थेचंचलयात्रयासहतनुर्जातोथवादुर्जनःकेंद्रेकोणगतेशुभग्रहयुतेयात्रासुखं
जायते ६ होरास्वामिनिपचमेयदिसुलस्थानेशयुक्तेथवाभाग्येवायदिभाग्यपेन
सहितेलग्नेयशस्वीपिता भ्रातृस्थानपतौविलग्नगृहगेतत्कारकभ्रातृपावेकस्थौ
बलशालिनौचयदिवातत्सोदरःकीर्तिमान् ७ विद्याधिपेवायदिचद्रसूनौलग्ने
सुखेलग्नपसंयुतेवा बलान्वितेपापदृशाविहीनेविद्यायशस्वीभवतिप्रजातः ८
सर्वार्थचिंतामणौविशेषः ॥ लग्नेशेस्वोच्चमित्रांशेस्वनवांशगतेथवा ॥ शुभग्रह
युतेदृष्टेदेहसौख्यंविनिर्दिशेत् ९ लग्नेशेबलसंयुक्तेकेंद्रकोणगतेशुभे ॥ पापग्र
हैरसदृष्टेदेहसौख्यंवदेद्बुधः १० लग्नाधिपोतिबलवान्शुभवर्गयुक्त स्वोच्चेसुहृ
द्गृहगतेस्वनवांशकेवा लग्नाधिनाथसहितेयदिकेंद्रनाथेसद्भाग्यकीर्तिधनधा
न्यचिरायुरेति ११

शकर्के युक्त होवे और बलयुक्त और पापदृष्टिसे रहित होवे तव जातक विद्या और यशकर्केयुक्तहोताहै ८ और सर्वार्थचिंतामणीमें विशेष कहतेहें ॥ जिसके जन्मसमयमें लग्नेश अपने उच्च और मित्रऔर अपने नवांशमें स्थित शुभग्रहकर्के युक्तदृष्ट होवे तिसका देहका सुख होताहे ९ और लग्नेश केंद्र १ । ४ । ७ । १० कोण९ । ५ स्थानमेंस्थित शुभग्रह होवे और पापग्रहोंकर्के नहिं देखा होवेतवपंडितलोकदेहका सुख कहतेहैं १० और जिसके जन्मकालमें लग्नेश बलकर्केयुक्त शुभग्रहके वर्गमें स्थित होवे अथवा अपने उच्चमें ॥ मित्रक्षेत्रमें अथवा अपने नवांशमेंस्थित होवे अथवाकेंद्रस्थानोंके स्वामी कर्के युक्तहोवे सो श्रेष्ट यश और भाग्य और धन और धान्य औरबडी आयुर्दाकोंप्राप्तहोताहै ११

और लग्नेश क्रूरग्रहकर्के युक्तहोवे तब देहकेसुखका विनाश कहतेहै और अष्टमस्थानमें लग्नेश होवे तब तैसाहि फल कर्ताहै और शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे तबदेहके सुखका नाश नहिंकर्ताहै १२ और जिसके जन्ममें लग्नेश ६।८। १२ स्थानकेस्वामि कर्के युक्त होवे और लग्नमें स्थित होवे तब रोगी कर्ताहै और बलकर्के हीन लग्नेश केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे तब रोगी कर्ताहै १३ और कहतेहै जिसराशिमें लग्नेश स्थित होवे तिसका स्वामी ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे तब दुर्बल देहवाला होताहै और लग्नादि जिसभावका स्वामी ६।८। १२ स्थानमें स्थित होवेतब लग्नादि भावोंका नाश करणेवाला कहतेहैं १४ और लग्नेशकर्के शनिकायोगअथवा दृष्टि होवे तब ठग

लग्नेश्वरःक्रूरसमन्वितश्चेद्देहस्यसौख्यादिविनाशमाहुः ॥ तादृक्फलंनाशगतेपितस्यशुभेक्षितश्चेत्फलमन्यथास्यात् ॥ १२ ॥ दुःस्थानपेनाथयुतेविलग्ननाथेविलग्नेसतिरोगभाक्स्यात् - बलैर्विहीनेसतिलग्ननाथेकेंद्रत्रिकोणेतनुरोगभाक्स्यात् ॥ १३ लग्नेश्वराधिष्ठितराशिनाथोदुःस्थानगोदुर्बलदेहभाक्स्यात् ॥ तत्तत्स्थलाधिष्ठितराशिनाथैर्दुःस्थैर्विलग्नादिविनाशमाहुः १४ शनेस्तुयोगात्प्रविलोकनाद्वाभीतिर्ध्रुवंवंचनचोरभूपैः ॥ राहौविलग्नेसकुजेर्कपुत्रे राहौवृहद्वीजमिहाहुरार्याः १५ लग्नेश्वरेमृत्युगतेसराहौरंध्रेसमांदौतुतथैववाच्यः ॥ लग्नेसराहौगुलिकेत्रिकोणेरंध्रेततोमांदियुतेतथैव १६ लग्नेश्वरेभूमिसुतेतनुस्थेपापान्वितेपापविलोकितेवा शिलाप्रहारैर्व्रणमुत्तमांगेखड्गादिभिर्वाकथयंतितज्ज्ञाः १७

और चोर और राजाकर्केनिश्चयकरभयहोताहै और जिसकेजन्मसमयमें लग्नमें स्थितराहुहोवे औरमंगल और शनिकर्केयुक्त होवे तब अंड वृद्धिवाला कहतेहैं १५ और राहुकर्केयुक्त लग्नेश अष्टमस्थानमें स्थित होवे और गुलिककर्के युक्त होवे तबभी अंडवृद्धिवाला होताहै और जिसके जन्मलग्नमें राहु होवे और गुलिक त्रिकोण ९।५ में स्थित होवे और अष्टमस्थानमे गुलिक कर्के युक्त राहु होवे तब भी अंडवृद्धिवाला होताहै १६ और पापीग्रहकर्के युक्त लग्नेश्वर मंगल लग्नमें स्थित होवे और अथवापापीकर्के दृष्ट होवे तब शिलाके प्रहारकर्के शिरमे छिद्र कर्ताहै अथवाखड्गादि शस्त्रकर्के शिरमें घावहोताहैअपसें श्रेष्ट मुनियोंने कहाहै १७

और जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी रूक्षराशियोंमें १ । ५ । ९ । २ । ६ । १० इन्होंमें स्थितहोवे अथवा सूर्य मंगल शनिके भवनमें स्थित होवे और लग्नकास्वामी पूर्वोक्त शुष्कराशियोंमें अष्टम स्थानमें स्थितहोवे तव अत्यंत कष्टकर्केयुक्तशुष्क देहवाला होताहै १८ और जिसराशि के नवांशमें लग्नेश स्थित होवे तिसका स्वामीशुष्क १ । ५ । ९ । २ । ६ । १० । राशिमें स्थित होवे तवभी शुष्क देह होताहै और जन्मलग्न शुष्क राशिहोवे १ । ५ । ९ । २ । ६ । १० और बहु त पापग्रहोंकर्के युक्त होवे तव देह कृश होताहै ॥ १९ और जिसके जन्मलग्नमें जल चर राशि मकरका उत्तरार्द्ध और कुंभ और मीन राशि स्थित होवें और शुभग्रहोंकर्के युक्त होवें तव स्थूल देहवालाकहतेहैं और लग्नका स्वामी चंद्रमा और शुक्र बलकर्केयुक्त होवें और शुभग्रहकर्के युक्त होवें तव देह पुष्ट होताहै २० और लग्नेश ४ । १० । ११ । १२ राशिमें स्थित होवे

लग्नेश्वरेशुष्कयुतेतथैवशुष्कग्रहाणांभवनस्थितेवा लग्नाधिपेनांशगतेतुशुष्क राशौतनौशुष्कमतीवकष्टं १८ लग्नाधिपस्यांशपराशिनाथःशुष्कर्क्षसंस्थस्त नुशुष्कमाहुः शुष्केविलग्नेवहुपापयुक्तेतत्रापिदेहस्यकृशत्वमाहुः १९ लग्ने जलर्क्षेशुभखेचरेंद्रैर्युक्तेतनुस्थूलमुदाहरंति लग्नाधिपेतोयखगेवलाढ्येसौम्या न्वितेचेत्तनुपुष्टिमाहुः २० लग्नाधिपेचेजलराशिसंस्थेशुभान्वितेतोयखगेन दृष्टे लग्नेशुभक्षेत्रगतेपिचैवलग्नेश्वरस्यांशपतौजलर्क्षे २१ लग्नाधिपस्यां शपराशिनाथःस्थूलग्रहःस्यात्तनुपुष्टिमाहुः ॥ लग्नेशुभर्क्षेशुभखेचरेंद्रोयुक्तोम वेत्स्थूलमुदाहरंति २२ पापग्रहाणांचदृशाविहीनेलग्नेशुभक्षेत्रगतेपिचैवं ॥ लग्नेगुरौतेननिरीक्षितेवाजलर्क्षगेवापिजलेविलग्ने २३ सौम्यान्वितेशोभनखे चरेंद्रैर्दृष्टेत्वतिस्थूलमुदाहरंति लग्नेशनौराहुयुतेथवास्यात्पिशाचवाधांप्रवद तिसंतः २४

और शुभग्रहकर्के युक्त होवे और चद्रमा और शुक्र कर्के दृष्टहोवे और लग्नमें शुभग्रहकी राशि होवे और लग्नके नवांशका स्वामी जलचरराशियोंमें स्थित होवे तव पुष्टदेहहोताहै २१ और जिसके जन्मसमयमें लग्नेशके नवांशकास्वामी स्थूलग्रह होवे तव देहपुष्ट वाला होताहै और शुभग्रहके लग्नमें और शुभग्रहके योगमें जन्मेतो पुष्टदेहवाला होताहै ॥ २२ ॥ और शुभग्रहकी रा शि लग्नमें पाप दृष्टिमें रहित होवे तव पुष्ट देहवाला होताहै अथवा लग्नमें बृहस्पति स्थित होवेवा लग्नको देखताहोवे अथवा जलचराशिमें स्थित होवे और जलचरराशि लग्नमें स्थित होवे तव पुष्ट देहवाला होताहै २३ और जिसका जन्मलग्न शुभग्रहकर्के युक्त और शुभग्रहोंकर्के देखा होवे तिसका वडा स्थूल देह कहतेहैं और जिसके लग्नमेंशनि राहुकर्के युक्त होवे तिसको पिशाचकी पीडा होतीहै २४

और जिसके जन्मलग्नमें सूर्य मंगल करके देख्या होवे तिसकों श्वासकास क्षयी विधिति गुल्मरोग होताहै और लग्नमें मंगल बुध करके देख्या होवे तब तिसकोंमशूरिकादिरोगकरके पीडितकर्त्ताहै२५ और जिसके जन्मलग्नमें केतुस्थित होवे और बहुत पापग्रहोंकरके देख्या होवे तिसकों निश्चयकरके पिशाचपीडा और चोरपीडा होतीहै और जिसके जन्मसमयमें चरलग्नहोवे अथवालग्नेश चरराशि में स्थित होवे सो मनुष्य बडे संचार करणे वाला होताहै २६ और जो मनुष्य चरलग्नमेंस्थित चरन वांशमें जन्मताहै सो बीसंचार शीघ्र होताहै और चरलग्नमें और चरराशिमेंस्थित लग्नेशचरग्रह चंद्र बुध शुक्र करके दृष्ट जिसके जन्मसमयमें होताहै सो मनुष्य विदेशमें भाग्य युत होताहै २७ और स्थिरलग्नमें और स्थिर ग्रहोंकरके दृष्ट युक्तमें जो जन्मताहै सो अपने देशमें भाग्योदयकों प्राप्त होताहै और बहुत धनकरके युक्त होताहै और शुभाशुभ दोनोंग्रहोंकरके युक्त होवे तब अनेक देशभ्रमण करणे वाला और कुमार्गी होताहै ॥ २८ ॥ और शुभ ग्रहके लग्नमें और शुभग्रहकेयोगकरके

लग्नेरविभूमिसुतेनदृष्टेःश्वासक्षयीविधृतिगुल्मभाजः भौमेविलग्नेशशिसूनुदृष्टे मशूरिभिःपीडितदेहभाक्स्यात् २५ केतौविलग्नेबहुपापदृष्टेपिशाचचौरैर्भव तिध्रुवंभीः लग्नेचरेतद्भवनेश्वरेवाचरस्थितेसंचरतिप्रजातः २६ संचारशील श्चरभेविलग्नेलग्नांशकेचैवमुदाहरंति विदेशभाग्यश्चरभेविलग्नेचरेतदीशेचरखे टदृष्टे २७ स्थिरेस्वदेशेबहुभाग्ययुक्तःस्थिरैर्ग्रहैर्भूरिधनान्वितःस्यात् मिश्रै ग्रहैःसंयुतभाग्यकीर्तिर्नानाविदेशेप्रचरन्कुमार्गी २८ लग्नेशुभेशोभनदृष्टियुक्ते वास्यात्सुखंतन्नहिपापयोगात् दुःखीभवेत्पापबहुत्वयोगेलग्नेतुबाल्यान्मरणांत काले २९ वर्गोत्तमांशेयदिलग्ननाथेस्वोच्चांशकेवास्वसुहृद्दृकाणे शुभान्वितेवा शुभदृष्टियातिनरोभवेदामरणांतसौख्यम् ॥ ३० ॥ अथतनुचिंतायांशरीराकारव र्णाद्युच्यते कर्काजगेतनुविधौधनवान्सुरूपोन्येलग्नगेतिविकलोतिजडश्चकृष्णे सूर्येदरिद्रइहतौलितनौनिशांधःसिंहाक्रियेसतिमरःशशिभेक्षिणरुक्युक् ३१

और दृष्टिकरकेंशुभफलहोताहै जब पापग्रहका योग होवे तब शुभ नहीं होताहै॥और बहुत पापग्रहोंका योग होनेसें जन्मसें लेकरके मरणपर्यंत दुःखी होताहै २९ और जिसके जन्म समयमें वर्गोत्तम नवांशमें लग्नेश स्थित होवे अथवाउच्चांशमें स्थित होवे वा मित्रके दृष्काणमें स्थित होवे और शुभयुक्त दृष्ट होवे तब मनुष्य जन्मसे लेकरके मरणपर्यंत सुखकों प्राप्त होताहै ३० अब देहका वर्ण स्वरूप कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें कर्कट और मेष राशिमें लग्न गत चंद्रमा होवे सो धनी और सुंदर रूपवाला होताहै और क्षीण चंद्रमा लग्नगत होवे तबव्याकुल और जडस्वभाव वालाहोताहै और सूर्य लग्नमें स्थित होवे तवदरिद्री होताहै और तुलालग्नमे लग्नस्थित होवे तब रात्र्यंध दोषवाला होताहै और सिंह और मेष लग्नमें लग्नगत होवेतवमंददृष्टिवालाहोताहैऔर कर्कटलग्नमेस्थितहोवे तब नेत्र रोगवालाहोताहै३१

॥ और जो जन्मलग्नके नवांशकास्वामी है और जो ग्रह संपूर्ण ग्रहोंमें बली होवे तिस ग्रह कान्याई मूर्ति होतीहै ॥ और सूर्यके त्रिंशांशका जो ग्रहस्वामीहै तिसकीन्याई स्वभाव होताहै और चंद्रमा ॥ बृहस्पति ॥ सूर्य ग्रह सत्वगुणीहैं और शुक्र ॥ बुध रजोगुणीहैं और मंगल शनी तमोगुणीहैं ॥ अबसूर्यादि ग्रहोंकास्वरूप कहतेहैं सूर्यथोडे और कुंडलों वाले केशों वालाऔर चतुरबुद्धि और सुंदररूप और चंचल और समदृष्टि और मधुपिंगलनेत्र सुंदर और शूरवीर और प्रचंड क्रूर और स्थिरस्वभाव और रक्तश्याम वर्ण और गूढचरण और पित्तप्रकृति और अस्थिसार और बडागंभीर और चतुरस्रदेहवाला और मोटा और रक्त वस्त्र धारणे वालाहै ३३ इतिरवेः अबचंद्रमाकास्वरूपकहतेहैं चंद्रमासौम्यस्वभाववाला और सुंदर आभाकरकेयुक्तनेत्रोंवाला और मीठा

लग्नांशपस्यचबलाढ्यखगस्यमूर्त्तिस्त्रिंशांशपादिहरवेःप्रकृतिंचावेंद्यात् सत्वंश शीज्यरवयोथरजःसितज्ञौभौमार्कनौतमइमेददतीहजंतोः ३२ अथसूर्यादी नांस्वरूपमाह अल्पाकुंचितमूर्द्धजःपटुमतिर्मुख्यःसुरूपश्चलोनात्युच्चोमधुपिंगचारुनयनःशूरःप्रचंडःस्थिरः ॥ रक्तश्यामतनुर्निगूढचरणःपित्तास्थिसारो महान्गंभीरश्चतुरस्त्रकःपृथुलकःकौसुंभवासोरविः ॥ ३३ ॥ इतिरवेः ॥ सौम्यःकांतिविलोचनोमधुरवाग्गौरःकृशांगोयुवा प्रांशुःसूक्ष्मनिकुंचितासितकचःप्राज्ञोमृदुःसात्विकः चारुर्वातकफात्मकःप्रियसखारक्तैकसारोघृणीः वृत्तःस्त्रीनिरतश्चलोतिसुभगःशुक्लांबरश्चंद्रमाः ३४ इतिचंद्रस्य ह्रस्वःपिंगललोचनोदृढवपुर्दीप्ताग्निकांतिश्चलोमज्जावानरुणांबरः पटुतरःशूरश्चविस्पष्टवाक्हिंस्त्राकुंचिततदीर्घकेशतरुणःपित्तात्मकस्तामसश्चंडःसाहसिकोरिघातकुशलःसरक्तगौरः कुजः ॥ ३५

बोलनेवाला और गौरवर्णऔर कृशअंगोंवाला और युवा अवस्थाकरके युक्त और प्रभायुक्त और सूक्ष्मकुंडलोंवाले कालेकेशोंवाला और चतुर और कोमल और सत्वगुणी और सुंदररूप और वातकफ प्रकृतिवाला और मित्रकाप्यारा और रक्तसारवाला और लज्जायुक्त औरगोलदेहवाला और स्त्रीरत और चंचल और श्रेष्ठभाग्यवाला और शुक्लवस्त्रोंवालाकहाहै ३४ अबमंगलकास्वरूप कहतेहैं मंगलछोटेदेहवाला और पिंगलवर्णकेनेत्रोंवाला और दृढशरीर और प्रकाशवाली कांतिवाला और चंचल और मज्जासार और लालवस्त्रोंवाला और बडाचतुर और शूरवीर और विशेषकरकेस्पष्टवाणीवाला और हिंसाकरणेवाला और कुंडलोंकरकेयुक्त लंबेकेशोंवाला और कुमारअवस्थावाला और पित्तप्रकृति और तमोगुणी और प्रचंडस्वभाववाला और हठी और शत्रुमारणेमें चतुर और रक्तगौरवर्णवालाहोताहै ३५

अबबुधकास्वरूपकहतेहैं बुधलाल कोणेकरकेंयुक्तवडेनेत्रोंवाला और मीठाबोलनेवाला औरदूर्वाश्यामव र्णवाला और त्वचासार वाला और रजोगुणी और स्पष्टवाणीवाला और पुष्टदेहवाला और त्रिदोषप्र कृतिवाला और प्रसन्नमूर्ति और मध्यमरूप और चतुर और गोलशरीर और नाडियोंवाला देह और वेश और वाणीकरके संपूर्णोंकाअनुकरणेवाला और पलाशपत्रकीन्याई वस्त्रधारणेवाला होताहै ३६ अबगुरुकास्वरूपकहतेहैं बृहस्पतिथोडेपिंगले नेत्रोंवाला और श्रवणकरके धारणाशक्तिवाला औरसिं हकी और बदलकीन्याईगंभीरवाणीवाला और स्थिरस्वभाववाला और सत्वगुणी और पवित्र और शुद्धसुवर्णकीन्याईदेहवाला और ऊंचीछातीवाला और छोटा और धर्मबुद्धिवाला और नीतिमेंचतुर और बृद्धप्रकृति और ऊंचीभूमीमेंविचरणेवाला और क्षमायुक्तऔर पीतवस्त्रोंवाला और कफप्रकृतिवा

इतिभौमस्य ॥ रक्तांतायतलोचनोमधुरवाग्दूर्वादलश्यामलस्त्वक्सारोतिरजोधिकस्फुटवचः पीनस्त्रिदोषात्मकः ॥ हृष्टोमध्यमरूपवाक्सुनिपुणोव्याप्तःशिराभिस्ततःसर्वस्यानुकरोतिवेशवचनैःपालाशवासोबुधः ॥ ३६ ॥ इतिबुधस्य ॥ ईषत्पिंगललोचनःश्रुतिधरःसिंहाब्दनादःस्थिरःसत्वाढ्यःशुचिशुद्धकांचनतनुःपीनोन्नतोरस्थलः ॥ ह्रस्वोधर्ममतिर्विनीतिनिपुणोवृद्धोर्ध्वभूटः क्षमी वापीतांवरभृत्कफाधितनुकोमेदःप्रधानोगुरुः ३७ इतिगुरोः ॥ चारुदीर्घभुजःपृथूरुवदनःशुक्राधिकःक्षांतिवाक् कृष्णाकुंचितसूक्ष्मलंबकचकोदूर्वादलश्यामलः कामीवातकफाधिकोतिसुभगश्चित्रांवरोराजसोलीलाविन्मतिमान्विलासनयनःस्थूलांसदेशःसितः ३८ इतिभृगोः पिंगोनिम्नविलोचनःकृशतनुर्दीर्घःशिरालोलसः कृष्णांगःपवनात्मकोतिपिशुनःस्नाय्वान्वितोनिर्घृणः मूर्खःस्थूलनखद्विजोतिमलिनोरूक्षोशुचिस्तामसोरौद्रःक्रोधपरोजरापरमतिःकृष्णांवरोभास्करिः ३९ इतिशनेः

ला और मेद प्रधानहोताहै ॥ ३७ ॥ अबशुक्रकास्वरूपकहतेहैं शुक्रश्रेष्ठलंबीभुजोंवाला बडेपटऔर बडेमुखवाला और वीर्य्यसार और क्षमायुक्तवाणीवाला और कालेसूक्ष्मलंबेकेशोंवाला और दूर्वाश्याम और कामी और वातकफप्रकृति और श्रेष्ठभाग्ययुक्त और चित्रवस्त्रोंवाला और रजोगुणी और लीलाकेजाननेवाला और रतिसुखकेजाननेवाला और विलासयुक्तनेत्रोंवाला और मोटेमोंठयोंवालाहै ३८ अबशनिकास्वरूपकहतेहैं शनि पिंगलवर्णकेनीचेनेत्रोंवाला और कृशदेहवाला और लंबेदेहवाला और नाडियोंकरकेयुक्त और आलसी और कालेअंगोंवाला और वायुप्रकृति और चुगल और नाडीसार और निर्लज्ज और मूर्ख और मोटेरोम और मोटेदंतोवाला और बडामलीन और रूक्ष और अपवित्र और तमोगुणी और भयानक और क्रोधी और कालेवस्त्रोंवालाहै ३९

अव कालपुरुषके अंगविभाग कहतेहे मेषराशि शिरहै श्रीर वृष मुखहै श्रीर मिथुन दोनों बाहूहे श्रीर कर्कट हृदयहै श्रोर सिंह उदरहै श्रोर कन्या कटि देशहै श्रीर तुला वस्ति नाभीके नीचे चार अंगुल स्थानमेंहै श्रीर वृश्चिक गुदास्थानहै श्रोर धनु दोनों पट्टहै श्रोर मकर दोनों जानूहे श्रोर कुंभ दोनों जंघाहैं श्रोर मीनदोनों पादहैं ४० इन्होंराशियोंको जन्मकालमें मनुष्यके अंगोंमे चिंतनकरे जिस अंगमें शुभग्रहका योग होवे सो पुष्ट होताहै श्रोर जिसमें पापी ग्रहोंका होवेयोग तिस अंगमें रोगादियों कर्के उपद्रव होताहै ॥ ४१ ॥ अव अंगोंमें व्रण चिन्हका ज्ञान वृहज्जातकसें कहतेहैं लग्नमें तीनद्रेष्काण होवेहैं प्रथमद्रेष्काणमें शिर श्रोर नेत्र श्रोर नासिका श्रोर दोनों कपोल श्रोर ठोडी श्रोर मुख इह सात ७ अंग कल्पना करे श्रोर दूसरे द्रेष्काणमें गल श्रोर मोंढे श्रोर दोनों भुजा श्रोर पास्से श्रोर हृदय श्रोर त्रिकस्थान श्रोर नाभि इह सात ७ अंगकल्पनाकरे श्रोर तीसरे द्रेष्काणमें वस्ति श्रोर लिंग गुदा श्रोर अंडकोश श्रोर पट्ट श्रोर जानू श्रोर जंघा श्रोर पाद

शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणिकटिवस्तिगुह्यसञ्ज्ञानि उरुजानुजंघेचरणावितिरा शयोजाद्याः ४० कालनरस्यावयवाःपुरुषाणांचिंतयेत्प्रसवकाले सदसद्ग्रहसंयो गात्पुष्टाःसोपद्रवाश्चापि ॥ ४१ ॥ अथव्रणचिन्हज्ञानंवृहज्जातके कदृक्श्रोत्रन साकपोलहनवोवक्त्रंचहोरादयस्तेकठांसकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडचनाभिस्त्वति वस्ति शिश्नगुदेततश्चवृषणावूरूततोजानुनी जंघेग्रीत्युभयत्रवाममुदितैर्द्रेष्काण भागैस्त्रिधा ॥ ४२ ॥ तस्मिन्पापयुते व्रणशुभयुतेदृष्टेचलक्ष्मादिशेत्स्वक्षांशस्थि रसंयुतेतुसहजःस्यादन्यथागंतुकः मंदेश्मानिलजोग्निशस्त्रविषजोभौमेवुधेभूभ वः सूर्येकाष्ठचतुष्पदेनहिमगौशृंग्यब्जजोन्ये शुभे ॥ ४३ ॥

इह सात अंग कल्पना करे इह एक लग्नमें तीन प्रकारकर्के अंग विभाग जानणे ॥ श्रोर उदित राशिया वामाग श्रोर अनुदित दक्षिणाग होताहै जैसें लग्नमें प्रथमद्रेष्काणहोवे तव लग्न शिर श्रोर दूसरी २ श्रोर वाहरमी राशि दक्षिण वामनेत्र तृतीय कादश दक्षिण वाम कर्ण श्रोर चतुर्थ दशम दक्षिण वाम नासापुट श्रोर पंचम नवम दक्षिण वाम कपोल श्रोर षष्ठाष्टम दक्षिणवाम हनू श्रोर सप्तमराशि मुख एवं द्वितीय द्रेष्काणे कंठादितृतीये वस्त्यादि ४२ श्रोर तिन्होंपूर्वोक्तस्थानोंमें पापग्रहका योग दृष्टि होवे तव व्रण होताहै श्रोर शुभग्रहके योग दृष्टि कर्के तिलमसकादि लक्षण होताहै श्रोर ग्रह अपनी राशि श्रोर नवांशमें वा स्थिर राशि नवांशमें स्थित होवे तव सहित व्रण जन्मताहै श्रोर स्वक्षांदिके विना आगंतुक शस्त्रादियोंकर्के होताहै॥ श्रोर शनि पत्थरकर्के श्रोर वायु कर्के श्रोर मंगल अग्नि शस्त्र विषकर्के श्रोर वुध मृत्तिका कर्के श्रोर सूर्य काष्ट चतुष्पदकर्के श्रोर चंद्रमा शृंगी श्रोर शखादि कर्के व्रण कर्ताहै श्रोर गुरु शुक्र कर्के शुभ होताहै ४३

श्रोर जिसश्रंगमें बुध कर्कैयुक्तदो तीनपापग्रहस्थितहोवें तिसश्रंगमें पूर्वोक्तव्रणादिश्रवश्यहोतेहैं श्रोर शुभग्रहोंकर्के युक्त बुध जिस श्रंगमें स्थित होवे तिसमें पूर्वोक्तकालांगविभागराशि स्थानमें तिललक्ष्मादिहोताहै ४४ श्रव होराप्रदीपसें ऊंर वर्णचिन्ह विशेष कहतेहैं जन्मलग्नसें सप्तम भावका स्वामी मंगलवा शुक्रवा बृहस्पति होवें तब जातकके मस्तकमें चिन्हहोताहै इसमेंसंशय नांहींहै ४५ ऊंर जिसके जन्मलग्नमें शुक्र वामंगल वा चंद्रमा स्थित होवे तिसकों द्वादश ॥ १२ ॥ वर्षमें

समनुपतितायस्मिन्भागेत्रयःसबुधाग्रहाभवतिनियमात्तस्यावाप्तिःशुभेष्वशुभेषुवा व्रणकृदशुभाःपष्ठेदेहेतनोर्भसमाश्रितेतिलकमसकक्कृद्दृष्टःसौम्यैर्युतश्चसलक्ष्मवान् ॥ ४४

	शिरः १	
२	दृशौ	१२
३	कर्णौ	११
४	नासा	१०
५	कपोल	९
६	हनू	८
	मुख ७	

	कंठ १	
२	अंशक	१२
३	भुजौ	११
४	पार्श्व	१०
५	वक्ष	९
६	क्रोड	८
	नाभिः ७	

	वस्ति १	
२	शिश्नगु	१२
३	वृषण	११
४	ऊरू	१०
५	जानुनी	९
६	जंघे	८
	पाद ७	

अथान्यद्वर्णचिन्हज्ञानंहोराप्रदीपात् ॥ लग्नात्सप्तमपोभौमःशुक्रोवापिबृहस्पतिः ॥ चिन्हंमूर्ध्निस्थितंज्ञेयंजातकस्यनसंशयः ४५ यदाशुक्रोथवाभौमोलग्नस्थोपिनिशाकरः द्वादशेब्देभवेत्तस्यमस्तकेवान्हिदर्शनम् ४६ अष्टमेचयदाराहौशुक्रेवापितनुस्थिते ॥ वामकर्णेभवेच्चिन्हंतस्यलग्नाद्विनिश्चितम् ४७ जायास्थानेयदाराहौमंत्रीवापितनुस्थितः बाव्होश्चिन्हंविजानीयाज्जन्मलग्नाद्विचक्षणः ४८ त्रिषडायगतेभौमेशुक्रोवापिव्यवस्थितः वामपार्श्वेभवेच्चिन्हं भुजदेशसमीपतः ४९ द्वादशाष्टमशुक्रोपिमंत्रीचतनुसास्थितः वामेभुजेभवेच्चिन्हलग्नाच्चैवयथाक्रमम् ५०

मस्तकमें अग्निकर्के चिन्ह होताहै ॥ ४६ ॥ ऊंर अष्टमस्थानमें राहु ऊंर लग्नमें शुक्र स्थित होवे तव वामेंकर्णमें निश्चयकर्के चिन्ह होताहै ॥ ४७ ॥ ऊंर सप्तमस्थानमेंराहु ऊंर लग्नमें बृहस्पति स्थित होवे तव भुजोंमें चिन्ह होताहै ४८ ऊंर तीसरे छठे ग्यारहमें स्थानमें मंगल स्थित होवे अथवा शुक्र स्थित होवे तिसकों भुजाकेपास वामें अंगमें चिन्हहोताहै ४९ श्रोर अष्टमश्रोर द्वादश स्थानमेंशुक्र श्रोर लग्नमें बृहस्पति स्थितहोवेतव वामी भुजामें चिन्ह होताहै ५०

श्रीर कहतेहैं वुधशनी दोनों जन्मलग्नमें स्थित होवें श्रीर दशम स्थानमें सूर्यस्थित होवे तिसकी दक्षिणपार्श्वमें प्रकट चिन्ह होताहै ५१ श्रीर जिसकों मंगल श्रीर वुध लग्नमें स्थित होवें उौर राहु छठे श्रीर नवम श्रीर पंचमस्थानमें स्थितहोवेतिसकेलिंगमें श्रीर गुदामेंतिलमाषादि प्रकट चिन्ह होताहै ५२ श्रीर नवम पंचममें शुक्र स्थितहोवे श्रीर वृहस्पति श्रीर वुध अष्टम स्थितहोवे श्रीर चतुर्थस्थानमें शनि स्थित होवे तव कुक्षिमें चिन्ह होताहै ५३ श्रीर दूसरे स्थानमें शुक्र श्रीर अष्टममें सूर्य श्रीर दशममें शनि राहु स्थित होवें तव नाभिमें चिन्ह होताहै ५४ श्रीर दशममें वृहस्पति श्रीर दूसरे चंद्रमा श्रीर तीसरे स्थानमें शुक्रराहुस्थित होवेंतव कटि देशमें चिन्ह होताहै ५५ श्रीर वाहरमें स्थानमें वृहस्पति श्रीर तीसरे छठे जाहरमें स्थानमे वुध श्रीर तीसरे स्थानमें शुक्र स्थित होवे तव हृदयमें चिन्ह होताहै ५६ श्रीर तीसरे शुक्र उौर तीसरे छठे जाहरमें स्थानमें वृह

वुधमंदौयदालग्नेकर्मगेवादिवाकरे दक्षिणेपार्श्वकेचिन्हंतस्यज्ञेयंपरिस्फुटम् ५१ कुजेसौम्येथवालग्नेराहुःषष्ठत्रिकोणगःलिंगेगुदेभवेच्चिन्हंतिलमाषादिकंस्फुटम् ५२ त्रिकोणेपिभवेच्छुक्रोजीवेसौम्येमृतिस्थिते पातालेहिस्थितेमंदेकुक्षौचिन्हंसमादिशेत् ५३ धनस्थानेयदाशुक्रेत्वष्टमेचदिवाकरे ॥ कर्मगौराहुमंदौचे नाभौचिन्हंसमादिशेत् ५४ कर्मगोपियदामंत्रीद्वितीयोपिनिशाकरः सहजे शुक्रराहुभ्यांकट्यांचिन्हंसमादिशेत् ५५ व्ययस्थानेयदामंत्रीवुधोपित्रिषडायगः ॥ सहजस्थोयदाशुक्रोहृदिचिन्हंसमादिशेत् ॥ ५६ ॥ सहजस्थोयदा शुक्रोमंत्रीवात्रिषडायगःधर्मस्थानेनिशानाथेगुदेगोलकमादिशेत् ॥ ५७ पातालेशुक्रराहूचकुजेमंदेतनुस्थितेगुल्फयोःपादवाहुभ्यांमत्स्यचिन्हंसमादिशेत् ५८ मृतिस्थानेनिशानाथेमंदेशुक्रेव्ययास्थिते सप्तमेवुधमंदाभ्यांवाव्होश्चिन्हंसमादिशेत् ५९ अथतनुंप्रतिदृक्फलं ॥ सूर्यावलोकिततनौपितृपक्षवित्तोविक्रांतवक्त्रनृपसेवनकीर्तियुक्तः चंद्रेक्षितेजलविपण्ययुतःसदक्षोस्त्रीणांवशोमृदुवपुर्वहुमत्सराढ्यः ६०

स्पति श्रीर नवममें चंद्रमा जव स्थित होवे तवगुदामें गोलक होताहै ॥ ५७ ॥ श्रीर जिसके जन्मसमयमें चतुर्थस्थानमें शुक्र राहूस्थित होवें श्रीर मंगल शनीलग्नमें स्थितहोवें तव गिट्टयोंमें श्रीर पैरोंमें श्रीर भुजोंमें मत्स्यकीन्यांई चिन्हहोताहै ५८ श्रीर जिसकों अष्टमस्थानमें चंद्रमा स्थितहोवे श्रीर शक्रशनी वाहरमें स्थानमें स्थितहोवें श्रीर जिसकों सातमें ७ स्थानमें वुधशनि होवें तिसकीभुजोंमें चिन्हहोताहै ५९ अवलग्नमेंदृष्टियोंकाफलकहतेहैं जिसका जन्मलग्न सूर्यकर्के देख्याहोवे सो पिताके धनकों प्राप्तहोताहै श्रीर विकरालमुखवाला श्रीर राजाकी सेवाकरणेवालाहोताहै श्रीर चंद्रमाकर्के दृष्टलग्नहोवे तव जलव्यवहारकर्केजीवनकर्ताहै अर्थात् जलस्थानोंमें समुद्रांतर्गत देशोंमें व्यापारकर्के धनकोंप्राप्तहोताहै श्रीर वडाचतुर श्रीर स्त्रीके वश्य श्रीर कोमल देहवाला श्रीर दूसरेके उत्कर्षकोंनासहारणे वाला होताहै ६०

॥ श्रौर मगलकर्के लग्न देख्याहोवे तब युद्ध श्रौरहठमें इच्छावाला श्रौर प्रचड होताहै ॥ श्रौर विद्याकर्के युक्त श्रौर गुरो कर्के श्रौर श्रेष्टजनों कर्के रतहोताहै ॥ श्रौर बुध कर्के लग्नदेख्या होवे तब स्नानमें चतुर श्रौर शिल्प विद्याक जाननेवाला श्रौ.कलामें चतुर श्रौर बडेधन श्रौर यशवाला होताहै ॥ ६१ ॥ श्रौर बृहस्पति कर्के लग्न देख्याहोवे तब व्रतनियमकरणेवाला श्रौर अभ्यागत श्रौर गुरुदेवब्राह्मणकोंमाननेवाला श्रौर श्रेष्टजनोकोंमानने वाला होताहै श्रौर शुक्रकर्के लग्न दृष्ट होवे तब सौभाग्य श्रौर भोग धन सुख सुंदर रूपकर्क युक्त श्रौर वेश्यास्त्रीमें रत होताहै ६२ श्रौर जिसके लग्नमें शनि देखताहोवे सो भारउठाने वाल श्रौर मार्गकेच लनेवाला श्रौर रोगी श्रौर नीचवर्णकी वृद्धास्त्रिकों सेवनेवाला श्रौर सुखसें हीन श्रौर मूर्खहोताहै श्रौर जिसके लग्नकों स्वामी देखे सो बडे सुखवाला श्रौर राजाकाप्यारा श्रौर शुभग्रह लग्न

संग्रामसाहसरुचिः क्षितिजेनचंडोविद्वान्सुधर्मनिरतोगुरुणेष्टएव ॥ स्नानेनरो निपुणधी शशिजेनशिल्पविद्याकलातिचतुरोतिधनोयशस्वी ॥ ६१ ॥ स्यातोव्रतातिथिगुरुद्विजदेवभक्तोमान्य सतांचमनुजोगुरुदृष्टलग्ने सौभाग्य भोगधनसौख्ययुत सुरूपोवेश्यांगनापरिवृतोभृगुजेक्षितेच ॥ ६२ ॥ भाराध्वरोगमलकुत्सितवृद्धनारीयुक्तस्ततोगतसुख शनिनातिमूर्खः स्वामीक्षिते तिसुखवान्नृपवल्लभश्चवाच्य शुभेनचशुभोत्रखल खलेन ६३ सारावल्यां ॥ एकेनापिनदृष्टंसमस्तगुणवर्जितंनरंलग्नम् , स्वगृहेस्वभावसहितंजनयतिखलुकेवलंनित्यम् ६४ त्र्यादिग्रहसंदृष्टप्रायेणशुभार्थदलग्नम् एकेनापिशुभेनचनतु पापैर्दृश्यतेवहुभिः ६५ सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टेलग्नेभवेन्महीपालः वलिभि समसौख्योवाविगतभयोदीर्घजीवीच ६६ लग्नेत्रयोपिगदशोकाविवर्जितानांकुर्वंतिजन्मशुभदा पृथिवीपतीनाम् पापास्तुरोगभयशोकपरिप्लुतानांजन्मप्रदाः सकललोकतिरस्कृतानाम् ६७

शहोवे तव शुभकर्मकर्ताहै श्रौर पापीग्रहहोवे तब दुष्टकर्मकर्ताहै ६३ श्रौर सारावलीमेंकहते हैं जिसका जन्मलग्न एक ग्रहकर्केबी नहिदेख्याहोवे सो मनुष्यसपूर्णगुणोंसे हीन श्रौर श्रपने घरमें लग्नस्वामिके स्वभावके तुल्य स्वभाव वाला होताहै ॥ ६४ ॥ श्रौर तीनसें लेकर्के ग्रहजिसके लग्नकों देखें सो विशेषकरके शुभफलका देतेहैं श्रौर एक शुभग्रहके देखनेसे यो शुभफलहोताहै सो बहुत पापग्रहोंके देखनेसें नहिंहोताहै ६५ श्रौर जिसके लग्नकों सपूर्णग्रहवली होयकर्के देखें सो राजाहोताहै श्रौर निवलहोयके देखें तब मध्यम सुखी श्रौर चिरकाल जीताहै ६६ श्रौर जिसलग्नकों तीन शुभग्रह देखें तिसमें रोग शोक सें रहित जो राजेतिनका जन्महोताहै श्रौर जिसलग्नकों तीनपापीग्रह देखें तिसमें रोग भय शोक युक्त श्रौर सपूर्ण लोकोंकेतिरस्कारकाप्राप्त होनेंवाल्योंकाजन्महोताहै ६७

अब लग्नमे द्विग्रहयोगका फल होराप्रदीपसें कहतेहैं जिसके जन्मलग्नमें चंद्रमा और बुध दोनों स्थित होवे सो पराक्रम और बुद्धि और सुखकर्के युक्त होताहै और सुंदर और श्रेष्ठभाग्योंवाला और श्रेष्ठवाणीकर्के चतुर होताहै ॥ ६८ ॥ और जिसके लग्नमें चंद्रमा और बृहस्पतिस्थितहोवें सो बहुत पुत्र मित्र स्त्रीयों वाला और सुंदर देह वाला और संबधियोंकर्के युक्त होताहै और पुष्ट और बडी छाती वाला होताहै ॥ ६९ ॥ और जिसके लग्नमें चंद्रमा और शुक्रका योग होवे सो बहुत वेश्या और स्त्रीयोंमे सक्त होताहै और श्रेष्ठअंगोंवाला और रूपकर्के युक्त होताहै और सुगंध माल्य वस्त्रोंमें प्रीतिवाला होताहै ७० और जिसके लग्नमें चंद्रमा शनीका योग होवे सो भयानक रूप और दासकर्म करनेवाला और कठोर और लोभी और मानहीन और निद्रा आलस्य कर्के युक्त

अथलग्नस्थद्विग्रहयोगफलंहोराप्रदीपात् ॥ सत्त्वधीःसुखसंपन्नःकांतोतिसुभगोभवेत् ॥ वाचालेनिपुणोलग्नसंस्थयोःशशिसौम्ययोः ६८ बहुपुत्रसुहृद्दारोसुदेहोबंधुसंयुतः ॥ सुपीनपृथुवक्षःस्याल्लग्नेशशिसुरेज्ययोः ६९ ॥ बहुवेश्यांगनासक्तःकल्पांगोरूपसंमतः ॥ स्याच्चंद्रसितयोर्लग्नेगंधमाल्यांबरप्रियः ७० रौद्रोदासःखरोलुब्धोमानवोमानवर्ज्जितः ॥ भवेन्निद्रालसःपापोलग्नेशीतांशुमंदयोः ७१ हिंस्रोग्निकर्मकुशलोधातुवादकृतश्रमः ॥ दूतोगुह्यविहारीचविलग्नेभौमसौम्ययोः ७२ मंत्रीवाग्मीसुतैर्युक्तोलब्धकीर्तिर्महाधनः ॥ नित्योत्साहीतुधर्मिष्ठोलग्नेभौमसुरेज्ययोः ७३ द्विजदेवार्चनरतोधनीनृपतिपूजितः ॥ सुभगःपंडितःस्यातोलग्नेबोधनशुक्रयोः ७४ विद्यार्थवाहनैर्हीनोमलिनःपापसंयुत अल्पायु क्षीणभाग्यश्चलग्नेचंद्रजमंदयोः ७५

और पापी होताहै ७१ और जिसके लग्नमें मंगल बुधका योग होवे सो हिंसाके करणेवाला और अग्निके कर्मोमें चतुर और धातुवादके करणेवाला और दूतवृत्तिवाला और गुप्तव्यवहार करणेवाला होताहै ॥ ७२ ॥ और जिसके लग्नमें मंगल बृहस्पतिका योग होवे सो मंत्री और श्रेष्ठवक्ता और पुत्रों कर्केयुक्त और यशकोंप्राप्त और वडेधनकर्केयुक्त और नित्य उत्साहकर्केयुक्त और धर्मी होताहै ॥ ७३ और जिसके लग्नमें बुधशुक्रका योग होवेसो ब्राह्मण और देवताके पूजनमें रत और धनी और राजाकर्के पूज्य और श्रेष्ठभाग्योंवाला और पंडित और प्रसिद्ध होताहै ॥ ७४ ॥ और जिसके लग्नमें बुध शनीका योग होवे सो विद्या धन वाहनोंकर्के रहित और मलीन और पापकर्के युक्त और थोडाजिंदगीवाला और खोटेभाग्योंवाला होताहै ७५

और जिसके लग्नमें बृहस्पति और शुक्रका योगहोवे सो श्रेष्ठकर्मं करणेवालाराजा औरसुंदरदेहवाला और राजाके वंशमें जन्मनेवाला और अन्यकुलमेंवी राजाके तुल्यहोने वाला होताहै ७६ और जिसके लग्नमें बृहस्पति शनीका योग होवे सोमंदभाग्य और आलसी और दुष्ट और विद्याहीन और निष्ठुर और थोडेसुखवाला और केवलधनकोंहि जाननेवाला होताहै ॥ ७७ ॥ औरजिसके लग्नमें शुक्रश नीका योग होवे सो संपूर्णवर्णकी स्त्रियोंको भोगने वाला और स्त्रीके सुखवाला और धनके भोगने वाला और वहुत पुत्रों वाला और शोकसें रहित होताहै ॥ ७८ ॥ अवलग्नेशकेबाराभावोंमेंफलकहतेहैं फलप्रदीपग्रथसें जिसके जन्मसमयमें लग्नकास्वामी लग्नमें स्थित होवे सो रोगरहितचिरकाल जीवनेवाला होताहै और वडेबलवाला अथवाराजा और पृथ्वीके ला

सत्कर्मकुशलोराजासुदेहोभूपवंशजः ॥ नृपतुल्यकुलेन्यस्मिन्विलग्नेजीवशुक्रयोः ७६ मंदोलसःखलोऽविद्वान्निष्ठुरोल्पसुखीभवेत् ॥ धनसासोविलग्नस्थसुरेज्यरविपुत्रयोः ॥ ७७ ॥ सर्वनारीभोगयुतःकांतासौख्यार्थभोगभाक् ॥ वहुपुत्रोविशोकःस्याद्विलग्नेशुक्रमंदयोः ॥ ७८ ॥ अथतनुस्वामिनोद्वादशभावफलंफलप्रदीपात् ॥ लग्नाधिपतिर्लग्नेनीरोगंदीर्घजीविनंकुरुते अतिवलमवनीशंवाभूलाभसमन्वितंजातम् ॥ १ ॥ लग्नपतिर्धनभवनेधनवंतंविपुलजीवनंस्थूलम् स्थानप्रधानमनिशंसत्कर्मरतंनरंकुरुते २ सहजगतोलग्नपति सद्बंधुप्रवरमित्रपरिकलितम् धर्मेरतंदातारंशूरंसबलंकरोति नरम् ३ लग्नेशस्तूर्यगतोनृपप्रियप्रचुरजीवितपुरुषम् सल्लब्धपितरापित्रोर्भक्तम् वहुभोजनकुरुते ४ पंचमगोलग्नपति सुसुतंसत्यागसीश्वरस्यातम् वहुजीविनंसुकर्मनिरतंनरंतनुतेविनीतंच ५

भकों प्राप्त होताहै १ और जिसकेजन्ममेंलग्नेशदूसरेभावमेंस्थितहोताहै सोधनवान् और चिरजीनेवाला और पुष्टदेहवाला और स्थानमें प्रधान और नित्यशुभकर्म करणेवाला होताहै २ और जिसके जन्ममें लग्नेश तीसरेभावमें स्थितहोताहै सो श्रेष्ठ भाई और मित्रोंकरके युक्त होताहै और धर्ममें युक्त दाता और शूरवीर और बलयुक्त होताहै ३ और जिसकेजन्ममें लग्नेश चतुर्थभावमें स्थितहोताहै सो राजाका प्यारा और वडी आजीवकावाला और पितासें श्रेष्ट लाभवाला और पिता माताका भक्त ॥ और थोडाभोजनकरणेवाला होताहै ४ और जिसके जन्ममें लग्नेश पचमभावमें स्थितहोवे सो श्रेष्ट पुत्रवाला और त्यागी और लक्ष्मीवाला और प्रसिद्ध औरवडीउपजीवकावाला औरश्रेष्टकर्ममेंरत होताहै ५

श्रौर जिसके जन्मसमयमें लग्नेश छठेभावमें स्थितहोवे सो रोग रहित श्रौर पृथ्वीके लाभवाला श्रौ
वली होताहै श्रौर कृपण श्रौर धनीश्रौर शत्रुयोंके नाशकरणेवाला श्रौर श्रपने कर्ममें चतुर कर्ताहै
, श्रौर जिसके जन्ममें लग्नेश सप्तमभावमें स्थितहोवे सो तेजस्वीश्रौर श्रेष्ठ स्वभाववाला श्रौर तिस
की स्त्रीवीश्रेष्ठस्वभाववाली श्रौर श्रेष्ठ रूपवाली होतीहै ७ श्रौर जिसकी लग्नेश अष्टमभावमेंस्थित
होवे सो कृपण श्रौर धनसग्रह करणेवाला श्रौर वडीश्रायुपावालाश्रौर क्रूरग्रहहोवे तव कटुकवाणी
वाला श्रौर शुभग्रहहोवे तव देहकर्के पुष्टहोताहै ८ श्रौर जिसकी लग्नेश नवमस्थानमें स्थितहोवे त
व श्रेष्ठभाईयोंवाला श्रौर पुण्यवान् होताहै श्रौर तुल्यपराक्रमीश्रौर श्रेष्ठस्वभाववाला श्रौर धर्ममें प्रसि
द्ध श्रौर तेजस्वीहोताहै ९ श्रौर जिसके जन्ममें लग्नेश दशमभावमें स्थितहोवे सो राजासें लाभवा
ला श्रौर पंडित श्रौर श्रेष्ठस्वभाववालाहोताहै श्रौर गुरुजन श्रौर माताके पूजनमें बुद्धिवाला श्रौर

रिपुभवनेलग्नेशोनीरोगभूमिलाभिनंसवलं ॥ कृपणधनिनमरिघ्नंसुकर्मदक्षा न्वितंकुरुते ॥ ६ ॥ प्रथमपतौसप्तमगेतेजस्वीशीलवान्भवेत्पुरुषः तद्भार्या पिसुशीलातेजस्कलितासुरूपाच ॥ ७ ॥ लग्नपतावष्टमगेकृपणोधनसं चक सुदीर्घायुः क्रूरखगेकटुजल्पीसौम्येवपुषाभवेत्पीनः ॥ ८ ॥ मूर्ति पतिर्यदिनवमस्तदाभवेत्प्रवरबांधवः सुकृती समसत्त्वश्चसुशील सुकृत स्यात सुतेजस्वी ॥ ९ ॥ प्रथमेशेदशमस्थेनृपलाभः पंडित सुशीलश्च गुरु मातृपूजनमतिर्नृपप्रसिद्ध पुमान्भवति १० एकादशगस्तनुपः सुजीवितसुतस मन्वितविदितम् तेजस्कलनंकुरुतेवलिनपुरुषंनसीदंतम् ॥ ११ ॥ द्वादशगेमूर्तिपतौकटुवाक्वादकरोमतिमान् ॥ सहगोत्रकैर्मिलनमतिविदेश गोदत्तभुक्तनरः १२ पराशरीये ॥ देहाधिप पापयुतोष्टमस्थोव्ययारिगो वांगसुखनिहंति ॥ सर्वत्रभावेषुचयोजनीयमेवबुधैर्भाववशात्फलंहि १३

राजाके पास प्रसिद्ध होताहै १० श्रौरजिसके जन्ममेंलग्नेश एकादशभावमें स्थितहोवे सो श्रेष्ठजी
वकावाला श्रौर पुत्रोंकर्के युक्त श्रौर प्रसिद्धहोताहैश्रौरतेजस्वीश्रौरवलीश्रौरखेदकोनहिं प्राप्तहोताहै ११
श्रौर जिसके जन्ममें लग्नेश वाहरमें भावमें स्थित होताहै सो कठोर वाणीवाला श्रौर वादकरणे
वाला श्रौर बुद्धिमान् श्रौर सवधियोंसें मिलनेकी इच्छावाला श्रौर विदेश गमन करणे वाला
श्रौर देकर्केश्राप खाने वाला होताहै १२ श्रौर पाराशरीमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नका
स्वामी पापग्रहोंकर्के युक्त अष्टम स्थानमें स्थित होवे अथवा छठे वाहरमें स्थानमें होवे सो देहकेसु
खकों हतकर्त्ताहै श्रयसें हिं जिसभावका स्वामी ६ । ८ । १२ स्थानमें स्थित होवे तिस भावके
सुखकों हतकर्त्ताहै १३

॥ और इसी प्रकारकर्के तीसरे और सप्तमें स्थानमें अष्टमेश कर्के युक्त तीसरे सप्तम भावके स्वामी ॥ ३ । ८ । १२ ॥ में होवें तब भ्राता और स्त्रीको देहका सुखनहीं होताहै और तैसेंहीं लग्नेश मित्रके घरमेंबी बारहमें छठे अष्टमें स्थित होवे तबबी देहका सुख नहीं होताहै १४ और पापीग्रह लग्नेश होयकर्के लग्नमें स्थित होवे अथवा चद्रमाके लग्नमें वा नवांशमें स्थित वा केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । में स्थित होवे तब रोगको देताहै और त्रिकोण । ९ । ५ । और लाभ ॥ ११ ॥ स्थानमें होवे तब रोगको दूरकर्त्ताहै १५ और जिसके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी वा चद्रराशिका स्वामी तीसरे बारहमें छठे स्थानमें निर्बल होयकर्के स्थित होवे वा नीच राशिमें वा अस्त वा शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तब देहमें कृशता और रोग कर्त्ताहै ॥ १६ ॥ और कहतेहैं जिसका जन्मलग्न स्वामीकर्के दृष्टहोवे सो राजा होताहै अथवा राजाका प्याराहोताहै अथ

एवंतृतीयेपिचसप्तमेपिफलंविमृश्यंकृतिभिःप्रयत्नात् ॥ तथाव्ययेमित्रगृहे रिपौमृतौस्थितेविलग्नाधिपतौफलस्यात् १४ पापोविलग्नाधिपतिर्विलग्नेचद्रस्यलग्नेयदिवालवेस्यात् ॥ ददातिरोगंसहिकेंद्रसंस्थस्त्रिकोणलाभेयुगदंनिहंति १५ देहाधिपश्चंद्रगृहाधिपोवातृतीयरिष्फारिगतोवलःस्यात् ॥ नीचास्तगोद्वेष्यगृहस्थितोवाकार्श्यंशरीरेतिगदंकरोति १६ लग्नेस्वामीक्षितेराजातत्प्रियोवाधनीसुखी सौम्येक्षितेखिलसौख्यंपापदृष्टेत्वशोभनम् १७ सुखीलग्नेद्व्यादिदृष्टेसर्वदृष्टेनृपोभवेत् ॥ लग्नेत्रयःशुभाराजादुःखीपापत्रयाद्भवेत् १८ लग्नाधिपोतिवलवानशुभैरदृष्टःकेंद्रस्थितःशुभखगैरवलोक्यमानःमृत्युंविधूयविदधातिसदीर्घमायुःसार्द्धंगुणैर्बहुभिरूर्जितयाचलक्ष्म्या १९ ॥ इतितनुभावविचारः ॥

वा धनी और सुखी होताहै और जिसका जन्मलग्न शुभग्रहोंकर्के दृष्टहोवे सो बडे सुखको प्राप्तहोता है और पापी ग्रहोंकर्के लग्न देख्याहोवे तब अशुभ फल होताहै १७ और जिसका जन्मलग्न दोसे लेकर्के तीन चार ग्रहो कर्के देख्या होवे सो सुखी होताहै ॥ और सपूर्णग्रहोंकर्के देख्या होवे तब राजा होताहै और जिसके जन्मलग्नमें तीन शुभग्रह स्थित होवें सो राजा होताहै और जिसके लग्नमें तीन पापग्रह स्थितहोवे सो दुःखी होताहै १८ और जिसके जन्मलग्नका स्वामी बली होवे और पापग्रहोंकर्के नहीं देख्याहोवे और केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंमें स्थितहोवे और शुभग्रहोकर्के देख्या होवे सो लग्नेश मृत्युको दूरकर्के बडी आयुषाको प्राप्त कर्त्ताहै और गुण और बडी लक्ष्मीकर्के युक्त कर्त्ताहै १९ इतितनुभावविचारः ॥

अब धनभावका विचार कहतेहैं तिसमें क्याक्यापदार्थहे सो कहतेहे धन और नेत्र और मुख और वाणी और कुटुंब और भोजन इन्होंका फल क्रमकर्के धनभावसें कहाहै ॥ १ ॥ जिसके जन्मसमयमें धनभाव और लाभभाव और लग्नभाव स्वामीकर्के युक्त होवें तव वडे धनवालाहोताहै और धनका स्वामी और लाभका स्वामी दोनों एकादशमें स्थित होवें और अपने मित्र और उच्चादि राशियोंमें स्थित होवें तव वडेधनकों प्राप्त होताहै और तैसेंहि एकादश और दूसरे घरके स्वामी मित्रग्रहहोय कर्के लग्नमें होवें तव धनी होताहैऔर लग्नका स्वामी धनेश और लाभेश कर्के युक्त लग्नमें स्थित होवे तव वडे धनवाला होताहै २ और धनभावमें स्थित जो ग्रह और धनभावकों देखता जो ग्रहहै और धनकास्वामी जो है इह तीनों ग्रह अपनी दशातर्दशामें धनकाजो कारक ग्रहहै तिसके अनुसार धनलाभकों प्राप्तहोताहै ३ और जव लग्नका स्वामी धनभावमें स्थित होवे तव

अथधनभावविचारःतत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् वित्तनेत्रमुखविद्यावाक्कुटुंवाशनानिच द्वितीयस्थानजन्यानिक्रमाज्ज्योतिर्विदोविदुः ॥ १ वित्तायोदयराशयः पतियुतावित्ताधिकोजायते लाभस्थौधनलाभपौनिजसुहृत्तुंगादिकौचेत्तथातद्व ल्लाभधनाधिपौतनुगतावन्योन्यमिष्टग्रहौ लग्नेशेधनलाभराशिपयुतेलग्नेवहुद्रव्यवान् २ धनोपयातःप्रथमोथदर्शीग्रहोद्वितीयोधनपस्तृतीयः तत्पाकभुक्तौधनलाभमेतिक्रमेणतत्कारकवर्गमूलात् ३ धनस्थेयदिलग्नेशेनिधिमान् वलसंयुते दुर्वलेपापसंयुक्तेवंचनादिफलंवदेत् ४ वित्ताधीशेसोदरेशेनयुक्तेलग्नस्थेचभ्रातृवित्तसमेति मातृस्थानस्वामिनामातृवित्तंयद्भावेशेनान्वितंतद्धनंस्यात् ॥ ५ ॥ वित्ताधीशेलग्नगेलग्ननाथेवित्तस्थानेयत्नतोवित्तमेति यद्भावस्थौलग्नवित्तेश्वरौचेत्तन्मूलात्तुद्रव्यलाभंनराणाम् ॥ ६ ॥

निधिकों प्राप्त होताहै और वलहीन और पापयुक्त होवे तव निधिका नाशचौरादियोंकर्के होताहै ४ और जिसकें जन्मसमयमें दूसरे घरका स्वामी तीसरे घरके स्वामीके साथ लग्नमें स्थित होवे तव भ्राताके धनकोंप्राप्त होताहै औरचतुर्थभावके स्वामीके साथलग्नमें स्थितहोवे तव माताके धनकों प्राप्त होताहै और धनेश जिसभावके स्वामीके साथमिलकर्के लग्नमें स्थितहोवे तिसके धनकों प्राप्तहोताहै ५ और धनेश लग्नमे और लग्नेश धनभावमें स्थित होवें तव यत्नसें धनकों प्राप्त होताहै और जिस भावमें लग्न और धनके स्वामी स्थित होवें तिसकें सवंधसें धनका लाभ होताहै ६

श्रौरचंद्रमादूसरेघरमें स्थित शुक्रकर्के देख्या होवे तब धनकों देताहै श्रौरदूसरेभावमेंबुधस्थितहोवेश्रौर शुभग्रहकर्के देख्या होवे तब धनी होताहै ७ श्रौर जिसभावमें धनेशस्थित होवे तिसभावकीवृद्धि होतीहै श्रौर तिस भावकें संबंधसें धनलाभ होताहै श्रौर तिसभावका स्वामी वक्रगतिमें होवे तब चार श्रौर सें धनकी सिद्धि होतीहै ८ श्रौर दूसरे भावका स्वामी एकादशमें स्थित होवे श्रौर एकादशकास्वामी दूसरे जाहरमें स्थानमेंस्थित होवे अथवा सो दोनों केंद्र १ ४ । ७ । १० । स्थानमें स्थित होवें तब धनकर्केयुक्त श्रौर प्रसिद्धताकों प्राप्त होताहै ९ श्रौर जिसके जन्मकालमें दूसरे घरका स्वामी छठे वाहरमें स्थानमें स्थित होवेअथवा बाहरमें घरकास्वामी दूसरे स्थानमें होवे श्रौर जाहरमें घरकास्वामी छठे श्रष्टम स्थानमें स्थित होवे वा वाहरमें होवे तब धनका नाशहोताहै १० श्रौर वाहरमें स्थानमें वृहस्पति स्थित होवे श्रौर दूसरे घरका स्वामी बलहीन होवे श्रौर लग्नकों शुभग्रह नहि

चंद्रःकुटुंवभवनेशुक्रेणनिरीक्षितःप्रदाताच सौम्येशुभसंदृष्टेसएवधनवान्स दाख्येयः ७ अर्थाधीशोयत्रसंस्थोनराणांतस्मिन्कालेतत्रस्थाद्विविशेषात्तद्भावे चद्रव्यलाभंकरोतिवक्रेसौचेद्दिक्षुसर्वार्थसिद्धिः ८ धनेशेलाभसंयुक्तेलाभेशे धनलाभगे तावुभौकेंद्रगौवापिधनमान्स्यातिमान्भवेत् ९ धनेशे व्ययषष्ठस्थेव्ययेशेवित्तगेथवा लाभेशेरिपुरंध्रस्थेव्ययेवाधननाशनम् १० व्ययभावगतेजीवेवित्तेशेवलवर्जिते शुभैरनीक्षितेलग्नेवित्तनाशंवदेद्बुधः११ लग्नेशेधनराशिस्थेधनेशेलाभराशिगे लाभेशेवाविलग्नस्थेनिध्यादिधनमाप्नुयात् ॥ १२ लग्नायधनभाग्येशाःपरमोच्चांशसंयुताःवैशेषिकांशगावापितदा कोटीश्वरोभवेत् १३ दिनेश्वरकरछन्नेधनेशेनीचराशिगेपापषष्ठ्यंशसंयुक्तेऋणग्रस्तोभवेन्नरः१४ लग्नेश्वरेणसहितेयदिवित्तनाथेदुःस्थेक्षिनाशनमथास्फुजिदिंदुयुक्ते नेत्रेश्वरेतनुगतेयदिनैशिकांधःस्वोच्चेस्वहृद्गृहगतेनतथाविधंनरः १५

देखता होवे तब धननाश होताहै ११ श्रौर लग्नेश दूसरे स्थानमें स्थित होवे श्रौर दूसरे घरका स्वामी लाभ ११ में स्थित होवे अथवा लाभेश लग्नमें स्थित होवे तब निधिसें लेकर्के धनकों प्राप्त होताहै १२ श्रौर लग्न श्रौर एकादश श्रौर दूसरे श्रौर नवम भावके स्वामी परम उच्च नवांशमें स्थित होवें अथवा वैशेषिकांशमें स्थित होवें तब कोटिसंज्ञा धनका स्वामी होताहै १३ श्रौर जिसके जन्ममें दूसरे भावका स्वामी सूर्यकी किरणों कर्के श्रांछादित होवे श्रौर नीच राशिमें स्थित होवे श्रौर पाप षष्ठ्यंशमें युक्तहोवे तब ऋणकर्के ग्रस्त होताहै १४ श्रौर जिसके जन्मकालमें लग्नेशकर्के युक्त दूसरे स्थानका स्वामीदुः ६८ १२ स्थानमें स्थित होवे तब नेत्र नाशहोताहै अथवा शुक्र चंद्रमाकर्के युक्त दूसरे घरका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तब रात्र्यंध दोषकों प्राप्तहोताहै श्रौर उच्च श्रौर मित्रक्षेत्रमें स्थित होवे तब दोषनहि करताहै १५

और जिसके जन्मकालमें लग्न और दूसरे और सप्तम औरनवम और पंचमके स्वामी छठे आठमें वाहरमें स्थानमें स्थित होवें और शुक्रका लग्नमें संबंध होवे तव नेत्रोंकर्के हीन होताहै १६ और सर्वार्थचितामणीमें कहतेहैं जिसके जन्ममें सूर्य और शुक्र लग्नेश कर्के युक्त दूसरे भावका स्वामी छठे आठमें वाहरमें स्थानमें होवे सो जन्मांध होताहै और जिसके जन्ममें वाहरमें स्थानमें मंगलके साथ दूसरे भावका स्वामी होवे तव वामें नेत्रसें काणा होताहैऔर शनिके साथ होवे तव दक्षिण नेत्रसें काणा होताहै १७ और जिसकेजन्मलग्नमें सूर्य चंद्रमा दोनों स्थित होवें और शनि और मंगल कर्के दृष्ट होवें तव नेत्रोंका नाश कर्तेहैं और शुभाशुभ ग्रहोंकर्के देख होवें तव चिपटे नेत्रोंवाला होताहै और केवल शुभग्रहोंकर्केयुक्त और दृष्ट होवें तव नेत्रोमें दो पनाहि कर्तेहैं १८ और दूसरे घरकास्वामी पापग्रहकर्के युक्त दूसरे भावमें स्थित होवे और शुभग्रह

विलग्नवित्तास्ततपःसुतेशारिपुव्ययछिद्रगृहोपयाताः विलग्नसंबंधकरःसितश्चे
द्विलोचनाभावमुपैतिजातः १६ सर्वार्थचिंतामणौ भान्वछलग्नपतिभिःसहि
तेतदीशेजात्यंधकोभवतिरंध्रव्रणांत्यगेपि रिःफेधरासुतगतेनयनंहिवामंनाशं
तदाव्रजातिसूर्यसुतेतदन्यत् १७ इंद्वर्कसंयुक्तहरौविलग्नेशन्यारदृष्टेक्षिवि
नाशमाहुः शुभाशुभैर्बुद्बुदलोचनःस्याच्छुभैर्नदोषःसहितेक्षणाभ्याम् १८ नि
मीलिताक्षस्तुधनेसपापेतदीश्वरेशोभनदृष्टियुक्ते लग्नाधिपेपापखगेनयुक्तेवला
न्वितेकारककेखचरेंद्रे १९ नेत्रेशुभेतद्भवनेश्वरेवासौम्यान्वितेकारकखेचरेंद्रेलग्ने
श्वरेणापियुतेथदृष्टेविशालदृष्टिःसनरोविशेषात्२० जातोसौसुमुख.शुभेधनगतेतुं
गादिवर्गान्विते तद्भावेयदिसौम्यवर्गसहितेवाक्सिद्धिमेतिध्रुवम् आज्यस्पर्शमुपैति
वित्तगृहगेभौमेदिनेशेक्षिते जातःकोद्रवमुख्यभुक्धनगतेराहौचपापेक्षिते २१

कर्के देख्या होवे और लग्नेश पापग्रहकर्के युक्त होवे और कारक ग्रह बली होवे तव निमीलिताक्षि होताहै १९ और धनभावमें शुभग्रह होवे और धनका स्वामी शुभग्रहकर्केयुक्त होवे और धनकाकारक शुभयुक्तहोवे वा दृष्ट होवे तवहच्छेनेत्रोंवालाविशेषकर्के होताहै२०और जिसके जन्मसमयमें उच्चादिवर्गमें स्थितधनभावमेंशुभग्रहहोवे सो श्रेष्टमुखवालाहोताहै औरधनभावमें शुभग्रहके वर्गमेंशुभग्रह स्थित होवे तववाक्सिद्धिकों प्राप्तहोताहैऔरधनस्थानमेंमंगल सूर्यकर्के देख्या होवेतव घृतकर्के दग्ध होताहै और धनभावमें पापग्रहकर्के दृष्ट राहु स्थित होवे तव कोद्रेसें लेकर्केमाडेअन्नकाभक्षणकर्ताहै २१

ऊौरजिसकेलग्नमेंऔरदूसरेऔरअष्टमस्थानमेंमूर्यस्थितमंगलकर्केयापापग्रहकर्केदेख्याहोवेसोघृतसंयोगक के अग्निसेंजलताहैऔरककफपीडायोंकर्केपीडितहोताहै २२ औरजिसकेदूसरेभावमेंपापग्रहहोवेऔरपापी ग्रहकर्केदृष्टहोवेसोदुर्मुखहोताहैऔरदूसरेभावकास्वामीगुलिककर्के युक्तहोवेतबक्रोधीमुखवालाहोताहै २३ और दूसरेघरका स्वामीकेंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवे तब शोभाकर्के युक्त प्र फुल्लित मुखवाला होताहै और अपने उच्च और मित्रकेवर्गमेंस्थित होवेऔर शुभग्रहकर्के दृष्टहोवेतब. श्रेष्ठ मुखवाला होताहै २४ औरजिसकेजन्मसमयमें दूसरेभावका स्वामी राहुकर्के युक्त दुःस्थानमें ६ । ८ । १२ और जिस राशिमेंराहु स्थित होवे तिसके स्वामी कर्के युक्त होवे तब तिसकी दशांतर्दशामे दंतरोग होताहै और तिसमें बुधकीअंतर्दशाहोवे तब जिव्हामें रोग होताहै २५ और जिसके जन्मसमयमेंदूसरेतीसरे घरकेस्वामीराहुकर्के युक्त होवेंसो. गलरोगकर्के बडे कष्टकों प्राप्त होताहै और दूसरे भावमें सूर्यचंद्रमा स्थित होवें तब दरिद्रकों देतेहैं और मंगलशनिदोनोंस्थित होवें तबकष्टकरतेहैं २६ और दूसरेभावकास्वामीबृहस्पतिकर्के युक्त अष्टम भावमें स्थित होवे तबमूकजन्हा होताहैऔर संपूर्णस्थानोंमें जो ग्रह स्वक्षेत्र औरउच्चराशिमें स्थित

लग्नार्थाष्टमस्थेर्केभौमेवान्यतरेक्षितेआज्यस्पर्शाग्निभीतिर्वासंभवंतिमसूरिकाः२२
पापैर्युतेमुखस्थानेदुर्मुखःपापवीक्षिते क्रोधाननोनरःपापीतद्दीशेगुलिकान्विते२३
प्रफुल्लवदनःश्रीमान्केंद्रेमुखपतौयदा स्वोच्चस्वमित्रवर्गस्थेसुमुखःशुभवीक्षिते२४
वाग्भावेशेराहुयुक्तेचदुःस्थेराव्हाक्रांतस्थाननाथान्वितेच पाकेभुक्तौतस्यदंतामयः
स्यात्जिव्हारोगंतारकासूनुभुक्तौ२५राहुद्वितीयगृहपौसहजेशयुक्तौजातःसमेति
गलरोगमतीवकष्टम् दारिद्यदौरविशशीधनराशियातौभौमार्कजौसकलरोग
करौभवेताम् २६ वाग्भावेशेगुरुयुतेनाशस्थेमूकतामियात् दोपकृन्नतुसर्वत्र
स्वोच्चस्वर्क्षगतोग्रहः २७ वागीशबुधजीवेपुनिर्विद्योनाशगेपुच केंद्रेतेपुत्रिको
णेवास्वर्क्षेवाविद्ययान्वितः २८ वागीशस्थांशकेसौम्यस्वोच्चेवाशुभवीक्षिते
पारावतांशकेवापिवाग्मीपटुनरोभवेत्२९केंद्रत्रिकोणगेजीवेशुक्रेस्वोच्चंगतेयदि
वाग्भावगेदुपुत्रेवागणितज्ञोभवेन्नरः३० गणितज्ञोभवेज्जातोवाग्भावेभूमिनंदने
ससौम्येबुधसदृष्टेकेंद्रेवाभूमिनंदने ३१ ॥

होताहैसोदोपनहिंकरताहै२७ औरबृहस्पति औरबुधऔरदूसरेभावका स्वामीअष्टमस्थानमेंस्थित होवे तब विद्याहीन करतेहैं और केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ ५ स्थानमें होवेंतब विद्याकर्के यु क्तहोताहै २८ और दूसरे भावका स्वामी शुभग्रहके वा उच्चके नवांशमें स्थित शुभग्रहकर्के देख्याहो वेअथवा पारावतांशमें स्थितहोवे तब श्रेष्ठ वाणीवाला और बडा चतुर होताहै २९ और केंद्रत्रिको ण १ । ४ । ७ । १० ९ ५ स्थानमेंबृहस्पति स्थितहोवेऔर उच्च नवांशमें शुक्र होवेअथवा दूसरे भावमें बुधहोवेतबगणितविद्याकेजाननेवालाहोताहै ३० और दूसरे भावमेंमंगल स्थित होवे अथवाशुभग्रह कर्केयुक्तऔरबुधकर्केदृष्टकेंद्र १ ४ ७ १० स्थानोंमेंमंगलस्थितहोवेतबगणितकेजाननेवालाहोताहै ३१

और जिसकेजन्मसमयमेंदूसरेभावकास्वामी और सूर्य और मंगलवृहस्पतिकर्के और शुक्रकर्केदेखेहोवें अथवापारावतांशमेंस्थितहोवेंतवन्यायशास्त्रमेंतत्परहोताहै ३२ और वृहस्पतिऔरदूसरेघरकास्वामीसंपूर्णवलकर्केयुक्तहोवेंऔर सूर्यशुक्र कर्केदेखेहोवेंतवशब्दशास्त्रकेजाननेवाला होताहै ३३ और जिसके जन्मसमयमें केंद्र १।४।७।१० कोण ९।५ स्थानमेंवृहस्पतिस्थितहोवेसोवेदांतकेजाननेवाला होताहै और पारावतांशमेंशनिस्थितहोवे और वुधशुक्रकर्केदेख्याहोवेतव वेदांतशास्त्रकोजाननेवालाहोताहै ॥ ३४ ॥ और जिसकेजन्मसमयमेंवृहस्पति केंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानमेंस्थितहोवे और शुक्र सिंहासनांशमें दूसरे भावके नवांशकापति वुध गोपुरांशमें स्थितहोवे तव छेशास्त्रके जानने वाला होताहै ॥ ३५ ॥ और जिसके जन्मकालमें सप्तम , और धनभावके

वाग्भावपेरवौभौमेगुरुशुक्रानिरीक्षिते पारावतांशकेवापितर्कयुक्तिपरायणः३२ संपूर्णवलसंयुक्तेगुरौतद्भवनेश्वरे दिनेशभृगुसंदृष्टेशाब्दिकोयंभवेन्नरः ३३ वेदांतपरिशीलःस्यात्केंद्रकोणेगुरौयदि वुधेनभृगुणादृष्टेशनौपारावतांशके ३४ षट्शास्त्रवल्लभःकेंद्रेजीवेदानवपूजिते सिंहासनेगोपुरांशेवाग्भावस्थांशपेवुधे ३५जायाकुटुंवगृहवासितपापयुक्तौदुःस्थौचतत्समकलत्रहरौभवेताम् वित्ताधिपेवलवतिस्मरराशिपेवा तुंगादिगेयदिसमेतिकलत्रमेकम् ३६ भुक्तिस्थानपतौसितेंदुसहितेलग्नादिकेंद्रास्थिते रौप्यंपात्रमुपैतिकांचनमयंजीवेंदुशुक्रान्विते भुक्तिस्थानपदेहपौशनियुतौलोहादिपात्रंवदेत् भौमेपापनिरीक्षितेधनगते जातःकदन्नादिभुक् ३७वन्हाशनेभुक्तिपतौसपापेदावाग्निदंडायुधकालभागे नीचांशकेपापनिरीक्षितचशुभैर्नदोषःसहितेक्षितेवा ३८

स्वामी पापयुक्त दुः ६ । ८ ॥ १२ ॥ स्थानमेंस्थितहोवेंतवतिसभावकेराशितुल्यसंख्याककेस्त्रीयोंकोहतकर्त्ताहैं औरदूसरे औरसप्तमभावकास्वामीउच्चादिस्थानमेंस्थितहोवेतवएक स्त्रीवालाहोताहै ३६ और जिसकेजन्मकालमें दूसरेघरकास्वामीशुक्रऔर चंद्रमाकर्केयुक्तकेंद्र१।४।७।१० स्थानोंमेंस्थितहोवेतवरौप्यपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहै और वृहस्पतिकर्केयुक्तहोवेतवस्वर्णकेपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहैं और दूसरेघरका और लग्नकास्वामिदोनोंशनिकर्केयुक्तहोवेंतवलोहेकेपात्रोंमेंभोजनकर्त्ताहे और जन्मकालमें मंगल पापग्रहकर्केदेख्याहोवेतवकदन्नभोजनकर्त्ताहै ३७ और दूसरेघरकास्वामीपापीग्रहककेयुक्तदंडायुधऔर दावाग्नि और कालभागमेंस्थितहोवे और नीचनवांशमें और पापीग्रहकर्केदृष्टहोवेतव वहुतभोजनकरनेवालाहोताहै और शुभग्रहकर्केयुक्त दृष्टहोवेतवदोषनहींहोताहै ३८

और दूसरेस्थानमेंशुभग्रहस्थितहोवे और दूसरे कास्वामी शुभयुक्तहोवे और शुभग्रहकर्के देख्याहोवे तवमुखकर्के भोजनकर्ताहै ॥ ३९ ॥ और दूसरेघरकास्वामीनीच और शत्रुकर्केयुक्तहोवे तवपरान्न भोजनकर्ताहै और नीचग्रहकर्के देख्याहोवे तवदूषित अन्नका भोजनकर्ताहै ॥ ४० ॥ और दूसरे घरकास्वामी लग्नेशकर्के देख्याहोवे तवसमयमें उचित अन्नकों भोजनकर्ताहै और पापग्रहदेख्याहोवे और नीचकेनवांशमें स्थितहोवेतव कालोचितअन्ननहींमिलताहै ॥ ४१ ॥ और जिसकेजन्मकालमें दूसरेघरका स्वामी शुभग्रह होवे और अपनेउच्च राशिमें स्थित और शुभग्रह कर्के और मित्रग्रहकर्के देख्याहोवे और मृदुभागादियोंमें स्थितहोवे तवथोडा भोजन करणेवा-ला और रुचिकी कामना वाला होताहै ४२ और जिसके दूसरे भावका स्वामीशनिहोवे वा दूसरे भावका स्वामी शनिकर्के युक्त होवे और नीच राशिमें स्थित शनिकर्के देख्याहोवे सो निरंतर

भुक्तिस्थानेशुभयुतेतदीशेशुभसंयुते शुभग्रहेणसंदृष्टेसुखभुक्सनरोभवेत् ३९
परान्नभुक्तदीशेपिनीचशत्रुसमन्विते नीचखेचरसंदृष्टेतद्रूपणपरायणः ४०
कालोचिताशनोभुक्तिनाथेलग्नेशवीक्षिते पापग्रहेणसंदृष्टेनीचांशादिगतेनतु ४१
स्वल्पाशीरुचिकामःस्याद्भुक्तिनाथेशुभग्रहे ॥ स्वोच्चेशुभसुहृद्दृष्टेमृद्वंशादिसम
न्विते ४२ भुक्तिस्थानाधिपेमंदतदीशेवार्किसंयुते ॥ नीचेर्कसूनुनादृष्टेश्राद्धभु
क्सततंनरः ४३ सिंहासनांशेयदिदेवपूज्येशुक्रेयदागोपुरभागयुक्ते ॥ ऐरा
वतांशेधनपेवलाढ्येजातस्त्वसंख्याश्रितरक्षकःस्यात् ४४ सारावल्यां ॥ भौमें
दूधनसंस्थौत्वग्दोषदरिद्रताकरौकथितौ ॥ मंदःकुरुतेशुद्धोमहार्थयुक्तंवुधेक्षित
स्तत्र ४५ रविरपिविधनंजनयतियमेक्षितोन्यैर्नसंदृष्टः ॥ सौम्यःकुटुंवराशौव
हुप्रकारंधनंदद्यात् ४६ वुधदृष्टस्त्रिदशगुरुःकुटुंवसंस्थश्चनिस्स्वतांकुरुते सोम
तनयोपिशशिनानिरीक्षितोहंतिसर्वधनम् ४७

श्राद्धान्नकों भोजन कर्ताहै ४३ और जिसकेजन्मकालमे सिंहासनांशमें बृहस्पति और गोपुरांश में शुक्र औरऐरावतांशमें वल युक्त धनेशस्थित होवे सो असंख्यात जनोंका पालन कर्ताहै ४४ और सारावलीमें कहतेहे ॥ जिसके दूसरे भावमें चंद्र मंगल दोनों स्थित होवें सो त्वचा दोष दद्रूसें लेकर्के और दारिद्र करतेहैं और केवल शनि वुधकर्के देख्या हुया धनभावमें होवे तव वडे धनकों देताहै ४५ और सूर्यभी धनभावमें शनिकर्के देख्या होवे और होरशुभग्रह नहिं देखते होवें तव धनहीन कर्ताहै औरवुध धनभावमें स्थित होवे तव अनेक प्रकारोंकर्के धनदेताहै ४६ औरजिसके जन्मसमयमेंवृहस्पतिवुधकर्के देख्याहुया दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो निर्द्धनता कर्ताहै ॥ और चंद्रमाकर्के देख्या हुया वुधसंपूर्णधनको हत कर्ताहै ४७

श्रीर दूसरे स्थानमें स्थित क्षीणचंद्रमा बुधकर्केदेख्या हुया धननष्ट कर्ताहै श्रीर पूर्वसंपादित धनका
नाश श्रोरश्रागें धनकी उत्पत्तिकों रोकताहै ४८ श्रीर जिसके जन्मकालमें दूसरे स्थानमेंस्थितशुक्र
श्रोसूर्यचंद्रमाकर्केदेख्याहोवे तवधनहिंदेताहै श्रीरशुभ ग्रहकी राशिमें स्थित शुक्र श्रीरशुभग्रहकर्केदे
ख्या होवे तव सर्वदाकाल धन देताहै ४९ अवधनभावके स्वामीका द्वादशभावमें फलकहतेहैं जि
सके जन्मकालमें उच्चराशिगतलग्नमें स्थितहोवेतिसकों लक्ष्मी प्राप्त होतीहै श्रीर चतुर्थभावमें उच्चरा
शिगतग्रह स्थितहोवे तवधनलाभकोंप्राप्तहोताहि और तैसेंहि सप्तम भावमेंउच्चराशिगत ग्रहस्थितहोवे
तवबी धनलाभकोंदेताहै औरदशम भावमेंउच्चराशिगतग्रह होवे तव राज्यलक्ष्मीकों प्राप्त कर्ताहै ५०
श्रीर जिसके जन्मसमयमें दूसरे भावका स्वमी लग्नमें स्थित होवे सो वडे उद्यम वाला श्रीर श्रेष्ट

चंद्रोपिधनस्थानेक्षीणोबुधवीक्षितःकुरुते ॥ पूर्वार्जितार्थनाशंनिरोधमपिचान्य
वित्तस्य ४८ शुक्रःकुटुंवभवनेसूर्येंदुनिरीक्षितोनधनदाता सौम्यगृहेशुभदृष्टः
सएवधनदःसदाज्ञेयः ॥ ४९ ॥ अथधनभावेशस्यद्वादशभावफलंफलप्रदी
पात् ॥ लग्नस्थतुंगगखगेप्रभवेच्चलक्ष्मीस्तूर्य्यस्थतुंगखचरैरपिवित्तलाभः ॥
जायास्थतुंगगखगेचतथैववित्तंकर्मस्थतुंगगखगेवहुराज्यसंपत् ॥ ५० ॥
द्रव्यपतिर्लग्नगतःकृपणंव्यवसायिनंसुकर्माणम् धनिनंश्रीपतिविदितंकरोति
नरमतुलभोगयुतम् ५१ धनपोधनभवनस्थोधनवंतंधर्मकर्मनिरतंच लाभा
धिकंसुलोभंकुरुतेपुरुषंसदादक्षम् ५२ सहजगतेतुधनेशेव्यवसायीकलिकरः
कलाहीनः चौरश्चचलचित्तोभवतिनरोविनयरहितश्च ५३ तूर्यगतेद्रविणपतौ
पितृलाभपरःसत्यदयायुक्तः दीर्घायुःक्रूरखगेपुनरंवामरणंकविनिर्देश्यम् ५४

कर्म करणेवाला श्रीर धनी श्रीर लक्ष्मीवाल्योंमें प्रसिद्ध श्रीर वडेभोग भोग ने वालेकोंकर्ताहै ५१
श्रीर जिसके जन्ममें दूसरेका स्वामी दूसरे भावमें स्थित होवे सो धनवाला श्रीर धर्मकर्ममें रत
होताहै श्रीर अधिकलाभकों कर्ताहै श्रीर श्रेष्टकर्ममें लोभी श्रीर चतुर होताहै ५२ श्रीर जिसके
जन्ममें धनभावका स्वामी तीसरेस्थानमें स्थित होवे सो वडेश्रमकरणे वाला श्रीर लडाई करणेवा
ला श्रीर कलासें रहित श्रीर चोर श्रीर व्यभिचारी श्रीर नम्रतासें हीन होताहै ५३ श्रीर जिसके
जन्ममें दूसरे भावका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे सो पितासें लाभवाला श्रीर सत्यश्रीर दया
कर्के युक्त होताहै श्रीर वडी श्रायुषा वाला होताहै शौर क्रूरग्रहहोवें तव मातातिसकी मृत्युकों
प्राप्त होतीहै ५४

॥ और जिसके जन्ममें धनभावका स्वामी पंचममें स्थित होवे सो बडेधनवालेपुत्रको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठकर्ममें प्रसिद्ध होताहै और कृपण और दुःखी होताहै ॥ ५५ ॥ और दूसरे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे तब धनसंग्रह करणेमें तत्पर और शत्रुयोंका नाश और पृथ्वी लाभको प्राप्तहोताहै और पापीग्रहहोवें तब धनहीनहोताहै ५६ और दूसरेका स्वामी सप्तममें स्थित होवे तब तिसकी स्त्री श्रेष्ठ भोगविलासवाली और धनसंग्रह करणेवालीहो तीहै और पापीग्रहहोवे तबवंध्याहोतीहै ५७ और अष्टम भावमें धनका स्वामीस्थित होवे तब पापंडी और आत्मघाती होताहै और दैवकेके प्राप्त भोगकोंभोगताहै और दूसरेके हितमें रत होताहै ५८ और धर्मका स्वामी शुभग्रहनवमस्थानमें स्थितहोवे तब दानकरणे वालाप्रसिद्ध होताहै और क्रूर ग्रह होवै तब दरिद्री भिक्षामागनेंवाला और विडंबी होताहै ५९ और दूसरे भावका स्वामी दशमस्थानमें स्थित होवे तब राजमान और राजलक्ष्मीको प्राप्त होताहै और शुभग्रहहोवेतब मातापिताके पालनेवालाहोताहै६० और एकादशस्थानमें दूसरे भावकास्वामीस्थितहोवे तबउद्यमकर्के परमलक्ष्मीको प्राप्त होताहै और लोकोंके समूहको पालनेमें तत्पर होताहै ६१ और दूसरेभावकास्वामी बाहरमेंस्थानमें स्थित होवें तब पापग्रहियेक्रूरहोवे तब विदेश वासी और विदेशमेंभाग्योंवाला और खोटे कर्म कर्ताहै और शुभग्रहहोवे तबश्रेष्ठ ग्रामों वाला होताहै ६२ इतिद्वितीयभावः

कमलाविलासितनयंकर्मणिकष्टेतरेप्रसिद्धच कृपणंदुःखनिधानंतनयगतो धनपतिःकुरुते ॥ ५५ ॥ षष्ठगतोद्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परंरिपुघ्नंच भूलाभिनंचखचरेपापेधनवर्जितंपुरुषम् ५६ धनपेसप्तमगृहगेश्रेष्ठगर्चिताविलासभोगवती धनसंग्रहणीभार्याक्रूरेखचरेभवतिवंध्या ५७ धनपेचाष्टमभवने श्वष्टकपालीचात्मघातकःपुरुषः उत्पन्नभोगशालीपरहितनिरतश्चदैवपरः ५८ धनपेधर्मगृहगेसौम्येदानप्रसिद्धभाग्भवति क्रूरेदरिद्रभिक्षुकविडंबवृत्तिस्तथा मनुजः ५९ दशमगृहगेधनपेनरंब्रमान्योभवेन्नृपाल्लक्ष्मीः सौम्यगृहेचमातुःपितुश्चपरिपालकःपुरुषः ६० एकादशगःस्वपतिर्व्यवसायपरंश्रियापतिंस्यात् ॥ लोकौघप्रतिपालनरतंकुरुतेनरंजातम् ६१ द्वादशगेद्रव्यपतावष्टकपालीविदेशऋद्धिश्च दुष्करकर्माभिक्षुकःक्रूरेसौम्येचसद्ग्रामी ६२ इतिधनभावः २

अब तीसरे भावका विचार कहतेहैं तिसमें ज्येष्ट कनिष्ट भाई और स्थिति और पराक्रम और, ह
ठ और कठ और स्वर और कर्ण और श्रेष्ट भूषण और वस्त्र और धैर्य और बल और मौंढे औ
रफल मूल भक्षण इन्होंका विचार क्रमकर्के तीसरे भावमें कहाहै १ और कहतेहैं तीसरेदूसरे नवमे
ज्यारमेंसप्तमस्थानोंकेस्वामियोंकीदशामें भ्राताका लाभहोताहै २ और तीसरे भावका स्वामी जिसरा
शिमें स्थित होवे तिसभावमें स्थित योग्रहहै तिसके मध्यमें योबली ग्रहहै तिसकी दशा भ्राताकी वृ
द्धि करताहै ३ और जिसके जन्मकालमेंमगल बलहीन होवे तब भ्राताबडी आयुषावाले होतेहैंऔ
रलग्नसें लेकर्के जिसभावका कारक बलीहोवे सो मनुष्य स्वामी होताहै ४ और तीसरे भावकास्वा
मी और मगल दोनों अष्टम स्थित होवें तब भ्राताका क्षयकर्तेहैं और, पापी-ग्रहकी राशिमें अथ

अथसहजभावविचारः तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् ज्येष्ठानुजस्थितिपराक्रमसा
हसानिकंठस्वरश्रुतिवराभरणांशुकानि धैर्यंचवीर्यंबलमूलफलाशनानिवक्ष्ये
तृतीयभवनात्क्रमशोखिलानि १भ्रातृस्थानद्वितीयंचनवमैकादशसप्तमम् तत्त
दीशदशायांचभ्रातृलाभोभवेन्नृणाम् २भ्रातृस्थानेशतद्राशितद्भावस्थद्युचारिणाम्
मध्येबलसमेतस्यदशासोदरवृद्धिदा ३ भौमोबलविहीनश्चेद्दीर्घायुस्सोदरोभवेत्
विलग्नतोबलीयस्यकारकःसप्रभुःस्मृतः ४सोदरेशकुजौनाशगतौचेत्सोदरक्षयः
पापर्क्षगौसपापौवाभ्रातृनुत्पाद्यनाशदौ ५अतिक्रूरसमायुक्तेभावेवाकारकेपिवा
तद्भावनायकेवापिवाल्येसोदरनाशनम् ६ बलहीनवशादेवंसोदरक्षयचिंतनम्
भ्रातृस्थानेशुभैर्युक्तेशोभनग्रहवीक्षितेभावनाथेबलाढ्येथतुभ्रातृलाभमुदीरयेत
भ्रातृपेकारकेवापिशुभयोगनिरीक्षिते भावेवाबलसंपूर्णेभ्रातृणांवृद्धनंभवेत् ८
केंद्रत्रिकोणगेवापिस्वोच्चमित्रस्ववर्गके नाथेवाकारकेवापिभ्रातृलाभमुदीरयेत् ९

वा पापग्रहकर्के युक्तहोवे तब भ्राताउत्पन्न होयकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै ५ और जिसकेजन्मका
लमें तीसराभाव और तीसरे भावका कारक भौम और तीसरेका स्वामी अतिक्रूरग्रहकर्के युक्त होवे
तब वाल्यावस्थामें भ्राताका नाश होताहै ६ और तीसरे भावका स्वामी हीनबलहोवे तबभ्राताका
नाश कर्ताहै और तीसरे स्थानमें शुभग्रह युक्त होवे और शुभग्रहकर्के देखे होवें और तीसरे भावका
स्वामी बली होवे तब भ्राताकालाभ कर्ताहै ७ और तीसरेका स्वामी और कारक शुभग्रहर्के युक्त
दृष्टहोवे और तीसरा भाव बली होवे तब भाईयोंकी वृद्धिहोतीहै ८ और केंद्र १ । ४ । ७ । १० में
औरत्रिकोण९।५ स्थानमें अपनेउच्च और मित्रस्ववर्गमें स्थिततीसरे भावका स्वामीअथवा कारक
स्थित होवे तब भ्राताकालाभकहे ९

और तीसरा स्थान शुभग्रहोंकरकेंयुक्तहोवे तबभाईयोंका चिर कालआयुः होताहै और पापग्रहोंकरकें युक्त दृष्ट होवे तब भाईयोंकानाशहोताहै और तीसरेस्थानमें सूर्य पापीग्रहकरकें देख्याहोवे तब ज्येष्ठभ्राताकों हत कर्त्ताहैऔर शनि पापग्रहकरकेंदेख्याहुवा तीसरे भावमें स्थितहोवे तबछोटे भाईकों हत कर्त्ताहै और मंगल तीसरे भावमेंपापदृष्टहोवे तबज्येष्ट कनिष्ट संपूर्णोंकोंहत कर्त्ताहै १० और जिसकेजन्मसमयमेंतीसरेभावसेंकेंद्र१।४।७।१०त्रिकोण १।५ स्थानमेंपापीग्रहस्थितहोवेतबभ्राता कानाशहोताहै और शुभग्रहस्थितहोवेतबभ्राताकीवृद्धिहोतीहै शुभाशुभग्रहहोवेंतबमिश्रफलकहतेहैं ११ और तृतीयभावकेस्वामीसाथचंद्रमादुः ६।८।१२ स्थानमेंस्थितहोवेतबजातकमाताकेबिनादूसरीकास्त नपानकर्त्ताहै अर्थात्माताम्रुतहोतीहै जिसकेजन्मसमयमेंतीसरे और चतुर्थभावकेस्वामीदोनों मिलकर केतीसरे स्थानमें स्थितहोवें तब भ्राताकी वृद्धिनाहिं होतीहै १२ और तीसरे और चतुर्थ भावके स्वा

भ्रातृस्थानेयदिशुभयुतेसोदराणांचिरायुःपापाक्रांतेसहजभवनेपापदृष्टेविनाशंज्ये ष्ठंहंतिद्युमणिरनुजस्थानगःपापदृष्टः सौरिस्तस्यानुजमवनिजोहंतिसर्वान्कनिष्ठान् १० केंद्रत्रिकोणेयदिपापखेटेतृतीयभावादनुजस्यनाशम् शुभोपयातेसहजस्यवृद्धिं शुभाशुभंमिश्रफलंवदंति ११ दुःस्थेचंद्रेसोदरस्वामियुक्तेनातस्यान्यस्तन्यपा नंवदंति मातृभ्रातृस्थानपौबंधुयातौनास्तिभ्रातृस्थानवृद्धिर्नराणाम् १२ भौमा न्वितौसोदरदौभवेतामन्यैःसमेतौयदिनानुजःस्यात् सौरिस्तृतीयेनुजनाशक र्त्ताविधुंतुदःसोदरवृद्धिकृत्स्यात् १३ भ्रातृस्थानपतौतुपुंभवनगेतस्यानुजोजाय ते युग्मर्क्षेयदिभार्गवेनशशिनायुक्तेथवावीक्षिते सौम्यर्क्षेशुभखेचरेक्षितयुतेकेंद्र त्रिकोणस्थिते पश्चाज्जातसहोदरश्चिरसुखीदीर्घायुरारोग्यभाक् १४ सहोदर स्थानपतौतनुस्थेसलग्नपेसोदरनायकेवा ततोभयंगर्भमनंतरंस्यात्तृतीयराशौस चरौतयैव १५

मीमंगल करकें युक्त होवें तब भ्राताकी वृद्धिहोतीहै और अन्यग्रहकरकेंयुक्तहोवेंतबभाईनहिंहोतेहैं और तीसरेस्थानमेंशनिभ्राताकानाशकर्त्ताहै और राहुभ्राताकीवृद्धिकर्त्ताहै १३ और जिसकेजन्मकालमेंती सरेभावकास्वामीपुरुषग्रहकीसूर्यभौमगुरुकीराशिमेंहोवें तबतिसकेभाईहोतेहैं और युग्मराशिमेंशुक्रचं द्रमाकरकेंयुक्तदृष्टहोवेंऔरशुभग्रहकीराशिमेंशुभग्रहकरकेंदृष्टयुक्तकेंद्र१।४।७।१०त्रिकोण१।५स्थानमेंस्थितहो वेतिसकेछोटेभाईचिरकालजीनेवाले और सुखी और आरोग्यताकोंप्राप्तहोतेहैं १४ और जिसकेज न्मकालमेंतीसरेभावकास्वामीलग्नमेंस्थितहोवेऔर अथवालग्नेशकरकेंयुक्तहोवेतबदोनोंकागर्भमेंअंतरनाहिं होताहै अर्थात्दोनोंएकगर्भमें एकत्रजन्मतेहैं और तैसेंहितीसरेभावमेंलग्नेश औरतृतीयेशदोनोंस्थितहो वेंतबयमलजन्मेभाईहोतेहैं १५

॥ और जिसके जन्मकालमें एकादशद्वादशस्थानमें जितने ग्रहस्थितहोवें उतने संख्या करके तिसके बडेभाईहोतेहैं ॥ और लग्नसेंदूसरे और तीसरेस्थानमेंजितनेग्रहस्थितहोवें उतनेसंख्या करकेछोटेभाईहोतेहैं १६ और जिसकेजन्मकालमें तृतीयभावकास्वामी और कारक और तीसरेभाव कोंदेखनेवालाऔर तीसरेभावमेंयुक्तइन्होंमेंसो ग्रहवलीहोवे तिसकरकेयुक्तजितनेग्रहहोवें उतनीसं स्याक केभाइयोंकोंप्राप्तहोताहै और इह चारग्रह नीचराशिमें और मूढताकों और शत्रुकेक्षत्रमें स्थितहोवेंतव भाइयोंकोंहतकर्तेहैं और सोचारग्रह वलीहोवें तव संपूर्णभाइयोंकोंवडीआयुषावाले कर्तेहैं १७ और जिसकेजन्ममें तीसरे भावका स्वामी और कारककेंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ त्रिकोण ५ । ९ स्थानमें स्थितहोवेंऔर उच्च मित्रस्ववर्गमें स्थितहोवेंतवभ्राताकालाभहोताहै १८ ॥

लाभावसानभवनोपगतैर्ग्रहेंद्रैःसंख्यास्तदग्रजजनाःसहजाभवंतिलग्नात्तृतीयध नयातवियच्चरेंद्रैः संख्याजनाःस्युरनुजाःकथयंतितज्ज्ञाः १६ भ्रातृस्थानपकार केक्षितयुतावीर्याधिकायद्यदातद्युक्तग्रहसंख्ययानुजजनंजातःसमेतिध्रुवम् चत्वारो यदिनीचमूढरिपुगानिघ्नंतिजातानुजान् तेकुर्वंतिचिरायुरिष्टबलिनःसर्वानुजानांग्र हाः १७ केंद्रत्रिकोणगेवापिस्वोच्चमित्रस्ववर्गके नाथेवाकारकेवापिभ्रातृलाभमुदी· रयेत् १८ सौम्यग्रहास्थितेवापिसौम्यानामंशकेयदि नाथेवाकारकेवापिभावेसो दरवर्द्धनम् १९ भ्रातृभावेस्वतुंगेवास्वर्क्षेमूलत्रिकोणगे बलाढ्येभावनाथेस्या त्सोदरोत्पत्तिमादिशेत् २० लग्ननाथस्तुसोत्थेशमित्रेचेन्मित्रताभवेत् ॥ भ्राताशत्रुर्भवेच्छत्रुःशत्रुश्चैवावियुज्यते २१ स्त्रीहोरयावायुवतिग्रहेणयुक्तेयदि भ्रातृगृहेविलग्नात् ॥ सहोदरीलाभमुपैतिजातःसहोदरंतत्परतोन्यथाचेत् २२

और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी और कारक शुभग्रहको राशिमें अथवा अंशमें स्थित होवे तव भाईयोंकी वृद्धि होतीहै ॥ १९ ॥ और जिसके जन्मकालमें तृतीयभावका स्वामी तीसरे भावमें अपने उच वा स्वक्षेत्र वा मूलत्रिकोण गृहमें स्थित होवे तव भ्राताकी उत्पत्ति कहे ॥ २० ॥ और जिसके जन्मकालमें लग्नेश और तृतीयेश ग्रह आपसमें मित्र होवें तव भाईयोंमें मित्रता रहतीहै और शत्रुग्रहहोवें तव भाईयोंमें शत्रुभाव रहिताहै ॥ २१ ॥ और जिसके जन्म लग्नसें तीसरे घरमें स्त्रीग्रहकी होरा होवे और स्त्रीग्रहकरके युक्त होवे तव अपने जन्मके पीछे भगिनीके लाभ. कों प्राप्त होताहै और तीसरे भावमें पुरुषग्रहकी होरा और पुरुष ग्रह करके युक्त होवे तव भ्राताके लाभ कों प्राप्त होताहै २२

॥ और तीसरे भावसे लेकर्के सप्तम यो भावहै तिस भावसे अर्थात्जन्मलग्नमे नवमभवसेंभ्राताकी स्त्रीका फल कहै और लग्नका स्वामी और मंगल और तीसरे भावका स्वामी-इन्होंतीनों ग्रहों के बलाबलसे भ्राताकों शुभा शुभफलका विचार करणा कहाहै ॥ २३ ॥ और जिसके जन्मकालमें लग्नेश और तीसरे भावका स्वामी आपसमें मित्रहोवे और बलीहोयकर्के लग्नमें वा तीसरे भावमें स्थित होवें तब भ्राता एकत्रमिलेरहितेहैं आपसमें, जुदा नाहिं होतेहैं और लग्नेश और तृतीयेश बलीहोयकर्के एकराशिमें स्थित होवें, तब भ्राताआपसमें मित्रताकों प्राप्त होतेहैं ॥ २४ ॥ और लग्नेश और तृतीयेश ग्रह निर्बल और आपसमें शत्रु होवें तब भ्राता आपसमे मरणोसें नाशको और धनाशकों प्राप्त होतेहैं अथवा तीसरे भावमें

तृतीयात्सप्तमर्क्षेणभ्रातृभार्याफलंवदेत् ॥ लग्नेशकुजसोत्थेशाभ्रात्रेनिष्टशुभप्रदाः २३ अन्योन्यमिष्टखचरौयदितौबलाढ्यौलग्नेथवासहजभेनविभागमाहुः अन्योन्यमिष्टविपुलंतुसहोदराणांलग्नाधिपेनसहितेयदिसोदरेशे २४ लग्नेशानुजनायकौविबलिनावन्योन्यशत्रुग्रहौ दुश्चिक्यस्थितकारकौचयदिवादुःस्थानगौदुर्बलौ तत्पाकेसहजप्रमादकलहंतन्नाशमर्थक्षयम् तत्खेटोपगकोपहेतुकलहस्नेहादिसर्ववदेत् ॥ २५ ॥ गुरुदृष्टेनुजेशुक्रेभ्रातृरक्षणतत्परः रविदृष्टेबुधेसोत्थिसुहृन्नाशकरोभवेत् २६ भ्रातृस्थतन्नायककारकाणांनीचारिदुःस्थानसमन्वितानाम् ॥ भुक्तौदशायांधनसत्वनाशंपराजयभ्रातृविनाशमाहुः २७

स्थित यो ग्रह और तीसरेका कारक ग्रह निर्बल और शत्रुहोवें और दु. स्थान ॥ ६ ॥ ८ ॥ १२ ॥ मे स्थित होवें तिनकी दशामें भ्रातृनाशादि फल होताहै तिन्हों ग्रहोंकी जैसी प्रकृति होवे तैसे कोपकर्के कलहादि संपूर्ण फल कहे ॥ २५ ॥ और तीसरे भावमें शुक्र बृहस्पति कर्के देख्या होवे तब भ्राताकी रक्षा कर्ताहै और तीसरे भावमें बुध सूर्यकर्के देख्या होवे तब भ्राताका नाश कर्ताहै । २६ । और तीसरे भावमें स्थित ग्रह और कारक दुष्ट । ६ । ८ । १२ ॥ स्थानमें स्थित होवें और नीच शत्रुकी राशिमें होवें तिनकी दशांतर्दशामें धननाश और पराजय और भ्राताका नाश कहतेहैं २७

अब भ्राताकेमृत्युकासमयकहतेहे-जन्मकालमें स्फुटमंगलसें राहुकोंघटायदेवे शेषजोराश्यादिहै तिस राशिमें त्रिकोण ९।५ स्थानमें जब गोचरमार्गकर्के बृहस्पति स्थित होवेतब छोटेभाईका नाश होताहै और स्पष्टराहुसें मंगलकों घटायदेवे तिसराशिमें स्थित योनवांश तिरूमें जब बृहस्पतिआवे तब ज्येष्ठभ्राताका नाश होताहै और जन्मलग्न और आधानकालके लग्नकेस्वामी जिसराशिमें स्पष्ट स्थित होवें तिस राशिमें गोचरकर्के बृहस्पतिस्थित होवे तब छोटेभाई जन्मतेहे २८ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी शनि चद्रमाकर्के युक्त होवे सो शूरवीर और मनके धैर्य वालाहोताहै और शनिमंगलकर्केयुक्तहोवेतब दुष्टऔर जड और क्रोधवालाहोताहै और बुधकर्केयुक्त होवे तब सतोगुणी बुद्धिवाला होताहै २९ और बृहस्पतिकर्के युक्त होवे तब बडेगुणोंवाला पंडित

भूसूनुस्फुटतोविशोध्यफणिनंशेषत्रिकोणेगुरौजातस्यानुजनाशनंक्षितिसुतंराहु स्फुटाच्छोधयेत् ॥ तद्राशिस्थनवांशकेमरगुरौतज्ज्येष्ठनाशंवदेत् जन्माधान पकर्मपेस्फुटगृहेजीवेनुजोजायते २८ शौर्याधिपेभानुसुतेत्रवीरश्चंद्रान्वितेमा नसधैर्यजातः ॥ दुष्टोजडोभौमयुतेप्रकोपीसौम्यान्वितेसात्विकबुद्धियुक्तः २९ जीवान्वितेधीरगुणाभिरामःसमस्तशास्त्रार्थविशारदःस्यात् ॥ कामातुरःशुक्र समान्वितेतुतन्मूलकोपात्कलहप्रवीणः ३० जडोभवेद्वासरनाथसूनुयुक्तेतिभी तःफणिसंयुतेस्यात् ॥ वह्निगदोद्भतजाड्ययुक्तःकेत्वन्वितेमांदियुतेतथैव ३१ लग्नेगुरौविक्रमनाथयुक्तेचतुष्पदानांप्रवदंतिभीतिम् ॥ गवांभयंवाजलराशि लग्नेजलप्रमादंसमुपैतिजातः ३२

होताहै और संपूर्णशास्त्रार्थोंके जानने वाला होताहै और शुक्रकर्के युक्त होवे तब कामातुर होता है और कामकर्के उत्पन्नजोक्रोध तिसरूकें लडाई करणेकों समर्थहोताहै ३० और तीसरे भावका स्वामी शनिकर्के युक्त होवे तब जड होताहै और राहुकर्के युक्त होवे तब भयकर्के सहित होताहै और केतुकर्के और गुलिक कर्के तीसरे भावका स्वामी होवे तब रोगी और जड होताहै ३१ और तीसरे भावके स्वामीकर्के युक्त लग्नमें बृहस्पति स्थित होवे तब पशुयोंका भय होताहै और लग्नमें जलचर राशि होवे तब जलसें भय होताहै और जलदोषसें मरतो हो ताहै ३२

और बलवान् ग्रहकके मंगलयुक्त होवे तब सत्व और बल और गायनके सुखको प्राप्त होताहै और मंगल और तीसरे भावकी राशिका स्वामी और तीसरे भावमें स्थित ग्रह इहे तीनों बली होवें तब युद्धमें शूरवीर होताहै ३३ और तिन्हीं तीनोंग्रहोंकी दशातर्दशा कालमें मूलफलादि पदार्थोंसे सुख होताहै औरकर्णोंमें भूषणादि औरश्रेष्ठकथादि औरसंपदा औरभ्रातृपुत्रादियोंका लाभ होताहै ३४ और जिसके जन्मकाल में तीसरे भावका स्वामी शुभग्रहके वर्गमें और बलयुक्तहोवे सो सत्वगुणी होताहै और नीचराशिमें और अस्तहोवे और शत्रुकीराशिमें और पापग्रहकीराशिमें और पापी ग्रहकके युक्तहोवे तब हठी गुणी होताहै ३५ और जिसके जन्मकालमें तीसरे घरका स्वामी और राहुकीराशिका स्वामी दोनोंराहुकरकेयुक्त लग्नमेंस्थितहोवें तब सर्पका भय होताहै और

कुजेनयुक्तेखचरेबलिष्ठेसत्त्वंबलंगानसुखंसमेति ॥ कुजानुजस्थानजराशिनाथास्त्रयोबलिष्ठारणरंगशूरः ३३ तेषांत्रयाणामपहारकालेपाकेथवामूलफलादिसौख्यम् ॥ श्रोत्रद्वयोर्भूषणसत्कथादिसपत्करभ्रातृसुतादिलाभम् ३४ सात्विकोभवतिसोदराधिपेसौम्यवर्गसहितेबलान्विते ॥ नीचमूढरिपुपापराशिगेपापखेचरयुतेतुसाहसी ३५ शौर्याधिपेराहुसमेतराशिनाथान्वितेराहुयुतेविलग्ने ॥ सर्पाद्भयविक्रमराशिनाथेबुधेनयुक्तेगलरोगभाक्स्यात् ३६ पापेतृतीयेगलरोगमत्रवदतिमांद्यादियुतेविशेषात् भौमान्वितेभानुसुतेबलाढ्येतृतीयराशौयदिकंठरोगम् ३७ विक्रमेशगुरूलग्नगतौगोभीतिसूचकौ ॥ राहुणावाफणिक्रांतराशिपेनयुतौयदि ३८ सबुधोविक्रमपतिर्गलरोगकरोभवेत् ॥ सोत्थेरिनीचगेपापेसोत्थाभावोविषादिभाक् ३९

तीसरेका स्वामी बुधकरके युक्त होवे तब गलरोगवालाहोताहै ३६ और तीसरे भावमें पापी ग्रह होवे तब गलरोग होताहै और गुलिकादि ग्रहोंकरके युक्त होवे तब विशेषसे गलरोगहोताहै औरमंगल करके युक्त शनि बलीहोयकरके तीसरे भावमेंस्थित होवे तब गलरोगकर्ताहै ३७ और तीसरेभावका स्वामी और बृहस्पति दोनों लग्नमें स्थितहोवें तब गौसे भयदेतेहैं अथवा राहुकरके अथवाराहुकी राशिके स्वामीकरके युक्त होवे तब गौका भय होताहै ३८ और बुधकरके युक्त तीसरे घरका स्वामी होवे तब गलम रोगकर्ताहै और तीसरेका स्वामी पापी ग्रह नीचशत्रुकी राशिमें स्थितहोवे तब भ्राताका अभाव होताहैऔर विषादिभक्षणकर्ताहै ३९

और जिसके जन्मकालमें बुध और बृहस्पति कर्केयुक्त दृष्ट बलवान् तीसराभाव होवे और तीसरे भावसे केंद्रस्थानोंमें बृहस्पति वा बुधस्थित होवे तब तिसका कंठस्वर बहुत सुंदर होताहै ४० ॥ और तीसरा भाव शुभग्रहकर्के युत और शुभग्रहकर्के देख्या होवे और तीसरेका स्वामी शुभग्रह कर्के युत होवे तब कर्णोंमें श्रेष्ठ भूषण कहे ४१ और शुक्र तीसरे भावमेंहोवे तब मोतीयोंवाले भूषण और बृहस्पति होवे तब तुलसीके भूषण कहतेहैंऔर सूर्यहोवेतब लालमणी और नील मणीयोंकर्के युक्त और चंद्रमाबलीहोवे तब अनेकभूषण होतेहैं ४२ और तीसरे स्थान बुध होवे तब श्यामरंगके भूषण होतेहैं और तीसरे भावमें मेषवृश्चिकराशि होवे तब विचित्र भूषण कहे और तीसरेका स्वामी उच्चके वर्गमें स्थित होवे तब दिव्यभूषणोंको प्राप्त होताहै ॥ ४३ ॥

बुधेनजीवेनयुतेक्षितेवातृतीयराशौबलसंयुतेच ॥ तत्केंद्रगेमंत्रिणिबोधनेवाकंठस्वरंचारुतरसमेति ४० तृतीयेसौम्यसंयुक्तेसौम्यखेचरवीक्षिते तदीशेशुभसंयुक्तेकर्णयोर्भूषणंवदेत् ४१ शुक्रेतृतीयेयदिमौक्तिकंतुजीवेतुलस्याभरणंवदंति ॥ सरक्तमानीलमयादिनेशेचंद्रेबहुत्वाभरणंबलाढ्ये ४२ सौम्येश्यामंकुजक्षेत्रेविचित्राभरणंवदेत् ॥ तत्पतौस्वोच्चवर्गस्थेदिव्यमाभरणंलभेत् ४३ मानस्थेतुरगेथवानुजपतौसौम्यर्क्षगेतद्युतेदिव्यंवस्त्रमपूर्वमेतिसहजेसौम्येसुवस्त्रंलभेत् वीर्याढ्यौबहुवस्त्रभूषणकरौशुक्रानुजस्थानपौस्यातांधर्मकथारसश्रवणदौजीवज्ञयुक्तेक्षितौ ४४ धैर्यान्वितेविक्रमशेसौम्यग्रहनवांशके शुभेक्षितेशुभयुतेवैशेषिकसमन्विते ४५

और जिसके जन्मकालमें दशमस्थानमें अथवा धनु राशिमेंस्थित तीसरेभावका स्वामीहोवे अथवा शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे अथवा शुभग्रहकर्के युक्त होवे तब दिव्य अपूर्व वस्त्रोंको प्राप्तहोताहै और तीसरेस्थानमे शुभग्रह होवे तब श्रेष्ठ वस्त्रोंकोंप्राप्त होताहै और शुक्र और तीसरेभावका स्वामी दोनों बलीहोवे तब बहुतवस्त्रभूषणकरतेहै और बृहस्पति और बुधकर्केयुक्त और दृष्ट होवेतबधर्मकथाको श्रवण करातेहैं ४४ और जिसके जन्मकालमें तीसरेस्थानमें तीसरे भावका स्वामी स्थित होवे और शुभग्रहके नवांशमें होवे और शुभग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवे और वैशेषिकांशमें होवे तब श्रेष्ठ धर्मकथाके श्रवण करणेवाला होताहै ४५

॥ और तीसरे भावका स्वामी पापी ग्रह करके युक्त दृष्ट होवे और दुःस्थान ॥ ६ । ८ । ॥ १२ ॥ में स्थित होवे तब धैर्य नाशको प्राप्त होताहै ॥ और केंद्रत्रिकोण में शुभग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तब धैर्यवालाहोताहै ॥ ४६ ॥ औ तीसरे भावकास्वामी पाप ग्रहकीराशिमे मंगलकरके युक्त होवे तब बलकानाश कर्ताहै और शुक्रकरकेयुक्त बलीहोयकर्क केंद्र त्रिकोणस्थाना मे स्थित होवे तब बली और भोगी और गुणाकरके प्रसिद्ध होताहै ४७ और कहतेहैं शुक्र और चद्रमाके विना और शुभग्रह लग्नसे तीसरे स्थानमे स्थित होवे और शुभग्रहकी राशीमे और नवा शमें स्थित होवें सो सुख पूर्वक भोजनको प्राप्त होताहै ४८ और जिसके जन्मकालमें मगल बृह

धैर्याधिपेपापयुतेक्षितेवादुःस्थानगेधैर्यविनाशमेति ॥ केंद्रत्रिकोणशुभखे टयुक्तेशुभेक्षितेवायदिधैर्यशाली ॥ ४६ ॥ वीर्याधिपेभूमिसुतेनयुक्ते पापर्क्षगेवीर्यविनाशहेतु ॥ केंद्रत्रिकोणस्सितबलाढ्यवीर्याधिकोभोगगुण प्रकाशः ॥ ४७ ॥ शुक्रनिशाकरत्यक्त्वालग्नात्सोदरभेशुभे शुभरा इयंशगेजात समेतिसुखभोजनं ४८ जीवस्यराशिनवभागदृगाणसंस्थेवीर्या धिकेयदिसुरार्चितवीक्षितेवा तत्केंद्रकोणगृहगेवनिजबलाढ्येजातस्तुकंदफ लमूलरसप्रिय स्यात् ४९ सोदरारातिग शुक्र शोकरोगभयप्रद तत्रैव शुभकारीस्यात्पुरुतोयदिभास्करात् ५० ॥ नवांशाभ्रातृभावेस्युर्यावंतोव्जकु जेक्षिता तत्सख्या सहजाज्ञेयादृष्टाअन्यैश्चयोषित ५१ ॥

स्पतिकी राशिमें और नवाशमें और द्रेष्काणमें स्थित होवे और बलकर्क युक्तहोवें और यद बृहस्प तिकरके देख्याहोवे और केंद्र १ ।४ ।७ ।१० और त्रिकोण ९ । ५ स्थानम स्थित होवे तब मनुष्य कदमूलफलोके रसकी प्रीतिवाला होताहै ४९ और जिसके जन्मलग्नस तीसरे और छठे स्थान मे शुक्रहोवे तब शोक और रोग और भयकादेताहै औ जब सूर्यकी राशिके आगे स्थितहोवे तब ती सरा छठावी शुभ होताहै ५० और जिसके जन्मसमयमें तीसरे भावमे जितने नवांशे स्थितहो वे और चंद्र मगल करके देखे होवें उतनी सख्या करके तिसके भाई होतेहैं और चद्र मंगलके वि ना औरग्रहदेखतेहोवेंतब तृतीय भाव स्थित नवांशकी सख्याकरकेतिसकिया भगिनीयाहोतीयांहैं ५१

अब तीसरे भावके स्वामीका बारां भावमें फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें तीसरेभावका स्वामी लग्नमें स्थित होताहैसो वाग्विवाद करणेवाला और लंपट और अपनें जनोंमें भेद करदेनें वाला और सेवा करणे वाला और खोटेमित्रोंवाला और क्रूर बोलने वाला होताहै १ और जिसके जन्ममें दूसरे भावमें तीसरे भावका स्वामी स्थितहोवे तब भिक्षाकेमांगनेवाला और धनहीन और थो डाकाल जीने वाला और बंधुयोंसें विरोध करणेवाला क्रूर ग्रह कर्के होताहै और शुभग्रह तीसरेका स्वामी दूसरेमें स्थित होवे तब लक्ष्मीवान् होताहै २ और तीसरेका स्वामी तीसरे भावमें स्थित होवे तब तुल्य पराक्रम वाला और श्रेष्टमित्रोंवाला और देवता और गुरुकों पूजने वाला और राजासें ला भवाला होताहै ३ और तीसरेका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तब पिताके भाईयोंकों सुख और ऐश्वर्य होताहै और माताके साथ वैर कर्ताहै और पिताके धनकों भक्षण कर्ताहै ४ और ती

अथसहजस्वामिद्वादशभावफलानि सहजपतौलग्नगतेवाग्वादीलंपटःस्वजनभे दीच सेवापरःकुमित्रःक्रूररवोभवतिपुरुषश्च १ ॥ धनगृहगेसहजेशेभिक्षुर्विध नोल्पजीवितःपुरुषः बंधुविरोधीक्रूरेसौम्येपुनरीश्वरःखचरे ॥ २ ॥ सहजग तःसहजपतिःसमसत्वंसुसुहृदंशुभस्वजनम् देवगुरुपूजनरतंनृपलाभपरंनरंकुरु ते ॥ ३ ॥ भ्रातृपतौतुर्यगतेपितृसोदरसुखकृदुदयकृत्तेषाम् मात्रासहवैरकरः पितृवित्तभक्षकःपुरुषः ४ दुश्चिक्यपतौसुतगेसुबांधवैःसुतसहोदरैःपाल्यः दी र्घायुर्भवतिनरःपरोपकारैकनिरतमतिः ५ षष्ठगतेसहजपतौवधुविरोधीनय नरोगीच भूलाभोभवतिभृशंकदाचिदपिरोगइवकलितः ६ सहजपतौसप्तम गेनरस्यभार्याभवेत्प्रवररूपा सौभाग्यवतीयुवतीक्रूरेदेवरगृहंयाति ७ भ्रातुःप्रभु रष्टमगःसहजंमृतसोदरंकुरुते क्रूरेबाहुव्यंगंजीवतियद्यष्टवर्षाणि ८

सरेका स्वामी पांचमें स्थानमें स्थित होवे तब श्रेष्ट बंधुयोंकर्के और पुत्र और भाईयोंके सुखकों प्राप्त होताहै और बडी आयुषवाला और परोपकारमें बुद्धिवाला होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे सो बंधुयोंसें विरोध कर्ताहै और नेत्ररोगवाला होताहै और वारंवार पृथ्वीके लाभकों प्राप्त होताहै और कदाचित् रोगकर्के युक्त होताहै ६ और जिसके तीसरे भावका स्वामी सप्तमभावमें स्थित होवे तिसकी स्त्री श्रेष्टरूपवाली और सौभाग्ययुक्त होतीहै और क्रूरग्रहहोवे तब पतिके छोटेभाईके घरमें वसतीहै ७ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भाव का स्वामी अष्टम भावमें स्थित होवे तिसके भ्राता मृत्युकों प्राप्त होतेहैं और जब क्रूरग्रह होवे तब तिसकी भुजामें व्यंग होताहै जबअष्टवर्षजीवे तब और शुभग्रहहोवे तबबहुतदोषनहीं कर्ताहै ८

॥ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी नवमभावमें स्थित होवे और क्रूरग्रहहोवे तब बंधुओं करके त्याज्य होताहै ॥ और शुभग्रहहोवे तब श्रेष्ठ बंधुओंवाला और धर्मी और भाताका भक्त होताहै ९ और जिसके जन्मकालमें तीसरे भावका स्वामी दशम भावमें स्थित होवे सो राजाके मानवाला और माताका और बंधुओंका भक्त और बंधुओंमें श्रेष्ठ होताहै १० और जिसकों तीसरे भावका स्वामी लाहरमें स्थानहोवे तब श्रेष्ठ बंधुओंवाला और राजासें लाभवाला कर्ताहै और सर्वबंधियोंमें सेवाके करणे वाला और भोगोंमें रत कर्ताहै ११ और जिसकों तीसरे भावका स्वामी बाहरमें स्थानमें स्थित होवे सो मित्रोंसें विरोध करणेवाला और अपनेभाईयोंकों खेददेणे वाला होताहै और बंधुओंसेंदूर विदेशमेंवास करणेवाला होताहै १२ इति तृतीयभावः

धर्मगतेसहजंपतौक्रूरेबंधूज्झितस्तथासौम्येसद्बांधवश्चसुकृतीसोदरभक्तोभवतिमनुजः ९दुश्चिक्येशेदशमेनृपपूज्योमातृबंधुपरिभक्तः उत्तमबंधुर्बंधुषुविनिश्चिताजायतेमनुजः १० लाभस्थःसहजेशःसुबांधवंराजलाभिनंकुरुतेपुरुषंबंधुषुसेवाविधायिनंभोगनिरतंच ११ व्ययगेदुश्चिक्येशेमित्रविरोधीस्वबंधुपरितापीदूरेवासितबंधुर्विदेशगामीनरोभवति १२ इतिसहजभावविचारः ॥ अथसुखभावविचारः ॥ तत्राकिंचिंतनीयमित्युक्तम् ॥ वदंतिविद्याजननीसुखानिसुगंधगोबंधुमनोगुणानि महीपयानक्षितिमंदिराणिचतुर्थभावप्रभवानितज्ज्ञाः १ विद्याराशौनिजपतियुतेसौम्ययुक्तेक्षितेवाजातोविद्याविनयचतुरश्चंद्रसूनौबलिष्ठे दुःस्थेपापद्युचरसहितेपापदृष्टेतदीशेविद्याहीनोभवतिमनुजःपापराशिस्थितेवा२

॥ अब चतुर्थभावका विचार कर्तेहे ॥ तिसमेंक्याक्या वस्तुकाचिंतन करणा सो कहतेहैं ॥ चतुर्थभावमें विद्याकासुख और माताका सुख सुख और सुगंध वस्तुका सुखासुख और गौओंका और भाईयोंका और मनका और गुणोंका और राजाका और हाथीघोडेपालकीस लेकरवाहनोंका सुखासुख और पृथ्वीका और मंदिरोंकासुख और दु खकाविचारचतुर्थ भावमें शास्त्रके जानने वाले कहतेहैं १ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थभाव अपनें स्वामीकरके युक्त दृष्ट होवे तब विद्या और नम्रता चतुराईकर्के युक्त होताहै और बुधबली होयकर्के ६।८।१२ स्थानमें स्थित और पापीग्रह कर्के युक्त होवे और तिसका स्वामी पापी ग्रहकर्के दृष्ट होवे और पापी की राशिमें होवे तब विद्या कर्केरहित होताहै २

॥ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी और बृहस्पति और बुध इह छठे
तीसरे बारहमें आठमें स्थानमें स्थित होवें तब विद्या और बुद्धि और विवेकसे हीन कहेहैं अ
थवा नीचशत्रुकी राशिमें स्थित होवें तब विद्यादियों करके रहित होताहै और अपने उच्चमें और
स्वक्षेत्रमें वा त्रिकोण १ । ५ । वा केंद्र । १ । । ४ । । ७ । ॥ १० ॥ स्थानोंमें स्थित होवें तब
लक्ष्मी विद्याऔर नम्रतासेंले करके गुणोकरके युक्त और चतुर और महाराजका प्यारा होताहै ३ और
जिसके जन्मकालमें शुक्र अथवा चद्रमा वलीहोवे और शुभग्रहकरकेंदेखेहोवेंऔरशुभग्रहके नवांश
मे स्थित होवें और केंद्रस्थानमें वा चतुर्थस्थानमें वलकरके युक्तहोवे तब तिसकी माताकाआयुः चिर
काल कहतेहैं ४ और चतुर्थका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे वा द्वादशस्थानमें स्थित होवे और

विद्यास्थानपजीवचंद्रतनयाः षट्त्रिव्ययायुस्थिताःविद्याबुद्धिविवेकहीनफ
लदानीचारिगावायदि ॥ स्वोच्चस्वक्षेगतास्त्रिकोणगृहगाःकेंद्रास्थितावायदि
श्रीविद्याविनयादियुक्तिनिपुणोराजाधिराजप्रियः ३ शुक्रेवलिष्ठेयदिवाश
शांकेसौम्येक्षितेशोभनभागयुक्तेचतुष्टयेमातृगृहेवलाढ्येमातुश्चिरायुःसमुदाहरंति
४ मातृस्थानाधिपेषष्ठेव्ययेवावलवर्जिते ॥ लग्नेपापेपापदृष्टेमातृनाशंवदेद्बुधः
५ क्षीणेचंद्रेष्टमेषष्ठेव्ययेवापापसंयुते पातालेपापसयुक्तेमातृहानिर्नसंशयः ६
मातृस्थानगतेमंदेपापग्रहनिरीक्षिते ॥ रंध्रस्थानेरिनीचस्थेमातृनाशंविनिर्दि
शेत् ७ भ्रातृपुत्रगतेपापेपातालेशेरिनीचगे ॥ चंद्रेपापसमायुक्तेमातृरोगं
विनिर्दिशेत् ८षष्ठेश्वरेणसहितःसुखराशिनाथोधर्मस्थितोजनकमत्रविटकरोति

वलहीन होवे और लग्नमेंपापग्रह पापीकरके देखा होवे तब बुद्धिमान् तिसकी माताका नाश कह
तेहैं ५ और क्षीण चंद्रमा अष्टम और छठे स्थानमे वा वारहमें स्थानमे पापी ग्रहकरके युक्तहोवे
और चतुर्थस्थानपापग्रहकरके युक्त होवे तब माताके मरणमें संशयनहींहै ६
और जिसके जन्ममे चतुर्थस्थानमें शनि स्थित होवें और पापीग्रहकरके देख्या होवे और अष्टम
स्थानमें शत्रु और नीचकी राशिमे स्थित होवे तब माताका नाश कहे ७ और जिसके तीसरे और
पाचमें स्थानमे पापीग्रह स्थित होवे और चतुर्थका स्वामी शत्रु और नीच राशिमें स्थित होवे और
चद्रमा पापग्रहकरके युक्त होवे तब माताको रोगयुक्तकहे ८ औरजिसकेजन्ममें छठेघरके स्वामीके
संग चतुर्थघरका स्वामी युक्त होवे और नवमभावमेंस्थितहोवे तब तिसका पिताव्यभिचारी होताहै

। और नवमके स्वामी साथ चतुर्थघरका स्वामी युक्त होवे और चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तव तिसका पिता व्यभिचारी होताहै ९ और छठे और चतुर्थ स्थानके स्वामी दशम भावमें स्थित होवें तव पिता व्यभिचारी होताहै और जिसके जन्मकालमें दशम और चतुर्थ और छठे स्थानके स्वामी एकराशिमें स्थित होवें तव तिसका पिता जारजातहोताहै १० और जिसके जन्म समयमें चंद्रमा वा सूर्य केंद्रस्थान । १ । ४ ॥ ७ । १० ॥ में पापीग्रहकर्के दृष्ट युक्त होवें अथवा क्रूर ग्रहचतुर्थ स्थानमें पापग्रहकर्के देख्या होवें सो मातृगामी होताहै ॥ ११ ॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमा वा शुक्र केंद्रस्थानमें स्थित होवें और दोनों पापग्रहकर्के देखे होवें और चतुर्थस्थानमें क्रूर ग्रह स्थित होवे तव मातृगामी अथवा गुरोंकीस्त्रीमें गमन करणे वाला होताहै १२ और जिसके जन्मसमयमें मंगल छठेघरके स्वामीके साथ और चंद्रमा चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तव तिसकी माता

भाग्याधिपेनसहितोयदिमातृनाथःसौख्यस्थितोजनकमत्रविटंकरोति ॥ ९ ॥ षण्मातृपौपितृस्थानेपितुश्चव्यभिचारदौ ॥ पितृमातारिदेहेशैरेकस्थैः परजातकः ॥ १० ॥ पापेक्षितेपापयुतेशशांकेदिवाकरेवायदिकेंद्रराशौक्रूरेसुखेवायदिपापदृष्टेजातोनरःस्याद्यदिमातृगामी ११ चंद्रेभृगौवाकेंद्रस्थेपापदृष्टेथवाद्वयोः ॥ क्रूरेसुखेमातृगामीयदिवागुरुदारभाक् १२ सुखस्थेसारपष्ठेशेचंद्रेमातान्यमैथुनी ॥ व्यभिचारप्रदोमातुःसराहुर्दिननायकः १३ शीतांशौराहुकेतुभ्यांयुक्तेनीचेनसंगमः ॥ मंदयुक्तेनशूद्रेणवैश्येनबुधयोगतः १४ रवियुक्तेक्षत्रियेणमंत्रिभ्यांद्विजसंगमः ॥ एवंचंद्रःकुजारीशयुक्तस्तत्फलदोभवेत् १५ चंद्रेनिष्टस्थानगःसानुजेशोजातस्यान्यस्तन्यपानंकरोति ॥ दुःस्थानस्थौमातृपित्रर्क्षनाथौपित्रोर्मृत्युर्लग्ननाथेबलाढ्ये १६

व्यभिचारिणी होतीहै और राहुकर्के युक्त यो चतुर्थ स्थानमें सूर्यहै सो माताको व्यभिचार दोषको देताहै १३ और चतुर्थभावमें चंद्रमा राहुकेतुकर्के युक्त होवे तव नीचकर्के संगम होताहै और शनिकर्के चंद्रमा युक्त होवे तव शूद्रकर्के और बुधकर्के चंद्रमा युक्त होवे तव वैश्यकर्के संगम होताहै १४ और चतुर्थ भावमें चंद्रमा सूर्यकर्के युक्त होवे तव क्षत्री कर्के और बृहस्पति शुक्रकर्के युक्त होवे तव ब्राह्मणकर्के संग होताहै और इसी प्रकारकर्के चंद्रमा मंगल और छठे भावके स्वामी कर्के युक्त होवें तव माता व्यभिचारणी होतीहै १५ और चंद्रमा ६। ८ ॥ १२ स्थानमें तृतीय भावके स्वामीकर्के युक्त होवे तव दूसरी माता स्तनपान कराहै और ६।८। १२ स्थानमें ४ १० भावके स्वामी स्थित होवें और लग्नेश बली होवे तव माता पिता मृत्युको प्राप्तहोतेहैं ॥ १६

और जिसके जन्मकालमें पिताके कर्मस्थानका स्वामी अर्थात् सप्तमेश छठेआठमें बाहरमें स्थानमें
स्थित होवे तब पितामाताकों अनिष्टफल कर्ताहै अथवा षोडशवर्षके मातापितासें रहित होताहै
१७ और चतुर्थ और लग्नके स्वामी दोनों दशम और चतुर्थस्थानसें नवम और पंचममें स्थित हो
वें और तिसका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तब माता पिताकेसाथमृत्युकों प्राप्त होताहै १८ और नि
सकों चतुर्थ और लग्न और दशम केस्वामी केंद्र १ ४ ७ १० कोण ९ ५ स्थानमें स्थित होवें ति
न्हके दशातदंशा कालमें माताकों मृत्यु कर्त्ताहें १९ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा दोनों
मिलकर्के दशम और चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें और अथवा दशम चतुर्थके स्वामी कर्के युक्त होवें
और सूर्यके साथ संबवकर्त्ते होवें तब मातापिताकों मृत्यु कर्त्ताहें २० और यो ग्रह चतुर्थभावकास्वा
मी और चतुर्थका कारक तिनकर्के युक्त यो ग्रह और मातृ भाव ४ में स्थित यो ग्रह और मातृ ४

पितृकर्माधिपेदुःस्थेलग्नेशेबलसयुते ॥ पित्रोरनिष्टकारीस्यात्सीमतरहितोथ वा १७ मातृस्थानेशलग्नेशौतत्रिकोणगतौयदि तदीशोलग्नगोमातापित्रा सहमृताभवेत् १८ मातृलग्नेशपितृपाःकेंद्रकोणस्थितायदि ॥ तद्दशांतर्दशाकालेजनन्यास्त्वनुमृत्युदाः १९ रवींदूपितृमातृस्थौयदिवाऽनुमृत्युदौ तदीशिक्षितयुक्तौवारविसंबधिनस्तथा २० येमातृभावपतिकारकतत्समेता तद्वीक्षितयुक्तौवारविसंबधिनस्तथा स्तन्मातृराशिगतवीक्षितखेचरेद्राः तेषामनिष्टकरखेटदशापहारेजातस्यमातृमरणंप्रवदतिसतः २१ मार्तंडस्फुटतोविशोध्यशशिनंतच्छेषराश्यशकेजीवेभानुसुतेचमातृमरणंतत्कोणगेवानृणाम् संशोध्यंहिमकंटकहिमकराद्रंध्राधिपस्य स्फुटेतद्राशौरविनदनेमृतिमुपैत्यवातदंशेरवौ २२ बुधदृष्टियुतेसौख्येसौम्यमध्यगतेथवा ॥ जीवराश्यंशकेवापिपुण्यकर्मरतःसदा २३

भावको देखता जो ग्रह तिन्हमें अनिष्टके देनेवाले ग्रहकी दशाकालमें माताका मरण श्रेष्ठ मुनि क
हतेहैं २१ अब मातृमरणकालकहतेहें स्पष्टसूर्यसें स्पष्ट चद्रमाकों जन्मसमयमें घटाए शेष रहेयोरा
शि अंश तिसमें गोचरकर्के बृहस्पति और शनि जब आवें तबमाताकामरणकहे अथवा तिससें न
वम पचम राशिमें स्थित होवें तब मरणकाल होताहै और कहतेहे जन्मकालमें स्पष्टजो अष्टमघर
का स्वामी तिसमें स्पष्ट सूर्यकों घटावे तिसराशिमेंजब शनि आवे और तिसराशिके नवांशमें सूर्यहो
वे तब माताकामरणकहे २२ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभाव बुधकी दृष्टिकर्के युक्त होवे अथ
वाशुभग्रहोंके मध्यमें होवे अथवा बृहस्पतिके राशि नवांशमें स्थित होवे सो सर्वदाकाल पुण्यकर्म
मेंरत होताहै २३

श्रौर योग्रह बली होयकर्के चतुर्थभावमें शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे श्रौर लग्नसें संबंधकर्के अधिकगुणवाला ग्रह जिसजातीका होवे तिसजातिके वर्गकर्के निरंतरसुख होताहै श्रौर तिस ग्रहकी धातुके संबंधकर्के सुखकों प्राप्त होताहै २४ श्रौर यो ग्रह । ६ । ८ । १२ । का स्वामीनीचश्रौरशत्रुक्षेत्रमेंचतुर्थस्थानमेंस्थितहोवेश्रौरलग्नेशकाशत्रुहोवेतिसके कोपसेंदेहकेसुखकानाशकहतेहैं२५ श्रौर जिसके जन्मसमयमेंचतुर्थभावमेंस्थितयोग्रहश्रौरचतुर्थभावकों देखनेवालायोग्रहश्रौरचतुर्थ भावका कारक यो ग्रह तीनो बली होवें तब बडे सुखका कारणहैं श्रौरइहतीनों नीच श्रौरशत्रुकीराशिमें श्रौर अस्तहोवें तब अनिष्टफलदेतेहैंश्रौरशुभग्रहकर्केसुखहोताहै श्रौर पापीग्रहकर्के दुख होताहै २६ श्रौर चतुर्थ स्थानमें नवमका स्वामी स्थित होवे श्रौर शुक्रकर्केयुक्तहोवे श्रौरबली होवे

सुखस्थितःशोभनराशिगोबली विलग्नसंबंधगुणाधिकोयदितज्जातिवर्गेणसुखं निरंतरंतदीयधातुश्रियमेतिमानवः २४ चतुर्थगोनीचसपत्नयातस्त्वनिष्टभावाधिपतिर्विलग्नात् लग्नेशशत्रुर्यदितत्प्रकोपाच्छरीरसौख्यादिविनाशमाहुः२५ चतुर्थभावस्थितदर्शिकारकाबलान्वितायद्यतिसौख्यहेतुकाः अनिष्टदानीचसपत्नमूढगाःसुखंशुभेनासुखमन्यखेचरैः२६ चतुर्थगेभाग्यपतौसशुक्रेबलाधिकेस्याच्चिरकालभोगीशुभान्वितेरंध्ररिपुव्ययस्थेजातोल्पकालसमुपैतिसौख्यम् २७ सुखचिंताग्रहेड्याभ्यांमातृचिंतासुखेंदुतः ॥ सुगंधंग्रहशुक्राभ्यांवस्त्रवाहनभूषणम् २८ सुखेश्वरेशोभनराशियुक्तेशुक्रेणदृष्टेसतिसंयुतेवा ॥ अरातिनीचग्रहदृष्टिहीनेसुगंधमाल्यादिसुखंसमेति २९ वीर्यान्वितेशीतकरेसुवस्त्रंसाहिध्वजेजीर्णतरंसमेति॥ कौशेयकंजीवयुतेचरक्तंचित्रंसशुक्रेसशनौतुकृष्णम् ३०

तब चिरकाल भोगोंकों भोगताहै श्रौरशुभग्रहकर्के युक्त ६ । ८ । १२ स्थानमे स्थित होवे तब थोडा काल सुखकों प्राप्तहोताहै २७ श्रौर लग्न श्रौर बृहस्पतिसें सुखका चिंतनकरे श्रौर चतुर्थ भाव श्रौर चंद्रमासें माताका चिंतन करे श्रौर लग्नसें श्रौर शुक्रसें सुगंध द्रव्यका चिंतनकरे श्रौर वस्त्र वाहन भूषणों काविचार करे२८ श्रौरचतुर्थभावकास्वामी शुभराशिमें शुक्रकर्के युक्त दृष्ट होवे श्रौर शत्रुनीचग्रहकी दृष्टीसेंरहित होवे तब सुगंधमाल्यादि सुखकों प्राप्तहोताहै २९ श्रौर चंद्रमाबली होवेतब श्रेष्ठ वस्त्र प्राप्तहोतेहैं श्रौर राहुकेतुकर्केयुक्तहोवे तब पुराणे वस्त्र प्राप्तहोतेहैं श्रौर बृहस्पतिकर्केयुक्तहोवे तब पट्ट वस्त्र श्रौर लालवर्णकेवस्त्रप्राप्तहोवेहैं श्रौरशुक्रकर्केयुक्तहोवेतबअनेकवर्णके श्रौर शनिकर्के युक्त होवे तब काले वर्णके वस्त्र प्राप्तहोतेहैं ३०

श्रौर चतुर्थभावका स्वामी शुक्र चंद्रमाके वर्गमें स्थित होवे श्रौरशुक्र कर्के श्रौरचंद्रमा कर्के देख्याहोवे वा युक्त होवे श्रौर नीचराशिमें श्रौर शत्रु ग्रहकीदृष्टि सें रहितहोवे सो मनुष्यपशुधनकोंप्राप्तहोताहै ३१ श्रौर चतुर्थस्थानकास्वामीशुभग्रहहोवे श्रौर शुभग्रह कर्के देख्या होवे श्रौर चतुर्थभावकास्वामीपूर्णबलीहोवेसोमनुष्यबंधुयोंमेंश्रेष्ठहोताहै ३२ श्रौरचतुर्थभावका स्वामी केंद्र १।४।७।१० श्राय ११स्थानमेंस्थितहोवे श्रौर वैशेषिकांशमें स्थित श्रौरपापग्रह केयोग श्रौर दृष्टिसें रहित होवे तब बंधूयोंकेऊपरउपकार करणेवालाहोताहै ३३ श्रौर पापीग्रहकर्के युक्त श्रष्टम घरकास्वामी चतुर्थस्थानमें होवे तब कपटी होताहै श्रौर श्रपने उच्च श्रौर मित्र श्रौर श्रपने वर्गमें शुभग्रहकर्के देख्याहोवे तब कपटकर्केरहित होताहै ३४ श्रौर चतुर्थेशबलककेंयुक्त होवेतबशुद्धहृदयवाला होताहै श्रौर गोपुरांशमेंवामृदुश्रंशमेंस्थितहोवेतबवेंशुद्धहृदयवाला होताहै ३५

शुक्रेंदुवर्गसहितेसुखराशिनाथेशुक्रेणशीतरुचिनासहितेक्षितेवा नीचारिपाप
गगनाटनदृष्टिमुक्तेपश्वादिवित्तमखिलंलभतेमनुष्यः ३१ बंधुस्थानेश्वरेसौम्ये
सौम्यग्रहनिरीक्षिते कारकेबलसंपूर्णेबंधुपूज्योभवेन्नरः ३२ बंधूपकर्त्तातन्ना
थेकेंद्रकोणायसंयुते ॥ वैशेषिकांशसंयुक्तेपापदृग्योगवर्जिते ३३ सपापेरंध्र
पेसौख्येकपटीपापसंयुते स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्थेनिष्कापट्यंशुभेक्षिते ३४वि
शुद्धहृदयःशांतोहृदयेशेबलान्विते गोपुरांशकेवापिमृद्वंशादिसमान्विते ३५
वाहनेशेबलयुतेयानराशौबलान्विते शुभग्रहेणसंदृष्टेवाहनादिफलंवदेत् ३६
चंद्रोविलग्नसंबंधीवाहनेशसमन्वितः तुरंगवाहनंतस्यवदतिमुनिपुंगवाः ३७
द्वितीयेवाचतुर्थेवाचंद्रेशोभनराशिगे शुभखेचरसंयुक्तेसमुपैत्यश्ववाहनं ३८.
सेंदौचतुर्थाधिपतौविलग्नेलग्नेश्वरेणापियुतेश्वलाभं शुक्रेणयुक्तेयदिवाहनेशेदे
हान्वितेवानरवाहनंस्यात् ३९

श्रौर चतुर्थघरका स्वामी श्रौर चतुर्थभावमेंबलयुक्तहोवे श्रौरशुभग्रहकर्केदेख्या होवेतबवाहना दिशुभफल कहे ३६ श्रौर चंद्रमा लग्नका संबंधि होयकर्के चतुर्थभावके स्वामी साथ युक्त होवे तिसकों घोडेकी प्राप्ति श्रेष्टमुनि कहतेहैं ३७ श्रौर दूसरे स्थानमें वा चतुर्थस्थानमें शुभग्रहकोरा शिमें चंद्रमा स्थित होवे श्रौर शुभग्रहकर्के देख्या होवे सो घोडेवाहनकों प्राप्त होताहै३८ श्रौर चंद्रमाकर्के युक्त लग्नका स्वामी लग्नमें स्थित होवे श्रथवा लग्नेश कर्के युक्त चंद्रमाकिसीभावमें स्थि त होवे तब घोडेकालाभ होताहै श्रौर शुक्रकर्के युक्त चतुर्थका स्वामी होवे श्रौर लग्नमें स्थित होवे तब नरवाहन मिलताहै ३९

और शुक्र और पूर्णचंद्रमा केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवेंवा त्रिकोणमें ९ ५ वलयुक्त स्थित होवें तव भगूडेका सुख और भूषण देतेहे और धन मीन राशिमें होवें ववलालवस्त्र और भूषण देतेहे और शुक्रकर्के युक्त दृष्ट होवें तव वी वस्त्र और भूषण देतेहैं ४० और जिसके जन्मकालमें शुक्र और चंद्रमा और चतुर्थभावका स्वामी और लग्नेश इह चारग्रह एकराशिमें स्थित होवें सो भगूडेके सुखवाला और घोडेके लाभको प्राप्त होताहै और एकराशिमें वृहस्पति और चतुर्थघरकास्वामी और चद्रमा और शुक्र केंद्र १ ४ ७ १० त्रिकोण घरमें स्थित होवेंतव चारप्रकारकावाहन मिलताहै ४१ और चतुर्थघरका स्वामी वृहस्पतिकर्के युक्तहोवे तव चारप्रकारके वाहन मिलतेहे और चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकर्के युक्त दशमस्थानमें स्थितहोवे तव

आंदोलिकाभरणदौसितपूर्णचंद्रौकेंद्रत्रिकोणगृहगौवलिनौभवेताम् रक्तांवराभरणदस्सुरपूजितर्क्षेचंद्रेसुरेंद्रसचिवेक्षितसयुतेवा ॥ ४० ॥ आंदोलिकातुरगलाभमुपैतिजातः शुक्रेंदुयानपतयस्तनुनाथयुक्ताःएकत्र देवगुरुयानपचंद्रशुक्राः केंद्रत्रिकोणगृहगाश्चतुरंगयानम् ४१ वाहनेशगुरुयुतेचतुरंगाख्यवाहनम् यानेशेसशुभेमानेचामरछत्रसंयुतः ४२ सुखेश्वरेकेंद्रगतेतदीशलग्नस्थितेवाहनयोगवंतः कर्मेश्वरेलाभगतेतदीशेकर्मस्थितेभूषणयानवंतः ४३ यानेशेलाभराशिस्थेसुखेशेलाभगेकुजे अथवा भौमराशिस्थेद्राज्यप्राप्तिर्नसंशयः ४४ लग्नाद्वाहनराशिगस्तदधिपस्तद्वीक्षकश्चत्रयःस्वोच्चस्वर्क्षसुहृद्गृहेपुवलिनःकेंद्रत्रिकोणायगाः दीर्घायुःशयनाशनांवरवसुक्षेत्राणिसन्मंदिरंवंधुस्नेहमनोज्ञवाहनयशःसौख्यानिकुर्वंतिते ४५

छत्र चामर कर्केयुक्त होताहे ४२ और जिनके चतुर्थभावका स्वामी केंद्रमें स्थित होवे और तिसका स्वामी लग्नमें स्थित होवे तव वाहनयोगवाले होतेहैं और दशमका स्वामी एकादशमें और एकादशका स्वामी दशममें स्थित होवे तव भूषणों और वाहनोंवाले होतेहैं ४३ और चतुर्थका स्वामी एकादशमें स्थित होवे और चतुर्थघरका स्वामी मंगल एकादशमें स्थित होवे अथवा एकादशभावमें मंगलकी राशि होवे तव राज्य प्राप्त होताहे ४४ और जिसके जन्ममें चतुर्थका स्वामी और चतुर्थमें स्थित ग्रह और चतुर्थको देखने वाला तीनों अपने क्षेत्रमें और उच्चमें और मित्रक्षेत्रमेंस्थित होवें और वलीहोयकर्के केंद्रत्रिकोणमें स्थित होवें तव वडीआयुषा और शय्या वस्त्र और क्षेत्र मंदिर और वंधुयोंमें प्रीति और मनके जानने वाला वाहन और यशऔरसुख देतेहैं । ४५

और जिसके जन्मकालमे बुध उच्चराशिमें केंद्र १।४।७।१०कोण ९।५ स्थानमे स्थित होवे सो वि
या और वाहन और संपदा बहुतधनको करताहै ४६ और लग्नके स्वामीसें चतुर्थघरका जो स्वा
मीहै तिसराशिमें नवमघरका स्वामी और न८मे स्थित ग्रहहोवे इह चारग्रह शुभग्रहोंके वर्गमें और
बलसयुक्त होवें और लग्नेशके सबंधि होवे और परस्पर क्षेत्रमें वा परस्पर देखते होवें तव राजा चि
रकाल सुखी तेजस्वी और चारप्रकारके वाहनों कर्के युक्त और राज्यलक्ष्मीके चिन्होंवाला होताहै
४७ और जिसके जन्मकालमे तीनग्रह स्थान वल कर्के युक्त होवें पूर्णवली होवें तव विचित्र अ
नेक प्रकारोंके रत्नोंके भूषण और वाहनोंकी प्राप्ति होतीहै और जिसके जन्ममें दो ग्रह वली होय
कर्के लग्नमें स्थित होवें तिनकी दशामें सुखको प्राप्त होताहै ४८ और कहेजो तीन स्थान तिनमें

स्वोच्चराशिगतश्चांद्रिःकेंद्रकोणसमन्वितः विद्यावाहनसंपत्तिंकरोतिविपुलंधन
म्४६ लग्नेशात्सुखनाथतद्भवनगौभाग्येशभाग्यस्थितौचत्वारःशुभवर्गगाः सु
बलिनस्तेलग्नसंबधिनः अन्योन्याश्रितवीक्षितायदिमहीपालश्चिरायुःसुखी ते
जस्वीचतुरंगयानविपुलश्रीराजचिन्हांकितः४७ ग्रहास्त्रयःस्थानवलाधिकाश्चे
द्विचित्ररत्नाभरणादियानम् खेटद्वयेवीर्ययुतेविलग्नेतदीयपाकेसमुपैतिसौख्यम्
४८ उक्तस्थानत्रयेष्वेकोवलीवाहनराशिपः लग्नलग्नेशसंबंधीतद्दशावाहनप्रदा
४९ चतुर्थधर्मायधनाधिनाथाविलग्नसबंधबलाधिकाश्चेत् तदीयपाकेसमुपैतिरा
ज्यक्रमेणलाभंधनलाभमर्थम्५० तेचत्वारोधिकबलयुतादेहसबंधिनश्चेदेतत्सर्वं
भवतिविपुलंदुर्बलाद्दुःखदास्युः मिश्रंमिश्रैस्तनुपरिपवःकारकोभावनाथोभा
वाक्रांतोविगतबलिनश्चेदतिक्लेशदास्ते ५१

चतुर्थ भावका स्वामी वली होयकर्के युक्त होवे और लग्नकर्के और लग्नेशकर्के संवधकर्ता होवे ति
स ग्रहकी दशावाहनको देतीहै ४९ और जिसकेजन्मकालमें चतुर्थ नवम एकादश दूसरे घरके स्वा
मी वली होयकर्के लग्नसें सबधकरें तिनकी दशामें क्रमकर्के राज्यलाभ और धनलाभ और अर्थसि
द्धिहोतीहै ५० और चतुर्थ नवम एकादश द्वितीयका स्वामी अधिक वली होयकर्के लग्नसें संबंधकरें
तब राज्यादि फल विपुल बडा होताहै और बलहीन होवें तब दुःख देतेहैं और लग्नपति और शत्रु
का का क और भावका स्वामी भावमेंयुक्त मध्यवली होवें तब मिश्रफल होताहै और बलहीन होवें

और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थघरका स्वामी शत्रु और नीचराशिमें स्थित होवे और ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे और नवम भावके स्वामी करके देख्या होवे तबखोटे वाहनकी प्राप्ति होतीहै अथवा वाहन स्थिर नाहिं रहिताहै ५२ और जिसके नवम और दशम और लग्नमें उच्चहोयकरके शुभग्रहस्थित होवे और लग्नेश करके देखयाहोवे तब वाहनप्राप्तिके उपरत दुःखप्राप्तहोताहै ५३ और जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति वा चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकरके युक्त और शुभग्रह की राशिमें नवमस्थानमें स्थित होवे तब नरवाहन करके औरचिरकालराजप्रतापकरकेयुक्त होताहै और ६।८।१२ स्थानमें स्थित और पापग्रहकरके युक्त और अस्तनीच शत्रुकी राशिमेंहोवे तब वाहनादियोंके भी नहिं होनाहै और स्वक्षेत्रमें पूर्णबली होवे तब चिरकाल भदूंके कासुखहोताहै ५४ और चतुर्थ नवमघरक स्वामीदोनों लाभ ११ स्थानमें युक्त वा देखते होवें और बली होवें तब संपूर्ण भाग्य

वाहनेशेरिनीचस्थेदुःस्थेधर्माधिपेक्षिते सुदुर्वाहनसंप्राप्तिश्चलवाहनतापिवा ५२ धर्मकर्मविलग्नस्थास्तुंगोपगशुभग्रहाः लग्नाधिपेनसंदृष्टायानांतिदुःखमाप्नुयात्५३ जीवेवासुखपेशुभग्रहयुतेलग्नात्तपस्थानगेसौम्यर्क्षेनरवाहनंचिरतरंराजप्रतापान्वितम् ॥ दुःस्थेपापयुतेस्तनीचरिपुगेयानादिभाग्यंनहिस्वर्क्षेसर्वबलाधिके चिरसुखंचांदोलिकारोहणम् ५४ बंधुधर्मगृहाधीशौलाभस्थानगतेक्षकौ ॥ यलवतौयदिस्यातांसर्वभाग्यफलप्रदौ ५५ लाभस्थौसुखभाग्येशौपश्यंतौवासुखस्थलम् वाहिनीसर्वभाग्याढ्योराजप्रीतिकरोभवेत् ५६ धर्मवाहनराशीशौलग्नसंबंधिनौयदि ॥ जीवदृष्टियुतौतस्यराजवश्यादिभूषणम् ५७ शुभवाहनराशीशौशुभखेचरसंयुतौ ॥ बहुसेनाधिपःश्रीमान्बलिनौयदिजायते ५८ भाग्यस्थितेवाहनराशिनाथेसशुक्रजीवेशुभखेटराशौ भाग्याधिपकोणचतुष्टये वाबहुत्वदेशाभरणार्थयानम् ५९ ॥

फलको देतेहैं ५५ और लाभ ११ स्थानमें चतुर्थ नवमके स्वामी होवें अथवाचतुर्थभावको देखते होवें तब संपूर्ण भाग्योंकरके युक्त सेनाका स्वामी राजाकीप्रीति करणे वाला होताहै ५६ और यद नवम चतुर्थ भावके स्वामी लग्नके संबधि होवें और बृहस्पति करके देखे होवें तब राजवश्यादि और भूषणप्राप्तिकरेहैं ५७ और नवमचतुर्थराशिके स्वामी शुभ ग्रह करके युक्त होवें और बली होवें तब बहुतसेनाका स्वामी शोभा करके युक्त होताहै ५८ और जिसके जन्मकालमें शुभग्रहकी राशिमें नवमभाव गत चतुर्थभावका स्वामी शुक्र बृहस्पति करके युक्त होवे अथवा नवम भावका स्वामी,कोण ५।९ चतुष्टय १।४।७।१०स्थानमें स्थित होवे तब बहुत देश और भूषण और धन और वाहन प्राप्त होतेहै ५९

और जिसके जन्मकालमेंसप्तमपष्ठ चतुर्थतृतीयनवम लग्न द्वादशभावोंकेस्वामीचतुर्थभावकेस्वामीकर्के युक्तहोवें सोअनेक देशोंका स्वामीहोताहै ६० और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी बृहस्पति वा शुक्र होवे और बलयुक्तलग्नसें नवमराशिमें स्थितहोवे और नवमराशिकास्वामीत्रिकोण१।५।केंद्र१।४।७।१०स्थानोंमें स्थितहोवेतबसोबहुत वाहनोंको प्राप्त होताहै ६१ और शुक्रव के युतबृहस्पतिनवम में स्थित होवे और नवमका स्वामीचतुर्थस्थानमें होवे अथवा केंद्रत्रिकोण मेंस्थित होवे तब बहुत वाहनऔर देशोंका स्वामी होताहै ६२ और लग्नकेंद्रमें शुभग्रह स्थित होवे और नवममें उच्चग्रहस्थित होवे और दूसरेभावकास्वामी केंद्रमें स्थित होवे तबसिंहासनकेदेनेवालायोगहोताहै ६३

कामारियानसहजतपोलग्नव्ययेश्वराः ॥ सुखाधिपेनसंयुक्तास्त्वमंस्याकरदेशभाक् ॥ ६० ॥ सुखाधिपोदेवगुरुःसितोवाबलीविलग्नान्नवमोपयातः ॥ त्रिकोणकेंद्रोपगतःशुभेशःसमेतिजातोवहुवाहनानि ६१ सशुक्रजीवेगेहेशो भाग-स्थोभाग्यपेसुखे ॥ केंद्रत्रिकोणयोर्वापिवहुवाहनदेशभाक् ६२ लग्नकेंद्रेस्थितेसौम्येधर्मेतुंगग्रहाश्रिते धनेशेकेंद्रभावस्थेयोगःसिंहासनप्रदः ६३ भाग्येशुभेक्षितेकेंद्रेशुभैःसहधनाधिपे ॥ उच्चग्रहेद्वितीयस्थेजन्मासिंहासनप्रदम् ६४ लग्नवाहनभाग्येशाःकर्मस्थाकर्मपस्तनौ लग्नपस्पतिवाखेटःसिंहासनफलप्रदः६५ कर्मलग्नसुखाधीशाःकर्मस्थानगतायदि ॥ कर्मपोलग्नसंबंधीसिंहासनपतिर्भवेत् ६६

और जिनके जन्ममें नवमभाव शुभ ग्रह करके देख्या होवे और दूसरे घरका स्वामी शुभ ग्रहोंकरके युत केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थित होवे और दूसरे स्थानमें उच्च राशिगत ग्रह होवे तब सिंहासनके प्राप्तकरणेवाला जन्म होताहै ६४ और लग्न ॥ चतुर्थ ॥ नवमके स्वामी दशममें स्थित होवें और दशमेश लग्नमें होवे अथवा लग्नको ग्रह देखता होवे तब सिंहासन प्राप्त करताहै ६५ और दशमलग्नचतुर्थ घरके स्वामी दशम स्थानमें स्थित होवें और दशमेश लग्नका संबंधिहोवे तब सिंहासन को देवेहैं ६६

और बृहस्पतिशुक्रनवमकास्वामीकेंद्र१।४।७।१०कोण१।५आय११स्थानमेंस्थितहोवेंतवअनेकवाहनो करकेयुक्तमंडलकास्वामी होताहै ६७ और चतुर्थ भावकास्वामी और दशमस्थानमें स्थित ग्रहदोनों बली होवें और नवमेश करके देखे होवें वा युक्त अथवा परस्पर क्षेत्रमें दोनों स्थित होवें तब सिंहासनकी प्राप्ति करने वाले होतेहैं ६८ और जिनकी दशान्तर्दशा कालमें और जिसराशिमें स्थित होवें तिसके स्वामीकी उपदशामें अथवा तिसदशामें सिंहासनका स्वामी होताहै ६९ और नवम पाते और लग्नेश दोनो चतुर्थ भावमें स्थित होवें और चतुर्थका स्वामी शुभग्रहकी राशिमें लग्न गत होवे तब नित्यप्रति अत्यंत सुखको प्राप्त होताहै और छठेस्थानमें स्थित होवे तब शत्रुयों को

गुरुशुक्रशुभाधीशाःकेंद्रकोणायगायदि ॥ अनेकयानसंपन्नोमंडलाधिपतिर्भवेत् ॥ ६७ ॥ यानेशकर्मोपगतौवालिष्टौधर्मेशदृष्टौयदितद्युतौवा ॥ परस्परक्षेत्रसमागतौवासिंहासनप्राप्तिकरौभवेताम् ॥ ६८ ॥ तद्दशांतर्दशाकालेतद्राश्युपदशागमे ॥ तदीयभुक्तिसंप्राप्तेसिंहासनपतिर्भवेत् ६९ शुभोदयेशौसुखराशियातौसुखाधिपोलग्नगतःशुभर्क्षे ॥ अतीवसौख्यसमुपैतिनित्यसपत्नयातोयदिशत्रुभाग्यम् ॥ ७० ॥ सपत्नभावाधिपतौतपस्थेशुभैरदृष्टेबलसयुतेवा ॥ स्वकीयभाग्यादिकमल्पकालंददातिशत्रौसुखनाथदाये ७१ सुखाधिपेशोभनखेटयुक्तेतदीयपाकांतमरातिगंतत् ॥ पापान्वितेतस्यदशावसानेपुनःस्वभाग्यसमुपैतिसर्वम् ७२क्षेत्रस्थानेशुभक्षेत्रेतदीशेशुभसयुते ॥ तत्कारकेतथाप्राप्तेवहुक्षेत्रधनान्वितः ७३

भाग्यकर्त्ताहै ७० और छठे भावका स्वामी नवमभावमें स्थित होवे और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे रहित होवे अथवा वली होवे तव चतुर्थभावेशकी दशामें अपने भाग्य थोडाकाल कर्त्ताहै और शत्रुयोंमें भाग्यवृद्धि देनाहै ७१ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वामी शुभग्रहकर्के युक्त होवे तिसकी दशाके अनंतर शत्रुको प्राप्त होताहै और पापीग्रह करके युक्त होवे तिसकी दशाके अंतमें फेर अपने भाग्यको संपूर्णताकर्के प्राप्त होताहै ७२ और चतुर्थस्थानमें शुभग्रहकी राशी होवे और तिसका स्वामी शुभग्रहकर्के युक्त होवे और तसेंहि चतुर्थ भावका कारक होवे तब बहुतक्षेत्र और धनको प्राप्त होताहै ७३

और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावका स्वमी नीचांशमें और शत्रुके नवांशमे और शूल यमकाला ग्निषष्टिभागमें स्थितपापग्रहकर्के युक्त अथवा दृष्ट होवैतब शास्त्रके जाननेवाले क्षेत्रादि पदार्थों का नाशकहतेहैं ॥ ७४ ॥ और लग्नाधिपकी राशिमें जबशत्रुग्रह स्थितहोवे तिसकी दशातर्दशाका लमेंघरका और पृथ्वीका विनाशहोताहै और चतुर्थभावका स्वामी शनि मंगल गुलिककर्के युक्तहो वे तब तिसकी दशातर्दशामें बंधुओं कीहानि और अनर्थहोताहै ॥ ७५ और जिसके जन्मकालमे दूसरेघरका स्वामी चतुर्थेशकर्के युक्त नवमस्थानमें स्थितहोवे और शुभग्रहकीराशिमें शुभग्रहकर्के यु क्तहोवे तब निक्षेपधनकाक्याकिसीको अमानतकों प्राप्तहोताहै और एकादश और द्वितीयभावके स्वामी दोनों चतुर्थमें स्थित होवें और चतुर्थकास्वामी शुभराशिमे शुभग्रहकर्के युक्त होवे तबनिक्षेपधनकी सिद्धिहोतीहै और लाभेशग्रहशुभराशिमें शुभग्रहकर्के युक्तहोवे तब निक्षेपधनकोदेताहै ७६ और दू

क्षेत्रेश्वरेनीचसपत्नभागेकालाग्निशूलांतकषष्टिभागे पापान्वितेपापसमीक्षि तेवाक्षेत्रादिनाशंकथयंतितज्ज्ञाः ७४ लग्नाधिपस्यगृहगोयदिशत्रुखेटस्तत्पाक भुक्तिसमयेगृहभूमिनाशम् यानेशभुक्तिसमयेनिजबंधुहानिःशन्यारमांदियुत भुक्तिरनर्थहेतुः ७५ वित्तेशःससुखाधिपोनवमगःसौम्यान्वितःसौम्यभे निक्षे पंसमुपैतिलाभधनपौपातालराशिस्थितौ तन्नाथःशुभराशिगःशुभयुतोनिक्षे पसिद्धिर्भवेत् लाभेशःसुखराशिगःशुभयुतोनिक्षेपवित्तप्रदः७६ अर्थव्ययगृहाधी शानाशगाःपापसंयुताःयावद्भिरशुभैर्युक्तातावद्गेहालसत्वदाः७७ पापेराहौपापदृ ष्टेसुखेगेहसुखार्तिभाक् नीचेरातौकुजेर्केवासुखेस्यादगृहोनरः७८नीचेस्तगेवागेह स्थेकूपादौचपतिष्यति सुखेपापेपापभाक्स्यात्सुखेमंदेसुखक्षयः७९ गृहेशेव्य यगेलग्नादन्यगेहोन्यदेशगः रंध्रेगृहाद्यभावोवाषष्ठेशत्रुयुतगृहं ८०

सरे बारहमें घरकेस्वामी अष्टमस्थानमें पापीग्रहकर्के युक्तहोवें जितनेक पापी ग्रहोंकर्के युक्तहोवे उ तनेघरदरिद्रको प्राप्तहोवेहैं ७७ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थस्थानमें पापीग्रह वा राहु पापीग्रह कर्के देखा होवे सो घरके क्लेशको प्राप्त होताहै और नीचराशिमें शत्रुक्षेत्रमें सूर्य वा मंगल चतुर्थ भावमें स्थित होवें सो घरसें रहित होताहै ७८ और नीच राशिगत वा अस्तगत ग्रह चतुर्थस्था नमें स्थित होवे सो कूपादि स्थानमे पडताहै और पापीग्रह चतुर्थस्थानमें स्थित होवे तब पापकर नेवाला होताहै और शनिहोवे तब सुखकर्के हीनहोताहै ७९ और चतुर्थेश लग्नसें बारहमे स्था नमे स्थित होवेतब प्रायेघरमें और परदेशमें वास कर्ताहै और अष्टमस्थानमे होवे तब घरसे रहकर्के पदार्थोंसें रहित होताहै और छठे स्थानमेंहोवे तब शत्रुओंके समीपघर होताहै ८०

और चतुर्थकास्वामी पूर्णबली होवे तब यत्नके विनाघरका लाभदेताहै और ६।८।१२स्थानमेंनिर्बल होयकर्के स्थित होवे तब घरमें आलस्य और ग्रहपीडाकों प्राप्त होताहै ८१ और छठे तीसरे वा हरमें अष्टमें स्थानोंमें इन १२ । २ । ४ । स्थानोंके स्वामी स्थित होवें और जितने सङ्ख्या कर्के पापीग्रहों कर्केयुक्त होवें उतनेघर नाशकों प्राप्त बर्त्तेहैं ॥ ८२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें लग्न १ और त्रिकोण ९ । ५ और केंद्र १ । ४ । ७ । १० ॥ स्थानोंमें जितने ग्रह बली स्थित होवें उतने प्रमाणकर्के घरोंका सुख बुद्धिमान् कहे ८३ और चतुर्थभाव का स्वामी लग्नसें बाहरमें स्थान स्थित होवे तब पुरातन घरकों प्राप्त होताहै और त्रिकोण और कें

अयत्नतोमंदिरलाभदःस्याच्चतुर्थपस्तत्रबलाधिकोवा दुःस्थानगोदुष्टबलान्वित श्चेदालस्यगेहग्रहपीडितंवा ८१ षट्त्रिव्ययाष्टमोपेताव्ययवित्तगृहाधि पाः यावत्पापसमेपेतास्तावद्गृहविनाशदाः ॥ ८२ ॥ लग्नत्रिकोणकेंद्रस्थायावद्बलसमन्विताः ॥ तावत्संख्याकगेहानांसमीचीनंव देद्बुधः ८३ चतुर्थभावाधिपतौविलग्नाद्व्ययस्थितेजीर्णगृहंसमेति ॥ त्रिको णकेंद्रोपगतेबलाढ्येविचित्रगेहंरुचिरंतदाहुः ८४ तृतीयेसौम्यसंयुक्तेगेहेशे बलसंयुते ॥ गोपुराद्यंशकेवापिसमेतिदृढमंदिरम् ८५ आज्ञाश्रयात्क्षेत्र विनाशमाहूराज्ञेश्वरेगेहगतेसपापे ॥ क्रूरांशकेमृत्युकरादिभागेरंध्रेश्वरेणापि युतेतथैव ८६ तृतीयेसौम्यसंयुक्तेगेहेशेस्वबलान्विते ॥ लग्नेशेबलसंपूर्णेह र्म्यप्राकारसंयुतम् ८७ पारावतांशकेगेहनाथेगुर्विंदुवीक्षिते ॥

द्रमें बलकर्के युक्त स्थित होवे तब विचित्र सुंदर घरका सुख कहतेहैं ८४ और तीसरा भाव शुभग्रह कर्के युक्त होवे और चतुर्थभावका स्वामी बली होवे अथवा गोपुरादि अंशमें स्थित होवे सो दृढमं दिरकों प्राप्त होताहै ८५ और दशम भावमें पापी ग्रह कर्के युक्त दशमका स्वामी होवे अथवाच तुर्थ भावमें स्थित होवें और क्रूरषष्ट्यंशमें मृत्युकरादि भागोंमें और अष्टमेश कर्के युक्त होवें तब घरका विनाश कहतेहैं ८६ और जिसके जन्मकालमेंतीसरा भाव शुभग्रहकर्के युक्त होवे और चतुर्थेश बली होवे और लग्नका स्वामीपूर्णबली होवे तबबडेकोटोंकर्के युत हर्म्य महिलकों प्राप्त होताहै ८७ और जिसके जन्मकालमें चतुर्थभावकास्वामी बृहस्पति और चंद्रमा कर्के देख्याहोवे।

॥ अथवा गोपुरादि आश्रमें स्थित होवे तब देवताकी न्यांई घरको प्राप्त होताहै ॥
॥ ८८ ॥ अब चतुर्थेशके वाराभावोंमें फल जन्मप्रदीपसें कहतेहे चतुर्थका स्वामीलग्नमें
स्थित होवे तब पितापुत्र दोनों परस्पर प्रीतिवाले होतेहै ॥ और पितृपक्षमें वैर कर्ताहै और
पिताके नामसेंप्रसिद्ध होताहै ८९ और चतुर्थका स्वामी धन २ भावमें स्थित होवे जब क्रूर ग्रहहोवे
तब पितासें विरोधकर्ताहे और शुभग्रहहोवे तब पिताकेपालनेवाला और प्रसिद्धहोताहै और तिसके
धनको पिताभोगताहै ९० और चतुर्थकास्वामी तीसरेभावमें स्थितहोवे तब पिताकेविछेदकोकर्ताहै
और प्रसिद्धपितावालाहोताहै और पिताकेसाथलडाईकर्ताहै औरपिताकेबंधुयोंकोपालनेवालाहोताहै
९१ और चतुर्थका स्वामी चतुर्थभावमें स्थितहोवे तब राजाकेमानकोप्राप्तकर्ताहै और प्रसिद्ध होताहै

गोपुराद्यंशकेवापिदैवकंगृहमादिशेत् ८८ अथचतुर्थस्वामिफलंजन्मप्रदीपे ॥
तूर्य्यपतिर्लग्नगतःपितृपुत्रौस्नेहलौमिथःकुरुते पितृपक्षवैरकलितंपितृनाम्नासुप्र
सिद्धंच ८९ पातालपेधनस्थेक्रूरखगेपितृविरोधकृच्छुभे ॥ पितृपालकः
प्रसिद्धःपिताभुनक्तिश्चतल्लक्ष्मीम् ९० तूर्य्यशेसहजेचेत्पितृमातृछेदकंविदित
पितरम् पित्रासहकलहकरपितृबांधवपालकंपुरुषम् ९१ तूर्य्यगतेतूर्य्यपतौक्ष्मा
धिनाथश्चमानकरः ॥ विदितः पितृलाभपरोभवतिसुधर्मासुखीनिधिपः९२ ॥
सुतगेतूर्य्यगृहेशेपितासुलाभोंगजश्चदीर्घायुः भवतिक्षितिपप्रसिद्धःसुसुतःसुत
पालकःसोपि ९३ हिबुकपतौरिपुसंस्थेपितुरर्थविनाशकःपितरिवैरी पितृदो
पकरःक्रूरेसौम्येधनसंचकस्तनयः ९४ अंबुपतौसप्तमगेक्रूरेस्वसुरस्तुपानपाल
यति सौम्येपालयतिपुनःकुलटांतांकुजकवीकुरुतः ९५

और पिताके लाभको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठधर्मवाला और सुखी औरबडे धनका पति होताहै९२
और चतुर्थभावका स्वामी पंचमभावमें स्थितहोवे तब पिता श्रेष्ठलाभको प्राप्त होताहै और पुत्र व
डी आयुषवाला और राजाके प्रसिद्ध होताहै और श्रेष्ठपुत्रवाला और पुत्रके पालनेवाला होता
है९३ और चतुर्थका स्वामी छठे स्थानमें स्थितहोवे तब पिताको धनकानाश कर्ताहै औरपि
तासेवैरकर्ताहे और दोषकर्ताहै जब क्रूरग्रहहोवे तब और शुभग्रहहोवे तब धनसंचयकरणेवाला होता
है ९४ और चतुर्थका स्वामी सप्तमस्थानमें स्थितहोवे क्रूरग्रह तब तिसकी स्त्री तिसके पिताको क्ले
श देताहै और शुभग्रह होवे तब सेवाकरताहै और शुक्रमंगल होवें तब तिसकी स्त्री व्यभिचारिणी
होतीहै ९५

॥ और अष्टमस्थानमें चतुर्थकाक्रूरग्रह स्वामी होवे तब रोग कर्कयुक्त वा दरिद्रीकरताहै और खोटे कर्मकरणे वाला और शीघ्रमृत्युको कर्त्ताहै ९६ और नवम स्थानमें चतुर्थका स्वामी स्थित होवे तब पितासें भिन्न और संपूर्णविद्यावाला और पितृधर्मका संग्रहकरणेवाला और पिताकी अपेक्षासें रहित होताहै ९६ और चतुर्थका स्वामीदशमभावमें स्थितहोवे तब तिसपुत्रकी माताकों पिता त्याग कर्त्ताहै और दूसरी स्त्रीकों विवाहताहै और शुभग्रहहोवे तब तिसका त्याग नहिं कर्त्ताहै और दूसरीस्त्री कों सेवताहै ९७ और एकादश ११ भावमें चतुर्थका

छिद्रगतस्तूर्य्यपतिःक्रूरोरोगान्वितंदरिद्रंवा ॥ दुष्कर्मरतंमृत्युप्रियमथमानवं कुरुते ९६ सुकृतगतेतूर्य्यपतौपितर्य्यसंगीसमस्तविद्यावान् पितृधर्मसंग्रह परःपितृनिरपेक्षोभवेन्मनुजः ९६ पातालपेंवरगतेपापेसुतमातरंत्यजेज्जनकः सृजतेत्वन्यांदयितांसौम्येपुनरन्यसेवावान् ॥ ९७ ॥ एकादशगेतूर्य्याधिपतौ पितृलाभकःसुकर्माच पितृभक्तोभवतिसुतःप्रचुरायुर्व्याधिविकलश्च ॥ ९८ ॥ द्वादशगेतूर्यपतौमृतःपितावाविदेशगोवाच्यः पुत्रस्यपापखचरेत्वन्यपितुर्जन्मानिर्देश्यम् ९९ ॥ पराशरीये गेहाधिनाथेनयुतेतुगेहेदेहाधिपेनापिगृहाभिलब्धिःयुतेषडादौतुविपर्ययःस्याद्गृहाधिपेदेहपतौचतद्वत् १०० इतिचतुर्थ भावविचारः ४ ॥

स्वामी स्थितहोवे तब पितासें लाभवाला औरश्रेष्टकर्मोंवाला होताहै और पितरोंकाभक्त होताहै और बडी आयुषा वाला और व्याधि युक्त होताहै ९८ और बारहमे स्थानमे चतुर्थका स्वामीस्थित होवे तब तिसका पिता मृतहोवे वा विदेशमें रहे और पापी ग्रहका इह फलहै जो अन्यपिताका पुत्र होताहै अर्थात् जारजात होताहै९९ और पराशरीमें कहतेहै जिसके जन्मकालमें लग्नेश कर्कयुक्तचतुर्थभावहोवेअथवाचतुर्थकास्वामीचतुर्थभावमें स्थित होवे तब घरकेलाभको प्राप्तहोताहैऔर ६ ८।१२स्थानमें स्थित होवें तव घरका सुख नाहे होताहै १०० इतिचतुर्थभाव ४ ॥

अवपचमभावका विचार कहतेहैं तिसमें किसका विचारकरणा सो पारिजातसें कहतेहैं पंचमभा
सें देवताकी भक्ति और राजाका विचार और संतानका विचार और पिताका विचार और बुद्धिका
विचार और पुण्यकर्मका विचार करे और सप्तम और पचम और द्वितीय और दशम भावसें यात्रा
का विचार करे और दूरगमनकाविचार द्वादशभावसें करे और लग्नसें और चतुर्थभाव सें औरसूर्यसें
पिताके सुखका विचार करे और पुत्रकी प्राप्ति सप्तमेश और द्वितीयेश और शुक्रसें करे और स्त्री और
सपदाका चिंतनकरे १ और जिसकेजन्मसमयमें पचमभावमेंविषमराशिःस्थित होवे और सूर्य और
मगल और बृहस्पति करके देखी होवे तव पुरुष देवताकाआराधन कर्ताहै और पचमभावमें युग्मरा
शि चद्रमा और शुक्र करकेयुक्तदृष्टहोवे तवस्त्रीदेवताका आराधन कर्ताहै औरकहतेहैं सूर्यदेखे औरयुक्त
होवेतवसूर्य का मुख्य आराधन कर्ताहै और चंद्रमा शुक्रके योगकर्के पार्वतीकाआराधन
कर्ताहै और मंगलके योगसें स्वामिकार्त्तिकका आराधन कर्ताहै और बुधके योगसें विष्णुका और

अथपंचमभावविचारः तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तंजातकपारिजाते पुत्राद्देवमही
पपुत्रपितृधीपुण्यानिसंचिंतयेद्यात्रामस्तसुतस्वकर्मभवनैर्दूराटनंरि.फतः ल
ग्नाद्दधुदिनेशतःपितृसुखंजीवात्मजस्थानतःपुत्रप्राप्तिरनंगवित्तपसितैःस्त्रीसंप
दश्चिंतयेत् १ लग्नादात्मनिपुग्रहेक्षितयुतेपुंदेवताराधनंयुग्मेशुक्रनिशाकरे
क्षितयुतेस्त्रीदेवतामिच्छति भानोभास्करमुख्यमिंदुसितयोर्गौरींकुमारंकुजेविष्णुं
चंद्रसुतेगुरौशशिधरंशन्यादियोगेपरान् २ लग्नाधिपस्यात्मपतौसपत्नेतद्देवभ
क्तिःसुतनाशहेतुः समानतःसाम्यतरेसुहृत्वेतद्देवतापारकृपामुपैति ३ राजस्था
नेगुरुबुधसितैरीक्षितेसंयुतेवातद्राशीशेवलवतिनृपप्रीतिसंपत्तिमेति पापाक्रा
तेविगतबलिनिस्वामिनिक्रूरभागेजातोविद्याविनयगुणधीराजसन्मानहीनः ४

बृहस्पतिके योगसें शिवजीका और शनि राहु केतुके योगसें भूत पिशाचादियोंका आराधन कर्ता
है २ और जिसके जन्मकालमें लग्नका स्वामी और पंचमका स्वामी दोनों आपसमें शत्रु होवें
तव तिन्होंग्रहोंका यो अधिदेवताहै तिसकी भक्ति करणेसें पुत्रका नाश होताहै और लग्नेश और
पंचमेश यह दोनों समहोवें तव तिसदेवताका आराधन करणेसें शुभाशुभ फलकोई नहि होताहै
और परस्पर मित्र होवें तव तिसदेवताके आराधनसें परम कल्याणको प्राप्त होवाहे ३ और जिस
के जन्मकालमें दशमस्थान बृहस्पति और बुध शुक्र करके देख्या होवे वा युक्त होवे और तिस राशि
का स्वामी बलवान् होवे तव राजाकीकृपा और प्रीति और सपदाको प्राप्त होताहै
और पापी ग्रहकर्के युक्त और स्वामी निर्वल और क्रूरके नवांशमें स्थित होवे तव
विद्या और नम्रता और बुद्धि और राजासंमानकर्के रहित होताहै ४

और जिसके जन्ममें चतुर्थका स्वामी लग्नमें और लग्नका स्वामी चतुर्थमें स्थित होवें अथवा आपसमें, देखते होवें वायुक्त होवेंतवतिसकेचतुष्पदजन्मताहैऔरराहुकेतुकर्केयुक्तदृष्टहोवेंतववकराजन्मताहैऔरबृहस्पतिशुक्रचन्द्रमाकर्केयुक्तदृष्टहोवेतवगौजन्मतीहै औरशनिकर्केदृष्टयुक्तहोवेंतवमहिषी जन्मतीहै और लग्नपति दशममें होवे तव पैरोंसें जन्मताहै और लग्नपति लग्नमें स्थित होवे तव सर्प जन्मताहै ५ और जिसके जन्मसमयमें दूसरे और सप्तम स्थानमें और पंचम और चतुर्थ केस्वामी पापग्रहोंकर्के दृष्ट अथवा पापग्रहोंकर्के युक्त होवें और पुरुषग्रहोंके द्रेष्काणमें पुरुषग्रह होवें तव वांदर सूर बिडालसे लेकर्के जन्मतेहैं ६ अववृहज्जातकसेंकहतेहैं जन्मलग्नसेंपचम सप्तम स्थानमेंशुभग्रहहोवें और स्वामी युक्त होवें वा देखते होवें अथवा चद्रमासें इसी प्रकारकर्केहोवें तव पुत्र और स्त्रीका सुख होता

लग्नेयानपतौसुखेतनुपतौदृष्टेथवाखेचरैः संयुक्तेतुचतुष्पदस्यजननंराहुध्वजाभ्यामजः गोजन्मार्यसितेंदुभिश्चमहिषीमंदेनदृष्टेयुतेजातःपादपुरःसरंतनुपतिर्मानितनौभोगिराट् ५ वित्तास्तगौपंचमयाननाथौपापेक्षितौपापसमन्वितौवा पुंसस्त्रिभागेपुरुषग्रहेंद्रेजाताःकपिक्रोडविडालकाद्याः ६ होरायां लग्नात्पुत्रकलत्रभेशुभपतिप्राप्तेथवालोकिते चंद्राद्वायदिसंपदस्तिहितयोर्ज्ञेयोन्यथासंभवः पाथेनोदयगेरवौरविसुतेमीनस्थितेदारहा पुत्रस्थानगतश्चपुत्रमरणंपुत्रोवनेयच्छति ७ पुत्रस्थानपतौतुवानवमपेलग्नात्कलत्रेथवा युग्मर्क्षेशशिशुक्रवीक्षितयुतेपुत्रीजनोजायते पुंवर्गेपुरुषग्रहेक्षितयुतेजातस्तुपुत्राधिको जीवात्पंचमराशितश्चतनयप्राप्तिंवदेद्देशिकः ८ शुक्रेंदुवर्गेसुतभेविलग्नाच्छुक्रेणचंद्रेणयुतेथदृष्टे पापैरयुक्ते बहुपुत्रशालीशन्यारदृष्टेसतिपुत्रहीनः ९

है और लग्नसें और चंद्रमासें सप्तम पंचम भाव शुभ स्वामीकर्के युक्त दृष्ट नहि होवें तव स्त्री पुत्रका संभव नहिहोताहै और कन्याराशिमें लग्नगतसूर्यहोवे और मीनराशिमें शनि स्थित होवे तव स्त्रीका हतकर्ताहै और पंचम स्थानमें भौमास्थित होवे तव पुत्रकों हतकर्ताहै ७ और पचम कास्वामी वा नवमका स्वामी लग्नसेंसप्तमस्थानमें वायुग्म राशिमें चंद्रमाशुक्रकर्के दृष्ट युक्त होवें तव कन्या जन्मतिपाहैं और पुरुष ग्रहके वर्गमें और पुरुष ग्रहके देखनें सें वा योगसें वहुत पुत्रों वाला होताहै और बृहस्पतिसें पंचमराशि येहि तिसतें पुत्रप्राप्तिःकहे८ और जिसकेजन्मलग्नसे पंचमराशि शुक्र औरचंद्रमाके वर्गमें स्थित होवे अथवा शुक्र चंद्रमाकर्के युक्त दृष्ट होवे और पापग्रहकर्के नहि युक्तहोवेतव वहुत पुत्रोंवाला होताहै और शनिमंगल कर्के देखीहोवे तव पुत्रहीन होताहै ९

औरजिसकेजन्मसमयमेंपुत्रभावसेंसप्तमराशिमेंऔरनवांशमेंअर्थात् ११ स्थानमेंपंचमेशहोवेऔरशुभ
ग्रहकर्केयुक्तदृष्टहोवेअथवाकेंद्रत्रिकोणनेंहोवेतवपुत्रकीप्राप्ति होतीहै और पंचमकास्वामी अपनी राशि
में होवे तव थोडे पुत्रोंवाला होताहै और पचमेशके नवांशकास्वामी अपनी राशिमें वा अपने नवां
शमें स्थित होवे तव एक पुत्रवाला होताहै १० और जिसके जन्मकालमें सप्तमकास्वामी पंचमभा
वमे स्थित होवे सो पुत्रहीन अथवा स्त्री रहित होताहै और पचमभावमें छठे अष्टमें वारहमें स्थानमें
पापीग्रह होवें तव कुलकानाशकर्त्ताहैंऔर पंचमराशिमें राहुवाराहुकी राशिकास्वामी ६ ८ १२ स्थानमें
स्थितहोवेतवपुत्रकों हतकर्त्ताहै औरलग्नेशपचमस्थानमेंऔरपचमेश लग्नमें स्थितहोवे तवदत्तपुत्रकोंग्रहण

पुत्रप्राप्तिरनंगभेसुतगृहात्सौम्यस्यराश्यंशकेतन्नाथेशुभखेटवीक्षितयुतेकेंद्रत्रि
कोणेथवा स्वक्षेत्रोपगतेतुपुत्रगृहपेजातोल्पपुत्रोभवेत् पुत्रेशांशपतिःस्वभांश
कगतोयद्येकपुत्रंवदेत् १० पुत्रस्थेमदनाधिपेवितनयोजायाविहीनोथवापुत्रा
द्दष्ठमशत्रुरि :फगृहगाःपापाःकुलध्वंसकाःराहुर्नंदनराशिगस्तदधिपेदुः स्था
नगेपुत्रहापुत्रस्थेतनुपतनौसुतपतौगृण्हातिदत्तात्मजम् ११
तद्भावरा-
दुःस्थौविलग्नसुतपौसमुपेतिपुत्रंदत्तात्मजंचशुभखेचरवीक्षितौचेत् ॥
शियुतकारकवर्गमूलात्गृण्हातिदत्ततनयंपरतस्तुखेटात् १२ केंद्रत्रिकोण .
गृहगःसुतपःशुभर्क्षेसौम्यान्वितोयदिसुतंसमुपेतिवाल्ये ॥ भोगीशयुक्तसुतरा
शिपभुक्तिजातःस्वल्पायुरेतिफणिभुक्तिभवश्चिरायुः १३

कर्त्ताहै११और जिसके जन्मसमयमेंलग्नऔरपंचमभावकेस्वामीदोनोंदुःस्थानमें ६ ८ १२ स्थितहोवें-
और शुभग्रहकर्के देखे होवें तव दत्तक पुत्रकोंप्राप्तहोताहै और पचमभावमेंजो राशितिसको कारक
मो ग्रह जिसजातीका होवें वा जैसासवधी होवे तिसकर्के दत्तपुत्रकोंग्रहणकर्त्ताहै१२ और जिसकेज
न्मसमयमें पचमघरकास्वामी केंद्र १ ४ ७ १० त्रिकोण ९ ५ स्थानमें स्थित शुभग्रहकी राशिमें-
होवेऔरशुभग्रहकर्केयुक्तहोवे सो वाल्यावस्थामेंपुत्रको प्राप्तहोताहैऔरजिसराशिमेंराहुस्थित होवे
तिसके स्वामीकी दशातर्दशामें जन्मे तव थोडी आयुषावाला होताहै और राहुकीदशांतर्द
शामें जन्मे तव वडीआयुषावालाहोताहै१३

और पंचम भावका स्वामीऔरदूसरे भावका स्वामीदोनों वलहीन होवें और पंचमराशियोंमें पापीग्रहदेखता होवे सो अनेक स्त्रीयों वाला वी मनुष्यनिश्चयकर्के पुत्रकों नहि प्राप्तहोताहे और यद तिसकी स्त्री पुत्रप्राप्तियोगमें जन्मीहोवे अथवाशुभग्रह पंचममेंस्थित छठे भावके स्वामी कर्के देख्या होवे तव जारकर्केपुत्र जन्मतीहै ॥ १४ ॥ और जिसके जन्मसमयमें पचमभाव और पचमभावका स्वामी वा वृहस्पती शुभग्रहकर्के दख्याहोवे और युक्त होवे तव पुत्रकोंप्राप्तहोताहै इसमें सशय नहिहै १५ औरलग्नेश पंचमभावमेंस्थित होवे और पंचमका स्वामीवली होवे और वृहस्पती पूर्णवली होवे तव पुत्रप्राप्तिमें संशय नहिहै १६ और पचमस्थानमें पूर्णव-

पुत्रस्थानपवित्तपोगतवलोपापेक्षिते पुत्रमेंजातोनेककलत्रवानपिसुताभावसमेतिध्रुवमतज्जायायदिपुत्रयोगजनितासौम्येनवापचमेषष्ठेशनानिरीक्षितेसुतवतीजारेणसजायते१४ पुत्रस्थानेतदीशेवागुरौवाशुभवीक्षितेशुभग्रहेणसंयुक्ते पुत्रप्राप्तिर्नसशयः१५ लग्नेशेपुत्रभावस्थेपुत्रेशेवलसंयुते परिपूर्णवलेजीवेपुत्रप्राप्तिर्नसंशयः १६ पुत्रस्थानगतेजीवेपरिपूर्णवलान्विते ॥ लग्नाधिपेनसदृष्टेपुत्रप्राप्तिर्नसंशयः १७ वैशेषिकांशकेजीवेपुत्रेशेचतथास्थिते ॥ शुभनाथेनसदृष्टेपुत्रेतत्प्राप्तिमादिशेत् १८ दशमेशीतगुर्धूनेभृगुजःपापिन सुखे ॥ तस्यसंततिविच्छेदोभविष्यतिनसशय१९ षष्ठाष्टमस्थोलग्नेश.पापयुक्त.सुताधिपः ॥ दृष्टोवाशत्रुनीचस्थैःपुत्रहानिंवदेद्बुधः ॥ २० ॥

ली वृहस्पती होवे और लग्नेश कर्के देख्या होवें तव पुत्रप्राप्तिमें संशयननहिहै १७ और वैशेषिकांशमें वृहस्पति और पुत्रभाव ५ कास्वामीस्थित होवें और नवमभावके स्वामी कर्के दखे होवें और पंचमभावमेंस्थित होवें तव पुत्रकी प्राप्ति होतीहै १८ और दशमस्थानमें चद्रमा और सप्तममें शुक्र और चतुर्थभावमें पापीग्रह होवें तिसकोसतानका विछेद होजाताहे आगे नहि चलती इसमें संशय नहिहै १९ और जिसके जन्मसमयमें छठे और आठमें स्थानमेंलग्नका स्वामी होवे और पंचमेश पापीग्रह कर्के युक्त हावे अथवा शत्रु नीचस्थ ग्रहोंकर्के देख्या होवें तव पुत्रकोहानि- होतीहै ॥ २०

श्रीर जिसके जन्मसमयमें लग्न ॥ सप्तम ॥ नवम ॥ द्वादश स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित होवें श्रीर शत्रुकी राशिमें श्रीर शत्रुके वर्गमें स्थितहोवें तब वंशका नाशकर्त्ताहै २१ श्रीर-सुतान की इच्छावाला इतनीयोस्त्रीयोंकात्यागकरे वंध्या १ वृद्धा २ श्रीर अत्यंतकृश श्रंगों वाली ३ श्रौर युवावस्थाकोजो नहिंप्राप्त ४ श्रीर रोगिणी ५ श्रीर पुष्पसे रहित ६ श्रीर विवाहवाला ७ श्रीर अत्यंतस्थूलदेहवाली ८ इन्हीं आठस्त्रीयोंकात्यागकरे ॥ २२ ॥ श्रीर वृहस्पति श्रीर लग्नेश श्रीर सप्तमेश श्रीर पंचमेश इन्होंके निर्बल होयाअनपत्य योग कहे २३, श्रीर पंचमस्थानमें पापीग्रहस्थित होवे श्रीर पचमेश नीचराशिमें स्थित होवे श्रीर शुभदृष्टिसे रहितहोवे तब अनपत्ययोग कहे २४ श्रीर वृहस्पति श्रीर लग्न श्रीर चंद्रमा इन्हसे पचमभावमें- पापीग्रह होवें श्रीर शुभदृष्टि श्रीर शुभयोगसे रहित होवें तब अनपत्यताहोतीहै २५ श्रीर पंचम स्थान

लग्नसप्तमधर्मांत्यराशिगा·पापखेचराः ॥ सपत्नराशिवर्गस्थावंशविच्छेदकारिण· २१ वंध्यावृद्धकृशावालारोगिणीपुष्पवर्जिता ॥ कर्कशास्थूलदेहाचनार्योष्टौपरिवर्जिताः २२ गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषुच ॥ सर्वेषुबलहीनेषुवक्तव्यात्वनपत्यता २३ पुत्रस्थानगतेपापेतदीशेनीचराशिगे ॥ शुभदृष्टिविहीनेतुवक्तव्यात्वनपत्यता २४ गुरुलग्नहिमांशूनांपंचमस्थैरशोभनैः॥ शुभदृग्योगरहितैर्वक्तव्यात्वनपत्यता २५ पुत्रस्थानगतेपापेतदीशेपापमध्यगे ॥ सौम्यदृग्योगरहितेवक्तव्यात्वनपत्यता २६ पापमध्यगतेजीवेपुत्रेबलविर्जिते ॥ सौम्यदृग्योगरहितेवक्तव्यात्वनपत्यता २७ पुत्रस्थानेवुधक्षेत्रेमंदक्षेत्रेथवायदि ॥ मांदिमंदयुतेदृष्टेतदादत्तादय·सुताः २८ मीनस्थोत्वल्पसंतानश्चापस्थ कृच्छ्रसंतति· ॥ असंतति कुलीरस्थोजीव·कुंभेनसंतति· २९ पुत्रस्थानेकुलीरेवामीनेकुंभेशरासने ॥ स्थितोयदिसुराचार्यस्तत्फलंकुरुतेनृणां ३०

मेंपापीग्रह होवे श्रीर पचमेश पापग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे श्रीर शुभग्रहकी दृष्टि श्रीर योगसे रहित होवे तब अनपत्यता होतीहै २६ श्रीर पापी ग्रहोंके मध्यमें वृहस्पति होवे श्रीर पचमेश बलहीन होवे श्रीर शुभग्रहकी दृष्टि श्रीर योगसे रहित होवे तबअनपत्यता कहे २७ श्रीर पचमस्थानमें मिथुनकन्या मकर कुंभराशि होवे श्रीर शनि श्रीर गुलिक श्रीर राहुकरके युक्त होवे तब दत्तकादि पुत्र होतेहै २८ श्रीर वृहस्पति मीनराशिमेंस्थितहोवे तब थोडि सतान होतीहै श्रीर धनूराशिमहोवे तब क्लेश युक्त संतान होतीहैश्रीर कर्कटराशिमेंहोवे तब नहिं सतान होतीहैश्रीर कुंभमें वृहस्पति होवे तब भी नहिं संतानहोतीहै २९ श्रीर कहतेहैंपंचम स्थानमें कर्कट वा मीन वा कुंभ वा धनू राशिमें वृहस्पति स्थित होवे तब पूर्वोक्त फलमनुष्योंको करैहै ३०

श्रौर वृहस्पति पापग्रहकर्के देखाहोवे तव देवताकेशापसें पुत्रका क्षयहोताहै श्रौर छठेभावके स्वामी कर्के युक्तदृष्ट होवेतब ब्राह्मणके शापसें पुत्रक्षयहोताहै ३१ श्रौर पंचमेशमंगलकर्के युक्त होवे श्रौर छठेभावकेस्वामीकर्केदेख्या होवेश्रौरशुभग्रहकोदृष्टिसेंरहितहोवेतवशत्रुकेदोषसें पुत्रकाक्षय होताहै ३२ श्रौर जिसके जन्मसमयमें नवमस्थान पापीग्रह कर्के युक्त होवे श्रौर पंचमेश शनिकर्के युक्त होवे श्रौर नवम पचमस्थान गुलिक कर्के युक्त होवे तव पितरोंके दोषसेंपुत्रका क्षय होताहै ३३ श्रौर च तुर्थस्थानमें पापीग्रह होवे श्रौर पचमेश शनिकर्के युक्त होवे श्रौर द्वादश श्रौर अष्टम स्थानमें पा पीग्रह होवे तव मातृदोषसें पुत्रका क्षय होताहै ३४ श्रौर पंचमस्थानमें राशि वा पंचमका स्वामी व लसें रहित राहु श्रौर केतुकर्के युक्त श्रौर दृष्ट होवें तव सर्पके दोषसें पुत्रका क्षय होताहै ३५ श्रौर

पापग्रहेणसंदृष्टेदेवशापात्सुतक्षयः ॥ षष्ठाधिपयुतेदृष्टेविप्रशापात्सुतक्षयः ३१
सुतेशेकुजसंयुक्तेरिपुनाथेनवीक्षिते ॥ शुभदृष्टिविहीनेचरिपुदोषात्सुतक्षयः ३२ ॥
नवमेपापसंयुक्तेमंदयुक्तेसुताधिपे त्रिकोणेमांदिसंयुक्तेपितृदोषात्सुतक्षयः ३३
मातृस्थानगतेपापेसुतेशेमंदसंयुते, व्ययनाशगतेपापेमातृदोषात्सुतक्षयः ३४
राहुकेतुयुतेदृष्टेपंचमेबलवर्जिते तदीशेवातथाप्राप्तेसर्पदोषात्सुतक्षयः ३५ गुरु
पुत्रेशदारेशैर्भूमिगःसंयुतोयदि दुर्दैवपीडयापुत्रपुत्रीनाशंवदेद्बुधः३६ पुत्रस्थान
गतःकश्चित्परिपूर्णबलान्वितः अदृष्टःपुत्रनाथश्चेत्तदादत्तादयःसुताः ३७ पाप
क्षेत्रगतेचंद्रेपुत्रेशेधर्मराशिगेदत्तपुत्रस्यसंप्राप्तिर्लग्नेशस्तत्त्रिकोणगः३८ युग्मो
दयेपुत्रनाथश्चतुर्थस्थानगोथवा मदांशकसमारूढेदत्तपुत्रोभविष्यति ३९ यु
ग्मांशभानुजांशेवापुत्रेशोर्केंदुजान्वितेः दत्तपुत्रस्यसंप्राप्तिस्तस्मिन्योगेभविष्य
ति ४०

जिसके जन्मकालमें वृहस्पति श्रौर पचमेश श्रौर सप्तमेशकर्के मंगल युक्त होवे तब दुर्दैवताकी पी डाकर्के पुत्र कन्या नाशको प्राप्त होतेहैं ३६ श्रौर पुत्रस्थानमें कोई ग्रह बलीहोयकर्के स्थित होवे श्रौर पंचमेश तिसकर्के नहिं देख्या होवे तब दत्तादिक पुत्र होतेहैं ३७ श्रौर जिसके जन्मकालमें पापीग्रहकी राशिमें चंद्रमा स्थित होवे श्रौर पचमेश नवम स्थानमें होवे श्रौर तिसके त्रिकोण ९।५ स्थानमें लग्नेश होवे तव दत्तपुत्रकी प्राप्ति होतीहै ३८ श्रौर युग्मलग्नमें समलग्नमें पचमेश स्थित हो वे अथवा चतुर्थस्थानमें स्थित होवे श्रौर शनिके नवांशमें होवे तव तिसके दत्तक पुत्र होताहै ३९ श्रौर समराशिके वा शनीके नवांशमें पंचमघरका स्वामी सूर्य चंद्रमाकर्के युक्त होवे तव तिसयो गमें दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होतीहै ४०

श्रौर जिसके जन्मकालमें शनीके नवांशमें पंचमेश स्थित होवे श्रौर बृहस्पति श्रौर शुक्र अपनी राशिमें स्थित होवें तब प्रथम दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होतीहै श्रौर पी छेसे अपनी स्त्री करके पुत्र होताहै ४१ श्रौर जिसके जन्मसकालमें शनिके नवाशमें ग्रह स्थित होवें श्रौर शुक्लपक्षमें अधिकबली होवें श्रौर बृहस्पतियदचतुर्थस्थानमें स्थित होवे तव दत्तक पुत्र करके संतान वाला होताहै ४२ श्रौर मंगल लग्नमें स्थित होवे श्रौर सूर्य अष्टममें स्थित होवें श्रौर चतुर्थमें शुभग्रहकी दृष्टि होवे तव चिरकालमें पुत्र होताहै ४३ श्रौर लग्नमें शनिहोवे श्रौर अष्टममें गुरुहोवे श्रौर पंचमभाव निर्बल होवे श्रौर बाहरमें मंगलहोवे तव कालांतरमें पुत्रहोताहै ४४ श्रौरकहतेहैं पंचभावसें पुत्रोंकों देखे श्रौर तीसरे भावसें भाईयोंकों देखे श्रौर सप्तमभावसें स्त्रीयोंकों

मंदांशेपुत्रराशीशःस्वराशौगुरुभार्गवौ । पूर्वंदत्तसुतप्राप्तिःपुनर्नार्याःपुनःसुतः ४१ मंदांशकास्थिताःखेटाःशुक्लपक्षवलाधिकाःगुरुर्यदिसुखस्थानेदत्तपुत्रेणसंत तिः४२विलग्नस्थेधरासूनौनिधनस्थेदिवाकरे सुखेवाशुभसंदृष्टेपुत्रःकालांतरेभ वेत् ४३ लग्नेदिनेशतनयेरंध्रस्थानगतेगुरौपंचमेदुर्बलेरिःफेभौमेकालांतरेसुतः ४४ पुत्रान्पंचमभात्तृतीयभवनात्भ्रातॄनकलत्रात्स्त्रियोदासीश्चक्षितिराशितःस्व भवनाद्दासांश्चमित्राणिच ॥ यावांश्चैवनवांशकान्शुभदृशाहत्वात्थारोपयि योगव्योमचरैर्विभज्यतुतथाभूताश्चपुत्रादयः ४५ पुत्रसोदरभंकलत्रमुदयं यानंचराशिंविनाताल्लिप्ताःशुभखेटदृग्बलहताःषष्ठ्याविभक्ताःक्रमात् ॥ व्यो माकाशकराक्षपुत्रसहजस्त्रीदासदासीसुहृत्संख्याःपापनभोगदृग्बलभवाःपुत्रा दिनाशप्रदाः ४६

देखे श्रौर चतुर्थभावसें दासीयोंकों श्रौर लग्नसेंदासोंकों श्रौरमित्रोंकों विचारेइन्होंपूर्वोक्तभावोंमें जि तने नवांश भुक्तहोवें तिनकों शुभग्रहकी दृष्टिकर्के गुणदेवे श्रौर भिन्न स्थापनकरे श्रौर संपूर्ण योग कारक ग्रहोंकोदृष्टिके योगसें भागलेवे जो लब्धआवे उतने पुत्रादिक तिसके होतेहैं ४५ श्रौर कहतेहे पंचम श्रौर तृतीय भाव श्रौर सप्तम श्रौर लग्न श्रौर चतुर्थ भाव इन्होंकियां राशियोंकों त्यागकर्के अंशादियोंकिया कला बनावे श्रौर तिन्होंकों शुभग्रहके दृग्बलकर्के गुणे श्रौर साठ ६० सें भागलेवेफेरक्रमसें एक १ पाच ५ एक १ पांच ५ एक १ दो २ सें भागकर्के पुत्र १ भ्राता २ स्त्री ३ दास ४ दासी ५ मित्र ६ कीसंख्या कर्के तिन्हका सुखकहे श्रौर पापी ग्रहोंके दृग्बलसें गुणे पीछे जो संख्या होवे उतने पुत्रादि नाशकों प्राप्त होतेहैं ४६

और कहतेहैं पंचमेश और लग्नेशस्पष्टकायोग राश्यंशादि तिसकेनवम १ पचम५स्थानमें योराशि तिसमेंजवगोचरकके वृहस्पति आवे तव पुत्रकीप्राप्तिहोतीहै और वृहस्पति शुक्र और सूर्य चद्रमाके स्पष्टका योग राशिके जितने नवांश गत होवें उतनेपुत्रकहे और पंचमनवम दशम एकादश भावमें जितने नवांशगत होवें उतने पुत्रकहे और पंचम नवम चतुर्थमें स्थित यो ग्रह स्पष्ट तिनकों एकत्र कर्के द्वादशका भागदिये पीछे जो राशी रहे तिस राशीमें गतनवांश तुल्य पुत्र कहे ४७ और कहतेहैं वृहस्पतिसें और चद्रमासें और लग्नसें यो पचमस्थानहै सो पुत्रके देने वालाहै और तिससें जो नवमस्थान तिसके स्वामीकी दशातर्दशा कालमें पुत्रकी प्राप्ति कहे और पचमेश और सप्तमेश स्पष्टका योग करे और तिसराशिमें युक्त यो ग्रह और देखता यो ग्रह होवे

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुतेराश्यंशकोणेगुरोपुत्राप्तिःसचिवेंद्विनस्फुटयुतेराश्यंशसख्याःसुताः ॥ धींधर्मावनिनायकस्फुटचयप्राप्तांशसंख्याथवाधीं धर्मक्षितिगःस्फुटैक्यभवनेयातांशतुल्याःसुताः ॥ ४७ ॥ जीवाच्चंद्रमसोविलग्नभवनात्पुत्रप्रदंपंचमंतस्माद्धर्मगृहचतत्पतिदशाभुक्तौसुताप्तिंवदेत् ॥ पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुतेयत्तारकातद्दशातत्खेटान्वितवीक्षकग्रहदशाभुक्तिश्चपुत्रप्रदा ४८ पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुताद्दुःस्थानपादुर्बलाद्दुस्थास्तत्परिपाकभुक्तिसमयेपुत्रस्यनाशंवदेत् ॥ चत्वारोवलशालिनोयदिशुभास्तत्पाकभुक्त्यतरेपुत्राप्तिंसुतसपदःप्रभुजनप्रीतिंचकुर्वंतिते ४९ पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणांतत्कालजस्फुटयुतांशकराशियातोवागीशभानुतनयौयदिगोचरेण जातस्यपुत्रजनमृत्युकरौभवेताम् ५०

तिसकी दशातर्दशामें पुत्रकी प्राप्ति कहे ४८ और पचमस्थान और पंचमका कारक और पचममेंस्थित ग्रह और पंचमको देखनेवाला ग्रह ६।८।१२ स्थानका स्वामी होवे और बल हीन होवे तब तिसकी दशार्दशा कालमें पुत्रका विनाश कहे और जिसके जन्ममें चारहि पचमेशसें लकर्के बली होवें और शुभग्रहहोवें तिनकी दशातर्दशामे पुत्रको प्राप्ति और संपदा और राजासें प्रीति होतीहै ४९ और पंचमेश और पंचमका कारक और पचममें युक्त और पचमको देखने वाला इन्हों चार ग्रहोंकोस्पष्ट कर्के योग करेफेर द्वादश तष्टत कर्के शेषजो राशि तिसराशिके नवांशमें वा तिस राशिमें वृहस्पति और शनि जब गोचर कर्के स्थित होवें तब पुत्रको मृत्युभय करतेहैं ५०

और दशमभावका स्वामी शुभग्रह होवे और दशम भावका कारक शुभ ग्रह करके युक्त होवे अथवा दशम भाव शुभग्रह करके युक्त होवे तब पिताका सुख बुद्धिमान् कहे ५१ और दशमका स्वामी पारावतादि षड्वर्गमें स्थित होवे और तैसेहि दशमका कारक होवे अथवा अपने उच्चमें वा मित्रके नवांशमें स्थित होवे तब पिताकी बडी आयुषा कहे ॥ ५२ और दशमेश और दशमका कारका क्रूरके वा नीचके नवांशमें स्थित होवे और शनि गुलिक राहु करके युक्त होवे तब पिताको दुःख कहे ५३ और दशमका स्वामी शुभग्रह होवे और नीच और अस्त और शत्रुकी राशिमे स्थित होवे अथवा क्रूरषष्ट्यंशमें होवे तब पिताका दुःख कहे ५४ और पिताके दशम स्थानमें जो-राशि तिसमें जो जन्मताहै सो पिताके समान गुणों वाला होताहै और पिताके जन्मलग्नसे तीसरी राशिमें यो जन्मताहै सो पिताके वश्य होताहै ५५ और पिताके लग्नसे छठे आठमें लग्नमें जन्मता

पितृस्थानेश्वरेसौम्येकारकेशुभसंयुते ॥ भावेवाशुभसंयुक्तेपितृसौख्यंविनिर्दिशेत् ५१ पारावतादौतन्नाथेकारकेचतथास्थिते ॥ स्वोच्चमित्रांशकेवापि पितृदीर्घायुरादिशेत् ५२ क्रूरनीचांशकस्थेवाभावनाथेचकारके ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्तेपितृदुःखंविनिर्दिशेत् ५३ सौम्येतदीश्वरेवापिनीचमूढारिराशिगे ॥ क्रूरषष्ठ्यंशकेवापिपितृदुःखंविनिर्दिशेत् ५४ पितृकर्मगृहेजातःपितृतुल्यगुणान्वितः ॥ पितृजन्मतृतीयर्क्षेजातःपितृवशानुगः ५५ पितृषष्ठाष्टमेजातः पितृशत्रुर्भविष्यति तद्भावपेविलग्नस्थेपितृश्रेष्ठोभवेत्सुतः ५६ लग्नादायतपस्थिताः शनिमहीपुत्रागवोमृत्युदास्तातस्यार्कजभूसुतौनिधनदौबालस्य रंध्रास्तगौ मानेत्रायदिपंचमेकुजरविछायाकुमारेंदवे सद्योमातुलताबालजनीनाशप्रकुर्वंतिते ५७ सबलेपितृभावेशेलग्नेशेंदुचतुर्थपाः ॥ दुर्बलायदितन्मातुर्गर्भतोमरणंविदुः ५८

है सो पिताका शत्रु होताहै और पिताके जन्मलग्नमे जन्मे तब पितासे श्रेष्ठ होताहै ५६ और जिसके जन्मसमयमें एकादश और नवमस्थानमें शनि मंगल राहु स्थित होवें तब पिताको मृत्यु करतेहैं और जिसके जन्मलग्नमें शनि मंगल दोनों सप्तम अष्टम स्थानमें स्थितहोवें तब बालककों मृत्यु करतेहैं और जिसके दशम और पंचम भावमें मंगल सूर्य शनि बुध चंद्रमा स्थित होवें तब क्रमसें मातुलादि सबंधियोंकों हत करतेहैं जैसे दशम पंचम स्थानमें मंगल होवे तब मामेकों हत कर्ताहै और सूर्य पिताकों हत कर्ताहै और शनि बालककों हत कर्ताहै और चंद्रमा माताकों हत कर्ताहै ॥ ५७ ॥ और जिसके जन्मसमयमें दशमेश बली होवे और लग्नेश चंद्रमा चतुर्थभाव का स्वामी इहे तीनों निर्बल होवें तब तिसकी माता गर्भसें मरतीहै ॥ ५८

और जिसकेजन्मसमयमें नवमसेंअष्टमकास्वामीअथवा छठेकास्वामी शनिकेवेधोंककेंविद्ध होवे सो पिताकी मृत्युकर्त्ताहै ५९ और जिसराशिऔरनवांशमेंसूर्यस्थितहोवेतिनमेंयोवलीग्रहतिससें जब नवम पंचम सूर्य स्थित होवे तव पिताका मरण कहे और चंद्रमाकी राशि और नवांशके वलसें माताका मरणकहै६० औरजन्मकालमेंजिसराशिमेंसूर्यस्थित होवेवासूर्यकेआरूढनवांशऔरद्वादशांशमें जोराशि है तिन्हमें जब चंद्रमा प्राप्त होवे तव यथाक्रमकर्के माता और पिताका मरणहोताहै ६१ और ६ ८ १२ स्थानमें सूर्य सिंह मीनकेद्वादशांशमें स्थित होवे तव जन्मसें प्रथमहि पिताकोंमृत्यु करताहै ६२ और स्पष्ट गुलिकसेंस्पष्ट सूर्यकों घटए पीछे यो राशि रहे तिस राशिके नवम ९ पंचम स्था

नवमादष्टमाधीशोनवमात्षष्ठपोथवा शनिवेधेयुयः क्रूरःसभवेत्पितृमृत्युदः ५९ दिनेशस्थितराश्यंशप्राणितःकोणगेरवौ पितृमृत्युर्मातृमृत्युरिंदुस्थांशर्क्षयोर्बलात् ६० भानुस्थितांशवारूढनवांशद्वादशांशभम् गतेचंद्रेभवेन्मृत्युर्मातापित्रोर्यथाक्रमम् ६१ दुष्टस्थानगतेभानौसिंहांत्यद्वादशांशके जातश्चेज्जननात्पूर्वंपितृमृत्युः प्रयच्छति ६२ मार्त्तंडगुलिकस्फुटादपहृतेराशित्रिकोणेशनौरोगंतज्जनकस्यदेवसचिवेमृत्युस्तदंशोपगे ॥ आदित्येयमघंटकस्फुटयुतेतद्राशिकोणेगुरौरोगंतद्भवनांशकेमरगुरौतातस्यनाशंवदेत् ६३ केंद्रेचरर्क्षेचंद्रेवापितरौनदहेत्सुतः केंद्रेद्विदेहगौतौचेन्मृतिदाहौद्विकालगौ ६४ अदृश्यंयातौपितृमातृनाथौपित्रोर्मुखादर्शनदौभवेताम् पुत्राधिपोदृश्यगृहोपगश्चेत्पुत्राननादर्शनदोंत्यकाले ६५

नमें जब शनि आवे अथवा बृहस्पति आवे अथवा तिसनवांशमें आवे तव पिता मृत्युकों प्राप्त होताहै और स्पष्ट सूर्य में स्पष्ट यमघटका योग करे और तिसराशिमें वा नवांशमें बृहस्पति आवे तव पिताकों रोग और मरण होताहै ६३ और केंद्रस्थानमें सूर्य वा चंद्रमा चर राशिमें स्थित होवें तव पिता माताको पुत्र अपने हाथकर्के दग्ध नहिं कर्ताहै और केंद्रमें सूर्य चंद्रमा द्विस्वभाव राशिमें स्थित होवें तव दोवारकर्के मृत्युदाह होताहै ६४ और जिसके जन्मकालमें दशमेश और चतुर्थेश अदृश्य नवांशमें स्थित होवे सो पिता माताके अंत्य कालमें मुख नहिं देखताहै और पंचम भावका स्वामी अदृश्य राशिमें होवे तव अंत्य कालमें पुत्रका मुख नहि देखताहै ६५

श्री/ जिसकेजन्मसमयमें पचमेश६।८ १२स्थानमें स्थित होवेवा अदृश्य भागमे स्थित होवे तव
वडोमंद वुद्धिकों प्राप्तहोताहै औरजिसके जन्मकालमें केंद्र १। ४। ७। १० कोणे ९॥५ स्था
नमें शुभग्रह वृहस्पतिकर्केयुक्त होवे और वली होवे तव वुद्धिमान् शास्त्रके जाननेवाला होत
हे ६६ और जिसकेजन्मकालमेंवृहस्पति मृदुषष्ट्यशमें स्थितहोवे सो त्रिकालज्ञभूतभाविष्य वर्त्त
मानकेजाननेवालाहोताहे अथवा गोपुरादिअशमें और शुभग्रहकेनवाशमेंशुभग्रहकर्के देख्या हो
वे तव त्रिकालज्ञ होताहै ६७ पचम स्थनमें पापीग्रह होवे तव हृदयककेंरोगी होताहै और
चतुर्थ स्थानमें क्रूर षष्ट्यंशमें केंद्र गत मगल होवे तव हृद्रोगी होताहै ६८ और पंचमका
स्वामि शुभग्रहके नवांशमें स्थित होवे सो नित्य प्रतिअन्नदान कर्ताहै और शुभग्रहकर्के युक्त

दुःस्थेवुद्धिस्थानपेदृश्यगेवाजातोमंदप्रायवुद्धिंसमेति केंद्रेकोणेसौम्यवागीशयु
क्तेवीर्योपेतेवुद्धिमान्निंगितज्ञः ६६ त्रिकालज्ञोभवेज्जीवेस्वांशेमृद्वंशसयुते ॥ गोपु
राद्यंशकेवापिशुभांशेशुभवीक्षिते ६७ हृद्रोगीपंचमेपापेसपापेचरसातले
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तेशुभदृग्योगवर्जिते ६८ अन्नदानपरोनित्यंपंचमेशेशुभांशके
शुभखेचरसंयुक्तेभूमिजेकेंद्रमाश्रिते ६९ सर्वार्थचिंतामणौविशेषः वुद्धिस्थाना
धिपेभौमेगुरुशुक्रनिरीक्षिते मेषनंदांशकेवापिन्यायशास्त्रविशारदः ॥ ७० ॥
वुद्धिस्थानाधिपेसौम्येस्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ गुरुदृष्टिसमायुक्तेमीमांसाध्याप
नेरतः ७१ कारकस्थितराश्यंशराशीशेकेंद्रकोणगे ॥ वुद्धीश्वरेणसंदृष्टेती
व्रवुद्धिंविनिर्दिशेत् ७२ शुभग्रहाणांमध्येतुवुद्धिराशौशुभान्विते ॥
गुरौकेंद्रत्रिकोणेवावुद्धिमार्गविशारदः ॥ ७३ ॥

विशेष कहतेहैं प
मगल केंद्रमें स्थितहोवें तव अन्नदान कर्त्ताहै ६९ और सर्वार्थचिंतामणीमें विशेष कहतेहैं प
चमस्थानका स्वामी मगल होवे और वृहस्पति शुक्र करकेदेख्या होवे अथवा मेषके नवांशमें स्थित
होवे तव न्यायशास्त्रके जानने वाला होताहै ७० और पचमभावका स्वामी वुध होवे और अपनेउच्च
और मित्रऔर अपनीराशिकेवर्गमें स्थित होवे औरवृहस्पति कर्के देख्या होवे तव मीमांसाशास्त्रके
पढानेमें युक्त होताहै ७१ और जिसराशीमेंपचमभावकाकारक स्थित होवे तिसराशीका स्वामीकेंद्र
॥ १। ४। ७। १० ॥ कोण ॥ ।९।५॥ स्थानमें स्थित होवे और पचमेश कर्के देख्या होवे तव
तीव्रवुद्धि वाला होताहे ७२ और पचमभाव शुभग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के युक्त
होवे और वृहस्पति केंद्रमेंअथवा त्रिकोणमेंस्थितहोवे तववुद्धिमार्गमेंचतुरहोताहै ७३

और पंचमभावका स्वामीशुभग्रहहोवे औरपंचमस्थानमें बृहस्पतिस्थित होवे और शुभग्रहोंके मध्यमें पंचमभावहोवेतव बुद्धिमान्होताहै ७४ पंचमभावकास्वामीकेंद्र १।४ ७ । १० स्थानमेंशुभग्रहकरकेयुक्त होवे और उच्चग्रहके योगकोंप्राप्तहोवेतब धारणाशक्तिवालाहोताहै ७५ औरपंचमेशऔरपंचमकारक मृदु अंशादियोंमेस्थित होवे और शुभग्रहकरके देख्या होवे तव धारणादि शक्तिमें चतुर होताहै ७६ और जिसके जन्मसमयमें पंचमका स्वामी गोपुरांशमें स्थित होवे सो ऊहापोह करणेमें समर्थ होताहै और पंचमका कारक जिसराशिमें स्थित होवे सो लग्नेश करके देख्या होवे तव ऊहापोहमें समर्थ होताहै अर्थात् तर्ककरके सिद्धांत वस्तुकों जानने वाला होताहै ७७ और जिसके जन्ममें बृहस्पति और पंचमका कारक केंद्र कोण स्थानमें स्थित होवे सो आगे होने वाले कार्यकों जाननें वाला

बुद्धिस्थानाधिपेसौम्येबुद्धिराशिगतेगुरौ ॥ शुभग्रहाणांमध्यस्थेभावेबुद्धिंविनिर्दिशेत् ॥ ७४ ॥ बुद्धिस्थानेश्वरेकेंद्रेशुभग्रहसमन्विते ॥ उच्चग्रहसमायुक्तेग्रहणादिपटुर्भवेत् ॥ ७५ ॥ मृद्वंशादिसमायुक्तेनाथकारकखेचरे ॥ शुभग्रहेणसंदृष्टेधारणादिपटुर्भवेत् ॥ ७६ ॥ ऊहापोहसमर्थः स्यात्तदीशेगोपुरांशके ॥ कारकांस्थितराशीशेलग्ननाथेनवीक्षिते ॥ ७७ ॥ आगामिसूचकोमंत्रीकारकेकेंद्रकोणगे ॥ भृगुसौम्यसमायुक्तेदृष्टेताभ्यांशुभांशके ७८ अथपंचमेशफलं जन्मप्रदीपे ॥ लग्नगतःपचमपःप्रसिद्धमस्तोकनयकलितम् ॥ शास्त्रविदंगीतविदंस्वकर्मणिपरंनरंकुरुते ७९ पंचमपतिर्धनस्थःक्रूरःखचरोधनोज्झितंकुरुते ॥ गीतादिकलाकलितंकष्टभुजंस्थानयुक्प्रवरम् ८० तनयपतिःसहजगतःसमधुरवाचंस्वबंधुजनविदितम् ॥ कुरुतेसुतास्तदीयाःपरिपालयंतितद्वधूम् ८१

होताहै और शुक्र बुधकरके युक्त वा दृष्ट शुभ नवांशमें होवे तव आगामी सूचक होताहै ॥ ७८ ॥ अब पंचमेशका बारा भावमें फल जन्मप्रदीपसें कहतेहैं और जिसके जन्ममें पंचमका स्वामी लग्नमें स्थित होताहै सो प्रसिद्ध और नीतिके जानने वाला होताहै और शास्त्रकों और गीतविद्याकों जानने वाला और अपने कर्ममें रत होताहै ७९ और पंचमका स्वामी क्रूर ग्रह दूसरे स्थानमें स्थित होवे तव धनहीन कर्ताहै और शुभग्रह होवे तव गीत कलाकरके युक्त और कष्टभोगने वाला और स्थानमें प्रधान होताहै ८० और पंचमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो मीठा बोलने वाला और सबंधियोंमें प्रसिद्ध होताहै और तिसके पुत्र तिसके वधुयोंकों पालतेहै ॥ ८१ ॥

श्रो जिसके जन्मसमयमे पचमका स्वामी चतुर्थभावमे स्थित होवे सो पिताके कर्मोम रत होताहे
ओर पिताकके पालित होताहै श्रौर माताकी भक्ति करताहै श्रोर कूरग्रह होवे तव पिता माताको
दड देताहै ॥ ८२ ॥ श्रौर जिसके जन्मम पचमका स्वामी पचममे स्थित होवे सो बुद्धिमानोंम
मानको प्राप्त होताहै श्रौर श्रेष्ट वाणीवाला होताहै श्रोर श्रेष्ट चरित्रा वाला श्रोर श्रेष्ट जनोंमे प्रसि
द्ध होताहै ८३ श्रौर जिसके जन्ममें पचमेश छठे स्थानमे स्थित होवे सो शत्रुसे कर्क युक्त श्रौर
मानसे रहित होताहै श्रोर कूरग्रह होवे तव रोगकरके युक्त श्रौर धनकरके हीन निरतर होताहै ॥ ८४
श्रौर जिसके जन्ममें पचमेश सप्तमस्थानमें स्थित होवे सो पुत्रकरके युक्त श्रोर श्रेष्टभाग्याकरके युक्त श्रोर
देवता गुरुका भक्त होताहे श्रोर तिसकी स्त्री श्रेष्ट स्वभाववाली श्रौर मीठा वोलने वाली होतीहै

सुपत पातालगत पितृकर्मणिरतंप्रपालितंपित्रा जननीभक्तकुरुतेक्रूरश्चवि
शोधनपितरि ८२ तनयगतस्तनयपतिर्मतिमतांमानिनवचनकुशलम् सुत
कलिबप्रवरजनख्यातवैमानवकुरुते ८३ पंचमपतिश्चषष्ठेशत्रुयुतमानवंमान
हीनंच रोगयुतंधनरहितक्रूरखचर करोतिनरम् ८४ ॥ तनयपतौसप्तमगेस
सुताशुभगाथदेवगुरुभक्ता प्रियवादिनीसुशीलानरस्यचजायतेदयिता ८५
सुतपेनिधनगृहस्थेविसुतकुरुतेस्त्रियोभवतिसुखभग नष्टव्यगा सहोत्थास्त
नया सभवंतितथा ८६ सुकृतगतस्तनयपति सुवोधविद्याकविसुगीतज्ञम् नृप
पूजितंसुरूपनाटकरसिकनरकुरुते ८७ सुतपतिरंवरलीनोनृपकर्माणनृपाल्क
लितभाव ॥ सत्कर्मरतप्रवरजननीकृतशस्तसुखकुरुते ८८ सुतनाथेलाभ
स्थेशूर सुतवान्सुकृत्यकृतभोगी ॥ गीतादिकलाकलितोनृपलाभोजायतेजात ८९

॥ ८५ श्रोर जिसके जन्ममे पचमेश श्रष्टमघरमें स्थित होवे सो पुत्ररहित श्रोर स्त्रीके सुखमे भगको
प्राप्त होताहे श्रौर नष्ट श्रोर व्यग भ्राता श्रोर पुत्राको प्राप्त होताहे ॥ ८६ ॥ श्रोरजिसके जन्ममें
नवमस्थानमें पंचमका स्वामी स्थित होवे सो सुवोधविद्या श्रौर कविता श्रौर गीतके जानने वाला
होताहे श्रौर राजमानको प्राप्त श्रोर श्रेष्ट रूपकरके युक्त श्रोर नाटक रसोंके जानने वाला होताहे
॥ ८७ ॥ श्रौर जिसके जन्मसमयमे पचमभावका स्वामी दशममे स्थित होवे सो राजाके कर्मकरणे
वाला श्रौर राजासे प्रीति करणे वाला श्रोर श्रेष्ट कर्मम रत श्रोर श्रेष्ठ होताहै श्रोर माताकरके किये
गये श्रेष्ट सुख तिनको प्राप्त होताहे ८८ श्रोर जिसके जन्ममें पचमेश एकादश स्थानम स्थित होवे
सो शूरवीर श्रौर पुत्रवाला श्रौर पुण्यभोगने वाला होताहै ॥

ओर गीतादिकलाकेजाननेवालाओर राजासेलाभकोंप्राप्तहोनेवालाहोताहै ८९ औरजिसकेजन्मसमय मेंपंचमका स्वामीबारहमें स्थानमें स्थितहोवे तब क्रूरग्रहककेंपुत्रहीनहोताहै औरशुभग्रहककें श्रेष्ठपुत्रवाला होताहैऔर पुत्रकेसंतापकोंप्राप्तहोताहै और विदेशयानेमेंउद्यतहोताहै ९० इतिपंचमभावविचारः अब छठे भावका विचार कहतेहैं तिसमें थोडासा देखना सो सर्वार्थचिंतामणीसें कहतेहैंछठे भावसें शत्रुका विचार और शत्रुसें घाए और विघ्न और क्लेश और नाभी उदरदेशमें व्रणादिक और मधुरसें लेकके छैरस और उपदंश इहे छठे घरके स्वामीसें और राशि नवांशसें बुद्धिमान् विचार करके कहे १ और पारिजातमें कहतेहैं रोग शत्रु व्यसन घाए इहेमंगलसें और छठे भावसें चिंतन करे और जोनसा ग्रह छठेस्थानमें स्थित होवे सो अपने स्वभाककें रोग कर्ताहै और बृहस्पति

पंचमपेद्वादशगेक्रूरेसुतरहितःशुभेसुसुतः ॥ सुतसंतापपरःस्याद्विदेश गमनोद्यतोमनुजः ९० ॥ इतिपंचमभावविचारः ॥ ५ ॥
अथषष्ठभावविचारः ॥ तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तंसर्वार्थचिंतामणौ ॥ अरिभवनाद्रिवैरिक्षतविघ्नक्लेशनाभ्युदरदेशान् ॥ मधुरादिषड्रुपदंशान् ग्रहराश्यादितोवदेत्प्राज्ञः १ पारिजाते ॥ रोगारिव्यसनक्षतानिवसुधापुत्रारिताश्चिंतयेदुक्तंरोगकरंतदेवरिपुगेजीवेजितारिर्भवेत् ॥ षंडोरीशबुधौविधुंतुदयुतौलग्नेशसंबंधिनौलिंगस्यामयकृद्व्रणेनरुधिरःषष्ठेसलग्नाधिपः २ पत्नीषंडत्वमेति क्षतभवनगतेकामपेवासुरेड्येभौमेमंदेनदृष्टेरिपुभवनगतेशत्रुभार्यामुपैति ॥ सौम्यैर्दृष्टेयुतेवानभयमरिजनाच्छत्रुभेजन्मलग्नात्पापैःशत्रुक्षतादिव्रणभवविपुलंजायतेलांछनंवा ३

छठे स्थानमें स्थिथ होवे तब शत्रुयोंके जीतनें वाला होताहै और षष्ठेश और बुध दोनों लग्नेशकेसें संबंधीहोयके राहुककें युक्त होवें तब नपुंसक होताहै और छठे स्थानमे मंगलककें युक्त छठे भावका स्वामी होवे तब लिंगमें छिद्र कर्ताहै २ और जिसके जन्ममे सप्तमेश वा बृहस्पति छठे स्थानमें स्थित होवे तिसकी स्त्री षंडत्व भावकों प्राप्त होतीहै और छठे भावमे स्थित मंगल शनिककें देख्या होवे तब शत्रुकी स्त्रीकों प्राप्त होताहै और जिसके जन्मलग्नसें छठा लग्न शुभग्रहो ककें दृष्ट वा युक्त होवे सो शत्रुजनसें भयकों नहिं प्राप्त होताहै और पापी ग्रहों ककें दृष्ट युक्त होवे तब शत्रुभय और क्षत व्रणादियों ककें चिन्हत होताहै । ३ ॥

॥ और जिसके जन्मसमयमें छठे स्थानमें सूर्य और लग्नेशका शत्रु नीच राशिमें वा अस्त और शत्रुकी राशिमें स्थित होवे और बल रहित होवे तब पितृवर्ग शत्रुयोंकर्के युक्त होताहै ॥ और लग्नेशके मित्रके घरमें स्थित होवे और मित्रगृहमें और अपने उच्चमें और मित्रके वर्गमें स्थित होवे तब ज्ञातीयोंमें श्रेष्ठ मनि कहतेहैं सो शत्रुयोंसें और व्रणादि रोगोंसें रहित होताहै ४ और जिसके जन्ममें छठे भावका स्वामी शत्रुको भाव ६ में स्थित होवे और शत्रुको वा नीचकी राशिमें स्थित होवे वा वक्रगति वा अस्त होवे तब अनेक जातीके लोकोंकर्के देहको बहुत खेद होताहै और छठे स्थानमें सूर्यसें लेकर्के ग्रहस्थित होवें तब सो ग्रह जिस जिस भावके कारक होवें तिन्होंकर्के निरंतर पीडाको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

षष्ठेभास्वतिलग्ननाथकरिपौनीचारिगेदुर्वले ॥ जातस्तापितृवर्गशत्रुसहितोलग्नेशमित्रगृहे ॥ इष्टस्थानगतेनिजोच्चसुहृदांवर्गोपयातेसतिज्ञातीनांवहुलंवदंतिमुनयःशत्रुव्रणाभावभाक् ॥ ४ ॥ शत्रुस्थानगतोरिनीचगृहगोवक्रंगतोवास्तगोनेकज्ञातिजनेवहुक्षतनुःषष्ठाधिपोवाताथा ॥ षष्ठस्थानगतेपुभास्करमुखव्योमाटनेपुक्रमात् तत्तत्कारकखेटवर्गनिपुणःसंपीडितःसंततम् ५ पापव्योमचरास्त्रयोरिपतितप्रातिक्षकादुर्वलंगोवित्तक्षयमामयंरिपुभयंकुर्वंतिजन्मादितः तेसर्वेवलशालिनोयदिशुभागोवित्तमश्वादिकं राजान्नंसकलोपदंशसहितंरोगारिनाशंवदेत् ६ तेषामंवरचारिणामतिशुभौकेंद्रत्रिकोणायगौद्वावेतौवलशालिनौयदिलघुव्याध्यादिनाशंनृणां एकोपिप्रवलोयदिव्रणरिपुक्लेशादिकिंचित्फलंयत्तत्कारकवर्गमूलमखिलंमोदंप्रमादंतुवा ७

और जिसकेजन्ममें तीनपापीग्रह छठेस्थानमें और आठमें स्थानमें स्थितहोवें अथवादेखें तब दुर्बल करतेहैं और गोधनकाक्षय और रोग और शत्रुभय जन्मसें लेकर्के करतेहैऔर यदशुभग्रह छठे आठमेंव लोहोय करके स्थितहोवें तब गोधन और घोडे हाथी और संपूर्ण उपकरणो करके युक्त राजाका अन्नप्रा प्तकरतेहैं और रोग शत्रूका नाशकरतेहै ६ और जिसके जन्मकालमें ग्रहोंके मध्यसें दोशुभग्रह केंद्र औ रत्रिकोण और एकादशमें स्थितहोवे और वल युक्त होवें तब शीघ्र व्याधियोंको दूर करतेहै अथवा एक ग्रह वली होयकर्के केंद्रादि स्थानोंमें स्थितहोवे तब व्रण शत्रुक्लेशादि किंचित् फल होताहै और एक कारक जिसराशि वर्गमें स्थित होवे तिसकी प्रकृतिसें संपूर्ण शुभाशुभ फल कहे ७

और जिसके जन्मलग्नमें पत्रेश करु युक्त पापी ग्रह स्थितहोवे तव तिसके देहमें व्रण घाए होतेहे और पंचमस्थानमे स्थितहोवेतव पिताओर पुत्रकोंव्रणहोतेहेऔरचतुर्थमेमाताको ओरसप्तममेंस्त्रीकोंव्रणहोतेहै और नवमस्थानमेंस्थितहोवे तव मामेको औरतीसरेस्थानमे छोटे भाईको औरएकादशमें वडे भाईको और अष्टमस्थानमें आपहि गुदाके व्रणकरकेंपीडित होताहे ८ और जिसके जन्मकालमें बुधके क्षेत्रमें ३ । ६ राशिमें सूर्य स्थितहोवे तव माथेमे पीडा कर्त्ताहे और मुखमे पीडा कर्त्ताहे और मंगल गलेमें पीडा कर्त्ताहे और बुध नाभिके नीचे वस्तिमे पीडा कर्त्ताहे और बृहस्पति और शुक्र नाहिं रोगकर्त्ताहैं और शनिवातरोग कर्त्ताहे और राहुकेतु उदरमें व्याधि कर्त्ताहे और लग्नका स्वामी बुधकरके दृष्ट युक्त

पापेलग्नगतेसपत्नपयुतेदेहव्रणंदेहिनांपुत्रस्थेपितृपुत्रयो सुखगतेमातु कलत्रे
स्त्रियः धर्मस्थेसतिमातुलस्यसहजेतस्यानुजस्यव्रणलाभस्थेतुतदग्रजस्यनिधने
जातोगुदार्त्तोभवेत् ८ भानुर्मूर्ध्निशशीमुखेवनिसुतःकंठेतुनाभेरधश्चांह्रि सूरि
रनामयंप्रकुरुतेनात्रामयंभार्गवः मंदोवातमहिश्चकेतुरुदरव्याधिबुधक्षेत्रगो
लग्नेश.शशिजेनवीक्षितयुतोगुह्यव्रणयच्छति९लग्नादियद्राशिगतेफणीशेशुक्रे
क्षितेतत्तनुचिन्हमेति मदाहियुक्तेरिपुराशिनाथेतुरगपश्वादिभयंवदति १०
पापग्रहेणसदृष्टेवलहीनेरिनायके पापांतर्गतेवापिशत्रुपीडाभविष्यति११शत्रु
स्थानाधिपेदु स्थेनीचमूढारिराशिगे लग्नेशेबलसयुक्तेशत्रुनाशवदेद्बुधः १२ ॥

होवेतव गुह्यस्थानमें व्रणकर्त्ताहै ९ और लग्नसें लेकरके जिसराशिमे राहूस्थित होवे और शुक्रकर देख्या होवे तिस अंगमें चिन्ह को प्राप्त होतेहे और छठे घरका स्वामी शनिराहुकरके युक्त होवे तव घोडेसे लेकर पशुयोंका भय होताहे १० और जिसके जन्ममे पापीग्रह करके दृष्ट और बलसे हीन छठे स्थानका स्वामी होवे अथवा पापीग्रहोंके मध्यमे स्थित होवे तिसको शत्रुयोंकी पीडा होता है ११ और पष्ठेश ६।८।१२ स्थानमें स्थित होवे और नीच मूढ और शत्रुकी राशिमे स्थित होवे और लग्नेश बली होवे तव शत्रुयोका नाश होताहै १२

और जिसके जन्मकालमें छठे स्थानका स्वामी गोपुरादि अंशोंमें स्थित सूर्यकर्के देख्याहोवे और ल
नका स्वामी पूर्णवली होवे तव ज्ञातीयोंके मध्यमें उपकार करणे वाला होताहै १३ और छठे स्था
नमें शुभग्रहस्थित और शुभग्रहकर्के देख्याहोवे और पष्ठेश शुभग्रहकर्के युक्तहोवे और पापीग्रहोंके
मध्यमें स्थित होवे सो दालके भक्षणमें प्रीतिवाला होताहै १४ और जिसका छठे स्थानमें वृह
स्पति और वुधहोवें सोनित्यंप्रतिचटनीकाप्याराहोताहै अथवा छठे स्थानमेंवृहस्पति वुधकी राशि मृ
दंशादिमें युक्त होवे तव वीचटनीमेंप्रीतिवाला होताहै १५ और वुधकर्के युक्त छठे स्थानमें शुक्र
स्थित होवे वाशुभके नवांशमें शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे और वलकर्के युक्त शुभनवांशमें स्थित होवे सो
नित्यप्रति मीठे रसका भोजन कर्ताहै १६ और छठे स्थानमें मेष वृश्चिकराशि पापी ग्रहकर्के दृष्ट

षष्ठेशेगोपुरांशादौदिवाकरनिरीक्षिते लग्नेशेबलसंपूर्णेज्ञातीनामुपकारकृत् १३
षष्ठेसौम्येशुभैर्दृष्टेतदीशेशुभसंयुते पापग्रहाणांमध्यस्थेसूपदंशप्रियोभवेत् १४
षष्ठेसौम्येशुभैर्दृष्टेतदीशेशुभसंयुते क्षेत्रेतयोर्वासंप्राप्तेमृदंशादिसमन्विते १५
उपदंशप्रियोनित्यंषष्ठेजीवेशशांकजे क्षेत्रेतयोर्वासंप्राप्तेमृदंशादिसमन्विते १५
शुक्रेषष्ठसौम्येवाशुभदृष्टेशुभांशके बलान्वितेशुभांशस्थेनित्यंमधुरभाक्भ
वेत् १६ पापग्रहेणसंदृष्टेभौमक्षेत्रेतदन्विते वुधेनयुक्तेशुक्रेरौल्वम्लभाक्सन
रोभवेत् १७ पित्रादीनामिदंयोज्यंतत्तद्भावपकारकैः नास्तिकायनवक्तव्यंव
क्तव्यंस्वजनायवै १८ अथषष्ठस्वामिफलं जन्मप्रदीपात् षष्ठेशेलग्नगतेनीरु
कसवलःकुटुंवकष्टकरः वहुयत्नोरिपुहंताभवतिनरःस्वैरवचनधनः १९ षष्ठ
पतौद्रविणस्थेदुष्टश्चतुरोहिसंग्रहप्रतिष्ठः स्थानप्रचुरोविदितःसव्याधिस्तनुज
हृतवित्तः २०

होवें तव अम्लरसका प्यारा होताहै अथवा वुधकर्के युक्त छठे स्थानमें शुक्रहोवेतव अम्लरस भोजन
करणे वाला होताहै १७ और पित्रादि भावोंके कारकोंकर्के तिसके पित्रादियोंके प्यारेरसकहे और
इहप्रकार नास्तिकके ताईंनकहे श्रेष्ठजनके ताईंकहे १८ अवषष्ठेशकावारांभावमें फलकहतेहैं और
जिसके जन्मकालमें छठे भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो रोगरहितऔर वल युक्त होताहै और
कुटुंवकों कष्टकर्ताहै और वहुत यत्नकरणे वाला और शत्रुयोंकों हतकरणे वाला और अपनीइच्छा
करणेवाला और अपने धनवाला होताहै १९ और जिसकों छठे भावकास्वामी दूसरे स्थानमें स्थित
होवे सो दुष्ट और चतुर और धनसंग्रहकर्के प्रतिष्ठावाला और वहुतस्थानोंमें प्रसिद्ध और व्याधियुक्त
और पुत्रकर्के हरागयाहै धन जिसकाऐसाहोताहै २०

और जिसके जन्ममें छठे भावका स्वामी और क्रूरग्रह तीसरे स्थानमें होवेतव श्रेष्ठ लोकोंको कष्टकरणवाला और भाई योंसें विरोधी और मारणे वाला और आमरोगकर्के अत्यंतकष्टको प्राप्तहोताहै २१ और षष्ठेश चतुर्थभावमें स्थित होवे तव पितापुत्र परस्पर वैरी होतेहैं और रोगी तिसका पिताहोताहै और चिरकाल स्थित होनेंवाली लक्ष्मीकों प्राप्त होताहै २२ और छठेका स्वामी पंचम भावमें स्थित होवे तव पितापुत्रका वैरहोताहै औरपुत्रसेंपितामरताहैक्रूरग्रहऔरशुभग्रहपंचमभावमेंहोवेतवधनहीनऔरदुष्टऔरकपटीहोताहै २३ और जिसके जन्मसमयमें छठे भावका स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवे सो रोगसें हीन और शत्रुसें सुख वाला और कृपणरूप होताहै और जन्मसें खेदको नहि प्राप्तहोताहै और खोटे स्थानमें निवास करणे वाला होताहै २४ और जिसके जन्मसमयमें छठेका स्वामी क्रूर ग्रह सप्तम स्थानमें

षष्ठपतिःसहजस्थःक्रूरःकुरुतेसुलोककष्टकरम् सहजविरोधमारणमतिकष्टमामतस्तस्य २१ षष्ठाधिपतिस्तुर्येपितृतनयोर्वैरिणोमिथःकुरुते सरुक्पिता सोथलक्ष्मीलभतेनरःसुचिरां ॥ २२ ॥ रिपुभवनपतौसुतगेपितृसुतयोर्वैरतामृतिस्सुततः क्रूरेशुभेचनिधनपदवींदुष्टश्चतत्कपटी ॥ २३ ॥ रिपुभवनेरिपुस्थेनीरुक्सुखीकृपणरूपः नहिजन्मतोपिसीदतिस्थानकुवासीभवतिनरः २४ अहितपतौसप्तमगेक्रूरेभार्याविरोधिनीचंडा ॥ तापकरीत्वथ सौम्येवंध्यावागर्भगलनपरा २५ शनेर्ग्रहिणिकारुजोविषधराद्धरानंदनात् बुधाच्चविषदोषतःसपदिमृत्युरेणांकतः रवेर्मृगपतेर्वधःप्रकटमष्टमात्षष्ठपात् गुरोरपिचदुष्टधीर्नयनदोषवान्शुक्रतः २६ शत्रुपतिर्यदिनवमःक्रूरःखचरस्तदाभवेत्खंजः विबुधविरोधीशास्त्रंनमन्यतेयाचकंचगुरुम् २७ अरिगृहपे दशमस्थेक्रूरेमातरिरिपुस्तदादुष्टः धर्मसुतपालनमतिर्मातुर्द्वेष्योभवेद्वैरः २८

स्थित होवे तव तिसकी स्त्री विरोध करणे वाली और चंडी और संतापके देने वाली होतीहै और शुभग्रह होवे तव वंध्या अथवा गर्भपातकर्के युक्त होतीहै२५ और षष्ठेशऔरशनी अष्टमभावमें होवे तव संग्रहणिरोगहोताहैऔरमंगलहोवेतवसर्पसेंमृत्युहोतीहैऔर बुध होवे तव विषदोषसेंमृत्युहोतीहैऔर चंद्रमा होवे तव शीघ्र मृत्यु कर्त्ताहै और सूर्य होवे तव सिंहकर्के मृत्यु होतीहै और बृहस्पती होवेतव दुष्टबुद्धि वाला होताहै और शुक्रहोवे तव नेत्रदोष वाला होताहै२६और छठेका स्वामी क्रूरग्रहजव नवममें स्थित होवे तव लडा होताहै और पंडितोंका विरोधी और शास्त्रको और गुरोंको नहिमानने वाला होताहै २७ और छठेका स्वामी दशम स्थानमें स्थित क्रूरग्रह होवे तव माताका शत्रु और दुष्ट होताहै और धर्मपुत्रके पालनेमें बुद्धि वाला और मातासें वैर करणे वाला होताहै ॥ २८

और जिसके जन्मसमयमें छठेकास्वामी क्रूरग्रह एकादश भावमें स्थितहोवे नवशत्रुककें मरणहोवाहै और शत्रुककें और चोरककें हानि वाला और चतुष्पदोंसें लाभ वाला होताहै २९ और छठे भावका स्वामी बाहरमें स्थित होवे तब चतुष्पद और धन और धान्यका नाश कर्त्ताहै और लक्ष्मीके आवनें जानेंसें प्रसन्नताकोंप्राप्तकर्ताहै ३० इतिषष्ठभावविचारः ॥ अब सप्तमभावका विचार कहतेहै सप्तमभावमें क्या चिंतन करणा सोकहतेहै सप्तम स्थानसें विवाह और स्त्री औरपतिका विचार और दाल और गुडादी और दधि और दुग्धकाविचार और गमनागमन और पदकी प्राप्ति और मूत्राशयका विचार और नष्टधनका विचार कहाहै १ और पारिजातमें कहतेहैं सप्तमभावसें यात्रा पुत्र-

वैरिपतौलाभगतेक्रूरेमरणंविपक्षतोभवति रिपुतस्करकुलहानिःस्याच्चतुष्पदाल्लाभवान्मनुजः २९ षष्ठपतौद्वादशगेचतुष्पदद्रव्यधान्यनाशकरः गमनागमनंलक्ष्म्याल्हादेनचपरोनरोभवंति ३० इतिषष्ठभावविचारः अथसप्तमभावविचारः तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् युवतिपदाद्वुद्वाहभार्यापतिसूपगुडदधिक्षीरम् आगमगमनपदाप्तिंब्रूयान्मूत्राशयंचनष्टधनम् १ जातकपारिजाते यात्रापुत्रकलत्रसौख्यमतुलंसंचिंतयेत्सप्तमादुक्तंपुत्रसुखागमागमफलंसर्वंचयत्तद्वदेत् जारःकामगतेसितेमदनपेसाहिध्वजेवातथाकामेजीवयुतेसितेशुभगृहेजातोनजारोभवेत् ॥ २ ॥ दुःस्थेकामपतौतुपापगृहपेपापेक्षितेतद्युतेतज्जायाभिनस्यमध्यमफलंसर्वंशुभंचान्यथा॥ कामस्थानपतौसितेनसंहितेपापर्क्षगेकामधीःसौम्यर्क्षेशुभखेटवीक्षितयुतेजातःसितच्छत्रवान् ॥ ३

स्त्री सुखकाचिंतन करे और पुत्रकासुखऔर गमनागमनकासुख कहाहैऔर जिसकेजन्मसमयमें सप्तम स्थानमें शुक्र होवे और सप्तमेश राहु केतु करकें युक्त होवे सो व्यभिचारी होताहै और सप्तमभावमें बृहस्पति करकें युक्त शुभराशिमें शुक्र होवे तब व्यभिचारी नहि होताहै २ और जिसकें जन्मकालमें सप्तमभावका स्वामी ६ ८ १२ स्थानमेंस्थित होवेऔर सप्तमेश पापीग्रह करकें दृष्टयुत होवेतब स्त्रीका मध्यमसुख जवइहयोगनाहोवेतवसपूर्णसुखहोताहैऔरसप्तमभावकास्वामीशुक्रकरकेंयुक्तपापीग्रहकीराशिमें स्थित होवे तब कामबुद्धिवाला होताहै और शुभग्रहकी राशिमें शुभग्रह करकें युक्त दृष्ट होवे तब श्वेतछत्रके धारणे वाला होताहै ३

और जिसके जन्ममें दूसरे सप्तम छठे स्थानके स्वामी और शुक्र लग्नमें स्थित होवें और पापी ग्रहकर्के युक्त होवें तब कामी होताहै और लग्नेश और षष्ठेश दोनों पापी ग्रहकर्के युक्त होवें तबभीकामी होताहै और सप्तमस्थानमें छठे दूसरे लग्नके स्वामी कर्के युक्त पापी ग्रह होवे तब परस्त्री रतहोताहै और पापी ग्रह और छठे और सातमेंकेस्वामी नवम स्थानमें स्थित होवें तब कामातुरहोताहै ४ और दशम द्वितीय सप्तमके स्वामी दशमस्थानमें स्थित होवेंतब व्यभिचारी होताहै औरपंचमके कारक ग्रह । ६ । ८ १२ स्थानमें स्थित होवें और पंचम नवमसप्तम के स्वामी पंचम भावमें स्थित होवें और पापी ग्रह कर्के दृष्ट होवें तब पुत्र हीन होताहै और बृहस्पति बुध दोनों और चंद्रमा शुक्र दोनों सप्तम स्थानमें स्थित होवें तब बहुत स्त्रीयोंमें रत होताहै और बली होयकर्के शुक्र सप्तम स्थानमेंस्थित होवे तब बहुत स्त्रीयोंका स्वामी होताहै ५ और

वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगताःपापान्विताःकामुकः पापव्योमचरान्वितौत नुरिपुस्थानाधिपौचेत्तथा कामस्थैरिपुवित्तलग्नपयुतेपापेपरस्त्रीरतः पापा रातिकलत्रपानवमगाःकामातुरोजायते ॥ ४ ॥ जारःकर्मधनास्तपा दशमगाःपुत्राधिकारग्रहादुःस्थाधीगुरुकामपाःसुतगृहेपापेक्षितेनात्मजःजीव ज्ञौयदिवानिशाकरसितौकामेबहुस्त्रीरतःशुक्रेमन्मथराशिगेबलवतिस्त्रीणांबहूनां पतिः ५ शुक्रारौमदगौकलत्ररहितोधर्मात्मजस्थौतथाशत्रुस्थानगतौनिशाकर सितौयद्येकपुत्रोभवेत्लग्नास्तव्ययगेषुपापखचरेष्विंदौसितेदुर्बलेवंध्यास्त्रीपतिरेवजा तमनुजोजायाविहीनोथवा ६ वंध्यापतिःसितरवीमदनोदयस्थौचंद्रोदयेसमगृ हेललनाकृतिःस्यात् पुंराशिगेपुरुषभावयुतंकलत्रंस्त्रीपुंग्रहेक्षितयुतेसतिमिश्ररू पम् ७ भौमांशेवाभौमराशौविलग्नात्कामस्थानेजन्मभेवावधूनाम् जायादासी नीचमूढग्रहांशेदुष्टावास्याद्यौवनेभर्तृहीना ॥ ८ ॥

शुक्र मंगल दोनों सप्तममें स्थित होवें तब स्त्रीकर्के रहित होताहै और नवम पंचम स्थानमें होवेंतबभी स्त्री कर्के रहित होताहै और चंद्रमा शुक्र दोनों षष्ठ ६ स्थानमें स्थित होवें तब एक पुत्र वाला होताहै और लग्न सप्तम द्वादश स्थानमें पापी ग्रह होवें और चंद्रमा शुक्र बलहीन होवें तब बंध्या स्त्रीका स्वामी वा स्त्रीसें हीन होताहै ६ और शुक्र सूर्य दोनों सप्तममें वा लग्नमें स्थित होवें तब बंध्याका स्वामी होताहै और समराशिमें चंद्रमा लग्नगत होवे तब स्त्रीकी आकृतीवाला होताहै और पुरुष राशिमें चद्रमा लग्नगत होवे तब पुरुषाकृती वाली स्त्री होतीहै और स्त्री पु ग्रह दोनों देखते होवें तब मिश्र रूपा होतीहै ७ और जिसके जन्मलग्नमें सप्तम भावमें मंगलकी राशि वा नवांश होवे अथवा स्त्रीकी जन्मराशिहोवे तब तिसकी स्त्री दासी होतीहै औरनीच मूढ राशि नवांश होवे तबदुष्टहोतीहैअथवा युवावस्थामें स्वामीकर्के रहित होतीहै ८

श्रौर सप्तमभावमें शुभग्रहका नवांश वा राशिस्थित होवे श्रौर शुभग्रहकर्के दृष्टहोवे तवअत्यंत श्रेष्ट स्त्री होतीहै श्रौर चंद्रमाका नवांश होवे वा वलहीन चद्रमाकीराशि होवे तव स्त्री पतिके मा॰णे वा ली होतीहै श्रौर चद्रमा वली होवे तव स्त्री पतिव्रता होतिहै ९ श्रौर सप्तम भावमें सूर्यका नवांश होवे तव व्यभिचरिणी होतीहै श्रौर श्रपनि उच्च राशि होवे तव पतिव्रता शुभ ग्रहके देखनसें हो तीहैं श्रौर जिसके लग्नमें चद्रमा स्थित होवे श्रथवा सप्तम भावमें चद्रमा होवे नीच श्रौर शत्रु श्रौर मूढ राशिमें स्थित होवे श्रौर पाप द्रेष्काणमें श्रौर व्याल विहग पाश निगड द्रेष्काणमे स्थित होवे श्रौर संध्यशमें स्थित होवे तव स्त्रीव्रतहीन श्रौर विधवा होतीहै १० श्रौर सप्तम भावमें लग्नेश युक्त होवे श्रौर शुभग्रह कर्के युक्त होवे तव श्रेष्ट वंशमें जन्मी स्त्री होतीहै श्रौर सप्तममें क्रूर ग्रहकी

शुभांशराशौयदिसद्गुणाढ्याशुभेक्षितेचारुतरंकलत्रम् चंद्रांशकेदुर्बलचंद्रराशौजायापतिघ्नीसबलेतुसध्वी ९ अर्कांशेकुलटानिजोच्चगृहगेसाध्वीशुभालोकितेलग्नेशीतकरेथवामदनभेनीचारिमूढान्विते पापव्यालविहंगपाशनिगडद्रेष्काणभागान्वितेसंध्यंशेविगतव्रताचविधवाजातस्यजायाभवेत् १० कामस्थतनुपेशुभग्रहयुतेसद्वंशजामिच्छतिक्रूरक्षेमदगेविलग्नरमणेदुर्वंशजातांगनावर्णीरूपगुणाकार्तिचसकलंयत्तद्गृहोक्तंवदेत्दुर्व्यापारकरग्रहाकृतिनरप्रीतिंप्रयांत्यंगनाः ११ पापेप्रकाशसंयुक्तेकलत्रेदुष्टचारिणी रवौवध्यातुशीतांशौक्षीणेंदौव्यभिचारिणी १२ कुजेतुम्रियतेमंदेदुर्भगाराहुसंयुते परदाररति स्त्रीयांनिपेकाभावतोसुतः १३ धूमेविवाहहीनःस्यात्म्रियतेकार्मुकेसति परिवेषेतुदुःशीलाकेतौवध्यासतीभवेत् १४

राशि होवे श्रौर तिसमें लग्नेश युक्त होवे तव खोटे वंशमें जन्मी स्त्री होतीहै श्रौर स्त्रीकी वर्ण रूपश्रौर रुति सपूर्ण सप्तमभावस्थित राशिसेंकहे श्रौर दुर्व्यापारकरग्रहाकृती यो नर हैतिनमें स्त्रीयां प्रीतिकों प्राप्त होतीयाहै ११ श्रौर पापीग्रह अप्रकाश धूमादिग्रह कर्केसप्तमभावमें स्थितहोवे वत स्त्रीव्यभिचारिणी होतीहै श्रौर सूर्यकर्के युक्त वंध्या होतीहै श्रौर क्षीणचद्रमा कर्के युक्ती व्यभिचारिणी होतीहै १२ श्रौर मंगलकर्के मृत्युकों प्राप्त होतीहै श्रौर शनिकर्के युक्त होवे तव स्त्री दुर्भगा होतीहै श्रौर राहु कर्के पर स्त्रीमें रत होनाहै श्रौर श्रपनीस्त्रीकी गर्भका श्रभाव होनेसें पुत्ररहित होताहै १३ श्रौर सप्तमभावमें धूमग्रह होवे तव विवाहकर्के रहित होताहै श्रौर धनुग्रह होवे तव स्त्री मरतीहै श्रौर परिधी ग्रह होवे तव खोटे स्वभाववाली होतीहै श्रौर केतु होवे तव स्त्री वंध्या होतीहै ॥ १४

और पातग्रहहोवेतब स्त्री रहित होताहै और पापी ग्रह सप्तममें होवे तब स्त्री गर्भस्राव करके युक्त होतीहै और पूर्णचंद्रमा सप्तममें होवे तब खोटे स्वभाव वाली और कन्या जन्मने वाली होतीहै १५ और बुधकरपुत्रवती और बृहस्पति करके गुणवती और शुक्र करके सौभाग्यवती और बली ग्रहकरकेयुक्त होवेतब श्रीमती होतीहै ॥ १६ ॥ और जिसके जन्मकालमें सप्तम पंचम भावकेस्वामी बली होवें और शुभग्रह करके देखे होवें औरछठे घरके स्वामी करके युक्त वा दृष्ट होवें तब तिसकी स्त्री जार करके पुत्रलाभको प्राप्त होतीहै औरतिसका स्वामी बहुत स्त्रीयों करकेभी पुत्रहीन होताहै ॥ १७ ॥ और मकर राशिमें सप्तम स्थानमें बृहस्पतिस्थित होवे तब स्त्रीकरके रहित होताहै और मीन राशिमें सप्तम स्थानशनि होवे तब स्त्री रहित होताहै और शनि और मंगलके नवांशमें बृहस्पति

पातेविदार,पापैस्तुगर्भस्रावेणसयुता,दुःशीलास्त्रीप्रसूताचपूर्णेमाणेसुधाकरे १५
बुधेसपुत्रावागीशिगुणयुक्तासुपुत्रिणि शुक्रेसौभाग्यसयुक्ताश्रीमतीचबलान्विते १६
स्त्रीपुत्रपेबलिनिशोभनखेटदृष्टेषष्ठाधिपेनसहितेसतिवीक्षितेवा ॥ जारेणपु
त्रजनिलाभमुपैतिजायातस्याधवोबहुकलत्रयुतोप्यपुत्रः १७ नीचेगुरौमदनगे
सतिनष्टदारोमीनेकलत्रभवनेरविजेतथैव ॥ मंदारराशिनवभागगतेसुरेड्ये
जारोभवेदिनसुतारसमन्वितेवा १८ सप्तमेवाष्टमेपापेव्ययस्थेधरणीसुते ॥
अदृश्येयदितन्नाथेकलत्रांतरभाग्भवेत् १९ सुपक्वजातप्रथमकलत्रंलग्नेश्वरो
दारपसयुतश्चेत् ॥ दिनेशकांत्याभिहतस्तदानींसुरूपहीनासुतरावदति २०
वित्तेपापबहुत्वेचकलत्रेशेतथास्थिते ॥ शत्रुस्थानगतेकेतौकलत्रत्रयभाग्भवेत् २१

स्थित होवें तब व्यभिचारी होताहै अथवा शनि मंगलकरके युक्त सप्तमराशि होवे तब भी व्यभिचारी होताहै ॥ १८ ॥ और सप्तम अष्टम स्थानमें पापग्रह होवे और बारहवें स्थानमें मंगल स्थित होवे और सप्तमेश अदृश्य भागमें होवे तब दूसरी स्त्रीका प्राप्तहोताहै ॥ १९ ॥ और लग्नेश सप्तमेश एक राशिमें स्थित होवें तब प्रथम स्त्री गुणवती रूपवती होतीहै और सप्तमेश सूर्यकी कांतिकरके हत होवे तब प्रथमस्त्री रूपकरके रहित कहतेहैं ॥ २० ॥ और जिसके जन्मकालमें दूसरे स्थानमें बहुत पापीग्रह होवें और सप्तम शभी पापीग्रहोंकरके युक्त होवे और छठे स्थानमें केतु स्थितहोवे तब तीनस्त्रीयावालाहोताहै २१

और सप्तमेश केंद्रमें और त्रिकोणमें स्थित होवे और अपने उच्चमें और मित्रके और अपने वर्गमें स्थित होवे अथवा दशमेशकर्के देख्या होवे तब बहुत स्त्रीयोंकर्के युक्त होताहै ॥ २२ ॥ और सप्तमेश केंद्रमें स्थित शुभग्रह कर्के देख्याहोवे और शुभग्रहके नवांशमें वा राशिमें स्थित होवे तबस्त्री पतिव्रता होतीहै ।२३ ॥ और जिसकेजन्मसमयमें सप्तमेश वुध पापी ग्रहकर्के युक्त, नीच और शत्रुके वर्गमे छठे और अष्टम भावमें स्थितहोवे और पापीग्रहोंके मध्यमें और पापीग्रहो कर्केदेख्या होवे, तब स्त्री स्वामीके घात करणे वालीऔर कुल कानाश करणे वाली होतीहै ॥ २४ । और जिस के जन्मसमयमें सप्तमका स्वामी शुभकेनवांशमें और शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे तब श्रेष्ठ वंशमे जन्मी स्त्री होतीहै और पापग्रहकर्के युक्त और पापकर्के दृष्ट होवे तब हीन वंशमे जन्मी होतीहै २५॥

केंद्रत्रिकोणेदारेशेस्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ॥ कर्माधिपेनवादृष्टेबहुस्त्रीसहितोभवेत् ॥२२॥ कलत्राधिपतौकेंद्रेशुभग्रहनिरीक्षिते ॥ शुभांशेशुभराशौवापत्नीव्रतपरायणा ॥ २३ ॥ दाराधिपेसोमसुतेसपापेनीचारिवर्गेरिपुनाशभावे ॥ पापांतरेपापदृशासमेतेजायापतिघ्नीकुलनाशिनीस्यात् ॥ २४ ॥ शुभांशेशुभसंदृष्टेनाथेजायासुवंशजा ॥ पापारूढेपापवर्गेतस्यजायाकुवंशजा ॥ २५ ॥ कामस्थानेसुखेटेसितयुतखचरैर्दारसंख्यांवदन्ति स्वोच्चस्थोवयोसवासोनभवतिगणनेशुक्रयुक्तग्रहैर्वा ॥ जायाधीशेसितर्क्षेसतिधनभवनेशुक्रसंयुक्तसंख्या शुक्रोत्तुंगेशयुक्तोथ्युचरनववधूवल्लभोनायतेवा ॥ २६ ॥ दारेशेनकुटुंबपेनसहितायावद्ग्रहादुर्बलास्तत्संख्याककलत्रनाशनकराद्दुःस्थानतनाथायदि ॥ यावंतोबलशालिनः शुभकरास्ततुल्यजायासुखकुर्वंत्येकावियच्चरोबलयुतोयद्येकदारोभवेत् २७

और जिसके जन्ममें सप्तम स्थानमें शुक्रकर्के युक्त जितने शुभग्रह स्थित होवें उतनी संख्या कर्के स्त्रीया होतीहैं अथवा उच्च राशिमें ग्रह होवे तब शुक्रकर्के युक्त ग्रहोंकी संख्या नाहिं होतीहै और सप्तमेश ग्रह वृष तुला राशिमें होवे तब शुक्रयुक्त ग्रह संख्या होतीहै और शुक्र सप्तमेश कर्के युक्त होवे तब नवीन स्त्रीका त्याग होताहै ॥ २६ ॥ और सप्तमेश कर्के और द्वितीय भावके स्वामी कर्के जितने निर्बल ग्रह युक्त होवें और । ६ । ८ । १२ । स्थानके स्वामी होय कर्के उतनीयो स्त्रीयों का नाश कर्तेहैं और जितने ग्रह बली सप्तमेश द्वितीयेश कर्के युक्त होवें शुभग्रह उतनीयों स्त्रीयों का सुख कर्तेहैं और एक ग्रह बल युक्त होवे तब एक स्त्रीकाहि सुख कर्ताहै २७

और लग्नसप्तमभावकारकग्रामीस्पष्टककें दोनोंकायोगकियेसें योराशिहैतिस राशिमें गोचरककें बृहस्पति आवे तब विवाहकेसमय मेंवर्ष कहे और जिस नक्षत्रमें चंद्रमा स्थित होवेउतने वर्षोंककें अथवालग्न सप्तम भावोंके नवांशोंके योगककें वर्षोंमें विवाहकहे और बृहस्पति मित्रके नवांशमें वलककें युक्त होवे तब एकस्त्री ककें युक्त होताहै और बृहस्पति अपने नवांशमें वा उच्चके नवांशमें स्थित होवे तब दो तीन स्त्रीयों वाला होताहै २८ और सप्तमेश ग्रहकी राशि और नवांके स्वामी और शुक्र चंद्रमा इन्होंमेंयो वली होवे तिसके दशाकालमें और सप्तमेश ककें युक्त जो राशि और नवांशकी राशि तिससें त्रिकोण। १। ५। स्थानमें गोचर ककें जब बृहस्पति आवे तब विवाह होताहै। २९

लग्नानंगपतिस्फुटैकयगृहगेजीवेविवाहंवदेत् ॥ चंद्राधिष्ठिततराकाधिपयोरैक्यांशकेवातथा ॥ जीवेमित्रनवांशकेवलयुतेयद्येकदारान्वितः स्वांशेद्वित्रिकलत्रवान्वहुवधूनाथःस्वतुंगांशके २८ कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोःसितक्षपानायकयोर्बलीयसा ॥ दशागमेद्यूनपयुक्तभांशकत्रिकोणगेदेवगुरौकरग्रहः २९ शुक्रोपेतकलत्रराशिपदशाभुक्तौचपाणिग्रहः कर्मायुर्भवनाधिनाथकदशाभुक्तौविवाह क्रमात्॥ कामेशेनयुतोकलत्रगृहगस्तत्पाकभुक्तौतु वा ३० सौम्यव्योमचरान्वित शुभगृहेचादौददातिश्रियंपापर्क्षेशुभखेचरोयदिदशामध्येविवाहादिकम् क्रूरःपापगृहोपगोयदिफलंपाकावसानेतथा सौम्यर्क्षेयदिसर्वकालफलदःसौम्यान्वितःशोभनः ३१

और शुक्रककें युक्त सप्तमेशकी दशातर्दशामें विवाह होतेहे और दशम अष्टम घरके स्वामीकी दशातर्दशामें विवाह होताहै अथवा सप्तमेशककें युक्त सप्तमस्थानमें स्थित यो ग्रह तिसकी दशातर्दशामें विवाह होताहै ॥ ३० ॥ और शुभग्रहककें युक्त सप्तमेश नवमस्थानमें स्थित होवे तिसकी दशामें शुभफल होताहै और पापोग्रहकी राशिमें शुभ ग्रह स्थित होवे तिसको दशाके मध्यमें विवाहादि शुभ फल होताहै और क्रूर ग्रह पापोंकी राशिमें स्थित होवें तब दशाके अंत्यमें शुभ होताहै और शुभ ग्रह की राशिमें शुभग्रह ककें युक्त होवें तब सर्वकालमें फल देताहै सारीदशामें शुभफल कर्त्ताहै ॥ ३१ ॥

और जिसके जन्मसमयमें जिसराशिमें लग्नेशस्थितहोवे तिसकास्वामीऔर चंद्रमा और बृहस्पति इ ह अपनी राशिमेंस्थित होवें तब स्त्रिके लाभकों प्राप्त होताहै और सप्तमेशशुक्रके घरमें बृहस्पति चंद्रमा स्थित होवें अथवाकेंद्रमें स्थित होवें अथवा गोचर कर्के बृहस्पति साथ युक्तहोवें तब स्त्रीका लाभहोताहै ३२ और कहतेहैं सप्तमस्थानमें मेषादि राशि जितनी संख्याकर्के स्थित होवे तिसव र्षमें अथवा मौंजीबंधनकालसें उपरंत उतनेवर्षोंमें अर्थात्सप्तमभावमें आठअंकसें हीन राशिहोवे तब तिसमें आठवर्षमिलायकर्के विवाहका समयकहे और कहतेहैं जिसके जन्मलग्नसें सप्तमेश और लग्नेश कर्के युक्त यो राशि वा नवांश तिसमें जन्मी जो स्त्रीहै सो स्वामीका मन प्रसन्न करणे वाली होतीहै और तैसें हि कन्याके लग्नसें लग्नेश और सप्तमेशकीराशि और अंशमें जन्मीतोस्त्रीके मनकों

लग्नेश्वरास्थितनवांशपतिःस्वराशौचंद्रेपुरंदरगुरौचकलत्रलाभम् कामेशशुक्रगृ
हगेमरमंत्रिणींदौकेंद्रेथवागुरुयुतेसतिगोचरेण ३२ यत्संख्याकमजादिका
मभवनंतद्वत्सरेवान्नृणांसाष्टाब्देकृतमौंजिकर्मपरतःकल्याणकालोभवेत् लग्ना
दस्तविलग्ननायकयुतक्षेत्रांशकेसंभवायासाभर्तृमनःप्रसादकरिणीभर्त्तातथैव
स्त्रियः ३३ कामान्वितेक्षकवियच्चरराशिजाताचंद्रादतीवशुभगाचपतिप्रिया
स्यात् स्त्रीजातकेचपतिरिष्टकरोवधूनांदिग्देशताभृगुसुवादबलाधिपस्य ३४
अथदारहायोगः धरावसानस्मरयानरंध्रगोधरासुतोजन्मनियस्यदारहा तथैव
कन्याजनिजन्मलग्नतोयदिक्षमासूनुरनिष्टदःपतेः ३५क्रूरव्योमचरःस्त्रीणामष्टम
स्थोविलग्नतःनीचारिपापवर्गेषुयदिमृत्युकरःपतेः ३६

प्रसन्न करणे वालाहोताहै ३३ और चंद्रमासें सप्तमराशिमेंयो ग्रह स्थित होवे और तिसकों देखने वाला यो ग्रहहै तिसकी राशिमे जन्मेतो अत्यंत सोभाग्यवालीहोतीहै और स्त्रीजातकाध्यायमें स्वा मी कों रिष्ट करणेवाले योगकहेंगे सो विचारलेणे और विवाहकी दिशा देशका विचार शुक्रसें और सप्तमेश ग्रहसें करणा ३४ अब दारहा योग कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नमें धरा १ अवसान १२ स्मर ७ यान ४ रंध्र ८ स्थानोंमें मंगल स्थित होवे सो स्त्रीकों हत कर्त्ताहै और तैसेंहि कन्याकेजन्मलग्नसें मंगल होवे तब स्वामीकों हतकर्त्ताहै ३५ और कहतेहैं स्त्रीयोंके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें क्रूर ग्रह स्थितहोवे और नीच शत्रु पापी ग्रहके वर्गोंमें स्थित होवे तब स्वा मी कों मृत्युकर्त्ताहै ३६

॥ और कहतेहैं जिसके जन्मकालमें सप्तमऔर दूसरे स्थानमें पापी ग्रह होवें सो स्त्रीके वियोगका दुःख कर्त्तेहैं और जिसको स्त्रीकोंवी तैसाहि योग होवे तब पुत्र और धनादियों कर्केयुक्त दोनोंजोतेहैं ॥ ३७ और जिसके जन्मकालमें स्त्रीकीजन्मराशि और स्त्रीराशिसें ९ । ५ राशिगत अपनी राशि होवे अथवाअपनीजन्मराशिसें ५।९ राशिगत स्त्रीकी जन्म राशि होवे तव पुत्रकर्के युक्त होताहै और तिससें विपरीत होणेसें पुत्रकर्के रहित होताहै ३८
और जिसकोंसप्तमसूर्य होताहै तिस स्त्रीके पट्ट और स्तन काठिन होतेहै और जिसकोंसप्तका स्वामी केंद्रमें स्थित होवे और वृहस्पति चंद्रमा बुध शुक्र इनोंकर्के युक्त होवे तब स्त्री वडे स्तनोंवाली होतीहै और मंगलकर्के युक्त होवे तव शुष्क स्तनों वाली होतीहै और गुलिक और शनि और रा

द्यूनकुटुंवगतौयदिपापौदारावियोगजदुःखकरौतौ तादृशयोगजदारयुतश्चेजीवतिपुत्रधनादियुतश्च३७ कलत्रराशित्रितयेथवास्यात्तदीयसंयुक्तभराशिकोणे
कलत्रराशिर्यदिपुत्रशालीतदन्यराशिर्यदिपुत्रहीनः ॥ ३८ ॥
काठिन्योरुकुचामदेदिनकरेकामाधिपेकेंद्रगेजीवेंदुज्ञसिताऽन्वितेगुरुकुचाशुष्कस्तनाभूमिजे ॥ लंवापीनपयोधरासगुलिकछायासुताहिध्वजे धूमादौविषमाकृतिस्तनवतीदुःस्थेथवाकामपे ३९ वंध्यासंगमिनेस्तगेसमवधूकोलिंनिशानाथकेभूपुत्रेतुरजस्वलाजनरतिर्वंध्यावधूमेतिवा ॥ वेश्यामिंदुसुतेतुविप्रवनितांजीवेसितेगर्भिणींनीचस्त्रीरतिमर्कजोरगशिखिप्राप्तेथवापुष्पिणीं ४०
क्रीडागारमिनेवनंसुखगतेचारुस्वगेहंविधौभूपुत्रेसतिकुड्यमिच्छतिवुधेजातोविहारस्थलम्

हुकेतु कर्के युक्त होवे तव लंवे स्तनों वाली होतीहै और धूमादि अप्रकाश ग्रहोंकर्के युक्त होवे तव स्त्री विषम स्तनों वाली क्या एकछोटा वा टेढा अयसे स्तनोंवाली होतीहै अथवा सप्तमेश ६ । ८ । १२ स्थानमें होवे तव विषम स्तनों वाली होतीहै ३९ और जिसको सूर्य सप्तमस्थानमें होताहै सो वंध्या स्त्रीका संग कर्त्ताहै और चंद्रमा सप्तममेंहोवे तब तुल्यस्त्रीके साथसंग कर्त्ताहै और मंगल सप्तममें होवे तव रजोवतीसें संग कर्त्ताहै अथवा वंध्यासें ॥ और बुध सप्तमहोवे तव वेश्यासें संगकर्त्ताहै और वृहस्पति सप्तमहोवे तवब्राह्मणकी स्त्रीसें संगकर्त्ताहै और शुक्र होवेतव गर्भिणीसें और शनिसप्तम होवे तवनीच वर्णकी स्त्रीसेंसंग कर्त्ताहै और राहुकेतुहोवें तव गर्भाणीसेंसंगकर्त्ताहै ४०
और जिके जन्मसमयमें सूर्य चतुर्थमें होवे तव वनमें सो रहिताहै और चंद्रमा होवे तव सुंदरघर वाला होताहै और मंगल होवे तव अल्पगृहवाला और बुधहोवे तव विहारयोग्यगृहवालाहोताहै

और बृहस्पतिहोवे तव देवताके घरवाला और शुक्रहोवे तव जलके समीपघरवाला और मंगल राहुकेतुहोवें तव विष्णु और शिवकाभक्त तिसका पुत्रहोताहै तिसके घरमें पितावीवसकर्ताहै ॥ ४१ ॥ और जिसके जन्मसमयमें शुक्रके नवांशमें सप्तम स्थानमें मंगल स्थित होवे और सप्तमेश पंचम स्थानमें स्थित होवे तव स्त्रीको रिष्ट होताहै और सूर्य सप्तममें स्थित होवे तव स्त्रीधनवाला होताहै और सप्तमदूसरे भावके स्वामी ६।८। १२ स्थानमें होवें और शुक्रकर्के युक्त होवें वा तीसरे स्थानमें होवें तव स्त्रीके मारणेवाला होताहै और दूसरे और सप्तमघरके स्वामी वली होवें तव स्त्रीवाला होताहै ४२ और जिसके जन्ममें सप्तमेश शुक्र कर्के युक्त होवे और देख्याहोवे वा वृषतुला राशिमें स्थित होवे तव भगचुंवनको प्राप्त होताहै और इसीप्रकारकर्के दूसरेका स्वामी होवे तव भगचुंवन कर्ताहै और दशमका स्वामी शुक्रकर्के युक्त सप्तममें स्थित होवे तव तैसा हि होताहै ४३ और जिसके सप्तम भावका स्वामी बृहस्पति शुक्र होवें तिसको स्त्रीकी भग समान और सुंदर होतीहै और सप्तराशिका

जीवेदेवगृहंसितेतुसलिलंमंदेथवापन्नगेकेतौमाधवशंकरप्रियसुतस्थानं वधूसंगमे ॥ ४१ ॥ शुक्रांशेमदनास्थितेवानिसुतेकामाधिपेपंचमेजायारिष्टमुपैतिसप्तमगतेभानौकलत्रार्थवान् दुःस्थौकामकुटुंवपौसभृगुजौदुश्चिक्ययातौतुवा तत्संख्याककलत्रहाबलयुतौवित्तास्तपौदारवान् ॥ ४२ जातः समेतिभगचुंवनमस्तनाथेशुक्रेणवीक्षितयुतेभृगुमंदिरेवा- एवंकुटुंवभवनाधिपतौतथास्यात् दारर्क्षगेदशमपेससितेतथैव ४३ कामेश्वरेदेवगुरुःसितोवासमंभगंचारुतरंतरुण्याः ॥ ह्रस्वंभगंसप्तमराशिनाथेशनींदुतारासुतमध्ययाते ॥ ४४ ॥ दीर्घंसमेतिभगमस्तपतौजलर्क्षेतत्कारकेजलगृहोपगतेतथैव ॥ सार्द्रंभगंमदनगेभृगुवीक्षितेब्जेगुह्यंत्वनार्द्रमुपयातिभृगौसपापे ॥ ४५ लग्नेशस्थनवांशनाथगृहगेजीवेसमेतिस्त्रियंनीचारातिनवांशकेसतिमृतस्त्रीकोविदारोथवा लग्नेकामपतिस्फुटादपहृतराशित्रिकोणेगुरौलग्नेसप्तमराशिपस्फुटहृतेजीवेमृतियोषितः ४६

और सप्तमेश जस्वामी शनि चंद्रमा बुधके मध्यमें स्थित होवें तव छोटी भग होतीहै ४४ और सप्तमका कारक जलराशिमें स्थितहोवे तव लचर राशिमें स्थित होवे तवभी लंबी भग होतीहै और सप्तमका कारक जलराशिमें स्थितहोवे तव भीलंबी होतीहै और सप्तमस्थानमें चंद्रमा शुक्रकर्के दृष्ट होवे तव आर्द्र होतीहै और शुक्र पापीग्रहकर्के युक्त होवे तव शुष्क भग होतीहै ४५ और लग्नेश कीराशिके नवांशकाजोस्वामीतिसकी राशिमें बृहस्पतिस्थितहोवे सो स्त्रीको प्राप्त होताहै और नीच और शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तव तिसकी स्त्रीमृत होतीहै वा तिसका विवाहनहि होताहै और सप्तमेश स्पष्टग्रहसंलग्नको घटापटेवे और तिस राशिके १।५ स्थानमें बृहस्पति जवगोचरसें आवेतवस्त्री मृत्युकोप्राप्त होतीहै ४६

॥ और लग्नमें सप्तमेश और सप्तमका कारक शुभके करणे वाले वी होवें और बलयुक्त सप्तमभावमें होवे तबपति सहित स्त्री मृत्युको प्राप्त होतीहै और पापग्रहों कर्के नाहिं युक्त दृष्ट होवें तब वो मरजातीहै ॥ और सप्तम भावसे अष्टमेशकी दशामें और शुक्राष्टक वर्गमें हीन विदुयुत राशि में जब शनि स्थित होवे तब स्त्री मरतीहै और तिसनवांशमें बृहस्पती होवे तबवी मरतीहै ४७ और जिसके जन्ममें सप्तमेश पारिजातादि वर्गमें स्थित होवे और बृहस्पति कर्के युक्तदृष्टहोवे और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवेतब मधु घृत दुग्ध दाल पक्वान्नादिसहित पवित्र सुंदर अन्न और श्रेष्ठ स्त्रीको प्राप्त होताहै ४८ और जिसके जन्म समयमें पापीग्रहसप्तम भावमें स्थित होवे और सप्तमेश पापीग्रह कर्के युक्त होवे अथवा क्रूर षष्ट्य

लग्नात्कामपकारकौशुभकरौवीर्याधिकेसप्तमेपत्यासाकमुपैतिमृत्युमबलापापैरयुक्तेक्षिते कामाच्छिद्रदशापहारसमयेशुक्राष्टवर्गोदितेराशौभानुसुतेकलत्रमरणंजीवितदशान्विते ४७ मदनभवननाथेपारिजातादिवर्गेसुरगुरुयुतदृष्टेशोभनस्थानयाते दधिमधुघृतसूपक्षीरपक्वोपदंशैःसहशुचिरुचिरान्नंचारुकांतामुपैति४८ पापेसप्तमभावस्थेतदीशेपापसंयुते ॥ क्रूरषष्ठ्यंशगेवापिकदाचिद्दधिसूपभाक् ॥ ४९ ॥ चंद्रेगुरौवादारेशेजलराश्यंशसंभवे जलग्रहेणवा दृष्टेक्षीरपानादिभाग्भवेत् ५० ॥ सप्तमेशास्थितांशेशेशुभदृष्टिसमान्विते शुभग्रहांशकेचापिगुडक्षीरादिपानभाक् ५१ ॥ बहवःसप्तमेपापाःषष्ठेवारंध्रभेपिवा क्रूरषष्ठ्यंशसंयुक्तामूत्रकृच्छ्रंविनिर्दिशेत् ५२ ॥ अथसप्तमेशफलम् दयितेशोलग्नगत शोकनि.स्नेहमन्यतरभार्याम् ॥ भोगभुजंरूपयुतंजनयतिदयितादलितचित्तम् ५३

शमें स्थित होवे तब दहिं और दाल कदाचित् भोजन कर्ताहै ४९ और चद्रमा वाबृहस्पति वा सप्तमेश जलराशिमे और नवांशमे स्थित होवे और चद्रमा शुक्रकर्के दृष्ट होवे तब दुग्धादि पान कर्ताहै ५० और सप्तमेश जिसनवांशमें स्थित होवे तिसका स्वामी शुभ ग्रह कर्के दृष्ट और शुभके नवांशमें स्थित होवे तब गुड, और दुग्धादि पान कर्ताहै ५१ और जिसके जन्ममें सप्तम और छठे और अष्टमस्थानमें बहुत पापीग्रह स्थित होवें तिसको मूत्ररोग होताहै ५२ ॥ अब सप्तमेशका बारां भावमें फल कहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें सप्तमका स्वामी लग्नमेंस्थित होवे सो दूसरेकी स्त्रीमें प्रीति रहितऔरशोक युक्तहोताहै और अपनीस्त्रीमें भोगभोगनेवाला और रूपकर्केयुक्त और स्त्रीकेअधीनहोताहै ५३

और जिसके जन्मसमयमें सप्तमभावका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे तव तिसकी स्त्री दुष्टाहो
तीहै ओर सुखकर्के रहित होतीहै ओर स्त्री कृत धन होताहै और स्त्री सें संग रहित होताहै ५४
और सप्तमेश तीसरे स्थानमें स्थित होवे तव अपने वलकर्के युक्त होताहै और वंधुयोंका प्यारा हो
ताहै ओर दुःखीहोताहै और क्रूरग्रहहोवेतवतिसकीस्त्रीदेवरसैंरतहोतीहै ५५ औरसप्तमेशचतुर्थ स्थानमें
स्थितहोवेतवचंचलहोताहै ओरपिताकावैरसिद्धकरणेवाला औरस्नेहकरणेवालाहोताहै और तिसकापि
ताखोटे वचन बोलनेवाला होताहै ओर तिसकीस्त्री पिताकेघरमेंरहितीहै ५६ ओर सप्तमकास्वामी प
चम स्थानमें स्थित होवे तव मनुष्य सौभाग्य कर्के युक्त और पुत्रकर्के युक्त होताहै और हठमें प्रीती
वाला और दुष्टवुद्धि होताहै और तिसके पुत्र तिसकी स्त्रीकों पालतेहैं ५७ और छठे स्थानमें सप्त

जायापतौधनस्थेदुष्टादयितासुखोज्झिताभवति वित्तंचकलत्रकरंसततंवसतो
विसंगश्च ५४ सप्तमपेसहजगतेआत्मवलोबंधुवत्सलोदुःखी देवररतासुरूपा
गृहिणीक्रूरेतुतद्गृहगा ५५ जायेशेतूर्य्यस्थेलोलःपितृवैरसाधकःस्नेही अस्यपि
तादुर्वाक्यस्तद्भार्यापालयेच्चपिता ५६ सप्तमपतौसुतस्थेसौभाग्ययुतःसुतान्वि
तःपुरुषः प्रियसाहसदुष्टमतिस्तत्तनयःपालयेद्दयिताम् ५७ रिपुगृहगःकांतेशः
प्रिययासहवैरिणंसरुग्भार्यम् दयितासंगक्षयिणंक्रूरःकुरुतेचमृत्युपदम् ५८
सप्तमपेसप्तमगेपरमायुःप्रीतिवत्सलःपुरुषः निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वीजायते
सततम् ५९ कांतेशेनिधनगतेगणिकासुरतःकरग्रहरहितः वेदद्वितयासक्तोनस्त्री
सेवाकरःपुरुषः६० सुकृतगतेसप्तमपेतेजोवान्शीलवान्प्रियाप्येवं क्रूरेतुषंढरूपो
लग्नेशवीक्षितेनयप्रबलः६१

मेश स्थित होवे सो स्त्रीके साथ वैर वर्त्ताहै और तिसकी स्त्री रोग कर्के युक्त होतीहै और क्रूर ग्रह
होवे तव स्त्रीके संगमे प्राप्त हुवा-हुवा नाशकों प्राप्त होताहै ५८ और जिसकों सप्तमका स्वामी स
प्तम स्थानमें होताहै सो परम आयुषा वाला और प्रीती वाला होताहै और निर्मलस्वभाव कर्के यु
क्त होताहै और निरंतर तेजस्वी होताहै ५९ और सप्तमका स्वामी अष्टममें स्थित होवे तव वेश्यामें
रत होताहै और विवाहसें रहित होताहैऔर दोवेदमें आसक्त होताहै और स्त्री कों नहीं सेव
ताहै ६० और सप्तमका स्वामी नवम स्थानमें स्थित होवे तव तेजकर्के युक्त और श्रेष्टस्वभा
ववाला होताहै और तिसकी स्त्रीवी श्रेष्ट होतीहै और क्रूर ग्रह होवे तव नपुंसक रूप होताहै और नी
तिमें वलवान् होताहै ६१

और सप्तमका स्वामी दशममें स्थित होवे तव राजाके दोष वाला और लंपट और क्रूरवाणी वाला होताहै और क्रूरग्रह होवे तव दुष्ट श्वसुरवाला और तिसकी स्त्री सस्सके वश होतीहैं ६२ और सप्तमकास्वामीएकादशमें स्थितहोवे तवतिसकी स्त्री भक्तियुक्त और रूपवाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली होतीहै और प्रसूतिके समयमें प्रसन्न रहितीहै ६३ और सप्तमकास्वामी वाहरमें स्थानमें स्थितहोवे सोगृह और वंधुसें हीन और स्त्री सें रहित होताहै और तिसकी स्त्री घरसें वाहर चली जातीहै ६४ इतिसप्तमभावविचार। ७

॥ अव अष्टम भावका विचार कर्तेहैं ॥ अष्टमस्थानसें जीनेका और मृत्युका विचार और निवास स्थानका विचार और मरणमें कारण किसप्रकार कर्केमृत्युहै और अन्नका सुख और मरणमें देशऔर

गृहिणीशेदशमस्थेनृपदोषीलंपटःकुवाक्क्रूरः क्रूरेदुष्टश्वशुरस्तस्यश्वश्रुवशीतुवधूः ॥ ६२ ॥ लाभस्थेजायेशेभक्तारूपान्वितासुशीलाचदयितापरिणीतास्याच्छ्रीयतेसाचप्रसवसमये ॥ ६३ ॥ सप्तमपेद्वादशगेगृहवधूनास्तिवाभवेद्भार्या सांलांलापुनरुच्चलातिचतस्यपुरुषस्य ६४ इतिसप्तमभावविचारः

अथाष्टमभावविचार· तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तसर्वार्थचिंतामणौ मरणाज्जीवनमरणंस्वस्थानंचमरणहेतुश्च अन्नसुखंमरणदेशपरिभवमपिचिंतयेत्प्राज्ञः १

पारिजाते अयुर्दायमनिष्टहेतुमुदयव्योमायुराशार्कजैरुक्तंतत्सकलंतथापिनिधनप्राप्तिंप्रवक्ष्येपुनः अल्पायुर्व्ययगेथवारिपुगतेपापान्वितेरंध्रपेलग्नेशेनयुतेतुतत्रविवलेजातोल्पजीवीनरः २ स्वस्थेरंध्रपतौचिरायुरुदयछिद्राधिपौषष्ठगौरिःफस्थौयदिवासमेतिमनुजोजातश्चिरायुर्वलम् व्यापारोदयरंध्रराशिपतय·केंद्रत्रिकोणायगादीर्घायुर्विवलाःसभानुतनयायद्यल्पमायुर्वदेत् ३

रतिरस्कार इन्होंका विचार वुद्धिमानअष्टमभावसें चिंतन करै १ और पारिजातमें कहतेहैं ॥ आयुषाका विचार और अनिष्ट उपद्रवोंका विचार और कारण लग्न। दशम। अष्टमेश। शनि इन्होंचारोंकके कहे और मृत्युकी प्राप्ति इह निर्याणाध्यायमें आगे कहेंगे और जिसके जन्ममें अष्टमेशवाहरमें वा छठे स्थानमें स्थित होवे और पापी ग्रहकर्के युक्तहोवे तव अल्पायु होताहै २ और अष्टमेश स्वक्षेत्रमेंस्थितहोवेतवचिरायुहोताहैऔरलग्नेशऔरअष्टमेशदोनों छठेवावाहरमें स्थित होवें तव मनुष्य चिरकाल आयुवलको प्राप्तहोताहै और दशमलग्नअष्टम राशिके स्वामी केंद्र त्रिकोणएकादश स्थानमें स्थितहोवे तव वडीआयुषावालाहोताहै और निर्वलऔरशनिकर्के युक्त होवें तव अल्पायुहोताहै ३

और जिसके जन्मसमयमें दशमेश और अष्टमेश और लग्नेश बली होवें और शनिकेयोगकर्के रहित होवें तब चिरायु होताहै और दशमेशऔरअष्टमेशदोनोंअतिबली होवें तब मध्यमायु होताहै और एकबली होवे तब बहुत थोडी आयुषा होतीहै और तीनों निर्बल होवें तब निरायु होताहै ४ और अष्टमका स्वामी पापी ग्रहकर्के युक्त ६ । ८ । १२ स्थानमें स्थित होवे और पापी ग्रहकी राशिमें होवे तब थोडी आयुषावाला होताहै और अष्टमेश शुभग्रहकर्के युक्त और शुभग्रहकी राशिमें स्थित होवे और शुभग्रहकर्के दृष्ट होवे और अष्टमस्थानमें स्थित होवे तब चिरायु होताहै ५ और जिसके जन्ममें लग्नेश अष्टममें स्थित होवे अथवा अष्टमेश अष्टममें स्थित होवे और पापीग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवे और मूढ राशिमें और दृश्य भावमें होवे अथवा छठे स्थानमें होवे तब आयुषासे हीनहो

कर्मेशरंध्रतनुपाबलशालिनश्चेज्जातश्चिरायुरिननंदनयोगहीनाः द्वावप्यतीवबलिनौयदिमध्यमायुरेकोबलीलघुतरायुरनायुरन्यत् ४ रध्राधिपेपापग्रहोपयातेदुःस्थानगेपापयुतेल्पमायुः शुभान्वितेशोभनराशियुक्तेशुभेक्षितेरंध्रगतेचिरायुः ५ नाशस्थेतनुपेथवानिधनपेपापिनयुक्तेक्षिते मूढेदृश्यगतेथवारिपुगृहेजातोगतायुर्भवेत् दीर्घायुर्निजतुंगगेशुभयुतेकेंद्रत्रिकोणेथवारंध्रेरंध्रपतौचिरायुरुदितंयातेविलग्नाधिपे ॥ ६ ॥ लग्नादंत्यगृहाधिपेबलवतिस्वर्क्षेचिरायुःसुखीलग्नेशोयादिरंध्रपश्चबलिनौकेंद्रस्थितौचेत्तथा आधानोदयराशितोष्टमगृहान्मेपूरणंजन्मभंशुक्रज्ञामरवंदितोक्षितयुतंयद्यायुरारोग्यभाक् ॥ ७ ॥

ताहै और अपने उच्चमें वा केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे तब बडी आयुषावाला होताहै और अष्टमस्थानमें अष्टमेश और लग्नेश होवें तब बडी आयुषावला होताहै ॥ ६ ॥ और जिसके जन्मकालमें बारहमें स्थानका स्वामी बली होयकर्के अपनी राशिमें स्थित होवे तब बडी आयुषावाला और सुखीहोताहै ॥ और लग्नेश और अष्टमेश दोनोंबली होयकर्के केंद्र १ । ४ । ७ । १० स्थानमें स्थित होवें तब बडीआयुषावाला होताहै और चंद्रमाकी राशिसे जो अष्टमराशि तिससें दशम राशि दशमस्थान और जन्मलग्न तिनमें शुक्र बुध बृहस्पति युक्तहोवें वा देखते होवें तब आयुषा और आरोग्यताकों प्राप्त होताहै ७

ओरअष्टमेशछठेआठमेबाहरमें स्थानमें स्थित होवे तब तिसकीदशांतर्दशामेंमृत्युहोतीहै और जिस राशिमेंशनिस्थितहोवेतिसकेस्वामीकीदशामेंवाअष्टमेशकीदशामेंमृत्युहोतीहै और अष्टमेशओरअष्टम स्थितग्रहकी दशामें मृत्युहोतीहै इनमें यो ग्रह बली होवे तिसका विचार करके तिसकी दशामें मृत्युकहे ८ और जिसके जन्ममें लग्नका स्वामी ६ । ८ । १२ स्थानमें स्थित होवे अथवा राहु केतु करके युक्त होवे तिसकी दशामें अथवा लग्नेश अष्टमेश करके युक्त यो ग्रह तिसकी दशा मृत्युको देतीहै और जिसराशिमें लग्नेश अष्टमेश दोनोस्थित होवें तिसके स्वामीकी दशा मृत्यु देतीहै और जिसराशिमें लग्नेश अष्टमेश स्थित होवें तिनमें प्रथम जिसमें राहुआवे तिसकी दशामें मृत्यु क्रमसें कहे ९ और कहतेहे दशमेश अष्टमेश लग्नेश और शनैश्वर इन्हों चारोंके मध्यमें यो ग्रह निर्बल

रंध्रेशेरिपुरंध्ररिःफगृहगेतत्पाकभुक्तौमृतिंमदाक्रांतगृहेशपाकसमयेरंध्रेशभुक्तौ तथा पाकेरंध्रगृहाधिपस्यतदनुक्रांतस्यभुक्तौतुवाखेटानांबलदुर्बलेनसकलं संचिंत्ययत्तद्वदेत् ॥ ८ ॥ लग्नेशेनिधनारिरिःफगृहगेसाहौसकेतौतुवाहोरार ध्रपसंयुतग्रहदशाजातस्यमृत्युप्रदा तत्खेटान्वितराशिनायकदशानाशप्र दादेहिनाम् खेटानांप्रथमागतस्यफणिनःपाकापहारेक्रमात् ॥९॥ व्यापाररं ध्रतनुनाथशनैश्चराणांमध्येविधुतदयुतोविबलोग्रहोयः तत्पाकभुक्तिसमयेमर णंनराणांतद्युक्तवीक्षकनभोगदशांतरेवा १० नाशेनाशपतौतुतद्ग्रहदशाभुक्तौ समेत्यामयलग्नेलग्नपतौतुलग्नपदशाभुक्तौशरीरार्तिभाक् पश्चादामयनाशनंत नुसुखंमोदश्चसंजायतेरंध्रेशेबलसयुतेतनुपतेर्दायेमृतिर्देहिनाम् ११ जातस्यज न्मसमयेविबलेविलग्नेलग्नेशरध्रपतिपाकमतीवकष्टं पश्चादतीवसुखमेतिविल ग्ननाथवीर्यान्वितेनिधनपस्यमृतिदशायाम् १२

होयकरके राहुके साथ युक्त होवे तिसकी दशातर्दशामें मरण होताहै अथवा तिसकरके युक्त वा देखनेवालायो ग्रहतिसकीअंतर्दशामें मरण होताहै १० और अष्टमेशअष्टमस्थानमें स्थित होवे तब तिसकी दशातर्दशामें रोगको प्राप्त होताहै और लग्नेश लग्नमें स्थित होवे और तिसकी दशांतर्दशा में रोगी होताहै और पीछेसें रोगका नाश होताहै और देहसुख और आनंदहोताहै और अष्टमेश बली होवे तब लग्नेशकी दशामें मनुष्योंकी मृत्यु होतीहै ११ और जिसके जन्मसमयमें लग्न निर्बल होवे तब लग्नके स्वामीकी और अष्टमके स्वामीकीदशामें असतकष्टहोताहै और पीछेसें अत्यंतसु खहोताहै और लग्नकास्वामी बलवान् होवे तब अष्टमेशकी दशामें मृत्युको प्राप्त होताहै १२ ॥

और जिसके जन्ममें लग्नेश और अष्टमेश बली होयकर्के केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवें जिसराशिमें स्थित होवें तिसके स्वामीकीदशामें रोगका नाश होताहै और अष्टमेश और लग्नेश कर्केयुक्त जो ग्रह सो केंद्र त्रिकोणमें स्थित होवे और अष्टमस्थानमें स्थित जो ग्रह तिसकी दशामें निश्चयकर्के मृत्युको प्राप्तहोताहै १३ और अष्टमस्थानमें ग्रह नहि होवे तबलग्न गत ग्रहकर्के चिंतनकरे और शनि लग्नमें होवे अथवा अष्टममें होवे तिसकी दशातर्दशामें मृत्यु होतीहै और अष्टमेश लग्नेश दोनों शुभग्रहहोवें तब तिनके साथ जो दुर्बल ग्रह युक्त होवे तिसकी दशातर्दशामें मृत्युकहे, १४ और लग्नसें पंचम स्थानकी राशिके स्वामी साथ जो ग्रह स्थित होवे तिसकीदशा बारांसें भागलेकर्के जो

देहेशेचविनाशपेबलयुतेकेंद्रत्रिकोणस्थिते तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमयेरोगापवादःफलं रंध्रेशस्तनुपश्चखेचरयुतौकेंद्रत्रिकोणस्थितौ रंध्रस्थानगतस्यपाकसमयेमृत्युसमेतिध्रुवम् १३ नोचेदष्टमखेचरोयदितनुप्राप्तेनसंचिंतयेन्मंदलग्नगतेथवाष्टमगतेतत्पाकभुक्तौमृतिः रंध्रेशोदयनायकौसुखचरौयुक्तग्रहाद्दुर्बलोयस्तस्यद्युचरस्यपाकसमयेभुक्तौचमृत्युंवदेत् १४ लग्नात्पंचमराशिपेनसहितव्योमाटनानांदशासंख्याभानुहृतावशेषगृहगेमृत्युंदिनेशेसति पुत्रेशोनाविथवरेण सहितस्वाब्देनसंचिंतयेल्लग्नेशेनयुताब्दमंगविहृतसंक्रांतिपूर्वेदिनं १५ त्रिकोणकेंद्रेवायदिपितृतनुक्षेत्रपतयोदशाभुक्तौतिपामनुमरणमाहुर्मुनिगणाः सभौमेमंदाढ्येफणियुजितुवंदौनिधनगे त्वपस्मारस्तस्मान्मरणमथवंदोकृशतनौ १६

योंकी राशि रहै तिसमें जब सूर्य स्थित होवे तब मृत्युहोतीहै और पंचमेश कर्के स्थित जो ग्रह होवे तिसके जितने वर्ष दशांके होवें उतने वर्षोंकर्के मृत्युकहै और पंचमेशके वर्षलग्नेशके वर्षोंसाथ मिलायकर्के तीससें ३० भागलेवे तब संक्रांतिसेंलेकर्के दिनसंख्या मरणकालमें होतीहै १५ और कहतेहै यद दशमेश लग्नेश चतुर्थेश त्रिकोण ९।५ केंद्र १।४।७।१० स्थानोंमें स्थित होवेंति नकी दशांतर्दशा कालमें मुनियोंके समूह मृत्युकहतेहैं अथवा मंगलशनि एकराशिमें स्थित होवेंअथवा राहुकर्के युक्त चंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तब मिरगी रोगकर्के मरणहोताहै अथवा क्षीणचंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थितहोवे तिसकीदशातर्दशामें मरण होताहै १६

श्रौरजिसकोंचंद्रमादूसरेस्थानेमेंअथवाअष्टमस्थानमेंस्थितहोवेतवतिसकेदेहमेंप्रसीनावहुत होताहै श्रौर जिसकों दशमस्थानमें मंगल बुधकर्के युक्त होवेतिसके देहमें दुर्गंधिश्रावतीहै श्रौरजिसके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें दो पापीग्रह होवें सो रोग श्रौर प्रमाद वालाहोताहै श्रौर जिसकों शुभग्रह दशम स्थानमें शुभग्रहकर्के युक्त होवे सो आनदके साथ सुखीहोताहै १७ श्रौर जिसकों शीर्षोदयराशियोंमें ५ ६ ७ ८ ११ वा चरराशियोंमें ४ ७ १० १ दूसरेस्थानका स्वामीस्थित होवेवालग्नेश स्थितहोवे वा राहु स्थित होवे तिनकीदशामें श्रौर धनेश लग्नेश राहुपृष्ठोदय २ १ ९ ४ ३ १० राशियोंमेंस्थितहोवेंतब तिनके द्रेष्काणकेस्वामीतिन्होंकर्केदृष्टहोवेंश्रौरयुक्तहोवेंतिनकी दशामेंमृत्युहोतीहै १८ श्रौर विशेष सर्वार्थचिंतामणीमें कहतेहे ॥ अष्टमेश श्रौर लग्नेश दोनो बलकर्के हीन होवें श्रौर मं



चंद्रे वित्तगतेथवानिधनगेजातोवहुस्वेदवान् कर्मस्थानगतेकुजेबुधयुतेदुर्गंधदेहोभवेत् पापेरंध्रगतेतुपापसहितेरोगप्रमादाकरः सौम्योव्योमगृहेतिशोभनयुतोजातःसमोदःसुखी १७ शीर्षोदयेषुचरभादिषुवित्तपस्यलग्नाधिपस्यभुजगस्य दशापहारे पृष्ठोदयेसतितदीयदृगाणपस्यतद्वीक्षितादिसहितस्यमृतिंवदेद्वा १८ सर्वार्थचिंतामणौ आयुर्विलग्नाधिपतीवलेनहीनौधरासूनुरणेशयुक्तौ युद्धेमृतिंतस्यवदंतितज्ज्ञाःशस्त्रेणवातन्मरणंविशेषात् १९ रंध्रांगनाथौयदिवारिपुस्थौराव्हान्वितौकेतुयुतौसमंदौ तद्भुक्तिकालेप्यथवाविपाकेशस्त्रेणचौरैर्मरणंप्रयाति २० रंध्रांगपौवाहननाथयुक्तौतस्मान्मृतिंतस्यवदंतितज्ज्ञाः मृतिंत्वजीर्णाद्गुरुसंयुतौतौदेहेशजीवौरिपुगावजीर्णात् २१ लग्नेश्वरेवाहननाथयुक्तेवागीश्वरेणापियुतेत्वजीर्णात् देहेश्वरेवाहनवित्तभावनाथान्वितेवामरणंत्वजीर्णात् २२

गलकर्के श्रौर षष्ठेश कर्के युक्त होवें तिसकी मृत्युयुद्धमें होतीहैश्रथवाविशेषकर्केशस्त्रसेंमृत्यु होतीहै अयसें शास्त्रकेजानने वाले कहतेहैं १९ श्रौर जिसकेजन्मकालमे अष्टम श्रौर लग्नके स्वामीछठेस्थानमे स्थित होवें श्रौर राहु केतु शनि कर्के युक्त होवें तिनकी दशामें वा अंतर्दशामें शस्त्रकर्के चोरोंके हाथ कर्के मरताहै २० श्रौर जिसके जन्मकालमें अष्टम श्रौर लग्नके स्वामीचतुर्थेश कर्के युक्तहोवें तब वाहनकर्के मृत्युको प्राप्तहोताहै श्रौर अष्टमेश लग्नेश दोनों बृहस्पतिकर्के युक्त होवें तब अजीर्णकर्केमरताहै २१ श्रौर लग्नेश चतुर्थके स्वामीकर्के युक्त होवें श्रौर बृहस्पति कर्के युक्त होवें तब अजीर्णसेंमरताहै श्रौर लग्नेश चतुर्थ श्रौरधनभावके स्वामी कर्केयुक्त होवे तबवोअजीर्णसेंमरताहै २२

और कहतेहें यो ग्रह अष्टमेश कर्के युक्त होताहै तिसकी दशामें वा अंतर्दशामें मरण कहतेहैं और पित्रादि भावोंके स्वामी अष्टमेश कर्के युक्त दृष्ट होंवें तव तिन्हकी दशांतर्दशामें पित्रादिकोंका मरण कहतेहैं २३ और जिस्के जन्मसमयमें अष्टम भावमें शुभग्रहोका संवध होवे तव तिसका निरकार नाहि होताहै और अष्टमस्थानमें चर। १ ४ । ७ । १० । राशि स्थित होवे और अष्टमका स्वामी चर राशिमें स्थित होवे तव परदेशमें मृत्यु होतीहै २४ अथवा शनि चरराशि और चर नवांशम स्थित होवे तबवी विदेशमें मरताहै और अष्टम भावमें स्थिरराशिऔरस्थिरराशि २५८११ नवांशमेंस्थितहोवेवाअष्टमकास्वामीहोवेतवअपनेघरमेंमृत्युकानवाशहोवेअथवाशनिस्थिरराशिऔरस्थिरनवांशमेंस्थितहोवेवाअष्टमकास्वामीहोवेतवअपनेघरमेंमृत्यु कोंप्राप्तहोताहै२५और अष्टमभावमें द्विस्वभावराशि और नवांशहोवेंतव रस्तेमेंमृत्युकोंप्राप्तहोताहै २६

रंध्रेशयोगान्मरणंदशायामंतर्दशायामथवावदंति पित्रादिभावाधिपयोगदृष्ट्या पित्रादिकानांमरणंतथैव २३ शुभग्रहाणांसंबंधेरंध्रेपरिभवोनहि चरेरंध्रेस्थितिर्दूरेतदीशेचरराशिगे २४ शनौवाचरराशिस्थेचरांशस्थेतदाभवेत् स्थिरेरंध्रेतदीशेपिस्थिरराशौतदंशके २५ शनौवास्थिरराश्यंशेस्वगृहेमरणंभवेत् रंध्रेद्विदेहराश्यंशेमार्गेमरणमादिशेत् ॥ २६ ॥ अथाष्टमपतिभावफलं नेष्टानुवादनि जन्मप्रदीपे अष्टमपेलग्नगतेवहुविघ्नोदीर्घरुक्स्तेनः रतोलक्ष्मींलभतेनृपतिवचसा. ॥ २७ ॥ निधनपतौधनलीनेल्पजीवी वैरिवान्नृपश्चौरः क्रूरेसौम्येतुशुभंकिंतुक्षितिपालतोमरणम् २८ अष्टमपतौतृती येबंधुविरोधीसुहृद्विरोधीच व्यंगोदुर्वाग्लोलःसोदररहितोभवत्यथवा २९

अब अष्टमेशका द्वादशभावमें फलकहतेहै जिसके जन्ममे अष्टमका स्वामीलग्नमें स्थितहोवेसोवहुत विघ्नोंकों प्राप्तहोताहै और दीर्घरोगी होताहैऔर चोर होताहै और अशुभकर्ममेंरतहोताहै और राजाके वचनकर्के धनकों प्राप्तहोताहै २७ और अष्टमेश दूसरेस्थानमे स्थितहोवे तव थोडाकालजीताहै और शत्रुयोंकर्के युक्त और जीवरक्षकऔरचोरहोताहैक्रूरग्रहहोवे तवऔर शुभ ग्रह होवे तवशुभ फल कर्ताहै और राजासे मृत्युकों प्राप्तहोताहै २८ और अष्टमका स्वामी तीसरेस्थानमें स्थितहोवे तव भाईयोंसे मित्रोंसे विरोधीहोताहै और व्यंगहोताहै और दुष्ट वाणीवाला और चंचलहोताहै अथवा भ्रातासें रहित होताहै २९

और अष्टमेश चतुर्थस्थानमें स्थितहोवे तवपिताका शत्रुहोताहै और पिताके धनकोंहरताहै और पितापुत्रकी लडाई होतीहै और पिता रोगकरकेयुक्त होताहै ३० औ अष्टमकास्वामी पाचमेंस्थानमें स्थितहोवेऔरक्रूरग्रहहोवेतवपुत्रहीन और शुभकरकेश्रेष्ठपुत्रवाला होता और तिसकापुत्र जीतानहि जेकरजीवे तव धूर्तकर्म कर्ताहै ३१ और अष्टमेश छठेस्थानमें और सूर होवेतवराजाकाविरोधीहोताहै और वृहस्पतिहोवेतव देहमें खेदकरकेयुक्त होताहै और शुक्रहोवे तव नेत्रोंमें दोषवाला होताहै और चंद्रमाहोवे तव रोगीहोताहै और अष्टमेश मंगल छठे स्थानमें स्थित होवे तव दूसरेकी स्पर्धावाला होताहै और बुध अष्टमेश छठे स्थानमें होवे तव सर्पके भयकों प्राप्त होताहै और शनि अष्टमेश छठे स्थानमें स्थित होवे तव मुखपीडा करकेयुक्त होताहै औरचंद्रमाकरके और शुभग्रहकरके दृष्ट होवे तव खोटाफलकुछनहिकर्ताहैऔर तैसेंहि चंद्रमासें अष्टम घरके स्वामी छठे स्थानमें स्थित होवें तव कष्ट कर्तेहैं ३२ और जिसकों अष्टमका स्वा

निधनेशेतूर्य्यगतेपितुररिपुःपितृतोनयेल्लक्ष्मीं पितृपुत्रयोश्चयुद्धंपिताचरोगान्वितोभवति ३० छिद्रपतौतनयस्थेक्रूरेसुतविरहित शुभेसुसुत जातोपिनैवजीवति जीवत्यथकैतवकर्मरतः ३१ छिद्रेशेरिपुसंगतेदिनकरेभूभृद्विरोधीगुरोस्वगेसीदतिदृष्टिरोगकलितः शुक्रेसरोगीविधौभौमेपर्य्यासहितोबुधेहिभयभृत्तुंडार्त्तिभूतःशनौकष्टंचैवविधोर्हितत्रशशुभैःसौम्यैक्षितेनैवकिम् ३२ मृत्युपतौसप्तमगेदुष्टःकुस्त्रीप्रियोगुदव्याधिः क्रूरेभार्याद्वेषीकलत्रदोषान्मृतिंलभते ३३ निधनपतौनिधनगतेव्यवसायीव्याधिवर्जितोनीरुक् कितवकलाकलितवपुःकितवकुलेजायतेविदितः ३४ मृतिनाथेनवमस्थेनि संगीजीवघातकःपापी निर्बंधुर्निःस्नेहीपूज्येविमुखोमुखव्यंगः ३५ कर्मगतेनिधनेशेनृपकर्मानीचकर्मनिरतश्च आलसः क्रूरोन्यभवस्तनयोवानजीवतिमाता ३६

मी सप्तम स्थानमें क्रूर ग्रह होवे तव दुष्ट होताहै और खोटी स्त्रीका प्यारा होताहै और गुदाकेरोगकरके युक्त होताहै और स्त्रीका द्वेषी होताहै और स्त्रीके दोषसें मृत्युकों प्राप्त होताहै ३३ और अष्टमका स्वामी अष्टममें स्थित होवे तव वडे उद्यमके करणे वाला और उपद्रवोंसें रहित और रोगहीन होताहै और धूर्त कलाकरकेयुक्त होताहै और धूर्तोंके कुलमें प्रसिद्ध होताहै ३४ और अष्टमका स्वामी नवमस्थानमेंस्थित होवे तव संगसेंरहितऔर जीवोंकाघातकरणेवालाऔरपापी होताहै और बंधुहीन और स्नेहकरके हीन और गुरुदेवतासें विमुख औरटेढेमुखवालाहोताहै ३५ और दशम स्थानमें अष्टमेश स्थित होवे तव राजाका चाकर और नीचकर्मकरणे वाला होताहै और आलसी और क्रूर स्वभाववाला अथवा अन्यजात होताहै अथवा तिसकी माता नहि जीवतीहै ॥ ३६ ॥

और अष्टमका स्वामीएकादशमे स्थितहोवे सो बाल्यावस्थामें दुःखी होताहै और पिछली अवस्था में सुखी होताहै और शुभग्रह होवे तब बडी आयुषा वाला और पापी ग्रह होवे तब थोडी आयुषा वाला होताहै ३७ और अष्टमका स्वामी बारमें स्थानमें स्थित होवे तब क्रूरग्रहसें चोर और शठ और निषिद्ध होताहै और अपनी इच्छासे चलने वाला और टेढेदेह वाला और मृतहुये पीछे तिसके देहको काक और कुत्ते भक्षण करतेहे । ३८ । इत्यष्टमभावविचारः । ८ । अब नवम भावका विचार कहतेहें तिसमें क्या २ वस्तुका विचारहै सो कहतेहें भाग्योंका प्रभाव और गुरु और तप और धर्म और शुभकर्म इन्होंका विचारनवमभावसे और बृहस्पतिसे करे और जिसके जन्मकालमें नवमका स्वामी और बृहस्पति शुभग्रहके वर्गमें स्थित होवें और नवममें शुभ ग्रह युक्त होवे सो भाग्यवान् होताहै १ और यदनवमस्थानमें पापीग्रह और शत्रुनीचराशिमें स्थितऔरअस्ततयो ग्रहहैसो स्थित होवे तब यश और धन और धर्म करके रहित होताहै और पापीग्रहवीअपनेउच्चमें और मित्र

लाभस्थेचाष्टमपेबाल्येदुःखीसुखीपश्चात् दीर्घायुःसौम्यग्रहेपापेल्पायुर्नरोभवति ३७ व्ययसंस्थितेष्टमेशेक्रूरेवातस्करःशठोनिकृष्टश्च आत्मगतिर्वक्रवपुर्मृतस्तुकाकादिभिर्भक्ष्यः ३८॥ इत्यष्टमभावविचारः अथनवमभावविचारः॥ तत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम् भाग्यप्रभावगुरुधर्मतपःशुभानिसंचिंतयेन्नवमदेवपुरोहिताभ्याम् भाग्येशदेवसचिवौशुभवर्गयातौ भाग्येशुभग्रहयुतेसमुपेतिभाग्यम् १ पापारिनीचरविलुप्तकरानभोगाभाग्यस्थिताः यदियशोधनधर्महीनः पापोपितुंगनिजमित्रगृहोपगश्चेद्भाग्येतुभाग्यफलदः सततंनराणाम् ॥ २ ॥ सौम्यस्वामियुतेक्षितेनवमभेभाग्यप्रदंप्राणिनांतद्राशीशसमेतराशिरमणोभाग्यस्यकर्त्ताभवेत् ॥ भाग्येशःपरिपाचकोभवतितत् पुत्रेश्वरोबोधनस्तुंगाःस्ववर्गस्थिरगृहोपगायदिचिरंभाग्यंप्रकुर्वंतिते ३ भाग्यस्थेदशवर्गजोच्चभवनस्वांशस्थितेपंचकेभाग्यश्रीविपुलंसमेतिनृपतिस्तत्स्वामियुक्तेक्षिते ॥ चत्वारोबलशालिनोनवमगाभाग्यंप्रयच्छंतिते तुंगस्वांशगताःस्वदेशविभवंत्वन्यत्रचान्यंशगाः४

और जिसके जन्मकालमें नवमक्षेत्रमें नवम स्थानमें गत होवे तब निरंतर भाग्यफलको देतेहे २ और जिसके जन्मकालमें नवम भाव शुभग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तिसको भाग्योदय करतेहे और नवमका स्वामी जिस राशिमें स्थित होवे तिस राशिका स्वामी ग्रह भाग्यकर्त्ता होताहै अर्थात् तिसग्रहकी प्रकृतिकरके और जात्यादिगुणाकरके भाग्योदय होतेहैं और जिसके जन्मकालमें नवमेश पाचकावस्थामें और पंचमेश बोधनावस्थामें स्थित होवे और उच्च स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तब चिरकाल भाग्यको प्राप्त होताहे ॥ ३ ॥ और जिसके जन्मकालमें नवम स्थानमें पांचग्रह दशवर्गीमें अपने उच्च और स्वक्षेत्र और स्वनवांश और मित्रके नवांशमें स्थित होवें और नवमेश करके युक्त दृष्ट होवें सो भाग्य और बहुतलक्ष्मीकरके युक्तराजा होताहै और चार ग्रहबली होयकरके नवमस्थानमें स्थितहोवें और उच्च स्वनवांशमें स्थित होवेंसोअपने देशमें ऐश्वर्यको प्राप्त होताहै और अन्यराशिकेनवांशमें स्थितहोवे तब विदेशमें भाग्योंवालाहोताहै ४

और नवमभाव और नवमका स्वामी शुभग्रह कर्के युक्त दृष्ट होवे सो निश्चयकर्के भाग्यों को प्राप्त होताहै और नवमस्थानमें शुक्र वा चंद्रमा पाप ग्रह कर्के युक्त होवे तब गुरुकी स्त्रीमें रत होताहै और नवम स्थानमें बृहस्पतिसूर्यकर्केदेख्याहोवेतबराजावाराजाका मंत्रीहोताहै औरबुधकर्केदेख्या होवे तब धनीहोताहै और शुक्रकर्केदेख्याहोवे तब घोडयोंकास्वामीहोताहै और चंद्रमा कर्केदेख्याहोवे तब सुखी होताहै और शनिकर्केदेख्याहोवे तब ऊठोंसें लेकर्के चार पाए जीवोंकेधनवाला होताहै ५ और जिसकेजन्मकालमें बृहस्पतिचंद्रमा सूर्य कर्के देखेहोवें सो विद्यावान् और हाथी घोडेयों कर्के और गौयोंकर्केधनवान् होताहै नवमकास्वामी और बृहस्पतिमंगलसूर्यकर्केदेखेहोवेंतबसेनाऔरवाहनों कर्के युक्त और धनका स्वामी होताहै और सूर्यबुधकर्के देखेहोवें तब विद्यावादके आनद वाला और बडे धनवाला होताहै और नवम स्थानमें बृहस्पती शुक्र सूर्यकर्के देखेहोवें तब नम्रवाणी वाला

भाग्येतत्पतिशोभनेक्षितयुतेभाग्यंसमेतिध्रुवंधर्मेपापयुतेभृगौशशिनिवाजातो गुरुस्त्रीरतः ॥ दृष्टेर्केणगुरौनृपःक्षितिभुवांमंत्रीबुधेनार्थवान्शुक्रेणा श्वपतिःसुखीतुशशिनामंदेनचोष्ट्रादिभाक् ॥ ५ ॥ विद्वान्वारणगोतुर गधनवानिंद्वर्कदृष्टेगुरौसेनावाहनरत्नवान्नवमपेजीवेकुजार्केक्षिते ॥ विद्यावाद विनोदवित्तविपुलःसूर्येंदुजालोकिते ॥ शुक्रादित्यनिरीक्षितेविनयवाक्जी वेतपस्थानगे ॥ ६ ॥ मंदादित्यनिरीक्षितेगुणनिधिःप्राज्ञोबहुग्रामवान् ॥ जीवेचंद्रकुजेक्षितेपृथुयशःसेनामुखश्रीयुतः ॥ तारेशेंदुजवीक्षितेगृहसुख श्रेष्ठार्थशय्यासनःशुक्रेंदुप्रविलोकितेवितनयःशूरोधनीकर्मकृत् ७ चंद्रादि त्ययुतेक्षितेतुगुणवान्वादीविदेशंगतोजीवेशुक्रबुधेक्षितेनवमगेविद्याधिकोजा यते ॥ सर्वव्योमचरेक्षितेनरवरोराजाबहुद्रव्यवान्सौभाग्यांबरराज्यवित्तफल दाःसर्वेतपस्थानगाः ८

होताहै ६ और शनिसूर्यकर्के देख्याहोवे तबगुणका समुद्र और चतुर और बहुत ग्रामों वाला होताहै और नवम स्थानमेंबृहस्पति चद्रमा मंगल कर्के देख्या होवे तब वडे यशवाला और सेनासें लेकर्के शोभासें युक्त होताहै और चंद्रमा बुधकर्के देख्या होवे तब घरका सुख और श्रेष्ठधन और शय्या और आसनके सुखको प्राप्त होताहै और शुक्र चंद्रमा कर्के देख्या होवे तब पुत्ररहित और शूरवीर और धनी और कर्मके करणे वाला होताहै ७ और चद्रमा शनि कर्के देख्या होवे तब गुणी और वादी और विदेशमें जाने वाला होताहै और नवम स्थानमे बृहस्पति शुक्र बुध कर्के देख्या होवे तब अधिक विद्या कर्के युक्त होताहै और संपूर्ण ग्रहोंकर्के देख्या होवे तब मनुष्यों मे श्रेष्ठराजा बडेद्रव्यवाला होताहै और सर्वग्रह नवम स्थानमें स्थित होवें तब सौभाग्य और वस्त्र और राज धनफलका देतेहैं ८

॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमा नवम स्थानमें स्थित होवे और शनि बुध मंगल कर्के देख्या होवे सो राजा होताहै और उच्चराशि गत नवम स्थानमें ग्रह स्थित होवे और शुभग्रह कर्के दृष्ट होवे तव राजा होताहै और नवम स्थानमें चंद्रमा कर्के युक्त सूर्यहोवे तव धनी होताहै और नेत्र रोगकर्के पीडित और विवादकरणेवाला होताहै और मंगल कर्के युक्त सूर्य नवम स्थानमें स्थित होवें तव राजाका प्यारा होताहै ९ और सूर्य बुधकर्केयुक्तहोवें तव बहुत शत्रुयो कर्के पीडित होताहै और दुःखी और रोग कर्के पीडित होताहै और सूर्यबृहस्पति कर्के युक्त होवे तव पिताकी प्रसन्नता करणे वाला और धनीहोताहै और सूर्यशुक्र कर्के युक्तहोवे तव रोगी होता है और शनिकर्के युक्तहोवे तव तिसका पिता कुक्षिरोग कर्के पीडित होताहै और चंद्रमा मंगलकर्के युक्त होवे तव माताके हत करणे वाला और धनर हित होताहै १० और नवम स्थानमें चंद्रमा

भाग्यस्थेशशिनिप्रभाकरसुतज्ञारेक्षितेभूपतिस्तुंगव्योमचरेतपस्थलगतेभूपः शुभालोकिते ॥ सेंदौतिग्मकरेतुतत्रधनिकोनेत्रामयार्त्तोभवेद्दुःखी वादरतःकुजेनसहितेभानौनृपालप्रियः ॥ ९ ॥ भानौसेंदुसुतेसपत्न वहुलोदुःखीरुगार्त्तःसदावागीशेनयुतेपितृप्रियकरोजातःस्वयंवित्तवान् रोगी शुक्रयुतेरवौशनियुतेरुग्णःपिताकुक्षिरुक्चंद्रेसावनिनंदनेतुजननीहंताधनत्या गवान् १० वाग्मीशास्त्रकलापवान्नवमगेचंद्रेसतारासुतेसेंदौमंत्रिणिधीरधीर्न रवरःश्रीमान्गुरुस्थानगे तारेशेकुलटापतिःसभृगुजेसापत्नमातृप्रियश्चंद्रेम दयुतेविधर्मगुणवान्माताकुलप्रच्युतः ॥ ११ ॥ शास्त्रीभोगसुखी कुजेवुधयुतेसेड्येधनीपूजितः ॥ शुक्रेणाद्विवधूपतिःसहकुजेवादीविदेशंगतः भानौभानुसुतान्वितेनवमगेपापीपरस्त्रीरतः ॥ सौम्येसामरवंदितेपटुमति विद्वान्धनीपण्डितः ॥ १२ ॥

बुध कर्के युक्त होवे तव वक्ता और शास्त्रोंके जानने वाला होताहै और चंद्रमाबृहस्पति कर्के युक्त होवे तवधैर्यबुद्धिवाला और राजा और लक्ष्मी वान् होताहै और बुध शुक्र दोनों नवम स्थानमें स्थित होवें तव व्यभिचारणीस्त्रीका स्वामी और विमाताका प्यारा होताहै और चद्रमा शनिकर्केयु क्त होवे तव धर्महीन गुणों वाला और मातृ कुलसे रहित होताहै ॥ ११ ॥ और नवम स्थानमें मगल बुध दोनों स्थित होवें तव भोगोंके सुख वाला होताहै और मगल बृह स्पति दोनोंस्थितहोवेंतव धनीऔर लोकोंकर्केपूज्यहोताहै और मंगलशुक्रकर्के युक्त होवे तब स्त्रीयोंका स्वामी होताहै और वादकरणे वाला और विदेश गमन करणे वाला होताहै और नवम स्थानमें सूर्य शनिकर्के युक्त होवे तव पापी और परस्त्रीमें रत होताहै और बुध बृहस्पति कर्के युक्त नवममें स्थितहोवे तव चतुरबुद्धि और विद्वान् और धनी और पंडित होताहै १२

और बुध शुक्रकर्के युक्त होवे तब चतुरऔर गीतमेंप्रीति वाला और रतिमें प्रीति वाला होताहै और पंडित होताहै और बुध शनिकर्केयुक्तहोवे तब रोगीहोताहै और बडे धन वालाऔर सत्यबोलनेवाला होताहै और बृहस्पति शुक्र कर्के युक्त होवे तब बडी आयुषा वाला और बडी लक्ष्मी वाला होताहै और बृहस्पति शनिकर्के युक्त होवे तब रोगयुक्त और रत्न धन वाला होताहै और शुक्र शनिकर्के युक्त होवे तब राजाके बराबर मानवाला होताहै १३ ॥ इतिनवमभावेद्वियहयोगाः ॥ और जिसके जन्मसमयमें सूर्य चंद्रमा मंगल नवम स्थानमें स्थित होवें तब क्षतकर्के युक्त अंगों वाला और पिता मातासें रहित होताहै और सूर्य चंद्रमा बुध स्थित होवें तब हिंसा करणेवाला होताहै और सूर्य चंद्र बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब सुख और वाहनों कर्के युक्त होताहै १४ और सूर्य चंद्रमा शुक्र नवम स्थानमें स्थित होवें तब स्त्रीसें लडाई करणे वाला और राजाका प्यारा और धनके नाश करणे वाला होताहै और सूर्य चंद्रमा शनि नवममें स्थित होवें तब चाकरी करणे वाला और

प्राज्ञोगीतरतिप्रियःसभृगुजेचंद्रात्मजेपण्डितःसौम्येमंदयुतेतुरोगतनुकोवित्ताधिकोसत्यवाक् जीवेशुक्रयुतेचिरायुरधिकश्रीमान्समंदेगुरौरोगीरत्नधनःसितेसितयुतेभूपालतुल्योभवेत् १३ रवींदुभौमानवमोपयातायदिक्षतांगःपितृमातृहीनःहिंस्रोविकमारविचंद्रसौम्यारवींदुजीवाःसुखवाहनाढ्यः १४ चंद्रार्कौससितौवधूकलहकृत्राजप्रियोवित्तहा भाग्यस्थोरविशीतगूशनियुतोभृत्योविरोधीसतां ॥ रव्यारौसबुधौतुतत्रसुभगःक्रुद्धोविवादप्रियःसेड्यौदेवपितृप्रियःसुतवधूवित्तान्वितोजायते ॥ १५ ॥ सूर्यारौससितौविवादनिरतःकोपीवधूदूषकःछायासूनुयुतौविबंधुरधनोऽसाधुःपितुर्मारकः ॥ धर्मस्थौरविचंद्रजौगुरुयुतौराजप्रियोवित्तवान्सार्कजौराजसमःसभानुतनयौपापीपरस्त्रीपतिः १६ जीवार्कौसितसंयुतोपरवधूसक्तोधनीपण्डितः सार्कीजीवदिवाकरौचाविटस्त्रीस्वामीतपस्थानगौ ॥

श्रेष्ठ जनोंका विरोधी होताहै और सूर्य मंगल बुध नवममें स्थित होवें तब श्रेष्ठ भाग्यों वाला और क्रोधी और विवादमें प्रीति वाला होताहै और सूर्य मंगल बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब देवता पितरोंमें प्रीति वाला और पुत्र स्त्री धन कर्के युक्त होताहै १५ और सूर्य मंगल शुक्र नवममें स्थित होवें तब विवादमें रत और क्रोधी और स्त्रीका द्वेषी होताहै और सूर्य मंगल शनि नवममें होवे तब बंधुहीन धनहीन और खोटे स्वभावाला और पिताके मारणे वाला होताहै और सूर्य बुध बृहस्पति नवममें स्थित होवें तब राजाका प्यारा और धनी होताहै और सूर्य चंद्रमा बृहस्पति नवममें स्थितहोवें तब राजाके तुल्य होताहै और सूर्य बुध शनि नवममें होवें तब पापी और प्राई स्त्रीका स्वामी होताहै १६ ॥ और सूर्य बृहस्पति शुक्र नवम स्थानमें होवें तब प स्त्रीमें सक्त और धनी और पंडित होताहै और सूर्य बृहस्पति शनि नवममें स्थित होवें तब व्यभिचारिणी स्त्रीका स्वामी होताहै

और सूर्य शुक्र शनि नवममें स्थित होवें तव हीन और राजदण्डको प्राप्त होताहै और चंद्रमामंगल
बुध नवममें होवे तव बाल्यावस्थामें दुःखी और अन्त्यावस्थामें और मध्यावस्थामें सुखीहोताहै १७
और चद्रमा मगल वृहस्पति नवममेंस्थित होवें तव देवताकेआराधनमें तत्परहोताहै और चंद्रमामंग
ल शुक्र नवममें होवें तव नष्टस्त्रीवाला और अंगोंमें क्षत युक्त होताहै और सूर्य चंद्रमा शनि नवम
में होवें तव क्षुद्र और माताके हरणे वाला और राजाके तुल्यहोताहै और चद्रमा बुध वृहस्पति न
वममें स्थित होवें तव आचार्य और धनी और ऐश्वर्य करके युक्त होताहै १८ और चंद्रमाबुध शुक्र
नवममेंहोवें तव विमाताकरकेयुक्तहोताहै और चद्रमा बुध शनि नवममेंहोवे तव पापी और विवा
दी और बुद्धियुक्तहोताहै १९ और चद्रमा वृहस्पति शुक्र नवममें होवें तव राजाहोताहै और चंद्र
मा बुध शनि नवममें होवें तव श्रेष्ठगुणोंवाला और श्रेष्ठ कर्मोंवाला और श्रेष्ठस्वभाववाला होता

आदित्यासितभार्गवानवमगाहीनोनृपैर्दंडितोवाल्येतप्तमना-सुखीचपरतश्चंद्रार
शीतांशुजाः १७ देवाराधनतत्परोनवमगैश्चंद्रारवागीश्वरैर्जातोनष्टकलत्रवा
न्क्षततनु शुक्रेंदुभूनंदनैः क्षुद्रोमातृहरोमहीपतिसमश्चंद्रारसूर्यात्मजैराचार्योधन
वान्विभुश्चरजनीनाथज्ञदेवार्चितैः १८मातु सपत्नीजनकोविभु स्याच्चंद्रज्ञशुक्रानव
मोपयाताः पापोविवादप्रियवुद्धियुक्तोजात सुधारश्मिवुधार्कपुत्रैः १९ चंद्राम
रेज्यौससितौमहीप साकात्मजौसद्गुणकर्मशीलः मंदज्ञशुक्रानरपालतुल्यःक्र
यिक्रियावित्तपरोगुरुस्थाः २० राजप्रियोमांडलिकःमर्जीवौभाग्यस्थितौभूसु
तचंद्रपुत्रौ शास्त्रीसशुक्रौचपलश्चभीरुः सभानुजौवादपरोसमर्थः २१ ख्याती
विद्वान्धर्मवान्जीवसौम्यौधर्मस्थानेदानवाचार्ययुक्तौ विद्यावाग्मीसासितौध
र्मयानाराजश्रीमान्जीवशुक्रज्ञचंद्राः २२

है और बुध शुक्र शनि नवमस्थानमें होवें तव राजाके वरावर मानवाला और क्रियकर्मसे धनकोप्रा
प्तहोताहै २० और मंगल बुध वृहस्पति नवममें होवें तव राजाकी प्रीतिवाला और मंडलका
स्वामीहोताहै और मंगलबुधशुक्रनवममें स्थितहोवेंतवशास्त्रकेजाननेवालाऔरचपलऔर डरणेवाला
होताहै और मगल बुध शनि नवममें होवें तव वादकरणेमें युक्त और असमर्थवाला होताहै २१
और नवम स्थानमें बुध वृहस्पति शुक्रस्थितहोवें तव प्रसिद्ध और विद्यावान् और धर्मी होताहै और
बुध वृहस्पति शनि नवममें स्थित होवें तव विद्या युक्त और वक्ता होताहै ॥ इतित्रिग्रहयोगः ॥
और जिसके जन्ममें चंद्रमा बुध वृहस्पति शुक्र नवम स्थानमें स्थित होवें सो राजलक्ष्मीवा
लाहोताहै २२

श्रौर सूर्य मंगल वृहस्पति शनि नवममें स्थितहोवेंतव हठकर्के श्रौर पराक्रमकर्केधनकोउत्पन्नकरैहै श्रौर चंद्रमा मंगल वृहस्पति शुक्र नवममें होवें तव शूरवीरश्रौर संपूर्ण गुणश्रौर प्रपंचके जानने वाला होताहै श्रौर जिसके जन्मकालमें छै अथवा पांच अथवा तीन वा चारग्रहनवमस्थानमें स्थित होवे सो कल्याणको प्राप्तहोताहै श्रौर वुध कर्के युक्त तीन चार पांचग्रहोंकायोग होवे तव राजा होताहै श्रौर वुध वृहस्पति केविनाअन्यग्रहोकायोगनवमभावमेंहोवेतवशुभफलनाहिं होताहै २३ श्रौर जिसकेजन्मसमयमें वुध वृहस्पति सेरहितसंपूर्णग्रह नवम स्थानमें स्थित होयें सोव्याधिकर्के पीडित श्रौर जनोंकर्के श्रौर भाईयोकर्के हीन श्रौर धनकर्केपीडित श्रौर अत्यंतदीन होताहै २४ श्रौर जिसके जन्ममें नवमका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थित होवे श्रौर नीच शत्रुकीराशिमें स्थित ग्रह कर्के देख्या होवे श्रौर क्रूर ग्रहके नवांशमें वा क्रूर षष्ट्यंशमें स्थित होवे तव भाग्य हीन होताहै

जातःसाहसविक्रमार्जितधनःसूर्यारजीवार्कजैः शूरःसर्वगुणप्रपंचरसिकःशुक्रारजीवेंदुभिः षट्पंचत्रिचतुर्वियच्चरयुतेभाग्येसमेतिश्रियंराजत्वंसवुधेविवोधनगुरौ जातःसमेत्याश्रियम् २३ जनयतिभाग्यसंस्थागुरुसौम्यविवर्जिताग्रहाःपुरुषं व्याधिप्रायंकांतजनहीनंधनार्त्तमतिदीनम् २४ भाग्याधिपेविनाशस्थेनीचशत्रुखगेक्षितेक्रूरांशेनीचराश्यादौभाग्यहीनोभवेन्नरः२५ भाग्याधिपेशुभयुतेशुभग्रहनिरीक्षिते तद्भावेशुभसंबंधेतत्कीर्त्तिधनभाग्यवान् २६ सिंहासनांशेतन्नाथेलग्नेशेननिरीक्षिते ॥ कर्माधिपेनसंदृष्टेमहादानकरोभवेत् २७ जातः पुरोहितोवापिब्रह्मवंशसमुद्भवः दानाध्यक्षोपकारीस्याद्वक्रभेदेविकल्पता २८ गुरौतद्भावसंयुक्तेनवांशाधिपतोतथा शुभग्रहेक्षितेवापिगुरुभक्तियुतोभवेत् २९ गुरुस्थानेसौम्ययुतेगुरुवर्गसमन्वितेतदीशेगुरुभावस्थेगुरुभक्तिरतःसुखी ३०

२५ श्रौर नवमका स्वामी शुभग्रह कर्के युक्त दृष्ट होवे श्रौर नवम भावमें शुभ ग्रहका संबंध होवे तव यश श्रौर धन श्रौर भाग्योंकर्के युक्तहोताहै २६ श्रौर जिसके जन्ममेंनवमका स्वामी सिंहासनांशमें स्थित होवे श्रौर लग्नेश कर्के देख्या होवे श्रौर दशमके स्वामी कर्के देख्या होवे तव महा दानके करणे वाला होताहै २७ श्रौर पुरोहित वा ब्राह्मण कुलमें दानाध्यक्ष श्रौर परोपकारी होताहै श्रौर वक्रगतिके भेदकर्के विकल्पकर्के पुरोहितादि कुलमें जन्मताहै २८ श्रौर वृहस्पति नवम भावमें स्थित होवे अथवा नवांशका स्वामी नवममें स्थित होवे श्रौर शुभग्रह कर्के दृष्ट होवे तव गुरुभक्तिमें युक्तहोताहै २९ श्रौर नवम स्थानमें वृहस्पतिके वर्गमें शुभग्रह युक्त होवे श्रौर नवमेश नवम भावमें स्थित होवे तव गुरुभक्तिकर्के युक्त होताहै ३०

श्रोराजिसकेजन्मसमयमें शुभग्रह बृहस्पति और शुक्रकेनवांशमें स्थितऔरनवमेश करके दृष्टहोवे और शुभग्रहोंके मध्यमें स्थितहोवेसो मनुष्यधर्मके करणेवालाहोताहै ३१ और नवमस्थानमेंपापीग्रहस्थित होवे और नवमेश पापी ग्रहकरके युक्त होवे तव पापके करणे वालाहोताहै अथवा क्रूर षष्ट्य शमें युक्त होवे तव धर्महीन होताहै ३२ और जिसके जन्मकालमें नवमका स्वामी बली होयकरके कद्र १।४।७।१० कोण ९।५ स्थानमें स्थित होवेतव अनेक शुभकर्मोंको प्राप्त होताहै और लग्नेश करके लग्न देख्या होवे और नवमेश बृहस्पतिके नवांश द्रेष्काण त्रिंशांशमें स्थितहोवे अथ वा दशमेशस्थितहोवे तवभोगोंकोत्यागकर्केतपस्वीहोताहै ३३ और जिसकेजन्ममें सर्वग्रह उच्चके होयकर्केनवमस्थानमें स्थितहोवेंसो धन और स्वर्णकीश्रेष्ठसमृद्धिकोंउत्पन्नकर्तेहैं औरयदनवमस्थानमें

गुरुशुक्रबुधांशस्थेधर्मनाथेनवीक्षिते शुभग्रहाणांमध्यस्थेधर्मकृत्सनरोभवेत् ॥ ॥ ३१ ॥ धर्मेपापेपापभाक्स्यात्तदीशेपापसंयुते ॥ क्रूरषष्ठ्यंशकेवापि धर्महीनोभवेन्नरः ॥ ३२ ॥ बलवतिशुभनाथेकेंद्रकोणेपयाते शुभशतमुप यातिस्वामिदृष्टेविलग्ने सुरगुरुनवभागात्रिंशदृशत्रिभागे दशमभवनपेवावीतभो गस्तपस्वी ३३ सकलगगनवासःस्वोच्चगाभाग्यराशौधनकनकसमृद्धिंश्रेष्ठम् त्पादयंतियदिशुभखचरेंद्रैस्तत्रदृष्टानभोगाविनिहतरिपुपक्षोदिव्यदेह सुकीर्त्तिः३४ तातेशतत्कारकखेचरेंद्रौदु स्थौतयोःपुत्रमुखंनदृष्ट केंद्रत्रिकोणायदितौनभोगौव दैतयोःपुत्रमुखंहिदृश्यम् ॥ ३५ ॥ पितुर्निशायांमरणसुखशशुक्रेदिवःषष्ठगता बलाढ्याः सारीश्वरास्तन्मरणंतथैवचंद्रेणहीनास्तुदिवामृतिःस्यात् ॥ ३६

स्थित ग्रहशुभग्रहोंकर्केदेख्याहोवे तब शत्रुपक्षकोंहतकर्केसुंदरदेहवाला और श्रेष्ठयशवालाहोताहै३४ और जिसके जन्मकालमें पितृभावका स्वामी और पितृभावका कारक छठे अष्टमें बाहरमें स्था नमें स्थित होवें तव तिसकापिता अंत्यकालमें पुत्रके मुखकों नहि देखताहै और जब पिताके भाव का स्वामी और कारक केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ स्थानमें स्थित होवे तव अन्त्यकालमें पुत्र के मुखकों देखताहै ३५ और जिसके जन्मसमयमें चतुर्थ घरका स्वामी और शुक्र और चंद्रमा बलकर्के युक्त छठे स्थानमें स्थित होवे तव तिसके पिताका मरण रात्रिसमयमें कहे और षष्ठेश कर्के युक्त होवें तब रात्रिमें मरण कहे और चंद्रमा कर्क रहित षष्ठेश कर्केयुक्त चतुर्थ भावका स्वामी होवे तव दिनमें मरण कहे ॥ ३६ ॥

॥ और जिसके जन्मकालमें शुभग्रह चर लग्नके प्रथम नवांशमें स्थित होवे और नवमेश बली होवे और बृहस्पति शुक्रकरके युक्त दृष्ट होवे तब जप ध्यान समाधिके धारणे वाला होताहै ३७ ॥ और दशमेश वा नवमेश देवलोकादि अंशमें स्थित होवे और शुभग्रह पारावतांशमें स्थित होवे तब महाज्ञानी होताहै ॥ ३८ ॥ और नवमेश और बृहस्पति पारावतादिअंशमें स्थित होवे और लग्नेश बृहस्पति करके दृष्टहोवे तब महादान तुलापुरुषादिकरणे वाला होताहै ॥ ३९ ॥ अब नवमके स्वामीका द्वादशभावोंमें फल कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें नवम भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो देवताकों और गुरोंकों माननेवाला और अपने व्यवहारमें शूरवीर और विशेषकरके धनकों नहि खरचनेवाला और राजकार्यमें नियुक्त और थोडे अधिकारकरके युक्त होताहै ॥ ४० ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी धनस्था

सौम्येचराद्यभागस्थेभाग्येशेबलसंयुते गुरुशुक्रयुतेदृष्टे जपध्यानसमाधिमान् ।३७। देवलोकादिभागस्थेकर्मेशेभाग्यपेपिवा पारावतांशकेसौम्येब्रह्मनिष्ठापरोभवेत् ३८ पारावतादिभागस्थेधर्मेशगुरुसंयुते लग्नेशगुरुसंदृष्टेमहादानकरोभवेत् ३९ अथभाग्यपतिद्वादशभावफलम् लग्नगतेनवमपतौदेवान्गुरूश्चमन्यतेशूरः कृपणःक्षितिपतिकर्मास्वल्पग्रामीभवतिमतिमान् ४० नवमाधिपतौधनगेधनतोविदितःसुशीलवान्मर्त्यः सुकृतिर्विद्वान्मानीचतुष्पदाढ्योत्तमःख्यातः ४१ सहजगतेसुकृतपतौरूपस्त्रीबंधुवत्सलःपुरुषः बंधुश्रीरक्षणकृद्यजतिजीवतिबंधुभिःसहितः ४२ सुकृतेशेहिबुकस्थेपितृभक्तःपितृकोनुयात्रासु विदितःसुकृतीमित्रकर्मरतोभवतिभूमीशः ४३ सुकृतेशेसुतसंस्थेसुकृतीगुरुदेवपूजनेनिरतः वपुषासुंदरमूर्त्तिःसुकृतसमेतोभवतिससुतः ४४

नमें स्थित होवे सो धनसें प्रसिद्ध होताहै और श्रेष्ठ स्वभाववाला होताहै और धर्मी और विद्यावान् और मानी और चतुष्पदोंकरकेयुक्त और प्रसिद्ध होताहै ॥ ४१ ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो रूपवाली स्त्रीका और बंधुओंका प्यारा होताहै और बंधुओंकी लक्ष्मीकी रक्षाकरणे वाला और सबंधियोंकरकेयुक्त यज्ञ और जीविकाकरणे वाला होताहै ॥ ४२ ॥ और जिसके जन्मसमयमें नवमका स्वामी चतुर्थस्थानमें स्थित होवे सो पिताके मृत होएक पीछे पितरोंका भक्तहोताहै और प्रसिद्ध धर्मकरणे वाला होताहै और मित्रकर्ममें रत और भूमीका स्वामी होताहै ॥ ४३ ॥ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी पंचम स्थानमें स्थित होवे सो धर्मी और गुरुदेवताके पूजनमेंरत और देहकरके सुंदर मूर्तिवाला और धर्मकरके युक्तश्रेष्ठपुत्रवालाहोताहै ४४

आरजिसकेजन्मकालमेंनवमभावकास्वामीछठेस्थानमेंस्थितहोवेसोशत्रुयोंकेआगेनम्रहोताहैऔरपापके करणेवालाऔरकलासें रहितदेहवालाहोताहैऔरनवमकास्वामीछठेस्थानमेंस्थितहोवेतवदेखनेमेंऔरनि द्रामेंरतहोताहै ४५ औरजिसकेजन्मकालमेंनवमकास्वामीसप्तमभावमेंस्थितहोवे तिसकीस्त्रीपतिव्रताऔर श्रेष्ठबोलनेवालीऔरश्रेष्ठरूपवालीहोतीहैऔरश्रेष्ठस्वभावऔरलक्ष्मीकरकेंयुक्तऔरधर्मकरकेंयुक्तहोतीहै ४६ और जिसके जन्ममें नवमका स्वामी अष्टमस्थानमें स्थित होवे सो दुष्ट और जीवोंकेमारणेवालाऔर घरकर्के और बंधुयों करकेंरहित और धर्मकर्के रहितहोताहै और क्रूरग्रहहोवे तब नपुंसक होताहै ४७ और जिसके जन्ममेंनवमकास्वामीनवमभावमेंस्थितहोवेसोअपनेबंधुयोंसेंबडीप्रीतिवालाऔरसबसेंबडा और दाता और देवता गुरु और स्त्री पुत्रादियोंमें आसक्त होताहै ४८ और जिसके जन्मकालमेंन

शत्रुप्रणातिपरायणमधर्मकलितंकलाविकलदेहं दर्शननिद्रानिरतंसुकृतपतिःष ष्ठगःकुरुते ४५ नवमपतौसप्तमगेसत्यवतीसुवचनासुरूपाच शीलश्रीयुतद यितासुकृतयुताजायतेनियतम् ४६ दुष्टोजंतुविघातीगृहबंधुविवर्जितःसुकृतर हितः नवमेशेमृत्युगतेक्रूरेषंडस्तुविज्ञेयः ४७ सुकृतपतिःसुकृतगतःस्वबंधुभिः प्रीतिमतुलितसमत्वं दातारंदेवगुरुस्वजनकलत्रादिषुसक्तम् ४८ नृपकर्माणं नृपलाभंसुकर्मरतंमातुरविघ्नम् धर्मख्यातंकुरुतेसुकृतपतिर्गगनगृहलीनः ४९ दीर्घायुर्धर्मपरोधनेश्वरःस्नेहलोनृपतिलाभः सुकृतस्यात सततंसुकृतपतौलाभ भवनस्थे ५० द्वादशगेसुकृतेशेमानीदेशांतरेसुरूपश्च विद्यावान्शुभखेटेक्रूरे चभवेत्कुमतिधूर्त्तः ५१

वमभावका स्वामी दशमस्थानमें होवे सो राजाके कर्म करणे वाला और राजासें लाभकों प्राप्तहोनें वालाऔर श्रेष्ठ कर्ममें रत और माताकों सुखदेनें वाला और धर्मकर्केप्रसिद्धहोताहै ४९ और जिसके जन्मकालमें नवमका स्वामी एकादश भावमेंस्थित होवे सो बडी आयुषा वाला और धर्मी और ध नका स्वामी और प्रीतिकरणेवाला और राजासें लाभकोंप्राप्तहोनें वाला और धर्मकर्के प्रसिद्ध निरंतर होताहै ५० और जिसकेजन्ममें नवमका स्वामी बारहमें स्थानमें स्थित होवे सो विदेशमें मानकों प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ रूपवाला होताहै और शुभग्रह होवे तब विद्यावान् होताहै और क्रूरग्रह होवे तब खोटी बुद्धि वाला और धूर्त होताहै ५१

इतिनवमभावः ९ अब दशम भावकाविचारकहतेहैं ॥ तिसमें क्याक्या पदार्थका विचारकरणाहै प्रथम कहतेहैं ॥ दशम भावमें आज्ञा और मान और भूषण और वस्त्र और व्यापारका सुख दुःख और निद्राका सुख और खेतीकर्मसे लाभालाभकाविचार और संन्यास धर्मकी प्राप्ति और कर्म औरजीवका और यश और विद्याकीप्राप्तिः इतने पदार्थोंका ज्ञान दशम भावमेंकहतेहैं और दशमेश और सूर्य बुध बृहस्पति शनि इन्होंसे पूर्वोक्तपदार्थोंका ज्ञान दशमभावमें क्रमपूर्वक लिखाहैतिसकोंछोडकर और दशम भावमें पापो ग्रहस्थितहोवेतवमानककें रहित होताहै ॥ १ ॥ और दशम भावका स्वामी बलहीन होवे तव चपल बुद्धि वाला और दुष्ट आचार वाला होताहै और बृहस्पति बुध शनि सूर्य बलहीन होवें तवखोटे स्थानऔर नियकर्मको देतेहैं और दशमस्थानमें

इतिनवमभावविचारः९अथकर्मभावविचारःतत्रकिंचिंतनीयमित्युक्तम्आज्ञामानविभूषणानिवसनव्यापारनिद्राकृषिप्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्याः क्रमात्कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैश्चिंतयेदुक्तानिप्रविहायपूर्वमशुभे मानेविमानोभवेत् ॥ १ ॥ कर्मेशेबलवर्जितेचपलधीर्जातोदुराचारवान् जीवज्ञासितभानवोविबलिनोदुःस्थानकर्मप्रदाः ॥ गंगास्नानफलंसमेतिदशमेराहौदिनेशेथवा मीनेकर्मणिचंद्रजारसहितेजातःसमुक्तोभवेत् २ ॥ मानेश्वरेशुक्रयुतेचकेंद्रेतुंगस्थितेतादृशतोयपूतः ॥ व्ययेबुधेतद्भवनाधिपेवास्वोच्चान्वितेतादृशपुण्यभाक्स्यात् ३ चंद्रेकर्मणिजान्हवीसलिलतःपूतोहिपूतयुतोपापोयच्छतिकर्मगोपिबलवान्द्यूतक्रियासाहसंसौम्यादुर्बलशालिनोदशमगाःसत्कर्मविध्वंसकाःकर्मशज्ञसुरार्चितैःक्रतुफलंसंचिंत्यसम्यग्वदेत् ४

राहु अथवा सूर्य स्थित होवे तव गंगाके स्नानफलको प्राप्त होताहै और मीनलग्नमें बुध मंगल दशमस्थानमें स्थित होवेंतव मुक्तिको प्राप्त होताहै २ और जिसके जन्मकालमें दशमकास्वामी शुक्रकरके युक्त केंद्रमेंस्थित होवे और उच्चमें स्थित होवे तव गंगाजलककें पवित्र होताहै और जिसके जन्मकालमें बाहरमें स्थानमें बुध अथवा दशमकास्वामी स्थित होवे और उच्चराशिमें स्थित होवे तव गंगाजलककें पुण्यको प्राप्त होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें दशमस्थानमेंपूर्ण चंद्रमा स्थित होवे सो गंगाजलककें पवित्र होताहै और दशम स्थानमें पापीग्रह वली स्थित होवे तवजूआ खेलनेमें बडे हठ वाला होताहै और शुभग्रह निर्वल होयकर्के दशम स्थानमें स्थित होवें तवश्रेष्ठ कर्मोंका नाशकर्तेहैं और दशमेश और बुध और बृहस्पतिसेंयज्ञफलका विचारकर्केभली प्रकारकहे ४

श्रौर जिसके जन्मकालमें लग्नेश श्रौर दशमेशदोनों एकराशिमें स्थितहोवें अथवा लग्न दशम
का स्वामी एकहि ग्रहकी राशिमें स्थित होवें सो अपने धनकों उत्पन्नकर्के यज्ञादिउत्सव कर्म
कर्ताहै श्रौर लग्नेश दशमेश सूर्यकर्केयुक्त होवें तवशूद्रके धनकर्के श्रौर राहुकेतुकर्के युक्त होवें तव क्षुद्रज
नोंके धनकर्के श्रौर बृहस्पतिकर्के युक्त होवें तवराजयोंके धनकर्के यज्ञादिकर्म कर्ताहै श्रौर
सूर्यादि ग्रह दशमके स्वामीकर्के युक्त जिसभावमें स्थित होवें तिसके कारक ग्रहके संबंध कर्के
धनकों प्राप्तहोताहै ५ श्रौरजिसके जन्मकालमें वहुत शुभग्रह दशममें स्थित होवें सो वाजिपेयादि यज्ञ
कर्ताहै श्रौर शुक्र बुध कर्के युक्त यो राशिहै तिसके स्वामी बलहीन होवें तव यज्ञदीक्षाकों धारण
कर्के क्रोधमें कर्मके नाशकों प्राप्त होताहै श्रौर श्रेष्ठ कर्म करणेवालाबी नीचस्वभाववाला
होताहै ६ श्रौर सारावलीमें विशेष कहतेहैं ॥ लग्नसें दशम राशिमें मनुष्योंके कर्म
कहेहैं मुनियोंने सो राशि ग्रहोंके स्वभावकर्के श्रौर ग्रहोंकी दृष्टि कर्के कहताहा ७ लग्न श्रौर चं

एकस्यैतनुकर्मपौयदितयोरेकाधिपत्येतुवाजातः स्वार्जितसद्धनेनकुरुतेयज्ञादि
कर्मोत्सवं ॥ सार्कौशूद्रधनेनसाहिशिखिनौक्षुद्रैःसजीवौनृपैस्तत्तत्कारकवित्ततो
यदियुतेरव्यादिभिःकर्मपे ५ वहुशुभयुजिमानेवाजिपेयादिसिद्धिःसितवुधयु
तराशिस्वामिनौदुर्वलाढयो ॥ यदिकृतसवनोपितत्प्रकर्मप्रणष्टोभवतिपरमकर्मा
दानवाचारशीलः ६ सारावल्यांविशेषः ॥ लग्नाद्दशमेराशौकर्मनराणांप्र
कीर्त्तितंमुनिभिः ॥ राशिग्रहस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्यातत्प्रवक्ष्यामि ७ हारेंद्वोर्वलयो
र्गायोदशमस्तत्स्वभावजंकर्म ॥ तस्याधिपपरिवृद्ध्यावृद्धिर्ज्ञेयान्यथाहानिः ८
मंगलमथवारूपंतथोभयंवाग्रहोनिरीक्ष्येत ग्राममथवारण्यंसौम्यर्क्षपापभवनंवा ९
द्विपदचतुष्पदरूपंसरीसृपंवातथोभयवापि यद्रूपंतद्भवनंयादृशकंतत्प्रभावंवा १०
प्रवदेत्समदेशेवाकर्मप्राप्तिंनरस्यतत्सदृशीं तस्माद्दशमंभवनंप्रसवेबुध्येतयत्नेन ११

श्रौ
द्रमामें यो वली होवे तिससें दशम स्थानमें यो राशी तिसके स्वभावकर्के मनुष्य कर्मकर्ताहै
र तिसके स्वामी की वृद्धि कर्के कर्मोंकी वृद्धि होताहै तिसकी हानि कर्के हानी होताहै ८
श्रौर मंगल कर्म श्रौर रूपका विचार दशम स्थानमें ग्रहोंकी दृष्टिसें विचार करे श्रौर दशम स्थानमें
स्थित यो राशि सो ग्रामचारी वा वनचारी वा शुभग्रहकी राशि वा पापी ग्रहकी राशिहै ९ द्विपद
चतुष्पदरूपकर्के यो राशि श्रौर सरीसृप संज्ञक राशि वा चंद्रमा लग्नसें दोनों स्थानोंमें जिस रूपकर्के
दशमस्थान में राशिहोवे,तिस राशिका प्रभाव तिसमें होताहै १० श्रौर दशम भावगत राशिके समान
देशमें श्रौर दशमभावके स्वामीके तुल्य मनुष्यको कर्मोंकी प्राप्ति कहे तिस कारणसें जन्म समयमें दश
म भावकों यत्नकर्के विचारे ११

श्रीर जिसके जन्मकालमें लग्नसें दशम स्थान चंद्रमा स्थित होवे तिसकी सपूर्ण कर्मोंकर्के वृति होतीहै १२ श्रौर द्विग्रहादि योगाध्यायमें जन्मलग्नसें दशमस्थान स्थित ग्रहोंका योगफल पीछे कहाहै अब चंद्रमासें दशम स्थानमें द्विग्रहादि योगफल कहतेहैं १३ श्रौर जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्यहोवे सो सिद्धारंभी श्रौर धनकी समृद्धिवाला होता है श्रौर श्रेष्ठपराक्रम वाला श्रौर राजाश्रौरश्रेष्ठ श्रौर जलके समीप रहने वाला श्रौर दुष्ट होताहै १४ श्रौरचंद्रमासें दशमस्थानमें मंगळ होवे तब हठमें रत श्रौर म्लेछदेशमें निवासकरणे वाला श्रौर कामी श्रौर भीलोंकी न्याई चरित्रों वाला होताहै १५ श्रौर चद्रमासें दशमस्थानमें बुध स्थित होवेतवविद्वान्श्रौरधनी श्रौरप्रसिद्धश्रौरमनुष्योंकानायकश्रौरध्यानकरणेवालाश्रौरवहुतशिल्पविद्याकेजा

दशमेनक्षत्रपतिर्लग्नात्पुरुषस्यसंभवतिसर्वैःकर्मैर्वृत्तिविनिर्दिशेत्तस्यजातस्य १२ द्यंतरभावाध्यायेकथितंकर्मस्थितैर्ग्रहैर्लग्नात्चंद्रादत्रविशेषोग्रहैःस्थितैर्यस्तमपि वक्ष्ये १३ चंद्राद्दशमेसूर्यःसिद्धारंभंधनसमृद्धंच जनयत्युत्तमसत्वंनृपतिमुदग्रंज लाश्रयंदुष्टम् १४ भौमःसाहसनिरतंप्रत्यंतनिवासिनंविषयलुब्धं क्रूरंनिषा दचरितंजनयतिदशमस्थितःपुरुषम् १५विद्वांसधनवंतंवहुश्रुतंनायकंध्यातं जन यतिसौम्योदशमेपुरुषंवहुशिल्पिनंप्राज्ञम् १६ गुरुरपिदशमस्थानेसिद्धार्थंधा र्मिकंधनसमृद्धम् जनयत्युत्तमचरितंनरेंद्रसचिवंनरंस्वाढ्यम् १७ शशिनोदश मेशुक्रः सुभगंललितंचवित्तवंतंचजनयतिसिद्धारंभंधनिनंनृपपूजितंपुरुषं १८सौ रोव्याधितदेहंनिःस्वंदुःखान्वितश्रियाहीनं कर्मसुनित्योद्विग्नंजनयतिदशमेस्थि तःपुरुषं १९ भानुर्भौमसमेतःकर्मकरान्श्वासकासयुतान् प्राणिवधपरान्क्षुद्रान्व हुलान्कर्मार्त्तिकांश्चापि २०

नने वाला श्रौर चतुर होताहै १६ श्रौर चद्रमासें दशममें वृहस्पति होवे तव सिद्धार्थ श्रौरधर्मी श्रौर धनकी समृद्धि वाला श्रौर श्रेष्ठ चरित्रों वाला श्रौर राजाका मत्री श्रौर धनकर्के युक्त होताहै १७ श्रौर चंद्रमासें दशम स्थानमें शुक्र होवे तव श्रेष्ठ भाग्यो वाला श्रौर सुदर श्रौर धनी श्रौर सिद्धारंभी श्रौर राजाकर्के पूजित होताहै १८ श्रौर चद्रमासे दशम स्थानमें शनि स्थित होवे तव व्याधिकर्के युक्त देह वाला श्रौर धनहीन श्रौर दुःखी श्रौर शोभासे रहित श्रौर कर्ममें नित्य प्रति उदासीन होताहै १९ श्रव द्विग्रहयोग कहतेहैं श्रौर चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगलकर्के युक्त होवे तव कर्मकार होताहै श्रौर श्वासकास रोग वाला होताहै श्रौर जीवोंके घात करणे वाला श्रौर क्षुद्र वुद्धि वाला श्रौर श्रनेककर्मो कर्के पीडित होताहै २०

और चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य बुधकर्के युक्त स्थितहोवें तब वस्त्र और भूषण बेचने वाले और जल के संबधसें जीवका वालेहोतेहैं २१ और चद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति कर्केयुक्त सूर्य स्थित होवे तब आरभ कार्यके सिद्ध करणे वाले और राजाके मान्य और शूर वीर और पडित और प्रसि द्धहोतेहैं २२ और चद्रमासें दशमस्थानमें शुक्रकर्के युक्त सूर्य स्थित होवें तब अपने संबंधियोंके आश्रय वाले मनुष्य कोंकर्ताहै और स्त्रीके सयोग कर्के समृद्धिको प्राप्तहोताहै और श्रेष्ट भाग्योंवाला और राजाका प्यारा होताहै २३ और चंद्रमासें दशमस्थानमें शनि कर्के युक्त सूर्य होवे तब बंध नकर्के युक्त और भृत्य वृत्ति वाला और दीन कृपण और चोरों कर्के लुट्याहुवा रोदन कर्ताहै २४ और चंद्रमासें दशमस्थानमें मगल बुधकर्के युक्त स्थित होवे तब बहुत शत्रुयों कर्के युक्त होताहै

सूर्यःसौम्यसहायोवस्त्रालंकारवाणिजकान् जनयतिमेषूरणगःपुरुषंजलर्जी
वनंचापि २१ जीवसहायः सूर्यः सिद्धारंभान्नरेंद्रमान्यांश्च जनयतिदशमेपुरु
षान्वीरान्धीरान्सुविख्यातान् २२ सूर्यः शुक्रसहायोदशमेस्वजनाश्रितं
नरंकुर्यात् स्त्रीसंश्रयात्समृद्धंसुभगंनृपवल्लभंचापि २३ सूर्यः स्वपुत्रसहितो
दशमेवावधभागिनंभृतकम् जनयतिदीनंकृपणंचौरैर्मुषितंप्रलापकरम् २४
भौमः सोमजसहितोजनयतिदशमेनरंबहुविपक्षं अस्त्रकलावेत्तारंतज्जीवनमपि
महाशूरं भौमःसुरगुरुसहितोदशमेकुरुतेबलस्यनेतारं मित्रेभ्योलब्धधनंत
दाश्रियजीवनंधन्यं २६ जीवतिविदेशनिरतः कांचनमुक्तादिभिर्वणिग्वृत्या
भौमः शुक्रसमेतोदशमेस्त्रीसंश्रयश्चापि २७ भौमः सौरसहायोजनयति
दशमेस्थितोनरंप्रसवे साहसशीलंक्षुद्रंकर्मोद्युक्तंश्रियारहितं २८ धनिनंनरें
द्रपूज्यंधर्मिष्टंवृंदनायकंस्यात् सौम्यसहायोजीवोजनयतिमेषूरणेपुरुषं २९

और शस्त्रास्त्र कलाके जानने वाला और शूर वीरता कर्के जीवन करणे वाला होताहै ॥ २५ और चद्रमासें दशमस्थानमें मगल बृहस्पति कर्के युक्त होवे तब सेनाका पतिहोताहै और मित्रोंसें धनकों प्राप्तहोताहै और मित्रोंके आश्रय कर्के जीवन कर्ताहै और धन्यहोताहै २६ और चंद्रमासें दशम स्थानमें मगल शुक्र कर्केयुक्तहोवेतब विदेशमेंजीवकाकरणे वाला औरस्वर्ण मोतीके व्या पारकीवृति कर्केयुक्तहोताहै और स्त्रीकेआश्रितवृत्तिहोताहै २७ औरचद्रमासेंदशमस्थानमें शनिकर्के युक्त मंगल स्थित होवे तब हठ करणे वाला और क्षुद्र स्वभाव वाला और कर्ममें उद्योग करणेवाला और शोभा कर्के रहित होताहै २८ और चद्रमासें दशम स्थानमें बुध बृहस्पति स्थित होवे तब धनी और राजा कर्केपूज्यऔरधर्मकेकरणेवाला और सेनाकास्वामीऔर जगतिमेंप्रसिद्धहोताहै २९

श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें बुध शुक्र स्थित होवें तब मित्रजनों कर्के युक्त श्रीर विद्या स्त्री धन सुखकर्के युक्त श्रीर राजाकामंत्री वा राजा होताहै ३० श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें बुध शनि स्थित होवें तब मृत्तिकाके पात्र बनावनें वाला कुलाल होताहै श्रीर निंद्य श्राचार वाला श्रीर प्रसिद्ध होताहै श्रथवा पुस्तक लिखने वाला होताहै ३१ श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति शुक्र स्थित होवे तब राजाका श्रेष्ट चाकर होताहै श्रीर ब्राह्मणोंका स्वामी श्रीर शोक रहित श्रीर विद्याका श्राचार्य श्रीर समर्थ वाला होताहै ॥ ३२ ॥ श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें बृहस्पति शनिकर्के युक्त स्थित होवे तब नीच श्रीर दूसरेकों पीडा करणे वाला श्रीर प्रसिद्ध चेष्टावाला श्रीर श्रारंभमें स्थिरतावाला होताहै ३३ श्रीर चंद्रमासें दशम

सौम्यः शुक्रसहायोजनयतिदशमेसुहृज्जनोपेतं ॥ विद्यास्त्रीधनसौरूयं नृपसचिवंविश्वनाथंवा ॥ ३० ॥ सौम्यः सौरसहायोमृद्भांडकरंकरोतिदशमस्थः स्यात्तंनिंद्याचारंपुस्तकलिपिलेख्यकारंवा ३१ वचसांपतिःसितयुतः कर्मणिकुरुतेनरेंद्रवरभृत्यं ब्राह्मणपतिंविशोकंविद्याचार्यंसमर्थंच ३२ सुरराजगुरुःसार्किर्दशमेनीचंपरोपतापकरं करुतेप्रसिद्धचेष्टंस्थिरारंभंसुस्थिरारंभं ३३ शुक्रःसौरसहायश्चित्रकरान्गंधजीविकान्निंद्यान् जनयतिपुरुषंदशमेतिलकाकारांश्चचूर्णकारांश्च ३४ रविभौमचंद्रपुत्राश्चंद्राद्दशमेस्थितानरंधन्यं जनयन्त्युत्तमपुरुषंनरपतिसमंसर्वजनपूज्यं ३५ ॥ रविभौमदेवपूज्यादशमस्थानोपगानरंसुभगं शत्रूणांजेतारंजनयंतिसमृद्धिसंयुक्तम् ३६ चंद्राद्दशमेभानुर्भूपुत्रोभार्गवश्चजनयंति क्रूरंसाहसनिरतंनरंपरार्थापहारिणंचैव ३७

स्थानमें शुक्र शनि स्थित होवें तब चित्रकारीकरणेवाले श्रीर सुगंधि विक्रय करणे वाले गांधी श्रीर निंद्य कर्मोंके करणे वाले श्रीर तिलक बनामने वाले श्रीर श्राटा पीसने वाले होतेहैं ३४ श्रम त्रिग्रह योग कहतेहैं चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बुध स्थित होवें तब श्रेष्ठ पुरुष श्रीर राजा के समान श्रीर संपूर्ण लोकोंकर्के पूज्य होताहै ३५ श्रीर चद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बृहस्पति स्थित होवेंतब श्रेष्ट भाग्यों वाला श्रीर शत्रुयोंकों जीतने वाला श्रीर समृद्धि कर्के युक्त होताहै ३६ श्रोर चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल शुक्र स्थित होवें तब क्रूर स्वभावबाला श्रीर हठी श्राये धनकों हरणे वाला होताहै ३७

श्रीरचंद्रमासेंदशमस्थानमेंसूर्यमं गलशनिस्थितहोवेंतवक्रूरकर्मोमेंरतश्रीरउन्मादककेंयुक्तश्रीरगुप्तपापके
करणेवाला श्रीर दुराचारीहोताहै श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमेंसूर्यबुधबृहस्पति होवें तव विद्वान श्रीर
रूपकर्के युक्त श्रीर श्रेष्टभाग्यों कर्के युक्त उन्मादकों प्राप्तहोताहै श्रीर धर्मी श्रीर बंधुश्रोंमेंप्रीति वाला
होताहै ३९ श्रीरचंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य बुध शुक्र स्थित होवें तव यशकर्के युक्त श्रीर प्रीति
वाला श्रीर रोगरहित श्रीर किसीसें भयनहिं करणे वाला श्रीर सौभाग्य कर्के युक्त श्रीर समृद्धि वा
ला होताहै ४० श्रीर चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य बुध शनि स्थित होवें तब क्रूर श्रीर चपल श्रीर
खोटे स्वभाव वाला श्रीर मारतिकरणे वाला श्रीर शस्त्रोंकर्के श्रीर श्राग्निकर्के क्षत श्रंगों वाला

भानुजरविभूपुत्रादशमस्थाःक्रूरकर्मनिरतंच ॥ उन्मादयंतिमनुजंनि
गूढपापंदुराचारम् ३८ रविबुधगुरवोदशमेविद्वांसंरूपसंयुतंसुभगं उन्मा
दयंतिपुरुषंधर्मिष्टंबंधुवल्लभंचैव ३९ बुधसूर्यभार्गवोपियशस्विनंवल्लभंविग
तरोगं जनयत्यपराभूतंसौभाग्यपरिछदंसमृद्धंच ४० रविबुधशनयोदशमेक्रूरं
चपलंनरंविशीलंच उन्मादयंतिपुरुषंशस्त्राग्निपरिक्षतांगंच ४१ रविभू
गुजदेवपूज्यादशमस्थानोपगानरंकुर्युः लोभान्वितमतिचपलंसमस्तजन
विप्रयुक्तंच ॥ ४२ ॥ भौमेंदुजसुरपूज्याधर्मिष्टान्वहुकुटुंवपरिवारान्
जनयंतिदशमसंस्थाविद्याधनभाजनान्पुरुषान् ४३ शोभनशिल्पाभिरतान्मा
लाकारान्सुवर्णकारांश्च ॥ कुर्युर्वुधगुरुशुक्रादशमस्थानोपगाश्रसभ्यांश्च ४४
भार्गवसुरेज्यभौमाश्चंद्रादशमोपगानरंकुर्युः धनसंयुक्तान्सुनयान्देवद्विजपूज
नाभिरतान् ४५

होताहै ४१ श्रीर सूर्य बृहस्पति शुक्र चंद्रमासें दशम स्थित होवें तव लोभकर्के युक्त श्रीर श्र
त्यंतचपलश्रीरसंपूर्णजनोंकर्केरहितहोताहै ४२ श्रीर मंगलबुध बृहस्पतिचंद्रमासें दशमस्थानमेंस्थित
होवेंतव धर्मकेकरणेवाला श्रीरवहुतकुटुंवपरिवारकर्के युक्तहोताहैश्रीरविद्याश्रीरधनकर्केयुक्तहोताहै४३
श्रीरचंद्रमासें दशम स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तव मालाकार पुष्पमाला वनाणेमें श्रीर
वागवनाणे मे चतुर श्रीर स्वर्ण कार भूषण वनाणेमें चतुर होतेहैं ४४ श्रीर मंगल बृहस्पतिशु
क्र चंद्रमासें दशमस्थानमें स्थित होवें तव मनुष्योंकों धन कर्के युक्त श्रीर नीति कर्के युक्त श्रीरदे
वता ब्राह्मणके पूजनमें युक्त करेंहैं ४५

और चंद्रमासेदशमस्थानमेंमंगलगुरुशनिस्थितहोवें तवविद्याऔरधनऔरमनुष्योंकरके रहितऔरसुखक रिकेरहितऔरव्याकुलकर्तेहैऔरनीचकर्तेहै ४६ औरजिसकेजन्मकालमेंचंद्रमासेंदशमस्थानमेंमंगलशुक्र शनि स्थितहोवेंसोमलीनऔरमस्त औरअसत्यवोलनेवालाऔरपडितोंसे औरवंधुर्योसेंविवादकरणे वा ला होताहै ४७ और चंद्रमासें दशम स्थानमें वुध वृहस्पति शुक्र स्थित होवें जिसके जन्म स मयमें सो वहुत धन वाला और अत्यत सुखी और धर्मके जानने वाला और सत्व गुणी औ पंडित होताहै ४८ और जिसके जन्मसमयमें चंद्रमासें दशमस्थानमें वुध वृहस्पति शनि स्थित होवें तव धन और धर्म करके युक्त और चतुर और दयाकरके युक्त और सत्यकरके युक्त होताहै

विद्याधनजनहीनान्वुधपुरुषान्सौख्यवर्जितान्विकलान् ॥ जीवांगारकसौराद शमेकुर्युर्नरान्नीचान् ॥ ४६ ॥ भौमभृगुभानुपुत्रादशमस्थान्नो पगामलिनं ॥ उन्मादयंत्यसत्यंवुधवंधुविवादनिरतच ॥ ४७ ॥ वुधगुरुशुक्रादशमेजन्मनियस्येहसंतिपुरुषस्य ॥ वहुधनमतिसौख्ययु तंधर्मज्ञसात्विकंधीरं ॥ ४८ ॥ वुधदेवपूज्यशनयोजनयंतिनरंसदादशमसं स्थाः ॥धनधर्मयुतंप्राज्ञंदयान्वितंसत्यवतच ४९ भानुभृगुपुत्रवुधादशमस्था नोपगानरान्कुर्युः ॥ सचिवानुत्तमपुरुषान्धनधर्मसमान्वितान्सुभटान् ५० सुरगुरुभार्गवशनयःकुर्वंतिनराननेकधर्मरतान् ॥ दशमेविज्ञानयुतान्मल्लान्प रदेशानिरतांश्च ५१ एतान्त्र्यादिपुर्वाच्यंजन्मनिपुंसांफलंहिकर्मोत्थं ॥ त्र्या दिग्रहसंयोगेयोत्रविशेषस्तमपिवक्ष्ये ५२ शुक्रवृहस्पतिसौम्यादशमेपुरुष स्यचैकराशिसंस्थानाः ॥ वहुविधामिष्टकुर्युःसुखंचतेन्योन्यगृहसंस्थाः ५३

४९ और चद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य वुध शुक्र स्थित होवें तव मनुष्योंको वजीर और श्रेष्ट जन और धन धर्मकरके युक्त करतेहे और श्रेष्ट शूरवीर करतेहे ५० और चंद्रमासें दशमस्थानमें वृहस्प ति शुक्र शनि स्थित होवें तव मनुष्योंकोअनेक धर्मोमें रत और विद्यामें युक्त और वडे वलकरके यु क्त और परदेशमें रहनेवाले कतेहे ५१ और कहतेहें इहे तीनग्रहसें लेकरके जन्मकालमें संपूर्णग्र होंके योग फलकहेहें अव त्र्यादि ग्रहोंमें यो विशेष वातहे सो इस ग्रंथमें कहतेहें ५२ जिसके जन्मकालमें शुक्र वृहस्पति वुध इहे तीनो ग्रह दशम स्थानमें स्थित होवें सो वहुत प्रकारका शु भ फल कर्तेहें और परस्पर राशिमें स्थित होवें तववी अनेक प्रकारोंकी शुभफल कर्तेहें ५३

र जिसके जन्मकालमें सूर्य मंगल शनि दशमस्थानमें स्थित होवें तब मनुष्योंको चतुर और भा
ान् और अत्यंत कर्म करणे वाले और नीचाचारमें युक्त और हिंसाके करणे वाले कर्त्तेहैं ५४
त चतुर्ग्रह योगोंका फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें चद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य मंगल बुध
स्पति स्थित होवें सो शूर वीर और देहमें क्षत रहित और दान करणे वाला और संपूर्ण कर्मों
रत होताहै ५५ और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगल बुध शुक्र स्थित होवें तब मालाके य
मनें वाले और लिखने वाले और कष्टकर्मके करणे वाले कर्त्तेहैं ५६ औरचंद्रमासें दशमस्था
में सूर्य मंगल बुध शनि स्थित होवें तब मनुष्यको मस्तीकर्त्तेहैं और नीचाचारमें दुष्ट और धनसें र

वक्रशनैश्चरसूर्यादशमेयुक्तान्विचक्षणान्धन्यान् अतिकर्मकरान्कुर्युर्नीचाचारा
न्वधयुतांश्च ॥ ५४ ॥ रविभौमबुधसुरेज्यादशमस्थानोपगानरंकुर्युः शूरंवि
क्षतगात्रंदातारंसर्वकर्मरतं ॥ ५५ ॥ वक्रार्कशुक्रसौम्याःचंद्राद्दशमेसमाश्रिताः
प्रसवे कुर्युर्मालाकारांल्लेख्यरतांश्चापिकष्टकर्मरतान् ॥ ५६ ॥ रविकुजबुध
भानुसुताश्चंद्राद्दशमस्थिताःप्रसवकालेउन्मादयंतिपुरुषंनीचानुरतंधनैर्मुक्तं ५७
शुक्रार्कजीवभौमाःकर्मणिनिरतांश्चधर्मशूरांश्च बहुधनधान्यंदशमेजनयंतिस
दोद्यतान्पुरुषान् ५८ यमगुरुसुतरवयोदशमस्थाःक्रूरकर्मसंसक्तं उन्मादयंति
पुरुषंपरधनहरणेसदासक्तम् ५९ मंदार्कभार्गवकुजादशमस्थानोपगःप्रस
वकाले जनयंतिनरान्निपुणान्युक्तिविचारान्प्रकाशांश्च ६०रविजीवशुक्रसौम्या
जनयंतिनभःप्रकुर्वंति पुरुषंमायानिपुणंक्रूरंपरवंचनानुरतं ६१

हित कर्त्तेहैं ५७ और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तब अपने क
र्मोंमें रत और धर्ममें शूरवीर और बहुत धनधान्य करके युक्त और सर्वदा काल उद्यमके करणे वाले
कर्त्तेहैं ५८ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशम सूर्य मंगल बृहस्पति शनिः स्थित होवें
सो क्रूरकर्मोंके करणे वाला और मस्त और प्राये धनके हरणे वाला होताहै ५९ और चंद्रमासें
दशमस्थानमें सूर्य मंगल शुक्र शनि स्थित होवें तब मनुष्योंको चतुर और युक्ति विचारके करणेवा
ले और प्रकाशकर्के युक्त प्रसिद्ध कर्त्तेहैं ६० और चंद्रमासें दशमस्थानमें सूर्य बुध बृहस्पति शुक्र
स्थित होवें तब मायामें चतुर और क्रूर और दूसरेको ठगणे वाला करतेहैं ६१

और जिसकेजन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमेंसूर्यबृहस्पतिशुक्रयानीस्थितहोवेंतबमनुष्यकोमस्तिकियुक्त और विदेश वास करणे वाला और अनेक चारित्र करणे वाला करतेहैं ६२ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमें मंगल बुध बृहस्पति शुक्र स्थित होवें तब मनुष्यको चतुर और मिरती कर्क युक्त और शूरवीर और युद्धमें नहिं देखनमें आवताहै ॥ ६३ ॥ और जिसके जन्मकालमें चंद्रमासें दशमस्थानमें मंगल बुध शुक्र शनि स्थित होवें तब मनुष्यको शूरवीरऔरकुटुंबकरकेयुक्त औरधनकरके युक्तकरतेहैं ६४ और चंद्रमासें दशमस्थानमेंबुधबृहस्पतिशुक्रशनिस्थित होवें तब मनुष्यको शांतमन वाला और श्रेष्ठ बुद्धि वाला औरलोकोंमेंप्री

रविगुरुभार्गवशनयोमेपूरणसंस्थिताःप्रसवकाले उन्मादयंतिमनुजंप्रवासशीलंविविधचेष्टम् ॥ ६२ ॥ भौमासितबुधसुरेज्याजन्मनिदशमक्षेगानरंनिपुणं उन्मादयंतिमनुयशूरंसमरेष्वदृश्यंच ॥ ६३ ॥ भौमबुधशुक्रसौरानभस्तलेसस्थिताःप्रसवकाले ॥ जनयतिनरंशूरंकुटुंबयुक्तधनोपेत ६४ बुधगुरुभार्गवशनयोजन्मनिनभस्थिताकुर्युः पुरुषंशांतमनस्कंसुमेधसंलोकदयितच ६५ पापैर्नभस्तलगतै सौम्यग्रहवीक्षितैःप्रजायते ॥ वैद्यपुरोहितगणकाछात्रापरवंचनानुरता ६६ एतेसर्वेयोगाःसौम्यग्रहसंयुताःप्रसवकाले ॥ पापग्रहदृष्टियुता प्रायेणनभद्रदा प्रोक्ता· ६७ पापास्तृतीयषष्ठाहोरेंद्वो स्थानतोनृणामिष्टाः ॥ नेष्टानिधनांत्यगत्तालग्नोपगताविशेषेण ६८

तिवाला करतेहै ६५ और जिसके जन्मकालमें पापीग्रह दशम स्थानमें स्थित होवे और शुभग्रहोंकरके देखे होव तब वैद्य पुरोहित ज्योतिषी विद्यार्थी भडानें वाल्योंका और दूसरेकों ठगने वाल्योंका जन्म होताहै ६६ और पूर्वोक्त सपूर्ण योग दशम स्थानमें शुभग्रहों करके सयुक्त होवें और पापग्रहों करके देखे होवें तब विशेष करके शुभ फलको नहिंदेतेहैं ६७ और लग्नसें और चंद्रमासें पापी ग्रह तीसरे और छठे स्थानमें मनुष्योंको शुभ फल करतेहैं और अष्टम द्वादश और लग्नमें विशेष करके नेष्ट फल करतेहैं ६८

अथाजीविकालक्षण ॥ जन्मकालमें लग्नश्रौरचंद्रमामेंयोश्राधिकबलीहोवें तिसमेंदशमस्थानमेंजोराशि
तिसमेंजिसराशिकावर्गबलवानहोवेश्रथवातिसकास्वामीवली होवेतबतिसकेश्राश्रयककेंवृत्तिहोतीहै ६९
श्रौरजिनकेजन्मकालमेमेषराशिके वर्गदशममेंस्थितहोवेंसोवागकीसेवाश्रौरपुरकीसेवाकर्केश्रौरदूतता
कर्के श्रौररस वेचने कर्के पासा खेलनेकर्के श्रौरदूतकर्म कर्केजीविकाकरणेवाले होतेहै ७० श्रौरवृ
षराशिकावर्गदशमस्थानमेंहोवेंतवगाडीकर्केश्रौरचारपायेजीवोंकर्केश्रौरपंछियोंकर्केश्रौरमृगोंकर्केश्रोर
श्रन्नादियोंके संग्रह कर्के जीविका कर्तांहैं श्रौर विशेषकर्केजागल देशमेरहने वालाहोताहैं ७१ श्रौर मी
मिथुन राशिका वर्ग दशम स्थानमे होवे तव जलमे जहाजोंके वणिज कर्के समृद्धि वाला श्रौर मो
ती शंख मुंगे श्रौर पाषो कर्के लिखने कर्के श्रौर गणित कर्के जीविका करणे वालाहो

होरामृगलांछनयोर्योवलवांस्तस्यकर्मगाद्राशेः ॥ योवलयुक्तोवर्गेस्तदधिपतौवा
तदाश्रयावृत्तिः ६९ श्रारामपुरसेवाकृषिरसवाणिगक्षदूतकार्येण ॥ जीवंतिनरा
नित्यंमेषगणेदशमराशिस्थे ७० वृषभगणेदशमस्थेशकटचतुष्पदविहगमृ
गजीवी ॥ धान्यादिसंग्रहेणचजांगलदेशेस्थितिप्रायः ७१ जलवणिजःसुसमृ
द्धोमुक्ताशंखप्रवालभांडैश्च लिपिगणितलेख्यजीवीन्नामिथुनवर्गेचदशमस्थे ७२
वस्त्राग्नियोनियोगान्मुक्ताशखोपजीविनश्चैव श्राहिडकवृत्यावाकार्कीणवर्गेदश
मसंस्थे ७३ सन्नाहकाष्ठकाननपाषाणसुवर्णरौप्यकुट्टाश्च कर्षणनिरतालेयेगोजी
वाधान्यवाणिजिकाः ७४ शाकटिकामणिकाराहैरण्यकगंधविक्रयेनिपुणाः गांध
र्वशिल्पलेख्येकन्यावर्गेसदाविभवाः ७५

ताहैं ७२ श्रौर कर्क राशिका वर्ग दशममे स्थित होवे तव वस्त्र श्रौर सुवर्णके संबंध क
र्के श्रौर मोती शख कर्के श्रौर श्राहिडक वृत्तिकर्के उपजीविका करणे वाला होता है ७३ ॥
श्रौर सिंहराशिका वर्गदशम स्थानमे स्थितहोवे तवजिरह संयोए कर्के काटकर्के श्रौर वन
श्रौर पत्थर श्रौर सुवर्ण श्रोर रौप्य श्रौर कुट्टकर्के उौर पृथ्वी खोदने कर्के श्रौर गो विक्रयश्रौर
धान्यके व्यापारकर्केजीविका करणेवाले होतेहैं ७४ श्रौर कन्याराशिका वर्गदशम स्थानमेंस्थि
त होवे तव गाडी वनावने कर्के मणिश्रा वनावणे कर्के श्रौर सुवर्ण उौर सुगध द्रव्यके वेचनेमेंचतु
र श्रौर गीतविद्या श्रौर शिल्प विद्या कर्के जीविका करणेवाले होतेहैं ७५

श्रौरतुलाकावर्ग दशममेंहोवेतव उपदेशकरणेसेंश्रौरसुवर्णकेलैने देनेसें श्रौर मित्रके संबंधसें श्रौरश्रने कव्यवहारी कर्केजीवकाकरणेवाले होतेहे ७६ श्रौर व्यापारकर्के श्रौरनम्रताकर्के श्रौर गौ श्रौर महिषोंके विक्रयकर्के श्रौर अनेकवस्तूवेचनेसें समृद्धिवाला श्रौर जलमासकेवेचनेकर्के प्रसिद्ध जी वका वालेहोतेहे ७७ श्रौरधन धान्यकेव्यापारसें श्रौरफल मूल वेचनेसें श्रौर खेतीकरणेसें श्रौर कलाकेजाननेसें उपजीविकाकरणेवालाहोताहे ७८ श्रौर वृश्चिक का वर्ग दशमस्थानमें स्थित होवे तव स्त्रीके संयोगकर्के ऐस्वर्यवाले श्रौर पृथ्वी कर्षणमें रत श्रौर नित्य उद्योग कर्के चोरी कर णे वाले श्रौर राजाकीसेवा करणेवाले श्रौर पापी ७९ श्रौर देहकी चिकित्सा करणेवाले श्रौर

श्रायोज्याद्दुपदेशाद्धारिएयपरिवर्त्तनाच्चमित्राच्च जायंतेचमनुष्यानानाव्यवहारभागिनःसततम् ७६ वाणिज्याविनयभवागोजीवामहिष्यजीवाश्च नानापण्यसमृद्धाःसलिलासवपण्यवृत्तयःस्याताः ७७ धनधान्यमूलवनिजःफलमूलकृपिवलश्चैव जायतेधटवर्गेदशमस्थानेस्थितेकलाविदुषः ७८स्त्रिसंपर्कजविभवाजायंतेकर्षणानुरताश्च नित्योद्युक्ताश्चौराःपृथिवीपतिसेवकाःपापाः७९ देहचिकित्सानिरतालोहकराजीवनोलिसंज्ञकस्य वर्गेनभस्तलगतेधान्यानांचोपजीविनो नित्यम् ८० नृपसचिवदुर्गपालागोजाविखरैस्तथाशाक्तिनिकाष्टैः पात्रोपस्करविपनैर्जीवंतिनराश्चिकित्सयाधनुषः ८१ दशमेकुरंगवर्गेजलपण्यधनोमहाविभवः हद्दानामापणिकोरसाविक्रयकारकोजातः ८२ शस्त्रदहनप्रभेदैश्चौरेणचवर्त्तेतेखननवृत्त्या दशमेघटधरवर्गेतस्करनाथोस्ववाहुवलात् ८३

लोहेकाकृत्य करणेवाले श्रौर धान्य वेचने श्रौर खरीदने कर्के उपजीविका वाले होतेहे ८० श्रौर दशमस्थानमें धनराशिका वर्ग होवे तव राजाके वजीर श्रौर किले कोटोंकी रक्षा करणेवाले श्रौर गौयांवकरीभेडावेचनेखरीदनेसेंश्रौरखोतेखचरांवेचनेखरीदनेकर्केश्रौर पात्रवेचनेखरीदनेकर्केश्रौरदेवविद्या कर्केजीविकाकरणेवालेहोतेहे ८१ श्रौरदशमस्थानेंममकरराशिका वर्ग होवे तव जलमार्गके व्यापार कर्के वडे ऐस्वर्य वाला श्रौर हट्टीमे व्यापार करणेवाला श्रौर रसोंके वेचने कर्के उपजीविका वाला होताहै ८२ श्रौर दशम स्थानमें कुंभराशिकावर्गहोवेतव शस्त्रोंकर्के श्रौर श्रग्निकेभेदोंकर्के श्रौर चोरी कर्के श्रौरपृथ्वी खोदनेकीवृत्तिकर्के श्रौर अपनेवाहुवलसें चोरोंकास्वामीहोताहे

ओर दशम स्थानमें मीन राशिका वर्ग होवे तव शास्त्रसें और जलके संबंधसें और योनि पोषण क रणेतें और वस्तु विक्रय करणेसें जीविका करणे वाला होताहै ८४ और जन्मकालमें लग्न और चंद्रमाके मध्यमें यो ग्रहवली होवे तिससें दशम स्थान गत सूर्यादिग्रहोंकर्केधनकी प्राप्ति कहतेहै लग्नमें वा वलवान् चंद्रमासें दशम स्थानमें सूर्य वली होयकर्के स्थित होवे तव पितासें और चंद्रमा होवे तव मातासें और मंगल होवे तव शत्रुसें और वुध होवे तव मित्रसें और वृहस्पति होवे तव भ्राता से और शुक्र होवे तव स्त्रीसें और शनि होवे तव चाकरोंसें धनकी लब्धि होतीहै ८५ और लग्न में स्थित जो ग्रह और धनभाव में स्थित जो ग्रह और एकादश में स्थित जो ग्रह वलयुक्तहोवें ति नसें अनेक प्रकारका धन आचार्योंनें चिंतन करणा कहाहै ८६ अव दशमेशका फल वारा भावों में कहतेहैं जिसके जन्मकालमें दशमकास्वामी लग्नमें स्थित होवे सो माताका शत्रु और पिताका

शास्त्रात्सलिलाद्योनिप्रपोपणाद्विक्रयाच्चैव वर्गेमीनप्रभवेदशमस्थेजायतेवृद्धिः
८४ दिवसकराद्यैःस्वस्थैर्होरेंद्वोःसर्वदाभवत्यर्थः पितृमातृशत्रुहितजनसह
जस्त्रीभृत्यवर्गेभ्यः ८५ होरागतैर्धनगतैरायगतैश्चिंतयेद्द्रव्यम् वलसंयुतैर्ग्रहैं
द्रैरनेकधादृष्टमाचार्यैः ८६ ॥ अथदशमेशद्वादशभावफलजन्मप्रदीपात् ॥
दशमपतौलग्नगतेमातरिवैरीपितरिभवतिभक्तः दुःखीगतपितृवाल्येपरपुरुषर
ताभवतितन्माता८७वित्तस्थेगगनपतौमात्रापालितस्सुतोभवति मातरिदुष्टोभव
तिस्वल्पग्रामीसुतनुकर्मा ८८ मातृस्वजनविरोधीसेवाभिरतोनकर्मणिसमर्थः
मातुलपरिपालितःस्याद्दशमपतौलग्नतःसहजे ८९ दशमपेवुगतेनिरतःसुखेपि
तरिमातरिपोषणपूजनेसकललोकदृशाममृतायतेनृपतिसंभवलाभविभूषितः ९०

भक्तहोताहैओरवाल्यावस्थामेंपितासें रहितओरदुःखी होताहैओर तिसकीमातापरपुरुषमेंरत होतीहै८७ ओरदशमेश दूसरे स्थानमें स्थित होवे तव माता कर्के पालित होताहै और माताकाविरोधी होताहै ओर थोडे ग्रामों वाला और थोडे कर्म करणे वाला होताहै ८८ और जिसको दशमका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो मातासें और अपने संबंधियोंसें विरोध करताहै और सेवा करणे वा ला होताहै और कर्ममें समर्थ नहि होता और मामे कर्के पालित होताहै ८९ और जिसके जन्म समयमें दशमका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे सो सुखमें रत होताहै और पिता माताके पालनेमें और पूजनेमें रत होताहै और संपूर्ण लोकोंको प्यारा लगताहै और राजासें लाभक र्के शोभाको प्राप्त होताहै ९०

श्रौर दशमका स्वामी पंचमभावमें स्थित होवे तवशुभ कर्मके करणे वाला श्रौर विद्वंत्र करणेवाला श्रौर राजासें लाभवाला श्रौर गीतवाद्य मेंरत होताहै श्रौर तिसकों माता पालतीहै ११ श्रौरजिसके जन्म कालमें दशमका स्वामी छठे स्थानमेंस्थित होवे सो अपने गुणों कर्केराजासें धनकोंउत्पन्न कर्त्ताहै श्रौर शुभग्रहहोवेतव विशेषसें पिताके धनकों प्राप्त होताहै श्रौर पापी ग्रह होवे तव नेष्ट फल कर्त्ताहै १२ श्रौर दशमकास्वामी सप्तमभावमें स्थित होवेतव तिसकी स्त्री पुत्रवाली श्रौर रूपकर्के युक्त औंर तिसकी माताके पालनेमें तत्पर होतीहै श्रौर अत्यंत प्रीति वाली होतीहै १३ श्रौर जिसके जन्मकालमें दशमका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थित होवे सो क्रूर श्रौर चोर श्रौरझूठ वोलने वाला श्रौर दुष्ट होताहै श्रौर माताके संताप करणे वाला श्रौर थोडा कालजीनेवालाश्रौर

शुभकर्मकोविद्वंवीनृपलाभीगीतवाद्यनिरतःस्यात् गगनपतौतनयगतेपालयति
चतंसुतंमाता ११ दशमपेरिपुराशिगतेभवोन्निजगुणैः सहितोवनिपार्जवेपितृक
तंधनमस्तिविशेषतःशुभखगेसतिपापखगेत्वसत् १२ सुतवतीशुभरूपसमन्वि
तायुवतिमातरिपालनतत्पराभवतितस्यनरस्यनिरंतरंप्रियतमांवरपेदयितागते१३
पुष्करपतिरष्टमगःक्रूरश्चौरंमृषान्वितंदुष्टंमातरिसंतापकरंजनयतितनुजीवितं
कितवं १४ शुभशीलःसद्बंधुःसन्मित्रोदशमपेनवमलीने तन्मातापिसुशी
लासुकृतवतीसत्यवचनरता १५ गगनपतिर्गगनगतोजनयतिजननीसुख
प्रदंपुरुषं जननीकुलविपुलसुखंप्रकथनघटनापटीयांसं १६ मानोर्जितधन
संहितामातासुतरक्षणीभवेत्सुखिनीदीर्घायुर्मातृसुखीपुरुषोलाभाश्रितेंवरपे १७

धूर्त होताहै १४ श्रौर दशमका स्वामीनवमस्थानमें स्थित होवे तव श्रेष्ठ स्वभाव वाला श्रौर श्रेष्ठ बंधुयों मित्रों वाला होताहै श्रौर तिसकी माता श्रेष्ठ स्वभाव वाली श्रौर धर्मवाली श्रौर सत्य बोलनें वाली होतीहै १५ श्रौर दशमका स्वामी दशम स्थानमें स्थित होवे तव माताकों सुख देने वाला होताहै श्रौर माताके कुलकों सुखदेने वाला श्रौर वातके करणे में वडा चतुर होताहै १६ श्रौर दशम भावका स्वामी एकादश स्थानमेंस्थित होवे तव मानकोंप्राप्त श्रौर धनकर्के युक्ततिसकी माता होतीहै श्रौर पुत्रकीरक्षाकरणेवालीश्रौरसुखकर्केयुक्त होतीहै श्रौरमनुष्यवडीश्रायुषा वालाश्रौर माताकों सुखदेनेवाला होताहै १७

र दशमका स्वामी बाहरमें स्थानमें स्थित होवे तब माताकर्के त्यागकों प्राप्त
, अत्यंत बलकर्के युक्त और शुभ कर्मके करणे वाला और राजाके कर्ममें प्रीति वाला
नाहै और पापी ग्रह होवे तब विदेशमें रत होताहै १८ इतिदशमभावविचारः १० ॥ अब
भभावका विचार कहतेहै तिसमें इतने पदार्थोंका ज्ञान होताहै ॥ लग्नसें एकादशभावमें संपूर्ण-
त प्राप्तिका विचार कहतेहैं जिसकेजन्मकालमें जो ग्रह बलकर्के युक्त एकादश स्थानमें स्थित होवे
धन देताहै तिसमें सूर्यादि जोग्रह बली होयकर्के एकादशमें स्थित होवें सो क्रमसें धन प्राप्तिकर
हैं सूर्य अपनें संबंधि जातिकेजोहैं तिन्हसें और चंद्रमा माताकेवर्गसें और मंगल भ्रातासेंऔरबुध
अपनें स्वामीसें और पंडितोंसें और मित्रोंसें और मामियोंसें धनकों प्राप्त कर्ताहै १ और बृहस्पति वे
शास्त्र द्वारा यज्ञादि कर्मोंसें और पुत्रोंसें धनलाभ कर्ताहै और शुक्र स्त्रीयोंसें और काव्य नाटक क
यसें और संगीत विद्यादियोंसेंधनकोंप्राप्त कर्ताहै और शनि दासी और दासों कर्के और खेतीसें

यसंस्थेदेशा मात्रोज्झितोतिबलवान्शुभकर्मानृपतिकर्मरतश्चेताव्योमपतौव्यतरगतश्चपापखगे १८ इतिदशमभावविचारः १० अथलाभभावविचारः लाभस्थानेनलग्नादखिलधनचयप्राप्तिमिच्छंतिसर्वेलाभस्थानोपयातःसकलबलयुतःखेचरोवित्तदःस्यात् भानुश्चेज्ज्ञातिवर्गादतिधनमुडुपोमातृवर्गेणभौमःसोदर्याद्बंधुमित्रैरपिविबुधसुहन्मातुलैर्वित्तमेति १ जीवोयच्छतिवेदशास्त्रयजनाचारादिपुत्रैर्धनंशुक्रःस्त्रीजनकाव्यनाटककलासंगीतविद्यादिभिः दासीदासकृषिक्रियार्जितधनंधान्यसमृद्धंशनिर्विप्रादिद्युचरेणवीक्षितयुतेविद्यादयोवित्तदाः २ आयस्थःशुभखेचरःशुभधनंपापस्तुपापार्जितंमिश्रैर्मिश्रधनंसमेतिमनुजस्तज्जातकोक्तंवदेत् ॥ लाभस्थानगतःसमस्तगुणवान्दृष्टाधिकश्चेद्बलीजातोयानविभूषणांबरवधूभोगादिविद्याधिकः ३ वित्तेशायगृहाधिपौतनुपतेरिष्टग्रहौचेद्धनंसत्कर्मामरविप्रपुण्यविषयेदानादियोग्यंवदेत् आयस्थोविबलःपरार्जितबलोनीचारिदुःस्थानपोरिकायोगकरोयदिप्रतिदिनंकुर्वीतभिक्षाटनम् ४

इतवब्राह्मणादिवर्णों धनधान्यकीसमृद्धिकर्ताहै और विप्रादि जातिके ग्रहोंकर्के एकादशभाव दृष्टयुक्तहोवे तब ब्राह्मणादिवर्णों
सें धन प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ और एकादशमें शुभग्रह स्थित होवे तब धर्म कर्के धनकी प्राप्ति हो
तीहै और पापी ग्रह स्थित होवे तब पापकर्म कर्के धनकी प्राप्ति होतीहै और शुभ पाप दोनों ग्रह
होवें तब मिश्रित कर्मोंसें धनकी प्राप्ति होतीहै ॥ और जिसके जन्मसमयमें संपूर्ण गुणोंकर्के युक्त
अधिक शुभफल करणे वाला और बली ग्रह एकादश स्थानमें स्थित होवे सो वाहन औरभूषण
और वस्त्र और स्त्रीभोगादि पदार्थोंकर्के युक्त औरविद्यावान् होताहै ३ और जिसके जन्मकालमें
दूसरे और बाहरमें घरके स्वामी लग्नेशके मित्रहोवें तब श्रेष्ठधनकों प्राप्त होताहै जिसकर्केश्रेष्ठकर्म
देवता ब्राह्मणकेपूजन और दान यज्ञादि कर्ताहै अयसे धनकी प्राप्तिकहे औरएकादश स्थानमेंनिर्बल
और शत्रुकर्केजीता हुवा और नीच शत्रु राशिमें ६ ८ १२ घरका स्वामी होयकर्के स्थित होवे तब
दारिद्य योगके करणे वाला ग्रहहोताहैतिसकर्के नित्य प्रति भिक्षा मांगने वाला होताहै ४

और जिसके जन्म समयमें एकादश भावका स्वामी सूर्य अथवा चंद्रमा होवे तब राजाके तुल्य जनके आश्रय करके वृत्ति वाला होताहै और एकादशका स्वामी मंगलहोवे तब मंत्री जनसें और बडे और छोटे भाईयोंसें और खेतीके द्वारा धनकों प्राप्त होताहै और एकादशका स्वामीबुध होवे तब विद्यासें और बंधुयोंककेंऔरपुत्रोंककें धनकों प्राप्त होताहै और बृहस्पति एकादशका स्वामी होवे तब अपने आचारसें और शुक्र एकादशका स्वामी होवेतब रत्नों करके स्त्रीकरके औरहाथीसें लेकर पशुयों करकेंधनकोंप्राप्त होताहै और शनि एकादशका स्वामी होवे तब खोटी वृत्तिके आश्रयसें धनकों प्राप्त होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें एकादशभावका स्वामी केंद्र और त्रिकोण में स्थित होवे और एकादश स्थान पापी ग्रहकरके युक्त होवे और उच्च राशि उच्चनवांशमें होवे तब धनी होताहै औरलाभकेकारक उच्चादि राशि और

लाभेशेदिनपेथवाशशधरेभूपालतुल्याश्रयात् भौमेमंत्रिजनाग्रजानुजकृषिद्वाराधनंलभ्यतेविद्याबंधुसुतैःसुधाकरसुतेजीवेनिजाचारतः शुक्रेरत्नवधूगजादिपशुभिर्मंदेकुवृत्त्याश्रियम् ५ लाभस्थानपतौविलग्नभवनात्केंद्रत्रिकोणस्थितेलग्नेपापसमन्वितेतुधनवांस्तुंगादिराश्यंशकेतत्कारकवर्गतोबलवशाद्योगानुसारंवदेत्तत्तत्खेटदशापहारसमयेवित्तंवदेत्तद्दिशि ६ लाभेशात्सोदरेशाद्वाकर्णसौख्यंविनिर्दिशेत् पापान्वितेपापदृष्टेतद्धानिंप्रवदंतिहि ७ लाभराशेश्चदिग्भागाद्धनलाभमुदीरयेत्तद्राशिनाथदिग्भागाद्द्रव्यप्राप्तिमुदीरयेत् ८ लाभराशिवशादेवंचिंतयेन्मतिमान्नरः अथलाभस्वामिद्वादशभावफलम् अल्पायुर्बलकलितःशूरोदाताधनप्रियःसुभगः लाभपतौलग्नगतेतृष्णादोषान्मृतिंलभते ॥ १ ॥

नवांशमें होवें और एकादशके वर्गेशोंके बलसें और योगहोणेसें धनकी प्राप्ति कहे औरतिन्होंकी दशांतर्दशाके समयमें और तिन्होंग्रहोंकी दिशासें धन प्राप्ति कहे ६ और एकादशके स्वामीसें अथवा तृतीय भावके स्वामीसें कर्णोंमें भूषणादि सुख कहे और पापयुक्त और पापदृष्ट होवेंतब कर्ण भूषणादियोंकी हानि कहे ७ और एकादश स्थानमें स्थित जो राशिहै तिसकी दिशासें द्रव्य प्राप्ति कहे अथवा लाभेश ग्रहकी दिशासें धनकी प्राप्ति कहे ८ इस प्रकार करकें एकादश भावसें बुद्धि मान् धन प्राप्तिका चिंतन करे ॥ अब लाभकेस्वामीका द्वादशभावमें फल कहतेहैं और जिसके जन्मकालमें एकादश भावका स्वामी लग्नमें स्थित होवे सो थोडी आयुषा वाला औरबल करके युक्त और शूर्वीर और दाता और धनमें प्रीतिवाला और श्रेष्ठभाग्योंवाला होताहै और तृष्णा दोषसें मृत्युकों प्राप्त होताहै १

श्रौर जिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो उत्पन्न भोगी श्रौर थोडा भोजन करणे वाला श्रौर थोडी आयुषा वाला होताहै श्रौर क्रूरग्रहकर्के अष्ट कपाली श्रौर रोग वाला होताहै श्रौर शुभग्रह होवे तब धन कर्के युक्त होताहै ॥ १० ॥ श्रौर एकादशका स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे सो बंधुयोंकी लक्ष्मी पालन करणे वाला श्रौर श्रेष्ट बंधुयों वाला श्रौर शुभ ग्रह होवे तब बंधुयोंका प्यारा होताहै श्रौर क्रूरग्रह होवे तब बधुयोका श्रौर शत्रुयोंके कुलका नाश करणे वाला होताहै ॥ ११ ॥ श्रौर एकादशका स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब वडी आयुषा वाला श्रौर पिताका प्यारा श्रौर भक्ति वाला होताहै श्रौर समयमें उचित कर्ममें तर होताहै श्रौर श्रेष्ठ धर्ममें रत श्रौर लाभ वाला होताहै ॥ १२ ॥ श्रौर एकादशका स्वामी पचममें स्थित होवे तब पिता पुत्र आपसमें प्रीतिवाले होतेहे श्रौर समान गुण वाले होतेहैं श्रौर पुत्र थोडी जीविका

वित्तगतेलाभपतावुत्पन्नभुगल्पभोजनोल्पायुः ॥ अष्टकपालीरोगीक्रूरेसौम्ये चधनकलितः १० बंधुश्रीपालनकःसुबांधवोबंधुवत्सलस्तुशुभे ॥ लाभे शसहजगतेबंधूनारिपुकुलच्छेत्ता ॥ ११ ॥ तूर्य्यस्थेलाभेशेदीर्घायुःपितरि भक्तिभाग्भवति ॥ समयेककर्मनिरतःसुधर्मरतोलाभवान्मनुजः १२ तन यगतेलाभपतिःपितृपुत्रौस्नेहलौमिथःकुरुते ॥ तुल्यगुणंचपरस्परस्वल्पाजी वीचभवतिसुतः १३ लाभाधिपेपष्ठगतेसुवैरंसुदीर्घरोगंचतुरंगसंग्रहं ॥ मृ तिंसमाप्नोतिचचौरहस्तात्क्रूरेचदेशांतरसंगतोनरः १४ सप्तमगेलाभेशेते जस्वीशीलसंपदःपदवी ॥ दीर्घायुर्भवतिनरस्तथैकदयितापतिर्नियतं १५ एकादशपेष्टमगेक्रूरेल्पायुःसुदीर्घरोगीच जीवन्मृतश्चदुःखीभवतिनरःसौम्यग गनचरे १६ एकादशेशेसुकृतालयस्थेवहुश्रुतःशास्त्रविशारदः स्यात् ॥ धर्म प्रसिद्धोगुरुदेवभक्तःक्रूरेचखेटेव्रतवर्जितश्च १७

वाला होताहै ॥ १३ ॥ श्रौर एकादशेश छठे स्थानमें स्थित होवे तब वडे वैर वाला श्रौर दीर्घरोगी श्रौर घोडेयोंका संग्रह करणे वाला होताहै श्रौर क्रूरग्रह होवे तब चोरके हाथसें मृत्युको प्राप्त होताहै श्रौर विदेशमें रहिताहै ॥ १४ ॥ श्रौर जिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामी सप्तम स्थानमें स्थित होवे सो तेजस्वी श्रौर श्रेष्ठ स्वभाववाला श्रौर सपदाको प्राप्त होताहै श्रौर वडी आयुषा वाला श्रौर निश्चयकर्के एक स्त्रीका स्वामी होताहै ॥ १५ ॥ श्रौर एकादशका स्वामी अष्टम स्थानमें स्थितहोवे श्रौर क्रूरग्रह होवे तब थोडी आयुषा वाला होताहै श्रौर दीर्घरोगी होताहै श्रौर शुभग्रहहोवेतब जीताहि मृतककी न्यांई होताहै श्रौर दुःखी होताहै १६ श्रौर एकादशका स्वामी नवम स्थानमें स्थित होवे तब वहुश्रुत होताहै श्रौर शास्त्रमें चतुर होताहै श्रौर धर्ममें प्रसिद्ध होताहै श्रौर गुरु श्रौर देवताका भक्त होताहै श्रौर क्रूरग्रह होवे तब व्रतकर्के रहित होताहै ॥ १७ ॥

औरजिसके जन्मकालमें एकादशका स्वामीदशममें स्थित होवे सो माताका भक्त और धर्मी होताहै औरपितासेवैर कर्ताहै और चिरकालजीताहै और धनवान् और माताकेपालनेवालाहोताहै १८ और जिसके जन्मकालमें एकादशकास्वामी एकादशमें स्थित होवे सो बडी आयुषा वाला कर्ताहै और बहुत पुत्र पौत्रों करके युक्त कर्ताहै और श्रेष्ठ कर्मकरणेवाला और रूपकरके युक्तऔर श्रेष्ठस्वभाव करके युक्त होताहै और मनुष्योंको हर्ष करणे वाला पुरुष होताहै १९ और एकादशका स्वामी द्वादशमें स्थित होवे तब उत्पन्न भोगी और चंचलऔर भोगभोगने वाला औरउत्पातमें रत और अभिमानी और दाता और सदादुःखी होताहै २० इतिलाभभावविचारः ॥ ११ ॥ अथव्यय भावका विचारकहतेहैं जन्मलग्नसेबारहवेंघरसें औरबारहवेंघरकेस्वामीसें औरशनिसें दूरविदेशगमनऔर

मातरिभक्तःसुकृतीपितरिद्वेषीसुदीर्घतरजीवीधनवान्जननीपालननिरतोलाभाधिपेखगते १८लाभाधिपेलाभगतःकरोतिदीर्घायुषंपुष्कलपुत्रपौत्रंसुकर्मकंरूपयुतंसुशीलंजनप्रमोदप्रवणपुमांसम् १९द्वादशगेलाभेशेउत्पन्नभुगस्थिरोभवतिभोगीउत्पातरतोमानीदाताद्दुःखीसदापुरुषः २० इतिलाभभावविचारः ११ अथव्ययभावविचारः ..लग्नाद्व्ययतदीशभानुतनयैर्दूराटनंदुर्गतिदातृत्वंशयनादिसौख्यविभववित्तक्षयाश्चिंतयेत् ॥ रिःफस्थेचरखेचरेचरगृहेदुःस्थाननाथेथवानानादेशवनाटनोहिशनिनायुक्तेथवालोकिते १ रिःफस्थानगतेशुभेशुभयुतेसौम्यग्रहालोकितेतन्नाथेविबलेरिनीचगृहगेवित्तव्ययाभावभाक् ॥ रिःफस्थेविबलेबलेनसहितेरिःफाधिपेवित्तहामिश्रव्योमचरान्वितेतुसकलामिश्रव्ययदेहिनां २ ॥

दुर्गति और दानशक्ति और शय्यादि शयनके सुख और ऐश्वर्य और धननाश इतने पदार्थोंका विचार करे और द्वादश स्थानमें चरराशि गत चर ग्रह चंद्र बुध शुक्र होवे अथवा छठे अष्टम द्वादश के स्वामी होवे और शनि करके युक्त अथवा दृष्ट होवें तब अनेक देशोंमें भ्रमणकरणे वाला और वन पर्वतमेंभ्रमणे वाला होताहै १ और जिसके जन्मकालमें द्वादश स्थानमें शुभग्रह स्थित होवे औरशुभग्रहकरके युक्त होवे और शुभग्रहकरके दृष्ट होवे तब धनके खर्चको नहिं प्राप्त होताहै और द्वादश स्थानमें निर्बल ग्रह स्थित होवे और द्वादशेश बली होवे तब धनका नाश कर्ताहै और शुभ पाप दोनो ग्रह द्वादशमें युक्त होवे वा देखते होवें तब मिश्रित शुभकर्म पापकर्म दोनोंमें धन खर्च होताहै २

और द्वादश भावमें शुभग्रहके वर्गस्थित होवें तब शुभकार्यमें खर्च होताहै और द्वादश भाव निर्बल ग्रह करके युक्त दृष्ट होवे तब पापकर्ममें खर्च होताहै और निर्बल ग्रह की दशा कालमें द्वादश भावका कारक जिसके वर्गमें स्थित होवे तिसग्रहकी जातीके मनुष्यसें अनर्थ फलको प्राप्त होताहै ३ और क्रूर ग्रहबली होयकरके द्वादश स्थानमें स्थित होवे और छठे और अष्टम का स्वामी द्वादश स्थानमें स्थितहोवे तव खेतीया और धनके सग्रहकानाश, कर्त्ताहै और द्वादश स्थानमें द्विपद चतुष्पदादि राशिके स्थित होया और पापी ग्रह के योग और देखनेसें भृत्यादि द्विपद चतुष्पदोंके नाशको प्राप्त होताहै अर्थात् व्यय भावमें द्विपद ३ । ६ । ७ धनकापूर्वभाग होनेमें चाकरोंकीहानिहोतीहैऔर १।२।५धनकापरार्धऔरमकरकापूर्वार्धहोनेसेंचतुष्पदोंकीहानिहोतीहै

इष्टव्ययंभवतिशोभनवर्गयातेदुष्टव्ययंविबलखेटयुतेक्षितेवा ॥ यत्कारकद्युचर वर्गजनादनर्थंजातःसमेतिबलहीनदशापहारे ॥ ३ ॥ क्रूरग्रहेबलवति व्ययगेरिनाशस्थानाधिपेक्वपिधनास्थितिनाशकःस्यात् ॥ रिःफेचतुर्द्विपद भेसहतत्पदेनखेटेनसर्वपशुभृत्यविनाशमेति ॥ ४ ॥ विप्रादिखेचरयुते सतिविप्रमुख्यैःस्त्रीवर्गतस्तुतरुणीखचरेणयुक्ते ॥ रिःफेन्नरग्रहयुतेरिपुणासुहृद्गेजातःसुहृज्जनवशाद्धननाशमेति ॥ ५ ॥ त्यागीशुभग्रहयुतेक्वपि कश्चधर्मीपापैवसानगृहगेतुविवादशीलः ॥ नेत्रामयःपवनकृच्चपलोटनःस्या दुच्चस्वमित्रभवनेतुपरोपकारी ॥ ६

४ और ब्राह्मण जातीके ग्रह बृहस्पति शुक्रबारहमेंस्थानमें होवेंतव ब्राह्मणोंके धन खर्च करतेहै और स्त्रीग्रहोंकरकेचंद्रमाशुक्रकेयुक्तहोवे तवस्त्रीयोंके निमित्तधननाशकर्त्ताहै औरपुरुषग्रहसूर्यमंगल स्थित होवें तव शत्रुयों करके धन नाश कर्त्ताहै और मित्र क्षेत्रमें होवें तव मित्रो करके धन नाशको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ और शुभग्रह द्वादशमें स्थित होवें तव त्यागी और धर्मकर्मके करणे वाला और धर्मी होताहै और पापी ग्रह होवे तव विवाद करणे वाला होताहै औरनेत्ररोगी और वायु. विकार वाला और चपल भ्रमणे वाला होताहै और उच्चराशिमें और स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तव परोपकार करणे वाला होताहै ॥ ६ ॥

॥ और जिसके जन्म कालमे सूर्य अथवा क्षीण चंद्रमा द्वादश स्थानमें स्थित होवे तब राजा कर्के धन नाशकों प्राप्त होताहै ॥ और द्वादश स्थानमें स्थित मंगल वुध कर्के देख्या होवे तब अनेक प्रकारों कर्के धननाश कर्ताहै और बृहस्पति बुध द्वादशमें स्थित-होवें तब धनकी रक्षा करतेहैं और बुध शुक्र कर्के युक्त दृष्ट होवे तब शय्याके सुखकों प्राप्त होताहै ७ ॥ और द्वादश भावका स्वामी उच्चराशिमें स्थित होवे और शुभग्रहोंके वर्गमें स्थित होवे और शुभग्रहों कर्के देख्या होवे तब पर्यंकेमे शयन करणे वाला कहे ॥ ८ ॥ और द्वादश भावका स्वामी परम उच्चमें स्थित होवे तब विचित्र पर्यंकमें शयन कहे और अथवा नवम भावके स्वामी कर्के देख्या होवे तब मणिरत्नों कर्के विभूषित पर्यंकपर शयन कहे ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मसमयमें द्वादश

भानुर्वाक्षशशीतगुर्व्ययगतोवित्तस्यनाशंनृपैर्भौमोनाशयतींदुजेक्षितयुतो
नानाप्रकारैर्द्धनं ॥ वागीशेंदुसुतायदिव्ययगतावित्तस्यसंरक्षकाः सौ
म्यःशुक्रयुतेक्षितोयदिनृणांशय्यासुखंजायते ॥ ७ ॥ व्ययेशेस्वो
च्चराशिस्थेशुभवर्गसमन्विते ॥ शुभखेचरसंदृष्टेपर्यंकशयनंवदेत् ॥ ८ ॥
विचित्रमंचेशयनंव्ययेशेपरमोच्चगे ॥ भाग्यनाथेनवादृष्टेमणिरत्नविभू
षितं ९ पापग्रहणांसंबंधेव्ययेतद्भावनायके ॥ क्रूरांशकेक्रूरदृष्टेशयनादिसु
खंनहि ॥ नीचेव्ययेवालग्नेशेशत्रुनाथेनवीक्षिते ॥ मंदमांद्यगुसंयुक्तेशयना
दिसुखंनहि १० मंदाहिध्वजसंयुतेतुनिधनस्थानाधिपेनान्वितेरिःफेदुर्गति
मेतिपष्ठपतिनादृष्टेथवामानवः ॥ जातोयातिपरंपदंसुरगुरौलग्नेभृगौकामगे
कन्यास्थिरजनीकरेयदिधनुर्लग्नेचमेषांशके ११

भाव और तिसका स्वामी पापी ग्रहसें संबंध करे और क्रूरके नवांशमे स्थित और क्रूर ग्रह कर्के दृष्ट होवें तब शयनादि सुख तिसकों नांहि होताहै और जिसके जन्म कालमे लग्नका स्वामी नीच राशिमें स्थित होवे और अथवा द्वादश स्थानमें स्थित होवे और छठे भावके स्वामी कर्के दृष्ट होवे और शनि और गुलिक और राहु कर्के युक्त होवे तब शय्यादि सुख नाहिं होताहै ॥ १० ॥ और जिसके जन्म कालमें अष्टमेश शनि राहु केतु कर्के युक्त होवे और द्वादश स्थानमें स्थित होवे सो दुर्गतिकों प्राप्त होताहै अथवा षष्ठेश कर्के देख्या होवे तब दुर्गतिको प्राप्त होताहै और जिसके जन्म कालमें बृहस्पति लग्नमें और शुक्र सप्तममें स्थित होवे और कन्यामें और धनुर्लग्नमें और मेष के नवांशमें चंद्रमा स्थित होवे तब परम गतिकों मोक्षकों प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

श्रीर जिसके जन्मकालमें षष्ट अष्टम द्वादश भावोंकेस्वामी दुःस्थानमें ६ । ८ । १२ । स्थित होवें
तब तिन्हीं भावोंका पुष्ट फल कर्त्तेहैं जब बली होवें तब श्रीर निर्बल होवें तब पुष्ट फल नहि
कर्त्तेहैं श्रीर अष्टमस्थानका स्वामी निर्बल होयकर्के जिस भावमें स्थित होवे तिसका नाश कर्त्ताहै
श्रीर लग्नका स्वामी शुभग्रह कर्के दृष्ट युक्त श्रीर बली होय कर्के जिस भावमें स्थित होवे तिस भा
वका वडाशुभ फल कर्त्ताहै श्रीर नीच राशिमें श्रीर अस्त होवे तब नेष्ट फल कर्त्ताहै ॥ १२ ॥
अब द्वादशेशका बारां भावोंमें फल कहतेहैं जिसके जन्मकालमें द्वादश भावका स्वामी लग्नमें
स्थितहोवे सो विदेशगमनकर्त्ताहै श्रोर सुंदररूपवला श्रीर श्रेष्टवाणीवालाहोताहै श्रीर दुष्ट संगतिमें
स्थित होताहै श्रीर वादकरणे वाला होताहै अथवानपुंसक होताहै ॥ १३ ॥ श्रीर द्वादशका स्वामी
दूसरेस्थानमें स्थितहोवे तब कृपण श्रीर कठोर वाणी वाला श्रीर अनिष्टफलकों प्राप्त होताहै श्रीर

दुःस्थेदुष्टगृहाधिपेबलयुतेतद्भावपुष्टिंवदेत् आयुःस्थानपतौतुयत्रविबलेतद्भावना
शंतथा ॥ लग्नेशःशुभखेटवीक्षितयुतोयद्भावयातोबलीतद्भावस्यशुभंकरोतिविपु
लंनीचारिगस्त्वन्यथा १२ अथव्ययेशद्वादशभावफलम् व्ययनाथेलग्नगते
विदेशगःसुवचनःसुरूपश्च असगबाददोपीभवतिकुमारोथवापंडः १३ द्वा
दशपेवितगतेकृपणःकटुवागनिष्टलाभपरः सौम्येगच्छतिनिधनंनृपतस्करवन्हि
तोतिभयम् १४ सहजगतेद्वादशपेक्रूरेगतबांधवःशुभेचघनी तनुसोदरःसुकृप
णोबंधुपुदूरेसदाभवति १५ तुर्य्यगतेव्ययनाथेकृपणोरोगभीतःसुकर्माच मृ
तिमाप्नोतिसुततःसततमनुजोमहादुःखी १६ द्वादशपतौसुतस्थेक्रूरेसुतवर्जि
तःशुभेसुतयुक् जनकविलासीचतथासमर्थहीनोभवेत्पुरुषः १७ षष्ठगतेव्य
यनाथेक्रूरेकृपणोतिदूषणःपुरुषः लभतेमृतिंनितांतंभृगुतनयेनेत्रहीनःस्यात् १८

शुभग्रह होवे तब निर्धन श्रीर राजासें श्रीर चोरसें अग्निसें भयकों प्राप्त होताहै १४ श्रीर द्वादशका
स्वामी तीसरे स्थानमें स्थित होवे श्रीर क्रूरग्रह होवेतब बंधुहीन श्रीर शुभग्रह होवे तब धनी होताहै
श्रीर थोडे भाईयों वाला श्रीर कृपण श्रीर बंधुयोंसें सर्वदाकाल दूरहोताहै १५ श्रीर द्वादशका
स्वामी चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तब कृपण श्रीर रोगकर्के डराहुया श्रीर श्रेष्ट कर्म करणे वाला हो
ताहै श्रीर पुत्रसें मृत्युकों प्राप्त होताहै श्रीर निरंतर वडेदुःख कर्के युक्त होताहै १६ श्रीर द्वादश
भावका स्वामी पंचमस्थानमें स्थित होवे श्रीर क्रूरग्रह होवेतब पुत्ररहित होताहै श्रीर शुभग्रहहोवेतब पुत्र
युक्त होताहै श्रीर पितासें विलास करणे वाला श्रीर समर्थसें रहित होताहै १७ श्रीर द्वादशका स्वा
मी छठे स्थानमें स्थित होवे श्रीर क्रूरग्रह होवेतब कृपण श्रीर दुष्ट भावकोंप्राप्त होताहै श्रीर निश्चयक
र्के मृत्युकों प्राप्त होताहै श्रीर शुक्र होवे तब नेत्रहीन होताहै १८

॥ और द्वादशकास्वामीसप्तमस्थानमेंस्थितहोवेतव दुष्ट और दुष्टचरित्रधारणेवाला और चतुर होताहै औरक्रूरग्रह करके अपनीस्त्रीसें और शुभग्रहकरकेवेश्यासें नाशकोंप्राप्तहोताहै १९ और द्वादशका स्वामी अष्टम भावमें स्थित होवे तव अष्टकपालों करकेयुक्त और कार्यसाधनमें रहितहोताहै और द्रोह करणेमें बुद्धि वाला होताहै और शुभग्रह होवे तव धन संग्रहमें तत्पर होताहै ॥ २० ॥ और द्वादशका स्वामी नवमस्थानमें स्थितहोवे तव तीर्थयात्रामें चंचल स्वभाववाला होताहै और क्रूर ग्रहहोवे तव पापीहोताहै और तिसका धन निरर्थ जाताहै २० और द्वादशका स्वामी दशमस्थानमें स्थितहोवे तव परस्त्रीसें पराङ्मुख और पवित्र अंगोंवाला होताहै और पुत्र

द्वादशपेसप्तमगेदुष्टोदुश्चरितभृत्पटुवचनः क्रूरेस्वस्त्रीतःस्यात्सौम्येक्षयमेति गणिकातः ॥ १९ ॥ व्ययनाथेनिधनगतेष्टकपालीकार्यसाधनैरहितः ॥ द्रोहमतिःसौम्यखगेधनसंग्रहतत्परोभवति ॥ २० ॥ व्ययनाथेसुकृतगे तेतीर्थत्रैलोक्याटनोविचलवृत्तिः ॥ क्रूरेचखगेपापीनिरर्थकंयातितद्द्रव्यम् ॥ २०॥ व्ययपेगगनगृहस्थेपररमणीपराङ्मुखःपवित्रांगःसुतधनसंग्रहनिर तोदुर्वचनपराभवतितन्माता २१लाभस्थेद्वादशपेसुकुमारोदीर्घजीवितोभवति स्थानप्रवरोदाताविख्यातःसत्यवचनपरः २२ विभूतिमान्ग्रामनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिःपशुसंग्रहीच चजीवतिग्रामयुतःसदास्याद्व्ययाधिनाथेव्ययगेहलग्ने २३ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेतन्वादिद्वादशभावफलाध्यायःषोडशः १६

और धनके संग्रहमें रतहोताहै और तिसकी माता दुष्ट वचन कहने वाली होतीहै २१ और द्वादश का स्वामी एकादश भावमें स्थितहोवे तव सुकुमारावस्थावाला और चिरकाल जीवणेवालाहोताहै और अपने स्थानमें प्रधान होताहै और दाता और जगतमें प्रसिद्ध और सत्य बोलनेवाला होताहै २२ और जिसके जन्मकालमें द्वादश भावका स्वामी द्वादश स्थानमें स्थित होवे सो ऐश्वर्यवाला और ग्राममें निवास करणेमें चितवाला और कृपणबुद्धिवाला और डरणे वाला और पशुओंका संग्रह करणे वाला और कदाचित् जीवता रहे तव सर्वदा काल ग्राम करके युक्त होताहै २३ इति श्रीजातकखंडभाषाटीकायांषोडशोऽध्यायः १६ शिवम्

सोफल कहाहै
अथस्त्रीजातकाध्याय कहतेहैं यो जन्मकालसें पुरुषोंकों होराशास्त्रकेजाननेवालोंने
स्त्रियोंकोंयोकहै और तिसमें यो स्त्रीकों कहनेके योग्य फलनहिहै सो फल तिसके स्वामी कों
होताहै १ और कहतेहैं लग्नसें औरचंद्रमासेंस्त्रीकेदेहकाशुभाशुभविचारकहै और लग्नसें और चंद्रमासेंसप्तम
६ स्थानमेंपतिकासुखकहै और पंचमभावमेंप्रसूतिकाविचारकहै औरनिश्चयकरकेंविधवाका विचार अष्टम
धर्मकरे २ और ग्रंथांतरमें कहतेहै स्त्रीके जन्मलग्नमें अष्टमस्थानमें विधवा योग देखे और स्वामी
का सुख और सौभाग्य सप्तम भावमें देखे और देहकोसौंदर्यता लग्नमें देखे और पुत्रकीप्राप्ति नवमस्था
नमें देखे ३ इन्हों पूर्वोक्त स्थानोंमें शुभग्रह बलयुक्त स्थित होवें तब शुभफल होताहे और स्वामीसें
रहित क्रूर ग्रह स्थितहोवें तबनेष्टफल होताहै ४ और जिसस्त्रीकेजन्मकालमें लग्नचंद्रमा ग्रह राशिमिथ
मिथुनादिमें स्थित होवें और पुरुष राशिके नवांशमें स्थित होवें सो स्त्री पुरुषकी न्याई स्वरूप और

अथस्त्रीजातकाध्यायोऽव्याख्यायते ॥ यज्जन्मकालादुदितंनराणांहोराप्रवीणैःफलमि
तदेव स्त्रीणांप्रकल्प्यंखलुवेदयोग्यंतन्नायकेतत्परिवेदितव्यम् १ लग्नेशशांकेचवपुर्वि
चिंत्यंतयोःकलत्रेपतिवैभवानि सुतास्यभावेप्रसवोऽवगम्योवैधव्यमस्याःकिलका
लगेहे २ ग्रथांतरेपि वैधव्यंनिधनगृहेपतिसौभाग्यसुखंचजामित्रे सौंदर्य्यंलग्नगृ
हेविलोकयेत्पुत्रसंपदांनवमे ३ एषुस्थानेषुयुवत्यःसौम्याःशुभदाबलान्विताज्ञेयाः
क्रूरास्तुनेष्टफलदाभुवनेशविवर्जिताःसदाचिंत्यम् ४ पुरुषर्क्षेपुरुषांशेलग्नेंद्वोः
पापयुक्तयोर्जाता पुरुषाकृतिशीलयुताभर्तुरयोग्यासमंजसाकन्या ५
समराशौसमभागेलग्नेंद्वोःस्त्रीगुणान्विताकन्या ॥ सौम्ययुतेदृष्टेवासुभगासा
ध्वीसुविख्याता ६ तथा लग्नेंदूविषमर्क्षगौशुभयुतौसौम्यग्रहालोकितौ ना
रीमिश्रगुणाकृतिस्थितिगतिरज्ञावतीजायते ॥ युग्मागारगतौतुपापसहितौपा
पेक्षितौवातथा तद्राशीशयुतेक्षकग्रहबलादायुःसमस्तंविदुः ७

स्वभाववाली और स्वामीके योग्यनहि होतीहै और माडी होतीहै ५ और जिसके
जन्मकालमें समराशियोंमें वृष ककादिकोंमें और समराशिकेनवांशमें लग्न चंद्रमादोनों हों
वें तब कन्या स्त्रियोंके यो गुणहैं तिन्होंकरकें युक्त होतीहै और शुभग्रहोंकरकेंयुक्त वा दृष्ट होवें तब श्रेष्ठ
भाग्योंवाली और साध्वी और प्रसिद्ध होतीहै ६ और कहतेहैं लग्न और चंद्रमा विषम राशियों
में स्थित होवें और शुभग्रहकरकें युक्त और दृष्ट होवें तब स्त्री मध्यम गुणों वाली और मध्यमरूप
वाली और बुद्धिवाली होतीहै और तैसेहि समराशियोंमेंलग्न चंद्रमा स्थित होवें और पापी ग्रहोंक
रकें युक्त दृष्ट होवें तब मध्यम रूप वाली और मध्यम गुण वाली होतीहै ॥ और लग्नेश और चंद्र
माको राशिका स्वामी इन्होंकों जैसे ग्रह देखते होवें तिन्हकाबलाबलदेखकरकें संपूर्ण फल कहे ७

अव त्रिंशांशका फल कहतेहैं ॥ जिस कन्याके जन्मसमयमेंलग्न और चंद्रमामें यो बली होवे और मंगलकी राशिमें और शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब कन्या बडी निंद्य होतीहै ॥ और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवे तब निरंतर पतिव्रता होतीहै ॥ और मंगलके त्रिंशांशमें होवे तब निश्चयकर्के दुष्ट होतीहै और बुधके त्रिंशांशमें होवेतबमायामेंचतुरहोतीहै और शनिके त्रिंशांशमें होवे तब दासी होतीहै ८ और लग्न अथवा चंद्रमा बुधकी राशिमें स्थितऔर मंगलके त्रिंशांशमें होवें तब कन्या कपट स्वभाववालीहोतीहै और शुक्रके त्रिंशांशमें होवें तबकामदेवसे रहित होतीहै और बुधके त्रिंशांशमें होवें तब अत्यंत गुणोंकर्के युक्त होतीहै ॥ और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवें तब निरंतर पतिव्रता होतीहै और शनिके त्रिंशांशमें नपुंसककी स्त्री होतीहै ९ और जिस

अथत्रिंशांशफलम् लग्नेंद्वोर्बलवान्कुजस्यभवनेशुक्रस्यखाग्न्यंशकेकन्यास्यादतिनिंदितासुरगुरोःसाध्वीनितांतभवेत् दुष्टाभूतनयस्यनूनमुदितासौम्यस्यमायाविनीदासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशेफलानिक्रमात् ८ तारानायकपुत्रभेऽवनिसुतत्रिंशाङ्के कापटाशौक्रेहीनमनोभवाशशिसुतस्याऽतीवयुक्तागुणैः ॥ देवाधीशपुरोहितस्याहिभवेत्साध्वीनितांततथा खाग्न्यशेऽर्कसुतस्यसानिगदिताक्लीवस्यभार्याबुधैः ९ देवाचार्यगृहेमृतांशुरथवालग्नखवन्ह्यशकेभूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोःरूयातागुणानांगणैः तारास्वामिसुतस्यचारुविभवाशुक्रस्यसाध्वीभवेन्नूनंभानुसुतस्यचाल्पसुरताकांताबुधैःकीर्तिता १० दैत्याचार्यगृहेसुरेंद्रसचिवस्याकाशवन्ह्यशकेलग्नवाप्युडुनायकोगुणवतीभौमस्यदौष्ट्याधिका ॥ सौम्यस्यातिकलाकलापकुशलाशुक्रस्यचंचद्गुणैर्युक्ताधैर्यनिपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशेपुनर्भूरिति ११

कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा वा लग्न बृहस्पतिकी राशिमें स्थित होवें और मंगलके त्रिंशांशमें होवें तबकन्यागुणोंवालीहोतीहै और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होवें तब गुणोंकसमूहोंकर्के प्रसिद्ध होतीहै और बुधके त्रिंशांशमें होवे तब श्रेष्ठ ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै और शुक्रकेत्रिंशांशमें होवे तब पतिव्रता होतीहै और शनिकेत्रिंशांशमें होवे तब स्त्रीनिश्चयकर्के थोडीप्रीति वाली होतीहै १० और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा शुक्रकी राशिमें और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होवें तब कन्यागुणवालीहोतीहै और मंगलकेत्रिंशांशमें होवें तब दुष्टाहोतीहै और बुधकेत्रिंशांशमें होवें तब कलाके समूहोंको जानने वाली होतीहै और शुक्रके त्रिंशांशमें होवेंतब बडे प्रभाववाले गुणोंकर्के युक्त होतीहै और शनिके त्रिंशांशमें होवें तब दोवारीविवाही जातीहै ११

और जिसकन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा शनिकी राशिमें स्थित और मंगलके त्रिशांशमें होवे तव दासी होतीहै और वुधके त्रिशांशमें दुष्टा होतीहै और वृहस्पतिके त्रिशांशमे स्वामीके पूजने वाली होतीहै और शुक्रके त्रिशांशमें प्रसूतीसें रहित होतीहै और शनिके त्रिशांशमे नीचमें रत होतीहै १२ और जिसकन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा सिंहराशिमें स्थित होवे और मंगलके त्रिशांशमें होवे सो कन्या इच्छाचारिणी होतीहै और वुधके त्रिशांशमें अत्यंत दुष्ट मन वाली होतीहै और वृहस्पतिके त्रिशांशमें राजाकी राणी होतीहै और शुक्रके त्रिशांशमें व्याभिचारमें रत होतीहै और शनिके त्रिशांशमें अत्यंत पुरुषकीन्याईं चतुर होतीहै १३ और जिसकन्याके जन्मकालमें कर्कट राशिमें चंद्रमा वा लग्न होवे और मगलके त्रिशांशमें होवे तव कन्या अपनी इच्छासें वर्त्तने वाली होतीहै और वुधके त्रिशांशमें शिल्पविद्यामें चतुर होतीहै और वृहस्पतिके त्रिशांशमें श्रेष्ठगुणोंवाली और शुक्रके त्रिशांशमें पतिव्रता और शनिके त्रिशांशमें

मंदालयेखाग्निलवेकुजस्यदासीचसौम्यस्यखलाहिवाला ॥ वृहस्पतेःस्यात्पतिदेवतासावंध्याभृगोर्नीचरतार्कसूनोः १२ लग्नंवाविधुरर्कमंदिरगतोभौमस्यखाग्न्यंशकेस्वच्छासंचरणोद्यताशशिसुतस्यातीवदुष्टाशया देवाधीशपुरोधसोनिगदितासाराजपत्नीभृगोःपौंश्चल्याभिरताशनेरतितरांपुंवत्प्रगल्भांगना १३ चंद्रागारेखाग्निभागेकुजस्यस्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्यशिल्पेप्रवीणा वाचांपत्युःसद्गुणाभार्गवस्यसाध्वीमंदस्यप्रियप्राणहंत्री १४ ॥ अथशुभाऽशुभयोगाः ॥ अन्योन्यभागेक्षणगौसितार्कौयद्वासितर्क्षेतनुगेघटांशे कंदर्पशांतिंकुरुतेनितांतं नारीनराकारकरांगनाभिः १५ शून्येमन्मथमंदिरेशुभखगैर्नालोकितेनिर्वलेवालायाः किलनायकोमुनिवरैःकापूरुषःकीर्तितः जामित्रेवुधमंदयोर्यदिगृहंपंठो भवेन्निश्चितंराशौतत्रचरेविदेशनिरतोद्व्यंगेचामिश्रस्थितिः १६

स्वामीके प्राणहरणे वाली होतीहै १४ अव शुभाऽशुभ योग कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र और शनि दोनों परस्परनवांशमें स्थित होवें शनिके नवांशमें शुक्र और शुक्रके नवांशमें शनि स्थितहोवे और आपसमें देखते होवें अथवा जन्मलग्न तुला होवे और तिसमें कुंभराशिका नवांश होवे सो स्त्री पुरुषाकार स्त्रीयोंकर्के कामकी शांतिको करणे वाली होतीहै १५ और योगांतर कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मलग्नसें सप्तमस्थान ग्रहोंकर्के रहित होवे और ग्रहोंकीदृष्टिकर्के रहित होवे वलसें हीन होवे तव तिस कन्याका स्वामी भयडा होताहै और जद सप्तमभावमें मिथुन कन्या और मकर कुंभ लग्न होवें तव तिसकास्वामी नपुंसक होताहै निश्चयकर्के और जिस स्त्रीके सप्तमभावमें चर राशी १ ४ ७ १० स्थित होवे तव तिसका स्वामी विदेशमें रत होताहै और द्विस्वभाव लग्न ३ ६ ९ १२ सप्तममें होवे तव कवी घरमें कवी विदेशमें रहिनाहै १६

और योगांतरकहतेहैं जिसस्त्रीकों सप्तमस्थानमें सूर्यस्थितहोवे सो पतिकर्के त्यागकों प्राप्तहोतीहै औरमं गलसप्तमस्थानमें होवे सो बालविधवा होतीहै और पापीग्रहों कर्के सप्तमभाव दृष्टहोवे और शनि कर्के युक्तहोवे तबकन्याकुमारीहिवृद्धहोजातीहै १७ और योगांतरकहतेहै जिसकन्याके सप्तमभावमें पापीग्रह स्थितहोवे तिसकेकेशपाशनष्टहोजातेहे और मिश्रग्रह स्थितहोवे तबदूसरी वार विवाहिजातीहै ओर सप्तममें वलहीन पापग्रह स्थितहोवे और शुभग्रहोंकर्के नहिदृष्टहोवें तब स्वामीकर्केत्यागकोंप्रा प्तहोतीहै १८ और योगकहतेहै जिसस्त्रीके जन्मकालमें मंगलके नवांशमें शुक्रऔर शुक्रकेनवांशमें मं गलस्थितहोवें सोस्त्रीनिश्चयकर्के परपुरुषमेंरतहोतीहै और शुक्रमंगलचंद्रमाकर्केयुक्त सप्तमस्थानमें स्थि तहोवें तबस्वामीकी आज्ञामें रतहोतीहै ॥ १९ ॥ और योगांतर कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मकालमें मंगलशनिकीराशियोंमें १ ।८ ।१० ।११ लग्न गत

सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजेचविधवाखलुबाल्ये पापखेचरविलोकनयातेमंदगे चयुवतिर्जरतीस्यात् १७ खले कलत्रेचगतालकास्यात्कांताविमिश्रेश्चभवेत्पुनर्भूः कलत्रसंस्थेविवलेखलाख्येसौम्येरदृष्टेविभुनाविमुक्ता १८ अन्योन्यांशावस्थितौभौ मशुक्रौस्यात्तांकांतासंगतान्येननूनं चंद्रोपेतौशुक्रवक्रौस्मरस्थावाज्ञामेवस्वामिनश्चा मनंति १९ लग्नेसितेंदूकुजमंदभस्थौक्रूरेक्षितौसान्यरताहियोपा स्मरेकुजेसार्क सुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्च शुभाऽशुभांशे२०भानोर्भयदिवालवःस्मरगृहेसंभोगमंदः पतिश्चंद्रस्यातिमदोमृदु क्षितिसुतस्यस्त्रीप्रिय क्रोधयुक् विद्वान्ज्ञस्यगुरोर्वशी गुणयुत शुक्रस्यभाग्यान्वितोमंदस्यप्रवयास्तुगूढमतिरित्युक्तोबुधैर्होरिकैः २१

चंद्रमा शुक्र होवें और क्रूरग्रहोंकके दृष्ट होवे सो स्त्री परपुरुषमें रत होतीहै और जिस स्त्री केसप्त म भावमें मंगल स्थित होवे और शनिकर्के युक्त दृष्ट होवे और शुभग्रह पापग्रहोंके नवांशमें स्थि त होवें तब तिसकी योनी नष्ट होतीहै २० और जिसस्त्रीके सप्तमभावमें सूर्यकी राशि वा नवां श स्थित होवे तब तिसका स्वामी संभोगमें मंद होताहै और चंद्रमाकी राशि और नवांश होवे तबति सका स्वामी वडे मदकर्के युक्त और कोमल होताहै और मंगलकीराशि नवांश होवे तब स्त्रीका प्यारा और क्रोधयुक्त होताहै और बुधके नवांशमें पंडितहोताहै और बृहस्पतिके नवांशमें वश्य और गु णोंकर्केयुक्त होताहै और शुक्रके नवांशमें भाग्योंकर्के युक्त होताहै और शनिके नवांशमें वृद्ध और गूढमति होताहै यह फल होराशास्त्रके जाननेवाले कहतेहैं २१ ॥

श्रौरयोगांतरकहतेहैंजिसस्त्रीकेजन्मकालमेंशुक्रचंद्रमासप्तमभावमेंस्थितहोतेहैंतिसस्त्रीकोंईर्ष्याकर्केयुक्त श्रौरवडेभाग्योंवालीकरतेहैंश्रौरबुधचंद्रमासप्तममेंकलावतीश्रौरश्रेष्ठगुणोंवालीकरतेहैंश्रौर बुधशुक्रवडे प्रकाशवालेभाग्य श्रौर गुणोंकर्के युक्त कर्तेहै श्रौर शुभग्रह लग्नमें स्थित होवें तब अनेक भूषण श्रौर श्रेष्ट गुणोंकर्के युक्त होतीहै श्रौरपापीग्रह लग्नमें होवें तव खोटा फल कर्तेहैं ॥ २२ ॥ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिसकन्याकेजन्मलग्नसेंश्रष्टमस्थानमेंपापीग्रहहोवेंसोविधवाहोतीहैश्रौर श्रष्टमे श जिसग्रहके नवांशमें स्थित होवे तिसग्रहकी दशाकालमें सोस्त्रीमृत्युकों प्राप्त होतीहै श्रौर शुभग्रह दूसरे स्थानमें स्थित होवें तव अपने दोषकर्के मरतीहै २३ श्रौर जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य श्रौर मंगल चंद्रमासें दशम चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें सोपर्वतसें गिडकर्के मरतीहै श्रौर मंगल श्रौर चंद्रमा श्रौर शनि दूसरे श्रौर सप्तमें श्रौर चतुर्थस्थानमेंस्थित होवें तव खूहे श्रौर बाउलीसें श्रादले कर्के जलाशयमें डूवतीहै श्रौर जिस कन्याकेजन्मकालमेंसूर्यचंद्रमादोनों पापग्रहकर्के युक्त दृष्ट होवें

शुक्रेंदूस्मरगौस्त्रियंप्रकुरुतस्सेर्ष्यांसुखेनान्वितांसौम्येंदूचकलासुखोत्तमगुणांशु क्रेंदुपुत्रावथ ॥ चंचद्भाग्यकलान्वितामिरुचिरांसौम्यग्रहैंद्रास्तनौनानाभूषणसद्गुणां वरसुखांपापग्रहास्त्वन्यथा २२ वैधव्यंस्यात्पापखेटेऽष्टमस्थेरंध्रस्वामीसंस्थि तोयस्यचांशे मृत्युःपाकेतस्यवाच्योंगनायाःसौम्यैरर्थस्थानगैःस्यात्स्वयंहि २३ सूर्यारौखजलाश्रितौहिमवतःशैलाग्रपातान्मृतिर्भौमेंद्वर्कसुताःस्वसप्तजलगाःस्या त्कूपवाप्यादितः सूर्याचंद्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यास्थितौबंधनात्तौचेद्द्व्यंगविलग्न संस्थितिकरौतोयेनिमग्नास्वतः २४ रविसुतोयदिकर्कमुपागतोहिमकरोमकरोपग तोभवेत् किलजलोदरसंजनितातदानिधनतावनितासुचकीर्त्तिता २५ निशाकरःपा पखगांतरस्थःशस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोतिपापेस्मरस्थेऽन्यखगेचधर्मेकिलांग नाप्रव्रजितत्वमेति २६ कन्यालिगोसिंहगतेशशांकेपंकेरुहाक्षीखलुसाल्पपु त्रा पुत्रालयेचच्छुभखेचरेंद्रैर्दृष्टयुतवावहुताचतेषाम् ॥ २७ ॥ शुक्रेंदुसौम्यावि वलाभवेयुःशनैश्चरोमध्यवलोयदिस्यात्

श्रौर चंद्रमा द्विस्वभाव राशिमें लग्नगत होवे श्रौर कन्या राशिमें स्थित होवें तव वंधनसें मरतीहै श्रौर जिस कन्याके जन्मकालमें शनिकर्कट राशिमें श्रौर चं तव श्रापजलमें डूवकर्के मरतीहै २४ श्रौर जिस कन्याके जन्मकालमें शनिकर्कट राशिमें श्रौर चं द्रमा मकर राशिमें स्थित होवे तव निश्चयकर्के सो जलोदर रोगकर्के मरतीहै २५ श्रौर जिस कन्या के जन्मकालमें चंद्रमा पापीग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे श्रौर मेष वृश्चिक राशिमें स्थित होवे तव श स्त्रकर्केश्रौर श्रग्निकर्के मृत्यु कर्ताहे ॥ श्रौर पापीग्रह सप्तमें स्थित होवें श्रौर शुभग्रह नवममें स्थित होवं तव निश्चय कर्के सो प्रव्रजता भावकों प्राप्त होतीहैं क्या सपूर्णकर्मोंकात्यागकर्केदेशांतरमेंभ्रमतीहै २६ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या श्रौर वृश्चिक श्रौर सिंह राशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो निश्चयकर्के थोडे पुत्रोंवाली होतीहै श्रौर पंचमस्थानकों शुभग्रह देखतें होवें वा युक्त हो वें तववहुत पुत्रोंवाली होतीहै २७ श्रौर योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र श्रौर चंद्रमा श्रौर बुध वलहीन होवें श्रौर शनि मध्यवली होवे श्रौर वाकीके सपूर्णग्रह वलें युक्त विषम

लग्नमें स्थित होवें तब स्त्री विशेषसें पुरुषकी न्याईं वचन शीला होतीहें २८ और योगा
तर कहतेहे जिस कन्याके जन्मकालमें समराशिमें वलककें युक्त शुक्र बुध चंद्रमा बृहस्पति स्थि
त होवें सो स्त्री ब्रह्मविचारके करणे वाली और ब्रह्मज्ञानकर्के विराजमान होतीहें २९ और य
वनजातकमें कहतेहे जिस कन्याके जन्मकालमें भद्रातिथि २ ७ १२ होवे और श्लेषा शतभिषा
और कृत्तिका नक्षत्र होवें और शनि मंगल आदित्य वार होवें इन्होंतीनोंके योगमें जन्मेतो विषक
न्या होतीहै ३० और त्रैलोक्यप्रकाशमें कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें शत्रुकी राशिमें दो
शुभग्रह स्थित होवें और एक क्रूरग्रह होवे तव अयसे योगमें जन्मी हुवी विषकन्या होतीहै ३१
और योगजातकमें कहतेहे जिस कन्याके जन्मलग्नमें शनि स्थित होवे और सूर्य पंचम भावमें स्थि
त होवे और मंगल नवम भावमें स्थित होवे इस योगमेंजो जन्मीहै सो विषकन्या होतीहै ३२
अब विष योगका अपवाद कहतेहैं जिसकन्याके जन्मकालमे लग्नसें वा चंद्रमासें सप्तमभावका

शेषास्सवीर्य्याविषमेचलग्नेयोषाविशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥ २८ ॥
समेविलग्नेयदिसंस्थिताःस्युर्वलान्विताःशुक्रबुधेंदुजीवाः स्यात्कामिनीब्रह्म
विचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥ २९ ॥ यवनजातके भद्रातिथिर्यदाश्लेषा
वारुणंकृत्तिकातथा मंदाररविवारेषुविषकन्याप्रजायते ॥ ३० ॥ त्रैलोक्यप्र
काशे रिपुक्षेत्रगतौद्वौतुलग्नेयत्रशुभग्रहौ क्रूरश्चैकस्तथाजाताभवेत्स्त्रीविषक
न्यका ३१ अथयोगजातके लग्नेसौरीरविःपुत्रेधर्मस्थोधरणीसुतःअस्मिन्योगे
तुयाजातासाभवेद्विषकन्यका ३२ अस्यापवादः लग्नाद्विधोर्वायदिजन्मकाले
शुभग्रहोवामदनाधिपश्च द्यूनस्थितोहंत्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषंचविषांगनाख्य
म् ३३ रंध्रगौचंद्रसूर्यौचेद्विलग्नान्निजराशिगौ वंध्याथचंद्रमस्सौम्यौकाकवंध्या
तदाभवेत् ३४ मृतापत्याचशुक्रेज्यौसारौगर्भस्रवाभवेत् तत्वपंचाशकायाम्
नारीणांजन्मकालेकुजशनितमसःकेंद्रकोणेषुशस्ताः चंद्रस्तेषुप्रशस्तोबुधसितगु
रवःसर्वभावेषुशस्ताः लग्नेशःकामभावेमदनगृहपतिर्लग्नभावेवलस्थोलाभेश:पु
त्रभावेवदतिमुनिवरोवव्हपत्याभवंति ३५

स्वामी अथवा शुभग्रह सप्तम भावमें स्थित होवे तब अनपत्य दोषकों और वैधव्य दोषकों और वि
षांगना दोषकों दूर करताहै ३३ और योगांतर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा सूर्य अ
ष्टमस्थानमें स्थित होवें और स्वक्षेत्रमें स्थित होवें सो स्त्री वंध्या होतीहै अथवा चंद्रमा शुभग्र
ह कर्के युक्त अष्टमस्थानमें स्थित होवे तब काकवंध्या होतीहै क्याएक वारहि प्रसूतहोतीहै ३४ और शुक्र
बृहस्पति अष्टममें स्थित होवें तब मृतपुत्रा होतीहै और मंगलकर्के युक्त शुक्रगुरू अष्टममें स्थि
त होवें तब चारमासके भीतर गर्भ नष्ट होताहै और तत्वपंचाशकामें कहतेहै स्त्रीयोंके ज
न्मकालमें मंगल शनि राहु केंद्र और त्रिकोणमें श्रेष्ठ होतेहैं और चंद्रमा वी केंद्र कोणमें श्रेष्ट हो
ताहै और बुध शुक्र गुरु इह संपूर्ण भावोंमें शुभ होतेहै और लग्नेश सप्तम भावमें और सप्तमेश ल
ग्नमें बली शुभ होताहै और एकादशका स्वामी पंचमभावमें शुभ होताहै और अयसेयोगमेंस्त्रीयांबहुत
पुत्रों वालीयांहोतीयांहैं यहश्रेष्ठमुनि कहतेहैं ३५

और योग कहतेहे जिन्हों कन्याके जन्मकालमे बृहस्पति अथवा शुक्र परमबली होयकर्के सप्तम भावमें स्थित होवें और दशम भावका स्वामी लग्नसें नवम और एकादश और लग्नमे और चतुर्थ और पचम और दशम और दूसरे स्थानमें स्थित होवे सो जो स्त्रीयाहे चद्रमाकीन्याई मुखजिन्ह-का और कमलदलकीन्याई नेत्र जिन्हके तिनकेराज्यश्रीकरके युक्त मणिमयमादिरमेबडेरूपवाले नायकदासभवकोप्राप्तहोकरशोभतेहें ३६ और योग कहतेहे जिस कन्याके जन्मकालमे बृहस्पति नवम ९ पंचम ५-केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानोमे स्थित होवे और उच्च स्वक्षेत्र मित्र राशिका होवे तव कन्या श्रेष्ट स्वभाववाली और पतिव्रता और पुत्रोंके जन्मने वाली और सुखवा ली और गुणोंकर्के युक्त और निश्चयकर्के दोनों कुलोमे यशके करणे वाली होतीहें ॥ ३७ ॥ और जिस कन्याका जन्मलग्न शुभ ग्रहोंकर्के दृष्ट होवे तव शिल्पके जानने वाली और शुद्धचित्त वाली और निरंतर लज्जाकर्के युक्त और श्रेष्ट रूपवाली और श्रेष्ट पुत्रोंकर्के युक्त और वहुत धन और सुख

जीवोवाभार्गवोवापरमवलयुतःकामभावेपुयासांकर्मेशोधर्मलाभेतनुसुखतनयेकर्मकोशेवलस्थः ॥ तासांचंद्राननानांकमलदलदृशांनायकोरूपयुक्ताराजंतेराजलक्ष्मीमणिमयशिविरेदासभावेसदेव ३६ वाचस्पतौनवमपंचमकेंद्रसंस्थेतुगादिकेभवतिशीलसमन्विताच ॥ साध्वीसुपुत्रजननीसुखिनीगुणाढ्यानूनंकुलद्वययशस्करिणीभवेत्सा ३७ यदिशुभकरदृष्टाशिल्पिनीशुद्धचित्तासततमिहसलज्जाचारुमूर्तिःसुपुत्रा ॥ वहुधनसुखयुक्तावल्लभेवल्लभंवंव्रजतिशुभशतानांभाजनत्वंचहोरा ॥ ३८ ॥ चंद्रेकर्कटकोदयेचवलिभिःशुक्रेज्ञजीवेंदुभिर्नानाशास्त्रकलारसज्ञचतुराविख्याततेजस्विनी ॥ कामस्थैरथवाविलग्नभवनाद्धर्मस्थितेःखेचरैःप्रव्रज्यामुपयातिजन्मसमयेपाणिग्रहेचितयेत् ३९ ॥ पापैस्तेनवमगतग्रहस्यतुल्यांप्रव्रज्यांयुवतिरुपैत्यसंशयेन उद्वाहेवरणविधौप्रदानकालेचिंतायामपिसकलंविधेयमेतत् ४०

कर्के युक्त और स्वामीकी प्यारी और अनेक शुभ कर्मोका भाजन होतीहे । ३८ । और योगांतर कहतेहें जिस कन्याके जन्मकालमे ककटराशिमें चद्रमा स्थित होवे और वलकर्के युक्त बृहस्पति शुक्र बुध चद्रमा होवे सो कन्या अनेक शास्त्रकलाके जाननेवाली और रसके जानने वाली और वडी चतुर और तेजवाली होतीहे और जिसस्त्रीके जन्मकालमे सप्तम स्थानमे अथवा नवम स्थानमे चारग्रहसें लेकर्के वहुत ग्रह स्थित होवे सो कन्या जिस रकमके ग्रह होवें तिस रकमकी प्रव्रज्याको प्राप्त होतीहै सो विस्तारकर्के पूर्व चतुर्ग्रहादि योगाध्यायमें कह आएहें इहे विचार जन्मसमयमे और विवाह कालमे करणा कहाहे ॥ ३९ ॥ और कहतेहैं स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तम स्थानमे जो पापी ग्रह स्थित होवे अथवा नवम स्थानमे योग्रहस्थितहोवे तिसकेतुल्य प्रव्रज्या होतीहै निश्चयकर्के और विवाहमें औरवाक्यदानकेसमयमें औरकन्यादानकेसमयमें औरप्रश्नकालमेइसयोगकाविधान करे४०

और जिस कन्याके जन्मलग्नसें अष्टमस्थानमें मध्य वली शुभाशुभ ग्रह युक्त होवैंवा अष्टमभावकों देखते होवे तव स्त्री पुरुष दोनो तुल्यकालमें मृत्युकों प्राप्त होतेहैं ऐसें संपूर्ण ज्योतिः शास्त्रके जानने वाले कहतेहें और अथवा सप्तमेश और लग्नेश एकराशिमें स्थितहोवेंअथवासप्तमेश लग्नमें स्थितहोवे और लग्नेशसप्तममें स्थितहोवे और शुभग्रहकरकेंयुक्तहोवेतवस्त्रीपुरुष एककालमें मरतेहैं ४१ और यों गातर कहतेहैं जिस कन्याके जन्मसमयमें तीसरे घरका स्वामी पुरुष ग्रह होवे और पुरुष ग्रहोंकी राशिमें स्थित होवे और पुरुष ग्रहकरकें युक्त अथवा दृष्ट होवे और दूसरे स्थानमें और केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ स्थानमें और कोण ॥ ५ ॥ ॥ ९ ॥ स्थानमें वली होयकरकें स्थित होवे सो कन्या वहुत धनवाले और सुखवाले भ्राताकों प्राप्त होतीहे अर्थात् तिसके पीछें धनी और सुखी होवे वाला भ्राता जन्मताहै ॥ ४२ ॥ और कहतेहैं जिस कन्याके जन्मकालमें तीसरे स्थानकास्वामी और एकादश स्थानका स्वामी लग्नमें और पंचम भावमें स्थित होवें तव राज्यतेजकरकें युक्त गुण

रंध्रेमिश्रवलेशुभाऽशुभखगैरालोकितेवायुतेदंपत्योःसमकालमृत्युमखिलज्योतिर्विदःसंविदुःएकस्थौमदलग्नपौचयादिवालग्नस्थितेकामपेकामस्थेतनुपेशुभग्रहयुते मृत्युस्तयोस्तुल्यतः ४१सहजभवननाथेपुंग्रहेपुंग्रहर्क्षेपुरुषखचरयुक्तेपुंग्रहालोकिते वा नयनभवनकेंद्रेकोणगेवावलिष्ठेवहुधनसुखवंतंसोदरंयातिजाता ४२ सहोदरस्थानपलाभनाथौविलग्नतःपंचमराशियातौनृपालतेजोगुणरूपवंतंसहोदरं जातवधूसमेति ४३ अथपतिलक्षणम् ॥ गौरांगःपतिरस्तगेदिनकरेकामीसरोषेक्षणश्चंद्रेरूपगुणान्वितःकृशतनुर्भोगीरुगार्त्तोभवेत् ॥ नम्रःक्रूररसोलसः पटुवचःसंरक्तकांतिःकुजेविद्यावित्तगुणप्रपंचरसिकःसौम्येमदस्थानगे ४४ दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्तविभवःकामीचवाल्येगुरौकांतोनित्यविनोदकेलिचतुरःकाव्यैकविःक्ष्मापतिः ॥ मंदेवृद्धकलेवरोस्थिततनुःपापीपतिःकामगेराहौवाशिखिनिस्थितेमलिनधीर्नीचोथवातत्समः ४५ अथस्त्रीजातकेवारफलानि ॥

रूपकरकें युक्त भ्राताकों प्राप्त होतीहै ॥ ४३ ॥ अव स्त्रीके स्वामीके लक्षण कहतेहैं जिस कन्याके जन्मलग्नसें सप्तम स्थानमें सूर्य होवै तिसका स्वामी गौर वर्णके अंगों वाला होताहै और कामी और क्रोध युक्त नेत्रों वाला होताहै और चंद्रमा होवें तव रूप और गुणोंकरकें युक्त और दुर्बल देहवाला और भोगी और रोगी होताहै और मंगल होवे तव नम्र और क्रूर रसवाला और आलसी और प्रगल्भवाणी वाला और लालवर्ण वाला होताहै और बुध होवे तव विद्या और धन और गुण और प्रपंच रसकके युक्त होताहै ॥ ४४ ॥ और बृहस्पति सप्तम स्थानमें होवे तव वडी आयुषा वाला और राजाके समान धन ऐश्वर्य वाला और वाल्यावस्थामें कामी होताहै और शुक्र होवे तव सुंदर और नित्यप्रति आनंदकरकेंयुक्त और काव्यमेंचतुर और राजाहोताहै और शनि होवेतववृद्ध देहवाला और पतलदेह वाला और पापी होताहै और राहुकेतु सप्तममें स्थित होवै तव मलीन बुद्धिवाला और नीच वा नीचके तुल्य होताहै ४५ अव स्त्रीजातकमें वार फल कहतेहैं ॥

और योकन्यारविवारमें जन्मतीहै सो तीक्ष्ण स्वभाववालीऔर श्रेष्ठभाग्योंवालीऔर प्रचंडरूप और
तेजकर्के युक्त और छैरसकेभक्षणकरणेवालीहोतीहै १ और यो कन्यासोमवारमें जन्मतीहै सो स्निग्ध
वर्णवालीऔर श्रेष्ठ भाग्योंवाली और श्रेष्ठहास्यकेकरणेवालीऔरसुंदरभूषणोंवाली और जलक्रीडामें
प्रीति वाली नित्यंप्रति होतीहै २ और यो कन्या मंगलवारकोंजन्मतीहै सोप्रचंडरूप और कृतघ्न
किसिके उपकारकों नहिं जाननेवाली और क्रोधकर्के युक्त और लालवस्त्रोंमें प्रीति वाली नित्यंप्र
ति होतीहै ३ और यो कन्या बुधवारमें जन्मतीहै सो चंगे और मंद वाक्योंमें प्रसन्नरहितीहै और
शोभा कर्के युक्त होतीहै और धर्मकर्ममें प्रीतिवाली होतीहै ४ और यो कन्या बृहस्पति वार कों
जन्मतीहै सो लोभ और क्रोधसें रहित और संपूर्ण सुखकर्के युक्त और शुभकर्मोमें रत होतीहै ५
और यो कन्या शुक्रवारकों जन्मतीहै सो संपूर्ण धनके संचय करणे वाली और गौवां और हाथी

तीक्ष्णाचशुभगाचैवप्रचंडातेजसान्विता ॥ षड्रसास्वादिनीकन्याजायतेरवि
वासरे १ सुस्निग्धासुभगाचैवसुस्मिताचारुभूषणा ॥ जलक्रीडाप्रियानि
त्यंजायतेसोमवासरे ॥ २ ॥ प्रचंडाचकृतघ्नाचक्रोधयुक्ताचकन्यका ॥
रक्तांबरप्रियानित्यंजायतेकुजवासरे, ३ ॥ इष्टानिष्टेषुवाक्येषुरंजतेबहुधाश्रिया
धर्मकर्मप्रियाकन्याजायतेसोमनंदने ४ ॥ लोभक्रोधविहीनाचसर्वसौख्यस
मन्विता ॥ शुभकर्मरताकन्याजायतेगुरुवासरे ५ सर्वार्थसंचयरतागोगजा
श्वाविकप्रिया ॥ कन्यकाभर्तृमानाचजायतेभृगुनंदने ६ कुबुद्धिर्मूढकामाचदी
र्घदृष्टिर्जितेंद्रिया ॥ अल्पकेशीविनीताचकन्याजाताशनैश्चरे ७
अथनक्षत्रफलानि ॥ कन्याबलवतीचैवत्वहंकारवतीसदा ॥ व्यवहाररतादक्षा
दस्त्रभेजायतेहिसा १ अत्यंतसुखिनीकन्याचार्वंगीहास्यकारिणी ॥ मातापितृ
प्रशस्ताचजायतेयमदैवते २ तेजस्विनीयशोयुक्तापरसक्तातुकन्यकाबह्वाशनी
क्रूररूपाकृत्तिकायांतुजायते ३

घोडे भेडांमें प्रीति वाली और स्वामीके मान वाली होतीहै ६ और यो कन्या शनिवारमें जन्मती
है सो खोटी बुद्धिवाली और निंद्य कर्मकरणे वाली और दीर्घ दृष्टि वाली और
इंद्रियांके जीतने वाली और थोडे केशोंवाली और नम्र होतीहै ॥ ७ ॥ अब
नक्षत्रोंके फल कहतेहैं ॥ यो कन्या अश्विनी नक्षत्रमें जन्मतीहै सो बडे बलवाली और अह
कारकर्के युक्त और व्यवहारमें रत और चतुर होतीहै १ और यो कन्या भरणी नक्षत्रमें जन्मतीहै
सो अत्यंत सुखवाली और सुंदर अंगोंवाली और हास्यके करणे वाली और माता पिताकों शुभ
करणे वाली होतीहै २ और यो कन्या कृत्तिका नक्षत्रमें जन्मतीहै सो तेजवाली और यशकर्के युक्त
और पर सक्त और बहुत भोजन करणे वाली और क्रूर रूप वालीहोतीहै ३

और योकन्या रोहिणी नक्षत्रमें जन्मतीहै सो वडीआयुपावाली औरपुत्रोंवाली औरकुलकेवधावनें वाली धन्याऔर मानवाली होतीहै ४ और योकन्यामृगशिरानक्षत्रमेंजन्मतीहै सो मातापिताकोंशुभकरणे वाली और धनवाली और कृपणा और दूसरेमें सक्त होतीहै ५ और यो कन्या आर्द्रा नक्षत्रमें जन्मतीहै सो पापकर्ममें सक्त होतीहै और कुरूपाऔर लडाईकरणेवाली और दृढवैरकेकरणेवालीहोतीहै ६ और यो कन्या पुनर्वसुमें जन्मतीहै सो क्षमाकरणेके स्वभाव वाली और भाईयोंमें प्रीति करणे वाली और किसीसें वैरभाव नाहीं करणें वाली और परलोकके सिद्ध करणे वाली होतीहै ७ और यो कन्या पुष्यनक्षत्रमें जन्मतीहै सो धर्मवुद्धिवाली और संपूर्णकर्म करणें वाली और श्रेष्ठा होतीहै ८ और यो कन्या श्लेषामें जन्मतीहै सो प्रचंडा और कृतघ्ना और क्लीवा और लडाईमें प्रसन्न होनें वाली और अपने प्रेममें सक्त होतीहै ९ और यो कन्यामघानक्षत्रमें जन्मतीहै सो वडे श्रेष्ठ भोजनव

आयुष्मतीसुतवतीकन्यकाकुलवर्द्धनी धन्यामानवतीचैवरोहिण्यांजायतेहिसा ॥ ४ ॥ मातुःपितुःप्रशस्ताचकन्यकाधनभागिनी ॥ कृपणाचान्यसक्ताच जायतेसोमदैवते ॥ ५ ॥ पापकर्मप्रसक्ताचकुरूपाकलहप्रिया ॥ कन्यकादृढवैराचजायतेरौद्रदैवते ६ क्षमाशीलप्रसक्ताचकन्यकाबांधवप्रिया अवैरापरलोकार्थाजायतेदितिदैवते ७ धर्मवुद्धिसमारूढासर्वकर्मकरीसदा ॥ प्रशस्ता कन्यकाचैवजायतेगुरुदैवते ८ प्रचंडाचकृतघ्नाचक्लीवाचकलहप्रिया ॥ कन्यकाप्रेमसक्ताचजायतेनागदैवते ९ महार्हभोजनेसक्ताकन्याभोगवतीतुसा पितृदेवार्चनेरक्ताजायतेपितृदैवते १० त्यागशीलविहीनाचलोभक्रोधविवर्द्धिनी कन्यकादृढकामाचजायतेभगदैवते ११ अर्थसंचयसंयुक्ताकन्यकाछिद्रकारिणीकिंचिद्धर्मवतीचैवजायतेर्यम्णदैवते १२ तीक्ष्णाचदृढकामाचपरद्रव्यापहारिणीस्वकर्मकुशलाकन्याजायतेचार्कदैवते १३ शुक्लांवरधराकन्याहास्यकामिजनप्रियापितृदेवार्चनेसक्ताजायतेत्वाष्ट्रदैवते १४ निरालस्यातिरूपाचकुत्सिताच जयान्विता ॥ कन्यकाचाप्रमादाचजायतेवायुदैवते १५

नानेमें सक्त होतीहै और भोगोंके भोगनेवाली और पितर और देवताके पूजनमें रत होतीहै १० और यो कन्या पूर्वाफाल्गुणीमें जन्मतीहै सो त्यागसें और शीलसें हीन और लोभ क्रोधके वधावनें वाली और दृढकामा होतीहै ११ और यो कन्या उत्तराफाल्गुणीमें जन्मतीहै सो धनके संचय करणे वाली और दूसरेका छिद्र करणे वाली और किंचिद्धर्म करके युक्त होतीहै १२ और यो कन्या हस्तनक्षत्रमें जन्मतीहै सो क्रूर और दृढकामवाली और परायेद्रव्यके हरणे वाली और अपने कार्यमें श्रेष्ठ होतीहै १३ और यो कन्या चित्रानक्षत्रमेंजन्मतीहै सो श्वेतवस्त्रोंके धारणेवाली और हास्यकरणे वाली और कामीजनोंमें प्रीति करणे वाली और पितर और देवताके पूजनमें सक्त होतीहै १४ और यो कन्या स्वातीमें जन्मतीहै सो आलस्यसें रहितऔर वडे रूपकरके सहित और निंद्यकर्मोंके करणे वाली और जयकरके युक्त और मनोकरके युक्त होतीहै १५

और यो कन्याविशाखामें जन्मतीहै सो धर्मवाली और बडीनम्र और बुद्धि और धनकर्केयुक्त और सत्य बोलनेवाली होतीहै १६ और यो कन्या अनुराधमेंजन्मतीहै सो बहुतभोजनकरणेवाली और लोभकर्के युक्त और सर्वदाकाल मद्यमासमें रत और अन्यपुरुषमें सक्त होतीहै १७ और यो कन्या ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्मतीहै सो शत्रुके घातवाली औरबडीलडाईकरणेवाली और अत्यत क्रूरहोतीहै १८ और यो कन्या मूलानक्षत्रमें जन्मतीहै सो पापकर्मके करणेवाली और प्रचडा और खोटेकर्ममेंरुदा रत और कुलकाक्षय करणेवालीहोतीहै १९ और यो कन्यापूर्वाषाढामेंजन्मतीहै सो धर्ममेंस्वभाववाली और बडीनम्र और सत्य बोलने वाली और पुण्यकर्ममेंरत होतीहै २० और योकन्या उत्तरापाढामें जन्मतीहै सो पतिव्रताऔर मीठाबोलनेवाली और नित्यप्रतिअभ्यागतकापूजनकरणेवालीऔर पुत्रों कर्के युक्त होतीहै २१ और यो कन्याश्रवण नक्षत्रमें जन्मतीहै सो बडी नम्र होतीहै और श्र

धर्ममूलाविनीताचप्रज्ञाधनसमन्विता द्विदैवतेहिसंजाताकन्यकासत्यवादिनी १६
बहुभुग्लोभसंपन्नामद्यमांसरतासदा कन्यकाचान्यसंसक्ताजायतेमित्रदैवते १७
शत्रोपघातिनीचैवमहाकलहकारिणी कन्यकाचातितीक्ष्णाचजायतेचैंद्रदैवते १८
पापकर्माप्रचंडाचकुकार्यनिरतासदा कुलक्षयकरीकन्याजायतेमूलभेचया १९
धर्मशीलाविनीताचकन्यकासत्यवादिनी पुण्यकर्मरताचैवजायतेजलदैवते २०
सतांप्रियवचाचैवनित्यमतिथिसेविनी कन्यकाजायतेयातुवैश्वदेवेसुतान्विता २१
विनीताश्रद्धानाचकथालापप्रियासतीकन्यकास्वकुलेपून्याजायतेविष्णुदैवते २२
अर्थार्थिनीचलुब्धाचपुष्पमाल्यांवरप्रिया कन्यकाअन्यसक्ताचजायतेवसुदैवते २३
पापकर्मप्रचंडाचनित्यमुद्वेगकारिणी परोपकारिणीकन्याजातावरुणदैवते २४पा
पकर्मरतानित्यकन्यकासर्वभक्षिणी मायाविनीदेवभक्ताजायतेजैकपादभे २५ सु
बुद्धिधर्मसक्ताचगुणशीलसमन्विता अहिर्बुध्न्यदैवतेतुकन्यकाजायतेहिया २६
मातापिताश्वश्रूणांचदेवब्राह्मणसेविनी अनुकूलाहिकन्याथजायतेपौष्णदैवते २७

द्धा कर्के युक्त होतीहै और कथा लापमें प्रीतिवाली और पतिव्रता और अपनेकुलमें पूज्या होतीहै २२ और यो कन्या धनिष्ठानक्षत्रमे जन्मतीहै सो धनकीइच्छाकरणेवाली और लोभकर्केयुक्त होतीहै और पुष्पमालाकी प्यारी होतीहै और अन्यपुरुषमें सक्तहोतीहै २३ और यो कन्या शतभिषानक्षत्रमे जन्मतीहै सो पापकर्ममें प्रचडाहोतीहै और नित्य उद्वेग करणेवाली होतीहै और परोपकार करणेवालीहोतीहै २४ और यो कन्या पूर्वाभाद्रपदामें जन्मतीहै सो नित्यपापकर्ममें रत होतीहै और सर्वभक्षणीहोतीहै और मायाकेजाननेवाली और देवताकीभक्तीवालीहोतीहै २५ औरयोकन्या उत्तराभद्रपदामें जन्मतीहै सो श्रेष्टबुद्धिवालीऔर धर्मबुद्धिवाली और गुणोंकर्के और श्रेष्टस्वभावकर्के युक्त होतीहै २६ औरयो कन्या रेवतीमें जन्मतीहै सो माता पिता और सस्रूकी सेवाकरणेवाली और देवता ब्राह्मणकीसेवाकरणेवाली होतीहै और स्वामीके अनुकूल होतीहै २७

अवचंद्रमाकी राशिकाफलकहतेहैं वृहज्जातकमें जिसकन्याके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा स्थितहोवे सो प्रगल्भाहोतीहै और कृत्यमें तत्परहोतीहै और प्रधानहोतीहै और पुत्रोंकर्के युक्त और सत्ययुत होतीहै और श्रेष्ठरूपवाली और स्वामीकी प्यारी होतीहै १
और जिस कन्याके जन्मकालमें वृषराशिका चंद्रमा होवे सो श्रेष्ठवेशवाली और बहुत शास्त्रमें चतुर और पतिव्रता और धनकर्के और विवेककर्के युक्त होतीहै और कामकलामें चतुर होतीहै ॥ २
और जिस कन्याके जन्मकालमें मिथुनराशिमें चंद्रमास्थित होवे सो कन्या विशेषकर्के नम्र होतीहै और सुंदररूपवाली औरदेखनेमें प्रीतिके उत्पन्न करणे वाली और अनेक प्रकारोंके धनोंवाली और अनेक प्रकारके मानवाली होतीहै और विशेषकर्के चतुर और परोपकारमें रत और श्रेष्ठ नाम वाली होतीहै ३ और जिस कन्याके जन्मकालमें कर्कराशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो लोकोंमें ५

अथचंद्रराशिफलंवृहज्जातके ॥ चंद्रेअजस्थेवनिताप्रगल्भाजाताचवैकृत्यपराप्रधानापुत्रान्वितासत्यपराकुलेष्टासुरूपगात्रापतिवल्लभाच १ ॥ वृषस्थितेरोहिणिवल्लभेचविनीतवेषाबहुशास्त्रदक्षा पतिव्रतावित्तविवेकयुक्तानारीभवेत्कामकलाविदग्धा २ युग्मस्थितेशीतकरेविनीताभवेत्सुरूपाप्रियदर्शनाच नानार्थमानैसहिताविदग्धापरोपकाराभिरतासुनाम्नी ३ कर्कस्थितेशीतकरेसुजातानारीभवेद्वित्तयुताचलोके समानिनीबांधवलोकमान्याहतारिपक्षाद्विजदेवभक्ता ४ सिंहस्थितेचंद्रमसिप्रधानानारीभवेच्छौर्यसमन्विताच प्रियामिषाकृत्यपरासुवस्त्राउदारचेष्टासुभगाचपुंसाम् ५ कन्याश्रितेशीतकरेचजातानारीभवेद्वित्तचतुष्पदाढ्या ज्ञात्याहितास्त्रीहितबंधुवर्गैपतिव्रतापुत्रवतीमनोज्ञा ६ तुलाधरस्थेधृतधर्मयोगाजाताभवेत्स्त्रीहितबंधुवर्गे ॥ पतिव्रतापुत्रवतीमनोज्ञाविवर्जिताक्रोधमनोभवाभ्याम् ७ ॥

नकर्के युक्त होतीहै और बडेमान वाली और बांधवोंकर्के और लोकोंकर्के मानकोंप्राप्तहोतीहै और शत्रुयोंसे रहित और देवता ब्राह्मणोंमें भक्तिवाली होतीहै ४ और जिसकन्याके जन्मकालमें सिंह राशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो प्रधान और ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै और मांसमें प्रीति वाली और कृत्यमें तत्पर और श्रेष्ठ वस्त्रोंवाली और उदार स्वरूपवाली और पुरुषोंको श्रेष्ठभाग्योंके वधावनेवाली होतीहै ५ और जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या राशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो स्त्री धन और पशु और चतुष्पदोंकर्के युक्त होतीहै और जातीकर्के हितकरणेवाली और बंधुवर्गके हितकरणवाली और पतिव्रता और पुत्रोंवाली और स्वामीके मनकोंजानने वाली होतीहै ६ और जिसकन्याके जन्म कालमें तुला राशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो धर्मके धारणेवाली और बंधुवर्गमें हितके करण वाली और पुत्रोंवाली और पतिव्रता और स्वामीके मनकों जाननेवाली और काम क्रोधसेहीनहोतीहै ७

और जिस कन्याके जन्मकालमें वृश्चिक राशिमें चंद्रमा होवे सो गुप्तवेशधारणे वाली और चंचल स्वभाव वाली और लिपायमान चेष्टा वाली होतीहै और वडयोंके हितकों करणे वाली और नियमों कर्के युक्त और वहुत केशों वाली और शत्रु पक्षके जीतने वालीहोतीहै ८ और जिस कन्याके जन्मकालमें धन राशिमें चंद्रमा होवे सो दयाकर्के युक्त और धन वती और श्रेष्ठ नासिका वाली होतीहै और गीतकी प्रीतिवाली और प्राणोंके हितवाली और सुंदर मुखवाली और कन्याके जन्मनेवाली और विशेषकर्के नम्र होतीहै ९ और मकरराशिमें चंद्रमा होवे तव विकरालदंतोंवाली और ऐश्वर्यकर्के युक्त और मनके जानने वाली और विद्याके जानने वाली और सत्यवोलनेवाली और वडे भंडार वाली और अभिमानसें रहित होतीहै १० और कुंभराशिमें चंद्रमा होवे तव चंद्रमाकी न्याई मुखवाली और सर्वदा श्रेष्ठ स्वभाव वाली और पुत्र और धनकर्के युक्त और शुभ

चंद्रेलिसंस्थेवहुगुप्तवेषाचलस्वभावासुविलिप्तचेष्टा हितागुरूणांनियमैःसमेताप्र
भूतकेशाविजितारिपक्षा ८ धनुर्द्धरस्थेशशिनिकृपाढ्यानारीभवेद्वित्तपरासुनासा
गीतप्रियाप्राणहितानुकूलाप्रियाननास्त्रीजननीविनीता ॥ ९ चंद्रमृगस्थेवि
करालदंष्ट्रानारीभवेच्छौर्यपरामनोज्ञा विद्याधिकासत्यपरानुरक्ताप्रभूतकोशाविग
ताभिमाना १० घटस्थितेशीतकरेसुजातानारीभवेच्चंद्रसमानवक्त्रा ॥ सदा
सुशीलासुतवित्तयुक्ताशुभानुरक्ताप्रथितानुकारी ११ मीनाश्रितेशीतकरेसुजाता
नारीभवेद्धर्मपरासुशीला जितेंद्रियासर्वकलासुदक्षावलाभिरामापरमाधनाढ्या १२

अथलग्नफलानि ॥ मेषोदयेशुद्धपरानृशंसानारीभवेत्क्रोधपरासदैव ॥
श्लेष्माधिकानिष्ठुरवाक्युक्तासमाविरक्तानिजवंधुवर्गे १ वृषोदयेसत्यरतामनो
ज्ञाविनीतचेष्टापतिवल्लभाच नारीभवेत्सर्वकलासुदक्षास्ववर्गरक्ताद्विजदेवभक्ता २

कर्ममें रत और समयमें यथोक्त करणे वाली होतीहै ११ और मीनराशिमें चंद्रमा स्थित होवे तव धर्मवती और श्रेष्ठ स्वभाववाली और इंद्रियोंके जीतने वाली और सपूर्णकलामें चतुर और बलकर्के युक्त और वडेपनकर्के युक्त होतीहै १२

अव लग्नोंका फल कहतेहैं यो कन्यामेष लग्नमें जन्मतीहै सो शुद्धचित्तवाली होतीहै और निठ्ठुर और सर्वदा काल क्रोध युक्त होतीहै और श्लेष्म प्रकृति वाली और निष्ठुर वाक्य कर्के युक्त और अपनेवंधुवर्गमें सम और विरक्त रहितीहै १ और यो कन्या वृषलग्नमें जन्मतीहै सो सत्य वोलने वाली और मनके जानने वाली और नम्र चेष्टा वाली और स्वामीकी प्यारी होतीहै और सपूर्णकलामें चतुर होतीहै और अपने वर्गमें रत होतीहै और गुरु देवताकी भक्ति वाली होतीहै २

और यो कन्या मिथुन लग्नमें जन्मतीहै सो अत्यंत कठोर होतीहै और कामसेंरहित और गुणोंक के रहित होतीहै और सर्वदा काल निठ्ठुर होतीहै और कफवायु प्रकृति वाली और बहुत खर्च करणे वाली और क्रूर रूप वाली होतीहै ३ और यो कन्या कर्क लग्नमें जन्मतीहै सो बहुत न म्रता करके युक्त और बधुयों कोप्यारी और श्रेष्ट स्वभाव करके युत और संतानकरके युत और स पूर्ण सुखोंकरके युक्त होतीहै ४ और यो कन्या सिंहलग्नमें जन्मतीहै सो अत्यंत क्रूर होतीहै और कफ प्रकृति वाली और लडाईको प्यारी और अनेक रोगोंकरके युक्त देहवाली और परोपकारमें रत और श्रेष्ट वेश वाली होतीहै ५ और कन्यालग्नमें यो कन्या जन्मतीहै सो नम्रताकरके युक्त और सौभाग्यके सुखोंकरके युक्त और पतिव्रता होतीहै और अपने वर्गमें बहुत धर्मकरके रत होती है और इंद्रियोंके जीतने वाली और सपूर्णकलोंमें चतुर होतीहै ६ और यो कन्या तुला लग्नमें जन्मतीहै सो चिरकाल वेशकों धारणे वाली और श्रेष्ट आनंद वाली और प्रीतिकरके रहित होती

तृतीयलग्नेतिकठोरवाक्यास्त्रीकाममुक्तागुणवर्जिताच ॥ सदानृशंसा कफवातयुक्तामहाव्ययाक्रूरविचेष्टिताच ३ लग्नेकुलीरेचभवेत्प्रसूतानारीप्रभूता विनयैःसमेता ॥ बंधुप्रियासाधुसुशीलयुक्ताप्रजान्वितासर्वसुखैःसमेता ४ सिंहस्यलग्नेवनितातितीक्ष्णाभवेत्कफाढ्याकलहप्रियाच ॥ नानामयैर्युक्त शरीरगात्रापरोपकारेनिरतासुवेषा ५ कन्योदयेस्त्रीविनयाभिनीतासौभाग्यसौ ख्यैःसहिताचसाध्वी ॥ भवेत्स्ववर्गेबहुधर्मरक्ताजितेंद्रियासर्वकलासुदक्षा ६ तुलाख्यलग्नेचिरकालवेषाभवेत्सुनंदाप्रणयेनहीना सगर्विताकांतिविवर्जिताच तृष्णाधिकात्यागविवर्जिताच ७ नारीभवेद्वृश्चिकलग्नजातासुरूपगात्रानयना भिरामा ॥ सुपुण्यशीलाचपतिव्रताचगुणाधिकासत्यरतासदैव ८ चापोद येस्याद्वनितासुजातासायुद्धसौंढ्यापुरुषानुकारा ॥ शास्त्रेषुसाध्याविधवाकठोरा विस्नेहचित्ताप्रणयेनहीना ९ मृगोदयेस्त्रीसुभगासुसत्यातीर्थानुरक्ताहतशत्रु पक्षाप्रधानकृत्याप्रथितासुकेशागुणान्वितापुत्रवतीसुशीला १०

है और गर्वकरके युक्त और शोभासेंहीन और अधिक तृष्णा वाली और त्यागसें रहित होतीहै ७ और यो कन्या वृश्चिक लग्नमें जन्मतीहै सो श्रेष्ट रूप वाली और नेत्रोंमें चद्रमाकी न्याई आनंद के देने वाली और श्रेष्ट पुण्यमें स्वभाव वाली और पतिव्रता और बडेगुणों वाली और सत्यमें सर्वदा काल रत होतीहै ८ और यो कन्या धन लग्नमें जन्मतीहै सो युद्धकरणेमें प्रधान होतीहै और पुरुषाकार होतीहै और शास्त्रोंमें साध्वी होतीहै और विधवा होतीहै और कठोर होतीहै औ र स्नेहसें विना चित्तवाली होतीहै और प्रीतिसें रहित होतीहै ९ और यो कन्या मकरलग्नमें जन्म तीहै सो श्रेष्ट भाग्योंवाली और सत्यवाली और तीर्थोंमेंरक्त और शत्रुपक्षकों हत करणे वाली और कृत्यमें प्रधानऔर प्रसिद्ध और श्रेष्ट केशोंवाली और गुणकरके युक्त और पुत्रोंवाली और श्रेष्ट स्वभाववालीहोतीहै १०

और यो कन्या कुंभलग्नमें जन्मतीहै सो स्वामीकी प्यारी और वंधुयोंमे और लोकोंमे मानवाली होतीहै और कन्या जन्मनेंमे चतुर होतीहै और खेदकर्के युक्त होतीहै और गुणोंसें विरोध करणवाली होतीहै ११ और यो मीनलग्नमें जन्मतीहै सो स्वामीकी प्यारी और बाधवों कर्के और लोकोंकर्के मानवाली होतीहै और श्रेष्ट नेत्र और केशा वाली होतीहै और देवता और ब्राह्मण की भक्ति वाली होतीहै और विद्याकी इच्छावाली और गुरोंकी आजीविका बनायदेने वाली होतीहै १२ अब सूर्यादि ग्रहोंके भावफल कहतेहैं जिस कन्याके जन्मलग्नमें सूर्य स्थित होवें सो स्त्री क्रोधकर्के युक्त और लज्जासें रहित और प्रचंड देहवाली होतीहै और व्याकुल नेत्रोंवाली और थोडे केशों वाली और कृत्यमें आलस्यवाली और मानवाली और कठोर होतीहै १ और मेषमें सूर्यहोवें तव तिमर कर्के युक्त दृष्टि वाली और ध कर्कटराशिमें सूर्य होवे तव वुद्बुद नेत्रा और

कुंभस्यलग्नेप्रमदाभिजातापतिप्रियावांधवलोकमान्या स्त्रीजन्मदक्षाक्षितिमार्द्दताचनित्यगुणानांसविरुद्धचेष्टा ११ मीनोदयेयाप्रमदाभिजातापतिप्रियावांधवलोकमान्या सुनेत्रकेशासुरविप्रभक्ताविद्यार्थिताद्वृत्तिकरागुरूणाम् ॥ १२ अथसूर्यादीनांभावफलानि लग्नस्थेर्केनारीसक्रोधानिर्घृणाप्रचंडतनु विकलेक्षणाल्पकेशाक्रियालसामानिनीपरुषा १ शशिभेवुद्बुदनेत्राक्रियेसतिमिरेक्षणा सधना सिंहेनिशांधयुक्ताधनरहितानीचगेचांधा २ धनगेसुवक्त्ररोगाभूरिधनानृपतिमुषितार्था द्विपदचतुष्पदभागीप्रनष्टविभवान्वितासूर्ये ३ सहजस्थेदिवसकरेसहजविरहितामुदान्वितासुभगा स्वकुलप्रधानभूतासत्कांतसुखान्वितासधना ४ गृहधनसौख्यविहीनावाहनबंधूज्झितासशोकार्त्ता दिनकृद्वेश्मोपगत प्रवासशीलासपीडाच ५

नवती होतीहै और सिंह राशिमें सूर्य होवे तव रात्र्यध दोषनहूतेवाली और तुला राशिमें सूर्य होवे तव धनरहित और अंधी होतीहै २ और जिसकन्याके जन्मलग्नसें दूसरे स्थानमें सूर्य स्थित होवे सो मुख रोग वाली और बडे धन वाली और राजाकर्के हराजाताहै धनतिस्का और मनुष्य और पशुयोंकर्के युक्त होतीहै और ऐश्वर्यके नाशको प्राप्त होतीहै ३ और जिसस्त्रीके जन्मलग्नसे तीसरे भावमें सूर्य स्थित होवे सो भ्राताकर्के रहित होतीहै और आनंद कर्के युक्त श्रेष्ट भाग्यवाली होतीहै और अपने कुलमें प्रधान होतीहै और श्रेष्ट स्वामीके सुख कर्के युक्त होतीहै ४ और जिसस्त्रीके जन्म लग्नमें चतुर्थस्थानमें सूर्य होवे सो घर और धन और सुख कर्के रहित होतीहै और वाहन और बंधुयोंसें रहित होतीहै और शोककर्के पीडित होतीहै और विदेशमे भ्रमणे वाली और पीडाकर्के युक्त होतीहै ५

और जिसकन्याकोपचमभावमेंसूर्यस्थितहोवेसोवुद्धहीनऔर लज्जासें रहित होतीहैऔर परघरके सेवने वाली औरधनकर्के रहित और वुद्धिकर्केऔर शोक कर्के पीडित होतीहै ६और जिस कन्याकोंछठे स्थानमे सूर्य होवे सोनित्यं प्रति धनऔरवाहन और सुखकर्केयुक्त होतीहैऔरकुलमे पूज्या और स्वामीके मानवालीऔर वहुतशत्रुयोंकर्के युक्त और प्रसिद्धा होतीहै ॥ ७ और जिसकन्याका सप्तमस्थानमें सूर्य होवे सो धनकर्के युक्त और विदेशकी इच्छा वाली होतीहै और मस्ती कर्के युक्त और दीनता और गुह्य रोगकर्के पीडित और स्वामीसें द्वेषवाली होतीहै ८ और जिसकन्याका अष्टम स्थानमें सूर्य स्थित होताहै सो रोगकर्के पीडित और क्रूर होतीहै और व्याकुलनेत्रोंवाली और वंध्या और पुत्र धनसें हीन और दुर्बला होतीहै ॥ ९ ॥
और जिस स्त्रीको नवम स्थानमें सूर्य स्थित होवे सो देवता और ब्राह्मण और स्वामीकी भक्ता होतीहै और धन और धर्म और पुत्रोंकर्के युक्त और आनंदको प्राप्त होतीहै और श्रेष्ठभाग्योंवाली और

पंचमगेदिवसकरेसुवुद्धिविवर्जितार्थानिर्लज्जा नारीपरगृहसेविनीधनरहितावुद्धिशोकार्त्ता ६ षष्ठेदिवसनाथेधनवाहनसौख्यसंयुतानित्यं कुलपूज्या पतिभक्तावहुरिपुयुक्तायमानिनीख्याता ॥ ७ ॥ सूर्येसप्तमसंस्थे धनसंयुक्ताप्रवासशीलाच उन्मत्तदेहानारीदैन्यभगार्त्तापतिद्विष्टा ८ निधनस्थेदिवसकरेनारीरोगार्त्तिपीडिताक्रूरा विकलेक्षणाचवंध्यासुतधनहीनाचदुर्वला चैव९देवद्विजपतिभक्ताधनधर्मसुतान्विताप्रमुदिताच धर्मस्थेर्केनारीसुभगासत्कर्मयुक्ताच १० सन्मानधनसमृद्धासुखवाहनसंयुतासूर्ये सिद्धारंभात्यगिनी वहुविभवामुदान्वितादशमे ११ सूर्येलाभोपगतेधनसंचयनीमुदान्वितासुभगा वाहनवसुविभूषणसंयुक्तागंधमाल्यरुचि १२ विकलेक्षणाचवध्यानारीरोगान्विताविधवा॥ द्वादशसंस्थेसूर्येपितृधनाद्विषाह्यसद्व्ययिनी १३ इतिरवे.॥ अथचंद्रस्य ॥ अजवृषकर्किणिलग्नेशीतकरेमानिनीसुरूपाच ॥ सुभगासु

श्रेष्ट कर्मोंमें युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीको दशमस्थानमें सूर्य स्थित होवे सो श्रेष्ठमान और धनकी समृद्धि वाली और सुख और वाहनों कर्के युक्त होतीहै और सिद्धारंभ वाली और त्यागवरे वाली और वडेऐश्वर्य कर्के आनंदको प्राप्त होतीहै ११ और जिस स्त्रीको एकादश स्थानमें सूर्य स्थित होताहै सो धनसंचय करणे वाली और आनंदकर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्योंवाली होतीहै और वाहनऔरधनऔरभूषणोंकर्केयुक्तहोतीहैऔरसुगंधिमेंऔर पुष्पोंमें रुचिवालीहोतीहै १२ और जिसस्त्रीको द्वादश स्थानमें सूर्यस्थित होताहै सो व्याकुल नेत्रोंवाली और वंध्या और रोग कर्के युक्त और विधवा होतीहै और पितासे धनका नाश करणे वाली और खोटे कममे धनखर्च करणे वाली होतीहै १३ इतिरवे अब चंद्रमाका भावफल कहतेहैं ॥ जिस कन्याके जन्मलग्नमें मेष वृष कर्कराशिमेंचंद्रमास्थितहोवेसोमानवालीऔरसुंदररूपवाली होतीहै

श्रोर श्रेष्ट भाग्योंवाली श्रोर सुखवाली श्रोर चतुर श्रोर आनंद कर्के युक्त होतीहै श्रोर
धनवाली होतीहै १ श्रोर शेष राशियोंमें लग्नगत चंद्रमा होवे तव उन्मादिनी श्रोरवोली श्रो
र व्याकुल नेत्रोंवाली श्रोर कुरूपा श्रोर क्षीणचंद्रमाहोवे तव व्याधिकर्के पीडित श्रोरजडा होतीहै
२ श्रोर जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें दूसरे भावमें चंद्रमा स्थित होवे सो वडे सुख कर्के युक्तहोतीहै श्रोर
धन वस्त्र विभूषणों कर्के युक्त होतीहै श्रोर पूर्णचंद्रमा होवे तव सुंदर देहवाली होतीहै श्रोर क्षीणचं
द्रमा होवे तव सुखसें रहित श्रोर सत्कर्ममें खर्चकरणे वाली होतीहै ३ श्रोर जिसस्त्रीकों तीस
रे स्थानमें चंद्रमा होवे सो धर्मवाली श्रोरधनसंचयकरणेवालीश्रोर आनंद कर्के युक्त श्रेष्ट भाग्योंवा
ली होतीहै श्रोर भाईयोंकर्के युक्त होतीहै ४ श्रोर जिसस्त्रीकों चतुर्थ भावमें चंद्रमा स्थित हो
वे सो वाहन श्रोर चाकर श्रोर धन श्रोर वंधुयोंके सुख कर्के युक्त होतीहै श्रोर अग्नि श्रोर सूर्य चंद्र
माकी न्यांई प्रभा वाली श्रोर वहुत धान्यों कर्के युक्त श्रोर श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै ५ श्रोर जि
सस्त्रीकों पंचम भावमें चंद्रमा होताहै सो धनवाली श्रोर वहुत मनुष्यों वाली श्रोर सुख कर्के युक्त

खिन्नानिपुणादाक्षिण्यमुदान्वितासधना १ शेषेषुभेषुचंद्रेह्युन्मादिनीनीचव
धिराच ॥ विकलेक्षणाविरूपाकृष्णेव्याध्यर्दिताजडानारी २ अतुलितसुख
संयुक्ताधनवसुविभूषिताविधौधनगे ॥ संपूर्णेसुशरीरासुखरहितासद्व्ययान्विता
कृष्णे ३ धर्मत्यागोन्मुक्ताधनसंचयिनीमुदान्वितासुभगा ॥ दुश्चिक्येशीतकरे
सहजैश्वसमन्वितानारी४हिवुकस्थेशीतकरेवाहनभृत्यार्थबंधुसौख्याढ्या अन
लार्केन्दुप्रख्यावहुधान्यसमन्वितासुभगा ५ चंद्रेपंचमसंस्थेधनिनीसौख्या
न्विताजनसमृद्धा ॥ पतितत्पराव्ययाक्तासन्मित्रयुतासुधीर्निपुणा ६ संयुक्ता
विगतारिपुस्तीक्ष्णाषष्ठेनिशानाथे सत्ययुक्तासुदेहासक्रोधात्यागशीलगुणयुक्ता७
ईर्ष्यान्वितासुदेहाशीतकरेद्यूनगेसुभगा सत्पुत्रैःसंयुक्ताह्यतिलावण्यानंदयुक्ताच८
निधनस्थेरजनिकरेरोगार्दिताचक्षीणाचसक्रोधा व्याधिविवंधनपीडाक्षपितत
नुरत्यंतदुःखाढ्या ९ नित्यव्रतसंयुक्तासुरपितृदेवद्विजार्चनेपुरता धर्मगते
शीतांशोसुधर्मशीलाचसौख्यसंयुक्ता १० कर्मस्थितुहिनकरेसद्धर्मयुतासुखसु

श्रोर श्रेष्ट मित्रों कर्के युक्त श्रोर चतुर हो
होतीहै श्रोर स्वामीकी सेवामें तत्पर श्रोर व्यय कर्के युक्त श्रोर श्रेष्ट मित्रों कर्के युक्त श्रोर चतुर हो
तीहै ६ श्रोर जिसस्त्रीकों छठे स्थानमें चंद्रमा होताहैसोशत्रुयों कर्केयुक्तहोतीहै श्रोर क्रूर स्वभाव
वाली श्रोर सत्यकर्के युक्त श्रोर सुंदर देहवाली श्रोर क्रोध युक्त त्यागशीला श्रोर गुणों कर्के युक्त
होतीहै ७ श्रोर जिसस्त्रीकों सप्तमभावमें चंद्रमा होताहै सो ईर्ष्याकर्के युक्त श्रोर सुंदर देहवाली
श्रोर श्रेष्ट भाग्यों वाली श्रोर श्रेष्ट पुत्रोंकर्के युक्त श्रोरअत्यंतशोभावालीआनंदकर्के युक्तहोतीहै ८
श्रोर जिस कन्याकों अष्टम भावमें चंद्रमा स्थित होवे सो रोगकर्के पीडितश्रोरक्रूरस्वभाववालीश्रोर
क्रोधकर्के युक्त होतीहै श्रोर व्याधियों कर्केश्रोर वंधनोंकर्के पीडित देहवाली श्रोर अत्यंत दुःखकर्के
युक्त होतीहै ९ श्रोर जिसस्त्रीकों नवमभावमें चंद्रमाहोवे सो नित्यव्रतकर्केयुक्त श्रोर देवता श्रोर
पितर श्रोर व्राह्मणोंके पूजनमें रत होतीहै श्रोर अपने धर्मकर्के श्रोर श्रेष्ठस्वभावकर्के श्रोर सु
खकर्के युक्तहोतीहै १० श्रोर जिसस्त्रीकों दशम भावमें चंद्रमास्थितहोवे सोश्रेष्ठधर्मकर्के युक्त

और सुखकर्के युक्त और श्रेष्ठस्वभाववालीहोतीहै और सिद्धारंभा और धन और जनोंको समृद्धिकर्के युक्त होतीहैं ११ और जिस स्त्रीकों एकादश भावमें चंद्रमा स्थित होताहै सो धन और रत्न और पुत्र और वस्त्र और श्रेष्ट चाकरोंकर्के युक्त होतीहै और शुक्ल पक्षमें बहुत सुखकर्केयुक्त और स्वामीकी प्यारी होतीहै १२ और जिसस्त्रीकों द्वादश स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे सो सुख और ऐश्वर्य कर्के रहित और हीनांगी और छोटेदेहवाली और मलीना होतीहैं और नेत्ररोगवाली और आलस्यकर्के युक्त होतीहै १३ इतिचद्रफलम् अब मंगलका भाव फल कहतेहैं जिस स्त्री के जन्मलग्नमें मंगल स्थित होवे सो शिर पीडा कर्के युक्त और क्षीणदेह वाली और हठकर्केयुक्त होतिहै और गुणोंकर्के रहित और दुःखकर्के पीडित और पापशीला दुराचारिणीहोतीहै और जिसस्त्रीकों दूसरेभावमेंमंगल स्थितहोवे सो दुःखकर्के पीडित और बंध्या और मुखविकार कर्के युक्त और रोग कर्के पीडित होतीहै और माडे अन्नके भोजन करणे वालीऔर धन रहित और पुत्रकर्के रहित होतीहै २ और जिसस्त्रीकों तृतीयस्थानमें मंगलस्थित होवे तब सो भ्रातासें रहित औ

शीला सिद्धारंभानारीधनजनसुसमृद्धिसयुक्ता ११ चंद्रेलाभोपगतेधनरत्नसुतांवरसुभृत्याढ्या बहुलेवहुसुखयुक्तापत्युरत्यंतवल्लभानारी १२ सुखविभवसौख्यरहिताहीनांगीक्षुद्रदेहमलिनाच द्वादशगेशीतकरेलोचनरोगालसानारी १३ अथभौमस्य लग्नसंस्थेकुजेशिरोर्त्ताक्षपिततनुःसाहससंयुक्ता गुणहीनादुःखार्त्तासपापशीलादुराचारा १ धनहीनादुःखार्त्तावंध्यास्त्रीविकृतवदनरोगार्त्ता भौमेद्वितीयसंस्थेकदन्नभुक्ताविवसुर्विसुता २ दुश्चिक्येभूमिसुतेसहजविरहितामुदान्वितानारी धनवतीह्यतिरूपागुणसंयुक्तासदानंदा ३ बधुविहीनानारीविगतसुखवाहनार्थगुणरहिता हिवुकस्थेक्षितितनयेदुःखार्त्ताशोकसंयुक्ता ४ सौख्यार्थतनयरहिताचलमतियुक्तासुखोज्झितावंध्या भूमिसुतेपंचमगेविसुताशोकैःसमन्वितानारी ५ षष्ठस्थेभूमिसुतेनारीधनसौख्यमूलसपन्ना वहुरिपुयुक्ताशुभगाकलत्रधानासर्वगुणसहिता ६ सप्तमगेभूपुत्रेस्यधनावंध्याचदुःखशोकार्तापरगृहव्यसनशीलापापाचारासतीकुलटा ७

आनंदकर्के युक्त होतीहै औरधनवाली औरअत्यंतरूपवालीऔर गुण कर्के युक्त और सर्वदाकाल आनंदकर्के युक्त होती है ३ और जिस स्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित होवे सो स्त्री बंधुओंकर्के हीन और सुख और वाहन और धन और गुणकर्के रहित होतीहै और दुःखकर्केपीडित और शोककर्के युक्त होतीहै ४ और जिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें मंगल होवे सो सुख धन पुत्रसे रहित औरचंचल स्वभाव वाली और चंचल बुद्धि वाली होतीहै और सुखसें रहित और बंध्या होतीहै और शोकोंकर्के युक्त होतीहै ५ और जिस स्त्रीकों छठे स्थानमें मंगल स्थित होवे सो धन और सुख कर्के युक्त होतीहै और बहुत शत्रुओं कर्के युक्त और श्रेष्ट भाग्यों वाली और कुलमें प्रधान औरसंपूर्ण गुणोंकर्के युक्त होतीहै ६ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें मंगल होवे सो धनरहित और बंध्या और दुःख शोककर्के पीडित परघरमें जाने वाली और पापाचारमें युक्त और खोटे स्वभाव वाली और व्यभिचारिणी होतीहै ७

औरजिसस्त्रीको अष्टमस्थानमे मंगलस्थितहोवे सो निरंतर रोगकर्कपीडित और क्षीणदेहवाली होतीहै और विधवा और शोककर्के युक्त होतीहै और पुत्र और धन कर्के रहित होतीहै ८ और जिसस्त्रीको नवम स्थानमें मंगल स्थितहोताहै सो धर्मसे रहित और अत्यत दुःखी और व्यभि चारिणी होतीहै और द्वेषकरणेवाली और नहि श्रेठ फलकरणेवाली और पापचारिणी और खोटे स्वभाववाली होतीहै ९ और जिस स्त्रीको दशमस्थानमें मगल स्थितहोताहै सो खोटे कर्ममें स्वभाववाली और अत्यंत दुःखको प्राप्त होतीहै और रुत्यके योग्य नहि होतीहै और खोटे स्वभाववाली और गुणकर्के मान वाली और थोडे पुत्रों वाली होतीहै १० और जिसस्त्रीको एकादश स्थानमे मगल स्थितहोताहै सो पुत्र और मनुष्य और धन वाली और सर्वदाकाल आचारमे स्थित होतीहै और धन अन्न वस्त्रोंकी समृद्धि कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठभाग्यो वाली और श्रेष्ठ स्वभाववाली होतीहै ११ और जिसस्त्रीको द्वादश स्थानमें मगल होवे सो नेत्ररोगकर्के दुखित और सदाक्षीणदेहवाली और खो

अष्टमोपगतेभौमेशाश्वतरोगार्दिताक्षपितदेहा ॥ विधवाचशोकतप्तासुतधनहीनार्थहीनाच ८ भौमेचनवमसंस्थेधर्मनिराकृतातिदुःखिताकुलटा ॥ विद्वेषिण्यह्यकुशलापापाचाराविशीलाच ९ कर्मगतेभूपुत्रेकुकर्मशीलातिदुःखिता नारी ॥ कर्मोद्युक्ताऽसाध्वीगुणमानिन्यल्पपुत्रसहिताच १० क्षितितनयेलाभगतेसुतजनधनभागिनीसदाचारा धनधान्यवसुसमृद्ध्यायुक्तासुभगासुशीला च ११ द्वादशगेभूमिसुतेनयनरुगार्तासदाक्षपितदेहा कुव्यसनशीलावंध्या कुवेशयुक्ताकदन्नाशी १२ अथबुधफ० शशितनयेलग्नस्थेनारीसौभाग्यसौख्यशीलाढ्या नानाकलाविदग्धाप्रियवदामानिनीसुभगा १ बहुविभवसौख्ययुक्तासुभक्तासतीधनाढ्याच शशिजेद्वितीयसंस्थेसद्वस्त्रविभूषणादियुता २ दुश्चिक्यस्थेसोमसुतेनारीकारुण्यरूपगुणयुक्ता श्रमनिरतापतिरक्तासहजैश्वसमन्वितासैव ३ भृत्यैश्चतुष्पदयुक्तागृहसौख्यसमन्वितासुभगा हिबुकस्थेशशितनयेबहुसुहृत्त्यागशीलाढ्या ४

टेव्यसन वाली और वंध्या और खोटे वेशकर्के युक्त और माडे अन्नको भोजनकरणे वाली होतीहै १२ अबबुधकाभावफलकहतेहै जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें बुध स्थित होवे सो सौभाग्य और सुख कर्के युक्त होतीहै और अनेककलामेचतुर होतीहै और मीठाबोलने वाली और मानवाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै १ और जिस स्त्रीको दूसरे स्थानमें बुध स्थित होवे सोबडे ऐश्वर्य कर्के और सुखकर्के युत होतीहै और स्वामीकी भक्त और पतिव्रता और धनकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ वस्त्र भूषणादियों कर्के युक्त होतीहै २ और जिस स्त्रीकोतीसरे स्थानमें बुध स्थित होवे सो दयाऔर रूप और गुणकर्के युक्त होतीहै और श्रम करणेमें रत होतीहै और स्वामीमेप्रीतिवाली और भाइयो कर्के युत होतीहै ३ और जिस स्त्रीको चतुर्थ भावमें बुध स्थित होवे सो चाकर और चतुष्पदों कर्के युत घरकेसुखकोप्राप्तहोतीहै और श्रेष्ठभाग्यों वाली होतीहै और बहुतमित्रोंवाली औरत्यागकर्के युक्तहोतीहै ४

औरजिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें बुध स्थित होवे सो बुद्धि कर्के युत और धनकी समृद्धि वाली होतीहै और मंत्रिणी और अभिचार कर्के धनकों प्राप्त और वडी श्रेष्ठ शोभाकर्के युक्त होतीहै ॥ ५ ॥ और जिस स्त्रीको छठे स्थानमें बुध स्थित होवे सो शत्रुयोंसें राहत और लडाई करणे वाली और क्रोधकर्के युक्त होतीहै और अत्यंत कठोरवाक्य कहने वाली और धनवाली और कार्यमें प्रमाद करणे वाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली होतीहै ६ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें बुध स्थित होवे सो साध्वी और रूपकर्के युक्त और श्रेष्ठ स्वभाव वाली और पतिव्रता और श्रेष्ठ भाग्यावालीऔर लावण्यता कर्केयुक्त और हास्यकर्केयुक्त और राजाकीप्यारी होतीहै ७ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें बुध होवे सो सौभाग्यवती और सुखकर्के और श्रेष्ठस्वभावकर्के प्रसिद्धहोतीहैऔर वडीआयुषा वाली और श्रेष्ठ भाग्यो वाली होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों नवम

सुतगेबुद्धिसमेताशशितनयेधनसमृद्धास्यात् ॥ मंत्रिण्यभिचारार्थाबहुकुशलाकांतियुक्ताच ॥ ५ ॥ षष्ठगतेशशितनयेविगतरिपुःकलहान्वितासकोपाच अतिनिष्ठुरवाक्यार्थाकृत्यप्रमदासुशीलाच ६ साध्वीसुरूपशीलासप्तमगेशशिसुतेसतीसुभगा लावण्यहास्ययुक्ताअवनीपतिवल्लभानारी ॥ ७ ॥ सौभाग्यसुखसुशीलाविख्यातधनान्विताकुलेष्टाच अष्टमगेशशितनयेनारीदीर्घायुषीसुभगा ८ सद्धर्मधनसमृद्धाबहुभाग्ययुतासुशीलाढ्या धर्मस्थेशशितनयेसुगुणासुभगाचसौख्ययुता ॥ ९ ॥ शशिजेकर्मोपगतेसकलारंभातिमानिनीसुभगा सत्कर्मबुद्धियुक्ताबहुधर्मधनाचक्रोधसंयुक्ता १० सुतसौख्यधनसमृद्धाबहुलाबहुभूतिसंयुक्ता एकादशगेसौम्येवाहनहेमांबरादिसंयुक्ता ११ सद्व्ययिनीसत्वेष्टासाचारयुताप्रियंवदासुभगा द्वादशगेशशितनयेदेवपितृपूजनेनिरता १२ इतिबुधस्य

स्थानमें बुध स्थित होवे सो श्रेष्ठ धर्मकर्के और धनकर्के समृद्धिवाली होतीहै और वहुत भाग्योंकर्के युक्त और श्रेष्ठ स्वभावकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठगुणोंवाली और सुखकर्के युक्त होतीहै ॥ ९ ॥ और जिसस्त्रीके जन्मकालमें दशम स्थानमें बुध स्थित होवे सो संपूर्ण आरंभ कार्यके सिद्धकरणे वाली और वडेमानवाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और श्रेष्ठकर्म और बुद्धिकर्के युत होतीहै और वहुत धर्मवाली और धनवाली और क्रोधकर्के युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें बुध स्थित होवे सो पुत्रके सुख कर्के और धनकी समृद्धिकर्के युक्त होतीहै और वडेऐश्वर्यकर्के युत होतीहै और वाहन और सुवर्ण वस्त्रादियोंकर्के युक्त होतीहै ११औरजिसस्त्रीकोंद्वादशस्थानमेंबुधस्थितहोवेसोश्रेष्ठकर्ममेंखर्चकरणेवालीऔरसत्वगुणवालीऔरआचारयुक्त और मीठा बोलनें वाली और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और देवता और पितरोंके पूजनमेंरतहोतीहै १२ इतिबुधस्य ४

अब बृहस्पतिका भावफल कहतेहैं जिसस्त्रीके जन्मलग्नमें बृहस्पति स्थित होवे सो धन और वाहन और रूप और गुणकर्के युक्त होतीहै और अपने कुलमें अधिकार कर्के युक्त और आचारकर्के युक्त और मानवाली और श्रेष्ठभाग्योंवाली होतीहै १ और जिसस्त्रीकों दूसरे स्थानमें बृहस्पति होवे सो बहुत धनकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्योंवाली और शोभाकर्के युक्त और श्रेष्ठवाणी वाली और श्रेष्ठ वस्त्रों कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठत्याग वाली और सुंदर देहवाली होतीहै २ औरजिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें बृहस्पति होवे सो कर्ममें अशीलतावाली और श्रेष्ठ मुख वाली और भाइयोंकर्के युक्त और सुंदर नेत्रों वाली होतीहै और श्रेष्ठ धर्ममें स्वभाव वाली होतीहै ३ और जिसस्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें बृहस्पति होवे सो धर्म और मित्र और ऐश्वर्य कर्के युक्त और धन वाहनादि सुखकर्के युक्त होतीहै और अपने बंधुयोंमें और कुलमें श्रेष्ठ होतीहै ४ और जिसस्त्रीकों पंचममेंबृहस्पति होवे सो पुत्र सुख बुद्धि धनकर्के समृद्धिवालीहोतीहैऔरश्रेष्ठबुद्धिवाली

अथगुरोः लग्नस्थेदेवगुरौधनवाहनरूपगुणयुक्ता स्वकुलेधिकारयुक्तासाचारा मानिनीसुभगा ॥ १ ॥ बहुधनसहितासुभगालावण्ययुतासुवाक्सुवस्त्राढ्या सत्त्यागिनीसुदेहाधनगेसुरपूजितेनारी ॥ २ ॥ कर्मण्यशीलयुक्तासुमुखा सहजान्वितासुनयनाच दुश्चिक्येसुरमंत्रिणिनारीसद्धर्मशीलात्र ३ धर्मसुहृद्वि भवयुताधनवाहनादिसौख्याढ्या हिबुकस्थेदेवेज्येस्वबंधुकुलपूजितानारी ४ त्रिदशगुरौपंचमगेसुतसुखमतिधनसमृद्धाच सद्बुद्धिरतिकुशलाबहुविभवमुदान्विता नारी ५ रिपुभेगुरौहिनारीसत्यनिहंत्रीमुदान्वितासुभगा प्रख्यातधनस मृद्धाबहुमित्रयुताप्रियंवदासैव ६ द्यूनेसुरपतिमंत्रिणिसुखधनसौभाग्यसंपदु पेतास्वकुलेज्येष्ठानारीधनवस्त्रविभूषणाढ्याच ७ दीर्घायुर्पासुदेहासधनारोगै र्विवर्जिताजीवेऽष्टमगेभोगयुतासुवेषरूपामहासुभगा ८ धर्मेतिधर्मशीलाबहु भाग्ययुतासुतान्विताजीवेदेवद्विजपितृभक्तापतितुल्याकीर्तिसत्याढ्या ॥ ९॥

और चतुर और बडे ऐश्वर्यकर्के आनंदकों प्राप्त होतीहै ५ और जिसस्त्रीकों छठे स्थानमें बृहस्पति होवे सो सत्यके हत करणे वाली और आनंद कर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वालीहोतीहै और प्रसिद्ध धन वाली और बडी बुद्धि वाली और मीठा बोलने वाली होतीहै ॥ ६ ॥ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे सो सुख धन और सौभाग्य और संपदा कर्के युक्त होतीहै और अपने कुलमें प्रधान और वस्त्र भूषणोंकर्के युक्त होतीहै ७ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे सो बडी आयुषा वाली और श्रेष्ठ देह वाली और धनकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठवेश और रूप वाली और बडे श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों नवमभावमें बृहस्पति होवे सो धर्ममें बुद्धि वाली और धर्मस्वभाव वाली और बहुत भाग्यों कर्केयुक्त और पुत्रकर्के युक्त होतीहै और देवता और ब्राह्मण और पितरोंकी भक्ति वाली होतीहै और स्वामीके तुल्य और यश और सत्य कर्के युक्त होतीहै ९

और जिस स्त्रीको दशम स्थानमें बृहस्पति स्थित होताहै सो कुलमें पूज्य और त्यागकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै और पतिव्रता और अपने कर्ममें रत और स्वामीकी सेवा करणे वाली और बहुत धने और पुत्रों कर्के युक्त होतीहै १० और जिस स्त्रीको एकादशमें बृहस्पति होवे सो बहुत पुत्रों वाली और सुखकर्के युक्त और गुणकर्के युक्त होती है और स्वामीकी प्यारी और सुंदर और वडे धनवाली और दान करणे वाली होतीहै ११ और जिस स्त्रीको द्वादश स्थानमें बृहस्पति स्थित होवे सोगुरुदेवता अभ्यागतके पूजनेमें रत होतीहै और श्रेष्ठ कर्ममें खर्च करणे वाली और श्रेष्ठ स्वभाव वाली और श्रेष्ठ धनकर्के युक्त और दुःखसें रहित होतीहै १२ इतिगुरोः अवशुक्रकाभावफलकहतेहैं जिस स्त्रीके जन्मलग्नमें शुक्र स्थित होताहै सो श्रेष्ठ सुखवाली और सुंदर रूपवाली और श्रेष्ठ होतीहै और कर्णपर्यंत विशालनेत्रों वाली औरवडी आयुषा वाली और भाग्योंवाली होतीहै १ और जिस स्त्रीको दूसरेस्थानमें शुक्रस्थितहोताहै सो

दशमस्थेदेवगुरौकुलपूज्यात्यागसंयुतासुभगा॥ साध्वीसुकर्मनिरतापतिभक्ता वहुधनसुताढ्याच ॥ १० ॥ वहुपुत्रिणीसुखाढ्याएकादशगेगुणान्विताजीवेपः तिवल्लभाचसौम्यामहाधनाथार्थत्यागपरा ॥ ११ द्वादशगेसुरमंत्रिणिगुरुदे वातिथिपूजनेभिरतासद्व्ययशीलासुभगासुधनाढ्यादुःखसंत्यक्ता १२ इतिगुरोः अथभृगोः लग्नस्थेभृगुतनयेनारीसुसुखासुरूपसत्कांता कर्णांतलोचनयुता दीर्घायुर्षाभाग्यसंयुक्ता १ शुक्रेद्वितीयोपगतेवहुविभवमुदान्वितासुवस्त्राढ्या प्रचुरान्नपानसक्ताविलासवस्त्रप्रियानारी २ सुखधनवस्त्रविहीनादुश्चिक्ये भृगुसुतेतिकृपणा आत्महितापरहंत्रीसौभाग्यपरिच्छदैस्त्यक्ता ३ बंधुसुहृत्सु खसहितासत्कांतियुतासितेहिबुके वाहनभृत्यसमेताकुलाधिकारिणीभवेद्धना ढ्याच ४ सुखसुतमित्रसमेतासुभगाचाराचगुणसमृद्धाच भृगुजेपंचमराशौ नृपमंत्रिणीमंत्रमुख्याच ५ दारिद्र्यशोकतप्ताशुक्रेरिपुगेक्षिपितविभवा वहु रिपुयुक्ताविसुखानारीसादुःखभागिनीज्ञेया ६

ऐश्वर्यकर्के और आनंदकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ वस्त्रों वाली और बहुत अन्नपानमें सक्तहोतीहै और विलासमें औरवस्त्रमें प्रीतिवाली होतीहै २ और जिसस्त्रीको तीसरे स्थानमें शुक्रस्थितहोताहैसो सुख और धन और वस्त्रोंकर्केरहित होतीहै और अत्यंत कृपण होतीहै और अपने हितको करणे वाली और दूसरेको हत करणे वाली और सौभाग्यादियों कर्के रहित होतीहै ३ और जिस स्त्रीको चतुर्थ स्थानमें शुक्र स्थित होता है सो भाई और मित्रोंके सुखकर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ शोभाकर्के युक्त होतीहै और वाहनोंकर्के और चाकरों कर्के युक्त होतीहै और कुलमें अधिकार वाली और धनकर्के युक्त होतीहै ४ और जिस स्त्रीको पंचम स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सोसुख और पुत्र और मित्र कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ आचार वाली और गुणोंकी समृद्धि वाली और राजाकी वजीरणी औरमंत्रमें मुख्य होतीहै ५ और जिसे स्त्रीको छठे स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सो दारिद्र्य और शोककर्के तप्त होतीहै और ऐश्वर्यसेंरहित होतीहै और बहुत शत्रुओंकर्के युक्त और दुःखभागिनीहोतीहै ६

और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमें शुक्र होताहै सो सौभाग्य करकें युक्त और श्रेष्ठ स्वभाव वाली होतीहै और स्वामीकी प्यारी और सुंदर रूपवाली और श्रेष्ठ भाग्योंवाली और आनंदककें युक्त होतीहै ७ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें शुक्र स्थित होताहै सो सुख और भूषणोंकर्के युक्त होतीहै और वडी आयुषा वाली और राजाकी राणी और संतोषकों प्राप्त और अपने आचार वाली होतीहै ॥ ८ ॥ और जिस स्त्रीकों नवम स्थानमें शुक्र स्थित होवे सो श्रेष्ठ कर्ममें युक्त और ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै. और देवता और ब्राह्मण और पितरोंकी भक्ति वाली होतीहै और सुख कर्के और धन कर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्योंवाली होतीहै ९ और जिसस्त्रीकों दशम स्थानमें शुक्र स्थितहोवे सो सिद्धारंभ वाली और धनवाली और सौभाग्यके आनंदकर्के युक्त और सुंदररूप वाली और स्वामीको भूषणरूप और पतिव्रता होतीहै १० और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें शुक्रस्थित होवें सो चाकर और चतुष्पदोंकर्के युक्त और वडेऐश्वर्यकर्केयुक्त और शोकसें रहित और धन और वस्त्रऔर पुत्रोंकर्के युक्त होतीहै ११ और जिस स्त्रीकों द्वादश स्थानमें शुक्र स्थितहोवे सो श्रेष्ठ कर्ममें खर्च

सप्तमसंस्थेशुक्रेसौभाग्ययुतासुशीलाढ्या भर्तृप्रियासुरूपासुभगासमुदान्विता नारी ७ शुक्रेनिधनोपगतसुखविभूषणयुतानारी दीर्घायुषीनृपस्त्रीलब्धपरितोषस्वाचारा ८ धर्मस्थेभृगुतनयेसत्कर्मयुताविभूतिसंयुक्ता देवद्विजपितृभक्तासौख्ययुताधनान्वितासुभगा ९ सिद्धारंभाधनिनीसौभाग्यमुदान्वितासुरूपाच पतिभूषणाचसाध्वीकर्मस्थेभृगुसुतेनारी १० भृत्यचतुष्पदयुक्तावहुविभवसन्वितावितशोका धनवस्त्रपुत्रसहितालाभगतेभृगुसुतेनारी ११ शुक्रेद्वादशसंस्थेसद्व्ययिनीविगतशोकाचनयनोपचारकुशलासधनानित्यप्रमुदिताच १२ इतिभृगोःअथशनेःप्राग्लग्नस्थेसौरे नारीदुःखान्वितविरूपाच दारिद्र्यशोकतप्तावंध्याविकलेक्षणादुराचारा १ ॥ गुरुभे ९ ॥ १२ ॥ स्वर्क्षे १० ॥ ११ ॥ स्वोच्चे ॥ ७ ॥ सौरेलग्नगतेधनसमृद्धा नृपपत्नीकुलपूज्यासुखभोगमुदान्वितासुभगा २ सौरेकुटुंबसंस्थेविकृतमुखानिर्धनासुलोभार्त्ता मदक्रियाप्रचंडापापाचारास्वजनरहिता ३ दुश्चिक्येसूर्यसुतेसगुणासबलोज्झितापरित्यक्ता मलिनीनीरुजसंपत्सौभाग्याढ्याधनान्विताशुभगा ४ ॥

करणें वाली और शोकरहित और नेत्रोपचारमें श्रेष्ठ होतीहै और धनकर्के युक्त और नित्य आनंदकों प्राप्त रहितीहै १२ ॥ इतिभृगोः ॥ अब शनिका भावफल कहतेहैं ॥ जिसस्त्रीकों जन्मलग्नमें शनि स्थित होताहै सो दुःखकर्के युक्त और माडेरूप वाली होतीहै और दरिद्र और शोककर्के तप्तहोतीहै और वंध्या और व्याकुल नत्रों वाली और दुराचारिणी होतीहै १ और धन और मीन राशिमें और मकर कुंभ राशिमें और तुला राशिमें स्थित शनि लग्नगत होवे तब धनकी समृद्धि वाली और राजाकी राणी और कुलमें पूज्या और सुख भागकर्के युक्त और श्रेष्ठ भाग्यों वाली होतीहै २ और जिसस्त्रीको दूसरे स्थानमें शनि स्थित होवें सो मुखविकार वालीऔर धनरहित और लोभकर्के पीडित होतीहै और मस्ती कर्के युक्त और प्रचंड और पापचारणी और स्वजनों कर्के रहित होतीहै ३ और जिसस्त्रीकों तीसरे स्थानमें शनि होताहै सो गुणोंकर्के युक्तऔर वल कर्के युक्त और त्यागकों प्राप्त और मलीना और रोगकर्के रहित और सौभाग्य कर्के युक्त और धन युक्त और श्रेष्ठ भाग्योंवाली होतीहै ॥ ४ ॥

और जिस स्त्रीकों चतुर्थ स्थानमें शनि स्थित होवे सो हृदयके रोग वाली और सुखकक रहित और वंध्या और निरंतर विदेश वास करणे वाली और वाहनों कर्के रहित और बंधू और धन और बुद्धिकर्के रहित होतीहै ॥ ५ ॥ और जिस स्त्रीकों पंचम स्थानमें शनि होवे सो सुख और पुत्र और धन कर्के रहित और बालकों वाली बुद्धी कर्के युक्त और विवेक सें रहित होतीहै और स्वामीकर्के रहित और दुःखकर्के सहितहोतीहै ॥ ६ ॥ और जिस स्त्रीकों छठे स्थानमें शनि स्थित होवे सो गुणों वाली और भूषणो कर्के युक्त होतीहै और बहुत शत्रुयों कर्के युक्त होतीहै और श्रेष्ठ भाग्योंवाली और प्रसिद्ध और नित्य ऐश्वर्यकर्के युक्त होतीहै ॥ ८ ॥ और जिस स्त्रीकों सप्तम स्थानमे शनि स्थित होताहै सो विधवा और माडे वेशवाली और विदेश भ्रमणे वाली और मलीन होतीहै और पुत्र और सुख और धनकर्के रहित और कन्याहि वृद्धा वस्थाकों प्राप्त होतीहै ८ और जिस स्त्रीकों अष्टम स्थानमें शनि स्थित होताहै सो

वेश्मोपगतेसौरेहृद्रोगार्त्तासुखोज्झितावंध्या शश्वत्प्रवासशीलानिर्वाहनावांधवा र्थमतिरहिता ॥ ५ सुखसुतवित्तविहीनावालमतियुक्ताविवेकसंत्यक्ता ॥ सौरेपंचमभवनेपतिरहितदुःखितानारी ॥ ६ ॥ षष्ठेर्कजेचनारी सगुणाधनवस्त्रभूषणाढ्याच ॥ बहुरिपुसहितासुभगाख्याताविभवान्वितानित्यं ॥ ७ ॥ द्यूनेर्कजेचविधवाकुवेशयुक्ताप्रवासिनीमलिना ॥ सुतसौख्यधनविहीनाकन्यैवजरांसमुपयाति ॥ ८ विधवाविकलेक्षणावा दारिद्र्यशोकदुःखसंतप्ता ॥ अष्टमगेरवितनयेकुष्ठभगंदरार्त्तासुखोज्झितानारी ॥ ९ ॥ धनधर्मसुखविहीनाबंधुविरहितामदप्रमदा धर्मस्थेरवितनयेपरोपतापकराभाग्यरहिताच ॥ १० अतिधनवतीराज्ञीप्राज्ञामंत्रवादिनीस्फुरत्कांति ॥ दशमस्थेरवितनयेपुरग्रामनेताच ॥ ११ ॥ दीर्घायुषीरवितनयेशिल्पयुतारोगरहिताच आयस्थेधनयुक्तासुखसंयुक्तातथानारी १२ विकलेक्षणाचमूढाविषमाख्यानिर्घृणाविगतलज्जा व्ययभवनगतेसौरेबहुव्ययास्यात्सपरिभूता ॥ १३ ॥ इतिशनेः

विधवा और व्याकुल नेत्रोंवाली और दरिद्रणी और दुःख और शोककर्के संतप्त होतीहै और कुष्ट भगंदर रोगकर्के पीडित और सुखसें रहित होतीहै ॥ ९ ॥ और जिस स्त्रीकों नवम स्थानमें शनि स्थित होवे सो धन और धर्म और सुख सें रहित होतीहै और बंधुयोंकर्के रहित और उन्मादिनी होतीहै और परोपतापिनी और भाग्योंसें रहित होतीहै ॥ १० ॥ और जिस स्त्रीको दशम स्थानमें शनि होवे सो बडे धनवाली राणी और बुद्धिकर्के मंत्र वादिनी और स्फुरत प्रभा वाली और पुर और ग्रामके समूहोंके रक्षा करणे वाली होतीहै ॥ ११ ॥ और जिस स्त्रीकों एकादश स्थानमें शनि होवे सो बडी आयुषा वाली और शिल्प विद्याके जाननेवाली और रोगकर्के रहित और धन कर्के युक्त और सुखकर्के युक्त होतीहै ॥ १२ ॥ और जिसस्त्रीकों द्वादश स्थानमें शनि होवे सो व्याकुल नेत्रों वाली और मूर्खा और खोटे स्वभाव वाली और लज्जासे रहित औरबहुतखर्च कर्के युक्त होतीहै ॥ १३ ॥ इतिशनेः ॥



॥ और कहतेहैं पूर्व मुनियोंनें यो स्त्रीजातकमें विस्तार करके शुभाशुभ फल कहहैं सो बुद्धिवाल्योंनें ग्रहोंका बलाबल विचारकर्के कहनें योग्यहै और पूर्वकहेयो स्त्रीयोंके योग तिन्हका विचार प्रश्नलग्नमें और विवाह कालमें और वाक्यदान समयमें और जन्मकालमे विचार करे ॥ १४ ॥ अब स्त्रीके चक्रकर्के शुभाशुभ फल कहतेहैं स्त्रीका चक्र बनायकर्के स्थित करे तिसमें सूर्यके नक्षत्रसें लेकर्के चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत फलका विचार कहाहै सूर्यके नक्षत्रसें तीन नक्षत्र माथेमे देवे और तिसके आगे सात नक्षत्र मुखमे स्थित करे और एक एक स्तनमें चार चार नक्षत्र स्थित करे और तीन नक्षत्र हृदयमें स्थापन करे १५ और तीन नक्षत्र नाभिमें देवे और तीन नक्षत्र गुह्य स्थानमें स्थित करे और शिरके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवे तब संताप होताहै और मुखके नक्षत्रोंमे चंद्रमा होवे तब नित्य प्रति मिष्टान्नके सुखकों प्राप्त होतीहै ॥ १६ ॥ और स्तनोंके नक्षत्रोंमें चंद्रमा स्थित होवे तब स्वामी की प्रीतिको बधावने वाली होतीहै और हृदयके नक्षत्रोंमें चंद्रमा स्थित होवे तब अत्यंत

पूर्वैर्यन्मुनिभिःसविस्तरतयास्त्रीजातकेकीर्तितंसम्यग्वा ऽप्यशुभंचयन्मतिमतावा च्यंविदित्वबलम् योगानांचनियोजयेत्फलमिदंपृछाविलग्नेतथा पाणिग्रहणेतथाचवरणेसंभूतिकालेऽपिच १४ नारीचक्रेमस्तकेत्रीणिभानिवक्त्रेभानांसप्तकंस्थापनीयम् ॥ प्रत्येकंस्युर्वेदताराउरोजेतिस्रस्ताराहृत्प्रदेशेनिवेश्याः ॥ १५ नाभौदेयंभत्रयंत्रीणिगुह्येभानोर्धिष्ण्याच्चंद्रधिष्ण्यावधीत्थम् ॥ स्यात्संतापःशीर्षभेवक्त्रसंस्थेनित्यंमिष्टान्नानिसौख्योपलब्धिः १६ कामंस्वामिप्रेमवृद्धिस्तनस्थेवक्षोदेशाऽवस्थितेऽत्यंतहर्षः पत्युश्चिंतानंतवृद्धिश्चनाभौगुह्यस्थेस्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः १७ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेस्त्रीजातकाध्यायःसप्तदशः १७ अथायुर्दायाध्यायोव्याख्यायते ॥ सारावल्यां ॥ अस्मिन्नायुर्दायेयस्माद्भ्रांतःसमस्तलोकोयम् ॥ तस्मात्पूर्वागमतःकथयामिनिराकुलीकृत्य १ तत्रायुस्त्रिविधम् ॥ नियतमनियतंयोगजंचेति ॥ तत्रापिगणितागतंनियतम् अंशायुः पैंडायुः नैसर्गिकायु जीवशर्मोक्तमिति एषांप्राज्ञैर्व्यवस्थाकृता उक्तंचजातकसारे अंशोद्भवंलग्नबलात्प्रसाध्यमायुश्चपिंडोद्भवमर्कवीर्यात् नैसर्गिकंचंद्रमसोबलेनेति

हर्षको प्राप्त होतीहैं और नाभिके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवें तब स्वामीकी अत्यंत चिंता होतीहै और गुह्य स्थानमके नक्षत्रोंमें चंद्रमा होवे तब बहुत कामकर्के पीडित होतीहै १७ इति श्रीजातकखंडे स्त्रीजातकाध्यायः सप्तदशः ॥ १७ ॥

अब आयुर्दायाध्यायकाव्याख्यानकरतेहैं सारावलीमें अयसंकहाहै इस आयुर्दायमें संपूर्णलोक भ्रमकों प्राप्तहै तिसकारणसें पूर्वशास्त्रसें विचारकर्के भ्रमरहित मै कहताहों १ सो आयुः तीनप्रकारकाहै एक नियत और दूसरी अनियत और तीसरी योगज ॥ अब तीनोंके लक्षण कहतेहैं तिन्होंमें गणागतजोहै सो नियतहैसो बराबरमिलतीहै सो गणितागतचारप्रकारकर्केआगेस्पष्टकरीहै एकअंशायुःएक पिंडायुःएक निसर्गायुः एक जीवशर्मायुः और चतुरोंनें चारप्रकारकीआयुषामें व्यवस्थाकरीहै सो जातकसारमें कहतेहैं जिसके जन्मकालमें षड्बलमें छिन्न्पसेंअधिक बलीलग्न होवे तब अंशायुः सिद्ध करे और सूर्य बली होवे तब पिंडायु सिद्ध करे और चंद्रमा बली होवे तब निसर्गायुः सिद्ध करे

और लग्न सूर्य चंद्रमा तीनों हीन बल होवे तब संपूर्णग्रहोंकी परमायुषाका सप्तांश ग्रह देतेहैं तिसकों जीवशर्मायुः कहतेहैं सो केवल ग्रहायुका सप्तांशनहिंहै तिसका आनयन आगे कहेंगे ३ अब अनियत आयुःकहतेहैं जिसके जन्मकालमें कर्क लग्न होवे और बृहस्पति चंद्रमा दोनों तिसमें स्थितहोवें और केंद्र स्थानोंमे १ ४ ७ १० शुक्र और बुध होवे और तीसरे छठे एकादस स्थानमें क्रूरग्रहस्थित होवें तब अमित प्रमाणकर्के रहित वडी आयुषा वाल्योंका जन्महोताहै ४ और त्रैलोक्य तिलकमें कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें तुलालग्नमें शुक्र स्थित होवे और बृस्पति मंगल अपने उच्चमें स्थित होवें और चंद्रमा अश्विनी नक्षत्रमें स्थित होवे तब वडी आयुषा वाला राजा होताहै ५ और जिसके जन्मकालमें कर्कट लग्नमें बृहस्पति कर्के युक्त चंद्रमा स्थित होवे अथवाकेंद्रमें बृहस्पति शुक्र स्थित होवे और शेष ग्रह तीसरे छठे एकादशमें स्थितहोवें तब अमित वडी आयुषा वाला होताहै ६ और जिसके जन्ममें अष्टमघर शुद्धहोवेंऔरशुक्रकेंद्रमेंस्थितहोवे और बृहस्पतिऔरचंद्रमा कर्कलग्नमेंस्थित होवे

लग्नसूर्यशशिनोबलशून्यास्युर्यदात्रपरमायुरगांशम् सर्वएवखचराददतीदं २ जीवशर्मगदितंहितदायुरिति ३ अनितयमाह ॥ गर्गः जीवेंदूकार्किगौलग्नेकेंद्रेभृगुसुतेंदुजौक्रमारिलाभगाःक्रूराःकुर्युर्जन्मामितायुषम् ४ जातकतिलके तुललग्नस्थितेशुक्रे स्वोच्चस्थगुरुभौमयोः अश्विनीसहितेव्जेस्यादमितायुर्महीपतिः कर्किलग्नेसगुर्विंदुकेंद्रस्थगुरुशुक्रयोः त्रिषडायगतैःशेषैरमितायुः क्रमंविना ६ शुद्धेरंध्रेसितेकेंद्रेकर्किलग्नेगुरौविधौ वन्हायुःकर्किलग्नेव्जेशेषैर्पातिशुभर्क्षगैः ७ परमोच्चगतैश्चंद्रशुक्रारैर्लग्नगेगुरौ मेषगोधनुरंशस्थैरविज्ञेज्यैश्चिरायुषः ८ अथयोगजायुराह ॥ होरामकरंदे ॥ कुलीरलग्नेवचसामधीशःकेंद्रेकविस्तत्रभवेच्छतायुः ॥ गुरुश्वराशौनिजदृक्गश्चेच्छताधिकाविंशतिरायुरत्र ९ सौम्येक्षिताःशुभखगानिजकोणयाताचंद्रस्तनौबलिनिजीवतिवर्षषष्टिः ॥ सौम्यात्रिकोणभवनेषुगुरौस्वतुंगे लग्नस्थितेस्फुटमिहायुरशीतिरुक्तम् १० ॥

अथवा सूर्य बुध बृहस्पति मेष राशिमें और धन राशिके नवांशमें स्थित होवे तब वडी आयुषावाला होताहै और कर्कट लग्नमें चंद्रमा स्थित होवे और शेष ग्रह शुभ ग्रहोंकी राशिमे स्थित होवे तब वडी आयुषावाला होताहै ७ और जिसके जन्ममें चंद्रमा और शुक्र और मंगल परम उच्चांशमें स्थित होवे और लग्नमें बृहस्पति स्थित होवे तब चिरकालआयुषा वाला होताहै ८ अब योगज आयुः कहतेहैं होरामकरंदमें जिसके जन्ममें कर्कट लग्नमे बृहस्पति स्थित होवे और केंद्रमें शुक्र होवे तब सउो १०० वर्ष आयुषा वाला होताहै और बृहस्पति अपनी राशिमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तब एकसउो वीस १२० वर्षआयुषाहोताहै ९ और शुभग्रहको राशिमे स्थित अपने मूलत्रिकोणमें स्थितहोवे और बली होयकर्के चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तब साठ ६० वर्ष जिताहै और जिसके जन्मसमयमें शुभग्रह त्रिकोण ९।५ मेंस्थित होवे और बृहस्पति उच्चमें होवे और लग्नमें होवे तब अशी ८० वर्ष आयुषावाला होताहै

ओर होरा प्रदीपमें कहतेहैं जिसके जन्मकालमें लग्न १ और अष्टम ८ स्थान ग्रहकर्के रहितहोवे और चंद्रमा तीसरे स्थानमें स्थित होवे और वृहस्पति अपने क्षेत्रमें ९। १२ स्थित होवे और बाकीके ग्रह सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि नवम स्थानमें स्थित होवें तब सौवर्ष १०० आयुषा वालेका जन्म होताहै ११ और योगजातकमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें वृहस्पति लग्नमें वा नवममें वा केंद्रमें स्थित होवे और अष्टमस्थान ग्रहकर्के रहित होवे और लग्न और चंद्रमा पापग्रहों कर्के नहिं देख्या होवे तब सत्तर वर्ष ७० जीताहै १२ और होराप्रकाशमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें केंद्र १। ४। ७। १० और त्रिकोण ९। ५ और अष्टम स्थानोंमें पापी ग्रह स्थित नहि होवें और लग्नका स्वामी और वृहस्पति केंद्र स्थानमें स्थित होवे सो मनुष्य अनेक प्रकारोंके शुभफलकों भोगताहै और रोगसें रहित सौ १०० वर्ष जीताहै १३ और बादरायण

होराप्रदीपे ॥ लग्नेसनिधनेशून्येचद्रेवीर्य्याश्रितेगुरौ ॥ स्वभेशुभास्थितैःशेषै र्जन्मविंद्याच्छतायुषम् ११ योगजातके ॥ जीवेलग्नेशुभेकेंद्रेनिधनेग्रहवर्जिते ॥ लग्नचंद्रौनदृष्टौचेत्पापैर्जीवतिसप्ततिम् १२ होराप्रकाशे ॥ केंद्रत्रिकोणनिधनेपुनयस्यपापालग्नाधिपःसुरगुरुश्चचतुष्टयस्थः ॥ भुंक्तेशुभानि विविधानिसपुण्यकर्माजीवेच्चवत्सरशतसविमुक्तरोगः १३ बादरायणः ॥ मृगवदनपश्चिमार्द्धेभूनंदनचंद्रसंयुतेलग्ने ॥ केंद्रगतेसुरपूज्येजीवतिजातोत्रवर्षशतम् १४ स्वोच्चेलग्नेभृगुजेसौम्यैर्दृष्टेष्टमेपिचद्रमसि सुरमंत्रिणिकेंद्रगतेजातःशतजीवितोभवति १५ निधनोपगतेसौम्येशुभग्रहनिरीक्षिते ॥ चद्रोपियचनिष्टःस्याच्छतायुःकेंद्रगेगुरौ १६ जातकालंकारे लग्नाधीशोतिवीर्य्यो यदिशुभविहगैर्वीक्षितःकेंद्रयातैर्दत्तेह्यायुःसुदीर्घंगुणगणसहितंश्रीयुतंमानवानाम् ॥ सौम्याःस्वीयालयस्थाजनुषिचरजनीनायकेस्वीयतुंगे वीर्य्याढ्ये लग्ननाथेवपुषिचशरदांषष्टिरायुर्नराणाम् १७ ॥

कहताहै ॥ जिसके जन्म समयमें मकर लग्नके पश्चिमार्द्धमें मंगल चंद्रमा स्थित होवें और वृहस्पति केंद्र १। ४। ७। १० स्थानमें होवे तब सौ १०० वर्ष जीताहै १४ और जिसके जन्मकालमें मीन लग्न गत शुक्रहोवे और शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और चंद्रमा अष्टम स्थानमें स्थित होवे और वृहस्पति केंद्रस्थानमें स्थित होवे तब सौ १०० वर्ष जीणे वाला होताहै १५ और अष्टम स्थानमें शुभग्रह शुभग्रहोंकर्के देख्याहोवे और चंद्रमावी अनिष्ट स्थानमें स्थित होवे तब वी सौ १०० वर्ष जीताहै १६ अब जातकालंकारमें कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नेश अतिबलीहोवे और शुभग्रहकेंद्रमें स्थित होय कर्के तिसकों देखें तब वडी आयुषावाले और गुणोंकर्के युक्त होतेहैं ॥ योगांतर कहतेहैं ॥ शुभग्रह स्वक्षेत्रमें स्थित होवें और चंद्रमा अपने उच्चमें स्थित होवे और लग्नेश बली होयकर्के लग्नमेंस्थितहोवे तब मनुष्योंकीसाठ ६० वर्ष आयुषा होतीहै १७

श्रीर जिसके जन्ममें लग्नसेंवाचंद्रमासें शुभग्रहकेंद्रमें स्थित होवें श्रीर लग्नमें बृहस्पति होवे श्रीर पापी ग्रह करके युक्त दृष्ट नहि होवें तब सत्तर ७० वर्ष श्रायुषा होतीहै ॥ योगांतर कहते हे ॥ जिसके जन्मकालमें शुभग्रह मूलत्रिकोणमें स्थित होवें श्रीर बृहस्पति अपने उच्चमें स्थित होवे श्रीर लग्नेश अतिबली होवे तब मनुष्योंकी अस्सी ८० वर्ष श्रायुषा होतीहै १७ श्रीर योगांतरकहतेहैं जिसके जन्मकालमें शुभग्रह केंद्रमें स्थित होवें श्रीर अत्यंत बलयुक्त होवे श्रीर अष्टम घर ग्रहोंकरके रहित होवे तब तीस ३० वर्षश्रायुषाहोतीहै श्रीर यदश्रष्टमघरशुभग्रहकरके दृष्ट होवे श्रीर शुभग्रह स्वक्षेत्रमें स्थित होवें तब दशवर्षोंकरके युक्त अर्थात् चाली ४० वर्ष श्रायुषा होतीहै श्रीरयोगांतरकहतेहैं ॥ जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति अपने द्रेष्काणमें स्थितहोवे तब सताईं २७ वर्ष श्रायुषा होतीहै ॥ श्रीर योगांतर कहतेहैं स्वक्षेत्रमें अथवालग्नमें चंद्रमा स्थित होवे श्रीरसप्तम में शुभग्रह स्थित होवें तबसाठ ६० वर्ष श्रायुषाहोतीहै योगांतरकहतेहे ॥ शुभग्रह केंद्रकोणमें स्थित होवें तबवीसाठ६०वर्ष १८ श्रीर कर्कटराशिमें बृहस्पतिहोवे तबश्रस्सी ८० वर्षश्रायुषाहोतीहै

सौम्याःकेंद्रालयस्थावपुषिसुरगुरौलग्नतोवासुधांशोरायुर्युक्तंनदृष्टंनखलगगन गैःसप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ यातामूलत्रिकोणेशुभगगनचरा स्वीयतुंगेसुरेज्येल ग्नाधीशेतिवीर्येगगनवसुसमासंख्यमायुर्नराणाम् १७ सौम्येकेंद्रतिवीर्येय दिनिधनगृहंखेटहीनसमाःस्युस्त्रिंशत्सौम्येक्षितचेद्गगनहिमकरैःसयुतोथोस्वभेचेत् स्वत्र्यंशेचामरेज्येमुनिनयनमितंस्वर्क्षगेलग्नगेवाचंद्रेद्यूनेशुभश्चेद्गगनरसमित कोणगाःसौम्यखेटाः १८ कर्किलग्नेसुरेज्योयदिभवतितदाखाष्टतुल्यंलयेशो धर्मांगेचांगनाथेनिधनभवनगेक्रूरदृष्टेऽब्धिहस्ताः लग्नाधीशाष्टनाथौलयभवनगतौ सप्तविंशद्विलग्नेक्रूरेज्यौचंद्रदृष्टौयदिनिधनगतःकश्चिदास्तेद्विपक्षाः १९ लग्नें दूक्रूरहीनौवपुषिसुरगुरौरंध्रभखेटहीनेकेंद्रेसोम्येखशैलाःसितविबुधगुरूस्या च्छतकेंद्रगौचेत् वागीशिकर्कलग्नेशतमिहभृगुजेकेंद्रगेथार्कसूनौधर्मागस्थे सुधांशौव्ययनवमगतेहायनानांशतंस्यात्२०

श्रीर योगांतरकहतेहैं अष्टमेश नवम स्थानमें स्थितहोवे श्रीर लग्नेश अष्टम स्थानमें स्थित होवे श्रौर क्रूर ग्रहकरके दृष्ट होवे तबचौवीवर्ष २४ श्रायुषाहोतीहैं ॥ श्रीर योगांतर कहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें लग्नेश श्रीर अष्टमेश दोनों अष्टम स्थानमें स्थित होवें तब सताईं २७ वर्ष श्रायुषा होतीहै ॥ श्रीर योगांतर कहतेहै ॥ जिसके जन्मलग्नमें क्रूरग्रह श्रीर बृहस्पति चंद्रमा करके देखे होवें श्रीर यदकोईकग्रह अष्टमस्थानमें होवे तब बाईं २२ वर्ष श्रायुषाहोतीहै १९ योगांतरकहतेहैं ॥ जिसके जन्ममें लग्न श्रीर चंद्रमाक्रूरग्रहकरके रहितहोवे श्रीर लग्नमें बृहस्पति होवे श्रीर अष्टमघर ग्रहहीनहोवे श्रीर शुभग्रह केंद्रमें होवें तब सत्तर ७० वर्ष श्रायुषाहोतीहै ॥ योगांतरकहतेहैं ॥ शुक्र श्रीर बृहस्पतिदोनों केंद्रमें स्थितहोवें तब सऊो १०० वर्ष श्रायुषाहोतीहै ॥ योगांतरकहतेहैं ॥ बृहस्पति कर्क लग्नमें होवे तब सऊो १०० वर्षश्रायुषा होतीहै ॥ श्रीरशुक्रकेंद्रमें होवे श्रीर शनि नवम श्रीर लग्नमें स्थित होवे श्रीर चद्रमाद्वादशमें १२ वा नवममें ९ स्थित होवे तब सऊो१००वर्ष श्रायुषाहोतीहै २०

और योगांतर कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नसें वा चंद्रमासें अष्टम स्थानमें कोइग्रह नाहे
होवे और शुक्र बृहस्पतिबली होवें सो पूर्ण आयुषावाला १२० वर्षजीताहै योगांतरकहतेहैं ॥
जिसकेजन्मकालमें शुभग्रह अपनीराशिमें स्थितहोवेंतव साठ ६० ॥ वर्षआयुषाहोतीहै
॥ योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें वृषराशिमें चंद्रमा और पापीग्रह पंचम ५
और केंद्र और अष्टम और नवममें स्थितहोवें और नवममें और लग्नमें और केंद्रमें गुरु
और शुक्र नहिं होवें और नवम और अष्टम स्थानशुभग्रहोंकर्के देख्या होवे तव सओ १००
वर्ष आयुषा होतीहै २१ योगांतर कहतेहैं ॥ जिसका धनुलग्नके उत्तरभागमें जन्म होवे और यद
सपूर्णग्रह उच्चमें स्थित होवें और बुध वृषके चौवी २४ अशोंमें स्थित होवें तव पूर्ण आयुषा
१२० वर्ष होतीहै ॥ और केंद्रमे वृहस्पति और शुक्र होवें। और एकादशमें चंद्रमा होवे तव
पूर्ण आयुषावाला होताहै ॥ और मीनराशिमें लग्नगतशुक्रहोवे और चंद्रमाअष्टमस्थानमें शुभग्र
हकर्के देख्या होवे और वृहस्पति केंद्रमें होवे तव सओ १०० वर्षजीताहै और लग्नेश अष्टम भा

लग्नादिंद्रोर्नखेटायदिनिधनगतावीर्य्यभाजौसितिज्ञौपूर्णायुः स्वीयराशौशुभ
गगनचराःपापिरंगोच्चगेवृजे ॥ धीकेंद्रायुर्नवस्थायदिखलखचरानोगुरोर्भेवि
लग्नेकेंद्रकाव्येगुरौवाशुभमथनिधनसौम्यदृष्टेशतंस्यात् ॥ २१ ॥ कोदंडां
त्यार्द्धमंगेयदिसकलखगाःस्वोच्चगाझेजिनांशैःगोस्थेपूर्णंचकेंद्रेसुरगुरुभृगुजौ ॥
लाभगेवृजेपरायुः शुक्रेमीनेतनुस्थेनिधनगृहगतेसौम्यदृष्टेसुधांशौ जीवेकेंद्रे
शतंस्यादथतनुगृहपेछिद्रगेपुष्करेवृजे ॥ २२ ॥ वागीशेवीर्ययुक्ते
नवमभवनगाःसर्वखेटाःशतायु कर्कैगेचंद्रजीवौसहजरिपुभवेस्तःकविज्ञौचकेंद्रे
केंद्रेसूर्यारमंदागुरुनवलवगावाक्पतौलग्नपाते व्यष्टस्थानेपुशेपाःशरगजतु
लितंस्यान्नराणांमितायुः २३ क्रूराःसौम्यांशयाताउपचयगृहगाःकातरा.कंट
कस्थाःसौम्याव्योमार्कसंस्थंयदितपनिकुजौरंध्रगौनोपरायुः

वमें होवे और चंद्रमा दशमस्थानमें होवे तव वी सओवर्षजीताहै २२ और वृहस्पति वलकर्के
युक्त होवे और नवम ९ स्थानमें सपूर्ण ग्रहहोवें तव सओ १०० वर्ष आयुषावाला होताहै ॥
और जिसके जन्मकालमें कर्क लग्नमें वृहस्पति चंद्रमास्थितहोवें और तीसरे और एकादश
स्थानमें स्थितहोवें और शुक्र बुध केंद्रमें स्थितहोवें तव सओ १०० वर्ष आयुषाहोतीहै ॥
और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें केंद्रस्थानमें सूर्य और मंगल और शनि वृहस्पति ९ ॥
१२ के नवांशमें स्थित होवें और वृहस्पति लग्नमें स्थित होवे और शेष ग्रह अष्टम स्थानमें न
होवें तव पचाशी ८५ वर्ष आयुषा होतीहै २३ योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें क्रूरग्रह
शुभग्रहोंके नवांशमें उपचय ३ ॥ ६ ॥ १० ॥ ११ ॥ स्थानमें स्थित होवें और युद्धमें पराजित शु
भ ग्रह केंद्रमें स्थित होवें तव एकसओवीस १२० वर्ष आयुषाहोतीहै और जदशनिऔर मंगल अष्ट
म स्थानमें स्थित होवें तव पूर्णआयुषा नहिहोतीहै

और योगांतर कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें लग्नकास्वामी और बृहस्पति केंद्रमें होवे और पापीग्रह नवम ९ पंचम ५ अष्टम ८ केंद्र ॥ १ । ४ । ७ । १० ॥ में नहि स्थित होवें तब पूर्ण आयुषा १२०॥वर्षहोतीहै और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें पापीग्रह नवम ९ चतुर्थ ४ में स्थित होवें और शुभग्रह बृहस्पतिके नवांशमें स्थित होवें ॥ २४ ॥ अथवा शुभग्रह युग्मराशियों में वा युग्मराशियोंके नवांशमें स्थित होवें और द्वादश और दूसरे घरमें स्थित होवे और पूर्ण चंद्रमा लग्नमें स्थित होवे तब तिसके घरमें लक्ष्मीका निवास और सौ १०० वर्ष आयुषा होतीहै ॥ योगांतर कहतेहैं जिसके जन्ममें लग्नेश शुभग्रह करके युक्त लग्नमें स्थित होवे और अष्टमेश अष्टममें स्थित होवें और किसीग्रहकरके नहि देख्या होवे तब बीस २० वर्ष आयुषा होतीहै और अष्टमेश केंद्रमें होवे और लग्नेश बलहीन होवे तब तीस ३० वर्ष आयुषा होतीहै २५ और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा आपोक्लिम स्थानमें ३ ॥ ६ ॥ ९ ॥ १२ स्थित होवे और लग्नेश निर्बली पाप ग्रहोंकरके देख्या होवे तब बत्तीवर्ष आयुषा होतीहै योगां

केंद्रेलग्नेशजीवौनवसुतनिधनेकंटकेनोखलास्याः संपूर्णपापखेटायदिगुरुजलगाजीवभागेचसौम्याः२४युग्मर्क्षांशगतावाव्ययधनगृहगाश्चेच्छुभाःशीतभानुःसंपूर्णोलग्नयायीशतमिहजनितामिंदिरामंदिरंस्यात्लग्नेशेसौम्ययुक्तेवपुषिचलयपेरध्रगेनान्यदृष्टेविंशत्केंद्रेलयेशेबलवियुजितथालग्नपेत्रिंशदायुः२५ इंदावापोक्लिमस्थेतदनुतनुपतौनिर्बलेपापदृष्टेदंतैस्तुल्यततोर्कःखलखगविवरेलग्नगोवृजत्रिसंख्यं रिष्फेकेंद्रेसुरेज्येगुरुरिपुसहजेस्यात्सपापेंगनाथेरामाब्दंकर्कलग्नेकुजतुहिनकरौकेंद्ररंध्रग्रहोनं २६ रामाब्दंस्याल्लयेशेवपुपिचनिधनंसौम्यहीनंखवेदाःलग्नेशोरध्रयातोवपुपिनिधनपःस्यान्नृणांबाणसंख्या नक्रेतिग्मांशुमंदौसहजरिपुगतौकंटकेरंध्रनाथेपारावाराब्धिसंख्यंतदनुशुभखगासद्भवक्षेत्रविंशत् २७

तरकहतेहैं जिसके जन्मसमयमें सूर्य पापीग्रहों के अंतरालमें होवे और लग्नमें स्थित होवे तब इकत्री ३१ वर्ष आयुषा होतीहै योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मसमयमेंद्वादश और केंद्रमें बृहस्पति स्थित होवे और लग्नेश पापग्रहकरके युक्त नवम और छठे और तीसरे स्थानमें होवे तब तीनवर्ष ३ आयुषाहोतीहै और कर्कट लग्नमें मंगल और चंद्रमा स्थित होवे और केंद्र और अष्टम स्थान ग्रहोंकरके रहितहोवे तब तीन ३ वर्ष आयुषाहोतीहै २६ और योगांतर कहतेहैं जिसके जन्मकालमें अष्टमेश लग्नमें स्थितहोवे और अष्टमघर शुभग्रहों करके रहितहोवे तब चालीं ४० वर्षआयुषा होतीहै और लग्नेश अष्टममें और अष्टमेश लग्नमें स्थित होवे तब पांच वर्ष ५ आयुषा होतीहै और मकर लग्नमें सूर्य शनी दोनों स्थित होवे और तीनों छठे स्थानमें स्थितहोवे और अष्टमेश केंद्रमें स्थितहोवे तब चुतालीं ४४ वर्ष आयुषा होतीहै और शुभग्रह सपूर्णपापीग्रहोंकी राशिमें और नवांशमें स्थितहोवे तब बीसवर्ष २० आयुषा होतीहै २७

और योगांतरकहतेहैं जिसके जन्मसमयमे लग्नेश क्रूरग्रहोंकर्के देख्या होवे और शुभग्रह वली होवें और चंद्रमा शुभग्रहोंके वर्गमेंहोवेतवत्र्यहत्र वर्ष ७३ आयुषा होतीहै और अष्टम स्थानमें शुभवर्गगत चंद्रमा होवे तव चहुट ६४ वर्ष आयुषा होतीहै मध्यमसंज्ञा कर्के और दिवाजन्ममें चंद्रमासें अष्ट म पापीग्रह होवें और शनि द्विस्वभाव लग्नमें स्थित होवे तववी चहुट वर्ष आयुषा होतीहै और द्वाद शेश वा अष्टमेश वलहीन होवे तव पचवुंजा ५५ वर्ष आयुषा होतीहै २८ और योगांतरकहतेहैं जिसके जन्मसमयमे कर्कटलग्नमे सूर्य स्थित होवे और दशम स्थानमे चंद्रमा होवे और वृहस्पतिकेंद्र स्थानमें स्थित होवे तव पचवुंजा ५५ वर्ष आयुषा होतीहै और जिसके जन्मकालमें दशम वाचतु र्थस्थानमें शुभग्रह स्थित होवें और चंद्रमा द्वादश और अष्टम स्थानमे स्थित होवें और लग्नमे शुक

क्रूरैर्दृष्टेंगनाथेयदिशुभविहगावीर्यवंतःशुधांशौ संस्थेसौम्येगणेचेद्गुणमुनितु लितंरंध्रगैर्मध्यमायुः स्याच्चंद्रादन्हिपापैरथतपनसुतेद्व्यंगलग्नेहियातेरिष्फेशेरं ध्रपेवायदिवलरहितेकंकपत्राक्षसंख्यं २८कर्केगेसप्तसप्तौखलविहगयुतेपुष्करं स्थेद्विजेशेकेंद्रंयातेसुरेज्येशरविशिखामितंपुष्करेर्नारगेवा । सौम्येपीयूषभानौ व्ययनिधनगतेदेहगेवाकवीज्यावकेंद्रेव्योमवाणंव्ययरिपुनिधनेलग्नगेवायचं द्रे २९ शन्यंशेलग्ननाथेगगनशरमितंस्यादथोसौम्यखेटारंध्रेनालग्ननाथोव्यय रिपुनिधनेपापयुक्षष्टिरायुः ॥ राशीशोलग्ननाथोदिनमणिसहितोमृत्युगोवा कपतिश्चेन्नोकेंद्रेषष्टिरायुर्वपुषिदिनपतिःशत्रुभौमान्वितश्चेत् ३० वागीशहीन वीर्येव्ययतनुजगतेयामिनीशखशैला धर्मेसर्वैःपरायुःखलखगलवगैःकेंद्रयातै रशीतिः ॥ क्रूरैःक्रूरक्षयातैःशुभभवनगतैःसौम्यखेटैःसवीर्येलग्नेशेस्यात्परायुः सुतभवनगतैःषष्टिरायुर्नराणाम् ३१ ॥

वृहस्पति होवें तव पंचास ५० वर्ष आयुषा होतीहै ॥ अथवा चंद्रमा द्वादश और छठे और अष्टमें वा लग्न स्थानमें स्थित होवे तववी पंचाश वर्ष आयुषा होतीहै २९ और लग्नेश शनिके नवांशमें होवे तववी पंचाश ५० वर्ष आयुषा होतीहै और शुभग्रह अष्टममें नहि स्थित होवें और लग्नेशछठे द्वादश अष्टम स्थानमें होवे और पापीग्रहों कर्के युक्त होवे तव साठ वर्ष आयुषा होतीहै और जि सके जन्मनेमें राशिका स्वामीऔर लग्नेश दोनों सूर्य कर्के युक्त होवेंऔरवृहस्पतिअष्टममें ८ स्थित हो वे और केंद्रमे नहिहोवे तव साठ वर्ष आयुषा होतीहै और जव लग्नमे सूर्य पापग्रह कर्के और मंगल कर्के युक्त होवे तव वी साठ ६० वर्ष आयुषा होतीहै ३०

श्रोरयोगांतरकहतेहेजिसकेजन्मकालमेंवृहस्पतिवलहीनहोवेश्रोरद्वादशपंचमस्थानमेंचंद्रमाहोवेंतवसत्त २७ • वर्षश्रायुषाहोतीहैश्रोरसंपूर्णग्रहनवमेंमेंस्थितहोवेंतवपूर्णश्रायुषा१२० होतीहैश्रोरसंपूर्णग्रहपापीग्रहों केनवांशमें केंद्र स्थानमे होवें तव श्रशीति ८० वर्षश्रायुषा होतीहैं श्रोरक्रूरग्रह क्रूरराशियोंमें स्थित होवे श्रोर शुभग्रह शुभ राशियोंमे होवे श्रोर लग्नेश बली होवे तव पूर्ण श्रायुषा १२० होतीहै श्रोर संपूर्णग्रह पचम स्थानमे स्थित होवें तव साठ ६० वर्ष होतीहै ३१ श्रोर जिसके जन्मकालमें मकरलग्नका श्रंत्यार्द्ध स्थित होवे श्रोर मकरके पूर्वार्द्धमें केंद्रगत शुभग्रह होवें तव सौ १०० वर्ष श्रायुषा होतीहै श्रोर श्रष्टम श्रोर तीसरे स्थानमें संपूर्ण ग्रह होवें तव चिरकाल श्रायुषा होतीहै श्रोर लग्नसे वा चंद्रमासे श्रष्टमघरका स्वामी द्वादश स्थानमें स्थित होवे तव श्रठाई २८ वर्ष श्रायुषा होतीहै श्रोर जिसके जन्मकालमे केंद्रस्थान शुभग्रहों करके रहित होवे श्रोर कोईक ग्रह श्रष्टममें स्थित होवे तव तीस३० वर्ष श्रायुषा होतीहै ३२ श्रोर जिसकेजन्मकालमें क्षीणचंद्रमा श्रोरपापीग्रहश्रष्टम स्थानमें स्थितहोवेंश्रोरश्रष्टमेशकेंद्रमेंस्थितहोवेश्रोरलग्नेशवलहीनहोवेतववीस २० वर्षश्रायुषाहोतीहै

सारंगस्यांत्यभागेयदिवपुषिगतेचाद्यभागेचकेंद्रे सौम्यैःखेटैःशतस्याद्वसुसहज गृहेस्याच्चिरायुःसमस्तैः लग्नात्प्रालेयभानोर्निधनसदनपेरिष्फकेंद्रेष्टविंशत्केंद्रे सौम्यग्रहोनेयदिमृतिभवनेकश्चिदास्तेखरामाः ३२ क्षीणेप्रालेयभानौयदिख लखचरोमृत्युगोमृत्युनाथःकेंद्रस्थोलग्ननाथोनिजबलरहितःखाश्वितुल्यंतदायुः सौम्यैरापोक्लिमस्थैर्दिनमणिजविधूवैरिरंध्रालयस्थौतुल्यैकामांकुशैः स्यादथधनमृ तिगौरिःफगौपापखेटौ ३३ हीनौस्वर्भानुनावायदिहिममहसाव्योमनेत्रप्रमा णं केंद्रस्थौसूर्यमंदौयदिवपुषिकुजःपुष्पवाणांकुशाःस्युः ॥ शुक्रेज्यावंगयातौतन यभवनगौभानुपापावनायुर्जन्मेशःसार्कलग्नेखलशुभसहितश्चेक्षित.स्यादनायुः ३४ यत्संप्रोक्तंयोगजंपूर्वमायुर्होरापारावारपारंप्रयातैःतस्मादायुःसारमुक्तमयै तत्पुण्याचारश्लोकभाजांनराणाम् ३५

श्रोर योगातरकहतेहैं जिसके जन्मकालमें शुभग्रह श्रापोक्लिम ३ ६ ९ १२ स्थानमें स्थित होवें श्रोर शनि श्रोर राहु श्रष्टम स्थानमें स्थित होवें तव वीस २० वर्ष श्रायुषाहोतीहैं श्रोर दूसरे श्रोर श्रष्टम श्रोर द्वादश स्थानमें दोपापीग्रह होवे ३३ श्रोर राहुकरकेरहितहोवेंश्रथवाचंद्रमाकरकेतववीस वर्ष २० होतीहैं श्रोर जिसके जन्मकालमें केंद्रमें सूर्य शनि स्थित होवें श्रोर लग्नमें मगल स्थित होवे तव वीस वर्ष २० होतीहैं श्रोर जिसके जन्मकालमें शुक्र श्रोर वृहस्पति लग्नमें स्थित होवें श्रोर पचम स्थानमे पापी ग्रह करके युक्त सूर्य होवे तव श्रायुषा करके हीन होताहै श्रोर लग्नेश सूर्य करके युक्त लग्नमें स्थित होवे श्रोर पापी श्रोर शुभग्रहों करके युक्त श्रोर देख्या होवे तव श्रल्पायु होताहै ३४ श्रोर कहतेहैं योपूर्व होराशास्त्रके पारगामी श्राचार्योंनें योगायुः कहाहै तिसमें सार सार लेकरके मेंने इस ग्रथमें योगायु· कहाहै सो इह किन्होंकों यथार्थ मिलताहै योपवित्र श्राचारमें श्रपने श्रपने धर्ममें स्थितहै ॥ ३५ ॥

श्रौर दशम स्थानमें स्थित योग्रह तिसका बलाबल देखकर्के विद्वानोंने धर्मीलोकोंको आयुषाका विचार कहना कहाहै ३६ अब परमायुषाके योगकहतेहैं यवनजातकमें जिसके जन्मसमयमें मीनलग्नका नवम नवांश स्थित होवे अर्थात्मीनलग्नमेंमीनकाहि नवांशहो वे और बुध वृषराशिके पंचविंशति २५ कलामें स्थित होवे तब परमायुषा प्रमाण कर्के जीवाहैं और संपूर्णग्रह उच्चराशियोंमें होवें तब ३७ और होराप्रदीपमें कहतेहैं जिसके जनम लग्नमें ध नराशिका अंत्यभाग स्थित होवे और संपूर्णग्रह परमोच्चमें स्थित होवें और वृषराशिके पंचविंशति २५ कलामें बुध स्थित होवे तब परम आयुषा १२० होतीहैं ३८ और बादरायणकहताहै जि सके जन्मलग्नसें एकादश स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे और बृहस्पति शुक्र केंद्रमें १ । ४ । ७ । १०

बलाबलविवेकेनपुष्करालयशालिनां सुमनोभिरिदंदेश्यमायुर्धर्मादिशालिनाम् ३६अथपरमायुर्योगः यवनजातके अनिमिषपरमांशकेविलग्नेशशितनयेगवि पंचवर्गलिप्ते ॥ भवतिचपरमायुषःप्रमाणंयदिसहिताःसकलाःस्वतुंगभेषु ३७ होराप्रदीपे ॥ धनुर्यातगतेविलग्नेपरमोच्चगतैर्ग्रहैःसमस्तैश्च ॥ गवि पंचवर्गलिप्तेसौम्येपरमायुराप्नोति ३८ बादरायणः ॥ एकादशधामगतः शशभृत्केंद्रोपगतौचगुरुशुक्रौ विंशतिशतंसमानांजीवयुतोनरपतिर्जातः३९ अथात्रउन्मितंगणितायुरुच्यते तच्चतुर्विधं ॥ अंशोद्भवं । पिंडजं । नैसर्गिकं । जीवशर्मोदितंच तत्रांशायुःकर्मयोग्यगुणकाधीनंसचस्फुटगुणकआश्रयगुणक योर्वधमूलकर्मयोग्यगुणकः॥स्फुटगुणकस्तुउच्चचेष्टागुणकयोर्वधमूलं केशवार्कः त्र्यल्पाश्चेत्किरणाःसरूपकिरणांघ्रिश्चेन्नत्रयोर्द्धाविभू ॥ गोर्द्धचेष्टि कतुंगसंभवगुणौतद्घातमूलंस्फुटः १अस्यार्थः उच्चबलाच्चेष्टाबलाच्चयेसाधिताः किरणास्तेचेत्किरणारश्मयः त्र्यल्पारूपत्रयात्न्यूनास्तदासरूपाकिरणांघ्रिः रूपयुक्ताकिरणानामांघ्रिश्चतुर्थांशोगुणःस्यात्चेत्त्रयोर्द्धाःरूपत्रयादधिकाःकिर णास्तर्हिविभूगोर्द्धएकरहितकिरणानामर्द्धगुणकःस्यात्

स्थित होवें तब एकसौ वीस वर्ष जीताहै और राजा होताहै ३९ अब गणितागत आयुः कह तेहैं सोचारप्रकारकर्केकहाहैएकअंशायुःऔरपिंडायुःऔरनिसर्गायुःऔरजीवशर्मायुतिसमेंअंशायुःकर्म योग्यगुणकके आधीनहैऔरसोकर्मयोग्यगुणक और स्फुटगुणक आश्रयगुणकके घातका मूलहोता है और स्फुटगुणकयोंहै सो उच्चगुणक और चेष्टा गुणकके घातका मूलहोताहै ॥ अब स्फुटगुणक कहतेहैं पूर्वबलसाधनाध्यायमें चेष्टाबल और उच्चबल सिद्धकियाहै तिन्हों वर्गों कों लेकर्के गुणे और एकतिसमें रूप और मिलावे तब चेष्टा रश्मियांऔरउच्चरश्मियां ग्रहोंकिया होतीआहैंउच्चबलसें उच्चरश्मियां औरचेष्टाबलसेंचेष्टारश्मियां होतीआहैंअबगुणकसाधनेमें रश्मियां तीन ३ सें हीनहोवें तब तिन्हमेंएकरूप मिलायकर्केचतुर्थांशगुणकहोताहै औररश्मियांतीनसेंअधिकहोवेंतबएकरूपसेंहीनकर्केतिन्हकाअर्द्धगुणिकहोताहै अत्रोदाहरणंयेश्वरा

३मय ६ ५५।५०त्रयोर्द्वांविभूगोर्द्धमित्युक्तत्वादेकेनरहिता ५। ५५।५० एषामर्द्धं २।५७।५५ रवेश्चेष्टागुणक ॥ रवेरुच्चरश्मय ४।५१।१८ रूपत्रयादधिकाएकेनरहिता ३।५१।१८ ।अर्द्ध १।५५।३९ जातोरवेरुच्चगुणक चन्द्रस्योच्चरश्मय. ।२।४१।८। एते-यल्पाअतोरूपयुक्ता।३। ४१।८एषामर्द्धं४जात चन्द्रस्योच्चगुणक ०।५५।१७ एवमन्येषाम् स्फुटगुणकसाधनेउदाहरणचरवेश्चेष्टागुणक, २।५७।५५ रवेरुच्चगुणक १।५५।३९ अनयोर्घात ५।४२।६ अयंसूक्ष्मभूलार्थवा रद्वयषष्ट्यासुवर्णित २०५७६अस्यमूल१४३।२६ षष्ठिभक्तरवे स्फुटगुणक २।२३ २६एषचन्द्रादीनामपि

आश्रयगुणकार्थचक्रम्

स्व	ऽमि	मि	स	श	ऽश
१८	१५	१३	९	५	३
३६	४८	५४	७२	१८	१४४

कल्पितोदाहरणे

अव आश्रयगुणककहते है प्रथमनवरेखा ऊर्द्ध देवे और एकादशरेखाटेडियादेवे तव नवति ९० कोष्टसिद्ध होते हे तिन्हमे ऊपरकी पंक्तिमें सूर्यादिशनिपर्यंतग्रह स्थापनकरे टेढिपंक्तिमें एककोष्टत्यागकर्के गृह होरादिसप्त

स	च	म	बु	बृ	शु	श	
१०							गृ
१८							हो
३							द्रे
५							स
९							न
१५							द्वा
९							त्रिं
६९							योग.
१०७							हार

सप्तवर्गस्वरूपम्

एवचेष्टिकतुंगसंभवगुणौभवत ॥ चेष्टारश्मिभ्यश्चेष्टागुणक उच्चरश्मिभ्यउच्चगुणकोज्ञेय अथस्फुटगुणकसाधनम् तद्घातइति तयोश्चेष्टोच्चगुणयोर्घात तस्यमूलस्फुटोगुणक स्यात् अथआश्रयगुणकमाह थ स्वाधीष्टसुहृत्समार्थिरिपोर्वर्गे धृतिश्चेष्विलाविश्वांकेषुगुणाग्रहेद्विगुणितायोग क्रमात्तद्धरेत् तद्धेपट्वसुगोशुमद्भविजिनै पड्भश्चवर्गोत्तमस्वांशत्र्यंशगतेसदारसगुणे स्याद।श्रयाख्योगुण अस्यार्थ स्वादीनापएणांवर्गेक्रमाद्धृतीत्यादिपडंकाज्ञेया। तद्यथा। स्वस्यवर्गेगृहेधृतिरष्टादश १८अधीष्टस्यवर्गेइष्विला १५ सुहृद्वर्गेविश्व १३ त्रयोदश समवर्गेअंकानव ९ अरिवर्गेइपव पंच ५ अधिरिपुवर्गेगुणास्त्रय ३ एवमेतेपाहोरादिवर्गेएतेअंका स्यु-ग्रहेग्रहस्थानेयोंकउक्तवदागच्छतिसद्विगुणित स्थाप्य होरादिवर्गेयथास्थिताएवस्थाप्या- तेपायोयोगस्तयोर्गस्वादीनांपएणांतद्भेग्रहस्यभेग्रहेसतिक्रमादेतैं पड्भिरंकैर्वक्ष्यमाणै षड्गुणै हरेत्

वर्गस्थापनकरे योगांका फल तिन्होका योग और हार नीचे के कोष्टमें स्थित करे और सप्तवर्गमें स्थितग्रह स्वक्षेत्रादि छैवर्गमें होवे तव क्रमसे अठारास लेकर्के तीनके अंक पर्यंत अंकहोतेहें और यो अंकगणितागतगृहस्थानमें आवे तिसका द्विगुणकर्के गृहके कोष्टम स्थित करे और होरादि छैवर्गोमें यथास्थित जैसा अंक प्राप्त होवे तैसाहि स्थापनकरे और संपूर्णग्रहोंके नीचे वलकायोग कर्के स्थापनकरे और तिन्होवर्गोंमें स्थित यो ग्रहहे

तिन्हके नीचे हारके अंक स्थित करे सो हार क्रमकर्के कहतेहैं स्वगृहमें ३६ अधिमित्रके गृहमें ४८ मित्रके गृहमें ५४ समके गृहमें ७२ शत्रुके गृहमें १०८ अधिशत्रुके गृहमें १४४ हार हो ताहि भाजक अंकको हार संज्ञाहै और यो ग्रह अपने वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होवे और अपने नवांशमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तिसका भाजक सर्वदाकाल षट्त्रिंशत् ३६ लेणा और स्वगृहादि हार नहिं लेना अर्नस भागलेनेसे आश्रय गुणक होताहै अत्रोदाहरणम् रविःशत्रु गृहेस्ति अतःपच मांतो गृहे द्विगुणिता इत्युक्तत्वाद्गृहेंदश १० जाता होरातु स्वस्य वर्तते अतोहो राया मष्टादश १८ द्रेष्काणअधिशत्रोरास्ति अतोद्रेष्काणे त्रयः ३ सप्तांशः शत्रोरस्ति अत सप्तांशे पञ्च ५ नवांशमिश्र शौसमस्य वर्तते अतोनवांश त्रिंशांशयोनव ९ द्वादशांशोधिमित्रयातो द्वादशांशे पंचदश १५ एवं जाता रवेः सप्तसुवर्गेष्वंपूर्वांकाः अथैषायोगोभाज्यः अथभाजकः रविर्वर्गोत्तमः त्रिवितयेनास्ति शत्रुगृहेस्ति अतो भाजकः १०८ अनेनभक्ते भाज्ये लब्धो रवेराश्रयगुणकः ० १८ २० एवमुक्तरीत्या जाता भाज्यांका भाजकांकाः आश्रयगुणक व्यस्तिरुच्यते चेद्वर्गोत्तमपूर्व इति यद्यग्रह अपने नवांशमें और अपने द्रेष्काणमें स्थित होवे तव अधिमित्र और अधिशत्रु

तद्यथास्वस्वगृहेषड्भिः६षड्घ्नैः ३६ अधीष्टगृहे वसुभिः८षड्घ्नैः४८ सुहृद्गृहे नवभिः९ षड्घ्नैः ५४ समगृहे अशुमाद्भिः द्वादशभिः १२ षड्घ्नै ७२ अरिगृहेधृतिभिः १८ षड्घ्नैः १०८ अधिरिपुगृहेजिनैः २४ षड्घ्नैः १४४ क्रमेणहरेदित्यर्थः वर्गोत्तमेस्वांशेस्वनवांशेस्वद्रेष्काणगतेग्रहेसतिसदारसगुणैः षड्त्रिंशद्भिः ३६ हरेन्न स्वादिगृहगतहारेणेत्यर्थ एवंहृतेलब्धमाश्रयाख्यो गुणःस्यात् अथाश्रयगुणकेविशेषसंस्कारकमेयोग्यगुणकंचायुर्भागांश्चाह. चेद्वर्गोत्तमपूर्वगोध्यरिसुहृद्भेतद्गृहांकस्त्रिषट्लब्ध्योनोयुगरीष्टभेऽधिनवका

राशिगतमें इह संस्कार विशेष कहतेहैं ॥ गृहस्थानके अंकको द्विगुणकर्के त्रिषष्टि ६३ अंकसे भाग लेवे यो लब्ध होवे सो क्रमकर्के अधिशत्रुकी राशिमें स्थित यो ग्रह तिसमें ऋण करे और अधिमित्र कोराशिगत ग्रहमें धनकरे और शत्रुराशिगत और मित्र राशिगत ग्रहहोवे तव गृहांकको द्विगुण कर्के युगनू ६४ के अंकसे भाग लेकर्के ऊन और युक्त करे शत्रुराशिगतमें ऊन और मित्रराशिगत ग्रहमें युक्त करे ॥ और स्वक्षेत्रमें और समग्रहकी राशीमें स्थित होवे तव यथा स्थित पूर्वोक्त गुणक रहिताहै संस्कारको अभाव होनेसे ॥ इस प्रकारकर्के आश्रयगुणकको स्पष्टकर्के फेर पूर्वोक्त ग्रहोके स्फुट गुणकको आपसमे गुणे और तिन्हका मूल कर्मयोग्य गुणक होताहै अर्थात्स्फुट गुणकोका और आश्रयगुणकोंकेघातका मूल कर्मयोग्यगुणक होताहै उदाहरण वेराश्रयगुणकः० ३८ २० स्फुटगुणक २ २३ २६ अनयोर्घातः १ ३३ ३८ अस्यमूलं जातः कर्मयोग्य गुणकः १ १४१ एवं चंद्रादीना मव आयुपाकेअदा सिद्ध करतेहैं ॥ खेटानामिति ॥ सूर्यादि सप्तग्रहोंके और

स्पष्ट लग्नके अंश बनावे और चालीस ४० के अंकसे भाग लेकर यो शेष बचे सो सूर्यादि सातग्रहों के और लग्नके आयुर्याके अंशहोतेहैं उदाहरण रविः २ १४ २० ५८ ॥ अस्यांशाः २४ ५८ चत्वारिंशद्भक्ताःशेष रवेरंशायुरंशा ॥ २४ २० ॥ ५८ ॥ एवंचंद्रादीनामपि अब चक्रपातार्द्ध हानिसंस्कार कहतेहै तात्कालिकलग्नमें तात्कालीन ग्रहको घटायदेवे जब छेरा शिसें ऊन रहे तब चक्रार्धहानि संस्कार लगताहै और ग्रहकर्के ऊन लग्न छे राशिसें अधिक रहेत ब चक्रार्धसंस्कारका संभव नहि होताहै और कहतेहैं छेराशिसें ऊनग्रहके अंशबनावे और तिन्हों अंशोंकर्केतीस ३० के अंकको भागे यो लब्ध आवे सो रूपसें १घटायदेवे सो गुणक होताहै और लग्नसें घटाये पीछे ग्रह एकराशिसें अल्प रहे तब तिसके अंशोंको तीस ३० सें भाग लेकर्के यो लब्ध होवे सो एकमें घटायदेवे तबगुणकहोताहै औरशुभग्रहलग्नसें घटावे तब तिसके लब्धफल को अर्द्धकर्के रूप १ सें घटावे और एकराशिमें दोग्रह वा बहुत ग्रहहोवें तब तिन्हमें अधिक बली यो ग्रह होवे तिसका गुणक बनावे पूर्वोक्त षड्बलमें यो अधिक बलीहोवे तिसकाही गुणकबनामना और कानहि बनामना कहाहै अस्योदाहरणयथा लग्न० ० २२ १२ ४६ रविणा २ १४ २० ५८ ऊनंजात १० ७ ५१ ४८ इसमेंग्रहोनलग्नछेराशिसें अधिकहोनेसें चक्रार्धहानिका संभव नहिहै

लग्नात्स्वेसमेकेवलः कार्यस्त्वाश्रयक सतत्स्फुटहतेर्मूलंसयोग्योगुणः खेटा नांचतनोलिवाःखयुगहृच्छेपाइहांशायुपः ॥ अथचक्रपातार्द्धहानिमाह षड्भा ल्पेसतिखेचरोनउदयेस्यांशोद्धृतेःखाग्निभिस्त्वेकाल्पेस्यचखाग्निभाजितलवेः साम्योनितत्वार्द्धितेः ऊनाभूगुणएकभेद्विबहुत्वेकस्यबव्होजसःकार्यस्तद्गुणिताः स्वदायजलवाश्चक्रार्द्धहानिर्भवेत् अथवर्षाद्यंशायुर्दायानयनमाह

अत्रकल्पितलग्नं २ ४ ५६ २८ ग्रह० ८ ८ २४ १६ अनेन ऊनित लग्न ५ २६ ३२ १२ अस्य अंशादिकैः १७६ ३२ १२ खाग्नयः ३० भजेत् भाज्यभाजकौ भाजकः ६३५ ५३२ भाज्यः१० ८००० भाजकेन हृते भाज्ये लब्ध ० १० ११ अथ शुभग्रहोस्ति अतोर्ध ० ५ ५ रूपात् १ शुद्धं ० ५४ ५५ गुणकः स्यादिति चेत्पापग्रहोस्ति तदासपूर्णफल रूपात्१ शुद्ध गुणकः स्यात्स्वे चरोनलग्नेएकाल्पत्वेउदाहरणलग्न ० ० २२ १२ ४६ शनिना ० १३ १८ ५२ ऊनजातं ० ० ८ ३३ ५४ अस्यांशाः ८ ३३ ५४ त्रिंशद्भक्तालब्ध ० १७ ७ रूपात्१ शुद्धंशनेरायुरंशानागुणकः ० ० ४२।५३ एवंसर्वत्र ॥ साधितगुणकस्यकृत्यमाह ॥ जिसग्रहका संभव होवे तिसका गुणक सिद्ध कर्केतिसगुणककर्के अपनेआयुर्याके अंशगुणे अंशोंकियां कला बनायकर्के गुणे उसग्रथमेंगुणकक र्के चक्रपातार्धहानि कहीहै ॥ अब भाषाकर्के अंशायुःस्पष्ट कहतेहै ॥ सूर्यादिसातग्रहोंकियां दायां शोत्थकला अपने २ कर्मयोग्यगुणकोंसें गुणे और दोसउ २०० का भाग लेवेतब ग्रहोंकी वर्षा दि आयु होतीहै ॥ और लग्नके दायांशोंको तीनसें ३ गुणे और दशसे १० भागे तब वर्षादि लग्नायुर्याहोतीहै और यदलग्न छे ६ रूपमें अधिक बलीहोवे तब लग्नराशिके तुल्य वर्षपूर्वानीतल ग्न युमें और युक्तकरे और शेष अंशादियोंको द्विगुणकर्के पांचके अंकसें भागलेकर्के राशितुल्यवर्षों

के आगे महीने स्थापनकरे फेर शेषको तीस ३० से गुणे और पांच ५ से भागलेकके मासोके नीचेदिनस्थापनकरे औरशेषको साठ ६० से गुणे और पांचसे भागलेवे दिनोंकेनीचे कलास्थापन करे एवविकला" अत्रार्यविधिःयस्यग्रहस्यचक्रपातर्धहानिसंभवोस्तितस्यहानिसंस्कृताआयुःकलायाह्याः वसहानिसंभवोनास्तितस्ययथास्थिताएवआयुःकलायाह्याः ॥ ताआयुःकलाः ॥ तदधोविकलाभस्व योग्यगुणकघ्नाःस्वीयेनकर्मयोग्यगुणकेनगुणनीयाः गाभ्रनेत्रोद्धृताःशतद्वयेनभक्ताः लब्धयुसदाग्रहाणा समादिवर्षादिश्चेशायुर्भवति।अत्राया।भजनविधि।आयुरंशोत्थकलः स्वयोग्यगुणकेनगुण्याःशतद्वयेनभक्ताः फलंवर्षाणि ।। शेषंकलाविकलाश्चद्वादशभिर्गुणयेत्विकलाःषष्ट्याविभज्यलब्धकलासुयोजयेत्पुनःशत द्वयेनभाज्यपलब्धतेमासाः ।. ततःशेषंत्रिंशतासगुण्यषष्ट्यालब्धं कलासुसंयोज्यशतद्वयेनभाज्यल ब्धंदिवसाः ॥ पुनःशेषंषष्ट्यासंगुण्यशतद्वयेनभाज्यंलब्धेपलानिएवंसमादिस्यात् ॥

अथलग्नायुः साधनं-तनोरिति तनोर्दायांशकास्त्र्याहताः त्रिगुणादिग्भक्ताः दशभक्तासमाद्यवर्षाद्यंलग्नायुः स्यात् तत्रापिवर्षमासाद्यानयनमाग्वदेव ।अथचेल्लग्नवलवत् षट्रूपेभ्योधिकवलंतदालग्नभैःतुल्याब्दैःलग्ना यितुल्यवर्षैःपूर्वानीतलग्नायुषियोज्य ततोद्विनिघ्नशरहृत् भागादितो मासयुकार्यम् लग्नभागादिग्रथमंद्विनि घ्नंपंचभक्तंफलमासाः-शेषंत्रिंशद्गुणंशरभक्तंलब्धंदिवसाः शेषंषष्ठिगुणंशरभक्तलब्धघटिकाःएवपलानि अ

दायांशोत्थकलाःस्वयोग्यगुणकघ्नाःखाभ्रनेत्रोद्धृताः अंशायुर्द्युसदांसमादितुत नोर्दायांशकास्त्र्याहताःदिग्भक्ताहिसमादिचेत्तुवलवल्लग्नंतदालग्नभैस्तुल्या ब्दैःसहितंद्विनिघ्नशरहृद्भागादितोमासयुक् अथपैंडनैसर्गिकजीवशर्मायुर्दा येषुआयुर्भागान्त्र्यंशार्द्धास्तहानिंचाह स्वोच्चोनोद्युचरोगभात्समधिकोग्रा ह्योल्पकोनार्कभतद्भागाद्युचरोरिभेयदिगुणांशोनाविनावक्रगं द्युप्ताअस्तमितेवि नाशानासितौहानिर्द्वयेत्राधिकेकाथोपैंडनिसर्गजीवगादितेचक्राधहानिर्भवेत्

नैनमासादिनालग्नायुः- सयोज्यम् अत्रोदाहरणम् रवेर्दायांशोत्थकलाः २०६० ५८ रवेःकर्मयोग्यगुण केन १ १४ १ गुणिताः २५४७ ० खाभ्रनेत्रैः २०० हृतालब्धवर्षाणि १२ शेषं १४७ ० द्वा दशगुणितं ,१७६४ ० ० द्विशत्याभक्तेलब्धमासाः ८ शेष १६४ ० त्रिंशद्गुण ४९२० ० द्वि त्याभक्तलब्धदिवसाः २४ शेष १२० ० षष्टिगुणित ७२०० ० द्विशत्याभक्तलब्धघटिकाः ३६ शेषम् न्यं ० षष्टिगुणित ० द्विशत्याभक्तलब्धपलानि ० एवजातंवर्षादिरवेरायुः १२ ८ २४ ३६ ० ० एवम् द्रादीनामपि तनोर्दायांशकाः २० १२ ४६ त्र्याहताः ६६ ३८ १८ दशभक्ताः लब्धवर्षाणि ६ शेषं ६ ३८ १८ द्वादशगुणित ७१ २१ ३६ दशभक्तलब्धमासा ७ शेषं १ २१ ३६ त्रिंशद्गुणितं२८ ४८ ० दशभक्तलब्धदिवसाः२८ शेषं१ ४८ ०षष्टिगुणितं५८८ ० दशभक्तलब्धघटिका. ५८ शेषं ४८ ० षष्टिगुणितं ४८० ० दशभक्तलब्धपलानि४८ एवजातंवर्षाद्यंलग्नायुः ६ ७ २८ ५८ ४८ लग्नवल ६४० १५ २८ षड्रूपेभ्योधिकमस्ति अतोलग्नभसत्वाल्लग्नादितुल्यै ० वर्षैलग्नायुर्युक्तम् ६ ७ २ ५८ ४८ लग्नस्यभागादि २२ १२ ४६ द्विनिघ्नम् ४४ २५ ३२ शरहृल्लब्धमासाः ८ शेषं४ २५ ३ त्रिंशद्गुण १३२ ४६ ० ० पचभक्तलब्धदिवसाः २६ शेष २ २६ ०षष्टिगुणितं १६६ ० पचभक्तलब्

घटिकाः २२ शेषं १ षष्ठिगुणं ६० अरभक्तंलब्धंपलानि१२ एवंमासादिना ८।२६।३३।१२ लग्नायुर्युक्तंजातंस्फुटलग्नायुःवर्षाद्यम् ॥ ७ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३३ ॥ ०० ॥ स्वोच्चोनद्रति-॥ शुचगेग्रहः स्वोच्चोनः कार्यः सत्र्यंगभात्समधिकोराशिषट्कादधिकोग्राह्यः अल्पश्चेत्तदाऽर्क-भं १२ ॥ ऊनविधेय तद्भागाःशेषस्यभागाःकार्याःयदिग्रहोऽरिभेऽस्ति तदातस्यग्रहस्यभागागुणा ३ शोनास्तृतीयांशेनऊनाः कार्याः वक्रगंविनावक्रोवक्रगतिग्रहस्तंविनाकोचिद्वक्रोभौमइतिव्याचख्युः तद्बहुभिरुपेक्षितत्वान्नादरणीयम् शत्रुभेवक्रगतिर्ग्रहश्चेत्तदातस्यांशागुणांशोनानकार्याः ॥ तथाचश्रीपति. ॥ त्र्यंशकहरंनिशत्रुभेग्रहः स्वायुषोऽत्रनतुवक्रचारगइति ॥ अस्तंगतोग्रहस्तस्यभागाद्द्व्याप्ताद्विविहृताःकार्याः शनिसिताभ्यांविना शनिशुक्रावस्तगतावपिअर्द्धंनहरतः ॥ यतः शनिसितौसूर्यवैरिणौ ॥ ततस्तौसूर्यसन्निधानेनास्तगतावपिस्वायुषोर्द्धंनहरतः ॥ तथाच बादरायण. ॥ अस्तंयाताः सर्वएवार्द्धहानिकुर्वन्ति हित्वादैत्यपूज्यार्कपुत्रावितिं ॥ एतद्धानिद्वयेयुगपत् प्राप्ते अधिकैकैवहानिःकार्या एतदुक्तंभवति वैरिभेग्रहे-त्र्यंशोनाहानिः तस्मिन्नस्तगतेसत्यर्द्धहानिः एवहानिद्वयेप्राप्तेअधिकैकैवहानिरर्द्धमेवहानिःकार्येत्यर्थः श-निसितयोर्हानिद्वयेत्र्यंशहानिरेवे यतस्तयोरस्तहानिर्नास्त्येव यदाहयवनः खेचरोजायतेयोर्द्धं त्र्यंशयोरपहारकः आयुषःसहरेदर्द्धंत्र्यंशंशुक्रशनैश्चरावितिं ॥ अथपिंडनिसर्गजीवशर्मेष्विआयुर्दायेष्वागादिनाच कार्द्धहानिर्भवेत् षड्भाल्पेइत्यानीतगुणकेनतेभागागुणनीयाइत्यर्थः अत्रापिविशेषः ॥ शत्रुभेइत्यत्रस्वाभाविकशत्रुर्ज्ञेयोनतुकृततात्कालिकशत्रुःनन्वेवंचेचंद्रस्यशत्रोरभावात् त्र्यंशहानिः कदापिनस्यादितिचेत्स त्यं नह्ययंनियमोऽस्ति यतस्त्र्यंशहानिः सर्वेषांभवतीति किंतुयथार्थहानिर्नसंभवति तथा चंद्रस्यत्र्यंशहानिरपीति किंच सप्तवर्गजबले अधिशत्रुभेदत्ताशकइति चंद्रस्यासंभवेपियथा अन्यग्रहबलार्थमुक्तं तद्वदत्रेप्यस्तु तत्कालमैत्रीहि तत्रैवर्तते ॥ यत्राधिशत्रुविचारोप्यस्ति ॥ नतुकेवलशत्रुमित्रविचारेप्रकृतेतुतात्कालिकमैत्रीविचारे शत्रुभेचाधिशत्रुभेचहानिर्विशेषेणभाव्यं नतुउभयत्रत्र्यंशहानि.संभवतीति ॥ अस्योदाहरण यथा ॥ रविः २ । १४ । २० । ५८ स्वोच्चेनं ० । १० ऊनः २ । ४ । २० । ५८ -अयंषड्भादूनोऽस्यतोभगणाच्च्युतः९।२५ । ३९ । २अस्यभागाः २९५ । ३९ । २ एवंचंद्रादीनामपि ॥ अस्तंगतस्योदाहरणं ॥ बुधोऽस्तंगतोऽस्ति एतस्यबुधस्यायुरंशाः २६८ । ३१ । ४२ द्विभक्ताज्जाताबुधस्यायुरंशा१३४ । १५ । ५१हानिद्वयेउदाहरणं यथागुरुः शत्रुगृहेऽस्तिअस्तगतोऽपीत्यत्र हानिद्वेप्राप्तेअधिकाहानिःकार्याइत्युक्तगुरोरप्यर्द्धहानिःकार्या शनिः शत्रुगृहेस्तितस्यत्र्यंशोनाहानिःस्यादिति यस्यहानिसंभवोनास्तितस्ययथागताआयुरंशाःस्थाप्याइति अथ भाषाकर्के कहतेहैं ग्रहको अपने उच्चसे घटावे जब छराशिसे हीनहोवे तब फेर बारां १२ राशिमें घटावे जैसे छराशिसे अधिकहि रहे तैसे करे फेर तिसके अंश बनावे अंशोंके नीचे कलादि धरे और ग्रह जब शत्रुके घरमें स्थित होवे तब तिसके अंश तृतीयांशकर्के रहित करे परंतु वक्रगति ग्रहहोवे तब तृतीयांश न घटावे तब यथास्थित धरे और ग्रह अस्तहोवे तब तिसके अंश अर्धकर्के धरे परंतु शनि शनिकेबिना शुक्रशनिकों अस्त हानि नहिं होतीहै और जिस ग्रहको दोहानिका संभव होवे तिसको अधिक हानियो दोमेंहोवे सो करे इस प्रकार सपूर्णग्रहोंके आयुरंश बनायकर्के फेर चक्रार्धहानि जो पूर्व अंशायुमे कहिहै सोकरे ॥

॥ अब लग्नगत पापग्रहमें हानिविशेष कहतेहैं ॥ जिसके जन्मलग्नमें पापीग्रह स्थित होवे तब ग्रहोंके जो आयुपाके अंशहैं ॥ तिन्हकों पृथक् स्थिनकरे और लग्नकी राशीकों त्यागक कें लग्नकेअंशादियोंसें ग्रहके आयु अंशोंकों गुणे और तीनसउसाठसें ३६० भागलेवे यो लब्ध आवे तिसकों पृथक् धरेयो ग्रहके अंश तिसमें घटायदेवे और यद लग्नगत पाप ग्रहशुभग्रह कर्के देख्या होवे तब लब्धिकों अर्धकर्के घटावे और इसमें क्रूरशब्दकर्के क्षी णचद्रमाका ग्रहणनाहिं करे चंद्रमा सदा शुभहि होताहै और वृहज्जातककी टीकामें भट्टो त्पलने क्रूर शब्द कर्के क्षीण चंद्रमाका ग्रहणबी नाहिं कियाहै ॥ और लग्नमें दो पापग्रहहो वें तब तिन्हमें योग्रह षड्बलकर्के अधिकवली होवे तिसके भावफलकर्के लब्धिकोंगुणके घ टायदेवे और षड्वलमें दोनों तुल्यहोवें तब जिसका भावफलअधिक होवे तिसकर्के लब्धि कों गुणकर्के घटावेऔर पापी ग्रह लग्नका स्वामी होवे तबबी इहे हानि नकरेयो ग्रहस्वा मी होताहैसो हानि नहिंकर्ताहैस्वामीका योग शुभ होताहै और इहे संस्कार पूर्वोक्त अ

पापग्रहेलग्नगतेतेषांभागानांहानिविशेषमाह दायांशाद्युसदांपृथक्तनुलवा दिघ्नाःखषट्त्र्युद्धृताआप्त्योनास्तनुगेखलेयदिचसद्दृष्टेर्द्धयाथापरे ॥ निघ्नोग्रो दयभावजेनतनुगोग्रेचिद्बलिष्ठस्यतत्साम्येपुष्टफलेननेतितनुपास्मिन्नांशजेसौ क्रियाइति ॥ अथपैंडनिसर्गजीवशर्मोक्तानांत्रयाणामायुर्दायानांवर्षाद्यानयन माह ॥ गोवृजास्तत्वातिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गानखाःपैंडजे १९ । २५ ।

युमें नहिं करणा कहाहै केवल पिंड निसर्ग जीवशर्मा आयुर्दायमें करणा कहाहै अवदसमें. उदाहरण कहतेहैं ॥ रवेर्दायांशाः २१ ५ । ३१ । ॥ पृथक्स्थाः २१५।३१।२॥ लग्न्ये पापग्रहेसति ॥ तनुलवादिना २२ । १२ । ४६ गुणिताः ६५६७ । १३ । १२ खषट्त्र्यु ३६० द्धृता आप्तिलब्धाः १८ । १४ । ३२ शुभदृष्टत्वादर्धिता ९ । ७ । १६ अनया पृथक्स्था दायांशा हीनाःजाता रवेरायुरंशाः २८६ । ३१ । ४८ एवंचंद्रादीनामपि ॥ अथापरमतोदाहरणं आप्तिः १८ । १४ । ३२ लग्नस्थपापग्रहभावफलेननिघ्ना ८ । ४१ । ३७ शुभदृष्टत्वादर्धिता ४। २४ । ४८ अनयापृथक्स्थादायांशाहीनाजातारवेरायुरंशाः २११ । १४ । १४ दशघटिकांतरंम तातरेणेति ॥ अथ पैंडादि तीन आयुर्दायोंके वर्षोंका आनयन कहतेहैं ॥ गोवृजाइति ॥ पिंडा युर्दायमें सूर्यादिग्रहोंके गोवृजाइत्यादयःसप्तक्रमेण गुणकाःस्युः ॥ तत्रार्कस्यगुणकः १९ चंद्रस्य त त्व २५ भौमस्यतिथयः १५ बुधस्य प्रभाकर १२ गुरोस्तिथयः १५ शुक्रस्य स्वर्गा २१ शने

नखाः२०गुण स्यात् इहे पिंडायुमेंक्रमकरकेंगुणक कहेहैं ॥ अवनैसर्गिकमें गुणककहतेहैं ॥ सूर्यादीनां नखादयःक्रमेण गुणकाःस्युः ॥ अर्कस्य नखाः २० चन्द्रस्यभू १ भौमस्यद्वौ २ बुधस्य गावः ९ गुरो धृतिः १८ शुक्रस्य नखाः२० शनेःपंचाशत् ५० गुणःस्यत् इहेक्रमकर्के निसर्गायुमें गुणक कहेहे ॥ ग्रहोंके पूर्वकहेयो दायांश तिन्हकों पिंडायुमें और निसर्गायुमेंकहे जोगुणकहे तिन्हके साथ भिन्न भिन्नगुणे और भगणांशोंकरकें तीनसहोसाठसें ३६० भागलेवे तब पिंड और निसर्गायुव र्षादि होतीहे ॥ और भागलेनेका प्रकार पूर्वकी न्याइहैं ॥ अब जीवशर्मोक्त आयुका आनयनकहते हे ॥ चकारसें पूर्वोक्तजोग्रहोंके आयुरंशहैं ग्रहकों अपने उच्चमें घटायकर्के जो सिद्धाकियेहें तिन्ह कों स्वर्गांसाअर्थात् एकविंशति २१ सें भागलेवे तब वर्षादि जीवशर्मायुर्दायहोताहे परंतु जिसग्रहके आयुर्भागसिद्धाकियेहें तिन्होंभागोंकोंआठसें ८भागलेकर्कघडीस्थानमेंयुक्तकरेतबवर्षादिजीवशर्मायुर्दाय स्पष्टहोताहै अत्रोदाहरणानिक्रमेणप्रदर्श्यन्तेरवेर्दायांशाः२८६।३१।४६रवेर्गुणकेन१९ गुणिताः५४४४। ३।१४भगणांशे ३६० भक्ताल्लब्धवर्षाणि१५शेष४४।३।१४द्वादशगुण ५२८।४२।४८भगणांशै३६०र्भ

१५।१२।१५॥२१॥२० नैसर्गेनखभूद्विगोधृतिनखाःपंचाश २०॥
१॥२॥९॥१८॥२०।५० दर्कादुणाः॥ दायांशाःस्वगुणैर्हताहिभगणां
शाप्त्यासमाद्यायुपीस्वर्गाप्ताश्चसमाहिजैवमिभहृत्स्वांशैर्घटीष्वन्वितम् ॥

क्तलब्धमासाः १ शेष १६८।४२।४८ त्रिंशद्गुण ५०६१।२४।०० भगणांशैर्भक्तलब्धदिवसा १४ शेष २१।२४।०० षष्टिगुण १२८४।० भगणांशैर्भक्तलब्धघटिकाः ३ शेष २०४।० षष्टिगुण १२२४०।० भगणांशैर्भक्तलब्धपलानि ३४ एवंजातरवेः पिंडायुर्वर्षाद्य १५।१।१४।३।३४ एवंचद्रादीनाम् अथनैस र्गेउदाहरण रवेर्दायांशाः२८६।३१।४६ रवेर्गुणकेन २० गुणिताः ४७२०।३५।२० भगणांशे ३६० र्भक्ताल्लब्धवर्षाणि १५ शेष ३३०।३५।२० द्वादशगुणित ३९६७।४०।० भगणांशैर्भक्तलब्धमासा ११ शेष ७।४।० त्रिंशद्गुण २१२।०।० भगणांशैर्भक्तलब्धदिवसा शेष २१२।०।० षष्टिगुणित १२७२०।०।० भगणांशैर्भक्तलब्धघटिकाः ३५ शेष १२०।०।० षष्टिगुण भगणांशैर्भक्तलब्धपलानि २० एवंजातरवेर्निसर्गायुर्वर्षाद्यं १५।११।०।३५।२० एवंचंद्रादीनाम् ॥ अथजैवीदाहरणम् रवेर्दायांशाः २८६॥३१॥४६ स्वर्ग २१ भक्ताल्लब्धवर्षाणि १३ शेषं १३॥३१॥४६ द्वादशगुण १६२॥२१॥१२ स्वर्ग २१ भक्ताल्लब्धमासाः ७ शेष १५॥२१॥१२ त्रिंशद्गुण ४६०॥३६॥० स्वर्ग २१ भक्तेलब्ध दिनानि २१ शेष १९॥३६ षष्ट्यागुणित ११७६॥० स्वर्ग २१ भक्तेलब्धघटिकाः ५६ पलानि ०९

वंरवेर्जीवशर्मायुः १३॥७॥२१॥५६॥०० रवेरंशाः २८६॥३१॥४६ इम ८ हृल्लब्धंघटयादि ३५४८ घट्यादिषु५६०युतं१।३१।४८एवंजातंरवेर्जीवशर्मायुवर्षाद्यं१३।७।२२।३१।४८एवंचंद्रादीनामपिश्रव पिंडनैसर्गजीवसमायुर्दायमें लग्नकीश्रयुका आनयनकहतेहैं लग्नकी राशिकोंसागकर्के शेषजोंश्रंशा।दि तिन्हकियां कलावनावे फेर तिन्हकोंदोसउोके अकसेभागलेवे जो लब्धआवे सो वर्षादिलग्नायुः पै ड निसर्ग जीवायुमेंहोंताहै अव मतांरकर्के लग्नायु कहतेहैं ॥ कईक आचार्य-सो लग्नायुः लग्नकें भु क्तनवांश तुल्य वर्षकहतेहैं ॥ कईक लग्नराशिके तुल्यवर्षकहतेहैं और कई आचार्यकहतेहैं ॥ लग्नेश वलीहोवे तव राशितुल्य और लग्ननवांशेशवलीहोवे तव नवांशतुल्य वर्षहोतेहैं ॥ और कईआचार्य कहतेहैं पूर्वोक्तलग्नायुवनायकर्के लग्नराशि और नवांशमें जो बलीहोवें तिसके तुल्य वर्षांकर्के युक्तक रेंतव लग्नायुःहोतीहै इसप्रकारकर्के वहुत मतोंमें जो पूर्व आयुर्दायकहाहै लग्नांशोंकों दोसउो २०० का भागदेकर्के जो वर्षादि सिद्धकियेहैं ॥ सो पक्षमुख्यहै सोई ग्रहणकरणायोग्यहै अस्योदाहरण वि भक्तो ०॥ २२ ॥ १२ ॥ ४६ ॥ लिप्ता ॥ १३ । ३२॥४६खनखो २०० हृतालब्धंलग्नायु वर्षाद्यम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ २८ ॥ ४८ ॥ इदंत्रिषुआयुर्दायेषुपैंडनिसर्गजीवशर्माख्येषुज्ञेयमिति,

अथपैंडादित्रिषुआयुर्दायेषुलग्नायुर्दायानयनमाह स्याल्लिप्ताःखनखोद्धृताश्रिभ
तनोर्वर्षादिपैंडात्त्रिकेलग्नायुर्निखलैस्तदंशकसमंकेश्चिद्भतुल्यंस्मृतंयस्येशोधि
वलस्तदेवहिपरैस्तेनाढ्यमन्यैर्यदंशायुर्वस्त्वथवांशतुल्यमखिलोक्तंग्राह्यमेवादिमम्

अब चार प्रकारकी आयुर्दायमें किसका प्रमाण करणा सो कहतेहे अंशायुश्चतनाविति ॥ लग्न और सूर्य और चंद्रमाके मध्यमें लग्नषड्वलमेंछेरूपसें ६ अधिकवलीहोवे तव अंशायुःका साधन करणा और सूर्य बली होवे तव पिंडायुः साधनकरे और चद्रमा बली होवे तव निसर्गायुः साधन करे और अव दो तुल्यवल होवें तव दोनों आयुःसिद्धकर्केतिन्हका योगकरेऔर योगकाअर्धभाग आ युर्दाय होताहै और तीनों लग्न सूर्य चंद्रमा छेरूप ६ से अधिकवली होवें तव तीनों आयुर्दाय सिद्धकर्के तीनोंके वलोंकर्के भिन्न भिन्नगुणेऔर तिन्होंकायोगकर्कतेनोंग्रहोंके षड्वलैक्यकर्के भाग लेवे तवआयु होताहै तिसका प्रकार कहतेहैं लग्न वलकर्के अंशायुःऔर सूर्यवलकर्के पिंडायुःऔर चद्रमाके वलकर्के निसर्गायु केवर्षांको गुणे इसमें वर्षांके दिन कला वनायकर्केगुणन करेसोकते हैं वर्षांको द्वादश १२ से गुणकर्के नीचेके मासमिलावेसोमासहोतेहैं फेरमासोंकोंतीस ३० सेंगुणे नीचेके दिनमिलावे तव दिन होतेहैं इसप्रकार दिन घटी पलात्मक दशा वनायकर्के लग्नादियों

के षड्बलकर्के गुणे और गुणित जो तीनों तिन्हकायोगकरे और तीनोंके बलैक्यसें भागलेवे तव दिनादि मिश्रायुर्दाय होताहै इसमें दिनोंको तीस ३० सें भागे लब्ध मास होतेहैं फेरमासों को द्वादश १२ से भागे तव लब्ध वर्षहोतेहैं इसप्रकारमिश्रायुः वर्षादिहोताहै और कहतेहै तीनों मध्यबली रूपछैसे हीन बली होवें तववी इसप्रकारमिश्रायु बनावे और इसप्रकारके दोग्रह होवें तव दोनोंयथोक्त आयुः बनायकर्के दोनोंके बलसें गुणे और योग कर्के दोनोंके षड्बलैक्यसें भागलेवे तव मिश्रायु सिद्ध होताहै यहे मुख्य युक्ति कहीहै और इसीप्रकारकर्के दामोदरपद्धतिमें कहाहै ॥ यथा ॥ लग्नार्कचंद्रायदिवीर्य युक्ता स्तदाविलग्नस्यबलेनहन्यात् ॥ अंशायुरर्कस्यबलेनपैंडं निसर्गकंचंद्रमसोबलेन ॥ सर्वाण्यथैकत्रविधायतानिबलैक्यभक्तानिसमादिकयत् ॥ पैंडचमिश्रायुरिदंद्वयोर्वाबलैक्य तोवोभयवीर्यसाम्ये ॥ साध्यंबुधैःस्पष्टमिदंजगादश्रीजीवशर्मामतिमान्यथैवमिति ॥ अथजैवमिति ॥ यद तीनों हीनबली तीनरूप ३ सें हीनबली होवेतव जीवशर्मायुःकाहिहै सोउत्तममध्यमहीनआगेंकहेगा ॥ अब मिश्रायुःका उदाहरण कहतेहैं ॥ जैसें रवेरायुर्वर्षादि १२ । ८ । २४ । ३६ । ॥ ••

अथैतेषुचतुर्ष्वायुर्दायेषुसत्सुकस्यकदाप्रामाण्यमित्याह अंशायुश्चतनाविनेधिकबलेपैंडंनिसर्गंविधोस्याच्चेत्तुल्यबलद्वयोर्युतिदलंतजायुषोश्चेत्त्रयः स्यायूंषि त्रिबलैर्निहत्यचयुतिर्वीर्यैक्यहृद्वात्रिजा युर्युत्यात्रिलवोथजैवमुदितचेद्धीनवीर्यास्त्रयः ॥

वर्षाणि द्वादशगुणितानि १४४ अथमध्य मास ८ सयुक्तानि १५२ इदत्रिंशद्गुणितं ४५६० अथ स्थादिन २४ सयुक्त जातदिनादिक ४५८४ । ३६ । ० इदंदिनघटीपलात्मकलग्नबलेन ६ । ४६ । ० । १५ गुणित ३११७ । ५८ । २१ एवंचद्रादीना ॥ तथैवदिनकृतपिंडायुर्दाय.सूर्यबलेन ६ । ३७ । ४२ गुणयेत् तथैवचंद्रबलेन ६ । ४१ ॥ १३ दिनीकृतनिसर्गायुर्दायोगुणनीय ॥ तथाकृतेन्यासःगुणितानांत्रयायुर्दायानायोगोभाज्यः ॥ १०५५७३ ॥ ५५ । १८ लग्नार्कचंद्रबलानायोगोभाजक २० । ६ । ४२ सवर्णितोभाज्यभाजकौ भाज्यः ३८००६६११८ भाजकः ७२४०२ भाजकेनहृतेभाज्येलब्धदिनानि ५२४१ शेष २८०२० षष्टिगुण १६८१२०० भाजकेनभक्तेलब्धघटिका २३ शेष ५१४१ षष्टिगुणित ३५७२४० भाजकेनभक्तलब्धपलानि १३ दिनस्थानात्रिंशद्भक्तलब्धमासा - १७४ मासाद्द्वादशभक्तालब्धवर्षाणि १४ जातरवेर्वर्षादिमिश्रायु १४ । ६ । २१ । १३ एवंचंद्रादीना ॥

ग्रहोंके न्यूनाधिक वलकाज्ञान और किन्होंका इह आयुर्दाय मिलताहै सो कहतेहैं ज्यल्पेति
ह अथवा लग्न पड्वलेकचमें तीनरूपों ३ सेंग्रल्पहोवे सो हीन वली होताहै और छै रूप ६
ग्रधिक वली होताहै और मध्यमें अनुपातकरणसे मध्यवली होताहै भिन्नमिति और आचार्यों
भेन्न भिन्न अपने अपने मतकर्के चार प्रकारका आयुर्दाय कहाहै और चारप्रकारका एकरथा
वीं नहि कहा तिसमें चतुर यो नीलकंठ श्रीधरादि आचार्यहै तिन्होंनें लग्नवलसें अंशायुःऔर
वलसें पिंडायुः और चंद्रवलसें निसगायु इत्यादि कहिहै अयतें व्यवस्थाकिएपीछें अंशायु व
योंकी संमति करके सत्यहै और सूक्ष्मजातकमें केवल अंशायुः प्रमाण कहतेहै इति और इह
यु किन्होंका यथार्थ मिलताहै सो कहतेहैं स्याद्धर्मिष्ठति धर्मात्मायोहैं अपने अपने वर्णाश्रमधर्ममें
र कुलाचारमें तत्पर और श्रेष्ट स्वभाववाले योहैं और पथ्य और हित भोजनके सेवने वाले यो
अनलयों मनुष्योंका गणितायुः सत्य होताहै और इन्होंसें व्यतिरिक्त पापीयोंका सत्य नहि होता

अथाधिकवलन्यूनवलज्ञानमाह ॥ ज्यल्पेहीनबलोबलीपडधिकेवीर्य्येग्रह
श्चोदयोभिन्नंस्वस्वमतेस्मृतायुरितियत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥ अंशायुर्वहुसंमतं
भवतियत्सत्यंचसत्योदितंस्याद्धर्मिष्टसुशीलपथ्यसुभुजांनस्यादिदंपापिनम् १
ननुअंशायुर्दायेऽयंग्रहहानिःकुतोनोक्ताइतिशिष्यभ्रांतिनिरासार्थमाह

और श्रीधरकहतेहैं येधर्मकर्मनिरताविजितेंद्रियाश्चयेपथ्यभोजनयुतोनिजदेवभक्ताः लोकेसदादयति
किलशीललीलास्तेषामिदकथितमायुरुदारधीभिः १ और गोरीजातकमेंकहाहै पापिष्ठायेदुराचारा
देवाब्राह्मणनिंदका वव्हाशिनश्चतेपांवैह्यकालमरणंध्रुवम् अब शिष्योंका भ्रम दूरकरणेके वास्ते कह
हैं अस्तगतग्रह आयुषाका अर्द्धहरताहै और शत्रुराशिगत तृतीयांश हरताहै इह जो पिंडादितीन
आयुर्दायमें कहाहै सो थोडी वुद्धि वालेने किसीने सो कदाचित् अंशायुर्दायमें संस्कार भ्रमकर्के नहि
करणा और योअयायुमेंभी अनुमान करे सो असत् झूठाहै किसकर्के जो अस्तंगतकी हानि चेष्टा
गुणकर्मे जिससे अस्तगतग्रहकागुणक रूपाधंकहाहै और शत्रुक्षेत्रगतत्र्यंशहानि आश्रयगुणकर्मे क
हिहै उसकर्के अंशायुमें त्र्यंशार्द्धहानिकाभ्रमनहिकरणा योग्यहै आयुस्सौरामिति वर्षादिआयुस्सौर
मासें गणना कहाहै और विद्वानमें कहाहै वर्षायनतुंगुणपूर्वकमत्रसौरादिति और वृहज्जतकमेंवी
सौर वर्षकर्केहि आयुर्दायकहेहैं और अल्पज्ञोनें नक्षत्र सवन कहाहै सोझूठाहै तिसमें

दामोदर पद्धतिमेंनाक्षत्र और उत्पलपद्धतिमे सावन कहाहै सो असत्है किसेस श्रीपति श्रीधराचा र्योंने युगार्क भगणोंकर्के अनुपातकर्के सौरकासावनाहर्गण सिद्धकियाहै ग्रहभिद्धकरणेके वास्ते सोबहु तयोंका मतहै परन्तु आयुर्दायानयनमे व्यर्थहै बहुतयोंके साथ विरोधहोनेसे आर अयुक्तिसे असत्है अबओर जीवोंकी पूर्णायुर्दायकथनपूर्वक तिन्हका आयुर्दायानयन कहतेहैं मनुष्यओरहाथियोंकी पूर्ण आयुषा पाचदिन ओर एकसौवीस वर्ष होतीहै १२०।०।५ ओर व्याघ्रादिजोहैं हिंसक ओर अजा दि योहे वकरेभिड्डूसेंआदलेकर्के तिन्हकी पूर्णायुषा सोलांवर्ष १६होतीहै ओर गौयोंकी ओर महिषी योंकी परमआयुषा चौवी २४ वर्षकहिहै ओर खोत्ते ओर ऊठोंकी पच्ची २५ वर्षपूर्ण आयुषाहोतीहै ओर कुत्तेयोंका द्वादश १२ वर्षपूर्णआयुषा होतीहे ओर घोडयोंकी बत्री ३२ वर्षपूर्णआयुषा होतीहै

हानिर्यास्तमितेरिभेष्यनुमितांशोत्थेल्पवुद्यानसद्यस्माच्चैष्टिकआश्रयेस्तिनिखिलै पैंडादिपूक्तातत ॥ आयुःसौरमिदंयतोब्दगणनासौरातत सूरिभिःप्रोक्तसत्य मसद्यदल्पकथितंनाक्षत्रकसावनम् २ अथान्येषांप्राणिनांपरमायु पुर सरमा युर्दायानयनमाह । पचाहनखभूसमा १२०।०।५ नृकरिणाव्याघ्राधजा देर्नृपा, १६ गोकाल्योर्हिजिना २४ स्तथोष्ट्रखरयोस्तत्त्वानि २५ सूर्या, १२ शुनाम् अश्वायु परमरदा, ३२ नृवदिहानीयायुरेषांपरायुर्निघ्ननृपरायु पाचविहृततेषांस्फुटायुर्भवेत् ३ अथकेंद्रायुर्लिख्यतेय्थातरे केद्राकसंख्यांत्रि गुणीविधायराव्हारसंख्याकततोविहीनआयुःप्रमाणंकथितमुनींद्रैश्चिरंतनैर्ज्यो तिषिके स्मृतानि १ केद्रस्थानस्थितानकान् त्रिगुणीकृत्ययावान्पिडरतावद्व र्षसंख्यायु ॥ यदिकेंद्रमध्येभौमराहूभवतस्तदातदको

अबइन्होंकी आयुषा स्पष्टकरणीकहतेह हाथीसेलेकर्के जितने इह जीवकहेहै तिन्हके जन्मकालमें स्पष्टलग्नओरस्पष्टग्रहबनायकर्के पूर्वोक्तषड्वलबनायके बलसिद्धकरे फेर जिसआयुषाकासभवहोव अथ पिंडनिसर्ग जीवशमाका तिसकों मनुष्यायुकी न्याईस्पष्टकरे जितनेवर्षादि आवतिन्हकों तिन्हकों पूर्णायुवर्षोंकर्के गुणदेवे ओर मनुष्योंकी परमायुषाकर्के भागलेवे तव तिन्हकी आयुषा स्पष्टवर्षादि होतीहै अब प्रथातरस कद्रायुका प्रमाण कहतेहे जन्मकालमें यो ग्रहकुडलीहै तिसमें लग्न चतुर्थ सप्तम दशम १ ४ ७ १० स्थानोंम योराशिहै तिन्हराशियोकेतुल्य अर्कोका योगकर्के ओर केंद्र स्थानम राहु ओर मगल जिस राशिम स्थित होवे तिसकी सख्या कर्के रहितकरे फेर त्रिगुणि

को तत्र केंद्रायु वर्ष होतेहैं और इसमें कहतेहैं केंद्रस्थानोंमें योयो शुभग्रह जिस जिस राशिमें युक्त
अथवा पूर्णदृष्टिकर्के देखता होवे तिसके वर्ष केंद्राक योगमें युक्त करे और योयो पापी ग्रहके
युक्त वा पूर्ण दृष्टिकर्के देखता होवे तिसके वर्ष केंद्राक योगमें घटाय कर्के शेषाङ्कको त्रिगुणित
रे तब केंद्रायुके वर्ष होतेहे अयसें प्राचीन ज्योतिषी कहतेहे इतिश्रीजातकखडभाषायामायुर्दा
नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ अबदशांतर्दशाध्यायकहतेहैं मित्रसेन जातकपद्धतिमेंअयसेंकहताहै
जिस जिस ग्रहका योयो आयुवर्षादिस्पष्टहै तिस तिस ग्रहकीतिसआयुषाके प्रमाणवर्षादि
शा होतीहे और चद्रमा और लग्न और सूर्य इनहूंतीनोंमें षड्बलकर्के जो अधिक
ली होवे तिसकी आद्यादशा प्रथम जन्मकालसें तिसकीदशा होतीहै ॥ १ ॥ और
तिसके उपरत यो ग्रह तिससें केंद्रादिस्थानोंमें यथा क्रमकर्के स्थितहोवे तिस

समेत्यकेंद्रांकमध्येशोध्यंशेषत्रिगुणीकार्यमिति इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवी
रसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखडेआयुर्दायाध्यायोष्टादश
१८ अथग्रहाणांसमस्तशुभाशुभज्ञापकोदशाध्यायआरभ्यते मित्रसेन यस्ययस्य
खचरस्ययदायुस्तस्यतस्यकिलसैवदशास्यात् हिमगुलग्नदिवाधिपतीनांयोवली
भवतितस्यदशाद्या १ तन्वादितूर्यास्तखभोपगानां ॥ १ ॥ ४ ७ १० ततो
ग्रगानां २ ५ ८ ११ युसदांपुनश्च ३ ६ ९ १२ एकर्क्षगाद्वित्रिखगास्तदातुल्य
यादशावीर्य्यवशाद्ग्रहाणाम् २ चेद्वीर्य्यसाम्येवहुवर्षदस्यततोपिसाम्येप्रथमोदितस्य

कीदशा होतीहै सोइसप्रकारकर्के होतीहै यदलग्नकी दशा प्रथमहोवे तब तिसके उपरतयो ग्रहलग्नसें
केंद्र १ ४ ७ १० मेंस्थितहोवे दूसरी दशा तिसका होतीहै और यो ग्रह पणफर २ ५ ८
११ स्थानमें स्थित होवे तिसकी तीसरी दशा होतीहै और लग्नसें आपोक्लिम ३ ६ ९ १२
स्थानमें योस्थित होवे तिसकी चतुर्थी दशा होतीहै और यद केंद्रमें कोई ग्रह स्थित नहिहोवे तब
पणफर स्थान स्थित ग्रहकी दूसरी दशा होतीहै इह अर्थसें सिद्धहै ॥ और इसमें केंद्रफणपरादिवि
चार लग्नकुंडलीमें करणा भावकुंडलीसें नहिकरणा कहाहै ॥ और केंद्रादिस्थानोंमें एक दो ग्रह वा
बहुत ग्रह स्थित होवें तबआगे कहना योदशाक्रमवल तिसमें यो वली होवे तिसकी पूर्वदशा होती
है २ और जब वलदोनोंका तुल्य होवे तब जिसकीवडीदशा होवे सो प्रथम होतीहै और दशा तुल्य
होवे तब योग्रह सूर्यरश्मिसेंप्रथम उदयको प्राप्तहोवे तिसकी पूर्वदशा होतीहै अयसांहि सूर्य चद्रमासेंक

द्रादि क्रमलेणा और अंतर्दशादियोंमें दशाक्रमबल सत्याचार्यादि मतकोंविचारके कहतेहैं ॥ ३ ॥ अवदशाक्रममें और रिष्ट और रिष्टभंगमें वल कहतेहैं॥स्यादाद्याइति श्लोकस्य व्याख्या पूर्वस्मिन् कृता ४॥ चेल्लग्नाद्येति ॥ यद लग्नकी दशा प्रथम होवे तब ग्रहोंके षड्वल अपने अपने ग्रहके भावफलसेंगुणे तव सपूर्णग्रहोंका दशा क्रम वल होताहै अत्रोदाहरणं ॥ रवेःषड्वलैक्यं ६ ३७ ४४ ३० रवे भावफलेन ०५३ २७ गुणित ५ ५४ १३ जातंरवेर्दशाक्रमबलं एवंसर्वेषाम्॥ अर्केंद्वोरिति ॥ य. द सूर्य की प्रथम दशा होवे अथवा चंद्रमाकी प्रथम दशा होवे तव खगोदयवलांघ्रि सूर्यादिग्रहोंका और लग्नका योंषड्वलैक्यहै तिसका चतुर्थांश गृहस्थानमें स्थापनकरे और होरादिछैवर्गोंमें चतुर्थांशका अर्द्ध करके स्थापनकरे सो सप्तवर्गोंमें स्थित यो अंकहैं अपने अपने वर्गके स्वामीके षड्वलसें

अंतर्दशादौचबलंप्रवक्ष्येविचार्य्यसत्यादिमतंचसत्यम् ॥ ३ ॥ अथदशाक्रमे केशवार्कः स्यादाद्याहिदशाधिकौजसहहार्केंदूदयानांततस्तत्केंद्रादियुजामथद्विवहवोवीर्य्यंक्रमेणैवहि चेदोजःसमतायुषोधिकतयायुस्तुल्यताचेद्दशामौढ्यास्तादुदितक्रमात्क्रमविधौवीर्य्यंहितत्रोच्यते ४ अथदशाक्रमविधौबलमाह चेल्लग्नाद्यदशास्वभावजफलघ्नौजांसिपाकक्रमेर्केंद्वोश्चेत्प्रथमाखगोदयवलांघ्रिर्भैन्यवर्गेर्द्धितःस्वैर्वर्गेशवलैर्हतोवलमिहैवंयमूलैर्तवयपरेथैवंरिष्टदभंक्तृजेवहुवलोभंकातदारिष्टहृत् ५

गुणे जैसें गृहेशके षड्वलैक्यकरके गृहस्थानके अंकोंकों गुणे और होराके स्वामीके बलसें होरामें स्थित अंकोंकों गुणे इसी प्रकार करके द्रेष्काणादिगुणे ॥ इस प्रकार गुणित यो सातवर्ग तिन्हकायोग दशाक्रम वल होताहै और कईक आचार्य कहतेहै अपने वर्गेशकरके गुणित जो गृहादिअंक तिन्हके मूलका योग दशा क्रम वल होताहै उदाहण चन्द्रस्यषड्वलैक्य ६ ४१ ४२ ५१ अस्यांघ्रिर्जातो गृहस्थाने वलं १ ४० २५ अस्यार्द्धजातं ० ५० १२ होरावलं ॥ अथैतत्स्वैर्वर्गेशवलैर्गुणयेत् यथा चंद्रस्यगृहेशो वुधस्तस्य षड्वलेन८१४ ३८ चद्रस्यगृहवलं १ ४० २५ गुणितं ११ ४७ ४१होरेशः चंद्रस्तद्वलेन ६ ४१ ४२ होरावल ० ५० १२ गुणितं ५३६ ६ एवंद्रेष्काणादीनाम् ॥ ५ ॥

अब रिष्टके भंगमें और विचार और दशाक्रमवलकों दृढता और मतांतरका खंडन कहतेहैं ॥
यो ग्रह रिष्टके भंगकरणेवाला होवे तिसके हिताहितकों विचारकर्के हितकहियें इष्टफल और अ
हित कहियें कष्टफल तिसका पूर्वोक्त इष्टकष्ट फलकोंविचारकर्के बुद्धमान् रिष्टका भंग कहे सो वि
चारइस प्रकारकर्के करणा इहे ग्रह शुभहै वा पापीहै और तैसेंहिं नीचराशिमें स्थित है वा उच्चमें
स्थितहै अस्तंगतहै वा उदयकों प्राप्तहै और आदिशब्दकर्के मित्रक्षेत्रमें वा शत्रुक्षेत्रमें है इसप्रकार
विचारकर्के रिष्टका भंगकहे इसमें फेर अयसें विचारकरें योरिष्टकर्त्ता शुभग्रह वा पापीग्रह और इ
ष्टफल अधिकहै वा कष्टफल अधिकहै उच्चादिस्थानमेंहै वा नीचादिस्थानमें स्थित है इसमें तात्प
र्य इहेहै यो शुभग्रह रिष्टभंगमें वलीहै परंतु तिसका कष्ट फल अधिकहै और नीचादिस्थानमें स्थित
है तव रिष्टभंग बलकों प्राप्त होएककेंवी रिष्टभंग नाहिं करसक्ताहै और पापी ग्रह रिष्टबलमें बली
होवे और उच्चादिस्थानमें स्थित होवे तव रिष्टनाहिं करसकाहै इहै इसग्रंथमें श्रीधरादि बहुत आचा
र्योंकर्के संमति युक्तहै और क्वचित् श्रीपति महालुंगि दामोदर पद्धतियोंमें कष्टेष्टग्रवलांतरात्तवलं त
दसत् युक्तिवाह्यत्वात् इसमें षडवलैक्य ग्रहका मुख्यवलहै और योग्रहषड्वलमें पूर्णबली होवे और

अथरिष्टभंगेअन्यद्विचारांतरंतथादशाक्रमोक्तबलस्यदार्ढ्यंअन्योक्तिनिराकरणं
चाहभंक्तुरिष्टकृवाहिताहितशुभासत्वचनीचोच्चभास्तादयस्याश्रयताविचार्यमतिमान्
रिष्टस्यभंगंवदेत् श्रेष्ठंहृष्टहतोदशाक्रमइहोजःश्रीधराद्योदितंकष्टेष्टग्रवलांतरात्क
चकृतंतद्युक्तिशून्यंत्वसत् ६ अथांतर्दशानयनम् ॥ अर्द्धस्येकभगास्त्रिकोण
गृहगस्त्र्यंशस्यचास्तेनगांशस्यांघ्रेश्चतुरस्त्रगोनिजगुणैःपक्केकभेस्याद्बली ॥

कष्टेष्टांतरकर्के गुणि तच्छून्य वल हीहोजावे तव इन्होंके मतकर्के रिष्टभंगकानाहिं होताहै इसकारणसें
इहे श्रीपत्यादियोंका मत युक्तिसें वाह्यहै ६ अब अंतर्दशाका आनयन कहतेहैं मूलदशाके स्वा
मीकर्के युक्त यो ग्रह होवे सो अर्द्धदशाका पाचक होताहै और दशापतिसें त्रिकोणमें ९ ॥ ५
स्थित योग्रहहैसोतृतीयांशका पाचकहोताहै और अस्त अर्थात् सप्तमस्थानमें दशाकेस्वामीसें स्थितयो
ग्रहहै सोसप्तमांश अर्थात् सप्तमांशकापाचकहोताहै और दशाकेस्वामीसेंचतुर्थ और अष्टममें स्थितयो
ग्रहहै सो चतुर्थांशका पाचक होताहै और अपने गुणोंकर्के आरोहावरोह उच्च नीचादि शुभाशुभ
गुणोंकर्के अंतर्दशामें फल देताहै और एकराशिमें दोग्रह वा बहुत ग्रह स्थित होवें तब तिन्होंमें
योवली होवे तिसकी अंतर्दशा होतीहै औरकी नाहिं होतीहै और इसमतसें कई आचार्य लग्नकी
अंतर्दशा बनानी कहतेहैं सो असत् झूठकहतेहैं ॥ जिससें संपूर्णग्रंथकारोंने लिखाहै यो ग्रहःपाच
पति ग्रहशब्दसें ग्रहही अंतर्दशाके स्वामीहोतेहैं लग्ननाहिं होताहै ॥ अब अंतर्दशा बनानेमें त्रैरा
शिक कहतेहैं यो दशाक्रमबल पूर्व कहाहै सोई अंतर्दशामें वल होताहै मूलदशा पतिमें यो यो

ग्रह जितने भागका पाचकहै तिन्हका समच्छेद लीलावतीमें कहाया सूत्र तिसकर्के बनावे समच्छे कर्के छिदाकोंकात्यागकरे अंशोंकर्के भिन्नभिन्नमूलदशाकों गुणे और अंशोंके योगकर्के भागले वे यो लब्ध होवे सो भिन्न स्थित क्रमकर्के अन्तर्दशा होतीहै ॥ ७ ॥ अब छेदोंका समान करणा लीलावतीमें कहाहै ॥ हर और अंश दोनोंकों अन्योन्य हारोंसेगुणे एकके हारसें दूसरेके हरांशोंकोंगुणे और दूसरेके हारसें प्रथमके हरांशोंकों गुणे अयसें करणेसे दो नों राशियोंका तुल्यहरहोताहै जब समच्छेदहोजावे तब छेदोंका त्याग करदेवे और भिन्न भिन्न अंशोंसे दशाकों गुणे और अंशोंके योगकर्के भागे तब लब्ध अनर्दशा होतीहै अब विदशादियोंमें

अंशादीकुरुरूपमत्रसमतांकृत्वाचनाशंछिदामंशभाःस्वदशापृथक्खलुलवैक्याप्ता स्युरंतर्दशाः ७ अथछिदांसमत्वकरणमुक्तंलीलावत्याम् अन्योन्यहाराभिहतौ हरांशौराश्योःसमच्छेदविधानमेवमितिअस्यार्थःहरांशौअन्योन्यहाराभिहतौकार्यौ एकस्यहरेण अपरस्यहरांशौगुण्यौ अपरस्यहरेण प्रथमस्यहरांशौगुण्यौ एवं कृतेराश्योः समच्छेदविधानं भवति अथविदशाद्यानयनं इत्याभ्योविदशास्त थाप्युपदशास्ताभ्यश्चसूक्ष्मफलं पंचांशोनदिनद्वयंचकलयांशायुःकृतंदृश्यते पक्षैःखदलवांतरेणचभवेन्मासांतरंचायुषःप्रोक्तैस्तुदशादिलग्नजफलंतेभ्योति दृश्योनमः ८ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविर चितजातकखंडेदशांतर्दशादिसाधनाध्यायएकोनविंशः ॥ १९ ॥

त्रैराशिक कहतेहैं अंतर्दशाके यो वर्षादि अंकहैं तिन्हकों मूलदशाकेवर्षोंसे भिन्न भिन्न गुणे और सर्वायुवर्षोंकर्केभागलेवे तब अंतर्दशामें विदशादि सिद्धहोतीहैं तिन्होंसे सूक्ष्मफल कहे और कहतेहैं ग्रहमें एककला ऊनाधिक होवे तब अंशायुमें एक दिन और अठतालो ४८ घडीका अंतर पड ताहै और ब्रह्मसीर आर्यभटादि सिद्धांतोंमें ग्रहका अंतर अंशमें होजाताहै तब मासादि अंतर आयुषामें होताहै यदा जन्मकालमें एकपलके अंतर होनेंसे लग्नकी ढेघटी होतीहै और छैकला कर्के दशदिनका आयुषामेंअंतर होताहै तिसमें यो अत्यंतदृष्टियोंवाले दशाप्रवेशलग्नमें यो फलादि या कहतेहै तिन्हकों मेनमस्कार करताहा इत्युपहासः इतिश्रीजातकखंडभाषायांदशांतर्दशाध्यायः १९

अंतर्दशानयनार्थचक्राणित्रैराशिककृता

१ २ २ १ हा ३	१ ३ ३ १ हा ४	१ ४ ४ १ हा ५	१ ७ ७ १ हा ८	१ २ ३ ६ ३ २ हा ११	१ २ ४ ८ ४ २ हा १४	१ २ ७ १४ ७ २ हा २३	१ ३ ४ १२ ४ ३ हा ११

१ ३ ७ २१ ७ ३ हा ३१	१ ४ ७ २८ ७ ४ हा ३९	१ २ ३ ४ २४ १२ ८ ६ हा ५०	१ २ ३ ७ ४२ २१ १४ ६ हा ८३	१ २ ४ ७ ५६ २८ १४ ८ हा १०६	१ ३ ४ ७ ८४ २८ २१ १२ हा १४५

अथ दशाफलाध्यायकहतेहैं जो ग्रह अपनी उच्चराशिमें स्थितहोताहै और अपनीराशिमें और अपने नवांशमें औरमित्रग्रहकीराशिमें स्थितहोवे औरपड्बलमें बलीहोवे और उदितहोवे सोग्रह अपनी दशामें संपूर्ण शुभफल करताहै औरजो ग्रह मित्रके उच्चमें और मित्रके नवांशमें स्थित और शुभग्रहकर के दृष्ट और युक्त होताहै सोग्रह अपनी दशामें श्रेष्ठफल करताहै १ और जोग्रह नीच राशिमें और शत्रुकी राशिमें और शत्रुके त्रिंशांशमें स्थितहोवे और सूर्यकरके युक्त होवे और युद्धकर्के विवर्णताको प्राप्त होवे सो ग्रह अपनी दशामें अशुभफल करताहै २ और जोग्रह उच्चसे परिच्युत होवे और मित्रके और उच्चके नवांशमें स्थितहोवेतिसकोदशामें मध्यमफलहोताहै और जोग्रहनीचसे परिच्युत होवे और

अथदशाफलाध्यायोव्याख्यायते स्वोच्चस्वराशिनिजभागसुहृद्गृहस्थःसंपूर्ण वीर्यरुचिराबलिनःस्वकल्पे मित्रोच्चभागसहितःशुभदृष्टियुक्तःश्रेष्ठांदशांविद धातिस्ववयःसुखेटः १ नीचशत्रुगृहप्राप्तःशत्रुत्रिंशांशसूर्यगः विवर्णरुक्षमं पन्नोदशांकुर्यादशोभनाम् २ तुंगाच्च्युतस्याहिदशासुहृदुच्चांशेऽवरोहिणीम ध्या नीचाद्विपुनीचांशेग्रहस्यचारोहिणीकष्टा ३ सविताद शाफलानांदाता चंद्रःप्रबोधयिता राशिविशेषेणेंदोरतःफलोक्तिर्दशारंभे ४ स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणोपलब्धिकर्कोहिमांशु कुरुतेदशायां जायापशूनांहननेप्रवृ त्तिंकरोतिपृथ्वीतनुजस्यगेहे ५ सच्छास्त्रमित्राधिगमंकरोतिबुधस्यराशौगु रुधामसस्था ॥ नृपप्रसादविपुलांचलक्ष्मींशुक्रस्यगेहेफलमेतदेव ६

१	२	३	४	७
१६८	८४	५६	४२	२४
हार. ३७४				

शत्रुके और नीचकेनवांशमेंस्थितहोवे तिसकाआरोहिणीदशावोंकष्टकोदेतीहै ३ औरसूर्य दशाके फलके देनेवाला होताहै और चंद्रमादशाफलकोप्रकटकरताहे इसकारणसे दशाकालमें जन्मराशिसे चंद्रमाका शुभाशुभ फल कहाहै ४ और जिस ग्रहकी दशा के आरम्भकालमेंकर्कराशिमें स्थितचंद्रमाहोवे तब स्त्री और पुत्र और मित्र और धनकी प्राप्ति होतीहै और चंद्रमा मेष और वृश्चिक राशिमें स्थित होवे तब स्त्री और पुत्रके ह नर्म प्रवृत्त होताहै ५ और चंद्रमा मिथुन कन्याराशिमें स्थित होवे तब श्रेष्ठ शास्त्रऔर मित्रकास मागम करताहै और वृषऔर तुला और धन और मीन राशिमें चंद्रमा स्थित होवे तब दशाम राजाकी कृपाऔर बड़ी लक्ष्मी प्राप्त होतीहै ॥ ६

॥ और चंद्रमा मकर और कुंभ राशिमें होवेतबदशामेंमनुष्यको दूतकर्म में प्रवृत्तकर्ताहै और बनमें और किलेकोटोंमें निवासकी प्रीति और गौयोंके घर बनानेमें प्रीतिवाला होताहै ॥ ७ ॥ और कहतेहैं जिसग्रहकी दशा प्राप्तहोवे तिससे मित्र और उच्चघरमें उपचय ३। ६ । १० । ११ ॥ स्थानमेंऔर त्रिकोण ९॥५ स्थानमें और सप्तम ७ स्थानमें चंद्रमा स्थित होवे तिसदशाका श्रेष्ठ फल कर्त्ताहै ८ और यो ग्रहअपनीनीचराशिसे लेकर्के पांचराशिमें स्थित होवे तिसकी दशा शुभहोतीहै तिसका नाम आरोहिणीहै और योग्रह उच्चराशिसे आगे पांच राशिस्थितहोवे तिसकी दशामें श्रेष्टफल का नाश होताहै और तिसका नाम अवरोहिणी दशाहै॥ ९ अब दशाके लक्षण कहतेहैं ॥ यो शुभग्रहअपने परमोच्च स्थानमें प्राप्तहोवे और संपूर्ण गुणोंकरयुक्त होवे तिसग्रहकी संपूर्णदशा धन और सौभाग्यकेवधावने वाली होतीहै १० और

तुषाररश्मिःशनिवेश्मसंस्थःप्रेष्यंमनुष्यंकुरुतेदशायाम् अरण्यदुर्गस्थितिमादधातिप्रीतिमरुद्गोगृहनिर्मितौच ७ मित्रोच्चोपचयस्थानेत्रिकोणेसप्तमेपिवा पाकेश्वरात्स्थितश्चंद्रः कुरुतेसत्फलांदशाम् ८ आरोहिणीदशायस्यखेचरःसत्फलप्रदः ॥ सत्फलापचयंकुर्याद्दशाचेदवरोहिणी ९ अथदशालक्षणं परमोच्चगतःसौम्योयदिसर्वगुणान्वितः ॥ संपूर्णासादशातस्यधनसौभाग्यवर्द्धिनी १० स्वोच्चराशिगतःखेटोयदिकिंचिद्बलान्वितःदशापूर्णाभवेत्तस्यकेवलंधनवृद्धिकृत् ११ यदिसर्वबलाढ्योपिनीचराशिगतोग्रहः ॥ दशारिक्ताभवेत्तस्यधननाशकरीभवेत् १२ मित्रोच्चांशगतस्यैषाफलंमध्यबलाभवेत् ॥ सेवानिष्टबलातस्यदैन्यरोगादिदुःखदा १३ अथारोहिण्यवरोहिणीलक्षणं उच्चाग्रेपंचमस्थस्यदशास्यादवरोहिणीतस्यामल्पमवाप्नोतिफलंक्लेशाच्छुभंनरः १४ नीचाग्रेपंचमस्थस्यदशाचारोहिणीमता ॥ तस्यांशुभफलंश्रेष्टमल्पेशादेवजायते १५

योग्रहउच्चराशिमें स्थित होवे और किंचित्बलकर्के युक्त होवे तिसकी संपूर्णदशा केवलधनकी वृद्धिकर्त्ताहै ११ और योग्रह पूर्ण बली होयकर्के और नीचराशिमें स्थित होवे तिसकी दशा रिक्ता कहिहै धनके नाशकरणे वाली होतीहै १२ और जबग्रहमित्रऔर उच्चके नवांशमें स्थित होवेतब मध्यम फल कर्त्ताहै और ग्रह हीनबली होवे सो दशा नेष्टफलकर्त्ताहै १३ अब आरोहिणी और अवरोहिणीदशाकालक्षण कहतेहै ॥ यो ग्रहअपनी उच्चराशिसे लेकर्के आगेकी पांचराशिमें स्थितहोवे तिसकी दशा अवरोहिणी होतीहैतिस अवरोहिणी दशामें थोडाफलहोताहै दुःखतेहिहोताहै १४ और यो ग्रहनीचराशिसे लेकर्केआगेपांच राशियोंमें स्थित होवे तिसकी दशा आरोहिणी होतीहै तिसमें शुभफल होताहै और अल्पबली तिसका स्वामी होवेतब भी शुभफल होताहै १५

ओर उह आरोहिणी दशा शत्रुके और नीचके नवांशमें स्थित ग्रहकी होवे तव थोडे कष्टके देने
वाली और थोडे धनकी हानि करणे वाली होतीहै और सोदशामित्रराशिगत, औरउच्चराशिगत स्थ
हकी होवे तब संपूर्ण शुभफल करतीहै १६ और दशाकिया संज्ञा पुंसतनकोंपियोंने इहां कहियां
हैं सो ग्रह वर्गोत्तम नवांशमें स्थित होतेहैं तिन्हकियां संपूर्ण दशा शुभफलको देतियांहै १७ औ
र जव ग्रह जिसराशिमें और जिसनवांशमें स्थित होवे तिन्हमें एक शुभके देने वाला और एक
अशुभके देने वाला होवे तव मिश्रित फल होताहै और श्रेष्ठराशि और श्रेष्ठ नवांशमें ग्रह स्थि
त होवे और निर्बली होवे तववी मिश्रित फल दशाका होताहै १८ और ग्रहजव शुभफलके दे
ने वाले स्थानमें स्थित होवे तव दुर्दशावीशुभफलकोदेतीहै और शुभस्थानमें ग्रह स्थित होवे त
व दुर्बलग्रहकीवी शुभफल देतीहै १९ और दुर्बल ग्रहकी दशादुष्टफलके अभावमें दुःख और दी

शत्रुनीचांशगस्यैषाकिंचित्कष्टप्रदाऽधना ॥ मित्रोच्चस्वगृहस्थस्यसैवसंपूर्णदा
सेमा १६ दशानांसकलाःसंज्ञाःपूर्वोपकथिताइमाः ॥ वर्गोत्तमगतानांस्युः
स्फीताःस्वफलदाश्चताः १७ यद्येकएवशुभदोग्रहाधिष्ठितभांशयोःमिश्रस्यात्त
त्फलंतद्वत्सद्भांशेसवलोज्झितः १८ ग्रहाऽशुभफलाभावेदुर्दशापिशुभप्रदा ॥
सचेद्दुष्टफलाभावेदुर्वलापिशुभप्रदा १९ सचेद्दुष्टफलाभावेदुःखदैन्या
निर्दिशेत् ॥ अष्टभावगतःखेटःसुदशस्तत्फलाद्धकृत् २० अथसूर्यदशाफल
विचारः ॥ भानोर्दशायांहिविदेशवासोभवेत्कदाचिन्नतुमानवानां ॥ भूवान्हिभूप
द्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीवधनागमःस्यात् २१ मंत्राभिचारेऽभिरुचिर्विचि
त्राधात्रीपतेःसख्यविधिर्विशेषात् विख्यातकर्माभिरतिर्मतिःस्यादेनहेपजल्पेच
रणेनचिंता २२ व्ययश्चदंतोदरनेत्रबाधाकांतासुतेस्योवियुतिश्चचिंता नृपा
ग्निचोराहितबंधुवर्गैःस्वगोत्रजैर्वाप्रबलःकलिःस्यात् २३

हहसामान्यफल कहाहै अब विशेष फल कहतेहे अपनेउच्चमे स्थितजो सूर्यतिसकीदशामेअपने धर्म कर्ममे रुचि होतीहै और पिताके सपादित द्रव्य और घरसेलेकेके पदर्थोका लाभ होताहै और स्त्रीपुत्रोंसे अनेक प्रकारके सुख होतिहे २४ और उच्चसे परिच्युत सूर्यहोवे तब तिसकी दशामे अत्यंत अरिष्ट और कष्ट रोग और अपने सबंधियोंकके विरोध और चतुष्पदोंकी हानि होतीहे ॥ २५ ॥ और जिसको वृषराशिके सूर्यकी दशा होवे तिसकी स्त्री और पुत्रको पीडा और कृषिकर्मसे और वाहनोंको पीडा और नेत्रोंमें और मुखमे पीडा और हृदयके रोगकी पीडा अनेक प्रकारकी होतीहै ॥ २६ ॥ और मिथुन राशिके सूर्यकी दशामें मंत्रशास्त्रमें और श्रेष्ठकाव्य करणेमे प्रीति वाला और पुराणों मेंप्रीति वाला और खेतीके कर्मसेधान्य और धनको प्राप्त होनेवाला मनुष्य होताहै २७ और जि

इतिसामान्यफल अथविशेषफलमुच्यते दशादिनेशस्यनिजोच्चगस्यस्वधर्मकर्माभिरुचिकरोतिताताजितद्रव्यगृहादिलाभंनानासुखानिप्रमदासुतेभ्य २४ उच्चच्युतस्याऽतितरामरिष्टंकष्टचरोगान्स्वजनैर्विरोध रवेर्दशातीवचतुष्पदानां करोतिहानिनतुमानवानां २५ कांतासुतानांकृपिवाहनानांप्रपीडनस्यान्नयनाननेपुहृद्रोगबाधावहुधानराणांवृषाधिरूढस्यरवेर्दशायाम् ॥ २६ ॥ स्यान्मंत्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्त्ताप्रीति पुराणेचभवेन्नराणाम् कृपिक्रियाधान्यधने.सुखानिनृयुग्मसस्थस्यरवेर्दशायाम् २७ स्यातिर्नृपप्रीतिरतीवनित्यस्त्रीनिर्जितत्वचमहत्प्रकोप. सुहृज्जनेनूनमतीवपीडाककाधिरूढस्यरवेर्दशायाम् २८ दुर्गादरण्याच्चकृपिक्रियायांधनान्यनेकानिभवतिनूनम् ॥ स्यात्स्यातिरुच्चैर्नृपगौरवचकठोरवस्थार्कदशाप्रवेशे २९ ॥ स्यात्कन्यकानांजननचमानोदेवद्विजानामनुपूजनच ॥ लब्धि पशूनांचभवेद्दशायांकन्यागतस्यांबुजबांधवस्य ३०

समनुष्यको कर्कराशिगत सूर्यकी दशा प्राप्त होतीहै सो प्रसिद्धताको प्राप्त होताहै और राजा की प्रीतिवाला और स्त्रीकर्के निर्जित और बडे कोपकर्के युक्त और मित्रजनोंमनिश्चयकर्के अत्यतपीडाहोतीहै २८ और जिसमनुष्यको सिंहराशिगत सूर्यकीदशा होतीहै तिसको किलयोंसे औरवनसे और कृपिकर्मसे निश्चयकर्के अनेकप्रकारकेधन प्राप्तहोतेहे और बडीप्रसिद्धताको प्राप्त होताहै और राजाके समागमको प्राप्त होताहै २९ और जिसकों कन्याराशिगतसूर्यकीदशा प्राप्त होतीहै सो कन्याके जन्मको प्राप्त और मान और देवता ब्राह्मणके पूजनको प्राप्त और पशुयोके लाभकोप्राप्त होताहै ३०

और जिसको तुलाराशिगत सूर्य कीदशा प्राप्त होताहै सो गृह और पुत्र और धन और स्त्री को पीडाको प्राप्त होताहै और चोर और अग्निके भयको प्राप्तहोताहै और विदे श गमन कर्ताहै और बडे नीच भावको प्राप्त होताहै ॥ ३१ ॥ और नीचांशसे राहेत सूर्यको दशामें सुखकरके लाभ होताहै और पराइठगी करणेसे धन लाभ होताहै और स्त्रीकेनि मित्तकरके दुःखकी प्राप्ति होतीहै और नीचजनसे मैत्री होतीहै ३२ और नीचराशिमें अष्टमस्थान स्थित सूर्यकीदशामें उदासीनता और दोषउत्पन्न होताहै और पृष्टभागमें व्रणकीपीडा होतीहैऔर मातापिताको अनेक प्रकारका दुःख होताहै ३३ और जिसको वृश्चिकराशि में स्थितसूर्य कीद शाप्राप्त होताहै सो तेज विशेषकरके युक्त होताहैऔर विष करके और अग्निकरकेऔर शस्त्रो करके पीडि तहोताहै और पिता और मातामें चित्तके विकारको प्राप्त होताहै ३४ और जिसकोधनराशि

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासुपीडाचौराग्निभीतिश्चविदेशयानं ॥ नीचत्वमुच्चैः खलुमानवानांतुलाधरस्थस्यरवेर्दशायाम् ॥ ३१ ॥ नीचांशमुक्तस्यरवे र्दशायांसुखेनलाभःपरवंचनंच जायानिमित्तोपतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्य विधिर्नितांतम् ३२ नीचाष्टमस्थस्यरवेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवःस्यात्पृष्ठा श्रितस्यव्रणजन्यपीडापित्रोश्चबाधाबहुधागम्या ३३ तेजोविशेषाभियुतोनितांतं विषाग्निशस्त्रैःपरिपीडितश्च ॥ पित्राजनन्यागतचित्तशुद्धिःस्याद्वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायां ३४ कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यंस्याद्गौरवंराजकुलाद्द्विजेभ्यः सं गीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्यरवेर्दशायाम् ३५ जायात्मजद्रव्यसुखा ल्पतास्याद्नल्पपीडामयतोनितांतं भवेत्पराधीनतयातिचिंतानक्रोपयातस्यरवे र्दशायाम् ३६ हृद्रोगबाधासुतवित्तकांताचिंतापरान्नादिसुखंनकिंचित् शत्रूद्गमश्चाप्य तिदीनतास्याद्घटाधिरूढस्यरवेर्दशायाम् ३७ स्त्रीवित्तसौख्योपचयःप्रतिष्ठाज्वरा दिपीडाचसुतादिकानाम् वृथाटनत्वंननुमानवानांमीनेदिनेशस्यदशाप्रवेशे ३८

के सूर्यकी दशा प्राप्त होतीहै सो स्त्री पुत्रधनादियोंके सुखको प्राप्तहोताहै और राजा के कुलसे और ब्राह्मणोंसे गौरवताको प्राप्त होताहै और संगीतशास्त्रकोप्राप्ति और बडेसुखको प्राप्त होताहै ३५ और जिसको मकर राशिकेसूर्यकीदशाप्राप्तहोतीहै तिसकोस्त्रीऔर पुत्र और धनकाथोडासुख होताहैऔरसेगसे बडीपीडाहोतीहैऔर पराधीनताऔरबडीचिंताकोप्राप्तहोताहै ३६ और जबकुंभराशिके सूर्यकीदशा होतीहै तब हृदयमें रोग और पीडा और पुत्र धन स्त्रीकी चिंता और परान्नादियोंकासुख थोडाभी नहिंहोताहै और शत्रुयोंकाभय और अत्यंत दीनताहोतीहै ३७ और मीनराशिके सूर्यकीदशामें स्त्री और धनऔरसुखकीवृद्धिहोतीहै और प्रतिष्ठाहोतीहै औ रपुत्रादियोंको ज्वरादि पीडा होतीहै और वृथाभ्रमणहोताहै ३८

और उच्चराशिमें अष्टमगतसूर्यकीदशामेंदोषउत्पन्नहोताहै और उच्चराशिमें छठेस्थानमेंस्थितहोवेतवव्रण पीडा और पितामाताको पीडा होतीहै ३९ और सूर्यकीदशाकेप्रवेशकालमें मातापिताको पीडा अनेकप्रकारोंकी होतीहै और लग्नसे सूर्यने ष्टस्थानमें स्थितहोवेतव विशेषकर केशको देताहै और चंद्रमाकीदशा मातापिताको शुभफलदेतीहै ४० ॥ इतिसूर्यदशाविचारः अथ चंद्रमाकीदशाकेफलकहतेहैं जिन्हों मनुष्योंको आरोहिणी चंद्रमाकी दशाहोतीहै सो विशेषसे संपूर्णअर्थसिद्ध करतीहै और तैसेहि अवरोहिणीदशा कार्यसिद्धिमें विलंब और संपूर्णकार्योंमें और बुद्धिमें मंदभावकरतीहै ४१ और चंद्रमाकीदशामें मनुष्योंको बडीप्रतिष्ठाहोतीहै और मंत्रीभाव और राजाकीरुपा और देवता और ब्राह्मणके पूजनमें प्रवृत्तिहोतीहै ४२ और श्रेष्ठमंत्र और विद्या और अनेकप्रकारोंकी धनलब्धि और अनेक क

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्यदशादिनेशस्यचदोषदास्यात् षष्ठस्थितस्यव्रणजात
पीडांकरोतिवाधांचापितुर्जनन्याः ३९ पूर्वभवत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्चवाधावि
विधातदानीम् लग्नाद्दशाक्लेशविशेषदात्रीनक्षत्रनाथस्यदशातिशस्ता ४०
इतिसूर्यदशाविचारः अथचंद्रदशाफलानि आरोहिणीचंद्रदशानराणांसर्वा
र्थसिद्ध्यैकथिताविशेषात् तथावरोहाकुरुतेविलंबंसर्वेषुकार्येषुचबुद्धिमांद्यम् ४१
नक्षत्रनाथस्यदशाप्रवेशेभवेन्नराणांमहतीप्रतिष्ठा मंत्रित्वमुच्चैर्नृपतेःप्रसादोभू
देवदेवार्चनताप्रवृत्तिः ४२ सन्मंत्रविद्याविविधाधनाप्तिर्नानाकलाकौशल
शालिताच गंधस्तिलैश्चापिफलैःप्रसूनैर्वृक्षैरलंवाद्रविणोपलब्धिः ४३ ख्या
तिःसुकीर्तिर्विनयाधिकत्वंपरोपकारायमतिर्यशश्च इतस्ततःसंचलनप्रियत्वं
कन्याप्रजासंजननप्रियत्वम् ४४ जलस्यकर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकु
लताक्षमाच कृष्यादिकर्माभिरुचिःशुचित्वंकफानिलाधिक्यमतीवसत्वम् ४५
भवेद्विरोधःस्वजनेननूनंकलिप्रसंगोवहुजल्पताच चित्तस्थितिर्नैवचसाधुकार्ये
सामान्यतःकीर्तितमेतदत्र ४६

लामें कुशलताहोतीहै और सुगंधवस्तु और तिल और फल पुष्पोंकी वृद्धि और वृक्षोंसे धनकी वृद्धिहोतीहै ४३ और जगत्में प्रसिद्धि और श्रेष्ठयश और नम्रताकी वृद्धिहोतीहै और परोपकारके वास्ते बुद्धिहोतीहै और भ्रमणमें प्रीति और कन्याकी उत्पत्ति और प्रीतिभावहोताहै ४४ और जलकर्ममें अत्यंत प्रीति और आलस्य और निद्रासे व्याकुलता और क्षमाकी प्राप्त होताहै और कृषिकर्ममें रुचि और पवित्रता और कफ और वायुकी अधिकता देहमेंहोतीहै ४५ और निश्चयकरिके अपने सबंधियोंसे करके विरोधहोताहै और लडाईकाप्रसंगहोताहै और बहुत बोलनाहोताहै और श्रेष्ठकर्ममें चित्तकी स्थितिनहिं होतीहै यह फल चंद्रमाकी दशाका सामान्य कहाहै ४६

अब चंद्रमाकी दशाका विशेष फल कहतेहैं ॥ मेषराशिके चंद्रमाकी दशामें स्त्रीपुत्रोंका आनंद मनुष्योंको होताहै और विदेशके कर्मोंमें प्रीति और खर्च होताहै और क्रोध होताहै और शिरमें रोग होताहै और भाइयोंकी और शत्रुयोंकी पीडा होतीहै ४६ और वृषराशिके चंद्रमाकी दशा मे वृषके तीन अंश पर्यंत होवे तब अपने कुलके अनुसार राज्यप्राप्त कर्ताहै और स्त्री भूषण पुत्र गायों घोडे, हाथीकी प्राप्ति और सुखकी वृद्धि और जय होतीहै ४७ और तीन अंशके उपरंत मूलत्रिकोणमें स्थित चंद्रमा की दशामें विदेश गमन होताहै और कृषिकर्मसे और क्रयविक्रयसे लाभ होताहै और कफ वायुकी प्राप्ति और संबंधियोंसे विरोध होताहै ४८ और वृषराशिके पूर्वार्ध में पापीग्रहकर्के युक्त होवे चंद्रमा तब माताको मृत्युकर्ताहै और उत्तरार्धमें स्थित होवे तब पिता

मेषेशशांकस्यदशाप्रवेशेयोषात्मजानंदभरोजनानाम् ॥ विदेशकर्माभिरतिर्व्ययःस्यात्क्रौर्यंशिरोरुक्सहजारिबाधा ४६ उच्चाधिरूढस्यदशाजडांशोःकुलानुसारंहिददातिराज्यं ॥ योषाविभूषात्मजगोतुरंगगजाप्तिसौख्योपचयंजयच ४७ मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशाविदेशाभिगमंकरोति ॥ कृषेः क्रयाद्विक्रयताधनाप्तिंकफानिलाप्तिंस्वजनैर्विरोधम् ४८ वृषस्यपूर्वार्धगतोहिमांशुःपापान्वितःसंजनयेज्जनन्याः ॥ मृत्युंपरार्द्धेजनकस्यसौम्यसमेतस्तन्मृत्युसमानरोगं ४९ द्वन्द्वाधिसंस्थेंदुदशाप्रवेशेदेवद्विजार्चाधनभोगसौख्यं ॥ स्थलांतरेसंचलनंकिलस्यात्सुखेनसम्यङ्मतिवैभवंच ५० कुलीरसंस्थस्यकलानिधेःस्यात्पाकेपशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ॥ कलाकलापाकलनंचशैलेवनेरुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ५१ कंठीरवस्थस्यनिशाकरस्यपाकेनरोर्थंलभतेचनित्यं ॥ श्रेष्ठांप्रतिष्ठांविकलत्वमंगेऽनंगेपिहीनत्वमनुप्रयाति ५२

को मृत्युकर्ताहै और शुभग्रह कर्के संयुक्त होवे तब मृत्युतुल्यकष्ट कर्ताहै ४९ और मिथुनराशिके चंद्रमाकी दशामें देव ब्राह्मणकी पूजा और धनभोगका सुखहोताहै और निश्चयकर्केस्थानांतरमें गमन होताहै और सुखकर्के बुद्धिकेऐश्वर्यकोप्राप्तहोताहै ५० और कर्कराशिकेचंद्रमाकिदशामें पशु और द्रव्य और कृषिकर्मसे वृद्धि होतीहै और कलाके समूह प्राप्तहोतेहैं और पर्वत और बनमें रुचि होतीहै और गुप्तरोगका कोप होताहै ५१ और सिंहराशिके चंद्रमाकी दशामें मनुष्य नित्यप्रति धनको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै और अंगमें व्याकुलताको प्राप्त होताहै और कामदेवकी हीनताको प्राप्त होताहै ५२

॥ और कन्याराशिके चद्रमाकी दशामें विदेशगमन और स्त्रीकी प्राप्ति और कलाके समूहमे बुद्धिकी सामर्थ्य होतीहै और धनकी थोडी वृद्धि होतीहै ॥ ५३ ॥ और तुलाराशिकेचद्रमाकी दशामे मन चचल होताहै और सीसे वाद होताहै और किसीसेंभी वाद होताहै और धनकी हीनता होतीहै और उत्साहका भंग होताहै और निश्चयकरके नौकरी भंग होताहै ५४ और वृश्चिक राशिमे नीचाश्रगत चद्रमाकीदशामे व्याधिकीवृद्धिबहुत प्रकारकी होतीहै और निश्चयकरकेसबंधिकावियोग और मानकीअल्पता और बहुतप्रकारकी चिंताहोतीहै ५५ और नीचाशमे उपरत चद्रमाकी दशामे व्यापारकरणेसे और बेचनेसे धनकी प्राप्ति होतीहै और संधियामे पीडा होतीहै और धर्ममें अल्पता होतीहै और मित्रवर्गकाभी थोडा दुःख होताहै

कन्यास्थितेंदोश्चदशाप्रवेशेविदेशयानंवनितोपलब्धि ॥ कलाकलापामल बुद्धिवृद्धि स्वल्पार्थसिद्धिश्चभवेन्नराणाम् ५३ कलाविधेस्तौलिगतस्यपाके लोलमनस्याद्वनितावियाद ॥ वादश्चकैश्चिदनहीनताचप्रोत्साहभग खलु नावसग ५४ नीचोपयातस्यविधोर्दशायाम्याव्याधिवृद्धिर्बहुधान्राणाम् नियोजनवैस्वजनेननूनमानाल्पताऽनल्पविकल्पचिंता ५५ विमुक्तनीचाशुपतेर्दशायांभवेद्धनाप्ति क्रयविक्रयाभ्यां ॥ मर्मन्यथाधर्मविधानमल्प मल्पचमोरवजनमित्रवर्गे ५६ चापोपयातस्यचशीतरश्मेर्दशाप्रवेशेगजवाजिवृद्धि ॥ पूर्वार्जितार्थोपहतिर्नितांतमन्यत्रसौभाग्यसुखानिनूनम् ५७ हि मकरस्यदशामकरस्थिते सुतसुखानिधनागमनानिच वितनुतेतनुतामनिलात्तनोरनुदिनगमनागमनानिवे ५८ क्रोडिचपीडाव्यसनानिनूनस्यमानवानात् नुताशरीरे ॥ क्रमोपलब्धिश्चलितानितांतदशाप्रवेशेकलशस्थितेदो ५९ वर्गोत्तमस्थस्यघटेहिमाशोर्दशाप्रवेशेबलिभिर्विरोध कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यै भवेद्वियोगोदशनास्यपीडा ६०

७६ और धनराशिके चद्रमाकी दशामें हाथी घोडेयोंकी वृद्धि और पूर्वसंपादित धनकी हानि और निश्चयकरके अन्यस्थानमें सौभाग्यव केसुख होतेहै और मकरराशिमेंस्थित चद्रमाकी दशामेंपुत्रकासुख और धनका आगम होताहै और वायुकरके देहकृश होताहैऔर प्रतिदिन गमनागमन निश्चय से होताहै ५८ और कुंभराशिमे स्थित चद्रमाकी दशामें लक्षण पीडाऔर दुव्यसन नकी प्राप्ति निश्चयकरके होतीहै और देहमें कृशता होतीहै और उद्यम करणेसे लाभ होताहै और निरंतर चचलता होतीहै ५९ और कुंभराशिमें वर्गोत्तममे अपने नवांशमे चद्रमा होवे तब किसीबलवान मनुष्यसेविरोधहोताहै और स्त्रीमित्रधनपुत्रादियोंककेवियोगहोताहैऔरदतोंमेंऔरमुखमेपीडाहोतीहै६०

और मीनराशिमें स्थित चंद्रमाकी दशामें जलके संबंधकर्क धनकी प्राप्ति होतीहै और निश्चय
कर्क स्त्री पुत्रादियोंकेसुखहोतेहै और शत्रुयोंकानाश और बुद्धिकीवृद्धि होतीहै ६१ और मीनके प्र
थमनवांशमें स्थित चंद्रमाकी दशामें महिषी और हाथी और घोडयोंकी प्राप्ति होतीहैऔर पु
त्रादियों का सुख और यशऔर श्रेष्ट बुद्धि होतीहै ६२ और द्वादशस्थानमें स्थित चंद्रमा
की दशामेंपापकर्मसे द्रव्यलाभ होताहैऔर क्षीणचंद्रमा छठेस्थानमें स्थित होवे तिसकीदशामें
पूर्वकहाजो फल सो भलीप्रकारसे होताहै अर्थात्पापकर्मसे बहुतलाभहोताहै ६३ और नीचरा
शिमें स्थित और अष्टम भावगत चंद्रमाकी दशामें निश्चयकर्क रोग उत्पन्नहोताहै और यद पा

मीनोपयातस्यचशीतभानोर्दशाप्रवेशेहिजलोद्भवार्थः ॥ कलत्रपुत्रादिसुखानि
नूनंशत्रुक्षयोबुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ६१ वर्गोत्तमस्थस्यझषेहिमांशोर्दशाप्रवेशेमहि
षीगजाश्वान् ॥ पुत्रादितोषंपरिपूर्णमुच्चैर्लभेन्मनुष्योहियशोमनोपाम् ६२
दशाप्रवेशेव्ययभावगेदाःपापार्जितद्रव्यसमुद्गमःस्यात् क्षीणेरिपुस्थानगतेहि
महीसम्यक्फलंप्राग्गदिततथैव ६३ नीचस्थितस्याष्टमभावगेदोर्दशाप्रवेशेहि
गदोद्गमःस्यात् चेत्पापयुक्तोनिधनंतदानींजातिच्युतिंवालभतेमनुष्यः ६४ इतिचं
द्रदशाफ० अथभौमदशाफलानि ताराग्रहःस्वोच्चगृहादिसंस्थावक्रास्तमानानुगताय
दिस्युः मिश्रफलंतेनिजपाककालेयच्छन्तिनूनंसुधियाविचिंत्यं ६५ स्यात्पा
केक्षितिनंदनस्यचधनंशस्त्राग्निधात्रीपते भैंषज्याच्चचतुष्पदादपितथानानाविधं
रुद्यमैः पित्तासृक्ज्वरपीडनंक्षितिपतेर्भीतिंचनीतिच्युतिं मूर्च्छादिंचनिजालयेक
लिरितिप्रोक्तंफलंसूरिभिः ६६

पीग्रहकर्केसंयुक्तयीहोवेतव मृत्युकोप्राप्तकर्ताहै और जातिसेभ्रष्टकरदेताहै ६४ इतिचंद्रदशाफलम्
और मंगल कीदशाका फलकहतेहैं भौमादि पंच ताराग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें स्थि
तहोवे और वक्रगती और अस्तंगत वा होवे तब अपनीदशामें भिन्नभिन्न फल करतेहैं निश्चय करके
इसमें चिन्ह बुद्धिमानोंने करणे योग्यहै ६५ और मंगलकी दशामें मनुष्यकोशस्त्रोंसे और राजा
सें और अग्नि विद्यासेंऔर चतुष्पदोंसे और अनेक प्रकारोंसे उद्यमकर्के धनलाभ होताहै और पित्त
खि कीपीडा और राजाकाभय और नीतिसे भ्रष्ट कर्ताहै और मूर्छादि रोगऔर अपनेघरमें कल
ह इतनेया प्रकारोंका फल पंडितोंने कहाहै ६६

॥ और मेषराशिमें मूलत्रिकोणांशोंमें मंगल स्थित होवे। तिसकी दशामें पृथ्वी और पुत्र पौत्र और स्त्रीका सुख होताहै और हठकरणेसें उत्साह करके धनका लाभ होताहै और युद्धमें श्रेष्ट यश होताहै ६७ ॥ और मेषराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकरके मंगल कर्म होतेहैं ॥ और संतानहोताहै और हठ करके और अग्निकरके पीडा और अनेक-विधके शत्रु उत्पन्नहोतेहैं ६८ और वृषराशिमें स्थित भौमकीदशामें मनुष्य हर्षको प्राप्त होताहै-और बहुत बाताकरताहै और गुरु देवताका भक्तहोताहै और परोपकारमें प्रीतिवाला होताहै ६९ और मिथुनराशिके भौमकीदशामें विदेश वासकी इच्छावाला और वायु और पित्तविकारको

मूलत्रिकोणोपगतस्यपाकेक्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥ अर्थोपलब्धिः खलुसाहसेनरणांगणेचारुयशोविशेषात् ॥ ६७ ॥ मेषोपयातस्यच भूसुतस्यस्युः पाककालेकिलमंगलानि ॥ स्यात्संततिः साहसमग्निबाधानाना विधारातिसमुद्भवः स्यात् ॥ ३८ ॥ वृषास्थितस्यावनिनंदनस्यपाक प्रवेशेपुरुषः सहर्षः अनल्पजल्पोगुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ६९ युग्मास्थितोर्वीतनयस्यपाके प्रवासशीलोनिलपित्तकोपः बहुव्ययः स्यात्स्वज नैर्विरोधोनरः कलाज्ञोनितरांविधिज्ञः ७० कर्कस्थभौमस्यभवेद्दशायामुधा नवान्हिप्रभवार्थयुक्तः नरोहिदारासुतदूरवर्त्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्त्तिः ७१ सत्यक्तनीचांशकुजस्यपाकेस्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः चतुष्पदाढ्योबलवानक स्मात्प्रजायतेगुह्यरुजाभिभूतः ॥ ७२

प्राप्तहोताहै और बहुतखर्चको प्राप्तहोताहै और संबंधियों करके विरोधको प्राप्त होताहै और-कलाके जानने वाला और विशेष करके विधानके जाननेवाला होताहै ७० और कर्करा-शिके भौमकीदशामें वन और बागोंसें और अग्निकर्मसें धनलाभको, प्राप्तहोताहै और स्त्रीपुत्रोंसें दूररहिताहै औरक्लेशकरके देहके बलकी हानिको प्राप्तहोताहै ७१ और कर्क राशिके अठाईस, २८ अंशके उपरांत भौमहोवे तब पुरुषप्रसिद्धहोताहै और संपूर्ण, गुणों करके युक्त होतेहैं औरचतु-ष्पदों करके युक्त होताहै और अकस्मात् गुह्यरोगको प्राप्तहोताहै ७२

ओर सिंहराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकर्के बहुत मनुष्योंका स्वामी होताहै और स्त्री पुत्र
दियोंसें वियोगकों प्राप्त होताहै ओर सर्प और अग्निकर्के पीडाकों प्राप्त होताहै ७३ और कन्या
राशिके भौमकी दशामें मनुष्य सदाचारमें तत्पर होताहै और यज्ञकर्ममें प्रीति वाला और स्त्री पुत्र
पृथ्वी धन अन्नके सुखकों प्राप्त होताहै ७४ और तुलाराशिके भौमकी दशामें मनुष्य धन और
स्त्रीके वियोगकों प्राप्त होताहै और चतुष्पदोंसें रहित और कलहके प्रसंगोंसें उत्साहसें रहित होता
है और देहकी व्याकुलताकों प्राप्त होताहै ७५ और वृश्चिक राशिके भौमकी दशामें मनुष्य टापिक
मेंकों कर्त्ताहै और धनसंग्रह करणेमें मनकी प्रवृत्ति वाला होताहै और बहुतयोंके संग द्वेष कर्त्ताहै
और बहुत बाता करणेमें तत्पर होताहै ७६ और धनराशिमें स्थित भौमकी दशामें ब्राह्मण और

सिंहस्थितक्ष्मातनयस्यपाकेनूनंभवेन्नायकतावहूनां ॥ कांतासुताद्यैश्चवियोग
ताच्चवाधातथाहोतिहुताशजाता ७३ कन्यानुयातावनिनंदनस्यपाकेसदाचा
रपरोनरःस्यात् ॥ यज्ञक्रियायामपिसादरश्चदारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्य
७४ तुलागतेलासुतपाककालेस्याद्द्रव्यभार्यावियुतोहिमर्त्यः ॥ चतुष्पदाभा
वकलिप्रसंगैर्हतोत्सवोवैविकलांगयष्टिः ७५ पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्यभौ
मस्यपाकेक्षापकर्मकर्त्ता ॥ स्वसंग्रहेजातमनःप्रवृत्तिर्द्वेषीवहूनामतिजल्पकश्च
७६ धनुर्द्धरस्थस्यधरासुतस्यपाकप्रवेशेद्विजदेवभक्तः ॥ नरोनरेन्द्रात्तमनोरथः
स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च ७७ वक्रस्यनक्रोपगतस्यपाकेराज्योपलब्धिः
स्वकुलानुमानात ॥ युद्धेविवादेविजयोनितांतंसद्रत्नचामीकरवाजिसौख्य ७८
उच्चांशमुक्तस्यमहीसुतस्यपाकेप्रयत्नात्खलुकार्यसिद्धिः ॥ शस्त्राद्भवेन्नृश्वापदतो
ऽपिभीतिःसतापजल्पत्वमहाप्रयासाः ७९ आचारहीनश्चसुतादिचिंतावहुव्य
योद्वेगसमाकुलत्वं ॥ कुंभोपयातस्यचमंगलस्यस्यात्पाककालेफलमेतदेव ८०

होताहै और लडाईकेप्रसंगसेंउत्साहके भंगकोंप्रा
देवताकी भक्ति कर्त्ताहै और राजासें मनोरथकोंप्राप्तहोताहै अपने कुलकेअनुमानसें औ
प्त होताहै ७७ और मकरराशिमें स्थित भौमकी दशामें राज्यलाभहोताहै और घोडयोंका सुख होता
र युद्धमें और विवादमें निरंतर जय होताहै और श्रेष्ठ रत्न और सुवर्ण और घोडयोंका सुख होता
है ७८ और उच्चांशोंसे रहित मकरराशिमें भौमकी दशामें यत्न करणेसे कार्य सिद्धि होताहै और
शस्त्रसें और व्याघ्रसें भय होताहै और संताप और विवाद होताहै और बडा प्रयत्न
होताहै ७९ और कुंभराशिमें स्थित भौमकी दशामें आचारसें रहित और पुत्रादियोंकी चिंता और
बहुत खर्च और उदासीनता होताहै ८०

॥ और मेषराशिमें मूलत्रिकोणांशोंमें, मंगलस्थित होवे। तिसकी दशामें पृथ्वी और पौत्र और स्त्रीका सुख होताहै और हठकरणेसे उत्साह करके धनका लाभ होताहै और धर्म और यश होताहै ६७ ॥ और मेषराशिमें स्थित भौमकी दशामें निश्चयकरके मंगल कर्म होतेहै ॥ और संतानहोतीहै और हठ करके और अग्निकरके पीडा और अनेक प्रकारके शत्रु उत्पन्नहोतेहैं ६८ और वृषराशिमें स्थित भौमकीदशामें मनुष्य हर्षको प्राप्त होताहै और बहुत वार्ताकरताहै और गुरु देवताका भक्तहोताहै और परोपकारमें प्रीतिवाला होताहै ६९ मिथुनराशिके भौमकीदशामें विदेश वासकी इच्छावाला और वायु और पित्तविकारको

त्रिकोणोपगतस्यपाकेक्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥ अर्थोपलब्धिः हसेनरणांगणेचारुयशोविशेषात् ॥ ६७ ॥ मेषोपयातस्यच सुः पाककालेकिलमंगलानि ॥ स्यात्संततिः साहसमग्निबाधानाना सिसमुद्भवः स्यात् ॥ ३८ ॥ वृषास्थितस्यावनिनंदनस्यपाक सहर्षः अनल्पजल्पोगुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ६९ र्वीतनयस्यपाके प्रवासशीलोनिलपित्तकोपः बहुव्ययः स्यात्स्वज कलाज्ञोनितरांविधिज्ञः ७० कर्कस्थभौमस्यभवेद्दशायामुग्या र्थयुक्तः नरोहिदारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्त्तिः ७१ कुजस्यपाकेस्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः चतुष्पदाढ्योबलवानक प्ररुजाभिभूतः ॥ ७२

को प्राप्तहोताहै और संबंधियों करके विरोधको प्राप्त होताहै और विपेश करके विधानके ज्ञाननेवाला होताहै ७० और कर्का- मार्गोसे और अग्निकर्मसे धनलाभको, प्राप्तहोताहै और स्त्रीपुत्रोंसे लको हानिको प्राप्तहोताहै ७१ और कर्क राशिके अठाईस २८ रूपप्रसिद्धहोताहै और संपूर्ण गुणों करके युक्त होतेहै औरचतु- अकस्मात् गुह्यरोगको प्राप्तहो

॥ और मीनराशिके भौमकी दशामें निश्चयकर्के पुत्रादियोंकी चिन्ता और धनका खर्च और रोग और उद्यमकरणेसें लाभ और फोडे और दद्रुकी पीडा और विदेश में वास होताहै ८१ ॥ और वर्गोत्तममें भौम स्थितहोवे तव तिसकीदशामें संग्राममें जय होतीहै और बलकर्के युक्त होताहै और अत्यंतगुणोंकर्के युक्त होताहै और अनेकप्रकारकीवस्तुकालाभहोताहै ८२ ॥ और नीच नवांशमें स्थित अर्थात्कर्कराशिके नवांशमें स्थित भौमकी दशामें वृथा भ्रमण होताहै और चित्तमें विषाद होताहै और प्राप्त होनेवाला जो फलहै सो अत्यंत दूर होताहै और नीच भावको प्राप्त होताहै और अधिकारसें रहित होताहै ८३ और मूलत्रिकोणमें और उच्चमें दशम स्थान स्थित भौमकी दशामें राज्यकी प्राप्ति होतीहै और शत्रुओंसे विजय होतीहै और सवारी वाहन

मीनोपयातावनिनंदनस्यदशाप्रवेशेहिसुतादिचिंता ॥ व्ययामयत्वंचक्रमोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासाः८१ संग्रामसंप्राप्तजयाधिशालीबलान्वितोऽत्यंतगुणाभिरामः वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाकेचनानाविधवस्तुलब्धिः ८२ नीचांशसंस्थस्यकुजस्यपाकेवृथाटनत्वंमनसोविषादःफलोन्मुखंकार्यमतीवदूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् ८३ मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्यकुजस्यकर्माधिगतस्यपाके॥ राज्योपलब्धिर्विजयोरिपुभ्यःसद्वाहनालंकरणानिनूनम् ८४ इतिभौमदशाफलं अथबुधदशाफलानि ॥ विद्याविवेकप्रभुतान्वितःकृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ॥ महोद्यमोदाप्तधनश्चनूनंभवेन्मनुष्यःशशिजस्यपाके ८५ शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलंस्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेषएव ॥ सद्वाद्यगीताभिरुचिर्नवीनसद्भांडभूषागृहनिमित्तत्वम् ८६ कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैःकालक्रमत्वंविनयोपलब्धिः आचार्यविद्वद्गुरुसंमतत्वकलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ८७

और भूषण निश्चयकर्के प्राप्त होतेहै ८४ इतिभौमदशाफलम् ॥ अब बुध दशाकाफल कहतेहैं ॥ बुधकी दशामें विद्या और विवेक और प्रभुताकर्के युक्त होताहै और खेतीकर्ममें और यज्ञविधानमें चित्त वाला होताहै और बडे उद्यममें निश्चयकर्के धनको प्राप्त होताहै ८५ और शिल्पादि कर्मों में कुशलताको प्राप्त होताहै और नित्य प्रति उत्सवको प्राप्त होताहै और ... प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ बाजे और गीत और नवीन पात्र भूषण और घरके सुखको प्राप्त होताहै ८६ और कौतुक और बाता और हास्य और हर्ष कर्के कालव्यतीतहोताहै और नम्रता होतीहै और आचार्य और विद्यावालोंसे और गुरुसे सम्मति होतीहै और स्त्री पुत्रादि सुखकी प्राप्ति होतीहै ८७

। और कफ और वात और पित्तकर्के बडी पीडा होतीहै और धनका संचय नहि हो
और बुधका बलाबल देखकरके बुद्धिमानने बुधकी दशाका शुभाशुभफलका विचार करणा मे
८८ अब विशेषफल कहतेहैं मेष राशिमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य एकस्थानमें स्थितनहि
ाहि और चोरी करणेमे और झूठ बोलनेमें और जूवा खेलनेमे और शठता करणेमें युक्त
है और मित्र भावका त्यागकर्ताहै और धनसें रहित होताहै ८९ और वृष राशिमे स्थित
ो दशामें खर्चकर्ता कर्ताहै और माताको अनिष्ट फलकर्ताहै और स्त्री पुत्र मित्रादिया
चिंताकाप्राप्त होताह और गलकेरोगकर्के युक्त और भयकरके पीडित होताहै ९०

पीडापिगाढाकफवातपित्तैरसंचयोर्थस्यचसौम्यपाके ॥ बलाबलं वध
विचार्यसर्वशुभाशुभत्वसुधियाविचिन्त्यम् ८८ मेषस्थगौतच्युतिसूनुपाकेनैक
त्रसंस्थानकरोनरः स्यात् ॥ स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तोविमुक्तसौजन्यविधिस्तु
ानि स्व ॥ ८९ ॥ वृषाधिरूढस्यजडांगसूनोर्दशाप्रवेशेव्ययकृन्मनुष्य ॥
मातुस्त्वनिष्टश्चकलत्रपुत्रमित्रादिचिंतागलरुग्भयार्त्तः ॥ ९० ॥ द्वन्द्वाधि
संस्थस्यबुधस्यपाकेत्वनेकवार्त्ताबहुजल्पकर्त्ता ॥ द्वारात्मजज्ञातिसुखं प्र
पन्नोनूनजनन्याश्चसुखेनहीनः ९१ कर्काश्रितस्येंदुसुतस्यपाकेविदेशवासा
पन्नोनूनजनन्याश्चसुखेनहीनः ९२
ल्पसुखोविरोधी मित्रैःसुखस्त्वाभ्यकलाजितार्थोऽस्यधनत्यैश्व्यमायुक्त ९२
सिंहस्थितस्येंदुसुतस्यपाकेलेलम्बवैभवमेवधैर्य्यम् स्वमित्रदारात्मजसौख्य
हानि स्यान्मानवानांमतिहीनता च ९३

र मिथुन राशिमें स्थित बुधकी दशामें अनेकवार्ता और बहुत बकवाद कर्ताहै और स्त्री पुत्रा
र जातीका सुख होताहै और निश्चयकर्के माताके सुखकर रहित होताहै ९१ और कर्क राशि
म बुधकी दशामें विदेशमें वास होताहै और सुख थोडा होताहै और विरोध होताहै और मित्र
ार कलासे धनलाभ होताहै और बडे व्यवसायकर्के युक्त होताहै ९२ और सिंहराशिमें युक्त
दशामें ऐश्वर्य और धैर्य चचल होताहै और अपने मित्र और स्त्री पुत्रके सुखकी हानि और बुद्धि
ा हीनताहोतीहै ९३

॥ श्रीर कन्याराशिमें उच्चांशमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य बडे ऐश्वर्यकर्के युक्त श्रीर लिखनेमें श्रीर काव्यकलामें युक्त होताहै श्रीर शत्रुपक्षके जीतनें वाला श्रीर नीतिकर्के युक्त होताहै १४ श्रीर कन्याराशिमें मूलत्रिकोणांशमें स्थित बुधकीदशामें श्रीर विद्यादि गुणोंकर्के पूर्ण होताहै श्रीर विदेश गमनकी इच्छावाला होताहै श्रीर धन कों प्राप्त होताहै श्रीर विधिके जानने वाला होताहै १५ श्रीर कन्याराशिमें उच्च श्रीर त्रिकोणांशोंके उपरांत बुधकी दशामें पशुयोंके सुखकी हानि श्रीर अपने बंधुयोंसें विरोध श्रीर अगोमें कुलताकों प्राप्त होताहै श्रीर लडाईके प्रसंगकर्के हीनताहोतीहै १६ श्रीर तुला राशिके

उच्चाश्रितस्येंदुसुतस्यपाकेस्यान्मानवोवैवहुवैभवाढ्यः ॥ लेखाक्रियाकाव्यकलानुरक्तोजितारिपक्षश्चसुनीतियुक्तः ॥ १४ ॥ मूलत्रिकोणोपगतस्यपाकेविवेकविद्यादिगुणैःप्रपूर्णः ॥ विदेशयानानुरतोनरःस्यात्पराक्रमादाप्तधनोविधिज्ञः ॥ १५ ॥ तुंगत्रिकोणक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्य पाकेपशुसौख्यहानिः स्वबंधुवैरंविकलत्वमंगेकलिप्रसंगेतिविहीनतास्यात् १६ तुलागतस्येंदुसुतस्यपाकेस्यात्क्षीणताढङ्मतिवाग्विलासे शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणंचवाणिज्यतोर्थःपशुपीडनंच १७ पाकेभवेद्वृश्चिकसास्थितस्य मृगांकसूनोर्मनुजोल्पतुष्टः आचारकर्मक्रमणानुरक्तोव्ययेनयुक्तःस्वजनैर्वियुक्तः १८ शरासनाध्यासनतांगतस्यबुधस्यपाकेबहुनायकः स्यात् मंत्रीचनामद्धयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतोमनुष्यः १९ मृगांकसूनोर्हिमृगास्थितस्यपाकेभवेत्क्रूरिकऋणनराणां वक्राटनंवैकपटत्वमुच्चैर्नीचैशचसख्यंमतिहीनताच १०

दशामें नेत्र श्रीर बुद्धि श्रीर वाग्विलासमें क्षीणताहोतीहै श्रीर शिल्पादिकर्ममें अत्यंत निपुणता होतीहै श्रीर व्यापारसें धनलाभ श्रीर पशुयोंकोंपीडाहोतीहै १७ श्रीर वृश्चिक राशिमें स्थित बुधकी दशामें संतोष थोडा होताहै श्रीर श्राचार कर्मके करणेंमें युक्त होताहै श्रीर खर्चकर्के युक्त श्रीर संबंधियोंकर्के वियुक्त होताहै १८ श्रीर धनराशिमें स्थित बुधकी दशामें बहुत जनोंका स्वामी होताहै श्रीर राजाका मंत्री श्रीर दोनामकर्के प्रसिद्ध श्रीर कृषिकर्मसें धनलाभ कर्के युक्त होताहै १९ श्रीर मकरराशिके बुधकी दशामें मनुष्योंकों बहुत ऋण देना होजाताहै श्रीर बहुत भ्रमण श्रीर कपटहोताहै श्रीरनीचोंकर्के मित्रता होतीहै श्रीर बुद्धिहीनहोतीहै १०

र कुंभराशिमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य तेजकर्के हीन और धनकर्के हीन होताहै और मित्रा
दिकों पीडामें पीडित और विदेशगमन और व्यसनकर्के युक्त होताहै १०१ ॥ और मीन
राशिमें नीचांशोंके मध्यमें स्थित बुधकी दशामें मनुष्य विवेक और सत्यकर्के रहितहोताहै औरस्था
नरकों प्राप्त होताहै और उद्यमकरणेमें स्वभाववाला और थोडेलाभवाला और कृशदेहकी प्राप्ति
वाला होताहै १०२ इतिबुधदशाफलं अथगुरुदशाफलानि बृहस्पतिकी दशाके प्रवेशमें राजासें
और वजीरसें मनोरथप्राप्तिवाला होताहै और श्रेष्ठ कर्म और धर्म और शास्त्रके जानने
वालाऔर निरंतरनम्रताकोप्राप्तहोताहै १०३ और यज्ञादिकर्मोंमें अत्यंतआदरवाला और ब्राह्मण
और देवताकी भक्तिमें प्रवृत्तिवाला और बडेधनको प्राप्त और ऐश्वर्ययुक्त और निश्चयकर्के पुत्रादिसु
खों प्राप्त होताहै १०४ और पृथ्वी और वस्त्रादि सुखकालाभ और बलकर्के युक्त और कुलमें प्र

सौम्यस्यकुंभोपगतस्यपाकेविहीनतेजामनुजोतिनिःस्वः मित्रादिपीडापरिपी
डितांत्माविदेशयानव्यसनानुरक्तः १०१ नीचांशसंस्थस्यबुधस्यपाकेविवेकस
त्योपहतोहिमर्त्यः स्थानांतरस्थोव्यवसायशीलःस्यादल्पलाभःकृशकायका
ंतिः १०२ इतिबुधदशाफल अथगुरुदशाफलानि दशाप्रवेशेत्रिदशार्चित
स्यभूपप्रधानात्समनोरथःस्यात् सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ताभवेन्मनुष्यःसततंवि
नीतः १०३ यज्ञादिकर्मण्यतिमादरत्वंभवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ अत्यर्थमर्थो
विभुताविशेषःपुत्रादितोषःपुरुषस्यनून १०४भूम्यंबराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलो
पपन्नःकुलधूर्यताच गतागतागामिविचारणोच्चैःसत्सगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च१०५
दाहादिपीडापिगलेकदाचिद्विरुद्धभावस्थिततोविचिंत्यम् सामान्यमेतत्फलमु
क्तमार्यैर्वक्ष्येधुनायत्प्रतिराशिपूर्वं १०६ दशाप्रवेशेत्रिदशार्चितस्यमेषोपया
तस्यभवेन्नराणां धनंधनेशाद्बहुनायकत्वकलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः १०७ वृषो
पयातस्यचगीष्पतेःस्याद्दशाप्रवेशेपुरुषोतिदुःखी विदेशवासीबहुसाहसश्चावि
त्ताल्पताविततगतोत्सवश्च१०८युग्मोपयातस्यबृहस्पतेश्चदशाप्रवेशेपुरुषोऽ
शुचिःस्यात् मात्राचगोत्रप्रभवैर्विरोधीकलत्रवादातिविषादतप्तः १०९

सिद्धता और भूत भविष्य वर्तमान कालके विचारणेवाला और बडोंकी संगतिवाला और श्रेष्ठबु
द्धि और धैर्यवाला होताहै १०५ और दाहादि पीडा कदाचित् गलेमें होतीहै और स्थानमें
विरोध होनाहै यहफलबृहस्पतिकी दशाकासामान्यवत्कअनुमानसें कहाहै और विशेष प्रत्येकराशि
काफलकहतेहैं १०६ मेषराशिमेंस्थितगुरुकीदशामें धनकी प्राप्ति और बहुतमनुष्योंकीनायकताऔ
र स्त्री पुत्रादि सुखकों प्राप्त होताहै १०७ और वृषराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य दुःख
कों प्राप्त होताहै और विदेशमें वास होताहै और बहुत हठी होताहै और धन थोडा होताहै धनके
खर्चकरणेसेंउत्सवहोताहै १०८ और मिथुन राशिमें स्थितबृहस्पतिकीदशामें मनुष्यअपवित्ररहिताहै
और माताकर्के और सबधियोंसें विरोधरहिताहै और स्त्रीकेवादकर्केअत्यंतखेदकों प्राप्तहोताहै १०९

और कर्कराशिमें उच्चांशमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें निश्चय करके राज्यकी प्राप्ति होती है और विशेष नामांतरको प्राप्त होता है और बड़ोंके मैत्री होती है और बड़ा ऐश्वर्य होता है ११० और उच्चांशोंके उपरांत कर्कराशिके बृहस्पतिकी दशामें माता पिताके दुःखको प्राप्त होता है और पूर्वउत्पन्नकियाहो धन तिसके नाश करके तप्त है और अनेक दुर्व्यसनों करके युक्त होता है १११ और सिंहराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य धनवान् और श्रेष्ठ होता है और राजसे मानको प्राप्त होता है और स्त्री और पुत्रोंसे आनंदकरके हर्षको प्राप्त होता है ११२ और कन्याराशिके बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य राजासे मानको प्राप्त होता है और स्त्रीपुत्रसे सुखको प्राप्त होता है और कदाचित् शूद्रादि नीचज

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले किल राज्यलब्धिः । विशिष्टनाम्नाप्र थितत्वमुच्चैरुच्चैःसखस्त्वं बहुवैभवं च ॥ ११० ॥ वाचांपतेरुच्चसमुत्थितस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तप्तश्च नानाव्यसनाभिभूतः ॥ १११ ॥ सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ॥ नृपात्समानोऽनुमानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥ ११२ ॥ कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपलब्धमानः ॥ कांतासुतावाप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ११३ तुलास्थदंभोलिभृदीज्यपाके विवेकहीनः प्रमितान्नभोक्ता ॥ कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनोऽनुमानवः स्यात् ११४ बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः ॥ प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणी भवेन्नानियमेन हीनः ११५ मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान्मनुष्यः ॥ स्यान्मंडलीको यदि वा प्रधानः पित्रान्वितः स्त्रीवचनानुपक्तः ११६

नों करके कलहको प्राप्त होता है ११३ और तुलाराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें विवेक करके रहित होता है और थोड़ा अन्न भोजन करता है और स्त्री पुत्रों करके शत्रुभाव होता है और उत्साहसे हीन होता है ११४ और वृश्चिक राशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें बुद्धिमान् और सपुत्रसमेत समर्थ होता है और चतुर और पुत्रके उत्साहकरके युक्त होता है और नम्र होता है और ऋणसे रहित होता है और नियमसे रहित होता है, ११५ और मूलत्रिकोणांशगत गुरुकी दशामें बुद्धिकरके युक्त मनुष्य होता है और मंडलका राजा अथवा राजाका मंत्री होता है और पिताकरके युक्त और स्त्रीके वचनमें आसक्त होता है ११६

और धनके वोसे २० अंशसे उपरंतगुरुकीदशामें हषिकर्ममेंऔर यज्ञकर्ममें औरचतुष्पदोंमें मनकी
भृत्ति वाला होताहै ११७ और मकरराशिमें नीचांशगतगुरुकी दशामें परकर्मके करणे वाला और
पेटमें और गुह्यस्थानमेंरोगकर्के युक्त होताहै और धन और सवविषयोंके वियोगको प्राप्त होताहै ११८
और नीचांशोंके उपरंत मकर राशिगत बृहस्पतिकी दशामें नीच जनसे और हषिकर्मसें धनलाभ
होताहै और वृक्षोंसे और दूसरेसें ठगीकरणेंसे क्लेशको प्राप्त होताहै ११९ और कुंभराशिमें स्थित
बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य कलाके जाननेवाला होताहै और प्रसिद्ध विद्यावाला और धनवाला और

नखांशकेभ्यःपरतश्चचारेसंस्थस्यदेवेंद्रगुरोर्दशायां ॥ कृषिक्रियायज्ञच
तुष्पदेषुभवेन्मनुष्यस्यमनःप्रवृत्तिः ॥ ११७ ॥ नीचांशसंस्थस्यमृगा
न्वितस्यगुरोर्दशायांपरकर्मकर्त्ता ॥ मर्त्योभवेज्जाठरगुह्यरोगीस्वार्थवियोगी
धनबांधवैश्च ॥ ११८ ॥ वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्यपाकेनिपादात्क
पितोधनाप्तिः ॥ भूमीरुहेभ्योजनवंचनाद्वाक्लेशोपलब्धिर्नुमानवस्य
॥ ११९ ॥ पाकप्रवेशेकलशस्थितस्यवाचामधीशस्यनरःकलाज्ञ ॥ विद्याप्र
सिद्धार्थमहामतिःस्यात्कांताविलासानुरतोनितांतम् ॥ १२० ॥ अपो
पथातस्यचगीष्पतेःस्याद्दशाप्रवेशेपुरुषोमनस्वी ॥ सन्मानसूनुप्रमदादिसं
पद्राजान्वयोपात्तमहासुखश्च ॥ १२१ ॥ इतिगुरुदशाफलम् ॥ अथशुक्रद
शाफलानि ॥ दैत्यामात्यःस्वीयपाकप्रवेशेयोषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिं नाना
मानंमानवानांप्रकुर्यात्कंदर्पस्याभ्युद्गमात्सौख्यमुच्चैः १२२

बडिबुद्धिवाला होताहै और निरंतर स्त्रीके विलासकर्के युक्त होताहै १२०
और मीन राशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशामें मनुष्य मनस्वी होताहै और श्रेष्ठ मान और पुत्र
और स्त्रीसें लेकर्के सबविषयोंके सुखको प्राप्त होताहै और राजाके कुलसें बडे सुखको प्राप्त होता
है १२१ इतिगुरुदशाफलम् ॥ अथशुक्रदशाफलानि ॥ शुक्र अपनी दशाके समयमें स्त्री
और भूषण और रत्न और वस्त्रोंका लाभदेताहै और अनेक प्रकारका मान करताहै और कामदे
वकी वृद्धि करताहै और बडोंसे सुख प्राप्त करताहै १२२

और गीतमें और नृत्यमें अत्यंत हर्षको प्राप्त होताहै और विद्याअभ्यासमें प्रीति और सुंदरस्वभाव होताहै और बडी बुद्धि करताहै और अन्नदानमें प्रवृत्ति करताहै, और खर्गोदनेमें और वस्तुके बेचनेमें मनुष्य चतुर होताहै १२३ और गौओंसे और वाहनोंसे और पुत्रोंसे और पौत्रोंसे सुख होताहै और पूर्वसंपादित धनकी प्राप्ति होती है और अपने कुलमें लडाई होतीहै घरमें और मार्गस्थानमें लडाई होतीहै १२४ और कफ और वायुकर्के निश्चयकर देह निर्बल होताहै और नीचजनोंसे प्रीति होतीहै और वैर होताहै और मित्रादियों की चिंताकर्के मन परितप्त होताहै और दुष्टजनोंसे मित्रभाव कदाचित् होताहै १२५ इह शुक्रका सामान्य फल बलानुमानकर्के पूर्व मुनियोंने कहाहै अब प्रत्येक राशिगत

गीतेनृत्येत्यंतसंजातहर्षोविद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः बुध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षोमर्त्योविक्रयेवाक्रयेवा १२३ गोवाहनेभ्योननुनंदनेभ्यःसौख्यंभवेन्नंदननंदनेभ्यः पूर्वार्जितस्यद्रविणस्यलब्धिः कलिःकुलेस्याद्वलनात्स्थलाच्च १२४ कफानिलाभ्यांकिलनिर्बलःस्यात्कलेवरंनीचरतिश्चवैरं मित्रादिचिंतापरितप्तमेवचित्तंचसख्यंकुजनैःकदाचित् १२५ सामान्यतःप्रोक्तमिदंसितस्यदशाफलंपूर्वमुनिप्रणीतं अथोच्यतेऽत्रप्रतिराशिजातंफलंप्रयोज्यंबलतारतम्यात् १२६ शुक्रस्यपाकेक्रियसंस्थितस्यस्त्रीवित्तसौख्यक्षयश्चनराणाम् सदाऽटनत्वंव्यसनानिनूनमुद्वेगताचंचलचित्तवृत्तिः १२७ वृषेप्रयातोशनसोदशायांकृपिक्रियासत्यसुसौख्यवृद्धिः शास्त्रेमतिःस्यात्सुतरांविचित्रादानत्वकन्याजननप्रसादाः १२८ ॥ युग्मगामिभृगुजस्यदशायांमानुषोभवतिकाव्यकलाज्ञः हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ॥ १२९ ॥

शुक्रका फल कहतेहैं सोभी बलानुमानकर्के कथन करणे योग्यहै १२६ मेषराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें स्त्री, पुत्र, सुखका नाश होताहै और सर्वदाकाल भ्रमण और दुर्व्यसनोंकी प्राप्ति और उद्वेगता, और चंचलचित्तवृत्तिहोतीहै १२७ और वृषराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें कृषिकर्मकी और सत्य और सुखकी वृद्धि होतीहै और शास्त्रमें बुद्धि होतीहै और दानमें रुचि और कन्याका जन्म और खुसी होतीहै १२८ और मिथुन राशिमें स्थित शुक्रकीदशामें मनुष्यका कला के जाननेवाला होताहै और हासेमें और आश्चर्य कथामें बडी इच्छा होतीहै और विदेशगमनमें चित्तका उत्साह होताहै १२९

और कर्क राशिमें स्थित शुक्र की दशामें मनुष्य अपने कार्यमें चतुर होताहै और स्त्रीकी प्राप्ति
में श्रेष्ठउत्साह होताहै और अनेक प्रकारकेउद्यमकरणेवाला और कृतज्ञहोताहै १३० और
सिंहराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें श्रेष्ठस्त्रीके संबंधसें धन प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ मनकर्के युक्त और
बुद्धि कर्के युक्त और थोडे सुखकर्के युक्त होताहै और गौओंके समूह नाशकों प्राप्त होतेहैं १३१
और कन्या राशिमें स्थित शुक्रकीदशामें पुत्रके सुखकर्के रहित होताहै और उत्साह भंग होताहै
और चंचल स्वभाव होताहै और विदेशमें वासकर्ताहै और अपनी स्त्रीकर्के रहित होताहै १३२
और तुलाराशिके प्रथम नवांशमें स्थित शुक्रकीदशामें राजप्रतापकों प्राप्त और वडेयाईकों प्राप्त
होताहै और नित्य उत्साहका उद्वेग होताहै और स्त्रीपुत्र और धन और शौर्यकोंप्राप्तहोताहै १३३
मूलत्रिकोणमें शुक्र स्थित होवे तिसकी दशामें विशेष मानकों प्राप्त होताहै और कृषि पशु धन धा
न्यादियोंकी प्राप्ति अथवा अपनी जातिसें धनकी प्राप्तिहोतीहै १३४ और वृश्चिक राशिमें स्थित

कर्कोपयातस्यसितस्यपाकेभवेन्मनुष्योनिजकार्यदक्षः भार्यांतरावाप्तिसमुत्सु
कोपिनानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः १३० सिंहेशुक्रदशायांप्रवरस्त्रीसंश्रयाद्धना
निस्युःप्रवरचित्तयुतोधीमानल्पसुखोगोगणानिनश्यंति १३१ कन्याश्रितशुक्रद
शाप्रवर्त्ततेपुत्रसुखहीनः भग्नोत्साहीचपलोविदेशवासीस्वदारसंत्यक्तः १३२
वर्गोत्तमसितपाकेऽस्मिन्नृपचेष्टामहत्वंच ॥ नित्योत्साहोद्वेगंलभतेस्त्रीपुत्रध
नशौर्यम् १३३ मूलत्रिकोणसंस्थस्यभृगोर्विपाकेविशिष्टमानयुतः ॥ कृषि
पशुधनधान्याद्यैःसंपन्नोज्ञातितोधनाप्तिर्वा १३४ अटनोवहुप्रलापीपरकार्यरतो
निमित्तकलहाढ्यःवंहणभागीपुरुषोवृश्चिकसंस्थितभृगोःपाके १३५ चापेशुक्र
दशायांधीरश्शत्रुकुलाधिकोधीमान् काव्यकलास्वतिनिपुणोनृपदायितोदारपुत्र
संपन्नः १३६मकरेशुक्रदशायांश्लेष्मसहिष्णुःसुखीचरिपुहंता ॥ वातश्लेष्मप्रकृ
तिःकुत्सितदारोविगर्हितकुटुंवः १३७ कुंभेशुक्रदशायामुद्वेगीरोगवान्न
यज्ञश्च ॥ परयुवतिगोव्रतघ्नोनीचाचारःसुकर्मरहितश्च १३८

और जानकर्के कलह
शुक्रकी दशामें वहुतभ्रमण और प्रलाप कर्ताहै और परकार्यमें रत होताहै और जानकर्के कलह
करताहै और वडेऋणकर्के युक्त होताहै १३५ और धन राशिमें स्थित शुक्रकी दशामें धीर
होताहै और शत्रुयोंकोवृद्धिवाला और बुद्धिवालाहोताहै और काव्यकलामें अत्यंतचतुर और रा
जाका प्यारा और स्त्री पुत्रोंकर्के संपन्न होताहै १३६ और मकरराशिमें स्थित शुक्रकी दशामें
श्लेष्मकों सहारणे वाला और सुखी और शत्रुयोंके हंत करणेवाला होताहै और वात श्लेष्माकीप्र
कृतिवाला और निंदस्त्री और निंद्य कुटुंब वाला होताहै १३७ और कुंभराशिमें स्थित शुक्रकी
दशामें उद्वेगकर्के औररोगकर्केयुक्त होताहै और नीतिकेजाननेवालाऔर परस्त्री गमनमें रतऔरगौ
और व्रत नष्ट करणे वाला और नीचाचारमें रत और श्रेष्ठ कर्मसें रहित होताहै १३८

और मीनराशिमें स्थित शुक्रकी दशामे वंशके धारणे वाला और ज्ञानी और राजासे धनलाभकों प्राप्त होताहै और कृषिकर्मसे और निधिसे धनलाभकर्के युक्त होताहै और सुंदर देहकर्के युक्त प्रधानताकों प्राप्त होताहै १३९ और उच्चमें स्थित शुक्र द्वादश स्थानमें वा दशम स्थानमें गत होवे और लग्नमें स्थित होवे और पापी ग्रह और शत्रु ग्रहसें रहित होवे तबतिसकी दशामें बहुत रत्नोंकर्के युक्त और बुद्धिकर्के युक्त और विशालनेत्रों वाला और अपने वंशमें राजा होताहै ॥ १४० ॥ इतिशुक्रदशाफलानि ॥ अब शनिकीदशाका फलकहतेहै शनिकीदशामें मनुष्य प्रसिद्ध और बुद्धिवाला और अनेक शास्त्रोंके जाननेवाला होताहै ॥ और ग्राम और, पुरोंकेसमूह का, स्वामी होताहै ॥ और पितासें विधिके जाननेवाला होताहै । १४१ । और हाथीघोडे वाहनादियोंकर्के संपन्न और जातिसेंधनलाभकों प्राप्त

मीनेशुक्रदशायांवंशधरोज्ञानवान्नरेंद्रधनःकृपिनिधिधनलाभयुतःकमनीयवपुः प्रधानतांयाति १३९ उच्चस्थितोभृगुसुतोव्ययकर्मगोवालग्नेपिपापरहितोनतु वैरियुक्तः तस्याभिपाकविषयेबहुरत्नपूर्णोधीमान्विशालनयनोनिजवंशनाथः १४०इतिशुक्रदशाफलानि अथशनिदशाफलानि सौरस्यदशांप्राप्यप्रथितो धीमानैनेकशास्त्रज्ञः ॥ वृंदग्रामपुराणांनेतापितृतोविधिज्ञश्च १४१ गज तुरगवाहनाद्यैःसंपन्नोज्ञातितोधनप्राप्तिः ॥ द्विजदेवपूजितस्वात्सुरागभवना श्रितोल्पसंतुष्टः१४२ निद्रालस्यश्रमोवास्वजनद्वेष्योजरांगनासक्तःधर्मप्रियोवि नीतोदेवायतनक्रियार्चनाभिरतः १४३ वातकफाद्यैःपीडाविकलांगोजायते कृशांगोवा सामान्यमेतदुक्तंराशिंप्रत्येकमंशकाद्वक्ष्ये१४४ मंददशायांमेषेप्रवास निरतःस्वमंत्रनिरतश्च ॥ पामादिचर्मरोगीमायावीमातृबंधुरहितश्च १४५

होताहै और ब्राह्मण और देवताके पूजनसें श्रेष्ट घरके सुखकर्के युक्त होताहै और थोडेसंतोषकों प्राप्त होताहै १४२ और निद्रा और आलस्य और श्रम कर्के युक्त होताहै और नेमित्रोंसे द्वेष कर्ताहै और वृद्धस्त्रीमें रत होताहै और धर्ममें प्रीतिवाला और नम्र और देवताके घर बनानेमें रत होताहै १४३ और वातकफादि रोगकर्के पीडित होताहै और व्याकुल वा कृश अंगोंकर्के युक्त होताहै यह सामान्य शुक्रका फल बलके अनुमानसें कहाहै और प्रत्येक राशि और नवांशका फल कहतेहैं १४४ और मेषराशिमें स्थित शनिकी दशामें विदेशमें रतहोताहै और अपने मंत्रमें रत होताहै और त्वचामें कंडूरोगादियों कों प्राप्तहोताहै और मायाके जाननेवाला और माता और बंधुओंसे रहित होताहै १४५

॥ और नीचांशके उपरंत शनिकी दशामें धान्यज धर्मकी प्राप्ति होतीहै और उबदेशसें गिरणेसें अंग क्लेश होताहै ॥ और वृद्धस्त्रीकी प्राप्ति होतीहै और उत्साहकर्के रहित होताहै ॥ १४६ ॥ और वृषराशिमें स्थित शनिकीदशामें विशेष नामांतरकों प्राप्तहोताहै और बडीबुद्धि वाला होताहै और राजावा राजाकेतुल्यहोताहै और श्रद्धा औरधर्ममें श्र म करणे वाला और धर्ममें प्रीति वाला होताहै १४७ और मिथुन राशिके शनिकी दशामें क्ष मकर्केहीन होताहै और वृद्ध स्त्रीमेंरत होताहै और स्त्रीसें और चोरसें धनहानिकों प्राप्त होताहै और परकार्यमें रत होताहै और युद्धमें अत्यत भयकों प्राप्त होताहै १४८ और कर्कराशिमें स्थि त शनिकी दशामें पुत्र और स्त्री और मित्रोंकर्के मनचंचल होताहै और कर्णोंमें और नेत्रोंमें पी

धान्यजधर्मोवाप्तिर्नीचाद्यष्टस्यसूर्यपुत्रस्य पतनांगक्लेशयुतोजरांगनाप्तिर्निरुत्साहो
१४६वृषभेसौरिदशायांविशिष्टनामान्वितोतिमेधावी राजाराजसमोवाश्रद्धासुकृत
श्रमोतिधर्मरतिः१४७मिथुनेक्षमाविहीनोमंददशायांजरांगनाभिरतः स्त्रीचोर
तोर्थहानिःपरकार्य्यरतोरणेतिभीतश्च १४८ कर्कस्थितार्कात्मजपाककालेलो
लंमनःपुत्रकलत्रमित्रैः श्रोत्रेचनेत्रेपरिपीडनंस्यात्कलेवरंनिर्बलतांप्रयाति१४९
पंचाननस्थस्यशनेर्दशायांबाधाभवेद्वैविविधानराणां दारात्मजाद्यैःकलहप्रसंग
स्तुरंगगोदासजनेपुसौख्यम् १५० कन्योपयातस्यशनेर्दशायांभवेत्क्रमेणद्र
विणोपलब्धिः ॥ जलाच्चभूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापिमहाप्रमोदः १५१
कालेदशायांनलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः गजाश्वहेमांबरर
त्नपूर्णाभवेन्नराणांकरुणाधिकत्वम् १५२ सरीसृपस्थस्यशनैश्वरस्यपाकेन
रः साहसकर्मयुक्तः वृथाटनोवैकृपणोऽनृतश्चनीचानुरक्तश्चदयाविहीनः१५३

डित होताहै और देह निर्बलताकों प्राप्त होताहै १४९ और सिंहराशिमें स्थित शनिकी दशामें म नुष्योंकों अनेक प्रकारकीपीडा होतीहै और स्त्रीपुत्रादियोंकर्केलडाईहोतीहै और घोडे और गौओ और चाकरोंसे दुःख होताहै १५० और कन्याराशिमें स्थित शनिकीदशामें क्रमकर्के धनका ला भ होताहै और जलके प्रसंगसें और वृक्षोंसें और उच्चस्थानसें बडा आनंद होताहै १५१ और तुला राशिमें स्थित शनिकी दशामें श्रेष्ट राज्यलक्ष्मी और हाथी घोडे स्वर्णवस्त्ररत्नोंकर्के पूर्ण प्राप्तहोतीहै और बडीदयाकर्केयुक्तहोताहै ॥ १५२ और वृश्चिक राशिमें स्थित शनिकी दशामें मनुष्य हठके करणे वाला और वृथा भ्रमण करणे वाला और कृपण और झूठ बोलनेवा ला होताहै और नीचकर्ममें रत और दयाकर्के रहित होताहै १५३

और धनराशिमेंस्थितशनिकीदशामेंमनुष्यराजाकावजीरहोताहैऔरसंग्राममेंधैर्यवालाऔरचतुष्पदोंकर्के युक्तहोताहैऔरस्त्रीपुत्रकेआनंदकर्केयुक्तहोताहै १५४ औ॰मकरराशिमें स्थितशनिकीदशामेंमनुष्योंको बडे श्रमकर्के धन उत्पन्नहोताहे और नपुंसक और स्त्रीजनोंकी सेवा करणे वाला होताहै औरवि श्वासघात कर्के धनका नाश होताहे १५५ और कुंभराशिमें स्थित शनिकी दशामें निश्चयकर्के सु-खहोतेहे और बडी प्रतिष्टा होतीहे और बडयों कर्के कुलमें श्रेष्ठता प्राप्त होतीहै और कृषिकर्मसें लाभ और पुत्रधनादियोंका लाभहोताहै १५६ और मीनराशिमें स्थित शनिकी दशामें अनेक प्रकारके ग्राम औरपुरोंसे और धनसें औरस्त्रीयोंसें सुखोंऔर उत्साहसें रहित होताहै १५७ इतिश-

धनुर्द्धरस्थस्यशनैश्चरस्यपाकेनरः स्यात्सचिवोनृपाणाम् ॥ संग्रामधीरश्चतुरंघ्रियुक्तः कांतासुतानंदविनोदयुक्तः १५४ शनेर्दशायांमकराश्रितस्यबहुश्रमोत्पन्नधनंनराणां नपुंसकस्त्रीजनसेवकत्वविश्वासघातेनधनक्षितिश्च १५५ शनेर्दशायांकलशाश्रितस्यसुखानिनूनंमहतीप्रतिष्ठा श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुलेनरस्यकृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः १५६ भवेद्दशायांननुभानुसूनोर्मीनोपयातस्यचमानवस्य नानापुरग्रामधनांगनाभ्यः सुखंतथोत्साहविहीनताच १५७ ॥ इतिशनिदशाफलानि ॥ अथलग्नदशाफलानि दशाहकाणैश्चतनोःक्रमेणस्यादुत्तमामध्यमताऽधमाच स्थिरेचकष्टाशुभदाचमध्यामिश्रेऽधमामध्यतमोत्तमाच १ शुभाणिमध्यानिचनिंदितानिफलानिलग्नेशदशार्दितानि तान्येवकल्प्यानिसुधीभिरत्रबलानुमानात्तनुनायकस्य २ संशालतेयःकिलदिग्बलेनखेटः स्वकार्यपुरुपचनीत्वा महाप्रतिष्ठांकुरुतेदशायांनानाधनाभ्यागमनानिनूनम् ३

निदशाफलानि ॥ अथलग्नदशाफलानि ॥ और लग्नकी दशा द्रेष्काणोंकर्के श्रेष्ठ मध्यम और निंद्य होतीहै स्थिरलग्नमें पूर्वद्रेष्काण होवे तब श्रेष्ठ और मध्यद्रेष्काणमें मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें नेष्ट होतीहै और द्विस्वभाव लग्नमें प्रथमद्रेष्काणकी नेष्ट और मध्यद्रेष्काणकी श्रेष्ठ और तीसरेद्रेष्काणकी मध्यम होतीहै और चर लग्नमें प्रथमद्रेष्काणमें नेष्ट और मध्यमें मध्यम और तीसरेमें श्रेष्ट दशाहोतीहै १ और तीन प्रकारकी लग्नकी दशा जो कहिहै तिसका फल लग्नेशके बलानुमान कर्के कहे २ और जो ग्रह दिग्बलकर्के युक्त होवे सो ग्रह अपनी दशाकों लेजायकर्के बडी प्रतिष्टाकों देताहै और अनेक प्रकारका धन प्राप्त कर्ताहै ३

ओर वक्रगति ग्रहकी दशामें स्थान ओर धन ओर सुख अत्यंत चंचल होतेहैं ओर विदेश गमन
में मन इच्छा कर्त्ताहै ओर लोकमें बडी हानिकों प्राप्त होताहै ४ ओर मार्ग गति ग्रहकी दशामें
सन्मान ओर सुख ओर धन ओर यशकी वृद्धिहोताहै ओर जो ग्रह जन्मलग्नसें छटे ओर अष्टम
ओर द्वादश स्थानसें रहित होवे तिसकी दशामें इच्छा फल प्राप्त होताहै ५ ओर जो ग्रह
नीचराशिमें वा शत्रुकी राशिमें वा वक्रगति होवे तिसकी दशामें मनुष्य नीच कर्ममें रत होताहै
ओर विदेसमें वास कर्त्ताहै ओर अपने संबंधियोंसें रहित होताहै ओर हठ करणेमें युक्तहोताहै ६ ॥
ओर राहुकर्के युक्त जो ग्रह तिसकी दशामें विशेषकर्के रिष्ट होताहै ओर दशाके अंतभागमें निश्च-
यकर्के दुःख ओर हानिः ओर विदेशगमनहोताहै ७ ओर जन्मराशि ओर जन्मलग्नके स्वामीके

विलोमगामिग्रहपाककालेस्थानार्थसौख्यान्यतिचंचलानि प्रवासशीलत्वमतौ
यचेतोलोकेमहत्वापचयत्वमेव ४ ऋजुप्रयातद्युचरस्यपाकेसन्मानसौख्या-
र्थयशःप्रवृद्धिः षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्यग्रहस्यपाकेभिमतार्थसिद्धिः ॥ ५ ॥
नीचारिभस्थस्यचवक्रिणोवापाकेकुकर्माभिरतिर्मनुष्यः विदेशवासीनिजबंधु-
वर्गैस्त्यक्तोभवेदाग्रहताभियुक्तः ६ स्वर्भानुयुक्तस्यचखेचरस्यदशावशिष्ट्य
तिरिष्टदास्यात् पाकावसानेननुमानवानांदुःखानिहानिश्चविदेशयानम् ७
जननराशिजनुस्तनुनाथयोःरिपुदशासमयेमतिविभ्रमः भयमरेरपिराज्यपरि
च्युतिःखलजनैःकलहोबलहीनता ८ लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्यभवेद्दशाया
मतिपीडनंहि दशावसानेपिचमानवानांभवेत्समाप्तिःखलुजीवितस्य ॥ ९ ॥
क्रूरास्यखेटस्यदशांतरालेक्रूरग्रहस्यांतरजादशाचेत् शत्रूद्गमोर्थस्यपरिक्षयः
स्यादायुःक्षयेवेतिवदेन्नराणाम् १० दशाप्रवेशेपित्वगाः स्वलग्नाःकार्याःस्फुटा
स्तत्रदशापतिश्चेत् लग्न १ त्रि ३ खा १० या ११ रि ६ गतोथलग्नेतन्मि
त्रवर्गैः शुभदादशासा ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शत्रुभावकी दशामें बुद्धिमें भ्रम होताहै ओर शत्रुकाभय ओर राज्यकानाश ओर दुष्टजनोंसें लडाई
ओर बलकी हीनता होतीहै ८ ओर जो ग्रह लग्नेशसें अष्टम भावमें स्थित होवे तिसकी दशामें
निश्चय कर्के पीडाहोतीहै ओर तिसकी दशाके अंतमें मृत्यु होताहै ९ ओर क्रूर ग्रहकी
दशामें क्रूर ग्रहकी अंतर्दशा जिसकालमें होवे तब शत्रुओंका उदय ओर धनका नाश ओर आयु
का क्षय होताहै १० ओर कहतेहैं दशा प्रवेश कालमें स्पष्टकर्के लग्न ओर दशास्वामी
ओर तिसमें दशाका स्वामी लग्नमें १ ओर तीसरे ३ ओरदशमें १० ओर ग्यारहमें ११ ओरछटे
६ स्थानमें स्थितहोवे ओर तिसकेमित्रवर्गलग्नमें स्थितहोवे तब सो दशाशुभ फलकोदेतीहै ११

और जिस ग्रहका इष्ट फल अधिक होवे तिसकी दशा शुभ होतीहै और जिसग्रह का कष्ट फल अधिक होवे तिसकी दशा दुष्ट होतीहै और जिस ग्रहके इष्ट कष्ट तुल्य होवे तिस की दशामें शुभपाप मिश्रित फल होताहै १२ और दशाप्रवेशकालमें यो ग्रह अपने उच्चमें और मूलत्रिकोणमें वा स्वक्षेत्रमें स्थित होवे और शुभ और मित्रके वर्गमें स्थित होवे और शुभ मित्रों करके देखाहोवे सो रिष्टभंग कर्ताहै १३ इतिमहादशाफलानि

अब अंतर्दशाका फल कहतेहे अब दशाफल कहनेसे उपरत सूक्ष्म फल ज्ञानके वास्ते ग्रहोंकी अंतर्दशा कहतेहे और जिस प्रकारकके विद्वानोने विचारकके शुभाशुभ फलकी कल्पना करीहै तैसेंहि इसग्रथमें कहतेहे १ और यद एकराशिमें स्थित पापीग्रहकी दशामें पापग्रहकी अंतर्दशा होवे तब सर्वदा काल रोग और विवाद और शत्रुका और राजाका भय और दीनता

अथप्रदिष्टेष्टफलाधिकस्यदुष्टादशाकष्टफलाधिकस्य यस्येष्टकष्टेभवत समाने फलविमिश्रकिलतस्यपाके १२ दशाप्रवेशेखचर स्वतुंगेमूलत्रिकोणेयदिवास्व गेहे शुभेष्टवर्गेस्थितिकृच्छुभेष्टैर्दृष्टोदगारिष्टहरोभवेत्स १३ इतिमहादशाफलानि अथान्तर्दशाफलम् अथप्रवक्ष्येखलुखेचराणामन्तर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यफलसुधीभिर्विधिनोदितेन १ अन्तर्दशाचेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगा नांकुरुतेसदैव ॥ गदविवादरिपुभूपभीतिदैन्यधनस्यापचयाविशेषात् २ अंत र्दशायामदनस्थितस्यखेचारिण स्यान्मरणंगृहिण्या ॥ रोग.कुभोग कलहादि भंग संगश्चनिचैर्हरणंधनस्य ३ खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्दशासंजनयेद रिष्ट॥ धनस्यनाशव्यसनानिपुंसांदधीपगस्यापिगदप्रवृद्धिम् ४ त्रिकोणमे पूरणभेश्रगानामन्तर्दशासौख्यमतीवनित्य ॥ करोतिलाभंविविधनराणामा रोग्यतांमानसमुन्नतिंच ५अथसूर्यान्तर्दशाफलानि करोतिचंद्रस्तरणेर्दशायांसु वर्णभूषांवरविद्रुमाप्ति ॥ समुन्नतिमानसुखाभिवृद्धिविरोधिवर्गापचयंजयंच १

और विशेष करकेधनकानाश होताहै २ और पापी ग्रहकी दशामें सप्तमभावमें स्थित पापग्रहकी यद अंतर्दशाहोवेतब स्त्रीका मरणहोताहै और रोग और नियभोग और कलहादिभंग और नीचों का संग औरधनकानाशहोताहै ३ और अष्टम भावगत ग्रहोंकी अंतदशामे रिष्ट होताहै और धनकानाश औरदुर्व्यसनहोतेहै और षष्टेशकी अंतर्दशामे रोगकी वृद्धी होतीहै ॥ ४ और नवम और पंचम और दशमस्थानोंमे स्थितग्रहोंकी अंतर्दशामे नित्यप्रतिसुखहोताहै और अनेकप्रकार का लाभ और आरोग्यता और खुसी होताहै ॥ ५ अबसूर्यदशामे अंतर्दशाकाफलकह तेहे ॥ सूर्यकी दशामें चंद्रमा होवेतब सुवर्ण और भूषण और वस्त्र औरमुंगेकी प्राप्तिकर्ताहै और श्रेष्ट उच्चाधिकारकी प्राप्ति और मानसुखकीवृद्धि और शत्रुओंकाक्षय कर्ताहै १

श्रौरकईक ऋषि श्रयसे कहतेहैं - सूर्यकी दशामें जब चंद्रमाकी अन्तर्दशा होतीहै तबबडालाभ होताहै श्रोर जलसें प्रमादश्रौरसंग्रहणीश्रौरपाडुरोगकीप्राप्ति होतीहै इह फल अतिक्षीणचंद्रमा में जानना२श्रोरसूर्यकीदशामें भोमकीश्रंतर्दशाहोवेतवश्रेष्टमूंगे श्रोरसुवर्ण श्रौर वस्त्र श्रौर श्रनेकमंग ल श्रौर विजयको देताहै श्रोर निश्चयकर्के राजाकेकुलसें मान होताहै ३ श्रौर सूर्यकी दशामें बुधकी अतर्दशा होवे तव खुजक श्रौर दद्रु विकार कडूकर्के देहमें पीडा होतीहै श्रौर धनका खर्च श्रौर उत्सवका नाश होताहै ४ श्रौर सूर्यकी दशामें वृहस्पतिकी अतर्दशा होवे तव श्रेष्टवस्त्र और धान्यादियोंके संग्रहकरणेमें इच्छा होतीहै श्रौर देवता श्रौर ब्राह्मणोंके पूजनमें निर्मल बुद्धि होतीहै श्रौर भूषणोंकी श्रौर श्रेष्ट मानकी श्रौर धनकी प्राप्ति निश्चयकर्के होतीहै ॥ ५ ॥

पंकेरुहेशस्यचरन्विपाकेकुर्यान्मृगांकोयदिलाभमुच्चैः ॥ प्रमादमब्धोग्रहणीं चपांडुकेपांचिद्रतन्मतमत्रचोक्तम् २ सत्प्रवालकलधौतसचैलंमंगलानिविजयंच विधत्ते मंगलःकमलिनीशदशायांभूमिपालकुलतःकिलमानम् ३ विचर्चि कादद्रुविकारपूर्वैःपामामयैर्देहविपीडनंस्यात् धनव्ययश्चापिहतोत्सवश्चवि धोःसुतेभानुदशांप्रयाते ४ सद्वस्त्रधान्यादिपुसंग्रहेच्छास्वच्छामतिर्विप्रसुरार्च नेषु ॥ भूपातिसन्मानधनानिनूनंभानोर्दशायांचरतींद्रवंद्ये ॥ ५ ॥ विदेशयानकलहाकुलत्वंशूलंचमौलिस्थलकर्णपीडां ॥ गाढज्वरंचापिकरो तिनित्यंदैत्यार्चितोभानुदशांप्रयातः ६ नीचारिभूमीपतिभीतिरत्र कडूयना द्यामयसंभवःस्यात् ॥ मित्राण्यमित्राणिभवंतिनूनंशनैश्चरेभानुदशांतरस्थे ७ इतिसूर्यांतर्दशाफलं ॥ अथचंद्रांतर्दशाफलानि ॥ नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिप्रकृतेर्विकारं चौराग्निवैरिप्रभवांचभीतिंशीतांशुपाकेकुरुतेदिनेश १

श्रौर सूर्यकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशामें विदेश गमन होताहै श्रौर कलह कर्केव्याकुलता होतीहै श्रौर शूल श्रौर शिरपीडा श्रौर कर्ण पीडा होतीहै श्रौर बडाज्वर होताहै ६ श्रौर सूर्यकी दशा में शनिकी अंतर्दशा होवे तब नीचजनसें श्रौर शत्रुसें श्रौर राजासेंराजा भय होताहै श्रौर दद्रुसे लैकर्के रोगकी वृद्धि होतीहै श्रौर निश्चयकर्के मित्र जोहैं सो शत्रुकी न्याई होजातेहैं ७ इतिसूर्यांतर्दशाफलं अथचंद्रांतर्दशाफलानि चद्रमाकी दशामें सूर्यकी अतर्दशा होवे तब राजासें धनकालाभ श्रौर गौरवता होतीहै श्रौर क्षयरोगकर्के पीडा श्रौर चित्तभ्रम होताहै श्रौर चौर श्रौर अग्नि श्रौर शत्रुसें भय होताहै १

और चंद्रमाकीदशामें मंगलकीअंतर्दशाहोवेतब संचितधनकानाश और रक्तपित्तादिदोषहोतेहैं और क्रोधकीउत्पत्ति होतीहै और स्थानसें भ्रष्टताहोतीहै और मातापित्रादियोंकेवर्गकर्के पीडाहोतीहै २ और चंद्रमाकी दशामेंबुधकीअंतर्दशाहोवेतब उदारताकर्केप्रसिद्धहोताहैऔर नामांतरकेलाभकों प्राप्तहोताहै और महिषी और गौयां औरजिमी और हाथी और घोडयोंकीवृद्धि होतीहै और विद्या और धन और ऐश्वर्यकी वृद्धि होतीहै ३ और चंद्रमाकी दशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशा होवे तब विशेषधर्म और धनधान्य और भोगोंकी वृद्धि और हाथि घोडयोंकी संपदा होतीहै और पुत्रका उत्सव होताहै ४ और चंद्रमाकी दशामेंशुक्रकीअंतर्दशा होवे तब अनेक स्त्रीयोंकर्के लीलाविलास कर्त्ताहै और जलसें उत्पन्न वस्तूका और धान्य धनका सुख होताहै और मोतीयोंसें लेकर्के

कोशभ्रंशरक्तपित्तादिदोषरोषोत्पत्तिंस्थानतःप्रच्युतिंच ॥ कुर्यात्पीडांमातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥ २ ॥ उदारनामांतरलब्धिरुवैर्लुलायगोभूमिगजाश्ववृद्धिं ॥ विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वंकुर्याद्बुधश्चंद्रदशांतराले ३ विशिष्टधर्मोधनधान्यभोगानदाभिवृद्धिर्गजवाजिसंपत् ॥ पुत्रोत्सवश्चापिभवेन्नराणांगुरौसुराणांशशिपाकसंस्थे ४ नानांगनाकेलिविलासशीलोजलोद्भवैर्धान्यधनैश्चयुक्तः ॥ मुक्ताफलाद्याभरणैरपिस्यादिंदोर्दशायांहिसितेमनुष्यः ५ नरेंद्रचौराहितवन्हिभीतिंकलत्रपुत्रासुखरुक्प्रवृद्धिम् । करोतिनानाव्यसनानिपुंसांशनिर्निशानाथदशांप्रविष्टः ६ ॥ इतिचंद्रांतर्दशाफलं ॥ अथभौमांतर्दशाफलानि ॥ नानाधनाभ्यागमनानितूनंसन्मानवृद्धिंमनुजाधिराजात् ॥ चंडत्वमोजोविजयंविदध्यात्भानुर्धरासुनुदशांतरस्थः १ दुर्गशैलवनसंचलनेच्छोबंधुतातजनितातिविरोधः ॥ मानवोभवति भूतनयांतभास्करेचरतिकोपिवदति २

अनेकभूषणोंकों प्राप्त होताहै ५ और चंद्रमाकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तब राजा और चोर और शत्रु और अग्निका भय होताहै और स्त्री पुत्रका दुःख और रोगकर्के युक्त होताहै और मनुष्योंको अनेक प्रकारके दुर्व्यसन होतेहैं ६ इतिचंद्रांतर्दशाफलं ॥ अब मंगलकी अंतर्दशाका फल कहतेहैं और मंगलकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब अनेक प्रकारका धन मिलताहै और निश्चयकर्केराजासेंमानहोताहै औरप्रचंडबलऔरजयहोतीहै १ और मंगलकीदशामें सूर्यकीअंतर्दशाकाफल कईक ऋषि ऐसें कहतेहैं किले कोट वनमें जानेकी इच्छा वाला होताहै और मातासें और पितासें अत्यंत विरोध होताहै २

और मंगलकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशाहोवे तब नित्योत्सव और आनंद और बडे अधिकार की प्राप्ति और मोति और धन और भूषणोंकी प्राप्ति होतीहै और मित्रोंकी प्राप्ति और श्लेष्मकाविकार होताहै ३ और मंगलकी दशामें बुधकी अंतर्दशाहोवे तब शत्रुयोंसे और रोगसें और राजासें औरचोरोंसेपीडाहोतीहैऔरपुत्रस्त्रीकाऔरमित्रकावियोगहोताहैऔर उत्सवथोडा होताहै४और मंगलकीदशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशाहोवेतवकलानिअधिककर्त्ताहैओर राजासेंधनकीप्राप्तिकर्त्ताहै और स्त्री और मित्र और पुत्र और वाहनका सुख कर्त्ताहै और श्रेष्ठ धर्म कर्ममें रत कर्त्ताहै ५ और मंगलकीदशामेंशुक्रकी अंतर्दशा होवे तव विदेशगमनादि और व्यसन और रोगादियोंकरकें पीडितहोताहै और कुटुंब वादकरकें और धनके खर्चकरकें पीडित होताहै और अनेक प्रकारके प्रवासों करकें-

नित्योत्सवानंदमहापदानिमुक्ताफलद्रव्यविभूषणानिमित्रोद्गमश्लेष्मविकारमिंदुर्भौमस्यपाकेविचरन्करोति ३ अरातिभूपामयतस्करेभ्यःपीडांवियोगंसुतदारमित्रैः स्वल्पोत्सवंयच्छतिसोमसूनुर्भौमस्यपाकेयदिसंप्रविष्टः ४ कलाधिकत्वन्नृपतेर्धनाप्तिंकलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यं सत्कर्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशांप्रविष्टः ५ विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुंववादद्रविणव्ययैश्च नानाप्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमांतरेदानवराजपूज्ये ६ कलत्रपुत्रात्मजनेषुवाधाप्राणप्रयाणांतशरीरपीडा स्वस्थानयानंयदिभानुसूनोरंतर्दशाभौमदशांतराले ७ इतिभौमांतर्दशाफलं अथबुधांतर्दशाफलं तुरगहेम्नांचसुविद्रुमाणांसदंवराणामपिवारणानां भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानांसौम्यस्यपाकेतपनेप्रपन्ने १ स्वस्थानतः सञ्चलनंकदाचिद्रुदप्रकोपात्मजजन्मवित्तम् धर्मप्रवृत्तिंकुरुतेज्ञपाकेपंकेरुहेशः प्रवदंतिकेचित् २

चित्त वृत्ति चंचल होतीहै ६ और भौमकी दशामें शनिकीअंतर्दशा होवे तव स्त्री और पुत्र और संबंधिजनोंमें पीडा होतीहै और देहमें प्राणांत पीडा होतीहै और अपने स्थानसें गमन होताहै ७ इतिभौमांतर्दशाफलं अब बुधकी अंतर्दशाका फलकहतेहैं बुधकी दशामें सूर्यकीअंतर्दशा होवे तब घोडा और सुवर्ण और श्रेष्ठ मुंगे और श्रेष्ठ वस्त्र और हाथियोंकी प्राप्तिहोतीहै और बडा ऐश्वर्य होताहै १ और कईक ऋषि बुधकी दशामें सूर्यांतर्दशाकाफल इसप्रकारकरकें कहतेहैं अपने स्थानसें चलायमान कदाचित् होताहै, रोग होताहै और पुत्रजन्मताहै और धनकी प्राप्तिहोतीहै और धर्ममें प्रवृत्तिहोतीहै २

और बुधकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशा होवे तब खुर्कसेलेकर्के अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति और मृत होयकर्के बालककन्याजन्मतेहे और विवादहोताहै और पित्तका कोप और वाहनकी पीडा होतीहै ३ और बुधकी दशामें भौमकी अंतर्दशाहोवे तब गुदामेंपीडा और धनके खर्चकर्के युक्त होताहै और स्त्रीपुत्रसे प्रीतिकर्के रहित चित्त और धर्मका लोप होताहै ४ और बुधकी दशामें बृहस्पतिकी अंतर्दशा होवे तब स्त्रीपुत्रके आनंदकर्के युक्त और शत्रुयोंके हतकरणेवाला और श्रेष्ठकर्म करणे वाला और सुंदरबुद्धिवाला और नम्र और म त्रिहोताहै और पितामाताके दुःखकोप्राप्तहोताहै ५ और बुधकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब पंडित और साधुजन और अभ्यागतोंके पूजनेंमे आदर कर्ताहै और पुण्य कर्ममें मनकी उत्कंठा होतीहै और अनेक प्रकारके वस्त्र और भूषणों

पामादिनानामयसंभवःस्यान्मृतप्रजःसंजननविवादः पित्तप्रकोपःखलुयानपीडा यदाजडांशुर्ज्ञदशांप्रपन्नः ३ गुह्यामयार्थव्ययसंयुतःस्यात्कांतासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः विलुप्तधर्मोमनुजः प्रविष्टेबुधस्यपाकेवसुधातनूजे ४ कांतासुतानंदयुतोरिहंता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः मंत्रीनरःस्यात्पितृमातृदुःखीबृहस्पतौसौम्यदशांप्रयाते ५ विबुधसाधुजनातिथिसादरःसुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरोबुधदशांतरगेसतिभार्गवे६ नानाप्रयासैश्चनिरोधनैर्वाशिरोरुजावापिशरीरभाजां करोतिबाधांविबुधांतरालेसितःप्रयातःप्रवदंतिकेचित् ७ सत्कर्मधर्मद्रविणानुकंपाकंदर्पहीनोमनुजःप्रलापी वातामयार्त्तोऽतिमृदुस्वभावःसौम्यांतरालेनलिनीशसूनौ ८ ॥ इतिबुधांतर्दशाफ. ॥ अथगुर्वंतर्दशाफलानि सुतार्थनानाविधवस्तुलाभविशिष्टनामांतरमाधिपत्य माननरेशात्कुरुतेदिनेशोवाचामधीशस्यदशांप्रपन्नः १

कों प्राप्त होताहै ६ और कईक आचार्य ऐसा कहतेहै बुधमे शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब अनेक प्रयत्नों कर्के और निरोधकर्के शिरमें रोग कर्केपीडा होतीहै देहधारियोंकों ७ और बुधकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तब मनुष्य श्रेष्ट कर्मसें और धर्मसें और धनसें और दयासें कामचेष्टासें रहित होताहै और प्रलाप कर्ताहै और वायुरोगकर्के पीडित होताहै और कोमल स्वभाववाला होताहै ८ ॥ इतिबुधांतर्दशाफलं अब बृहस्पतिकी अंतर्दशाका फल कहतेहैं बृहस्पतिकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब पुत्र धन अनेक वस्तुका लाभ होताहै और विशेष नामांतरकों प्राप्त और स्वामीभावकों प्राप्त होताहै और राजासें मानप्राप्त होताहै १

और गुरुकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशाहोवे तव अनेकस्त्रीयोंकी क्रीडामें चित्त होताहै और लक्ष्मी
करके और राजाके चिन्होंकरके विराजमान होताहै और विद्याकरके और श्रेष्ठ धनकरके युक्त होताहै
२ और बृहस्पतिकी दशामेंमंगलकी अंतर्दशा होवे तव युद्धमें यशको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठ भोग
और सुखकरके युक्त होताहै और विशेषकरके प्रतापी होताहै ३ और कईक आचार्य कहतेहै गुरुके
अंतर भौमकीदशामें शिरमें और गुदामें कदाचिपीडतहोताहै और शत्रुका भय होताहै और बलका
क्षय और स्थानांतरमें गमन होताहै ४ और बृहस्पतिकी दशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तव श्रेष्ठबुद्धि
और कुशलता और देवताका पूजन होताहै और श्रेष्ठलक्ष्मी और गृह और वाहनोंकी प्राप्ति
होतीहैऔर निश्चयकरके स्त्रीपुत्रादि योंकासुखहोताहै ५ और कईक आचार्य गुरुकी दशामें बुधकी अं

विद्यानवद्याऽर्थयुतो
नानांगनाक्रीडनयातचित्तःश्रीराजचिन्हैश्चविराजमानः-- रणांगनप्राप्तयशोविशेषःसद्भोगसौ
नरःस्याज्जीवांतरेशीतकरप्रचारे ॥ २ ॥ ख्यार्थसमन्वितश्च प्रौढप्रतापोतितरांनरःस्याद्धरासुतेजीवदशांप्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षेगुदेवापिभवेत्कदाचित्पीडानराणामरिभीतिरुक्ता बलक्षयःसचलनकुज
स्यजीवांतरालेप्रवदंतिकेचित् ॥ ४ ॥ सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चितानिसद्दिंदिराम
दिरवाहनानि कलत्रपुत्रादिसुखानिनूनंकुर्याद्बुधोजीवदशांप्रपन्नः ॥ ५ ॥ विदे
शयानंचलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादःशिरसिप्रपीडा गुरोर्दशायांचरतींदुपुत्रेकेषां
चिदेवात्रमतंनिरुक्तम् ६ निजैर्वियोगोऽर्थविनाशनंचश्लेष्मानिलश्चापिकलेः
प्रसंगः स्यान्मानवानांव्यसनोपलब्धिर्भृगोःसुतेजीवदशांप्रयाते ॥ ७ ॥
धर्मक्रियायांनिरतत्वमुच्चैर्विद्यांवरान्नादिकसंग्रहश्च द्विजाश्रयःस्याद्गुरुपाकया
तेसितेवदंतीतिफलंतुकेचित् ८ वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशःकृ
शांगःखरक्रमेलादियुतोनरःस्याद्गुरोर्दशायांचलितेर्कसूनौ ९

तर्दशा होवे तव ऐसा फल कहतेहैं विदेश गमन और चंचल चित्तवृत्ति और जलसें प्रमाद और
शिरमें पीडा होतीहै ६ और बृहस्पतिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तव अपने संबंधियोंकरके वि
ग और धनका नाश और श्लेष्म वायुका कोप और लडाईका प्रसंग होताहै और मनुष्योंको
सनकी प्राप्ति होतीहै ७ और कईक आचार्य कहतेहै बृहस्पतिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे त
धर्मकर्ममें सदारत होताहै और विद्या और वस्त्र और अन्नादिकोंका संग्रह होताहै और ब्राह्मणों
आश्रित होताहै ८ और बृहस्पतिकी दशामें शनिकी अंतर्दशा होवे तव वेश्या और मद्य और
जूआ और कृषि कर्मादियोंकरके धर्म अर्थ यश नाशको प्राप्त होताहै और अंग कृश होतेहै और खो
और ऊंटोंसें लेकरके चतुष्पदोंसंयुक्त होताहै ९ ॥

इतिजीवांतर्दशाफलं अथ शुक्रकी अंतर्दशाका फलकहतेहैं शुक्रकी दशामें सूर्यकी अंत र्दशा होवे तब राजाका भय और सबंधिकर्के धनका नाश और शत्रुओं कउद य औरत्रिकस्थानमें और गंडस्थलमें और नेत्रोंमें पीडा होतीहै १ और शुक्रमें चंद्र माकीअंतर्दशा होवे तब शिर और दंत और नखोंमें पीडा और निश्चयकर्के पित्तका कोप होताहै और व्याघ्रादियोंका भयहोताहै २ और कईक आचार्य अपसे कहतेहैं शुक्रके मध्यमें चंद्रमाकी दशाहो वे तब ब्राह्मण और देवता और अग्निकेपूजनेमें मनकीप्रवृत्ति होतीहै और युद्धमें जय होतीहै और हाथीके कर्मसे और स्त्रीके प्रसंगसे लाभ होताहै ३ और शुक्रकी दशामें भोमकी अंतर्दशाहोवेतब पित्तसे और घात होनेसे और रक्तविकारसे अंगमें व्याकुलता होतीहै और अत्यंत उत्साहकाभंग होताहै

इतिगुर्वंतर्दशाफलं ॥ अथशुक्रांतर्दशाफलम् ॥ भूपभीतिरपिबंधुनिमि त्तंवित्तनाशनमरात्युदय स्यात् ॥ क्रोडगंडनयनेष्वपिपीडाभार्गवेयदिरवेर्वि निवेश ॥ १ ॥ शीर्षदंतनखपीडनमुच्चै कामलप्रबलताकिलपित्तम्श्वाप दादपिभयंचनराणांभार्गवांतर्गतेहिमरश्मौ ॥ २ ॥ भूदेवदेवाग्निमन प्रवृ त्तीरणांगणेस्याद्विजयोनराणां मातंगकार्याद्वनिताश्रयाद्वालाभ सितेचंद्रदशे तिकेचित् ॥ ३ ॥ पित्तात्क्षताद्रक्तविकारतोवावैकल्यमंगेप्रभवेन्नराणामु त्साहहीनत्वमतीवयातेभूमीसुतेदैत्यगुरोर्दशायां ॥ ४ ॥ सन्मानना नाविधवस्तुसौख्यंभूमीपते स्यात्खलुभूमिलाभ अंगारकेभार्गवपाकसंस्थेकेपां चिदेवंमतमस्तिशस्तम् ॥ ५ ॥ वृक्षै फलैश्चापिचतुष्पदाद्यैर्वित्तंभवेत्तस्य विधिर्नृपेण दुरंतकार्याभिरतिर्नितांतंभृगोर्दशायांचरतीदुसूनो ६ यज्ञादि सत्कर्मणिसादरत्वंगतार्थसिद्धि सुतदारसौख्य महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगो र्दशायांचरतीद्रवंद्ये ७ मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यंवृद्धांगनाकेलिरतीवनित्य स्याद्वैरिनाशोह्यशनोदशायांशनेश्चरस्यांतरजादशाचेत् ८ ॥

४ और कईक आचार्य शुक्रकी दशामें अंतर्दशा मंगलकी होवे तब शुभफल कहतेहै और मैंमान औरअनेक प्रकारकी वस्तुका लाभ और राजासे निश्चयकर्के जिमीका लाभ होताहै ५ और शुक्रकी दशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तब वृक्षोंकर्के और फलोंकर्के और चतुष्पदजीवों कर्के धनप्राप्तहोताहै और राजाकर्के मित्रभाव होताहै और बडेकठिन कार्यमें प्रीति होतीहै ६ और शुक्रकी दशामेंगुर की अंतर्दशा होवे तब यज्ञादि श्रेष्ठकर्ममें प्रीतिहोतीहै और नष्टधनकीप्राप्ति होतीहै और पुत्र स्त्रीका सुख होताहै और बडे अधिकारकी प्राप्ति और अनेक भूषणोंकी प्राप्ति होतीहै ७ और शुक्रकी द शामें शनिकी अंतर्दशा होवे तब मित्रोंकी उन्नति और ग्राम. पुरका अधिकार कोप्राप्ति और वृद्ध स्त्रीसेनित्य प्रतिविलास और शत्रुओंका नाश होताहै ॥ ८ ॥ इतिशुक्रांतर्दशाफलम् ॥

अब शनिकी अंतर्दशाका फल कहतेहैं शनिकी दशामें सूर्यकी अंतर्दशा होवे तब धन और स्त्री और पुत्र और बंधुयोंको पीडा होतीहै और अपने देहमें बडी पीडा होतीहै और शत्रुयोंकी वृद्धि होतीहै १ और शनिकी दशामें चंद्रमाकी अंतर्दशा होवे तब नित्यप्रति लडाई और संबंधियोंका वियोग और स्त्रीहरी जावीहै वा मृत होतीहै और उत्साहका भंग और सुखका नाश होताहै २ और शनिकी दशासें भोमकी अंतर्दशा होवे तब अपने स्थानसें गमन होताहै और अगमेंन्याकुलता होतीहै और धन और स्त्री पुत्रका वियोग होताहै और अष्टमानकी हानि होतीहै ३ और शनिकीदशामें बुधकी अंतर्दशा होवे तब धन और स्त्री और पुत्रके सुखको प्राप्त होताहै और श्रेष्ठराजमानकर्के युक्त होताहै और विद्यावानजनोंको आनंद होताहै और कफकर्के पीडित होताहै ४ और

अथमंदांतर्दशाफलं ॥ धनांगनानंदनबंधुपीडागाढापिबाधात्मकलेवरेस्यात् ॥ रिपूद्गमःसंचलनंनलिन्याःपत्योस्थितेमंददशांतराले १ नित्यंकलिर्बंधुजनैर्वियोगोहृतिर्मृतिर्वापिभवेद्गृहिण्याः ॥ उत्साहसौख्योपहतिर्नितांतंशीतद्युतौमंददशांतरस्थे २ स्वस्थानयानंविकलत्वमंगेधनांगनासूनुवियोजनंस्यात् सन्मानहानिर्ननुसूर्यसूनोर्दशांतरेभूमिसुतप्रचारे ३ धनांगनासूनुसुखोपपन्नःसद्राजमानेनविराजमानः विद्वज्जनानंदकरःकफार्तोमर्त्योभवेज्ज्ञेशनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥ कलाकलापेकुशलोविलासीपञ्चालयालंकृतचारुशीलः भूपालभूलाभयुतोनरःस्याद्बृहस्पतौमंददशांप्रयाते ॥ ५ ॥ योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिःश्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः यशःप्रणाशोरिकुलस्यनाशःशनेर्दशायामुशनःप्रवेशे ॥ ६ ॥ अंतर्दशाचेन्नलिनीशसूनोर्दशांतरालेकिलमंगलस्य ॥ भवेत्तदानींनिधनंनराणांयद्यप्यहोदीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥ लग्ननाथरिपुर्लग्नदशायांप्रविशेद्यदि अकस्मान्मरणंकुर्यात्प्राणिनांसत्यसमतम् ८

शनिकी दशामें गुरूकी अंतर्दशा होवे तब कलाके समूहमें कुशल होताहै और विलासकर्के युक्त होताहै और लक्ष्मीकर्के भूषित होताहै और सुंदर स्वभाववाला होताहै और राजासें भूमिलाभकर्के युक्त होताहै ५ और शनिकी दशामें शुक्रकी अंतर्दशा होवे तब स्त्री और भूषण और पुत्र और सुखकी प्राप्ति और लक्ष्मी और ग्राम और देशके अधिकारकी प्राप्ति बडी होतीहै और यशका और शत्रुकुलकानाश होताहै ६ और कहतेहैं शनिकी दशामें जब निश्चयकर्के मंगलकी अंतर्दशा होवे तब बडी आयुषावालेकी वी मृत्यु करतीहै ७ और लग्नकी दशामें जब लग्नेशके शत्रुग्रहकी अंतर्दशा होवे तब सत्याचार्यके मतसें मनुष्यकी अकस्मात् मृत्यु करतीहै ८

इतिशनेरंतर्दशाफलानि अवःपराशरके मतकर्के महाविंशोत्तरी दशाकाफलःकहतेहैं॰ तिसमें प्रथम सूर्यादि ग्रहोंकेदशावर्ष कहतेहै सूर्यकी दशा६ वर्ष ६ और चंद्रमाकी दशा१० वर्ष और मंगलकी सात७वर्षऔर राहुकी अष्टादश१८वर्ष और वृहस्पतिकी१६षोडशवर्ष औरशनिकी एकोनविंशति १९ वर्षऔरबुधकी सप्तदश १७ वर्ष और केतुकी सात७वर्ष औरशुक्रकी वीश २० वर्ष१होतीहैं अवदशाकाआनयनकहतेहैंक्रमसेकृत्तिकादीनव ९ नक्षत्रोंमेंसूर्य १ चंद्र २ मंगल ३ राहु ४ वृहस्पति ५ शनि ६ बुध ७ केतु ८ शुक्र ९ कीदशा होतीहै और इसीक्रमसे तीनवार आवर्तनकरणे सें सताइस नक्षत्रोंमे दशावर्षके स्वामी होतेहे २ और प्रकारांतरकर्के कहतेहैं कृत्तिका नक्षत्रसे ले कर्के भरणी नक्षत्रपर्यंत गनेनाकरे जितनी संख्या पर्यंत जन्मनक्षत्रकी संख्या होवै उतनी संख्या कर्के पूर्वो

इतिशनिर्दशांतर्दशाफलम् अथपराशरीयमतेनमहाविंशोत्तरीदशायाः फलमाह तत्रदृशाब्दिकथनं रस ६ दशा १० द्रि ८ पुराण १८ महीभृतो १६ विधु विहीननखा १९ अगभूमय १७ गिरि ७ नखा २० रविचंद्रकुजागुयुग्गुरुशनिज्ञककेतुसिताब्दका ॥ १ ॥ अथदशानयनम् ॥ कृत्तिकादिनवकात्रिक क्रमात्सूर्यचंद्रकुजराहुमंत्रिणः ॥ सौरिसोमसुतकेतुभार्गवाभप्रवर्त्तितदशाब्द नायकाः ॥ २ ॥ तथा कृत्तिकामवधिकृत्वाभरण्यवधिगण्यते नवभिस्तुहरे द्भागंशेषांकेचदशास्मृता ३ तथा नयनोनजनुर्भतोकहृत्क्रमशोर्केंदुकुजागु सूरय.शनिचंद्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषास्तुदशाधिपाःस्मृता४ अत्रभुक्तायादशायाः फलाभावाद्भोक्त्याया फलंवाच्यं तदुक्तलघुजातकाभरणे निजजन्मनिआदि मादशाजनिभस्येतघटीसमाहता सकलर्क्षघटीविभाजिताजनिभुक्ताटिदशा मताततः ५ अवशिष्टदशा फलंवदेत्परिशेषेपुयथोक्तवर्षकैरिति

क सूर्यादिदशाक्रमसें दशाकास्वामी होताहे और संख्या नवसे अधिक होवेतबनव ९ सेंभाग हरलेवे शेष ग्रहकी वर्तमान दशाहोतीहै ३ और प्रकारांतरकहतेहे अश्विनीसे लेकर जितनी संख्या काजन्म नक्षत्र होवे तिसमें दो २ कोघटायदेवे और नव ९ सेंभागदेकर योशेषरहे उतनी संख्या कर्के क्रमसें सूर्य।चंद्र।भौम।राहु।वृहस्पति।शनि।बुध।केतु।शुक्र।दशाके स्वामी होतेहै ४ अब जन्मकालमें भोग्यद शाका आनयन लघुजातकाभरणसें कहतेहैं अपनेजन्मकालमें प्रथमयोदशोजितने वर्षकीहोवे तिन्हों वर्षोंको जन्मनक्षत्रकी भुक्त घडीयोंकर्के गुणदेवे और सर्वक्षकर्के भागलेवे तव भुक्तदशा वर्षादिहो तीहै तिसको संपूर्ण दशाके वर्षोंसे घटायदेवे और शेषवर्षोंकर्के फलकहे ५ अव इसमें त्रैराशिक कहतेहे ॥ भुक्त नक्षत्रको साठ ६० से गुणकर्के पिंडकरे और सर्वक्षका साठ६० से गुणकर्के पिंडकरना

शुक्र पिंडकों दशावर्षोंसे गुणे और सर्वक्षेपिंडसे भागलेवे लब्ध वर्षहोतेहैं और शेषकों द्वादश १२ से गुणे सर्वक्षेसे भागलेवे लब्ध मास होतहै शेषकों तीसों ३० गुणेसर्वक्षेसे भाग लेवे तब लब्ध दिन होतेहै और शेषकों साठ ६० से गुणाकर्के सर्वक्षेसे भागलेणेसे घटीपल होताहै अवसुक्ष्मफलके ज्ञानवास्ते अंतर्दशादिकहतेहैं ॥ यथा ॥ जितने २ वर्ष जिस २ ग्रहके पूर्वकहहैं तिन्हों कों अपने २ वर्षोंसे गुणितकर्के एकसउवीसके अंकसे १२० भागलेवे तव वर्षादि तिस ॥ २ ॥ ग्रहकी अंतर्दशा सिद्ध होतीहै और जिसग्रहकी विदशादि

अथसूक्ष्मफलार्थमंतर्दशादिकथनम् तत्प्रकारोयथा स्वैःस्वैर्दशाब्दैर्गुणितंदशादिवर्षादिकंविंशतियुक्शतेन भजेच्चलब्धंतुनिजांतरांतर्दशादिमानंकथितंग्रहाणाम् दशाचांतर्दशाचैवविदशोपदशा तथाप्राणाख्याचफलंतासांवदेच्छास्त्रानुसारतः ७ अंतर्दशाचक्राणि चत्रअथशुभग्रहाणांशुभफलप्रदत्व पापग्रहाणामशुभफलप्रदत्वमितिसकलशास्त्रसिद्धः तत्रबुधगुरुशुक्राक्षीणचंद्राश्चाशुभग्रहाः रविकुजमंदराहुकेतुक्षीणचंद्राः

सिद्धकरणी होवे तव तिसकी अंतर्दशाको भिन्न २ ग्रहोके वर्षोंकर्के गुणेऔर एकसउो वीस १२० सें भाग लेवे तव विदशा ग्रहोंकी होजातीहैं इसीप्रकारकर्के उपदशा सूक्ष्मदशाकों सिद्धकरे ६ और कहतेहैं प्रथम दशा और दूसरीअंतर्दशा और तीसरी विदशा और चउथीउपदशा और पांचमीप्राणदशा जिसकों सूक्ष्मदशाकहतेहैं इहे पांचप्रकारकर्केतिन्हेंका शास्त्रकेअनुसारसें फल कहें जैसेंदशादियोंकास्वामीशुभाशुभग्रहस्वोच्चमित्रादि गृहंगतवानीच शत्रुक्षेत्रादि गत शुभाशुभ भावफलऔरशुभाशुभ दृष्टिफल औरशुभाशुभग्रहका योग फलविचार कर्केसपूर्ण कहै ॥ ७ ॥

अथबुधांतर्दशाचक्र

बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा	जी	श
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथगुरोरंतर्दशाचक्र

जी	श	बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथशनेरंतर्दशाचक्र

श	बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा	जी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथराहोरंतर्दशाचक्र

रा	जी	श	बु	के	शु	आ	चं	भौ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथकेत्वंतर्दशाचक्र

के	शु	आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथशुक्रांतर्दशाचक्र

शु	आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथसूर्यांतदशाचक्र

आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

अथचंद्रांतदशाचक्र

च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	आ
०	०	१	१	१	१	०	१	०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथभौमांतर्दशाचक्र

भौ	रा	जी	शा	बु	के	शु	आ	च
०	१	०	१	०	०	१	०	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

अब कहतेहैं शुभग्रहोंको शुभफल और अशुभग्रहोंको अशुभफल इहे संपूर्ण शास्त्रोंमें सिद्ध कियाहै तिसमें बुध और गुरु और शुक्र और पूर्णचंद्रमा इहे शुभग्रहकहेहैं और सूर्य और मंगल और शनि औरराहुकेतु और क्षीणचंद्रमा इहे पापी ग्रह सामान्य शास्त्रमें कहेहैं ॥ अब विशेष शास्त्रकर्के इसका अपवाद कहतेहैं ॥ त्रिकोणनेताजोहैं नवम ९ और पंचम ५ के स्वामी इहे जिसकिस स्थानमें स्थितहोवें और शुभग्रह पापीग्रहहोवें तब अपनी दशामें शुभफलको देतेहैं त्रिकोणाधिप निमित्त कर्के सूर्यादि सात ग्रहोंको शुभता सिद्ध होतीहै और राहुकेतुराश्याधिपनाहैं हैं ॥ और यह सूर्यादिसात ग्रह तीसरे और छठे और ग्यारहमें भावकेस्वामी होवेंतब अशुभ फल कों देतेहें ॥ इससें त्रिषडाय निमित्त कर्के शुभग्रहवी अशुभ होतेहैं और यो पापीग्रह होवें तिन्हका क्या कथनहै अर्थात् पापतर होतेहैं ८ अब और विशेष कहताहै ॥ सौम्यनो शुभग्रहहैं पूर्णचंद्र बुध गुरु शुक्र इहे चारग्रह यह केंद्र १।४।७।१० स्थानोंके स्वामी होवें तब शुभफलको नहिं देतेहै शुभग्रहवी केंद्राधिपत्व निमित्तकर्के अशुभफलकरतेहैं और क्रूर ग्रहजो अशुभकर्क कहेहैं सूर्य और भौम और शनि इहे तीन ग्रह केंद्र स्थानोंके स्वामी होवे तब अशुभ फल नहिंकरतेहैं अर्थात् शुभ होतेहैं और प्रबल उत्तरोत्तरइति तृतीयेशात्षष्ठेशः प्रबलः षष्ठेशादेकादशेशः ॥ एवं लग्नेशाच्चतुर्थेशः प्रबलः चतुर्थेशात्सप्तमेशः सप्तमेशाद्दशमेशइति ९ अब संबंधके वशसें ग्रहोंका शुभाशुभफल

शुभाशुभग्रहाः इतिसामान्यशास्त्रं अस्यापवादमाह सर्वेत्रिकोणनेतारोग्रहाः शुभफलप्रदाः पतयस्त्रिषडायानांयदिपापफलप्रदाः ८ नदिशंतिशुभंनृणांसौम्याःकेंद्राधिपायदि क्रूराश्चेदशुभंनेतिप्रबलाउत्तरोत्तराः ९ अथसंबंधवशादपिग्रहाणांशुभाशुभफलप्रदत्वमाह लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौपरेषांसाहचर्यतः स्थानांतरानुगुण्येनभवतःफलदायकौ १० अथाष्टमेशस्यशुभाशुभमाह भाग्यव्ययाधिपत्येनरंध्रेशोनशुभप्रदःसएवशुभसंधातालग्नाधीशोपिचेत्स्वयम् ११

होतेहैं जन्मलग्नसें द्वादश १२ और दूसरे २ केस्वामी अन्यग्रहोंके संबंधसें सहावस्थानादिकों आगे चारप्रकारके संबंधकहेहैं तिन्होंके संबंधहोनेसें फलहोताहै अर्थात् शुभग्रहोंके संबंधसें द्वादशेश द्वितीयेश ग्रहकाशुभफल होताहै और पापीग्रहके संबंधसें अशुभफलहोताहै और स्थानांतरके गुणानुसार कर्के फलहोताहै जैसें मित्रादिस्थानोंमें स्थित होवे तब मित्रादिद्वारा शुभफलहोताहै और शत्रुनीचादि स्थानमें स्थित होवे तब शत्रुनीचादियोंसें दुःखहोताहै १० अब अष्टमेशका शुभाशुभफल कहतेहैं नवमस्थानकी भाग्यसंज्ञा कहिहै तिससें भाग्यात् भाग्यभावसें जो व्यय १२ स्थानहै अर्थात् जन्मलग्नसें अष्टम तिसका स्वामी जिसकिस स्थानमें स्थित होवे सो शुभफल नहिं करताहै और इसमें शंका करतेहैं कइक आचार्य अष्टमसें अष्टमकोंवी अष्टम संज्ञा मानतेहैं जब तृतीय भावका स्वामीवी अष्टमेश भया तब सो ग्रह फेरद्वादशेश होताहै जैसें कर्क जन्मलग्नमें बुध और मकर लग्नमेंबृहस्पति सोवी अष्टमेश होनेकर्के अशुभफलकरें जैसें इह बुधगुरु दोनों अशुभफलनहिकरतेहैं संबंधवलकर्के तैसेंहि अष्टमेशकावी अशुभफल सबकर्केनहिं होनाचाहिये तिसमें कहतेहैंसो अष्टमेश जब लग्नकावी स्वामी होवे तब शुभफलकरताहै अन्यथा अशुभफलकरताहै सो तुल और मेषलग्नमेंजन्मवाल्योंको शुक्र भौम शुभ होतेहै और लग्नोंमें सर्वत्र अष्टमेश अशुभफलकरताहै ११

अब केंद्राधिपत्व शुभग्रहोंके दोषमें गुरुशुक्रका विशेष दोष कहतेहैं लग्न और चतुर्थ और सप्तम
और दशम स्थानके स्वामी होनेका यो शुभग्रहोंका दोष कहाहै सो दोष गुरु और शुक्रका बल
वान्है और इसमें विशेष कहतेहैं गुरुशुक्र मारकस्थानमें लग्नसें सप्तम और दूसरे स्थानमें स्थित
होवे तब विशेषकरके और ग्रहकी अपेक्षासें मारक होतेहैं . १२ और गुरुशुक्रकी अपेक्षासें थोड
दोषवाला बुध होताहै और बुधकी अपेक्षासें थोडा दोषवाला चंद्रमा कहाहै और मारकस्थान ७।२
स्थितिमें गुरुशुक्रकी अपेक्षासें बुधको और बुधकी अपेक्षासें चंद्रमाको दुर्बलताहै और सूर्यचंद्रमाको अष्टमेश
त्वदोष नहीं होताहै . १३ अब क्रूरग्रहोंको केंद्रेशत्व पूर्व शुभ कहाहै तिसमें मंगलमें विशेष कहतेहैं
मंगलको यो दशमेशता शुभ कहिहै सो मंगल त्रिकोण ९।५ का भी होवे तब शुभहै केवल दशमे
शता शुभ नहीं कहीहै सो कर्कलग्नमें जन्मताहै तिसको इहै योग होताहै तिसमें मंगल पंचमेश और दशमेश
होताहै १४ अब मेषादि लग्नोंमें जन्मवालोंको जिसजिस ग्रहको पापत्व वा शुभत्व वा मारक
त्व कहाहै सो सपूर्ण विचारकके बृहत्पराशरीमें कहाहै, मंदसौम्यासिताःपापाःशुभौगुरुदिवाकरौ न शु
भयोगमात्रेणप्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ परतंत्रेणजीवस्यपापकर्मापिनिश्चित ॥ कविःसाक्षान्निहंतास्यान्मा
रकत्वेनलक्षित ॥ सगात्तयोर्निहंतारोभवेयुःपापिनोग्रहाः शुभाशुभफलान्येवंज्ञातव्यानिक्रियोद्भवैः इति
मेषजन्मनःफलम् जीवशुक्रेंदवःपापाःशुभौशनिशशिसुतौराजयोगकरःसाक्षादेकएवरवेःसुतःजीवादयो
॥ केंद्राधिपत्वदोष
अथसौम्यग्रहाणांकेंद्राधिपत्वदोषेगुरुशुक्रयोर्विशेषमाह ॥ केंद्राधिपत्वदोष
स्तुबलवान्गुरुशुक्रयोः ॥ मारकत्वेपिचतयोर्मारकस्थानसंस्थितिः १२ बुध
स्तदनुचंद्रोपिभवेत्तदनुतद्विधः नरंध्रेशत्वदोषस्तुसूर्याचंद्रमसोर्भवेत् १३
अथक्रूरग्रहाणांकेंद्राधिपत्वेशुभत्वपूर्वमुक्तंतत्रभौमविषयेविशेषमाह ॥ कुज
स्यकर्मनेतृत्वंप्रयुक्तंशुभकारिता ॥ त्रिकोणस्यापिनेतृत्वेनकर्मेशत्वमात्रतः १४
ग्रहाःपापाःघातिमारकलक्षणाः बुधस्तत्फलान्येवज्ञेयानिवृषजन्मनः इतिवृषजन्मनःफ भौमजीवारुणाःपा
पाःशुक्रःसौम्यःशुभःशनैश्चरेणजीवस्ययोगोमेषभुवोयथानाथंशशिःनिहंतातल्लक्षणःपापिनस्त्वलंज्ञात या
निद्वजस्य योगस्यफलंयेनानिसूरिभिः इतिमिथुनजन्मनःफ भार्गवेंदुसुतौपापौभूसुतागिरसौइंदोः
एकएवग्रहःसाक्षाद्भूसुतोयोगकारकः निहंतारविजोन्येतुपापिनोमारकाह्वयाः कुलीरसंभवस्यैवंफलान्युन्नत
निसूरिभिः इतिकर्कजन्मनःफ सौरिशुक्रौशितौपापौकुजएवशुभावहः प्रभवेद्योगमात्रेणशुभंचकुजशुक्रयोः
शनेर्निसौम्यादयःपापाःमारकत्वेनलक्षिताः एवंफलानिवेद्यानिसिंहस्यजनुर्भवेत् इतिसिंहजन्मनःफ
कुजजीवेंदवःपापाःएकएवभृगुःशुभः भार्गवेंदुसुतावेवभवेतांयोगकारकौ निहंताकविरन्येतुमारकाख्याःकुजा
दयः प्रनोदितफलान्युक्तान्येवकन्याभवान्बुधैः इतिकन्याजन्मनःफ जीवार्कमहिजाःपापाःशनैश्चरबुधौ
शुभौ भवेतांराजयोगस्य कारकौचंद्रतत्सुतौ कुजोनिहंताजीवाद्याःपरेमारकलक्षणाः ॥ निहंतारःफला
न्येवंकथितानितुलाभुवः इतितुलाजन्मनःफ सौम्यभौमसिताःपापाःशुभौगुरुनिशाकरौ सूर्याचंद्रमसा
वेवभवेतांयोगकारकौ जीवोनिहंतासौम्याद्याहंतारोमारकाह्वयाः एतत्फलानिविज्ञेयान्येववृश्चिकजन्म
नः इतिवृश्चिकजन्मनःफ एकएवकविःपापःशुभौसौम्यदिवाकरौ योगोभास्करसौम्याभ्यांनिहंताभार्गवः
शुक्रादयःपापामारकत्वेनलक्षिताःतानव्यानिफलान्येवंचापजस्यमनीषिभिः इतिधनुर्जन्मनःफ

कुजजीवेंदवःप्रापाःशुभौभार्गवचंद्रजौ ध्ययंचेंवानिहंतास्यान्मंदोभौमादयःपरे तत्तत्क्षणेनिहं
तारःकविरेकःसुयोगकृत् ज्ञातव्यानिफलान्येवंविबुधैर्मृगजन्मनः इतिमकरजन्मनःफलं जीवचंद्रकुजा
पापाःएकोदित्यगुरुःशुभःराजयोगकरोभौमःकविश्चैववृहस्पतिः निहताप्रतिभौमाद्यामारकत्वेनलक्षिताः
एवमेवफलान्यूह्यान्येतानिघटजन्मनः इतिकुंभजन्मनःफ मंदशुक्रेदवःसौम्याःपापाभौमाविधूशुभौ महो
सुतगुरोयोगेकारणेनैवभूसुतःमारकाःकारकावीक्ष्यमंदज्ञौप्रतिमापिनः इत्यूह्यानिफलान्येवंबुधैस्तुझषजन्म
नः इतिमीनजन्मनःफलम् अब राहुकेतुका फल कहतेहैं राहुकेतुकिसीराशिके स्वामी नाहिंहै इनका
किसस्थानमेंस्थिर होनेसेंकिसप्रकारकरकेशुभाशुभफलदेतेहैं इसआकांक्षामेंकहतेहैंतमोग्रहजोराहुकेतुहैं
इहांजिस जिस भावमें स्थित होवें जिस जिस भावकेस्वामीकरकेयुक्तहोवेंतिसतिसकेफलकोंअतिशय
करके प्रवलता करके देतेहैं इसका इहे अर्थहै जिस जिस भावका स्वामी अपने स्वक्षत्रमें जो जो फ
ल देताहैं सो सो फल राहु केतु विशेष करके देतेहैं और राहु केतुकों तिस भावेशकी अ
पेक्षाकरके स्वाभाविक बलवत्तासिद्धहै अथवा जिस जिस भावके स्वामी करकें युक्त होवे सो भा
वेश तिस भावके फलको विशेषकरकें देताहैं औरसंयुताविस्यत्र संयुत इसपदकरकें संबंधचारप्रकारका
काहै सो कहतेहैं १५ केंद्रत्रिकोणपतयइति केंद्रके स्वामी और त्रिकोणके स्वामी आपसमें संबंधहो

अथराहुकेत्वोराश्यनधीशत्वात्कुत्रस्थितयोः किंफलंकथंवाशुभाशुभत्वमित्या
कांक्षायामाह॥ यद्यद्भावगतौवापियद्यद्भावेशसंयुतौ तत्तत्फलानिप्रबलौप्रदि
शेतांतमोग्रहौ १५ अथसंबंधवशेनयोगविशेषः ॥ केंद्रत्रिकोणपतयःसंबंधेन
परस्परम्॥ इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः १६ केंद्रत्रिकोणनेतारौदोष
युक्तावपिस्वयम् संबंधमात्राद्बलिनोभवेतांयोगकारकौ ॥१७ त्रिकोणाधिपयो
र्मध्येसंबंधोयेनकेनचित् ॥ केंद्रनाथस्यबलिनोभवेद्यदिसुयोगकृत् १८ निवसे
तांव्यत्ययेनतावुभौधर्मकर्मणोः एकत्रान्यतरोवापिवसेच्चेद्योगकारकौ १९

नेकरके विशेष फल देतेहै सो संबंध चार प्रकारका कहाहै अन्योन्यराशिमें स्थितत्वएक १ परस्पर
दृष्टिसंबंधदूसरा २ एकतरदृष्टिसंबंध ३ सहावस्थान एकराशिगत्वचतुर्थ ४ है इसमेंपूर्वपूर्वसंबंधबल
वान् कहाहै तिनमें केंद्रेश और त्रिकोणेशोंका संबंध विशेष फलके देनेवाला होताहै परंतु तीसरे
और छठे और एकादशके स्वामीसें संबंध नाहि करते होवें तब विशेषफल होताहैं १६
और कहतेहै केंद्रत्रिकोणाधिपति आप दोष युक्तवी होवें तबवी पूर्वोक्त संबंध होनेसें विशेष फलके
कारक होतेहैं १७ और कहतेहैं त्रिकोणाधिपयोरिति ॥ पंचमेश और नवमेश तिनके मध्यमें एक
भी किसी कुकेंद्रके स्वामीसें संबंध करे परंतु केंद्राधिप बलीहोवे तब राजयोगका कारक होताहै १८
अब प्रबल राजयोग कहतेहैं ॥ निवसेतामिति ॥ केंद्रके और त्रिकोणके स्वामी अथवा नवम और
दशमके स्वामी दोनों व्यत्ययसें स्थित होवें अर्थात् नवमेश दशममें स्थित होवे और दशमेश न
वममें स्थित होवे तब एकयोग होताहै १ और योगांतर कहतेहैं ॥ एकत्रेति ॥ नवमस्थानमें दोनों
स्थित होवे तब दूसरा योग होताहै २ और दशमस्थानमें दोनों स्थितहोवेंतबतीसरायोगहोताहै ३
और दोनोंके मध्यमें एकवी अपने स्थानमें स्थित होवे तबवी राजयोगकारक होतेहैं १९

[illegible]

अवकारांतरके केराजयोगकहेतेहदशास्वपीतियोगकारकजे:केंद्रत्रिकोणकेस्वामीग्रहहैतिनकी जो दशा
तियंकी नाम दशाद्यी कहतेहे अर्थात् नवमेश और दशमेशकी दशाके अतदशाके कारक जो
ग्रह संबंधकर्के रहितवाहै कदाचित् तिनकी दशामेंवी राजयोगकी प्राप्ति होतीहै परंतु शुभग्र२१.वे
तीसरे छठे एकादशके स्वामी नहिं होवे तव राजयोगकी प्राप्ति होतीहै २० योगांतरकहतेहैं योगका
क संबंधादिति ॥ स्वतःस्वभावसेंवी पापग्रह योगकारक ग्रहके संबंधसें राजयोगके फलकी देतेहै
अर्थात् योगकारकग्रहकी दशामें और तत्संबंधीकी अंतर्दशाकालमें राजयोगका फल होताहै २१
योगांतरकहतेहैं ॥ केंद्रत्रिकोणाधिपयोरिति ॥ एकत्वइति केंद्रका और त्रिकोणका स्वामी एकहि ग्रह
होवे तव दोनों राजयोगके कारकहोतेहैं और यद और दूसरे त्रिकोणाधिपति कर्के संबंध होवे तव
तिसके परे और शुभ क्याहै तिसके उपरंत श्रेष्ठ योग कोई नहिं होताहै २२ अव राहुकेतुकी राज
योगके कारकत्व कहतेहै ॥ यदिकेंद्रेति ॥ तमोग्रह जो राहुकेतुहै यद केंद्रमें वा त्रिकोणमें स्थित हो
वे तव और किसीकर्के केंद्रके स्वामीकर्के वा त्रिकोणके स्वामीकर्के संबंधहोवें तव राहुकेतु राज
योगके कारक होतेहैं २३ अव राजयोगका भंग कहतेहै ॥ धर्मकर्माधिनेताराविति ॥ नवम

दशाद्वयीमध्यगतस्तदयुक्शुभ
दशास्वपिभवेद्योगः प्रायशोयोगकारिणः ॥ दशाद्वयीमध्यगतस्तदयुक्शुभ
कारिणाम् २० योगकारकसंबंधात्पापिनोपिग्रहास्स्वतः तत्तद्भुक्त्यनुसारेणादिशे
युर्योगजफलम् २१ केंद्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वेयोगकारकौ अन्यत्रिकोणप
तिनासंबंधोयदिकिंपरम् २२ यदिकेंद्रत्रिकोणेवानिवसेतांतमोग्रहौ नाथेना
न्यतरेणापिसंबंधाद्योगकारकौ२३ अथराजयोगभंगः धर्मकर्माधिनेतारौरंध्रला
भाधिपौयदि ॥ तयोः संबंधमात्रेणनयोगंलभतेनरः २४
॥ अथायुर्दायविषयेमारकग्रहलक्षणम् ॥ अष्टमंह्यायुषःस्थानमष्टमादष्टमंच
यत् तयोरपिव्ययस्थानंमारकस्थानमुच्यते २५ तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्द्विती
यंबलवत्तरम् तदीशितुस्तत्रगताःपापिनस्तेनसंयुताः २६ तेषांदशाविपाकेषु
संभवेन्निधनंनृणाम् तेषामसंभवेसाक्षाद्व्ययाधीशदशास्वपि २७
भावका स्वामी और दशम भावका स्वामी जो ग्रह सो अष्टमेश और लाभेशवी होवे अथवा ध
र्मकर्मके स्वामी अष्टमेशकर्के संबंधवेहोवें तव राजयोग भंग होताहै २४
अव आयुर्दायके विषयमें मारक ग्रहके लक्षण कहतेहैं अष्टममिति जन्मलग्नसे अष्टमस्थान आयुका
स्थान कहाहै और अष्टमसे अष्टम अर्थात् जन्मलग्नसें तृतीयस्थान सोवी आयुपाकास्थानकहाहै और तिन्हीं दोनों
आयुपाके स्थानोंसे व्ययस्थान जोहै अर्थात् जन्मलग्नसे सप्तम और द्वितीयस्थान सोदोनोंमारकस्था
न कहेहैं २५ और तिसमें सप्तमकी अपेक्षासें दूसरास्थान अत्यंत वलीहै तिसकर्के जन्मलग्नसें
दूसरे भावके स्वामीको दशामें मृत्युकहे सोई कहताहै तदीशितुरेति तत्शब्दकर्के पूर्वोपस्थित दूसरे
भावका परामर्श होताहै तिसकर्के द्वितीयस्थानेशकी दशाकालमें संभवेसति संभवके होतां मनुष्यों
का मरण होताहै २६ इसका तत्रगताके अर्द्धश्लोककर्के कहाहै अथवा तत्रगता निसदूसरे स्थान
में प्राप्त पापी ग्रह तीसरे और छठे और एकादशके स्वामी होवें तव अथवा मारकेशकर्के दूसरे
के स्वामीकर्के युक्त तीसरे छठे एकादशके स्वामी होवें संभवके होयां तिनकी दशामें मृत्युरहे और
तिनकी दशामें संभव नहिं होवे तव द्वादशेश ग्रहकी दशामें मृत्यु कहे २७

और जब द्वादशेशकी दशामें आयुषाका संभव नहीं होवे तब कहतेहैं अलाभइतिजब द्वादशेश और द्वादश स्थित और द्वादशेशकर्के संबंधकी प्राप्त जो पापी तीसरे छठे एकादशके स्वामी तिनसपूर्णोंके दशामें किसीक स्थानमें द्वादशेशसे संबंध होतेहैं शुभग्रहोंकी दशामेंभी मृत्युकहे और अष्टमेशकी दशामें मृत्युकहे २८ और कहतेहैं पूर्वोक्त संपूर्णमारकोंके असंभवमें केवलानामिति ज्योतिषी पापीग्रहोंकी दशामे अर्थात् तीसरे छठे एकादशके स्वामीकी दशामें किसीक स्थानमें मृत्यु कहना योग्यहै अत्र विचार ॥ सूर्यचद्रमाके विना द्वितीय सप्तम स्थानका जो स्वामीहै और छठे आठवें द्वादश घरके स्वामी और राहुकेतु इन्हों सपूर्णोंके मध्यमें जो ग्रह प्रथम नवांशका स्वामी होवे तो मारक होताहै और तैसेहि चंद्राक्रांत नवांशपति मारक होताहै और पापषड्वर्ग शत्रुगृहगत नीच राशिगतादिमें स्थित मारक होताहै और षड्वर्ग शब्दकर्के स्वनवांश स्वद्रेष्काण स्वद्वादशांश स्वत्रिंशांश ग्रहण करणा कहाहै और पापग्रहके योगमें मृत्यु और शुभग्रहके योगमें पीडामात्र कल्पना करणे योग्यहै २९ अब विशेष शनिका मारकयोग कहतेहैं जब शनि मारके शुभादियोंकर्के सहावस्थानादि मारकग्रहसे संयुक्त कोई संबधकर्ताहोवे तब सपूर्ण इतर मारकोंका त्यागकर्के

अलाभेपुनरेतेषांसंबंधेनव्ययेशितु क्वचिच्छुभानांचदशास्वष्टमेशदशासुच २८ केवलानंचपापानांदशासुनिधनंक्वचित् कल्पनीयंबुधैर्न्टणांमारकाणामदर्शने २९ मारकैःसहसंबंधान्निहंतापापकृच्छनिः अतिक्रम्येतरान्सर्वान्भवत्यत्रनसंशयः ३० अथगौरीजातकोक्तनक्षत्रायुर्दायकथनम् ॥ पार्वत्युवाच ॥ हितायसर्वसत्वानां जातकंब्रूहिशंकर आयुर्दायविधानंनदशाक्रमफलंतथा १ एममुक्तस्तुपार्वत्या शंकरः प्रत्यभाषत उवाचवचनंप्रीत्याशृणुपार्वतिनिर्णयम् २ नवग्रहाइमेख्याताः सूर्यसोममहीसुताः राहुःसुरगुरुःसौरःसौम्यकेतुसितास्तथा ३ एतेप्राणभृतामायुःप्रयच्छंतिवरानने श्रेष्ठंचमध्यमंवापिकनिष्ठंवाकदाचन ४ षड्वर्षाणिसूर्यस्यदशचंद्रस्यसुव्रते सप्तवर्षाणिभौमस्यराहोरष्टादशैवतु ५ गुरोःषोडशविज्ञेया सौरस्यैकोनविंशतिः सप्तदशबुधस्योक्ताःसप्तकेतोश्चवत्सराः ६ विंशतिर्भार्गवस्योक्तादशाभुक्तिक्रमेणच शतविंशतिसंयुक्तंपरमायुःप्रकीर्तितं ॥ ७

शनिहि मारक होताहै और कदाचित् शनिहि मारकेश होवे तब यथाकहने योग्यहै इसमें शनिकी प्रबलता कहीहै और इसमें दशाविंशोत्तरी ग्रहणकरणी कहीहै ३०

अब गौरिजातकोक्त नक्षत्रायु कहतेहैं ॥ पार्वती शिवजीको पूछतीभईहेशंकर जगतके हितवास्ते जन्मकालका फल और आयुषाके विधानकर्के और दशाफलकर्केयुक्त कहो १ इसप्रकार पार्वतीके वचनको सुनकर्के शिवजीप्रसन्नताकके युक्त पार्वतीको कहतेभये हेपार्वति तुं श्रवणकर २ इस क्रमकर्के नवग्रह कहेहैं प्रथम सूर्य १ चद्रमा २ मगल ३ राहु ४ बृहस्पति ५ शनि ६ बुध ७ केतु ८ शुक्र ९ ऐसे नवग्रह देहधारियोंको आयुषा देतेहैं जन्मकालमें जैसा आयुर्मनुष्यका होताहै उत्तम और मध्यम और कनिष्ठ ऐसे तीनप्रकारका आयु जन्मकालीनग्रहोंके आधीनहै ४ कलियुगमें एकसऔर वीस १२० वर्ष परमायुहै तिसमें छै वर्ष ६ सूर्यके और दश १० चद्रमाके औरसात भौमके ७ और अठारा १८ राहुके ॥ ५ ॥ और सोला १६ गुरुके और उन्नी १९ शनिके और सतारा १७ बुधके और सात केतुके ७ ॥ ६ ॥ और वीश २० शुक्रके ऐसे दशा भुक्तिके क्रम कर्के होतेहैं ७

अब दशाका प्रकार कहतेहै हेपार्वति नवकोष्ठ बनायकर्के कृत्तिकासे लेकर्के सताईं नक्षत्रतीन आवृत्तिकर्के लिखे और तिन्होंके नीचे वा ऊपर सूर्यादि शुक्रपर्यंत नवग्रह स्थापनकरे और दैववित् ज्योतिषीपुरुषोंनेवालेको इस प्रकारकर्के दशाकहे ९, और नक्षत्रके प्रथमचरणमें जो जन्मतेहैं तिन्हकी पूर्णआयुर्दा एकसौबीस १२० वर्षहोतीहै और दूसरे चरणके आदमें जन्मेतो सौवर्ष १०० आयुषा होतीहै १० और तीसरे चरणके आदमें जन्मेतो अशी वर्ष ८० आयुषा होतीहै औरनक्षत्रके चतुर्थांशके आदमेंजन्मेतो साठवर्ष ६० आयुषा होतीहै और सौ वर्षसेलेकर्के जो आयुषाका समय १०० ८० ६० इन्हमें कदाचित् मृत्युको नहि प्राप्त होवे नक्षत्रके चरणका आवत होनेमें तब क्रमकर्के १०५ और १०० और ८० वर्षकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै १२ हेपार्वतिमिताईं नक्षत्रोंमें जिस नक्षत्रमें जन्महोवे तिस नक्षत्रसे लेकर्के बुधजनोंने गणना करणे योग्यहै १३ अब

आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
कृ	रो	मृ	आ	पु	ति	श्ले	म	पूफा
उफा	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पूष
उष	श्र	ध	श	पूभा	उभा	रे	अ	भ

नवकोष्ठाण्यग्निभाद्यानित्रिराकृत्यानिसुंदरि ॥ अधोधःस्थापयेत्कोष्ठेनवकेकमलानने ८ सस्थाप्यतदध सूर्य्याच्छुक्रांतान्नवखेचरान् ॥ दशाफलानिक्रमशोदैववित्प्रपुरादिशेत् ९ प्रथमांशादिजातानां परमायुःप्रकीर्तितम् ॥ द्वितीयस्यांशकस्यादौशतमायुरुदीरितम् १० समाशीतिस्तृतीयस्यषष्टिस्तुर्यस्यतुस्मृत शताद्यायुषिकालेच द्वितायांतकाद्विना ११ नाम्रियतेतदाब्दानिपंचादिर्विशति क्रमात् ॥ अधिकजीवनतेषांवक्तव्यंवीरवंदिते १२ सप्तविंशतिऋक्षेषुयत्रभेजन्मजायते त द्विगण्यमादितःकृत्वाकर्तव्यागणनाबुधैः १३ जन्मर्क्षगतनाडीघ्नपरमायु खग्रहैर्भजेत् ॥ लब्धंपरमायुषःशोध्यंशेषमायुःस्फुटमवेत् १४ अत्रांतरेतुयोमृत्युःसदशारिष्टतोभवेत् ॥ पापस्यहिचलिष्ठस्यदशामृत्युप्रयच्छति १५ बलेनवर्जितःपापोवित्तनाशविधायक ॥ मध्यमेनबलेनैवयुक्त पीडाकर स्मृत १६

नक्षत्रायुको स्पष्ट करतेहै ॥ जन्मनक्षत्रकीयां यो गतघडिया भुक्तघडियां तिन्होंकर्के परमायुवर्षोको १२० गुणे और खग्रह कहीए नव्वे ९० केअंकसे भागलेवेलब्धवर्ष होतेहै शेषांकको द्वादशगुण करदे ९० नव्वेसेभागलेवे लब्ध मास वर्षोकेआगेधरे और शेषांकको तीस ३० सेगुणे और ९० भागदेवेलब्ध दिन होतेहैं इसी प्रकार शेषांककों साठ ६० गुणकर्के भाग ९० देणेसे घट्यादि लब्धहोतीहै वर्षादियो प्राप्तहै तिन्हको एकसौ वीस १२० वर्षमें घटायदेवे शेष स्पष्टायुः होताहै १४ तिस आयुषाके मध्यमें यो मरताहै सो दशारिष्टसे जानना और बडेबलकर्के युक्त पापीग्रहकीदशामृत्युकरतीहै १५ और बलहीनपापीग्रहकीदशा धन नाशकरतीहै औरमध्यमबलकर्के युक्त पापग्रह कीदशापीडाको देतीहै १६

और देवताके पूजनकर्के और दानकर्के और साधुसंगकर्के और ब्राह्मणोंकी सेवाकर्के अपमृत्युका नाश होताहै १७ और हेपार्वति जन्मनक्षत्रके अधः स्थित ग्रहकी प्रथमदशा होतीहै तिससें आगे क्रमकर्के दशा और अंतर्दशा होतीहै १८ और ग्रहकीयो स्पष्टआयुहै तिसकों यहां के पूर्वोक्त वर्षोंसें गुणे और एकसउवीस १२० सें भागलेवे तब अंतर्दशा स्पष्ट होतीहै १९ जैसें अंतर्दशाकों ग्रहवर्षोंसें गुणे और १२० वर्षकर्के भागे तव विदशा होतीहै दशाकाष्ठादिग्रहक्रमसें २० अथ विंशोत्तरिदशाके फल कहतेहैं प्रथम सूर्यदशाका फल कहतेहैं सूर्यकी दशामें चित्त उदास रहिताहै और धनका नाश होताहै और देहमें रोग और संबंधियोंकावियोग होताहै और राजजनोंकर्के पीडित और विदेशवास और उपघातकों मनुष्य प्राप्त होताहै १ और चंद्रमाकी दशामें हाथिघोडे रत्नादियों कर्के वडा प्रताप और मिष्टान्न पान और अनेक प्रकारका सुखहोताहै

सुरार्चनेनदानेनसाधूनांसंगमेनच शुश्रूषयाचविप्राणामपमृत्युर्विनश्यति १७ नक्षत्राधःस्थितस्तस्यग्रहस्याद्यादशाप्रियेततः क्रमेणचान्येषादशाचांतर्दशाभवेत् १८ स्फुटमायुर्हतंखेटमानेनविभजेत्ततःपरमायुःप्रमाणेनदशाचांतर्दशापि १९ दशाब्दैश्चैवपूर्वोक्तविधिनांतर्दशाभवेत्दशाकोष्ठादिखेटानांस्युरथोपदशाइति २० अथविंशोत्तरीदशाफलानि तत्ररवेःउद्विग्नचित्तःपरिनष्टवित्तःशरीररोगीस्वजनावियोगी निष्पीडितोराजजनैःप्रवासीनरोपघातीचरवेर्दशायाम् १ गजाश्वरत्नानिमहाप्रतापोमिष्टान्नपानंविविधंसुखंच आरोग्यतासर्वजनानुरागोभवेद्दशायांशशिनोनरस्य २ शस्त्राभिघातोनृपतेश्चपीडाचौराग्निरोगाश्चधनस्यहानिःकार्याभिघातश्चनरस्यदैन्यंभवेन्नराणांधरणीसुतस्य ३ ज्ञानस्यहानिर्गमनंविदेशेधर्मस्यहानिर्विविधाश्चरोगाः सर्वत्रशून्यंतनुसंशयंचराहोर्दशायांनियतंनरस्य ॥ ४ ॥ धर्मार्थकामैः परिपूरितश्चराजप्रतापैर्विनयैःसमेतःधनीजयीदारसुतादियुक्तोगुरोर्दशायांचनरोविरोगः ५ मिथ्यापवादोविमुखश्चबंधोर्वधश्चरोगश्चनिराशताच कार्याणिशून्यानिधनस्यहानिः क्लेशोभवत्यर्कशनेर्दशायाम् ६

और आरोग्यता और संपूर्ण जनोंमें प्रीतिहोतीहै २ और भौमकी दशामें शस्त्रघात और राजासें पीडा और चोर और अग्निसें पीडा और धनकानाशहोताहै और कार्यकानाश और दीनता मनुष्यकों होतीहै ३ और राहुकी दशामें विद्याकी हानि और विदेश गमन और धर्मकीहानि और अनेकप्रकारके रोगहोतेहैं और संपूर्णकर्मोंका फल शून्य होताहै और देहके वचनेंमें निश्चयकर्के संशय रहिताहै ४ और वृहस्पतिकीदशामें धर्म अर्थ कामकर्के पूरिभलीप्रकारहोताहै और राजप्रतापोंकर्के औरनम्रताकर्केयुक्तहोताहै औरधन और जयऔर स्त्रीऔरपुत्रादियोंकें युक्त होताहै ५ और शनिकी दशामें झूठा अपवाद और बंधुयोंसें विमुखता और वध और रोग और आशाका भंग और संपूर्णकार्योंमें शून्यता और धनकीहानि और क्लेशहोताहै ६

श्रीरबुधकी दशामें मनुष्यअनेकप्रकारोंकेधनकोप्राप्तहोताहै और सुंदर स्त्रीके विलासकोप्राप्तहो
ताहै और संपूर्णअर्थ सिद्धकर्ताहै और वडेमानककेयुक्त होताहै ७ औरकेतुकी दशामें लक्ष्मी के
विनाशको प्राप्तहोताहै और स्त्रीको विपत्तिहोतिहै और देहपीडा और राजासें मानभंग और
मित्रोंकरके और कुटुंबियोंकरके विरोधहोताहै और संतापहोताहै ८ और शुक्रकीदशामें मनुष्यकोरा
जाकरके मानहोताहै और धन धान्य करकेपूर्ण होताहै और हाथी घोडियों करके युक और स्त्री क
रके रहित होताहै और मंत्रमें चतुर और शास्त्रमें कुशलहोताहै ९ अब अंतर्दशाकेफलकहतेहैं प्रथ
म सूर्यकी दशामें अंतर्दशाके फल कहतेहैं जिसकालमें सूर्यकी दशामें बृहस्पति औरचंद्रमा
और मंगलकी अंतर्दशा होवे तव शुभफल होताहै और इन्हों तीनग्रहोंकेविना अन्यग्रहकी अंत

नानाविधैरर्थशतैःसमेतोदिव्यांगनाकेलियुतोविलासीसर्वार्थसिद्धोवहुमानवां
श्चभवेद्दशायांमनुजोबुधस्य ७ लक्ष्मीविनाशोवनिताविपत्तिःशरीरपीडानृपमानभं
गः प्रियैःकुटुंबैश्चभवेद्विरोधःकेतोर्दशायांसततंचतापः ८ नृपद्रमान्योधनधा
न्यपूर्णोहस्त्यश्वयुक्तःप्रमदानुरक्तः मंत्रप्रमयोनिपुणश्चशास्त्रेकवेर्दशायांकुश
लोमनुष्यः ९ अथांतर्दशाफलानि ॥ तत्रसूर्यांतर्दशाफलं रवेरंतरोदेवपूज्योथ
देवतथाचंद्रभौमौशुभौस्तस्तथैव रिपोर्भीतिमर्थस्यहानिंसदैवप्रकुर्वंतिचान्येवि
योगंतथैव १० अथचंद्रांतर्दशाफ- रजनिनाथदशांतरगायदारविजराहुमही
सुतकेतवः भवतिनैवसुखंखलुसंतिवैविजयलाभसुखानितथेतरे १ अथभौ
मांतर्दशाफलं दिवाकरश्चापिनिशाकरश्चजीवोपिशंभूमिसुतांतरस्थः ॥
करोतिनित्यंवहुकष्टमन्येरिपोर्भयंवित्तविनाशनंच २ ॥

दशाहोवे तव शत्रुभय और धनक्षय और वियोग होताहै १० ॥
अव चंद्रमाकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं यद चंद्रमाकी दशामें शनि और राहु और मंगल
और केतुकी अंतर्दशाहोवे तव निश्चयकरके दुःख होताहै और सूर्य और बुध और गुरु औ
र शुक्रकी अंतर्दशा होवे तव विजय और लाभ और सुख होतेहैं १ और मंगलकी दशामें अंतर्दशा
का फल कहतेहैं मंगलकी दशामें सूर्यकी और चंद्रमाकी और बृहस्पतिकी अंतर्दशा शुभ फलको
करतीहै और इन्हों तीनग्रहोंके विना अन्यग्रहकी अंतर्दशावहुत कष्ट और शत्रुभय और धननाश
करतिहै २

अब राहुकीदशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं राहुकी दशामें अंतर्दशा यद बृहस्पतिकी होवे अथवा शुक्रकी अथवा बुधकी होवे तव नित्यप्रति सुख और धनकी प्राप्ति और बहुत प्रकारके राजासंमान होताहै और राहुकी दशामें मंगल और राहुकेतु और चंद्रमा और सूर्य औरशनिकी अंतर्दशा होवे तव दुःख और वियोग और मृत्युकाभय और धनका नाश कर्त्तेहैं ४ अब जीवकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं बृहस्पतिकी दशामेंबृहस्पतिकी और बुधकी और सूर्यकी और मंगलकी और चंद्रमाको अंतर्दशा सुख और धन धान्यकी वृद्धि कर्त्तीहै और अन्यग्रहोंकी अंतर्दशा दुःखको देतीहै ५ अब शनिकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं शनिकी दशामें बुध और

अथराहोरंतर्दशाफ० ॥ राहोरंतर्दशायांयदिभवतिगुरुर्भार्गवोवाबुधश्च नित्यंसौख्यंधनाप्तिंवितरतिबहुधाराजमानंचधत्ते ॥ भौमोराहुश्चकेतुर्विधुरथचरविर्मंदगामीतथैवसर्वेदुःखंवियोगंमरणमथभयंद्रव्यहानिंचदद्युः ॥ ४ ॥ अथजीवांतर्दशाफ० वाचस्पतेरंतरगोगुरुश्चेद्बुधोरविर्भूमिसुतस्तथेन्दुः करोतिसौख्यंधनधान्यवृद्धिंदद्युःसदादुःखमतःपरेये ५ अथशन्यंतर्दशाफ० शनैश्चरस्यांतरगोबुधश्चेद्गुरुःकविश्चैवशुभंददाति शेषाश्चसर्वेबहुदेहपीडांरिपोर्भयंबुद्धिविनाशनंच ६ अथबुधांतर्दशाफ० चंद्रात्मजस्यांतरगोहिभौमेंदुश्चकेतुश्चससैंहिकेयः शुभप्रदानैवशुभप्रदोर्कोरविर्गुरुर्दैत्यगुरुर्बुधश्च ७ अथकेतोरंतर्दशाफ० केतोरंतर्दशायांभवतिचशुभदोदेवपूज्यःसदैकःकेतुःशुक्रार्किसूनूरविरपिसततंसैंहिकेयोबुधश्च एतेदुःखंचशोकंनृपतिभयमथोद्रव्यहानिंविदेशंनित्यंकुर्वंतिचद्राजनयातिचसुखदुःखसंमिश्रितंच ८

बृहस्पति और शुक्रकी अंतर्दशा शुभ होतीहै और अन्यग्रहोंकी अंतर्दशामें बहुत देहपीडा और भय और बुद्धिकानाश होताहै ६ अब बुधकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं बुधकी दशामें मंगल और चंद्रमा और केतु राहुकीअंतर्दशा शुभनहि होतीहै और शनि और सूर्य और गुरु और शुक्र और बुधकी अंतर्दशाशुभ होतीहै ७, अबकेतुकी दशामें अंतर्दशाका फल कहतेहैं केतुकी दशामें एकबृहस्पतिकी दशा शुभहोतीहै और केतु औरशुक्र और राहु और बुधऔरशनि और सूर्य इह छै ग्रहको अंतर्दशादुःख शोक और राजाका भय और धनकी हानि देतीहैं और चंद्रमाकी अंतर्दशा दुःखकरके संयुक्त सुखको देतीहै अर्थान्मध्य फलकर्त्तीहै ८

अब शुक्रकी दशामें अंतर्दशाकाफल कहतेहैं ॥ यदशुक्रकीदशा मेंबृहस्पतिकी अंतर्दशा और शुक्र
की और बुधकी और शनिकीहोवे तत्र शुभफल होताहै और अन्यग्रहकी अंतर्दशामें धनकी
हानि औरलडाई और रोगवृद्धि होतीहै और राजाका भय होताहै १ अब रुद्रयामलोक्तयोगिनीद
शाका विचार कहतेहैं ॥ आठ योगिनीप्रसिद्धकीहैंहै मंगला १ पिंगला २ धन्या ३ भ्रामरी ४ भद्रा
५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ इह आठोंके नामहैं १ और इन्होंके स्वामीग्रह यौशिवशास्त्र
मेंकहेहैं सो कहतेहैंमंगलाकास्वामी चंद्रमा और पिंगलाका सूर्य और धन्याका बृहस्पति और
भ्रामरीका मंगल और भद्राका बुध और उल्काका शनिऔर सिद्धाका शुक्रऔर संकटाके स्वा
मीराहुकेतु कहेहै २ और अश्विन्यादि नक्षत्रसे लेकरके जन्मनक्षत्रजितनी संख्याका होवे तिसमें
तीन ३ और मिलावेऔर आठसे भागलेकरके यो शेष रहे सो मंगलासे लेकरकेदशाहोतीहै
३ और मंगलासे लेकरके एक वर्षकीवृद्धिकरके दशावर्ष होतेहैं जैसे मंगला वर्षएक १ पिंग

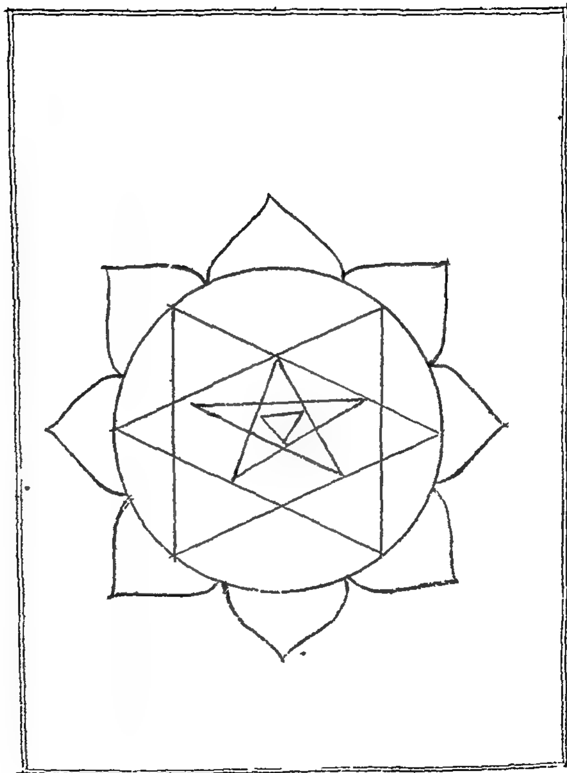
अथशुक्रांतर्दशाफलम् ॥ यदांतरंदैत्यगुरोर्गुरुर्भवेच्छुभंतथाशुक्रबुधार्किभिस्तथा
अर्थस्यहानिंकलहंचरोगंकुर्वंतिचान्येनृपतेर्भयंच १ अथरुद्रयामलोक्तयोगिनी
दशाविचारः योगिन्योष्टौसमाख्यातामंगलापिंगलातथा धन्याचभ्रामरीभद्रा
चोल्कासिद्धाचसंकटा १ चंद्रःसूर्योगुरुर्भौमोबुधोमंद कविस्तमःग्रहास्तासांविनि
र्दिष्टा क्रमेणैतेगिवागमे २ जन्मर्क्षंत्रियुतंकृत्वावसुभिर्भागमाहरेत् शेषेतुप्रथमा
ज्ञेयाह्यातोन्याक्रमशोमता ३ एकाभिवृद्ध्यावर्षाणिमंगलाप्रमुखासुचप्रथमायांर
सैर्वेदपंचघचगुणयेत्पुनः ४ गताभिभस्यनाडीभिर्गुणयित्वातुतैर्दिनैर्विहीनासाप्रक
त्वैव्यास्फुटाचैवभवेद्ध्रुवम् ५ अन्यायथोक्तवर्ल्लेख्या फलंतासांप्रचक्ष्यते मंगला
मंगलंसर्वंकुरुतेपिंगलारुजम् ६ धन्याधनंसुहृत्सौरयंभ्रामरीभ्रमणंव्यथांभद्रा
कासुखदाचोल्काधनराज्यापहारिणी ७ सिद्धाचसाधयेत्कार्यंसंकटाव्याधिमृत्युदा
दशांतुदशयाहन्यात्षट्त्रिंशद्भागमाहरेत् ८

ला दो २ इत्यादिक्रमसे अब प्रथमदशाकाभुक्तभोग्य कहतेहैं प्रथमदशाके वर्षांकोंछै ६ करके
गुणे ४ और तिसअंककरके नक्षत्रकी भुक्तघडियोंको गुणे तब दशाकेभुक्तदिन होतेहैंतिन्होंदिनोंकरके
वर्तमान दशावर्षोमेंघटायदेवेतव जन्मकालमें सो दशा भोग्य होतीहै शेषहोतीहै निश्चयकरके ५
और पूर्व दशाकाभोग्य लिखे और तिसके आगेकिया दशा यथावर्षांककेलिखे औरतिन्होंकाफ
लकहे ॥ मंगला दशामें संपूर्ण मंगल कार्य होतेहै पिंगला रोगका भय कर्तीहै ६ और धन्या
धन और मित्राको सुख कर्तीहै और भ्रमरी भ्रमण पीडा कर्तीहै और भद्रासुखको देतीहै
और उल्काधनका राज्यका नाश कर्ताहै ७ और सिद्धा कार्यसिद्ध कर्तीहैऔर संकटा व्याधि
और मृत्युका देतीहै अब अनंदशाका आनयन कहतेहैं जिसदशामें अंतर्दशा देखी चाहे तिस
के वर्षांककरके दशाकेवर्षांको गुणे और छित्रों ३६ से भागलेवे ८

और जो लब्धहोवैसो तिसको दशामेंवर्षहोतेहैं और यो शेषांकरहै तिसको तीनसे भागलेवे लब्ध मासहोतेहैं और जोशेष रहै तिसको दशगुणकरे तबदिन होतेहैं ९ इस प्रकारककै मंगलादिदशों की अंतर्दशा बनावै और अंतर्दशाके फल ग्रंथके अनुसार कहतेहैं १० मंगलादशाके अंतर धन्या और भद्रा औरमंगला औरसिद्धा इहनित्यप्रतिशुभदेतीयांहै और शेषदशामेंमंगलाकेअंतर अशुभ कर्त्ताहै और पिंगला दशामेंअंतर पिंगला ११ और धन्या और भद्रा और मंगला शुभहैं और सिद्धा समहै और शेषकीदशा अशुभहै और धन्याकेमध्यम धन्या शुभहै १२ और भद्रा सिद्धा और मंगला शुभ होतीहैं और अन्यदशा अशुभफलकर्त्ताहैं और भ्रामरी दशा मे अंतर्गत मंगला और सिद्धा और धन्या शुभ कारकहैं १३ और भद्रा दशामध्यम फल कर्त्ताहै और इन्होंसे अन्यदशा दुःखको देनेवालीहोतीहैं और भद्रादशाके अंतर्गत संकटा और उल्का

लब्धाकैवत्सराज्ञेयामासास्त्रिहतशेषके ततोदशगुणेशेषेजायतेदिवसाइह ९
एवमंतर्दशाःकार्यामंगलाप्रमुखाःक्रमात् फलानितत्प्रवक्ष्यामितासांग्रंथानुसारतः
१० मंगलांतर्गताधन्याभद्रासिद्धाचमंगलाशुभदाह्यशुभाःशेषाःपिंगलायांतुपिंगला ११
धन्याभद्रामंगलाचशुभाःसिद्धासमामताशेषाह्यशुभदाज्ञेयाधन्याधन्यास्वयंमध्यगा १२
भद्रासिद्धामंगलाचशुभाह्यन्याःशुभप्रदाः ॥ भ्रामर्यांमंगलासिद्धाधन्याचशु
भकारकाः १३ मध्यमाभद्रिकाज्ञेयापरादुःखप्रदामताः ॥ भद्रायांसंकटाचो
ल्काहुष्टामध्याचभ्रामरी १४ अन्याःशुभप्रदोज्ञेयाउल्कायांमंगलागता ॥
समदुःखप्रदाःशेषाःसिद्धायांमंगलाशुभा ॥ १५ ॥ धन्याभद्रातथासिद्धापराः
कष्टकरीमताः ॥ संकटायांशुभासिद्धासमाभद्रापराहिताः ॥ १६ ॥
निजभवनसमुत्थस्वोच्चमित्रारिनीचैर्जनितमखिलयोगैर्भावदृष्ट्यादिजातं
सकलफलसमूहंसंप्रगृह्यात्रविद्वान्वदतुजनुषिकिंचिद्वर्षप्रश्नोदयेपि ॥ १७

दुष्ट फलकर्त्ताहैं और भ्रामरी मध्यम फल कर्त्ताहै १४ और दशा शुभफल कर्त्ताहैं और उल्का दशामें मंगला मध्यम फल कर्त्ताहै और सब दुःखफल देतीहैं ॥ और सिद्धादशाके अंतर्गत मंगला शुभ होतीहै १५ और धन्या और भद्रा और सिद्धा शुभ होतीहैं और इन्होंसेअन्यदशा दुःखको देतीहैं ॥ और संकटा दशाके अंतर्गत सिद्धा शुभ होतीहै और भद्रा मध्यम होतीहै और अन्यदशा अशुभ होतीहैं १६ और कहतेहैं पूर्वकहे जोदशाके स्वामी ग्रह सो अपने क्षेत्रमें वा अपने उच्च में वा मित्रादि राशिमें अथवा शत्रुनीचादि राशिमें स्थित होवें और शुभाशुभ ग्रहोंकरके युक्त और दृष्ट होवें तब विद्वान् संपूर्णफलको विचारकरैजन्मकालमें फलकहै और वर्षप्रवेशकालमें और प्रश्न कालमें भीफलकहै १७



जैसेविष्णुके पूजनसे संपूर्णदेवता प्रसन्नहोतेहै तैसे
अब योगिनीदशाकी पूजाका विधान कहतेहैं ॥ जैसेविष्णुके पूजनसे योगिनीयां प्रसन्न होतीयांहै और तिसकावंशभी
हियोगिनीयोंकेस्वामीपूर्वकहेजोग्रह तिनके पूजनसे योगिनीयां प्रसन्न होतीयांहै १ और रुद्रोक्त जो मंत्र मृत्युंजयादिहै
अयकर्के होताहै अयसे शिवजीने पार्वतीके आगे कहाहै १ और रुद्रोक्त जो मंत्र यथा शक्तिसे जपकरे और योगिनीकाचित्तमें ध्यान धरे
तिसका हजार १००० वा लक्ष १००००० यथा शक्तिसे जपकरे और रक्तचंदनादि रक्तवस्तु मिलायकर्के होम करे और
और जपके दशमांशकर्के अन्न घृत दुग्ध मधु और रक्तचंदनादि रक्तवस्तु मिलायकर्के होम करे और
ब्राह्मणोंको भोजनदेवे २ इसप्रकारकर्केहि आगे कहेजो योगियोंके मं
तिनमें जोविरुद्धदशाहोवे तिसके मंत्रको जपकरे और विधिपूर्वक
हवनादि करे सो सातदिनमें दशहजारविघ्नोंकोबी शीघ्रदूर करदे
ताहै ॥ अथवा नित्यप्रति मंत्रबीजोंकर्के युक्त योगिनीयंत्रका पूजनकर्के
अपने पासजो रखताहै तिसके शत्रु निर्बल होतेहै और लक्ष्मी घरमें

अथयोगिनीदशापूजाविधानम् ॥ हरौपूजितेसर्वदेवाःसुतुष्टास्तथास्वर्चिताः
स्वस्वखेटानवापि ॥ प्रसन्नाभवेयुर्ध्रुवंतस्यवंशःशिवेनोक्तमेतच्छिवायाःपुर
स्तात् ॥ १ ॥ श्रीरुद्रोक्तमनुसहस्रमथवालक्षंजपेद्योगिनीध्यानंचेतसिसंविधा
यदशांशहोमंपद्वस्तुभिः ॥ अन्नदुग्धघृतैस्तथामधुयुतैरक्तैस्तथावस्तुभिर्हुत्वा
तद्दशांशतर्पणंविधाविप्रास्तथाभोजयेत् २ एवंयश्चविरुद्धयोगिनिमनुंजप्त्वा
विधिःपूर्वकंविघ्नानामयुतंचसप्तदिवसैर्दूरीकरोत्याशुच ॥ नित्यंयोगिनिमंत्र
बीजसहितंयंत्रंप्रपूज्याथवापार्श्वेरक्षतितस्यशत्रुरबलालक्ष्मीःस्थिरावेश्मनि॥ ३
त्रिकोणंततःपंचकोणंसमुक्तंततोगोमितंकोणमुक्तंतथैव ततोवर्तुलंचाष्टपत्रंविध
यमिदंयोगिनीयंत्रमुक्तंशिवेन ४ इच्छाज्ञानाक्रियांभद्रेत्रिपुकोणेपुपूजयेत् ॥
पडंगंपूजयेत्पश्चात्पश्चादष्टद
मन्मथान्पंचतदधःपंचकोणेपुपूजयेत् ॥ ५ ॥ पडंगंपूजयेत्पश्चात्पश्चादष्टद
लेपुच ॥ एवंविप्रोविधानेनपूजयित्वातुयोगिनीम् ॥ ६ ॥ यदासंकटास्याः
विरुद्धानराणांतदाजंतुभिःसंकटापूर्वगौरी ॥ प्रपूजाविधेयातथासंकटघ्नीभवे
नोक्तमेतद्भवान्याःपुरस्तात् ७ ॥

स्थिर रहताहै ३ अब यंत्रकी विधि कहतेहै ॥ प्रथम त्रिकोण लि
खे और तिसके ऊपर पंचकोण लिखे और तिस पंचकोणके ऊप
छेकोण लिखे और तिसके ऊपर वर्तुलरेखादेकर्के अष्टदल विधान करे यह योगिनीका यंत्र शि
जीने कहाहै ४ हेपार्वति त्रिकोणमें इच्छासंलेकर्के तीन शक्तियोंका पूजनकरे
और पंचकोणमें पांचकामबीजकार्लीकारका पूजनकरे ५ षट्कोणमें पूर्वदिशासेलेकर्केह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः
बीजोंकापूजन करे और इनमें स्वाहाकाग्दोवर्णमिलायकर्के अष्टदलोंमेंपूजन करे यह यंत्रपूजनवि
हिहै ६ औरकहतेहै जब जिन्होंमनुष्योंको संकटा विरुद्धदशा वर्तमान होवे तिन्होंने संकटानाम
क पार्वतीका पूजन करणा योग्यहै तैसे करणेसे पार्वतीसंकटके हरणेवालीहोतीहै अयसे
जीने पार्वतीके आगेकहाहै ७

और इसीप्रकार जब उल्काविरुद्धदशा होवे तब मनुष्योंनेंज्वालामुखीसर्वदाकाल पूजने योग्यहैं दुःखकीशांतिकेवास्तेइसमेंसंशयनहिहै ८ इतिश्रीजातकखंडेभाषायांविंशतितमोध्यायः २० अब निर्याणाध्यायका व्याख्यानकरतेहैंहोराप्रदीपमें सूर्यसेलेकर्के शनिपर्यंतयोग्रहअष्टमस्थानमेंस्थित होवेसो क्रमकर्केअग्नि और जलऔरशस्त्रऔरज्वरऔर छर्दरोगऔर तृषाऔर क्षुधासें मृत्युकर्त्ताहै और अष्टम स्थानमें कोई ग्रह स्थित नहिहोवे तब योग्रह बलवान् अष्टमस्थानको देखे तिसके दोषकर्के मृत्युक हैऔर बलयुक्तपूर्णदृष्टिकर्के कोई ग्रह नहिदेखता होवे तब अष्टम भावगतयोद्रेष्काण तिसके स्वा

एवमुल्काविरुद्धास्यान्नरैर्ज्वालामुखीसदा ॥ पूजनीयाप्रयत्नेनदुःखशान्त्यै नसंशयः ॥ ८ ॥ अथमंगलामंत्रः ॥ ह्रींमंगलेमंगलालयेस्वाहा ११ अथपिंगलामंत्रः ॥ ऐंपिंगलेवैरिवारिणिप्रसीदफट् १२ अथध न्यामंत्रः ॥ श्रींधनदेधन्येस्वाहा ८ अथभ्रामरीमंत्रः क्लींभ्रामरिजगतामधी श्वरिभ्रामयक्लीं १६ अथभद्रामंत्रः ब्लुंभद्रेकेममभद्रंदेहिपरभद्राणिनाशयना शयस्वाहा २४ अथोल्कामंत्रः ॐउल्केममरोगंनाशयभंजय १३ अथसिद्धा मंत्रः ॥ ह्रींसिद्धेसर्वमानसंसाधयसाधयस्वाहा १७ अथसंकटामंत्रः ॥ ब्लुंक्रींक्रींसंकटेमरोगंनाशयनाशयब्लुंक्रींह्रीं १८ इतियोगिनीदशापूजनविधानम् इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधे जातकखंडेदशांतर्दशाफलाध्यायोविंशः २० ॥ अथनिर्याणाध्यायोव्याख्या यते होराप्रदीपे वन्ह्यंब्वायुधतोज्वरामयतृषाक्षुत्तोकमुख्यैर्मृतिं रंध्रस्थैःसबलेक्ष काद्यनिधनेवारंध्रपात्रिंशपात् पित्ताद्वातकफाद्यपित्ततइहत्रिभ्यःकफाद्यानिलश्ले ष्मभ्यांमरुतोकितःसमधनुः छिद्रांगकेकोपतः १ छिद्रेशस्वभगेचरेतीर्थमरणं ग्नेशयुक्तेतथा जीवाढ्येचासितान्वितेप्यथचरेछिद्रेन्यदेशेविपत् ॥ पष्ठाष्टस्थबु धारयोर्यदितदाचौरोस्यपादौकरौ नरयेतांखसुखस्थसूर्यकुजयोःशैलाग्रपाताद्वधः २

मोके दोषसें मृत्यु कहे द्रेष्काणेश सूर्यहोवे तब पित्तकर्के चंद्रमा होवे तब वातकफसें मंगल होवे तब पित्तकर्के बुध होवे तब कफ पित्तवात तीन दोषोंसें बृहस्पति होवे तब कफवायुकर्के और शुक्र होवे तब श्लेष्मकर्के और शनि द्रेष्काणकास्वामीहोवे तब वायुकर्केमृत्यु होतीहै और अष्टम भावमें गतयो राशि तिसके कोपसें रोगोत्पन्न होताहै १ और अष्टमेश स्वलग्नमें स्थित होवे तब तीर्थमें होतीहै और लग्नेश कर्के वा बृहस्पतिवा शुक्र कर्के युक्त होवे तब तीर्थमें मृत्युहोतीहै और अ चरराशि होवे तब विदेशमें मृत्युहोतीहै और छटे और आठमे स्थानमें बुधमंगल दोनों य तिसके हाथ और पैर चोरकाटतेहैं और दशमचतुर्थ स्थानमें सूर्य मंगल स्थित हो गिरकर्के मरताहै २

और जिसके जन्मकालमें सूर्यकी राशिमें शनैश्चर स्थित होवे और मंगलकी राशिमें बृहस्पति स्थित होवे और पापग्रहकरके युक्त होवे तब तिसकी भुजाका छेदन होवाहै और शत्रुकी राशिमें शनि होवे और पापग्रहकरके युक्त होवे और शत्रुग्रहकरके दृष्ट होवे तब तिसका शस्त्रसे मृत्यु होताहै और कर्कराशिमें राहु और सिंहराशिमें चंद्रमा स्थित होवे वा अष्टमस्थानमें होवे तब तिसका शिरछेद होताहै और शुभग्रहकी दृष्टिसे रहित चंद्रमा शत्रुकी राशिमें होवे तब तिसके नेत्रका नाश होताहै और शनि और पापग्रहकी राशिमें स्थित चंद्रमा सूर्य मंगलकरके दृष्ट होवे तब ब्रह्मघाती होताहै और मेष वृष मिथुन राशिमें ग्रह होवे और पापग्रहकरके युक्त होवे तब निश्चयकरके गोहत्या वाला होताहै और शुभग्रह शत्रुकी राशिमें स्थित छठे आठवें बारहवें स्थानमें स्थित होवे और पापग्रह करके मरताहै ४ और सिंह राशिमें ग्रह कर्क युक्त मंगल शत्रुकी राशिमें स्थित होवे तब सर्पदंशकरके मृत्युको प्राप्त होताहै और राहुकरके युक्त चंद्रमा होवे तब पशुसे मरताहै और राहु कर्कराशिमें वा कर्कराशिमें सप्तम और अष्टमस्थानमें राहुकरके युक्त चंद्रमा होवे तब पशुसे मरताहै

सूर्यर्क्षे रविजे कुजर्क्षे जगुरौ नापापयुक्ते भुजच्छेदो थारिगृहे शनिः सितयुतो वैरीक्षि तो ध्रियकः ॥ कर्कगो हरिगे विधुर्जतताष्टौ छिद्रा हनो कर्तनक सद्दृग्घीनो विधुश्च शत्रुगृहग पापत्रयाढ्येक्षितः ॥ सूर्यारेक्षितपापराशिगविधौ स्याद्ब्रह्मघाती पुनर्मेदादयखलु गोवधी त्रितयक १ । २ । ३ जाच्छलघात खगः सौम्यशत्रुगृहे रवीक्षितयुते षष्ठाष्टमान्त्ये जननाशः शत्रुयुतकुजारिपुगृहछिद्रे हि जिह्वान्मृतिः ४ सिंहकार्किणि सप्तमाष्टमविधौ सागो विनश्येत् पशोः मागोसारिगृहे शनौ रिपु दृष्टायुक्ते तिपापैर्मृत ॥ कर्कटोसशनौ शुभग्रहदृशा हानेतु खजो भवेत् भा नौ धर्मगते शशीक्षितयुत शत्रोर्गृहे सर्पत ५ मानावल्याम् ॥ कन्यास्थयो रिनेंद्वो पापेक्षितयोर्मृति स्वजनात् ॥ उभयोरथार्कशनिनोर्यदा तदा तोयमज्ज नत ६ मृत्युर्जलाद्दृष्टेन्मंदे कुलीरमकरे विधौ ॥ सवन्हि शस्त्रजश्चंद्रे कुजर्क्षे पापमध्यगे ७ कन्यायां पापमध्यस्थे चंद्रे रक्तोत्थशोफजा ॥ शस्त्राग्निपात् योमृत्युः पापांशे सारभो वधी ८

और कर्कराशिमें शनि चं- राशि लग्नमें स्थित होवे और शत्रुकरके दृष्ट होवे तब पापकरके मरताहै और कर्क राशिमें शनि स्थित होवे और शत्रुकरके दृष्ट होवे तब लड़ाई करके मरताहै और शनि युक्त चंद्रमा स्थित होवे और शुभग्रहकी दृष्टिकरके रहित होवे तब सर्पसे मरताहै ५ शत्रुकी राशिमें नवम स्थानमें सूर्य स्थित होवे और चंद्रमा करके दृष्ट युक्त होवे तब सर्पसे मरताहै और सूर्य चंद्रमा दोनों पापी ग्रहोंकरके दृष्ट सारावलीमें कहतेहैं तिसके जन्मकालमें कन्याराशिमें स्थित सूर्य चंद्रमा पापग्रहकरके देखे होवे तदा अपने सम्बन्धि और जलमें डूबनसे मृत्यु होताहै ६ और जिसके जन्मकालमें कर्कराशिमें शनि, और मकरराशिमें चंद्रमा स्थित होवे तब जलमें मृत्यु कहे और मेष और वृश्चिक राशिमें पापग्रह चंद्रमा होवे तब अग्निशस्त्रकरके मृत्यु कहे ७ और जिसके जन्मकालमें कन्याराशि गत चंद्रमा पापी ग्रहोंके मध्यमें स्थित होवे तब रक्तशोष रोगमें मृत्यु होताहै और पापीग्रहके नवांशगत मकर और कुंभराशिमें चंद्रमा स्थित होवे तब शस्त्रकरके और अग्निकरके मृत्यु होताहै ८

और नवम और पंचम स्थानमें स्थित चंद्रमाको शुभग्रह नहि देखते होवे तब वनमें मृत्युहोताहै १ और अष्टमभावके द्रेष्काणकास्वामी और पापग्रह चंद्रमाभि अष्टम स्थितहोवे तबभी वनमें मरताहै और पापग्रहकर्के युक्त चंद्रमा सप्तममें स्थितहोवे और मीनराशिलग्नमें सूर्यहोवे और मेषराशिमें शुक्रहोवे तब स्त्रीके निमित्त गृहमें मरताहै १० और चतुर्थस्थानमें मंगल अथवा दशम स्थानमें शनिहोवे तब शूलीकर्के विद्ध मृत्युको प्राप्तहोताहै और क्षीणचंद्रमा कर्के युक्त पापग्रह नवम पंचममें वा एकादशमें स्थित होवे तब वी शूलीकर्के मरताहै ११

और जिसके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें मंगल वा शनि स्थित होवे और दशम स्थानमें शनि, क्षीणचंद्रमा कर्के युक्त होवे और पापग्रह त्रिकोण । ९ । ५ । स्थानमें स्थित होवे तब शूलीकर्के मृत्यु होताहै ॥ १२ ॥ और चतुर्थस्थानमें सूर्य और दशमस्थानमें भौम क्षीणचंद्रमा कर्के युक्त होवे, और शनि कर्के दृष्ट होवे तब गिरने कर्के और काष्ठसे ताडित होने कर्के मृत्यु होताहै १३ और

सौम्याद्दृष्टौ खलो धर्मधीस्थौ बंधान्मृतिः प्रदौ बंधरव्यंशेशपापाश्चहिमगोश्छिद्रगास्त था ९ सपापः शीतगो द्यूने मीनराश्युद्गमे रवौ मेषे शुक्रे गृहे तु मरणं मंदिरे भवेत् १० शूलाद्विद्धस्मृतिर्भौमे सुखे के वायमे वरे त्रिकोणायगते पापयुग्गलस्क्रांशंदुभिः ११ रौ धेसुखे थवा के वियतियमे क्षीणचंद्रसंयुक्ते पापैस्त्रिकोणलग्ने शूलप्रोतस्य निदिशे न्मरणम् १२ चतुर्थके वरेभौमे क्षीणचंद्रसमन्विते मंददृष्टे मृतिर्यातिपात काष्ठेन ताडित १३ क्षीणेंदुमंदार्ककुजेश्वरधलग्नांबुखस्थैर्लगुडाहतांगः तैः कर्मलग्ना त्मजधर्मसंस्थैर्धूमाग्निमृत्युर्गतिकुटनांग १४ सुखास्तखस्थै कुजसूर्यमंदैर्मृत्यु स्तुशस्त्रानलभूपकोपात् — तथानतोत्थकामितोंगपातामंदेंदुभौमैर्धनवधुख स्थैः १५ सूर्यंवरे सुखे भौमे मृत्युर्यानप्रपाततः स्यत्रोल्मीढुनयाद्यूने भौमे खेडस्त = वंधुगे १६ बलान्वितरवीक्षितेक्रथविधौमृतौशनौ कमिक्षताद्गुदामयान्मृतिश्च शस्त्रदाहजा १७

क्षीणचंद्र और शनि और सूर्य और मंगल इह चार ग्रह क्रमकर्के ॥ ८ । ४ । १ । १० । स्थानोंमें स्थित होवे तब लाठी कर्के हत होताहै और क्षीणचंद्र और शनि और सूर्य और भौम ॥ १० । ७ । ५ ॥ ९ ॥ स्थानोंमें क्रम कर्के स्थित होवे तब धूमाग्निकर्के मृत्यु होताहै ॥ १४ ॥ और मंगल और सूर्य और शनि क्रम कर्के । ४ । ७ । १० । स्थानोंमें स्थित होवे तब क्रमसे शस्त्रोंकर्के और राजाके कोपकर्के मृत्यु होताहै और शनि और चंद्रमा और मंगल । २ । ४ । १० । स्थानमें स्थित होवे तब मुखमें उत्पन्न हवी होतेहैं तिस दोष कर्के मरताहै । १५ । और दशमस्थानमें सूर्य और चतुर्थमें भौम स्थित होवे तब वाहनसे डिगकर्के मरताहै और सप्तम और दशमें स्थानमें मंगल और सप्तम चतुर्थ स्थानमें बुधस्थितहोवे तब यंत्रमें पीडितहोनेकर्के मरताहै १६ और जिसके जन्मकालमें क्षीणचंद्रमाको बलकर्युक्तसूर्य देखे और अष्टमस्थानमें शनि स्थितहोवे तब कृमिकर्के गुदाके रोगसें मरताहै १७

श्रौरजिसकेजन्मकालमें मंगल श्रौर सूर्यसप्तमस्थानमेंस्थितहोवेश्रौर शनिअष्टमस्थानमें स्थितहोवे श्रौर चतुर्थ स्थानमें क्षीणचंद्रमास्थितहोवे तवपक्षिकृतमृत्युकोप्राप्तहोताहै १८ श्रौर लग्न श्रौर पंचम श्रौरअष्टम श्रौर नवमस्थानोंमेंक्रमकर्के सूर्य श्रौर शनिश्रौर भौम श्रौरचंद्रमास्थितहोवें तव पर्वतश्रौरकपाटके गिरनेसेवाविजलीके गिरनेसे मृत्युहोताहै १९ श्रौरलग्नकेनवांशकास्वामीजिसराशिमें स्थितहोवे तेसी भूमिमेंजेसे लग्ननवांशेशगतमेषराशिश्चेत्तदाअजाविप्रदेशभूमौवृषभराशिश्चेत्तदावृषभप्रचार भूमौ मिथुनश्चेत्तदा गृहे कर्कश्चेत्तदा कूपे सिंहश्चेत्तदा वने कन्याचेत्तदा कूपे तुलाचेत्तदा हट्टायां वृश्चिकश्चेत्तदा गर्त्ते धन्वीचेत्तदा ऽश्वप्रचारभूमौ मकरश्चेत्तदा कूपे कुंभश्चेत्तदा गृहे मीनश्चेत्तदा कूपे इति श्रौर जिनका जन्मदेशमें मृत्युयोग होवे तिनका तिसीस्थानमें कहे केवल राशिदोशिव प्रदेशमें नहि कहे श्रौर ग्रहयोग श्रौर ग्रह दृष्टिसे कल्पनाकर्के मरण कालमेंसंपूर्ण शुद्धाशुद्ध भूमि श्रौर पुत्री सरपा समीपवर्ती कहे श्रौर जन्मलग्नमें जितने नवांश शेष होवें उतनीघडियोंकर्के मूर्छाहोयकर्के श्रौर लग्नका

॥ १८ ॥ पातालशीतरश्मौ गगनमृत्युःपक्षिकृतो भौमचभास्करद्युनरध्रसस्थशनैश्चरे ॥ पातालशीतगौक्षीणगमृत्युःपक्षिकृतो भवेत ॥ १८ ॥ लग्नधीमृत्युधर्मेषुसूर्यमंदकुजदुभिः स्मृतिभवतिशैलाग्रकुड्याशनिनिपातत: १९ तनुनवमलवेशयुक्तभूमाग्रहयोगेक्षणतःप्रकल्प्यमन्यत् मरणनुदिताशतुल्यमोहोद्विगुणपृथगीशसौम्यदृष्ट्या २० अथद्रेष्काणफलमपिहोराप्रदीपे द्रेष्काणःकारणमृत्योद्वाविंशोहिविलग्नतः नस्येश्वरोभनाथोवासूचयेत्स्वगुणैर्मृतिम् २१ वादरायणः मेषाद्यद्रेष्काणेलग्नस्थेक्रूरवीक्षितमृत्युः ॥ वृश्चिककीटकसर्पोद्विप्रदावीःपित्तरोगैर्वा ॥ २२ ॥ श्राद्विनैकाद्यैर्वामृत्युर्जलजैर्द्वितीयद्रेष्काणे एवतृतीयभागेतडागवापीप्रपाता द्वा २३ वृषभाद्यद्रेष्काणेतुरगखरोष्ट्रैर्मृत्युर्भवतिपुंसां पित्तादनलाच्चौरादजा विनोवाद्वितीयोत्र २४

स्वामी श्रौर शुभग्रह देखते होवें तव द्विगुणित श्रौर त्रिगुणित काल मूर्छागत होयकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २० ॥ श्रव होराप्रदीपमें द्रेष्काणका फल कहतेहैं जन्मलग्नमें द्वाविंश ॥ २२ संख्याका जो द्रेष्काणहै सो मृत्युका कारणहै श्रर्थात् तिसद्रेष्काण राशिका स्वामी वा श्रष्टमेश दोनोंमें यो वली होवे तिसके दोषकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ श्रौर वादरायण कहताहै जिसके जन्मकालमें मेषका प्रथम द्रेष्काण लग्नमें स्थित होवे श्रौर क्रूर ग्रह कर्के दृष्ट होवे तव वृश्चिक श्रौर सर्पादिकोंकर्के वा पित्तरोगोंकर्के मरताहै २२ श्रौर मेषका दूसरा द्रेष्काण लग्नमें होवे तव जलों कर्के श्रौर जलमेंजीवों कर्के नौकादियों कर्के मृत्यु होताहै श्रौर मेषका तीसरा द्रेष्काण लग्नमें स्थित होवे तव तडागमें वा बावडी श्रौर कूएमें गिरने कर्के मरताहै २३ श्रौर वृष लग्नके प्रथम द्रेष्काणमें घोडे ॥ गधे ॥ ऊंठ इनोंकर्के मृत्यु प्राप्त होताहै श्रौर वृषके दूसरे द्रेष्काणमें जन्मेंतोपित्तसेंश्रौरअग्निसेंश्रौरचोरोंसेंवाबकरोंभेडकर्के मरताहै २४

और वृषके तीसरे द्रेष्काणमें वाहनसे गिरके वा युद्धमें मरताहै और मिथुनके प्रथम द्रेष्काणमें जनोंको गलेके रोगकरके कास श्वास कफके रोगकरके मरताहै २५ और मिथुनके दूसरे द्रेष्काणमें पक्षी और बैल करके वा ऊंचे स्थानसे डिगनेसे मरताहै और मिथुनके तीसरे द्रेष्काणमें चतुष्पदसे गिरके वा वनके मध्यमें मरताहै २६ और कर्कके प्रथम द्रेष्काणमें गलरोगकरके अथवा शस्त्रसे मरताहै और दूसरे द्रेष्काणमें वो भी और पुरुषोंकोभी ऐसे बादरायणकहताहै २७ और कर्कके तीसरे द्रेष्काणमें अतिसारसे वा अजीर्णसे मरताहै और लिफरोग करके और वायुगोलेसे वा प्रमेहरोगसे वा मूर्छासे मृत्युको प्राप्त होताहै २८ और कर्कके मध्यद्रेष्काणमें दंडके घातसे और मुष्टिघातसे और मनुष्य करके काटनेसे और मृतके प्रसंगकरके वा स्त्रीके विवादसे मृत्युको प्राप्त होताहै २९ और सिंहके प्रथम द्रेष्काणमें विषके दोषसे और बहुत अन्नजल भक्षण करणेसे अनेक

कण्ठपानादिकस्त्रपातात्स्यामेवाम्रोतिरपिस्यात ॥ मिथुनाद्यद्रेष्काणेगलरोगःकास श्वासकफैः ॥ २५ ॥ महिषवृषभयोर्मिथुनद्वितीयद्रेष्केनिपाताद्वा तार्तीये नानिपातःचतुष्पदाद्वामतिररण्येथ ॥ २६ ॥ कर्कटकाद्येमृत्युःकंठरुजा माद्यताथवाशस्त्रात् द्रेष्काणेचद्वितीयेपुंसःस्त्रीवादरायणःप्राह २७ तत्रवचाद्य भागेमृतिरतिसारादजीर्णाद्वा प्लीहवातगुल्मरोगःप्रमेहमूर्छाभिघाताद्वा २८ तत्र वमध्यभागेदंडाभिहतस्यमुष्टिघाताद्वा उपश्लिष्टतावागताद्वाप्यामृत्युविवादाद्वा २९ सिंहाद्येद्रेष्काणेविषदोषाद्बहुचराजलाद्वापिभवतिनिमित्तमरणनानाकारैस्तथारोगैः ३० जलहृदयामयकृतोमृत्युःस्यात्सिंहेमध्यमत्र्यंशेतस्यांतेगदरोगैर्विषेणशस्त्रेणवाभवति ३१ कन्याद्येचोरानलपक्षिभिरथवाशिरोरोगात् दुर्गाद्दष्टिवर्गस्तृपयाभिमृताद्वि तीयेशे ३२ सारावल्यां करभखरशस्त्रतोयाद्विषपाशात्स्त्रीकृतान्नपानाद्वा अन्त्येक न्यात्र्यंशेनृणांमृत्युःसमादिष्टः ३३ आद्येतुलाद्रेष्काणेगनाचतुष्पदानिपाततोमृत्युःजठ रामयजोमध्यत्र्यंशेस्येवाजलेज्ञेयः ३४

रोगोंकरके मृत्युको प्राप्त होताहै ३० और सिंहके मध्यम द्रेष्काणमें जलकरके और हृदयके रोगकरके मृत्यु होताहै और सिंहके तीसरे द्रेष्काणमें गुदाके रोगोंकरके और विषकरके और शस्त्रकरके मृत्यु होताहै ३१ और कन्याके प्रथम द्रेष्काणमें चोरसे और अग्निसे और पक्षीसे अथवा शिरके रोगसे मृत्यु होताहै और कन्याके दूसरे द्रेष्काणमें किलेसे और सर्पकरके दंष्ट्रीजीवों करके और प्रोहणों करके और तृषा करके मृत्युको प्राप्तहोताहै ३२ और कन्याके तीसरे द्रेष्काणमें ऊंट और गधेसे और शस्त्रोंसे और जलोंसे और फासीसे और स्त्रीकरके और अन्नपानसे मृत्युको प्राप्तहोताहै ३३ और तुलाके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्रीके निमित्त और चतुष्पदसे गिरनेसे और मध्यद्रेष्काणमें जठरके रोगसे और तीसरे द्रेष्काणमें जलमें मृत्युहोताहै ३४.

ओर वृश्चिकके प्रथम द्रेष्काणमें शस्त्रकर्के ओर विषकर्के ओर स्त्रीकर्के ओर अन्नपानों कर्के मृत्युहोताहै ओर वृश्चिकके दूसरे द्रेष्काणमें कुत्तयोंसें लेकर्के जीवोंसें मरताहै ओर तीसरे द्रेष्काणमें मृगोंसें ओरहाथी ओर ऊटसें लेकर्के जीवोंसें मृत्युकों प्राप्तहोताहै ३५ ओर धनके प्रथम द्रेष्काणमें विष्टासें ओर वायुसें ओर विषसें ओर अग्निसें मरताहै ओर धनके दूसरे द्रेष्काणमें उदर रोगमें मरताहै ओर तीसरेद्रेष्काणमें जलचर जीवों कर्के वा जलकर्के मृत्युकों प्राप्तहोताहै ३६ ओर मकरके प्रथम द्रेष्काणमें शेर ओर सूरसें लेकर्के ओर हाथी कर्के मरताहै ओर मकरके मध्य द्रेष्काणमें घोडेयोंसें लेकर्के एकसफवालेसें ओर तीसरे द्रेष्काणमें शस्त्र अग्नि ओर चोरके घातसें मरताहै ३७ ओर कुंभके प्रथम द्रेष्काणमें जलजीवोंसें ओर स्त्रीकर्के ओर विष भक्षणकर्के मरताहै ओर कुंभके दूसरे द्रेष्काणमें गुदाके रोगकर्के ओर तीसरे द्रेष्काणमें चतुष्पदोंकर्के ओर मुखरोग कर्के मरताहै ३८ ओर मीनकेप्रथम द्रेष्काणमें स्त्री

अलिनिप्रथमत्र्यंशेशस्त्रविषस्त्रीकृतान्नपानैःस्यात् ॥ मध्येश्वादिभिरेणभोष्ट्रादिघातेत्र्यंत्येमृतिर्भवति ३५ चापाद्येशकृदनिलाद्विषानलान्मध्यमेत्र्यंशे ॥ जठरामयैस्तृतीयेजलजेनजलेनवामृत्युः ३६ हरिसूकरादिकरिभिर्मृतिर्मकराद्यदृकाणेस्यात् ॥ मध्येजलजैकशफादंत्यशस्त्राग्निचोरघातेन ३७ कुंभाद्येजलजस्त्रीविषमत्तैर्मरणंगुदरुजान्मध्ये अंत्येमृतिश्चतुष्पदमुखरोगैर्भवतिद्रेष्काणे ३८ मीनाद्येस्त्रीग्रहणात्प्रमेहगुल्मैरथद्वितीयेंशे अंत्येभवतिहिमरणंकुत्सितरोगान्नसंदेहः ३९ जातकोत्तमे ॥ स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशेच २ शुभवर्गे ३ थनीचभे ४ क्रूरभे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृदंश ८ के ४० वर्गोत्तमेरिभे १० व्ययेशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधाक्रमात् ॥ निर्याणंग्रहयोगाद्यैःकथ्यतेगणकोत्तमैः ४१ भक्तितोग्निप्रवेशेन १ जनह्रीतः २ प्रमादतः ३ पवनाग्नितो ४ दंभकृत्या ५ दीपनेन ६ विषादनात् ७ ॥ ४२ ॥ यंधना ८ च्चैवलोहाच्च ९ रक्तकोपा १० तथैवच क्षयकासात् ११ स्त्र्यपराधा १२ न्मृत्युर्मृत्युगतेरवौ ४३

ग्रहणके निमित्त ओर दूसरे द्रेष्काणमें प्रमेहरोगों कर्के वा गुल्म रोगोंकर्के ओर मीनके तीसरे द्रेष्काणमें नियरोगकर्के मरताहै इसमें संशय नाहिंहै ३९ ओर जातकोत्तममेंकहतेहैं सूर्यसें लेकर्के शनि पर्यंत सात ग्रहोंका अष्टम स्थान स्थित प्रत्येक ग्रहका द्वादश प्रकारका निर्याणकहाहै ४० ओर जिसके जन्मलग्नसे अष्टम स्थान स्थित सूर्य उच्चमें होवे तव भक्तिसें अग्निमें प्रवेश करणेमें ओर उच्चके नवांशमें होवे तव लोक लज्जासें ओर शुभग्रहके वर्गमें होवे तव प्रमादरोगसें ओर नीचराशिमें होवे तव वायु अग्नि सें ओर क्रूर ग्रहकी राशिमें होवे तव दंभकर्मकर्के ओर क्रूरके वर्गमें होवे तव दीपनकर्के ओर मित्रकी राशिमें होवे तव विषखानेसें ओर मित्रके नवांशमें होवे तव बंधनसें ओर वर्गोत्तममें होवे तव लोहेसें ओर शत्रुकी राशिमें होवे तव रक्तके कोपसें ओर शत्रुके नवांशमें होवे तव क्षयकास रोगसें ओर राशिमें होवे तव स्त्रीके अपराधसे मरणकों प्राप्तहोताहै ४३

॥ और चंद्रमा अष्टम स्थानमें उचका होवे तव जलमें डुबनेसें और उचके नवांशमें होवे तव हाथके घातसें और शुभवर्गमें होवे तव विजलीके पडनेसें और नीचराशिमें होवे तव स्त्रीके हाथसें और क्रूर ग्रहकी राशिमें होवे तव पित्त कफसें और क्रूर वर्गमें होवे तव त्रिदोषसें ४४ . और मित्रकी राशिमें होवे तव उदररोगसें और मित्रके नवांशमें होवेतव-गुदाके रोगसें वर्गोत्तममें होवे तव पशुयोंके पादके घातसें शत्रुराशिमें होवे तव गुदाके रोगसेंऔर शत्रुके नवांशमें होवे तव छुंगके घातसें और स्वक्षेत्रमें होवे तव क्षयरोगसें मरताहै ४५मंगलअष्टम स्थानमें उचका होवे तव युद्धसें और उचके नवांशमें होवे तव गौयोंकेंपकडनेसें और शुभवर्गमें होवेतव अपनें हाथसें और नीचराशिमें होवे तव अपनें शस्त्रसेंऔर क्रूरग्रहकीराशिमें होवे तव ब्राह्मणसें औरक्रूरग्रहके वर्गमें होवे तव पत्थरके घातसें और मित्रके क्षेत्रमें होवे तव काष्ठकेघातसें और मित्रके नवांशमें होवे तव खूहमें गिडके मरताहै ४६ और वर्गोत्तममें स्थित होके तव पर्वतसें गिरणेसें और शत्रुकी राशिमें होवे तव गुप्त दोषसें और शत्रुके

जलप्रवेशा १ द्धस्ताभिघाता २ दशनिपाततः ३ स्त्रीहस्ता ४ त्पित्तकफतो ५ दोषत्रयभवा ६ भयात् ४४ जठरा ७ द्धुदरोगाच्च ८ पशुपादाभिघाततः ९ गुदरोगा १० च्छृंगघाता ११त्क्षया १२ च्चंद्रेष्टमेमृतिः४५ संग्रामा १ द्गोग्रहणतः २ स्वहस्ता ३ न्निजशस्त्र ४ तःद्विजपार्श्वा ५ दश्मघाता६ त्काष्ठा ७ त्कूपप्रपाततः ४६भृगुपाता९द्गुप्तदोषा१० द्विषभक्षणतस्तथा११ चौरप्रैह रणा १२ द्भौमेमृत्युःस्यात् मृत्युभागगे ४७ज्वरा १ त्कफविकारेभ्योव्रणरोगा ३ द्व्रणेन ४ च महाभया५त्प्रियजनवियोगा ६ द्ददनामयात् ७४८ नेत्ररोगा द्वायुरोगा ९ द्बंधनेनो १० दरामयात् ११ पादव्रणा १२ द्बुधेमृत्युर्मृतिभावगते क्रमात् ४९ नानारोगैः १ शूलरोगैः २ कर्णरोगात्तथैवच ३ स्वजना ४द्दुष्टविकृतो ५ तिसारा ६ न्निजभृत्यतः ७ ॥ ५० ॥

नवांशमें होवे तव विषभक्षणसें अपने क्षेत्रमें होवे तव चोरके प्रहारसें मृत्युकों प्राप्त होताहै ४७ और बुध अष्टमस्थानमें उचका स्थित होवे तव ज्वरसें और उचके नवांशमें होवे तव कफके विकारोंसें और शुभग्रहके वर्गमें होवे तव फोडेके रोगसें और नीच राशिमें होवे तवबी फोडेकर्के और क्रूरकी राशिमें होवे तव वडेभयसें औरक्रूरके षड्वर्गमें होवे तव मित्रके वियोगसें और मित्रकी राशिमें होवे तव मुखरोग सें और मित्रके नवांशमें होवे तव नेत्ररोगसें और वर्गोत्तममेंहोवे तव वायुरोगसें और शत्रुकी राशिमें होवे तव वंधनसें और शत्रुके नवांशमें होवे तव उदरके रोगसें और स्वक्षेत्रमें होवे तव पादके व्रणसें मृत्युकों प्राप्त होताहै ४९ और वृहस्पति अष्टम भावमें स्थित उचराशिका होवेतव अनेक रोगों कर्के और उचके नवांशमें होवेतव शूलरोग कर्के औरशुभवर्गमें होवे तव कर्णरोगसें और नीचराशिमें होवे तव सबंधिसें और क्रूरग्रहकी राशिमेंहोवे तव दुष्टविकारसें औरक्रूरकेवर्गमेंहोवे तव अतिसाररोगसेंऔर मित्रकीराशिमेंहोवे तव अपनेचाकरसें५०

और मित्रकेनवांशमें होवे तव रक्तकोपसें और वर्गोत्तममें होवे तव अपनें हाथसे और शत्रुकी राशिमें होवे तव अपने क्रोधसें और शत्रुके नवांशमे होवे तव ऊपरके कोपसें और स्वक्षेत्रमें होवे तव वहुत भक्षण करणेसेंमृत्युकों प्राप्त होताहै ५१ शुक्रउच्चमेंस्थित होवे तव तृषाककें और उच्चके नवांशमेंहोवे तवमुखरोग ककें औरशुभवर्गमें होवे तव दंतरोगसें और नीचराशिमे होवेतव त्रिदोषसें और क्रूरकी राशिमे होवे तव विषूचिकाककें और क्रूरग्रहकेवर्गमें होवे तववनके जीवसें और मित्रक्षेत्रमे होवे तवसर्पसें और मित्रकेनवांशमें होवे तव विषभक्षणकरणेसें ५२ और वर्गोत्तममें होवे तव लूतरोगककें और शत्रुकी राशिमें होवेतव विषवालेजीवककें और शत्रुके नवांशमें होवे तव मैथुनदोषककें और स्वक्षेत्रमे होवे तव वहुतदुःखसें मृत्युकों प्राप्त होताहै ५३ और अष्टम भावमें शनि उच्चमें होवे तव क्षुधाककें और उच्चके नवांशमें होवे तव उपवास करणे ककें औरशुभवर्गमेंहोवेतवपापकर्मककें और नीचराशिमें होवे तव वंधुवर्गसें और क्रूरग्रहकी

रक्तकोपा८त्स्वकरतः९स्वकोपा१०दूर्ध्वकोपतः११वहुभक्षणतो १२ मृत्युर्जा वेस्यान्मृतिभावगे ५१ तृष्णया१मुखरोगा २ द्दंतदोषा ३ त्त्रिदोष ४ तःविषूच्या ५वनसत्वेन६ भुजंगा ७ द्विषभक्षणात् ८ ५२ लूतया ९ विषकठिन १०सुरतेत्थप्रकोपतः११वहुदुःखा१२द्भवेन्मृत्युर्मृतिभावगतेसिते५३ वुभुक्षया १ लंघनेन २ तथापापोपसेवनात् ३वंधुवर्गा ४ द्दरिकरात् ५ क्षयेण ६ पृथुयु द्धतः ५४पित्तकै८र्व्रणकोपेन९हयपादाभिघाततः१०हास्तिनः११ खरतो१२ऽट स्युर्मंदेस्यान्मृतिभावगे ५५ अर्थांतरेपि दिनकरप्रमुखैर्निधनास्थितैर्भवतिमृत्यु रिति प्रवदेत्क्रमात् अनलतोजलतःकरवालतोज्वरभवोगादितस्तृषयाक्षुधा १ स्थिरश्चरोद्व्यंगसमाह्वयश्चराशिर्यदाजन्मनिचाष्टमस्थः ॥ स्वकीयदेशेविषयांतरे चमार्गेप्रकुर्यान्मरणक्रमेण २

राशिमें होवे तव शत्रुके हाथसें और क्रूरग्रहके वर्गमें होवे तव क्षयरोगककें और मित्रक्षेत्रमें होवे तव वडेयुद्धमें५४ और मित्रके नवांशमेंहोवे तव पित्तककेंऔर वर्गोत्तममें होवे तवफोडेके कोपककें और शत्रुकीराशिमेंहोवे तव घोडेकेदुल्त्तेसें और शत्रुके नवांशमे होवे तव हाथीसें और स्वक्षेत्रमे होवे त व गधेसे मृत्युकोप्राप्तहोताहै ५५ और ग्रंथांतरमें कहतेहैं सूर्यसें लेकर ग्रह अष्टमस्थानमें स्थितहोवें तव क्रमसें अग्नि औरजल औरखड्ग औरज्वर औररोग औरतृषा औरक्षुधाकर्केमृत्युकोप्राप्तहोताहै १ और कहतेहै जिसके जन्मसमयमें स्थिर राशियां २ ५ ८ ११ इन्होंमें जो राशिअष्टमभावमें स्थित होवे तव अपने देशमें और घरमें मृत्युकोंप्राप्तहोताहै और चरराशियां १ ४ ७ १० में कोईराशि अष्टम भावमें होवे तव अन्यदेशमें मृत्युहोताहै और द्विस्वभाव राशियां ३ । ६।९ ।१२ अष्टम भावमेंहोवे तव रस्तेमें मृत्युहोताहै २

॥ और अष्टमभाव ग्रहकर्के रहित होवे तब यो ग्रहबली होवे तिसके कारणकर्के मृत्युहोताहै और बहुतग्रहबली होवें तब बहुत प्रकारकर्के मृत्युहोताहै ॥ ३ ॥ और सूर्य अष्टम होवे तब पित्तकर्के और चंद्रमाहोवे तब कफकर्के और भौमहोवे तब पित्तकर्के और बुधहोवे तब त्रिदोषकर्के और गुरुहोवें तब श्लेष्मकर्के और शुक्र होवें तब कफवायुकर्के और शनिहोवेतबवायुकर्के मृत्युहोताहैप्राचीनजातकशास्त्रकेजाननेवालेकहतेहैं ४इहोनिर्याण पुरातन मुनियोंके मतसे कहाहै और यो यवनाचार्योंनेकहाहै सो विस्तारकर्के इसग्रंथमें कहतेहैं १ अथमेषराशिगतचंद्रकृतनिर्याण जिस के जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा होवे सो धनी और पुत्रोंवाला और क्रूरस्वभाववालाऔर परोपकार में रत और संपूर्णकर्मोंमें युक्त और श्रेष्ठ स्वभाववाला और राजाकाप्यारा होताहै २ और निरंतरगुणों कर्के युक्त होताहै और देवता ब्राह्मणकों पूजने वाला होताहै थोडेगमेंभोजनके करणे वाला और ता

आयुर्ग्रहंखेटविवर्जितंचेद्विलोकयेद्वावलवान्ग्रहेंद्रः ॥ तद्धेतुजातंप्रवदंति मृत्युवहुप्रकारंवहवोवलिष्ठाः ॥ ३ ॥ पित्तकफःपित्तमथत्रिदोषःश्लेष्मानिलौवाप्यनिलःक्रमेण ॥ सूर्यादिकेभ्योमरणस्यहेतुःप्रकल्पितःप्राक्तनजातकज्ञैः ४ इतिप्रणीतंनिर्याणप्राचीनमुनिसम्मतम् यवनैरुदितंयच्चसविस्तरमथोच्यते १ अथमेषराशिगतचंद्रेनिर्याणं धनवान्पुत्रवानुग्रःपरोपकरणेरतःसर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलोराजवल्लभः २ गुणाभिरामःसततंदेवब्राह्मणपूजकः कोष्णशाकल्पभोक्ताचताम्रविस्तृतलोचनः ३ शूरःशीघ्रंप्रमादीचकामीदुर्बलजानुकःशिरोव्रणयुतोदाताकुनखीसेवकप्रियः४ द्विभार्यःसमरेभीरुश्चपलोतितरांभवेत् प्रथमेसप्तमेवर्षे त्रयोदशमितेज्वरः ५ षोडशेवासप्तदशेवर्षेस्यात्तुविषूचिका तृतीयेद्वादशेवापिजलाद्भीतिःप्रजायते ६ पंचविंशमितेवर्षेसंतानश्चनिशांधता द्वात्रिंशत्प्रमितेचैव शस्त्रघातःप्रजायते ७ कार्यारंभःप्रलापीचविदेशगमनेरतः कृशांगःशीघ्रगोमानी शुभलक्षणसंयुतः ८ वाताधिक्यःशुभैर्दृष्टेचंद्रेनवतिसंमितं आयुस्तस्यविनिर्देश्यं कार्तिकस्यासितेतरे ९

म्रवर्णके विस्तृतनेत्रों वाला होताहै ३ और शूरवीर और शीघ्रमस्तीमेंहोने वाला और कामीदुर्बलजानुवाला और शिरमें फोडयों वाला और दाता और कुनखी और सेवककाप्यारा ॥ औरदोस्त्रीयोंवाला और युद्धमें डरणे वाला और बडाचंचल होताहै और प्रथम और सप्तम और त्रयोदश वर्षमेंज्वरपीडाको प्राप्तहोताहै ५ और षोडशवर्षमें वा सप्तदशवर्षमें विषूचिकाकेभयकोंप्राप्तहोताहै और तीसरे और बारहमे वर्षमेंजलमें भयहोताहै ६ पंचविंशति २५ वर्षमेंसंतानहोताहै और [illegible] नहूाणाहोताहै और द्वात्रिंशद्वर्ष ३२ में शस्त्रका घात होताहै ७ और कार्यकाआरंभ करणे वाला और प्रलापकरणे वाला और विदेशगमनमें रत होताहै और दुर्बलअंगों वाला और शीघ्र गति वाला और शुभलक्षणों कर्के युक्त होताहै ८और वायुप्रकृति वालाहोताहै औरशुभग्रहकर्केचंद्रमादेख्याहोवेतब नव्वे वर्षआयुवाल्याहोताहै ९

और कार्तिक मासमें कृष्णपक्षमें बुधवार नवमी तिथिमें आधिरात्रिमें शिरके रोगके मृत्युको प्राप्त होताहै १० इतिमेषराशिगतचंद्रनिर्याणम् अथवृषराशिमें स्थितचंद्रमाका निर्याणकहतेहैं जिस के जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा होवे सो थोडे तेजवाला और अनम्र और कर्मशुद्धिसे रहित होताहै और सत्यवाणीवाला और धनकके युक्त और कामी और स्त्रीके वचनका अनुगामी होताहै १ और बडीआयुषावाला और थोडे केशों वाला और परोपकारमें रत और पिता और माता और गुरुकाभक्त और राजाकाप्यारा होताहै २ और सभामें चतुर होताहै ३ और सभा में चतुर और नित्यप्रति यो प्राप्त होवे तिसमें संतुष्ट होताहै और प्रथमवर्षमें पीडा और तीसरे वर्ष में अग्निका भय होताहै ३ और सप्तम वर्षमें विषूचीका भय और नवमवर्षमें पीडाहोताहै और

पक्षेबुधेनवम्यांचनिशीथेचशिरोरुजा निधनंजायतेनूनंजन्मनींदावजास्थिते १० इतिमेषराशिस्थितचंद्रकृतनिर्याणम् अथवृषराशिस्थचंद्रनिर्याणम् अल्पतेजा नरःस्तब्धःकर्मशुद्धिविवर्जितः सत्यवागर्थवान्कामीकामिनीवचनानुगः १ चिरायुरल्पकेशीचपरोपकरणेरतः पितुर्मातुर्गुरूणांचभक्तोभूपतिवल्लभः २ सभायांचतुरोनित्यंसंतुष्टोयेनकेनचित् पीडास्यात्प्रथमेवर्षेतृतीयेग्निभयंदिशेत् ३ विषूचिकाभयंविद्यात्सप्तमेनवमेव्यथा दशमेरुधिरोद्गाराद्द्वादशेपतनंतरोः ४ सर्पाच्चषोडशेभीतिःपीडाचैकोनविंशके पंचविंशमितेतोयाद्भयंभवतिनिश्चितम् ५ त्रिंशन्मितेतथापीडाद्वात्रिंशत्प्रमितेऽपिच श्लेष्मलःशांतिभाक्शूरः महिष्णुर्बुद्धिमान्नृपः ६ सौम्यग्रहेक्षितेचंद्रेपण्णावत्यब्दमेरस्यके आयुर्जेतोविनिर्देश्यमवश्यवचनात्सताम् ७ माघेमासेनवम्यांचशुक्लपक्षेभृगोर्दिने रोहिण्यांनिधनंविद्याज्जन्मनींदौवृषास्थिते ८ इतिवृषराशिस्थचंद्रनिर्याणं

अवमिथुनराशिमेंस्थितचंद्रमाकानिर्याणकहतेहैंजिसकेजन्मकालमेंमिथुनराशिमेंचद्रमास्थितहोवेसोस्त्री यमेंबडा चतुरहोताहैंश्रौरदृढमित्रभावकरणेवालाहोताहैश्रौरमिष्ठान्नकेभोजनकरणेवालाश्रौरश्रेष्टस्वभाव वाला श्रौर छिन्नवाणी वाला श्रौर चचल नेत्रो वाला होताहै १ श्रौर कुटुवमे प्रीतिवाला श्रौर. कामी श्रौर कौतकमें रतिमें प्रीतिवाला श्रौर पूर्वावस्थामें सुखी श्रौर मध्यावस्थामे मध्यमसुख वाला होताहै २ श्रौर तीसरी श्रवस्थामें दुःखीहोताहै श्रौर दो स्त्रीयों वाला होताहै श्रौर गुरोंकाप्याराहो॰ ताहै श्रोर थोडीसंतान श्रौर निश्चय कर्के गुणोंकर्के युक्तहोताहै ॥ ३ ॥ श्रौर पाचमें वर्षमें वृक्षसें भय होताहै श्रौर सोहलमे १६ वर्षमे शत्रुका भय होताहै श्रौर श्रष्टा दश १८ वर्ष कर्के कर्णके रोगकर्के पीडा होतीहै ४ श्रौर वीस वर्षमें श्रत्यत पीडा होतीहे श्रौर श्रठश्री ३८ वर्षमें मृत्युके तुल्य पीडा होतीहे ५ श्रौर भोगभोगने वाला श्रौर नित्यंप्रति

अथमिथुनराशिस्थचंद्रनिर्य्याणम् ग्रामण्यांचतुरःप्राज्ञोदृढसौहृदकारकः मिष्टा न्नाशीसुशीलश्चछिन्नवाक्चलल्लोचनः १ कुटुंबवत्सलःकामीकुतूहलरतिप्रियः वयसःपूर्वभागेनुसुखीमध्येतुमध्यमः २ चरमेतितरांदुःखीद्विभार्य्योगुरुवत्सलः स्वल्पापत्योगुणैर्युक्तोनरोभवतिनिश्चित ॥ ३ ॥ वृक्षाद्भीःपचमेवर्षेषोडशेरिक्तभयं अष्टादशप्रमाणेतुकर्णरुक्परिपीडनम् ४ विंशत्याप्रमितेवर्षेपीडात्यंतं प्रजायते अष्टत्रिंशन्मितेनूनंपीडास्यान्मृत्युनासमा ५ भोगीदानरतोनित्यंस त्यधर्मपरायणः सुभगोविषयासक्तोगीतनृत्यप्रियःसुधीः ६ शास्त्रज्ञःशुभवा क्जीवेदशीतिशरदांनरः वैशाखेशुक्लपक्षेचद्वादश्यांबुधवासरे ७ मध्यान्हे हस्तनक्षत्रेनिर्याणंखलुनिर्दिशेत् इत्युक्तंमिथुनस्थेतुजन्मकालेकलानिधौ ८ इतिमिथुनराशिस्थेचंद्रनिर्याणम् अथकर्कराशिस्थेचंद्रेनिर्याणम् परोपकृतिक र्ताचसर्वसंग्रहतत्परः पुत्रवान्गुणवान्साधुभक्तःपित्रोःस्त्रियाजितः १

दानमें रत श्रौर सत्यधर्ममें तत्पर होताहे श्रौर श्रेष्ट भार्य्या वाला श्रौर विषयोंमें श्रासक्त श्रौर गी तनृत्यका प्यारा श्रौर श्रेष्टबुद्धिवालाहोताहै ६ श्रौर शास्त्रकेजाननेवाला श्रौर शुभवाणीवाला श्रौर श्रशी ८० वर्षजीवने वाला मनुष्य होताहै श्रौर वैशाख मासमें श्रौर शुक्लपक्षमें श्रौर द्वादशीति थिमें श्रौर बुधवारमें ७ श्रौर मध्यान्हकालमें श्रौर हस्तनक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहे यहजन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहाहै इतिमिथुनराशिगतचद्रनिर्याणं ॥ अव कर्कराशिमे स्थित चद्रमाका निर्याण कहतेहै ॥ जिसके जन्मकालमें कर्कराशिका चंद्रमा होवे सो परोपकारके करणे वाला श्रौर संपूर्ण वस्तुके संग्रह करणेमें तत्पर होताहै श्रौर पुत्रों वाला श्रौर धन वाला श्रौरमाता पिताका भक्तश्रौरस्त्रीजितहोताहै १

और राशिके प्रथम भागमें जन्म होवे तब थोडी आयुषा वाला और धनहीन होताहै और मध्यभागमें सुखी होताहै और तीसरे भागमें धर्म कर्के युक्त और तीर्थयात्राके करणे वाला होताहै २ और निश्चय कर्के तिसके माथेके मध्यमे रेखा होतीहै वामे अंगमे अग्निका भय होताहै और शिरके रोगकर्के पीडित होताहै ॥ ३ ॥ और बहुत बंधुओं कर्के युक्त होताहै और बहुत स्त्रीयों वाला होताहै और नक्षत्रग्रहोंकी स्थितिके जानने वाला और बहुत मित्रों वाला और मीठाबोलणेवालाहोताहै४औरप्रथम वर्षमेंरोगीहोताहै और तीसरेवर्षमेंलिंगपीडाकर्केयुक्तहोताहै औ रएकत्रो ३१ वर्षमें सर्पके भयको प्राप्त होताहै ५ और बत्री ३२ वर्षमें बहुत पीडाको प्राप्त हो ताहै और पंचाशी ८५ वर्ष अथवा ९६ वर्ष आयुषा होतीहै ६ माघमासमें शुक्लपक्षमें नवमी

अल्पायुःप्रथमेभागेनिस्वोमध्येसुखीभवेत् तृतीयेधर्मसंयुक्तस्तीर्थयात्रापरायणः २ रेखातस्यभवेन्नूनंललाटेमध्यगामिनी वामांगेग्निभयंविद्याच्छीर्षरुक्प रिपीडितः ३ बांधवैर्बहुभिर्युक्तोबहुभार्यःप्रजायते भग्रहस्थितिवेत्ताचबहुमित्र प्रियवदः ॥ ४ ॥ रोगीस्यात्प्रथमेवर्षेतृतीयेलिंगपीडनं एकत्रिंशन्मितेवर्षे सर्पतोभयमादिशेत् ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशत्प्रमितेवर्षेबहुपीडोद्भवोभवेत् ॥ पंचाशीति मितंब्रूयादायुःपण्णवतिश्चवा ६ माघेमासिसितेपक्षेनवम्यांभृगुवासरेरोहिः णीनामनक्षत्रेव्रजेदायुःप्रपूर्णताम् ॥ ७ ॥ प्रसूतौकर्कराशिस्थकुमुदानंदनेसति पुराणैर्मुनिभिःप्रोक्तंनिर्याणमितिनिश्चितं ८ इतिकर्कराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् अथसिंहराशिस्थचंद्रकृतनिर्याणम् धनधान्यसमायुक्तःश्रीमांश्चसमरप्रियः ॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञोविदेशगमनेरतः १ विशालपिंगलाक्षश्चक्रोधीस्वल्पात्मजो नरः सर्वगःशत्रुहंताचशिरोरुक्निष्ठुरोमहान् २ भूताद्बाधादिमेवर्षेपंचमेब्देग्नि तोभयं ॥ सप्तमेज्वरबाधाचनृणांभवतिनिश्चितं ॥ ३

तिथीमें और शुक्रवारमें और रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहै ७ जन्मकालमें कर्क राशिमें च द्रमा स्थित होयतो पुरातन ऋषियोंने निश्चय कर्के निर्याणकहाहै इतिकर्कराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् ८ अब सिंहराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहतेहैं ॥ जिसके जन्मकालमें सिंहराशिका चंद्रमा होवे सो धन और धान्यकर्के युक्त और शोभाकर्केयुक्त और युद्धकरणेमें प्रीतिवाला और विद्याकर्के युक्त और सपूर्णकलाके जाननेवाला और विदेशमेंरत होताहै १ और पिंगलवर्णके विशाल नेत्रोंवाला और क्रो धी और थोडे पुत्रों वाला होताहै और सपूर्णस्थानमें फिरणे वाला और शत्रुके मारणे वाला और शि रमे रोगवाला और बडाकठोर होताहै २ और प्रथमवर्षमे भूतसे पीडित होताहै और पांचमे अग्निसें भय होताहै और सातमे वर्षमें ज्वरसे पीडित होताहै निश्चयकर्के ३

और वीसवर्षमेंविषूचीकेभयकोप्राप्तहोताहै और इकीसवर्षमेंसर्पके भयकोप्राप्त होताहै ४ और अठाइवें वर्षमेंअपवादकेभयसेंयुक्तहोताहै और बत्तीवर्षमेंनिश्चयकर्केपीडितहोताहै ५ और पेटमेंदक्षिणभागमेंवात गुल्मकर्केपीडितहोताहैऔरश्रेष्ठस्वभाववालाऔरअत्यंतकृपण औरसत्यबोलनेवाला औरचतुरहोताहै ६ और शुभग्रह कर्के चंद्रमा देख्या होवे तब सौ १०० वर्ष आयुर्षा वालाहोताहै और फाल्गुणमासमेंकृष्णपक्षमें और पचमी तिथिमें और मगल वारमें ७ और मध्यान्हकालमे और जलकेमध्यमेंमृत्युकोप्राप्त होताहै इसमे संशय नांहिहे इह सिंहराशिके चंद्रमाकानिर्याण कहाहै ८ इतिसिंहराशिगृतचंद्रनिर्याण ॥ अब कन्याराशिमें चंद्रमाका निर्याण कहतेहे ॥ जिसके जन्मकालमेंकन्याराशिकाच

विषूचिकोद्भवांपीडान्नृणांभवतिनिश्चितं ३ ॥ विंशन्मितेभयंसर्पादिकविशेषप्रपीडन ४ अष्टाविंशान्मितेवर्षेचापवादभयान्वित. द्वाविंशत्प्रमितेनूनवत्सरेपरिपीडन ५ उदरे सव्यभागेतुवातगुल्मादिसंभवः सुशील कृपणोऽत्यतसत्यवादीविचक्षण ६ शुभग्रहेक्षितेचंद्रेशतायुर्जायतेनरः फाल्गुणस्याऽसितपक्षेपचम्यांभौमवासरे ७ मध्यान्हेजलमध्येचमृत्युर्नूननसंशय ८ ॥ सिंहराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणमिदमीरितम् इतिसिंहराशिस्थितचंद्रेनिर्याणम् ॥ अथकन्याराशिस्थेचंद्रेनिर्याणम् स्वजनानंदकृन्नित्यंधनवान्बहुसेवक प्रवासीचकलाभिज्ञोगुरुभक्त प्रियवद १ देवताद्विजवर्याणांभक्तौतत्परमानसः धर्मकर्मसमायुक्तोजनानामतिदुर्लभ २ कन्याल्पकत्वमापन्नोभूरिपुत्रोभवेन्नरः शिश्नेकंठप्रदेशेचलांछनंनिश्चितभवेत् ३ वन्हिपीडातृतीयेव्देपचमेलोचनव्यथा नवमेद्वारबाधाचत्रयोदशमितेपिच ४ तथापचदशेवर्षेसर्पतोभयमादिशेत् ॥ एकविंशन्मितेवर्षे पतनवृक्षभित्तित ॥ ५ ॥

द्रमा होवे सो अपने सबधियोंको आनद करणे वाला और धनवान् और बहुत चाकरों वालाहोता है और विदेश रहनवालाऔर कलाके जानने वाला और गुरोंका भक्त और मीठाबोलनेवालाहोता है १ और देवता और ब्राह्मणोंकी भक्तिमें तत्परहोताहै और धर्मकर्मकर्के युक्तहोताहै और मनुष्योंको प्यारा होताहै २ और थोड़िया कन्यावाला और बहुत पुत्रवाला होताहै और लिंगमें और कंठदेशमें निश्चयकर्के चिन्ह वाला होताहै ३ और तीसरे वर्षमें अग्निपीडा कर्के पीडित होताहै और पांचवर्षमें नेत्रपीडाको प्राप्तहोताहै और नवमवर्षमें और त्रयोदशवर्षमें और दशमें पीडा होतीहै ४ और पन्दरा १५ के वर्षमें सर्पसे भय होताहै और इक्कीसवर्षमें वृक्षसे वा कूपसे वा भित्तिसे पतन होताहै ५

और वनके मध्यमें शस्त्रघातकी प्रीतनिश्चयकर्के तीस ३० वर्षमें होताहै और अशी ८० वर्ष आयु पावाला होताहै जब चंद्रमा शुभग्रहकर्के देख्या होवेतब ॥ ६ ॥ औरचैत्रमासमें और कृष्णपक्षमें और त्रयोदशीतिथिमें और आदित्यवारमें मृत्युको प्राप्तहोताहै जिसके जन्मकालमें चंद्रमा कन्याराशिमें स्थित होवे तिसका यह निर्याण कहाहै ७ इतिकन्याराशिगतचंद्रनिर्याण ॥ अब तुलाराशिमें चंद्रमाका निर्याण कहतेहै जिसके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमा होवे सोनिश्चयकर्केसंपूर्ण जनोंमें मान्य होताहै और वस्तुसंग्रह करणेमेंतत्पर होताहै औरभोगभोगनेवाला और धर्ममेंतत्पर और लक्ष्मीवाला और बहुत चाकरोंवाला और चतुर होताहै ॥ १ ॥ और बावडी और खूहे और तलासें लेकर्केबनावनेमें प्रीतिवाला होताहै और संपूर्ण कलाके जाननेवाला और राजायोंका अत्यंत प्यारा होताहै ॥ २ ॥ और मीठे अन्न रसमें प्रीतिवाला और दोस्त्रीयोंवाला और

अरण्येयशस्त्रघातःस्याद्वर्षेत्रिंशन्मितेध्रुवम् । अशीत्यब्दंभवेदायुश्चंद्रेसौम्यग्रहेक्षिते ॥ ६ ॥ चैत्रेकृष्णत्रयोदश्यांनिधनंरविवासरे शीतद्युतौस्थितेसूतौकन्यायामितिसंस्मृतम् ॥ ७ ॥ इतिकन्याराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् अथतुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् मान्यःसर्वजनेनूनंवस्तुसंग्रहतत्परः भोगीधर्मपरःश्रीमान्बहुभृत्योविचक्षणः ॥ १ ॥ वापीकूपतडागादिनिर्मितौसादरःसदा प्राज्ञःसर्वकलाभिज्ञोनृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥ मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यःपितृभक्तिकृत् स्वल्पापत्योल्पबंधुश्चकृषिकर्मविचक्षणः ॥ ३ ॥ क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः भार्यावचोनुगामीचसप्तमेऽब्देग्निजंभयम् ॥ ४ ॥ अष्टमेज्वरजापीडाद्वादशेचजलाद्भयं ॥ तरोस्तुरंगतःपातःसर्पभीर्वापिविंशके ५ एकविंशन्मितेपीडाचंद्रेसौम्यग्रहेक्षिते ॥ पंचाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥ ६ ॥ सार्पेष्टम्यांभृगोर्वारेनिधनंपूर्वयामके तुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणमितिसूचितम् ॥ ७ ॥

पितरोंकी भक्ति वाला और थोडी संतान और थोडे बंधुयों वाला और कृषिकर्ममें चतुर होता है ॥ ३ ॥ और क्रय विक्रय करणेमें लाभवाला और देवता और ब्राह्मणके पूजने वाला और स्त्रीके कहेमें चलने वाला और सात वर्षमें अग्निके भयको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ और अष्टम वर्षमें ज्वरकी पीडा और बारहमें वर्षमें जलमें भयहोताहै और बीसवर्षमें, वृक्षसें वा घोडेसें गिरताहै वा सर्पके भयको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ और इक्कीसवर्षमें पीडा होतीहै और शुभग्रहकरी चंद्रमा देख्याहोवे तबपंचासी ८५ वर्ष आयु होतीहै और वैशाखके शुक्लपक्षमें ६ और श्लेषानक्षत्रमें और अष्टमीतिथिमें और शुक्रवारमें प्रथम प्रहरमें मृत्युको प्राप्त होताहै यह तुलाराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहाहै ७

इतितुलराशिगतचंद्रनिर्याण अब वृश्चिक राशिमे स्थित चंद्रमाकानिर्याणकहतेहैजिसकेजन्मकालमें वृश्चिकराशिमेंचंद्रमाहोवेसोशत्रुयोंकेतपावनेवाला औरकोधी औरद्वेषकरणेवाला और लडाइकाप्यारा होताहै औरविश्वासाघाती औरमित्रद्रोहीहोताहै १ औरसंतोषसेंरहितहोताहै औरराजयोंकके पूज्यहोताहै और दूसरेकेकार्यमेंविघ्नकरणेवाला औरशुभलक्षणोंकरकेयुक्त और गुप्तपाप करणेवाला औरपराक्रमवाला होताहै २ और बहुत चाकरोंवाला और चारभाईयो वाला और दो स्त्रियोंवाला होताहै और प्रथमवर्षमेंज्वरसें पीडित होताहै और तीसरे वर्षमे अग्निसे भयको प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ और पाचमे वर्षमे ज्वरपीडाको प्राप्त होताहै और पंचदश १५ वर्षमे भी ज्वरपीडाको प्राप्त होताहै और पंचविंशति २५ वर्षमें निश्चयकरके वडीपीडा होतिहै ४ और चंद्रमा शुभग्रहकरके देख्याहोवे तब नब्बे ९० वर्ष जीवताहै और ज्येष्टमासमे औरशुक्लपक्षमें और दशमीतिथिमें और बुधवारमे ५

इतितुलाराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् अथवृश्चिकराशिगतचंद्रानिर्याणम् परतापकरःक्रोधीविद्वेषीकलहप्रियः विश्वासघातकश्चापिमित्रद्रोहीविचक्षणः १ असंतुष्टोनृपेपूज्योविघ्नकर्त्तान्यकर्माणिशुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापश्चविक्रमी २ बहुभृत्यश्चतुर्बंधुद्विभार्योजायतेपुमान् प्रथमेब्देज्वरात्पीडातृतीयेभयमग्नितः ३ पंचमेब्देज्वरात्पीडातथापंचदशेपिच पंचविंशन्मितेवर्षेपीडास्यान्महतीध्रुवम् ४ चंद्रेसौम्यग्रहैर्दृष्टेनवत्यब्दान्सजीवति ज्येष्टमासिसितेपक्षेदशम्यांबुधवासरे ५ हस्तनक्षत्रसंयुक्तेमध्यरात्रगतेसति चंद्रेवृश्चिकराशिस्थेनिर्याणमितिकीर्तितम् ६ इतिवृश्चिकराशिस्थचंद्रेनिर्याणम् अथधनुराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् प्राज्ञोधर्मीसपुत्रश्चराजमान्योजनप्रियः द्विजदेवार्चनप्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः १ सभायांचभवेद्वक्तासुनखीसुमतिःशुचिः स्थूलदंताधरग्रीवःकाव्यकर्त्ताप्रगल्भकः २ कुलशालीवनात्यश्चसभाग्योदृढसौहृदः निम्नपादतलःक्लेशीसाहसीविनयान्वितः ३

और हस्तनक्षत्रमें और रात्रिकेमध्यकालमे मृत्युको प्राप्त होताहै इह जन्मकालमें वृश्चिकराशिमे स्थित चंद्रमाका निर्याण कहाहै ६ इतिवृश्चिकराशिगतचंद्रानिर्याण अब धनराशिमे चंद्रमाका निर्याण कहतेहै जिसकेजन्मकालमें धनराशिमे चंद्रमा स्थित होवे सो चतुर और धर्मकरके युक्त और श्रेष्ठ पुत्रोंवाला और राजमानवाला और मीठाबोलनेवाला होताहै और देवताब्राह्मणके पूजनेमे प्रीतिवाला और वस्तुसंग्रहमे तत्पर होताहै १ और सभामें वक्ता होवाहै और श्रेष्ठनखोंवाला और श्रेष्ठबुद्धिवाला और पवित्र होताहै औरमोटे दंत औरओष्ट और ग्रीवा वाला और काव्यके करणेवाला और प्रगल्भ होताहै २ औरश्रेष्ट कुलवाला और वनमें गमन करणे वाला और भाग्यकरके युक्त और दृढसुहृद्भाववाला और नीम्मे पादके तलोंवाला और क्लेशकरके युक्त और हठकरके युक्त औरनम्रताकरके युक्त होताहै ३

और शांत स्वभावोला और शीघ्रकोपकों प्राप्त होने वाला और तपस्वी और थोडा भोजन करणेवाला और थोडे संतानवाला और श्रेष्ठ बंधुयों वाला और पूर्वअवस्थामें धनवा लाहोताहै ॥ ४ ॥ और प्रथम वर्षमें पीडा युक्त होताहै और त्रयोदश वर्षमें बडीपीडाकों प्राप्तहोताहै अठाहट ६८ वर्ष अथवा पंजत्र ७५ वर्ष आयुषा वाला होताहै ५ और चंद्रमा संपूर्ण शुभग्रहों करके देख्या होवे तब सौ १०० वर्ष जीताहै और आषाढके कृष्णपक्षमें पचमी तिथिमें और शुक्रवारमें और हस्तनक्षत्रमें रात्रि समयमेंमृत्युकों प्राप्तहोताहै इह जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहाहै ७ इतिधनराशिगतचंद्रनिर्याणं अब मकरराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहते हैं जिसके जन्मकालमें मकरराशिका चंद्रमा होवे सो पंडित और श्रेष्ठ बुद्धिवाला औरक्लेश करकें

शांतःक्षिप्रप्रकोपीचनापसःस्वल्पभुक्नरः स्वल्पापत्यस्सुबंधुश्चपूर्ववयसिवि त्तवान् ४सबाधःप्रथमेवर्षेमहापीडात्रयोदशे अष्टषष्ठिमितंप्राहुरायुर्वापंचसप्त तिः५ चंद्रेसर्वशुभैर्दृष्टेशतवर्षाणिजीवति आषाढस्यासितेपक्षेपंचम्यांभृगुवास रे६ निशायांहस्तनक्षत्रेनिधनंसर्वथाभवेत् निर्याणमितिसंप्रोक्तचंद्रसूतौधनास्थि ते७इतिधनूराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् अथमकरराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् धीरो विचक्षणःक्लेशीपुत्रवान्नृपतिप्रियः कृपालुःसत्यसंपन्नोवदान्यःशुभगोलसः ॥ १ कृष्णतालुःपुमान्नूनंविस्तीर्णकटिरुद्भवेत् पचमेवत्सरेपीडासप्तमेजलजाद्भयम् २ दशमेपतनंवृक्षात्द्वादशेशस्त्रपीडनम् विंशन्मितेज्वराद्बाधाशाखासुपंचाविंश के ३ पंचत्रिंशत्समाकालेवामांगेग्निभयंदिशेत् अव्दानांनवतिर्नूनमायुस्त स्यप्रकीर्तितम् ४ श्रावणस्यासितेपक्षेदशम्यांभौमवासरे ज्येष्ठायांनिधनं नूनंचंद्रेमकरसंस्थिते ५ इतिमकरराशिस्थितचंद्रनिर्याणम्

युक्त औरपुत्रोंवाला और राजाकी प्रीति वाला होताहै और दयाकरके युक्त और सत्यकरकेयुक्त और श्रेष्ठ भागों वाला और आलसी होताहै १ और निश्चयकरके काले तालु वाला और बडे विस्तार वाले कटि स्थल वाला और पचम वर्षमें पीडायुक्त और सप्तम वर्षमें जलसें भयकों प्राप्त होताहै२ और दशमवर्षमेंवृक्षसेगिडताहै और बाहरमें वर्षमें शस्त्र पीडाको प्राप्त होताहैऔरवीसवर्षमेंज्वर की पीडा होतीहै पचविंशति२५वर्षमें अंगपीडाकों प्राप्त होताहै ३ औरपचत्रिंशत् ३५ वर्षमें वामांगमें अग्निका भय होताहै और निश्चयकरके नव्वेवर्ष ९० आयुषा होतीहै ४ और श्रावण मासके शुक्लपक्षमें दशमीतिथिमें और मंगलवारमें और ज्येष्ठानक्षत्रमें मृत्युकों प्राप्त होताहै इहे म कराराशिमें स्थित चद्रमाका निर्याण कहाहै ५ इतिमकरराशिगतचद्रनिर्याणं ॥

अवकुंभराशिमें स्थित चंद्रमाका निर्याण कहतेहैं जिसके जन्मकालमें कुंभराशिमें चंद्रमा स्थित होवे सो दानक रणे वाला ; और मिष्टान्न भोजन करणेवाला और धर्मकार्यमें शीघ्रता करणे वाला और मीठा बोलने वाला और क्षीणदेह वाला होताहै १ औरथोडी संतानवाला और दोस्त्रीयोंवाला और कामी और धनकर्के रहित बामहाथमें चिन्हवाला और प्रथम वर्षमें पीडा वाला होताहै २ और पांचवर्षमें अग्निके भयको प्राप्त होताहै और बारहमें वर्षमें सर्पसे भयको प्राप्त होताहै वा जलमें भयको प्राप्त होताहै और अठाईसवर्षमें चोरोंसे पीडित होताहै ३, और निश्चयकर्के नव्वे, ९० वर्ष आयुवाला होताहै और भाद्रपद मासके कृष्णपक्षमें और चतुर्थी तिथिमें और शनिवारमें ४ और रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होताहै इहै जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाका निर्याण मुनियोंने कहा है ५ इतिकुंभराशिगतचंद्रनिर्याण अब मीनराशिमें स्थितचंद्रमाका निर्याण कहतेहैं जिसके जन्म

अथकुंभराशिस्थितेचंद्रेनिर्याणम् दातामिष्टान्नभोक्ताचधर्मकार्येपुसत्वरःप्रियवक्तृत्वसंयुक्तोनरःक्षीणकलेवरः१स्वल्पापत्योद्विभार्यश्चकामीद्रव्यविवर्जितःवामहस्तेभवल्लक्ष्मपीडाप्रथमवत्सरे २ पंचमेग्निभयंविद्यात्चद्वादशवत्सरेव्यालाद्वाजलतोभीतिरष्टाविंशतिमेक्षतिः३चौरेभ्यश्चभवेदायुर्वर्षाणांनवतिर्ध्रुवं भाद्रेमास्यसितेपक्षेचतुर्थ्यांशनिवासरे ४ भरणीनामनक्षत्रेगृण्हंतिमरणंनृणाम् एवमुक्तंमुनिश्रेष्ठैश्चंद्रेजन्मनिकुंभगे इतिकुंभराशिगतचंद्रनिर्याणम् अथमीनराशौचंद्रकृतानिर्याणम् धनीमानीविनीतश्चभोगीसहृष्टमानसः पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तिपरोनरः १ उदारोरूपवान्श्रेष्ठोगंधमाल्यविभूषणः पंचमेब्देजलाद्भीतिरष्टमेज्वरपीडनं २ द्वाविंशेमहतीपीडाचतुर्विंशान्मितेब्दके पूर्वाशांगमनंचायुरब्दानांनवतिःस्मृता ॥३ आश्विनस्यासितेपक्षेद्वितीयायांगुरोर्दिने कृत्तिकानामनक्षत्रेसायंमृत्युर्नसंशयः ४ इतीरितंतुनिर्याणंयवनाचार्यसंमतं मीनस्थेयामिनीनाथेभवेदत्रनसंशयः ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेनिर्याणाध्यायएकविंशतितमः २१

कालमें मीनराशिमें चंद्रमा होवे सो धनी और मानी और सुंदर नम्र और भोगोंके भोगने वाला और प्रसन्नमन वाला होताहै और माता पिता और देवता और आचार्य और गुरोंकी भक्तिमें तत्पर होताहै १ और उदारचित्त और रूपकर्के युक्त और गंधमाल्यकर्के विभूषित होताहै और पांचमें वर्षमें जलसे भय होताहै और अष्टम वर्षमें ज्वरकी पीडा होतीहै २ और बाईमें २२ वर्षमें बडी पीडाको प्राप्तहोताहै औरचोवी२४वर्षमेंपूर्वदिशामेंगमनकरताहै औरनव्वे९० वर्षआयुवाला होताहै ३ और आश्विन मासके कृष्णपक्षमें और द्वितिया तिथिमें और बृहस्पति वारमें और कृत्तिका नक्षत्रमें और सायंकालमें मृत्युको प्राप्त होताहै ४ इहे निर्याण यवनाचार्यके मतसे कहाहै मीनराशिके चंद्रमामें इस प्रकारकर्के कहाहै इसमें संदेह नहिंहै ५ इतिश्रीजातकखंडभाषाया निर्याणाध्यायएकविंशः २१

अब नष्टजातकाध्यायका व्याख्यानकरतेहैं जिसमनुष्यका आधानसमय और जन्मसमयनिश्चयकर्केन
हिं जानतेहैं तिसके जन्मकालकों नष्टजातकसें जाननाकहतेहैं १ जिसकर्के मनुष्यके जन्मकालसें शु
भाशुभ फलकी प्राप्ति होतीहै तिसकों जातक शास्त्र कहतेहैं और तिसजन्मकालके नष्टहोया फेर जि
सकर्के जन्मकालका ज्ञानहोताहै तिसकों नष्टजातक कहतेहैं २ तिसमें प्रथम तात्कालिक लग्नप
ष्ट कर्के तिसकी कलाका पिंडबनावे और तिसके गुणकार जानने केवास्ते मेषादि राशियोंके गुणक
कहतेहैं सो मेषसें लेकर्के मीनपर्यंत बारां गुणकपंक्ति मेंधरेहैं यो राशि प्रश्नलग्न में होवे तिसके गुणक
कर्के कला पिंडकों गुणे और यदप्रश्नलग्नमें कदाचित् शुक्र और मंगल औरबृहस्पति स्थित होवेंतब
क्रमकर्के सात ७ औरआठ८औरदस१०कर्केपुनः कलापिंडको गुण देवे और सूर्य और चंद्रमा और

अथनष्टजातकाध्यायोव्याख्यायते ॥ आधानकालोप्यऽथजन्मकालोनज्ञायते
यस्यनरस्यनूनम् ॥ प्रसूतिकालंप्रवदंतितस्यनष्टाभिधानादपिजातकाद्य १
तज्जातकयेनशुभाशुभाप्तिर्जातस्यजंतोर्जननोपकालात् तस्मिन्प्रनष्टेसातिजन्म
कालोयेनोच्यतेनष्टकजातकंतत् २ मेषादितःप्रश्नविलग्नलिप्ताःकार्याःक्रमात्ता
मुनिभिःखचंद्रैः गजैश्चवेदैर्दशभिश्चबाणैःशैलैर्भुजंगैःखचरैःशरैश्च ३ शिवैःपतं
गे ७।१०८४१०५७८९५११ १२ निहिता.पुनस्ताविलग्नगाश्चे
द्भृगुभौमजीवाःतदातुरगैः ७ करिभिः ८ खचंद्रै १० गुण्याःशरैरन्यखगायदि
स्युः ४ ग्रहद्वयंवाबहवोविलग्नेतदातदीयैर्गुणकैश्चगुण्याः एवंकृतेकर्मविधान
योग्योराशिःपृथक्स्थःपरिरक्षणीयः ५ पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नत्त्वाधेदृका
णेनव ९ युक्तद्वितीये ॥ यथास्थितोयंनववर्जितोंत्येभसंज्ञया २७ सोह्यवशेषक्र
क्षम् ॥ ६ ॥

बुधऔर शनि लग्नमें होवें तब पांचसें गुणे ४ और प्रश्नलग्नमें दोग्रह होवें अथवा बहुत होवें तब ति
न्हके संपूर्णोंके गुणकोंसें वारंवार राशिकों गुणे इसप्रकारकरणेसें कर्म विधान योग्य राशि होतीहै ति,
सकों पृथक् स्थानमें कर्म भूमीमें स्थित करे ५ और अबनक्षत्रकाआनयनकहतेहैं पृथक् कर्म भूमीमें
स्थित यो राशिहै तिसको सात ७ सें गुणें और प्रथम द्रेष्काणमें स्थित राशि होवे तब तिसकों क
लोंमें नव ९ कला जोड देवे और मध्य द्रेष्काणमें होवे तब यथा स्थित हि रखे और तीसरे द्रेष्काण
मे होवे तब नव ९ कलाकर्के हीनकरे और तिसको सताईं २७ के अंकसें भागदेकर्के यो शेष र
हे सो अश्विनीसें लेकर्के तिसकानक्षत्रकहे ६

और यदमनुष्यअपनीस्त्रीवापुत्रवामित्रकावाशत्रुकानष्ट जातक पूछयाचाहे तव प्रश्नलग्नकोक्रमकर्कैछैद् और चार ४ और तीन ३ और ५ राशिसें युक्त कर्के फेर लग्नकियाकलावनावे ७ और यो लग्न होवे तिसराशिके गुणककें गुणे और लग्न गतग्रहका यद संभवहोवेतव तिसके गुणक कर्के गुणे और फेर पूर्वकीन्याईनवदान विशोधन कर्म कर्के पूर्वकी न्याई तिन्हके स्त्री आदियों केनक्षत्रजाननेयोग्यहे ८ और कर्मविधान राशिकों दश १० सें गुणे और पूर्वकीन्याई द्रेष्काण क्रमसें नवकला ऊनाधिकक कें एकसऊो वीस १२० सें भाग लेवे जो अंक शेष रहे उतने वर्ष मनुष्यकी आयुषाके व्यतीत कहे निश्चयकर्कें ९ पुनः फेर कर्म योग्यराशिकों कर्म भूमीमे स्थित कर्के दशगुणाकरे और छेसें भागलेवे शेषयो अकरहे सो शिशिरसें लेकर्के जन्मकालमें ऋतुकहे और इसी प्रकार कर्म योग्यराशिकों दशगुणा कर्के दोसें भाग लेवे शेष एकरहे तव तिस ऋतुका पूर्वमास कहे और शून्य शेष

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकचेत्पृच्छाविलग्नंऋतुभिश्चवेदैः त्रिभिःशरैर्युक्तमनुक्रमेणततोविलग्नस्यकलाविधेयाः ॥ ७ ॥ लग्नस्यराशेर्गुणकेनगुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य पुनस्तदीयेनगुणेनगुण्याःप्रागुक्तवद्वंपरिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥ दशाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् खार्कैर्हतेशेषमिताब्दसंख्यमायुर्गतंतत्खलुपृच्छकस्य ९ षड्भिर्विभक्तेऋतवोभवतिशेषांकतुल्याःशिशिरादयश्च ॥ द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रंपूर्वापरौतदृतुजौतुमासौ १० अष्टाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रतुल्येस्तिपूर्वापरपक्षकोस्त ११ पंचेंदुभक्तेसतिशेषतुल्याःपक्षेचतस्मिन्तिथयोभवंति नक्षत्रतिथ्यानयनाययोग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र १२ सप्ताहतेकर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् द्विभाजितेशेषकमेकमभ्रंदिवाचरात्रीजननंतदानीम् १३

रहे तव ऋतुका दूसरामास कहे १० और कर्म विधानराशिकों आठसें गुणे और पूर्वकी न्याई नव ९ ऊन और अधिक करे दोसे भागलेवे शेष एक वा शून्य रहे तव पूर्वा पर पक्ष होतेहैं यदएक अंक रहे तव शुक्लपक्ष और शून्य शेष रहे तव कृष्णपक्षमें जन्मकहे ११ और केवल कर्म योग्य राशिमें पद्रा १५ सें भागलेवे तव योअंक शेप रहे सो गत तिथिया होती हे और नक्षत्र और तिथिके आनयन योग्य अहर्गणसें वारकाविचारकरले अथवा तिससवत्सरका पचांग देखकर वा रकहे १२ और कर्मविधानराशिका सात ७ सेंगुणे और पूर्वकी न्याई नव ९ युक्त हीन करे और तिसको दोसे भाग लेवे जव एक शेप रहे तव दिनका जन्मकहे और शून्यशेप रहे तव रात्रिमें जन्म कहे १३

और कर्मविधानराशिको पांचसे गुणे और पूर्वकी न्याई नवकला युक्त और हीन करे और दिनमान और रात्रिमानकी संख्या घडियोंसे भाग लेवे तब यो अंकशेष रहेसो जन्मकालमें दिनरात्रिकियां गतघडियांकहे १४ अब प्रकारांतर करके नक्षत्रका आनयन कहतेहैं मनुष्यका नामयो संस्कारके समयमें माता पित्रादियोंने धरा होवे सो नामग्रहण करणा और योकि सीने कुनामादि धराहोवे सो नांहिलेना और तिससंस्कारनामाक्षर कियां मात्राकोंग्रहणकरे तिसमे हलवर्णकी अर्द्धमात्रा और अचकी एकमात्रा इसरीतिकरके मात्राके अंकोंकों द्विगुण करे और तात्काल द्वादशांगुलशंकुकी छाया कियां अंगुलियां तिसमें मिलावे इसप्रकारकरके यो अंक होवे तिसकों सताई २७ से भाग देकरके यो अंक शेष रहे सो धनिष्ठासे लेकरके तिसका जन्म नक्षत्र कहे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजातकखंडभाषायांनष्टजातकाध्यायोद्वाविंशः ॥ २२ ॥

पंचाहतेकर्मविधानराशौप्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन्दिनस्यरात्रेरथवाप्रमि त्याभक्तेऽवशिष्टंदिनरात्रिनाडयः ॥ १४ ॥ अथप्रकारांतरेणजन्मनक्षत्रानयनम् ॥ संस्कारनाममात्राद्विगुणाःछायांगुलैःसमायुक्ताः ॥ शेषंत्रिनवकभक्तान्नक्षत्रंतद्धनिष्ठादि ॥ १५ ॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेनष्टजातकाध्यायोद्वाविंशः २२

अथपरिशेषाध्यायोव्याख्यायते उक्तंच विनश्यतेभावफलंनराणांयद्गोचराद्रोचरमन्यवेधात् दशांतरात्पाचकतोपिसंध्यातत्त्वेटचक्रंकथितंप्रमाणम् ॥ १ ॥ अपिच नभावानोयोगामुनिनिगदितंगोचरमपिनसंध्यानोपाकःप्रभवतिदशानांतरदशा भ्रमंतेयत्खेटावियतिरथचक्राकृतिनिभास्तदेतेपांचक्रंफलदमुदितंजन्मनिनृणाम् ॥ २

अबपरिशेषाध्यायकहतेहैं यो जन्मराशिसे ग्रहोंका गोचर फल जन्मस्थानादि कहाहै सो फल अन्यग्रहकेवेधहोनेसे नाशको प्राप्त होताहै और योग्रहोंका दशाफल कहाहै सो संध्यापाचकादि अनेकदशाके भेदसे नाशको प्राप्त होताहै तिसमें बहुत यत्नकरके शुभाशुभ फलका विचारकरनाहै और सूर्यादि ग्रहोंका प्रतिदिन चक्रमें यो भ्रमणहै सोमुख्य प्रमाणहै १ और कहतेहैं जन्मकालमें मनुष्योंको यो ग्रहोंके भावफल कहेहैं सोविकारणांतरसे स्थूलहै और योगफलवी स्थूलहैंऔर मुनियोंने कहायो गोचरफल सोवी स्थूलहै औरसंध्यापाचकादि दशांतरदशाफलविरुद्धहै औरआकाशमें चक्रकीन्यांई भ्रमते यो ग्रहहैं जन्मकालमें तिन्हका फलमनुष्योंको मुख्यहै तिससे चक्र कहतेहैं २

और यवनाचार्य ग्रहचक्रका फल और नारद जन्मलग्नकाफल और भृगुगोचरफल और गर्ग दशांतर दशा फलकों मुख्य कहताहे ॥ ३ ॥ अब सूर्यका चक्र कहतेहैं ॥ प्रथम नराकार सूर्यका चक्र बनावे तिसमें सूर्यकेनक्षत्रसेंलेकर्के तीन नक्षत्रमाथेमें देवे और तिसके आगे तीन मुखमें और आगेके दो नक्षत्र दोनों मोंढयोंमें और आगेके एक एक दोनों भुजोंमें देवे और आगे दो नक्षत्र दोनों हाथोंमें देवे और आगे तीननक्षत्र छातीमें देवे और एक नाभिमें और एक हृदयमें देवे और दो नक्षत्र गुदामें देवे और दो नक्षत्र जानुयोंमें देवे और छे६नक्षत्रपैरोंमें देवे क्रमसें ॥४ अब फल कहतेहै सूर्यके नक्षत्रसें चक्रमें जन्मनक्षत्र पैरोंमें स्थित होवे तब थोडि आयुषा वाला और दुःखी होताहै और जानुयोंमें स्थितहोवे तब विदेशमें गमन कर्ताहे और गुदामें स्थित होवे तब परस्त्रीमें गमन कर्ताहै ५ और नाभिमें स्थित होवे तब दुःखकों प्राप्त होताहे और छातिमें स्थित

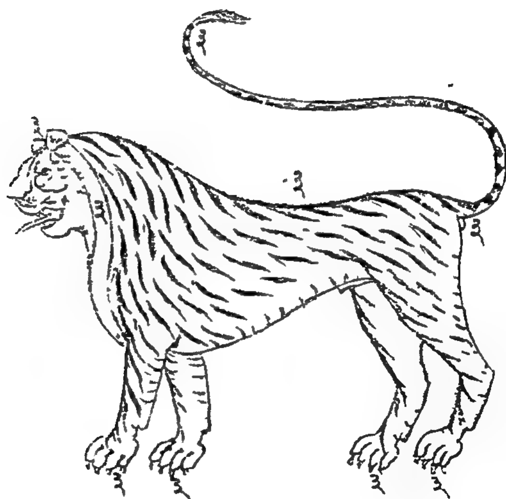
तथाच यवनोग्रहचक्रस्यजन्मलग्नस्यनारदः गोचरस्यभृगुर्ब्रूतेफलंगर्गोदशादिभिः ॥ ३ ॥ अथसूर्यचक्रम् ॥ मूर्ध्नित्रीणिमुखेत्रयंचतदनुस्कंधद्वयेभद्वयमेकैकंभुजयोर्द्वयंकरयुगेवक्षस्थलेभत्रयं नाभ्यामेकमथैकमेवहृदयेगुह्येद्वयंजानुकेसूर्याधिष्ठितभाद्वयेश्चरणयोर्नक्षत्रपट्कंतथा ॥ ४ ॥ अथफलं चरणस्थेरवेर्भेस्वल्पायुरतिदुःखितः जानौविदेशगमनंपरदारस्तुगुह्यके ५ नाभौचदुःखितोजातोदेहपीडाउरस्थले ॥ हृदयेईश्वरंविंद्यात्पाणिभ्यांतस्करःस्मृतः ६ बाहौबाहुबलीप्राणीस्कंदेचैवपराभवः ॥ मुखेमिष्टान्नभोगीचपट्टबंधःशिरस्यथ ७इतिसूर्यचक्रम् अथचंद्रचक्रम् चंद्रचक्रंचदेवेशिवर्णयामियथाक्रमम् जन्मराशेश्चनक्षत्रान्नक्षत्रंवर्त्तमानकम् ॥ ८ गणयेद्गणकश्रेष्ठश्चंद्रस्यैवंशुभाशुभंषडास्येपृष्ठकेषट्चकरेषट्चत्रयंगुदे ॥ ९ ॥ चतुष्पदेत्रयंकण्ठेदातव्यंगणकोत्तमैः मुखेहानिश्चविज्ञेयाधनलाभंचपृष्ठके १०

होवे तब देहमें पीडा होतीहे और हृदयमें होवे तब लक्ष्मीकों प्राप्त होताहे और हाथोंमें होवे तब चोर होताहे ६ और भुजोंमें होवेतबबाहुबल वाला होताहै और मोंढयोंमेंहोवे तब तिरस्कारकोंप्राप्त होताहै और मुखमें होवे तब मिष्टान्न भोजन कर्ताहै और शिरमें जन्मनक्षत्रहोवे तब राज्यकों प्राप्त होताहै ७ इति ॥ अब चंद्रमाका चक्र कहतेहैं ॥ शिवजि कहतेहै हेपार्वति अब यथाक्रमसें चंद्रमाका चक्र कहताहों ॥ जन्मनक्षत्रसें लेकर्के वर्त्तमान नक्षत्रपर्यंत ८ श्रेष्ठ ज्योतिषि गणनाकरे और शुभाशुभ फल कहे जन्मनक्षत्रसे छे नक्षत्र मुखमेंदेवे और क्रमसें पांच पृष्ठमें देवे और छेदो नोंहाथोंमें देवे और तीन गुदामें देवे ९ और चार पैरोंमे देवे और तीन कंठमेंश्रेष्ठगणकोंनें देनेयोग्य है अब फल कहतेहैं ॥ जन्मनक्षत्रसें वर्त्तमाननक्षत्र मुखमें स्थित होवे तब हानिहोतीहै और पृष्ठमेंस्थित होवे तब धनकालाभहोताहै १०



ऐंम-चक्र चेडचक्राम





श्रोर हाथमें चंद्रमाका नक्षत्र श्रावे तब राजाका भय होताहैश्रौर गुदामें चंद्रमाका नक्षत्र होवे तब राजा संमान होताहै श्रोर पैरों में चंद्रमाका नक्षत्र होवे तब स्थानसें भ्रष्ट होताहै श्रौर कंठमे चंद्रमाका नक्षत्र होवे तब संपूर्ण सुख होताहै ११ अब, मंगलका चक्रकहतेहै बुद्धिवाला सिंहका स्वरूप लिखे श्रौर तिसके देहमें तीन तीन नक्षत्र क्रमसे १२ श्रौर तीन शिरमें श्रौर तीनग्रीवामें श्रोर तीन पृष्ठमें श्रौर तीन गुदामें श्रौरतीनपुछमें,श्रौर तीन तीन चार पैरोंमें सूर्यकेनक्षत्रसेंलेकर्के मगलकी घोरकी मूर्तिमें लिखे १३ श्रौर कदाचित राहु श्रौर सूर्य श्रौर शनि मंगल कर्के युक्त होवे गोचरकर्के तब इसप्रकारका फल कर्तेहैं राहुकर्के युक्त होवे तब मृत्यु कर्ताहै श्रौर सूर्यकर्के युक्त होवे तबज्वर श्रौर भ्रम होताहै १४ श्रौर शनिकर्के युक्त होवे तबसंपूर्णकार्यका नाशकर्ताहैश्रौर मंग

हस्तेराजभयंज्ञेयंराजमानंचगुह्यके स्थानभ्रष्टोभवेत्पादेकंठे सर्वसुखंभवेत् ११अथभौमचक्रम् कुजचक्रंप्रवक्ष्यामिलिखेत्सिंहाकृतिंबुधःत्रीणित्रीणिचऋक्षाणितस्यदेहेलिखेत्क्रमात् १२ शिरोग्रिवापृष्ठगुह्यपुछपादक्रमात्रिभिः सूर्यक्षोत्कुजचक्रेपिलिखेत्पंचाननाकृतौ १३ राहुसूर्यशनिश्चापिभौमेनसहसंगतः राहुणामरणंविंद्याद्रविणाचज्वरभ्रमः१४ सौरेणाकार्यनाशंस्यात्सर्वकार्यंचनश्यति शिरस्थेनमहीजेन सर्वकार्यसुखंरणे १५ ग्रीवायांजायतेव्याधिःपृष्ठेसर्वार्थसंपदः गुह्येतुनिष्फलंकार्यंपुछेभीतिं रणागमे १६ चरणस्थे नभौमेनसर्वकार्यफलोदयःकुजवत्पापसंघानांकुरुतेकर्मसुंदरि १७ कुजचक्रमितिप्रोक्तंसद्यःप्रत्ययकारकम् अथबुधचक्रम् बुधचक्रंप्रवक्ष्यामिप्रस्थानेप्रत्ययावहम् १८

लका नक्षत्र शिर में स्थित होवे तब संपूर्ण कार्यों श्रौर युद्धमें जय होताहै १५ श्रोर ग्रीवामें मंगलका नक्षत्र श्रावे तब व्याधिहोताहै श्रौर पृष्ठमें होवे तब संपूर्ण अर्थ संपदा प्राप्त होतिहै श्रौर गुदामें होवेतब कार्य निष्फल होताहै श्रौर पुछमें होवे तब युद्धमें भय होताहै १६ श्रोर मंगल पैरोंमें स्थित होवे तब संपूर्ण कर्मोंके फलका उदय होताहै अर्थात संपूर्णकर्म करणेसैंलाभहोताहै श्रौर हेपार्वति मंगलकी न्याइ पापोंके समूहोंको कर्ताहै १७ हेपार्वतिइह मंगलका चक्र मैंने तात्काल फल करणेवाला कहाहै इतिभौमचक्रम् अब बुधका चक्र कहतेहैं बुधका चक्र यात्रामें प्रतीतिके करणे वाला कहतेहैं

हेपार्वति जिस नक्षत्रमें बुध स्थित होवे तिस नक्षत्रसें लेकर्के चक्रमें लिखेउसमें एक मस्तकमें श्रीर दो नेत्रोंमें श्रीर दो कानोंमें दो नासिकामें श्रीर एकमुखमें एक गलमें श्रीर एक छुत्रीमें श्रीर दो मोढ्योंमें श्रीर दो भुजोंमें दो हाथोंमें श्रीर एक उदरमें दो पास्योंमें श्रीर एकपृष्ठमें श्रीर एक नाभिमें श्रीर एक लिंगमें श्रीर एक गुदामें श्रीर दोपट्टोंमें श्रीर दो पैरोंमें यथा क्रमसेंलिखे २० श्रीर सताईं जो नक्षत्र तिन्हमें शिरके नक्षत्रमें लाभ होताहै श्रोर बडा सुख होताहै श्रीर माथेके नक्षत्रमें शोक श्रीर संताप होताहै श्रीर नेत्रोंके नक्षत्रोंमें प्यारेका दर्शन होताहै २१ श्रीर कानोंके नक्षत्रोंमें भाइयोंकेसाथवैर होताहै श्रीर नासिकाकेनक्षत्रोंमेंसुख होताहै श्रीर मुखके नक्षत्रोंमें मीठे अन्नादि मिलतेहैं श्रीर छुत्रीके नक्षत्रमें श्रेष्ठ प्रीति होतीहै २२ श्रीर गलके नक्षत्रमें स्त्रीपुत्रकी प्राप्ति हो

यस्मिन्नृक्षेबुधोदेविमूर्ध्नितल्लिख्यतेप्रिये ललाटेक्षिश्रुतिघ्राणमुखेपुचिबुकेगले १९ स्कंधयोर्बाहुहस्तेपूदरपार्श्वपृष्ठनाभिपुलिंगेगुह्येतथोर्वोश्चपादयोश्चक्रमाल्लिखेत् २० सप्तविंशतिऋक्षाणिमूर्ध्निलाभोमहासुखम् ललाटेशोकसंतापःचक्षुषिप्रियदर्शनम् २१ कर्णयोर्बंधुभिर्वैरंनासिकायांसुखंतथा मुखेमिष्टान्नपानानिचिबुकेप्रीतिरुत्तमा २२ गलेभार्यासुतप्राप्तिःस्कंधयोर्लाभमादिशेत् ॥ बाह्वोर्वस्त्रागमंदिव्यंपाण्योर्युद्धंरिपोःक्रमात् २३ वक्षसिप्रीतिनाशःस्यात्पार्श्वयोर्व्याधिमादिशेत् ॥ पृष्ठेराजकुलात्त्रासोनाभौस्याद्बंधुसंगतिः २४ पुत्रोत्पत्तिर्भवेल्लिंगेगुदेमरणमादिशेत् ऊर्वोर्भवतिदुःखंचपादयोःपरदेशगः २५ यदापापःशुभस्थानेविपरीतंप्रकुर्वते॥शुभःपापग्रहस्थानेकिंचिद्रक्षतिसुंदरि २६ अर्कार्किसहितेदृष्टेव्याधिर्नूनंविधावपि ॥ अशुभेराहुणायुक्तेमरणंनात्रसंशयः ॥ २७

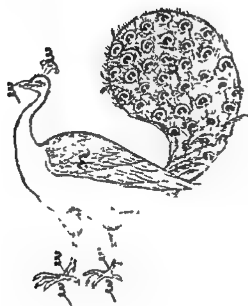
तीहै श्रीर मोढ्योंके नक्षत्रोंमें लाभ होताहै श्रीर भुजाके नक्षत्रोंमें वस्त्रका लाभ होताहै श्रीर हाथोंके नक्षत्रोंमें शत्रुसें युद्ध होताहै २३श्रीर छातीके नक्षत्रमें प्रीतिका नाश होताहै श्रीरपासयोंके नक्षत्रमें व्याधिहोतीहै श्रीर पृष्ठके नक्षत्रमें राजाके कुलसें भय होताहै श्रीर नाभिके नक्षत्रमें भाईयोंसें मेल होताहै २४ श्रीर लिंगके नक्षत्रमें पुत्रकी उत्पत्ति होतीहै श्रीर गुदाके नक्षत्रमें मृत्युकी प्राप्त होतीहै श्रीर पट्टोंकेनक्षत्रोंमें दुःख होताहै श्रीर पैरोंके नक्षत्रोंमें विदेश गमन होताहै २५ हेपार्वतिपद पापी शुभग्रहके स्थानमें होवे तववी उलटा फल खोटाही फल कर्ताहैश्रीर शुभग्रह पापी ग्रहके स्थानमें होवे तव थोडी रक्षा कर्ताहै २६ श्रीर दुष्टस्थानके नक्षत्र सूर्य शनि श्रीर चंद्रमाकर्के युक्त होवें तव निश्चयकर्के व्याधि होतीहै श्रीर दुःष्टस्थानके नक्षत्र राहुकर्के युक्त होवें तवमृत्युमेंसंशयनाहिंहोताहै २७

~~चंद्रमा चक्र~~ बुधचक्रम्



जीवचक्र





श्रौर शुभनक्षत्र शुभग्रहोंकर्के युक्तहोवे तब कल्याण श्रौर आरोग्यता श्रौर सुख होताहै हेपार्वतिइ
हे बुधका चक्र तेरेकों कहाहै श्रौर क्या पूछतीहै २८ अथजीवचक्रम् ॥ अवहेपार्वतिवृहस्पतिका च
क्र कहताहां जिस प्रकारका सुंदर बालक होताहै तैसा चक्र बनावे २९ जिस नक्षत्रमें बृहस्प
ति स्थित होवें तिससें चार नक्षत्र शिरमें देवे तिन्होंका फल राजप्राप्त कहाहै श्रौर आगेके चार न
क्षत्र दक्षिण हाथमें देवे तिन्होंमें लक्ष्मीप्राप्त होतीहै श्रौर आगेका एक नक्षत्र गलमें देवें तिसमें ऐश्व
र्य होताहै श्रौर आगेके पाचनक्षत्र छातीमें देवे तिन्हमें प्रीति व लाभ होताहै श्रौर आगेके छे नक्ष
त्र दोनों पैरोंमें देवेतिन्हमें पीड़ा होतीहै श्रौर आगेकेचारनक्षत्र वाम हाथमें देवे तिन्हमें मृत्यु होताहै
श्रौरआगेकेतीननक्षत्रदोनोंनेत्रोंमें देवेतिन्हमेंराजाकेतुल्यसुखहोताहै पार्वतिइहबृहस्पतिकाचक्रकहाहै ३०

शुभाःशुभयुतेक्षेमारोग्यसंपत्सुखानिच बुधचक्रमितिप्रोक्तंकिमन्यत्परिपृच्छसि२८
अथजीवचक्रम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्रक्रंदेवगुरोरपि चक्रंलिखेत्सुरेशानियथा
शिशुसुशोभनम् २९ शीर्षेचत्वारिराज्ययुगपरिगणितेसव्यहस्तेचलक्ष्मीरेकं
कंठेविभूतिर्मदनशरमितंवक्षसिप्रीतिलाभः पाद्रिःपीडांघ्रियुग्मेजलधिपरिमितं
वामहस्तेचमृत्युर्दृग्युग्मेत्रीणिऋक्षंनृपतिसमसुखंवाक्पतेश्चक्रमेतत् ३०जीवर्क्षात्
अथशुक्रचक्रम् ॥ चक्रमन्यत्प्रवक्ष्यामिभृगुपुत्रस्यसुंदरि ॥ मयूरप्रकृतिलेखं नरि
पुदर्पहरप्रिये ३१ भार्गव्यंत्रीणिचचूंच्येशिखायांत्रीणिभानिच ॥ पार्श्वपक्षत्र
यंपट्चपट्लत्तायांसुरार्चिते ३२ त्रीणिपुच्छेचरणयोःपट्ऋक्षाणिसमालिखेत्
चंचुग्रीवेरिविध्वंसोविजयोयशसांनिधिः ३३ शिखास्थेवाहनंमानभंगःपाद
विशेषतः॥ पक्षभैःशुभसंयुक्तैरन्यदेशार्जितंधनम् ३४

अब शुक्रकाचक्रकहतेहैं ॥ शिवजीकहतेहैं हेपार्वति श्रौर शुक्रका चक्र कहताहा हेप्रिये शत्रुओंके
मानकों हरणे वाला मोरकी न्याई लिखे ३१ जिस नक्षत्रमें शुक्र स्थित होवे तिससें तीन नक्षत्र
चंचुके आगे लिखे श्रौर तीन नक्षत्र आगेके शिखामें स्थित करे श्रौर दोनों पक्षोंमें तीन तीन नक्षत्र
लिखे श्रौर दोनों जंघामें तीन तीन नक्षत्र लिखे ३२ श्रौर तीन नक्षत्र पुछमें लिखे श्रौर छे नक्षत्र पै
रोंमें लिखे श्रौर चचूके नक्षत्रोंमें शत्रुका नाशहोताहै श्रौर विजय होतीहै श्रौर बड़ा यश होताहै ३३
श्रौर शिखाके नक्षत्रोंमें वाहनका लाभ होताहै श्रौर पैरोंके नक्षत्रमें विशेषसे भंग होताहै श्रौर पक्ष
के नक्षत्र शुभ ग्रह कर्के युक्त होवें तब परदेशसें धन मिलताहै ३४

श्रीर लत्ताकेनक्षत्रोंमेंपापीग्रहयुक्तहोवेतवसेनापतिकाक्षयहोताहै श्रीर शुभ ग्रहकरकेंयुक्तहोवेतवव्याधि
कानाशहोताहैमिश्रग्रहोंकरकेंयुक्तहोवेतवश्रापसमेंभयहोताहै श्रीर चंचूमें श्रीर पुछमेंपापीग्रहवाशुभग्र
ह होवे तव विजय होतीहै श्रीर पैरोंमें शुभ पापी दोनों होवे तव मान भंग श्रीर रणमें क्षय होता
है ३६ इहमोरचक्र तात्काल प्रतीतीके करणे वालाहै अब शनिका चक्र कहतेहैं ॥ शिवजी कहतेहैं
हेपार्वति यो तैने मेरेकों पूछयाहे तव जन्मनक्षत्रसें यो शनि शुभाशुभफलदेताहै सो कहताहूं ६७
श्रीर तैसेंहि युद्धकालमें शनि जिस नक्षत्रमेंस्थित होवे तिसकाचिंतनकरे श्रीर लाभालाभमें श्रीर वि
वादमें श्रीर जीवनेमें श्रोर रणमें ३८ प्रथम शनिकी प्रतिमा नराकार स्थित करकें तिसमें नक्षत्र स्थि

लत्तासंस्थैश्चपापैश्चक्षयंसेनापतेर्भवेत् सशुभैर्व्याधिनाशायमिश्रैस्त्रासःपरस्परं
३५ चंचुपुछगतैःपापैःशुभैर्वाविजयोभवेत् ॥ चरणस्थैःशुभैपापैर्मानभंगोरणक्ष
तिः ३६ वहिंचक्रमितिप्रोक्तंसद्यःप्रत्ययकारकम् ॥॥ अथशनिचक्रम् ॥ शृणुदे
विप्रवक्ष्यामियत्वयाचोदितंमम नक्षत्रात्सौत्यतःसौरःशुभाऽशुभफलप्रदः ३७
तथासंचिंतयेदृक्षंसौरस्थंसमरागमे ॥ लाभालाभेविवादेचजीवनेमरणेतथा ३८
प्रतिमांविन्यसेदादौतत्रर्क्षाणितुविन्यसेत् ॥ चारर्क्षमास्यमध्येतुसव्यहस्तेचतु
ष्टयं ३९ पादयोःषट्करेवामेचतुष्कंपंचवक्षसि ॥ नेत्रयोर्द्वेन्यसेन्मूर्ध्नित्रीणिद्वे
गुह्यकेन्यसेत् ४० एवंविन्यस्यदेवेशिततःफलनिरूपणम् ॥ नानाविधानिदुः
खानिवक्रगेवधबंधनम् ॥ सव्यहस्तगतेलाभोविजयोबंधुसंगतिः ४१ पादस्थे
स्थानविभ्रंशोदेहपीडासुतक्षयः ॥ वामहस्तेराज्यभंगोवित्तनाशःसुहृद्वधः ४२

त करेश्रीर जिस नक्षत्रमे गोचर करकें शनि स्थित होवें तिसनक्षत्रकोमुखमें देवे श्रीर श्रागेके चारनक्ष
त्र दक्षिण हाथमे देवे६९श्रीर क्रमसें ६ पैरोंमे देवे श्रीर चार वामहाथमेंदेवे श्रीर पांचछातीमें देवे श्री
र दो नेत्रोंमे देवे श्रीर माथेमे तीन नक्षत्र देवे श्रोर दो नक्षत्र गुदामे देवे ४० हेपार्वति इस प्रकार
नक्षत्रोंको स्थित करकें फेर फल कहे जव जन्मनक्षत्रमुखमे होवे तब अनेक प्रकारके दुःख श्रीर
वध बंधन होताहै श्रीर दक्षिण हाथमे होवे तव लाभश्रीर बंधुयोंका मिलाप होताहै४१श्रीर पैरोंमेंस्थि
त होवे तव स्थान भ्रश श्रोर देहपीडा श्रीर पुत्रका क्षय होताहै श्रीर वामे हाथमे होवे तव राज्य भंग
श्रीर धननाश श्रीर मित्रोंका मरण होताहै ४२

राहु चक्र



ओर छातीमें जन्मनक्षत्र होवे तब जय और लाभ और स्त्रीकी प्राप्ति और धनका संग्रह होता है और नेत्रोंमें होवें तब परम प्रीति होतीहै औरधनोंका संचय होताहै ४३ और माथेमें होवे तब शत्रुओंका नाश और अधिकार पदकी प्राप्ति होतीहै इसमें संशय नहींहै और गुदामें स्थित होवे तब मृत्युको प्राप्त होताहै और लिंगमें स्थित होवें तब दुःखको प्राप्त होताहै ४४ और कहतेहैं मुखसे फेर गुदामें याताहै और गुदास्थानसे माथेमें जाताहै और माथेसे नेत्रोंमें और नेत्रोंसे हृदयमें हृदयसेंवामहाथमे ४५ और वामहाथसे पैरोंमें औरपैरोंसेदक्षिणहाथमेंऔर दक्षिणहाथसे मुखमें जाताहै इस क्रमसें नक्षत्र गतिको भोगताहै ४६ अब राहुका चक्र कहतेहैं हेपार्वति अब राहुका चक्र कहतेहैं जिसके जानने करके मनुष्योंका शुभाशुभका ज्ञान होताहै ॥ ४७ ॥ जिस नक्षत्रमें

जयोवक्षसिलाभश्वस्त्रीप्राप्तिर्धनसंचयः नेत्रयो.परमाप्रीतिर्वित्तानांसंचयस्तथा ४३ मूर्ध्निशत्रुविनाशश्चपदाप्तिर्नात्रसंशयः गुह्येचमृत्युमाप्नोतिलिंगेदुःखंविनिर्दिशेत् ४४ मुखाच्चलतिगुह्येपुगुह्यान्मूर्ध्नितथेक्षणे ईक्षणाच्चहृदियातिहृदयाद्वामकेकरे४५ततस्तुपादयोर्यातिपादाभ्यांदक्षिणेकरे ऋक्षंचरातिमंदस्यहस्ताद्वक्रप्रयातिच ४६ अथराहुचक्रम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिनक्षत्रांगंसुराद्विप. येनविज्ञानमात्रेणज्ञायतेचशुभाशुभम् ४७ नक्षत्रस्थोविचिंत्य.स्याद्राहुस्थेसमरागमे ॥ राहु.स्वरोदयाऽयुक्तःसमृत्युसदृशःकिल ४८ ऋक्षेयत्रस्थितोराहुस्तदाद्यास्यंप्रपीडयेत् दृष्ट्राग्रस्थेभद्वयेचबंधुसंतापदस्तथा ४९ ततोनासापुटांतेद्वेबंधनायवधायच नासाग्रतस्ततोद्वेचनक्षत्रेप्रीतिदेमते ५० ततःपरेक्षणस्थेचसर्वकामफलप्रदे वामकुंडलगान्यत्रचत्वार्य्यर्थधनक्षयम्५१

राहु स्थित होवे तिसको युद्धकालमें विचारे और स्वरोदयमें अनिष्ट राहु होवे तबनिश्चयसेंमृत्युकेतुल्यहोताहै ॥ ४८ ॥ जिसनक्षत्रमेंराहुस्थित होवे तिससे लेकरके दो नक्षत्र मुखमें देवे तिसमें पीडा देताहै और आगेके दो नक्षत्र दाढोंमें देवे तिन्होंमें बंधुओंको संतापहोताहै और जिसके आगेके दो नक्षत्र नासिका पुटोंमें देवे तिन्हमें बंधन और मरण होताहै और नासिकाके आगेसे दो नक्षत्र दोनों नेत्रोंमें देवे तिन्हमें प्रीति होतीहै ५० और आगेके चार नक्षत्र वाम कानके कुंडलमें देवे तिन्होंमें संपूर्णकामोंका शुभफल होताहै और आगेके चार नक्षत्र दक्षिण कानके कुंडलमें देवे तिन्हमें धनका नाश होताहै ५१

और तिन्हके आगे पांचनक्षत्र माथेमें देवेतिन्हमें पुत्रस्त्रीसें लेकर्के संपदा होतीहै ॥ ५२ ॥ और तिसके आगेका एक नक्षत्र शिरमें देवे तिसमेंइछाफल प्राप्त होताहै ,और तिसके आगे एक नक्षत्र ठोडीमें देवे तिसमें अन्नपानका सुख होताहै५३ और तिसके आगेके चार नक्षत्र मुखके अंदर देवे तिन्हमें बंधन और मरण होताहै औरवाममार्गकर्के नक्षत्रोंका न्यास करे५४ इस प्रकारका हेपार्वति राहुचक्र अष्ट विस्तारकर्के कहाहै और क्या पूछतिहैं ५५ अवकेतुका चक्र कहतेहैं जिस नक्षत्रमें केतु स्थित होवे तिससें लेकर्के फलको कहे प्रथम दो नक्षत्र नेत्रोंमें देवे तिन्हमें रोगशोक होताहै और आगेके पांच नक्षत्र मुखमें देवे तिन्हमें लाभ होताहै ॥ ५६ ॥

दक्षिणेकुंडलेचापिचत्वारिस्थापयेत्प्रिये ॥ अथपंचललाटेस्युःपुत्रदारादिसंपदः ५२ ततःपरंशिरस्येकमीहितस्याप्तयेतथा ॥ चिवुकेपरतश्चैकमन्नपानोपपादकम् ५३ वक्रभेदेचचत्वारिबंधनायवधायच ॥ अपसव्यगतिर्भानांविन्यसेच्चयथाक्रमम् ५४ एवमेतन्महाभागेराहुचक्रंसुविस्तरम् ॥ निःशेषंकथितंचात्रकिमन्यत्परिपृच्छसि ५५ अथकेतुचक्रम् यस्मिन्नृक्षेभवेत्केतुस्तदादौतुफलंवदेत् नेत्रेद्वेरोगशोकायमुखेलाभायपंचच ५६ राज्यप्रदंत्रयंमौलौनक्षत्रंपरिकीर्तितम् ॥ चतुष्कंदक्षिणेहस्तेनक्षत्रंचशिवप्रदम् ५७ ॥ वामहस्तेचतुष्कंचभयरोगकरंसदा ॥ एकंनाभौचनाशायगुह्येद्वेमृत्युकारकम् ५८ दद्याच्चपादयोःषट्चधननाशकराणिचकेतुचक्रस्यमाहात्म्यंदेहस्थंज्ञायतेबुधैः ५९ अथात्रप्रसंगतःसेवाचक्रम् ॥ सेवाचक्रेशिरःसप्तसप्तपृष्ठेतथोदरे पादयोःसप्तऋक्षाणिसाभिजित्तुक्रमान्न्यसेत् ६०

और तीन नक्षत्र शिरमेंस्थितकरे तिन्हमें राज्यप्राप्ति होतीहै और आगेकेचार नक्षत्र दक्षिणहाथमें देवे तिन्हमें शुभकर्म होताहै ॥ ५७ ॥ फेर आगेके चार नक्षत्र वाम हाथमेंदेवे तिन्हमें भय और रोग होताहै और आगेका जो एक नक्षत्रहै सो नाभिमें देवे सो नाश करताहै और आगेके दो नक्षत्र गुदामें देवे सो मृत्युकर्तेहैं ॥ ५८ और आगेके छे नक्षत्र पैरोंमें देवे तिन्हमें धनकानाश होताहै हेपार्वति केतुके चक्रका माहात्म्य पंडितोंने नराकारचक्रमें जाननेयोग्यहै अव प्रसंग गत सेवा चक्र कहतेहैं सेवा चक्र नराकारवनावे और तिसमें सात नक्षत्र शिरमें देवे और सातनक्षत्रपृष्ठमेंदेवे और सातनक्षत्रउदरमेंदेवेऔरसातनक्षत्रपैरोंमें देवे ऐसेंअभिजितसहितठाइनक्षत्रदेवे६०

केतु चक्र



सेवकक्ष



और स्वामीके नक्षत्रसें लेकर्के चाकरके नक्षत्र पर्यंत गिने और चाकरके नक्षत्रसें लेकर्केस्वाम
के नक्षत्र पर्यंत गिने पृष्टदेशमें और पैरोंमेंस्वामी और सेवकका नक्षत्र स्थित होवें तब सेव
फल हीन होतीहै और शिरमें और उदरमें दोनोंके नक्षत्र होवें तब फलके देनेवालीहोती
॥ ६१ ॥ और एकका पृष्टपैरोंमें और एकका शिर उदरमें नक्षत्र होवे तब मध्यम फल होता
अब स्वरशास्त्रोक्त सर्वतोभद्र चक्र कहतेहैं ॥ तिसमें दशरेखा ऊर्ध्वमुख देवे और दशरेखा टेढीयादे
तब एकाशी ८१कोष्ट कर्के युक्त सर्वतोभद्र नामकर्के चक्र होताहै १ और तिसमे ईशान कोनसें ले
कर्के चार कोणयोंके कोष्टोंमेंक्रमसें अकारादि और अः पर्यंत सोला स्वर लिखे और पूर्वादि
योंमें क्रमकर्के कृत्तिका नक्षत्र सें लेकर्के प्रत्येक दिशामें सात सात नक्षत्र लिखे २ और अवकहड

स्वामिभात्भृत्यभंगण्यंभृत्यभात्स्वामिभंतथा ॥ निष्फलंपृष्ठपादस्थेफलदस्तु
शिरोदरे ॥ ६१ ॥ अथस्वरशास्त्रोक्तसर्वतोभद्रचक्रम् ऊर्ध्वगादशविन्यस्य
तिर्यग्रेखास्तथादश ॥ एकाशीतिपदंचक्रंसर्वतोभद्रसंज्ञितम् १अकारादिस्वरा
कोष्ठेष्वीशादिविदिशिक्रमात् ॥ कृत्तिकादीनिपूर्वादौसप्तसप्तक्रमेणच ॥ २
अवकहडाःपूर्वस्यांमटपरतादक्षिणेदेयाः ॥ नयभजखावारुण्यांगसदचलाश्चो
त्तरेदेयाः ३ अथस्त्रयोपिविन्यस्यवृपाद्याराशयस्तथा-पूर्वादिशेषकोष्टेपुनंदा
द्यांतिथिपचक्रम् ४वाराणांसप्तकंलेख्यंयथोक्तस्वरमार्गगम् यस्मिन्धिष्ण्येग्रहो
वेधोवामदक्षिणसंमुखः ५

है पांचवर्णं पूर्वदिशामें लिखे और मटपरत इहे पाच वर्ण दक्षिणमें लिखे और नयभजख इहे पाच
वर्ण पश्चिमदिशामें लिखे और गसदचल इहे पाच वर्ण उत्तरदिशामें लिखे ३ और पूर्वादि दिशों
मे वृषराशिसें लेकर्के तीन तीन राशियां यथाक्रमसे लिखे और शेष जो पाच कोष्ट रहेहै तिन्हमे
पूर्वसें लेकर्के नंदादि तिथियोंकों स्थित करे और तिसमें मध्यके कोष्टमें पूर्णातिथिकों लिखे ४ औ
र तिथियोंके साथ सात वारोंकों लिखे जैसें नंदातिथिमे सूर्य मंगल और भद्रा में चंद्र बुध और ज
यामें बृहस्पति और रिक्तामे शुक्र और पूर्णामें शनि वार लिखे इस प्रकारकर्के लिखनेसें सर्वतोभद्र
चक्र सिद्धहोताहै और जिस नक्षत्रमेंजो ग्रहस्थित हो वेतिस नक्षत्रसे वाम और दक्षिण और संमुख
तीनप्रकारका वेध होताहै ५

श्रौर कहतेहै आर्द्रा श्रौर हस्त श्रौर पूर्वाषाढा श्रौर उत्तराभाद्रपदा इहे चार नक्षत्र चारदिशोंमें स्तं भको स्थाद्र मध्यमें स्थितहैं श्रौर घडङ आर्द्राकर्के श्रौर पणठ हस्तकर्के श्रौर धफढ पूर्वाषाढाकर्के श्रौर झञथ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रकर्के इहे वर्ण वेधको प्राप्त होतेहे ६ श्रौर कहतेहै वक्रगति ग्रहकी दक्षिण दृष्टि होतीहै श्रौर शीघ्रगतिवाले ग्रहकीवाम दृष्टिहोतीहै श्रौर मध्यमगतिकेसमान गतिवाले ग्रहकी संमुख दृष्टि होतीहै इहे तीनप्रकारकी गति बुद्धिवाल्योंने जानने जोग्यहे ७ श्रबइसमेंकत्ति का नक्षत्रमेंग्रहस्थितकर्केउदाहरणकहतेहैजबकृत्तिकानक्षत्रमेंग्रहस्थितहोवेतबतीनप्रका रका वेध इसरीतिसें जानने जोग्यहै भरणी नक्षत्रको श्रौर अकाराक्षरको श्रौर वृषराशिको श्रौर वा

घडछारौद्रभेविद्धाःपणठाहस्तेथतोयभेधफढा श्राहिर्बुध्न्येझञथादृष्टिवशाद्ग्रह भवेद्विधः ६ वक्रेगेदक्षिणादृष्टिर्वामदृष्टिस्तुशीघ्रगेमध्यादृष्टिर्मध्यचारेज्ञेयंदृष्टित्र यंबुधैः ७ अत्रोदाहरणम् भरण्यकारंवृषभंनंदांभद्रांतुलांचतम् विशाखांश्र वणपापोभिनत्त्याग्नेयसंस्थितः ८ यदिताराग्रहोवक्रएकएवयमदहेत्शीघ्रगश्चे दकारिक्षंनंदांभद्रांसवारकाम् ९ तुलांतकारामिंद्राग्नीदैवतंचभिनत्तिहिमध्यग त्यासमानश्रवैष्णवर्क्षंभिनत्तिच १०

रोंकर्के युक्त नंदा भद्रा तिथियोंको श्रौर तुलाराशिको श्रौर तकाराक्षरको श्रौर विशाखानक्षत्रको श्रौर श्रवण नक्षत्रको तीन प्रकारकाहि वेध होताहै ८ श्रौर यद भौमादि पांचग्रहोंमें कोई ग्रह वक्री होवे तब केवल भरणी नक्षत्रको वेध करताहैश्रौर जब शीघ्रगतिमें स्थित होवे तबंअ काराक्षर को श्रौर वृष राशिको श्रौर नंदा भद्रा तिथि वारोंकोश्रौर तुला राशिको श्रौर तकाराक्षरकोश्रौर विशाखा नक्षत्रको वेध कर्ताहै ९ श्रौर मध्यम गतिके तुल्य ग्रह चलताहोवे तबकेवलश्रवण नक्षत्रकोंवेधकर्ताहे श्रौर इसीरीतिकर्केनक्षत्रांतरमेंस्थितग्रहका विचारकरणेजोग्यहै १०

और राहूकेतु सदा वक्रि रहितेहै और सूर्य चंद्रमा सदा शीघ्र रहितेहैं और मंगलसेलेकरके पांचग्रहोंकावेध तीनप्रकारका चार वशसें कहाहै ११ औरक्रूर ग्रहवक्री होवेंतव महाक्रूर होतेहैं और शुभ ग्रह वक्री होवें तव अत्यंत शुभहोतेहैं और शीघ्रगतिमें संपूर्ण ग्रह थोडा फलकर्तेहैं और मध्यगति में संपूर्ण ग्रह पूर्ण फल कर्तेहैं . १२ और कोणोंमें यो नक्षत्र तिन्हकेचतुर्थ और प्रथम चरणमें पव ग्रह स्थित होवे तव अकारादि चारस्वरोंको और पूर्ण तिथिको वेध होताहै १३ और एकक्रूर ग्रहका वेध होवे तव उद्वेग होताहै और दो क्रूरवेधकरेंतव धनहानि होतीहै और तीनक्रूरग्रह वेधकरें तवरोगहोताहै और चार क्रूरग्रह वेध करेंतव मृत्यु होताहै और शुभग्रहोंके वेधकरके शुभफलहोताहै और शुभपाप दोनोंके वेधसें मिश्रित फल होताहै १४ और नक्षत्र वेधमें भ्रम और वर्णवेधमें हानि

राहुकेतूसदावक्रौशीघ्रगौशशिभास्करौ
दृष्टित्रयंचारवशाद्भौमादिग्रहपंचके ११
क्रूरावक्रामहाः क्रूराःसौम्यवक्रातिशो
भनाःशीघ्राःस्वल्पफलाःसर्वे ॥ मध्ये
पूर्णफलप्रदाः १२ कोणस्थधिष्ण्ययो
र्मध्येत्यपूर्वेग्रोग्रहोयदा ॥ अकारादिचतु
ष्कस्यवेधःपूर्णास्तिथेस्तथा १३ एकादिक्रू
रवेधेनोद्वेगोहानीरुजोमृतिः सौम्यवे
धेशुभंज्ञेयंमिश्रेमिश्रंसमादिशेत् १४
भ्रमोधिष्ण्येक्षरेहानिः स्वरेव्याधिर्भयं
तिथौ राशिवेधेमहाविघ्नंपंचविद्धोनजी
वति ॥ १५ ॥ एकविद्धेभयंयुद्धेद्वयोर्वेधे
नसंक्षयः ॥ त्रयाणांवेधतोभंगश्चतुर्णांवे
धतोमृतिः १६ अर्कवेधान्मनस्तापोभौमेहानिःशनौरुजः राहुकेत्वोर्भयंवेधसौ
म्यःक्रूरयुतोनसत् १७चंद्रेमिश्रफलंपुंसांरतिलाभस्तुभार्गवे बुधवेधाद्भवेद्बुद्धिर्गुरोः
सर्वार्थसिद्धयः १८स्वक्षेत्रस्थेफलंपूर्णंपादोनंमित्रगेहगे अर्द्धंसमगृहेज्ञेयंपादंश
त्रुगृहास्थिते १९

औरस्वरवेधमें व्याधिऔरतिथिवेधमेंभयऔरराशिवेधमेंमहाविघ्नऔरनक्षत्रादि पांचग्रहोंककेंविद्धहोवेतब मृत्यु होताहै १५ औरएकवेधककेंयुद्धमेंभयहोताहैऔरदोवेधककें क्षतिकोप्राप्तहोताहैऔरतीनवेधसें युद्धमें भंगहोताहैऔरचारवेधकरकेंमृत्युकोप्राप्तहोताहै १६ औरसूर्यकेवेधसेंमन कातापहोताहैऔर मंगलके वेधसें हानि होतीहैऔरशनिकेवेधसेंरोगहोताहैऔरराहूकेतुकेवेधमेंभयहोताहैऔरक्रूरग्रहकरकेंयुक्तबुधकावेध शुभनहीं होताहै १७ और चंद्रमाके वेधसें मिश्रित फलहोताहैऔरशुक्रके वेधसें रतिकासुखहोताहै और बुधके वेधसें बुद्धिहोतीहै और बृहस्पतिके वेधसें संपूर्णअर्थ सिद्ध होतेहैं १८ और वेधकर्त्ताग्रह स्वक्षेत्रमें होवे तब पूर्ण फल कर्ताहै और मित्र क्षेत्रमें पादोन और समके क्षेत्र में अर्द्ध और शत्रु की राशिमें चतुर्थांश फलकर्ताहै १९

और ... यद्रोगकालमें क्रूरग्रहका वेधहोवे और क्रूरग्रहवक्री होवे तब मृत्युकर्ताहै और ...
और अतिहोवे तबचिरकालरोगकर्ताहै औरवृषमिथुनकर्कराशिमेंसूर्यस्थितहोवे तबपूर्वदिशा और सिंहकर्क
न्या तुलामें सूर्य होवे तब दक्षिण औरवृश्चिक धन मकरमें सूर्य होवे तब पश्चिम और कुंभमीनमेषराशि
में सूर्य स्थित होवे तब उत्तर दिशा अस्त होतिहै २१ और नक्षत्र अस्तहोवे तब रोगहोताहै और
नक्षत्रअस्त होवे तब हानिहोतीहै और स्वरअस्तहोवे तवशोकहोताहै और राशिअस्त होवे
तब विघ्न होताहै और तिथिअस्तहोवे तब भयहोताहै और पांचोंहिअस्त होवे तबमृत्युहोतीहै २२
और यात्रायुद्धविवादधरके महलकाद्वारशुभकर्मअस्तदिशाकेसमुखवांदिवाल्यानिनहींकरणेयोग्यहै २३
औरजितना काल जिसकेनामकापूर्वअक्षरअस्तदिशामेंहोवे उतनाकालसो मनुष्य दैवकके हत हो
...

रोगकालेयदावेधःक्रूरखेचरसंभवःवक्रगत्याभवेन्मृत्युःशीघ्रेवाच्योरुजान्वितः
२० यत्रपूर्वादिकाष्ठायांवृषराश्यादिगोरविः सादिशास्तमिताज्ञेयायत्रभानुस्त्रि
मासिकः ॥ २१ ॥ नक्षत्रेस्तेरुजोवर्णेहानिःशोकःस्वरेस्तगे राशौविघ्नंति
थौभीतिर्मरणंपंचसुस्मृतम् २२ यात्रायुद्धंविवादश्चद्वारप्रासादहर्म्ययोःनकर्त
व्यंशुभंचान्यदस्ताशाभिमुखंनरैः २३ अस्ताशाभिमुखंयावत् भवेन्नामाद्य
मक्षरं तावत्सर्वेषुकार्येषुभवेद्दैवहतोनरः २४ नक्षत्रेभ्युदितेपुष्टि र्वर्णेलाभः
स्वरेसुखंराशौजयस्तिथौतेजःपदाप्तिःपंचकोदये २५ दीपोयथागृहस्यांतःप्रका
शयतिसर्वतः तथैवसर्वतोभद्रचक्रंज्ञानप्रकाशकम् २६ इतिसर्वतोभद्रचक्रम्
अथसूर्यकालानलचक्रम् सूर्यकालानलंचक्रस्वरशास्त्रोदितंचयत् तदहंविशदं
वक्ष्येचमत्कृतिकरंपरम् १ त्रिशूलकाग्राःसरलाश्चतिस्रः किलोर्ध्वरेखाःपरिक
ल्पनीयाः रेखात्रयंमध्यगतंचतत्रद्वेद्वेचकोणोपरिगेविधेये २

२४ और नक्षत्र उदित होवे तब पुष्टि होविहै और वर्णमें लाभ और स्वरमें सुख और राशि
जय और तिथिमें तेज और पांचोंके उदयहोवे तब पदकी प्राप्तिहोतिहै २५ औरजैसेघरकेमध्यमेंदीपसंपूर्ण
नेमेंप्रकाशकर्ताहै तैसेहिसर्वतोभद्रचक्रशुभाशुभज्ञानकाप्रकाशकरणेवालाहै २६ इतिसर्वतोभद्रचक्रम्
सूर्यकालानल चक्र कहतेहैंस्वरशास्त्रमें कहायो सूर्यकालानलचक्रतिसकों में विस्तारकर्के इस वि
कहताहां कैसाहै परम चमत्कारके करणे वालाहै १ त्रिशूलहैं अग्रमें जिनके ऐसीयां तीस
ना सूधियां लिखे तिन्हकों ऊर्ध्व मुख स्थित करे और तीनरेखा तिन्हके मध्यमें टेढीया देवे और
दोरेखा चार कोणोंमें देवे २

अथावकहडचक्रम्

अ क्ल १	व २	क ३	ह ३	ड ४	म म १	ट २	प ३	र ३	त ४
इ २	वि ३	कि ४	हि ४	डि क्ले १	मि २	टि ३	पि ४	रि ४	ति वि १
उ ३	वु ४	ऊ घ ङ आ छ	ऊ ति १	डु २	ऊ ३	डु ४	पुषह णठ	रु स्वा १	तु २
ए क्ला ४	वे १	के ३	हे २	डे ३	मे ४	टे उफ १	पे चि १	रे २	ते ३
ओ रो १	वो २	को २	हो ३	डो ४	मो पू फा १	टो २	पो २	रो ३	तो ४
नु अ १	यू १	भ ३	ज ३	ख ४	ग ध १	सु २	द ३	च ३	ल
नि २	यि ३	भि ४	जि ४	खि श्र १	गि २	सि ३	दि ४	चि ४	लि १
नु ३	भु ४	उ य ध फ ढ	जु भि १	खु २	गु ३	सु ४	दु थ झ ञ	चु मृ २	लु १
ने ४	ये पू १	भे उ ष १	जे २	खे ३	गे ४	से पू भ १	दे रे १	चे २	ले १
नो ज्ये १	यो २	भो २	जो ३	खो ४	गो श १	सो २	दो २	चो ३	लो ४

पूर्व ३ ऊ

अ	क्ल	रो	मृ	आ	पुं	ति	श्ले	मा
म	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	ल	ह	मि	र्क	तू	म	ह फ
रे	च	मे	श्रो	११।११ मू म	श्री	सिं	ट	उ फ
उ भ	द	मौ	७।१०।१० श्रु	५।१०।९ श	३।७।१२ कृ धु	कं	प	ह
ध म	स	ऊ	श्र:	३।७।१२ उ	श्र	तु	र	चि
श	ग	पे	मं	य	हृ	प	त	स्वा
थ	श्र	ख	ज	म	य	न	श्र	वि
ई	श्रु	श्र	उ प	पू प	मू	ज्ये	श्र	इ

पफढ

उत्तर

पश्चिम

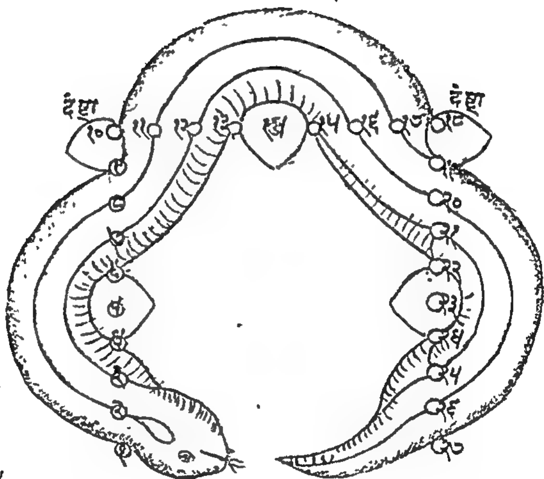
जन्म १ — आव ४ — मृत्यु ७

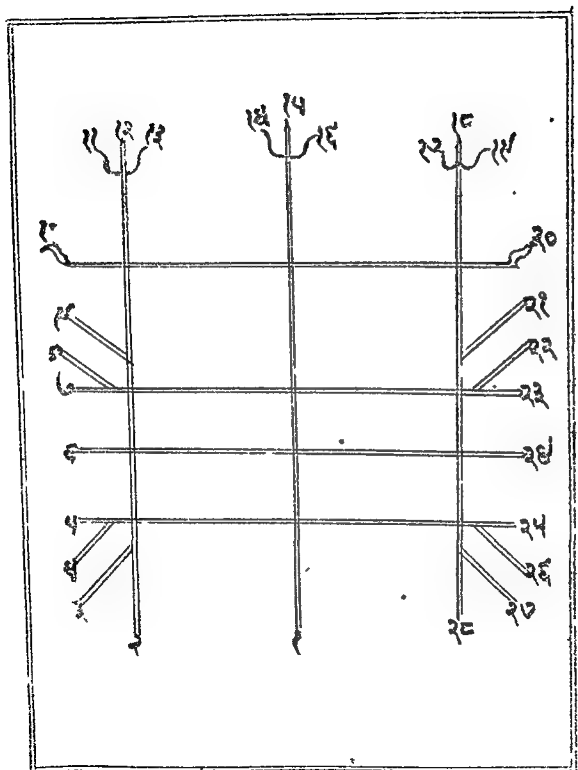
मानस २५ — ९ धर्म

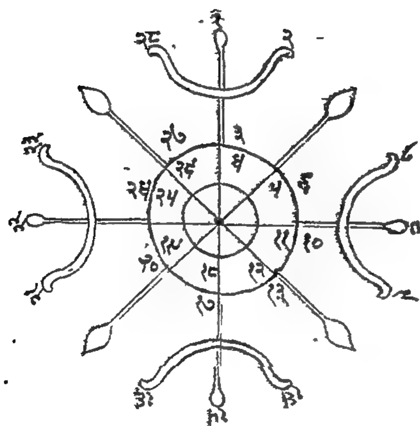
वैनाशिक २३ — १० कर्म

आधान १९ — ११ आय

१८ समुदाय — १६ संघात — १५ काल




११
१२
१३
१४
१५
१६
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८



११
१०

श्रोर त्रिशूल श्रोर कोणरेखाके। मध्यमें एक श्रोर रेखा देवे तिसरेखाके आगे मध्ये शृंग-
वनावे श्रोर मध्यमें जो त्रिशूलाग्ररेखाहै तिसके मूलसें लेकर्के दक्षिणमार्ग कर्के अभिजित
महित सूर्यके नक्षत्रसें लेकर्के अठाइ नक्षत्र लिखे २ श्रोर अपने नामका नक्षत्र जि
मस्थानमें स्थित होवे. तिसका शुभाशुभ फल विचारे श्रोर नीचेके तीन नक्षत्रोंमें अपने नामका नक्ष
त्र स्थित होवे तब क्रमकर्के चिंता श्रोर वध श्रोर वंधन होताहै ४ श्रोर दोनोशृंगोंमेंरोग श्रोर भं
ग होताहै श्रोर त्रिशूलोंमें स्थित होवे तब मृत्युको प्राप्त होताहै श्रोर शेषरहे नक्षत्रहैं तिन्हमें नामन
क्षत्र होवे तब जय श्रोर लाभ अभीष्ट सिद्धि अनेकप्रकारोंकी मनुष्योंको होतीहै ५ इहे श्रीसूर्यका
लानलचक्र रोगमें श्रोर विवादमें श्रोर युद्धमें श्रोर यात्राकालमें प्रथम विचारलेवे इहे पुरातन ऋषि

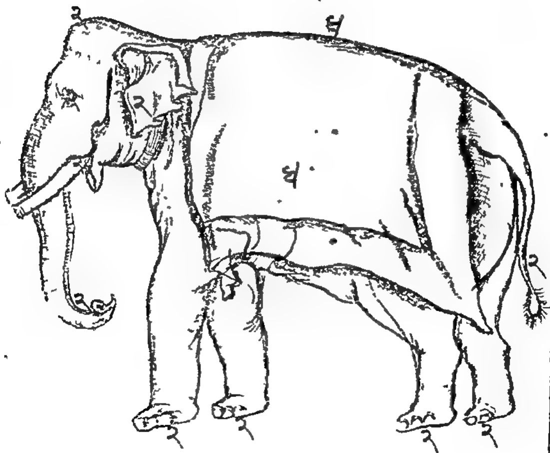
त्रिशूलंकोणांतरगान्यरेखांतदग्रयोःशृंगयुगंविधेयंमध्यत्रिशूलस्यचदंडमूलात्सव्ये
नभान्यर्कभतोभिजिच्च ३ स्वनामभंयत्रगतंचतत्रप्रकल्पनीयंसदसत्फलंहि तलेस्थ
ऋक्षत्रितयेक्रमेणचिंतावधश्चप्रतिबंधनानि ४ शृंगद्वयेरुक्चभवेच्चभंगःशूलेपु
मृत्युंपरिकल्पनीयम् शेषेपुधिष्ण्येपुजयश्चलाभोभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधानराणां ५
श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्रुग्देववादेचरणेप्रयाणे प्रयत्नपूर्वंननुचिंतनीयंपुरा
तनानांवचनंप्रमाणम् ६ इतिसूर्यकालानलचक्रम् अथचंद्रकालानलचक्र
म् कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तंतस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्ये वृत्ताद्बहिःसचलिते
विधेयेरेखेत्रिशूलाश्चतदग्रकेपु १ कोणाश्चरेखाद्वितयेनसाध्याःपूर्वत्रिशूलेकि
लमध्यसंस्थम् चांद्रंलिखेद्भंतदनुक्रमेणसव्येनधिष्ण्यानिबहिस्ततोंते २ का
लानलंचक्रमिदंहिचांद्रंरणप्रयाणादिपुजन्मभंचेत् त्रिशूलसंस्थंनिधनायनूनं
मंतर्वहिस्थंचशुभप्रदंहि ३

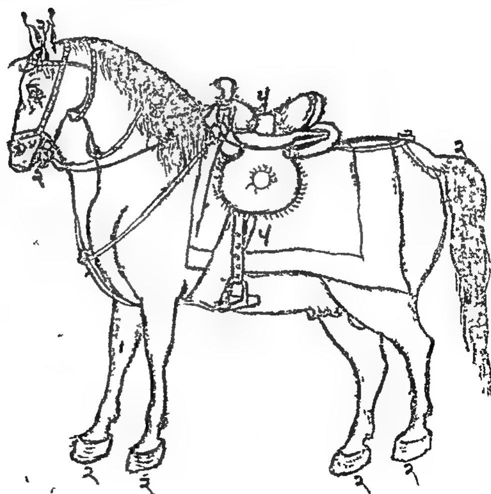
योंनेंकहाहै ६ इतिसूर्यकालानलचक्रम्- अब चंद्रकालानलचक्र कहतेहैं प्रथम प्रकारकर्के वृत्त मंडल
वनावे श्रोर तिसमें दोरेखा देवे एक पूर्वाग्रजो वृत्तके वाहरको प्राप्त होजावे श्रोर एक दक्षिणाग्रे
रेखा जो वृत्तके वाहर चलीजाय अर्थात् चारदिशामें चाररेखा वृत्तके वाहर चलीजावे श्रोर तिन्होंरे
खोंके अग्रभागमें चारत्रिशूल वनावे १ श्रोर वृत्तमें दोरेखाकर्के ईशानादि चारकोणा सिद्धकरे-
श्रोर पूर्वदिशाकेत्रिशूलके मध्यमें चंद्रमाके नक्षत्रको लिखे श्रोर आगेके नक्षत्र दक्षिण भाग कर्के
क्रमसेंवाहर श्रोर अंतर गत लिखे २ इहे चंद्रमाका कालानलचक्र कहाहै इसको युद्धकालमें श्रोर
यात्रादि कालमें जन्मनक्षत्र त्रिशूलमें स्थित होवे तब निश्चयकर्के मृत्युको प्राप्त होताहै श्रोर अं
दरश्रोर वाहरके नक्षत्रोंमें स्थित होवे तब शुभफल होताहै ॥ ३ ॥

नामकेप्रथमाक्षरसें जन्मनक्षत्रादियोंकावेध शुभाशुभ ग्रहोंकाविचारकरके फलकहे अब कालदंष्ट्राच
क्रकोकहतेहैं नव नक्षत्र उर्द्धगतिसें लिखे और नव नक्षत्र टेढेलिखे औरनवनक्षत्र अधोगतिकरकेलिखे
१ और चारनाडियोंकरके नक्षत्रोंको वेध करे औरमध्यके तीननक्षत्रों को छोडदेवे सोचक्र सर्पाकार
होताहै सोकालचक्र कहाहै २ तिसमें तीन नक्षत्र यो मध्यमें स्थितहैं सो कालकामुखहै और या

अथजन्मनक्षत्रादिवेधफलार्थचक्रम् जन्मभेक्रूरवेधेचहानिकष्टंविनिर्दिशेत् सुखभे
ऽसुखहानिःस्याद्वातपित्तज्वरंभवेत् १ मृत्युभेदुःखदंरोगंशोकंमोहंपराभवंधर्मभेचा
र्थनाशंचरोगश्चविविधोभवेत् २ कालभेतुविनाशंचआधानेघातकंतथाक्रूरवेधे
भवेन्मृत्युःशोकःकष्टंज्वरंभवेत् ३ अर्थनाशोमनस्तापोहानिकष्टंप्रचक्ष्यतेसंघात
केविरोधंचमनस्तापंचविघ्नता ४ सामुदायकभेरिष्टंसुखंअरिपुभातिदम् अथकाल
दंष्ट्राचक्रम्नवोर्ध्वगानिधिष्ण्यानिनवातिर्यग्गतानिच अधोगतानिधिष्ण्यानिनवचैव
विनिर्दिशेत् १ चतुर्नाडिकृतोवेधोमध्यनक्षत्रयोज्झिताःसर्पाकारंचयच्चक्रम्का
लचक्रंप्रजायते २ त्रीणिमध्यगऋक्षाणितानिकालमुखानिच कोणस्थितेत्रयेधि
ष्ण्येतेचदंष्ट्राद्वयंमतम् ॥ ३ ॥ दिनर्क्षमादितःकृत्वानामर्क्षंयत्रसास्थितं मुखदंष्ट्राग
णेमृत्युःशुभमन्यत्रसंस्थितम् ज्वरितेनष्टदंष्ट्रेचविवादेविग्रहेरणे कालदंष्ट्रा
स्यगंनामयस्यतस्यमहद्भयम् ५ अत्रन्यासःदिननक्षत्रादारभ्यालिखेत्इति
का लदंष्ट्राचक्रम्

दो नक्षत्र कोणोंमें स्थितहैं सो कालकिदंष्ट्र दाढाहैं ३ वर्तमानदिनकेनक्षत्रसें गिने नामनक्षत्र मुखमें
वा दाढोंमें स्थित होवे तिस दिनमें मृत्युको प्राप्तहोताहैऔर अन्यस्थानमें होवे तब शुभहोताहै ४
और ज्वरमें और देशमें और विवादमें औरयुद्धमें जिसका नक्षत्र कालकी दाढोंमें और मुखमें
होवे तिसको वडा भय होताहै इतिकालदंष्ट्राचक्रम्





अब गजराजका चक्र कहतेहैं जिसके जाननेसे यात्रामें और युद्धमें जय होतीहै १ हा
थीकी न्याईं संपूर्ण अंगों करके युक्त चक्र लिखे और तिसमें दक्षिण मार्गसे अठाईस नक्षत्र स्थित
करे २ और हाथीके नाम नक्षत्रसे लेकरके मुख और शुंडाग्र और नेत्र और कर्ण और शिर
और पैर और पुच्छमें दोदो नक्षत्र लिखे और पृष्ठमें और उदरमें चार चार नक्षत्र स्थित करे
३ और मुखसे लेकरके जिसे अंगमें शनिका नक्षत्र होवे तिसका शुभाशुभ फल कहे ४ और युद्धका
लमें मुख और शुंडाग्र और नेत्र और शिर और उदरमें शनिका नक्षत्र जिसे हाथीके स्थित हो
वे तिसकी जय होतीहै ५ और जिस हाथीके पृष्ठमें और पैरोंमें और पुच्छमें और कर्णोंमें शनि
[illegible]

॥ अथगजचक्रम ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिचक्रंमातंगनायकम ॥ येनवि
ज्ञानमात्रेणयात्रायुद्धजयोभवेत ॥ १ ॥ गजाकारंलिखेच्चक्रंसर्वा
वयवसंयुतम ॥ अष्टाविंशतिऋक्षाणिदद्यानिसृष्टिमार्गतः ॥ २ ॥ मुखशु
डाग्रनेत्रेचकर्णशीर्षांघ्रिपुच्छके द्विकंद्विकंचदातव्यंपृष्ठोदरेचतुश्चतुः ३ द्विरद
नामभाद्दद्यादवदनादिगुरुस्यतबुधैःयत्रऋक्षास्थितःसौरिर्ज्ञेयंतत्रशुभाशुभं ४ मुखेशु
डाग्रेनेत्रेचसौरिभेमस्तकोदरे ॥ युद्धकालेगतेयस्यजयस्तस्यनसंशयः ५ पृष्ठ
पादेचपुच्छेचकर्णस्थशनैश्चरे मृत्युभंगौरणेतस्यऐरावतसमोयदि ६ एतेषांदुष्ट
भागानांयत्कालसंस्थितःशनिः ॥ तत्कालपट्टबंधेपिवर्जनीयःप्रयत्नतः ७ पृ
थिव्याभूषणमेरुःशर्वर्याभूषणंशशी नराणांभूषणंविद्यासैन्यानांभूषणंगजः ८
अथाश्वचक्रम. अश्वाकारंलिखेच्चक्रंमश्विधिष्ण्यादितारकाः ॥ वदनात्सृष्टिमार्गेदे
यंअष्टाविंशतिसंख्यया १ मुखाक्षिकर्णशीर्षेषुपुच्छांघ्रियुग्मसंख्यया पंचपंचोद
रेपृष्ठेसौरियंत्रफलंततः ॥ २

॥ २ ॥ [illegible]

स्थित होवे सो ऐरावतके तुल्य भी होवे तब युद्धमें मृत्यु और भंग होताहै ६ और इन्हों दुष्टस्था
नोंमें जिसकाल शनि होवे तिसको राज्याभिषेकसमयमें त्याग करे ७ और कहतेहैं पृथ्वीका भूषणमेरु
पर्वतहै और रात्रिका भूषण चन्द्रमाहै और मनुष्योंका भूषण विद्याहै और सेनाका भूषण हाथीहै ८
इतिगजचक्रम् अब अश्वचक्र कहतेहैं घोडेकी न्याईं सुंदर चक्र लिखे और तिसमें घोडेके नाम
नक्षत्रसे लेकरके दक्षिण क्रमसे अभिजित सहित अठाईस नक्षत्र स्थित करे १ प्रथम मुखसे लेके
के मुख और नेत्र और कर्ण और शिर और पुच्छ और पैरोंमें दो दो नक्षत्र स्थित करे और पांच
उदरमें और पांच पृष्ठमें स्थित करे और जिस अंगमें शनिका नक्षत्र होवे तिसका फल कहे २

और मुख और नेत्र और कर्ण और शिरमेंजिस घोडेके शनि स्थित होवे तव शत्रु भंगकों प्राप्तहोतेहैं और युद्धमें शत्रु वश्यकों प्राप्त होतेहैं ३ और उदर और पैर और पृष्ठ और पुछमें शनि जिस घोडेके होवे तव विभ्रम और भंग और हानियुद्धमें सोघोडा करताहै ४ और इन्हों स्थानोंमें यद घोडेके शनि स्थित होवे तिस घोडेकों राजा अभिषेक कालमें और यात्रामें और युद्धमें त्याग करे ५ और जिस घोडेके शुभ स्थानमें शनि होवे तिस राजाके शत्रु डरतेहैंजिसजिस भूमिमेंतिसकेघोडेफिरें ६ इतिश्रीजातकखंडभाषायांपरिशिष्टाध्यायस्त्रयोविंशः २३ अव रिष्ट प्रतिकाराध्याय कहतेहैं ॥ जोमनुष्य ग्रहोंकों प्रसन्न कियाचाहताहै तिसनें आगे कहे जो औषधियोंकर्के स्नान और ग्रहोंका पूजन और ब्राह्मणोंका पूजन और ग्रहोंके निमित्त यथोक्त विधि

मुखाक्षिकर्णशीर्षस्थोयदासौरिस्तुरंगमे तदारिर्भंगमायातिरणेशत्रुवशंगतः ३ उदरांघ्रिपृष्ठपुच्छस्थेश्वांगेष्वर्कनंदने विभ्रमंभगहानिंचकरोत्यश्वोमहाहवे ॥ ४ ॥ एतत्स्थानस्थितःसौरिःसदाकालेहयस्यच ॥ पट्टवधेगमेयुद्धेवर्जयेत्तहयन्नृपः ५ देशांतरस्थितःसौरीरिपव सतिशंकिताः ॥ तुरंगायस्यभूपस्यविचरंतिमहीतले ६ इत्यश्वचक्रम् इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशविरचितेज्योतिर्महानिवंधेजातकखंडेपरिशिष्टाध्यायस्त्रयोविंशः २३ अथरिष्टप्रतिकाराध्यायःव्याख्यायते ॥ प्रयाज्यमौषधिस्नानग्रहविप्रार्चनतथा ग्रहानुद्दिश्यहोमोवाग्रहाणांप्रीतिमिच्छता १ तत्रग्रहस्नानमुच्यते सदौषधैर्यातिगदाविनाशंयथायथादुःखभयानिमंत्रैः तथोदितस्नानविधानतोपिग्रहाऽशुभनाशमुपैत्यवश्यम् २ अथप्रत्येकग्रहस्नानं तत्ररवेः मनःशिलैलासुरदारुकुंकुमैरुशीरयष्टिमधुपद्मकान्वितैः सताम्रपुष्पैर्विषमस्थितेरवौहितावहंस्नानमुदाहृतंबुधैः ॥ ३ ॥

कर्के होमकोंकरे १ तिनमें प्रथम स्नानका हेतु कहतेहैं जैसें श्रेष्ठ औषधिके सेवनेंसें रोग नाशकों प्राप्त होतेहैं और जैसें सद्गुरुकर्केउपदिष्टजोमंत्रहैं तिन्हों कर्के दुःख और भय नाशको प्राप्त होतेहैं तैसहि कहेपो ग्रहोंकेस्नान तिन्होंकर्के अवश्यमेव ग्रहोंका रिष्ट नाशकों प्राप्त होताहै २ इस वास्ते ग्रहोंके स्नान कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यका रिष्ट दूरकरणे वास्ते स्नानविधि कहतेहैं ॥ जिस मनुष्यकों दशान्तर्दशामें या गोचरमें दुष्टस्थानमें सूर्यहोवे तिसकों मनशिला रक्तधातु और इलाचीयांऔरदिवारकाष्ट और केसरऔरखसखस मीठा जटा और मुलठी और लालकमल और रक्तपुष्प करवीरादि इन्होंकों जलमें मिलायकर्के स्नान करणेंसें सूर्यका रिष्ट दूर होताहै ३ अथ चंद्रमाका स्ना

न कहतेहैं पंचगव्य प्रसिद्धहै गोमूत्रगोमय गोदुग्ध गोदधि गोघृतमिति और गजमदहस्तिमद औ र शंखऔर सिप्पी और कुमुद श्वेत कमल और स्फटिक श्वेतमणिइन्होंको जलमेंमिलायकर्के स्नान करणेसें चंद्रमाका विकार दूर होताहै ४ अब मंगलका दोष दूरकरणे वास्ते स्नान कहतेहैं विल्ववृक्ष और रक्तचंदन और लालघम्मणी और लालपुष्प और सिंगरफ और मालकंगुणी और लाळवकुलइन्होंको जलमें मिलायकर्के स्नानकरणेसें मंगलका दोष दूरहोताहै ५ अब बुधकादो ष दूर करणेवास्ते स्नान कहतेहैं गोहा और अक्षत और फल और गोरोचन और मक्षीर औरमो ति और ॥ सदृक्षजटा और सुवर्ण जलमें मिलायकर्के स्नानबुधका रिष्ट दूरकरणे वास्ते विद्वा न्नोंने कहाहैं ६ अब बृहस्पतिका रिष्ट दूरकरणेवास्ते स्नान कहतेहैं ॥ मालतीकेपुष्प औरसेतिसर

अथचंद्रस्य पंचगव्यगजदानविमिश्रैःशंखशुक्तिकुमुदस्फटिकैश्च शीतरश्मि कृतवैकृतहंतृस्नानमेतदुदितंनृपतीनाम् ॥ ४ ॥ अथभौमस्य ॥ विल्वचंदन बलारुणपुष्पैर्हिंगुलूकफलिनीवकुलैश्च ॥ स्नानमद्रिरिहमांसयुताभिर्भौमदो षविनिवारणमाहुः ॥ ५ ॥ अथबुधस्य गोमयाक्षतफलैःसरोचनैःक्षौद्रशु क्तिभवमूलहेमभिः स्नानमुक्तमिदमत्रभूभृतांबोधनाशुभविनाशनंबुधैः ६ अ थगुरोः मालतीकुसुमशुभ्रसर्षपैःपह्लवैश्चमदयंतिकोद्भवैः मिश्रमंबुमधुकेनच स्फुटवैकृतंगुरुकृतंनिकृंतति ७ अथभृगोः॥एलयाचशिलयासमन्वितैर्वारिभिः सफलमूलकुंकुमैः ॥ स्नानताभृगुसुतोपपादितादुःखमेतिविलयंनसंशयः ८ अथशनेः असिततिलांजनलोध्रवलाभिः शतकुसुमाघनलाजयुताभिः रवित नयेकार्यितंविषमस्थदुरितहृदाह्लवनंमुनिमुख्यैः ॥

हो मदयंतिके पत्र मल्लिकाकेपत्र और मुलठी या मक्षीर करके युक्त जलमें मिलायकर्के स्नान कर णेसें बृहस्पतीका रिष्ट दूर होताहै ७ अब शुक्रका दोष दूर करणे वास्ते स्नान कहतेहैं छोटीइल चीं और मनसिला करके युक्त और फलबीजपूरादिकका मोहोकरके सिरेयकर्के औरमेदवृक्षकिदाजटा और केसर इन्हों सपूर्ण औषधियोंको जलमें मिलायकर स्नानकरणेसें शुक्रका दोष दूर होताहै ८ अब शनिका स्नान कहतेहैं काले तिल और सुरमा और लोध और काली घम्मणी और सौफया क और मुस्थर और धान्योंकीया फुल्लियां इन्हो औषधियोंको जलमे मिलायकर्के स्नानकरणेसेंशनि का रिष्ट दूरहोताहै ऐसें श्रेष्ट मुनियोंनें कहाहै ९

अब राहुके नैका स्नान कहतेहैं लोध्र और गर्भकस्या खलतिलोंकी और तिलपत्र और मुस्ता और हाथी कादंत । और कस्तूरी जलकर्के युक्त संपूर्ण औषधियोंसें स्नान करणेसें राहुकादोष दूर होताहै और बकरेके मूत्रको मिलायकर्के इहै स्नानकेतुके दोषको दूरकर्ताहै ॥ अब संपूर्ण ग्रहोंकी पीडा हरणेवाला स्नान कहतेहैं सेतीसरेहां । और लोध्र और हरिद्रा और दारु हरिद्रा और मुस्ता और धनिया और खसकचा वीरणगुल्मकीजटा और मालथ गुग्गुल और वच और छड गुड्डी इन्हीं औषधियोंको जलमें मिलायकर स्नान करणेसें संपूर्णसूर्यादिग्रह श्रेष्ठ सुखको देतेहैं ११ अब सूर्यादिग्रहोंका पूजन दीपिका ग्रंथसें कहतेहैं सूर्य और मंगल दोनोंका पूजन लाल पुष्पोंकर्के और रक्तचंदनके तिलक कर्के और ताम्र कर्के और सुवर्ण कर्के और लाल गौ और लाल वृषभके और सुगंधिवाले पुष्पोंसें और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षिणासें करे और चन्द्रमाका पूजन स्वेत सवत्स

अथराहोः । रोध्रगर्भतिलपत्रकमुस्ताहस्तिदंतमृगनाभिपयोभिः स्नानमार्ति
मपसेधतिराहोः साजमूत्रमिदमेवचकेतोः १० अथसर्वग्रहपीडाहरस्नानम् सि
द्धार्थरोध्ररजनीद्वयमुस्तधान्यलामंजकंसफलनीसवचासमांसी ॥ स्नानंकुरु
ग्रहगणप्रशमायनित्यंसर्वेरविप्रभृतयःसुसुखाभवंति ११ अथग्रहपूजा रक्तैः
पुष्पैर्गंधैस्ताम्रैःकनकरूपैःसुरभिकुसुमैर्दिवाकरभूमिसुतौभृत्तर्यौ पूज्याविंदुर्धे
न्वासितकुसुममुरभिमधुरैःसितशचमदप्रदैः कृष्णद्रव्यैःसौरिःसौम्योमणिरज
तवकुलकुसुमैर्गुरुःपरिपीतकैःप्रीतः पीडानस्याद्गुयाद्यदिनिपततियदिवादश
निभुजगविजृंभितम् १२

गौ और श्वेत वस्त्र और स्वेत पुष्प और सुगंधिद्रव्य मुस्ककपूरादि और मधुर द्रव्य दुग्ध शर्करादि और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षिणासें करे और शुक्रका पूजन मदवृद्धिके करनेवालियों वस्तुओंसें और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षिणासें करे और शनिका पूजन कृष्णद्रव्यसें लोहा तिल तैल माषादि कृष्ण वस्त्रादि और वक्ष्यमाणनैवेद्य दक्षणासें करे और बुधका पूजन हरिन्मणि और रूपा और हरितवस्त्रादि और नकुलके पुष्पोंसें और वक्ष्यमान नैवेद्य दक्षणा कर्के करे और बृहस्पतीका पूजन पीतद्रव्यसें पुष्परागादि मणियोंसें और पीतवस्त्र पीतधान्यादि और वक्ष्यमाण नैवेद्य दक्षणासें करे तब फल होताहै इसप्रकार ग्रहोंके पूजन करणेसें ग्रह प्रसन्न होतेहैं तब ऊंचे स्थानसें गिरे वा जमरे देय तो तबभी मृत्युको नहिप्राप्त होताहै और सर्पकाटनेसें भुजंग विजृंभित छंदकरके १२

अब सूर्यादि ग्रहोंका नैवेद्य कहतेहैं सूर्यको गुडोदन और चंद्रमाकों घृतपायस और मंगलकों हवि घृत मधु युक्तान्न और बुधकों दुग्ध भक्त और बृहस्पतिकों दधि भक्त और शुक्रकों घृतभक्त और शनिकों तिलोंका भुग्गा और राहुकों बकरेका मांस और केतुकों चित्रान्न इह सूर्यादि ग्रहोंके नैवद्य कहेहै ॥ १३ ॥ अब चित्रोदनका लक्षण कहतेहैं बकरीके दुग्धमें यव तिल चावल भिगोयदेवे और बकरीके कानकी रक्तसें रंगे तब चित्रान्न होताहै १४ अब सूर्यादि ग्रहोंकियां समिधा कहतेहै अर्क १ पलाश २ खैर ३ पुटकंडा ४ और पिप्पल ५ उम्बल ६ जंड ७ दूर्वा कुशा ८ इह क्रमसें सूर्यादि नवग्रहोंकियां समिधाहे १५ अब ग्रहोंके होमका प्रमाण कहतेहे एक एक ग्रहके निमित्त घृत मधु करके युक्त अठाई ॥ २८ ॥ अथवा अष्टोत्तरशत ॥ १०८ ॥ अथवा अष्टोत्तरसहस्र ॥ १००८ होमकरे

अथनैवेद्यविधिः ॥ गुडभक्तसघृतपायसहवींपिक्षीरदधिघृतान्नानि तिलपिष्ट माजमांसंचित्रोदनमर्कतोदद्यात् ॥ १३ ॥ अथचित्रोदनलक्षणं अजाक्षीरेणसंस्विन्नायवाश्वतिलतंडुलाः अजाकर्णस्यरक्तेनरक्ताश्चित्रान्नसंज्ञिताः ।१४ अथग्रहाणांसमिधः ॥ अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोथपिप्पलः औदुंबरश मीदूर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमात् । १५ अथग्रहाणांहोमप्रमाणम् एकैकस्याष्टश तकमष्टाविंशतिरेववा होतव्यामधुसर्पिर्भ्यांसहस्रंचाष्टसंयुतम् १६ अथग्रहा णांदक्षिणानिर्णयः धेनुः शंखस्तथानड्वान्हेमवासोहयस्तथा कृष्णागौरायसंछा गमेतावैदक्षिणाः क्रमात् ॥ १७ ॥ अथग्रहतुष्ट्यर्थंरत्नादिधारणं धार्यंतुष्ट्यै विद्रुमंभौमभान्वोरूप्यंशुक्रेंदोश्चहेमेंदुजस्य मुक्तासूरेर्लोहमर्कात्मजस्यराजाव र्तःकीर्तितःशेषयोश्च। १८।

॥ १६ ॥ अब सूर्यादि ग्रहोंकियां दक्षिणा कहतेहै सूर्यको तात्काल प्रसूतागौ और चंद्रमाकों शंख और मंगलकों लालवृषभ और बुधकों सुवर्ण और बृहस्पतिकों पीतवस्त्र और शुक्रकों श्वेत घोडा और शनिकों कृष्णागौ और राहुकों लोहा और केतुकों बकरा इह दक्षिणा देवे १७ । अब ग्रहोंकी प्रसन्नताके वास्ते रत्नादि धारण कहतेहैं सूर्य और मंगलकी प्रसन्नताके वास्ते मुंगे धारण करे और चंद्रमा और शुक्रकी प्रसन्नताके वास्ते रौप्य चांदी धारण करे और बुधकी प्रसन्नताके वास्ते सुवर्ण धारण करे और बृहस्पतिकी प्रसन्नताके वास्ते मोती धारण करे और शनिकी प्रसन्नताके वास्ते लोहा धारण करे और राहुकेतुकी प्रसन्नताकेवास्ते लाजावर्तको धारण करे ॥ १८ ॥

रत्नादियोंकेअलाभमेंऔषधियोंकेमूलधारणदीपि कामेंकहेहे जिसकोसूर्यनिषिद्धफलकरणेवाला
मकालमेंवा गोचरमेंवा दशांतर्दशामेंहोवे सोमनुष्यविल्ववृक्षकामूलधारणकरे और चंद्रमानिषिद्ध
तव क्षिरिणी बूटिका मूल धारणकरे और मंगल निषिद्धहोवे तवनागजिन्हा बूटिका मूलधारणकरे
र बुध निषिद्ध स्थानमें होवे तव विधारा प्रसिद्धहै सोधारण करे और वृहस्पति नि-
स्थानमें होवे तव भांडिगी प्रसिद्धहै तिसका मूल धारण करे और शुक्र निषिद्ध होवे तव शालप
बूटीका मूल और कितनेयोंके मतमें श्वेत गुंजा मूल रत्तिकाका मूल धारण करे और शनि निषिद्ध
तव वांछोला बूटी धारणकरे और राहु निषिद्ध होवे तव श्वेत चंदनका मूल धारणकरे और केतु
षेद्ध होवे तव असगंध प्रसिद्धहै सो धारणकरे ॥ १९ ॥ अव सूर्यादिग्रहोंके
कहतेहैं ॥ यो यो ग्रह गोचरादिमें और निश्चयकर्के दशांतर्दशामें अशुभ होवें सो जिस
रके दानादियोंसें प्रसन्नहोतेहैं सो दानकाविधान कहताहों २० अव सूर्यका

अथौषधिमूलपरिधानम् मूलधार्यत्रिशूल्यः सवितरिविगुणेक्षीरिकामूलमिंदौ
जिन्हाहेभूमिपुत्रेरजनिकरसुतेवृद्धदारोश्चमूलम् ॥ भार्ग्यांजीवेथशुक्रेभवति
शुभकरंसिंहपुछस्यमूलंवाछोलंचार्कपुत्रेतमसिमलयजंकेतुदोषश्वगंधम् ॥ १९
अथग्रहदानानि येचांवरस्थाःखलुगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैरशुभाभवंति दानादि
नातेचयथाप्रसन्नाभवंतिदानादिविधिंप्रवच्मि २० अथरवेः ॥ कौशेयंत्वथ
हेमताम्रकलशंचोर्णांवरंकुंकुमंमाणिक्यंचगुडप्रवालकमलंमध्वैलयावैक्षितिं
॥ प्रावारासनरक्तचंदनघृतंगोधूमनानाफलंसूर्यायव्यजनंचरक्तवसनंधेनुंस
वत्सांगृहम् २१ अथचंद्रस्य ॥ शंखस्फाटिकमौक्तिकंगजमदंवज्रंतथातंडुला
न् दुग्धंदुग्धविकारपट्टवसनंक्षौद्राज्यरौप्यंफलम् ॥ कर्पूरंसितवस्त्रपांडुवृष
भंकस्तूरिकाचंदनंप्रावारंलवणेक्षुगांचतुरगंचंद्रायदद्यात्सुधीः २२ ॥

न कहतेहैं ॥ पट्टवस्त्रऔर सुवर्ण और ताम्रकेकलश और ऊर्णा वस्त्र और केसर और माणिक
णीचूनीऔर गुडऔरमुंगे औरकमलपुष्प और मखीर औरछोटीपांडलाचियांऔरपृथ्वीऔरप्रधा
वस्त्र उपरिपरिधानवस्त्र और आसन और रक्तचंदनऔर घृत और गोधूमान्न कनक और अ
कफल और पखाऔर लालवस्त्रऔर सवत्सागौ और घरवनायकर्केनूतन सूर्यकेनिमित्तदानकरे २१
अवचंद्रमाका दान कहतेहैं ॥ शंख और स्फटिकमणी और मोती और हाथीकाम
और हीरामणी और चिट्टेचाउल और दुग्ध और वरफी पेडे श्वेत पट्टवस्त्र और मखीर और
घृत और रौप्य और फल और कपूर और श्वेतवस्त्र और श्वेतवैल और कस्तूरीऔर श्वेतचंदन
और उपरका प्रधानवस्त्र और लवण और गन्ने और श्वेतगौ और श्वेतघोडा इह दान श्रेष्ट
॥दिवालाचंद्रमाके निमित्त करे २२

॥ अबमंगलका दन कहतेहै ॥ ताम्र और चोरी ओर शस्त्र और पृथ्वी ओर गुड ओर लालवर्णके पट्टवस्त्र और तिका अहुर और मजीठीरगकेलालकपडे और रक्तपुष्प ओर कनक ओर केसर ओर ऊपरका प्रवानवस्त्र और मसूरान्न और कस्तूरी और स्वर्ण औरफल और मुंगे और आसन और लालवर्णकीगो और रक्तचंदन इहे दानमंगलको प्रसन्नताके वास्ते कहाहै २३ अब बुधका दान कहतेहे दासी और दास ओर जिमी और अनेकफल और घोडा और सवजमणी पन्ना और गो और घृत और मुगी अन्न और चाउल और चौरी ओर शस्त्र और हाथी ओर कास्य और घर और सुवर्ण और कपूर ओर श्वेतचदन और मरकत मणी और हाथीकादत ओर आसन और सवजरगके वस्त्र और छैरसकाभोजन बुधके निमित्तदा न करे २४ अब बृहस्पतिका दान कहतेहै ॥ हाथी और हाथीका मद ओर बगुला और सुवर्ण

अथभौमस्य ताम्रचामरमायुधेक्षितिगुडकौशेयरक्तांबरतिक्तारक्तपटौचरक्तकुसुमं गोधूनककुंकुमं प्रावारचमसूरकांमृगमदस्वर्णफलविद्रुमवक्रायप्रवदतिचासनम थेोगांरक्तकचदनम् २३ अथबुधस्य दासीदासमहीफलानितुरगगारुत्मकंगाघृ तं मुद्गातडुलचामरायुधगजकांस्यगृहहाटकम् ॥ कर्पूरहरिचंदनमरकत वैनागदंतासन दूर्वाभांबरषड्रसमृगमदहेम्नायदेयसदा ॥ २४ ॥ अथगु रो ॥ नागोनागमदनृयानकनककौशेयपीताबरछत्रचामरपुष्परागतुरगक्षो णीगृहशर्करा ॥ पीतान्नंरजनीचमौक्तिकफलरौप्यचकस्तूरिकाक्षौद्रगोयुग लोर्णवस्त्रलवणसदीयतेवैगुरो ॥ २५ ॥ अथभृगो वज्रगोक्षितितडुलां श्वरजतशुभ्रांबरमौक्तिक कस्तूरीहरिचंदनासितहय प्रावारचौर्णांबरम् ॥ कौशेयात्मकगंधपुष्पकमथोगत्रीरथंकंवल शालिग्रामशिलाज्यगांसुराज्ञे तांशुक्रायदद्यात्सदा २६

और पीतवर्णके पट्टवस्त्र और छत्री और चौरी और पुष्परागमणी और घोडा और जिमी और घर खंड औरपीले अन्न चणकादि और हलदी और मोती और रौप्य और कस्तूरी और मखीर और दोगउआौर ऊर्णवस्त्र और लवण इहे बृहस्पतिके निमित्त दान कहाहै ॥ २५ अब शुक्रका दान कहतेहैं ॥ हीरा और श्वेतगो और जिमी और चिट्टेचावल और रौप्य औरश्वेत वस्त्र और मोती और कस्तूरी और श्वेतचंदनऔर श्वेतघोडा और ऊपरकाप्रवानवस्त्र औरऊर्णवस्त्र और पट्टवस्त्र अम्ल रसवस्तु ओर सुगंधद्रव्य और पुष्पऔरश्वेत वैलोंकीगाडी अथवा रथ और श्वेतरंगका दुसाला और शालिग्रामकी शिला और घृतऔर अप्सरामयी करके शुक्रकी शुक्रके निमित्त दानकरे २६

॥ अथशनिका दान कहतेहैं ॥ माहा अन्न और निरमलनीलमणी और माहिषी और दा
और बांजसंलेकर पक्षी और तिल और तेल और लोहा और जिमी और सिक्का और उट और दास
कुलथअन्न और गज और मां अन्न और पैरों का जोडा और कस्तूरी और काली गौ और तुलापुरुषादि षोड
महादान और कालेरंगका श्रेष्ट दुसाला शनिके निमित्तदानकरे २७ अवराहुकादान कहतेहैं गोमेदमणि
तिल और कांस्यपात्र और माहिषी और तेल कंबला दुसाला और लाजावर्तमणी और हाथी और ऊ
और दास और कालेमरिच और नीलेपट्टवस्त्र और दासी और हिंगु और फलसतधान्य और धनुष
र बाण और शय्या और आसन और गौ और जिमी और पैरोंका जोडा यहे दानराहुकी प्रस
ाके वास्तेदेवे २८ अब केतुका दान कहतेहैं ॥ लूण और नीलवर्णके पट्टवस्त्र और वैदूर्य
णी और तिल और नीले रंगका दुसाला और ऊर्णवस्त्र और श्रेष्ट सुगंधद्रव्यवाला तेल और

अथशनेः माषान्नंविमलेंद्रनीलमहिषीदास्यःपतत्रीस्तिला तैललोहधरासुसी
सकरभादासःकुलत्थास्त्रपुः ॥ स्यामाकान्नमुपानहौमृगमदंगांकृष्णवर्णांतथा
मदापप्रवदतिषोडशमहादाननिसत्कंबलम् २५ अथराहोः ॥ गोमेदंतिलकां
स्यपात्रमहिषीतैलंतथाकंबलंलाजावर्त्तगजोष्ट्रदासमरिचाःकौशेयनीलांबर ॥
दासीहिंगुफलान्नकार्मुकशराःशय्यासनगोमही ॥ दानंद्वयमुपानहौसतुरगंदैत्ये
शतुष्ट्यैसदा २८ अथकेतो ॥ केतोर्दानमुदीरितहिलवणंकौशेयनीलांबर वै
डूर्यंतिलकंबलोर्णवसनसद्गंधतैलासनकस्तूरीहरिचंदनंदशविधांगांददातितिक्तं
हयंखड्गाद्यायुधमम्लकंचमहिषींदासींचदासंफलम् २९ अथश्वाविभवानुरूपं
दानमुक्तंकेश्चित् ॥ कौसुंभवस्त्रंगुडहेमताम्रंमाणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मंसवत्सगो
दानमितिप्रणीतंदुष्टायसूर्यायमसूरिकाश्च ३० सूर्यायेदम् घृतकलशंसितवस्त्रंद
धिशंखंचैवमौक्तिकसुवर्णंरजतंचसंप्रदद्याच्चंद्रारिष्टोपशमनाय ३१ चंद्रायेदम् ॥

आसन और कस्तूरी और श्वेतचंदन और दशप्रकारका गोदान और हाथी और तिक्तरस और घो
ा और खड्गसे लेकरके शस्त्र और अम्लरस और महिषी और दासी और दास और फल इह दान
केतुकी प्रसन्नताके निमित्त कहाहै २९ अब सामान्य मपूर्णलोकोंके वास्ते सूर्यादि ग्रहोंके दान
कहतेहैं ॥ प्रथम सूर्यका दान कहतेहैं ॥ कसुंभके रंगवाले लाल वस्त्र और गुड और सुवर्ण
और ताम्र और चूनीमणि और गोधूमान्न कनक और सुवर्णका कमल और सवत्सागौ और
मसरोंकी दाल इहे दान दुष्टस्थानमें स्थित सूर्यका कहाहै ३ अब चंद्रमाका दान कहतेहैं ॥
घृतका कलश और श्वेतवस्त्र और दधि और शंख और मोती और सुवर्ण और रौप्य इह
दान चंद्रमाके रिष्ट दूरकरनेके वास्ते कहाहै ३१

अब भौमका दान कहतेहैं मुंगे और गोधूमान कनक और मसरकी दाल और लाल बैल, और कर्वारके लाल पुष्प और मजीठी रंगके लालवस्त्र और गुड और सुवर्ण और ताम्र और रक्तचंदन इह दान दुष्टस्थानमें स्थित भौमके निमित्त देवे ॥ ३२ ॥ अब बुधका दान कहतेहैं, सबजवस्त्र और मुंगी अन्न और पन्नामणी और दासी और सुवर्ण और घृत और कांस्य और गजदंत और हाथी अथवा भिड्डू और रौप्य और मालतीसलकके श्रेष्ठपुष्प इहदान बुधके निमित्त देवे ३३ अब बृहस्पतिका दान कहतेहैं कुलरंगका घोडा और सुवर्ण और श्रेष्ठ पीतवर्णके वस्त्र और पीतवर्णके अन्न चणकादि और लूण और श्रेष्ठ पुष्प और खंड और हीरा इह दुष्टस्थानमें स्थितबृहस्पतिकेनिमित्तदेवे ३४ ॥ अब शुक्रका दान कहतेहैं चित्रवर्णका श्वेतवस्त्र और चिड़ चाविले और घृत और सुवर्ण

प्रवालगोधूममसूरिकाश्ववृषश्चताम्रःकरवीरपुष्पंआरक्तवस्त्रंगुडहेमताम्रंदुष्टायभौमायकुचंदनंहि ३२ भौमायेदम् नीलवस्त्रंमुद्गदानंबुधायरत्नंपाचिदासिकाहेमसर्पिः कांस्यदंतः कुंजरश्चाथमेषोरौप्यसर्वपुष्पजात्यादिकंच ३३ ॥ बुधायेदम् अश्वः सुवर्णंशुभपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसुपुष्पं सशर्करंतद्रजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रदेयम् ॥ ३४ ॥ जीवायेदम् चित्रवस्त्रमपिदानवार्चितेदुष्टगेमुनिवरैःपरिगीतम् तंडुलंघृतसुवर्णरूप्यकंवज्रकंपरिमलोधवलाश्वः ३५ शुक्रायेदम् नीलकंमाहिषंकृष्णवस्त्रंलोहंसदक्षिणम् दद्याद्दक्षिणयुक्तंशनिदौष्ट्यप्रशांतये ३६ शनैश्चरायेदम् ॥ राहोर्दानंबुधैर्मेषोगोमेदंलोहकंबलौ सुवर्णंनागरूप्यंचसतिलंताम्रभाजनम् ३७ राहवइदम् केतोर्वैदूर्यमम्लंतैलम्रगमदस्तथाऊर्णातिलैश्चसंयुक्तादेयाक्लेशापनुत्तये ३८ ॥

और रौप्य और हीरामणी और श्वेतवर्णका घोड़ा इह दान दुष्टस्थानमें स्थित शुक्रके निमित्तश्रेष्टमुनियोंने कहाहै ३५ अब शनिका दान कहतेहैं नीलमणी और महिषी और कालेवस्त्र और लोहा और कालीगौ और दक्षिणा करके युक्त इह दान शनिका दोष दूरकरणे वास्ते देवे ३६ अब राहुका दान कहतेहैं भिड्डू और गोमेदमणी और लोहा और कंबल और सुवर्ण का नाग और रौप्य और तिलोंकरके युक्त ताम्रपात्र इह दान बुद्धिमानोंने राहुके निमित्त कहाहै ३७ अब केतुका दान कहतेहैं वैडूर्यमणी निर्मल और तैल और कस्तूरी और ऊर्णवस्त्र तिलोंकरके युक्त इह दान क्लेश दूरकरणेवास्ते केतुके निमित्त देवे ३८

त्र पूर्वोक्त संपूर्ण ग्रहोंका दोषदूरकरणे वालाफलकासमूह कहतेहैं देवता औरब्राह्मणोंको नमस्कार-
रणेसें और गुरोंका वचनमाननेसें और नित्यप्रति साधुयोंसें संभाषण करणेसें और वेदध्वनिऔर ओर
त्याके श्रवण करणेसें और ग्रहोंकोप्रसन्नताकेनिमित्त होमकरणेसे और यज्ञोंके देखनेसें, और मनकी
द्धभावनासें और इष्टदेवताकाजपकरणेसें औरदानकरणेसें मनुष्यकोंकदाचित् ग्रहपीडानहि करतेहै ३९
त्रपापग्रहोंकरकेंविद्धजन्मनक्षत्रादियोंकाप्रतिकारकहतेहे जिसकाजन्मनक्षत्रपापग्रहकरकें पूर्व कहे जो
धकाश्कार तिसमेंविद्धहोवे तिसकोरोग और धनकानाश और लडाईरहितीहै और कर्मनक्षत्र १०
द्ध होवे तब कर्म सिद्ध नहि होतेहै और सांघातिक १६ नक्षत्र विद्ध होनेसे आपसमें विरोध
होताहै और सामुदाय १८ नक्षत्र विद्ध होवे तब धनके संग्रहका नाशहोताहै और वैनाश २३ ह

जन्मवल्लभम् देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहंसाधुनामभिभाषणा
च्छ्रुतिरवाच्छ्रेयः कथाकर्णनात् होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दान
तोनोकुर्वतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहाः पीडनम् ॥ ३९ ॥ अथजन्मर्क्षा
दिपापग्रहविद्धप्रतीकारः ॥ रोगाभ्यागमवित्तनाशकलहाःसंपीडि
तेजन्मभेसिद्धिकर्मनयातिकर्माणिहतेभेदस्तु सांघातिके द्रव्यस्योपचितस्यसामु
दयभेसंपीडितेसंक्षयोवैनाशेप्रभवंतिकायविपदश्चित्तासुखंमानसे ४० अत्रचपीडा
याशांतिमाहदेवलः सर्वपापीडायांदिनमेकमुपोषितोनलेजुहुयात् सावित्र्याःक्षी
रतरोःसमिद्भिरमरद्विजानुरतः ४१ गोक्षीरेगोमूत्रैःपत्रैर्मूलैश्चपूर्णकोशायाःस्ना
नंजन्मानेजुष्टंस्वाचारवतोहरतिपापम् ४२ कर्मणिमधुघृतहोमोदशाहमक्षारमां
साशः दूर्वाप्रियंगुसर्षपशतावरीदलयुतंस्नानम् ४३

क्षत्र विद्ध होनेसें देहपीडा होतीहै और मानस २५ नक्षत्र विद्ध होनेसें मनोविकार होताहै ४० अब
इनकी शांति देवल कहताहै ॥ जे नक्षत्रमेंसे किसीकोपीडा होवे तबएकदिन निराहार व्रत करे औ
र पिप्पलादि क्षीरवृक्षोंकि सामिधा करके और गायत्री मंत्रसें अग्निमें होम करे और देवता और
ब्राह्मणोंकापूजनकरे ४१ और गोकादुग्ध और गोमूत्रऔर पूर्णकोशाजडीके पत्र और मूलकरके जो
स्नानविधि कहिहै तैसे स्नानकरे और आचारमें रहनेमें रिष्ट दूर होताहै ४२ और कर्म नक्षत्र पी
डित होय तब मधुर और घृत करके होमकरे और दश दिन पर्यंत लूण और मांसका त्याग
करे और दूर्वा और मालकांगणी और मेती सरेहो और शतावरी करके युक्त स्नानकरे ४३

श्रार साघातिक १६ नक्षत्र पोडित होवे तवमास श्रोर क्रोध श्रोर मैथुनकात्याग करे श्रग्निमे खद्बरका होमकरे श्रौर यथाशक्तिकर्के दानदेवे ४४ श्रौर सामुदाय १८ नक्षत्रपीडितहोवे तव सुवर्ण श्रार रौप्य दान करे श्रोर वैनाशिक २३ नक्षत्र पीडित होवे तव श्रन्नदानकरे श्रौर श्रेष्ट जिमीका दान करे ४५ श्रौर मानस २५ नक्षत्रपीडित होवे तव कमलके पुष्पोंककहोम करे श्रौर पायस कर्के ब्राह्मणोंका पूजन करे श्रौर कस्तूरीश्रौर सरीहवृक्षके पत्र मूल श्रौर श्वेत चंदन श्रौरघम्मणी श्रौर गगेडी कर्केयुक्त स्नान करे ४६ श्रवनाडीनक्षत्रोंके नाम कहतेहें जिसनक्षत्रमेंजन्म होवे तिसकी श्राद्य प्रथम सज्ञाहै श्रौर जन्मनक्षत्रसें दशम १० नक्षत्रकी कर्म सज्ञाहै श्रौर षोडश १६ नक्षत्रकी सांघातिकसंज्ञा श्रौर श्रष्टादशनक्षत्रकी १८ समुदाय सज्ञा श्रौर

सांघातिकेतुततेमांसमथुकोर्घ्यमन्मथांस्त्यक्त्वाग्नौदूर्वाजुहुयाद्दानंदद्याद्यथाशक्ति ४४सामुदयकेतुदद्यात्कांचनरजतान्युपद्रुतेधिष्ण्ये वैनाशिकेन्नदानवसुधांचगुणान्वितांदद्यात्४५मानसतापेहोमःसरोरुहैःपायसैर्द्विजा पूज्याः मृगमदशिरीपचंदनबलातिबलसयुतस्नानम् ४६ अथनाडीनक्षत्रनामानि जन्माद्यकर्मततोदशमभसांघातिकचषोडशभमसमुदायमष्टादशभविनाशसज्ञंत्रयोविंशम् ४७ आद्यात्तुपचविंसमानसभंनर षड्क्षःस्यात् नवनक्षत्रोनृपति स्वजातिदेशाभिषेकर्क्षैः ४८ अथनाडीनक्षत्रशुभाशुभकथनं नामानुरूपमेषांसदसत्फलमिष्टपापगुणदोषात् प्रकृतिस्थमाद्यमिष्टंविकृत्योल्कादिपीडितंपापम् ४९ अथनिरुपद्रुतसोपद्रुतनाडीनक्षत्रफ०निरुपद्रुतभोनिरामय सुखभुङ्नष्टरिपुर्धनान्वित

३० [illegible]

त्रयोविंशति २३ नक्षत्रकीविनाशसंज्ञाहै ४७ श्रौर जन्मनक्षत्रसें पचविंशति २५ सत्पावालेनक्षत्रकी मानससज्ञाहै इसप्रकारकर्केमनुष्यके छै नक्षत्रोंवालाकहाहैं श्रौर राजाके नव ९ नक्षत्रहोतेहे एक जाति श्रौर एक देशका श्रौर एकश्रभिषेककाइह तीननक्षत्र सामान्यलोकोंस राजाकेश्रधिकहोतेहे४८ श्रव नाडीनक्षत्रोंका शुभाशुभ फल कहतेहे ॥ जेसे जैसे इन्हों नक्षत्रोंके नामहे तैसा तैसा शुभग्रह के योगसें शुभफल श्रौर पाप ग्रह के योगसें श्रशुभ फल होताहै श्रौर नक्षत्र विकारकों नहि प्राप्त होवें तव इष्टफल शुभ होताहै श्रौर इन्हों नक्षत्रोंमे उल्कापातादि उत्पात होवें तव श्रशुभ होताहै ४९ श्रव निरुपद्रुतश्रौरसोपद्रुतनक्षत्रोंका फल कहतेहे जवपूर्वोक्त नक्षत्रउपद्रवसेंरहित होवें तव रोगोंसें रहित सुखकर्के युक्त श्रौर शत्रुनाश कों प्राप्त होताहै श्रौर धनकों प्राप्त होताहै

और छै नक्षत्रउपद्रुत होवे और राजाके नव नक्षत्रउल्कापात भूकंपादि पापग्रह योगादियों कर उपद्रुत होवें तव नाशको प्राप्त होताहै ४९ अव नाडी नक्षत्रोंमें सूर्यचंद्रमाकेग्रहणका फलकहतेहैं ॥ जिस मनुष्यकेजन्मनक्षत्रादि नक्षत्रोंमें सूर्य चंद्रमाका ग्रहण होवे तिसकोंछै मासके भीतर दोष पूर्वोक्त क्रमसे होताहै ५१ अव ग्रहणगत नाडीनक्षत्र दोषहरणे वाला स्नान कहतेहैं ॥ सौंफ शाक और मालकंगनी और फल और श्वेतचंदन और खस जलमें मिलायकर्के स्नानकरे और यथाशक्ति दानकरे ५२ अव नाडीनक्षत्रमें पापी ग्रहकी संक्रांतिका फल और तिसका प्रतिकार कहते हैं ॥ जिस मनुष्यके नाडी नक्षत्र दिनमेंसूर्य और मंगल और शनि राशिकों बदलें तव तिसकों

षड्पद्रुतभोविनश्यतित्रिभिरन्यैश्चसहावनीश्वरः ५० अथग्रहणगतनाडीनक्षत्रफलं ॥ ग्रहणंरविचंद्रमसोर्नाडीनक्षत्रवासरेयस्य षडब्दाभ्यंतरतस्तस्यदोषो नाडीसमस्तस्य ५१ अथग्रहणगतनाडीदोषशांतिस्नानं ग्रहणग्रहपरिपीडितनाडीनक्षत्रदोषशमनाय सहशतपुष्पैःस्नायात्फलिनीफलचंदनोशीरैः॥ ५२ अथनाडीनक्षत्रेपापग्रहसंक्रमणफलंतत्प्रतीकारश्च ॥ नाडीनक्षत्रदिवसेरविभौमशनैश्चराः संक्रांतयस्यकुर्वीततस्यक्लेशोभिजायते ५३ गोमूत्रसर्षपैःस्नानंसर्वौषधिजलेनच ॥ विशुद्धकांचनंदद्यान्नाडीदोषोपशांतये ॥ ५४ ॥ अथ जन्मनक्षत्रेरविसंक्रमणफलंतत्प्रतीकारश्च ॥ यस्यजन्मर्क्षंसासाद्यरवेःसंक्रमणंभवेत् षण्मासाभ्यंतरेतस्यरोगक्लेशधनक्षयाः ५५ तगरसरोरुहपत्रैःरजनीसिद्धार्थलोध्रसंयुक्तैः स्नानंजन्मनिऋक्षेरविसंक्रांतौनृणांशुभदम् ५६

क्लेश होताहै ५३ और तिस दोपके दूरकरणे वास्ते गोमूत्र और सेतो सरेहों और सर्वौषधि कर्के युक्त जलसे स्नान करे और शुद्धसुवर्णका दान करे नाडी दोषकी शांतिके निमित्त ५४ अव जन्मनक्षत्रमें सूर्यसंक्रमणकाफल और तिसकाप्रतीकारकहतेहैं ॥ जिसकेजन्मनक्षत्रमेंसूर्यसंक्रांति करताहै तिसकों छै मासके भीतर रोग क्लेश और धनका क्षय होताहै ५५ और तिस दोपके दूरकरणे वास्ते तगरऔर कमल और हरिद्रा और सेतोसरेहों और लोधकर्के युक्त जलमें मिलायकर्के

अब दीपिकामें जन्मतिथिका निर्णय कहतेहैं जन्मतिथि वृद्धहोयकरके दो दिनमें जब होवे तब जिसदिनमें जन्मनक्षत्रका योग होवे तिसमें पूजन करे और दोनों दिनमें जन्मनक्षत्रका योग नहिंहोवे तब उभयगामिनी जिसदिनमें साढ ॥ ६० ॥ घडि होवे तिसमें पूजन करे ५६ अब जन्मनक्षत्र युक्त जन्म तिथिका फल कहतेहे जिस मनुष्यके जन्ममासमें जन्मनक्षत्र करके युक्त जन्मतिथि होवे तिसको निश्चयकरके तिस वर्षमें नीरोगता और सन्मान और सुख रहिताहै। ५७। अब शनि मंगल वारमें जन्मतिथिका फल कहतेहे शनि और मंगलके वारमें जिसकी जन्मतिथि होवे और जन्मनक्षत्र और जन्मके योगसें संबंध नहि होवे तब तिसवर्षमें एक एक पैरमें विघ्न होताहै अर्थात् तिस वर्षमें बहुत विघ्नोंकरके पीडित होताहे ५८ और कहतेहे जिसके जन्मनक्षत्रके दिन मंगल शनिवार होवें तिस मासको कल्मष नाम कहाहै सोमास मनको दुःख देने वाला होताहै ५९ ॥

अथजन्मतिथिनिर्णयोदीपिकायां दिनद्वयेजन्मतिथिर्यदिस्यात्पूज्यातदाजन्मभसंयुताया दिनद्वयंभेयदिनास्तिपूज्यायदातदाचोभयगामिनीस्यात् ५६ अथस्वनक्षत्रेजन्मदिनफलं . जन्मर्क्षयुक्तायदिजन्ममासेयस्यध्रुवंजन्मदिनभवेच्च.भवतितद्वत्सरमेवयावन्नैरुज्यसंमानसुखानितस्य ५७ अथशनिकुजवारेजन्मातिथिफलं कृतांतकुजयोर्वारेयस्यजन्मतिथिर्भवेत् स्वनक्षयोगसंप्राप्तोविघ्नस्तस्यपदेपदे ५८ अथशनिकुजवारेजन्मर्क्षदोषः जन्मऋक्षेयदिस्यातांवारौभौमशनैश्चरौ समास्ःकल्मषोनाममनोदुःखप्रदायकः ५९ अथजन्मनक्षत्रमासवारफलंतत्प्रतीकारश्च अध्वाभोजनमालस्यंविद्यावस्त्रवरांगनाशरीरेव्याधिपीडाचस्वऋक्षेमासवारजम् ६० तस्यसर्वौषधिस्नानंग्रहविप्रसुरार्चनं सौरारयोर्दिनेमुक्तादेयाऋक्षेतुकांचनं ६१ तत्रसर्वौषधिकथनम् मुरामांसीवचाकुष्ठंशैलेयरजनीद्वयं शठीचंपकमुस्ताचसर्वौषधिगणःस्मृतः ६२

अब जन्मनक्षत्रमासमें वारफल और तिसका प्रतिकार कहतेहैं सूर्यवारमें जन्मनक्षत्र होवे तिस मासमें मार्गमेंगमन होताहै और सोमवारमें भोजन श्रेष्ठ प्राप्तहोताहै और मंगलवारमें आलस्य होताहै और बुधवारमें विद्याकी प्राप्ति होतीहै और गुरुवारमें वस्त्रलाभ होताहै और शुक्रवारमें श्रेष्ठ स्त्रीकी प्राप्ति होतीहै और शनिवारमें देहपीडाहोतीहै ६० और तिसदोषके दूरकरणेवास्ते सर्वौषधिकरके युक्त जलसे स्नान करे और ग्रह और देवता और ब्राह्मणोंका पूजनकरे और शनि और मंगलवारमें जन्मनक्षत्र होवे तब मोती और सुवर्ण दान करे ॥ ६१ और सर्वौषधि कहतेहे मोडयी १ छडगुड्डो २ वच ३ कुठ ४ शिलाजीत ५ हलदी ६ दारुहलदी ७ कचूर ८ चमाकडी ९ मुरथर १० इह दश औषधि मिलायकरके सर्वौषधि कहतेहैं ६२

अथ गंडरिष्टका प्रतिकार कहतेहैं केसर और चंदन और कुठ और गोरोचन घृतकर्के युक्त चार कलशोंमें स्थित करे विद्वान् ६३ और सहस्राक्षमंत्रकर्के बालककों स्नान करावे दिनमें जन्महोवे तब पिताकर्के युक्त और रात्रिमें जन्म होवे तब मातायुक्त बालकको स्नान देवे ॥ ६४ ॥ और प्रातः सायंकाल दोनोंसंधियोंमें जन्मेतब माता और पिताके साथ बालकको स्नान देवे और घृतकर्के पूर्ण कांस्यपात्रका दान गंड दोषके दूर करणे वास्ते देवे ६५ और सवत्सागौ और सुवर्ण दान करे और ग्रहोंका पूजन करे ॥ और अभुक्तमूलादियोंमें विशेषकर्के बोधायनोक्त शांति करे और प्रथम पितावालकका मुख घृतपात्रमें देखे अथवा अष्टवर्षादि काल पर्यंत बालकका त्याग करे ॥ अब विधानमालादि ग्रंथोंसे सूर्यादि ग्रहोंका शांतिविधान कहतेहै ॥ प्रथमसूर्यका विधान कह

अथगंडरिष्टप्रतीकारः कुंकुमचंदनंकुष्ठंगोरोचनमथापिना ॥ घृतेनैवान्वितंकृत्वाचतुर्भिःकलशैर्बुध ६३ सहस्राक्षेणमंत्रेणबालकस्नापयेत्तत पितृयुक्तंदिवाजातमातृयुक्तंतुरात्रिजम् ॥ ६४ ॥ स्नापयेत्पितृमातृभ्यांसंध्ययोरुभयोरपि कांस्यपात्रंघृतैःपूर्णंगंडदोषोपशांतये ॥ ६५ ॥ दद्याद्धेनुसुवर्णंचग्रहांश्चैवप्रपूजयेत् अथसूर्यादिग्रहाणांशांतिविधानंतत्ररवेः साधौरवौम्मुत्पन्नेतिथौसाधौशुभेक्षणे नक्षत्रेवाशुभेचंद्रेविदध्याद्रविपूजनम् ॥ ६६ प्रातःकालेसमुत्थायदंतधावनपूर्वकम् स्नात्वाशुक्लतिलैर्नद्यांकृताह्निकविधि पुमान् ६७ रविप्रसन्नतामीप्सुर्विधानंतत्समारभेत् सदनस्योत्तरेभागेमंडपाभ्यंतरेतथा ६८ विदध्यात्स्थंडिलंधीमान्होमार्थंलक्षणान्वितं स्थंडिलात्पूर्वतोभागे पूजापीठंप्रकल्पयेत् ६९ रक्तचंदनपट्टेवापट्टेवालोहितेतथाषोडशारंलिखेत्पद्मंकुंकुमेनसुगंधिना ७०

तेहैं ॥ जिस मनुष्यकों जन्मकालमें निषिद्धस्थानमें वा दशांतर्दशामें निषिद्ध सूर्य होवे सो शुभसमय में शकुन शुभदेखके और शुभ तिथि वार नक्षत्र चंद्रबल देखके सूर्यका पूजनकरे ६६ प्रातःकाल में दंतधावन पूर्वकश्वेततिलोंकरके नद्यादियोंमें स्नान करके और नित्य कृत्यको करे ६७ औरसूर्य की प्रसन्नताकीइच्छावाला सूर्यका विधान करे गृहकेउत्तरभागमेंमंडपवनावे ६८ तिसके मध्यमें होमके निमित्त स्थंडिल बनावे बुद्धिमान् उक्तलक्षणोंकर्केयुक्त स्थंडिलवनावें और स्थंडिलके पूर्वस्थानमें सूर्यका पूजा पीठ बनावें ६९ और पूजापीठबनायकर्के रक्तचंदनके पटडेमें वा हीर लाल काष्ट के पटडेमें षोडशार कमलको लिखे केसर और कस्तूरी कर्के ७०

आकृष्णेनइसवेदके मंत्रकर्के सूर्यका आवाहनकरे तिसीमंत्रकर्केभलीप्रकार पूजन और यज्ञकर्मकोंकरे ७१ औरआचार्यसें लेकर्के ब्राह्मणोंकोंवडे मानपूर्वक बुलावे और तिन्हांश्रेष्ठब्राह्मणोंकर्केयुक्तस्वस्ति वाचन करे ७२ और तिसके उपरंत ग्रहयज्ञार्थ अग्निका कुंड वनायकर्के अर्कगुल्मकी समिधासें होमकों बुद्धिमान् करे दशहजार १०००० वा एकहजार १००० जैसें कर्ताकी रुचिहोवे तैसेहि बुद्धिमान् करे ७३ और तिसके उपरंत पायस और घृतकर्केहोमकरे ॥ और पीछेसेंतिलोंका और यव और धान्योंका एक एकहजार १००० भिन्न भिन्न होम करे ७४और छुहारे और नारिकेलकी गरी और कटहड फलके खंडोंकर्के होम करे और प्रायश्चित्त संज्ञिक द्वादश आहुतियां घृतकर्के

आकृष्णेनेतिमंत्रेणरवेरावाहनंभवेत् ॥ तेनैवपूजनंसम्यक्तेनैवयजनक्रियां ॥ ७१ ॥ आचार्यप्रमुखान्विप्रान्मानपूर्वंसमाव्हयेत् ॥ वाचयेत्स्वस्तिवा दांश्चसार्द्धंतैर्द्विजसत्तमैः ७२ ततोवन्हिमुखंकृत्वासमिद्भिर्जुहुयात्सुधीःअयुतंवा सहस्रंवाकर्तृकाभिरुचिर्यथा ७३ ततस्तुपायसेनापिसाज्येनापिसमाहितः ति लैःसव्रीहिकैःपश्चात्सहस्रंचपृथक्पृथक् ७४खर्जूरनालिकेरैश्चपनसैश्चविशे षतःप्रायश्चित्तघृतेनैवव्याहृतीस्तिलसर्पिषा ७५आदित्यप्रीतिकामश्चपनसैश्चवि शेषतः प्रायेणजुहुयादेवमभावेघृतपायसान् ७६शांतिपाठंततोविप्राआचार्य प्रमुखाश्चये पठेयुःसर्वशाखीयायजमानाःकृतोत्सवाः ७७ भास्करंशुद्धसौ वर्णंकृत्वायत्नेनमानवःताम्रपात्रेस्थापयित्वारक्तपुष्पैःप्रपूजयेत् ७८ रक्तवस्त्रयुगछन्नछत्रोपानद्युगान्वितं घृतेनस्नापयित्वाचलड्डुकान्विनिवेद्यच ७९

देवे और महाव्याहृतियोंका होम तिलघृतमिलायकर्के करे ॥ ७५ ॥ और सूर्यको प्रसन्नताकी इच्छावाले मनुष्यको कटहड फलके खंडोंकर्के विशेषसें होम करणाकहा है और नाहिप्राप्त होवे तव घृत पायसका होम करे ७६ और आचार्यसें लेकर्के संपूर्ण ब्राह्मण शांतिपाठकों करें और चतुर्वेदी ब्राह्मण अपनी शाखाकर्के पढें और उत्सवकर्के यजमान प्रवृत्तहोवे ७७ और शुद्धसुवर्णकी मूर्त्तिसूर्यकी वनावे और अलाभमें ताम्रकी वनावे और ताम्रपात्रमें स्थापन कर्के लालपुष्पोंकर्के पूजन करे ७८ और रक्तवर्णके दो वस्त्रोंकर्के आच्छादित करे और छत्री और पैरोंका जोडा स्थापन करे और पंचामृतकर्केवा घृतकर्केस्नानकरावेऔरलड्डुयोंकानैवेद्य आगधरे७९

और ग्रहोंके वलिप्रदान पूर्वक सूर्यका पूजन करे दूसरी वार गंधपुष्पादियोंकर्के पूजनकरे उपरांत दान विधिको करे ८० और इहकहा जो मंत्र तिस कर्के ब्राह्मणकेताईं संकल्पकर देवे ॥ अब मंत्रकाअर्थ कहतेहे ॥ हे आदिदेव सूर्य तेरे को नमस्कारहोवे ॥ हे सप्ताश्वरथवाहन हे दिवाकर ८१ हे रवे तुम हमारेकों इस संसार समुद्रसें पारकरो और वडी घोरपीडा जो तुह्मारीहै तिसकी शांति करो और सुखकों देवो इस प्रकारविज्ञप्तिकरे ८२ और लालवर्णकी सवत्सागौ बहुत दूधदेने वाली दक्षिणा कर्के युक्त बुद्धिमान् आचार्यके ताईंदेवे हेराजन् अयसें राजाके प्रति ऋषिका वाक्य है ८३ और सुवर्णकी जो सूर्यकीमूर्ति रथ और घोडयोंकर्के युक्त और सारथीकर्के युक्त और वस्त्र

बलिप्रदानपूर्वंतुप्रतिपूजांरवेःपुनःविदध्याद्गंधपुष्पाद्यैस्ततोदानविधिःस्मृतः ८० मंत्रेणानेनविदुषेब्राह्मणायप्रदापयेत् ॥ मंत्रः आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तसप्ते दिवाकर ॥ ८१ ॥ त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात् ॥ सूर्यपीडासुघोरासुकृताशांतिःशुभप्रदा ८२ क्षीरिणींलोहितांधेनुंसवत्सांचपयस्विनी दद्यात्सदक्षिणांधीमानाचार्यायमहीपते ८३ सप्तसप्तेस्तनुंहैमींसरथाश्वांससारथीं आचार्यायततोदद्याद्वस्त्रालंकारभूषिताम्८४ब्रह्मणेकनकदद्यात्ऋत्विग्भ्यश्चधनानिच ततःप्रसन्नोभगवान्संतानंविपुलंसुखं८५ददातिविपुलान्भोगान्पूजितस्तुयथाविधि सौरेश्चस्तुतिपाठैश्चस्तोतव्योधर्मदीधितिः ८६ तुष्टेतस्मिन्रवौसम्यक्विघ्नान्यतिदेहिनाम् एवंकृत्वारवेःपूजाविधानविधिवित्तमैः ८७भोक्तव्याब्राह्मणाःसम्यक्सहस्रशतसंख्यया प्रसन्नेनमहीपेनकिंस्यात्कार्यंशरीरिणां ८८ धर्मार्थकामामोक्षार्थसमर्थैकःप्रसादितः इतिरविपूजाविधानं

और भूषणोंकर्के शोभायमान आचार्यके ताईं देदेवे ८४ और ब्रह्माके ताईं सुवर्ण दक्षिणा देवे ऋत्विजोंके ताईं धन दक्षिणा देवे इसप्रकार पूजन करणेसें भगवान् सूर्य संतान और बडेसुखोंकों देताहै ८५ औरअनेक भोगोंको यथाविधि कर्के पूजित किया हुआ देताहै और सूर्यके जो स्तोत्र पाठ तिन्होंकर्केसूर्यका स्तवनकरे ८६ तिससूर्य नारायणके प्रसन्नहुवे भली प्रकार विघ्न मनुष्योंके दूर होतेहे औरइस प्रकारकर्के सूर्यकी पूजाका विधान विधिज्ञोंने कहाहै ८७ औरहजार वा सौ ब्राह्मणोंकों भोजन करावे जो राजके प्रसन्नहोया कोन कार्यदेहधारियोंकाशेष रहताहै ८८ और धर्म अर्थ काम मोक्ष इह चारपदार्थ देनेमें एकसूर्यनारायणही समर्थहै इतिसूर्यपूजाविधानम्

अथ चंद्रमाके पूजनकाविधान कहतेहैं ॥ मिथ्यादि शुभपक्षांगके प्राप्तहोयां चंद्रमाका पूजनअपने हितकी इच्छावाल्योंनें करणे योग्यहै भली प्रकारकर्के पुरुषने वा स्त्रीनें करणे योग्यहै८९ प्रथम श्रेष्ठ और साधु आचार्यकों अपने घरमें बुलावे और ऋत्विग्ब्राह्मणकर्के युक्त सपूर्षांका वरण करे चंद्रमाकी प्रसन्नताके निमित्त ९० और ब्रह्मादि श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके वरणकिये पीछे स्वस्तिवाचन पूर्वक चंद्रमाके पूजनका आरंभ करे ९१ और स्थंडिलवनायकर्के और पलाशवृक्षके पट्टे ऊपरचंद्रमाकापूजन श्वेतकमलोंकर्के चतुष्कोण मंडलमें करे ९२ और श्वेत चंदन और सुगंधिद्रव्य कर्पूरादियोंकर्के भली प्रकारसेंपूजनकरे और पश्चिममुख चंद्रमाके ताईं श्रेष्ठ आसन देवे ९३ और इस प्रकारकर्के चंद्रमाका आवाहन करे अहो इत्यादि हेचंद्रजगत्के प्राणरूप और यमुनासें उत्पन्न और श्वेतवर्ण और

अथचंद्रपूजाविधानम् पंचांगेशुभतांप्राप्तेकर्तव्यस्वहितेप्सुभिः पूजनंशशिनःसम्यक्नार्याचापिनरेणवा ८९ आचार्यप्रवरंसाधुंसमाहूयनिजालये ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैःसार्द्धंवृणुयाच्चंद्रतुष्टये ९० वृतेविप्रवरेतस्मिन्ब्रह्माद्यैःसहितैर्वरैः स्वस्तिवाचनपूर्वंतुप्रारंभेत्पूजनविधौ ९१ कृत्वास्थंडिलमात्रंतुपट्टेपालाशजेविधुं पूजयेच्छतपत्रैश्चचतुरस्रेचमंडले ९२ चंदनेनसुगंधेनकृतेसम्यग्विचक्षणैः प्रत्यङ्मुखायसोमायदद्यादासनकंबुधः ९३अहोचंद्रजगत्प्राणयमुनाविनयोद्भवश्वेतवर्णात्रिगोत्रेदोगदापाणिवरप्रद ९४दशाश्ववाहनागच्छउमारूपीसमाविश चंद्रमामनसोजातइत्यृचातंसमाह्वयेत्९५ श्रीश्चेतिमंत्रेणविधौरावाहनंभवेत् आप्यायस्वेतिमंत्रेणविधोरागमनंभवेत् ॥ ९६ आप्यायस्वेतिमंत्रस्यगौतमऋपि सोमोदेवतागायत्रीछंदःसोमप्रीतयेहोमेविनियोगः पालाशीःसमिधश्चात्रसहस्रसमुदाहृताः अभावेतुसहस्रस्यशतमष्टोत्तरंभवेत्९७ यथाशक्त्याततःकुर्याद्धवनंतिलसर्पिषा सहस्रंवाशतंवापिद्रव्याभावेविचक्षणः ९८ तिलैःसव्रीहिकैर्जुहुयात्व्याहृतीस्तुयथासति, आज्येनमधुनासार्द्धंप्रायश्चित्तंयजेद्बुधः ॥ ९९

त्रिगोत्र और हेचंद्र हेगदाहाथमेंधारणवाले और वरकेदेने वाले ९४ और दशघोड़ोंके वाहनवाले और पार्वतीके रूप इसमूर्तिमें आवो और चंद्रमामनसोजात इस वेदकी ऋचाकर्के आवाहन करे ९५ और श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चेति इसमंत्रकर्के चंद्रमाका आवहन होताहैऔर आप्यायस्वेति इस वेदके मंत्रकर्के चंद्रमाका आवनहोताहै ९६और इसीमंत्रका होम पलाशकी समिधा कर्के एक हजार१००० वा अष्टोत्तरशत१०८करणाकहाहै ९७ और यथाशक्तिकर्के तिल और घृतकर्के होमकरे वा द्रव्यके अभावमेंसउ १०० संख्याकर्के होमकरे बुद्धिमान् ९८ और धान्यों कर्के सहित व्याहृतियांकों होमकरे और घृतऔर मखीर कर्के प्रायश्चित्तकाहोम बुद्धिमान्करे ९९

तदनंतरस्विष्टकृत होम करे होमकी विधि इस क्रमकर्के कहिहैं और शांतिपाठ संपूर्ण ब्राह्मणोंने पढने योग्यहै होमके उपरंत १०० और फेर चंद्रमाकी मूर्त्ति चांदीकी कांस्यपात्रमें स्थापन करे और श्वेतवर्णके दोवस्त्रोंकर्केआच्छादित करे औरश्वेतपुष्पोंकर्केभलीप्रकारसें पूजितकरे १०१ और खडांमोंका जोडा और पैरोंका जोडा और छत्री और आसन और दधिभक्त भोजन कर्के युक्त हे राजेंद्र भक्तिकर्के भलीप्रकार इस मंत्रकर्के ब्राह्मणके ताईं दानकर्के देवे ॥ १०२ ॥ मंत्रकहनेहैं हे चंद्र महादेव मालतीके पुष्पकीन्याईं और गोदुग्धकी न्याईं श्वेतवर्ण सर्वदा काल हमारे उपर सौम्य शुभके करणे वाले होवो तुह्मारे ताईं नमस्कारहो ॥ १०३ ॥ इस मंत्रकर्के मोतियोंकर्के युक्त चंद्रमाकी मूर्त्ति आर्यके ताईं निवेदन करे और श्वेतवर्णका श्रेष्ठ वस्त्र दक्षिणाकर्के युक्त ब्राह्म

ततःस्विष्टकृतंकुर्याद्देवहोमविधौक्रमात्शांतिःसर्वत्रविप्रैश्चपठितव्यासमंततः१०० कांस्यपात्रेथसंस्थाप्यसोमंरजतसंभवं श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नंश्वेतपुष्पैःप्रपूजितम्१०१ पादुकोपानहच्छत्रभोजनासनसंयुतम् मंत्रेणानेनराजेंद्रसम्यग्भक्त्यासमन्वितः १०२ ॥ मंत्रः महादेवजातिवल्लिपुष्पगोक्षीरपांडुर सोमसौम्योभवास्माकंसर्वदातेनमोनमः ॥ १०३ ॥ एवंतुमौक्तिकैर्युक्तमाचार्यायनिवेदयेत् वस्त्रंशुभ्रंशुभंदद्याद्ब्राह्मणायसदक्षिणम् ॥ १०४ ॥ रौप्यंदद्याद्यथालाभंधेनुंवाथपयस्विनीं कस्मैचिद्द्विप्रवर्यायसवत्सांचसदक्षिणाम् ॥ १०५ ॥ अभिषिक्तस्ततः कर्ताब्राह्मणान्भोजयेच्छुभान् कृतविघ्नप्रतीकारोनंदतेभुविमानवः १०६ सुधाकरप्रसादेननात्रकार्याविचारणा इतिचंद्रपूजाविधानम् अथमंगलपूजाविधानं यदाश्रद्धाभवेत्कर्तुः पीडवाभौमसंभवा तदापूजाप्रकर्तव्यामंगलस्ययथाविधि१०७पंचांगेगुणसंपन्नेपूजायोग्येधनागते तदैवयत्नतःकुर्याद्भौमपूजांविचक्षणः १०८ स्नात्वातिलैर्नदीतोयेप्रातःकालेविचक्षणः कृत्वान्हिकविधिंगेहमागत्यप्रियमानसः १०९

णके ताईं देवे ॥ १०४ ॥ और यथाशक्तिसें रौप्य और किसीक ब्राह्मणको सवत्सागौ दक्षिणा कर्के युक्त देवे । १०५ । और तिसके उपरंत कर्ताकों अभिषेक करे और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकों भोजन देवे और इसप्रकार उपाय करणेसें पृथ्वीमें चिरकाल आनंदकों प्राप्त होताहै ॥ १०६ ॥ और चंद्रमाकी प्रसन्नतासें आनंदकों प्राप्त होताहै इसमें संशयनहिहै इतिचंद्रपूजाविधानं अब मंगलकी पूजाका विधान कहतेहैं जिसकालमें कर्ताकी श्रद्धाहोवे वा मंगलकी पीडा होवे तब यथाविधिसें मंगलकी पूजा करणे योग्यहै ॥ १०७ ॥ और तिथ्यादि शुभ पंचांगके प्राप्तहुये और पूजाके योग्य धनकी प्राप्तिमें मंगलका पूजन श्रेष्ठ बुद्धिवाला करे ॥ १०८ ॥ नदीके जलमें तिलोंकर्के स्नान करे प्रातः कालमें

बुद्धिमान् और नित्यकृत्यकों कर्के गृहमें आयकर्के प्रसन्न चित्तहोयकर्के मंगलदेवताकी प्रसन्नताके वास्ते पूजाका आरंभकर सुंदर पृथ्वीमें द्वारोंकर्के शोभित मंडलकों बनावे ॥ ११० ॥ और आचार्य कों बुलायकर्के ऋत्विजों कर्के युक्त वरण करे और वेदकेजाननवाला यज्ञविधिमें श्रेष्ठ जोहै तिसकों ब्रह्माके स्थानमें वरणकरे ॥ १११ ॥ और स्वस्तिवाचन प्रथमकर्के फेर भौमपीठका पूजन करे और रक्तचंनके पट्टमें और तिसके अलाभमें खैरवृक्षके पट्टेमें ॥ ११२ ॥ लालवर्णके वस्त्रकों बछावे और चाउलोंकर्के पूर्णकरे और रक्तचंदनके तिलक कर्के त्रिकोण पीठ लिखे ॥ ११३ ॥ शुद्धसुवर्ण की और अलाभमें तांबेकी मूर्त्ति मंगलकी बनायकर्के प्रतिष्ठा मंत्रकों पडके तिसपीठमें स्थापनकरे ११४

प्रारभेद्भौमदेवस्यप्रीतयेपूजनाक्रियां ॥ विहितेमंडपेद्वारशोभितेपृ थिवीतले ११० आचार्यंतुसमाहूयवरयनृत्विजोह्यपि ब्रह्माणंचापिवेदज्ञंकु शलंयज्ञकर्मणि १११ स्वस्तिवाचनपूर्वंतुविदध्यात्पीठपूजनं रक्तचंदनपट्टेतु खादिरेवाप्यलाभतः ॥ ११२ ॥ वस्त्रेलोहितवर्णेचतंडुलैःपरिपूरिते ॥ रक्तचंदनकल्केनत्रिकोणपीठमालिखेत् ॥ ११३ ॥ प्रतिष्ठामंत्रमुच्चार्यविन्य सेत्तत्रमंगलं शुद्धजांबूनदंकृत्वाताम्रंवातदलाभतः ॥ ११४ ॥ वैद्रुमं पद्मरागंवाभूमिपुत्रंविदुर्बुधाः दक्षिणाभिमुखंभौमंपूजयेत्प्रयतःशुभैः॥ ११५॥ करवीरैर्जपापुष्पैःसिंधूरैःसंभवैस्तथा अन्यैश्चलोहितैःपुष्पैरर्चयेद्भूमिनंदनम्११६ आगच्छपृथिवीपुत्रभारद्वाजकुलोद्भव उज्जयिन्याधिपःश्रीमांश्चतुर्बाहोमहातपः ११७ चलशक्तिगदापाणिवरदाभयमंडित अहोभौमग्रहाघ्यक्षयज्ञेस्मिन्कुरु सन्निधिम् ॥ ११८

औरबुद्धिमान् कहतेहैं मंगलकी मूर्त्तिःमुंगेकी अथवा पद्मरागमणीकीबनावे और दक्षिणमुखस्थापन कर्के प्रीतिसें पूजन करे ११५ सुंदर कनीरके पुष्पों कर्के और गुलदुपहरके पुष्पोंकर्के और सिंधूर कर्के प्रीतिसें पूजन करे वा जैसे ऋतुकालमेंलालपुष्पमिलेंतिन्होंकर्के मंगलकापूजनकरे ११६ और इसमंत्रकर्के आवाहनकरे अहोदयानंदे हे भौम पृथ्वीकेपुत्र हे भरद्वाजगोत्रऔर उज्जयनिदेशमें उत्पन्न और शोभाकर्के युक्त और चारभुजोंकर्के युक्त बडे तपके करणे वाले ११७ और शक्ति और गदाके धारणे वालेऔर वर और अभयकेदेने वाले हैं ग्रहराज इसमंडलमें आयकर्के मूर्तिमें स्थित हों नो ११८

तदनंतरस्विष्टकृत होम करे होमकी विधि इस क्रमकर्के कहिहै और शांतिपाठ सपूर्ण ब्राह्मणोंने पढने योग्यहै होमके उपरंत १०० और फेर चंद्रमाकी मूर्त्ति चांदीकी कांस्यपात्रमें स्थापन करे और श्वेतवर्णके दोवस्त्रोंकर्केआच्छादित करे औरश्वेतपुष्पोंकर्केभलीप्रकारसें पूजितकरे १०१ और खडांमोंका जोटा और पैगेका जोटा और छत्री और आसन और दधिभक्त भोजन कर्के युक्त हे राजेंद्र भक्तिकर्के भलीप्रकार इस मंत्रकर्के ब्राह्मणके ताईं दानकर्के देवे ॥ १०२ ॥ मंत्रकहतेहै हे चंद्र महादेव मालतीके पुष्पकीन्याईं और गोदुग्धकी न्याईं श्वेतवर्ण सर्वदा काल हहारे ऊपर सौम्य शुभके करणे वाले होवो तुह्मारे कों नमस्कारहो ॥ १०३ ॥ इस मंत्रकर्के मोतीयोंकर्क युक्त चंद्रमाकी मूर्त्ति आर्यके ताईं निवेदन करे और श्वेतवर्णका श्रेष्ठ वस्त्र दक्षिणाकर्के युक्त ब्राह्म

ततःस्विष्टकृतंकुर्यादेवंहोमविधौक्रमात्शांतिःसर्वत्रविप्रैश्चपठितव्यासमंततः१०० कांस्यपात्रेथसंस्थाप्यसोमरजतसंभवं श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नंश्वेतपुष्पैःप्रपूजितम्१०१ पादुकोपानहच्छत्रंभोजनासनसंयुतम् मंत्रेणानेनराजेंद्रसम्यग्भक्त्यासमन्वितः १०२ ॥ मंत्रः महादेवजातिवल्लिपुष्पगोक्षीरपांडुर सोमसौम्योभवास्माकंसर्वदातेनमोनमः ॥ १०३ ॥ एवंतुमौक्तिकैर्युक्तमाचार्यायनिवेदयेत् वस्त्रंशुभ्रंशुभदद्यांद्ब्राह्मणायसदक्षिणम् ॥ १०४ ॥ रौप्यंदद्याद्यथालाभंधेनुंवाथपयस्विनीं कस्मैचिद्विप्रवर्यायसवत्सांचसदक्षिणाम् ॥ १०५ ॥ अभिषिक्तस्ततः कर्त्ताब्राह्मणान्भोजयेच्छुभान् कृतविघ्नप्रतीकारोनंदतेभुविमानवः १०६ सुधाकरप्रसादेननात्रकार्याविचारणा इतिचंद्रपूजाविधानम् अथमंगलपूजाविधानं यदाश्रद्धाभवेत्कर्तुः पीडावाभौमसंभवा तदापूजाप्रकर्तव्यामंगलस्ययथाविधि१०७पंचांगेगुणसंपन्नेपूजायोग्यधनागते तदैवयत्नतःकुर्याद्भौमपूजांविचक्षणः १०८ स्नात्वातिलैर्नदीतोयेप्रातःकालेविचक्षणः कृत्वान्हिकविधिंगेहमागत्याप्रियमानसः १०९

णके ताईं देवे ॥ १०४ ॥ और यथाशक्तिसे रौप्य और किसीक ब्राह्मणको सवत्सागौ दक्षिणा कर्के युक्त देवे । १०५ । और तिसके उपरंत कर्त्ताको अभिषेक करे और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको भोजन देवे और इसप्रकार उपाय करणेसें पृथ्वीमें चिरकाल आनंदको प्राप्त होताहै ॥ १०६ ॥ और चंद्रमाकी प्रसन्नतासें आनंदको प्राप्त होताहै इसमें संशयनहिहै इतिचंद्रपूजाविधानं अब मंगलकी पूजाका विधान कहतेहै जिसकालमें कर्त्ताकी श्रद्धाहोवे वा मंगलकी पीडा होवे तब यथाविधिसे मंगलकी पूजा करणे योग्यहै ॥ १०७ ॥ और तिथ्यादि शुभ पचांगके प्राप्तहुये और पूजाके योग्य धनकी प्राप्तिमें मंगलका पूजन श्रेष्ठ बुद्धिवाला करे ॥ ११८ ॥ नदीके जलमें तिलोंकर्के स्नान करे प्रातः कालमें

बुद्धिमान् और नित्यकृत्यको करके गृहमें आयकरके प्रसन्न चित्तहोयकरके मंगलदेवताकी प्रसन्नताके वास्ते पूजाका आरंभकर सुंदर पृथ्वीमें द्वारोंकरके शोभित मंडलको बनावे ॥ ११० ॥ और आचार्यको बुलायकरके ऋत्विजों करके युक्त वरण करे और वेदकेजाननवाला यज्ञविधिमे श्रेष्ट जोहै तिसको ब्रह्माके स्थानमें वरणकरे ॥ १११ ॥ और स्वस्तिवाचन प्रथमकरके फेर भौमपीठका पूजन करे और रक्तचंदनके पट्टमें और तिसके अलाभमें खेरवृक्षके पट्टेमें ॥ ११२ ॥ लालवर्णके वस्त्रको बछावे और चाउलोंकरके पूर्णकरे और रक्तचंदनके तिलक करके त्रिकोण पीठ लिखे ॥ ११३ ॥ शुद्धसुवर्णको और अलाभमें तांबेकी मूर्ति मंगलकी बनायकरके प्रतिष्ठा मंत्रको पढके तिसपीठमें स्थापनकरे ११४

प्रारभेद्भौमदेवस्यप्रीतयेपूजनाक्रियां ॥ विहितिमंडपेद्वारशोभितेपृथिवीतले ११० आचार्यंतुसमाहूयवरयन्नृत्विजोह्यपि ब्रह्माणंचापिवेदज्ञंकुशलंयज्ञकर्मणि १११ स्वस्तिवाचनपूर्वंतुविदध्यात्पीठपूजन रक्तचंदनपट्टेतु खादिरेवाप्यलाभतः ॥ ११२ ॥ वस्त्रेलोहितवर्णेचतंडुलैःपरिपूरिते ॥ रक्तचंदनकल्केनात्रिकोणपीठमालिखेत् ॥ ११३ ॥ प्रतिष्ठामंत्रमुच्चार्यविन्यसेत्तत्रमंगलं शुद्धजांबूनदंकृत्वाताम्रंवातदलाभतः ॥ ११४ ॥ वैद्रुमं पाद्मरागंवाभूमिपुत्रंविदुर्बुधाः दक्षिणाभिमुखंभौमंपूजयेत्प्रयतःशुभैः॥ ११५॥ करवीरैर्जपापुष्पैःसिंधूरैःसंभवैस्तथा अन्यैश्चलोहितैःपुष्पैरर्चयेद्भूमिनंदनम् ११६ आगच्छपृथिवीपुत्रभारद्वाजकुलोद्भव उज्जयिन्याधिपःश्रीमांश्चतुर्बाहोमहातपः ११७ चलशक्तिगदापाणिवरदाभयमंडित अहोभौमग्रहाध्यक्षयज्ञेस्मिन्कुरुसन्निधिम् ॥ ११८

औरबुद्धिमान् कहतेहैं मंगलकी मूर्तिःमुंगेकी अथवा पद्मरागमणीकीबनावे और दक्षिणमुखस्थापनकरके प्रीतिसें पूजन करे ११५ सुंदर कनेरके पुष्पो करके और गुल्लदुपहरके पुष्पोकरके और सिंधूरपुष्पोंकरके वा जैसे ऋतुकालमेंलालपुष्पामिलेंतिन्होंकरके मंगलकापूजनकरे ११६ और इसमंत्रकरके आवाहनकरे अहोइत्यानंदे हे भौम पृथ्वीकेपुत्र हे भरद्वाजगोत्रवाले उज्जयिनीदेशमे उत्पन्न और शोभाकरके युक्त और चारभुजोंकरके युक्त बडे तपके करने वाले ११७ और शक्ति और गदाके धारणे वालेऔर वर और अभयकेदेने वाले हैं ग्रहराज इसमंडलमें आयकरके मूर्तिमें स्थित होनो १८

इसप्रकारकर्के मंगलकों बुलावे कैसा मंगलहै जो मंगलका घरहै प्रथमें आवाहणकर्के और यदकंदेति इह होमका मंत्र कहतेहैं ११९ और अग्निमूर्द्धादिवइह भोमके पूजनका मंत्र है और इहदोनोंका संभव नहिं होवे तवगायत्री कर्के संपूर्ण कर्मकरणा कहतेहैं १२० और पूजनआवाहनादिकर्ममें इह तीनमंत्रप्रधानहैं और खदिर वृक्षकीयां समिधा और चरु प्रधान द्रव्य कहाहै १२१ और पूर्वकी न्याई व्याहृतिके होम कों करे और तदनंतर दशहजार १००००चरुकाहोम भौम मंत्रसें करे और घृतकर्के प्रायश्चित्त संज्ञक होम करें और संपूर्णोंमें इष्ठकृनहोमकरे १२२ और होमकेअंत्यमें विधिसें वलिदानकरे और तदनंतर ब्राह्मणोंकर्के युक्त शांति पाठकों पठे १२३ और औरतदनंतर भौमकी महापूजा कर्के यथाविधिसें दानकरे और लाल

इत्यावाह्यधरासूनुंमंगलंमंगलायनम् यदक्रंदेतिमंत्रस्यहोममंत्रंविदुर्बुधाः ॥ ११९ ॥ अग्निर्मूर्द्धादिवइतिमंत्रोलोहितपूजने द्वयोरसंभवेमंत्रोगायत्री संप्रकीर्त्तिता १२० पूजनावाहनादीनामिदमंत्रत्रयंमतं समिधःखादिरीश्चात्रच रुद्रव्यप्रधानकम् १२१ पूर्ववद्व्याहृतिःप्रोक्तान्ययुतवाततःपरं प्रायश्चित्तंघृतेनैव सर्वस्विष्टकृतंभवेत् १२२ होमांतेवलिदानंचकर्त्तव्यंविधिवत्तथा शांतिपाठंततो विद्वान्पठेद्विप्रसमान्वितः १२३ परिपूजांततःकृत्वादानंदद्यात्ततःपरम् रक्तवस्त्र मनड्वाहंविद्रुमंभौमतुष्टिदं १२४ रक्ताश्चव्रीहयोरक्ताश्चाढयोभौमतुष्टिदा स्वर्णंद द्याद्यथालाभंताम्रंचतदलाभतः १२५ अभिषिक्तस्ततःकर्त्तादानंदद्याद्यथाविधिः ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादाचार्यंप्रार्थयेत्ततः १२६ मूलमंत्रेणतत्सर्वंभौमपीठंसमर्प येत् आचार्यायसुशीलायकुलीनायकुटुंविने १२७ एवंकृतेविधानेचभौमशांति र्भवेदिति तुष्टिदःपुष्टिदोभौमःप्रसन्नोजायतेनृणाम् १२८ ददातिविपुलान्भोगान्ना त्रकार्याविचारणा इतिभौमशांतिविधानम् ॥

वस्त्र और लालवृषभ और मुंगे भौमकी प्रसन्नताकेवास्तेनदेवे १२४ और रक्तवर्णके धान्य और आ ढिकी भौमकी प्रसन्नताकों देतेहैं और यथाशक्तिसें सुवर्णदान करें और सुवर्णके अलाभमें ताम्र कादानकरे १२५ और तदनंतर कर्त्ताकों अभिषेककरे और यथाविधिसें दान कर्के पीछेसें ब्राह्म णोंकों भोजनदेवे और आचार्यकी प्रार्थना करे १२६ और मूलमंत्रकर्के संपूर्ण पूजाका उपकरण और भौमकी पूजा पीठ कुलीन और सुशील और कुटुंबी आचार्यके ताई दे देवे, १२७ इसप्रकार पूजा विधान करणेमें मंगलके रिष्टकी, शांति, होतीहै और प्रसन्नताकों प्राप्त जो भौम सो मनुष्योंकों तुष्टि औरपुष्टि फलकों देताहै १२८ और अनेकप्रकारके वडे भोगोंकोंदेताहै इसमे संशयनहिंहै ॥ इतिभौमशांतिविधानम् ॥

अब बुधके पूजनका विधान कहतेहैं आपने हितकी इच्छा वाले मनुष्यने बुधका पूजन करणा योग्यहै और शुभवारादि पंचांगादिनमें बुधके पूजनका प्रारंभकरे १२९ और जिसकालमें चंद्रमा शुभहोये तिसदिनमें स्नानादि नित्यकर्म करके वेदशास्त्रके जानने वाले आचार्यको बडेमानकरके बुलावे १३० और यज्ञ सिद्धिके निमित्त ऋत्विज और ब्रह्माकरके सहित वरण करे और कांचनवृक्षकी पीठमें बुधका पूजन करे १३१ और नवीन वस्त्रकोविछायकरके ऊपर बाणाकार लिखें तिसमें सुवर्णकी मूर्ति बुधकी बनाय करके उद्बुध्यस्वेति इस ऋचाकरके बुधका आवाहनादिकरे १३२ अथवा गायत्रीकरके आवाहनादि होमांत संपूर्ण कर्मोंकोकरे और उत्तराभिमुख बुधका पूजन करणा कहाहै १३३ और इसप्रकार आवाहनकरे अहो इत्यानंदे हे चंद्रमाके पुत्र बुध हे श्रीमन् हे मगधदेशमें उत्पन्न और आत्रेगोत्रमें उत्पन्न और चारभुजोंवाले और खड्ग और खेटक और गदाके

अथबुधपूजाविधानम् बुधशांतिःप्रकर्तव्यानरेणहितमिच्छताशुभवारादिपंचांगेप्रारंभेच्छांतिकोविदः १२९ अन्येपांवलमादायचंद्रादीनांकृताह्निकःआचार्यवेदशास्त्रज्ञंसमाहूयसमंजसम् १३० वरयेयज्ञसिद्ध्यर्थऋत्विग्भिर्ब्रह्मणैःसह कांचनस्यतरोःपीठेपूज्यश्चंद्रसुतोग्रहः १३१ वस्त्रेनूतनेरम्येमंडलेवाणसंमिते उद्बुध्यस्वेतिचऋचासौम्यस्यावाहनादिकम् १३२ होमांतकमेकुर्वीतगायत्र्यावासमाहितः उत्तराभिमुखःसौम्यःपूजनीयोमनीषिणा १३३ अहोचंद्रसुतश्रीमन्मागधार्यासमुद्भव अत्रिगोत्रचतुर्बाहोखड्गखेटकहस्तवगदावरदसिंहस्थस्वर्णकांतिस्वरप्रभः नीलपंकजपत्रस्थइदंविष्णुरितीडितम् १३४ बुधंहेममयंकृत्वास्थापितंकांस्यभाजने सौम्यंतंचसमाहूयपूजयेत्प्रयतःशुभैः १३५ शतपत्रैश्चकल्हारैःसुस्निग्धैस्तुलसीदलैः गंधपुष्पंतथाधूपंदीपंनैवेद्यमेवच १३६ तांबूलंचसकर्पूरंबुधप्रीत्यैनिवेदयेत् मंत्रेणानेनधर्मात्माब्राह्मणायनिवेदयेत् १३७ मंत्रः बुधस्त्वंबुद्धिजननोबोधदःसर्वदानृणाम् तत्वावबोधंकुरुमेसोमपुत्रनमोनमः १३८

धारणेवाले और एकहाथमें वरके देनेवाले और सिंहमें स्थित और सुवर्णकीन्याईं प्रभावाले और नीलकमलदलमें स्थितआसनकरके स्थित होवो और इदंविष्णुरिति इसमंत्रकरके पूजनकरे १३४ और सुवर्णकी मूर्तिबुधकी बनायकरके कांस्यपात्रमें स्थापनकरे तिसमें बुधका आवाहनकरे और पूजनकरे १३५ और शुभ कमलोंके पुष्पोंकरके और श्वेतकमलोंकरके और सुंदर स्निग्ध तुलसी पत्रोंकरके और गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्यकरके पूजनकरे १३६ और कपूरकरके युक्त तांबूल पानकाबीडा निवेदन करे और इसमंत्रकरके धर्मात्मा ब्राह्मणके तांईंदानकरदेवे १३७ हेबुध तुमबुद्धिके देनेवाले हो और सर्वदाकाल मनुष्योंको बोधकरके युक्त करतेहो हेचंद्रमाकेपुत्र मेरेकोतत्वका बोधकरो तुम्हारेतांईं नमस्कारहोवे १३८

इसप्रकारकर्के बुधकी मूर्तिका दानकरणा कहाहै प्रथम अपने गृह्यके विधानेकर्के स्थंडिलवनायकर अग्निस्थापनकर्के भलीप्रकार समिधोंसे होमकरे १३९ एकहजार सुंदर,सुटकंडेकी समिधोंसेहोमकरे और एकहजार घृतपायसका होमकरे बुद्धिमान् १४० और छुहारे और नारि केल्केगरीऔर दाख और केले और बिल्वोंकर्के श्रद्धा कर्के युक्त यथा शक्तिसे होम करे १४१ और प्रधान होमभे पायसद्रव्यहे और प्रायश्चित होम घृतसे करे इसप्रकार बुधका दोष शमन होताहै इसमें संशय नहिंहै १४२ इतिबुधपूजाविधानम्

॥ अब बृहस्पतिकी पूजाका विधान कहतेहैं ॥ शुभसमयमे अस्तादि दोष रहित और शुभ तिथ्यादि समयमें बृहस्पतिकी पूजाकोकरे और बुद्धिमान् सुवर्णकी मूर्त्ति बारा मासेकी बृहस्पतिकीवनावे १४३ और काष्ठकी चउंकी ऊपर स्थापन कर्के पूजन करे और चाउलों कर्के पहिशाकार दीर्घ चतुष्कोण मंडलवनावे १४४ और तिसमंडलमें उत्तराभिमुख बृहस्पतिका पूजन करणा योग्यहै

ततस्थंडिलमादायस्वगृह्योक्तविचक्षणः ॥ कृत्वावन्हिमुखंसम्यक्समिधोजुहुयात्ततः १३९ अपामार्गस्यसुस्निग्धाःसहस्रंशुभलक्षणाः सघृतपायसपश्चाचावत्संख्यंविचक्षणः १४० खर्जूरैर्नारिकेलैश्चद्राक्षाकदलिविल्वकैः हवनंसुपथालाभंकुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः १४१ प्रधानंपायसंचात्रप्रायश्चित्तंघृतेनच बुधदोषःशमंयातिनात्रकार्याविचारणा ॥ १४२ इतिबुधशांतिविधानम्

॥ अथगुरुशांतिविधानम् ॥ शुभेकालेप्रकर्तव्याविधिवत्पूजनंगुरोः कृत्वास्वर्णमयींमूर्त्तिनिष्कस्यापिविचक्षणः १४३ पूजयेद्दारुजेपीठेप्रतिष्ठाप्यबृहस्पतिम् पीठेतंडुलजेकार्यंपट्टिशाकारमंडलं १४४ उत्तराभिमुखस्तत्रपूजनीयोबृहस्पतिः पुष्पैरागस्त्यसंभूतैः पंकजैःशतपत्रकैः १४५ अहोबृहस्पतेजीवसिंधुमंडलसंभव एह्यंगिरससंभूतहयारूढचतुर्भुज १४६ दंडाक्षसूत्रवरदकमंडलुधरप्रभो महानिंद्रेतिसंपूज्योविधिवन्नाकिनांगुरुः १४७ बृहस्पतेतिमंत्रेणगायत्र्यावासमाहितेः सहस्रंसमिधश्चात्रबोधिपादपसंभवाः १४८ चरुवापायसंवापिप्रधानमिहसम्मितं कर्ताविदध्याद्धवनंघृतेनत्वमुदेगुरोः ॥ १४९ ॥

और अगस्त्य पुष्पो कर्के और कमलो कर्के और श्वेतकमलो कर्के पूजन करे १४५ और इसमंत्रकर मूर्त्तिमें आवाहनकरे अहोदयालनदे हेबृहस्पते सिंधुदेशमें उत्पन्नहोनेवाले हेजीव आगच्छ हेअंगिरसगोत्रमें उत्पन्न हेघोडेके स्वार चारभुजोंवाले १४६ और दंड और अक्ष माला और कमंडलु और एकहाथसे वरके देनेवाले इसमूर्त्तिमे स्थित होवो महानिंद्रेति इसवेदके मंत्रकर्के देवगुरु बृहस्पति तिसका पूजनकरे १४७ अथवा बृहस्पतेति मंत्रकर्के वा गायत्रीकर्के पूजनादि संपूर्णकर्मकरे और एकहजार १००० पिप्पलवृक्षकी समिधाकर्के होमकरे १४८ और प्रधानहोम चरुकर्के वा पायसकर्के करे और कर्ता बृहस्पतिकी प्रसन्नताके निमित्त घृत कर्के होमको करे १४९ ॥

श्रीरहोमकी सिद्धिके वास्तेबिल्व और नारिकेलोंकाहोमकरे औरघृतकर्के प्रायश्चित्त होमकोंकरे और पायसकर्के स्विष्टकृत्होमकरे १५० और बुद्धिमान् होमकी सिद्धिके वास्ते व्याहृतियोंका होमकरे और होमके अंत्यमें बृहस्पतिकी प्रसन्नताके निमित्त प्रतिमाका पूजनकरे १५१ और श्वेत चंदनका तिलक और दशांगधूपकर्के और अगस्त्यके पुष्प और घृतकर्के पूरित दीपकर्के पूजन करे १५२ और दधिभक्तका नैवेद्य औरपानसुपारीकर्केयुक्त धरे इसप्रकार कर्के विधिके जाननेवाला बडाबृहस्पतिकी पूजा कर्के १५३ पीछेसे पीतवस्त्र ऊपर देवे और ऊपरका परिधानवस्त्र इसपूजामें ऋषियोंने मुख्यकहाहै १५४औरपट्टवस्त्रके अभावमेंकपासवस्त्रका सुंदर पीतकर्के दुपट्टेकीआकृति

बिल्वानिनारिकेलानिजुहुयाद्धोमसिद्धये प्रायश्चित्तंघृतेनैवपायसैःस्विष्टकृद्भवेत् १५० व्याहृतीर्जुहुयाद्धीमान्होमसिद्ध्यर्थमेवच होमांतेप्रतिमांपूज्यादेवाचार्यस्यतुष्टये १५१ गंधमलयजंचात्रदशांगोधूपउत्तमं पुष्पमागस्त्यसंभूतं दीपमाज्येनपूरितम् १५२ नैवेद्यंदधिभक्तस्तुतांबूलेनसमन्वितम् एवंकृत्वाविधानज्ञःप्रपूजांबृहस्पतेः १५३ श्रेयःसंपादनादूर्ध्वंप्रदद्यात्पीतमंबरम् दुकूलंमुख्यमेवात्रसमुद्दिष्टंमनीषिभिः १५४ कार्पासजमथाभावेदुकूलस्याकृतिनवाम् आचार्यायकुलीनायश्रोत्रियायकुटुंबिने १५५ दद्यात्सदक्षिणंकर्ताप्रीतयेनाकिनांगुरोः ऋत्विग्भ्यश्चधनंदेयंब्रह्मणेधेनुरुत्तमा ॥ १५६ बलिप्रदानतुष्टस्यस्वर्गिभिर्वाबृहस्पतेः कृत्वापूजाविधानज्ञोभोगानाप्नोतिपुष्कलान् १५७ दानमंत्रः धर्मशास्त्रार्थतत्त्वज्ञज्ञानविज्ञानपारग विबुधार्तिहराचिंत्यदेवाचार्यनमोस्तुते १५८ इतिगुरुशांतिविधानम् अथशुक्रशांतिविधानम् पंचांगेशुभतांप्राप्तेमनसश्चसमुन्नतौ आचार्यंप्रणिपत्यादौवरयेद्ब्रह्मणास्त्र ह १५९

नवापकर्केनवीनघरे और कुलीन और श्रोत्रिय और कुटुंबीआचार्यकेतांईदक्षिणाकर्केयुक्तबृहस्पतिकी प्रसन्नताकेनिमित्तदानकरदेवे १५५ औरऋत्विजोंकेतांईधनदक्षिणादेवेऔरब्रह्माकेतांईश्रेष्ठगौ देवे१५६और बलिदानकर्के देवतोंकर्के युक्त बृहस्पतिकोंप्रसन्नकरेइसप्रकारविधिकेजाननेवालापूजा कर्के बडे भोगोंकों प्राप्तहोताहै१५७ प्रतिमादानकामंत्रकहतेहैं हेदेवाचार्य बृहस्पते हेधर्मशास्त्रके तत्वकों जाननेवाले और ज्ञान और विज्ञानके पारगम हे देवतोंकी पीडाहरणेवाले हेअचिंत्य तुमारेकों प्रणामहोवे १५८ इतिगुरुशांतिविधानम् अथशुक्रकी शांतिका विधानकहतेहैंतिथ्यादि पंचांग शुभपदं शुभहोवे और चित्तमें श्रद्धाहोवेतबप्रथमआचार्यकोंप्रणामकर्केब्रह्माकेसहितवरणकरे१५९

और प्रथमस्वस्तिवाचन करके शुक्रका पूजनकरे और आम्रवृक्षकी चौकी बनायकरके श्वेतव स्त्रकरके वेष्टितकरे १६० और चांदीकी शुक्रकी मूर्तिबनायकरके वंशपात्रमें मंत्रके जाननेवाला स्थाप नकरे और पंचामृतकरके स्नानदेवे और सुंदरमनके हरणेवाले गंध अर्पणकरके पूजन करे १६१ इस प्रकारपूजन करके चावलोंके ऊपर स्थितकरे और चिट्टेचावलोंकरके सुंदर पंचकोण मंडलको बनायले वे १६२ और नाम और गोत्र उच्चारणकरके शुक्रका आवाहन करे. अहोइत्यानंदे हेशुक भोजकट देशोद्भव श्वेतघोडेकेरथमें आरूढ १६३ हेचतुर्भुज हेभृगुवंशमें भूषणरूप और अक्षमाला और क मंडलुके धारणेवाले आपकरके इसमूर्तिमें स्थितहोवो १६४ इसप्रकारध्यान शुक्रका करे और पाय

[illegible]
स्वस्तिवाचनपूर्वंतुकुर्याद्दैत्येश्वरार्चनम् ॥ आम्रवृक्षस्यपीठेतुशुभ्रवस्त्रेणसं वृते १६० राजतंतुभृगुंवंश्येस्थापयेन्मंत्रवित्तमः पंचामृतैस्तुस्नाप्याथगंधा द्यैस्तुमनोहरैः १६१ समुच्चार्यप्रयोगंचतंडुलोपरिविन्यसेत् मंडलेपंचकोणेच विहितेतंडुलोत्तमैः १६२ नामवंशंसमुच्चार्यदानवेज्यंसमाह्वयेत् अहोभोजकटेज तशुक्रश्वेताश्ववाहन १६३ समागच्छचतुर्बाहोभृगुगोत्रविभूषण परिप्राक्षावली हस्तकमंडलुधरप्रभो । १६४ एवंदैत्यगुरुंध्यात्वापाद्यसंविनिवेद्यच दद्यादने नमंत्रेणब्राह्मणायकुटुंबिने १६५ मंत्रः भार्गवोभर्गशुक्रश्वश्रुतिस्मृतिविशार दः हित्वाग्रहकृतान्दोषानायुरारोग्यदोस्तुनः १६६ कृत्वाचाग्निमुखंविद्वान्सुह तंजुहुयाच्चरुं अष्टोत्तरसहस्रंचयज्ञांगसमिधस्तथा १६७ गंधपुष्पादिकंसर्वंवि दध्यात्प्रतिपूजने श्वेततुरंगमंदद्याद्दक्षिणार्थंचभक्तिमान् १६८ एवंसंपूजितेदैत्यगुरौ क्षेममवाप्नुयात् यात्रामुखेविवाहेचगोचरेग्रहवेशने १६९ पूज्योदैत्येंद्रपूज्यो सौनात्रकार्याविचारणा ॥ इतिशुक्रपूजाविधानम् ॥

सकों नैवेद्य देवे और इसमंत्रकरके कुटुंबी ब्राह्मणकेतांई दान करदेवे । १६५ मंत्रकेह नेहं भार्गवजो बडेतेजवालेहैं शुक्र जोहै श्रुतिस्मृतियोंमें चतुर सो अपनीपीडाको दूरकरके हमारे को आयुषा और आरोग्यताके देनेवालेहोवें १६६ और विद्यावान् वर्तुलस्थंडिल बनायकरके तिसमें अ ग्निकास्थापन करके चरुसे और स्थलवृक्षकी समिधाकरके एकहजार आठमंत्रकरके होमकरे १६७ औ र संपूर्णगंधपुष्पादियोंकरके फेर दूसरीवारपूजनकरे और श्वेतवर्णका घोडा दक्षिणाके निमित्तदेवे भक्ति करके पुरु. १६८ और इसप्रकारकरके शुक्रकापूजनकरणेमें कल्याणको प्राप्तहोतहै और यात्राकालमें और विवाहमें और ग्रहगोचरमें शुक्रकापूजनकरे इसमें संशय नहिहै १६९ इतिशुक्रपूजाविधानम्

अथ शनिकी पूजाका विधान कहतेहैं जन्मराशिमें शनैश्चर जन्मका और दूसरा और चतुर्थ और पंचम और सप्तम और अष्टम और नवम द्वादश स्थानोंमें अशुभ होताहै १७१ और देह धारियोंको कष्ट करताहै और धनकानाश देशका पारित्याग कराय देताहै इह शनैश्वर कालरूपकरके तीनभुवन स्वर्ग मर्त्य पातालमें वर्त्तताहै १७२ और यत्नकरके होम दान पूजादियोंकरके पूजनीयहै और जन्मस्थानमें स्थित शनिने रावण हत कियाहै १७३ और तिसीशनिने दूसरे स्थानमें स्थित होयकरके कार्तवीर्य सहस्त्रबाहु हत कियाहै और चतुर्थराशिमें स्थित होयकरके हिरण्यकशिपु हत कियाहै और पंचमस्थानमें स्थित होयकरके राजा नलने विपत्तिको प्राप्त कियाहै १७४ और सप्तमस्थानमें स्थित होयकरके राजा धूम्रसेनने अपनेराज्यसे स्वर्ग कियाहै और अष्टमस्थानमें स्थित होयकरके महादेव शिव गजरूप कर दियेहैं १७५ और नवमस्थानमें स्थित होयकरके राजायुधिष्ठिरजीके आधीन

अथशनिपूजाविधानम् ॥ प्रथमस्तुद्वितीयस्तुचतुर्थःपंचमस्तथासप्तमश्चाष्टमो मंदोनवमोद्वादशोऽशुभः ॥ १७१ ॥ करोतिप्राणिनांकष्टधनदेशपरिक्षयमका लोयंशक्तिरूपेणवर्त्ततेभुवनत्रये ॥ १७२ ॥ पूजनीयःप्रयत्नेनहोमदानादिना द्विभिःजन्मस्थेनमंदेनरावणोविनिपातितः १७३ तेनैवचद्वितीयेनकार्तवीर्यो निपातितः चतुर्थेनासुराध्यक्षः पंचमेननलोनृपः १७४ स्वराज्यात्प्रापितोधः शधूम्रसेनोस्तगेनवै ॥ अष्टमेनमहादेवोगजरूपीकृतःपुरा १७५ नवमे नकुरुश्रेष्ठोद्यूताधीनस्तुकारितः द्वादशेनार्कपुत्रेणजमदग्निर्निपातितः १७६ नबलंप्रौढिरुग्रत्वंनज्ञातृत्वंननिन्हवम् सभक्तिपूजनंचात्रशनैश्चरसुतुष्टिदम् १७७ स्वगृह्योक्तेनविधिनापूजनीयःशनैश्चरः सर्वकामफलावाप्त्यैनात्रका र्याविचारणा १७८ कृष्णांजनमयेपीठेखादिरेचाप्यसोपिवा तंडुलैःकारयेत्पीठं कर्णिकाभिरलंकृतम् १७९ पश्चिमेतत्रपत्रेतुमंडलंधनुराकृति कृत्वातुस्थापये त्तत्रसूर्यपुत्रंयथाविधि १८० ततश्चावाहनंकुर्याच्छन्नोदेवीतिमंत्रतः अहोसौरा ष्ट्रसंजातःछायापुत्रश्चतुर्भुजः १८१

कियाहै और द्वादशस्थानमें स्थित होयकरके जमदग्नि हत कियाहै १७६ और इस शनैश्चरके आगे बडा उग्रबलभी नहि काम आवताहै और चातुरी विद्याभी नहि चलताहै और नम्रताकरकेभी न हि छोडताहै और भक्तिकरके युक्त जो शनिका पूजनहै तिसकरके प्रसन्न होताहै १७७ इसका ए ही अपनेगृह्योक्त विधानसे पूजनेयोग्यहै संपूर्ण कामनाफलके निमित्त इसमें संशयनहिहै १७८ और पूजापीठ काले सुरमेका बनावे अथवा खैरवृक्षका वा लोहेका बनावे और चावलोंकरके शो भायुक्त मंडल कर्णिकाकरके युक्त अष्टदल बनावे १७९ और तिसमें पश्चिमकेदलमें धनुषाकारहि से तिस धनुषाकार मंडलमें शनैश्चरका यथाविधिकरके स्थापन करै १८० और इसअनंतर शन्नोदेवी इसमंत्रकरके आवाहनकरी अहोइत्यादिसे हे सौराष्ट्रदेशमें जन्मलेनेवाले और चारभुजावाले १८१

कृष्णवर्ण और काश्यपगोत्रवाले और, एकहाथमें बाण एकहाथमें धनुष एकहाथमें त्रिशूल एकहाथ कर्के वरके देने वाले, और गृध्र इन्होंके वाहन इसमूर्त्तिमें आपकके स्थितहोवो, १८२ हेराजन् प्रजापतेति वेदके मंत्रकर्के पश्चिम दलमें पूजनकरे और इसी मंत्रकर्के होमादिककरे, १८३ और बुद्धिमान् हजार संख्याकर्केचरुहोमकोंकरे और होमकअन्तमें विधिसंयुक्त कृष्णाधेनु दान करदेवे १८४ औरशनिकीमूर्त्तिलोहेकीसुंदरदानकरेऔरदक्षिणाकर्केऔरवस्त्रकर्केसंयुक्तकुटुंबीब्राह्मणकेताईंदेवे १८५ और तैसेंहिश्रेष्ठआचारवालाब्राह्मणकेताईंसुंदरमहिषीदानकरदेवेऔरऋत्विजोंकोंयथाशक्तिकर्केधनदेवे १८६ और, पीछेसें ब्राह्मणोंकों भोजन देवे अनेक गोत्रमें उत्पन्नजोहें, तिन्हकों और यो शनिकी मूर्त्तिपूजन करीहैलोहेकी सुंदर १८७ सो मूर्त्ति ब्राह्मणसें मोलकर्केलल्देवे और तेलके भांडेमेंपावे और छिकेमें

कृष्णवर्णःकेगोत्रश्चबाणहस्तोधनुर्द्धरःत्रिशूलीचसमागच्छवरदोगृध्रवाहनः१८२
प्रजापतेतिसंपूज्य सराजन्पश्चिमेदले प्रजापतेतिमंत्रेणकुर्याद्धोमादिकंबुधः१८३
सहस्रसंख्यंतुकुर्याद्धवनंचरुणाबुधः होमांतेविधिवद्दद्यात्कृष्णांधेनुंपयस्विनीं १८४
मूर्त्तिंतुसूर्यपुत्रस्यदद्याल्लोहमयींशुभां सदक्षिणांसवस्त्रांचब्राह्मणायकुटुंबिने १८५
तथादद्याच्छुभाचारोब्रह्मणेमहिषींतथाऋत्विग्भ्योब्राह्मणेभ्यश्चदद्याद्द्रव्यंयथावसु
१८६ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्नानागोत्रसमुद्भवान्यामूर्त्तिः पूजिताहोमेत्वर्कजस्याय
सीशुभा १८७ दत्वाविप्रायतांपश्चाद्याचयेत्प्रतिनिष्क्रयात्तैलभांडेविनिक्षिप्याशि
क्यरूढांतुकारयेत् १८८ ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्यातिलान्माषांस्तुनिर्वपेत् प्र
भातेविप्रभुक्तेस्तुविधिरेषसनातनः १८९ एतत्कृत्वाविधानंचसर्वदासुखमाप्नुयात्
१९० इतिशनिपूजाविधानम् अथमदनरत्नेभविष्योत्तरेशनिव्रतम् ततोमंदस्य
दिवसेस्नानमभ्यंगपूर्वकंकार्यंदेयंचविप्रायतैलमभ्यंगहेतवे १९१ यस्तुसंवत्स
रयावत्प्राप्तेशनिदिनेनरः तैलंददातिविप्रेभ्यः स्वशक्त्यात्यजतेपिवा १९२
ततःसंवत्सरस्यांतेप्राप्तेतस्मिन्दिनेपुनःलोहघटार्पितंसौरिंतैलकुंभेविनिक्षिपेत् १९३

आरूढ करदेवे ॥ १८८ ॥ और यथाशक्तिकर्के ब्राह्मणोंकोंभोजन देवे और तिल और माश दान करे प्रातःकाल उठकर्के नित्यप्रति तिल और माष एक ब्राह्मणके भोजन निमित्त देवे इह सनातन विधि कहिहै १८९ इसविधानकोंकर्के सर्वदाकालसुखकोंप्राप्तहोताहै १९० इतिशनिपूजाविधानम् अव मदनरत्न और भविष्योत्तरमें शनिके व्रतका विधान कहाहै शनिवारकेदिन तिलोंका तेललगाय कर्केस्नानकों करे और ब्राह्मणकों वा मर्दनके निमित्ततेल देवे १९१ और कहतेहैं यो मनुष्य शनिवारके दिनमेंएकवर्षपर्यंत ब्राह्मणों का तेल दान करदेताहै अथवा शनिके निमित्त कर्के तेलका त्याग कर्ताहै सो वर्षकीसमाप्तिमें इस विधानकों करे ॥ १९२ ॥ और वर्षके अन्तमें प्राप्तयो शनिवारतिस् दिनमें लोहेके घटेकर्के युत शनिकीमूर्त्ति तेलके कुंभमें स्थित करे ॥ १९३ ॥

लोहेकेवाताम्रेकेकलशेमें कालेरंगके दोवस्त्रोंकर्केयुक्तश्रौरकालेकंबलकेऊपरधरे १९४ श्रौरश्रापतैल लगायकर्के स्नान करे श्रौर काले पुष्पोंकर्के शनिका पूजन करे श्रौर कस्तूरीकर्के श्रौर सुगंधिवाले पुष्पोंकर्के श्रौर खिचडीके नैवेद्यकर्के तिल भातकर्के पूजन करे १९५ इस प्रकार शनिका पूजन करके वारंवार क्षमापन करावे श्रौर कृष्णवर्णके श्रेष्ठ ब्राह्मणकेतांई श्रौर तिसके अभावमें श्रौर ब्राह्मणकेतांई इसमंत्रकर्केदान करदेवे हेराजन् ॥ १९६ ॥ कोणकोंश्रौर नीलसुरमेंकीन्याई प्रभावालेकों श्रौर मंदगतिवालेकों श्रौर छायाकर्के सूर्यसें उत्पन्नभयाजोहै तिसशनिकों मैं नमस्कार करताहों १९७ हेसूर्यकेपुत्र तेरेतांई हेशनैश्चर तेरेतांई हेकृष्णवर्ण श्रौर सुरमा श्रौर मेचके मंडकेरंहीके वर्णवाले इस अपने रहस्यकों श्रवण करके हेसूर्यकेपुत्र मेरेकों कामना पूर्वक वरकों देह १९८ हेप्रेतराज तेरे

लोहेताम्रमयेवाथकृष्णवस्त्रयुगान्वितं ॥ कृष्णगोदक्षिणायुक्तंकृष्णकंबलशायिनम् १९४ स्वयमभ्यंगतःस्नात्वाकृष्णपुष्पैस्तमर्चयेत् सुगंधिगंधपुष्पैश्च कृशरान्नैस्तिलौदनैः १९५ पूजयित्वासूर्यपुत्रंक्षमस्वेतिपुनःपुनः कृष्णायद्विजमुख्यायतदभावेतरायच १९६ देयःशनैश्चरोभक्त्यामंत्रेणानेनवैद्विज कोणं नीलांजनप्रख्यंमंदचेष्टाप्रसारिणम् छायामार्त्तंडसंभूतंनमस्यामिशनैश्चरं १९७ नमोर्कपुत्रायशनैश्चरायनीहारवर्णांजनमेचकाय श्रुत्वारहस्यंभवकामदस्त्वंफलप्रदोमेभवसूर्यपुत्र १९८नमोस्तुप्रेतराजायकृशदेहायवैनमः शनैश्चरायक्रूरायशुद्धबुद्धिप्रदायिने १९९ इतिशनैश्चरव्रतम्अथशनैश्चरशांतिस्तत्रैव द्वादशाष्टमजन्मस्थेशनौसर्वग्रहेश्वरे श्रावणमासिसंप्राप्तप्रथमेशनिवासरे २०० लोहरूपंशनिंकृत्वास्नाप्यपंचामृतेनवै ॥ पुष्पैरष्टविधैर्धूपैःफलैश्चैवविशेषतः २०१ नामभिःपूजयेदेतैःक्रमेणग्रहसत्तमं कोणस्थःपिंगलोबभ्रुःकृष्णोरौद्रोयमांतकः २०२

कों नमस्कारहो हेकृशदेहवाले तेरेतांई नमस्कारहो हेशनैश्चर हेक्रूर हेशुद्धबुद्धिकेदेनेवाले, तेरेकों नमस्कारहो इस प्रकारकहै १९९ इतिशनिव्रतम्

अब सार्धसत्तयोगमें शनिकी-शांति कहतेहैं ॥ जिसमनुष्यकों जन्मराशिसें द्वादश श्रौर अष्टम श्रौर जन्मस्थानमे ग्रहराजशनि स्थित होवे सोश्रावण मासमें प्रथम जो शनिवार तिस दिनमें २०० लोहेका शनि बनायकर्के पंचामृतसें स्नानदेवे श्रौर पुष्पोंकर्के श्रौर अष्टांग धूपकर्के श्रौर फलोंकर्के २०१ श्रागेकहेजो नाम तिन्होंकर्के ग्रहोंमें श्रेष्ठयो शनि तिसका पूजन करे कोणस्थायनमः पिंगलायनमः बभ्रवेनमः कृष्णायनमः रौद्रायनमः अंतकायनमः यमायनमः २०२ सौरयेनमः

शनैश्चरायनमः। मंदायनमः पिप्पलादकायिने ॥ इन्हों दशनामोंकरके शनिस्तुतकियाहै इनोंकरके पूजनकरै और शन्नोदेवी इस वेदके मंत्रकरके पूजनकरै २०३ और इसप्रकारपूजनकरके नैवेद्य क्रमपूर्वकदेवे प्रथमपूजाकेवारमेमहाभक्तकानैवेद्यदेवे और दूसरेशनिवारमेंपायसक्षीरकानैवेद्यदेवे ॥ २०४ और तीसरे वारमें अवलीका नैवेद्यदेवे अवलीछाह और भक्त और हलदी लूण मिलायकरके पकातेहैं तिसको खेरी नामकरके त्रिगर्त्तदेशमें प्रसिद्ध नागपूजामें वनावेहैं और चतुर्थशनिवारमें सुंदरपूरियोंकानैवेद्य लगावे ॥ इत्यत्रिशनिशांतिः ॥ अवमतांतरकरकेरोहिणीनक्षत्रकेशकटभेदमेंशनिपूजाका विधानकहतेहैं ॥ कदाचित् किसीकालसमयमें रोहिणीकेगड्डेकाॅयमरूपशनिकरके भेद होवे तव जगतका विनाश होताहै तिसदोषकेनिमित दशहजार १०००० ब्राह्मणोंको साधुओंको यथेष्ट भोजन देवे और

सौरिः शनैश्चरोमंदः पिप्पलादेनसंस्तुतः ॥ शन्नोदेवीतिसर्वत्रवैदिकेनप्रपूजयेत् ॥ २०३ ॥ पूजयित्वाचनैवेद्यंततः कुर्यात्क्रमेणतुसमाप्रभक्तंप्रथमेद्वितीयेपायसंशुभं ॥ २०४ ॥ तृतीयेत्वावलीकार्याचतुर्थेपूरिकाशुभा अविलीतकृतंडुलानांमितालिह्याविशेषः ॥ प्रथमादिशब्दोत्रवासरपरः ॥ ॥ इतिशनैश्चरशांतिः ॥ अथमतांतरेणरोहिणीशकटभेदेशनिपूजादिविधानम् अयुतंब्राह्मणान्साधूनयथेष्टंभोजयेत्सुधीः तांबूलैर्विविधैर्वस्त्रैर्दक्षिणाभिश्चतोषयेत् २०६ यदाकदाचित्समयेजगतांविप्लवायच शकटोभिद्यतेब्राह्मीमंदेनयमरूपिणा २०७ कृष्णैरनडुद्भिर्युक्तंशकटंचार्पयेच्छुभम् ॥ चक्रेलोहमयेकृष्णेसर्वोपस्करसंयुतं २०८ श्रोत्रियायसुशीलायब्राह्मणायसमर्पयेत् नाममन्त्रेणमंदस्यदक्षिणासहितंनृप २०९ इतिशनैश्चरपूजाविधिः ॥ अथस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशायनमः अस्यश्रीशनैश्चरस्तोत्रमंत्रस्यदशरथऋषिः शनैश्चरोदेवतात्रिष्टुप्छंदः शनैश्चरप्रीत्यर्थंजपेविनियोगः ॥

तांबूलोंकरके और अनेक प्रकारके वस्त्रोंकरके और दक्षिणाकरके प्रसन्नकरै २०६ और काले रंगवाले बैलोंकरके युक्त गड्डा दान करकेदेवे चक्रतिसके लोहेके कृष्णवर्णके वनावे और संपूर्ण उपस्करकरके युक्त २०८ और स्वभाववाले श्रोत्रियब्राह्मणके ताईं दानकरके देवे हेराजन् शनिके नाममंत्रोंकरके और दक्षिणाकरके युक्त देवे २०९ इतिशनैश्चरपूजाविधि अवशनैश्चरकोस्तोत्रकहतेहैं ॥ जिस मनुष्यको शनैश्चरको पीडा किसीप्रकारकी होवे सो इह राजादशरथकरके कियाहुआ स्तोत्र इसकापाठ करे ॥ प्रातःकालमें स्नानकरके श्रीगणेशजीको प्रणाम करके और शनिकी प्रसन्नताके निमित्त विनियोगकरै ॥

॥ श्रीराजादशरथजीकहतेभये ॥ कोणनामककं और अंतकनामककं और यमनामककं और बभ्रुनामककं और कृष्णनामककं और शनिनामककं और पिंगलनामककं और मंदनामककं और सौरिनामककं नित्यप्रति स्मरणकिया जो पीडाकों हरताहै तिस सूर्यके पुत्रताई नमस्कारहो १ और जिसके विषमस्थानमें ॥ १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १२ ॥ स्थित होया देवता और दैत्य और किन्नर और गणगंधर्व विद्याधर और नाग संपूर्ण पीडाकों प्राप्तहोतेहैं तिससूर्यकेपुत्रताई नमस्कारहो २ और जिसके विषमस्थानमें स्थित होया मनुष्य और राजा और पशु और मृगेंद्र और वनकेजीव कीट और पतंग और भृंगदह संपूर्ण पीडाकों प्राप्त होतेहैं तिस सूर्यके पुत्रताईनमस्कारहो ३ और जिसके विषमस्थानमेंस्थित होया देश और किलेकोट और वन और सेनाके निवासस्थान और पुर ग्राम पीडाकों प्राप्त होतेहैं तिससूर्यके पुत्रताई नमस्कारहो ४ और जो

॥ दशरथउवाच ॥ कोणोंतकोरौद्रयमोथबभ्रुः कृष्णःशनिःपिंगलमंदसौरिः नित्यंस्मृतोयोहरतेचपीडांतस्मैनमः श्रीरविनंदनाय १ सुराऽसुराः किंपुरुषा गणेंद्रागंधर्वविद्याधरपन्नगाश्च पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमः श्रीरविनंदनाय २ नरानरेंद्राःपशवोमृगेंद्रावन्याश्चयेकीटपतंगभृंगाः पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ३ देशाश्चदुर्गाणिवनानियत्रसेनानिवेशः पुरपत्तनानि पीडयंतिसर्वेविषमस्थितेनतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ॥ ४ ॥ तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेननीलांबरदानतोवा प्रीणातिमंत्रैर्निजवासरेचतस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ५ ॥ प्रयागकूलेयमुनातटेचसरस्वतीपुण्यजलेगुहायां योयोगिनांध्यानगतोपिसूक्ष्मः तस्मैनमः श्रीरविनंदनाय ६ अन्यप्रदेशात्स्वगृहंप्रविष्टस्त्वदीयवारेसनरः सुखीस्यात् गृहाद्गतोयोनपुनःप्रयातितस्मैनमःश्रीरविनंदनाय ७ स्रष्टास्वयंभूर्भुवनत्रयस्यत्राताहरीशोहरतेपिनाकी एकास्त्रिधाऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मैनमः श्रीरविनंदनाय ८

सूर्यकापुत्र शनिवारके दिनमें तिल और यव और माह और गुड और अन्न दानकरणेकर्के प्रसन्नता कोंप्राप्तहोताहै तिसकेताईनमस्कारहो ५ और प्रयागतीर्थकेतीरमें और यमुनाके कनारेमें और पवित्रसरस्वतीके जलमें और गुफामें और सूक्ष्मरूपकर्के योगीजनोंके हृदयमें वास करणेवाला योहै तिससूर्यकेपुत्रताई नमस्कारहो ६ और हेशनैश्वर योमनुष्य तुह्मारे वारमें विदेशसें घरमेंप्रवेश कर्ताहै सो सुखीहोताहै और जो मनुष्य तुह्मारे वारमें घरसें यात्रा कर्ताहै सो फेर शीघ्रघरकों नाहिंप्राप्तहोताहै ऐसेंजो सूर्यके पुत्रहो तुह्मारेताईं नमस्कारहो ७ और तीनभुवनके रचने वाले जोतुमहो ब्रह्माके रूपकर्के और रक्षाकर्त्ताहो विष्णुरूपकर्के और संहारकर्त्ताहो शिवरूपकर्के एकहितीन प्रकारके ऋग्वेद और यजुर्वेद और सामवेदकीमूर्तिकोंधारणेवालेजो सूर्यकपुत्रतिन्हकोंनमस्कारहो ८

ौर कहतेहैं इहजोशनिकी आठश्लोक करकेंस्तुति इसको योमनुष्य प्रातःकालउठकरकें प्रीतिसें पढताहै सोमनुष्य पुत्रोंकरकें और पशुयोंकरकें और बंधुयोंकरकें युक्त होताहै औरसुखकों और पृथ्वी मेंभोगोंको भोगकरकें देहांतमें विष्णुके निर्वाणपदकों प्राप्तहोताहै ९ और कोणस्थ १ पिंगल २ बभ्रु ३ कृष्ण ४ रौद्र ५ अंतक ६ यम ७ सौरि ८ शनैश्चर ९ मंद १० इन्हों दशनामोंकरकें पिप्पलादऋषिनें शनिस्तुताकियाहै १० इन्होंनामोंको योप्रातःकालमेंपढताहै तिसकोंशनिकीपीडा कदाचित्नहिहोतीहै ॥ ११ ॥ इतिशनिस्तोत्रम् ॥ अब राहुकी शांतिका विधान कहतेहैं जन्मराशिमें प्रथम और द्वितीय और चतुर्थ और पंचम औरसप्तमें और अष्टमें और नवम और द्वादशस्थानमें स्थितजोराहु १ मनुष्योंकोंमृत्युकर्ताहै और देशका त्यां [illegible]

शन्यष्टकंयः प्रयतः प्रभातेनित्यंसपुत्रैःपशुबांधवैश्च पठेत्तसौख्यंभुविभोगभो क्ताप्राप्नोतिनिर्वाणपदंतदंते ९ ॥ कोणस्थःपिंगलोबभ्रुः कृष्णोरौद्रोंतकोयमः सौरिःशनैश्चरोमंदःपिप्पलादेनसंस्तुतः १० एतानिदशनामानिप्रातरुत्थाययः पठेत् शनैश्चरकृतापीडानकदाचिद्भविष्यति ११ इतिशकटभेदनामगुणवि शिष्टस्तुतिपुरःशरंशनैश्चरपूजाविधानम् ॥ अथराहुशांतिविधानं ॥ प्रथमस्तुद्वितीयस्तुचतुर्थःपंचमस्तथा ॥ सप्तमश्चाष्टमस्थोवानवमोद्वादश स्तमः ॥ १ ॥ करोतिमरणंपुंसांदेशत्यागधनक्षयम् ॥ विकारान्शो णितस्यापियुद्धेचैवपराजयम् २ ॥ विवादेमानहानिःस्याद्दुःखंचसुहृदामपि निर्विघ्नार्थंतुसंपूज्योगृह्योक्तविधिनातमः ३ पूजितेतमसिप्रीतेसर्वान्कामान चाप्नुयात् कालांजनपदेतात्तथालोहमयेपिवा ४ चतुरस्रेचतुष्पादेनूतनेव स्त्रसंयुते अक्षतैःपूजितेसम्यक्तत्रतंस्थापयेद्बुधः ५ आहूयविधिमार्गेणतमो मंत्रेणतंग्रहम् शूद्रवर्णसमुद्भूतकृष्णवर्णचतुर्भुज ६ धनुःपाशधरःश्रीमानक्ष मालांकमंडलुम् चतुर्दश्यांसमुत्पन्नकृष्णपक्षेविशेषतः ७.

ग और धनका नाश कर्ताहै और रुधिरका विकार और युद्धमें पराजय कर्ताहै २ और विवादमें मानकी हानि और मित्रोंकों दुःख कर्ताहै और तिसदोषके दूरकरणेके वास्ते अपने गृह्योक्त विधानसें गहपूजने योग्यहै ३ और पूजाकरकें राहुके प्रसन्नहुये संपूर्णकामनासिद्धहोतीहैं हेराजन् काले सुरमेकी चउकीमें अथवा लोहेकी चउकीमें ४ चतुष्कोण मंडलमें नूतन वस्त्रकरके युक्त स्थापन करे और भलीप्रकारकरकें अक्षतोंसें पूजन करे ५ और विधानकरकें राहुके मंत्रसें आवाहन करे हेशूद्रवर्णमेंजन्मनेवाले हेकृष्णवर्ण हेचारभुजोंवाले ६ और धनुष और पाश और अक्षमाला और कमंडलुके धारणे वाले हेकृष्णपक्षकीचतुर्दशीतिथिमें जन्मनेवाले ७

हेयमहेमहाघोररूपहेदेवताओंर दैत्योंके हतकरणेवाले हेपैठीनसीगोत्रमें जन्मनेरूपमहाघोररूप ओं बर्बरदेशमें उत्पन्नहोनेवाले ८ ओर भरणीनक्षत्रमें जन्मनेवाले हेसिंहिकाकेपुत्र तेरेकों नमस्कारहो हेवरदेनेवाल्योंमेंश्रेष्ठआयकर्के इसपीठमें मूर्तिमेंसन्निधानहोवो९इसविधानकर्के राहूका आवाहनकर्के पूजनपवित्रहोयकर्के करे ओंरतिसकेउपरंत दूर्वाके दलोंकर्के दशहजार१०००० होम करे१० ओर सहस्रमसीति इसवेदके मंत्रकर्के पायसका होमकरे ११ ओर पीछेसें स्विष्टकृत होमाकि विधिकर्के फेर राहुका पूजनकरे, विशेषसें १२ ओर कुटुंबी आचार्यके ताई लोहेकी दक्षिणा देवे ओर दोवस्त्र ओर सूत्र ओर कर्णोंके कुंडल ओर हाथोंके कडे दानदेवे १३ ओर पीछेसें ब्राह्मणों

यमरूपमहाघोरदेवदैत्यनिवर्हण पैठीनसकुलेजन्मदेशेवर्वरसंज्ञके ८ भरणी तारकायांचसैंहिकेयनमोस्तुतेआगच्छवरदश्रेष्ठपीठेस्मिन्सान्निधिंकुरु ९ आवाह्य विधिवद्राहुपूजयेत्प्रयतःशुचिःततस्तुहवनंकुर्याद्दूर्वाभिरयुतेनच १०प्रधानंपाय संतत्रसाज्यंचेवविशेषतः सहस्रमसीतिहोमंपायसेनप्रकल्पयेत् ११ ततः स्विष्टकृतेजातिहोमांतेविधिवित्तमः प्रतिपूजांततःकुर्याद्राहोःप्रीत्यैविशेषतः१२ आयसंदक्षिणांदद्यादाचार्यायकुटुंविने वस्त्रयुग्मंचसूत्रंचकुंडलेकटकानिच १३ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्भुक्तेपुनर्व्रजेत्ततः एवंयःकुरुतेपूजांराहोर्विगोचरस्यच१४ दुष्टस्थानस्थितस्याशुग्रहपीडाविनश्यति सर्वान्कामानवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा १५ इतिराहुपूजाविधानम् अथकेतुपूजाविधानम् यथाराहुस्तथाकेतु ज्योतिःशास्त्रेनिगद्यते तस्यशांतिकरंसम्यग्विधानमुनिभिःस्मृतम् १ ॥ कृत्वाकांस्यमयंकेतुंचतुर्वाहुंमहातनुं धूम्रवर्णंदीर्घहनुंपिंगश्मश्रुविलोचनं ॥ २ एवमेकेतिकेतूनांरूपवाहुल्यमंजसा एकएवेतिचान्येतुसहस्रंत्वपरेविदुः ॥ ३

कों भोजन देवे ओर भोजनकरायकर्के आठपयर पीछे गमन करे हेराजन इसप्रकारकी पूजा जो विषमस्थान स्थित राहुकी कर्ताहे १४ तिसके दुष्टस्थानस्थित होनेकी पीडा नाशकों प्राप्त होतीहै ओर संपूर्ण कामनाकों प्राप्त होताहै इसमें संशय नहिहै १५ इतिराहुपूजाविधानम् अब केतुकी पूजाका विधान कहतेहैं जैसाराहुकहाहैतैसाकेतुज्योतिषशास्त्रमेंकहाहै तिसकी शांति करणेका विधान मुनियोंने कहाहै १ कांस्यका केतु बडे देहवाला ओर चारभुजोंवाला ओर लंबी ठोडीवाला ओर पिंगलवर्णकी दाढी ओर पिंगलनेत्रोंवाला बनायकर्के स्थितकरे २ ओर कईक रि केतुयोंके बहुतरूपकहतेहैं ओर कईएकहि कहतेहैं ओर कईहजार केतूकहतेहैं ३

र महाभयकर, रूप बडा रौद्र मनुष्योंकोंबडा भयदेनेवाला और तिसकेनाम गोत्रकाउच्चारणकर्के आवाहनकरे ४ और चाउलोंकर्के पूरितमडलमें चित्रितवर्णकी पीठमें स्थितकरे और दोवस्त्रकर्के युक्त और चंदनकर्के पूजित करे ५ और पंचामृतका स्नानदेकर्के और आवाहनकर्के स्थापित करे आवाहनकामंत्रकहतेहैं हेकेतो वडीभुजोंवाले और विशाखानक्षत्रमें जन्मलेनेवाले और अमावास्यातिथिमें जन्मनेवाले और शूद्रवर्णमें उत्पन्नहोनेवाले ७ हेसूर्यचंद्रमाकों भयकेदेनेवाले हेकालरूपनेरेकोंनमस्कारहोहेवरकेदेनेवाले तुमआनंदके देनेवालेहो हेसुव्रत ८ आयकर्के इसयज्ञमें स्थित होवो और कामनाकों पूर्णकरो हेप्रभो इसप्रकारकर्केआवाहनकरे और केतुंकृण्वंनिति इसवेदके मंत्र क

महाभयमहारौद्रमहाभयकरंनृणाम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्यमंत्रैरावाहयेद्बुधः ४ निवेश्यचित्रितेपीठेतंडुलैःपरिपूरिते ॥ वस्त्रयुग्मसमायुक्तंचंदनेनसुचर्चितं ५ पंचामृतेनसंस्नाप्यसमाहूयनिवेशयेत् तत्रावाहनमंत्रः अहोकेतोमहाबाहोविशाखाऋक्षसंभव अमावास्यांतिथौजातशूद्रवर्णसमुद्भव ७ आदित्यचंद्रभयदकालरूपनमोस्तुते आगच्छवरदानंदनंदनोभवसुव्रत ८ यज्ञेस्मिन्कुरुसांनिध्यंकामानापूरयप्रभो इत्यावाहनं केतुंकृण्वन्नितिमंत्रेणपूजाहोमविधिःस्मृतः ९ चित्रान्नंचाशनंचात्रकुशाश्चसमिधस्तथा अयुतंहवनेसंख्याप्रवलघृतमत्रवै १० कृतेस्विष्टकृतेकार्याप्रतिपूजामनीषिभिः छागस्तुदक्षिणाचात्रकेतूनांप्रीतयेमता ११ सपाद्यविधिवद्दत्त्वाह्याचार्यायमनीषिणे मूर्तिंछागचवस्त्रंचनमस्कुर्यात्प्रयत्नतः १२ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दद्यात्तेभ्यश्चदक्षिणा एवमर्कादिखेटानांपूजनंपरिकीर्तितं १३ यस्ययस्यचखेटस्यहोमेवन्हिःपृथक्पृथक् नामानिकथितान्येवयज्ञकर्मविशारदैः १४

र्के पूजा और होमकी विधिकहीहै ९ और चित्रान्नभोजन आगेधरे योचित्रान्नपूर्व लिखाहै और कुशाकी समिधाकर्के दशहजार होमकी संख्या कहिहै और निश्चयकर्के घृतसंप्रधानहोम करे १० और स्विष्टकृत होमकर्के बुद्धिवाल्योंनें फेरप्रतिमाका पूजन करणेयोग्यहै और बकरादक्षिणाकेतुकी कहिहै प्रीतिवास्ते ११ इसप्रकारपूजनकर्के बुद्धिवाले आचार्यकेताईं मूर्ति और बकरा और वस्त्रदेकर्के नमस्कारकरे यत्नसें १२ और पीछेसें ब्राह्मणोंकों भोजनदेवे और तिन्होंके ताईंदक्षिणादेवे इसप्रकारकर्के सूर्यादिग्रहोंका पूजनकहाहै १३ और जिसजिसप्रकारकी शांतिहोवे तिसतिसका अग्नि भिन्नभिन्न शांतिकर्मके जाननेवाल्योंनें कहाहै १४

और कहतेहैं सूर्यके होममें कपिलनामकके अग्निका पूजनकरे और चंद्रमाकेहोममें पिंगलनामकके और भौमके होममें धूमकेतुनामककेऔरबुधकेहोममेंजठराग्निनामकके १५ और बृहस्पतिके होममें शिखीनामकके और शुक्रके होममें हाटकनामकके और शनिके होममें महातेजनामकके और राहुकेतुके होममें हुताशन नामकके अग्निका पूजनकरे १६ और योमनुष्यअग्निके नामोंके जानने विना होमकों कर्ताहै सो होमके फलकों नहि प्राप्तहोताहै १७ और इसप्रकारकके केतुयोंका पूजन करनाहै पुरुषोंकों और विशेषसें स्त्रीयोंकों संपूर्णकामनाकेदेने वालाहै १८ इतिकेतुपूजाविधानम् अथयोगदानविधानरत्नाकरे अगस्त्य मुनिके प्रतिरामो कार्तिकजीकहतेभये हेअगस्त्य एकराशिमेंग्रह

आदित्यःकपिलोनामपिंगलःसोमउच्यते ॥ धूमकेतुस्तथाभौमोजाठराग्निर्बुधःस्मृतः
१५गुरोश्चैवशिखीनामशुक्रोभवतिहाटकः ॥ शनैश्चरोमहातेजाराहुकेत्वोर्हुताशनः
१६अविदित्वाग्निनामानिहोमंकुर्याद्विचक्षणः ॥ तद्धुतनचसंस्कारनचयज्ञफलंलभेत्
१७ एवंविधानमुद्दिष्टंकेतूनांपूजनंमतं सर्वकामप्रदन्नृणांनारीणांचविशेषतः १८
इतिकेतुपूजाविधानम् अथयोगदानविधान रत्नाकरे योगशांतिंप्रवक्ष्यामि
विशेषाच्छृणुतापस ग्रहाणांयोगतोयोगाविविधाख्याःप्रकीर्तिताः १ तत्रयं
रिष्टदायोगास्तत्सूच्यारिष्टशांतये योगदानप्रकर्तव्यंविचार्यमतिमन्नरैः २
स्वल्पाधिकांशगायेचराशौस्वर्णादिकल्पिते तत्रस्वल्पांशगास्तेतुदक्षभागेधि
कांशगाः ३ वामेस्थाप्याविशेषेणपृथक्स्थितिविवर्जिताः एवंग्रहयुतराशिंकृ
त्वाहेमादिनांशुभम् ४

स्थित होनेमें बहुत प्रकारकेयोग कहेहै १ तिनमेंजोरिष्टके देनेवाले योगहैं तिन्होंके रिष्टशांतिके वास्ते बुद्धिवाले मनुष्योंने योगदान विचार करके करणे योग्यहै २ और योग्रह थोडे अंशोंमें स्थित है और योग्रह अधिक अंशोंमें स्थित है तिन्होंकों सुवर्णादिकरिके मूर्तियोंमें रचके राशिमें स्थित करे और तिसराशिमें स्वल्पांश ग्रहकों दक्षिण भागमें और अधिक अंशवालेकों वामभागमें विशेषकरके स्थापनकरे एकहि राशिमें भिन्न भिन्न मूर्ति नहि बनावे ३ इस प्रकारकरके राशिकों सुवर्णादि धातुकी बनायकरके ग्रहोंकों तिसके ऊपर बनावे ४

और प्रथम राशिका पूजनकरे तदनंतर तिस ऊपरहि ग्रहोंका पूजनकरे और तिसमें प्रथम अधिक अशोंमें स्थित ग्रहोंको पूजे और पीछेसे हीनांश ग्रहका पूजन करे ५ और तिस तिस ग्रहके मंत्रकर्के और तिसीतिसराशिके मंत्रकर्के बुद्धिवाल्याने पूजनकरणा कहाहै ॥ ६ और आगेहोने वाले दोषके निमित्त वैदिक मंत्रसे कर्मकरे और प्रवृत्त दोषकी निवृत्ति वास्ते तंत्रोक्त मंत्रोंसे कर्मकरे ७ इस प्रकारकी व्यवस्था करके पूजन करे और, योगदानमें विशेष श्रवण कर हे अगस्त्य

तत्रादौपूजयेद्राशिंततःखेटान्प्रपूजयेत् तत्रादावधिकांशस्तुपूज्योन्यूनस्ततः पर ॥ ५ ॥ तत्तद्ग्रहीयमंत्रेणतत्तद्राशिगमंत्रत राशयश्चग्रहाश्चैवपूजनीयाविचक्षणैः ॥ ६ ॥ आगामिदोषशांत्यर्थंकर्मवैदिकमंत्रत प्रवृत्तदोषशांत्यर्थंकर्मतांत्रिकमंत्रत ७ एवंव्यवस्थयाकार्यंग्रहशांत्यर्थंकर्मणि योगदानेविशेषतुशृणुष्वमुनिसत्तम ८ आरभ्यादित्यवारंतुक्रमेणग्रहमूर्तय तत्तद्वारेप्रदातव्या समर्चनपुर सरा ९ भूशय्याब्रह्मचर्यादिभक्ष्यभोज्यव्यवस्थिते ॥ ग्रहशांतिप्रवृत्तैस्तुसत्तवारेषुमूर्तिषु १० दत्तासुचततः पश्चादष्टमेवासरेपुन ॥ योगदानप्रकर्त्तव्यंश्रद्धाभक्तिसमन्विते ११ वृत्तिशीलसमोपेतगुणवंतद्विजशुभं ॥ अभ्यर्च्ययोगप्रतिमांसर्वालंकरणान्वितां ॥ १२ ॥

८ आदित्यवारसें लेकर्के क्रमसेतिस २वारमें पूजनकर्के ग्रहोंकी मूर्तियोंका दान करदेवे ९ और भूमिशयनादि व्यवस्था करके ब्रह्मचर्यमें स्थित होवे और ग्रहमंत्र जोहै तिसमें सूर्यादिवारोंमें प्रत्येक वारमें तिस तिस ग्रहकीमूर्तिका दानकरे १० और अष्टमदिनमें श्रद्धाभक्ति कर्के युक्त योगमूर्तिका दान करणे योग्यहै ११ और श्रेष्ठवृत्तिऔर श्रेष्ठस्वभावकर्के युक्त योगगुणवान ब्राह्मणहै तिसका पूजन कर्के योगदानकी प्रतिमा संपूर्ण उपस्करकर्केयुक्त १२

भक्तिकर्के ब्राह्मणकेतांई देदवे औरयोगारिष्टकेदूरकरणे वास्तेऔरदानकीपूर्णताकेवास्तेदक्षिणादानदेवे
१३ इस प्रकार दानदेकर्के प्रदक्षिणा करे और ब्राह्मणका विसर्जनकरेऔरविशेषसें कितनाककाल
तिसब्राह्मणकादर्शन नहिकरे १४ औरयोगदानकायोद्रव्यहैतिसकोंब्राह्मणसें मोल्यकर्केवी नहिग्रहे
णकरेऔर इसीप्रकारवहुतब्राह्मणोंकोवीयोगदानविभागकर्केकदाचित् नहिदेवे १५वहुतोंकोंविभागसें
देनेकर्के दानकी हानिहोतीहैऔरदान निष्फलहोताहैहेअगस्त्यइह महाशांतिकाविधान संक्षेपकर्के
कहाहै १६ हजार माष परिमाण सुवर्णकी ग्रहमूर्तिवनावे और तिसके अर्धमान कर्के वा चतुर्था
शकर्के वा अष्टमांश कर्केवा सऊो १०० माषकर्के ग्रहकी मूर्त्ति वनावे १७ और तिससेंन्यून

दद्याद्विप्रायभक्त्यातुयोगारिष्टप्रशांतये ॥ ॥ दक्षिणांचयथाशक्त्यादानसं
पूर्त्तिहेतवे ॥ १३ ॥ दत्वाप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणंतुविसर्जयेत् ॥
॥ नतस्यदर्शनंकुर्यात्कंचित्कालंविशेषतः ॥ १४ ॥ द्रव्यंचयोगदानी
यंनग्राह्यंमोल्यतोपिच ॥ नदेयमेवंविप्रेभ्योवहुभ्यस्तुकदाचन ॥ १५ ॥ तेन
दानेनहानिःस्यान्निष्फलंतत्प्रजायते ॥ महाशांतिविधानंतुसंक्षेपेणप्रदर्शित
म् १६ सहस्रमाषकस्वर्णैर्ग्रहमूर्त्तिप्रकारयेत् तदर्धेनतदर्धेनतदर्धेनशतेनवा
१७ ततोन्यूनप्रमाणेनत्वत्यंताधममीरितं ॥ माषायुतेनकर्त्तव्यायमस्य
प्रतिमाशुभा १८ नियुतेनतुमाषाणांकालपुरुषस्तथाभवेत् रौप्यंदशगुणंप्रो
क्तंताम्रंविंशतिसंख्यकं ॥ १९ द्वादशांगुलिमानंतुग्रहाणांमूर्त्तिरिष्यते ॥
आत्ममानात्तुकर्त्तव्यात्वन्यधातुभिरीरिता २० द्रव्यमानाधिकत्वेनमानमेतत्
प्रकीर्त्तितम् ॥ इतियोगदानादिविधानम् ॥

अत्यंतनिंदितमानकहाहैऔरयमकीप्रतिमाकादानकरणाहोवे तवदशहजार१०००० माषकीप्रतिमावनावे
१८औरकालपुरुषकादानकरणाहोवेतवलक्ष१००००० माषकीप्रतिमावनावे और पांचगुंजाकाएकमाष
कहाहै और इसमानसें रौप्यका दशगुणित मान कहाहै और ताम्रकीप्रतिमावीसगुणितमानकर्के व
नावे १९ और वारां १२ अंगुलीप्रमाणग्रहोंकी मूर्त्तियांहावनीहै यह सुवर्णके विना और
धातुकीप्रतिमावनावे सब अपने देहके प्रमाणकर्के कहिहै २० इसमें मुख्यसुवर्णादि प्रतिमाकामा
न द्रव्यकीवाहुल्यतामें कहाहै ॥ इतियोगदानादिविधानम्

अथग्रंथकेअंत्यमेंआशीर्वादकर्केमंगलकरतेहैं ॥ श्रीरामचंद्रजीकेचरणकमलकीकृपासेंश्रीरणवीरसिंहमहाराजपुत्रस्त्रीयोंकरकेयुक्तजयकोंप्राप्तहो कैसेमहाराजहे याचकोंकीइच्छाभलीप्रकारकरकेंपूर्णकरणेमें कल्पवृक्षकीन्याईहै और दानकरणेमें इंद्रकी न्याईसभकोंप्रसन्नकर्तेहैं और दरिद्ररूपअग्निकेनाशकरणेमें जलकेसमूहकी न्याईहैं और श्रेष्ठजनोंकेपरिपालनेमें श्रीरामचंद्रजीकीन्याईहै और श्रेष्ठमंत्रके विचारमें वृहस्पतिकी न्याईहैं १, अबग्रंथकीप्रशंसाकहतेहैं ॥ हेपंडितलोकों अनेकजातकशास्त्रकेग्रंथसंग्रहकरणेमें जोक्लेशहैतिसकेदूरकरणेवास्तेइहग्रंथमेंनेंकियाहै जोजातकखंड इसीकोंअत्यंतसुखवा...

अथग्रंथांतेशिष्टाचारान्मंगलमाचरति ॥ अर्थीच्छापरिपूरणेसुरतरुर्दानेसुरेशःक्षणांपतिर्दारिद्र्यानलनाशनेंबुनिचयोरामःसतांपालने ॥ सन्मंत्रान्नयनेगिरामधिपतिःश्रीरामपादाब्जतोजीयाच्छ्रीरणवीरसिंहनृपतिःपुत्रांगनाभिःसह १ ॥ अथग्रंथप्रशंसादिकथनं ॥ नानाजातकपुस्तकभारार्जनदुःखहानयेकृतिनः ॥ मत्कृतजातकखंडोविलिख्यतामयमतिसुखाय २ नवाश्विनवभूसंख्यामितेविक्रमवत्सरे ॥ पौषेचविशदेपक्षेपंचम्यांभृगुवासरे ३ नानाजातकग्रंथांश्च समालोक्यप्रयत्नतः कृतंजातकखंडंचमहेशेनसुधीमता ४ अस्मिन्निबंधेयन्न्यूनमधिकंयत्रकुत्रचित् ॥ विचार्यशोधनीयतत्कृपयाशास्त्रकोविदैः ॥ ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयामहेशदैवज्ञविरचितेज्योतिर्महानिबंधेजातकखंडेरिष्टप्रतीकाराध्यायश्चतुर्विंशः २४ समाप्तश्चायंजातकखंडः ॥

...तेलिखो २ और कहतेहैं श्रीविक्रमादित्यकेराज्यसे उन्नीससौउन्नीस १९१९ संवत्‌में पौषमासके शुक्लपक्षमें पंचमीतिथिमें शुक्रवारमें ३ अनेकजातकशास्त्रके ग्रंथोंकोदेखकरकेयत्नसे श्रेष्ठबुद्धिवालेमहेशनामकज्योतिषीनेंइहजातकखंडसमाप्तकियाहै ४ और इसमेंमेंगेइहग्रंथसेंहीकसीस्थलमेंन्यूनऔर अधिकइसनिबंधग्रंथमें होवे सोविचारकरकेंविद्वानोंनेंदयाकरशोधनेयोग्यहै ५ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहाज्ञयाविरचितेजातकखंडेचतुर्विंशोध्यायः २४ शिवम् ॥

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	२	हु	हुर	१०	५	द्वा	दूह्वा	२२	२	कु	कू
१	१०	स्तु	स्तु	१०	६	व	व्य	२२	३	थि	थी
१	६	ष्ट	ष्ठ	१०	७	ति	र्त्ति	२२	५	ते	तो
२	१	द्धा	द्धां	१०	८	व्यवस्थाः	व्यवस्था	२३	३	षि	षी
२	३	द्वो	द्वा	१०	९	ति	र्त्ति	२४	९	स्रो	स्त्रि
२	४	प्सि	प्स	१०	११	ततौ	त्तौ	२४	१०	स्वा	श्वा
३	६	वग	गव	११	१	व	व्य	२६	५	क्रूर	क्रौर्य
३	८	य	ह्य	११	९	य	ह्य	२८	६	के	क्व
३	९	क्ष्या	क्षा	१२	१	ष	क्षम	२८	६	जकः	जितः
३	११	ना	नां	१२	२	मं	मुं	२९	१	पुष्य	पोष
३	११	द्वन्यव	र्द्धानि	१२	३	इवा	श्व	२९	८	चो	चा
३	११	ख	ख्वा	१३	६	जि	र्ज्जि	३१	३	त्वि	न्त्वि
४	१	ध	घं	१४	४	ष्ठो	ष्ठो	३२	१२	ष्टा	ष्ठा
४	३	श्रं	स्त्रं	१४	५	ष्टो	ष्टो	३४	१	न्हाक्षे	न्हृक्ष
४	५	त्वं	त्वं	१४	९	छिम	च्छिम	३४	२	पेसौ	पैस्व
४	११	ष्य	ष्य	१४	९	गता	गता	३४	५	ष्ठ	ष्ठ
५	१	ष्प	ष्य	१५	४	विहाय	हित्वा	३५	३	स्फपा	स्पा
५	२	ज्ये	ज्ये	१५	८	प	पा	३५	७	ष्टा	ष्ठा
५	८	र्ज्य	र्ज्य	१६	६	मे	मं	३५	११	वर	व
६	१	तुं	र्त्तुं	१६	६	मे	म	३५	१२	ष्प	ष्ठा
६	७	जि	र्ज्वि	१६	७	रे	रं	३६	७	य	स
इतिप्रथमः				१६	८	मे	म	३७	९	ते	तो
७	१	म	मस्	१७	२	मः	वः	३७	१०	यः	शाः
७	१	तै	तैः	१७	८	ह	हि	३८	१	प्ता	ल्प
७	५	कटं	कंट	१७	१०	ज्ञौ	र्ज्यो	३८	६	पि	लि
७	७	ति	रिता	१८	११	न	त	३९	१	गु	सु
७	९	द्वा	संचा	२०	४	जानि	ज्योति	३९	१२	ठो	ष्ठो
७	९	ष्टा	ष्टा	इतिद्वितीयः				५०	६	त्व	न्त
७	१०	न	न्नं	२१	८	सोप	हातु	६०	१२	ते	तं
९	४	दि	दृष्टि	२१	१०	ग	गु	६१	२	र्षा	षान्

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
४२	१	क्ष	क्ष्य	६६	५	क्रे	ड्भे	इतिचतुर्थः			
४२	४	रिठ	रिछ	६६	५	ते	ने	९६	६	द्र	द्र
४२	१२	तुं	तुं	६६	७	द्वं	द्वं	९६	७	रु	रू
४३	६	ष्टः	ष्ठः	६६	९	ष्टो	ष्टो	९७	६	ज्ञा	ज्ञः
४४	११	र्वाण	र्माणि	६७	१	ष्टो	ष्ठो	९७	६	र्ति	र्सि
४५	१०	त०	तः	६७	१	निमः	निर्माः	९८	१	ष्टा	ष्ठा
४५	६	र्दूर	र्द्धम	६७	३	मा	माः	९८	२	रा	राव
४५	१२	ज्ये	ज्यै	६७	१	दो	द्दो	९८	२	ग्रि	ग्रू
४६	२	ता	ताः	६७	७	भक्तः	भक्ताः	९८	५	च	श्च
४७	११	व	व	६८	२	कॅ	कॅ	९८	५	क्षि	क्षः
४७	१२	ष्टा	ष्ठा	६९	७	धं	ध्वं	९८	९	वॅष्ट	वॅाँठ
४८	७	द्र	द्रा	६९	९	दो	द्दो	९८	१०	ग्लभ	गल्भ
४९	७	वे	वॅ	७०	१	स्त्र	स्त्रु	९९	६	ष्टे	ष्ठे
४९	८	ठ्या	ढ्या	७०	२	धृ	द्धृ	९९	६	स्य	स्या
४९	८	ताः	तः	७०	४	दि	वि	१००	१	ष्टिः	ष्ठिः
४९	१०	ठ्या	ढ्या	७०	६	क्र	क्र	१००	२	ग्वृभ्र	ग्वृध्रि
५०	१०	पु	पुः	७०	७	क्रा	क्राः	१००	२	ष्ट	ष्ठ
५१	१	पु	पुं	७०	८	भो	गो	१०१	२	क्षः	क्षाः
५१	२	दि	द्दि	७१	१	ष्टि	ष्ठि	१०१	२	ने	ना
इति तृतीयः				७७	२	श्व	श्वि	१०१	१	ष्टः	ष्ठः
५२	६	ज्ये	ज्यो	८२	७	क्र	क्रु	१०१	११	स्त्य	स्त्र
५३	१२	तृं	तृं	८३	१	ति	तिः	१०२	५	न	मः
५४	६	र्ध	र्धि	८९	१	मा	ध्यमा	१०२	८	पो	प
५६	१	च्छो	च्छ्रो	९०	०	सेम्	षम्	१०२	८	सु	सू
५६	२	त्त	त	९२	२	ण्डा	ण्डा	१०२	८	स्य	स्या
५६	२	तः	ताः	९२	२	या	याः	१०२	९	शा	श्याः
६६	६	ज्ञो	जो	९३	६	ष्ठ	ठ	१०३	१	स्या	स्या
६६	२	भयेर्	:	९३	१	त	स्न	१०३	९	तां	तः
६६	१	त्त	त	९४	१२	पि	पिः	१०३	१	ष्ट	ष्ठ
६६	४	भ	भु	९५	२	ष्य	ब्य	१०४	१	ता	त्तः

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०३	२	ला	लः	१०९	१०	टे	ठे	११७	७	शु	सु
१०३	४	च	व	११०	१	तु	त	११९	८	शाः	साः
१०४	४	ढो	ढः	११०	६	ऌः	ॡः	१२०	२	स	स्प
१०४	८	तो	त	११०	६	णो	णि	१२०	५	स	सः
१०५	२	सु	सुं	११०	५	न	ना	१२०	७	म	मा
१०५	५	क	क्य	११०	८	टे	ठे	१२१	४	ट	ठ
१०५	१	मों	मो					१२१	६	ट	टू
१०६	२	ता	द	१११	२	मः	मा	१२१	८	मुं	मूं
१०६	७	स्टिपो	च्छेष्ठः	१११	८	गो	थिरः	१२२	२	टॅ	ठि
१०६	७	ति	तिं	११२	७	ट	ठ	१२२	७	ता	तू
१०६	१०	भि	बि	११२	१०	टः	ठः	१२२	८	सः	श
१०७	४	य	स	११३	२	टः	ठः	१२२	८	शि	सि
१०७	४	यो	यां	११३	२	शु	सु	१२३	२	शाः	साः
१०७	५	स्रा	स्र	११३	४	नु	सु	१२३	६	ट	ढ
१०७	७	थेः	थे	११३	१	कि	द्धनि	१२३	६	टे	ठे
१०७	१०	व्व	व्य	११४	२	चः	चाः	१२४	६	शा	साः
१०७	१०	घ	ध	११४	६	रव	त्व	१२४	१	सो	लों
१०८	१	दा	द	११४	६	ऌः	ॡः	१२५	१	शाः	साः
१०८	१	भो	भः	११४	८	ट	ठ	१२५	२	शाः	साः
१०८	२	या	शा	११४	८	नसा	नासः	१२५	[illegible]	शाः	साः
१०८	२	गडं	गंड	११४	८	श	स	१२५	९	ताः	[illegible]
१०८	२	गस	वसात्	११५	२	नू	नु	१२६	२	सु	घु
१०८	५	र्थो	र्यो	११५	४	स	श	१२६	४	रता	रत्वा
१०८	५	त्रि	तृ	११७	१	न	ना	१२६	६	दि	द्वि
१०८	८	ऌ	ॡः	११७	८	ऊो	ऊौ	१२७	२	ऌ	ॡ
१०८	९	तम	ताम	११७	१	जी	जो	१२७	२	तिः	ति
१०८	१	ऐ	ठे	११८	१	स्पो	शो	१२७	६	मो	मा
१०८	७	णो	ष्प	११८	४	मपे	मेप	१२८	१	श्यः	याः
१०९	८	ट	टि	११८	८	मे	मं	१२८	६	तो	तो
१०९	१	पि	पि	११९	५	प्द	प्त	१२८	७	जो	ज्यो

पृ पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१२९ १	स्या	स्यात्	१३८	२	द्वि	द्विरं	१५०	६	यासं	यस्सं
१२९ ६	रो	रस्	१३९	९	ना	न	१५०	६	तंतिः	ततं
१२९ ७	साल्प:	ल्पाक्षि	१३९	९	घु	छु	१५०	६	द्वी	द्वी
१३० १	क्षः	क्षाः	१३९	१०	श्रत्रु	शत्रुश्शत्रु	१५०	१	गें	गः
१३० ४	मे	मे	१३९	१२	नि	निस्	१५१	१	कें	गे
१३० १	तुं	तुं	१३९	१२	तं	वं	१५१	२	ल्के	ल्के
१३० ७	द्वि	द्द्वि	१४१	३	वु	वृ	१५१	१०	र्घ	र्घि
१३० १	छ	च्छ	१४१	७	तो	ता	१५१	८	लिः	लिं
१३१ ३	द्वं	द्वे	१४१	८	त्सा	त्सा	१५२	६	स्ये	स्ये
१३१ ३	स्ता	श्ता	१४२	५	तां	त्तां	१५२	४	ओं	यों
१३१ ३	मः	मा	१४२	८	धु	द्धु	१५२	५	रस्सी	त्सी
१३१ ११	न्तू	न्तू	१४२	११	तं	प	१५३	१०	वर्तो	वर्त्तो
१३२ २	न	ना	१४३	३	र्छ	छं	१५४	८	फेला	फा
१३२ ३	छ	च्छ	१४३	६	नो	नोज्	१५४	८	थ	शु
१३३ ३	णा	णस्	१४४	३	तां	त्तां	१५४	१०	छे	छें
१३४ ३	द्धि	द्वृद्धि	१४५	५	छो	छो	१५८	२	र्फे	फें
१३४ ५	णा	ण	१४७	५	द्रू	द्रु	१५९	८	छः	छंः
१३५ १	दा	क्षि	१४७	११	ने	नौ	१५७	८	मुं	मु
१३५ ४	द्धा	द्वृद्धा	१४७	११	नौ	नुः	१६०	५	व	वि
१३५ ४	भाः	मः	१४८	२	घ	द	१६०	५	सुः	सु
१३५ ४	भा	भो	१४७	८	द्र	द्य	१६०	८	त	नं
१३५ ७	रे	रि	१४८	११	सनि	सिनि	१६०	१४	नो	नी
१३५ ९	नथ	नाथ	१४८	१२	छ	च्छ	१६१	२	द्या	द्या
१३६ ८	त्रि	त्रि	१४८	१२	गेतमे	गस्तम.	१६१	२	या	या
इति पचमः			१४९	३	का	का	१६१	५	वँ	याँ
१३७ २	तो	त	१४९	६	छ	ह	१६१	७	रम	म
१३७ २	रो	र	१४९	९	छे	ऐ	१६१	९	क	ह
१३७ २	द्रो	द्यो	१४९	९	गेनमे	गस्तमो	१६२	६	प्यं	प्यँ
१३८ १	र्नि	र्नि	१५०	६	यं	य	१६२	१२	जा	या
१३८ २	स	सि	१५०	६	संर	रस्यं	१६२	१२	रस्य	स्या

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१६२	१३	क्ष्य	क्ष	१७५	९	मं	म	१८७	११	सृ	हृ
१६३	३	श	स	१७५	१०	स्थो	स्थे	१८८	२	स्थे	स्थः
१६३	८	क्ष्य	क्ष	१७६	४	कः	कं	१८८	४	तः	तं
१६३	१२	ता	तां	१७७	१	जा	या	१८८	४	स्थो	स्थः
१६४	५	न	म	१७७	६	जा	या	१८८	१२	क्र	क
१६४	६	त्रि	तिं	१७७	८	श्रि	श्रः	१८९	१	त्त	त
१६४	१०	तो	ते	१७८	११	ष्टा	ष्ठा	१९०	१	श	स
१६४	११	त	ति	१७८	११	त	त्ति	१९१	२	सु	सू
१६४	११	त्तं	तँ	१७८	२	क्ष	क्ष्य	१९२	२	सं	स
१६५	३	ष्ट	ष्ठ	१८०	३	ऐः	ऐ	१९२	५	ष्टः	ष्ठः
१६५	११	ष्ठः	ष्टः	१८०	१०	णो	णोः	इतिपष्ठः			
१६६	१	व	थ	१८०	११	रु	गु	१९३	१०	लाः	ला
१६६	८	कौ	ओज्	१८१	२	ह्रस्व	ह्रस्व	१९४	५	कु	कुं
१६६	९	पां	प्यां	१८२	११	स	त	१९६	११	स्यः	स्याः
१६६	७	ता	तो	१८२	१२	ष्ट	ष्ठ	१९६	१५	पा	पाः
१६७	१	स्थो	स्थः	१८४	५	ष्ट	ष्ठ	१९६	१७	त्ती	ती
१६७	५	क्ष्य	क्षि	१८४	५	तं	त	१९७	३	र	रं
				१८४	१०	ना	नाः	१९७	३	छ	च्छ
१६८	२	रो	रं	१८४	१२	स	सु	१९७	८	तु	च्यु
१६८	५	त	त्त	१८५	२	रू	रु	१९९	५	दी	द्दी
१६८	१२	म	न	१८५	५	न	नु	१९९	५	ना	नाः
१६९	४	ठें	ठिं	१८५	८	ता	तो	१९९	६	भा	भां
१६९	११	स	न	१८५	१२	तिः	ति.	१९९	६	द	द्ग
१७०	७	स	पृ	१८६	४	भो	वो	१९९	७	तं	तें
१७०	१२	त्भू	द्भू	१८६	७	त्तः	तः	२००	१	म	र
१७०	१२	लि	शि	१८६	९	न	ना	२००	६	द	द्व
१७२	९	ष्टः	ष्ठः	१८७	५	जा	यां	२००	६	घि	घ्रिपु
१७२	६	द्व	त्र	१८७	७	त्मृ	दृ	२०१	१	द	द्द
१७३	११	मंद	मंदि	१८७	८	टि	ष्टि	२०१	२	डे	द्र
१७५	२	तो	तम्	१८७	९	ष्टः	ष्ठः	२०१	५	दृ	कृप

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
२०२	५	ष्ट	ष्ट	२१२	६	ष्ण	ष्ठा	२२०	३	त	तः
२०२	५	सें	ते	२१२	६	ष्ठः	ष्ट·	२२०	३	स्युर्नं।	स्याद्
इतिसप्तमः				२१२	७	द	दं	२२०	३	घ	ध्य
२०३	२	र	रि	२१२	८	म्य	म्याः	२२०	१०	ही	हि
२०३	३	ष्टां	ष्ठा	२१२	८	ष्टा	ष्ठा	२२१	१	सं	ञ
२०३	६	ष्ट	ष्ठ	२१२	८	कु	कू	२२१	१	दद्रयां	द्वंद्वाः
२०३	७	सो	शौ	२१३	३	ष्टे	ष्ठे	२२१	१	ष्ठ	ष्ट
२०४	४	ष्टाः	ष्ठाः	२१३	७	ष्टा	ष्ठः	इतिनवमः			
२०४	४	ता	ताः	२१३	२	न	ते	२२२	६	ष्टः	ष्ट
२०४	५	रा	राः					इतिदशमोऽध्यायः			
२०४	५	नः	नाः	२१३	५	ते	ते	२२५	१	व	वि
२०४	११	रा	रा	२१३	६	ते	तो	२२६	३	सु	सु
२०५	१	द्र	द्रुभ	२१३	६	तितैः	मितैः	२२७	४	[illegible]	म
२०५	१	द्र	द्रुभ	२१३	६	ष्टा	ष्ठः	२२७	४	जो	जे
२०५	४	व	व	२१४	२	स्यः	स्योः	२२७	८	तिः	ति
२०५	१	र्ति	र्त्ति	२१४	४	मा	म	२२८	५	सि	म
२०६	५	सा	सो	२१४	१	री	रि	२२८	६	याम्	याम्
२०६	५	द्विः	द्रुभि	२१४	११	तो	ता	२२८	६	तुक	त्व
२०६	६	ता	तो	२१६	३	नं	न	२२८	७	ते	तो
२०६	७	ता	सो	२१६	४	ल	लि	२२८	१	छ	च्छ
२०६	१२	द्धि	द्ध	२१७	६	लि	तैं	२२९	१०	च	च
२०७	९	च्छं	च्छ	२१७	९	न्यु	न्युः	२२९	११	क्ष्य	क्ष
२०८	७	ष्ट	ष्ट	२१७	१४	मो	मे	२३०	२	नी	नौ
२०९	१०	द्र	द्वं	२१८	१	वं	र्व्वं	२३०	१	व	वि
इत्यष्टम				२१८	२	पः	प	२३०	१	न	ते
२११	२	च्छि	श्राछि	२१८	२	स्तु	स्तु	२३०	९	जा	दा
२११	९	ष्टा	ष्ठा	२१८	३	ध	धि	२३०	१२	नो	नो
२११	१५	नृ	दृ	२१८	५	चमे	सदे	२३१	२	स्री	मी
२११	१३	नं	र्न	२१८	९	नि	नि	२३१	६	य्र	य्र
२१२	२	ष्टा	ष्ठा	२१९	२	स्मा	स्मा	२३२	८	स	म

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	१	ल	लं
२३७	३	क	का
२३७	१०	वः	वाः
२३८	२	स्वं	पं
२३९	८	सु	सुं
२३९	१०	ष्टा	ष्टाः
२४०	६	म	मि
२४०	७	ये	यें
२४१	३	क्र	क्रि
२४१	४	ण्य	ण्याः
२४१	६	ण्ये	ण्या
२४१	१०	तरण्ये	ताहणोर
२४२	३	र्का	र्की
२४२	५	ते	ने
२४३	१	ग्र	गृ
२४३	९	प	पि
२४४	२	ष्ठ्या	ष्ट्या
२४५	७	त	तै
२४६	०	ह्यं	ह्यें
२४६	३	मं	में
२४६	५	ष्टो	ष्टौ
२४६	७	व	वे
२४७	१	जा	जो
२४७	२	ए	ऐ
२४७	६	यॉ	याँ
२४८	४	के	क्रः
२४८	७	तो	ते
२४९	२	म	म
२४९	६	ए	एः
२४९	५	र्घा	घुः

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
२४९	६	रे	रः
२४९	७	सिः	नी
२५०	३	त	ता
२५०	५	धा	दा
२५०	७	ष्ठ्या	ष्ठ्या-
		इत्येका	
		दशोऽध्यायः	
२५१	३	व	वि
२५१	४	ष्टो	ष्टो
२५१	१०	श्व	श्वं
२५२	८	स्त्र	स्त
२५३	६	स्ते	स्स्ते
२५३	८	णा	णि
२५४	२	ष्टि	ष्ठि
२५४	७	सु	सु
२५५	२	ष्टी	ष्ठि
२५५	३	धः	तः
२५५	६	नि	निस्
२५६	१	स्त्र	स्ता
२५६	१	तो	तो
२५८	३	नों	चीं
२५९	३	कु	कु
२५९	७	द्वि	द्वि
२५९	९	विं	वीं
२६०	५	म	व
२६०	८	मृ	मृ
२६१	७	ज्ञा	ज्ञा
२६२	१	न्द्र	न्द्र
२६२	९	न्म	न्म्र
२६३	५	घू	घु

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
२६३	५	श	म
२६४	७	त्व	र्त्व
२६४	८	शो	शा
२६४	११	न	म
२६५	८	य	र्ये
२६६	४	न	नां
२६७	६	सः	सि
२६७	८	किं	कं
२६८	८	नाम्	तोम्
२६८	१	श	श्श
२६९	६	कक्ष	कक्षा
२६९	१०	स्युः	स्यात्
२७०	२	त	नु
२७०	३	यं	वि
२७०	८	मी	र्मी
२७०	१२	मु	सू
२७१	३	स्य	स्स
२७१	५	म	मा
२७१	५	म	मान्
२७१	६	धि	धिय
२७१	१	व	वि
२७१	१०	ना	नो
२७१	११	ल	लि
२७१	११	शि	श
२७२	१	स्तापसाः	स्तपसः
२७२	१०	मून्मी	मुन्मू
२७२	१०	ध	धि
		इति द्वादशोऽध्यायः	
२७३	२	नृ	नृप
२७३	४	कु	कृ

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
२७३	५	रों	रें	२८१	११	जा	या	२९९	७	च	ञा
२७३	६	त्तः	तः	२८२	८	ह्	द्द्	३००	४	त्त	त
२७३	७	श्च	ज्ञा	२८२	८	तात्	त	३००	६	ज्यो	ज्ये
२७४	२	शः	ज्ञ	२८२	१०	ते	तो	३०१	६	श	स
२७४	६	त्त.	तः	२८३	४	ष्टम	ष्टमं	३०१	७	य	यि
२७४	८	ष्टे	ष्ठे	२८३	११	र्णं	र्णश्	३०१	९	शे	शं
२७५	६	अ	गृ	२८४	४	शि	थीं	३०१	१०	ध	धि
२७५	८	म	मु	२८६	१	श्मो	श्मि	३०१	११	ह्ल	ङ्ग
२७६	१	त्र	प्र्	२८६	९	गों	गश्	३०२	२	य	यि
२७६	२	ति	त	२८८	१	सु	स	३०३	५	स्पार्धि	स्पृहि
२७६	२	सि	पि	२८८	९	ह	हा	३०३	९	नि	निस्
२७६	१०	स	स	२८९	४	श्रु	स्नु	३०४	७	प	पः
२७६	११	वा	यो	२८९	९	थो	श्रा	३०५	६	र	अ
२७७	१	तो	ता	२८९	१०	तै	ता	३०५	९	न	
२७७	५	गु	गू	२८९	१०	भेः	मे	३०५	१०	या	या
२७८	१	सु	स्व	२८९	१०	हि	ही	३०५	१०	तां	ता
२७८	४	ग्रं	थ्र	२९०	६	वि	विद	३०५	११	ति	ति
२७८	११	तो	त	२९१	६	क्ष्य	क्ष	३०५	११	वा	ब
२७८	१२	वि	ति	२९१	९	ष्ट	ष्ठ	३०६	१	गं	गीं
२७९	२	र्यं	श्य	२९२	१	प	ख	३०६	२	क्षः	स
२७९	२	द्वै	टा	२९२	२	पं	र्णा	३०६	३	ती	तै
२७९	३	श्रु	सु	२९२	३	छ	च्छ	३०८	१	नो	न
२७९	४	ळ	टु	२९३	८	ते	ते	३०९	४	ति	तिस्
२७९	७	री	रीं	२९३	६	मिनौं	हितौ	३०९	७	वा	व
२७९	७	ते	मो	२९३	१०	कि	किर	३१०	३	भू	भ्रू
२८०	६	तं	त	२९४	३	ष्ट	ष्ट	३११	१	ष्ट	ट
२८०	९	द	द्	२९४	१०	ग्त्च	ग्वि	३११	७	णो	ण
२८१	२	ष्टो	ष्टो	२९४	११	पि	पी	३१२	१	रा	का
२८१	१०	प	स्त	२९८	१०	भु	भ्रू	३१२	४	चौ	न्नि
२८१	११	ण	न	२९९	२	ष्ठा	ष्ठा	३१२	१०	दि	दी

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
३१३	१	पपा	पाप	३२८	७	छा	छा	३४०	११	स	सु
३१५	७	ग्र	गृ	३२९	१	न	ना	३४०	११	ष्ट	ष्ठ
३१६	१	ठ्	ग्	३२९	३	ष्ट	छि	३४१	९	व	वा
३१६	५	ह्रर्प	यावत्	३२९	५	ष्ट	ष्ठ	३४२	१	भा	भ
३१६	६	ला	ल	३२९	८	प	पा	३४२	२	सु	सू
३१६	७	ह्रे	ङ्कं	३२९	१०	ग्या	ग्य	३४२	७	प	पि
३१६	८	पा	पो	३३०	५	त्तस्यै	यस्याः	३४२	८	ष्ट	ष्ठ
३१६	८	ह्रा	ह्न	३३०	८	ल	ठि	३४२	९	ष्ट	ष्ठ
३१६	९	या	जा	३३१	२	खेः	खौ	३४२	९	घा	घां
३१६	११	षा	शः	३३१	१०	णं	र्णां	३४३	५	श्चु	शु
३१८	२	स्थो	स्था	३३३	४	प	फ	३४३	८	ष्ट	ष्ठ
३१८	७	णक्रो	कोण	३३३	६	ह्यधाः	ह्यचः	३४४	१०	दु	दुः
३१९	२	म	सु	३३३	६	ह्रे	ग्र	३४५	१	च	चा
३२१	४	त्रु	त्रु	३३४	७	ष्याः	न्या	३४५	८	जा	ज्ञो
३२१	३	मो	मे	३३४	८	जि	ज	३४६	१	ढ्य	ट्य
इतित्रयोदशोध्यायः				३३५	६	त्ता	त्तो	३४६	३	प	पि
३२४	६	ठ	ठ	३३५	९	शा	श्री	३४६	८	श्रंप	श्चिपि
३२४	११	था	ध	३३५	११	न	जा	३४७	१	स्वि	स्वि
३२५	७	लो	लः	३३६	४	क	कारिफ्	३४८	१	द्वि	द्वि
३२६	४	का	कांस्	३३६	८	नि	निम्	३४८	८	नि	निम्
३२६	४	द	श्र	३३७	२	श्च	श्रेव	३४९	३	ग	गा
३२६	७	ट	टि	३३७	६	नै	नैम्	३४९	१०	ता	त
३२६	७	सु	त	३३८	१	धं	धं	३५०	३	पंता	ररताः
३२६	७	ऐ	छे	३३८	१	त्ता	कं	३५२	७	पितृमातृ	मातृपितृ
३२६	८	ए	ष्ठ	३३८	१०	मु	भू	३५३	१	ह	हं
३२६	१०	एो	हो	३४०	२	नि	निम्	३५३	९	बृंह	बृंह
३२७	७	हं	हृत्	३४०	४	ए	ष्ठ	३५४	५	मु	मू
३२८	३	ष्टा	ष्टा	३४०	६	ष्ट	ष्ट	३५४	६	तो	तां
३२८	४	च	ध्या	३४०	८	याः	यः	३५४	७	नि	नी
३२८	५	ष्ट	ष्ठं	३४०	९	पु	पि	३५४	९	तृ	तृ

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
३५५	८	प	पि	३७१	९	ष्टा	ष्टा	४०८	१६	हौम	हुर्म
३५६	८	ष्टा	ष्ठा	३७१	१०	मृदोयाशा	याशामृदः	४०९	१२	क्षो	क्षस्
३५७	६	घ	ध	३७२	१	ष्ट	ष्ठ	४१०	१	सु	स्त्र
३५८	७	व		३७२	४	न्द	न्द्रा	४११	३	यो	यः
३५९	७	भ	भा	इतिचतुर्दशोध्यायः				४११	३	क्षः	क्षाः
३५९	८	से	शे	३७४	५	नै	नैम्	४१४	६	म्रं	म्रे
३६०	२	र्य	र्यं	३७४	९	णा	नां	४१६	४	मा	वा
३६०	३	र्वयं	स्वर्ये	३७५	५	न	नं	४१६	९	ष्य	ष्य
३६०	३	प्यिव	व्यावे	३७६	३	न्द्रो	न्द्रो	४१७	७	र्ते	रे
३६०	५	श	शां	३८०	८	त्तक	त्क	४१७	७	चे	च
३६०	७	म	मं	३८४	२	द्वे	द्वेष	४२२	४	ह	हि
३६१	२	म्यां	म्यांच	३८७	६	जा	ज्ञा	४२३	४	री	रि
३६१	२	त्रु	त्रु	३८९	८	ष्ट	ष्ठं	४२४	१०	तृ	तृ
३६१	४	ड	ढ	३९१	३	म	म	४२५	५	वंग	वर्गं
३६१	६	स्य	स्या	३९१	४	तु	तु	४२५	७	स्या	स्मा
३६१	९	क	कु	३९१	७	जा	या	४२५	८	शा	शी
३६१	९	टा	ष्ठां	३९२	८	द्र	द्रे	४२८	४	त्वि	त्व
३६२	२	ष्टं	ष्ठ	३९४	६	सत	दश	४३०	८		र
३६२	४	शु	सु	३९५	२	स्वी	स्त्रैव	४३१	४	र्थ	त्वं
३६२	७	तौ	तो	३९७	६	ड्ये	ढ्ये	४३१	८	इ	ज
३६२	९	ए	ष्ठ	इतिपंचदशोध्यायः				४३४	२	ता	त्र
३६२	९	ष्टि	ष्ठि	४००	३	त्ति	ति	४३४	१०	त्रर्क्ष	त्वक्ष
३६२	१०	द्रू	द्रू	४०४	११	म	मि	४३८	२	दस्तु	दांस्तु
३६५	३	मा	मास्	४०५	९	स्ना	स्नः	४३९	६	ष्वे	ष्ये
३६६	४	द्धि	द्धि	४०७	१	उ	ऊ	४४१	५	ह्रं	ह्र
३६६	९	णि	णी	४०७	८	ष्ट	ष्ठ	४४१	७	स्था	स्थाः
३६६	८	दुः	दु	४०८	८	स	य	४४२	३	ष्टी	ष्ठी
३६८	११	त्वा	त्मा	४०८	१५	ह्री	हुश्	४४३	१	ष्ठि	ष्टि
३६९	१०	ट	टि	४०८	१५	क्रे	क्रो	४४३	७	ता	त्वा
३७०	९	पाः	पा	४०८	१५	ते	तः	४४४	८	दू	दू

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
४४५	४	स्निग्ध	स्त्वय	४६६	११	श्र	गृ	४९१	३	मे	मं
४४५	४	शो	शास्	४६७	१	कू	र्	४९१	६	न्य	न्यात्
४४५	९	स्वसु	श्वशु	४६७	२	स	सा	४९१	८	ग.	गाः
४४७	३	र	म	४६८	२	लि	णी	५००	३	प	जं
४४७	८	का	क्रा	४६९	७	ने	न	५००	५	ता	ताः
४५१	७	त्रे	त्रेशो	४६९	१०	तु	तु	५००	७	का	काश्
४५१	८	वि	ष	४७०	१	त	ता	५००	७	त्रा	नाः
४५१	९	स्यो	स्यस्	४७०	१	रा	र	५००	७	ता	ताः
४५१	११	य	स.	४७०	६	तो	तः	५०१	६	हि	हिं
४५२	१०	द्वे.	तः	४७३	५	शु	सु	५०१	६	त्पा	त्पा
४५२	५	तीन्	न्	४७४	४	घृ	घृ	५०१	७	ह	ह्व
४५२	९	ह	हृ	४७४	५	ह्यं	ह्य	५०१	८	मि	स्म
४५४	९	विं	वि	४७६	५	प	म	५०१	८	णः	सा-
४५५	६	छा	छा	४७८	६	त	तु	५०२	१	द्वारि	द्विर
४५५	९	वै.	वः	४८३	१२	न्यं	न्या	५०२	३	नि	पि
४५५	९	ज	जन	४८५	८	ता	तुः	५०२	४	ल	टा
४५६	१	ह	ठ	४८६	२	को	वम्	५०२	४	रिप	रां
४५६	२	श	र्थं	४८९	८	ण	णं	५०२	५	श्व	
४५६	४	स्तु	स्तुं	४८९	८	ख	खे	५०२	६	व	वि
४५६	५	छ	च्छ	४८९	८	प	प	५०२	७	है.	ह्वै
४५८	११	म्	न्	४९५	८	श्रि	श्र	५०२	८	नै	पे
४६०	५	ष्पि	ष्पि	४९५	९	यश्रा	याचा	५०२	१०	त्पा	त्पा
४६०	७	ठे	ठि	४९५	११	ठं	ठ	५०२	१०	यो	यस्
४६१	१	स्ता	स्तु	४९६	५	क	कु	५०५	१	श्या	श्या
४६१	४	नेव	नैवं	४९६	७	पंद	पान्द	५१०	२	ता	तां
४६१	४	स	सत	४९६	८	य	प	५१०	२	ता	तां
४६१	४	ता	त	४९७	२	ई	ठ	५१०	२	का	को
४६१	२	ह	ठ	४९७	४	त्य	न्व	५१०	६	ह	हा
४६३	५	ण-	पी.	४९७	७	ष्टा	छा	५१२	४	यपा	का
४६८	२	तु	दू	४९८	१	तात्	नतू	इतिषोडशोऽध्यायः			

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
५११	६	ग्राः	गा	५३५	१३	शु	सु	५४३	१	शु	सु
५११	६	छ	छभ	५३६	१	स्व	श्व	५४६	३	स्पृ	स्पु
५२०	६	धू	धूस्	५३६	३	त	ता	५४६	७	श्व	श्वे
५२१	१	शु	सु	५३६	१०	ता	तो	५५१	३	ष्ट	ष्ट
५२१	४	ज	जि	५३६	१३	स	सु	५५१	२	स्व	श्वि
५२१	४	तें	ता	५३७	२	त्व	त्वा	५५५	३	ष्ट	ष्ट
५२१	८	तें	तैं	५३७	२	छा	च्छा	५५६	३	यः	युः
५२१	११	शि	षि	५३७	५	षि	षिं				
५२२	६	भा	घा	५३७	५	ण्णा	ण्या	इत्यष्टादशोऽध्यायः			
५२३	३	चें	चैं	५३७	५	ण्णा	ण्या	५५१	३	ष्ट	ष्ट
५२३	७	द्द	ह	५३७	७	द्धि	द्धिस्	इत्येकोनविंशोऽध्यायः			
५२४	५	स्रा	मा	इतिसप्तदशोऽध्यायः				५६५	५	धा	श्राव
५२४	८	पु	पुं	५३७	१०	ना	ना	५६५	११	श	शा
५२५	१	क्	क्य	५३७	११	लि	लीं	५६६	१	र्ति	र्त्ति
५२६	५	गा	मा	५३७	१३	जी	नीं	५६१	७	हः	हाः
५२६	१०	सौं	शौं	५३७	१४	यू	यु	५६१	११	र	रि
५२७	३	रा	री	५३८	१	न्या	न्याः	५७४	११	श	श्र
५२७	४	भ्रे	भ्र	५३८	२	तय	यत	५७१	५	त्व	तूर्व
५२७	५	म	मि	५३८	३	जो	जौं	५८२	१	पि	नि
५२८	८	यनीं	यिनी	५३८	५	दू	दुः	५८२	९	शा	शौ
५२८	१०	ष्ठा	ष्टा	५३८	५	स्थ	न्थ	५८३	२	त्का	तूत्का
५२९	१२	ह्न	ह्न	५३८	९	रुश्व	रुस्व	५८८	७	रा	री
५३०	५	न	ना	५३८	१०	ता	ताम्	५९०	१२	ह्य	ह्यु
५३०	५	दु	दुः	५३८	१०	नो	नौ	५९२	८	ता	ताः
५३०	११	शु	सु	५३८	११	ष्ठिः	ष्टिः	५९२	११	ता	तः
५३४	११	क्षि	क्ष	५३९	७	न्ये	न्यें	५९४	२	न्हू	न्ह
५३५	१	स	सु	५३९	१२	ष्ठि	ष्टि	५९५	३	त्व	त्व
५३१	६	स	सम	५४१	२	ष्ठि	ष्टि	५९५	५	का	का
५३५	११	म	म	५४२	३	रं	रे	५९७	४	द्र	द्रे
५३५	१२	स	सु	५४२	८	स्या	स्यं	५९८	१	ने	न

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
५९८	१	रेत	रेते	६१६	८	ति	तिश्	६२८	७	त्रा	त्रा
५९८	१	स	सें	६१७	१	नि	निस्	६२९	१	ते	ता
५९८	५	म	त्र	६१७	६	हिः	हि	६२९	७	न्नू	न्नव
५९८	८	ष्टं	ष्ठ	६१७	८	णौ	णे	६२९	९	द	द्वे
५९८	८	ष्ट	ष्टं	६२०	४	द्वि	द्विं	६३०	२	भे	भेः
५९८	६	ष्ठि	ष्टि	६२०	६	गृ	ग्र	६३१	२	घ	द्व
६००	२	त	तें	६२०	८	नु	नू	६३१	३	हृदि	दष
६००	२	पा	पां	६२०	८	द्र	द्रे	६३१	३	यां	गा
६०३	६	हा	ह्य	६२०	१०	स	सु	६३१	७	स्थे	स्तु
इतिविंशोऽध्यायः				६२१	२	ष्ठि	ष्ठि	६३२	८	क	के
६०६	१३	नुः	ते	६२१	८	पडि	पीड	६३३	४	ष्टे	ष्टे
६०६	१५	रोस्य	राम	६२१	१०	ष्टा	ष्ठा	६३३	६	ष्टे	ष्ठे
६०६	१५	रये	श्ये	६२२	२	य	वे	६३५	२	हाः	हा
६०७	१	ना	नुः	६२२	८	छो	छो	६३५	२	कु	कू
६०७	२	दृ	दृष्ट	६२२	१०	ता	तं	६३५	११	र्णा	र्णा
६०७	२	भ्र	घ्र	इत्येकविंशतितमोऽध्यायः				६३६	१	त्यः	त्युः
६०७	६	सारि	सूति	६२२	९	शि	शिः	६३६	२	ष्टा	ष्ठा
६०७	१०	त्पुजं	त्पुंज	इतिद्वाविंशोऽध्यायः				६३६	४	सिम	तिर्म
६०७	११	जा	ज	६२४	४	नक्षं	मंक्ष	६३६	४	रमा	रंमा
६०८	५	छे	छे	६२६	७	दे	धे	६३७	४	त्यु	त्युः
६१०	५	त्रे	त्रैं	६२६	११	ष्ट	ष्ठ	६३७	४	यं	यः
६१०	७	र	रै	६२७	३	म्रि	म्री	६३८	७	ताः	तः
६१२	४	ष्टा	ष्ठा	६२७	३	ष्ठ	ष्ठ	६३८	७	क्रम्	क्रं
६१२	६	ग	व	६२७	३	त्रि	त्रि	६३९	६	ते	तं
६१४	२	ष्टाः	ष्ठाः	६२७	४	श	श्श	६३९	६	ष्टे	ष्ठे
६१५	६	या	था	६२७	५	शी	शाः	इतित्रयोविंशोऽध्यायः			
६१५	६	द्दा	द्दा	६२७	६	ष्ठे	ष्ठे	६४२	३	ल	लि
६१५	७	शो	शे	६२७	७	ति	तो	६४२	३	श	श्
६१५	९	णा	ण	६२७	८	र	रु	६४६	३	म्या	र्म्या
६१६	१	र्ण्यां	णीन्	६२८	२	ष्ट	ष्ठ	६४६	९	दो	द्वो

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
६४४	१	त्यः	त्याः	६४३	२०	न	ना	६६८	२	न	ना
६४४	२	ग्या	ग्यां	६४६	४	ए	ष्ट्	६६०	१३	मि	म
६४४	३	प	पे	६४६	७	डू	दू	६६१	५	ग्र	प
६४४	४	क्र	क्र	६४६	८	ग्व	स्व	६६१	१०	र्वं	रत्व
६४४	८	ध्रे	ध्वे	६४६	९	सू	सु	६६८	१	ष्ठ	ष्ट
६४४	१०	ऐ	णे	६५३	१	या	या	६६८	५	श	स
६४५	१	धे	धं	६५३	२	श्री	धीः	६६३	२	भिर	णाम
६४६	१	ला	लाः	६५७	६	म	म	इतिचतुर्विंशोध्यायः			

एह श्रीमन्महाराजाधिराजजंबूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशश्रीयुतश्रीमहाराजरणवीरसिंहाज्ञप्तज्योतिर्विन्महेशकृतज्योतिर्महानिबंधग्रंथका प्रथमभागजातकखंड ॥ विद्याविलासनामकमुद्रायन्त्रालयमें ॥ पंडितशंकरनाथजीकेअधिकारसेंछपा॥ संवत् ॥ १९३१ फा० प्र० ॥ २१ ॥ इसग्रंथकामूल्य ४) ॥रुपयडबल॥